In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिव पुराण भाषा

१९१५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

93.N.3

शिवपुराण भाषा ॥

ग्यारहोंखण्डसहित

जिसको

ठाकुर शिवसिंहजी इन्स्पेक्टर पुलिसने संस्कृतसे
उर्दू में उल्था कियाथा.

उसीको

मुंशी नवलकिशोर साहबने स्वर्गवासी काश्मीरी पण्डित
प्यारेलाल रुग्गू से भाषान्तर कराया.

नवीं वार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छापी गई

सन् १९१५ ई० ॥

इस पुस्तककी रजिस्ट्री २३ नवम्बर सन् १८८६ ई० को १४०३ नम्बर पर हुई है
इसकारण इस यन्त्रालयकी आज्ञा विना कोई छापनेका अधिकारी नहीं है ॥

जुज ६४ वर्क ४
In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवपुराण भाषा का सूचीपत्र।

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	प्रथम खण्ड।	
१	श्रीसदाशिवजी की कथा	४५
२	तप कर नारदका शीलनिधि के यहां स्वयम्वर में जाना	४६
३	नारद का वानरकासा मुख होना और शिवगणोंको शाप	५३
४	ब्रह्मा का नारद से सगुणरूप कीर्तन	५८
५	श्रीशिवसे विष्णु और ब्रह्मा की उत्पत्ति	६३
६	ब्रह्मा, विष्णु का शिवलिङ्ग खोजना	६६
७	ब्रह्मा,विष्णु को शिवका दर्शन	६६
८	शिवको ब्रह्मा, विष्णुका स्पर्श	६६
९	जीवोंकी उत्पत्ति देख शिव का प्रकट होना	७१
१०	शक्ति समेत शिवका भूतादि सृष्टि उपजाना	७२
११	पांच तत्त्व, पहाड़, मूल और कलादिकी उत्पत्ति ...	७३
१२	ब्रह्माको अर्धाङ्गीरूपका दर्शन	७५
१३	स्वायंभुव राजा और शतरूपा रानी की उत्पत्ति ...	७७
१४	श्रीलोक,वैकुण्ठादिलोक वर्णन	८०
१५	यज्ञदत्तात्मज गुणनिधि का उपाख्यान	८२
१६	गुणनिधि के कुकर्म से पिता का कोप	८६
१७	शिवालय में चोरीकर गुण-निधि का माराजाना व यम-दूतों से शिवगणोंको छुड़ाना	९०
१८	विश्रवा के यहां उपजकर गुण-निधिका तप करना ..	९२
१९	शिवा में कुदृष्टि से कुबेर नाम प्राप्ति	९४
२०	अलकापुरी के निकट शिवजी	९८
२१	निधिनाथ की विनय से शिव का टिकना	१०१
२२	शिवजीका कैलासमें निवास	१०३
	द्वितीय खण्ड।	
१	सन्ध्या पर ब्रह्माका मोहित हो काम को वर देना ...	१०७
२	ब्रह्मा के पसीने से चौंसठ योगिनियों की उत्पत्ति ...	११०
३	शिवविवाहार्थ ब्रह्मा-दक्ष कथन	११२
४	शिवको न मोहित कर काम का लज्जित होना ...	११४
५	विष्णु का ब्रह्मा को समझाय निज धाम जाना ...	११५
६	सतीके प्रादुर्भावार्थ दक्षकातप	११६
७	तपकर ब्रह्माको देवी से वर याचना	११७
८	दक्षपत्नी वीरनीके गर्भ में देवी	११९
९	सती नाम से देवीका अवतार	१२०
१०	पुत्रजन्म सुन दक्षको हर्ष ...	१२२
११	दक्षके घरमें सतीके चरित्र	१२४
१२	ब्रह्मादिकों को शिवजी से विवाहार्थ कहना ...	१२६
१३	शिवजीसे सती को वरप्राप्ति	१२८
१४	सतीका शिव से व्याह ...	१३१
१५	सती सहित शिव की कैलास यात्रा	१३२
१६	शिव से सतीका परमतत्त्वप्रश्न	१३४
१७	सगुण-अगुण भक्ति निरूपण	१३६
१८	सती का भक्ति के अङ्ग पूछना	१४२
१९	सती समेत शिवकी दण्डकवन यात्रा, सतीकृत रामपरीक्षा	१४५
२०	सती से निज वृत्त कह राम का आगे चलना	१४७
२१	शिवका मन से सतीको त्याग, समाधि लगाना, सती का दुःखित होना	१४९

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
२२	दक्षका शिवके विना कनखल में प्रजापतियज्ञ करना और दधीचि से विवाद होना	१५३
२३	सतीका शिवजी से आज्ञा ले विना न्योता पिता के यहां जाना	१५५
२४	शिवजी का भाग न देख सती का दक्षको तिरस्कार कर, योगाग्नि से देह त्याग ...	१६०
२५	सतीमरण सुन शिवजी का वीरभद्र व कालीआदि गण उपजाय दक्षयज्ञ विध्वंस कराना	१६३
२६	असंख्य सेनापतियोंका निरूपण और यज्ञ में अशकुन	१६५
२७	विष्णु की शरण में दक्ष और देवगणों से शिव गणों का युद्ध	१६८
२८	विष्णु से वीरभद्र का युद्ध	१७१
२९	शिवगणों से दिक्पतियों का युद्ध, वीरभद्र से पराजित विष्णुका अन्तर्धान ...	१७४
३०	हरिणरूप धर यज्ञदेवका भागना, वीरभद्र द्वारा उसका शीशकाट यज्ञकुण्डमें डालना	१७७
३१	क्षुप राजा से दधीचि का युद्ध	१८०
३२	विप्ररूपधारी विष्णुका दधीचि से वर मांगना ...	१८३
३३	ब्रह्मादि देवताओं का कैलास पर शिव की शरण में होना	१८५
३४	दक्ष के जीवनार्थ प्रार्थना, सब देवोंसमेत यज्ञमें शिवगमन	१८६
३५	दक्ष के धड़ में बकरेका शीश लगा जिला देना तत्कृत शिवप्रशंसा	१८७
३६	श्रीसदाशिवका सब को उपदेश दे आशा पूर्ण करना	१९०
३७	सती की भस्म की ज्योति से ज्वालामुखी का जन्म तथा सती की मृत्यु पर शिवका विलाप	१९३
३८	सतीके अङ्गोंसे प्रकटित सिद्धपीठों का वर्णन ...	१९५
	तृतीय खण्ड।	
१	हिमाचल मैना विवाह ...	१९८
२	मैना समेत अन्य बहिनों को सनत्कुमार का शाप ...	२००
३	देवताओं का हिमाचल को सती कन्या पाने के लिये युक्ति बताना और जगदम्बा की स्तुति	२०२
४	मैनासमेत हिमाचलका शिवशक्ति की तपस्याकर सौ पुत्र, एक कन्या का वर पाना ...	२०४
५	सतीवियुक्त महादेव का तप कर दारुकवनमें जा ब्राह्मणियों को भोगना, द्विजों के शाप से शिवलिङ्गका पात	२०६
६	देवताओंसमेत विष्णुका शिव से फिर लिङ्गधारने को कहना	२०८
७	शिवजी के पसीने से उपजे भौम का भूमि द्वारा पालन	२१०
८	गर्भवती मैना से भवानी की उत्पत्ति	२१२
९	हिमाचल के यहां देवीजी की बाललीला	२१४
१०	पार्वती के विवाह के लिये स्वयम्बरमें देवताओंकाआगमन	२१६
११	स्वयम्बर में विष्णु आदि देवताओं, मनुष्यों और पर्वतों को बुलाना	२१६
१२	सखीसमेत गिरिजा का स्वयम्बर में आकर शिव को जयमाला पहिनाना ...	२१७

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१३	बालरूप शिवको स्वयम्बर से इन्द्रादि देवताओंका हटाना	२१६
१४	स्तुतिकर विष्णु आदि देवताओं द्वारा शिव से क्षमा प्रार्थना	२१६
१५	विवाहकर महादेवका कैलास पर आना और देवताओं का अपने अपने धाम को जाना	२२०
१६	दूसरी रीति से शिवविवाह	२२१
१७	विष्णुवाक्य से हिमाचल को सभा में गिरिजा से पति के विषय में पूछना ...	२२३
१८	शिवजी का तिलक चढ़ा नाई, पुरोहित का झगड़ा ...	२२५
१९	बरात लाने के लिये महादेव को हिमाचल का संदेशा	२२६
२०	हिमाचल का बरात के वास्ते घर बनवाना और पत्र पढ़ कर शिवजीका हँसना ...	२२७
२१	माता पिताको दुःखी देख गिरिजाका चिट्ठी दे विजया को शिव के पास भेजना...	२२९
२२	अवधूत दूलह शिव को देख मैना समेत हिमाचल का दुःखी होना व पार्वती का समझाना	२३०
२३	हिमाचल द्वारा जातिवालोंका उस योगी की परीक्षा लेना	२३२
२४	सर्वान्नभोजी दोनों चेलों का जाना। भ्रान्त हिमाचल का पुरोहित से योगी का वृत्तान्त पूछना	२३२
२५	श्रीनारद का मैना समेत हिमाचल को समझाना। पार्वती को आदिशक्ति और शिवको परमपिता कहना...	२३३
२६	जातिवालों समेत हिमाचलका शिवके पास जा बड़ाई करना। महेश का सब पर दयाकर बरात समेत दूलह बनआना	२३५
२७	भाई-बान्धव, देशवासियों समेत हिमाचल का अगवानीके लिये आगे पहुँचना	२३६
२८	हिमाचल के पण्डित का लग्न बतलाना। कन्यादान होना	२३७
२९	हिमाचल का गिरिजा को नारद के चरणों पर डालना	२३८
३०	औषधप्रस्थपर तप तपते हर को हिमाचल का गिरिजा समेत स्तुति कर तिल पुष्पादि चढ़ाना। शिवकी क्रोधाग्निसे कामदेवका जलना	२४१
३१	हिरण्यकशिपु, हिरण्याक्ष के मारे जाने पर दिति का कश्यप से पुत्र मांगना ...	२४४
३२	पुत्रार्थिनीपत्नीकेलिये वज्राङ्गी तप। तारकासुरकी उत्पत्ति	२४६
३३	तपस्या से तारकासुरका वर पा, देवताओं को जीतना	२४८
३४	तारक से दुःखी देवताओं का ब्रह्मा की शरण में जा शिव से पुत्र उपजाने को कहना	२५१
३५	इन्द्र की आज्ञा से सामग्री समेत काम का शिवको जीत कर उनके तीसरे नेत्र से भस्म होना। रतिका विलाप	२५५
३६	इन्द्रादि देवताओंका शिवकी शरण में जाना। रति को वरदान	२५६
३७	कामके जलने पर पार्वती की तपस्या और माता पिता की चिन्ता	२६०

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
३८	तप में गिरिजा को भूतों का घेरना, नाना रूप दिखलाना	२६३
३९	देवताओं द्वारा शिवकी स्तुति	२६५
४०	स्तुति सुन शिवका सब से आनेका कारण पूछना। देवताओं द्वारा गिरिजा की तपस्या वर्णन	२६९
४१	सप्तर्षियों के जाने पर वृद्ध-ब्राह्मणवेषधारी शिव का गिरिजा से तपस्याका हाल पूछना और नारद की निन्दा करना	२७४
४२	गिरिजा का हठ और प्रेम देख शिवजीका प्रसन्न हो अपना मुख्य रूप दिखलाना ...	२७६
४३	पार्वतीको वरदानदे शिवजीका भिक्षुकरूप हो हिमाचल के यहां जा नाचना, गाना करना	२८१
४४	विधिप्रेषित देवताओंका शिव से गिरिजाके साथ व्याह करने को कहना ...	२८१
४५	शिवजी का विवाहार्थ सप्तर्षियोंको हिमाचलके निकट भेजना	२८२
४६	सपत्नीक सप्तर्षियों का हिमाचलको समझाना। शिव के साथ गिरिजा का विवाह कथन	२८५
४७	सप्तर्षियों का शिवजी से हिमाचलका हाल कहना ...	२८७
४८	शिव की आज्ञा से देवताओं को बड़ी सजधज से बरात में चलना	२८७
४९	हिमाचल का भाई बन्धुओं को न्योते में बुलाना, मण्डपाच्छादन कराना। शीशमहल में मैना ...	२८८
५०	बरात का आना जान नारद के पास खड़ी सबों को निहारती हुई मैना का शिवागमन की बाट देखना	२९०
५१	गणों समेत शिवजी को देख कर मैनाका मूर्च्छित होना, नारद को धिक्कारना ...	२९३
५२	नारद और सप्तर्षियोंका मैना को समझाना। गिरिजा को शिव के विना अन्य के साथ व्याह न करने को कहना...	२९३
५३	विष्णु का मैना को समझा शिव के साथ गिरिजा का व्याह होने को कहना ...	२९४
५४	शिवजी का दिव्यरूप देख मैना को हर्षित होना ...	२९५
५५	शिवजी का द्वारचार व जनवास	२९६
५६	हिमाचल द्वारा विवाह रीतें	२९७
५७	मैना समेत हिमाचल का शिवजी को गिरिजाका हाथ पकड़ा देना	२९९
५८	भांवर फिरते समय ब्रह्मा का मोहित होना व असंख्य बटुकों का पैदा होना ...	३००
५९	शिव गिरिजा का अन्तःपुरमें जाना व कामदेवकी उत्पत्ति	३०४
६०	शिवजी का निवास स्थान में जाना	३०५
६१	हिमाचल से दायंज पा सब का विदा होना ...	३०६
६२	शिवजी का बिदा होना ...	३०७
६३	ब्राह्मणस्त्रियों द्वारा गिरिजा को पातिव्रतशिक्षा ...	३११
६४	मैना समेत हिमाचल को समझाकर शिव पार्वती का कैलास आना	३१३

In Public Domain. CC-0. Chamba Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
६५	शिवविवाह की प्रशंसा करते हुए देवताओं का अपने अपने लोक जाना ...	३१४

चतुर्थ खण्ड।

१	तारकवध में विलम्ब जान देवताओंका शिवके विहार स्थानमें जाकर स्तुति करना और शिव का बाहरआना	३१७
२	कपोतरूपधारी अग्नि का शिववीर्य निगलना और क्रुद्धहो गिरिजाका देवताओं को शापदेना, गंगा में छोड़े अग्नि के वीर्य से शर में बालक जन्म	३२०
३	विश्वामित्र द्वारा उस बालक का संस्कार होना व सांग देना	३२४
४	उस बालककी छः माताओंसे असंख्यनामों का कीर्तन करना तथा स्कन्द को विमान पर चढ़ा विष्णु आदिकों का कैलास जाना	३२६
५	बालक को देख शिव-शिवा को आनन्दित होना व देवताओं को सेनापति बनाने के लिये स्कन्द का अभिषेक करना	३२८
६	नारद ब्राह्मण का बकरा लेने को स्कन्दकी स्तुति करना व उनका बकरे पर चढ़ त्रैलोक्य घूम आकर यज्ञपूर्ति के लिये वर देना ...	३३१
७	स्कन्द को सेनापति बनाकर देवताओंका संग्रामभूमि से तारकासुर को युद्ध संदेशा भेजना	३३४
८	विमान में चढ़े, सेना समेत तारकासुर का युद्धमें आना	३३६
९	गण युक्त वीरभद्र और तारकासुरका युद्ध व देवता, दैत्यों से महायुद्ध होना	३४०
१०	देवताओं को चिन्तित देख षडानन का सांगी से तारकासुर का वध करना ...	३४२
११	क्रौंच की प्रार्थना से स्कन्द द्वारा बाणासुरवध व शिवलिङ्गस्थापना	३४३
१२	शेषकी प्रार्थना से स्कन्द का प्रलम्बासुरवध करना ...	३४५
१३	देवताओं समेत स्कन्द का कैलास जाना व शिव-शिवा द्वारा देवताओं की विदाई	३४७
१४	शिव-शिवा के विहार में देवताओं द्वारा विघ्न होना व कोपित गिरिजाको देवताओं को शाप देना	३४९
१५	गिरिजा को मनाय महादेव को सन्तानार्थ आपदाहर गणपतिके व्रतको बतलाना	३५१
१६	गिरिजा का गणपतिव्रत में चन्द्रमा को अर्घ्य देने का कारण शिवसे पूछना ...	३५३
१७	गिरिजाका गणपतिव्रत करना व शिव से विहार करते समय वृद्धब्राह्मणरूप गणपति का आय भिक्षा मांगना व शय्यापर बालकका उपजना	३५५
१८	बालकको गोदमेंले शिव-शिवा का हर्षित होना व सपत्नीक ब्रह्मादिकों का आगमन व पुत्रोत्सव मनाना ...	३५८
१९	पुत्रोत्सव के समय शनैश्चर के देखने से गणपति का शीश उड़जाना	३६१

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
२०	पार्वती का मूर्च्छित होना व शिवाज्ञासे विष्णुद्वारा हाथी का शीश ला लगवा देना व बालकका सजीव होना ...	३६२
२१	पार्वती का शनैश्चर को शाप देना व सूर्य, यमराज का कुपित होना तथा ब्रह्मा की आज्ञासे फिर उत्सवकाहोना	३६५
२२	गणपति की दूसरी उत्पत्ति	३६७
२३	गणपति का शिवगणों से युद्ध व गणों की हार होना ...	३६८
२४	देवताओं का गणपति से युद्ध कर परास्त होना ...	३६९
२५	शिव गणपति के युद्धमें विष्णु द्वारा गणपतिवध ...	३७०
२६	गणपतिवध सुन गिरिजा का सौ शक्तियों को उपजाना व विष्णु द्वारा पुनः गणेश का सजीव होना ...	३७१
२७	जीवित गणपति को देख गिरिजा को भालमें सिन्दूर लगा हर्षित होना व देवताओंको पूजाकर बिदाहोना	३७३
२८	विवाहार्थ गणपति और स्कन्दका पृथ्वी की परिक्रमा करना व विश्वरूप की लड़कियों से गणेश का व्याह होना	३७६

पञ्चम खण्ड।

१	तारकात्मज तडिन्माली-तारकाक्ष व कमलाक्ष का महातप कर तीन पुर पाना	३७९
२	त्रिपुरासुर से व्याकुल देवताओं का ब्रह्मादिकों की शरण में जाना व विष्णुका उपाय करना ...	३८२
३	विष्णु से उत्पन्न मुण्डी का त्रिपुर को चेला बनाना	३८४
४	मुण्डीकी आज्ञा से त्रिपुर का वैदिक धर्म त्याग नास्तिक होना	३८७
५	तीनों भाइयों का नास्तिकहो शिवपूजादि का त्यागना	३८८
६	पुत्रको गोद में लेकर शिवजी का नृत्य, गणपति से ताड़ित देव-दानव, ब्रह्मा-विष्णु का वत्सरूप में अमृतपान ...	३९०
७	विश्वकर्मा के बनाये हुए रथ पर चढ़ शिवजी का त्रिपुर-विनाशार्थ जाना ...	३९१
८	शिव का बाण चलाय त्रिपुर को भस्म करना व देवताओं द्वारा शिवस्तुति ...	३९२
९	शिष्योंसमेत अर्हणका शिवको प्रणाम करना व विष्णुजीकी आज्ञा से मरुस्थल में बसना	३९४
१०	शिवभक्ति से मयदानव का जलने से बचजाना व दैत्यों का आचार्य होना ...	३९५
११	इन्द्र को शिवदर्शन की बाट देखना व अपूर्व रूपसे शिव के ऊपर वज्र छोड़ने से नीलकण्ठहो अपने तेज को समुद्र में फेंक देना ...	३९७
१२	उस तेज से जलन्धर का उपजना, जालन्धरी पुरी निर्माण व जालन्धर का व्याह होना	३९९
१३	जलन्धरका शीशरहित राहुको देख शुक्र से कारण जानना	४०२
१४	देव-जलन्धर युद्ध, जलन्धर का द्रोणाचल को समुद्र में फेंकवाना	४०४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१५	विष्णुजीका जलन्धर से युद्ध करके वरद्वारा लक्ष्मी समेत उसके घर रहना ...	४०७
१६	तीनों लोक जीत जलन्धर का देवों के बदले दैत्य नियत करना	४१०
१७	कोपित जलन्धर का कैलास पर चढ़ाई करना ...	४१२
१८	शिवगणों व दैत्यों का महा-युद्ध, नन्दी से दैत्यसेना का पराजित होना ...	४१५
१९	सेनाको दुःखित देख जलन्धर का गणों के सामने जाना	४१७
२०	जलन्धर का शंकर से युद्ध में माया करना ...	४१९
२१	विष्णुद्वारा वृन्दाका पातिव्रत भंग	४२२
२२	शिवद्वारा जलन्धरवध ...	४२५
२३	देवताओंका शिवसे विष्णुका हाल कहना उनका गिरिजा की शरण जाओ कहकर अन्तर्धान होना ...	४२७
२४	नारद को सुदर्शन चक्र का हाल पूछना, दानवपुत्रों का उपद्रव मचाना ...	४२९
२५	दम्भका विष्णुकी तपस्या कर शङ्खचूड़ नामा पुत्र पाना	४३२
२६	शुक्र की आज्ञा से शङ्खचूड़ का राजा होना व देवताओं को पराजित करना ...	४३४
२७	श्रीराधिकाजी के शाप से सुदामा का शङ्खचूड़ होना व सब लोकों का वर्णन ...	४३७
२८	शङ्खचूड़ के वधार्थ देवताओं का शिवकी शरण में जाना	४३८
२९	श्रीकृष्ण-राधा का शिवदर्श-नार्थ आना व शिवका शङ्ख-चूड़नाशार्थ देवताओं को कैलास भेजना	४३९
३०	शङ्खचूड़वधार्थ शिवका उस दैत्य को सन्देशा भेजना ...	४४०
३१	सगण शिव की शङ्खचूड़पर चढ़ाई	४४१
३२	शङ्खचूड़ का रानीसे युद्धकी सम्मति लेना	४४२
३३	शङ्खचूड़ का दूत द्वारा शिव से सम्मतिलेना व शिव का देवविरोध से निषेध करना	४४४
३४	दूतका वचन सुन शङ्खचूड़ का शिवपर चढ़ाई करना	४४५
३५	शिव की आज्ञा से वीरभद्र का शङ्खचूड़ से युद्ध ...	४४७
३६	कालीका शङ्खचूड़ से युद्ध कर शिवके निकट जाना	४४९
३७	गणों समेत शिव और शङ्ख-चूड़ का महायुद्ध ...	४५०
३८	शङ्खचूड़ का शिव से युद्ध व शङ्खचूड़वध ...	४५२
३९	शङ्खचूड़ का रूप धार विष्णु का तुलसी के घर जाना व विजय का डङ्का बजवाना	४५६
४०	दितिज अन्धकासुर का देव-ताओं से विजय पाना ...	४५८
४१	शरणागत इन्द्रको देख कश्यप का अन्धकासुर को सम-झाना	४५९
४२	अन्धकासुर की तपस्या से भयभीत देवताओं का शिव की शरण में जाना ...	४६२
४३	सदेव ब्रह्मा का विष्णुजी से अन्धकासुर का अन्याय कहना	४६४
४४	डरे हुए देवताओं व ब्राह्मणों का अन्धक को शाप देना	४६५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
४५	मन्दराचल पर अन्धक से डरकर शिवकी शरण जाना...	४६७
४६	सेनानी हो नन्दी का दैत्योंसे महाघोर युद्ध व शिवका शुक्र को पेट में डाललेना	४६६
४७	पराजित सेना को देख अन्धकासुर का संग्राम में आना व शुक्र का शिवलिङ्ग के छिद्रमें बैठकर स्तुति करना	४७०
४८	अन्धक की स्तुति से प्रसन्न शिवका वर देना ...	४७१
४९	बाणासुर का तांडव नृत्य और शिव-शिवा का विहार	४७३
५०	बाणासुर का देवताओं को जीत शिव के समीप जाना व शिवका हज़ार भुजा छेदनेवाला पुरुष बतलाना...	४७५
५१	ऊषा का चरित्र वर्णन ...	४७६
५२	चित्रलेखा का अनिरुद्ध को लाना व श्रीकृष्णादि का शोणितपुर को जाना ...	४८२
५३	श्रीकृष्णजी का चक्र से बाणासुर की भुजाएं काटना	४८४
५४	सवधू अनिरुद्ध को ले श्री कृष्णादिकोंका द्वारका जाना	४८६
५५	शिव द्वारा गजासुर का वध व जगदम्बाजी का महिषासुर को मारना ...	४८६
५६	दुन्दुभी का काशी में जा ब्राह्मणों का वध करना व शिवका दुन्दुभी को मारना	४६१
५७	उत्पल, विदल दोनों दैत्यों का तप कर ब्रह्मा से वर पाना	४६३

छठा खण्ड।

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	गिरिजा समेत शिवका काशी में जा विश्वनाथ का पूजन करना	४६७
२	गिरिजा समेत शिवका आनन्दवन देखने को जाना	५००
३	रत्नभद्रमुनि नाम यक्षराज का शिवकी भक्ति से मुक्ति पाना	५०२
४	सन्तानार्थी पूर्णभद्र का शिव की स्तुति करना व वर पाना	५०४
५	शिवाज्ञा से जगदम्बा का विन्ध्यवासिनी हो दुर्गनाम दैत्य का वध करना ...	५०८
६	रिपुञ्जय दिवोदास राजा से व्यथित ब्रह्मादि देवताओं का विष्णु व शिव के पास जाना	५१३
७	शिवजी का दिवोदास राजा को राज्य से निकालने के लिये योगिनियों को भेजना	५१६
८	योगिनीगणों के न लौटने से चिन्तित शिवजी का सूर्य को काशी में भेजना... ...	५१६
९	सूर्य के न लौटनेसे शिवजी का ब्रह्मा को भेजना... ...	५२३
१०	ब्रह्मा के आने में विलम्ब होने से चिन्तित शिवजी का शंकुकरणादि गणों को भेजना	५२६
११	गणों के न लौटने से काशी की बड़ाई करते हुए शिव का गणपति को भेजना ...	५३२
१२	गणेशके भी न आने पर विष्णु को भेजना व विष्णुसे पूजित मूर्ति का आदिकेशव नाम होना	५३३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१३	चेला व गुरु बन गरुड़ व विष्णु का काशी में बौद्धधर्म का उपदेश देना	५३७
१४	गणपति की आज्ञा से राजा दिवोदासका विप्ररूप विष्णु जीसे उपदेश सुनना ...	५४२
१५	विष्णुजी के उपदेश से राज्य छोड़ दिवोदास का शिवपुर में जाना	५४३
१६	गरुड़ द्वारा विष्णुजी का संदेशा सुन शिव शिवा का हर्षित होना	५४४
१७	गरुड़ का आकर विष्णुजी से शिवागमन कहना ...	५४७
१८	आठ बैलवाले रथ को ला नन्दीश्वर का शिवजी से सवार होने को कहना व देवताओंका जयशब्द करना	५४९
१९	काशी में आये हुए शिव को देखकर जैगीषव्य मुनि का आय चरणों में शीश नवाना	५५२
२०	शिवागमन सुन ब्राह्मणों का दर्शनार्थ जाना	५५५
२१	शिवजी का विश्वकर्मा को शिवनगरी रचने के लिये आज्ञा देना	५५८
२२	हणडन-मुणडन गणों का प्रभात उठकर नये दो शिवालयों का देखना	५६०
२३	शिवजी का काशी में भ्रमण करना व उनका अभिषेक होना	५६१
२४	देवताओं को वरदान दे काशी की बड़ाई कर शिवजी का मुक्तिमणडपकी गाथा कहना	५६४
२५	शृङ्गारमणडप में गिरिजा समेत शिव का विराजमान होना	५६५

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	उत्तरार्ध।	
	सातवां खण्ड।	
१	निर्गुणरूप सदाशिव के सगुणरूप का कीर्तन व रुद्रादि अवतारों का वर्णन	५७१
२	कैलासवासी शिवजी का निरूपण करना	५७५
३	सदाशिवजीके पांच अवतारों का वर्णन	५७८
४	शर्व आदि आठ अवतारों का वर्णन	५८०
५	व्यासावतार का वर्णन ...	५८३
६-७	नारद से ब्रह्माका काल पड़ना व राजा दिवोदास का वर पाना आदि कथा को कहना	५८४
८	शिवजी के अट्ठाईस अवतारों का वर्णन	५८७
९	ऋतञ्जय-व्यास का वेदों के विभागकर पुराणों को प्रकट करना	५८९
१०	अट्ठाईसवें द्वापरमें विष्णुजीको व्यासजी का अवतार लेना	५९३
११	शिलादमुनिसूनु नन्दिकेश्वर अवतार का निरूपण ...	५९५
१२	शिलादमुनि का उस बालक का नन्दी नाम रखना ...	५९७
१३	भैरव का अवतार ...	५९९
१४	वेदोंके कहेहुए परब्रह्मपर ब्रह्मा व विष्णु का विवाद होना	६०२
१५	झगड़ा करते हुए ब्रह्मा व विष्णु के मध्य में शिवजीका ज्योतिःस्वरूपसे प्रकट होना	६०५
१६	भैरव को ब्रह्महत्या लगना	६०६
१७	भैरव के पीछे जाती हुई ब्रह्महत्या को देखकर विष्णु का उसे भैरवविमुक्त्यर्थ वर देनेको कहना	६०८

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१८	वीरभद्रावतार का निरूपण...	६१०
१९	वीरभद्र का यज्ञस्थान को जला देना	६१३
२०	विष्णुजी के हाथ से चक्रका न चलना पर्वत के समान खड़े होना	६१५
२१	शरभ अवतार का वर्णन ...	६१७
२२	महादेव की आज्ञा से वीरभद्र का नरसिंहावतार के क्रोध को शान्त करना... ...	६२२
२३	यक्षावतार का वर्णन ...	६२४
२४	ग्यारह रुद्रावतार का निरूपण	६२६
२५	अत्रिमुनि के यहां दुर्वासावतार का होना	६२९
२६	दुर्वासा का राम कृष्णकी परीक्षा लेकर वर देना ...	६३२
२७	ग्रहपति के अवतार का वर्णन	६३४
२८	शिवके वरदान से अच्छे समय सचक्षुमती के गर्भ रहना	६३८
२९	वृषेश्वर शिवजी के अवतार का वर्णन	६४०
३०	पिप्पलाद अवतार का वर्णन	६४३
३१	महेश अवतार का वर्णन ...	६४४
३२	अवधूतपति अवतारका वर्णन	६४५
३३	श्रीहनुमान्‌जी के अवतार का वर्णन	६४९
३४	रामावतार का वर्णन ...	६५०
३५	रामचन्द्र अगस्त्य संवाद ...	६५३
३६	रामचन्द्र का अगस्त्य के चरणों में गिरना ...	६५५
३७	रामचन्द्र का गोदावरीतट पर शिवलिङ्गकी स्थापना करना	६५७
३८	रामचन्द्र का शिवचरणों में वन्दना करना	६५९
३९	शिवजी का रामचन्द्र को गीताका ज्ञान देना ...	६६२
४०	अञ्जनी का पर्वत के शिखर से पवनपूत को ढकेल देना	६६४
४१	विष्णुजी का हनुमान् को वर देना	६६५
४२	पवन का हनुमान् को गोद में लेकर अञ्जनी के पास जाना	६६७
४३	माता पिता की आज्ञा से हनुमान् का पम्पापुर जाना	६६९
४४	वेश्यानाथ अवतार का वर्णन	६७१
४५	द्विजेश अवतार का वर्णन	६७४
४६	जितनाथ अवतार का वर्णन	६७६
४७	कृष्णदास अवतार का वर्णन	६७८
४८	भिक्षुनाथ अवतार का वर्णन	६८२
४९	नरजरेश्वर अवतार का वर्णन	६८४
५०	जटाधारी अवतार का वर्णन	६८५
५१	नर्तकनट अवतार व द्विजावतार का वर्णन	६८७
५२	अश्वत्थामा अवतार का वर्णन	६८८
५३	किरातेश्वर शिवावतार ...	६९१
५४	पाण्डवों का द्वैतवन में जाना	६९३
५५	व्यासजी के उपदेश से अर्जुन का तेजस्वी होना ...	६९५
५६	तपसे तुष्ट शिवजी का अर्जुन के निकट जाना	६९७
५७	शिवसेना देख अर्जुन का धनुर्बाण लेजाना ...	७००
५८	द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन	७०२

आठवां खण्ड।

१	लिङ्गों की महिमा ...	७०५
२	मत्तगयन्द लिङ्ग का वर्णन	७०८
३	अत्रीश शिवलिङ्ग की महिमा	७१०
४	नर्मदा तट पर प्रसिद्ध लिङ्ग	७१४
५	रेवा के किनारे शिवलिङ्गों का कीर्तन	७१५
६	रेवानदी के तटपर ब्रह्मा, विष्णु से देवताओंका अविनाशी पुरुष को पूछना ...	७१७
७	ब्रह्मा, विष्णु के बीच लिङ्ग-	

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	रूप शिवका प्रकट होना ...	७१८
८	विष्णुजी के अहंकार का दूर होना	७१९
९	शिवका क्रोधित हो ब्रह्माको शाप देना	७२१
१०	पश्चिम देश के शिवलिङ्गों का वर्णन	७२४
११	मित्रसह व महाबल शिवलिङ्ग का चरित्र ...	७२७
१२	गौतमर्षि व राजा का संवाद	७२८
१३	राजा का गौतम से मार्ग में देखी बात पूछना ...	७३१
१४	उत्तर के शिवलिङ्गों का वर्णन	७३३
१५	पापहारी लिङ्गोंका निरूपण	७३६
१६	शिवलिङ्ग पूजने का प्रचार	७३७
१७	अन्धकेश्वर शिवलिङ्गकीकथा	७३९
१८	देवलका वृत्तान्त	७४१
१९	बारहो ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन	७४३
२०	चन्द्रमा का प्रभासक्षेत्र में शिवलिङ्ग स्थापन ...	७४४
२१	मल्लिकार्जुनशिवलिङ्गका वर्णन	७४६
२२	तीसरे ज्योतिर्लिङ्ग की महिमा	७४८
२३	चन्द्रसेन का महाकाल की पूजाकर चिन्तामणि पाना	७५१
२४	हनुमान् का महाकाल की महिमा कहना	७५२
२५	चौथे ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन	७५४
२६	शिव को विन्ध्याचल का प्रणाम करना	७५६
२७	स्वायंभुवराजाद्वारा धर्मवर्णन	७५९
२८	कामरूप देश में शिव उत्पत्ति	७६०
२९	भीमका कोपितहो तप करना	७६१
३०	भीमका शिवभक्त कामरूप देशाधिप को सताना ...	७६४
३१	शिव से उपजी ज्वाला से भीमका भस्म होजाना ...	७६५
३२	विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग वर्णन	७६९
३३	निर्गुणरूप ज्ञान में कठिनता	७७१
३४	विश्वनाथ व काशी का चरित्र	७७२
३५	काशीदर्शनार्थ स्त्री का कृपण पति से संवाद	७७४
३६	वनमें कृपण व शैवका समागम	७७५
३७	शैवका कृपण को शिक्षा देना	७७६
३८	काशीपुरी के प्रसिद्ध लिङ्गों का वर्णन	७७९
३९	त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन	७८१
४०	गौतम की बातों का प्रसिद्ध होना	७८५
४१	गौतम की विनय से तुष्ट शिवजी का वर देना ...	७८६
४२	गौतमी गङ्गा की प्रधानता वर्णन	७८८
४३	वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्गका वर्णन	७९०
४४	शिवजीका माया प्रकटकरना	७९२
४५	शिवलिङ्ग व रावणका निरूपण	७९५
४६	कैलास में रावण का तप ...	७९७
४७	नागेश ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र	८००
४८	जय-विजय को शाप होना...	८०१
४९	श्रीरामचन्द्र का शिवाराधन	८०२
५०	घुस्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्गका वर्णन	८०४
५१	घुस्मा के पुत्र होनेसे सुदेहा को दुःख होना ...	८०६

नववां खण्ड।

१	नाममहिमा, भस्ममाहात्म्य, रुद्राक्षप्रशंसा	८१०
२	सुमति नामक स्त्री का चरित्र	८११
३	इन्द्रसेन राजा का चरित्र ...	८१३
४	असमचित्त ब्राह्मण इतिहास	८१६
५	पञ्चाक्षरी मन्त्र का माहात्म्य	८२१
६	भस्म का माहात्म्य व महिमा	८२६
७	वामदेव-शिवयोगी इतिहास	८२९
८	वामदेवभणित भस्मका प्रभाव	८३१
९	वेदज्ञ गुरु की शिक्षा से शिव की प्रसन्नता	८३५

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१०	दशारण्य के राजा वज्रबाहु का चरित्र	८३८
११	रुद्राक्ष का माहात्म्य ...	८४३
१२	रुद्राक्ष धारण क्रम वर्णन ...	८४६
१३	काश्मीराधिपात्मज सुधर्म का इतिहास	८५०
१४	शिवकीर्तनका श्रवण व मनन	८५४
१५	शिववीरलिङ्गपूजन का प्रश्न	८५६
१६	देवस्तुति से सदाशिव का प्रसन्न होना	८५७
१७	विष्णुपर प्रसन्न व ब्रह्मापर कोपित होना	८६०
	दशवां खण्ड।	
१	शिवजी के द्वादश व्रतों का निरूपण	८६४
२	प्रातःकाल शिवालयमें जाना	८६७
३	शिवरात्रिव्रतोद्यापनविधि ...	८६८
४	शिवरात्रिव्रत की कथा ...	८७४
५	यज्ञदत्त ब्राह्मण की शिवभक्ति	८७७
६	सौमणिब्राह्मणकन्याका चरित्र	८७९
७	शिवरात्रिव्रत से मित्रसह का बड़ा पद पाना	८८१
८	राजा विमार्षण का चरित्र ...	८८४
९	प्रदोषव्रत का माहात्म्य ...	८८६
१०	शिवभक्त चन्द्रसेन राजा की शरण में शत्रुओं का आना	८८८
११	शिवप्रिय त्रयोदशी का व्रत	८९१
१२	शाण्डिल्य का ब्राह्मणी को उपदेश	८९३
१३	इन्द्र व वृत्रासुर युद्धकथा	८९७
१४	एकादशीव्रत का माहात्म्य	९००
१५	सोमव्रत तुल्य अष्टमीव्रत माहात्म्य	९०३
१६	ब्रह्मा के पाँचवें शीश का भङ्ग होना	९०६
१७	सोमप्रदोषव्रत का माहात्म्य	९०८
१८	नैषधदेशके राजानलका चरित्र	९१०
१९	चित्राङ्गद राजा का चरित्र	९१२
२०	सीमन्तिनी रानी का चरित्र	९१४
२१	देवमित्र व सारस्वत के पुत्रों का चरित्र	९१८
२२	वार्षिक व्रतों का वर्णन ...	९२१
२३	अन्धमुनि व शारदाका चरित्र	९२३
२४	शारदा के पुत्र उपजना ...	९२५
	ग्यारहवां खण्ड।	
१	सगुण, निर्गुण शिवरूप वर्णन	९३०
२	अनल का वृत्तान्त ...	९३३
३	कण्व महापापी का वृत्तान्त	९३५
४	शची की बातें सुन इन्द्र का लज्जित होना	९३८
५	तलातल लोक का वृत्तान्त	९४१
६	पूर्वोक्त सात लोकों का मान	९४३
७	नरकराजों का निरूपण ...	९४८
८	भूलोक, द्वीप, सागरों का वृत्तान्त	९५०
९	सर्वखण्डनिवासी शिवभक्तों का चरित्र	९५४
१०	जम्बूद्वीप व उपद्वीपोंका वर्णन	९५८
११	भुवर्लोक का निरूपण ...	९६२
१२	स्वर्लोक के मन्दिरोंकी प्रशंसा	९६४
१३	चन्द्रलोक का वर्णन ...	९६९
१४	शुक्रलोक का वर्णन ...	९७४
१५	ऋषिलोक का वर्णन ...	९७७
१६	महर्लोक का वर्णन ...	९८२
१७	मन्वन्तरों का वृत्तान्त ...	९८५
१८	वैवस्वत मन्वन्तर का वृत्तान्त	९८८
१९	श्राद्धदेव के वंशका वर्णन ...	९९१
२०	इक्ष्वाकुवंश का वर्णन ...	९९६
२१	राजा सगर की उत्पत्ति ...	९९८
२२	सगर के साठ हज़ार पुत्रों की उत्पत्ति	१०००
२३	राजा दिलीप के धर्मों का निरूपण	१००२
२४	श्राद्धदेव का सर्व वृत्तान्त	१००६
२५	भरद्वाज के पुत्रों का विश्वामित्र के घरमें उपजना ...	१०१०
२६	ब्राह्मण के पुत्रों का ब्रह्मदत्त राजा से मिलना ...	१०१२

शिवपुराण भाषा का सूचीपत्र समाप्त।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूमिका

शिवं शिवार्धावयवं शिवंकरं
हरं महामोहहरं हरिप्रियम् ।
गौरं गुरुं गङ्गतरङ्गसङ्गमं
भवं भवाभावकरं भजाम्यहम् ॥ १ ॥
गणेशं श्रीहरिं दुर्गां रविं शम्भुं सरस्वतीम् ।
विधातारमहं वन्दे सुरेन्द्रप्रमुखान्सुरान् ॥ २ ॥

इस समय यह "शिवपुराण" जो कि सर्वपुराणों में अत्युत्तम गिना जाता है पूरा कहीं मिलता नहीं है जहां कहीं राजा महाराजा या महीसुर विद्वानों के मन्दिरों में मिलता है वह अधूरा ही देख पड़ता है यदि किसी महात्मा शिवभक्त के घर पूरा मिलता भी है तो उसमें क्रम नहीं है यदि इतिहास का क्रम भी ठीक है तो चौबीस हज़ार श्लोक गणना में पूरे नहीं हुए इसलिये अतिदीन मतिहीन सूबे अवध उन्नामप्रदेशान्तर्गत काँथाग्रामनिवासी ताल्लुक़दार परमोदार ठाकुर रणजीतसिंह सूनु शिवासिंह इन्स्पेक्टर पुलिस ज़िले रायबरेली दशवर्ष से इस शिवपुराण के खोज में रहे कि कोई पुस्तक संपूर्ण मिलजावे तो उसका भाषानुवाद कर शिवभक्तों के जोकि बान्धवों से कम नहीं हैं उनके समर्पण करूं इसी भांति खोज करते २ जहां २ उक्त पुराण की पुस्तकें मिलीं इकट्ठा करके देखीगईं परन्तु कोई पुस्तक ऐसी न मिली कि जिसका अनुवाद किया जाता सन् १८६६ ई० में बहुतसे पण्डितों के कथनानुसार विदित हुआ कि ज़िले रायबरेली के अन्तर्गत वाजपेयी खेरे के रहनेवाले महामहोपाध्याय श्रीमान् पण्डित महानन्द वाजपेयीजी जोकि शिवा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राधन करते हुए शिवभक्तों में अद्वितीय महानुभाव होगये हैं उन्होंने शिवपुराण को दक्षिणदेश के अटनसे इकट्ठा किया है उसके समान इस देश में दूसरा शिवपुराण नहीं पायाजाता है उसको उन्होंने मँगाया उक्त पुस्तक के अवलोकन करने से पण्डितों का वर्णन ठीक पाया उसका अनुवाद प्रथम उर्दू भाषा में किया उसको लेकर श्रीमान् भार्गववंशीय " सी. आई. ई.," मुंशी नवलकिशोरजीने निजव्यय से काश्मीरी पण्डित प्यारेलालशर्माजी से देशभाषा में अनुवाद कराकर निज यन्त्रालय में प्रकाशित किया इसकी भाषा ऐसी हुई कि सर्वसाधारणजनों के समझ में आसक्ती है आशा है कि सदाशिवभक्तगण इस पुस्तक को अवश्य स्वीकार करेंगे क्योंकि प्रायः उन शिवगणों का यह कथन रहता है कि:-

माता च पार्वती साक्षात्पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १ ॥

पार्वती माता व महेश्वरदेव साक्षात् पितारूप हैं व शिवभक्त बान्धव हैं और तीनों भुवन अपनाही देश है इस वचन से इस पुराण को सभी शिवभक्तों को अपने निकट रखना चाहिये व प्रतिदिन समाजसमेत शिवजी की कथा का कीर्तन करना परमावश्यक है।

इत्यलं बहुज्ञेष्विति शम् ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवपुराणके ग्यारहोंखण्डकी सूची ॥

(१) निर्गुण सगुणरूपका वर्णन (२) सतीचरित्र (३) गिरिजा चरित्र (४) स्कन्दखण्ड (५) युद्धखण्ड (६) काश्युपाख्यान (७) शतरुद्रखण्ड (८) लिङ्गखण्ड (९) रुद्राक्ष व भस्म व मन्त्र माहात्म्य (१०) व्रतखण्ड (११) भूगोल व खगोल ॥

उन बातोंका बखान जो भूमिका में वर्णन कीगई हैं और वे शिवपुराण में नहीं हैं ॥

संख्या	नाम	संख्या	नाम	संख्या	नाम
४	वेद	२२	सुरत	७	ऋषि
५२	उपनिषद्	१२	ताल	३	अग्नि
१८	स्मृति	१०	अनहदशब्द	३	गुण
१८	पुराण	४	युग	८	वसु
१८	उप पुराण	४	वर्ण	३३	देवता
६	शास्त्र	४	आश्रम	१०	दिग्गज
१६	सूत्र	१०	ब्राह्मण	१०	दिक्पाल
७	पदार्थ	३६	क्षत्रिय	९	ग्रह
१४	गुण	१८	वर्ण	१४	इन्द्र
८	योग	१०	दिशा	३	देवता
१२	महायज्ञ	१०	विष्णु के अवतार	१४	परमभागवत
७	राग	१००	सदाशिवजी के अवतार	१४	परमपाशुपत
३६	रागिनी	१२	आदित्य		परमशाक्त
४९	तान	११	रुद्र		परमगाणपत्य
२१	मूर्च्छना				

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संख्या नाम	संख्या नाम	संख्या नाम
सम्पूर्ण देवशास्त्र	३६ व्यञ्जन	७व १००० छन्द
१४ सिद्धान्त	५ अमृत	१० महाविद्या
६४ तन्त्र	५ गव्य	९ दुर्गा
१४ विद्या	१० शाक	११ रुद्राणी
६४ कला	८ मूर्ति	५२ पीठ
७ द्वीप	३ नाड़ी	५२ भैरव
९ खण्ड	३ दोष	१०५ दक्षकन्या
७ समुद्र	१४ लोक	२८ नक्षत्र
७ पुरी	७ स्वर	६० संवत्सर
४ वन	३ ग्राम	१६ स्कन्दमाता
५ वृक्ष	ब्रह्मर्षि	१६ मनुस्त्री
गङ्गाआदिसु-	राजर्षि	५ कन्या
रनदी प्रयाग	पितृगण	१६ शृङ्गार
व पुष्करादि	दैत्यआदि	१२ आभूषण
तीर्थ	६४ योगिनी	८ लोकपाल
१४ रत्न	९ नाथ	१३ बिश्वेदेवात्र
८ सिद्धि	१७ वाहन	१४ मन्वन्तर
९ निधि	२४ गुरु	९ रस
४ फल	६ काव्य	भावआदि
४ मोक्ष	१० अङ्गकाव्य	१८ व्यसन
७ धातु	१० पुराणलक्षण	६ अकर्म
७ उपधातु	५ प्रकृति	५ जगउपचार
७ धान	८ शक्ति	९ नवधाभक्ति
१७ धान्य	५ वैश्य	१० इन्द्रिय
६ रस	७ शूद्र	७ धातु

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संख्या नाम	संख्या नाम	संख्या नाम
५ तत्त्व	४ दर्शन	५ महाभूत
६ अङ्गवेद	२५ प्रकृति	१० वायु
१४ भुवन	५ रत्न	तीर्थदानव्रत
८४ लक्षयोनि	९ रत्न	
४ राजनीति	११ रत्न	

अन्य आवश्यक वस्तुओं की सूची जिनको उल्थक ने अन्य पुराणों मेंसे छांटकर संग्रह किया॥

(१) गुरुकी शुश्रूषा (२) दीक्षाविधि (३) माला व आसन व जप (४) त्रिपुण्ड् तिलक (५) षोड़शोपचार (६) परोक्षना (७) बिल्वपत्रमहिमा (८) पुष्प (९) धूप (१०) मुद्रा (११) व्रत (१२) तीर्थयात्रा (१३) दान॥

अब मैं श्रीमत्परब्रह्म परमेश्वर निराकर निरवयव अच्युत अनन्त त्रिपुरारि त्रिशूलधारि त्रैलोक्यनाथ परमकल्याणरूप शिवजी महाराज के चरण कमलोंका ध्यानरखकर और अलख निरञ्जन भगवान् परमेष्ठी विधाता चक्रपाणि का स्मरण करके सूचीपत्र की लिखीहुई बातोंका विस्तार वर्णन करताहूं॥

वेद चार हैं ऋग्, यजु, साम, अथर्वण। पुराण १८ हैं और उप-पुराण भी अठारह हैं जिनके नाम यह हैं पद्म १ स्कन्द २ गरुड़ ३ मत्स्य ४ वायु ५ ब्रह्माण्ड ६ लिङ्ग ७ अग्नि ८ कूर्म ९ वामन १० नारदीय ११ विष्णु १२ भविष्योत्तर १३ मार्कण्डेय १४ वाराह १५ भारत १६ ब्रह्मवैवर्त्तक १७ भागवत १८॥ उपपुराण॥ काली १ साम्ब २ सनत्कुमार ३ वरुण ४ मारीच ५ नन्दी ६ शिव ७ दुर्वासा ८ मनु ९ नारदीय १० कपिल ११ सौर १२ माहेश्वरी १३ शुक्र १४ भार्गव १५ नृसिंह १६ धर्म १७ पाराशर १८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यथा श्लोक अष्टादशपुराणे ॥

पद्मस्कन्दविहंगमत्स्यपवनं ब्रह्माण्डलिङ्गाग्नयः
कूर्मो वामननारदीयसहितं विष्णुं भविष्योत्तरम्।
मार्कण्डेयवराहभारतयुतः श्रीब्रह्मवैवर्त्तकः
श्रीमद्भागवतं दिशन्तु परमं श्रेयः पुराणानि वै ॥ १ ॥

यथा अष्टादशउपपुराणे ॥

कालीसाम्बसनत्कुमारवरुणं मारीचनन्दीशिवं
दुर्वासं मनुनारदीयकपिलं सौरं च माहेश्वरम्।
शुक्रं भार्गवकं नृसिंहमपरं धर्मं च पाराशरं
कुर्वन्त्यौपपुराणकानि सततं सौख्यानि त्वष्टादश ॥ २ ॥

और अठारह स्मृति ने यद्यपि वेद और पुराण का आशय लेकर बहुत कुछ पाप पुण्य कहा पर जब उन्होंने देखा कि गुणनिधि, गङ्गा, गज, सौरमुनि, समचित्त, व्याध, अजामिल आदि सीधे उस पदको पहुँचे जो बड़े २ धर्मात्माओं को स्वप्नमें भी नहीं मिलसक्ते तो वह भी आश्चर्य में गूंगे बहरे होकर अपनी क्षुद्रता और मूर्खताको माननेलगे और छःशास्त्रका यह हाल है कि पूर्वमीमांसावाले स्वर्गकी प्राप्तिको मोक्ष कहते हैं और उस स्वर्गका प्राप्तकरना वेदकी आज्ञापर घटाते हैं और उसके विपरीत नरक मानते हैं और उत्तम कार्य और मन्त्रको देवता मानतेहैं और न्याय और बैशेषिक इकीस क्लेश से छूटनेको मोक्ष कहते हैं और अपनी मुक्ति केवल सोलह या सात पदार्थ के ज्ञान को बतलाते हैं और कारण अर्थात् सूक्ष्मरूपको नित्य और कार्य अर्थात् स्थूलरूप को अनित्य कहकर आत्मा, आकाश, काल, दिशा और मनको सच्ची चीजें और ठीक प्रकट करते हैं और मनके सिवाय चारोंको व्यापक जानकर केवल कर्मको बीजरूप समझते हैं और बीजरूपके सिवाय सम्पूर्ण वस्तुओंको जो उत्पन्न हुई हैं नाशवान् जानते हैं और कहते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि चौदह गुण संसार के कारण हैं और परमात्मा में आठ गुण हैं और सब काम समय पर होते हैं और न्याय इस बातको भी नहीं मानता है और आत्मा तीन प्रमाण से नाशवान् नहीं एक अणुप्राण दूसरा मध्यम तीसरा परममहत् और पातञ्जलि सांख्य प्रकृति व पुरुष की समाधि अवस्था में लयहोने को 'मोक्ष' कहते हैं और अष्टाङ्ग योग से मन की शुद्धता और मनकी शुद्धि से ज्ञान और ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होना बताते हैं और कहते हैं कि प्रकृति नाश नहीं होती वेदान्त अपने स्वरूप में लय होने को मुक्त और निष्कामताको उत्तम कर्म कहते हैं और 'तत्त्वमसि' 'एकोऽहम्भविष्यामि' 'एकमेव द्वितीयंनास्ति' आदि बारह यज्ञ वेदान्त में हैं जिनका संक्षेप यह है कि सम्पूर्ण वस्तु जो उत्पन्न होती हैं वहसर्व नाशवान् हैं और जो वस्तु तीनोंसमय में स्थिर रहे वही सत्यपदार्थ है और जो वस्तु चैतन्य है वह सदा आनन्दस्वरूप है और ब्रह्म और जीव में कुछ भेद नहीं जैसे कि नदी और लहर मटुका और मट्टी आग और चिनगारी वास्तवमें एक हैं पर दो मालूम होते हैं और ब्रह्म में माया और माया में ब्रह्म रात दिनकी तरह एकरस व्यापक हैं और जगत् का कर्ता व अकर्ता ईश्वर है और माया को सच या झूठ कहना कठिन है संसार संकल्पमात्र है और ब्रह्म ईश्वर जीव अविद्यासम्बन्ध अविद्या का चैतन्य है और अनादि वस्तु का भेद यह छः वस्तु अपनेस्वरूप के साथ सनातन से हैं और दुःख और सुख केवल अन्तःकरण का धर्म है और अन्त में हर एकको कर्मोंके अनुसार आशा होती है और परलोक भी कल्पनामात्र है॥

अब अठारह स्मृति के नाम लिखते हैं मनु १ याज्ञवल्क्य २ मिताक्षरा ३ हारीत ४ पाराशर ५ भृगु ६ आदि पर इससमय में पाराशर स्मृतिका अधिकप्रचार है बाक़ी सामापत ७ कात्यायन ८ वशिष्ठ ९ भरद्वाज १० कौशिक ११ बार्हस्पत्य १२ गौतम १३ कश्यप १४

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आसुर १५ जमदग्नि १६ अस १७ यम १८ (शास्त्र ६) मीमांसा १ पातञ्जलि २ सांख्य ३ न्याय ४ वैशेषिक ५ वेदान्त ६ सो सांख्य शास्त्र के उत्पन्न करनेवाले कपिलमुनि हैं–पातञ्जलि के शेष – वेदान्त और न्याय के वशिष्ठ–मीमांसाको जैमिनि और वैशेषिकको गौतमजी ने निर्माण कियाहै छः इन्द्रिय अर्थात् नाक १ कान २ आंख ३ जिह्वा ४ त्वचा ५ मन ६ और इन छःइन्द्रियोंके छःविषय और छःज्ञान और दुःख सुख और शरीर–सोलह पदार्थ–प्रमाण १ प्रमेय २ संशय३ प्रयोजन ४ दृष्टान्त ५ आदीब ६ सिद्धान्त ७ तर्क ८ निर्णय ९वाद १० जल्प ११ वेदनिन्दा १२ हेत आभास १३ निग्रह स्थान सातपदार्थ द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवायु ६ अभाव ७ चौदहगुण–बुद्धि १ सुख २ दुःख ३ इच्छा ४ द्वेष ५ यत्न ६ संख्या ७ प्रमाण ८ पृथक्क ९ संयोग १० विभाग ११ भावना १२ धर्म १३ अधर्म १४ अष्टाङ्गयोग यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ और यम पांच प्रकार का है किसी जीव को दुःख न देना १ सचाई २ चोरी न करना ३ ब्रह्मचर्य से रहना ४ और किसीसे कुछ न मांगना और नियमभी पांचप्रकारका है तपस्याकरना १ जप २ शौच ३ ईश्वर का पूजन ४ और आसन ५ और प्राणायाम श्वास रोकनेको कहते हैं और प्रत्याहार इन्द्रियों के प्रियकर्म से बचने का नाम है महायज्ञ तत्त्वमसि आदि है अन्तःकरण चार प्रकार का है मन १ चित्त २ बुद्धि ३ अहंकार ४ ५२ उपनिषद् माण्डूक्य १ बृहदारण्य २ ईशावास्य ३ मयत्री ४ मुण्डक ५ सर्व ६ हंस ७ नारायण ८ प्रणव ९ अथर्व १० सरहंस ११ अमृत १२ कोकनिक १३ शरत् १४ आसुर १५ वेद १६ महात्मा १७ प्रबोध १८ केवल १९ शतरुद्रय २० योग २१ अथर्वशिखा योगतत्त्वानन्द २२ अथर्वशिखा २३ शिवसंकल्प २४ आत्मा २५ ब्रह्मविद्या २६ अमृत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेद २७ तेजबन्धि २८ गवय २९ यामालि ३० महानारायण ३१ छागडूक ३२ शुक्ल ३३ क्षूरिका ३४ परमहंस ३५ अर्बुक ३६ केन ३७ केवली ३८ आनन्दवल्ली ३९ भृगुवल्ली ४० भृगुसूक्त ४१ योगशिखा ४२ मृतलांगूल ४३ अमृतनाद ४४ झांकली ४५ मास्कल ४६ तारक ४७ अरुकनी ४८ प्रणव ४९ सुमक ५० नृसिंह ५१ अमरमाध्वी ५२ ॥ ऊपर के लोक ॥ भर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ नीचेके लोक ॥ अतल १ वितल २ सुतल ३ महातल ४ तलातल ५ रसातल ६ पाताल ७ ॥ वेद में काण्ड तीन हैं ॥ कर्मकाण्ड १ उपासनाकाण्ड २ ज्ञानकाण्ड ३ ॥ अनहद शब्द दश प्रकार का है ॥ घण्टा १ शङ्ख २ वीणा ३ ताल ४ बांसुरी ५ मृदङ्ग ६ नफीरी ७ बादल के गरज के सदृश आदि ८ ॥ स्वर ॥ षड्ज १ ऋषभ २ गान्धार ३ मध्यम ४ पञ्चम ५ धैवत ६ निषाद ७ ॥ छः राग ॥ भैरव १ मालकौस २ हिण्डोल ३ दीपक ४ श्री ५ मेघ ६ ॥ ३६ रागिनी ॥ भैरवकी रागिनी ॥ भैरवी १ रामकली २ गुर्जरी ३ टोड़ी ४ बैराटी ५ ॥ रागिनी मालकौस ॥ बागेश्वरी १ कुकुभा २ पर्णिका ३ सोहनी ४ खम्भावती ५ ॥ रागिनी हिण्डोल ॥ बसन्ती १ पञ्चमी २ विलावली ३ ललिता ४ देशाकुशनी ५ श्रीरागकी रागिनी ॥ मालवी १ त्रिबन्नी २ गौरी ३ पूर्बी ४ जटनकुटा ५ ॥ मेघराग की रागिनी ॥ सोरठी १ मलारी २ शार्ङ्गी ३ हरिवंशा ४ मधुमाधवी ५ ॥ दीपक की रागिनी ॥ धनाश्री १ नट २ जैत ३ भीमपलाशी ४ कामोदा ५ और कई रागमालाओं में और तरह के नाम लिखे हैं यदि विस्तार से इन की भार्या और पुत्र लिखेजावें तो इस संक्षेप में समाई नहीं ॥ बाजा ॥ केवल साढ़े तीन हैं अर्थात् खाल १ तार २ फूंक ३ पहिले में नगारा, ढोल, पखावज आदि गिनेगये हैं और दूसरे में तम्बूरा, सारङ्गी, वीणा, सितार आदि और तीसरे में नफीरी, बांसुरी, सहनाई आदि और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आधेबाजा में मंजीरा, झांझ आदि गिनेगये हैं॥ चारयुग॥ सत्ययुग १ त्रेता २ द्वापर ३ कलियुग ४ और इन चारोंयुगों की अवधि इस विस्तार से है सत्ययुग १७ लाख १८ हज़ार वर्ष त्रेतायुग १२ लाख ९६ हज़ारवर्ष द्वापरयुग ३ लाख ६४ हज़ार वर्ष कलियुग ४ लाख तीन हज़ारवर्ष सब ३८ लाख ९२ हज़ार सातसौ सैंतालीसवर्ष बाक़ी कल्प और मन्वन्तरों का ब्योरा शिवपुराण में लिखा है॥ ६ ऋतु॥ हिम १ शिशिर २ बसन्त ३ ग्रीष्म ४ वर्षा ५ शरद् ६॥ छःप्रकार की ईति॥ काल १ अवर्षण २ टिड्डी ३ मूष ४ ओलापड़ना ५ अधिकवर्षा ६॥ चारवर्ण॥ ब्राह्मण १ क्षत्रिय २ वैश्य ३ शूद्र ४ प्रकट हो कि ब्राह्मण दशप्रकार के क्षत्रिय छः भांति के वैश्य पांचतरह के शूद्र सात प्रकार के उत्तम हैं बाक़ी और जो हैं वह भी अच्छे हैं परन्तु वह लोग पुराणों में किसी वर्ण में गिने नहींगये उनको अधम और वर्णसंकर के नाम से लिखा है इस जगह कुछ संक्षेप से ब्योरा लिखा जाता है ब्राह्मण दश हैं॥ पञ्च गौड़ में॥ सारस्वत १ कान्यकुब्ज २ गौड़ ३ मैथिल ४ उत्कल ५॥ पञ्चद्राविड़ में॥ गुर्जर १ द्राविड़ २ महाराष्ट्र ३ कर्णाटक ४ तैलङ्ग ५॥ क्षत्रिय बारह हैं प्रथम सूर्यवंशी जिसमें कछवाहा और रैठोर आदि छः क्षत्रिय हैं दूसरे सोमवंशी जिनमें यदुवंशी व चन्देल आदि छः क्षत्रिय हैं॥ वैश्य॥ जो बारहप्रकार के हैं और दशभांति के भी हैं और इनमें की सुनार आदि हैं शूद्र में कायस्थ हैं जो बारह प्रकार के हैं और अहीर, नाई, कोरी, काछी आदि संयुक्त हैं यद्यपि कायस्थों का हाल भविष्योत्तरपुराण में भी पाया जाता है पर पद्मपुराण में अधिक है॥ चार आश्रम॥ पहिला ब्रह्मचर्य अर्थात् सोलह वर्षपर्यन्त विद्या सीखना॥ दूसरा गृहस्थ अर्थात् ३२ वर्षपर्यन्त गृहस्थी कार्य में प्रवृत्त रहना॥ तीसरा वानप्रस्थ अर्थात् अड़तालीस वर्षतक योग में स्थिररहे॥ चौथा संन्यास अर्थात् चौंसठवर्षतक दण्ड को लिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहे ॥ फिर परमहंसका नाम पाता है पर कलियुग में संन्यास और अश्व-
मेधयज्ञ व गोमेधयज्ञ और मांस के पिण्ड और देवर से पुत्रोत्पत्ति नि-
षेधहैं छन्द चाहे यह एकहजारतक हैं पर मैंने छः सौ तक देखे हैं और
छन्दनाम वेदका भी है सो वह सातछन्द हैं–दशोंदिशा पूर्व १ अग्नि २
दक्षिण ३ नैर्ऋत्य ४ पश्चिम ५ वायव्य ६ उत्तर ७ ईशान ८ स्वर्ग ९
भूमि १० जिनके अधिपति क्रम से इन्द्र १ अग्नि २ यम ३ कु-
बेर ४ वरुण ५ वायु ६ राजराज ७ हर ८ ब्रह्मा ९ विभत्स १० हैं ॥
अठारहवर्ण ॥ चारवेद, चारवर्ण, चारयुग, तीनलोक, तीनकाल, स-
म्पूर्ण १८ ॥ श्रीविष्णुजीके दश अवतार ॥ मत्स्य १ कूर्म २ वाराह ३
नृसिंह ४ वामन ५ परशुराम ६ राम ७ कृष्ण ८ बौध ९ कलङ्की १० ॥
व श्रीशिवजीमहाराज के सौ अवतार ॥ वामदेव आदि ५ शर्वादि ८
महाकालादि १० अहिर्बुध्न्यादि ११ जैगीषव्यादि २८ ज्योतिर्लिङ्ग ॥
नन्दीभैरव, वीरभद्र, स्कन्द, कृतमुख, सर्वचक्षुदुर्वासा, ग्रहपति, वागीश,
पिप्पलाद, अवधूतपति महेश, शार्दूलहनुमान्, वैश्यानाव, जितनाथ,
द्विजद्विजेश, नरजरेश, भिक्षुकजटल, नर्तक, नटादिसम्पूर्ण १०० ॥
ग्यारह रुद्र शिवपुराण में लिखेहैं परन्तु कोषादि की पुस्तकों में ग्यारह
रुद्र और बारह सूर्य के नाम अन्यरीति पर लिखे हैं जैसा कि लिखा-
जाताहै ॥ ग्यारह रुद्र ॥ पशुपति १ भैरव २ रुद्र ३ विश्व ४ विशेष ५
अघोर ६ रूप ७ त्र्यम्बक ८ कपर्दि ९ शूल १० ईशान ११ ॥ द्वादश
सूर्य ॥ सूर्य १ वरुण २ वेदाङ्ग ३ रवि ४ भानु ५ गभस्ति ६ विष्णु ७
दिवाकर ८ मित्र ९ यम १० रैति ११ आदित्य १२ ॥ सप्तऋषि ॥
कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ वशिष्ठ ४ गोतम ५ विश्वामित्र ६
जमदग्नि ७ इस मन्वन्तर में सप्त ऋषि हैं ॥ सात प्रकारकी राजश्री ॥
मन्त्री १ शस्त्र २ घोड़ा ३ हाथी ४ देश ५ कोष ६ गढ़ ७ यह सात
राजश्री कहलाते हैं और राजोंको यह सातवस्तु आवश्यक हैं ॥ चौदह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परम भागवत ॥ प्रह्लाद १ नारद २ पराशर ३ अम्बरीष ४ व्यास ५ शुक ६ शौनक ७ भीष्म ८ रुक्म ९ अङ्गद १० अर्जुन ११ पुण्ड-रीक १२ वशिष्ठ १३ विभीषण १४ आदि ॥ चौदह परम पशुपति ॥ दुर्वासा १ कौशिक २ ब्रह्मा ३ मार्कण्डेय ४ ऐन्द्र ५ बाणासुर ६ विष्णु ७ शुक्ति ८ मरीचि ९ रामचन्द्र १० गणादि ११ भार्गव १२ बृहस्पति १३ गोतमादि १४ ॥ हथियारोंके नाम ॥ खट्वाङ्ग १ खड्ग २ चर्म ३ पाश ४ अंकुश ५ डमरू ६ शूल ७ चाप ८ बाण ९ गदा १० शक्ति ११ भिन्दिपाल १२ तोमर १३ मुशल १४ मुद्गर १५ पट्टिश १६ परिघ १७ भुशुण्डी १८ चक्र १९ आदि ॥ चौंसठतन्त्र ॥ वीर १ सुतन्त्र २ फट्कारी ३ गलचूड़ामणि ४ कालीकल्प ५ कालिकाकुल ६ काली ७ तत्त्व ८ भैरव ९ कौमारी १० कालक ११ कोलार्णव १२ ज्ञानार्णव १३ कालकुलार्णव १४ शारदातिलक १५ कालिका श्रुति १६ कौमारीकल्प १७ बीजचूड़ामणि १८ उत्तरविजयाकल्क १९ रुद्रयामलि २० सम्मोहन २१ नारायणी २२ सारस्वत २३ भावचूड़ा-मणि २४ श्रीकर्म २५ क्षीणतुण्ड २६ विमलेश्वरी २७ मुण्डमाला २८ संकर्षणगन्धर्व २९ दक्षिणामूर्ति ३० सन्धित ३१ तारातन्त्र ३२ नीलतन्त्र ३३ मन्त्ररत्नावली ३४ कुब्जका ३५ कालिकाश्रुति ३६ सिद्धेश्वर ३७ कोलककुल ३८ नीलभद्र ३९ कुलप्रकाश ४० सिद्ध-सारस्वत ४१ कुलसद्भाव ४२ वामकेश्वर ४३ तारार्णव ४४ कालिका-कल्प ४५ योगिनीतन्त्र ४६ वीरतन्त्र ४७ शुक्तियामलि ४८ लिङ्गा-गम ४९ ताराप्रदीप ५० गोपतन्त्र ५१ कालिकामहोग्र ५२ तारा-कल्प ५३ बाराहीसंहिता ५४ मत्स्यसूत ५५ उड्डीस ५६ मेरु ५७ तारा-स्वर ५८ चूड़ामणि ५९ गलुशंभार ६० गलतन्त्र ६१ ब्रह्मयामलि ६२ आदि ॥ चौदहविद्या ॥ ब्रह्मज्ञान १ गायनविद्या २ रसायन विद्या ३ ज्यो-तिष् ४ वैद्यक ५ शस्त्रविद्या ६ पैरने की विद्या ७ व्याकरण ८ छन्द ९

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोक १० काव्य ११ घोड़े आदि की सवारी १२ नटविद्या १३ चातुरी १४ ॥ वेद के छः अङ्ग ॥ शिक्षा १ ज्योतिष् २ कल्प ३ निरुक्ति ४ छन्द ५ व्याकरण ६ ॥ चौंसठिकला ॥ लिखना १ चोरी २ बजाना ३ नाचना ४ गाना ५ नटकर्तब ६ झूंठको सच दिखलाकर कहना ७ चित्रखैंचना ८ तीरसे फूल और चावल आदि काटना ९ फूलों की सेज सजाना १० दांतों की सफ़ाई ११ कपड़ों की सफ़ाई १२ बालों की सफ़ाई १३ रङ्गों की पहिंचान १४ स्वांग करना १५ सोनेकी युक्ति १६ कुआं नाला आदि बनाना १७ दरिया या किश्ती में निशान मारना १८ मछली मारना १९ माला बनाना २० जूड़ा बांधना २१ मुकुट बांधना २२ पोशाक की सजावट २३ फूलों का गहना बनाना २४ इत्रआदि बनाना २५ इन्द्रजाल २६ प्रसूति में सुगमता की युक्ति २७ जल्दी खेलना २८ तरकारी के प्रकार व चावल पकाना २९ कसार पकानेकी युक्ति ३० चूर्ण का बनाना ३१ मद्य और आसवादि का खींचना ३२ सीना ३३ बद्धीखेलना ३४ डमरू का बजाना ३५ छलियों को खेल में परास्त करना ३६ सम्पूर्णपुस्तकों को तुरन्त पढ़लेना ३७ नाटक ३८ सामयिक श्लोक कहना ३९ लट्ठबाजी ४० तलवार की लड़ाई ४१ बाणयुद्ध ४२ हास्य ४३ गढ़ीबनाना ४४ रत्नों का परखना ४५ रुपयेका परखना ४६ सम्पूर्ण धातुओं की पहिंचान ४७ रत्नों के रङ्ग की पहिंचान ४८ बुरे अच्छे आदमी की पहिंचान ४९ रस आदि बनाना ५० चिकित्सा औषधि आदि तुरन्त करना ५१ मेढ़ा और पक्षियों आदिको लड़ाना ५२ तोता मैना आदिका पढ़ाना ५३ बालों का गिराना ५४ बालों के धोने में नाना प्रकार की युक्ति ५५ मन और हाथ की चीज़ को जो गुप्त हो उसका बताना ५६ बहुत देशों की भाषा जानना ५७ पुष्प और उद्यान की सजावट ५८ सम्पूर्ण अक्षर यन्त्र में लाना ५९ अपनी ओर से अक्षर रखना ६० मन में श्लोक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहना ६१ काम करके छोड़देना ६२ कपड़ोंको चुरालेना ६३ लड़कों को खिलाना ६४ ॥ आठसिद्धियां ॥ अणिमा जिससे बहुत छोटा शरीर होसक्ता है और दूसरा उसको देख नहीं सक्ता १ गहिमा जिससे उड़ने की शक्ति प्राप्त होती है २ गरिमा जिससे उसको कोई उठा नहीं सक्ता ३ लघिमा सूक्ष्म से सूक्ष्म बनना ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ यह भी इसी प्रकार के हैं ॥ चार फल ॥ अर्थ १ धर्म २ काम ३ मोक्ष ४ चारप्रकार की मुक्ति ॥ सालोक्य अर्थात् परमात्मा के लोक में रहना १ सारूप्य अर्थात् परमात्मा के स्वरूप के अनुसार स्वरूप धारण करके वहां रहना २ सामीप्य अर्थात् परमात्मा के समीप रहना ३ सायुज्य अर्थात् परमात्मा में मिलजाना ४ ॥ पञ्चरत्न ॥ सोना १ चांदी २ मोती ३ लाजवर्द ४ प्रवाल ५ ॥ नवरत्न ॥ माणिक्य १ मुक्ता २ पन्ना ३ पुखराज ४ हीरा ५ नीलम ६ लहसुनियां ७ वैडूर्य ८ गोमेदक ९ ॥ ग्यारहरत्न ॥ बिल्लौर १ वज्र २ पद्मराग ३ नीलम ४ स्फटिक ५ यह पांच महारत्न कहलाते हैं और पुष्पराग १ वैडूर्य २ गोमेदक ३ स्फाटिक ४ लहसुनियां ५ प्रवाल ६ यह सब मिलकर ग्यारह होते हैं ॥ चौदह धातु ॥ पहिले सातधातु सोना १ चांदी २ तांबा ३ रांगा ४ जस्त ५ सीसा ६ लोहा ७ दूसरे सात उपधातु सोनामाखी १ रूपरज २ तूतिया ३ कांसा ४ सिन्दूर ५ शिलाजीत ६ ॥ छः रस ॥ मधुर १ कषारी २ खटाई ३ कटुक ४ तिक्त ५ लवणखार ६ ॥ छत्तीस व्यञ्जन ॥ मुख्य करके चारप्रकार के भोजन हैं उनकी ३६ शाखा हैं भक्ष्य १ भोज्य २ लेह्य ३ चोष्य ४ पञ्चामृत यथा शिवधर्मे ॥ पञ्चामृतं दधिक्षीरं सितामधु-घृतं तथा ॥ छः चक्र ॥ मूलाधारचक्र १ स्वाधिष्ठानचक्र २ मणिपूर चक्र ३ अनाहदचक्र ४ विशुद्धचक्र ५ ब्रह्मरन्ध्रचक्र ६ ॥ तीन नाड़ी ॥ पिङ्गला १ इङ्गला २ सुषुम्णा ३ यह तीनों सूर्य चन्द्रमा और अग्नि से सम्बन्ध रखती हैं और पिङ्गला दहनी श्वास और इङ्गला बाईं श्वास

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और सुषुम्णा दोनों श्वास कहलाते हैं और कुम्भक १ रेचक २ पूरक ३ अर्थात् वायुका खींचना वायुका छोड़ना पवन का रोकना इन्हीं तीन नाड़ियों से होताहै ॥ दश प्रकार की वायु ॥ प्राण १ अपान २ समान ३ व्यान ४ उदान ५ और इनका स्थान क्रम से चित्त १ गुदा २ नाभि ३ कण्ठ ४ और शरीर ५ है और नाग १ कूर्म २ कृकल ३ देवदत्त ४ धनञ्जय ५ यह पांच मिलकर दश हुये महानाग ॥ वासुकी १ तक्षक २ कर्कोटक ३ शंख ४ कुलिक ५ पद्म ६ महापद्म ७ महानाग ८ ॥ नौनाथ परमानन्दनाथ १ प्रकाशनानन्दनाथ २ काकुलेश्वरानन्दनाथ ३ कोलेश्वरानन्दनाथ ४ भुगानन्दनाथ ५ सहजानन्दनाथ ६ गङ्गता-नन्दनाथ ७ विमलानन्द ८ नाथ ९ ॥ वाहन ॥ शिवको वाहन नन्दी-श्वर बैलहैं ॥ विष्णु के गरुड़ ॥ ब्रह्मा के हंस ॥ सूर्य के घोड़ा ॥ गणेश के मूषक ॥ इन्द्र के हाथी ॥ अग्नि के तोता ॥ चन्द्रमा के हरिण ॥ स्कन्द के मोर ॥ देवी के सिंह ॥ यमराज के भैंसा ॥ लक्ष्मी के कमल ॥ बुध के शशा ॥ जल के बादल ॥ मेघ के वायु ॥ राहु के कछुवा ॥ शुक्र के मेढुक ॥ पञ्च उपासक ॥ शैव १ वैष्णव २ शाक्त ३ सौरि ४ गाणपत्य ५ और बौद्ध व जैनमती इन पांच से बाहर हैं ॥ दशकाव्यांग ॥ शब्द १ अर्थ २ छन्द ३ प्रसना ४ नायक ५ रीति ६ गुण ७ अलङ्कार ८ रस ९ व्यङ्ग १० और ॥ शब्द तीन प्रकार का है ॥ देवता १ नाग २ मनुष्य ३ अर्थात् यह तीन भाषा हैं और इनका बहुत बड़ा विस्तार है ॥ पुराण के दशलक्षण ॥ सर्ग १ विसर्ग २ स्थान ३ पोषण ४ ऊति ५ मन्वन्तर ६ ईशान ७ निरुद्ध ८ मुक्ति ९ अश्रेयी १० इसका भी बहुत विस्तार है इससे नहीं लिखा ॥ पांच प्रकृति ॥ दुर्गा १ राधा २ लक्ष्मी ३ वाणी ४ शाकम्भरी ५ ॥ आठशक्ति इन्द्राणी १ कौमारी २ ब्रह्माणी ३ वाराही ४ चामुण्डी ५ वैष्णवी ६ माहेश्वरी ७ विनायकी ८ ॥ दशमहाविद्या ॥ तारा १ काली २ भुवनेश्वरी ३ भैरवी ४ कमला ५ बगलामुखी ६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छिन्नमस्ता ७ धूमावती ८ मातङ्गी ९ महाविद्या १० ॥ शक्ति ॥
वैष्णवी १ ब्रह्माणी २ रुद्राणी ३ माहेश्वरी ४ नारसिंही ५ बाराही ६
ऐन्द्राणी ७ कौमारी ८ सर्वमङ्गला ॥ ९ ॥

पीठि ५२ भैरवसमेत ॥

छन्द ॥

हिंगुला पीठि भीमलोचन हैं कोटरिपीठि दिगम्बर।
कहि करवीर पीठि में भैरव तहां त्रिनेत्र अडम्बर॥
सुगन्धा पीठि क्रोध है भैरव त्र्यम्बक पीठि सुनन्द।
काश्मीर में हैं त्रिनेत्तर कहि भैरव सानन्द॥
ज्वालामुखी पीठि में उन्नत जालन्धर में भीषण।
हृद्पीठि में बैजनाथ नैपाल कपाली तीक्षण॥
मालव में अमरेश बिराजैं भैरवरूप विशाल।
उत्कलहू में जगन्नाथ कहि भैरवरूप कराल॥
पीठिमण्डकी चक्रपाणि कहि भैरवजन सुखदानि।
बहुला पीठि अभीरुभैरव उजयनिकपिल बखानि॥
पट्टनपीठि चन्द्रशेखर करि त्रिपुर पीठि नकुलेश।
त्रिस्रो पीठि उमानँद भैरव प्राग पीठि त्रलितेश॥
भुवनेश्वरी पीठि सर्वोत्तम देवि भागवत गावै।
वाराणसी कालभैरव हैं तन्त्र ग्रन्थ दरशावै॥
मणिकर्णिका पीठि में भैरव निमिविनाम अस गावै।
कालिपीठि असिताङ्ग नर्मदा भैरव चण्ड बतावै॥
सावित्री में अश्वनाथ कहि गायत्री आनन्द।
काञ्चीपुरी रुद्र भैरव कहि श्रीशैल बिन छन्द॥
वृन्दावन भूतेश कहावै पीठि सँहारक रुद्र।
बाराही में महा भैरवे जाकी कीर्ति समुद्र॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करतोया में वामन भैरव श्रीगिरि सुन्दरानन्द।
पीठि कपाली भीमरूप कहि भैरव रूप सनन्द॥
प्रभास पीठि में भैरव राजैं चक्रतुण्ड तहँ छाजै।
पीठिवन्तिकापुरी में भैरव लम्बकरण छवि छाजै॥
चित्रपीठि कृत्यायू भैरव गोदावरि दशपानि।
कीतुराख्य में वत्सनाभ कहि रत्नपीठि शिव जानि॥
मिथिलापीठि जोमेश्वर भैरव कालिपीठि क्रोधेश।
चक्रेश्वर में चक्रनाथ कहि भैरव पूजावेश॥
पद्मपीठि में मञ्जुल राजैं कहिये भैरव चण्ड।
अट्टहास में विश्वेश्वर कहि भैरव तेज अखण्ड॥
हारपीठि में नन्दकेशव कहि भैरव तेज बखानि।
लङ्कापुरी में राक्षसेश्वर कहि भैरव व्रज वरदानि॥
उड्यानपीठि में रुरुभैरव हैं मणि हेरम्ब संहार।
बावनपीठि में बावन भैरव फलदायक संसार॥

पञ्चकन्या॥ अहल्या १ द्रौपदी २ तारा ३ कुन्ती ४ मन्दोदरी ५॥

षोड़शशृङ्गार यथा॥

आदौ मज्जनचारुचीरतिलकं नेत्राञ्जनं कुण्डलं
नासामौक्तिकवेशहारकुसुमं झङ्कारिणौ नूपुरौ।
अङ्गे चन्दनचारुकञ्चुकिमणिं क्षुद्रावलीं घण्टिकां
ताम्बूलं करकङ्कणं चतुरता शृङ्गारकाः षोडश॥ १॥

द्वादशाभूषण यथा॥

क०॥शील औ लाज मिठाई बतानिमों, तैसी इठाईसों धर्ममयूषन।
साधुता और पतिव्रत तोष, मिताई सबै सों न काहे को दूषन॥
तैसी विनय औ अचार क्षमा, गुरुलोगन सेवेको कोषन भूषन।
एई तियान को तीरथ से शुभ, कीरतिकारी हैं द्वादश भूषन॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शृङ्गार १ हास्य २ करुणा ३ रुद्र ४ वीर ५ भयानक ६ वीभत्स ७ अद्भुत ८ शान्त ९ और भाव अभाव आदि असंख्य हैं इसके कारण नहीं लिखे ॥ अठारह व्यसन ॥ शिकार १ दिन में सोना २ निरर्थ बकना ३ स्त्री के अधीन होना ४ मैथुनआदि की वार्ता करना ५ मद्यपान ६ जुवा खेलना ७ गाना ८ नाच देखना ९ बाजा बजाना १० व्यभिचार ११ शत्रुता १२ ईर्षा १३ विपरीतवाक्य १४ कठोरवचन १५ शीघ्र मारना १६ गाली १७ और अपने स्वामी का अहित चाहना १८ ॥ षट्कर्म ॥ वेद पढ़ना १ वेद पढ़ाना २ दान देना ३ दान लेना ४ जप करना ५ जप कराना ६ मुख्य करके ब्राह्मण के दश कर्म हैं जैसे शान्ति दान्ति आदिउपचार उपचार जो ३८, १६, १०, ५ हैं ॥

व्रतार्के यथा ॥

अर्घ्यं च पाद्याचमनं मधुपर्कमुपस्पृशम् । स्नानं नीराजनं वस्त्र माचामं चोपवीतिकम् ॥ पुनराचम्य भूषे च दर्शनालोकनात्ततः । गन्ध पुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं च ततः परम् ॥ पानीयं तोयमाचामं हस्तवास स्ततः परम् । ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं पुनः पुनः ॥ गीतवाद्यं तथा नृत्यं श्रुतं चैव प्रदक्षिणम् । पुष्पाञ्जलिनमस्कारा अष्टत्रिंशत्समीरिताः ॥ इत्यष्टत्रिंशदुपचाराः ॥

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम् । मधुपर्कसमायुक्ता वसनाभरणानि च ॥ सुगन्धिसुमनोधूपदीपमन्नेन तर्पणम् । माल्यानु लेपनं चैव नमस्कारं विसर्जनम् ॥ इति षोडशोपचाराः ॥

अर्घ्यं पाद्यं च वसनमधुपर्काचमान्यपि । गन्धादयो निवेद्यान्ता उपचारा दश क्रमात् ॥ इति दशोपचाराः ॥

गन्धपुष्पौ धूपदीपौ नैवेद्यं पञ्चमं स्मृतम् ॥ इति पञ्चोपचाराः ॥

नवधा भक्ति ॥ सेवन १ स्मरण २ कीर्तन ३ अर्चन ४ श्रवण ५ दास्य ६ वन्दन ७ सख्य ८ समर्पण ९ ॥ दश इन्द्रिय ॥ श्रवण १

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ यह पांच ज्ञानइन्द्रिय हैं और हाथ १ गरदन २ गुदा ३ लिङ्ग ४ पग ५ यह पांच कर्मइन्द्रियां हैं॥ सातधातु॥ चर्म १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मज्जा ६ वीर्य ७॥ पञ्चतत्त्व॥ पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५॥ २५ प्रकृति॥ काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ भय ५ यह पांच आकाश के गुण हैं॥ और दौड़ना १ लेटना २ कांपना ३ चलना ४ संकोच ५ यह वायु के गुण हैं और ज्योति १ पसीना २ रक्त ३ लार ४ मूत ५ यह जल के गुण हैं॥

त्वचा १ केश २ मांस ३ नाड़ियां ४ अस्थि ५ यह पांच पृथ्वी के गुण हैं॥ और प्यास १ भूख २ नींद ३ थकना ४ आलस्य ५ यह पांच अग्नि के गुण हैं॥

८४००००० योनि॥ वृक्ष २००००० और जल से जो उत्पन्न हुये ९००००० और कृमि आदि ११००००० और पक्षी १००००० और चतुष्पद ३००००० और मनुष्य ४००००० राजनीति॥ साम अर्थात् मीठे वचन कहना १ दाम द्रव्य और धन देना २ भेद शत्रु के मित्रों को अपनी ओर करलेना ३ दण्ड प्रकट अथवा गुप्त शत्रु को नाश करना ४ और सन्धि विग्रह आदि इन्हीं चार उपायों के विषय हैं॥

चार अवस्था॥ जाग्रत् १ स्वप्न २ सुषुप्ति ३ तुरीय ४ चार प्रकार के दर्शन॥ राजा १ यति जो सम्पूर्ण विद्यानिधान हो २ पतिव्रता स्त्री ३ ब्राह्मणबौना ४ इनके दर्शन से अतिपुण्य होता है॥

आवश्यक कामों का ब्योरा॥

गुरु शिष्य का सम्बन्ध॥

उचित है कि गुरु बहुत जानबूझके करे और गुरु को उचित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है कि एक वर्ष तक शिष्य का आचरण अवलोकन करके चेला करे यथा॥ सारसंग्रहे॥

(सद्गुरुस्स्वाश्रितं शिष्यं वर्षमेकं परीक्षयेत्)

क्योंकि जिस तरह से मन्त्री और अन्य सभासदों के पापों का भागी राजा होता है उसी तरह से गुरु शिष्य की दशा है यथा रुद्रयामले॥ राज्ञि चामात्यजो दोषः पत्नीपापं च भर्त्तरि। यथा शिष्यार्जितं पापं गुरुं प्राप्नोति निश्चितम्॥

और दिव्यागमन में लिखा है कि गुरु का वस्त्र, आसन, जटा, छाया, पानी जहां नहाया हो वहां नाँघना न चाहिये॥

और गुरु* के निकट पूजन और गर्व के साथ कोई काम और शिष्यों को विद्या पढ़ाना और आज्ञा चलानी न चाहिये और जो मनुष्य गुरु को मनुष्य और मन्त्र को अक्षर और परमात्मा को पत्थर के सदृश जानते हैं वह नारकीय हैं जैसा कि ज्ञानार्णव में लिखा है और देवता की प्रसन्नता से अधिक गुरु की प्रसन्नता उचित है जैसा कि तन्त्रराज में आज्ञा है और गुरु के न होने पर उनके भाई स्त्री और लड़के की पूजा उचित है और जो मनुष्य कि मन्त्र को छोड़देते हैं वह मानो मृत्यु के मुख में पड़े होते हैं और जो मनुष्य कि गुरु का त्याग करते हैं वह निर्धन रहते हैं और यह मनुष्य दोनों के त्यागने से घोर नरक पाता है और गुरु के हाथ कोई चीज़ बेचना या गुरु से कछु लेना मना है गुरु को आते हुये देखकर अगवानी करनी चाहिये और चलनेके समय पीछे २ चलना उचित है और गुरु का पद माता पिता सबसे बड़ा है जैसा कि आगमकल्पद्रुम और चक्रसार में लिखा है और योगिनीतन्त्र में लिखा है कि बाप, नाना, छोटाभाई आदि

* "गुशब्दस्त्वन्धकारः स्यादुशब्दस्तन्निरोधकः। अन्धकारनिरोधत्वाद्गुरुरित्यभिधीयते"॥ १॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुरु होने के योग्य नहीं हैं और गणेशाघमर्षण में आज्ञा है कि यती, पिता, वनवासी जो वर्णाश्रम से रहित हों इनका मन्त्र शुभ नहीं होता और स्त्री को अपने पतिसे मन्त्र लेना उचित नहीं और कुरुक्षेत्र में या और किसी महातीर्थ में सूर्यग्रहण के समय मन्त्र लेना उचित है और मत्स्यसूक्त में पिता अपने पुत्र को शिष्य करने का अधिकारी है॥

दूसरी दीक्षा॥

चारों वर्ण दीक्षा लेने के अधिकारी हैं क्योंकि दीक्षा बिन कोई कर्म फल नहीं देता और पूजा जप आदि फल नहीं देते जैसा कि पत्थर से मोती नहीं उपजता और दीक्षा लेने से करोड़ों जन्म के पाप दूर होजाते हैं और जो लोग दीक्षा लेने विना मरजाते हैं वे रौरवनरक में पड़ते हैं और जो मनुष्य कि आप पोथी में मन्त्र देखकर गुरु बिन मन्त्र जप करते हैं वे करोड़ जन्मतक नरक में रहेंगे कदाचित् अपने जन्मनक्षत्र राशि और नाम का ठीक चक्र मिले तो दूसरे चक्र में मन्त्र लेना अवश्य नहीं और जो मन्त्र बीस अक्षर से अधिक रखता है वह सिद्ध होने के योग्य नहीं और सब महीनों से मन्त्र लेने को चैत्र का महीना अतिलाभदायक है और वैशाख में मन्त्र लेनेसे रत्न प्राप्त होते हैं ज्येष्ठ में मन्त्र लेनेसे मृत्यु और आषाढ़ में मन्त्र लेने से भाई मरता है और श्रावण में मन्त्र लेनेवाले के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं और भादों में मन्त्र लेनेसे लड़का मरजाता है और कुआर में मन्त्र लेना धन की प्राप्ति का कारण है और कार्त्तिक में मन्त्र लेनेसे मन्त्र सिद्ध होता है और अगहन में मन्त्र लेना किसी बड़े शत्रुके भयका कारण है और माघ व फाल्गुन में मन्त्र लेने से बुद्धि बढ़ती है इसकी गणना संक्रान्ति से है चन्द्रमा से नहीं और रविवार, बुध, बृहस्पति, शुक्र, बहुत अच्छे दिन मन्त्र लेने के लिये हैं और द्वीज, तीज, पञ्चमी, छठ, सप्तमी, नवमी, द्वादशी और पूर्णमासी तक उत्तम मन्त्र लेने के लिये हैं और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सन्ध्या और बिजली के गिरने और भूकम्प और अन्य उपद्रवों के समय मन्त्र लेना न चाहिये और जो नीचे लिखेहुये महीनों में मन्त्र लें उनको कुछ मास तिथि योग की आवश्यकता नहीं अर्थात् भाद्रपद षष्ठी आश्विन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी कार्त्तिक की नवमी अगहन तीज फाल्गुन नवमी पौष नवमी शुक्लपक्ष की माघ चतुर्थी चैत्र चतुर्दशी वैशाख तीज ज्येष्ठ दशहरा पञ्चमी सुदी असाढ़ तीज श्रावण शुक्ला पञ्चमी पर सूर्यग्रहण सब से उत्तमोत्तम हैं कदाचित् मङ्गल के दिन चौथ पड़े या इतवार को सप्तमी हो अथवा सोमवार के दिन अमावस हो तो सूर्यग्रहण से सौ हिस्से अधिक फल मिलता है इसके सिवाय जिस दिन गुरुकृपा करके मन्त्र दें वह दिन सब से उत्तम है॥

तीसरे माला आसन जप मन्त्र का संस्कार॥

प्रकट हो कि माला तीन प्रकार की हैं एक करमाला दूसरी मन माला तीसरी मणिमाला करमाला यह है जैसा कि मालातन्त्र में श्लोक लिखा है॥

मालातन्त्रे श्लोकाः॥

अनामिकाद्वयं पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु। तर्जनीमूलपर्यन्तं करमाला प्रकीर्तिता १ अंगुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घनात्। पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् २ संस्थाप्य हृदये हस्तं तिर्यक्कृत्वा कराङ्गुलीः। आच्छाद्य हस्तं वस्त्रेण दक्षिणेन सदा जपेत्॥ ३॥

अर्थात् बीच में दो पोर छोड़कर बाक़ी सब पोरों में जाप करे और कपड़े से हाथ बन्द करके हाथको छाती में रखकर तिरछे हाथ से जाप करना चाहिये और पोरों की लकीरों में जप करने से वह जप व्यर्थ होजाता है और सब मालाओं से रुद्राक्ष की माला श्रेष्ठतर है॥

सौरसंहितायां यथा॥

इन्द्राक्षशङ्खपद्माक्षपुत्रजीवकमौक्तिकैः। स्फाटिकैर्मणिरत्नैश्च स्व-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

र्णैश्च विद्रुमैस्तथा १ राजितैः कुशमूलैश्च गृहस्थस्याहमालिकाः। अङ्गुलीगणनादेकं पर्वपर्यन्तमुच्यते २ पुत्रजीवैर्दशगुणं शतसंख्यैः सहस्रकम्। प्रवालैर्मणिरत्नैश्च दशसाहस्रकं फलम् ३ तदेव स्फाटिकैः प्रोक्तं मौक्तिकैर्लक्षमुच्यते। पद्माक्षैर्दशलक्षं स्यात् सौवर्णैः कोटिरुच्यते ४ कुशग्रन्थ्याकोटिशतं रुद्राक्षैस्स्यादनन्तकम्। सर्वैर्विरचिता माला नृणां मुक्तिफलप्रदा ॥ ५ ॥

और जब कि माला न मिले तब उँगलियों पर जप करना चाहिये और पचीस दाने की माला मुक्ति देनेवाली है और तीस दाने की माला धन और सत्ताईस दानेकी सर्वकार्य और मनोरथ और पन्द्रह दाने की माला शत्रु का नष्ट करनेवाली है चौवन दानेकी माला से तमाम काम सिद्ध होते हैं और एकसौ आठ दानेकी माला सबसे उत्तम है (आसन) सकाम लोगों के वास्ते लाल आसन अच्छा है और काला आसन ज्ञान और मुक्ति के चाहनेवालों को उचित है और माया के चाहने वालों को बाघम्बरका आसन योग्य है और मन्त्र केवल कुशआसन के ऊपर जप करने से सिद्ध होता है और आसन के ऊपर मन्त्र जप करने से दुःख होता है और काठ के ऊपर आसन लगाने से निर्धनता प्राप्त होती है और पत्थर का आसन रोग को उत्पन्न करता है और घास आदिका आसन यश कीर्ति नष्ट करनेवालाहै और वृक्ष के पत्तों का आसन बुद्धिका कारण है और वस्त्र के आसन से जप और तप नष्ट होजाता है हां यद्यपि कुछ और न मिले तो कुछ हानि नहीं और जो वस्त्र में रेशम या ऊन मिला हो तो अयोग्य नहीं और कोई गृहस्थ विना दीक्षा के मृगचर्म पर किसी प्रकार बैठे नहीं इस प्रकार से कि यह आसन केवल उद्यमी ब्रह्मचारी और यती के लिये रक्खा गया है और भेड़, हाथी, शेर, ऊंट, रीछ और सांप की खालपर केवल मोहन आदि मन्त्र जप करते समय बैठना योग्य है और गृहस्थ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को चाहिये कि माला को विधिसंयुक्त डोरे में पिरोकर मन्त्रों से ठीक करे और फिर उसको छिपा रक्खे नहीं तो जप नष्ट होजाता है जप चारों पदार्थ का देनेवाला है जो विधि से कियाजावे और यज्ञ से कम जप नहीं है और यह जप तीन प्रकार का है प्रथम वाचक द्वितीय उपांशु तृतीय मानस जब मन्त्र वचन के साथ पढ़ाजाता है तो यह वाचक जप कहाजाता है और जब कि केवल अपने कान तक कुछ सुनने में आता है तो यह उपांशु है और जब कि मन्त्र केवल मनहीं मन में अक्षर और मात्राओं समेत जप किया गया तो यह मानस है और उचित है कि जप करने के समय मन्त्र के अर्थ समझताजावे और मन को दृढ़ करके दूसरी ओर न जाने दे और मानस जप दोनों प्रकार के जपोंसे दशहज़ार गुण बड़ा है यदि कोई मनुष्य बहुत उतावली मन्त्र का जप करता है तो रोगी होता है जो बहुत धीरे २ जप करता है तो उसके धन का अभाव होता है इस कारण उचित है कि समानता को काम में लावे जैसा कि तागे में मोती पिरोयाजाता है और जो मनुष्य मन्त्र को प्रकट और स्तोत्र को गुप्त और जप को ऊंचे पढ़ता है तो उसको फल नहीं प्राप्त होताहै जैसा कि पानी कच्चे कुल्हड़े से नहीं निकलसक्ता और जो मनुष्य मन्त्र को अर्थ चैतन्यता भग और मुद्रा के जानने विना सवालक्ष पर्यन्त भी जप करे तौभी सिद्ध नहीं होसक्ता मन्त्र के संस्कार जो दश प्रकार के हैं जैसा कि रुद्रयामलतन्त्र में लिखा है॥

मन्त्राणां संस्काराः॥

जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधनं तथा। तथाभिषेको विमलीकरणात्पोषणं पुनः॥ तर्पणं दीपनं गुप्तिरित्येता मन्त्रसंस्क्रियाः॥

सो जो मनुष्य विना भूप कलावतीभूषण उपदेश प्रयोग और पञ्च आदि के मालूम करने विना कुछ जप या उपदेश करताहै वह निरर्थहै॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौथे त्रिपुण्ड्र तिलक आदि ॥

शिवपुराण के नवें खण्ड में त्रिपुण्ड्रकी विधि विस्तार से लिखी है इस जगह पर कुछ संक्षेप में लिखा जाता है कि दोनों भवों के बीच भाल में अनामिका अर्थात् छुंगनी के पासकी और मध्यमा अर्थात् बीच की अंगुली से दो लकीरें भस्म से सजाकर और तीसरी लकीर अंगुष्ठ से दोनों लकीरों के बीच सजावे और मृत्युञ्जय अथवा कालाग्नि मन्त्रसे त्रिपुण्ड्र लगावे ॥ द्वादश तिलक ॥ शिर, माथा, गर्दन, छाती, पांजर, दोनों भुजा, नाभि, कमर, कण्ठ, हृदय अथवा छाती के ऊपर बारह जगह तिलक लगाने को द्वादश तिलक कहते हैं—और ब्राह्मण को अछिद्र तिलक लगाना चाहिये बाक़ी तीन वर्ण छिद्रसहित तिलक लगावें—जो चारों वर्ण में नहीं है वह तिलक लगानेका अधिकारी नहीं है—और शैवलोगों को त्रिपुण्ड्र लगाना उचित है—और शाक्त लोगों को अर्द्ध-चन्द्र और सौरि लोगों को गोल और गणेश के पूजकों को चौकोण लगाना उचित है और वैष्णवको दीपज्योति सीधा और कनेर व बांस के पत्ते के सदृश छिद्र सहित द्वादश तिलक धारण करने योग्य हैं और यह भी योग्य है कि पूजन से पहिले भस्म को लगावे और पूजन के मध्य में मृत्तिका को काम में लावे और केशर व चन्दन आदि पूजन के पीछे धारणकरे और भस्म होम आदिकी राख से बनाई गई हो और मृत्तिका तीर्थ या किसी देवता के स्थान की या तुलसीवृक्ष के नीचे की हो और चन्दन लाल सफ़ेद और पीला जो देवता के पूजन के पीछे बाक़ी रहगया हो धारण करना योग्य है और चन्दन विना कपूर मिलाने के देवता को चढ़ाना अयोग्यहै और केवल अपने लिये चन्दन बनाना नहीं चाहिये और सूर्य को अञ्जलि देने विना किसी देवता का पूजन योग्य नहीं है ॥ पांचवां षोड़शोपचार ॥

उपचार सोलह प्रसिद्ध हैं अर्थात् सोलह चीज़ के साथ पूजन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करना कहाजाता है-परन्तु देवी आदि के पूजन बिषे चौंसठ उपचार तक हैं और १६, १५, २८, ५, ८, ६ और तीन तक उपचार हैं-इस कारण हर एक का विस्तार अच्छे प्रकार लिखते हैं॥ षोड़शोपचार ये हैं-आवाहन १ आसन २ पाद्य ३ अर्घ्य ४ आचमन ५ स्नान ६ बिछौना ७ यज्ञोपवीत ८ चन्दनसुगन्धदार ९ पुष्प १० धूप ११ दीप १२ नैवेद्य १३ प्रणाम १४ प्रदक्षिणा १५ विसर्जन १६ जैसा कि लिङ्गपुराण में लिखा है॥

श्लोक लिङ्गपुराणे-यथा॥

आवाहनासनं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्। स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्धम्पुष्पञ्च धूपकम् १ दीपमन्नन्नमस्कारम्प्रदक्षिणविसर्जने॥

जो कोई मनुष्य यह प्रश्न करे कि शालग्राम और नर्मदेश्वर लिङ्गके पूजन में आवाहन १ विसर्जन २ दो उपचार नहीं होते तो सोलह किस तरह से होंगे तो कहना चाहिये कि उन की पूजन में आवाहन की जगह पर ध्यान और विसर्जन की जगह पर क्षमापन संयुक्त किये जाते हैं और स्कन्दपुराण में षोड़शोपचार यह लिखे हैं॥

स्कन्दपुराणे-यथा॥

ध्यान १ आसन २ पाद्य ३ अर्घ्य ४ आचमन ५ स्नान ६ वस्त्र ७ उपवीत ८ भूषण ९ गन्ध १० पुष्प ११ धूप १२ दीप १३ नैवेद्य १४ प्रदक्षिणा १५ नमस्कार १६॥

और यह पूजन पांचप्रकार का है अर्थात् पूजा १ आराधन २ यजन ३ अर्हण ४ अर्चन ५ पांच प्रकार के पूजा का विस्तार-उत्सव के अन्ततक पूजन है-दीपनतक आराधन है-आचमन तक यजन है-और हव्यतक अर्चन है और ब्रह्मभोजन तक अर्हण है॥

आठ उपचार॥

अगर किसी मनुष्य को सोलह उपचार करनेकी पूजन में सामर्थ्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न हो तो वह केवल आठउपचार से पूजनकरे जैसी शैवागम में आज्ञाहै॥

गन्धं पुष्पं च धूपं च दीपमन्ननिवेदनम् ।
ताम्बूलञ्च नमस्कारम्प्रदक्षिणक्षमापने ॥ १ ॥

और जो आठ उपचार की भी शक्ति न हो तो केवल ६ उपचार से (जैसा कि स्कन्दपुराण की आज्ञा है) पूजनकरे-स्नान १ गन्ध २ फूल ३ धूप ४ दीप ५ नैवेद्य ६ और जो इतनी भी सामर्थ्य न हो तो केवल तीन उपचार से पूजनकरे अर्थात् स्नान १ नैवेद्य २ चरणों पर गिरपड़े ॥ ३ ॥

तदुक्तं सौरिसंहितायाम् ॥

अभिषेकं च नैवेद्यं नमस्कारस्तथैव च ।
एतावदेव कर्तव्यं शिवभक्तेन यत्नतः ॥ १ ॥

और जो इतना भी न होसके तो केवल पुष्प चढ़ावे ॥

छठे प्रदक्षिणा ॥

उचित है कि तीन प्रदक्षिणा दण्डवत् के साथ देवता की करे क्योंकि प्रदक्षिणा करने से पूजन सम्पूर्ण दोषों से निवृत्त होता है ॥

तदुक्तं पाराशरस्मृतौ ॥

प्रदक्षिणात्रयं कुर्यात्सकृत्याप्रणतिर्भुवि । शान्तिपूजातिकल्याणी सर्वदोषविवर्जिता १ अयत्नलभ्या सर्वेषां भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥

और जो आदमी दण्डवत् करने से लाचार हो तो उसको चलते फिरते सोते जागते में केवल स्मरण करने से पूजन का फल प्राप्त होता है ॥

सातवां बिल्वपत्र ॥

और विना बिल्वपत्रके शिवजी की पूजा और विना तुलसी विष्णुजीकी पूजा और बलिदान विना देवी की पूजा उत्तम और रुचिकारक नहीं है और जो कोई मनुष्य दो या तीन बिल्वपत्र भी शुद्धतापूर्वक शिवजी के ऊपर चढ़ावे तो उसके मुक्त होने में कुछ भी सन्देह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं है और जो बिल्वपत्र कटी न हो तो जो ऐसी एक बिल्वपत्र भी शिवके ऊपर चढ़ावे तो शिवलोक में जारहे और बिल्ववृक्ष के दर्शन व स्पर्शन व प्रणाम करने से रातदिन के सम्पूर्ण पाप दूर होजाते हैं और चौथ, अमावस, अष्टमी, नवमी, चौदस, संक्रान्ति और सोमवार के दिन बिल्वपत्र तोड़ना मना है॥

तदुक्तं लिङ्गपुराणे॥

अमारिक्ता च संक्रान्तावष्टम्यां चन्द्रवासरे।
बिल्वपत्रं नच च्छिन्द्याच्छिन्द्याच्चेन्नरकं व्रजेत्॥ १॥

और जो बिल्वपत्र किसी जगह पर न मिले तो बासी और सूखी बिल्वपत्र लेकर पूजनकरे क्योंकि तुलसी तीस दिन और बिल्वपत्र चालीस दिन और कमल तीन दिन और केतकी पांच दिन तक के तोड़ेहुये पवित्र और चढ़ाने के योग्य रहते हैं और जायफल, जावित्री, लौंग, केशर एक वर्ष पर्यन्त चढ़ाने के कामके हैं अन्य और कोई फूल व पत्र बासी और दूसरे दिन के तोड़ेहुये किसी देवता के चढ़ाने योग्य नहीं रहते हां माला और माली के घरके फूल में कुछ हानि नहीं और जहां कहीं हरदिन बिल्वपत्र न मिले वहां सात दिनतक बिल्वपत्र रोज़ चढ़ानेके पीछे धोकर रख लेवे और रोज़ सात दिन तक वही चढ़ाया करे आठवें दिन न चाहिये यदि संयोग से कहीं बिल्वपत्र न मिले तो नये और नर्म चावल को बिल्वपत्र के बदले चढ़ाना ठीक है और नारदीयपुराण में लिखा है कि बिल्वपत्र और तुलसी उलटी चढ़ाना चाहिये बाक़ी और सब फूल और फल जिसतरह पैदा होते हैं उसी तरह चढ़ाना चाहिये पर स्कन्दपुराण व कई और पुराणोंमें आज्ञा है कि बिल्व-पत्र फूल आदि औंधे कभी न चढ़ावे बरन जिसतरह उपजते हैं उसी तरह चढ़ाना चाहिये और शिवजी महाराज का श्रीमुख से वाक्यहै कि हमको रत्न, मोती, मूंगा, हीरा आदि बिल्वपत्र विना रोचक नहीं और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिल्वपत्र व कमल चढ़ानेकी संख्या एक हज़ार तक की है पर एक या दो या आठहज़ार से अधिक होजाने चाहिये जब कि बासी में कुछ हानि नहीं तो संख्या पूरी करदेनी चाहिये और जहां कहीं कि धूप दीप और नैवेद्य आदि न हों वहां बिल्वपत्रों से पूजा पूर्ण करदेनी चाहिये और जो अपने पुत्र या शिष्य या नौकर के सिवाय किसी दूसरे मनुष्य की लाई हुई या शूद्र से मोल पर तुलाई हुई बिल्वपत्र कोई चढ़ावे तो बड़ा पाप होता है और जो अपने हाथ से कोई मनुष्य नर्म और साफ़ बिल्वपत्र लाकर चढ़ावे तो वह शिवलोक में पहुँचकर शिव के सदृश आपभी होजावे और जो हरदिन एक बिल्वपत्र भी अपनी लाई हुई कि वह कीड़े और मकड़ी आदि से साफ़ हो शिवजी महाराज के ऊपर चढ़ावे तो बहुत फल पाता है और जो शिवजी के पञ्चाक्षरी मन्त्र से निश्चयपूर्वक बिल्वपत्र शिव के ऊपर चढ़ावे तो अवश्य शिव होजावे ॥

आठवें फूल ॥

जो कोई मनुष्य फूलों के विना शिव और विष्णुआदिकी पूजा करे तो उसका कुल और धर्म नष्ट होजावे और जो एक फूल से भी शिव और विष्णु आदिकी पूजाकरे तो कुल समेत प्रसन्न बनारहे और फूल चाहे नदी में उपजें वा फुलवाड़ी के हों पर सुगन्धित हों ऐसे पुष्प चढ़ाने चाहियें और पत्र और पुष्प जो जंगल या पहाड़ में उपजे हों सब शिवजी के ऊपर चढ़सक्ते हैं पर उनमें कीड़े और छिद्र न हों और बासी और रङ्ग से लालभी न हों और कनेर कमल के फूल लालरङ्गवाले भी शिवजीपर चढ़ाने चाहियें इन दोनों की मनाही नहीं है जैसा कि सौरपुराण में लिखा है ॥

यथा ॥

रक्तोत्पलैः कर्णिकारैर्यः करोति ममार्चनम् ।
सभाग्यवान्मनुष्येषु मम स्यात्प्रियकृत्तमः ॥ १ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और तर्जनी अंगुली और अंगूठे से मुद्रा करके फूल देवतों के ऊपर चढ़ावे और मदार व धतूरे के फूल विष्णुजी के ऊपर न चढ़ाने चाहिये मना हैं और लाल कनेर या सफ़ेद कनेर का एक फल भी शिवजी व विष्णुजी के ऊपर चढ़ावे तो अवश्य मुक्ति पावे और कचरी १ कुन्द २ केतकी ३ गुड़हल ४ दोपहरिया ५ मालती ६ और जूही ७ यह सातप्रकार के फूल किसी अवस्था में शिवजी के ऊपर न चढ़ावे–इसी प्रकार से देवी के ऊपर दूब और मदार के फूल चढ़ाना अयोग्य है–और तगर और अगस्त्य के पुष्प सूर्य के ऊपर चढ़ाना मना है–और तुलसी किसी अवस्था में गणेश के ऊपर न चढ़ावे और ज्ञानमाला में यह आज्ञा है कि अक्षत विष्णुजी के ऊपर–तुलसी गणेश के ऊपर–दूब देवी के ऊपर–बिल्वपत्र सूर्य के ऊपर–धतूरा और मदार के पुष्प विष्णु के ऊपर किसी अवस्था में नहीं चढ़ावे–और सफ़ेद व पीले पुष्प विष्णुजी को और देवीजी व सूर्यजी व गणेशजी को लाल पुष्प अतिरोचक और प्रिय हैं–और जो फूल कि कीड़ों आदि के साथ हों १ या बाल पुष्पों में सिमटे हों २ या सुगन्धहीन हों ३ या सुगन्ध अतितीक्ष्ण हो ४ या कली हों ५ वा मैले हों ६ या सूंघेहुये हों ७ या धरे हुये ८ या काले वस्त्र या बासन में बाँधे या रक्खे हों ९ या सूखे हों १० या बासी हों ११ या जमीन के गिरे हों अथवा स्नान के पीछे तोड़ेगये हों १२ इस भांति के पुष्प सब देवताओं पर चढ़ाना अयोग्य है परन्तु चम्पा और कमल की कली इन दोनों को तोड़ना और चढ़ाना योग्य है पर जो स्नान के पीछे तोड़े गये हों इस कारण यह दोनों प्रकार के पुष्प स्नान के पीछे तोड़ना योग्य है और जिस प्रकार से कि माला और माली के घरके फूलों में कुछ बासी की हानि नहीं है–उसी प्रकार पुष्पाञ्जलि देने में सीधे उलटे का कुछ विचार नहीं है और तुलसी १ चम्पा २ कोकाबेलि ३

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोलसिरी ४ कुशा ५ दूब ६ पान ७ बिल्व ८ देवनी ९ फेरसा १० मणिद्रुम ११ विष्णुक्रान्ता १२ आंवला १३ अपामार्ग [अर्थात् लटजीरा] १४ इन सबके पत्ते देवताओं के ऊपर चढ़ाना अति उत्तमोत्तम है ॥

नवें धूपआदि—पहेले सर्वगन्ध ॥

कस्तूरी दो भाग १ चन्दन चौथाई भाग २ कुंकुम तीसरा भाग ३ और कर्पूर ४ सबके बराबर मिलाकर देवतापर चढ़ावे तो यह धूप सब देवताओं को रोचक है—इसका नाम सर्वगन्ध है ॥

दूसरी यक्षकर्दम ॥ कर्पूर १ अगुरु २ कस्तूरी ३ चन्दन ४ कङ्कोल ५ इन पांचों चीज़ों से बनाना चाहिये ॥

तदुक्तं व्रतार्के ॥

कर्पूरमगुरुश्चैव कस्तूरीचन्दनं तथा ।
कङ्कोलं च भवेदेभिः पञ्चभिर्यक्षकर्दमः ॥ १ ॥

तीसरी धूप ॥ अगुरु १ चन्दन २ मुस्ता ३ सिल्हाद ४ कस्तूरी ५ बराबर लेकर धूप बनावे जैसा कि भविष्यपुराण में आज्ञा दी है ॥

हेमाद्रौ भविष्ये ॥

अगुरुं चन्दनं मुस्तां सिल्हादं दृषदं तथा ।
समभागं तु कर्तव्यं धूपोयममृताह्वयः ॥ १ ॥

और धूप के दश अङ्गहैं जैसा कि इस श्लोक में प्रसिद्ध होगा ॥

षड्भागकुष्ठं द्विगुणो गुडश्च लाक्षात्रयं पञ्च नरस्य भागः । हरीतकीसर्जरसश्च मांसी भागैकमेकं त्रिलवं शिलाजम् १ घनस्य चत्वारि पुरस्य चैको धूपो दशाङ्गः कथितो मुनीन्द्रैः ॥

दशवें मुद्रा—शिवलिङ्ग की मुद्रा ये हैं ॥

स्कन्दपुराणे ॥

उच्छ्रिते दक्षिणाङ्गुष्ठे वामाङ्गुष्ठेन बन्धयेत् । वामांगुलीर्दक्षि-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

णाभिरंगुलीभिश्च वेष्टयेत् १ लिङ्गमुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यकारिणी । श्रीकामः शीर्ष्णि कुर्वीत राज्यकामस्तु नेत्रयोः २ मुखेत्वन्नादिकामस्तु ग्रीवायां रोगशान्तिकृत् । हृदये सर्वकामश्च ज्ञानार्थं नाभिमण्डले ३ राज्यकामस्तु बाह्वोर्वै राष्ट्रकामस्तु पादयोः ॥

विष्णुजी की सत्रह मुद्रा ये हैं रामार्चनचन्द्रिकायामगस्त्यः ॥

आवाहनी स्थापनी च सन्निधीकरणी तथा । सुसन्निरोधनी मुद्रा सम्मुखीकरणी तथा १ संकलीकरणी चैव महामुद्रा तथैव च । शङ्खचक्रगदापद्मधेनुकौस्तुभगारुडाः २ श्रीवत्सवनमाले च योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ ग्यारहवें व्रत ॥

जो मनुष्य कि अपने वर्ण और आश्रम में सन्तोष करता है और सत्यवादी है और जीवों के ऊपर दयालु होता है ऐसे मनुष्य का व्रत नष्ट नहीं होता–व शीघ्रही फल देता है–और कूर्मपुराण में यह आज्ञा है कि ब्राह्मण १ क्षत्रिय २ वैश्य ३ शूद्र ४ महादेवजी का पूजन दान यज्ञ और व्रत करनेसे शिवजी की सायुज्य और सामीप्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं ॥ कूर्मपुराणे यथा ॥

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैव द्विजोत्तम । अर्चयन्ति महादेवं यज्ञदानसमाधिभिः १ व्रतोपवासनियमैर्होमस्वाध्यायतर्पणैः । तेषां वै रुद्रसायुज्यं सामीप्यं नापि दुर्लभम् २ ॥ देवलोऽपि ॥ व्रतोपवासनियमैः शरीरोत्तापनैस्तथा । वर्णाः सर्वेऽपि मुच्यन्ते पातकेभ्यो न संशयः ३ ॥ भारते ॥ मामुपाश्रित्य कौन्तेय येऽपि स्युः पापयोनयः । स्त्रियो वैश्याश्च शूद्राश्च तेऽपि यान्ति पराङ्गतिम् ४ ॥ देवीपुराणे ॥ स्नातैः समुदितैर्हृष्टैर्ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृपैः । वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुक्तैर्म्लेच्छैरन्यैश्च मानवैः ५ स्त्रीभिश्च कुरुशार्दूल तद्विधानमिदं शृणु ॥

और देवल का वाक्य है कि सब वर्ण व्रत और संयम से अपने शरीर को जलाकर सर्वपापों से रहित होसक्ते हैं और महाभारत में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लिखा है–कि व्रतकरनेसे स्त्री, शूद्र और वैश्यभी परमपद को प्राप्त होते हैं–और देवीपुराण में स्त्री और म्लेच्छ को भी व्रत करने की आज्ञा दीगई है–परन्तु स्त्री को विना आज्ञा अपने स्वामी के किसी अवस्था में व्रत रखने की आज्ञा नहीं है जैसा कि वर्णन होता है॥

मार्कण्डेयपुराणे॥

नारी नाल्पमनुज्ञाता भर्त्रा पित्रा सुतेन वा।
निष्फलं तु भवेत्तस्या यत्करोति व्रतादिकम्॥ १॥

कात्यायनोक्ते यथा॥

पत्यौ जीवति या नारी तूपवासं व्रतं चरेत्।
आयुष्यं हरते भर्त्तुः सा नारी नरकं व्रजेदिति॥ १॥

और विधवा स्त्रीको अपने माता पिता की आज्ञा लेने के उपरांत व्रत रखना उचितहै और जब व्रत रक्खे तो पहिले ताम्रपात्र हाथ में रख कर संकल्प करे और प्रभातको स्नानकरके नित्यकृत्य से निश्चिन्त होजावे और होसके तो उस दिन पृथ्वीपर लेटे और कुछ दिन भर न खावे और जप और होमकरे और व्रत के अन्त में कुछ दानदे और चौबीस या बारह या पांच या तीन ब्राह्मणों को भोजन खिलाकर दक्षिणा दे और व्रत के दिन चार बातें अवश्य करनी चाहिये- पहिले ब्रह्मचर्य रहे अर्थात् जूता आदि न पहिने दूसरे सिवाय सचके झूठ बात अपने मुख से न निकाले तीसरे किसी जीवधारी को न मारे चौथे आमिष अर्थात् मांस न खावे और ब्रह्मचर्य शब्द के अर्थ स्त्रीप्रसंग के त्याग करने के भी हैं कइयोंका वचन है कि परस्त्री के साथ मैथुन मना है परन्तु बहुत से महात्मा इस बात पर सम्मति रखते हैं कि उस दिन कोई स्त्री प्रसंग के योग्य नहीं है और आमिष शब्द से केवल मांसही के अर्थ नहीं हैं बरन और चीजें भी मांस के सदृश उसमें गिनी गई हैं और कोई व्रत रखकर उसका छोड़ना महापाप है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मदनरत्नच्छागले यथा ॥

पूर्वं व्रतं गृहीत्वा यो नाचरेत्काममोहितः।
जीवनेपि च चाण्डालो मृते श्वादोभिजायते ॥ १ ॥

और श्राद्ध और व्रत के दिन दतवनि नहीं करनी चाहिये ॥

वृद्धवशिष्ठः ॥

उपवासे तथा श्राद्धे न कुर्याद्दन्तधावनम् ॥ काष्ठं विनेति शेषः ॥

व्यासवचसा ॥

अपो द्वादशगण्डूषैर्विदध्याद्दन्तधावनम् ॥

और देवल ऋषि का वाक्य है कि खाने और पानी पीने और पान खाने और दिनके सोने और स्त्रीप्रसंग से व्रतभंग होता है पर अशक्तमनुष्यों को मनाही नहीं है वह पानी आदि पीवें ॥

यथा देवलः ॥

असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलचर्वणात्।
उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात् ॥ १ ॥

और व्रत के एक दिन पहले और पारण के दिन मांस न खावे और अपने पति के रोगी होनेपर स्त्री व्रतरखने की अधिकारिणी है कि अपने पति के बदले व्रत रक्खे और जो चीजें कि व्रत में खानी चाहिये और जिनकी मनाही है वे नीचे लिखीजाती हैं और नियमित प्रण के उपरान्त व्रत का उद्यापन करना चाहिये ॥

अथ व्रतहविष्याणि कात्यायनः ॥

हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु व्रीहयः स्मृताः।
माषकोद्रवगौरादीन् सर्वाभावेऽपि वर्जयेत् ॥ १ ॥

अग्निपुराणे ॥

व्रीहिषष्टिकमुद्गाश्च कलायाः सलिलं पयः।
श्यामाकाश्चैव नीवारा गोधूमाद्या व्रते हिताः ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कूष्माण्डालाबुवार्त्ताकपालकीज्योत्स्निकास्त्यजेत् । चरु भैक्ष्यं सक्तुकणाः शाकं दधि घृतं मधु ३ श्यामाकाः शालिनीवारा यावकं मुद्गतण्डुलम् । हविष्यं व्रतनक्तादावग्निकार्यादिके हितम् ४ मधुमांसं विहायान्यद्व्रते च हितमीरितम् ॥ ५ ॥

भविष्ये यथा ॥

हैमन्तिकं सितास्विन्नं धान्यं मुद्गयवास्तिलाः । कलायकंगुनीवारावास्तुकं हिलमोचिका १ षष्टिकाकालशाकं च मूलकं केमुकेतरत् । कन्दः सैन्धवसामुद्रे गव्ये च दधिसार्पषी २ पयोनुघृतसारश्च यमसाम्रहरीतकी । पिप्पलीजीरकं चैव नागरङ्गकतिन्तिडी ३ कदलीलवलीधात्रीफलानि गुडमैक्षवम् । अतैलपक्वं मुनयो हविष्यााणि प्रचक्षते ॥ ४ ॥

बारहवें तीर्थयात्रा महाभारतपुराण के अनुसार ॥

यद्यपि तीर्थयात्रा और सब तीर्थों के नाम भारत महापुराण वनपर्व के तेरहवें अध्याय के बीच में विस्तार से सब वर्णन किये गये हैं परन्तु विस्तार के भय से संक्षेपरीति पर केवल प्रसिद्ध २ तीर्थों का वर्णन किया जाता है और प्रकट हो कि जिनके हाथ पैर और मन अपने अधीन हैं और विद्या और तप में प्रसिद्ध हैं और दानादि नहीं लेते और अहंकार को त्याग किये हैं और कोई काम छल से नहीं करते और फलाहार करते हैं और पाप न करके क्रोध से अलग रह कर इन्द्रियों को जीतते हैं और सत्यता और शीलता और व्रतादिको अङ्गीकार करते हैं उनको घर बैठे तीर्थ का फल मिलता है और यज्ञ से अधिकफल तीर्थयात्रा करने में मिलता है जो मनुष्य तीर्थ में जाकर तीनदिन उपवास अर्थात् व्रत नहीं करते और सोना या गोदान नहीं देते वे दरिद्री का जन्म पाते हैं ॥ (प्रथम पुष्करतीर्थ का वर्णन) यह तीर्थ इस सृष्टि में ऐसा है कि जहां तीनों सन्ध्या अर्थात् प्रातः मध्याह्न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सन्ध्या में दश करोड़ हज़ार तीर्थ रोज़ जाया करते हैं और सूर्य, चन्द्रमा, मर्त्यगण, अप्सरा, गन्धर्व वे प्रतिदिन प्राप्त होजाते हैं और ब्रह्मा प्रति समय वहां स्थित रहते हैं यह वही स्थान है कि जहां अगले समय में सम्पूर्ण देवता और ऋषि तप करके सिद्धि पातेरहे जो कोई मनुष्य पुष्कर में स्नान करके देवता और पितरों का पूजन करता है वह अश्वमेध यज्ञ से दशभाग अधिक फल पाता है और फिर उसको आवागमन का भय नहीं रहता और कार्त्तिकी पौर्णमासी में पुष्कर के नहाने से ब्रह्मलोक मिलता है और जो पुरुष कि प्रभात सन्ध्या में पुष्कर का स्मरण करता है उसको सबतीर्थों के स्नान का फल मिलजाता है॥

रेवा अर्थात् नर्मदा, सरस्वती, चर्मण्वती, प्रभास, द्वारका, पिण्डारक, सिन्धु, सागरसंगम, भद्रतुङ्गा, कुमारी, पञ्चनदतीर्थ और सप्तचरुवंश आदि तीर्थ सौ २ अश्वमेध के फल देनेवाले हैं और कुरुक्षेत्र के जाने से फिर कोई पाप बाक़ी नहीं रहता अर्थात् जो कुरुक्षेत्र की मिट्टी उड़कर किसी के ऊपर पड़जावे तो वह भी परमगति पाता है और परशुराम ने वहां पुष्करतीर्थ को लाकर स्थापन किया है और कई कुण्ड वहां हैं जो परशुराम ने क्षत्रियों के रुधिर से भरे थे और उन्हीं पांच कुण्डों में पितरों का तर्पण किया था और ब्रह्मावर्त, केदार, कपिल, श्यामकानन, ब्रह्मदुम्बर, अपागांदी, काशीसर तीर्थ की अतिमहिमा है और केदार जिसको कपिष्ठल तीर्थ कहते हैं वहां कृष्णचतुर्दशी में जाकर शिवजी को पूजा करे तो सर्वमनोरथ पाकर स्वर्ग में बास हो और केदार में तीन करोड़ तीर्थ स्थिर रहते हैं (मिश्रिष) यहां श्रीव्यासजी ने सब तीर्थों को स्थापित किया था और वहां जाने से हज़ार गौके दान का फल प्राप्त होता है॥ और नैमिष अर्थात् नैमिषारण्य की बड़ी महिमा है और जितने कि तीर्थ पृथ्वी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भर में हैं वे सब नैमिषारण्य में हैं और वहां जाने से दशपीढ़ी तक मुक्त होजाती हैं और प्रथोदक स्वामिकार्त्तिक का यह तीर्थ है यहां स्नान करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है और पञ्चवटी में महादेव का पूजन करने से सत्यलोक मिलता है और गङ्गाद्वार में स्नान करने से करोड़ों तीर्थ का फल होता है और कनखल में आ- कर तीनदिन व्रत करके स्नान करे तो अश्वमेध के यज्ञ के फलको पाकर स्वर्गलोक को चलाजावे और गोप्रतार अर्थात् गुप्तार जो सरयू में है और जहां से कि श्रीरामचन्द्रजी अपने सर्वकुटुम्ब और पुरवासी लोगों समेत सुरलोक को गये हैं यदि कोई मनुष्य वहां स्नानकरे तो उसे अवश्य स्वर्गलोक मिलेगा और वाराणसी में जाकर शिवजी की पूजा करे और कपिलाह्रद में स्नान करे तो राजसूययज्ञ का फल मिलता है और मुक्तीर्थ जिसको 'काशी' कहते हैं वहां जाने से पापों के दूर होने का कुछ वर्णन नहीं वरन ब्रह्महत्या भी दूर होजाती है और वहां मरने से मोक्ष प्राप्त होता है इसलिये संसारमें और कोई तीर्थ काशीजी के बराबर नहीं और गया के जाने से केवल अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है और अक्षयवट के नीचे पिण्ड देनेसे बड़ा फल है और गण्डकी और बसत्तिया नदी के नहानेसे बड़ा फल होताहै और गोकर्ण में जिसको ब्रह्माआदि देवता नमस्कार करते हैं जो कोई मनुष्य जाकर शिवजी की पूजा करे और बारहदिन व्रत करके वहां स्थितरहे तो उसका कोई पाप नष्ट हुये विना नहीं रहता और अश्वमेधयज्ञ का फल मिलता है व कालिञ्जर और चित्रकूट और सुरङ्गवीरपुर में जाने से वाजपेय अश्वमेधआदि यज्ञों का फल होता है और प्रयाग जहां ब्रह्माआदिक देवता लोकपालों और सब सप्तर्षि सनत्कुमार आदि और नाग सिद्ध सूर्य आदि और ग्रह सम्पूर्ण नदी समुद्र अप्सरा गन्धर्व महादेव विष्णु प्रजापति आदि स्थित रहते हैं वहां तीन कुण्ड अग्नि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के हैं और सरस्वती गङ्गा और यमुना से मिलकर तीनों लोक के पवित्र करनेको बहती हैं वहां वेद यज्ञशरीर धारणकियेहुये दिखाई देते हैं और संसार में जितने पुण्यतीर्थ हैं उन सबसे प्रयाग बड़ा है वहां एकके देने से करोड़ का फल होता है वहां साठ करोड़ और दशहज़ार तीर्थ स्थिर रहतेहैं और कनखल और प्रयाग में गङ्गास्नान करने का सब जगह से अधिक फल और जिसतरह कि आग लकड़ी को जलाती है उसी तरह प्रयाग में गङ्गा सर्वपापों को जलादेती हैं और सत्ययुग में सबतीर्थ बराबर थे पर त्रेता में पुष्कर का माहात्म्य था और द्वापरयुग में कुरुक्षेत्र बड़ा था और कलियुग में गङ्गा के बराबर दूसरा तीर्थ नहीं है और पुष्कर में जो मनुष्य कि तप करके बड़ा दान देते हैं और मलयाचल में जो मनुष्य जलजाते हैं और भृगुतुङ्ग में जो मनुष्य मरजाते हैं वह फल केवल गङ्गापुष्कर और कुरुक्षेत्र में स्नान करने से प्राप्त होजाता है गङ्गा का नाम लेनेसे मनुष्य पवित्र होजाता है और दर्शन करने से मुक्ति मिलती है और स्नान करने और जल पीने से सात पीढ़ियां तर जाती हैं जबतक कि मनुष्य की हड्डियां गङ्गा में रहती हैं तबतक उस मनुष्य को स्वर्ग में बास मिलता है॥

श्रीमहाभारतवनपर्वणि (यथा)॥

न गङ्गासदृशं तीर्थं न देवः केशवात्परः।
ब्राह्मणेभ्यः परं नास्ति एवमाह पितामहः॥ १॥

और गङ्गा जिसदेशमें हैं वह तपोवन है और सिद्धक्षेत्र श्रीगङ्गाजी का किनारा है यह गुप्तभेद है और हरएक के कहने के योग्य नहीं दूसरे धूममुनि के वर्णन के अनुसार पहिले पूर्वदिशा के तीर्थ नैमिष जहां गोमती नदी है और जहां गई नाम पहाड़ है और वहां जानेसे पिछली दश पीढ़ियां और आगेकी दश पीढ़ियां मुक्त होजाती हैं और फल्गूनदी और कौशिकी और कान्यकुब्ज और गङ्गा यमुना का संगम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसको प्रयाग कहते हैं और अगस्त्याश्रय और तपसारण्य और भृगु-आश्रम जो महेन्द्रके ऊपर है और केदार आश्रम और गरकुण्ड और नद ये सब पूर्व के तीर्थ हैं दूसरे दक्षिण के तीर्थ गोदावरी, वेणी, चक्र-पियूषिणी, वाराहपियूषिणी, हरशेखर, माटरीन, कण्वआश्रमवेदी, सूर्याकेचन्द्रातीर्थ, अशोकतीर्थ, व्रणतीर्थ, कुमारीतीर्थ ये दोनों द्राविड़ देशमें हैं और गोकर्ण और प्रभास वैदूर्य अलस्यछुब्बूभेदन पुण्डारक उज्जयिनीशिखर द्वारावती ॥ और पश्चिम की ओर के तीर्थ ॥ ऊनती नर्मदानदी जो पश्चिम को बहती हैं और विश्वश्रवाश्रम गरवैदूर्य शिखरहर्दनी नदी पुण्यह्रद जो मैनाक के ऊपर है असितगिरि जहां कच्छसेन मुनि का आश्रम है और च्यवनाश्रम और जम्बूमार्ग केतुमाल गङ्गाद्वार सिन्दूरान पुष्कर चौथे उत्तर की ओर के तीर्थ ॥ मालिनी तीर्थ सरस्वती जो सिन्धु के मिलने पर है प्लक्षावतन तीर्थ यमुना के ऊपर है और शरभङ्गाश्रम दृषद्वती न्यग्रोध जो पाञ्चालदेश में है और दालभ्याश्रम और पलाशवन किरात और किन्नरगिरि कनखल पुण्य भृगुतुङ्ग बदर्याश्रम ॥

तेरहवें दान ॥

भारतपुराण के शान्तिपर्व के अनुसार जो कि दानरूपी अगाध समुद्र का पता नहीं है इस लिये विस्तार और संक्षेप दोनों से हाथ उठाया गया केवल इतनाही कहाजाता है कि गोदान १ भूमिदान २ अन्न-दान ३ सुवर्णदान ४ सबदानों से श्रेष्ठ हैं और महाभारत के * शान्तिपर्व दानधर्म को अवलोकन करना चाहिये क्योंकि उसके देखे विना ठीक हाल मालूम नहीं होसक्ता ॥ इति ॥

* यह पुस्तक महाभारत जिसमें शान्तिपर्व दानधर्म मोक्षधर्मआदि अठारहोंपर्व संयुक्त हैं इस छापेखाने में मौजूद हैं ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

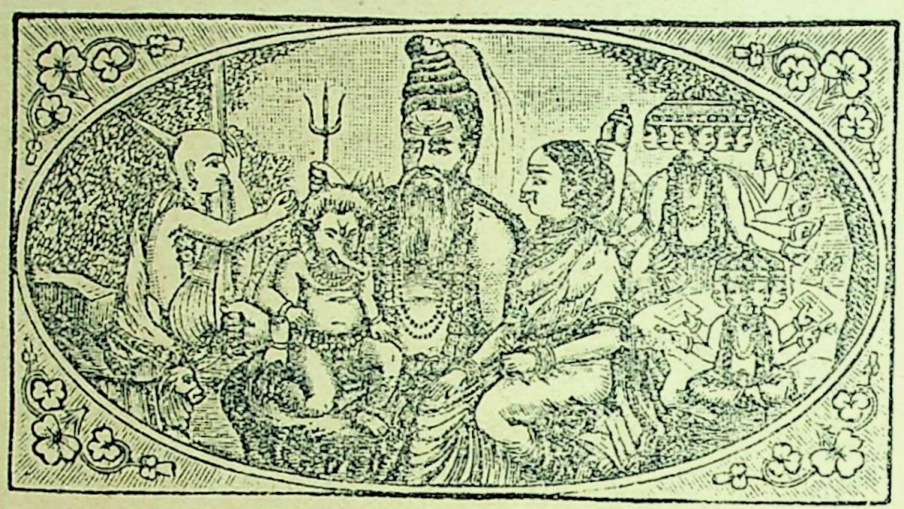

शिवपुराण भाषा ॥

पूर्वार्द्ध

प्रथमखण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

एक समय श्रीसूतजी महामुनि श्रीमद्वेदव्यासजी के सत्शिष्य जिन्होंने अपने गुरु की सेवा से बड़ाई पाई नैमिषारण्य के वन में श्रीसदाशिवजी महाराज की तपस्या में लगे थे और शिवजी महाराज के गुणकीर्तन अपने मन में प्रतिसमय ध्यान करके मग्न रहा करतेथे कि संयोग से शौनकादि अन्य मुनीश्वरों समेत सूतजी के सामने आये और प्रश्न किया कि आप सदाशिवजी के गुणकीर्तन बखान करें क्योंकि हमलोग अथाह संसारसागर में डूबते हैं हमारे बड़े भाग्य से आप मिले हैं थोड़े समय में वह युग आनेवाला है जिसमें पाप अधिक होंगे और पुराने धर्म का नाश होकर सबलोग उसको छोड़कर कुमार्गी होजावेंगे मनुष्य आप निन्दित होकर दूसरों की निन्दा करनेवाले अस्तव्यस्त झूठे लोभी होकर तीनों समय की संध्या से और व्रत से भी हीन होकर केवल संसारीकार्य में प्रवृत्त रहकर विचरेंगे

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

और कलियुगवासी महाहंकारी होकर अपने नित्यकर्म से हीन जप तप यज्ञ से विवर्जित महामूर्ख अति वितण्डावाद करनेवाले महा-नीच और यम संयम जो योग के अङ्ग हैं उनसे अज्ञानी होकर व्यभिचारादि दुष्टकर्मों में फँसे रहकर दूसरों की बुराई कहने में चतुर होंगे और महादुःखी निर्बुद्धि अन्यायी गर्ववान् होकर सत्यमार्ग से विमुख अप्रीतिमान् होंगे और चारों वर्ण की यह दशा होजावेगी कि ब्राह्मण खेती करेंगे उनको छलछिद्र के सिवाय अपने धर्मसे अज्ञानता होगी क्षत्रिय भी अपने सत्यधर्मोंको त्यागकरके युद्ध से मुख मोड़कर भागेंगे और चोरी में अतिचातुर्यता दिखलावेंगे और शूद्रों के सदृश होकर प्रसन्न रहेंगे और गऊकी रक्षा न करके जो शत्रु बेहथियार होंगे उनसे युद्ध करेंगे और व्यभिचार में पशुओं की भांति होकर स्त्रियों के अधीन रहकर नाना प्रकार के दुःख और क्लेश उठावेंगे और जुआ और मद्यपान से अपने धर्मको नष्ट करडालेंगे और पशुओं के घात और दुःख देने से तृप्त न होकर ब्राह्मणोंसे अपने को बड़ा जानकर नरक में जावेंगे क्योंकि जो मनुष्य अपने धर्म को नष्ट करता है वह नरक में जाताहै इसप्रकार क्षत्रिय अति अन्यायी और दुःख देनेवाले होजावेंगे इसी प्रकार वैश्य अपने अच्छे धर्मको छोड़कर पापोंसे धन संचित कर अपने उत्तम मार्ग को खोदेवेंगे और अपने देवता गुरु और गऊ की बड़ाई का बिचार न करके बड़े कृपण होकर अपने सब कुटुम्ब सहित दुःख की अग्निमें जला करेंगे मुट्ठी बंद करके न खोलेंगे अर्थात् ब्राह्मण आदिको भोजन भी न देंगे पर प्रकट के शीलसे अपने को अतिचतुर बुद्धिमान् समझकर निरर्थक वचन कहेंगे और लोभ क्रोध और अहम्भावरूपी सर्प उनको अपने अधीन करके संसाररूपी अथाह सागर में डाला करेगा और शूद्रभी अपने धर्मको छोड़कर ब्राह्मणों की रीति अङ्गीकार करेंगे और इन्हीं शूद्रोंके ऐसे कर्मसे ब्राह्मणों का तेज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हत होजावेगा और सम्पूर्ण जीवधारियों की आयुष् कम होजावेगी और वे शालग्राम की पूजाकरके ब्राह्मणों की निन्दा करेंगे और दुष्ट मनके धनवान् और अपकर्मी होकर दूसरों की निन्दा करके अपने धर्मको भूल जावेंगे और ब्राह्मणों से विमुख होकर हर समय ब्राह्मणों की निन्दा में लगे रहेंगे और भिक्षुक चाहे उच्चस्वर से भीख मांगेंगे तोभी न देंगे और जो मनुष्य कि वर्णसंकर होंगे वे अपने को उच्च-जाति के समझेंगे स्त्रियां भी बहुतही दुष्टप्रकृति होकर अपने पति की सेवा से विमुख बरन दुश्शीलता के साथ अपने पतियों को सहस्र अवगुणों से प्रसिद्ध करेंगी और व्यभिचारी पुरुषोंमें मन लगाकर उन के साथ कटाक्ष विहारादि कर आपही उनकी प्रीति में फँस जावेंगी और अपने मन को अन्यपुरुष की प्रीति में फँसाकर अपने आपको जलावेंगी और अपने प्रियतम की जांघ पर बैठकर उसके शरीर को शीतल करेंगी और लड़केभी माता पिता के साथ प्रीति न रक्खेंगे और वितण्डावाद से मत को झूंठाकर आप अपने गुरुसे भी विवाद करेंगे और लोग विद्या न पढ़ेंगे जो दूसरे देशमें भी सहायक होती है ऐसे दुष्टमन पापी अपने माताकी निन्दा से भी न हटेंगे उनके शरीर रोगों से क्षीण और दुःखी रहेंगे और माला, जप, तप, शील मनुष्यों में न रहेगा ऐसे समय में दिन २ सत्यता और शौचका अभाव होजावेगा स्त्री को केवल अपनी इच्छा के पूर्ण करने और प्रसंग के लिये समझ कर और ब्राह्मण को जनेऊ के कारण बड़ा समझेंगे और तपस्वी को छलसे बड़ा जानकर स्नान और शौचको मुख्य करके पुत्रकी इच्छा आदि के लिये बिचार करेंगे और कलियुग में सुन्दरता केवल बालका सँवारना होगा और अपना पेट भरलेना भी अच्छा काम समझा जावेगा और दान केवल यश कीर्ति के लिये समझा जावेगा और अपने कुटुम्ब के पालनेको बुद्धिमानी जानेंगे और छलछिद्रकी वार्ता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुद्धिमानी और चतुरता समझी जावेगी और सब कामों से अधिक कठिन किसी तीर्थ का मार्ग चलना जानाजावेगा ऐसे समय में हर छोटे बड़ों को आपत्ति पड़ेगी तेज, बल, कम और जीविका और आयुष् की अधिक चिन्ता होगी सिवाय इसके सबसे अधिक धर्म संसार में लोभ समझा जावेगा न तो मन में किसी पर निश्चय होगा न कुछ अच्छे बुरेका विवेक रहेगा तो कहिये कि ऐसे समय में कलियुगवासी क्योंकर मुक्त होंगे और अपने पाप और हजारों दुष्कर्मों को जलाकर सत्यमार्ग क्योंकर प्राप्त करेंगे और अतिउत्तम इच्छा अर्थात् मुक्ति उन को क्योंकर मिलेगी हे सूतजी ! यह चिन्ता मेरे मन से दूर नहीं होती सो आप कोई ऐसी युक्ति बतावें जिससे लोग प्रसन्न हों क्योंकि आप केवल लोगों के उपकार के लिये जीते हैं आप चिन्ता दूर करके प्रसन्नता उपजानेवाले हैं हम इसी चिन्ता में डूबते थे कि आपको देखा आप कृपा करके यह बात कहिये जिससे चिन्ता दूर होकर हर्ष प्राप्त हो और जो थोड़ी प्रीति करने में बड़ा फल दे और तुम अधिक प्रीति करनेवाले योग्य हो रीति है कि दयावान् गुरु होते हैं वे छिपी हुई बातको भी शिष्य से कह देते हैं आपके बराबर संसार में संसारी लोगों का हित चाहनेवाला कौन है आपने व्यासजी की सेवा बहुत की है और पापियों को पापके समुद्र से पार उतारा है व्यासजीने बहुत कृपा करके सब पुराण आपको कृपा किये हैं ये शौनक के वचन सुनकर सूतजी अति प्रसन्न हुये और शिवजी के चरणों में अधिक ध्यान करके कुछ मुखसे न कहा फिर थोड़ी देरके पीछे प्रेमसे अश्रुपात करते बोले ॥

कि हे शौनक ! और अन्य मुनीश्वरलोगो ! तुमलोग ज्ञानी और संसार के हित चाहनेवाले हो चाहे सबलोगों की वह बुद्धि भ्रष्टहोगई कि जो संसारीलोगों के हितसे सम्बन्धित है पर आपने यह प्रश्न केवल सबलोगों के उपकार के लिये किया है और यह अटन आपका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संसारीलोगों के उपकार के लिये प्रकट है सो अब हम तुम्हारी प्रीति से संसार की भलाई के लिये शिवजी की परम स्तुति जिससे कलियुग के दुःख दूर होजावें और मुक्ति प्राप्त हो कहते हैं यह शिवजीका वर्णन कलियुग के पापों को दूर करके प्रसन्नता देता है और तीनों लोकों में अतिपवित्र और मनोहर है जो मनुष्य शिवजीकी प्रीति में लगगया वह सदा प्रसन्न है और वह मनुष्य सन्तानवान् और धनसम्पन्न होताहै बरन कोटानिकोटि पाप नष्ट होजाते हैं इसीकारण जो लोग बुद्धिमान् हैं वे सदाशिव की तपस्या करके सम्पूर्ण पदार्थ पाते हैं और करोड़ों जन्म के अच्छे काम अपने आप प्रकटहुये हैं ऐसा शिवका वर्णन करके बहुत से परमपद पाचुके हैं बरन बहुधा पापी जहां शिव रहते हैं वहां तक पहुँचगये हैं और जो लोग कि भालमें भस्म लगाकर शिव का नाम लेते हैं वे बेप्रयास शिवलोक में पहुँचजाते हैं कि जहां शोक और दुःख कोई नहीं और जो शिवको नमस्कार करते हैं वे बहुत सन्तान पाते हैं जो लोग ब्राह्मणों की पृथ्वी छीनलेते और हिंसक और ब्राह्मणों के मारनेवाले मद्यप व्रतहीन और व्रतभङ्ग करनेवाले हैं ऐसे लोगभी शिवका नाम लेकर नरक के दुःख से छूटजाते हैं इससे उचित है कि संसार को दुःखरूप समझकर शिवमें प्रीति लगावै और जिन लोगोंने संसार का मोह त्याग दिया है वे और अच्छे वेदपाठी उसी त्रिशूलपाणि महाराज की स्तुति से अपना काल व्यतीत करते हैं इसलिये जो मनुष्य कलियुग के दुःखसे छूटना चाहे वह शिव का यशगावे सिवाय इसके और युक्ति नहीं है हे शौनक ! वेदोंसे भी शिव की स्तुति नहीं होसक्ती शिवजी को सब से बड़ा जानकर ध्यान न छोड़ना चाहिये जिस तरह से कमल के पत्तोंपर पानी की बूंद नहीं ठहरती उसी तरह शिवके भक्तों पर कलियुग के सब पाप प्रभाव नहीं करते यह सुनकर शौनक दोनों हाथ जोड़कर सूतजी के सामने बैठ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गये और बड़ाई और प्रशंसा करने के उपरान्त सब ऋषीश्वरों ने सम्मति करके यह प्रश्न किया कि शिव निर्गुण कहलाते हैं पर सगुण किसतरह होगये उनके तत्त्व का जाननेवाला कोई नहीं है शिवने पहले संसार को क्योंकर उपजाया फिर आप क्योंकर उपजे और प्रलय में संसार का नाश करके आप किस तरहसे रहतेहैं वे किस बातमें प्रसन्न होतेहैं और प्रसन्न होकर क्या देतेहैं वे किसतरह अवतार लेकर कौन कार्य करते हैं और अपने भक्तोंके अधीन होकर किसतरह उनके दुःख दूर करदेते हैं यह सब वर्णन कीजिये और जो कुछ कि उचित हो सब आप वर्णन कीजिये क्योंकर आप व्यासजीकी कृपा से गत वर्तमान और भविष्य के वृत्तान्त को जानते हैं हमारे माता, पिता, बन्धु, मित्र, विद्या सबकुछ आप हैं संसार में आपसे अधिक विद्वान् और रीतिपर चलनेवाला कौन है जिसने सब व्यासजीके मुख से सुना और यह बात प्रकट है कि भाग्यविना अच्छे ब्रह्मज्ञानियों से भेंट नहीं होती और न शोक व मोह दूरहोता है हम उसीको बड़ा भाग्यवान् जानते हैं जो शिवजी की कथाकीर्तनसे सम्बन्ध रक्खे ॥

दूसरा अध्याय ॥

इतना सुनकर सूतजी अतिप्रसन्न हुये और उन सबकी बड़ाई करके कहा कि हे शौनकादि मुनीश्वरो ! यही प्रश्न जो तुमने किया है एक बेर नारदजी ने ब्रह्माजी से कियाथा और ब्रह्माजी ने यथार्थ उत्तर देकर नारद को प्रसन्न करदिया था सो कहते हैं कि एक समय श्रीनारदजी तप केलिये हिमालय पर्वत पर जिसके निकट श्रीगङ्गाजी बहती हैं पहुँचे और एकजगह बैठकर अतिकठिन तप करनेलगे और श्वास ब्रह्माण्डमें चढ़ाकर कुटी में बैठरहे ऐसी कठिन तपस्या देखकर इन्द्र अति भयभीत हुये और समझे कि नारद हमारे पद प्राप्त होने के लिये ऐसा कठिन तप करते हैं रीति है कि व्यभिचारी मनपापी लोग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कौवेकीतरह डरा करते हैं सो इन्द्रने चाहा कि नारद के तप में अन्तर आजावे तुरन्त इसी इच्छा से काम को बुलाया कामदेव तुरन्त आया इन्द्रने कहा कि हे मित्र ! आपके द्वारा हमने बहुतगर्ववानों का अहंकार तोड़डाला है देखो नारद हिमालयपर्वतपर शिवका तप करते हैं हमको सन्देह है कि वे हमारे पद को न छीनलेवें इसलिये आप ऐसा उपाय करें जिससे नारदका तप भङ्ग होजावे यह सुनकर कामदेव ने अपनी सब सामग्री सजाई और नारदके निकट जाकर अपनी सम्पूर्ण माया प्रकट की अर्थात् नानाप्रकारके पुष्प खिले खिलाये और कोकिला आदि पक्षी अपनी मीठी मीठी वाणी बोलनेलगे और तीनों प्रकारकी शीतल मन्द मन्द सुगन्धित जो कामदेवके उपजाने वाली है पवन चलनेलगी छहू ऋतु प्रकट हुई और रम्भादि उत्तमोत्तम अप्सरा जो नाचने और गाने में अतिप्रवीण थीं नृत्य करने लगीं यह विजय करनेवाली सेना देखकर काम अतिप्रसन्न हुआ और वहां जाकर जो २ करसका वह किया पर नारदका मन कुछ चलायमान न हुआ अब इसका मुख्य कारण हम वर्णन करते हैं कि उस जगहपर कामदेव का बल क्यों न चला हेतु यह है कि जब सदाशिवने कामको उसी जगह पर जलादियाथा और फिर उस को जिलानेका वर देकर यह कहाथा कि चाहे कामदेव जी जावेगा पर इस जगहपर उसकी कुछ न चलेगी अर्थात् जहांतक कि ये स्थान दिखाई देते हैं वहां तक काम प्रकट न होगा इसीकारण कामदेव निराश और निर्लज्ज होकर इन्द्रके निकट गया और अपने निरर्थक लौटआने का हाल कहा और सम्पूर्ण सभासद कामदेव का वर्णन सुनकर आश्चर्यसे नारदकी स्तुति करनेलगे नारदने अपने तपको पूर्ण समझकर अपने को कामदेवपर प्रबल समझा और यह न जाना कि यह तपोभूमि ऐसी है और अपने तपोबल पर मग्न होकर अतिप्रसन्नतापूर्वक शिवजी के पास गया और अपने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तपका हाल विस्तार से वर्णन किया शिवजी ने उत्तर दिया कि कामदेव का जीतनेवाला तीनों लोक में कोई नहींहै अब हम तुमको समझाते हैं कि तुम विष्णुलोक में यह बात न कहना और इस बातको हरतरह से गुप्त रखना यहां तक कि किसीसे पूछने पर भी न कहना हे नारद ! तुम विष्णुजीके तपसे मुझे बहुत प्रिय हो नारदको यह शिवजीकी बात कुछ अच्छी न लगी और शिवजी की माया से जो मिथ्या और नष्ट नहीं होसक्ती शिवजीसे बिदा होकर ब्रह्माजीके निकटगये और वहांभी अपनी प्रशंसा की और अपने तप पर गर्वित होकर कामदेवपर अपना विजयपाना वर्णन किया ब्रह्माजी अपने पुत्रका ऐसा अहंकार देखकर सदाशिवकी भांति समझाने लगे पर नारदको बहुतही अहंकार होगयाथा इस करण पिताका समझाना फलदायक न हुआ और विष्णुलोक में भी उसी अहंकार से गये विष्णुने उठकर कण्ठमें लगाय पूछा कि अब तक तुम कहां रहे नारद ने अपने तप और कामदेवपर विजयपाने आदिका हाल कह सुनाया यह सुनकर विष्णुजी हँसे और महादेवजीकी इच्छा समझकर कहने लगे कि तुम धन्य हो धन्य हो हे शिव ! आपकी माया जिसके बलसे सम्पूर्ण संसार अज्ञान और भूला हुआ है और शिव के चरणों के स्मरण में नेत्र मूंद चुपहोरहे और सदा शिवकी इच्छा भली भांति समझ मधुर वचनसे कहा कि हे नारद ! जो मनुष्य ब्रह्मज्ञानी संसार को छोड़ेहुये ईश्वराराधन से वर्जित हैं उनके मनमें मोह उपजता है आपने तो ब्रह्मचर्य अङ्गीकार किया है काम तो आपका क्या करसक्ता है आपके चरणोंकी सेवासे भय दूर होती है और कामकी कुछ नहीं चलती ऐसी वार्ता सुनकर नारद और भी अहंकार में डूबकर कहने लगे कि यह बात केवल आपकीकृपासे प्राप्तहै यह कहकर नारदजी बिदाहुये उसी समय सदाशिवजीकी मायासे नारदजी के मार्ग में एक बहुत अच्छा शहर बसगया मानों दूसरा स्वर्ग है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लम्बाई उसकी चारसौ कोस की और वहांके स्त्री पुरुष नाना प्रकार से विहार करते वहां के वासियों का रूप देखकर काम लज्जित होता था और एक शीलनिधि नाम राजा वहां का राज्य करता था जिसके यहां स्वयम्बर होता उसमें उस राजा की लड़की जिसकी सुन्दरता पर संसार भर मोहित था शृङ्गार किये मानों सभा का अलंकार होरही थी और चारों ओर के राजा उस महासुन्दरी चम्पकवर्णी गजगामिनी कन्या की इच्छा से उस सभा में वर्तमान थे नारद यह सभाका हाल सुनकर स्वयम्बर में पहुँचे राजाने इनका अतिआदर सन्मान करके अपनी लड़कीको बुलाकर नारदके साम्हने किया पहले नारदजी उस कन्या का अनूपरूप देरतक देखा किये और उसको शीलवान् पाकर विचार किया कि जो मनुष्य इसका पति होगा वह अमर होकर किसीसे युद्ध में परास्त न होगा यह बात अपने मनमें विचारकर फिर अपनी राह चलेगये पर मार्ग में कामसे अतिविह्वल होकर बुद्धिके विपरीत कामके जाल में फँसगये विचार किया कि रीति है कि सुन्दरी स्त्री स्वरूपवान् पुरुषको चाहती है हम सुन्दर नहीं हैं उसको किस तरह पावेंगे सुन्दरता सबको भाती है हमको उचित है कि विष्णुजीका स्वरूप लाकर उस कामिनी को प्राप्तकरें यह विचार कर विष्णुका ध्यानकर कहने लगे कि इस संसारमें आपके बराबर हमारा और कोई नहीं निश्चय है कि आप प्रकट होकर हमारा मनोरथ पूर्ण करेंगे यह बिनती नारदकी सुनकर विष्णुजी उस स्थानपर प्रकट हुये और कहा कि जिसतरह वैद्य रोगीकी इच्छा के प्रतिकूल भोजन देता है उसीतरह हम आपकी सहायता करें यह युक्ति विष्णुजी कहकर अन्तर्धान होगये और वह युक्ति नारदने न समझी सो सम्पूर्ण शरीर नारदका विष्णुजी के सदृश होगया पर मुख वानरकासा रहा और यह भेद नारदने न जाना और स्वयम्बरस्थल में पहुँचे कि जहां सब राजा बैठेथे वहां नारद बैठकर

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बार २ उचकते थे और विचार करते थे कि यह लड़की सिवाय मेरे और किसीकी इच्छा न करेगी यह स्वरूप और किसीने न देखा और पहिलेकी तरह सब लोग नारद को देखकर आदर करनेलगे उस सभा में सदाशिव के दो गण भी ब्राह्मण के रूप से वर्तमान थे वे भी नारदजी के पास जा बैठे और नारदकी निन्दा करके परस्पर हास्य बड़े शब्दसे करनेलगे और ऐसी निन्दापूर्वक संकेत में वार्ता करते थे जिसको नारदजी कुछ नहीं समझते थे वे कहने लगे कि हे नारद ! आपने विष्णुसे क्या सुन्दर स्वरूप प्राप्त किया है अब लड़की क्यों किसी को चाहेगी राजा की लड़की इसी अवसर में स्वयम्बर के बीच आई और नारद का भयानक स्वरूप देखकर मनमें अति अप्रसन्न हुई और मुँह फेरकर दूसरी पंक्ति में अपनासा पति ढूंढ़नेलगी और जिस ओर नारद बैठते थे उस ओर भूलकर भी नहीं देखती थी और नारद की यह दशा थी कि शिर ऊंचा करके उस कन्या की ओर चारों ओर से देखते थे और शिवके दोनों गण यह दशा नारदकी देखकर हास्य करते थे ऐसे समय में आप विष्णुजी उस सभा में आये लड़की ने प्रसन्न होकर तुरन्त जयमाल विष्णुजी को पहनादी जिससे सब राजा निराश होगये यह दशा देखकर नारदजी विह्वल होगये उस समय दोनों गणोंने नारद से कहा कि आप नाहक इतने दुःखी होते हैं भला अपने मुखको तो देखिये ॥

तीसरा अध्याय ॥

यह सुनकर नारदजी पानी के बीच में अपना मुख देखकर आश्चर्य में हुये और क्रोधित होकर दोनों गणों को यह शाप दिया कि तुम दोनों बन्दर छली और पापी होजाओ क्योंकि तुमने हँस २ कर हमारी बहुत अप्रतिष्ठा की है उसका फल पाओ कि फिर ऐसा अपकर्म तुमसे न होसके यह शाप दोनों गण सुनकर और नारदको मोहवश

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जान चुप होरहे और अतिचिन्तावान् होकर अपने लोकको गये और शिवजी की स्तुति करनेलगे और नारद अपनी मुख्यदशा में आकर ईश्वर के भेद को न समझे और अपना वह वानर का स्वरूप विचार कर मनमें कहनेलगे कि यह मेरी अप्रतिष्ठा केवल विष्णुजी के छलसे हुई यातो विष्णुजीको शाप दूंगा या अपने प्राण त्यागदूंगा यह सोच श्रीहरिमन्दिर पहुँचे सो विष्णुजी नारद की इच्छा जान मार्ग में खड़े हुये और वह कन्या भी जिसको स्वयम्बर में लिया था साथ थी विष्णुने नारद को प्रणामकर हास्यपूर्वक कहा कि हे नारद! तुम चिन्तित होकर कहां जाते हो यह सुनकर नारद अतिकोपित हुये जैसे जलतीहुई अग्निमें कोई सूखी लकड़ी डालदे और उस क्रोध में यह शब्द मुखपर लाये कि तुम इस समय हमको अच्छे मिले तुम दूसरे की प्रसन्नता न देख सके तुम बड़े छली हो तुमने कहां छल नहीं किया बरन तुम छलरूप हो मोहनीरूप धारणकर तुमने दितिके पुत्रों के साथ अमृत के बांटने पर जो छल किया वह प्रसिद्ध है फिर जलन्धर की स्त्रीसे छल करके उसका पतिव्रत धर्म छुड़ाया यदि सदाशिव हलाहल विषको न पीते तो तुम्हारी सब माया निकलजाती अच्छे लोग छलका अभ्यास नहीं डालते यह बात सदाशिव को उचित न थी जैसा कि तुमको वरदान दिया था अर्थात् तुमको सम्पूर्ण सृष्टि का स्वाधीनस्वामी बनाया तुम इस योग्य न थे इसी अहंकार पर कि तुमसे और कोई बड़ा और उत्तम नहीं है तुम जो चाहते हो वह करते हो सदाशिवभी तुमको ऐसा स्वाधीन और सर्वसृष्टि का स्वामी करके अपने मन में चिन्ता करते हैं और यह उपाय निकाला है अब हम सदाशिवकी आशा समझकर इस लिये कि फिर ऐसा काम तुमसे न बन पड़े तुमको तुम्हारे कर्म का फल देते हैं आजतक तुम सिंह के सदृश ऐसे वन में जहां दूसरा न था तीनों लोक में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निर्भय होकर फिरा किये पर अब हम तुमको ऐसी स्वाधीनता का फल देते हैं क्योंकि तुमसे भले बुरेका विवेक न होसका और न तुम संसार के लिये नियम बांधसके चाहे सदाशिवने तुमको वरदान दिया है पर तो भी हम तुमको सिखलाते हैं यह कहकर नारद शाप को इस तरह मुखपर लाये कि तुमने जिस शरीर से हमको छला है उसी शरीर में तुमको दुःख होगा और जिनके सदृश हमारा मुख करदिया था वेही तुम्हारी सहायता करेंगे और जोकि तुमने स्त्री के लिये हमारी ऐसी अप्रतिष्ठा की इस लिये तुमभी स्त्री के वियोग से अति दुःखी होकर सम्पूर्णवनों में घूमते रहोगे यह सुनकर विष्णुजी ने अपना शिर नारद के चरणों पर रखदिया पर नारद ने क्षमा न की तब सदाशिव ने नारदके मनसे माया खींच ली उस समय न कोई स्त्री दिखलाई देती थी न वह दशा नारदकी रही नारद आश्चर्य में होकर खेद करनेलगे और कहा कि जाना नहीं जाता कि यह सब वृत्तान्त सत्य है या स्वप्न में मैंने देखा है प्रेमपूर्वक कहा कि धन्य २ आपकी माया जिसमें हम ऐसे बुद्धिमान् भूलगये और फिर विष्णुजी के चरणों पर गिरपड़े और कहा कि हे सदाशिव ! हमारे शाप को खण्डन कर दीजिये और जो कठोर वचन मैंने तुमसे कहे हैं वे महापाप के भरे हैं वे क्योंकर क्षमा होंगे विष्णुने कहा कि जो तुमने सदाशिव के वचनको न माना उसका फल यह तुमको मिला है अब तक तुम को इस ईश्वरीगति का भेद मालूम न हुआ इस लिये ये सब बातें बताई गईं सो अबभी आपको उचित है कि चैतन्य होकर समझो कि सदाशिव सब से बड़े हैं और तीन कार्यों के निमित्त तीन स्वरूप होकर सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी वर्तमान हैं कि ब्रह्मा सृष्टि उपजाते और हम भी उन्हीं की सेवा करके संसारको पालते और वे आपही प्रलय करते हैं हम केवल सदाशिवके तपसे सबसे बड़े गिने गये हैं हे नारद ! ऐसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदाशिवकी तपस्या करो क्योंकि सदाशिवकी तपस्या विना किसी को परमपद नहीं मिलता आपको उचित है कि सब छोड़कर केवल सदाशिववाक्य मुखपर रक्खो और शिवके शतनाम जपो उनके जपते २ सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं और अब खेद न करो क्योंकि आपही सदाशिवने यह माया की है और हमको आपके द्वारा यह शाप दिलाया वे सदाशिव कालके भी काल अद्वितीय अप्रमेय हैं हमको सदाशिवसे अधिक प्रिय और कोई नहीं और हमारा सब से अधिक बल वही हैं तुमको उचितहै कि हृदय में शिवका चरण रखकर देशाटन करो जिसके प्रताप से दुःख न होगा और पृथ्वीभर में सदाशिवकी माया देखते हुये काशीजी को सिधारो उसे रुद्रक्षेत्र बाराणसी मुक्तिक्षेत्र और महाश्मशान भी कहते हैं और फिर ब्रह्माजी अपने पिता के निकट जाकर सदाशिव के सौ नाम पूछो क्योंकि ब्रह्माजी बड़े शिवके भक्तहैं और रात्रि दिन उनकी सेवा करते हैं इतना कहकर विष्णु अन्तर्धान हुये और नारद सदाशिवजी के पास चले मार्ग में दोनों गण नारद के चरणोंपर गिरपड़े और कहनेलगे कि हम ब्राह्मण नहीं हैं बरन सदाशिवके गण हैं और आपकी बड़ी अवज्ञा हमसे हुई है सो आप अपना किंकर समझकर कृपाकरें क्योंकि हम अपने कर्मका फल पाचुके यह सुनकर नारद खेद करके कहनेलगे कि मेरी सबबुद्धि भ्रष्ट होगई सदाशिवकी माया अतिबलवान् है जो मैंने कहा वह तो होहीगा पर हम यह वर देते हैं कि तुम दोनों भाई मुनि के वीर्य और राक्षसी से उत्पन्न होगे और तुम्हारा बड़ा प्रताप होगा तुम बड़े विजयी महाराजा होकर सम्पूर्ण सृष्टि को विजय करोगे और नाना प्रकार के भोग भोगकर सदाशिवकी भक्ति से अचेत न रहोगे अन्तको वानर और मनुष्य तुम्हारी मुक्ति करेंगे और सदाशिव और विष्णु तुम्हारे घर जाकर मुक्ति कृपा करेंगे इतना कह नारद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदाशिव फिर ब्रह्मा के पास गये और स्तुति करके हाथ बांध ब्रह्मा से कहने लगे कि आपने जो विष्णु की कथा कही थी वह तो हमने सुनी जिसमें भक्ति वैराग्य तप और दानकी रीति और तीर्थ आदिका वर्णन हैं परन्तु सदाशिवजी की भक्ति से हम हीन हैं सो आप क्रम से कहिये कि क्योंकर सदाशिव आदि मध्य और अन्त में रहते हैं और क्योंकर प्रसन्न होते हैं और फिर वे क्योंकर निर्गुण होकर सगुण होजाते हैं और अपनी और विष्णुजीकी उत्पत्ति वर्णन कीजिये और जिस तरह सदाशिव कैलास में आये और सतीजीका बिवाह और गिरिजा का वर्णन और स्वामिकार्त्तिक की उत्पत्ति तारक, वृत्रासुर, त्रिपुर, जलन्धर, अन्धक आदि वध और सदाशिवजी के सम्पूर्ण गुण और अवतार विस्तार से कहिये और जितने शिव पार्वतीके चरित्र हों वे सब मुझपर कृपा करके प्रकाश कीजिये जिससे मुझे और आपको प्रसन्नता हो ॥

चौथा अध्याय ॥

इतना कह फिर सूतजी बोले कि हे शौनक ! यह नारद का प्रश्न सुनकर ब्रह्मा ऐसे प्रेम में मग्न हुये कि आंखों से आंशूकी धारा बहने लगी और उनको कुछ तन मन स्त्री पुत्र घर द्वार की सुधि न रही बड़ी देरके पीछे चेत में आकर शिव शिव कहते और शिवका ध्यान करते हँसकर बोले कि तुमको धन्य है धन्य है तुमने हमारा कुलभर मुक्त करदिया क्योंकि तुमको सदाशिवजी की भक्ति उपजी ऐसी प्रशंसा करके ब्रह्मा ने नारद के प्रश्न का यह उत्तर दिया कि हम पहले सदाशिवके निर्गुण चरित्र अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन करेंगे फिर सदाशिवकी सगुण महिमा कहैंगे प्रकट हो कि जब कोई सृष्टिका चिह्न भी न था तब निर्गुण सदाशिव सर्वव्यापक ब्रह्म सत् चित् आनन्द ही थे वह सत्यहै अनन्तर परमानन्द है उनका मन और वचन उनके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आधीन है कोई नाम रूप नहीं न वे सूक्ष्म हैं न स्थूल न बड़े न छोटे न उनमें न्यूनता है न ऊंचता और न वे किसी के अधिकारी हैं माया और पापसे अलग मृत्यु उनके साम्हने जा नहीं सक्ती वे देखने में नहीं आते और अनादि हैं और किसी के वश्य नहीं और सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी और सब के महाराजा हैं और संसारी मनुष्यों के कर्मों के साक्षी हैं और सर्वव्यापक और सब से भिन्न हैं उनमें एक या दो का शब्द भी नहीं कहसक्ते और दोनों हैं उन सदाशिव को ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि आदि सब तप और ध्यान करते हैं परन्तु उनकी कृपा विना कोई उनको नहीं पाता उनकी स्तुति करने में शेषजी भी हारे हैं चाहो योगी देखते हैं पर उनके आदि और अन्तको नहीं जानते उस सम्पूर्ण ज्ञान और सत्यस्वरूप ईश्वर को वेद नेति नेति वर्णन करते हैं मूर्ख मनुष्य क्या जानसक्ते हैं वे निर्गुण स्वरूप विना कान सुनसक्ते हैं वे विना आंख सब कुछ देखते हैं विना नाक के संसार भरकी सुगन्ध लेते हैं मुख विना सब कुछ खाते हैं विना जिह्वा सब कुछ पढ़ते हैं विना त्वचा ठंढे और गरम का विवेक रखते हैं विना हाथ के सर्व कार्य करते हैं विना पांव वे परिश्रम सर्व सृष्टि में घूमते हैं लिङ्ग विना सर्व सृष्टि उपजाते विना गुदा मल दूर करते जिस स्वामी की ऐसी विचित्र बातें हैं उसकी स्तुति किस तरह वर्णन होसक्ती है ऐसे स्वामी निर्गुण स्वरूप सदाशिव ने यह इच्छा की कि हम एक हैं अनेक होजावें यह विचार कर आप सगुणरूप होगये ऐसे निर्गुण और सगुण स्वरूप में कुछ अन्तर नहीं है सो हम सगुण स्वरूप का वर्णन करते हैं जिनके स्मरण से सर्वपाप नष्ट हो-जाते हैं वह सर्व कर्मों का देखनेवाला है उसने विष्णु और ब्रह्मा को उपजाया और सर्व कर्मों का साक्षी और प्रतिष्ठित विराट्रूप है उसके नाम शिवशंकर, हरनाथ, महेश, परमदेव, जगदीश, परमेश्वर,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परमात्मा, ब्रह्म, गिरीश, शंभु,सदाशिव,अनीश, विबुध, पार्वतीपति, त्रिशूलपाणि, चक्री, ईश्वर, सुखदाता आदि अनन्तनाम हैं वही सदाशिव हैं और शिव ब्रह्मा और विष्णु से मान पातेहैं और सम्पूर्ण सृष्टि के कर्ता भक्तोंको हर्ष देनेवाले उमापति, भगवान्, परमानन्द, सूर्य, चन्द्रमा आदि हजारों गुणों से भरेहुये सम्पूर्ण सृष्टि और ब्रह्मा-विष्णु और रुद्र के उपजानेवाले हैं ऐसा जो कोई सबका स्वामी है उसको वैष्णव मत रखनेवाला विष्णु कहता है और शाक्त शक्ति, सूर्योपासक रवि, गाणपत्य उसीको विनायक जानते हैं ऐसे सदाशिव लोक में हजारों नाम से विख्यात हैं ऐसे त्रिशूलपाणि महाराज का सगुण स्वरूप हम वर्णन करते हैं जिनके स्मरण से सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं सगुण स्वरूप अर्थात् शिर पर जटा और गङ्गा भालमें चन्द्रमा और चापकी तरह त्रिपुण्ड्र कान में कुण्डल पहने हुये तीनों नेत्र लाल २ सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, कीर सदृश नासिका ओष्ठ लाल कुँदुरू से हैं पञ्चमुख अतिपवित्र और सुन्दर ये हैं पहला मुख पूर्वकी ओर वह मानों प्रभात के सूर्यवत् है और तीन नेत्र कमलवत् द्वितीयाका चन्द्रमा मस्तक पर धारण किये हैं दूसरा मुख जो दक्षिण की ओर है उसमें कमान की सदृश भौंहैं हैं और तीनों नेत्र लाल और भारी होंठ फड़कते हुये जिनसे भय होता है और दांतभी भयानक मस्तक में चन्द्रमा विराजमान है और तीसरा मुख जो पश्चिम में है उसमें तीन नेत्र हैं और अर्धचन्द्र शिरपर है मुस्कान से तीनों भुवन का मन मोहरहे हैं चौथा मुख जो उत्तर की ओर है वह विद्रुम अर्थात् मूंगे के वर्ण का है श्यामवर्ण केश मुखपर लटकते हैं और तीनों नेत्र ललाई लिये भाल पर बुइजका चन्द्रमा अलंकृतहै पांचवां मुख जो नीचेको है उससे अपने भक्तों को प्रसन्नता उपजाते हैं उसके तीनों नेत्र कमलपुष्प के सदृश खिले हुये हैं श्वेतवर्ण हैं अतिसुन्दर चन्द्रमा की एक लकीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भालपर जिसकी उपमा वर्णन नहीं होसक्ती है विराजमानहै इस तरह सदाशिव पञ्चवदन प्रसिद्ध हैं गले में तीन लकीरें और उसमें जो हलाहल की श्यामता है वह भक्तों के मन को हरती है शूल धारण किये गले में मुण्डों की माला चारभुजा और कोई पांचभुजा भी कहते हैं और कइयोंने दशभी कहा है ऐसे हाथों में अलग २ शस्त्र लिये हैं और हाथ कमलवत् लाली लिये उंगली भी लाल नख परेवा के चन्द्रवत् प्रकाशमान हैं और जब आठ भुजा वर्णन की जाती हैं तो उनके शस्त्र ये हैं शूल, फरसा, खड्ग, पवि दाहिनी ओर लिये हुये हैं और बाईं ओर अंकुश, खट्वाङ्ग, नाग धारण किये हुये हैं और जब कि सदाशिव की दश भुजा कही जाती हैं तो यह सब सामग्री सब हाथों में वर्णन होती है अर्थात् दाहिने हाथोंमें शूल, फरसा, पवि, चक्र और बायें हाथों में नाग, घण्टा, पाश, अंकुश, डमरू लिये हुये हैं हृदय बहुत चौड़ा फैला हुआ और उदर में त्रिबली पड़ी हुई नाभि गम्भीर विचित्रकटि और ऊरु मानों मन हरलेते हैं और कदलीथम्भ से साफ़ चमकते हुये गोल सुडौल हैं और तलुवा लाल नवीन चन्द्रमा के समान चमकते हैं ऐसा विचित्र सुन्दर स्वरूप श्वेतवर्ण माथे पर भस्म रमाये पांचकला और पञ्चब्रह्म सदाशिव के शरीर में वर्तमान हैं और तीनों शक्ति भी शरीर से जुदा नहीं और पांच या छः अक्षर से सदाशिव का शरीर है ऐसे पवित्र सम्पूर्ण कलासमेत सदाशिव के स्वरूपको बड़े २ तपस्वी और मुनि छलरहित ध्यान करते हैं जैसे कि बहुतरूप सदाशिवके हैं उसी तरह से उनके ध्यान भी असंख्य हैं पर उसके जाननेवाले बहुतही कम पायेजाते हैं ऐसे सदाशिव की महिमा और रूप नाम असंख्य हैं जिनको वेद पुराण तपस्वी भी नहीं जानसक्के चाहे मूर्ख भी सदाशिव की कृपासे बे परिश्रम यह रूप देख लेते हैं जैसा कि व्याध और गणिका आदि मुक्ति पाचुके हैं और इस

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बात की साक्षी वेद और पुराण देते हैं वह महाराज विना प्रेम दिखाई नहीं देता और संसार भर में वही प्रकट है और गज और गणिका के सदृश असंख्य मूर्ख महापापी जो वेद का नाम भी जानते न थे सदाशिव की दयादृष्टि से मुक्ति पाचुके हैं ऐसे सदाशिव का कौन वर्णन करसक्ता है फिर सदाशिव ने शक्ति को अपने आनन्द के लिये उपजाया अर्थात् सदाशिव की महाशक्तिने शरीरसे प्रादुर्भाव होकर अपना तेजस्वरूप प्रकट किया जो षोड़श शृङ्गार किये शरीर श्यामकमलसदृश नरम और श्यामही केश केशरपुष्पवत् केशरही का ललाट पर चमत्कृत अर्धचन्द्र धारण किय श्यामकुन्तल विराजमान और कानों में रत्नों के दो कुण्डल पहिनेहुये ललाई लिये तीन नेत्र भौहैं कमान के सदृश कीर सम नासिका ओष्ठ कुँदुरू और मूँगेसे अतिसुन्दरी चम्पकवर्णी कटिकेहरी दन्तपंक्ति मानों मोतियों की लड़ी ठोढ़ी और गर्दन कैसी दिव्यस्वरूप जिसका वर्णन हो नहीं सक्ता वस्त्राभूषणसे अलंकृत चार हस्तकमलों में अंकुश, पाश आदि शस्त्र लिये हुये थीं कई अष्टभुजीरूप से उस महामाया का ध्यान करके और उनमें ये शस्त्र बतलाते हैं धनुष १ शूल २ बाण ३ चर्म ४ कृपाण ५ शङ्ख ६ चक्र ७ गदा ८ कमलके सदृश कलाई उँगलियां नख हृदय और उदर त्रिबली और नाभिकूप का कौन वर्णन करसक्ता है कटि महाक्षीण पांवके नख दुइज के चन्द्रमा के सदृश ऐसे सुन्दर अनूप का ध्यान करके अतिप्रसन्नता प्राप्त होती है सदाशिव ने इस शक्ति को श्यामरूप उपजाया पर कई श्वेत वर्ण और सोनेके रङ्ग की अथवा विद्युत् के सदृश विचार करते हैं यह सदाशिव की आदिशक्ति ब्रह्मा विष्णु की माता और सृष्टि के होने का कारण है और सबकी स्वामिनी सदाशिव की स्त्री जिसका आदि किसी को मालूम नहीं जो वह संसार में है और जहां तक कि वचन और मनकी शक्ति है वह सब इसीकी कृपा से है कई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इन्हें सदाशिव दोनोंरूप और शक्ति को प्रकृति और पुरुषरूप कहते हैं इस बातमें सन्देह न करना चाहिये बरन विश्वास रखना उचित है कि जो कुछ सदाशिव चाहते हैं वही होताहै अब हम श्रीसदाशिवजी महाराज के सगुण स्वरूप के गुण चरित्र वर्णन करते हैं मन लगाकर सुनो श्रीसदाशिव को परब्रह्म और उमा को शक्ति जानना चाहिये पहिले सदाशिवने उमाके साथ विहार करनेके लिये एकलोक बनाया जिसमें दुःख चिन्ता शोक दरिद्र को मार्ग नहीं और वह लोक परम रमणीय चित्र विचित्र परम मनोहरहै और उस स्थान को किसीसमय पर नहीं छोड़ते इसी कारण उस स्थान को अविमुक्त कहते हैं और जोकि वह स्थान सम्पूर्ण सृष्टि के जीवों का आनन्द देनेवालाहै इस लिये आनन्दवन भी उसका नाम है और जोकि वह स्थान सिद्धरूप तेजस्स्वरूप अद्वितीय है इसी से उसका नाम काशी रक्खागया बड़ा नगर है ऐसे नगर में एक महल बनाया जो चित्र विचित्र रत्नों से अलंकृत है और उसमें मोतियों की झालरैं लटकतीं छत्र विमानादि असंख्य रक्खे हुये और वृक्ष कल्पतरु के सदृश ऐसे मन्दिरमें सदाशिव ने अपने बैठने की जगह उत्तम २ रत्नों से बनाकर शक्तिसमेत उस स्थान को सुशोभित किया ऐसा सजा हुआ नगर देखकर सदाशिव ने अपनी शक्ति से कहा कि यह लोक अतिउत्तम पवित्र प्रसन्नता उपजानेवाला मुझे अतिप्रिय और उसी तरहपर तुमको भी प्रियतम है यहां किसी के साम्हने दुःख न आवेगा और यहां पहुँचकर कोई मनुष्य नारकी न होगा यद्यपि हम श्रीकाशीजी की प्रशंसा करते हैं पर तौ भी हम इसकी स्तुति वर्णन नहीं करसक्ते इतना कहकर सदाशिवने उमा के साथ विहार किया इच्छा हुई कि कुछ रचना करें यह विचारकर उमा से कहा कि हमारी इच्छा जो हम दोनों को प्रसन्नता उपजावेगी उसे सुनो ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचवां अध्याय ॥

सदाशिव ने कहा कि एक मनुष्य ऐसा उत्पन्न करना चाहिये जो सर्वविद्या में पूर्ण हो उसको सम्पूर्ण संसारी कार्य सौंपकर आप आनन्दपूर्वक विहार करें यह श्रवण करके श्रीजगदम्बाजी ने अपनी बाईं ओर देखा कि तुरन्त एक मनुष्य प्रकट हुआ अतिरूपवान् कलावान् शीलवान् बुद्धिमान् गुणवान् उसका सब शरीर मानों श्यामवर्ण चन्द्रमा कासा भालपर त्रिपुण्ड्र धारण किये हुये नेत्र मानों कमल के फूल के सदृश होठ लाल गले में कौस्तुभ मणि पहिने हुये शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, कमल धारण किये चारभुजा और कण्ठ में वैजयन्ती और वनमाला पहिनेहुये उदर में त्रिवली महासुन्दरी नाभि और कटि की प्रशंसा नहीं होसक्ती पीतवस्त्र पहिने प्रत्यङ्ग अति सुडौल सम्पूर्ण विद्यानिधि महातपवान् सिद्धरूप पवित्र वारंवार दण्डवत् करतेहुये श्रीसदाशिवजी के सम्मुख आखड़ा हुआ ऐसे मनुष्यको देखकर सदाशिवजी और उमा अतिप्रसन्न हुये और वहभी अतिहर्ष को प्राप्त हुआ दोनों से हाथ जोड़ स्तुति महिमा और दण्डवत् करके प्रार्थना की कि आप मेरा नाम और काम कहिये सदाशिवने कहा कि आप का नाम विष्णुजी होगा आपके समान अन्य मनुष्य सृष्टि में उत्पन्न न होगा और प्रकाश आपका सब संसार में प्रकट रहेगा तुमको हरि चतुर्भुज भगवान् अच्युत आदि अनेक नामों से मनुष्य पुकारेंगे और भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने के लिये तुम उत्पन्न किये गये हो अब उचित है कि तप करो जिस कारण कि प्रकाश की अधिकता हो यह कहकर सदाशिवजी ने विष्णुजी को योगविद्या पढ़ा दी उसके पीछे विष्णुजी तप करने लगे और दिव्य द्वादश सहस्रवर्ष पर्यन्त एकही आसन पर योग के साथ सदाशिवजी के ध्यान में बैठेरहे जब कि ऐसे तप का कुछ फल न मिला तो उस समय विष्णु बहुत शोकवान् हुये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस समय में ऐसी आकाशवाणी हुई कि जैसे वर्षा में बादल गर्जते हैं कि हे विष्णुजी ! तुम फिर मन लगाकर तप करो इस कारण कि हम सुगमतासे दिखलाई नहीं देते यह आकाशवाणी श्रवण करके विष्णु जीने अति कठिन तपस्या की और कठिन तपके कारण से इतना पसीना विष्णुजी के पवित्र शरीर से निकला कि नदी वह चली विष्णुजी मूर्च्छित होगये इस कारण विष्णुजी का नाम हरनारायण है वे ऐसे मूर्च्छित होगये जैसे कोई निद्रा में होता है इस अवस्था में सदाशिव की इच्छा से एक कमल विष्णुजी की नाभि से उत्पन्न हुआ उसमें बहुतसी पङ्खड़ियां देखने में बहुत ऊंचा महामनोहर और लम्बाई में बहुत ऊंचाथा उसके पीछे सदाशिव ने मुझको अपनी दाहिनी भुजासे उत्पन्न करके उसी कमल में रख दिया मेरा रङ्ग लाल अतिसामर्थ्यवान् चार शिर धारे मुँह चारों कोण की तरफ़ जिनमें त्रिपुण्ड्र लगाहुआ था और दो दो आंख और हरएक अङ्ग मानो विष्णु के अङ्ग के सदृश था उस समय मैंने आकाश से यह वाणी सुनी कि तुम्हारे अनेक नाम अज, ब्रह्मा, धाता, प्रजेश, विधाता, परमेष्ठी, बहुगर्भ, प्रमुख आदि होंगे पर मैंने अपने उपजानेवाले को न जाना कि कौन है हे नारद ! सदाशिव की माया तीनों भुवन को घेरे है वह जो चाहते हैं करते हैं विष्णु, हम, देवता, मुनि, ऋषीश्वर, सिद्ध, तपस्वी, दैत्य, दानवादि सब सदाशिवजी की माया के अधीन हैं वह अनादि है मैंने यह न जाना कि मैं किससे उत्पन्न हुआ किस का पुत्र हूं और उस कमल के पुष्प की जड़ कहां से है फिर मैंने विचार किया कि जिसके ऊपर और मूल से यह कमल उत्पन्न हुआ वही हमारा पिता होगा मैं यह विचार कर उस तालाब के अन्दर गया और उसी कमल की डण्डी के मार्ग बहुत दूर सैकड़ों कोसों पर्यन्त चला गया पर जब उसके मूलको न पाया तो मैं शोकवान् होकर वहां से

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लौटा और सौ वर्ष के पीछे जिस जगह से चला था वहां लौट आया परन्तु कमलको न देखा मैं कमलके न देखनेसे चिन्तित हुआ मैंने इस सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी से रक्षा चाही जो सबसे श्रेष्ठ है उस समय आकाशवाणी हुई और दो अक्षर प्रकट हुये उसके सहारे से १६ और २१ अक्षर मुझ को प्रकट हुये और बहुतसी बातें जानी गईं उस समय सदाशिवकी इच्छासे विष्णु जो अचेत हुये नदी में पड़ेहुये थे सचेत होकर मेरे नगर में आये जो किरीट और कुण्डल आदि रत्न पहिनेहुये नेत्र लाली लिये हुये हास्य उनका खिलेहुये कुन्दके पुष्पके सदृश होंठ उनके लाल अतिरूपवान् कौस्तुभमणि कण्ठ में उत्तमवस्त्र धारण किये चार भुजा में शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धारणकिये दोनों हाथ, अंगुली, नख, हृदय, उदर, नाभि और कटि बहुत ही सुडौल पीतवस्त्र पहिने शरीरका रङ्ग मेघ के सदृश जिसको देखकर कामदेव लज्जायमान हो और शरीर के सुन्दर वर्ण से अतसीपुष्प नम्र हो ऐसे स्वरूप को देख कर हम अचम्भे में हुये और सदाशिव उमासहित ऐसे विचित्र सुन्दर स्वरूप को देखतेही मोहित होगये इतना कहकर श्रीब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! इसमें कुछ चिन्ता न करो सदाशिव जो चाहते हैं वह करतेहैं इसके पीछे हमने कहा कि आप कौन हैं विष्णुने कहा कि हे ब्रह्मन्! हम ब्रह्म और अलख निरञ्जन हरि अचिन्त्य भूपति अविकार सत् चित् आनन्द हैं किस कारण आप अचेत होकर ऐसा प्रश्न करते हैं हम तुम्हारे पिता हैं और तुम हमारे नाभिकमलपुष्प से उत्पन्न हुये हो अब निर्भय रहो हम तुम्हारी रक्षा करेंगे हमारे ऊपर और अन्य मनुष्य उत्तम नहीं है सबके स्वामी हम हैं यह बात विष्णुजी ने अज्ञानता की अवस्था में कही कि हम ब्रह्म हैं हमसे उत्तम कोई नहीं है इस कारण कि वह शिवजीकी माया से अचेत थे ऐसा संसार में कौन है जिसको सदाशिव की माया भुला नहीं देती यह वचन विष्णुजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का श्रवण करके हमको बहुत क्रोध हुआ और कहा कि हे विष्णुजी! तुम ऐसा असत्य वचन न कहो और केवलीभाव पर निश्चय रक्खो इस कारण कि जो हम आपही उत्पन्न होते तो वेद हमको ब्रह्मा, पितामह, विधाता, परमेष्ठी, विधि आदि नामों से न पुकारते हम अपने तईं तीन गुण करके सर्व सृष्टि को उत्पन्न करते हैं हमारा उत्पन्न करने वाला कोई नहीं है यह श्रवण करके विष्णुजी ने कहा कि ऐसी अज्ञानता तुमको अयोग्य है हम सर्व सृष्टि को उत्पन्न करके पालना करते हैं फिर ठहराकर सबको नष्ट कर देते हैं और हरीश अच्युतआदि हमारे नाम सबसे उत्तम हैं तुम में कोई अवगुण नहीं हमारी माया के अधीन होकर सब लोगों की यही अवस्था है संसार सब हमारे अधीन है हमने वेदों को बनाया और तुमको अपनी नाभि के कमल से उत्पन्न किया हम से उत्तम कोई मनुष्य नहीं है अपने नाम के अहंकारपर अहंकार न करो और निष्क्रोध होकर योग्य वचन कहो जैसा कि अन्धा आंखों की महिमा और निर्धन धनवान् की अवस्था वर्णन करे उसीप्रकार तुम्हारे नाम वेदने वर्णन किये हैं भला होगा अगर हमारा पूजन करो ऐसे अहंकार के वचन विष्णुजी के सुनकर हम बहुत हँसे परन्तु मन में क्रोध इतना उत्पन्न हुआ कि जिससे हम विष्णुजी के शत्रु होगये और हमने कहा कि तुम बार २ मुझको गुरु के सदृश कि जैसा गुरु अपने चेलेको झिड़ककर बुलाता है उपदेश करते हो हम वेद के पाठक हैं और तुम नहीं जानतेहो कि वेद क्या है इस वार्ता को वेद आपही वर्णन करता है कि तुम निष्फल इतना क्रोध करते हो वेद की कठिन गति वर्णन करके तुमने इतना वाद निष्फल किया इसी वचन पर हम और विष्णुजी परस्पर बहुत लड़े और मूर्खों के सदृश शिवमाया से बड़ा युद्ध किया और शिवजी की माया से दोनों आपको सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी समझे रहे हे नारदजी!

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ आश्चर्य न करना क्योंकि सदाशिव की माया बहुत गुप्त है ॥

छठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! सदाशिव हमारी और विष्णुजीकी मूर्खताकी लड़ाई देखकर अन्तकाल की जलती हुई वड़वाग्निके सदृश प्रकट हुये उनका दृष्टान्त क्या दूं ऐसा स्वरूप देखकर हम दोनों ने लड़ाईको रोंकदिया और विष्णुजी भयवान् और आश्चर्यवान् होकर मुझसे कहनेलगे कि हे ब्रह्मन् ! यह तेज कहां से आया जो मनुष्य इसके आदि और अन्तको देख आवे वही सबका मालिक है और यह आदि अन्त रहित है तुम ऊपरके लोक को देख आयो और हम नीचे के लोकको जाते हैं हम यह वचन सुनकर अहंकारी हो उस ज्योति के अन्तको ढूंढ़नेचले परन्तु पूरा नियम है कि जो काम अहंकार की अवस्था में किया जाता है उसका परिणाम भला नहीं मिलता अच्छा काम अहंकार से पूर्ण नहीं होता और सुख और बुद्धि को नष्ट करडालता है और अनेक मनुष्य जैसे रावण बाणासुर इस अहंकार से नष्ट हुये हैं विना त्याग अहंकार के कोई मनुष्य कार्य सिद्ध नहीं करसक्ता और निर्जरमुनि, गज और अन्धकादिने अहंकार त्यागकर मनके मनोरथ पाये हैं जैसा कि वेदों में लिखाहै सो विष्णुजी श्वेतशूकर का रूप धारण कर पाताल में गये उसी दिन से संसार में श्वेतशूकर प्रसिद्ध है यह पहिलाचरित्र हमारा और विष्णुजीका जो कोई मनुष्य प्रातःकालके समय हाथ पांव धोकर ध्यान करता है उसको इस लोक में बड़ा सुख और आरोग्यता और परलोक मेंभी अच्छी अवस्था मिलती है निदान हम और विष्णुजी दिव्य एकसहस्र वर्ष पर्यन्त उस ज्योतिको ढूंढ़ते रहे परन्तु उसका आदि अन्त कुछ न मिला निदान लौट आये परन्तु पहिला स्थान जहांसे चले थे वह न मिला और दिव्य सहस्रवर्ष पर्यन्त पहिले स्थान के ढूंढ़नेमें खराब रहे उस समय यह वार्ता हृदय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में निश्चय भासी कि हमारे ऊपर और कोई मनुष्य उत्तम और पुरातन है यह विचारकर हम दोनों पवित्र स्वरूप की रक्षा में आये और परस्पर मिलकर शत्रुता का त्याग किया उस समय आकाशवाणी हुई कि तुम दोनों योग करो यह श्रवण कर हम दोनों योग करनेलगे और महिमा और स्तुति की कि हे केवल ! हे स्वामी ! हे अलख निरञ्जन ! हे अन्तर्यामी ! हम दोनोंने अपनी बुद्धि को नष्ट करके अपने को सर्वसृष्टि का उत्पन्न करनेवाला ठहराया था अब तुमको दण्डवत्है सो अनुग्रह करके हमको अपना सेवक विचार कर दया करो और प्रकट हो यह कहकर देखनेलगे कि उस समय हमको ऐसे गुप्त अक्षरों से प्रेरणा हुई जिसको हम समझ न सके और दण्डवत् करके प्रार्थना की कि आप शरीर सहित प्रकट हूजिये यह कहते थे कि महाराज कृपानिधानने अपने स्वरूपको जिसको देख संसारभर मोहित हो दिखलाया और प्रणव अर्थात् ॐकार प्रकट हुआ जिसको कि हम दोनों सदाशिवजी की माया के कारण जानने से अचेतरहें परन्तु जब उसके चार भाग हुये और उसके अन्दर से होकर सदाशिव आपही प्रकट हुये तो हमने जाना कि अक्षर अकार, उकार, मकार नाद और बिन्दु के यह अर्थ हैं कि पहिला अक्षर अर्थात् अकार लिङ्ग की ज्योति है और अक्षर उकार जो दूसरा है वह उस लिङ्गकी ज्योति का मध्य है और आधी मात्रा जो नाद है वह उसी लिङ्ग की ज्योति का शिर है और जो बिन्दु अर्थात् बिन्दी भासती है वह सर्व लिङ्गकी ज्योति है और सिवाय इसके और प्रकार पर प्रणव को वर्णन करते हैं अर्थात् अकार से ऋग्वेद उकार से यजुर्वेद मकार से सामवेद अथर्वण नाद से और ब्रह्मविद्या बिन्दु से ठहराते हैं और प्रसिद्ध रहे कि हर वेद ने दश २ अर्थ से सदाशिव को वर्णन किया है जिसको हमने श्रवण नहीं किया ऋग्वेद जो रजोगुणी है लिङ्ग का दक्षिणीयभाग है यजुर्वेद जो सतोगुणी है उत्तरीय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाग लिङ्गका है सामवेद जो तमोगुणी है वह मध्यभाग लिङ्गका है और अथर्वण वेद जो निर्गुण कहलाता है उसका वाक्य है कि सदाशिव कुछ नहीं करते जो होता है वह शक्तिकी इच्छा से होता है और ऋग्वेद को जाग्रत् से उपमा करते हैं और स्वप्नकी अवस्था को यजुः बताते हैं व सुषुप्ति अवस्था को सामवेद समझते हैं और अथर्वण वेद को तुरीया अवस्था कहते हैं जोकि जानने से रहित है और यद्यपि यह प्रणव जपने विनाही मुक्ति देता है इसकारण इसका नाम तारक है और यही मोक्ष देने का अधिकारी है और इस कारणसे कि यह मोक्ष देता है इसलिये इसका प्रणव नाम है और तीनों अक्षर प्रणव में हैं और तुरीया को जो अतिगुप्त है उससे वेद अङ्गों सहित प्रकट होते हैं वह इस सृष्टिमें सबसे उत्तमोत्तमहै उसको वृषतन कहतेहैं उसी प्रणव में तीनलोक हैं वह कभी नष्ट नहीं होता और ब्रह्मा से लेकर तृणतक उसमें मिलजाते हैं और ढूंढ़नेपर उस प्रणव के लिङ्ग को नहीं पाते चारों वेद और अठारहों पुराण उसके अन्दर हैं हे नारद ! सदाशिव जीको वेद प्रणवरूप वर्णन करते हैं सदाशिवजी जो दहिना अकार है उससे सृष्टि उपजाते हैं और बायां अङ्ग जो उकार है उससे पालन करते हैं और हृदय में जो मकार है उससे प्रलय प्रकट होता है और सम्पूर्ण वर्णमाला के अक्षरों से श्रीसदाशिवजी का शरीर अलंकृत है शिर अकार उकार दाहिनी आंख दोनों ओकार दोनों कानहैं दोनों ऋकार कपोल दोनों नकार नाक दोनों ई दोनों होंठ दोनों ऊ दोनों ओरके दांत और जो अनङ्ग है वह जिह्वा है अ तालु है कवर्ग पांच अक्षर दाहिनी भुजा चवर्ग पांच अक्षर बाईं भुजा टवर्ग पांच अक्षर दाहिना पांव तवर्ग पांच अक्षर बांयां पांव प पीठ फ दोनों पांजर भ कन्धा म हृदय और यवर्ग सदाशिवजी का वीर्य प्रकट करते हैं ऐसा जो सदाशिवजीका शरीर अक्षरों से अलंकृतहै उसका ध्यान करके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अतिप्रसन्नता प्राप्त होती है हमने और विष्णुने यह रूप सदाशिवजी का जो प्रणव था देखकर अतिप्रसन्नता से दोनों हाथ जोड़कर दण्डवत् की और बहुत स्तुति और प्रशंसा की ॥

सातवां अध्याय ॥

ब्रह्मा जी बोले कि हे नारद ! अतिप्रशंसा महिमा और स्तुति के पीछे हमने प्रार्थना की कि आप अपना स्वरूप हमपर प्रकट कीजिये यह हम से और विष्णुजी से सुनकर सदाशिवजी शक्तिसंयुक्त प्रकट हुये शरीर उनका श्वेत पत्थर के सदृश भस्म धारण किये शिरमें जटा और बायें ओर शक्ति उत्तम वस्त्र और अच्छे गहना धारण किये हुये दर्शन दिये ऐसा स्वरूप देख कर हम दोनों को इतना सुख हुआ कि नेत्रोंमें से पानी बह निकला और प्रेम के कारण वाणी बन्द होगई परन्तु चेतकर हम स्तुति करने लगे और स्तुति के पीछे प्रार्थना की कि हमारी लड़ाई और वार्त्ता शुभ हुई कि दयानिधान के दर्शन हुये धन्य भाग्य और शुभ कर्म हमारे उदयहुये कि आपको देखकर लोक परलोक का सुख प्राप्तहुआ हमसे जो कुछ अपराध हुआ हो वह क्षमा कीजिये इस प्रकार हम विष्णुजी बहुत प्रशंसा करके अहम्भाव और अहंकार से रहित होगये और सदाशिवजीको अपना स्वामी बनाया और अतिनम्रता और शीलसे हाथ जोड़कर महिमा बखान कर दण्डवत् की और शिर नीचे किये उनके चरणारविन्द को देखते रहे ॥

आठवां अध्याय ॥

ब्रह्मा ने कहा कि हे नारद ! हमारी और विष्णुजी की जिह्वा से स्तुति और प्रशंसा सदाशिवजी सुनकर हँसे और बोले कि हे ब्रह्मन् ! हे विष्णो ! जो हम कहते हैं वह सुनो अर्थात् तुमने मोह में आकर परस्पर लड़ाई की अन्त में हमने तुम दोनोंको अपना भक्त समझकर अपने लिङ्ग प्रकट किये जिससे तुम दोनों ने हमको पहिंचाना अब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्तम है कि परस्पर वार्त्ता को जाने दो और अहंकार का त्याग करो वह काम करो जिसकी हम आज्ञा दें यह कहकर हमको श्वास के मार्ग से सब वेद पढ़ा दिये और पांचमन्त्र बतादिये जिसमें सब विद्या हैं पहिले प्रणव की शिक्षा दी जिसके अक्षर वेदहैं और पहिला वाक्य सदाशिवजी का वही है और फिर गायत्री जो वेदों की माता है और जिसमें २४ अक्षर हैं वर्णन की उसके पीछे महामृत्युञ्जय मन्त्रकी शिक्षा दी फिर चिन्तामणि सिखाया जो भक्तों को बहुत सुख को प्राप्त करे यह वेद और मन्त्र पढ़कर हम अतिसुख को प्राप्त हुये और हम और विष्णु जी सदाशिव को देखने लगे और दर्शन में इसी तरह डूबेरहे और इस प्रकार सुख और स्वाद उस दर्शन से पाया जिसको हम वर्णन नहीं करसक्के जैसे कि दरिद्री को सरदी में धूप और कामी पुरुष को स्त्री मिलने से अत्यन्त सुख प्राप्त होता है उसी प्रकार हम दोनोंको सदाशिव की मूर्ति अतिप्रिय लगी और अचेत होगये यह हमारा प्रेम देखकर सदाशिवजी अतिप्रसन्न हुये और कहा कि ब्रह्मा तुम को धन्य है जो सब सृष्टि के स्वामी हुये और मेरी ओर देखकर कहा कि तुम संसार उत्पन्न करो और विष्णुजी से कहा कि तुम उनकी पालना के अधिकारी हो और वेदों को देखकर मुझको पहिंचानो और जैसा योग्य है उस प्रकार अपना काम अच्छे प्रकार से करो मुझको वेदही जानो और जो वेदमें लिखा है वही हमारी आज्ञा मानो यह श्रवण कर हम दोनोंने प्रार्थना की कि आपभी अवतार लीजिये और हमारी सहायता कीजिये और तीनों लोक की पालना करके अपने अधिकार में अन्तकाल को रखिये हमारा यह मनोरथ है फिर हमने प्रार्थना की कि आप हमको पहिले पूजन की रीति बताइये कि उसके अनुसार करें यह श्रवण कर सदाशिवजी ने वर्णन किया कि संसार में तुमसे अधिक हमको प्रिय कोई न होगा अब सब शोक और चिन्ता आदिसे रहित होकर सुख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करो और औरों को सुख दो पहिले जो हमने तुमको लिङ्गका स्वरूप दिखाया था उसीका पूजन करना योग्य है उसीके पूजन से अधिक सुख मिलेगा और लिङ्गकी उत्पत्ति यह है कि जिस क्षेत्र में सब संसार लीन हुआ है उसका नाम लिङ्ग है ऐसे लिङ्गके पूजन से इसलोक और परलोक में सुख मिलेगा जिस समय तुम पर कोई आपत्ति पड़े हमारे लिङ्गका पूजन करना और जो हमारे लिङ्ग का पूजन करेगा उसके सब पाप क्षमा होजावेंगे और लिङ्ग के पूजन की महिमा अधिक है जो मनुष्य लिङ्ग की स्तुति हमारे पास पढ़ेगा उसको दोनों लोक में सुख होगा और वर्णन किया कि हम आप समय पर प्रकट होंगे और तुम्हारे नगर में आवेंगे उस अवतार का नाम रुद्र जानना और मुझ में और उसमें कुछ भी न्यूनाधिक्य न समझना मुझको सब सृष्टि के जीवों में समझना हम चारों एकही स्वरूप हैं और जो कोई अलग विचारेगा उसको अधिक दुःख प्राप्त होगा यह कहकर सदाशिवजी ने बड़ा गुप्त भेद हम पर प्रकट किया और कहा कि यह भेद वेद में अधिक गुप्त है अर्थात् हम सगुणरूप शिव और शक्ति दो नामोंसे होते हैं और तीनों गुणसे तीनों देवता भिन्न २ उपजते हैं एक समय तो पहिले विष्णुजी फिर ब्रह्मा फिर हर उत्पन्न होते हैं और अन्य समय पहिले महादेव और किसी समय पहिले विष्णु और फिर ब्रह्मा सो तुम दोनों शक्तिके चिह्नसे रजोगुण और सतोगुणको धारण करते हो और हर महादेव हमारे अंश और हमारे स्वरूप हैं और तमोगुणी हैं अन्त में अन्तकाल करदेते हैं और जहां तक कि सर्वसृष्टि का विस्तारहै वह सबशक्ति का घेरा समझ लेना उसको भी नष्ट करनेवाला स्वामी रुद्र जानो परन्तु जिस निमित्त कि हम तमोगुण धारण करके रुद्र का स्वरूप बनाकर प्रकट होंगे सो सब हमने वर्णन कर दिया और तुम दोनों जो काला और लाल स्वरूप धारण किये हो इस निमित्त हर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वेतस्वरूप होंगे सो तुम पर तमोगुण न व्यापेगा और हर की यह अवस्था होगी कि वे रात्रि दिन पवित्र योगमें प्रवृत्त रहेंगे उनका स्वरूप हमाराही सा होगा ऐसा जानकर अब तुम तीनोंलोक को उत्पन्न करो जिसमें अधिक अनेक प्रकारके अधिक जीव देवता मनुष्य और असुरादि हों फिर विष्णुजीकी ओर देखकर कहा कि तुम उत्तम भांति जीवों की पालना करना हम हरका स्वरूप धारकर प्रेमके समय दोनों की सहायता करेंगे और वर्णन किया कि हमारे दाहिनी ओरके शरीर से ब्रह्माजी और बायेंसे विष्णुजी और हृदयसे रुद्रजी प्रकट होंगे तीन प्रकारसे हम अलगहैं और उमा जो शक्ति वह दो अंशों में प्रकट होगी जिससे तुम अलग न समझेजाओगे पहिला भाग लक्ष्मीजी होकर विष्णुजीको मिलेगी दूसरा भाग सुरा जो ब्रह्मा लेंगे और उमा आपही प्रकट होकर हरको अङ्गीकार करेंगी और सतीनाम उनका संसार में होगा वे तीनोंलोककी उत्पन्न करनेवाली हैं इसी प्रकार तीनों देवता शक्ति को लेकर आज्ञानुकूल वेदका पूजन करेंगे सो तुम दोनोंको उचितहै कि हमारी आज्ञानुसार चलो और हर तुमको चिन्तासे रहित करते रहेंगे सहस्र चौयुगीके व्यतीत होनेपर ब्रह्माका एक दिन समझा जावेगा सो एक सौ वर्ष ब्रह्माकी आयुर्दाय जानो और ब्रह्माजी की आयु विष्णुजीका आधा दिन और हरका एक दिन है ऐसा दिन व्यतीत होनेपर सगुणरूप सदाशिव निर्गुण होकर अन्तकाल करते हैं यह कहकर सदाशिवजी ने दोनों हाथ हम दोनोंके शिरपर फेरा जिससमय हमारा और विष्णुजी का शिर सदाशिवजी ने छू लिया उससमयका सुख हम किस जिह्वा से वर्णन करसकें ऐसी शिक्षा और उपदेश देकर सदाशिवजी अन्तर्धानहुये हम दोनों शोकवान् होकर दोनों हाथ जोड़ कर शिव शिव कहते जिस ओरको वे गुप्तहुये थे उसी ओरको दण्डवत् करते रहे और वही स्वरूप सदाशिवका हृदय में दृढ़कर चुप हुये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि सदाशिवकी आज्ञा पाकर विष्णुजीभी गुप्त होगये और सबलोकको ब्रह्माण्डसे अलग करदिया और हमने भी सदाशिवके आज्ञानुकूल जीवोंको उत्पन्न करने की इच्छा की और सदाशिवजीकी कृपा से शक्ति को पाकर स्वच्छ ब्रह्माण्ड अर्थात् उत्तमोत्तम सृष्टिको देखा अब हम जीवों की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं जैसे कि वे प्रकृति और पुरुष से उत्पन्न होते हैं अर्थात् जब सदाशिव और प्रकृति ने चाहा तो उनकी इच्छा करके मति अर्थात् बुद्धि उपजी उसको सूत्र और महत्तत्त्व करके भी वर्णन किया है फिर उससे अहंकार अहंकार से तीनों गुण सतोगुण रजोगुण और तमोगुण उत्पन्न हुये इन्हीं तीनों गुणों से धरती और आकाश हुये और धरती से गन्धादि हुये और महाभूत से सर्वजीव और एक अण्डा सातदलों का प्रकट हुआ और इसप्रकार क्रम से देवता मनुष्य आदि हुये फिर हमने सदाशिव के चरणों का ध्यान करके सब से पहिले सनक १ सनातन २ सनन्दन ३ ऋभु ४ सनत्कुमार ५ पांच मनुष्यों को उत्पन्न किया ये बड़े पवित्र योगी त्यागी और ब्रह्मविद्या जाननेवाले सिवाय ध्यान सदाशिवजी के और कुछ न जानते थे और हमसे कहा कि हम सृष्टि उत्पन्न न करेंगे मैंने अवज्ञा करने के कारण क्रोध किया परन्तु विष्णुजीके समझाने से क्रोध शान्त हुआ फिर मैं अति परिश्रम से अधिक समयतक तप करता रहा और फल न मिलने के कारण आश्चर्यवान् हुआ और सदाशिवजी की माया से ऐसा डरा कि नेत्रों से अश्रुकी बूंदें टपकीं उससमय सदाशिवने दयावान् होकर मुझको यह बुद्धि दी कि जिससे मेरी यह इच्छा हुई कि जो आप सदाशिवजी हमारे पुत्र होकर आवें तो हमारे सर्व कार्य सिद्ध होजायँ यह वार्त्ता मन मैं ठहराकर अधिक समय पर्यन्त फिर योग में लीन रहा यह मेरा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तप ऐसा अङ्गीकार किया कि सृष्टि की वृद्धि के लिये शिवजी हमारी भौंके नीचे से उत्पन्न हुये और सब चिह्न अपने उस मूर्ति में प्रकट कर दिये अर्थात् शिर में गङ्गाजीकी धारा बहती हुई माथे में चन्द्रमा त्रिपुण्ड्र धारण किये पांचमुख चार हाथ और सर्व अङ्ग उसी प्रकार के जैसा कि ऊपर वर्णन होचुका है मेरी सहायता के निमित्त प्रकट हुये ॥

दशवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि यह रूप सदाशिवजी का प्रकट हुआ और मुझसे कहा कि जो कहो हम वेदकी आज्ञानुकूल करें मैं सदाशिवजी की माया में डूबकर पिताके सदृश पुत्रको शिक्षा देनेलगा और मैं ऐसा सुपुत्र पाकर फूला न समाया और कहा कि जब तुम ऐसे पुत्र उत्पन्न हुये तो हमारे सर्व मनोरथ पूर्ण होजावेंगे और मैंने कहा कि तुम्हारे ग्यारह नाम वेदके अनुसार विस्तार से ये हैं-मन्यु १ मनु २ महिनस३ महान् ४ शिव ५ क्रतुध्वज ६ उग्ररेता ७ भव ८ काल ९ वामदेव१० धृतव्रत ११ और ग्यारह रुद्राणियों के ये नाम हैं-धी १ वृत्ति २ उसना ३ उमा ४ नियुत्सर्पि ५ इला ६ अम्बिका ७ इरावती ८ सुधा ९ दीक्षा १० रुद्राणी ११ इसके सिवाय तुम्हारे और भी नाम जैसे रुद्र महेश्वर हर जगदीश आदि अनेक होंगे और पांचतत्त्व अर्थात् जल १ धरती २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ और सूर्य, शशि, जीव हृद ये योगस्थान तुम्हारे स्थान होंगे और अपनी स्त्रियों को भी उन्हीं स्थानों विषे अपने साथ लिये रहो और सन्तान उत्पन्न करो जिससे सृष्टि अधिक हो यह वचन श्रवणकर शिवजीने अति कुपुत्र भूत, प्रेत, पिशाच, कूष्माण्ड, वेताल, ब्रह्मराक्षस आदि सहस्र प्रकार के जीव भयंकर उत्पन्न किये जिसको देखकर हमको आश्चर्यहुआ और भयवान् होकर कहा कि ऐसी सन्तान को इसीसमय नष्ट करो और सत्पुत्र उत्पन्न करो यह सुनकर शिवजी को हँसी आई और कहा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि ऐसे जीव जिसको मरना जीना हो हम उत्पन्न न करेंगे तुम उत्पन्न करो जो पुरुष चिन्ता का मार्ग छोंड़कर सुखी रहेंगे उनको हम मुक्त करेंगे और हम को न भूलना ऐसे कहकर सदाशिवजी ने अपनी माया को खींच लिया उस समय मैं चेता और मैंने अपना शिर दण्डवत् करने के वास्ते झुकाया थोड़े समय के पीछे मैंने चेत कर स्तुति की और चरणों पर गिरपड़ा तब सदाशिवजी ने मुझको धरती से उठा कर मेरे सब शरीरपर हाथ फेरा उस समय सनकादिक आकर चरणारविन्दोंपर गिरे और महिमा बखानी सदाशिवजीने दयालु होकर अति उत्तमबुद्धि कृपा की और फिर हमारे ललाटके मार्ग से गुप्त होकर अपने लोकको चलेगये हे नारद! हम तीनों देवताओं में कुछ अन्तर नहीं है कभी विष्णुजी हमारे गृह उत्पन्न होते हैं और किसी समय हम विष्णु से उत्पन्न होते हैं इसी प्रकारसे किसी समय शिव हमारे पुत्र और किसी समय हमारे पिता होजाते हैं अब हम फिर सृष्टि का वर्णन करते हैं जिस प्रकार से उत्पन्न की गई है ॥

गेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हमने सदाशिवजीकी आज्ञा पाकर पहिले आकाश और धरती पांचतत्त्व पहाड़ मूल और कलाआदि उत्पन्न किये उसके पीछे अपनी इच्छासे विरञ्चि १ अङ्गिरस २ शातातप ३ भृगु ४ पुलस्त्य ५ पुलह ६ वसिष्ठ ७ ये सप्तऋषि हुये और तुम १ कर्दम २ और दक्षादि दश पुत्र मैंने अपने हर अङ्गसे उत्पन्न किये और दाहिने स्तनसे मनुष्य और पीठसे पाप और इसी प्रकार प्रीति तृष्णाआदि हर अङ्ग से प्रकट किये और तारे दिशा दिक्पति चन्द्रमाआदि क्रमसे उत्पन्न किये परन्तु यह सृष्टि अपनी उत्पन्न कीहुई तामसी देखकर मुझको चिन्ता हुई और रात्रि के कारण क्षुधातुर हुआ और राक्षस यक्षादिके खानेको दौड़ा और अपना शरीर भयंकर बनाकर काल को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपजाया फिर ऐसा शरीर त्याग कर स्त्री का स्वरूप मैंने धारण किया उस समय सब मुनि मेरे ऊपर दौड़े मैंने वह शरीर बदल कर अन्य शरीर को धारणकिया और अपने घुटनेसे असुरों को उत्पन्न किया वे वीर्य से भरे हुये थे मुझको उन्होंने न पहिंचाना और निर्लज्जता-पूर्वक कामकी इच्छा से मेरे पास आये उनसे अधिक डरकर मैंने सदाशिवजी से रक्षा मांगी और प्रार्थना की कि इनको आप झटपट नष्ट करें आज्ञा हुई कि इस शरीरको बदल डालो मैंने ज्योंहीं कि शरीर को बदला असुरादि अचेत होगये वही सायंकाल समय फिर आया फिर मैंने मनुष्य उत्पन्न किये उस समय मेरा शरीर चांदनी रात्रि के सदृश प्रकाशवान् था और फिर दूसरा स्वरूप धारकर राक्षस, गन्धर्व, यक्ष, गुह्य, किन्नर, कम्बरिष, विद्याधर, ईश्वर, भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, वेताल, भुजंग, डाकिनी, शाकिनी, योगिनी, कूष्माण्ड और कामकी इच्छा करनेवाली स्त्री को उत्पन्न किया परन्तु ऐसे जीवके उत्पन्न करने से मन और हृदय को प्रसन्नता न हुई और शिवजी की इच्छा से फिर दूसरी सृष्टि जैसे हाथी, शेर, बैल, ऊंट, घोड़ाआदि जो जीव कुछ भी ब्रह्मज्ञान नहीं जानते और जो केवल बुद्धिहीन हैं उपजाये और सर्वसृष्टि के बनाने के पीछे मैंने विचार किया कि ये क्या काम करेंगे ऐसा विचार कर मैंने सदाशिवजीका ध्यान किया तो झटपट चारों वेद मुख से उपजे और धनुर्विद्या गानविद्या और सर्वपुराण कथाओं से संयुक्त जो पांचों वेद कहलाते हैं प्रकट किया और सब आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, संन्यस्त, वानप्रस्थ व्रत संयुक्त और सब विद्या और धर्मशास्त्र, नीति, मोक्ष, धर्म, काम, अर्थ और वैद्यकादि बनाये जब मैं सृष्टि बनाकर तय्यार करचुका तो विष्णुजी पालना करनेलगे और महेशको धरती के थांभने के निमित्त उत्पन्न किया यह सृष्टिका वर्णन चिन्तासे रहित करके सुख देता है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! यह सृष्टि जो ऊपर वर्णन हुई सब शरीर और हृदय से उपजी अब हम उस सृष्टि का वर्णन करते हैं जो सङ्ग करनेसे उत्पन्न होती है यद्यपि हमने अनेक यत्न किये परन्तु दृढ़ शक्ति प्राप्त न हुई तब मैंने पूरा उद्योगकर और इन्द्रियों को आधीनकर सदाशिवजी की पूजन की इस कारण से कि ऐसे कार्य शिव की प्रसन्नता विना पूरे नहीं होते अन्त में सदाशिवजीने मुझको अपने दर्शन दिये वह स्वरूप अर्धाङ्गी था तात्पर्य यह कि दाहिनी ओर तो पुरुष का रूप जो सदाशिवजी का था और बाईं ओर स्त्री का रूप अर्थात् महारानी जगदम्बाजी प्रकट हुईं एक ओर जटा और दूसरी ओर सुगन्धित केश एक ओर ललाटपर त्रिपुण्ड्र लगा हुआ दूसरी ओर बेंदी एक आंख में भस्म लगीहुई दूसरी में सुरमा लगाहुआ एक ओर केवल नाक दूसरी ओर नासिका में अलंकृत नथ थी एक ओर कण्ठ में तीन लकीरें दूसरी ओर सोनेका गहना एक ओर भुजा में सर्पादि लपटे हुये दूसरी में बाजू पहिने हुये एक हाथ में सर्प दूसरे में कङ्कण एक ओर दश उँगलियां हैं दूसरी ओर रत्न के गहने एक ओर मुण्डों की माला धारण किये दूसरी ओर हीरों की हमेल एक ओर कटि में पटका बांधेहुये दूसरी ओर रत्नों की करधनी पहिने हुये एक ओर स्वरसमूह भक्तों के सुखदेनेवाले दूसरी ओर घुँघुरू ऐसा रूप अर्धाङ्गी देखकर मैं अतिप्रसन्न हुआ और विचार करलिया कि अब शीघ्रही कार्य सिद्ध होगा इस निमित्त दण्डवत् करके स्तुति करने लगा और प्रशंसा के पीछे प्रार्थना की कि धन्यभाग हमारे हैं कि आपने दर्शन दिये मेरी स्तुति सुनकर सदाशिवजी हँसे और कहा कि जिस मनोरथ के निमित्त तुमने इतना कष्ट भोगा वह हम जानते हैं और तुम्हारी इच्छा अधिक सन्तान की सृष्टि विषे है यह कहकर सदाशिवजी और शक्ति अलग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अलग होगये उस समय मैंने शक्ति की महिमा बखानी और कहा कि आपकी आज्ञा से मैंने सृष्टि उत्पन्न की परन्तु वह बढ़ी नहीं है अब कामदेव से सृष्टि उत्पन्न किया चाहता हूं और आपसे शक्ति प्राप्त होना मांगता हूं आप दक्ष की पुत्री हूजिये मैं आपका लड़का हूं यह सुन कर शक्ति ने दया से हँसकर सदाशिवजीकी ओर देखा और वर्णन किया कि अच्छा समयपर तुम्हारी नवासी हूंगी और हमारा नाम सती होगा जिस समय कि दक्ष सदाशिव का अपमान करेगा उस समय हम जायँगी यह कहकर सदाशिवजी के शरीर में समाय गईं और सदाशिवभी गुप्त होगये ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारदजी ! जिस प्रकार से कि यह सृष्टि मैथुन से उत्पन्न हुई उसको हम क्रम से वर्णन करते हैं मैंने सदाशिव जी से शक्ति पाकर एक पुरुष और एक स्त्री आधी २ अपने शरीर से उत्पन्न किया पुरुष का नाम स्वायंभुवमनु और स्त्री का नाम शतरूपा हुआ और शतरूपा ने योग करके मनु ऐसा स्वामी पाया सो दोनों पुरुष और स्त्रीने हाथ में हाथ मिलाकर हमसे कहा कि आप कुछ आज्ञा दीजिये मैं अति प्रसन्न हुआ और आज्ञा दी कि पहिले सदाशिवजी का पूजन करो फिर आज्ञा पाकर सन्तान उत्पन्न करो यह श्रवण कर दोनोंने ऐसा योग किया कि सदाशिवजी आप प्रकट हुये और कहा कि जो चाहो सो मांगो मनुने कहा कि आप क्या नहीं जानते हमारे कहने की क्या आवश्यकता है परन्तु आपकी आज्ञा पाकर कहते हैं यद्यपि अपनी इच्छा को आपके सामने कहना मूर्खता है परन्तु मैंने यह भी सुना है कि पिता की अवज्ञा करनी घोर पाप है अब आप जैसा हमारे लिये भला समझें सो करें यह श्रवण कर श्रीसदाशिवजी बहुत प्रसन्न हुये और बोले कि हे मनो !

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारा नाम संसार में रहे और प्रथम स्वामी संसार के तुम हो और मनुष्य की सृष्टि को उपजावो तुमको कुछ कष्ट न होगा और ब्रह्मा के एक दिनके चौदहवें अंशतक तुम राजा रहो और अपनी स्त्रीसंयुक्त राज्य करो तिस पीछे हम तुमको अङ्गीकार करेंगे परन्तु हमको न भूलना और तीन प्रकार के ऋण तुमको करने योग्य होंगे देवऋण १ पितृऋण २ ऋषिऋण ३ सो तीनों ऋण विद्या के पढ़ने यज्ञ के करने और सन्तान उत्पन्न करने से उऋण होजायँगे फिर वह मनुष्य मुक्तस्वरूप गिने जायँगे यह कहकर सदाशिवजी गुप्त होगये ऐसे वर पाकर दोनों मेरे निकट आये और सब वार्ता मुझ से कही यह वचन श्रवण कर हम मुनि और शतरूपा पर अति प्रसन्न हुये और आज्ञा दी कि सन्तान उत्पन्न करो यह आज्ञा पाकर दोनों सृष्टि उपजाने लगे पहिले दो पुत्र और तीन पुत्रियां उत्पन्न कीं एक लड़केका नाम परवीरथ हुआ जिसने गृहस्थ होकर अच्छी रीति पकड़ी जिसकी सन्तान महाशीलवान् हुई उसी कुलमें श्रीकृष्णजीका अवतार हुआ दूसरे का नाम उत्तानपाद जिसके सन्तान में ध्रुवके सदृश योगी भक्त उपजा और पहिली पुत्री का नाम अनवती था जिसका विवाह मेरे पुत्र रुचि मुनिके साथ हुआ वह पुत्र मुझे अति प्रिय था इन दोनोंसे दो लड़के यज्ञ और दीक्षा उत्पन्न हुये और दूसरी लड़की जिसका नाम देवहूती था कर्दम मुनिके साथ ब्याही गई जिससे कपिलमुनि का अवतार हुआ और कर्दममुनि के दश पुत्रियां उत्पन्न हुईं कला १ अनसूया २ श्रद्धा ३ निवर्च ४ कर्मागति ५ शान्ति ६ अरुन्धती ७ ख्याति ८ बर्हती ९ बृहति १० कन्या नौ ऋषीश्वरों को ब्याही गईं जिनके नाम यह हैं मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरा ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ भृगु ७ वसिष्ठ ८ अथर्वण ९ और तीसरी पुत्री मनुकी जिसका नाम प्रसूति था उसका दक्षके साथ विवाह हुआ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और साठि कन्या उन दोनों से उत्पन्न हुईं उनमें से दश कन्या दक्षने धर्मराजको दीं और सत्ताईस शशिको दीं और कश्यपको तेरह और तार्क्षपिको चार और भृत अङ्गिरस और कृशाश्वको दो दो पुत्रियां दीं जिनकी सन्तान अधिक प्रकट हुई जो विस्तारके भय से वर्णन नहीं होसक्ती और देवता, मुनि, पक्षी और ब्राह्मणादि अनेक प्रकार की सृष्टि उनसे उत्पन्न हुई और हमने विष्णुजी और महादेवजी ने उसी कुलमें जन्म लिया इस विधि से दक्ष साठों पुत्रियोंका विवाह कर मेरे निकट आये और सब वर्णन किया और कहा कि अब आपकी क्या आज्ञा है ? मैंने यह वार्त्ता श्रवण करके अपने पुत्रकी प्रशंसा की और कहा कि तुमने अवश्यही हमारी आज्ञा पाली अब हम एक और बात की इच्छा करते हैं सो तुम ऐसा यत्न करो कि जिसमें तुम्हारी लड़की शिव को ब्याही जावे और तुम्हारा कार्य सिद्ध हो और मेरी सृष्टि पवित्र हो यह वचन सुनकर दक्षने कठिनयोग किया और फल पाकर गृह में आया शक्ति ने आय दक्ष के गृह में अवतार लिया जिसमें १४ लोकको सुख प्राप्त हुआ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! हमने सृष्टि का प्रारम्भ वर्णन किया अब जो तुम्हारी इच्छा हो वह करें यह वचन श्रवण करके नारदजी बहुत हँसे और प्रसन्न होकर मुझसे प्रश्न किया कि आप ब्रह्माजी विष्णुजी महेशजी के लोकों को वर्णन कीजिये मैंने यह प्रश्न श्रवण किया और श्रीसदाशिवजी का ध्यान करके सब लोकोंका इस प्रकार वर्णन किया कि हमारे लोकका नाम सत्यलोक है उसके ऊपर विष्णु जी और महादेवजी के लोक हैं जिसे वेद और पुराण कहते हैं और श्रीलोक के ऊपर वैकुण्ठ है जो शरीर को सुख देता है वह सोलह कोटि योजन चौकोण घिरा हुआ है और उसमें सोने के मन्दिर रत्नों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से भरेहुये बाग़ फुलवारी और कुओं आदि के संयुक्त बनेहुये हैं और अनेक प्रकार के वन उपवन सुगन्धित पुष्पों से अलंकृत और फलों के भारों से सुशोभित हैं जिनमें नाना प्रकार के पक्षी अपनी मिष्ट और प्रियवाणी से चहचहाते वहां विष्णुजी रमासमेत क्रीड़ा करते हैं अपने भक्तों के दुःख दूर करके सर्वसृष्टि का राज्य करते हैं और सदाशिवके ध्यानमें मग्न रहते हैं और षट्अक्षरीमन्त्र हृदय में जपा करते हैं और स्तुतिकर दोनों हाथ जोड़े दण्डवत् करते बैठे रहते हैं अब हम उस लोक का वर्णन करतेहैं जो स्वर्ग के ऊपर है जो स्थान चिन्ता से मुक्त है अर्थात् वह स्वर्ग के ऊपर स्वामिकार्त्तिकलोक है और चौंसठि योजन चौकोण है और वह चिन्ता शोक मोह और माया से रहित है वहां सर्वदा सुख और आनन्द प्राप्त होता है सब गृह रत्नों से भरे हुये हैं वहांके स्वामी शिवजी हैं जिन्होंने तारकासुर का वधकर संसार को सुख दिया है और सदाशिवजीके पुत्र होकर श्रीसदाशिवजीकी पदवी पर हैं और लोकके लाभके निमित्त अपनी वीरता प्रकट करके सब संकट और कष्टको दूर करते हैं और रात्रि दिन सदाशिवजीका ध्यान करके मन्त्र षडक्षरीको जपा करते हैं और महिमा और स्तुति करते रहते हैं उस लोकके ऊपर शक्तिलोक है उस स्थानमें सृष्टिकी माता शक्ति भवानी बास करती है जिसकी कृपा से मैंने सर्व सृष्टिको उत्पन्न किया सूर्य, शशि, इन्द्र और देवता ऐसी जगत्माता की सेवा और पूजन करके चरणोंका ध्यान करते हैं और अन्य चराचर उमाका तप करके सुखी रहते हैं जानना चाहिये कि सब जीव शक्ति से ठहरे हैं विना उसके सब अशक्त हैं यह जगदम्बा श्रीसदाशिवजीकी स्त्री हैं और इन्हींके अंशोंसे ब्रह्माणी अर्थात् हमारी स्त्री रमा विष्णुजीकी स्त्री और स्वधा, सिद्धा, विश्वा और इन्द्राणी हैं यह शक्तिलोक बहुत सजा हुआहै उसके किवाड़ रत्नोंसे जड़े हुये हैं

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और उसके खम्भे मूंगेकी लकड़ी के हैं उसका घेरा अट्ठाईस करोड़ योजन है ऐसे गृहमें शक्ति अपनी सहेलियों के साथ बास करती हैं और योगसंयुक्त तीर्थ धर्म करती हैं और शिवजीकी सेवा प्रशंसा और स्तुतिमें मग्नहैं शक्तिलोकके ऊपर शिवलोकहै जहां मोह चिन्ता किसी को किसी समय प्रवेश नहीं करता करोड़ों सूर्य के समान प्रकाश है और सब गृह सोने और रत्नोंसे जड़े हैं अनेक अप्सरा नाचती हैं और जिस स्थान पर श्रीसदाशिवका सिंहासन है वह भी रत्नोंकाहै अच्छी फुलवारियां और नदियां हैं नदी के किनारे शुद्धलोग रहते हैं जिस स्थानमें शिवजी रहते हैं उसके आस पास बहुत से घर शिवभक्तों के हैं और शिवजी व शक्तिके अनेक घर विहारादि के बने हुये हैं उस स्थान पर अपने सेवकों समेत विहार करते हैं ऐसे सेवक शिवजीके पचासकोटि हैं उस शिव बृहस्थलके बाहरकी सब पृथ्वी रत्नोंसे जड़ी हुई है यह शिवजीका लोक दोसौ छप्पन २५६ कोटियोजन लम्बाई में है उसके बीचमें एक अच्छा घरहै सुडौल सुखदायक पवित्र चिन्ता से रहित करनेवाला जिसको देखकर अतिप्रीति उपजे रत्न के सदृश उसका प्रकाशहै और करोड़ों सूर्य की सी वहां रोशनी और उसमें बहुत बनावट बनी हुई है यह पहिला स्थान शिवजी का है जिसमें सफ़ेद हीरों और रत्नोंसे दीवार बनाई गई है मूंगे के खम्भे रत्नके किवाड़ और जवाहिर लाल और हीरों से जड़ाहुआ है उस मन्दिर के अन्दर एक सिंहासन जिसका वर्णन करना कठिनहै और जो आश्चर्यको अधिक करे रक्खा हुआहै उसके ऊपर शिवजी बैठे हुये हैं उन्हीं से हम विष्णु जी और महादेव उत्पन्न हुये वही सबका स्वामी स्वाधीन एकरूप है जिसको वेद भी नहीं जानते और हम और विष्णु भी नहीं पहिंचानते वह महाशुद्ध पवित्ररूप अलख निरञ्जन अविनाशी निराकार अचिन्त्य अगोचर सिद्धरूप है और उसी लोकमें शिवका अच्छासा गोशाला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है जिसको धेनुलोक कहते हैं उस गोशाले के स्वामी श्रीकृष्णजी व राधाजी हैं वही सदाशिवजीकी पूजा करते हैं हे नारद! यह विस्तार लोकों का होचुका अब और क्या सुना चाहते हो वह कहो॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

सूतने कहा कि यह वचन ब्रह्माजीसे सुनकर नारदजी अतिप्रसन्नताके कारण प्रीति और सुखके सागर में डूबगये और जब चिन्ता से रहित हुये तब प्रीतिसंयुक्त दोनों हाथ जोड़ कर ब्रह्मा से नारदने पूछा कि जो आपने शिवलोकको सबके ऊपर वर्णन किया वह श्रवण करके हम अतिप्रसन्न हुये परन्तु एक सन्देह निश्शङ्क उत्पन्न हुआ कि मैंने आगेसे सुना था कि शिवस्थान कैलास पर्वत पर है और जो शिवपुरी में जाता है उसको कैलास प्राप्त होता है न दूसरे स्थान में जैसा आप विस्तार से कहते हैं सो आप वर्णन कीजिये कि यह शिवजी जो कैलास में बास करते हैं वही शिव हैं जिनका आप वर्णन करते हैं अथवा अन्य हैं आप विस्तार से ठीक २ कहिये जिससे यह मेरा विचार जाता रहे यह प्रश्न नारद से सुनकर ब्रह्माजी ने कहा कि तुम धन्य हो मैंने अब जाना कि तुम मेरे सुपुत्र और परम शैव हो यद्यपि तुम जानते हो परन्तु सृष्टि की भलाई के निमित्त ऐसा प्रश्न करते हो सो तुमको ऐसाही योग्य है इस कारण कि उत्तम पुरुषों की यही रीति है और शिवजी भी ऐसी वार्त्ता में बहुत प्रसन्न होते हैं सो अब हम विस्तार से कहते हैं कि जो परब्रह्म सगुणरूप महेश्वर जिसकी इच्छा से शक्ति उत्पन्न होकर शिवरानी हुई वही ब्रह्म शिव अपनी शक्तिसे संसार को उत्पन्न करते हैं उनके लोक काशी ब्रह्मपुर और आनन्दवन हम वर्णन करचुके हैं फिर हमने सहायता के निमित्त विनय करके कहा कि आपभी सगुणरूप अङ्गीकार करके आइये और शिवजीने यह श्रवण कर कहा कि हम समय पर आवेंगे और नाम आदि जिस प्रकार कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुझको देखते हो और जैसा कि मैं हूं सब अपने अवतार में प्रकट करूंगा यह कहकर शिवजी गुप्त हुये और समय पर प्रकट हुये और मेरा मनोरथ पूर्ण करने के निमित्त कैलास पर्वत पर आये और गौरी को अलग करके आप कठिन योग करके तीनों लोककी पालना की अब हम वह कारण विस्तार से वर्णन करते हैं जिससे शिवजी कैलास पर्वत में आये यह वर्णन जो अब हम करते हैं कल्पभेद के कारण दूसरे प्रकार पर है अर्थात् शिवजीकी आज्ञा पाकर हमने संसार को उपजाया चौदह लोक और उपलोक द्रुपदपुरी और कपिलाआदि जिसके देखने से अतिप्रसन्नता प्राप्त होती है और जहां काली मृत्यु-रूप बैठी है और जहां गङ्गाजी बहरही हैं जो पापोंको नष्ट करती हैं वहां कपिलमुनिका गृह पापों को दूर करनेवाला है उस स्थानमें एक ब्राह्मण यज्ञदत्त उत्पन्न हुआ वह यज्ञविद्यामें बड़ा यशवन्त हुआ जिस को वहांके राजाने बहुतसा धन दिया वह वेदको ऋचा समेत जानता था वाचाल शुद्धमन शीलवान् वेदमें निपुण उपकार करने में प्रसिद्ध उदार और शिवजीका बड़ा भक्त था उसकी स्त्री अतिपवित्र पतिव्रता गृहकार्यमें अतिचतुर स्त्रीधर्मकी जाननेवाली और भले कार्योंको देखा करती थी थोड़े समय में उसके एकपुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम गुणनिधि रक्खा थोड़े दिनों के पीछे उसने अनेक विद्या सीखीं परन्तु थोड़े दिनों के पीछे उसने अपने कुलकी रीतिको छोड़कर बुरी रीति पकड़ी एकबार उसने बुरे मनुष्यों से संगति की उसी से उसकी बुद्धि नष्ट होगई अच्छे और बुरे कार्य संगतिके प्रवेशसे होते हैं और भले मनुष्य संगति से बुरे होजाते हैं अज्ञान अवस्थामें गुणनिधि बुरी संगतिके मनुष्यों के निकट जाया करता था शनैःशनैः उसके सबधर्म नष्ट होने लगे और वेदके विपरीत बुरे कार्य करने लगा अनेककार्यों में से उसके थोड़े से बुरेकार्य यह थे उसने तीनों समयकी संध्याका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्यागकर स्नानको भी छोड़दिया और वेद और धर्मशास्त्र की रीति से जो उचित और अनुचित और योग्य और अयोग्यके धर्म थे उनको भी त्याग दिया वेद नहीं पढ़ताथा जुआ बहुत खेलनेलगा और पिता की सर्वमाया उड़ादी और अपनी मातासे रुपया लेकर जुवारियोंको देदिया और उनलोगों से जो छली वेद धर्मशास्त्र ब्राह्मण देवताकी बुराई बखाननेवाले और विष्णुजी और शिवजीकी निन्दा करनेवाले थे उनसे मिल मित्रता उपजाई इस प्रकार वह सबसे बड़ा छली और जुआरी हुआ यद्यपि उसकी माता उसको नित्य उपदेश करती परन्तु वह किञ्चित्भी पिता के निकट न जाता और जिस समय कि उसकी माता गृहकार्य करती वह घरकी द्रव्य चुराकर लेजाता एकबेर उसके पिताने अपनी स्त्री से पूछा कि 'गुणनिधि' कहां गया है उसने उत्तर दिया कि स्नान और देवतों का पूजन और भोजनकर अपने मित्र और पाठकोंके साथ पाठशाला गया है इस प्रकार उसकी माताने उस के अवगुणों को छिपाया हे नारद ! लड़का कैसाही कुपुत्र हो पर उसकी माता उसका किसी अवस्थामें बुरा नहीं चाहती ॥

सोलहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि इसी प्रकार जिस समय उसका स्वामी पुत्रका वृत्तान्त पूछता वह उसी प्रकार उत्तर देती इस कारण यज्ञदत्त ने अपने पुत्र के अवगुण न जाने और समयतक वह इसी प्रकार के काम करता रहा जिस समय वह सोलह वर्षका हुआ उसका विवाह करदिया और विवाह में बहुत धन खर्च किया उसको स्त्री पतिव्रता और शीलवती मिली परन्तु जब अपने स्वामी के अवगुण किसीसे श्रवण करती प्रतीति न करती यह रीति उत्तम और पवित्र पतिव्रता स्त्री की है कि अपने स्वामी के अवगुण श्रवणकर सेवा और टहल करती है सो गुणनिधि ने यद्यपि ऐसी पवित्र पतिव्रता पाई तौभी कुसंगतिको न छोड़ा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकी माता सर्वदा उपदेश देती और कथाओं में उत्तमोत्तम दृष्टान्त कहती कि हे गुणनिधि ! तुम हमारे अकलौते पुत्र हो इस कारण यह त्याग दो तुम्हारे पिता अतिक्रोधी हैं उनसे तुम अभय हो वह तुम्हारे अवगुण नहीं जानते क्योंकि पूछने पर भी मैं नहीं कहती जो वह किसी दिन सुनलेगा तो हमको और तुमको दण्ड देगा इससे उत्तम है कि कुसंगति को त्यागकर अच्छी संगति करो और विद्याके सीखनेमें उदार हो जे ब्रह्मकार्य हैं उनमें चित्त दो और तुम्हारी स्त्री सुन्दर बुद्धिमती महारूपवती और बड़े कुल की है उसी प्रकार तुमभी हो ऐसी स्त्री के साथ सुख और विहार करो इस कारण स्त्रीका त्यागदेना महापाप है और अन्यस्त्रियों को छोड़ दो और उत्तम कार्य करो और पिता के धर्मपर चलो वरन सारासंसार तुमको बुरा कहेगा और तुम्हारा श्वशुर जो मान योग्य है यह अवस्था तुम्हारी सुनकर हमको व्यंग्य कहेगा मुझको और अपने पिता को किसकारण लज्जावान् कराते हो तुमको उचित है कि अपने पिताके अनुसार काम करो और विचारो कि तुम दोनोंओर से उत्तम कुलके हो और घरों के लड़कोंको देखो कि यह वेदपाठी हैं जब कि तुम्हारे ऐसे अवगुण समय का राजा सुनेगा तो तुम्हारे पितासे अप्रसन्न होगा और मासिक न देगा अभी तो सब मनुष्य कहते हैं कि तुम यह अवगुण लड़कपन से करते हो मगर फिर लोग हँसेंगे और कहेंगे कि अब तुम्हारा कुल अतिपवित्र हुआ और तुम्हारे पिता की निन्दा करेंगे और पितृ नरकगामी होंगे और सब पुरुष मुझको अवगुणी बतावेंगे कि इसने पापकर्म से गर्भधारणकर ऐसा पुत्र उत्पन्न किया क्योंकि तुम्हारा पिता निष्पाप है वह वेद और धर्मशास्त्रमें उदार है और मैं भी अपने स्वामी के सिवाय और किसी को नहीं जानती और निष्पाप होकर गृहकार्य में चतुरहूं हमारे साक्षी श्रीसदाशिवजी हैं कि मैंने मासिकधर्म में भी मूर्खकी स्त्री नहीं देखी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परन्तु उसकी इच्छा है कि तू ऐसा कुपुत्र दुःखदायक उत्पन्न हुआ अपना दुःख कहांतक वर्णन करूं यह कर्महीनता के लक्षण हैं इसी प्रकार गुणनिधिकी माता उसको उपदेश देती परन्तु गुणनिधि कब विचार करता था हे नारद ! यद्यपि मेरे सदृश गुरु मिलता तो भी उस मूर्ख के मनमें बुद्धि न उपजती जैसा कि अमृतके बरसने से बेत के वृक्षमें फल नहीं आते और न फूलता है अन्तमें गुणनिधि की माता उपदेश करते करते थकगई परन्तु गुणनिधिने कुछ न माना वह सर्वदा अहेर खेलता और चोरी और मद्यपान करता था और चु-गुली बहुत खाता था मांस खाकर पराई स्त्रीसे भोग करता और पातुरों के साथ भोग करके जुवा खेलने में समय व्यतीत करता था वह तो सम्पूर्ण कुकर्मों की मानों खानि होगया और पिता का धन चुराकर जुये भोग और वेश्याओंके भोगमें खर्चडाला और निर्धन होगया और जितने बहुमूल्य रत्न और उत्तम वस्त्र उसके पिताने विद्यासे राजाके यहांसे प्राप्त किये थे उनमें से कुछ न रहा तब एक दिन अपनी माताको पूर्णनिद्रामें पाकर अँगूठी जो उसके हाथमें थी चुपचाप उड़ाली जिसको जुआरियोंने जीत लिया अकस्मात् वही अँगूठी यज्ञदत्त उसके बापने एक जुआरीके पास देखकर पहिंचान ली उस पुरुषसे अलग जाकर पूछा कि तुमने यह अँगूठी कहांसे पाईहै जुआरीने उत्तर दिया कि यह अँगूठी और इसीप्रकारकी अनेक अँगूठियां हमारे पिताके घरहैं मैंने जाना कि तुम पराया धन देखकर तृष्णा करते हो ऐसी चतुराई किससे सीखीहै इसी प्रकारके अनेक असत्य वचन कहे तब यज्ञदत्त क्रोधवान् होकर कहने लगा कि अब तुम हँसी छोड़दो और छलआदिसे रहित होकर सत्य २ वर्णन करदो यह अँगूठी मुझको राजाने दीथी तुम इस को ले नहीं सक्ते परन्तु जब उन्होंने दृढ़तासे जांचकर पूछा तो जुआरी ने सत्य २ वृत्तान्त विस्तारसे कह सुनाया और कहा कि तुम मुझको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भय देते हो हमने चोरी नहीं की यह क्या परन्तु अन्य वस्तु हमने आप के लड़केसे जुये में जीती है रत्न, सोने, चांदी के जेवर, पीतल, तांबे और फूल आदिके बासन जो तुम्हारे घरमें थे वे सब हम सब मनुष्योंने ले लिये और नित्य तुम्हारे लड़केको नङ्गा करके मुस्कें बांध हाथों से ताड़ना करते हैं तुम्हारे पुत्रके समान और दूसरा जुआरी संसारमें कोई नहीं है वह केवल जुआरीही नहीं बरन चोर महापापी और वेश्यागामी भी है ऐसे वचन जुआरी के श्रवणकर यज्ञदत्त आश्चर्यवान् हुआ और वस्त्रसे अपना मुख लपेट शिर नीचे किये शोकवान् रुदन करता हुआ घर आया और स्त्रीसे कहा कि गुणनिधि कहां है और वह हमारी अँगूठी कहां है यह वचन सुनकर स्त्रीने भयवती होकर चतुराईसे उत्तर दिया कि इस समय मुझको अनेक कार्य हैं और तुम्हारा भी पूजनका समय है और तुमको अतिथियोंसे अतिप्रेम है उनके निमित्त भोजन बनाना है मैंने किसी स्थानमें अँगूठी को रखदिया है परन्तु स्मरण नहीं है जिस समय कि आवश्यक कार्योंसे छूटूंगी उस समय अँगूठी देदूंगी यह सुनकर यज्ञदत्तने क्रोध किया कि हे सुपूतकी माता, छलवार्त्तामें चतुर! मैंने जब तुझसे पूछा कि गुणनिधि कहां है तब तूने यही उत्तर दिया कि अभी गुणनिधि अपने साथियों सहित पाठशाला गया है और अँगूठी नहीं मिलती तो जाने दो परन्तु और वस्तु हमको दिखाओ यह पुत्र गुणनिधि किन पापोंसे हमारे गृहमें उत्पन्न हुआ सो अब तुम पुत्रकी प्रीति त्याग करो इसकारण कि कुपुत्र कुछभी सुख नहीं देता अब मुझको विना पुत्रके रहने की इच्छा है मुझे ऐसी सन्तान नहीं चाहिये अब तुमको योग्यहै कि हाथ में कुश और जल लेकर लड़केके नाम तिलाञ्जलि छोड़ो और हम जबतक कि ऐसा न कर लेवैं तबतक भोजन न करेंगे यह वचन अपने स्वामीका श्रवणकर गुणनिधिकी माता चरणोंपर गिरपड़ी और कहा कि इस बेर क्षमाकरो यह कहकर गुण-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निधिकी माताने मौन किया और यज्ञदत्तकाभी क्रोध कुछ कम हुआ॥

सत्रहवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने कहा कि जब गुणनिधिने यह वृत्तान्त श्रवण किया तब बहुत चिन्ता और शोकमें डूब २ अपने को भाग्यहीन समझा और रुदन करके कहनेलगा कि हाय २ हे मेरी सहायक, माता! मैं कहां जाऊं क्या करूं तुमने मुझको अनन्तबेर उपदेश किया परन्तु मुझको आपकी शिक्षा देनी उत्तम न जँची और भाग्यकी हीनता से न समझा सो मैं कहां जाऊं और क्या कार्य करूं? मुझको इस कालमें कुछ नहीं भासता मुझे धिक्कार है २ और मेरी भाग्यकोभी सहस्रों धिक्कार है यह कह और रुदनकर पिताकी भयसे गुणनिधि घरसे भाग गया और कुछ समयमें मार्गके श्रमसे थकके और शोकके सागर में डूबकर हाय २ करके रुदन करने लगा और रोते २ में कहा कि हे मेरी माता! मैं कहां जाऊं और क्या करूं कुछ यत्न नहीं भासता मैं तो विद्याहीन भी हूं जो मुझको इस समय में फलदायक होती और न द्रव्यसंग्रह की जिससे विद्वान् और बुद्धिमान् सब सुखी रहते हैं और विद्यामें द्रव्यसे अधिकतर बलहै इस समय मुझको यह बात सूझ पड़ती है इस कारण कि धनवालेको वन आदिमें चोरोंका भयहै परन्तु विद्यावान् निडरहै मैंने कोई दीर्घ पाप कियाथा जिससे ऐसे कुलमें उत्पन्न हुआ सो ऐसे कुलमें भी उत्पन्न होकर अवगुण करनेलगा यह मेरी कर्महीनता है जो बात होनी होती है वही होती है यद्यपि सूर्य पश्चिममें उदय हो पर्वत चले और कमल के फूल पर्वत पर उपजें परन्तु होनी अवश्य होतीहैं मैं तो भिक्षा मांगने योग्य भी नहीं जब मैं प्रातःकाल नींदसे जागता था तो मेरी सहायक माता भोजन देती थी हाय वह माता अब मैं कहां पाऊं क्या करूं और कहां जाऊं इसीप्रकार गुणनिधि भयसे बातेंकर अचेत होगया और पृथिवी पर गिरपड़ा इसी प्रकार गुणनिधि रोता रहा कि सूर्य अस्त हुआ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ समय के पीछे सचेत होकर फिर इसी चिन्तामें डूबा कि एक पुरुष शिवभक्त शिवजीके पूजन निमित्त चलाजाता था उसके पास अनेक प्रकार की सामग्री पूजनके निमित्त थीं और भांति २ के नैवेद्य शिवजी के निमित्त थे उसके संग अन्यभी अनन्त शिवसेवक साथ थे उस दिन शिवरात्रि थी जिसमें मनुष्य व्रत करके मुक्त होते हैं शिवरात्रि सब व्रतों में उत्तमोत्तमहै और अधिक सुखदायकहै और शिवजीको अतिप्रिय है जिससे मूर्खभी मनोरथ सिद्ध करचुके हैं जैसे कि चारों वर्णोंमें ब्राह्मण ग्रहों में शशि नदियों में गङ्गा शिवभक्तोंमें श्रीकृष्णजी वेदोंमें सामवेद मन्त्रों में प्रणव और पुराणोंमें भारत उत्तमोत्तमहै इसीप्रकार सर्व व्रतोंमें यह शिवरात्रिका व्रत राजाके सदृश है जैसे कि शिवजी सब देवताओं को सुखदायकहैं यह व्रत करके मनुष्य सुख प्राप्त कर अनन्त संसारके ऋणों और नियमोंसे मुक्त होजाते हैं ऐसा व्रत शिवरात्रिका रक्खे हुये वे मनुष्य शिवालयमें चलेगये और अनेक प्रकारके नैवेद्य और व्यञ्जन जो वह पुरुष अपने संग लाया था उसकी सुगन्ध पाकर गुणनिधि बहुत भूंखा हुआ और विचार किया कि रात्रि के समय जब ये लोग भोग शिवार्पण करेंगे और सो जायेंगे उस समय यह सुगन्धित भोजन हम लेलेंगे यह वार्त्ता अपने मनमें ठहराकर उन्हीं के साथ चलागया और शिवालयके ऊपर ठहरा शिवभक्तने सच्चे मनसे षोड़शोपचार करके शिवपूजा की और प्रीतिकी प्रबलतासे गानेलगा और नाचा गुणनिधि यह सब देखता रहा और कहताही था कि अगर उनकी दृष्टिहीन होती तो मैं अपना काम करता अकस्मात् वे सब पुरुष अर्थात् शिवभक्त ऊंघ गये गुणनिधि उनको निद्राकी अवस्था में देखकर झटपट शिवालय में गया और धीरे २ पोले पाँवोंसे दबके चाहा कि नैवेद्य लेलूं परन्तु नैवेद्य देखनेके निमित्त उसने अपना वस्त्रफाड़कर बत्ती बनाकर उसको जलाया उसके प्रकाश से उसने सर्व व्यञ्जन उठालिये और झटपट बाहर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आया और बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु चलते समय प्रसन्नताकी अवस्था में उसका एक पैर किसी शिवभक्त के जो वहां लेटा था लगगया वह जगकर चिल्लाया और कहने लगा कि यह कौन भागा जाता है चोर है पकड़ो ऐसी चिल्लाहट में नगरके रक्षक आगये और भागते हुये गुणनिधिको एक तीर मारा कि जिससे गुणनिधि पृथ्वीपर गिर पड़ा और शरीर छोड़दिया और शिवजीकी नैवेद्य खानेसे बचरहा इस कारण कि शिवजीकी नैवेद्य खानेसे बड़ा पाप होता है इसी प्रकार सब देवताओंकी नैवेद्य खाने योग्य नहीं है जैसा कि वेद व धर्मशास्त्र की आज्ञा है इस समय यमदूत आये और मुद्गर आदि जो भयंकर शस्त्र थे वह गुणनिधिको पापी जानकर दिखलाकर बांधनेलगे परन्तु शिवजीने अपने गणों से कहा कि यद्यपि गुणनिधिने असंख्य बड़े पाप किये परन्तु शिवरात्रिका व्रत रखकर रात्रिभर सोया नहीं और हमारी पूजा रात्रिभर देखता रहा और हमारी नैवेद्य जो खानेयोग्य नहीं उसने नहीं खाया और नगरके रक्षकों से मारा गया उसको यम के गण बांधते हैं इस कारण तुमको आज्ञा दी जाती है कि गुणनिधि को यमगणों की बन्दीसे मुक्त करो और हमारे लोक में लावो क्योंकि गुणनिधिको मैंने अपना करलिया अब वह नरकगामी न होगा मुझको शिवरात्रि अतिप्रिय है और सब व्रतोंसे उत्तम है जिसको शिव-रात्रिव्रत करतेहुये पाताहूं उससे अधिक प्रीति रखताहूं जो मेरी पूजन देखता है वह मुझे बहुत प्यारा है जो मृत्युके समय ऐसा न हो तो भी उसके सब क्लेश नाश करताहूं यह गुणनिधि अब कलिङ्गदेशका राजा होगा और मेरा बड़ा भक्त और मित्र होगा यह आज्ञा शिवजीके गण सुनकर वहां गये उनके हाथों में त्रिशूल थे उनको देखकर यमगण भयवान् होकर दुःखीहुये शिवगणोंने कहा कि तुम कौन हो जो इस निष्पापीको विना दोष बन्द करते हो यह श्रवणकर यमदूत आश्चर्य-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वान् हुये और कहने लगे कि तुम कौन हो जो यमकी अवज्ञा करके ऐसे पापी को छुड़ाते हो किसकी शक्ति पर इतने प्रबल हो शिवगणोंने उत्तर दिया कि क्या तुम हमको नहीं जानते कि हम शिवगण हैं जिनको ब्रह्मा-विष्णु-आदि ध्यान करते हैं इसको छोड़दो यमगणोंने कहा कि आपकी आज्ञा प्रबल है परन्तु ऐसे पापी को छुड़ातेहो और पापका विचार नहीं करते इसने अपने कुलकी रीतिका त्याग किया है और वेद की अवज्ञा की है इस पापी असत्य बोलनेवालेने अपने माता पिताका कहनाभी न माना और अपनी स्त्रीको त्यागकर अन्य स्त्रियों से गमन करता था और धर्म छोड़कर वेश्याओंसे मैथुन किया और देवताओंकी निन्दा करतारहा और जुयेमें अपने बापकी सब माया नाश की हम इसकी मूर्खता कहांतक बखानें यह सब पापियों का राजा है और सबसे बड़ापाप यह है कि शिवनिर्माल्य चोरी करके ले भागा और खानेलगा सो तुमभी देखते हो तुम इसको अच्छीभांति जानतेहो कि जो कोई शिवनिर्माल्य खाता है अथवा उसके ऊपर से लांघजाता है अथवा शिवनिर्माल्य किसीको देता है यह सब नरक-गामी होते हैं हलाहल पानीमें डालकर पीना अच्छा है परन्तु शिवजी पर चढ़ाई वस्तु खाना अयोग्य है चाहे प्राण जातेरहैं परन्तु इस संसार में धर्म रखना कठिन है यह सुनकर शिवगणोंने उत्तर दिया कि यह ब्राह्मण निष्पापी है और इसने प्रथम बड़ा धर्म किया है अर्थात् मरने के समय शिवके मन्दिर में जाकर अपने शरीर का वस्त्रफाड़ और उससे दिया बालकर ज्योति जलाई दूसरा बड़ाधर्म इसने यह किया कि शिवरात्रि को व्रत रात्रिदिन रक्खा और रात्रिभर जागता रहा और शिवजीकी पूजा देखता रहा और शिवजी के नाम सुनता रहा यद्यपि यह धर्म इससे अकस्मात् हुआ परन्तु इसको पुण्य प्राप्त हुई है अब यह कलिङ्गदेश का राजा होगा और शिवपूजन करेगा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह कहकर और गुणनिधि को छुड़ाकर शिवगण गुप्त होगये ॥

अठारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! ऐसे वचन शिवगणों के सुनकर यमदूत लज्जावान् होकर यमके निकट गये और सब वार्त्ता विस्तार संयुक्त कही यह श्रवण कर यम आश्चर्यवान् हुये और शिवजी को दण्डवत् की और अपने गणोंको आज्ञा दी कि तुम तीनों लोकमें फिरो जो मनुष्य शरीर में भस्म लगाये हो अथवा रुद्राक्ष पहिने हो अथवा शिवलिङ्गकी पूजन करता हो या शिवनाम जिह्वासे लेता हो अथवा शिवजीका यश वर्णन करता हो अथवा शिवजीका यश श्रवण करता हो अथवा शिवजी के मन्दिरमें दर्शन करता हो अथवा शिवजी के पूजन और योगमें डूबा हो अथवा छलसंयुक्त भी शिवजीका बाना और वेष धारण किये हो अथवा मृत्युकाल में उसने छल से मरने के समय शिवका नाम न लिया हो और किसी प्रकार उसका शिवसे सम्बन्ध हो उन सबको तुम छोड़ देना और कुछ दुःख न देना और दासों के समान उनकी सेवा करना इतना कह यमराजने शिवकी बड़ी स्तुति पढ़ी और कहा कि हमारे पाप क्षमा कीजिये यह अपराध मुझसे अज्ञानता में हुआ है फिर बहुत स्तुति करके चुप होगये अब गुणनिधिका हाल सुनिये कि वह यमगणों से छूट विमान पर आरूढ़ हो शिवलोक को चलागया और समयतक सुख भोग कलिङ्गदेशका राजा हुआ वहां के पूर्वराजा का नाम इन्द्रमुनि था गुणनिधि उसी के यहां उपजा और कर्दमके नाम से प्रसिद्ध हुआ और बड़ा शिव का भक्त था इन्द्रमुनिने अपने पुत्रमें राज्यलक्षण उदारता वीरता धीरतादि देख अपना सब राज्य उसको सौंपा और रानीसमेत वन जाय शिवका कठिन तपकर शिवलोकमें प्राप्त हुआ जोकि कर्दमको पूर्व जन्म की सुधि थी इसलिये वह सब शिवालयोंमें दीपदान करनेलगा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और हरएक मण्डलेश्वरको बुला आज्ञा दी कि जितने गांव में शिवालय हों दीपक जलायेजावें जो इस बातको न करेगा उसका शिर धड़से जुदा किया जावेगा इस भयसे गांवके स्वामी दीपदान करते रहे और राजा आप इस बात को बड़े हर्ष से करतारहा और प्रजाको अपनी नीति से प्रसन्न रक्खा और जन्म भर अपने दीपदानसे अचेत न रहा जब मरा तब तो दीपदान के पुण्यसे शिवलोक में पहुँचा और उसको शिवलोकमें बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और बहुत आनन्द और सुख उठा शिवचरणोंका ध्यान किया फिर मृत्युलोक में आया अब अपने लड़के पुलस्त्यके पुत्रका हाल हम कहते हैं अर्थात् हमारे बेटे पुलस्त्यके विश्रवानामसे एकपुत्र उपजा विश्रवाकी तीन स्त्रियां थीं जो शिव और विष्णुकी बड़ी भक्ता थीं जो सबसे छोटी स्त्री विश्रवाकी थी उसके विभीषण नामी बेटा पैदा हुआ विभीषण विष्णुका ऐसा भक्त हुआ कि बैकुण्ठके इस अथाह संसारसागर से पार होगया और जो उससे बड़ी थी उससे दो पुत्र रावण और कुम्भकर्ण तुम्हारे शाप से उत्पन्न हुये वे दोनों शिवके भक्त हो नाना प्रकारके संसारी भोगविलासों में फँसगये उनमेंसे रावणने कठिन तपकर शिवसे वरदान पाया और बड़े प्रताप और तेजसे संसार भरमें उसने राज्य किया उसी के नाश करने को विष्णु भगवान्ने आप द्विभुज धार अवतार लिया जिनका नाम राम हुआ पर वह रावणका नाश न करसके शिवका तपकर और अपने तपश्रमसे शिवको प्रसन्न पाकर शिवके अवतार अर्थात् श्री हनुमान्जीको साथ लेगये और बड़े परिश्रमसे वानरोंकी सहायता पाकर रावणको बध करडाला बरन उसके कुलको मूलसे उखाड़डाला और जो सबसे बड़ी स्त्री विश्रवामुनिकी थी अर्थात् तीसरी स्त्री और जिसका नाम षट्तिला था उसके उदरसे गुणनिधि जिसका पहले वर्णन होचुका है उपजा और विश्रवामुनिने पहले लङ्कामें रहकर जो उचित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

था वह किया फिर काशी में जाकर अति तप किया जिससे शिवजी अतिप्रसन्न हुये और शिवके वरदानसे वह उल्कानगरीका राजा होकर दिक्पतिके नामसे प्रसिद्ध हुआ और शिवजीकी पूजामें मग्न रहा उसे राज्य करते हुये हमारा एक कल्प बीता जब कि घनवाहन कल्प का प्रारम्भ हुआ उस समय गुणनिधिने तप आरम्भ किया अर्थात् उसने दीपदानकी विधि कण्ठ करके उसमें बहुत ध्यान लगाया और काशीमें जो शिवकी पुरी कहलाती है आकर उसमें कठिन तप करने लगा और हृदयके नेत्र खोले शिवजीका दर्शन किया मनको ब्रह्मज्ञान से पूर्णकर सम्पूर्ण मनके मनोरथोंको शान्त करदिया और उसी जगह शिवलिङ्गकी प्रतिमा स्थापन कर नानाप्रकार के फूलों और षोडशोपचारसे लिङ्ग पूजा की यहांतक कि विश्रवाके शरीरका रुधिर और मांस सूख गया चर्म और अस्थिमात्र शेष रहगये ऐसी तपस्या करते हुये विश्रवा को सौकरोड़वर्ष बीते और वह मनको जीते हुये शिवका तप किया किये ऐसा घोरतप देख शिव पार्वतीसहित विश्रवा के स्थानमें सुशोभित हुये और कहा कि वर मांगो ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

शिवजीने कहा कि अब तू तप मतकर जो इच्छा हो वह ले यद्यपि सदाशिवने अति उच्चस्वरसे यह बात कही पर विश्रवा अपने ध्यानमें बैठेरहे और कुछ न सुना और ध्यानमें बैठेरहे तब शिवजीने अपनी मूर्ति उसके मनसे निकाल ली उस समय दिक्पति अति आश्चर्य में हुआ और नेत्र खोल देखा तो शिवजीको पूर्णरूपसे जैसा पहिले वर्णन होचुका है देखकर और शिवरानीको शिवके बाईंओर अवलोकन करके महाप्रसन्न हुआ पर उस प्रकाशवान् तेजके देखने की शक्ति न रखकर नेत्र मूंदलिये और कहा हे नाथ! मुझे अपने चरण दिखा दो और वह उपाय करो जिसमें मैं आपको देखूं सिवाय इसके और कुछ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं चाहता क्योंकि इससे अधिक और कोई पदार्थ संसारमें नहीं है यह कहकर दिक्पति चुप होगया सो शिवजी प्रसन्न हुये व दिक्पति को अपने तेजके देखने की शक्ति कृपा की और अपने हस्तकमलसे उसका हाथ पकड़लिया पहिले दिक्पतिने नेत्र खोल शिवकी प्यारी शिवरानीको देखा और पूछा कि यह कौन स्त्री है जो इतनी सुन्दरी है और सबके मनों को मोहित करलेती है इसका बड़ा भाग्य है जो शिवके निकट रहती है इसने मुझसेभी अधिक तप किया होगा इस के पुण्य और प्रेमको धन्य है और इसके माता पिता भी धन्यहैं और उन सबके बड़े भाग्य हैं जहां ऐसी स्त्री हो यह बात बारबार कहकर प्रत्यक्ष कुदृष्टिसे देखा तुरन्त उसकी आंखें फूटगईं और देवीने क्रोधित होकर कहा कि यह तपस्वी बहुत बुरी कुदृष्टि रखनेवाला है और इसी से अपना कष्ट चाहता है और व्यङ्ग्य वचन कहकर मुझको अपनी स्त्रीके सदृश देखता है हे शिव ! यह तुम्हारा कैसा भक्त है ये वाक्य शिवरानी के सुनकर शिवजी हँसकर बोले कि इसने छल छोड़ इक-बारगी ऐसा तप किया है जो प्रकट है और तुमको मेरे साथ होने से और तुम्हारे भाग्य अपने से अधिक जान तुम्हारी प्रशंसा करताहै दुष्ट-दृष्टि से नहीं देखता और दिक्पति से कहा जो इच्छा हो वह मांग हम तुमसे कहते हैं कि तुम वस्तुओं के स्वामी होगे और सब भूमिके राजाओंके स्वामी होगे विद्याधर और किन्नर तुम्हारे आधीन रहेंगे और जो तुम्हारी गुप्त इच्छा है वह भी हम जानतेहैं अच्छा हम मित्र होकर तुम्हारे निकट रहेंगे अर्थात् कैलास पर्वतमें स्थित रहकर तुमसे अतिप्रीति रक्खेंगे और तुम्हारी कठिनता दूर किया करेंगे अब तुम शिवरानी के चरणोंपर गिरपड़ो क्योंकि यह तुम्हारी माता है इससे तुम पर प्रसन्न होकर क्रोध शान्त करलेंगी और शिवरानीसे कहा कि यह तुम्हारा बड़ा भक्त है इसके ऊपर कृपा करो और क्रोध निवृत्त करो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसको अपना सेवक समझो क्योंकि तुमको और हमको लोकमें भक्त-वत्सल कहते हैं ऐसी बातें शिवजीकी सुनकर शिवरानीने अपना क्रोध शान्त करलिया और दिक्पतिसे कहा कि तुम हमारे पुत्र हुये तुममें शिवकी भक्ति सदा बनी रहेगी और तुम हमारे पुत्र होचुके जो वरदान शिवने तुमको दियाहै वह सत्यहै और जोकि तुमने मेरे स्वरूप की इच्छा करके मेरा भय मनमें न लाये इस कारण तुम्हारा नाम कुबेर होगा और जो शिवका लिङ्ग तुमने स्थापन कियाहै वह सिद्धि देनेवाला होकर तुम्हारे नामसे प्रसिद्ध होगा वह सम्पूर्ण पापोंका नाश करके मुक्ति देगा क्योंकि जो कोई कुबेरेश्वर महादेव के दर्शन करेगा वह थोड़ी भक्तिमें भी तपका फल पावेगा यह कुबेरेश्वर महादेव विश्वेश्वर की दाहिनी ओर हैं जिनकी पूजाकर लोग अतिआनन्द पाते हैं यह वर देकर शिव और शिवरानी तो गुप्त होगये और कहगये कि हमारे आने की बाट देखना और कुबेर भी अपने घरको चले और बड़ाधन द्रव्य पाया वह अलकापुरीके महाराजा होकर शिवमित्रके नामसे उपनाम पाकर शिवके भण्डारी हुये वही शिवकी भक्तिमें सदा लगेरहते हैं अलकापुरी ऐसी है जिसको देख मनुष्य का मन मोहजाता है ऐसी अलकापुरीमें बड़ा उत्सव हुआ और शिव सदा कुबेरकी प्रशंसा किया करते हैं, हे नारद! यह विश्रवाकी कथा कि जिसतरह उसने वरदान पाया तुमसे कह सुनाई यह कथा आनन्द देनेवाली है जो शिवका थोड़ासा पूजन करता है वह समयपर बड़ा फल देता है जैसा कि गुणनिधिकी कथा से प्रसिद्धहै और शिवकी बराबर तीनोंलोकमें कौनहै॥

बीसवां अध्याय॥

ब्रह्माने कहा कि जब शिव निधिपतिको वरदान देकर अन्तर्धान होगये तब मनमें विचारा कि हमने जो निधिपति को अपना पुत्र बनायाहै तो उसके यहां किस विधिसे जाकर मनुष्यों की भलाई के लिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्या काम करें आगे भी सम्मति हुई थी सो अब हम कुबेरके मित्र होकर वहां स्थित रहेंगे जो हमारा मुख्यस्वरूपहै वह परब्रह्मस्वरूपहै तो उस स्वरूपसे और इस रूपसे जो अब धारण करके अपने मित्रके यहां जावेंगे कुछ भेद नहीं होगा जो कोई उसमें अन्तर या द्वैतभाव समझेगा वह दुःख पावेगा वही स्वरूप जो ब्रह्मा और विष्णु आदि करके पूजा जाताहै तो मैं उसी रूप और नामसे वहां स्थित रहूंगा और कुबेरके साथ मित्रता उपजाऊंगा और जो कि उमा अर्थात् शिवरानीने अबतक अवतार नहीं लिया अकेले हमने अवतार लिया है सो हम योग और कठिन तप करके वहां स्थित रहकर अपने भक्तोंको मुक्त करेंगे और दुष्ट और कुमार्गी मनुष्योंको मारेंगे कुछदिन इसीतरह रहकर और अपना रूप देखते हुये रहेंगे इसी अवसरमें समय पर शक्तिभी अवतार लेवेंगी और संसारकी रीति के अनुसार वह हमारी स्त्री होंगी हम उस दशा में गृहस्थ होकर नानाप्रकारके विहार करेंगे ऐसा विचारकर वह रूप जो शिवका था उसने चलनेका उद्योग किया और डमरू बजादिया जिसका शब्द तीनोंलोक में पूरित होगया और उसी शब्दकी ओर सब चले विष्णु गरुड़पर हम हंसपर चढ़चले और सनकादिक मुनि, सिद्ध, देवता, वेद, धर्म, शास्त्र, पुराण, तुम और तुमसे जो और मुनि हैं और सर्पों के यूथप उसी शब्द की ओर चले और प्रथम जो शिव के गणहैं वह सब उस ओरको चले और परस्पर कहनेलगे कि क्या कारण है डमरू आज बजायागया और किसके भाग्य उदय हुये और हमारे भी बड़े भाग्य हैं कि हम भी शिवजीके शुभचरण देखेंगे निदान सबलोग इसप्रकार की बातें करते हुये अतिप्रसन्नतासे शिवके पास पहुँचे और सब दण्डवत् प्रणाम के उपरान्त हाथ जोड़ खड़ेहुये और स्तुति करनेलगे शिवजी अतिप्रसन्न हुये और विष्णुको बाईं ओर हाथ पकड़ के बैठा लिया और दाहिनी ओर मुझे स्थान दिया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुशल पूछकर हमें अति प्रतिष्ठित किया और हाथकी सैनसे सूर्यका आदर किया और मुनियोंको जो अमरहैं देखकर प्रसन्न हुये और शिव के गण शिवजीकी इच्छा समझकर अपने आप बैठगये वहां लोगों का बड़ा समूह होगया और बड़ा उत्सव हुआ फिर शिवने कैलास जानेका उद्योग किया कि कुबेरका मनोरथ पूरा हो उस समय मनुष्यों की सेना गणोंका समूह बहुत भारी था जो चलनेकी इच्छासे उठखड़ा हुआ और विष्णुजी नन्द और सुनन्द दो गणों समेत उठ खड़े हुये और इसीतरह वेद और सनकादिक आदि और हमभी उद्यत हुये और तेंतीसकोटि देवता जो अमरहैं उनको इन्द्र लेकर खड़ेहुये इन सबका ब्योरा संक्षेपसे नीचे लिखाजाता है उस स्थान पर ग्यारह रुद्र, अपने गणों समेत बारह सूर्य, आठों वसु, तेरह विश्वेदेवा, सत्ताईस नक्षत्र, बारह भक्त, चौंसठ आभासुर, उनचास पवन आदि और इसके विशेष और भी देवताओंके प्रकार जिनको हम विस्तारभय से नहीं लिखते साथ हुये और दशप्रकारके देवता अर्थात् विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, ऋक्ष, सिद्ध, भूत, पिशाचादि वह भी प्रतिष्ठित होकर चले और दिशापति अपने २ गणों समेत वासुकि तक्षक आदि कुलवान् सर्प और नागोंके राजा और शेषजी भी साथ हुये और संसार भरकी माता श्रीगायत्री गरुड़ पहाड़ समुद्र जो सात हैं और दोनों अयन अर्थात् उत्तरायण, दक्षिणायन, सर्वऋतु, काल, यम, पक्ष, सब नदियां और बड़े नद बनके बासी सब यकबारगी खड़े हुये और साथ चलने का उद्योग किया और मुनियोंका समूह जो अट्ठासीसहस्र का था वहभी तत्पर हुआ अब हम सेनाके सब अधिपतियोंका वर्णन करते हैं और उनकी सेना की संख्या भी कहते हैं पहला करणगण जो एक करोड़ सेनाका सरदार था दूसरे कैयक राक्षस के साथ दश कोटि सेना थी तीसरा विकृत जो आठ कोटि सेनाका अधिप था चौथा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परयात्रिक जो नवकोटि सेनाका स्वामी पाँचवां सुरमान्तिक छःकोटि सेना लिये हुये था छठां विकटानन भी उतनीही सेना का अधिपति था सातवां जालक जो बारह करोड़ सेनापर आज्ञा चलाता आठवां दुन्दुभि चौदह कोटिका स्वामी नवां कुन्दक एक हज़ार दशवां अव्यसन आठ करोड़ सेना का स्वामी था ग्यारहवां विष्टम्भ आठ करोड़ सेनाका बारहवां सन्धारक छः कोटि कटक का तेरहवां कपाली पाँच कोटि सेनाका स्वामी था और सिवाय इनके गणप, सन्नाद दश दश कोटि सेना के अधिपति थे और कण्डीगणके साथ बारह कोटि सेना थी और बुद्धतानके साथ आठ कोटि महाकेशके साथ सहस्रकोटि और पर्वतके साथमें बारह कोटि और अनलमदनकी अर्दली में एक कोटि और महाकाल कालक और कालके साथ सौ कोटि और आगनिक और सन्नाह के साथ और रविशतक, कोकिल, अमोघ, समन्त्रिकके साथ एक २ कोटि सेनाथी और काकपाद सन्तानकके साथ साठ २ कोटि थी और मधुपुंगके साथ नवकरोड़ और इसीतरह पन्नग के साथ और नील के साथ नवकोटि और इसीतरह पूर्णभद्रके साथ थी और चित्रवक्रके आधीन सात कोटि और विजयी काष्ठाके एककोटि और परिघके नवकोटि और सुखेशके एक करोड़ बीस हज़ार और विरूपाक्ष और प्रमेश आदिके साथ असंख्य सेना थी और इसी तरहपर बहुत से यूथप थे और शिवके गणों में तालकेत, षड्वदन, पञ्चवदन, भयानक, लङ्कलेश, संवर्तिक, भृङ्गी एक हज़ार भूत लियेथे और दशकोटि और भी जानना चाहिये और लोकान्त और दैत्यान्त और दीप और आसन जो देवताओंको अतिप्रिय हैं ये सब चौंसठ हज़ार एकही स्वरूप के थे और रुद्रके असंख्य गण थे उन सबके मस्तकों पर नवीनचन्द्रवत् एक रेखा जटा मुकुट धारण किये त्रिनेत्र और कण्ठमें हलाहलका चिह्न विराजमान कुण्डल और हार पहने कि जिनको देवता विष्णुजी और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमभी देखकर आश्चर्य में हुये और उनके शरीरका प्रकाश सहस्रसूर्य की दीप्तिसे कम न था यह सब रुद्रगण उद्यत हुये ऐसा समूह देख शिव अतिप्रसन्न हुये और चारों ओरसे जय २ शब्द होनेलगा उस समय शिवजी अपने स्वरूपका ध्यानकर और प्रणाम नमस्कार कर बैलपर सवार हुये हम और विष्णु दहिने बायें हंस व गरुड़पर चढ़ेहुये साथ होलिये और ऐरावत हाथीपर इन्द्र चढ़े इसी प्रकार समस्त देवता और मुनिआदि सब साथ चले और सबके मनमें शिवकी मूर्ति स्थिर होगई और हरप्रकारकी सेवा करनेलगे उस समय बड़ा आनन्द था हर मनुष्य अतिहर्षपूर्वक चला जाता था और शिवजी बहुत धीरे २ चलते थे कि कोई दुःख न पावे जिस २ के देशमें शिव आते थे वहां भेंट पाते थे और स्वीकार करते थे इसी तरहसे शिव अलकापुरीके निकट पहुँचे और अलकापुरीके स्वामी शिवसे बिदा होय ज्यवनारकी सामग्रीके तय्यार करनेको आगे चलेगये और अपने घरमें जाकर बड़ी विधिसे पूजा और ज्यवनारकी सामग्री तय्यार की और फिर शिवजीकी अगवानी को अपनी सेना समेत आगे पहुँचकर शिवके चरणोंपर गिरे और प्रेम में मग्न होगये और भेंट देकर पूजन किया और प्रेमानन्दमें मग्न होकर जो उचित था वह सब भूलगये और शिवको प्रणामकर विष्णु और हमारा भी आदर किया शिवने उनको हृदयसे लगाया और मस्तक चूमा और उनको साथ लेकर आगे चले॥

इक्कीसवां अध्याय॥

इतना कहकर श्रीब्रह्माजी बोले कि शिवजी देवताओं समेत इस तरहकी सामग्री सहित अलकापुरीमें पहुँचे और निधिनाथकी विनय के अनुसार वहां स्थित हुये अलकापुरीके अधीश्वर निधिनाथने शिवजीकी पूजा करके हमाराभी अतिआदर सम्मान किया सबलोगोंका बहुतही आदर किया यही बात हर गृहस्थको उचितहै कि जो कोई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने घर आवे उसकी सेवा करे और वेद और धर्मशास्त्रको जानकर अच्छे कामोंसे संसारमें प्रसिद्ध रहे शिवजीने सिंहासन पर विराजमान हो तुरन्त विश्वकर्माको आज्ञा दी कि कैलास पर्वतपर हमारा मन्दिर अतिसुन्दर बनाओ और केवल मेरेही लिये नहीं वरन हमारे गणोंके वास्ते और सुर मुनिलोगोंके लियेभी विचित्र मन्दिर स्थापन करो यह आज्ञा सुन विश्वकर्मा अतिप्रसन्नता पूर्वक कैलास पर्वतको गया और मन्दिरोंके बनानेमें प्रवृत्त हुआ और एक अतिविचित्र स्थान निर्माण किया जिसमें तरहतरहकी सामग्री रत्नोंसे अलंकृत बहुमूल्यपत्रोंसे सजाई और धरती उसकी नीलमणिसे बनाई और मूंगेके लट्ठे लगाये और शुद्ध स्वर्णसे दीवार और वज्रके द्वार सजाये और उसके बीचमें एकस्थान मुख्य शिवजीके लिये निर्मित किया और अन्तःपुर जुदा बनाया और शिवजीकी सेवामें आकर विनयकी कि मन्दिर तय्यार है और जो कुछ आज्ञा हो वह पालन करूं शिवजी अतिप्रसन्न हुये और सबकी इच्छा हुई कि जो अब शिवजी कैलास को चलें तो अति उत्तम है शिवजी अन्तर्यामी अपने भक्तोंके मनकी बात जानगये और सबको अपने चरणसरोजसे कैलासपर्वतको सुशोभित किया इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उसीसमयमें हम और विष्णु ब्राह्मणों को साथ लिये हुये शिवजीके निकट पहुँचे और निधिपतिने हम सब लोगोंकी ओरसे प्रतिज्ञा की कि हे स्वामी ! सबका बड़ा यह मनोरथ है कि आपका अभिषेक कियाजावे और पूजा कीजावे और आपको सिंहासन पर बैठाकर पूजन करें कि हमारा मनोरथ हो शिवने प्रसन्न होकर अङ्गीकार किया यह आज्ञा सुन सबलोग इस आनन्दकी तय्यारीमें लगे और दूत चारों ओर भेजेगये और पवित्र और आवश्यक वस्तुओंको इकट्ठा करने लगे और जब ज्योतिषमुनिने जाना कि शुभ मुहूर्त आन पहुँचा प्रसन्न होकर विष्णुसे कहा कि शिवजीके अभिषेक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का मुहूर्त नियत होगयाहै अब देर न कीजिये हम और विष्णुने शिव से कहा कि अब आप स्नान कीजिये और वस्त्र जैसा इस समयके योग्य हो पहिनिये शिवजीने स्वीकार किया और सब विद्यमान मनुष्य प्रसन्न होगये उस समय पुष्पोंकी वृष्टि हुई और सब देवता और अमरगण अपनी २ स्त्रियों समेत अतिप्रसन्नताको प्राप्त हुये सब तीर्थों का जल लायागया जिससे शिवजीने स्नान किया और हम और विष्णुने शिवजीके शरीरको अपने हाथोंसे अच्छीतरह मलकर धोया फिर शिवजी दिव्यवस्त्र पहिनकर सिंहासनपर सुशोभित हुये उस समय सब बाजे बाजने लगे और पुष्पोंकी महावृष्टि हुई और ब्राह्मण स्वस्तिवाचन पढ़नेलगे हमने वेदध्वनि प्रारम्भ की और शिवजीको सिंहासनपर सुशोभित कर हम अतिप्रसन्न हुये पहिले विष्णुजी ने निगम मन्त्र पढ़कर शिवपूजा की और लक्ष्मीजी समेत अतिभक्तिसे बार २ आरती उतारी और भिक्षुकोंको बहुतसा दान दिया हरतरफ़से बाजन बजनेलगे आकाशकी दुन्दुभिने दिशा पूरित की उस समय अच्छा समा होरहा था कि गन्धर्व गाते और अपने प्रियस्वरों और मधुरवाणी से मन हरलेते अप्सरादि नृत्य करने लगीं जिससे चारों ओर आनन्द छागया फिर हमने देवताओंके साथ पूजा की इसके उपरान्त सनकादिक, मरीचि, देवऋषि, ब्रह्मऋषि और मुनिआदि ने पूजा की फिर विष्णुके अमर पार्षद शिवकी पूजा करने लगे फिर शिवके गणों ने और जो लोग आये सबने यथाशक्ति शिवजीको पूजा और हम सब ने प्रसन्नतामें बड़ा द्रव्य लुटाया और ग़रीबोंको अमीर बनादिया उस समय चारों ओरसे धन्य २ का शब्द सुनाई देता था कोई उस हर्ष में गाता कोई दौड़ता कोई नाचता कोई शिवकी स्तुति बखानता कोई सुरमुनिकी सेवा करता इसी प्रकार सबने अतिआनन्द मनाया और अतिहर्षको प्राप्त होकर शोक नष्ट करदिया और सबने अलग २

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजी की स्तुति की जिसको हम भी जुदा २ वर्णन करते हैं ॥

बाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि पहिले विष्णुजीने दोनों हाथ जोड़कर यह स्तुति की जिसका संक्षेप यह है कि हे ईश्वर ! आपकी स्तुति वेद नहीं करसक्के और चाहे वह सबकुछ कहते हैं तो भी आपका अन्त उनको नहीं मिलता और चुप हो रहते हैं और मैंने भी स्तुति की पर आदि अन्त नहीं जानता और देवताओं ने एकमति होय यह स्तुति की कि आपका तेज इस निर्मल सूर्यसे करोड़ों भाग अधिक है हम क्या कहें हमभी चाहते हैं कि आपके चरणों में हमारा मन लगारहे और मुनीश्वरों ने भी शिर झुकाकर बहुत प्रशंसा की इसीप्रकार देवता, उपदेवता, गणादि सबोंने अपनी अपनी बुद्धि और मतिके अनुसार अतिविस्तृत स्तुति की और सबने खड़े होकर प्रसन्नता के चिह्न प्रकट किये कि जिससे सबकी प्रीति देखकर शिवजी अतिप्रसन्न हुये और श्रीमुख पर इस प्रकार के शुभ वचन लाये कि तुम सब लोगों की जो इच्छा हो वह मांग लो हम देंगे ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसको हम दे नहीं सक्के यह सुन सब हाथ जोड़ बोले कि आपने जब ऐसे वचन कहे तो हम तृप्त होगये और हमारे सब दुःख मिटे इससे और कौन वस्तुहै जिसको हम आपसे मांगें और आपसे क्या छिपा है पर तोभी हम एक बात चाहते हैं कि हमको सदा आपकी भक्ति बनीरहे और आपके चरणोंकी इच्छा किया करें और हमको कुछ भय न हो हमारे अपराध क्षमा हुआ करें और जब असुर हमारा अपमान करें उस समय हमारा दुःख आप दूर किया करें और जो हमारे लिये उत्तम हो उसको आप किया कीजिये वेद आपको जगत्पिता कहते हैं इस कारण आपसे विनय की इतना कह सब चुप होगये और शिव सबको निर्भय कर आप सगुणरूप हो वहीं स्थित हुये और सबको समझाकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिदा किया केवल हमको और विष्णुको रखदिया और निकट बुला कर कहा कि तुम दोनों हमारे शरीर हो और संसार उपजाकर तुम्हीं पालते हो जब तुमको कुछ दुःख हो तो हम तुम्हारी रक्षा करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं और अपने २ लोक को सुखपूर्वक चले जाओ और जो इच्छा हो वह हमसे मांग लो यह सुनकर हम दोनोंने भक्ति मांगी और बिदा होकर चले फिर शिवजी निधिपतिका हाथ पकड़के कहने लगे कि तुम्हारी प्रीति में फँसकर हम तुम्हारे निकट स्थित हुये हैं और हमारी तुम्हारी मित्रता तीनों लोकमें प्रसिद्ध होगई तुम्हारा क्या उत्तम भाग्य है कि तुम मुझको अतिप्रिय हुये तुम प्रसन्न रहो और दुःख तुम्हारे सामने न आवे अब तुम भी अपने देशको जाओ इतना कह निधिपति प्रेममें मग्न होगये और आंसुओं की नदी बहने लगी और विनय की कि चाहे मेरा मनोरथ पूरा हुआ पर मुझे घर जाने की इच्छा नहीं पर महाराज की आज्ञासे निष्पाप हूं यह कहकर बार २ शिवजीको प्रणाम करने लगे और अपने घर अतिप्रसन्न होकर जा पहुँचे और शिवजीभी उसी कैलास पर्वत पर निर्भय होकर स्थित हुये और कभी २ इस लोकमें आकर देखा करते और कभी कोई विचित्र कथा प्रीतिसे कहते और कभी योग अङ्गीकार कर अपने स्वरूपके ध्यानमें मग्न रहते कभी अपने गणोंका मन विचित्रकथामें कहकर बहलाते और कभी अपने भक्तोंके लिये कुछ लीला रचते इसीप्रकार एक समय तक शिवजी अकेले लीला करते रहे और उमा प्रकट न हुई और शिव अपने भक्तोंके उपकारके लिये समयतक कैलास पर्वतपर विहार करते रहे फिर उमा ने अवतारलिया और दक्षके घर उपजीं और दक्षने शिव जीके साथ विवाह करदिया और शिवभक्तोंके लिये विहार करनेलगे शिवरानी अतिप्रसन्न रहा करतीं और परस्पर दिन २ अधिक प्रीति होतीजाती थी हे नारद ! हमने शिवअवतार और शिवजीके कैलास

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में जाने का हाल तुम्हें सुनाया इसके उपरान्त और हज़ारों शिवजी की लीला हैं यह लीला मैंने अपनी बुद्धिके प्रमाण कही यह शिवकी कथा अतिपवित्र है जिसके सुननेसे बड़े २ पाप नष्ट होजाते हैं यह कथा मोहरूपी सागरके लिये नावहै जो चढ़नेवालेको पार करदेती है जो मनुष्य इस कथाको सुनताहै या सुनाताहै वह प्रसन्न रहताहै और निर्वाणपद पाताहै जो इसको स्मरण करता है उसके सब शोक और दुःख नाशको प्राप्त होते हैं जो मनुष्य इसे शिवप्रीतिसंयुक्त पढ़े उसके धन सन्तान बहुत होगा ॥

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसंवादे श्रीशिव-
विलासे प्रथमखण्डः समाप्तः ॥ १ ॥
प्रथमखण्ड पूर्ण हुआ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः

शिवपुराण भाषा ॥

द्वितीयखण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

इतना कहकर फिर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हम शिवजी का अनादि चरित्र वर्णन करते हैं और जिसप्रकार सतीने दक्षके घर अवतार लिया पुनः जिसप्रकार शिवजीसे विवाह किया और जो जो चरित्र शिवजीके घर किया वह हम विस्तारसे वर्णन करते हैं हमने पहिले दश पुत्र उपजाकर उनको आज्ञा दी कि तुम सृष्टि उपजावो वे ये हैं मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरस ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ भृगु ७ वसिष्ठ ८ सुरऋषि ९ दक्ष १० और इनको हमने मानसी सृष्टिकी रीतिपर उत्पन्न किया अर्थात् क्रमपूर्वक मन, शरीर, मुख, कर्ण, नाभि, त्वचा, हाथ, प्राण, अण्डकोष, अंगुष्ठसे ये सब पैदा हुये और हृदयसे धर्म और पीठिसे अधर्म और होठोंसे मोह और भौंहसे क्रोध उपजाया पर जब हमने सरस्वतीको जो सुन्दर स्त्रीरूपसे उपजी तब उसके सुन्दर मोहन स्वरूपको जो कामकी भरीहुई अपने नयनोंसे तीनों लोक मोहनेवाली मालूम होती थी देखकर कामजालमें फँस गये और उसके साथ मैथुन करना चाहा जोकि कामदेवने हृदयमें प्रवेश किया था यह देख मेरे सब पुत्र हाहा करने लगे और शिवजी की स्तुति करने लगे कि मैं ऐसे महापाप से बचजाऊं तथाच तुरन्त सदाशिवजी प्रकटे और मुझे ऐसे महापापसे बचाया जिसका परिणाम नरक है मैं बुद्धिके भ्रष्ट होने से अतिलज्जित होय शिवजीकी निन्दा करनेलगा और मेरा मन बहुत पापी होगया रीति है कि जो कोई मनुष्य दूसरे की बुराई चाहता है तो वह आपही कष्ट पाता है हे नारद ! मुझे केवल सदाशिव ने ऐसे पापसे बचालिया क्योंकि वे अपने सेवकोंकी इसी तरह रक्षा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करते हैं इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियो ! यह सुनकर नारदजी विचारपूर्वक कहनेलगे कि हे पिता ! आप सम्पूर्ण सृष्टि देवता और सबके उपजानेवाले हैं मुझे बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई है इससे आप फिर इस कथाको विस्तारसे वर्णन करें जिससे मेरे मनका कष्ट दूर हो क्योंकि आप सब सृष्टि के महाराज हैं और सर्वसृष्टि आपकी कृपासे शरीर धारण करती है और तीनोंलोकके आप सहायक हैं फिर क्यों आपका मन ऐसा अधीर हुआ जब आपकी सेवासे लोग ब्रह्मज्ञानी होते हैं तो आपसे ऐसे कर्मका प्रकट होना आश्चर्य की बात है यह नारदका प्रश्न सुन ब्रह्माजी बोले कि हम अच्छी तरह से समझाकर मुख्य वृत्तान्त कहते हैं कि लोकमें शिवजीकी माया धन्य है वह सब को कठपुतलीकी तरह नचाती है तुमको जिस तरह उस मायाने चरित्र दिखलाया वह प्रकट है क्या तुम वह भूलगये जो मुझसे मूर्ख जीवों की सदृश पूछते हो अच्छा जिस तरह हमको शिवमायाने नचाया हम वर्णन करते हैं वही सदाशिव हमारी सहायता करें जब हमने मुखसे एक लड़की उत्पन्न की कि सृष्टि बढ़े उसको बनाकर हमारे मनमें कुछ अहंकार उपजा जो अहंकार हर गर्ववान् को दुःख देताहै उस समय शिवने यह चरित्र ठाना अर्थात् हमारे मुखसे एक अतिसुन्दर स्त्री जिसके देखने से सब दुःख नष्ट होजावें उपजी और उसका नाम संध्या रक्खा गया ऐसी सुन्दरी इस मनुष्यलोकमें तो क्या देवलोकमें भी न थी उसके सम्पूर्ण अङ्ग उचित दोषरहित मोहनेवाले जिसका दृष्टान्त हमको नहीं मिलता शीशपर श्याम सुगन्धितकेश मानों सजलघन लट मानों कालीनागिनसी लटकती थी नासिका कीरके सदृश नेत्र ललाई लिये दोनों ओष्ठ कुन्दरूसे अतिसुन्दरी मयनहरणी रूपराशि मनको चुराय लेती थी दांत अनारके सदृश ठोढ़ी अतिसुन्दर गर्दनमें तीन रेखा दोनों हस्तकमलोंमें नाना प्रकारका भूषण पहिने और इसी प्रकार हर उंगली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में अँगूठी आदि थीं गलेमें रत्नोंकी दुलड़ी दोनों उरोज उठे हुये मानों कन्दुक उदरमें त्रिवली नाभि गम्भीर कटि क्षीण नितम्ब बहुतऊंचे जङ्घा केलेके स्तम्भकी तरह गोल सुडौल पांवमें घुंघुरू आदि भूषण अलंकृत पांवके नख एँड़ी नवीनचन्द्रसे झलकते ऐसी कामिनी गजगामिनी कटिकेहरी चम्पकवर्णीका रूप अनूप देखकर मैं कामवासनासे उठ खड़ाहुआ उस समय दक्ष आदि पुत्रोंने मुझे निषेध किया और वह सब आपभी उसकी ओर देख इकबारगी कामियों के सदृश बुद्धि से हीन होगये यह विचार मैं अपने मनमें कर रहाथा कि अकस्मात् एक मनुष्य शुद्धस्वरूप प्रकट हुआ इस तरहपर कि शिरपर मुकुट मुख ऐसा कि जिसे देख करोड़ों चन्द्रमा लज्जित होजावें कुण्डल कानमें पहने गलेमें मोतियोंका हार रत्नों समेत पीतवस्त्र पहने मगरके ऊपर चढ़े पांचों प्रकारके शस्त्र अर्थात् हर्षण १ रोचन २ शोषण ३ मोहन ४ मारण ५ धारण किये आखड़ा हुआ और बोला कि हे हमारे पिता ब्रह्मा! हमारा नाम और काम बता दीजिये कि हम अपने अच्छे कार्यों के साथ जहां आप कहैं वहां स्थित रहैं मेरे ऊपर कृपा करके मेरी इच्छा पूर्ण करो ऐसी वार्त्ता सुनकर हम आश्चर्य में हुये और अतिविचार के उपरान्त हमने उत्तर दिया कि तेरे प्रकट होते सबके मन और गात कांप उठे इसलिये तुम्हारा नाम मन्मथ रक्खा गया इसके सिवाय मनसिज, मयन, काम, मदन आदि बहुत नाम तुम्हारे प्रकट होंगे और अपने पांचों बाणों और अपने सौन्दर्यसे सबको अपने आधीन किया करो तुम्हारे आधीन सब सृष्टि रहा करेगी अब तुमभी पुत्र उपजावो और विष्णु और रुद्रभी तुम्हारे आधीन रहेंगे औरकी क्या कथा और अलग २ सबके हृदयमें स्थित रहो इस तरह से मैंने अपने पुत्रका अधिकार बढ़ाया और प्रसन्नतासे अपना कार्य हुआ देखकर मनमें बड़ा अहंकार उपजा और सिंहासनपर बैठे और अपने पुत्रोंको देख सब दुःख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूर किया और सबलोगोंने हमारी इच्छा समझकर यह नाम मन्मथ बहुत उचित समझा और कहा कि कामदेवकी पदवी सबसे बड़ी और ऊंची है और उसको तीनों लोकों के आधीन करनेवाला जाना इस चरित्रके उपरान्त हम सब लोग प्रसन्न होगये और कामदेवने अपने उस कमानको सीधा किया जिससे तीनों लोककी बुद्धि नष्ट होजाती है ऐसे चापको कानतक चढ़ाये हुये काम खड़ा हुआ और मनमें शोचा कि जो वरदान मुझे ब्रह्माने दिया है उसकी अब परीक्षा करूं और मेरी लड़की सन्ध्या को मेरे निकट खड़े देख बाणको चापमें चढ़ाया और मेरे शरीरमें मोहनरूप बाण मार दिया फिर मेरे पुत्रोंको भी मार मूर्च्छित करदिया अर्थात् वह सब कामदेवके वश हुये और जबकि उसने देखा कि सन्ध्या प्रसन्न खड़ी है और उस पर कुछ प्रभाव नहीं हुआ तो उसने सन्ध्याके हृदय में भी ऐसा बाण मारा कि जिससे वहभी कामवश हुई और कामके वेगसे आधीन होकर बांकी तिरछी तीक्ष्ण दृष्टिसे देखने लगी उस समय उसके शरीरमें उच्चासभाव और नव हाव और चौंसठ कला आदि प्रकट हुई पहिले हम सब अधिक बुद्धिभ्रष्ट करके मोहित हुये और उसकी अभिलाषामें हमने चाहा कि उसको पकड़ लें और मरीचि और दक्ष आदिभी मेरी भांति स्थित हुये और आश्चर्यपूर्वक सन्ध्याको देखने लगे और कुकर्मका विचार न करके अधीर होगये हे नारद! हम सदाशिवजीकी महिमा कहांतक कहैं ॥

दूसरा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इसप्रकार हमको मोहित देख धर्मसुता सत्य बहुत घबड़ाये और चिन्ता करनेलगे और दोनों हाथ जोड़ शिवजीके निकट गये और प्रणामकर स्तुति करनेके उपरान्त मनमें ध्यान लगाये बैठेरहे शिवजी ऐसा धर्मके विरुद्ध व्यवहार विचार कर उपस्थान पर प्रकट हुये शिवको देख हम और हमारे पुत्र सब लज्जित होगये और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कामदेवभी अतिलज्जित हुआ तब शिवने मेरीओर क्रोधदृष्टिसे देख कहा कि हे ब्रह्मन् ! तुम क्यों ऐसे कुकर्मी हुये और अच्छी बुद्धिको भूल तुमने आप अपनी लड़कीसे भोग करना चाहा यह तुमको उचित नहीं इसमें बड़ा पापहै जो मनुष्य अपनी पुत्री या पुत्रकी स्त्री या माता या भाईकी स्त्री या भगिनीसे मैथुन करताहै वह घोरनरकमें पड़ताहै यह सब स्त्रियां बराबरहैं इस बातको वेद और धर्मशास्त्र बखानते हैं तुमने वेदपाठी होकर सब कुछ भुलादिया और लज्जाको छोड़कर धर्मको नष्ट करदिया हमने संसारमें बहुतसे कामी देखे पर तीनोंलोकमें ऐसा पाप करनेवाला एकभी नहीं है तुमको धिक्कार है और तुम्हारी बुद्धि और वेद पढ़नेपर धिक्कार है ऐसा पाप न किसीने किया है न कोई करेगा और न इस बातके करनेका कोई उद्योग करेगा इतना कहकर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इसप्रकार शिवजीने मेरी बहुत बुराईकी और मेरे पुत्रोंकी ओर अतिभयानक स्वरूपसे देखा और कहा कि हे मरीचि आदि ! तुम क्यों ऐसे अधीर और कामी होगये तुम्हारे धर्मपर धिक्कार है जिसको कामने अपने आधीन करलिया कुछभी धर्म सुकर्मका विचार न किया तुम ब्रह्माके लड़के होकर वेद पढ़ेभी हो और ऐसे अधीर हुये धिक्कार है धिक्कार है तुम ऐसे कुमार्ग चलनेवालों पर सहस्रों धिक्कारहै और तुमने अपना उत्तम धर्म छोड़ दिया इससे क्या २ कुकर्म नहीं हुये यह बातें शिवकी सुन हम अति लज्जित हुये इसी प्रकार हमारे पुत्रभी लज्जासे दब गये और कुछ बात किसीसे न बनपड़ी उस समय सबके मनमें अतिलज्जा और खेद उपजा हमने इन्द्रियों और वीर्यको शिरपर करके सन्ध्याका त्याग किया और शिवके भयसे हमारा मन ऐसे पापकर्म से बचगया और मेरे शरीर से पसीना टपकपड़ा पहिले उससे चौंसठ योगिनी उपजीं जो संसार छोड़हुये हैं और तपस्याके सिवाय दूसरा काम नहीं करतीं फिर छियासी पुत्र उपजे और दक्ष

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रजापतिका पसीना पृथ्वीमें गिरा उससे स्त्री उपजी और अत्रि, मरीचि, पुलह, भृगु और तुम इन सबके शरीरोंसे प्रस्वेद न निकला और जो पसीना वशिष्ठ, विश्रवा, अङ्गिरस, क्रतुसे निकलकर धरतीपर पड़ा उससे सर्वाङ्गसहित पितर उपजे जो सबकी प्रतिष्ठाके योग्य और प्रसन्नता देनेवाले हैं वे तुरन्त वेद और धर्मशास्त्र के ज्ञानी होगये बरन उनको सम्पूर्ण विद्याओंमें पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ वे अतिधर्मिष्ठ और धर्म बतानेवाले और सबकाम करनेकी शक्ति रखते थे अब हम उनका वर्णन करते हैं कि क्रतुसे सोमि वशिष्ठसे काली बुध पुलस्त्यसे अजय अङ्गिरससे हशमन्त हुये इसप्रकार चारप्रकारके पितरहैं जो छःप्रकारके प्रसिद्ध हैं सो सन्ध्या हमारी आज्ञासे पितरोंसे गर्भवती हुई उस समय शिव धर्म बचाकर अन्तर्द्धान होगये शिवजीके चलेजाने के उपरान्त मैंने काम की ओर देखा और अतिक्रोधसे शाप देना चाहा मेरी इच्छाको मेरे सब पुत्र जानकर समझाने लगे पर मैंने मायावश उनके समझानेको न माना और मेरा क्रोध ज्वालाकी तरह ऊंचा हुआ और ऐसे क्रोधके वश होय मन्मथसे कहने लगा कि हे मूर्खदुष्ट! तूने यह कैसा दुःखदायक कर्म किया कि मुझसे ऐसा पाप कराना चाहा पिताकी क्या अच्छी सेवा तूने की जैसा तूने किया तू वैसा फल पावेगा और जो कि तेरे कारण शिवने मेरी अतिनिन्दाकी और मुझे धिक्कार दिये इसलिये अब तुझे शाप देते हैं कि तुम जलकर भस्म होजावो तुमको शिवजीकी नेत्रज्वाला जला दे कि हमारा दुःख तेरी यह दशा देख दूर होजावे ऐसे कुपुत्रसे निःसन्तान रहना उत्तम है यह शाप सुन कामदेव थरथराने लगा और दोनों हाथ जोड़कर अहंकार छोड़ मेरी शरण आया और अतिलज्जित होय यह वचन मुखपर लाया कि हे संसार उपजानेवाले और दुःख दूर करनेवाले और न्याय अन्यायके स्थापन करने वाले पिता! हमने कोई आपका अपराध नहीं किया आपने मुझे क्यों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शाप दिया और आपकी आज्ञाके विरुद्ध मुझसे कोई काम नहीं हुआ केवल मैंने आपकी आज्ञाकी परीक्षा की थी और जो कुछ आपने मेरे भाग्यसे मेरे लिये आज्ञा दी वह तो अवश्यही होगा पर कृपा करके ऐसा कीजिये जिसमें मैं फिर उत्पन्न होजाऊं यह शाप मेरा दूर कीजिये और मेरा दुःख मिटाइये बहुधा ऐसा होताहै कि कुपुत्र पिताको दुःख देताहै पर तो भी पिता सदा कृपा किया करताहै इतना कह काम हाथ पांव जोड़ मेरी ओर देख गर्दन नीचे किये रहा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! कामदेवकी यह विनती सुन हम अतिप्रसन्न हुये और कहा कि जो कुछ हमने तेरेलिये कहा है वह तो अवश्य होगा पर तुम्हारे जलनेके पीछे कुछ दिनोंके उपरान्त शिवजी अपना विवाह करेंगे तब फिर तुमको यही तनु मिलेगा और शिव तुम्हारे सहायक रहेंगे यह कहकर हम चुपहुये और काम प्रसन्न हुआ और सुर मुनि आदि भी सब प्रसन्न हुये फिर हमारी सर्वसभामें नवीन आनन्द छा गया और चिन्ता दूर हुई॥

तीसरा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हमने शिवजी की मायाके आधीन होकर शिवके साथ गर्वपूर्वक वैर किया और कामपर कृपाकर अपना मनोरथ दक्ष प्रजापति से कहा कि तुम्हारी लड़की जिसका नाम स्वेदका है उसे कामसे विवाह दो इस बातसे हम अपना मनोरथ पूरा करेंगे यह सुन दक्षने हमारी आज्ञा अपने शीशपर रख कामसे कहा कि हमारी पुत्री जिसका नाम रति है उसको अङ्गीकार करो और प्रसन्नता से तीनों लोक पर विजयी रहो कामने स्वीकार किया और बड़ी धूम-धामसे विवाह हुआ ऐसी सिद्धता देखकर हम अति प्रसन्न हुये और दक्षको बुलाय अतिहर्षसे अपनी बाईं ओर बिठालिया और जो वचन शिवने पितावत् हमसे कहे थे उनको स्मरणकर और शिवकी मायासे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मोहित होय उनके साथ वैरभाव करके यह विचार किया कि शिव योगीरूपसे तीनों लोकको जीते हुये स्त्रीरहित और भोग विलास छोड़े प्रसन्न रहा करते हैं और संसारकी रीतिसे हटकर योगियोंकी तरह काल-क्षेप करते हैं और कामदेवको तृणवत् जानते हैं और दशों इन्द्रियोंपर विजय पाकर स्वाधीनहैं और मुझको अपकर्म करनेके समय धिक्कार और कटुकवचन कहकर कुछभी संकोच मनमें न लाये हे दक्ष! ऐसा उपाय करो जिसमें शिवजी संसारी रीतिके अनुसार विवाह करें जब यह बात होगी तो हम निश्चिन्त होजावेंगे और हमारा मनोरथ पूर्ण होगा और तुमको भी शिवने धिक्कार दियाहै और आप सबसे बड़े बनकर अपने अहंकारसे किसीको बड़ा न समझा जो हमको विष्णु ऐसा कहते और हमको धिक्कार देते तो हमको कुछ बुरा न मालूम होता शिव हमारे पुत्र होकर हमको धिक्कार देने लगे और बहुतसे कटु-वचन मुखपर लाये और तुमको भी भाईका विचार न करके जो चाहा सो कहा तो जबतक शिव स्त्रीसे विवाह नहीं करते हमारा शोक दूर न होगा ऐसी संसारमें कौन स्त्रीहै जिसके ऊपर शिव मोहित होकर विवाह करें और शिवकी चातुरताको नष्ट करदे पर जब काम शिवको वश नहीं करसक्ता तो कौन देवता उनको आधीन करसक्ताहै वह तो भयसे उनकी सेवा किया करते हैं केवल एक उपायहै अर्थात् जो काम-देव कुछ परिश्रम करे तो सब काम बनजावें इतना कह हँसते २ कामके पास गये और उसका सुन्दर स्वरूप देखकर निश्चय किया कि प्रायः हमारा कार्य कामदेवसे सिद्ध होगा कामने आदरपूर्वक हमको बिठा लिया उस समय हमारी श्वाससे एक सुन्दर पुरुष उपजा जिसका नाम हमने वसन्त रक्खा उस समय वसन्तके उपजनेसे अतिआनन्द प्रकट हुआ कामदेवकी वृद्धि हुई तीनों प्रकारकी वायु चलनेलगी और पक्षी मधुरवाणीसे बोलनेलगे सर्वपुष्प एकही समय खिलगये कोकिल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भौंरा पांचोंस्वर अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, निषाद अलापने लगे और सारस हंस नदियों के किनारे फिरने लगे भौंरेने हर फूल पर भ्रमणकर अपनी गुञ्जार की और कोकिला भी अतिआनन्द से बोलउठी ऐसी कामकी सामा देख हमने कामदेवसे कहा कि अपना प्रताप दिखावो और शिवको अपने वश करो तब तुम्हारी बड़ाई तीनों भुवनमें प्रसिद्ध होगी और शिवको वश करके लोकमें बड़ी कीर्ति पावोगे तुमको लोग विश्वकेतु और पृथुनामसे प्रसिद्ध करेंगे सत्पुत्र माता पिताकी प्रसन्नता सर्वोपरि जानते हैं मेरे इस वचनको सुन कामदेवने अपनी सब सेना तत्पर की और मुझे प्रणामकर जीवसे निराश हो शिवके पास चला ॥

चौथा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उस समय कामदेवने कछु ऐसी सामा रची कि कामी तो विवश हो अधीर होगये और ऐसा हावभाव कामने किया कि सबलोग अपने धर्मको भूलगये और उस वनमें सम्पूर्ण स्त्री पुरुष मोहित होगये बरन शिवके गणभी बचे न रहे यह कामदेवका कार्य शिवने जाना और अपनी इन्द्रियोंको जीते हुये ध्यानमें बैठेरहे कामकी कुछ न चलसकी और काम दुःख और चिन्तामें डूबा हुआ लौट आया और हमारी स्तुतिके उपरान्त कायरके सदृश पृथ्वीपर गिरपड़ा और लज्जित हो कहा कि मैंने अपनी सेनासे मुनि और देवता आदि को तो वश करलिया और जितने जीवधारी थे वह सब मोहित होगये पर शिवको कुछभी मोह न हुआ मैं बहुत डरताहूं कि वे क्रोध न करें उनका प्रज्वलित अग्निसमान रूप देखकर बड़ा भयवान् होताहूं मैं सच कहताहूं कि मैं हार गया शिवके मनमें कुछ प्रभाव न होगा मैं शिवके वश करनेका कुछ बल नहीं रखता क्योंकि मैंने अच्छी तरह परीक्षा करली है यह सुन मुझे अतिचिन्ता हुई और मेरे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुखपर उदासीनता छागई और मैंने शोकमें बैठकर जो बहुतसे श्वास छोड़े उनसे बहुत प्रकारके गण उत्पन्न हुये जिनके हाथोंमें नानाप्रकार के शस्त्र थे कई तो सिंहके सदृश और कइयोंके मुँह हाथीसे कई ऋक्ष कासा मुख धारण किये और घोड़े आदि केसे मुख लगाये थे और कई शेरकासा शरीर रखते थे कोई अतिरुष्ट पुष्ट कोई अतिक्षीण मलिन कोई मध्य वर्णका कोई श्वेत कोई पीत कोई हरित आदि वर्ण का था जिनका स्वरूप देखते हुये भय होता था वे बड़ा शब्द करते गाते कई नाचते और मार २ ऐसा शब्द कहते थे जिनका शब्द चहुँ ओर फैल गया वे बहुत उपद्रव करते उनकी संख्या हम वर्णन नहीं करसक्ते ऐसे समूहको कामने देखा और मुझसे प्रसन्न हो कहा कि ये कौनहैं और इनका क्या नामहै हमने कहा इनका शब्द मार २ है इसलिये इनका नाम मार होगा यह तुम्हारे साथी होंगे और सब तपस्वियों का तप बिगाड़ेंगे यह अच्छे बुद्धिमानोंकी बुद्धि नष्ट करदिया करेंगे इनसे बढ़कर तीनों लोक में दुःखदायी और कोई न होगा हे काम ! यह सेना लेकर इसबेर फिर जावो और वह उपाय करो कि शिव स्त्री अङ्गीकार करें तब कामदेव बोला कि मेरी कुछ नहीं चली और न अब आशाहै पर यह बात हम आपसे कहते हैं कि शिवका ध्यान तो भटकेगा मेरे प्राण जातेहैं वह जावेंगे इतना कह काम नई सेनासमेत वहांसे चला और वहां पहुँचा जहां शिवजी ध्यानावस्थित थे और शिवजीको शिरके बल प्रणाम करताहुआ उनकी प्रसन्नताके लिये असंख्यनामोंसे स्तुति करनेलगा और कहा कि मैं अपने पिता की आज्ञासे यह काम करने आयाहूं सो आप मुझपर कृपा रक्खेंगे इतना कह वसन्तको चारोंओर फैला दिया उस समय किसी के मनमें धीर न रहा और काम वसन्त, मन्दपवन और मारगणोंने अपना २ पूरा काम किया पर शिवका ध्यान न भटका और कामको अहंकार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से रहित देख न जलाया सो काम लज्जित होकर फिर लौट आया और कहा कि हम सब कुछ करके हारगये हमारी कुछ नहीं चलती यदि आपकी इच्छाहै कि शिव विवाह करें तो इसके सिवाय कोई अन्य उपाय कीजिये यह कह काम तो अपने घर चलागया और हम निराश होकर चिन्तित हुये और बहुत समय तक इसी शोकमें मग्न रहे पर कोई युक्ति न सूझी उसमें हमने विष्णुजीका ध्यान किया और उनकी बहुत स्तुति की ॥

पांचवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब मैंने यह कहा कि हे विष्णो, भगवन्! मुझे अपना किंकर समझ कृपा करके मेरा दुःख दूर कीजिये हे भक्तवत्सल! आपतो अपने सेवकोंके लिये अवतार लेते हैं इस समय आप प्रकट हों और मेरे दुःखको दूर करें यह सुन विष्णुजी प्रकट हुये हमने बहुत स्तुति करके प्रणाम किया तो विष्णुजी हँसकर कहने लगे कि क्यों तुमने हमारी स्तुति पढ़ी है तुमको कौन कष्ट है हमने पिछला सम्पूर्ण वृत्तान्त कामदेवका जाना और वहांसे निराश होकर लौटनेका सब कह सुनाया विष्णुजीने कहा कि तुम क्यों शिव को स्त्रीसहित देखा चाहते हो और उनका एकान्त रहना नहीं चाहते तुम्हारी इच्छाके सुननेके उपरान्त हम उपाय करेंगे हमने जिस तरह कि अपनी पुत्री सन्ध्याके साथ मैथुन करना चाहा था और सर्व वृत्तान्त कह सुनाया और यह भी विनय की कि जब तक हम शिवको स्त्री सहित न देखेंगे तबतक वह धिक्कार जो मुझे शिवजीने दियाहै न भूलेंगे यह सुन विष्णुजी बोले कि हे ब्रह्मन्! यह मूर्खता जाने दो तुम शिवको अपना पुत्र जानकर अपनी बुद्धिके विरुद्ध बातें करते हो तुमने वेदका पढ़ना भुलादिया तुम बुद्धि छोड़ शिवके साथ वैर करते हो मैं तुमसे सत्य कहताहूं कि शिव परब्रह्म सबके स्वामी और हम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम सब उनके सेवक हैं वे आदि अन्त मध्यसे रहित और सब प्रकट गुप्तके जाननेवाले हैं और स्वाधीन और भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले हैं यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि शिव स्त्री अङ्गीकार करें तो तुमको उचित है कि उनकी शरण में जावो और कठिन तपसे उनको प्रसन्न कर और उमाको भी स्मरण करो और दक्षसे भी उसी प्रकार का तप करावो तो दक्षप्रजापतिकी पुत्री शिवसे ब्याही जावेगी और वह कृपा कर सब दुःख निवृत्त करेंगे इस तरह तुम्हारा कार्य पूर्ण होगा इतना विष्णुजी कह और शिवके चरणोंका ध्यानधर अपने लोकको चलेगये॥

छठा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! मैंने जो वैर शिवसे उनकी मायासे मोहित होकर किया था वह छोड़ दिया और दक्षको बुलाया और जिस तरह विष्णु भगवान्ने मुझसे कहा था सब कहा और फिर मैंने कहा कि अब तुम एक लड़की उपजावो जो तुम्हारी पुत्री शिवरानी होजावे तो हम तुम संसारमें धन्य होंगे अब तुम सदाशिव का तप करो और उनको ऐसा प्रसन्न करो कि तुमको उनके दर्शन प्राप्त हों और वरदानमें केवल यह मांगना कि आप हमारे पुत्र होकर अवतार लें और हमभी तप करके यही वरदान लेंगे वह आदिशक्तिमान् हैं और सगुण निर्गुण दोनों रूप हैं उनकी महिमा वेद कहकर पार नहीं पाते निश्चयहै कि सदाशिव तपकी फांसमें आकर दर्शन देंगे यद्यपि शिव श्रुतिगोचर नहीं और हमको भी जब शिवने उपजाया था तब हमारी और विष्णुजीकी बिनतीसे कहा था कि हमभी अवतार लेंगे जिसका नाम हर होगा वह तुम्हारे सब काम पूरे करेगा आदिशक्ति जिसका अंश लक्ष्मी है उसकी एक कलासे हमारी शक्ति उमाके स्वरूप से अवतार लेकर हरकी पत्नी होगी जो हमारे स्वरूपकी है उसी आदि-शक्तिसे संसारभर उपजताहै और वह संसारभरकी माताहै वह तुम्हारे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घरमें सतीनामसे उपजेगी सो हे दक्ष ! हम और विष्णुजीको तुम स्त्री सहित देखते हो पर हरने अबतक स्त्रीको अङ्गीकार न किया और न अबतक सतीका अवतार हुआ सो अब मन लगाकर ऐसा उपाय करो कि सती अवतार लें ऐसी बातें कहकर हमने दक्षको बिदा किया और हमभी तपके लिये मन्दर पर्वत पर गये और वेदके अनुसार सम्पूर्ण इन्द्रियोंको वशकर ध्यानमें लगे श्रीजगदम्बा में मन लगाया और श्वास शीशपर चढ़ाया और मनके वेगको जीतकर स्तुति निर्माण करके सुनाई जगदम्बा मेरी स्तुति सुन अतिप्रसन्न हुई और अपना सेवक जान कृपाकर प्रकट हुई ॥

सातवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! कौन ऐसा सुर मुनिहै जो उस महासुन्दर रूप छविअनूपको देखकर मनको वश करसके उसके अवलोकनसे अमरगणभी मोहित होजाते हैं अपने मुख्य चिह्न और वस्त्राभूषणसे अलंकृत आठ भुजा धारण किये शिरसे पांवतक सुन्दरता आभरणसे सजी हुई जिसको देखकर कोटि कामदेव लज्जित हों सजल घनकी श्यामता शरीरमें प्रकट किये सिंहपर चढ़े ऐसे रूपको देख शिर झुका स्तुति करनेलगा फिर मौन होगया भवानी बोली वर मांगो, वर मांगो, मैंने पिछली बात याद करके देवी से मांगा कि रुद्रनाम शिवने व्यर्थ मुझे कटु वचन कहे और धिक्कारा सो आप अवतार लेकर उनको वश में करें कि वह भी गृहस्थ होजावें और यही वरदान आप दक्ष प्रजापति को जो आपका तप कररहा है देवें कि मेरा मनोरथ पूर्ण हो यही मैं मांगताहूं और तीनोंलोकमें कौनहै जो सिवाय आपके शिवको मोहित करसके भवानी बोली हे ब्रह्मन् ! तुम धोखा देकर हम से क्या मांगते हो इसमें तुम्हारा क्या लाभ है जो मैं तुमको यह वरदान नहीं देती तो वेदका मार्ग नष्ट होता है फिर देवीने योगधारणासे उस परमेश्वर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का ध्यान किया जो अपने भक्तोंको प्रसन्नता देता है और अन्तःकरण का सब हाल जानता है सो वहांसे यह आज्ञा हुई कि हां जो वरदान ब्रह्मा मांगते हैं उनको वही दो और दूसरा अवतार लो हम तुमको बड़ी प्रीतिसे अङ्गीकार करेंगे और ऐसी दशामें भी ब्रह्माको ऐसा मोहित करेंगे जिससे उनका गर्व जाताही रहेगा यह आज्ञा पा देवीने अति आनन्द हो मुझसे कहा कि हर योगी हैं मोहने लायक़ नहीं पर तुम्हारी विनतीके अनुसार युक्तिसे तुम्हारा मनोरथ पूर्ण किया जावेगा और जोकि हरको स्त्री के अङ्गीकार किये विना न तो परलोकका फल मिलेगा और न संसारमें आनन्द इस कारण हम प्रकट होंगी अर्थात् हम दक्ष प्रजापतिकी पुत्री होंगी और शिव हमपर मोहित होकर हमसे विवाह करलेंगे यह कहते २ वह स्वरूप अन्तर्द्धान होगया और हम को भी प्रसन्नता हुई और हमने फिर आकर प्रसन्नतापूर्वक यह हाल अपने पुत्रोंसे कहा ॥

आठवां अध्याय ॥

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियो ! ऐसी वार्त्ता ब्रह्माकी सुन नारदने अतिप्रसन्नतासे विनय की कि हे प्रजापति ! जब आपको सदाशिवने वरदान दिया तो फिर क्या हुआ ब्रह्मा बोले हे पुत्र ! यद्यपि तुम सब जानते हो पर जोकि भले लोगोंकी रीति होती है कि वे अपनेको मूर्ख बनाकर औरोंसे पूछा करते हैं तो यह प्रश्न तुम्हारा इस कारण है सो प्रकट हो कि देवीने वरदान देदिया और दक्ष प्रजापतिने हमारी आज्ञाके अनुकूल घोर तप किया कि गरमी में जलती हुई अग्नि तापता शीतकालमें कुटीसे बाहर रहा और अधिक शीत में पानीमें बैठ शिवरानीका तप करता रहा और तीनों प्रकारका प्राणायाम करके शिवरानीके चरणारविन्दों में मनको स्थिर किया यह दक्ष का तप श्रीजगदम्बाने स्वीकार किया और अपने उसी शुद्ध स्वच्छ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वरूपसे प्रकट होकर दर्शन दिये दक्षने प्रणाम कर स्तुति की और कहा कि मैं आपकी शरण आया हूं मुझे सेवकजान कृतार्थ कीजिये ऐसी उत्तम स्तुति सुन जगदम्बाने कहा कि तुमको जो इच्छा हो वह मांगो वह कौन वस्तु है जिसको हम नहीं देसकीं दक्ष बोले हे महामाया ! आप हमारे घर अवतार लीजिये और हमारी पुत्री होकर हर के मनको मोहित कीजिये अर्थात् जिसतरहसे होसके आप शिवकी स्त्री होवें इसमें केवल मेराही अर्थ नहीं है बरन तीनों लोकका उपकार होगा सिवाय इसके जो मैंने मोक्षको छोड़कर यह वरदान मांगा तो यह बात अवश्य हो जगदम्बा बोलीं अच्छा यही होगा हम तुम्हारी स्त्रीके उदर से उत्पन्न होकर शिवकी स्त्री होंगी पर तुम कुछ अहंकार न करना बरन तुम्हारा गर्व मिटाया जावेगा इतना कह श्रीजगदम्बा अपने लोकको गईं और दक्ष अपने लोकमें बड़ा प्रसन्न होकर आया कि जगदम्बा मेरे घर अवतार लेंगी और स्त्री विना दशसहस्र मानसीसृष्टि उपजाई और वे सब तुम्हारी प्रेरणासे घर छोड़ बाहर चले गये और फिर लौटकर न आये और परमपदको पहुँचे यह सुन दक्षने फिर दशसहस्र उत्पन्न किये सो वहभी तुम्हारे उपदेशके अनुसार जहां उनके भाई गये थे वहीं चले गये यह बात सुनकर दक्षने क्रोधित हो तुमको ऐसा शाप दिया कि हे नारद ! तुम बड़े अधम हो कि तुमने हमारे सब पुत्र विरुद्ध करदिये इस लिये तुम एक स्थानपर न रहकर सदा भ्रमण किया करोगे यही तुम्हारे कर्मका फल है ऐसा शाप तुम को देकर कुछ धैर्यवान् हुआ और मनमें ठाना कि अब मैथुनी सृष्टि उपजानी चाहिये और विवाह की इच्छाकर वीरनी जो वीरप्रजापति की पुत्री थी उससे विवाह किया और बड़ी धूम विवाह में हुई और जगदम्बाका ध्यान धरा जगदम्बाने समझा कि अब समय है कि हम दक्षके घर उत्पन्न हों और दक्षका मनोरथ पूर्ण करें तथा च दक्षके मनमें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रवेश करगई उस समय दक्ष प्रजापति अतिप्रसन्न हुये और भगवतीके तेजप्रकाशसे दक्षका शरीर चमकने लगा और दक्षने अच्छा समय पा अपनी स्त्री में वह तेज स्थिर करदिया और जगदम्बा वीरनी के मन में स्थित हुई उसका भी तेज सूर्यवत् चमकने लगा और वीरनीने गर्भवती स्त्रियोंका रूप बनाकर अपना गर्भ सबपर प्रकट किया॥

नवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब दक्षकी स्त्री गर्भवती हुई उस समय बड़ी धूमधामसे उत्सव कियागया और दक्षने सब रीतें पूजीं और हम और विष्णुने भी उस सभामें संयुक्त होकर वीरनीकी सेवा और स्तुति करनेके उपरान्त दक्षकी प्रशंसा की फिर सभा उठगई और हम सब अपने २ लोकको गये इस प्रकार नव महीने बीतें और दशवेंका आरम्भ हुआ तो सर्व ओर आनन्द के सामां अपने आप प्रकट हुये साधुओंके मनमें प्रसन्नता उपजी और आकाशसे बाजे बजने लगे उस उत्तम समयमें श्रीमहारानी जगदम्बाने अवतार लिया उस समय बड़ा उत्सव और आनन्द हुआ तीनों लोक प्रसन्नतासे भरपूर हुये तीनों भांति की पवन चलनेलगी उस समय कोई मनुष्य खेदवान् दृष्टिगोचर न हुआ और विष्णु और हम और सम्पूर्ण ऋषि मुनि इकट्ठे होकर दक्ष प्रजापति के घर गये और अतिप्रसन्नतासे बाजे बजने लगे पातुर नृत्य करने लगीं गन्धर्व गाये आकाशसे पुष्पवृष्टि हुई और सब लोग स्तुति करनेलगे कि हे शिवा-शिवरानी! तुम सम्पूर्ण संसार की राजरानी हो तुम्हारी महिमा वेद भी नहीं जानता तुम आदिशक्ति हो तुम सबकी माता और प्रसन्नता देनेवाली हो अब जिस कामके लिये तुमने अवतार धारण कियाहै वह कीजिये इस प्रकार विनती कर हम सब अपने २ स्थान को चलेगये और वीरनीने जब अपनी लड़की का मुख देखा तो उसको हृदयके ज्ञानसे विदित हुआ कि आदिशक्ति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है और हमारे यहां अवतार लिया और उसका अद्वितीय रूप देखकर पहिंचाना जो अष्टभुजी महाप्रकाशमान तेजस्वरूप बादलके सदृश श्यामवर्ण टखनी और पगतली रक्तनख झलकते हुये इसीप्रकार सर्व अङ्ग अतिसुडौल महासुन्दरी सम्पूर्ण प्रकार के भूषण और वस्त्रों से अलंकृत कानोंमें कुण्डल हाथोंमें कङ्कण गलेमें हार माथेपर शिंगरफ़ी बिन्दीसे चन्द्रमुख को सजाये हुये वीरनी को दर्शन दिया॥

दशवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! वीरनी ऐसा स्वरूप देख दोनों हाथ जोड़ेहुये स्तुति करने लगी और कहा कि मैंने जाना कि तुम आदि-शक्ति और सृष्टिकी जननी हो हमारे ऊपर कृपा करके हमारे घर अव-तार लिया सो हमपर अनुग्रह करो और यह स्वरूप अपना मेरे मन में स्थित करो और उस समय बाल्यस्वरूपसे अपना स्वरूप दिखावो मैं तुमको पहिंचान चुकी तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और तुमको क्या पहिंचानसक्ती हूं तुम्हारी वेदभी स्तुति करके अन्तको हारमान चुपहो रहते हैं उस समय दक्ष प्रजापतिने आकर बड़ी स्तुति की और कहा कि तुमने अपना वचन पूरा कर मेरे घर अवतार लिया मैं और मेरे भाई वेद सब जीवन्मुक्त होचुके आपकी महिमा अप्रमेयहै कि सुर, मुनि, नारद, शारदभी कहकर पार नहीं पाते और व्यास आदि जो बड़े पण्डित हैं उनमें भी इतनी वचनशक्ति नहीं कि कुछ कहसकें और सनकादिक भी आपकी महिमासे अज्ञान और मूर्ख हैं और शेष जिनके सहस्र जिह्वा हैं वहभी तुम्हारे पवित्र नाम कहते २ हार जाते हैं और ब्रह्मा विष्णु तो क्या जानें और वही आपकी महिमा आप की कृपासे एक मूर्ख मनुष्यभी जान सक्ता है यही बात वेद कहते हैं कि तुम केवल पूजा और तपके वश हो जैसा कि सुरथका तप साक्षी है जिसने अपने तपसे परमपद पाया और शुम्भ निशुम्भने भी कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्रोध और वैरसे आपमें चित्त लगाया तौ भी आपके चरणोंमें ध्यान लगाने से परमगति को पहुँचे इसी प्रकार दक्षने महामायाकी बहुत स्तुति करके अन्तमें यह विनती की कि यह रूप अपना हमारे मनमें बसाकर और और रूप जो समयके योग्य हो धारण कीजिये और वह चरित्र कीजिये जिसमें प्रसन्नता प्रकट हो इस प्रकारसे श्रीदेवीजी भी दक्ष और वीरनी अपने माता पिता की बातें सुन बोलीं कि हे दक्ष ! और वीरनी ! तुमने हमारा बड़ा तप किया और हमने वरदान देने के अनुसार तुम्हारे घर अवतार लिया तुमको उचितहै कि जिस प्रकार तुम मुझको शक्ति जानती हो उसी प्रकार का विश्वास रखना और गर्व न करना इतना कह कन्या का रूपधर संसारकी रीतिके अनुसार रोउठी यह रोना सुन कुलकी असंख्य स्त्रियां इकट्ठी हुईं और सब बा-दियां भी आईं और पुत्री को देख प्रसन्न हुईं उस दिन नगरभर प्रसन्न हुआ और चारों ओर से जय जय का शब्द ऊंचा हुआ और आनन्द के बाजे बजनेलगे और वीरनी और दक्षने वेद और कुलके अनुसार सब रीतें कीं और बहुत कुछ कोष दान दिये उस समय हम और विष्णु भी सुर मुनिको साथ लेकर वहां पहुँचे और दक्षकी विनतीके अनुसार हमने उस कन्याका नाम सती रक्खा इस आनन्द की तीनों लोकमें चर्चा हुई दक्ष प्रजापति ने पुरुषों का और वीरनीने स्त्रियों का अति आदर सन्मान किया इसके उपरान्त सब लोग अपने २ घरों को सिधारे और दक्ष स्त्रीसहित सती के प्रेममें ऐसे मग्न हुये कि सब काम भूल गये और सती चन्द्रमाकी कलाकी तरह दिन २ बढ़ने लगी सती हर दिन शिवपद गाया करती और सदाशिवका ध्यान करती सती के विचित्र खेल थे कि वह पार्थिवपूजन करती और माता पिता की प्रसन्नताको सर्वोपरि समझती यद्यपि शिवमें अहर्निश ध्यान रहता पर इस बातको प्रकट न करती इसी प्रकार खेल तमाशेमें लगी रहती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निदान खेलते खेलते कुछ बड़ी हुई तो मुखकी कान्ति दूनी हुई जिस को हम क्या वर्णन करसक्ते हैं कि उनके बराबर तीनों लोक में कोई सुन्दर नहीं उनके सर्व अङ्ग सुडौल वस्त्रों से अलंकृत जिनको देख कोटि कोटि काम लज्जित होजावें लक्ष्मी, सरस्वती, मोहनी भी उनकी बराबरी न करके अन्तको हार मान गईं यह दक्ष की कन्या का संक्षेप में वृत्तान्त वर्णन किया गया अब और कथा सुनिये ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! एक समय सतीने दक्ष के पास एक विचित्र चरित्र किया था उस समय हम और तुम दोनों वहां पहुँचे सती ने हमको और तुमको सोनेकी चौकी बैठनेको देकर दोनों की स्तुति की हमने और तुमने सती की ऐसी सेवा और नम्रता देखकर यह वरदान दिया कि जिसकी हम और विष्णु दोनों सेवा करते हैं जिसकी महिमा अप्रमेय है और जो दूसरी स्त्री न चाहे ऐसा मनुष्य तुम्हारा पति हो यह तो सतीसे कहा फिर दक्षसे बोले कि हे दक्ष ! तुम धन्य हो कि जिसके घरमें आदिशक्ति जगदम्बाने अवतार लिया अब तुमको उचित है कि कन्याका विवाह शिवसे कर दो मोहको दूर करो कि कन्यादान बड़ी बात है ऐसे दान करनेसे अन्तमें मुक्ति प्राप्त होती है इतना कह हम तुम और मुनि आदि अपने अपने घरों को चले गये और दक्ष प्रसन्न होकर कहने लगा कि अब सती युवा भई और घरसे बाहर पग नहीं रखती अब हमें उचित है कि जिस प्रकार शिव उनको स्वीकार करें वह उपाय करें इस प्रकारके विचारोंमें समय बहुत बीता और कोई बात दक्ष के मन में स्थित न हुई इस समय में सतीने विचारा कि मैं शिवका तप करके शिवकी शक्ति होजाऊं पर लज्जा से माता पिता की आज्ञा विना इस बात को नहीं करसक्ती थी अन्त को एक दिन उसने अपनी माता से यह मनोरथ प्रकट किया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और कहा कि जो आज्ञा हो तो वन में जाकर शिवजी का तप करूं क्योंकि वह तप विना मुझसे विवाह न करेंगे और न विवाह विना तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा उत्तम होकि तुम पितासे आज्ञा दिला दो यह सुन वीरनीने दक्षको बुला लिया और सती के तप का मनोरथ कह सुनाया दक्ष अतिप्रसन्न हुये और सतीजी अपनी माता पिताकी आज्ञा लेकर अपनी सहेलियों समेत हाटकेश्वन में पहुँचीं और वहां कठिन तप करने लगीं और तीनों ऋतुओंमें शीत और जलमें रहकर आश्विनसे व्रतका आरम्भ किया और पूरी शिवजीकी पूजा की और कार्त्तिक में प्रभातको स्नानकर शिवपूजन करके रात्रि दिन शिव के चरणों में ध्यान लगाये रहीं और अगहन में प्रभात को स्नानकर सदाशिवका शक्ति समेत पूजन किया और पौष के उजियाले पक्षमें जो नागमन्थका व्रत प्रसिद्धहै करके रात्रिको जागरण करके बड़ा उत्सव किया और माघ में स्नान कर शिवजी की पूजा की और भीगे हुये कपड़ों से नदी किनारे तप करती रहीं और रात्रि को सखियों समेत जागरणकर अतिप्रसन्न हुई और फाल्गुन मासकी चौदस को शिव-पूजा की और नाना प्रकारके पुष्प चढ़ाये और रात्रिको जागरणकर चारों पहर पूजा की और चैत्रमासमें शुक्लपक्षकी चतुर्दशीको किंशुक अर्थात् टेसूके फूल अर्पण किये और पुष्प मँगाकर उन्हींसे शिवपूजन किया और वैशाखसुदी तीजको शिवपूजा की और शिवके सामने नाना प्रकारके नैवेद्य समर्पण किये सिवाय इसके हर दिन यह नि-यम था कि प्रभातको तारे देख स्नानकर ध्यानमें प्रवृत्त होती जब शुभज्येष्ठका मास आया तो उस मासके अन्तमें व्रत रहकर सहस्रों भटकटैयाके फूलोंसे शिवका पूजन किया और आषाढ़ मास जो अति पवित्रहै मासभर व्रत रखकर नाना प्रकारके पुष्पोंसे शिवपूजन किया और श्रावण मासकी अष्टमी को वस्त्रादिक दान किये और भादोंके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृष्णपक्ष की काम तिथिमें अच्छे २ फूल फलोंसे अच्छी तरह शिव-पूजा की और चतुर्दशीको भी शिवपूजन यथाशक्ति किया इसी प्रकार सती का नन्दा व्रत पूर्ण हुआ और उसके पूर्ण होनेसे सती अतिप्रसन्न हुई और लोगोंको बहुत दान दिया और वेदके अनुसार उत्तम २ वस्तु संग्रहकर शिवपूजन यथोचित किया और ब्राह्मणोंको शिवका रूप जान उनको भी पूजा इसी प्रेममें मग्न होगई फिर योगधारणसे तप किया और श्वास चढ़ाकर जलमें बैठ रही उस समय हम और विष्णु आये और देखा कि सती सिद्धों और अमरगणोंकी तरह बैठी है और वहांके सम्पूर्ण जीवोंमें कुछ वैरभाव नहीं है यहांतक कि सिंह और गौ एक साथ रहते हैं और सांप मोरोंकी पीठों को अतिप्रीतिसे खुजला रहे हैं और परस्पर लिपट रहे हैं और घोड़ा और भैंसा परस्पर लीला कररहे हैं और चूहा और बिल्ली एकही जगह पर बैठे हैं इसी प्रकार सब जीवधारी शत्रुता छोड़ प्रीतिपूर्वक क्रीड़ा करते हैं ऐसी दशा देख हम और विष्णुजी सतीकी स्तुति करने लगे फिर कैलासपर्वत की ओर यह कहते हुये चले कि सती शिवजीको अङ्गीकार करें॥

बारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम, विष्णु, देवता, मुनि, नाग, सिद्ध सबने शिवजीके निकट जाकर देखा कि शिवशंकर शान्तस्वरूप वि-राजमान हैं तब हम स्तुति करने लगे और विनती की कि हे महाराज! जब हम को आपने उपजाया था तब प्रतिज्ञा की थी कि हम तुम्हारे उपकारके लिये अवतार धारण करेंगे और रुद्र हमारा नाम होगा सो ऐसाही हुआ कि आपने अवतार लिया अब हम पर आप कृपा कीजिये यह कह विष्णु और हम सब चुप होगये यह सुन सदाशिव बोले कि तुम दोनों मुझे अतिप्रिय हो तुम किस लिये मुनियों समेत आये ठीक ठीक कह दो यह वचन सुनकर हमने समझा कि अवश्य सिद्धि होगी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विष्णु और हम दोनोंने हाथ जोड़ विनय की कि पहिले आपने कहा था कि हम विवाह करके लोकके कार्य सिद्ध करेंगे सो अब वह समय आयाहै अब अपना वचन पालन कीजिये और जिस प्रकार कि धर्म की वृद्धि हो वही कीजिये यह सुन हँसकर सदाशिव बोले कि हम योगी हैं हमसे और विवाह भोगसे क्या वास्ता हमारा शरीर अवधूत और हमारी सामग्री भी अशुभ हमको इसी योग में बड़ा आनन्द है और इसी दशा में हम बड़े प्रसन्न हैं देखो लोक में विवाह से अधिक आनन्द नहीं मानते पर वह बड़ा कारागृह है जैसा कि वेद कहते हैं और जो बात मुझे नहीं भाती उसीको तुम कराते हो अच्छा हम अपना वचन पूरा करेंगे अब तो विवाह करेंगे पर इतनी बात है कि जैसी स्त्री हम कहैं उसी प्रकार की स्त्री तुमको ढूंढ़नी होगी अर्थात् वह ऐसीही हो कि हमारा तेज सहसके और गर्व दूर करे और महासुन्दरी कीर्ति-युक्त हो जब हम योग करें वह योगिनी होजावे और मैथुनके समय रति के समान हो और फिर दूसरी बात यहहै कि हमारी बातको माने और सेवा करे यह सुन हम और विष्णुने हाथ जोड़ विनयकी कि आपके योग्य दक्ष प्रजापतिकी पुत्री है जो आपका महाकठिन तप कर रही है आप वहां चलकर उसको वरदान दे आइये और उससे विवाह कीजिये यह कह हम चुप होरहे और सदाशिव हँसकर कहने लगे कि 'तथास्तु' यह सुनकर देवता और मुनि आदि जय २ कह उठे फिर सब बिदा हुये और शिव अपने गणों को साथ लिये हुये सती के वरदान देनेको उसी स्वरूप से जिस रूपका सती ध्यान करती थीं सतीके पास जा पहुँचे उस समय सतीके मनसे वह स्वरूप जिसका सती ध्यान कररही थीं गुप्त होगया सतीने चिन्तित होकर जो आंखों को खोला तो वह स्वरूप सामने दिखाई दिया सतीने प्रणाम किया और मनमें ऐसे स्वरूपको ध्यानधर लज्जाके मारे शिर नीचे करलिया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और आनन्द में मग्न हो चुप होरहीं और कुछ न कहा उस समय जो आनन्द सतीको हुआ उसको हम कोटि जिह्वासे भी वर्णन नहीं कर सक्के निदान शिवजी बोले हे दक्ष प्रजापति की पुत्री! तुम्हारे तप से हम प्रसन्न हुये जो इच्छा हो वह मांगो यद्यपि शिव मनोरथ जानते थे पर सतीका वचन सुनने को आज्ञा दी पर तौभी सती ने कुछ न कहा शिवजी को यह भाव अच्छा मालूम हुआ और कहा मांगो २ देर न करो तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा इतना कहकर ब्रह्मा बोले कि हे नारद! जब इस तरहसे शिवजीने बारम्बार कहा तब सती बोलीं कि हे महाराज! आप क्या नहीं जानते आपका वास तो घट २ में है आप हमारे मुखसे अपनी प्रीति सुना चाहते हैं और संसारी जीवों के समान पूछते हैं सो हमारा मनोरथ सुनिये कि आप हमारे पति हों हमारे साथ विवाह करके हमको अपने घर की दासी बनाइये यह सती का वचन सुन शिव बोले कि 'तथास्तु' और कृपा-दृष्टिसे सतीकी ओर देखा और अन्तर्द्धान होगये॥

तेरहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सती ऐसा वरदान शिवसे पाकर अति प्रसन्नतापूर्वक अपने घरको सिधारी और सतीकी सखियों ने सम्पूर्ण वृत्तान्त सती का कह सुनाया जिसे सुन उनके माता पिता और सब नगरवासी अतिप्रसन्न हुये और दक्षने मङ्गनों को बहुतसा दान दिया और नानाप्रकारके बाजे बजनेलगे इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियो! जब नारद ने ब्रह्मासे यह कथा सुनी तो बोले कि हे ब्रह्माजी! यह चरित्र सुन हमारे सर्वदुःख दूर होगये और आनन्द प्राप्त हुआ अब जो कुछ और इसके आगे चरित्र हो वह सब कहिये आपकी बराबर शिवपूजकों में संसार भरमें कोई नहीं ब्रह्मा बोले कि जब हमको यह वृत्तान्त मालूम हुआ तो मैं प्रसन्न होकर शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की सेवामें गया और हाथ जोड़ बहुत स्तुतिकर विनयकी कि मुझे क्या आज्ञा होती है शिव बोले कि सतीने हमारा बड़ा तप किया और हमने उसको वरदान दिया सो तुम जाकर दक्षप्रजापतिसे कहो कि वह विवाह की तय्यारी करे हम सती को अङ्गीकार करेंगे यह कह मुझे बिदा किया मैंने दक्ष के पास आकर शिवकी आज्ञा सुनाई दक्ष उत्तम लग्न विचारकर विवाह की सामग्री जोड़नेलगे और रत्नों समेत लग्न शिवके पास भेजा और सबको समाचार कहला भेजा गए अतिप्रसन्न होकर इधर उधर दौड़नेलगे और चारों ओरसे पुष्पों की वर्षा हुई बाजे बजनेलगे और दोनों ओर से बड़ी तय्यारी हुई शिव बरात साजकर दक्षप्रजापति के नगर की ओर चले जब बरात दक्ष प्रजापति के नगरके निकट पहुँची तब शिवने सप्तऋषि को दक्ष के पास भेजा दक्ष बरात को नगरके निकट जानकर अगवानी के लिये चले भेंटकर हाथ जोड़ेहुये अपने मन्दिर लेचले उस समय शिवजी, हम, विष्णु, आठोंबसु, ग्यारहरुद्र, द्वादश सूर्य, सिद्ध, भूत, प्रेत, गन्धर्व, चारों गुह्य, किन्नर, विद्याधर, देवता, मुनि और असुरों समेत दक्षके द्वारपर जा पहुँचे तब चारों ओरसे जय २ शब्द होनेलगा और वेद और कुलके अनुसार सब रीतें हुई गान होने लगा दक्षने ब्राह्मणों को बहुतसा दान देकर बरात के ठहरने को अति उत्तम स्थान दिया जहां सब स्थित हुये और दक्षने हमको बुलाकर कहा कि वेदके अनुसार विवाह करो जिससे हमारी पुत्री शुभ और पतिकी प्यारी हो और उसके बहुत सन्तान हों फिर सब प्रकारके उत्तम भोजन बरातियोंको खिलाये उसमें चारों प्रकारके षट्रसोंके स्वाद थे और बराती सब प्रकार के व्यञ्जन सुनकर अतिप्रसन्न हुये वहां उस समय कोई खेदवान् न था भला जहां जगन्माता हो वहां किस वस्तुकी न्यूनता होसक्ती है भोजनके उपरान्त पान बांटेगये और सब शिवस्तुति करने लगे फिर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लग्न ठहराकर शिव के आगमन के लिये कहला भेजा शिव तुरन्त आये और दक्ष शिवजी को अन्दर लेगये और प्रसन्न होकर पहिले शिवके चरण आप धोये और सोनेकी चौकी पर शिवको बैठाया और फिर इसी प्रकार हमको और विष्णुको भी चरण धोकर सुवर्णकी बैठक दी और मुनियोंके भी चरण पखारे और जो मनुष्य जिस स्थानके योग्य था उसको शीलतापूर्वक उस मनुष्यकी प्रतिष्ठाके अनुकूल स्थान दिया और हमने जो समयोचित था वह सब किया और सतीको बुलाया जिसको देख सबोंने प्रणाम किया और विष्णुने और हमने दक्ष को कन्यादानका समय बताया तो उस समय दक्षने कुश और जल और लड़कीका हाथ शिवको दिया हे नारद ! पहिला यही लोकमें कन्या-दान हुआ और यही रीति संसारमें फैल गई ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब शिवने सतीका हाथ पकड़ा तब सर्वमुनि प्रसन्न हो शिव सतीका जय २ शब्द कहने लगे फूलों की वर्षा हुई और नाना प्रकार के बाजा बजने लगे दक्षने दहेजमें बहुत उत्तम बहुमूल्य वस्तु रत्नादिक दिये जिनका विस्तार बहुत है और रीतोंके पूरे होने के उपरान्त हमने हवन किया और दोनोंका गठ-बन्धन होकर भांवरी होनेलगीं उस समय एक महाभयानक चरित्र हुआ अर्थात् जो कि मेरी इच्छा शिवके वश करनेकी थी तो मैं आप ही उस रोग में ग्रस्त होगया अर्थात् भांवरी फिरते हुये सतीका चरण कपड़ेसे बाहर निकलगया और मेरी काममयी दृष्टि उसपर पड़ी और मैं मोहित होकर बुद्धिहीन होगया और कामके जालमें फँसकर उसके मोहमें मग्न होगया और ऐसी दशामें सतीके रूप अनूपके देखनेकी अभिलाषा बहुतही उपजी और मैंने यह उपाय किया कि गीली ल-कड़ी आगमें डालदी जिससे बड़ा धुवां उठा और शिवकी आंखों में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहुँच ऐसे आंसू बहनेलगे कि शिव दोनों हाथोंसे वह आंसू दूर करने लगे तो जब शिव आंसू पोंछनेमें लगे तो मैंने सतीके मुखसे घूंघुट उठाकर उनका स्वरूप देखा और कामदेवके तीक्ष्ण वेगसे दुःखित हो सब धर्म कर्मको भुलाया उस समय मेरा वीर्य धरती पर गिरपड़ा हमने उसको किसी प्रकारसे ऐसा छिपाया कि किसी पर यह बात प्रकट न हुई पर शिवने दिव्यदृष्टिसे इस बातको जाना और मुझपर अति कुपित हो धिक्कार २ कहने लगे और कहा तुमने यह महानिन्द्यकर्म धर्म छोड़ क्यों किया तुम बड़े कामी हो तुम पशुओंकी भांति वेदकी रीतोंको भूलगये और हमसे छिपाया हमसे तीनों लोकों में कौनसी बात छिपी है या छिपी रहसक्ती है यह कह बड़े क्रोधसे त्रिशूल हाथमें लिया हे नारद ! मैं उस समय थरथर कांपनेलगा और बड़ा आश्चर्य किया तब सबलोग मेरे मारेजानेका निश्चयकर शिवकी स्तुति करने लगे पर शिवका क्रोध न मिटा और दक्ष प्रजापति हाथ उठा शिव शिव कहनेलगे और अतिस्तुतिकर मेरे मारनेकी मनाही की और बोले कि आप रङ्गमें भङ्ग न करो शिव बोले हे दक्ष ! अब कुछ न कहो मैं ब्रह्मा को अवश्य मारडालूंगा इसने सतीको पापदृष्टि से देखा है और वेदमार्गके धर्म अधर्मको भुलादिया और वेदमें लिखाहै ऐसे मनुष्योंको अवश्य मारडालना चाहिये ऐसे क्रोधके वचन सुन शिवके कोपसे सर्व सभा कांप उठी तब विष्णुने बहुत स्तुति करनेके उपरान्त कहा कि तुम अप्रमेय हो तुम्हारा आदि अन्त कोई नहीं जानता हम और ब्रह्मा तुमसे उपजे तुमहीं प्रलय करते हो आप अपने क्रोधको शान्त करैं और मुझे अपना सेवक जान मेरी विनती स्वीकार करें अर्थात् ब्रह्मा का वध न करें क्योंकि आपने उनको सृष्टि रचनेके निमित्त उपजाया और कौन है जो सृष्टि उपजावेगा और प्रकट है कि सृष्टि विना सब लीला निष्फल है फिर आपहीने तो ब्रह्माजीको उत्पन्न किया उनका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वध न कीजिये शिवने फिर बड़े क्रोधसे कहा कि नहीं हम ब्रह्मा को अवश्य मारडालेंगे और हम आप सृष्टि उपजावेंगे अथवा दूसरा ब्रह्मा उपजाकर सबलोगोंपर इस बातको प्रकट करदेंगे हमको अब न रोंको हमारा क्रोध वृथा नहीं जाता यह कह अपना सम्पूर्ण शरीर प्रज्वलित अग्नि समान करलिया देवता और मुनि आदि कोई ऐसा न था जो वह स्वरूप देखसका मैं तो शिवरूपही होगया और दक्षको भी अति खेदसे सब आनन्द विस्मरण होगया और महादुःखी हो शिवके चरण-पङ्कजोंका ध्यान करते हुये शिवसे बहुत कुछ कहा और विष्णुने मुझे शिवके चरणोंके नीचे डालदिया और मुझसे बहुत स्तुति पढ़वाई और आपभी की और कहा कि हम और ब्रह्मा दोनों आपके सेवक हैं कृपादृष्टि से अवलोकन कीजिये ऐसे आनन्द उत्सवमें खेद उपजता है सिवाय आपके और कौनहै जिसकी शरणमें जावें केवल आपही हमारी रक्षा करनेवाले हैं जो उचित हो वह कीजिये हर प्रकारसे आप की शरणमें हैं सो ब्रह्माके दोनों हाथ पकड़ अभय कीजिये यह कह हम दोनों शिवके चरणोंपर गिरपड़े और दक्षभी महामलिन दीन त्राहि २ कहने लगे और शिवजीने सतीको अतिदुःखी जान अति-कृपासे मेरे शिरपर हाथ रखदिया और निर्भय करके अनुग्रह किया हम और विष्णु अतिप्रसन्न हुये और दक्ष और सर्वसभासद् भी अति आनन्दमें होगये उस आनन्दमें मैंने महाराजकी कई प्रकारकी स्तुति की और कहा कि आपने मुझको नरककी अग्निसे बचा लिया और पापरूपी समुद्रमें डूबनेसे रक्षाकी और स्तुतिके उपरान्त मैंने विनयकी कि आप वह उपाय बताइये जिससे मेरा यह महापाप दूर होजावे शिव बोले कि तुम स्त्रीसहित तप करो यही तुम्हारे पापका बदला है तुम्हारा नाम रुद्रशिरा होगा और जो तुम्हारा मनोरथ है उसे पावोगे और जो कि तुमने सुरपति होकर नरकर्म किये इस लिये तुम मनुष्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर लज्जा उठाओगे तब तुम्हारा पाप दूर होजावेगा यह बात सुन हम और दक्ष अति प्रसन्न हुये ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदने पूछा कि हे ब्रह्मन् ! जब शिवने क्रोध शान्त करलिया और प्रसन्न होगये तो इसके उपरान्त क्या हुआ ब्रह्मा बोले कि जब मुझसे प्रसन्न हुये और मेरा वीर्य पृथ्वी पर चमकता हुआ देखा तो मुझसे कहने लगे कि हे ब्रह्मन् ! यह वीर्य तेजरूपसे दृष्टि आता है इसको नष्ट न करना चाहिये और जब तुम्हारा वीर्य पृथ्वी पर गिरा था तब मेरे नेत्रोंसे अश्रु गिरे थे इससे चार मेघ इस वीर्यसे प्रकट होंगे इतना कहतेही उसी समय चार मेघ उत्पन्न होगये और आकाशमार्ग में छागये और गर्ज गर्ज कर वर्षने लगे और शिवके भयसे धीरे २ वर्षते रहे ऐसी वर्षा देख शिव और सब सभाके मनुष्य अतिप्रसन्न हुये सबका दुःख दूर होकर फिर आनन्द छागया फिर हम ने शिवकी आज्ञासे जो विवाहकी रीतें रहगई थीं पूरी कीं और फिर वही बाजे बजनेलगे और लोग हर्ष मनानेलगे दक्षने बहुत धन दान किया उस समय हम सबोंने शिव की बड़ी स्तुति की जिस तरह कि शब्द और अर्थ में अन्तर नहीं उसी तरह आप और शक्ति एक हैं आपकी अप्रमेय महिमा है उसको कोई नहीं जानता पर हां आपकी कृपासे मूर्ख मनुष्य भी जान सक्ताहै जैसा कि किरात, बनिज, कुकिट, गज, गङ्गाआदि इस बातके साक्षी हैं आपके चरणारविन्द के अनुग्रह से इस संसारमें किसने क्या नहीं पाया आप लोकके पिता और शक्ति जगन्माताहैं यह स्तुति सुन शिव शक्ति अर्थात् सतीसमेत कैलासपर्वत को चले उस समय शिवके शिरपर छत्र था और दोनों ओरसे स्तुति होती थी शिवने दक्षादि सबको मार्ग से बिदा किया और आप शक्ति और गणोंसहित कैलासपर्वत में सुशोभितहुये चारों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओर से जय २ शब्द सुनाई देनेलगा और शुभलग्न में दोनों शिव और सतीने मन्दिरमें प्रवेश किया और हम और विष्णुने शिवको सती समेत एकही सिंहासन पर बैठाया उस समय नाच और गाने की सभा हुई जिसको जिसकी इच्छा थी शिवने सबको वही दिया और हर प्रकारके भोजन सबको खिलवाये और सबको सब कुछ देकर बिदाकिया सो सब शिवजीका यश गाते अपने घरोंमें पहुँचे और हम विष्णु भी शिवकी आज्ञा पाय अपने लोक को गये हे नारद! हमने कौन कौन उपाय शिव के विवाह के लिये न किये पर कुछ न चली जब सतीने तप किया तब शिवने प्रसन्न हो अङ्गीकार किया यह शङ्करका चरित्र सुनकर लोक मुक्ति पाते हैं और शिव विवाह होने से हमारा दुःख दूर होगया इस प्रकार सतीके साथ शिव विवाह करके कैलासमें सुशोभित हुये और नाना प्रकारकी कथा सृष्टिके उपकारके लिये कहते थे जो मनुष्य शिव और सतीके विवाह का पाठ करेगा वह मुक्तिपदवी पावेगा और संसारमें भी आनन्द उठावेगा॥

सोलहवां अध्याय॥

इतना सुनकर शौनकादि मुनियोंने पूछा कि हे सूतजी! जब नारदने ब्रह्मासे सतीका विवाह सुना तो फिर क्या पूछा वह सुनाइये यह सुन सूतपौराणिक बोले कि जब देव, मुनि, नारद यह सर्व वृत्तान्त सुनचुके तो ब्रह्मासे पूछा कि विवाहके उपरान्त जो सती शिवने चरित्र किये वह कहिये ब्रह्मा बोले कि एकदिन सती भी शिवको एकान्त में बैठे देखकर आप भी गई और प्रणाम करने के उपरान्त बहुत स्तुति की और कहा कि आपने तीनों लोकके उपकार के लिये अवतार लिया है मेरी क्या उज्ज्वल भाग्य है कि आपकी स्त्री हुई मैं आपकी शरणमें हूं अब मुझे एक इच्छा है जिसको मैंने आज तक नहीं कहा इस समय आपको अपने ऊपर प्रसन्न देख कहतीहूं कि बर्षोंतक आनन्द

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उठाया और परमतत्त्व का कभी विचार न किया और विहारादिमें प्रसन्नरही अब मेरे मनमें वैराग्य उपजाहै और मैं परमतत्त्वकी इच्छा रखतीहूं सो आप मुझे वही मार्ग बतावें और प्रकारसे ब्रह्म ज्ञान की युक्ति बतावें अर्थात् क्या करनेसे मुक्ति प्राप्त होती और परमपद मिलता है आपकी बराबर तीनों लोकमें ज्ञानी कौनहै आपही परब्रह्म अनादि हैं आपहीने वेदोंको उपजाया और सम्पूर्ण विद्यानिधान और तीनों लोकके परमात्मा विष्णु और ब्रह्माको पदवी देनेवाले हैं जैसे शेषादि अहर्निश इस बातका वर्णन करते हैं यह सतीका प्रश्न सुन सदाशिव ने कहा कि सबसे उत्तम वस्तु ज्ञानहै जहां दूसरे पदार्थकी गम्य नहीं वह बहुतही अलभ्य है और वही मेरा स्वरूप ब्रह्महै और उसी ज्ञान की स्त्री क्या है हमारी तपस्या जिसको करके लोग पवित्र होजाते हैं और भक्ति और ज्ञानमें कुछ अन्तर नहीं जो मनुष्य इन दोनों में अन्तर जानतेहैं वही दुःख पातेहैं और जो भक्तिके विरुद्ध वाद विवाद के लिये ज्ञानहै वह उलटा उसे दुःख देताहै इसपर अत्रिमुनिको निश्चय है जो संसारभरमें अद्वितीय विद्वान्हैं सो भक्तिको परमतत्त्व देनेवाली समझो और वह मुझे अतिप्रियहै हे देवि ! भक्ति उत्तम वस्तुहै उसको अच्छेलोग अङ्गीकार करके अच्छे मार्ग में आते हैं भक्तिके बराबर कोई मार्ग सीधा और निर्भय नहीं क्योंकि उससे परब्रह्म मिलता है इस रीतिको पिपीलिका कहते हैं क्योंकि बे परिश्रम किसी वस्तुके आश्रय वृक्ष पर चढ़ फल मिलताहै और जो निर्गुण का मार्ग है वह भीषम प्रसिद्ध है क्योंकि किसी वस्तुके आधार विना अति परिश्रम और दुःख के उपरान्त फल प्राप्त होताहै भक्ति मनको प्रसन्न करती है औरमैं आप भी भक्तिके अधीनहूं जो नीचमनुष्य भी मेरी भक्तिकरै वह मेरी समझ में सबसे बड़े और भाईके सदृशहैं जो मनुष्य हमारी भक्ति करता है उसको संसारमें आनन्द और परलोकमें मुक्ति देताहूं मुझे केवल भक्ति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रियहै कुलपांतिसे कुछ प्रयोजन नहीं चाहे चाण्डाल भी हो पर मेरी भक्ति करे तो उसके बराबर मुझे कुलीन मनुष्य प्रिय नहीं है यद्यपि सर्वप्रकारसे भक्ति मुझे चारोंयुगोंमें प्रियहै परन्तु कलियुगमें तो केवल मुझको भक्ति अतिही प्रियहै और प्रेमसे मैं नीचोंके घरों में भी जाताहूं मनुष्य चाहे कितनाही शुद्धआचरणी हो पर वह भक्ति विना मेरी समझमें उत्तम नहीं हम अपने भक्तके सदा सहायकहैं हमको भक्तिके बराबर कोई प्रिय नहीं और हम भक्तोंके लिये अच्छे चरित्र करते हैं हमने अपने भक्त के लिये कामदेवको जलाया जोकि सबसे बड़ी पदवी भक्तिकी है इस लिये सब छोड़ भक्ति करो ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! ऐसी भक्तिकी स्तुति सुन सती अति प्रसन्न हुई और दोनों हाथ जोड़ सदाशिवसे कहा कि आपने मेरे ऊपर अनुग्रह करके भक्तिकी प्रशंसा वर्णनकी पर मेरी इच्छाहै कि आप उसके सम्पूर्ण खण्ड शिरसे पांव तक वर्णन करें शिवने हँसकर कहा कि हे सती ! हम भक्तिको सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करते हैं जिसको सुन प्रेम उपजताहै और तीनों लोकके दुःख शोक दूर होजातेहैं जिस भक्तिको परम तत्त्व वर्णन करके सबसे उत्तम वर्णन कियाहै वह दो प्रकारकी है पहिली अगुणा दूसरी सगुणा सो उनके भी दो २ प्रकार हैं एक स्वाभाविक जो अपनी प्रकृतिसे उपजतीहै दूसरी वैदेही जो प्रारब्धसे प्राप्त होतीहै और जिसमें तीनों गुण पाये जावें उसको वेद सगुणा भक्ति कहते हैं और जिसमें कोई गुण न हो वह अगुणा भक्तिहै उसके दो भागहैं जिसमें भक्त बड़ी युक्तिसे मन लगाते हैं इन दोनों खण्डों के नव २ भागहैं जब सावधानतासे उसको धारण कियाजाता है तब पूर्ण होतीहै वह यहहैं अपने स्वामी का यश सुनना, कीर्तन अर्थात् उसको कहना, स्मरण अर्थात् याद करना, सेवन टहल करना,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दासत्व दास्यभावसे पूजन करना, वन्दन प्रणाम करना, सख्य मित्रों के सदृश रहना, आत्मसमर्पण अपनेको अर्पण करदेना यही भक्तिके नवभाग मुनिभी कहते हैं और इस नवधा भक्तिके सिवाय और बहुत प्रकार हैं जिनको धारणकरके अतिप्रसन्नता होती है जैसे बरगद, बेल, तुलसी और गङ्गा आदिकी सेवा और अतिथियोंकी सेवा ब्राह्मणोंकी अधीनता और तीर्थोंकी स्थिति आदि अब हम अलग नवों प्रकारोंके अर्थ वर्णन करते हैं अर्थात् जब मन वच कर्मसे मेरी बड़ाई सुन उसकी बड़ाईका विचारकरे और मनको दृढ़करे इसका नाम श्रवणहै और कुल द्रव्य व्यवहार और मुख्य अपने गर्वको छोड़कर जब हमारी कथाको सुने और जिस जगह पर कथा होती है उसको सजाकर हरदिन शुद्ध करता रहे और उस शास्त्रकी अच्छी तरहसे पूजाकर नानाप्रकार की वस्तु उस पर चढ़ावे और इसीतरहसे उसके पढ़नेवालेकी पूजा करके अच्छे वस्त्र द्रव्य पदार्थ फल रत्न आदि दे स्तुतिकरे तब फल मिलता है यह श्रवण की प्रशंसाहै अब कीर्तनका व्याख्यान सुनिये कि अपने मनको निर्लोभ करके हमारे जन्म और कर्म और गुणको देखे और उनको ऊंचेस्वरसे वर्णन करे इसका नाम कीर्तनहै और जब कि कर्म काल और कामके भयको दूरकरके और संसारकी लज्जा और इच्छा को छोड़कर मन लगाय हमारा गुणगावे ऐसा कीर्तन करनेसे अच्छा फल मिलताहै और स्मरणके यह अर्थहैं कि सम्पूर्ण सृष्टि जड़ चैतन्य जीवित निर्जीव चलनेवाले और एकही जगहपर स्थित रहनेवालों और सबमें शिवको देखे और मुझे सर्वात्मा समझकर निर्भय रहाकरे ऐसे स्मरणसे अति आनन्द मिलताहै और सेवनके यह अर्थ हैं कि प्रातःकाल उठ पहिले अपने गुरुका ध्यानकरे और रीति के अनुसार शौच दँतवन और नित्यनैमित्तिक आदिसे सुचित्त हो रेशमी कपड़े पहिन माथेपर त्रिपुण्ड्र लगावे और रुद्राक्षकी माला पहिने धरती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पवित्र कर उत्तम बैठनेकी जगह बनावे और मनरूपी कमलमें अपने स्वामीके स्वरूप का ध्यान प्रेमसे लगावे और पूजन की अच्छी सामग्री धुलानेके पीछे अपने पास रखले और क्रमपूर्वक पूजाकरे और षोड़शोपचारसे पूजाकरे और भोजन करावे और आरती करके दण्डवत्करे और अच्छे सुगन्धित फूल बिछाकर उसके ऊपर अपने स्वामी को सुलावे और अहर्निश अपने स्वामी का गुण कहकर बिता देवे सन्ध्यासमय फिर अपने स्वामीको जगावे और सन्ध्या आदिकर आरती करे और नाम और स्तुति वर्णनकर कुछ रात्रिके बीतनेपर गाने बजानेकी सामां तय्यार करे और आनन्दपूर्वक बाजे बजवाकर भोग लगावे और फिर दूसरी बेर आरती करे फिर उत्तम शय्या बिछवाय स्वामी को उसपर सुलावे ऐसी सेवा करनेवाला भक्त लोक परलोक का आनन्द पाताहै और तीनों लोक उसके चरणों में प्रणाम करते हैं और वह कभी नरक में नहीं जाता अब अर्चन का वर्णन करते हैं अर्थात् बेलपत्र और फूलआदि और चन्दनको पवित्रता और विचारके साथ लोगोंसे पूछकर लगावे और धर्म की रीति से जो द्रव्य उपार्जन किया हो उससे पूजाके बर्तन और सामग्री बनावे और अपने स्वामी को षोड़शोपचारसे निष्काम पूजनकरे और समय और नियममें विरुद्धता होने न पावे इसका नाम अर्चन है और जो हमारे मन्दिरमें फुलवाड़ी लगावे अथवा मेरे लिङ्गकी स्थापना करे और हरदिन मेरे लिये उत्सव करे यह सब अर्चनके अङ्गहैं इसीप्रकार जो हमारा अर्चन करताहै वह दोनों लोकमें सिद्धि पाताहै अब वन्दन का व्याख्यान सुनिये मन्त्र जापकरे तो बेरबेर उसका ध्यानकरे मनको एकाग्रकरके प्रणाम करे यह वन्दन है और जो वन्दन का फलहै वह तीनों लोकमें प्रसिद्धहै इसीके प्रतापसे सनकादिक निर्भय रहतेहैं इस वन्दनके करने से दोनों लोक में आनन्द मिलताहै और अन्त को हमारे लोकमें उसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थान मिलताहै अब दास्यभावको वर्णन करते हैं कि इन्द्रियोंको वश करके मुझे प्रसन्न करतारहे और हमारी प्रसन्नतासे मन और शरीरका पालनकरे और काम वासनाको जड़से उखाड़ डाले तो दोनों लोकका सुख पावे अब सख्यके अर्थ सुनिये जिस मनुष्यके विचारमें दुःख सुख बुरा भला राग द्वेष अथवा जय पराजय लाभ हानि बराबरहो और इस बात पर पूरा विश्वास रखताहो कि जो कुछ परब्रह्म हमारी भाग्य से करताहै वह सब हमारी भलाई के लिये है ऐसे निश्चयवालेको सख्य कहते हैं ऐसे मनुष्यको तीनों लोकमें कोई वस्तु कठिन नहीं अब हम आत्मसमर्पण का वर्णन करते हैं अर्थात् जो मनुष्य अपने शरीर कोष सेवक पशु और धनादि सम्पूर्ण वस्तुओं को छोड़े और उनकी प्रीति दूरकर मेरे लिये संकल्प करदे और फिर कोई युक्ति उनके लिये न करे और उनकी प्रीति और चिन्तना न करे इसको आत्मसमर्पण कहते हैं इससे गर्व दूर होजाताहै पर जबतक कि इसको मन जिह्वा और शरीर से नहीं करते तब तक वह अपने स्वामी को नहीं पाता ऐसे मनुष्य को सब सुगमहै उसको कुछ वस्तु अलभ्य नहीं मैं उसकी रक्षा रात्रि दिवस करता हूं और उसके निकट रहाकरता हूं भक्ति के अङ्ग केवल यही नव हैं जो वर्णन किये गये अब हम भक्तिके उपअङ्ग कहते हैं वह दश हैं उनमें से हरएक दुःख का दूर करनेवालाहै अर्थात् बड़ और पीपलकी पूजा सदा करनी चाहिये और उनको जल से सींचे उनका अनादर करना मानो मेरा मान घटानाहै उसमें दाहिनी ओरसे परिक्रमा करनी चाहिये इन दोनों वृक्षोंकी सेवासे निर्भय परमपद मिलताहै दूसरे बिल्व वृक्षकी सेवाकरो और उसको हमारा शरीर समझो उसके पूजनसे कुछ दुःख नहीं रहता उसको जलसे सिंचनकर पूजन करना और आरती उतारना उचितहै जो ऐसा करते हैं वह हमारी पूजा का फल पाते हैं और रेवा अर्थात् नर्मदा आदि और सुरसरी अर्थात् गङ्गाका पूजन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीसरा उपाङ्गहै उसमें पवित्रतापूर्वक स्नानकरनेमें बड़ा पुण्यहै जैसा कि व्यास आदिने कहाहै चौथे गुरुकी सेवा जिसकी बराबर कुछ नहीं और वेद उसकी स्तुति करते हैं पांचवें हमारे व्रत चौदस आदि जितने हैं उन में हमारा पूजनकर व्रत रखना रात्रिभर जागरण करना इनसे जो पुण्य प्राप्त होताहै वह वेदसे प्रकटहै और शिवरात्रि मासके दोनों प्रदोष और सब महीनों की अष्टमी यह व्रत हमारे बड़ी महिमा रखते हैं और उत्तम गति देते हैं जिनको करके व्याध किरात आदिने कैसा आनन्द पाया छठवें शैवाराधन अर्थात् शैवलोगों से सत्संग करना इस तरह पर कि जब किसी शिवपूजक को देखे कि आताहै उसका आदर करे और उसको देखकर अपने सब घराने समेत प्रसन्न होकर हरप्रकार उसकी सेवापर तय्यार रहे और उसकी पूजाकर बहुत अच्छा स्वादिष्ठ भोजन करावे यह शैवाराधन अतिप्रसन्नता देनेवालाहै उसके प्रतापसे बहुधा तीनों लोकके राजाहुये सातवें अतिथिमान अर्थात् जो कोई द्वारपर आवे भिक्षा मांगनेके लिये तो उसको यथाशक्ति कुछ देना चाहिये इसमें लोक परलोक दोनों बनते हैं और यह अन्तकाल तक भुलादेने या छोड़ने के योग्य नहीं आठवें ब्राह्मण का मान जिसको करके बहुत मनुष्योंने परमपद पायाहै हे देवि ! ब्राह्मण मेरा तनहै उसको हमारे बराबर समझ पूजन करना चाहिये नवें तीर्थ और क्षेत्रआदि में अटन करना सम्पूर्ण तीर्थोंमें से सात पुरियों को बहुत बड़ा वर्णन कियाहै और उसमें से आनन्दवन अर्थात् श्रीकाशीजी की बड़ाईको सर्वोपरि रक्खाहै तो चाहिये कि नियमित रीतिके अनुसार प्रीतिपूर्वक परिक्रमा करे और जैसा कि धर्मशास्त्रने कहाहै उसीके अनुसार सब बातें करनी चाहिये और इन सबतीर्थों का फल जो काशी में मरताहै उसको प्राप्त होताहै यही बात वेदभी कहते हैं दशवें अहिंसा बड़ा धर्म है अर्थात् किसी जीवको दुःख न पहुँचाना जिसने हिंसाको छोड़ा मानो संसार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के सर्व धर्म करचुका जीवधारी पर दयाभाव रखना बड़ा धर्म है यह अहिंसा अतिप्रसन्नता देनेवाली है और हे देवि ! जिसके मनमें तुम स्थित होतीहो वह मुझे अतिप्रियहै और कलियुगमें लोग ज्ञान वैराग्य को कम चाहेंगे उस युग में केवल भक्तिको मुख्य समझना चाहिये हे पार्वति ! जो तुमने पूछा हमने उसका उत्तर दिया जो इसको पढ़ेगा अथवा सुनेगा उसको बड़े आनन्द का पद मिलेगा ॥

अठारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! ऐसी बातें सदाशिवकी सुनकर सतीने अपने को बड़ी भाग्यवती समझा और प्रीतिपूर्वक भक्तिके अङ्गपूछे और उपासना के प्रकार जिसमें पांच अंगहैं सब पूछे तो शिवजीने तन्त्रशास्त्र को स्तोत्र कवच सहस्र नाम पटल और पद्धति समेत और नाना प्रकारके यन्त्र मन्त्र चेटकआदि गुणों समेत वर्णन किये और प्रेमके बढ़ानेवाली कथायें और आनन्द उपजानेवाले वृत्तान्त और अपने भक्तों की महिमा जिनसे भक्तिमें वृद्धि होतीहै और बहुत धर्म जैसे नृपधर्म अर्थात् राजनीति स्त्रीधर्म वर्णाश्रम और पुत्रधर्म संकर-धर्मआदि वर्णन किये और सामुद्रिक ज्योतिषादि सब सतीको सुनाया इसी प्रकारसे शिव और सती कैलासमें रहते रहे और बहुत वर्षपर्यन्त विहार करते रहे तो सतीने अपने पिताके यज्ञमें शिवका निरादर देख क्रोधसे शरीरको प्राणरहित करदिया और फिर वही सती हिमाचलके घर उपजकर शिवसेवामें पहुँची इतना सुनकर नारद बोले कि हे ब्रह्मा ! यह कथा सुन मुझे बड़ासंशय उपजा क्योंकि सदाशिव जो सर्वसृष्टिके स्वामी हैं और किसीके शत्रु नहीं उनके साथ दक्षने इस तरहसे वैर किया यह उसकी बुद्धि क्योंकर भ्रष्ट होगई और शिवने अपनी शक्ति को क्यों त्यागा सतीने शिव का क्या पाप किया था और क्यों सतीने अपना तन त्यागा उनका अनादर किन बातोंसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समझागया और जिन मनुष्योंने उनका अनादर किया था उनको सतीजीने क्यों न जलाया और आपही क्योंजलगई और आदिशक्ति हो क्योंकर अन्तर्द्धान हुई और अचरज यहहै कि दक्षको सती बहुत प्यारी थी फिर ऐसा अशील और अप्रिय कर्म दक्षसे क्योंकर हुआ और श्वशुर जामात्रसे क्योंकर बिगड़ी ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जिसको हम विष्णु देवता मुनि आदि ध्यान करते हैं यह सब उनकी इच्छा है हम किसको दोष लगावें जिस तरह कि दक्षने अपनी शुद्ध बुद्धि को भ्रष्ट करके शिवके साथ वैर उपजाया वह हम कहते हैं कि एक दिन दक्ष प्रजापतिने बड़ा उत्सव रचा और उस सभामें देवता मुनि अग्नि आदि स्त्रियोंसहित आये वह सभा विचित्र प्रकारसे सजी थी उस यज्ञमें हम भी सेवकों सहित गये हमें देख सब सभाके लोग प्रसन्नहुये और जब शिव सभामें पहुँचे तो उनको देख हम सब आदर से उठ खड़ेहुये और स्तुति करनेलगे और जय २ शिवका शब्द ऊँचे हुआ और विनतीकी कि आपने हम लोगों पर अतिअनुग्रह किया और इस यज्ञशालामें सुशोभित होकर आपने दर्शन दिये फिर शिव जीकी आज्ञासे सर्व मनुष्य अपने २ स्थान पर बैठगये और सबने इस यज्ञ को जिसमें शिवजी आप आये धन्य जाना और अतिप्रशंसाकी उस समय दक्षप्रजापतिभी वहां आये उनको देख सब देव मुनिआदि ने शिर झुकाकर प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़हुये उनकी स्तुति की और दक्ष मेरा प्रणामकर और मेरी ओर भारीदृष्टिसे देख अहंकार के साथ बैठगया पर दक्षको शिवने प्रणाम नहीं किया और विष्णुके बैठनेकी जगहमें बैठेरहे दक्ष शिवको ऐसा ढीठ विना स्तुति करतेहुये देख महाकुपित हुआ और क्रोधदृष्टिसे देखकर अहंकारके वशमें हो शिवको अतिकटुवचन कहे और शिवकी महिमा भूलगये रीति है कि मृत्युके समय हर मनुष्य की बुद्धि नष्ट होजाती है सो ऐसाही हुआ कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दक्षने शिवकी अतिनिन्दाकर कहा कि तुम सबसभाके लोग मन लगाय सुनो इस रुद्र अर्थात् शिवने मूर्खोंके समान हमको क्यों प्रणाम न किया कि बड़े २ देवता आदिने हाथ जोड़ हमको दण्डवत् की और शिवने शुद्धमार्ग छोड़ तीनों वेदोंके विरुद्ध यह काम कियाहै यह बुद्धिहीन अहंकारी जिसके भूत आदि नौकरहैं प्रेतों का राजा माता पिता रहित पापों का पर्वत गर्ववान् अशुभ कर्म करनेवालाहै और जोकि बुद्धिमानोंकी रीतिहै कि मूर्खोंको दण्ड देकर छोड़तेहैं कि अज्ञानताका प्रचार न हो इस लिये हम शिवको शाप देते हैं और ब्राह्मणकुल का तेज दिखातेहैं यह कहकर शाप दिया हे शिव! यज्ञादिमें तुमको भाग न मिले यह सुन शिवने कुछ उत्तर न दिया पर नन्दी महाक्रोधित हो बोला हे मूर्ख, दक्ष! तूने बड़ा गर्व किया कि शिवको शाप दिया ऐसे शिवको जिसे स्मरण कर सम्पूर्ण संसार भर पूर होता और वही सृष्टि के पावन और प्रलयके कारण हैं और जिनके नाम लेनेसे जप, तप, दान, धर्म, व्रत आदि पवित्र होजाते हैं सो हे दक्ष! तूने ऐसे प्रधान पुरुष की निन्दा की भला जिस मुखसे तुमने शिवनिन्दा की वह मुख तुम्हारा जातारहे और तुम्हारे सब मनोरथ पूरे न हों तुमको धिक्कारहै धिक्कारहै तू पापियोंमें महाअधम बरन निन्द्यकर्मोंका मूलहै दक्षने ऐसा शाप नन्दीके मुखसे सुन भयवान् हो नन्दीको भी शाप दिया कि तुम वेदके विरुद्ध होगे और तुम्हारा विचित्र स्वरूप होगा और संसार में तुम दुःखी रहोगे सब बोझा उठाकर तुमसे अच्छी बुद्धि जाती रहेगी ऐसा शाप देकर भृगु आदि जो शिवसे विरुद्ध रखतेथे उनकी ओर हुआ और वे यह बातें दक्षकी सुन अतिप्रसन्न हुये उस समय नन्दी महाक्रोधित हुआ और अपनी अप्रमेय बड़ाई दिखाकर जिन्हों ने शिवनिन्दाकी थी उन सबको शापदिया कि तुम सब व्यर्थही ब्रह्मा के कुलमें उपजे तुमने तत्त्ववस्तुको न पाया और काम, क्रोध, लोभ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदिसे भरेहुये हो इस लिये तुमको शुभकर्मोंका फल न मिलेगा और परमपद न पावोगे और जो शिवद्वेषी हैं वह सब वेदके विरुद्ध ब्राह्मणों के शत्रु हो शूद्रोंसे यज्ञ करावेंगे और घर २ दान मांगने जावेंगे दरिद्री रहेंगे वरदानादि भी लिया करेंगे नरक का अच्छा स्वाद पावेंगे जब ऐसा शाप नन्दीने ब्राह्मणों को दिया तब शिव हँसकर बोले कि अब हम तुम सबको ज्ञान सुनाते हैं उसे सुन कोई अप्रसन्न न होवे अर्थात् वेद को अक्षर और मन्त्र कहते हैं और उसमें भी सूक्तको अतिआनन्द देनेवाला कहा इसीसे सबके मन सूक्तमें लगेहुये हैं ऐसे मनको बुद्धि-मान् निकट समझते हैं सो हे नन्दी ! ऐसे मनमें ऐसे क्रोधको स्थान न दो दक्षने मुझे कुछ शाप नहीं दिया पर उसने जाननेवाली बात को नहीं जाना हम आप जगत् जगत्के कर्म जगके अंग जग करने वाले और जग के भीतर बाहर सब हम हैं न तो संसारमें किसीके भाई और न पुत्रहैं हम शुद्ध अशुद्ध भूत प्रेत देवता दैत्य और तीनोंलोक के स्थित करनेवाले हैं और यह समझ कुछ चिन्ता मत करो जहांतक और जितना तुमको दिखाई देताहै उसे मायाका विकार जानो तुमको उचितहै कि हमारे इस वचन का विचार करके क्रोधको दूर करो यह सुनकर नन्दी शान्तहुये और शिवजी कैलासपर्वत को सिधारे और दक्ष प्रजापति भी उसी प्रकार क्रोधकी अग्निमें भराहुआ अपने घर गया उस दिनसे वह शिवकी निन्दा करता और शिवजीके भक्तों को देखकर महाक्रोधवान् होता ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिवकी लीला पवित्र शुद्ध जिसको वेद और पुराण भी पूर्णरूपसे नहीं जानते अपनी बुद्धिके अनुसार सब कहते हैं अब और शिवके चरित्र सुनिये कि एक समयमें शिव-शंकर अपनी स्त्री सतीसमेत तीनोंलोकके अवलोकनके निमित्त चले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और पृथ्वीका अटनकर दण्डकवन में पहुँचे और रामचन्द्रको लक्ष्मण समेत देखा कि सीता महारानीको ढूंढ़रहे हैं और वियोगसे महाखेदवान् दुःखके वचन कहते हैं और चारों ओर अटन करते हैं रामचन्द्र को देख शिवने प्रणाम किया क्योंकि पहिले विष्णुको ऐसा वरदान देचुकेथे शिव फिर जय कहकर आगे चले और कुसमय जान कुछ वार्त्ता न की यद्यपि रामचन्द्र बड़े शिवभक्तहैं और सदा शिवकानाम लेतेहैं (कि उसको हम फिर वर्णन करेंगे) सो सतीने यह हाल देखा और आश्चर्यमें आकर कहा कि हे अनादि सर्वोपरि ब्रह्म ! तुमने सर्वसंसार ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि और सम्पूर्ण सृष्टिको उपजाया जो सब आपकी सेवा करते हैं सो आजके दिन दशरथके पुत्र रामचन्द्र जो भाग्यवश आपको वनमें मिले तो पहले आपने उनको प्रणाम किया मुझे चिन्ता है कि इसका क्या कारण है श्रीशिवशंकरने सतीको ऐसी मायामें डूबीहुई देख कहा कि हे सती ! रामचन्द्र रमापति विष्णु जो संसारके पालन का अधिकार रखतेहैं सो यह अवतार भक्तोंके निमित्त है और फिर शिवने अवतारलेने का कारण कहा पर तौ भी सतीका मन न भरा तब तो शिवने विष्णुके अवतारके नाना चरित्र सती को सुनाये परन्तु उन्हें कोई न भाया और न निश्चय हुआ तबतो शिवने कहा कि जो तुमको निश्चय न हो तो आप जाकर क्यों परीक्षा नहीं करती हो और वह उपाय करो कि तुम्हारा सन्देह दूर हो मैं वृक्ष की छायामें बैठाहूं जब तक तुम परीक्षा लेकर लौट न आवोगी यह आज्ञा पा सती सन्देहयुक्त चलीं और मनमें विचारा कि क्योंकर परीक्षा लूं तो बहुत सोचनेके उपरान्त यह बात ठहराई कि श्रीसीताजीका स्वरूप धारणकर रामचन्द्रके सम्मुख जाऊं यदि वह विष्णु होंगे तो अवश्य मुझे जानलेंगे यदि केवल राजपुत्रहैं तो मुझे क्या जानेंगे यह विचार सीताके रूपसे हँसती हुई श्रीरामचन्द्रजी की ओर गईं लक्ष्मणने सती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को ऐसे स्वरूपमें देखा और आश्चर्यसे धोखा खाकरजाना कि यह सती हैं पर पूर्णज्ञान होनेके कारण कुछ न कहा पर जब कि रामचन्द्रने सतीजी को ऐसे छलके स्वरूपमें देखा तो हँसपड़े और शिव २ कहते हुये बोले कि जिसके ध्यान करनेसे सम्पूर्ण खेद और भ्रम दूर होजाते हैं और जिसके मनमें सदाशिव का स्थानहै उसे आपने धोखा देना चाहा यह सब शिवकी मायाहै ऐसी मायाको धन्यहै जो सबको नचाती है फिर रामचन्द्र अति नम्रतापूर्वक यह मधुर वचन मुखपर लाये और अपना पितासमेत नाम कह बोले कि शिवमहाराज कहां हैं और कहां गये हैं हे माता ! तुम शिवसे जुदा वनमें अकेली क्यों फिर रही हो और तुमने अपना स्वरूप छोड़ यह रूप क्यों धारण किया यह सुन सती आश्चर्यमें हुई और सदाशिवका ध्यानकर रामचन्द्रजीको विष्णु जाना और अपना रूप धारणकर रामचन्द्रसे सर्व वृत्तान्त कहा और कहा कि अब मुझे निश्चयहै कि तुम विष्णु हो तुम पूर्णविष्णु का अवतारहो और राजा दशरथके यहां उपजे पर एक शोचहै वह मैं तुमसे पूछती हूं अर्थात् आपका चतुर्भुजी स्वरूप देख शिव किसी समय ऐसे प्रसन्न न हुये जैसा कि यह स्वरूप देखकर आज प्रसन्न हुये हैं उनके अति प्रेमसे आंसू चले और बार २ तुम्हारी प्रशंसा करते रहे आप सच २ बतावें कि इसका मुख्य क्या कारण है यह सुन रामचन्द्रजीके नेत्रोंसे भी आंसू चले और प्रेममें मग्न होकर चाहा कि उसी समय चलकर शिवको देखें पर ऐसा समय न जानकर और न सतीकी आज्ञा पाकर केवल शिवका ध्यान किया रामचन्द्र बोले जो तीनोंलोकमें प्रकट और दिखाई नहीं देता वह आज मैंने देखा वाहरी भाग्य मेरी कि वह मैंने स्वरूप देखा और मेरे धन्य भाग्य हैं कि उनकी ऐसी कृपा मुझ परहै जिसका सिद्ध मुनि देवता आदि ध्यान करते हैं और वेद उसकी स्तुतिमें मग्न हैं और जिसको हर समय ब्रह्मा बखानते हैं वे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भक्तके अधीन हैं उन्होंने कामरूपके मनोरथ को पूरा किया और भीमासुर का वध किया और शौरि और शौर और श्रको कृतार्थ किया और गुणनिधि को अपना करलिया और बधिक को मुक्ति दी और चन्द्राङ्ग को बहुत द्रव्य और धन दिया और भद्रामुख और पद्माकर को अतिप्रसन्नता कृपा की और धर्मगुप्त और मञ्चव्रत दोनों ब्राह्मणों का सत्कार किया और पिङ्गलाके सर्वदुःख दूर किये और महानन्दा पातुर को बड़ालोक दिया और हर और कुक्कुट्ने उनके वरों से परमपद पाया और व्याध, किरात, नन्दा और पक्षण चौर पञ्चककी स्त्री हरक्ष, इन्द्रद्युम्न को क्या २ पद प्राप्त नहीं हुआ और शिवने कहां किसके ऊपर कृपा नहीं की ऐसे शिव मुझपर प्रसन्नहों इतना कह श्रीरामचन्द्र सतीसे बोले कि हे देवि ! जो शिवने हमको प्रणाम किया उसका यह कारण है ॥

बीसवां अध्याय ॥

रामचन्द्रजी बोले कि हे देवि ! किसी समय शिवने विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञादी कि हमारी धेनुशाला में उत्तमोत्तम मन्दिर बनाओ और वहां उत्तम सिंहासन बनाओ सो ऐसे मन्दिर के बनजाने के उपरान्त शिवने सम्पूर्ण सुर मुनि और ब्रह्मा को बुलाया और बड़ा उत्सव किया फिर शिवने बैकुण्ठसे मुझको ला बैठाला और सामग्री इकट्ठी की और पांच घड़े तीर्थोंका जल सरसों दूब और सब जड़ी बूटी और धन द्रव्य वस्त्रादि संचित कर मेरे विष्णुरूप का अभिषेक करना चाहा और बड़ा ऊंचा छत्र मेरे शिरपर रखकर और सिंहासन पर बैठाकर रत्नों का जड़ाहुआ मुकुट मेरे शिरपर बँधवाया और उत्तम वस्त्र पहनाये और लक्ष्मीजी समेत मेरा अभिषेक किया और तुमने उस शरीरसे जो उस समय तुम्हाराथा लक्ष्मीका अति आदर किया उस समय अति आनन्द हुआ देवतोंकी स्त्रियां गान करनेलगीं और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाना प्रकारके बाजे बजे तब शिवने अपने मुख कमलसे सकलैश्वर्य का वचन कहा और मुझे सम्पूर्ण सृष्टिका स्वामी बनादिया और कृपा करके तीनों शक्ति कृपाकीं और तीनों लोक का राज्य दिया और बहुतसे आशीर्वाद दिये और मेरी स्तुति पहिले आप कहकर फिर ब्रह्मा से कहा कि तुमभी प्रणाम करो और इनकी बड़ाई करो और जानों कि आजसे विष्णु तुम सबके स्वामी हुये सबको आनन्द देंगे और तुम्हारे सबके मनोरथ इन से पूरे होंगे यह तीनोंलोकके स्वामी हैं यह आज्ञा सुन सबोंने मुझको प्रणाम किया और जय जय शब्द चारों ओरसे ऊंचा हुआ और फिर शिवने यह वरदान दिया कि हे विष्णो! तुम सबके स्वामी होकर उनके दुःख दूरकरो और तीनोंलोक तुम्हारी पूजाकरें और तुम्हीं अर्थ, धर्म, काम देनेवाले होकर बड़े विजयी वीर हो हम आपभी तुमको न जीत सकें तुम ब्रह्माके भी स्वामीहो हम ने तीनों लोक तुमको दिये और अवतार लेकर तीनों लोक की पालनाकरो तुम्हारे भक्तों को हम आनन्द दिया करेंगे और उनको मुक्त करेंगे और तुम्हारे शत्रुओं का वध किया करेंगे और हरप्रकारसे तुम्हारे सहायक रहेंगे ब्रह्मा हमारी दाहनी और तुम बाईं भुजाहो और तुम्हारे अवतार जो राम कृष्ण होंगे उनको हम आप जाकर देखेंगे और संसारके देखनेके लिये उनकी भक्ति किया करेंगे तबसे जहां शिव रहते हैं वहां हमभी स्थित रहते हैं और शिवलोक में विष्णुलोक है जिसको गोलोक कहते हैं और हम शिवकी आज्ञासे अवतार लेते हैं और मत्स्यादि मेरे बहुत अवतार होचुके हैं और संसारी कार्य पूरे किये हैं इस समय चार प्रकारसे हमारा अवतार हुआहै अर्थात् राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न मन एकहै परन्तु शरीर जुदा २ है हम अपने पिता की आज्ञासे वनमें आये और उस वरदानसे जो कैकेयीको दशरथने दियाथा और हमारे साथ लक्ष्मण और सीताजी भी आईथीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो रावण सीताको लेभागाहै उसीको ढूंढ़ते हैं आपके दर्शनसे हमारे सब कार्य सिद्ध होंगे हमको तो सीताका हरण अतिशुभ हुआ जिस से आपके चरणोंके दर्शन मिले और मुझे इस बातका निश्चय हुआ है कि अब मुझे जल्दी सीताका हाल मालूम होगा और हम शत्रु पर विजय पाकर सीता पावेंगे संसारमें उनसे अधिक कौनहै जिसके ऊपर शिव तुमसमेत कृपा करें शिवकी बराबर तीनोंलोकमें कोई कृपा करनेवाला दूसरा नहीं इस बातको वेद कहते हैं वे अपने भक्तोंको आनन्द देनेवाले और पापियों का पाप छुड़ानेवाले और भक्ताधीन और बहुत अवतार लेनेवाले हैं उन्होंने पापियों को बहुत उद्धारहै उन के चरित्र हम कहांतक कहें यहकह श्रीरामचन्द्र ने सतीसे बिदा मांगी और सतीसे आशिष पा शिवका ध्यान धर रामचन्द्र आगे चले और उसी तरहपर अपने कार्यमें प्रवृत्त हुये ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदजीने ब्रह्माजीसे पूछा कि हे जगत्पिता ! इसके उपरान्त जो शिवने चरित्र किया वह कहिये ब्रह्मा बोले हे नारद ! रामचन्द्र का हाल सुनकर सती को अत्यानन्द प्राप्त हुआ पर अपने कर्म का बिचारकर अति चिन्ता की और मनमें अति भयभीत हो महा-दुःखी लौटगईं मार्ग में विचार किया कि मैंने शिवकी अवज्ञा की और रामचन्द्र पर निश्चय न किया मैं अब शिवको क्या उत्तर दूंगी इस प्रकार अति खेदसे शिवके निकट पहुँचीं और हँसकर शिवको प्रणाम किया और शिवने कुशल पूछ हँसकर कहा कि तुमने जाकर परीक्षा की वह सब हमसे कहो यह सुन सतीने शिर नीचाकर कुछ उत्तर न दिया मनमें भय उपजा शरीरमें घबड़ाहट बहुत हुई तब शिवने ध्यान धरकर देखा और जो चरित्र सतीने कियाथा वह सब जाना और अ-पनी पहिली बातको जो विष्णुको अभिषेकके समय कहा था स्मरण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर अतिक्रोध किया निदान मनमें यह ठाना कि जो मैं अब सतीसे प्रीति बढ़ाता हूं तो मेरा प्रथम वाक्य झूठ होताहै और शास्त्रके विरुद्ध करना उचित नहीं और सती ऐसी स्त्रीको छोड़भी नहीं सक्ता और जो छोड़ता नहीं तो जो पहिले कहचुका हूं वह मिथ्या होताहै पर फिर शिवने कहा कि बस अब सतीसे भेंट न होगी और अपने वचन को मिथ्या करना उचित न जाना यह विचार सतीको छोड़कर अपने स्थानको चले चलनेके समय आकाशसे यह शब्द हुआ कि जय २ शिव आपने अपने वचन का बड़ा प्रतिपाल किया आपका सा कौन है जिसने अपने वचनको निबाहा ऐसा शब्द सुन सतीको अतिभय हुआ और शोचकर शिवसे पूछा कि आपने क्या पूरा उद्योग कियाहै आपतो बड़े सत्यवक्ता हैं मुझसे सत्य कहिये सतीने बार बार पूछा पर शिवने यह बात छिपा रक्खी तबतो सतीको निश्चय हुआ और कहा कि कुछ मैंने किया वह अज्ञानता और मूर्खतासे कियाहै अब आप पानी और दूध अलग करके देखें क्योंकि प्रीति की रीति यही है और मैं अपने कर्म पर आपही लज्जित हूं पर शिवने उस बातका बताना उचित न जान नाना प्रकार की कथा आदिके सुनानेमें उस बातको टालदिया अन्त को कहना पड़ा इस प्रकार वह कैलासपर्वतमें पहुँचे और शिव अपनी इच्छा का विचार मनमें कर बरगदके नीचे आसन जमा बैठगये और अपने स्वरूप का ध्यान किया और सतीमन्दिरमें पहुँच अतिखेदवान् हुई उनको एकदिन युगसमान बीतता था पर सिवाय उनके और सबको यह हाल मालूम न होने पाया और दिन २ दुःख बढ़ताजाता था मनमें कहती थीं कि यह हमारा दुःख कहनेके योग्य नहीं न मालूम कि इस दुःख समुद्रसे कब पार हूंगी मैंने शिव का कहना न माना जिसका फल यहहै ऐसा कौन तीनोंलोकमें बलवान् है जो शिवके विरुद्ध होकर किंचित् आनन्द उठावे और फिर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहती थीं कि हे शिव ! कुछ तुम्हारा अपराध नहीं है जो मैंने किया उसका फल पाया हे भाग्य ! तुझे ऐसा न चाहिये था कि मुझे शिव के विरुद्ध किया हे ब्रह्मा ! ऐसे समयमें हमारी सहायता करो और शरीर मेरा बदलजावे हे मृत्यु ! मैं तुमसे मांगती हूं कि तुम मुझे इस संसारसे उठालो यदि मैं तन मनसे शिवकी प्रीति करती हूं तो हे शिव ! मुझ पर दयाकरो कि मुझे मृत्यु प्राप्तहो और सती ऐसी दुःखी हुई कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और शिवको ऐसे ध्यानमें सत्तासी हज़ार वर्षबीते जब इतने समयके उपरान्त समाधिसे जागे तो सती जी सामने जाखड़ी हुई शिवने अपने सम्मुख बैठाला और उस बात को मिटादिया और कथा वार्त्तामें टालदिया जिससे सती को दुःख न हुआ और वह प्रसन्न रहनेलगीं और शिवने भी अपने वचन को न छोड़ा यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है कि सतीको पहिली बातका कुछ दुःख न हुआ और वह अगलीबातें सब भूलगईं शिव हर शरीरमें हैं और कई मुनियों का यह वचनहै कि शिवशक्ति की जुदाई उचित नहीं है यह बादके वचन हैं और शिवके चरित्र हर कल्पके भिन्न भिन्न हैं तो किसको कल्पभेद का वृत्तान्त मालूम है वह जो कुछ करें सब उचितहै सन्देह न करना चाहिये शिव और शक्ति का भेद अतिगुप्त और कठिनहै उसको कोई क्या जानसक्ताहै शेष और विष्णुभी उनके चरित्रके वर्णन करनेमें अशक्त हैं और शुक सनकादि और देवता उस को अप्रमेय जानकर अन्त नहीं जानसक्के और वेदभी सब कुछ कहते हैं परभी अलख पुकारते हैं यह जानकर भक्तोंको उचितहै कि निस्सन्देह होकर उनकी पूजा तपादि करें हे नारद ! इसी तरह बहुत दिनबीते तब शिवने और चरित्र किया जिसको देख सब की बुद्धि भ्रमित हुई अब हम वही वर्णन करते हैं मनलगाय सुनो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब हमने दक्षप्रजापतिका अभिषेक कर उसको सब प्रजापतियोंका अधिकार दिया तो वह अहंकारमें मग्न होगया जिससे उसकीमति भ्रष्टहोगई तुम आप अच्छी तरहसे विचार कर देखो कि प्रतिष्ठा पाकर किसको गर्व नहीं उपजा तो उस समय दक्षने सबसामां इकट्ठीकर प्रजापति यज्ञकरना चाहा और इसीइच्छा से कनखलतीर्थ परगया और सब मुनियोंको बुलाया और व्यास, ककुभ, गौतम, भरद्वाज, कश्यप, संत, सुमंत, त्वरित, कम्प, च्यवन, अगस्त्य, वशिष्ठ, वामदेव, जैमिनि, पिप्पल, पराशर, कृतु, वैशम्पायन, गर्ग, भार्गव, आसुरि, वीतहोत्र, भृगु, दधीचि, नारद आदि और सिवाय इनके सब देवता ब्राह्मण संसारभरके वर्तमान हुये और अनलभी अपने गणों समेत दक्षके यज्ञमें पहुँचे और भी उसके बुलानेसे प्रसन्नता पूर्वक विष्णुसमेत यज्ञमें सुशोभित हुये और इन्द्र अपनी स्त्री शची समेत ऐरावत हाथी पर चढ़ पहुँचे और पावक मेषपर और यम भैंसेपर और वायु हरिण पर और शिवके मित्र कुबेर पुष्पक विमान पर चढ़ कर यज्ञशालामें आये और वरुण भी अपने वाहन पर आरूढ़ पहुँचे और सूर्य अपनीस्त्री समेत और चन्द्रमा अपनीस्त्री रोहिणीसहित आये सो दक्षने अतिआनन्दमें मग्न हो सबका आदर सन्मान किया और सबके ठहरनेके लिये विश्वकर्माके बनायेहुये मन्दिर बतला दिये जिन में सब स्थित हुये उस समय सतीजी गन्धमादन पर्वतपर अपनी सखियों समेत लीला कररही थीं देखा कि चन्द्रमा अपनी स्त्री सहित चलाजाताहै सतीने विजयानामी अपनी सखीको आज्ञा दी कि तुम चन्द्रमासे जाकर पूछो कि कहां जाताहै विजयाने चन्द्रमाके निकट जाय कहा कि सती पूछती हैं कि तुम अपनी स्त्रीसहित और ऐसे ठाटसे कहां जाते हो यह बात सुन रोहिणी बोली कि सतीके पिता दक्षप्रजापति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कनखलमें यज्ञ करते हैं और वहां बड़ा उत्सवहै और उनके बुलानेसे सब देवता वहां गये हैं वरन वहां ब्रह्मा विष्णुजीभी शोभित हैं वह देश सर्वसृष्टिसे पूर्ण है तुम तो ऐसा पूछती हो जैसे कोई मूर्ख हँसीसे पूछे क्या कारण है कि तुम ऐसे यज्ञको नहीं जानतीं क्योंकि वहां सब अपना अपना भागलेनेगये हैं तुम अपनी इच्छासे नहीं गईं वा दक्षने तुमको नहीं बुलाया यह सुन विजया लौटआई और जो कुछ रोहिणी से सुना वह सती को सुनाया सतीजीको अतिदुःख हुआ कि क्यों माता पिताने हमको भुलादिया और हम और शिव को नहीं बुलाया यह विचार सती तुरन्त शिवके निकट गईं और उसी समय चन्द्रमाभी अपनी स्त्री रोहिणी समेत दक्षके पास गया उस समय की सामां और उसकालके आनन्द जो दक्षयज्ञमें थे वर्णन नहीं होसक्के जब सब मुनि देवता कनखलमें जो हरद्वारमें है आगये तब दक्षने यज्ञका प्रारम्भ किया और अपनी स्त्री सहित यज्ञमें प्रवर्त्तहुआ और भृगुमुनि यज्ञ करानेवाले ठहरायेगये और दक्षने ऐसे यज्ञमें सबको वर्त्तमान देख वैरभाव अङ्गीकार किया ऐसे समय में दधीचि हमारे पुत्रने सदाशिव को यज्ञशालामें न देख आश्चर्यसे कहा कि यह बात हम सब वर्त्तमान मनुष्य कहते हैं कि चाहे इस उत्सवमें सम्पूर्ण देवता मुनि ब्रह्मा के पुत्र आदि आये हैं पर हम सत्य कहते हैं कि यह सभा सदाशिव विन अशोभितहै सदाशिव शुभबातोंके मूल हैं हम उस पुरुष परमात्मा को नहीं देखते जिसको वेद पुराण नेति २ बखानते हैं वह सब देवतों का स्वामी है वह इस जगहपर क्यों नहीं है तुम क्यों ऐसे शिव को भूलगये और हे दक्ष ! तुम्हारी बुद्धि इसतरह पर भ्रष्ट होगई अब भी कुछ काज नहीं बिगड़ा तुम जितने देवता मुनि हो और ब्रह्मा विष्णु भी सब जानकर शिवको प्रसन्न करलेआवो और सतीजी को प्रसन्न कर शिव सहितलावो और निश्चय जानो कि शिवके आने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विना यह यज्ञ पूर्ण न होगा आश्चर्य है कि ऐसे मनुष्य को जिसके स्मरण अथवा नामलेनेसे सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होजाते हैं उसको क्यों-कर भूलगये और नहीं बुलाया और इसबातको अच्छीतरह पर समझो कि जबतक शिव न आवेंगे यह यज्ञ पूर्ण न होगा दधीचिके यह वचन सुन दक्ष महाक्रोधित हुआ और हँसकर बोला कि जिस जगह सबदेवतोंके स्वामी बैठे हैं वहां सबधर्म वेद और शुभकर्म पूर्णरूपसे वर्तमान हैं सो ऐसे विष्णु तो हमारी यज्ञमें विराजमान हैं अब क्या बाक़ीहै हमको बतलादीजिये हमारी यज्ञमें तो अपने २ गणों समेत ब्रह्मा, वेद, धर्मशास्त्र, सर्वपुराण, उपनिषद् भी आचुके हैं सो मेरे बड़े भाग्य हैं कि इन लोगोंने मुझ पर अनुग्रह किया और आज मेरेयहां इन्द्र सब देवतालिये और विष्णुभगवान् और तुम्हारे समान बहुत मुनि सुशोभित हुये हैं और सब आचुकेहैं सो शिवके आनेकी क्या आव-श्यकताहै तुम सब मिलकर हमारी यज्ञको पूर्ण करो और मैंने अपनी भाग्य और ब्रह्मा की आज्ञा को मानकर अपनी कन्या शिवको दी यद्यपि यह विवाह अनुचित हुआ क्योंकि वह कुलवान् न था संसार से मुख फेरे महा अहंकारी इसपर यह कि माता पिताहीन जो उसे किसी कर्मसे निषेध करे वह भूत प्रेत पिशाचों का स्वामीहै वह अवधूत है तो ऐसे शिवको ऐसी यज्ञमें बुलानेकी आवश्यकता न जानकर नहीं बुलाया इस लिये हम तुमसे कहते हैं कि ऐसा वचन फिर मुखपर न लाना अबभी उचितहै कि तुम सब मिलकर हमको हमारी यज्ञके पूर्ण करनेसे आनन्द दो ऐसे वचन दक्षके सुनकर किसीने कुछ उत्तर न दिया और यह चुप रहना उनका सबके लिये महापाप हुआ क्योंकि सबने शिवनिन्दा अपने कानों सुनी पर फिर भी दधीचिने कहा कि विना शिवके यह यज्ञ नहीं है वरन तुम सबको छलहै जो करते हो यह दक्ष बड़ा अधर्मी और मूर्ख है जो शिवनिन्दा कररहाहै और जो कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसने शिवको नहीं बुलाया तो यह यज्ञ भी पूरा न होगा और जो इस यज्ञमें रहेगा उस पर बड़ा दुःख पड़ेगा यह कह दधीचि तो उस सभा से उठकर चलेगये और बहुतसे मुनिलोग भी दुःखी होकर उठगये ऐसे मुनिलोगोंको अपनी सभासे जातेहुये देख दक्षने अति प्रसन्नता से कहा कि क्या अच्छी बात हुई कि शिवके प्यारे और शिवभक्त जो हमको दुःख देते थे अपने आप उठगये अब तुम सब मिलकर हमारे यज्ञ को पूर्णकरो तब उसी समय यज्ञ का प्रारम्भ होगया और जैसा चाहिये वैसा सब काम होनेलगा ॥

तेईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सतीने अपने पिताके घर यज्ञका हाल सुनकर चाहा कि मैंभी जाऊं और इस इच्छासे अकेली सदाशिवके पास गई और देखा कि सेवकगण शिवजीकी सेवामें लगे हुये हैं अर्थात् चण्ड, मुण्ड, बाण, भृङ्ग, नन्दी, महाकाल, महामुण्ड, महाशर, नन्द, उदातकामी, धूम्र, विभ्रउदात, भीषण, सुपतकेतु, धूम्रविलोचन, सबलबाहु, धूम्रकेतु, धूमलचरणादि और बहुत से गण चरण सेवा कर रहे थे उस समय शिवजी का रूप महाभयंकर था नग्नरूप केवल रुद्राक्ष धारण किये हुये जटा लटक रहीं शरीरभर भस्म से शोभित ऐसे स्वरूप से शिव को देख सती ने प्रणाम किया शिवजी ने अति प्रीति कर सती को बैठा लिया यद्यपि शिव सब जानते थे परन्तु संसारी लीला के निमित्त सतीसे पूछा कि यहां आनेका कारण कहो सती अतिप्रसन्न हो कहने लगीं कि क्या आपको भला मालूम नहीं हुआ जो दक्षने यज्ञारम्भ किया है मित्रों और बान्धवोंकी भेंट बड़ा धर्म है इसलिये अच्छे लोग भले बन्धुओंकी संगति स्वीकारकरते हैं और बड़ा आनन्द उठाते हैं इस लिये उचित है कि आपचलकर यज्ञको पवित्रकरें और मुझे अपने साथ लेजाकर मेरी इच्छा पूर्णकरें और ब्रह्मा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विष्णु आदि सब हमारे पिता की यज्ञ में पहुँचे हैं और आप नहीं गये प्रायः आपको यह यज्ञ अच्छा मालूम नहीं हुआ आप मुझसे न जाने का हेतु विस्तारसे कहिये मैं तो आपकी दासी हूं मेरी बड़ी इच्छा है कि अपने पिताके घर जाऊं आप मुझे साथ लेकर चलिये यह सुन शिव मुसकराकर कहने लगे कि तुम्हारे पिता दक्षने हमको निमन्त्रण नहीं भेजा और वैर रखकर हमारा अनादर किया है और केवल तुमको नहीं बुलाया बाक़ी और सब लड़कियां वहां पहुँची हैं इसका कारण केवल वैर है और बिन बुलाये जाना उचित नहीं यद्यपि धर्मशास्त्र कहता है कि अपने पिता, मित्र, गुरु और स्वामी के घरमें बिन बुलाये जाना उचित है पर शत्रुता न होनी चाहिये और बिन बुलाये किसीके घर जाना मृत्युसे अधिक है और अनादर और लोकनिन्दा का कारण है यह सुन सती बोलीं कि हे स्वामिन्! आप इस वैर का कारण बतावें शिवने पहिला वृत्तान्त सब कहदिया और कहा जो बिन बुलाये इन्द्र भी किसी के घर जावें तो वह भी तुच्छ मानहीन समझे जाते हैं इस लिये उचित है कि दक्षके यज्ञमें न जावो नहीं तो बड़ा दुःख होगा और शिवने बहुत प्रकारसे सती को मनाही किया पर यह समझना सती को अच्छा मालूम न हुआ और दक्ष पर अति अप्रसन्न और कोपित हो कहने लगीं कि हे शिव! आपतो तीनों लोकके आनन्द देनेवाले हैं आपका स्मरण देवता करते हैं और आप यज्ञरूप और यज्ञ कर्म और यज्ञके फल हैं आपकी दृष्टिमात्र से तीनों लोक तृप्त होजाते हैं और आप से यज्ञ पवित्र और पूर्ण होता सो मूर्ख दक्षने आपको न बुलाया मुझे चिन्ता है कि यह यज्ञ क्योंकर पूर्ण होगा मेरा पिता क्यों ऐसा अन्धा होगया मुझे बड़ी चिन्ता है यदि आप आज्ञादें तो दक्ष के यज्ञमें जाकर उसके शील व दुश्शीलता अथवा उसके वैरभाव को देखूं जो कि शिव को कुछ और लीला और चरित्र करना था तो सती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को जानेकी आज्ञा देकर कहा कि तुम नन्दीपर सवार होकरजावो और अपने साठहजारगण सतीके साथ देकर बिदा किया और अच्छे २ वस्त्र भूषण दिये और उत्तम स्वरूप सती का करदिया हे नारद ! शिवने ऐसी माया की कि सती बड़ी धूम धामसे चलीं जिनके शीशपर छत्र भारी मोल का और जिन ब्राह्मणों का शब्द तोते और पपीहेके समान था वे आगे आगे मधुरवाणीसे शिवका यश गाते हुये चले और सतीने जैसी उस समय अपनी शोभा प्रकट की ऐसी किसी समयमें प्रकट न की थी चलनेके समय एक बड़ा शब्द हुआ कि कोई कूदता कोई उछलता और सब प्रसन्न और औरोंको भी आनन्द देते हुये चलते कोई सती का प्रताप वर्णन करता कोई शिवमहिमा गाता और महा प्रसन्न नाना प्रकार की गतिसे चलते सतीकी सेवा करते हुये दक्षके यज्ञमें जा पहुँचे॥

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! सती दक्षसे भयभीत यज्ञशालामें पहुँचीं पर किसीने बात तक न पूछी और न जाना कि यह जगन्माता हैं और दक्षने न तो मान किया और न कुशल पूछी यह देख सती की बहिनोंने जो वहां थीं हँसकर सती की निन्दा की और सती ने जब देखा कि यज्ञमें सबका भागहै और शिवका भाग नहीं तो मनमें महा-क्रोध किया और अपना अनादर देख शिव का स्मरण किया और कहा कि अपने क्रोधसे दक्षको भस्मकर डालूं फिर सोचा कि यह काम अच्छा नहीं बरन हमने पहिले वचन दिया था कि जब दक्षने हमको बड़ा तप करके प्रसन्न किया था हमने उससे कहा कि हम जब तुममें कुछ गर्व अथवा अपने मान की कमी देखेंगी तो तुरन्त अपने शरीर को छोड़देंगी और दक्षने मान लिया था सो अब वही समयहै और फिर सतीने इस बातको सोचकर बड़ा खेद किया और कहा बड़ा पश्चात्तापहै कि शिव अपुत्ररहे और हमारे विवाहका फल न मिला पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमारे सिवाय और कौन स्त्री है जो हमारे पीछे शिवको प्रसन्नरक्खेगी और फिर शिवही दूसरी स्त्री को स्वीकार न करेंगे अब हम अपनी प्रतिज्ञा पर अपने शरीरको छोड़कर हिमाचल पर्वत में उपजेंगी और हिमाचलकी स्त्री मुझे अपनी लड़की की तरह पालन करके लड़की समझेंगी और मैं भी उसे माता जान आनन्द दूंगी और शिवका तप कर उनके साथ ब्याही जाऊंगी उस समय मेरी सब लज्जा जाती रहेगी और संसारके मनोरथ पूरे होंगे और वह शिव जो सृष्टि भरके स्वामी हैं मुझ पर कृपा करेंगे यह विचार कर दक्षसे क्रोधित होकर कहा कि हेपिता ! तुमने शिवको निमन्त्रण क्यों नहीं भेजा क्या आपकी शुद्ध बुद्धि भ्रष्ट होगई या किसीने बुरी सम्मति दी जिस शिवस्वामीसे तीनों लोक पवित्र होते हैं उनको आपने नहीं बुलाया आपकी बुद्धि नष्ट होगई और शिव बिन सबकर्म अशुद्ध होजाते हैं और न तो यहां और न कुछ परलोक में कुछ बात बन पड़ेगी और जो तुमने बिना शिव यज्ञ किया तो क्या तुमने अन्य देवताओंके समान शिवको समझ लिया देखो ब्रह्मा विष्णु और देवतोंने जिनके चरणों का ध्यान करके सबके स्वामी होकर बड़ापद पाया ऐसे शिवको तुमने न पहिचाना और फिर ब्रह्मा विष्णु और सनकादिकसे कहा कि तुम शिव विना क्योंकर इस सभामें आये इसी तरहसे सबको ऐसी बातें और शिवका यशवर्णन कर एक २ को अलग २ लज्जितकिया विष्णुसे कहा कि तुम शिवको क्या नहीं जानते जिनको वेद सगुण और निर्गुण करके बखानते हैं हमने तुमको हजारों बेर समझायाहै और फिर भी तुम मार्ग को भ्रष्ट करते हो और हे ब्रह्मन् ! तुमभी बुद्धिहीन होगये तुम शिवके असंख्य बलको नहीं जानते और यद्यपि शिवने हजारों बेर कहा है पर तौ भी तुम्हें बुद्धि न हुई तुम्हारे पांचमुख थे शिवनिन्दा की इससे चारमुख तुम्हारे बाक़ीरहे और हे विष्णो ! तुम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्या वह शिवमहिमा भूलगये जब कि उन्होंने शम्बर को जलादिया और फिर इसयज्ञमें आये हो और हे देवताओ ! तुमने अपनी शुद्ध बुद्धि क्यों खोई हमने समझाहै कि तुम सब बड़े अभागी होचुके और शिव बिन इस यज्ञमें चलेआये और हे भृगु, अत्रि, वशिष्ठ ! तुमने यह बात बुद्धिके विरुद्ध क्यों की तुमको शाप देनेकी बड़ी शक्तिहै क्या तुम शिवजीके बलको नहीं जानते और शिवको किसीका शाप नहीं लगता आपही शापदेनेवालोंकी हानि होती है जैसा कि एकबेर शिवने लीला करनेके लिये अपना मगररूप धरा और दार्बिनपुर को गये और भक्तकी परीक्षाके लिये कुछ परीक्षाकी जिसको मुनिलोगोंने न जाना और शिवको शाप दिया सो वह शाप उन्हींके लिये बुरा हुआ तीनोंलोक जलनेलगे तब शिवने अपने लिङ्गको पृथ्वीपर गिरा दिया जिससे तीनोंलोक फिर जी गये इतना कह फिर सतीने अति क्रोधकर ब्रह्मा और विष्णुसे कहा यह जो कुछ दक्षने कियाहै उसके मूल तुम दोनों हो क्योंकि दोनों इस यज्ञमें आये और बुद्धिके विरुद्ध कार्य किया सो जैसा तुमने कियाहै वैसा फल पावोगे जिससे चारों वेद और सृष्टि उत्पन्नहुई ऐसे शिवको तुमने कुछभी न जाना जो तुम दोनों दक्षके यज्ञमें न आते तो उसका इतना अहंकार न होता जो सब देवता मुनिआदि न आते तो दक्ष ऐसी मूर्खता न करता और सब लोगों की बुद्धि कैसी विपरीत है कि मुनि दधीचि का सभा से उठजाना न भाया ऐसी बातें सतीकी सुनकर दक्ष अतिक्रोधितहो कहनेलगा कि हे अज्ञानिनी ! यह बात क्योंकर और क्या बकती है मुझसे और तुझसे कुछ पिता पुत्रीका सम्बन्ध नहीं है जो मन चाहे तो यहां रह नहीं तो अपने घर जा तुमसे कुछ प्रयोजन नहीं है और तेरा पति बहुतही अशुभ है उसका नाम तुच्छ शिव है जो तुच्छ और उसमें केवल दो अक्षर हैं वह भूत प्रेत पिशाचादि साथ लिये हुये चिता और श्मशानों में फिरा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करताहै और उसके मातापिता कुलजाति पांति कुछ नहीं चाहे उसका वर्णन वेदमें हो पर उसमें शुभगुण पाये नहीं जाते इस लिये हमने उस को अपने यहां नहीं बुलाया क्योंकि ऐसे मनुष्यके लिये यज्ञमें आना निषेध किया गया है और हे सती ! मैंने बड़ी मूर्खता और बुद्धि की हीनताकी कि दूसरेके वशमें हो तुम्हारी ऐसी उत्तम पुत्री को ऐसे औ-ढरदानी को देदिया मुझे बड़ा खेदहै अब तुमको उचितहै कि मेरी यह बात समझ क्रोध छोड़दो ऐसी बातें पिताकी सुन सती फिर क्रोधित हुई और अपने पिता को अति पापी समझा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सतीने कहा कि शिवका अपमान नहीं सुना जाता यदि कोई शिवकी निन्दाकरे तो उचितहै कि उसकी जिह्वा काटडाले चाहे कुछ हो और जो अपना वश न चले तो दोनों कान बन्द करके वहांसे उठजावे या अपने को अग्निमें जलावे तब शुद्ध होवे और यह बड़ा पापहै और लोक परलोक दोनों स्थानोंमें आनन्द नहीं मिलता और शिवनिन्दा करनेवाला जब तक कि सूर्य चन्द्रमा स्थित रहते हैं तब तक वह नरकमें बसताहै यह बात वेद कहते हैं यह सोच सती को इस बात का बड़ा पछतावा हुआ कि मैंने शिवनिन्दा सुनी और ऐसे दुःख की दशामें इस बातसे और भी अधिक खेद होताथा कि मैं क्यों यहां आई और अब क्या मुख लेकर शिवके यहां जाऊं और अवश्यहै कि शिवके शुभचरणों को देखूं पर वहां जाकर शिवसे क्या कहूँगी मुझे दोनों तरहसे कठिनताहै यह विचार अतिक्रोधसे शिव शिव कहने लगीं और सबको बड़े जोरसे झिड़ककर किसीकी बड़ाई का विचार मनमें न लाई और कहा कि तुम यज्ञशालाके मनुष्य सुनो मैं सच सच कहतीं हूं कि इस समय तुम नहीं समझते हो पर सब तुम पीछे से पछतावोगे तुममेंसे बहुतसे कालवश होंगे और बहुतसे भागकर कहीं किसी घरमें होंगे इससभामें जिस किसीने शिवनिन्दाकी है और जिसने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसे सुनाहै उसे महापाप हुआहै सो इसकाफल तुम सबको तुरन्त मिलेगा हम सच कहती हैं और हे दक्ष ! पीछेसे तुम बहुत पछतावोगे क्योंकि तुमने शिवनिन्दा बहुतकी है ऐसे शिव जो सबको सुख देनेवाले हैं उनको तुम और देवतोंके समान जानते हो और नहीं जानते कि वे संसारके बड़े हितैषी हैं इसका फल जल्दी पावोगे और जिस पुरुषका न कोई शत्रुहै और न मित्र उसको कोई न प्रियहै न अप्रिय वही सर्वमें स्थितहै ब्रह्मा विष्णु उसकी सेवा करतेहैं ऐसे मनुष्य बिन तुम क्या और तुम्हारा यज्ञ क्याहै और वेदमें मनुष्योंके तीन प्रकार वर्णन किये गये हैं जो किसीके गुण और शीलमें पाप लगावे उसको अधम कहते हैं और जो किसीके पाप पुण्यका यथार्थ बखान करे उसको मध्यम जानना चाहिये और जो किसी का पाप छिपावे बरन उसकी प्रशंसा करदेवे वह उत्तम कहा जाताहै और इनमें भी जे बहुत उत्तमहैं वे केवल गुण वर्णन किया करतेहैं और सब को प्रसन्न रखते हैं तो इनतीनों प्रकारोंसे हमने जाना कि तुम अधम हो क्योंकि शिवनिन्दा तुमने की और जितने बड़े पाप जैसे झूठ बोलना अहंकार क्रोध लोभ आदि हैं उन सब से बड़ापाप निन्दा है और शिव शब्दमें जो दो अक्षर हैं जो मनुष्य उन्हें मुखपर लावे उसके सब पाप जल जावें ऐसे नाम की तुम निन्दा करते हो और जो शिव अनादि और अप्रमेयहैं उनसे तुम द्वेष रखते हो जिन्होंने शिवको जानलिया है वे शिव की प्रीति में मग्नहैं और शिव के चरणों पर ब्रह्मा अपना शिर रखते हैं उनकी तुम निन्दा करते हो शिव संसारके उपजानेवाले हैं और वही पालन करके फिर प्रलय कर देते हैं यह शरीर मेरा जो तुमसे उपजाहै उसका त्याग करूंगी कि मेरा खेद दूर हो और तुमने जो कहा कि शिव कोई कर्म नहीं करता और अशुभ है सो वह तो ब्रह्महै शरीर रहितहै अनादिहै माया धारण किये हुये है उसको कर्म

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से क्या प्रयोजनहै और जो तुमने कहा कि वह चिताभस्म लगाये रहते हैं और नग्न निर्धन और अवधूत हैं हमको केवल लिङ्ग प्रसन्नता देनेवालाहै अब मैं यह शरीर जलाकर अन्य तन धारण करूंगी जिस से शिवको हर्ष प्राप्त होगा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह कह सतीजी धरती की उत्तर दिशामें बैठगईं और स्नान कर सम्पूर्ण शरीर अपना वस्त्रसे लपेट योगधारण कर युक्तिपूर्वक आसन लगा प्राणायाम किया पहले समान वायु को नाभिचक्रमें लाकर उदानको ऊपर चढ़ाया और शिवकी मूर्ति मनमें स्थित की और दोनों भौंहके बीच दृष्टि जमाई और अपने पतिके चरणोंका ध्यान धर अग्नि और वायु प्रकट की ऐसे पवित्र अग्नि और पवनसे अपने निष्पाप शरीर को जलादिया यह दशा देख चारों ओरसे हाहाकार का शब्द हुआ और सबलोग दुःखी हो भयभीत हुये और बीरनी दक्ष की स्त्री ने बड़ा शोक किया उस समय शिवके गण कुपित हो कहने लगे॥

पच्चीसवां अध्याय॥

शिवगण बोले कि दक्ष की मूर्खता देखो कि सती को जलने से मना नहीं किया यह शिव का शत्रु संसार में निन्दा पावेगा और यह अहंकारी मूर्ख कामी करोड़ों नरकों में डालाजावेगा यह कहते २ वह सब दक्ष के मारडालने और यज्ञ के भ्रष्ट करदेने को खड़ेहुये तो भृगुने गणोंकी यह इच्छा जान रक्षा के निमित्त अच्छी पवित्र आहुति यज्ञ में छोड़ी और होम करते २ यज्ञसे दैत्य उपजे जो महावीर धीर बलवान् थे उन्होंने लोकमें भूनाम पाया वे गिनती में एकहज़ार थे महाभयानक रूपसे शिवगणोंके सामने हुये ऐसे समय में शिवने यह चरित्र किया कि अपने गणों का बल हरलिया और वह महानिर्बल होगये और दूसरी यह बात हुई कि गणों में हाहाकार शब्द होनेलगा ऐसा शब्द सुन जो द्वारपर गण स्थित थे वे आश्चर्य में हुये और आत्मघातपर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तत्परहो सतीके साथ मरनाचाहा तथाच किसीने अपने शिरको और किसी ने अपने अन्य अङ्गको काटकर अपने आप को वधकरडाला इसी प्रकार शिवके बीसहज़ारगण उसी स्थानपर जहां सतीने अपने को जलायाथा मरगये यह दशा देख सब सभाके लोग अति चिन्तित हुये और हम और विष्णुके भी ऐसे समयके देखनेपर जल्दी २ श्वास चलनेलगी और सर्व मनुष्य चुप होगये कोई तो विष्णुकी स्तुति करने लगा कोई किसी की पर यज्ञशालामें दुःख फैलगया प्रसन्नताका कोई चिह्न बाकी न रहा और दक्षकी मूर्खतासे सबको यह पाप लगा निदान जो गण शेष रहगये थे उन्होंने जाकर शिवसे यह सब वृत्तान्त कहा और यहभी कहा कि दक्षने सतीका अतिनिरादर किया और सिवाय दक्षके औरभी किसीने सतीका कुछ मान न किया अब जो उचित हो वह कीजिये शिव यह वृत्तान्त सुन महाक्रोधित हुये उस समय नारदने भी शिवजी के निकट जाकर जो कुछ कि हुआथा वह सब वृत्तान्त वर्णन किया और वेदके अनुसार बदला लेना चाहा और कहा जो आप दक्ष को दण्ड नहीं देते तो वेदकी आज्ञा और मार्ग झूठ होता है इसी प्रकार देवतों को दण्ड न देना यहभी नीतिके विरुद्ध है और दधीचिका वचन जो पहला है मिथ्याहोगा और खेदहै कि ब्रह्मा विष्णु भी माया के वशमें पड़गये दधीचिके वचन को न माना और ऐसा उत्पात मचाया और दक्षसे यह काम कराया यह सुन शिवजीने विचारा यद्यपि ब्रह्मा विष्णु देवता ब्राह्मण मुझे बहुत प्रिय हैं पर वेद की आज्ञा सर्वोपरि है सो अपने गणों को निर्भय किया और दिव्यदृष्टि से यज्ञ का सर्ववृत्तान्त अवलोकन किया और ऐसे कुपित हुये मानों शिव रुद्र होकर प्रलय करना चाहतेहैं और अपने दोनों होंठ दांतसे काटनेलगे और एक जटा अपने शिरसे उखाड़ कर पहाड़ पर मारी जिससे एक महाभयानक शब्द सुनाई दिया और तीनोंलोक कांप उठे उस जटा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से टूटकर दो टुकड़े बराबर अलग होगये जड़की ओरसे वीरभद्र उपजे जिन्होंने यज्ञ को नष्ट करडाला उनका शरीर महाश्याम और केश कालीघटा के समान थे और वह अग्निके समान मालूम होताथा ऊंचा इतना मानों वे परिश्रम आकाश छुआ चाहता है शोक दुःख दूर किये निर्भय मुण्डोंकी माला पहिने और बड़े भयानक शस्त्र लियेहुये शिर में जटारखाये और जिनकी इच्छा सदा युद्धकरने की थी और भौंहें धन्वा ऐसी बहुतटेढ़ी महाभयानक शब्द करतेहुये सिंहके समान गर्जते तीनों शिरघुमाते सहस्रभुजा और शिरसे प्रणाम करते वीरभद्र उपजे और अपने शरीर के रोमों से बहुत गण उपजाये जो सबबातों में उन्हीं के समान थे वे कैलास पर्वत पर शिवकी सैनके अनुसार शब्द कररहे थे उस समय के शब्दका कुछ वर्णन नहीं होसक्ता एक जटा के टुकड़े से तो यह सेना उपजी और दूसरे टुकड़े से श्रीमहाकाली उपजीं उनके साथ भूत प्रेतादि करोड़ों प्रकट होकर कूदने और नानाप्रकार की लीला करने लगे और शिवके क्रोध के कारण जो उस समय श्वास निकले उससे सौ प्रकार के और तेरह भांति के सन्निपात प्रकट हुये जो संसार में बड़े उपद्रव कररहे हैं इस तरह से गणों की बड़ी सेना उपस्थित हुई जो यह जाना जाता था कि प्रलय को करेगी ऐसे समय में वीरभद्र ने दोनों हाथ जोड़ शिवसे बिनय की कि हमको आज्ञादीजिये कि जो उचित हो वह करें जिसने आपकी अवज्ञा की हो जो काल भी हो तो उसको भी नष्ट करदेवें यह सुन शिव बोले कि कनखल में दक्ष अहंकारसे यज्ञ करता है उसने हमसे शत्रुता कर हमें नहीं बुलाया और जोकि सती संसारी रीतिके अनुसार उसके घर गईं तौभी उसने कुछ न समझकर बहुत व्यंग्य वचन कहे और यज्ञमें हमको भाग न दिया और दक्षके सिवाय और किसीनेभी सती का कुछ आदर न किया हमारा ऐसा अपमान देख सती जलभी गईं पर किसीने निषेध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न किया इनके सिवाय हमारे भक्त दधीचि ने उस सभा को यह शाप दिया कि तुम ने जो शिवका अपमान कियाहै तो तुमको उसकाफल मिलेगा इस लिये तुम जाकर यज्ञ को भ्रष्ट कर डालो और दक्ष का शिर काटकर किसी प्रकारका कुछ विचार न करो और जिसको जैसा दण्ड चाहिये उसको निर्भय वैसा दण्ड देना कि वेद और दधीच्यादि हमारे भक्तों का वचन सत्य हो और दुर्वासा, कौशिक, मार्कण्डेय, कम्बु, उपमुनि, इन्द्र, गौतम, पुलह, पुलस्त्य, बृहस्पति, सनकादिक चारोंभाई जो मेरे भक्त हैं वे सब निराश होकर यज्ञशाला में से चलेगये और बड़ा भारी शाप दियाहै कि यज्ञ भ्रष्ट होजावे सो ऐसे अपने भक्तों के वचन को सत्य करना चाहताहूं इस लिये तुमको आज्ञादी है कि तुम निर्भय होकर सब गणों को साथ ले दक्षके यज्ञमें जावो यह शिवजी की आज्ञा जिससे क्रोध चिन्ता और हर्ष की वृद्धि हो वीरभद्रने सुनी और प्रसन्न हो महाभयानकरूप से गर्जा और फिर शिवजी की परिक्रमा कर और उत्तम स्तोत्रसे स्तुतिकर करोड़ों सेना और काली को साथ ले चला ॥

छब्बीसवाँ अध्याय ॥

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनक! यह कथा सुन नारदने ब्रह्मासे कहा कि जो नाना प्रकारके महाभयानक यूथप वीरभद्रकेसाथ गये उनके नाम सुना दीजिये और यहभी कहिये कि यज्ञ में जाकर उन्होंने क्या कामकिया और किसको क्या दण्डदिया मुझे यह बड़ी भारी चिन्ता है कि इसओर तो शिवजी की ऐसी बलवान् आज्ञा और उस ओर विष्णु महाराज सहायक और यह कि विष्णुने सहायताकी या नहीं और जोकि दोनों पल्ले भारी हैं नहीं जाना जाता कि शिव और विष्णु क्या चरित करेंगे मैंने शिव और विष्णुका युद्ध कहीं नहीं सुना पर इस समय सबसामग्री उपस्थित है ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सदाशिव परब्रह्म हैं उनके सब सेवक हैं वे अपनी इच्छाके अनुसार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबकुछ करते हैं उनके भक्त और चरणसेवक सब हैं और हम विष्णु हर उसीके तीनस्वरूप हैं तुम कुछ सन्देह मतकरो जो सेना वीरभद्र के साथ चलीं उनके अधिप और जितनी सेना उस वीरके साथ थीं उनका विस्तार यह है शंखकरण के साथ एककरोड़ और कैयकराक्षस के साथ एककरोड़ और विकृतके साथ आठकरोड़ और प्रियात्रिकके साथ नौकरोड़ और सुरमन्तकके साथ छःकरोड़ और विकृताननके साथ में भी उतनी और जालकके आधीन बारहकरोड़ और दुन्दुभी के नीचे आठ करोड़ और उतनीही आवेश के साथ थी और अनल-वरण व घण्टाकरण, कुकट, चित्रासन, संवर्त, रटिभृङ्ग, बकुली, नन्दन, प्रियभानु, सुरसरिनन्द, तारक, छाग, चण्ड, कालपुङ्ग, कपर्दि,शूलकरण, पिङ्गल, मान, सुकेश, अङ्गद, भारभूत, मणि, भद्र, लाङ्गूल, बिन्दु, मयूराक्ष के साथ चौंसठ २ कोटिसहस्र सेना जुदी २ वीरभद्र की सहायता के लिये चली इसके विशेष कन्दक और कन्दूक के साथ एक २ करोड़ सेना थी और यूथप बिष्टनामी था उसके साथ आठ करोड़ सेनाथी और सन्दारक के साथ छः करोड़ और कपाली के साथ पांच करोड़ और पिप्पल के साथ एक हज़ार और सनाद के साथ भी उतनीही और कुन्दी के साथ बारह करोड़ और शुण्डी के साथ भी उतनीही और बुद्धतीपन के साथ आठ करोड़ और महाकेशके साथ एककरोड़ हज़ार और प्रेत के साथ बारह करोड़ और अतुलवदन के साथ एककरोड़ और महाकालके साथ सौकरोड़ व कालक और कालके साथभी उतनीही और इतनीही अग्निके और सन्नाह वीरके साथ सेना चली और रविमूर्द्धा एक करोड़दल साथ ले क्रोध का भरा चला और कोकिल और अमोघ सुमन्त्रक इनतीनोंके साथ एक २ करोड़ सेना चली और काकपाद, सन्तानिक दोनों भटों के साथ में साठ २ कोटि वीर थे औ क्षुधपिङ्गल और पिङ्गलके साथ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नौ २ करोड़ सेना थी और नीलनाम जो भट था उसके साथ नौ कोटि वीर थे और पूर्णभद्रभी उतनाही कटकलियेथा और चतुर्वक्र सातकरोड़ लककेश, संवर्तिक, लोकानिक, मैत्र, भालकेतु इनके साथ सहस्र कोटि भूत थे और तीनहज़ार दिव्यात्मके साथ एक प्रकार कीसी सेना थी और काष्ठागूढ़ के साथ चौंसठ कोटि और पञ्चवदन, वृष षडानन, विरूपाक्षभी चौंसठ कोटि भटोंके अधिपतिथे और सुकेशभी चौंसठकोटि सेना लिये हुये था और शिलाद मुनिके पुत्रके साथ एक कोटि और केतुके साथ उतनीही और उसकी आधी सेना श्वेतनाहके साथ थी और क्षेत्रपालके साथ असंख्य कटक चला और भैरव जो यूथपों का भी अधिप था और आपसे शिवरूप है वहभी सेनापूर्वक चला उनके चलनेके समय बड़ा हाहाकार हुआ और उनके साथ असंख्य कटक चला और नौ काली अपने २ स्वरूप से साथ थीं उनके नाम यहहैं काली, कात्यायिनी, ईशानी, चामुण्डा, मुण्डीरमर्द्दनी, भद्रकालिका, भद्रा, त्वरिता, वैष्णवी ये नवदुर्गा नाचती हुई भैरवके साथ चलीं और इनके साथ महा भयंकर कटक था अर्थात् शाकिनी, डाकिनी, भूत, प्रेत, लङ्किनी, मसान्ती, कूष्माण्डी, ब्रह्मराक्षसी, योगिनी के चौंसठ समूहों सहित चले सो हम कहां तक हरएक प्रकार को वर्णन करें कि जैसा कटक यज्ञके विध्वंस करने को चला और ऐसी गर्द धरतीसे उठी जो आकाशतक छागई सूर्य छिप गये मानों अंधियारा होगया उस समय बड़ा भयानक अंधियारा प्रकट हुआ यह सेना सब दक्षिण की ओर चली और हरद्वार कनखल के समीप जा पहुँची उस समय यज्ञमें नाना प्रकारके अशकुन होनेलगे ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जो कुछ उस समय यज्ञशालामें अशकुन हुये वह सब कहताहूं आकाशसे पिसी हुई हड्डियां वर्षने लगीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और बहुतसी आश्चर्यकी बातें हुईं जिससे कोई कर्म और विचार शेष न रहा और तीनों प्रकारके दुःख सबको हुये कहांतक वर्णन करूं कि ऐसे अशकुन और आश्चर्यकी बातें देख सब यज्ञके लोग बड़े अचम्भे में हुये और उनके मनोंमें महादुःख उत्पन्न हुआ उनके मुखसे कुछ वचन न निकला और सबके सब थर थर कांपनेलगे उस समय दक्ष यज्ञकरनेवाले और भृगु यज्ञकरानेवालेने उत्तरकी ओर बहुत गर्द देखी और कहा कि यह गर्द कहांसे गिरती है और कुछ मालूम न हुआ और वे सब आश्चर्यमें हरएक प्रकारकी बातें करनेलगे उससमय दक्षकी पत्नी बीरनी ने कहा कि जो तुमने सतीका अनादर कियाहै और तुम सबमूर्ख बनगये और सती को जलनेसे किसीने मनाही न की और दक्षने शिवका अनादर किया और उनकी बहिनोंके सामनेसती का ऐसा अनादर हुआ उसका यह फल हुआ कि शिवका शत्रु कहीं आनन्द नहीं पाता चाहे मनको प्रसन्नकरे पर अन्त में नरकगामी होताहै अब इससमय तो क्या होसक्ताहै शिवसे सब डरते हैं जो शिव प्रलय करते हैं उनके कोपसे कौन बचसक्ताहै बीरनीके यह वचन सुन सब देवता और मुनि थरथर कांपने लगे और दक्ष भी भयमान और आश्चर्यमें होकर विष्णुकी शरणमें गया और हाथजोड़ विनयकी कि आप यज्ञरूप और यज्ञके रक्षक और यज्ञके कर्म हो और भक्तोंकी रक्षा करना आपका कामहै इस भयसे मुझे छुड़ाइये और अपनी कृपा से यज्ञके नष्टहोनेको बचाइये आप तो सबके स्वामी हैं मुझे इससमय कुछ नहीं सूझता विष्णुने हँसकर कहा कि हम जहांतक होसक्ता है तुम्हारी रक्षा करेंगे पर तुमने जो शिवसे वैर करके अपने ऊपर उपद्रव उठाया और तुमने ऐसे संसारके स्वामीके साथ जो जगत् का प्रलय करता है द्वेष किया कौन पार लगावेगा हम और सब अमरगण मुनि उसकी रस्सीसे बँधेहुये हैं उसका तप मनलगाय करते हैं उनकी बराबर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संसार भरमें कौन बलवान्है कोई मनुष्य चाहे हज़ारों उपाय करे पर शिव विना फल नहीं मिलता और न वह काम पूरा होगा जहां कहीं पूजनेयोग्य शिव पूजा न जावेगा और जो देव पूजनेके योग्य नहीं उसकी पूजासे दरिद्र मृत्यु भय यह तीनों उपद्रव उत्पन्न होते हैं और जोकि तुमने शिवके साथ ऐसा किया उसीका कारणहै सो तुमको अभी फल मिलाचाहताहै और वेद शिवको सबसे बड़ा कहते हैं इस लिये शिव पूजाके योग्यहैं और जब कि ऐसे शिवके वैरसे यह बात हुई है तो अब कौन उसे दूर करसक्ताहै अब कुछ उपाय नहीं है ऐसा तीनोंलोकमें कौनहै जो शिवसे न डरता हो यह सुन दक्ष अतिचिन्तित हुआ और सबलोग महादुःखी और शोकवान् हुये और महा भयवान् होय कहनेलगे कि अब कुछ कुशल नहीं क्योंकि कोई रक्षक न रहा यही बातें होरहीथीं कि वीरभद्र अपने कटक समेत पहुँच गये और बड़े ज़ोरसे शब्द किया और भैरव और कालिका आदि भी अपनी २ सेनासमेत पहुँचे उस समय वीरभद्रका यह स्वरूप था कि पांच मुख तीन नेत्र दश हाथ जटा रखाये हुये भयंकररूप मस्तकपर अर्धचन्द्र शरीरमें सर्प लपेटेहुये रुद्राक्ष पहने बैलपर आरूढ़ भस्म धारण किये उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग महाकठोर वज्रसमान अतिसुन्दर हाथों में नाना प्रकारके शस्त्र लिये छत्र चँवर धरेहुये शिव शिव कहते महा विचित्र सुन्दर स्वरूपसे अलंकृतथे और जिस रथ पर कि आरूढ़ थे वह पचीसयोजन ऊंचा था जिसको दशलाख सिंह खींचते थे और शार्दूल और हाथी आदि चारों ओरसे रक्षाको रहाकरते यूथप धावा करनेलगे और नाना प्रकार के युद्धबाजे बजे अर्थात् भेरी, शङ्ख, पटह, गोमुख, शृङ्ग, उपङ्ग, मृदङ्ग आदि बजे और इन्द्र, वायु, यमराज, कुबेर, वरुण, अग्नि, दिक्पाल अपने २ वाहनोंपर आरूढ़ होकर आये और दक्षने उन सबसे कहा कि यह यज्ञ हमने तुम्हीं सबके बल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर किया था अब हमारी सहायता करो और इसी तरह सबसे कहा और विष्णुके चरणोंपर शिर रखदिया और कहा कि हे विष्णो ! आप जगत्के रक्षक और शुभकर्मोंके साक्षी हो तुम्हारी कृपासे संसार का पालन होताहै इस लिये आपको यज्ञ की रक्षा करनी उचितहै विष्णु जी बोले हां जहां तक हमको अधिकार और बलहै हम यज्ञकी रक्षा करेंगे पर तुम्हारे कर्म स्मरण कर हमारी बुद्धि आश्चर्यको प्राप्त होती है तुमने शिवसे वैर क्यों किया उस ब्रह्मस्वरूप शिवके हाथसे कौन बचानेवालाहै हम तुम्हारे लिये बुरा भला कुछ नहीं जानते तुम केवल अहंकारसे काम रखतेहो ईश्वरके सिवाय और अन्य फलदायक कौन है वही फल देताहै जो मनुष्य कि ईश्वरके प्रकाश को नहीं जानते वह सुख दुःखके कार्यकोभी नहीं जानते और सौकरोड़ कल्पतक नरक में रहते हैं और कर्मोंकी फांसी कण्ठसे नहीं निकलती बारम्बार उत्पन्न होकर मृत्यु होते हैं वेद धर्मशास्त्र और पुराण सब उसीका गुण गाते हैं परन्तु फिर भी वह सदाशिव को नहीं जानते वे शिव तीनों गुणों में पवित्र हैं इससे तुमको योग्य है कि श्रीशिवजीकी शरणागतमें जाओ कि तुम्हारा यज्ञ सम्पूर्ण होजाय यह वार्त्ता होहीरहीथी कि वीरभद्र की सेना चारोंओर फैलगई इस प्रकारसे कि जैसे सागर आकाशको जाताहै और विष्णुजीको ब्रह्मज्ञान और ज्ञानकी वार्त्ता कहते हुये देखकर हँस पड़े गणोंको लड़ाईपर तय्यार देख इन्द्रने अपना वज्र सँभाला और इच्छाकी कि गणोंसे युद्धकरूं वह सामने हुआ और भी युद्धके निमित्त इन्द्रके सम्मुख खड़ेहुये और शिवजीका ध्यानकिया ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! इन्द्र की सेना युद्ध करने लगी और बड़े २ हथियारों से युद्ध होनेलगा और असि अह्निक तोमर बाण और पट्टिशआदि हथियारों से युद्ध होने व भांति २ के बाजे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बजनेलगे और भेरी, शङ्ख, मृदङ्ग, डफ और दुन्दुभि, पटह, निशान, डिमडिमआदि जो प्रसिद्धहैं उनकी ध्वनि चारोंओर फैलगई और युद्ध में सर्ववीर अपनी २ सामर्थ्य और वीरता प्रकट करते थे जिस समय कि गणोंने वीरता प्रकट की उस समय भृगुजीने उच्चाटन मन्त्र का जप करके गणोंको अशक्त करदिया और इन्द्रकी सेनाने उनको महा दुःखी करदिया और गदाके प्रहार से सहस्रों मनुष्यों को मारडाला ऐसा कष्ट गण न सहकर भागगये और इन्द्र जीते इसका कारण यहहै कि श्रीशिवजीने प्रथम ब्राह्मण की बड़ाई प्रकट की फिर वीरभद्रने अपनी हार देखकर बड़ा क्रोध किया और भूत प्रेत आदि सब अपने पीछे करके आप आगे आये और जो मुख्य बड़े २ भट बैल पर चढ़ेथे उनको सेनाके आगे रक्खा और आप त्रिशूल हाथमें लेकर इन्द्रके साथ बड़ा युद्ध किया और देवता आदि गणोंसंयुक्त घायल हुये कोई चोटसे भाग गया और कोई टुकड़े टुकड़े होकर गिरपड़ा इस तरह देवताओं की सेना नष्ट होगई और भाग भाग कर अपने घरोंको चले गये केवल इन्द्र उस शिवालयमें दृढ़तासे खड़ेरहे और अपने गुरु से पूछा कि हम किस प्रकार जीतें वह यत्न बताइये क्योंकि तुम देवतों की सेनाके रक्षक हो बृहस्पतिने कहा कि जो कुछ होसके जो विष्णु जीका वाक्य था वही हुआ मन्त्र, तन्त्र, ओषधि, वेद, धर्मशास्त्र और पुराण और विचार और प्रतीति कोई शिवमहिमाको नहीं जानते केवल शान्ति धारणकर जो शिवके भक्त हैं वही उनको जानते हैं वे अपने भक्त के निमित्त अवतार लेते हैं और संसारी मनुष्यों की रीति के अनुकूल लीला और चरित्र करते हैं तुम बड़े मूर्ख हो जो ऐसी वार्त्ता हमसे कहते हो और लड़कों के सदृश शिवजी से युद्ध करतेहो यह शिवजी की आज्ञानुसार आये हैं और यज्ञ को नाश करेंगे और किसीका किया कुछ न चलेगा ऐसे वचन देवताओं के गुरु से सुन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर सब लोकपालों को बड़ी चिन्ताहुई उस समय वीरभद्र ने कहा कि तुम्हारी सबवार्त्ता व्यर्थ और लड़कों के सदृश है तुम सार वस्तु को नहीं जानते जो जो भाग लेने यज्ञ में आये हैं वे हमारे निकट आवें और यज्ञ के भाग लेवें और इन्द्र, अग्नि, कुबेर, बरुण, सूर्य, शशि और देवता आदि एक २ का नाम पुकारकर कहा कि हमारे निकट आवो और अपना २ भाग लो अब मैं तुमको सुख देताहूं और इस प्रकार प्रसन्न करताहूं जिसमें तुम चेत जाओ कि शिवजी ऐसे हैं यह कह कर क्रोधसे तीर चलाये जिनके लगने से इन्द्र घायल होकर अपने शरीर में उनके सहने की सामर्थ्य न देखी तो देवतों सहित चारों ओर भाग गये और जब इन्द्र देवतों संयुक्त भाग गये तब वीरभद्र के गण गर्जने लगे और फिर वीरभद्र ने अपने गणों को संग लिये यज्ञ के निकट आये उस समय सब ऋषीश्वर शोकवान् हुये और विष्णु की रक्षा में गये और भयवान् हो प्रणाम कर शिर नीचे किये प्रार्थना की कि हम सब आपकी शरणागत हैं हम पर दयालु हूजिये और रक्षा कीजिये ऐसे वचन ऋषीश्वरों के सुनकर विष्णुजी ने लड़ाई की इच्छा की और सब हथियार हाथ में लेकर वीरभद्र के सम्मुख खड़े हुये यह वार्त्ता सब वेद और पुराण कहते हैं कि भक्तों के निमित्त बड़ी चिन्ता शोक और दुःख विष्णु को प्राप्त होता है वीरभद्र ने क्रोध से विष्णु को कहा कि हे विष्णो! तुम यहां किस निमित्त आये और अपने तेज और प्रकाश से क्यों रहित होते हो और दक्ष के क्यों रक्षक हुये हो तुमको यह अयोग्य है तुम और इन्द्र दोनों भाग लेने आयेहो तुम भी तृप्त होगे, जैसा कि शिवजी ने हमसे कहाहै ऐसे वचन वीरभद्र के सुनकर विष्णु ने हँसकर कहा कि हे वीरभद्र! तुम शिव के गण और उन्हीं के तेजसे उत्पन्न हुये हो और पूजने के योग्य हो जिस कारण हम दक्ष के यहां शिवजी को छोड़कर आये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह हम कहते हैं कि दक्ष हमारे भक्त ने हमारी बड़ी सेवा की और मुझको यहां बुलाया उसकी भक्ति से मैं यहां आया क्योंकि मैं भक्ति के आधीन हूं और इसी प्रकार शिवजीभी अपने भक्तोंके आधीन हैं अब हम तुमको अपनी शक्ति से दूर करते हैं और तुमको योग्य है कि अपनी शक्तिसे हमको हटाओ और जिस कामको आयेहो वह करो विना जीते तुम यज्ञके निकट न जाने पावोगे वीरभद्र यह श्रवण कर बहुत हँसे और सहनशीलतासे कहा कि आपमें और शिवजी में कुछ भेद नहीं है जो मनुष्य कि भेद जानते हैं वे शोकवान् होते हैं हम तुम्हारे दोनों के सेवक हैं इसकारण हम आपको कष्ट नहीं देते हमको श्रीसदाशिवजी की आज्ञा करनी है मेरा क्या दोष है तुमने जान बूझकर ऐसा किया है और अपने नगरको न गये अब जैसा योग्य हो वैसी आज्ञा दीजिये तब विष्णुजीने कहा कि तुम हमारे साथ युद्ध करो और चिन्ता न करो तुम जीतोगे जब हम तुम्हारी चोटसे घायल होकर अपने नगर जायेंगे उस समय जो योग्य हो वह करना यह कहकर वीरभद्र ने हथियार उठाया और बाजा बजनेलगा और विष्णुजीने भी अपना शङ्ख फूंकदिया जिससे सर्वसंसारमें हाहाकार होगया और जो मनुष्य कि भाग गये थे वेभी चपल होगये और इन्द्र भी देवतों समेत लौट आये और विष्णुके सेवक होकर फिर युद्धस्थान में हाहाकार करनेलगे इसी प्रकार बड़ा संग्राम हुआ और सर्ववीर अपनी जीत कहकर युद्ध करनेलगे ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! विष्णु के संग नन्दी ने युद्ध किया और अनल और मुनिभद्र युद्ध में सम्मुख हुये और यमराज और महाकाल बराबर खड़ेहुये और निर्ऋति और मुण्डने लड़कर वीरता दिखाई और वर्ण के संग मुण्ड और वायुके संग भृङ्गी ने युद्ध और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मारधर किया और कुबेर ने अज्ञान अवस्था में कूष्माण्डपति के साथ युद्ध करनेकी इच्छा की इस प्रकार गणोंके साथ सर्व दिक्पतियों ने युद्ध किया फिर इन्द्र ने अपना वज्र हाथ में लेकर नन्दी को मारा और नन्दीने क्रोधसंयुक्त अपना त्रिशूल इन्द्रके मारा कि उसकी चोट से इन्द्र अचेत होकर पृथ्वी पर गिरपड़े परन्तु झटपट उठकर लड़ने लगे और अनल ने मुनिभद्र को शक्तिकी चोट से घायल किया और मुनिभद्रने अभय होकर अनल के त्रिशूल मारा और कालदन्त ने यमराज से युद्ध करके दुःखदिया और इसी प्रकारसे बड़े सरदार बहुत लड़े और कोई युद्धस्थानसे न भागा और देवता अच्छीतरह गणों से लड़े और कोई न हारा उस समय भैरवनाथ अतिक्रोधवान् होकर योगिनियों की सेना लेकर देवतों की सेनामें घुसगये और सबको घायलकरके सबका रुधिरपिया और ऐसा अपना स्वरूप भयंकर बनाया कि अनन्तदेवता देखकर भागगये और सबदेवता भैरवनाथजीके तेज और प्रकाश से महादुःखी हुये और भयसे भैरव भैरव बारम्बार कहने लगे और इसी प्रकार क्षेत्रपाल ने देवतों की सेना के अन्दर घुसकर कष्टदिया, अन्तमें नव काली देवतोंकी सेनाको खानेलगीं और देवतों के शिर तोड़कर रुधिर पीनेलगीं और भैरवजी क्षेत्रपाल और काली ने देवता और मुनीश्वरों को अधिक क्लेशदिया और हाहाकार मचगया और देवतोंने भागकर विष्णुकी रक्षा ली और कहा कि इससमय हम बहुत दुःखी हैं यह समय आपकी सहायता का है और तुम सर्वदेवताओं के स्वामीहो और इसीप्रकार अधिक प्रशंसा की और कहा कि भैरवजी क्षेत्रपाल और कालीजी ने यह हमारी गतिकी जो योग्यहो वह कीजिये विष्णुजी यह दुर्गति देवतों की देखकर क्रोधवान् हुये और अपना चक्र उठाकर क्षेत्रपालको मारा जिससे दशोंदिशा जलने लगीं ऐसी ज्योति जलती हुई अपने ओर आते देखकर क्षेत्रपाल ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने मुखमें डालली विष्णुजीने अपनी गदाको क्षेत्रपालके गाल पर मारा जिससे चक्र मुखसे गिरपड़ा यह गति देख कालीजी विष्णुजी के सम्मुख हुई विष्णुजीने बाण बरसाये कालीजीने सबको खालिया विष्णुजीने नन्दक हथियार मारा कालीजी ने उसको पकड़कर तोड़-डाला तब विष्णुजी कालीजीसे युद्ध त्याग भैरवजीके सम्मुख हुये और दोनोंमें बड़ा युद्ध हुआ भैरवजीने विष्णुजीके चक्रको काटडाला और अपने बाण विष्णुजी पर छोड़दिये जो मृत्युके सदृश विष्णुके निकट चले परन्तु विष्णुजी ने उनको बीचसे काटडाला इसी प्रकार भैरवजीने विष्णुजीके बाण निष्फल कर दिये बहुत समयतक यह युद्धरहा जिस को सर्व देवता आदि देखतेरहे फिर भैरवजीने प्रलय करनेवाला त्रिशूल जो विना मारे नहीं छोड़ता हाथमें लिया यह गति देखकर वीरभद्र दौड़े और भैरवजीकी प्रशंसा करके मनाकिया कि ऐसी आज्ञा शिवजीकी नहीं है ऐसा क्रोध न करो सेवक अपने स्वामी पर ऐसा नहीं करते ऐसा कहकर त्रिशूलका चलाना बन्द करादिया और आप विष्णुजी के सम्मुख आखड़े हुये उससमय दोनों में महायुद्ध हुआ और सर्व प्रकारके हथियार चारोंओर फेंकेगये अन्तमें विष्णुजी ने क्रोध करके अपनी योगमायासे अपने सदृशगणों को उत्पन्न किया वह गिनती में अनन्त थे वह सब गरुड़ोंपर चढ़े शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म आदि लिये शिवगणोंसे लड़नेलगे और तीरोंको बरसाकर शङ्ख बजानेलगे और चक्र और गदा आदिसे शिवगणों को दुःखी करदिया वीरभद्रने यह अवस्था देखकर शिवजीका ध्यान किया और त्रिशूलको चलाया जिससे विष्णुगण सब जलने लगे और गुप्त होगये विष्णुने क्रोधकर अपनी गदा को वीरभद्र के शिरपर मारा और इच्छा की कि वीरभद्रको मारडालूं ऐसा विचारकर वीरभद्र ने अपना त्रिशूल विष्णुजीकी छाती पर मारा जिसकी चोटसे विष्णुजी पृथिवी पर गिरपड़े और हाहाकार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआ परन्तु विष्णुजी फिर क्रोधवान् होकर पृथिवीसे उठे और अपने चक्रको हाथमें लिया उस समय विष्णुजी का स्वरूप विचित्र होगया नेत्र लाल और भयंकररूप भासता था और ऐसा था कि अपने चक्रसे अन्तकाल करेंगे इस प्रकारके तेजको वीरभद्रने देखा और शिवजीका ध्यान किया शिवजीने वीरभद्रको अभय करके शत्रुके सँभाल लेनेकी सामर्थ्य कृपा की वीरभद्र बहुत प्रसन्न होगये और विष्णुजी पर्वत की चोटीके सदृश अचल खड़े होगये और वीरभद्रने अपने पवित्र बाणोंसे विष्णुजी के धन्वाको दो टूक करडाला और विष्णुजी प्रबोधनमन्त्र को जपकर अचलतासे मुक्तहो अपनी सामर्थ्यसे खड़े होगये उससमय हमने शिवजीकी लीला समझकर विष्णुजीसे कहा कि हे नाथ! होनी किसीके मेटनेसे नाश नहीं होती वह अवश्य होती है आपने यद्यपि यज्ञकी रक्षा की परन्तु उसकी भाग्य विपरीत है कि दक्ष पर बड़ी आपदा पड़ेगी अब तुम लड़ाई न जीतोगे परन्तु युद्धसे भागकर चिन्ता करोगे और वीरभद्र अवश्य यज्ञको नष्ट करेगा इस कारण केवल दधीचि मुनि का शापहै क्योंकि जो ब्राह्मणका वाक्य सत्य न माने तो सर्व सृष्टि नास्तिक होकर छली होजाय और जिस समय कि शिवजी फिर दयालु होंगे उस समय सब बिगड़ा हुआ कार्य बनजावेगा और तुम्हारी और शिवजीकी लीला अपरम्पार है उसको कोई क्या जाने और वेद कहताहै कि तुममें और शिवजीमें कुछ भेद नहीं है यह वार्त्ता हमारी सुनकर विष्णुजी अपने लोकको चलेगये और हमभी अपने लोकको चलेगये और बिचारा कि जब शिवजी कृपादृष्टि करेंगे और हमको प्रतीति थी कि वह सबको प्रसन्न रक्खेंगे॥

तीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! जिस समय विष्णु अपने लोकको चले गये उस समय यज्ञ अति शोकवान् होकर और हिरण का स्वरूप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धारणकर भाग गया परन्तु वीरभद्र ने उसको स्थान पर जाते हुये पकड़लिया और उसके शरीरसे शिर काटडाला और यज्ञकुण्डमें डाल दिया और क्रोधवान् होकर बारम्बार गर्जते हुये यज्ञके निकट आया इसीप्रकार शिवगण यज्ञके निकट आये और भैरव क्षेत्रपाल और काली आदि ने सबको चोरोंके सदृश पकड़ा और गृह गिरादिया कोई गण देवतोंको पकड़ता था कोई विष्णुके घण्टेको तोड़ताथा कोई मुनीश्वरों को बांधता था कोई क्रोध सहित यज्ञकुण्डको ठंढा करताथा और जल डालता था उस समय शत्रुओंके संग महायुद्ध होता था और मुद्गर की चोटसे हाथ पांवों को काटते थे फिर सब बासन तोड़ कर नदीमें फेंक दिये और देवताओंके शरीर काटडाले और सिंहके सदृश ध्वनि कर अनन्त मनुष्यों को दुःखी किया किसीने यज्ञकुण्डको खोदडाला और सभागृह अन्तःपुर विहारस्थल को जड़से खोद डाला वीरभद्रने दक्षको पकड़लिया और नन्दीने भग अर्थात् सूर्यको बन्द किया और मणिमान्ने भृगु को पकड़ा और चण्डी ने पूषाको बांधा इसी प्रकार अनेक देवतों आदिको बन्दकिया यद्यपि कुछ देवता गुप्त होगये थे परन्तु गणोंने ढूंढ़कर सबको अपनी आधीनतामें रक्खा और कोई देवता और मुनीश्वर आदि नहीं बचा सब घायल होगयेथे मणिमान् ने अधिक क्रोधसे भृगुकी मूंछ उखाड़ डाली और नगरमें सबको ऐसा स्वरूप दिखलाते हुये घुमाया कि सब भयभीत हुये और नन्दीश्वरने महाक्रोधसे भृगुके नेत्र निकाल लिये इस कारण कि उन्होंने दक्षको बहकाया था और पूषाके दांत चण्डीने तोड़ डाले जिनको खोलकर शिवजी को हँसे थे और वीरभद्रने झटपट बड़े क्रोधवान् होकर दक्ष-प्रजापतिको पृथिवीपर देमारा और उसकी छातीपर चरण रखकर उसके शिरको भिन्न करना चाहा और यद्यपि हथियारों से उसे काटना चाहा परन्तु न उसका शिर कटा और न उसको कोई कष्ट हुआ उस समय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वीरभद्रने शिवजीका ध्यान किया और आज्ञा पाकर दक्षके शिरको जोर से मरोरनेके पीछे बैठकर तोड़डाला और अग्निमें डालकर जलादिया और फिर क्रोध करके उसके शरीरको काटडाला और कश्यप और धर्मराजके हाथमें रखदिया और दृष्टनेमि को महादुःख दिया और अङ्गिराको सन्तान समेत लातमारी और जिसतरह शान्तु को मारा उसी तरह अन्य मुनीश्वरों को मारडाला और कइयों को घायल और कइयोंको अग्निमें जलादिया और अपने नखसे कश्यपकी स्त्री की नासिका काटडाली जिससे ऐसे देवतोंकी माता ऐसे अंगसे हीन होगई और जैसा जिसको योग्यथा उसीप्रकारका उसको फल मिला विस्तारके भयसे नहीं कहा ऐसे श्रीसदाशिवजी जो सबसे उत्तमोत्तमहैं उनसे शत्रुता करके ऐसा संसारमें कौनहै जिसको सुख प्राप्त हो उस समय श्रीसदाशिवजीने सबको यथायोग्य फल दिया और सब देवता जो विना शिवजी के अपना भाग लेना चाहतेथे भागगये इसप्रकार दक्षका यज्ञ नाश होगया हे नारदजी ! निश्चय जानो कि इसीप्रकार शिवजीके शत्रु दुःख पाते हैं और उनका कोई रक्षक नहीं होता इस सृष्टि में ऐसा कोई नहीं जो दुःखी न हुआहो यद्यपि मनुष्य सहस्र युक्ति करे तोभी विना पूजन शिवजी के मुक्ति नहीं मिलती वे सबके स्वामी हैं उनकी महिमा अति कठिनहै उनको कोई नहीं जानता जो प्रीतिसंयुक्त शिवपूजन करते हैं उनको कोई क्लेश नहीं होता क्योंकि श्रीसदाशिवजी उनकी सहायता सर्वदा करते हैं और जो शोक और दुःख अपने पापकर्मों से होता है उसको भी शिवजी नष्ट कर डालते हैं जो मनुष्य संसारमें शिवजीके प्रतिकूलहै उसको सर्वदा सुख नहीं होता वह अतिदण्डसे नरकमें डालाजाता है जो दुर्गति दक्ष की हुई वही शिवजी के शत्रुओं की गति होती है और जो कार्य विना शिवजी के कियाजाता है उसका परिणाम ऐसाही होता है वीरभद्र

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस प्रकार यज्ञ का नाश करके श्रीसदाशिवजी के सम्मुख गये॥

इकतीसवां अध्याय॥

सूतजी बोले हे शौनकादि मुनियो! ब्रह्माजी की यह कथा सुन कर नारदजी आश्चर्यवान् हुये और ब्रह्माजी से प्रार्थना की कि किस निमित्त देवताआदि विष्णुसहित दक्ष के यज्ञ में विना शिवजी के गये और फिर विष्णुजी ने शिवगणों के संग प्रीति और मित्रता से युद्ध किया और फिर विष्णुजी यज्ञकी रक्षा क्यों न करसके इसका कारण प्रसिद्ध कीजिये ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि पिछले समय में हमारा एकपुत्र छू नाम था और वह राजा था और दधीचि उसका भ्राता था वह आनन्दपूर्वक रहते थे और छू मानके कारण अहंकारी होगया था और सबसे अपनेको उत्तमोत्तम बिचारता था और च्यवन के पुत्रके संग बड़ा विवाद किया छू कहताथा कि राजा सबसे उत्तम है और दधीचि का वाक्य था कि सबसे उत्तम ब्राह्मणहै उसको सब प्रमाण करते हैं परन्तु छू नहीं मानता था और उसके प्रमाणोंको तर्कणा-समेत काटकर कहता था कि देखो आठो दिक्पति जो राजाहैं वह प्रजापति और ईश्वर कहेजाते हैं उनका सब मान करते हैं और उन्हीं का सब पूजन करते हैं इससे योग्यहै कि तुमभी हमारी पूजाकरो ऐसा वाक्य छूका सुनकर दधीचिने बायें हाथसे एक थप्पड़ शिरपर मारा और ब्राह्मण की बड़ाई को प्रसिद्ध कर दिखाया छूने वज्र को हाथमें उठाया और दधीचिको मारकर जीतलिया दधीचि पृथिवीपर गिरपड़ा और शुक्रको स्मरण किया शुक्र झटपट आये और दधीचिका शरीर जो भिन्न २ धरतीपर पड़ा था इकट्ठा किया और दधीचिका पूर्वकासा स्वरूप बनादिया ऐसी आरोग्यता प्राप्त करके दधीचि शुक्रसे कहने लगे कि अब ऐसी युक्ति बताइये जिससे हम अटल होजायँ शुक्रजीने कहा कि ऐसा वरदान केवल शिवजी देसक्तेहैं जिनका ब्रह्मा विष्णु और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवता आदि सब ध्यान करते हैं उन्हींके पूजनसे हमने संजीवनीविद्या प्राप्त की है उनका नाम मृत्युञ्जय है देखो बाणासुर अटलहै शिवजी का कोई सेवक शोकवान् नहीं वह उन्हींकी भक्तिसे नृप मुनि सर्व ब्राह्मणोंके राजा होकर अटलहैं और अपने कुलसहित शिवपुरी में हैं दुर्वासा शिवजीकी सेवासे तीनों लोकके राजा हुये और तीनों प्रकार का उत्तम चरित्रकरके धर्मको ठहराते हैं विश्वामित्र शिवसेवासे क्षत्रिय होकर ब्राह्मणोंके उपनामसे प्रसिद्ध हुये और उन्होंने नवीन सृष्टि उपजा कर भांति भांतिकी वस्तु उत्पन्न की ब्रह्माजी रात्रि दिन उनके पूजन में दृढ़ रहतेहैं और मार्कण्डेय ऋषीश्वर शिवजी के योग करनेसे कल्प सम्पूर्ण होनेपरभी जीते हैं और इन्द्र शिवजीकी सेवासे ऐसे हैं कि जिन का शत्रु किसी प्रकार नहीं बचसक्ता और विष्णुजी शिवपुरी के सेवक हैं और शिवजी भी इनसे दूर नहीं रहते और शक्ति रात दिनकी सेवासे त्रिलोक में अधिकारिणी हैं और तीनोंराम अर्थात् श्रीरामचन्द्रजी व श्रीपरशुरामजी और श्रीरामबलभद्रजी उनके पूजन और योग से कैसे उदार हुये हैं और विकट अङ्गिरस और गौतमभी शिवसेवासे अटल हैं और बृहस्पतिने बड़ी पदवी प्राप्त की है और इन्द्रदव मुनि शिवजीका नाम विना इच्छा लेकर शिवगणोंमें मिलगये हैं जिनका नाम चण्ड प्रसिद्धहै और नन्दी वैश्यवर्णने शिवसेवासे कैसी पदवी प्राप्त की और महाकाल व्याधा वेदके विरुद्ध शिवपूजन करके मुक्त हुआ और ब्रह्मा और विष्णुजीने परस्पर वार्त्ता करके अन्तमें शिवजीकी भक्तिके आदि और अन्त को न पाया देखो एक राक्षसीने धोखेसे शिवमन्दिर को धोया और कैलासमें पहुँचकर फिर राजाकी लड़की हुई और एक चोरने शिवालय में शरीर छोड़कर परमपद पाया इस कारण जो तुम ऐसी इच्छा करते हो तो शिवपूजन करो दधीचि यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और कहा कि आप मुझको मन्त्र देदीजिये तब शुक्रजीने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वही संजीवनी जो श्रीसदाशिवजी से पाईथी देदी और ब्रह्माजीने भी शिक्षा की दधीचिने मन्त्र जपकर शिवपूजन निश्चिन्त होकर किया शिवजी प्रसन्न हुये और दधीचिके निकट आये और कहा कि वरदान माँगो और कृपादृष्टिसे देख लिया दधीचिने शिवजीका दर्शन पाकर बड़ी स्तुति की और कहा कि मुझको भक्ति दीजिये और मेरी हड्डियां वज्रके सदृश बना दीजिये कोई मुझको मार न सके और नम्रतापूर्वक किसीसे वार्ता न करूँ यह तीनों वरदान मुझको भक्ति से अलग दीजिये शिवजी हँसे और वरदान देकर अन्तर्धान होगये ऐसा वरदान लेकर दधीचि राजा छूके निकट आये और आतेहुये छूके शिरमें एक लात मारी और कहा कि कौन पड़ाहै छूने क्रोधमें आकर अपना वज्र दधीचिके हृदय पर मारा जो निष्फल हुआ और उसे कुछ भी पीड़ा न हुई और यद्यपि छूने बड़ा युद्ध किया परन्तु दधीचि को कुछभी दुःख न व्यापा तब तो छूने जाना कि शिवजीने दधीचिको वरदान दिया है लज्जावान् होकर छूने विष्णुपूजन मन लगाकर किया और विष्णु का जप किया विष्णुजी अतिप्रसन्न हुये और लक्ष्मीसंयुक्त गरुड़ पर चढ़े हुये छूको दर्शन दिये छूने प्रणाम किया और दोनों हाथ बांधकर स्तुति की और कहा दधीचि एक ब्राह्मण प्रथम हमारा मित्र था परन्तु अब शत्रु होगया है वह शिवजी के वरदान से वज्रतनु पाकर मारने के योग्य नहीं रहा उसने हमारा अनादर करके बायें पैरसे मेरे शिर पर लात मारी और अहंकार समेत कहा कि मैं त्रैलोक्य में निर्भय हूँ उस को जीतनेके निमित्त आपका मैंने पूजन किया और इस कारण कि आप अहंकार का नाश करते हैं इससे मेरी विजय कीजिये उस समय विष्णु भगवान् शोकवान् हुये और विचारा कि जो मैं इस समय अपने भक्त को वरदान नहीं देता तो वेद की बड़ाई में भेद होगा और जो वरदान देताहूं तौभी वेद झूठा होता है क्योंकि प्रथम ब्राह्मण तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सनातनसे निर्भय है और शिवके भक्त को योग्य है कि यथाशक्ति अपने भक्त का भला करे और दोनों वार्त्ताको रक्खूँ हमारी कोई युक्ति न चलेगी और शिवकी सृष्टि मुझसे मोहित न होगी यह विचार कर कहा कि ब्राह्मणों को किसी समय भय नहीं होता हे राजन्! इस बातको श्रवण करलीजिये और शिवभक्त को तो कभी किञ्चित् भी किसी प्रकारका भय नहीं होसक्ता परन्तु हम तुम्हारे रक्षक होंगे जिस से दधीचि अपनी हठको त्याग देगा और उसको शाप दिलवायेंगे॥

बत्तीसवां अध्याय॥

ऐसी वार्त्ता विष्णुजी की सुनकर राजा छूने अङ्गीकार किया और विष्णुजी ब्राह्मणों का रूप धार छलसे दधीचिके निकट गये और प्रणाम करके कहा कि मुझको एक वरदान दीजिये जब विष्णुजीने अपने भक्तके हेतु ऐसा मनोरथ वर्णन किया तब दधीचिने विष्णुजीके मनोरथको जानकर निडर उत्तर दिया कि तुम साक्षात् विष्णु भगवान् हो मेरे संग छलरूपी ब्राह्मण का वेष धारण कर आये हो हमारे ऊपर शिवजी प्रसन्न हैं इससे हम जानगये हैं कि राजा छूने तुम्हारा अति पूजन किया है कि मुझको जीतलो सो तुमको योग्य है कि सत्यस्वरूप दिखावो और अपने घर चलेजावो शिवजी की कृपासे हम त्रिकाल की सब वार्त्ता जानलेते हैं हम त्रैलोक्यमें किसीसे भय नहीं करते यह वचन श्रवण कर विष्णुजी मुसकराये और कहा कि तुम सत्य कहते हो कि शिवजी की रक्षाके कारण हम निर्भय हैं परन्तु मैं दण्डवत् करके यह प्रार्थना करताहूं कि मेरा मनोरथ अङ्गीकार करो और छूके वरदान को पूर्ण करो यह सुनकर दधीचिने विष्णुजीसे कहा कि मैं शिवजीकी दया से किसी को नहीं डरता मेरे संग ऐसी चतुराई न करो और अपने घर जाओ तब विष्णुजीने कहा कि हे मूर्ख! हमारे उपदेशको नहीं मानता मुझसे शत्रुता करके कौन सुखी रहेगा हमने रावण आदि महावीरों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का नाश करदिया हमारी अवज्ञा न करो वरन चक्रसे तुमको मारूंगा दधीचिने उत्तर दिया कि हां सत्यहै कि आप त्रैलोक्यके जीतनेके योग्य हैं और करोड़ों असुर दैत्य और शत्रुओं को आपने मारा परन्तु शिव-भक्तोंपर आपकी कुछ नहीं चलती और तुम्हारा सुदर्शनचक्र निष्फल होता है देखिये वही चक्र आपका तारकके कण्ठमें लगकर निष्फल हुआ और रावणके कण्ठमें कुछभी न करसका और जब कि तुमने शिवपूजन किया और उन्होंने प्रसन्न होकर तुमको बाण दिया और आज्ञा दी तब तुमने रावणको जीतलिया तुम भलेप्रकार समझो विना शिवजी की भक्तिके कोई कार्य लाभदायक नहीं होता सो जैसी आप की इच्छा हो वैसा मेरे साथ कीजिये मैं शिवजी की कृपासे अभय हूं यह सुनकर विष्णुजीने बड़े क्रोधसे अपना चक्र दधीचिपर छोड़ादिया परन्तु वह दधीचिके शरीरमें लगकर निष्फल होगया विष्णुजी अपनी ऐसी हार देखकर शोकवान् हुये उस समय दधीचिने मुसकराकर कहा कि हे विष्णुजी ! आप आश्चर्य न करें मैं इसका कारण विस्तार से वर्णन करताहूं कि आपने यह चक्र बड़े यत्नों से प्राप्त किया है परन्तु वह मुझको अपना मित्र समझकर नहीं मारता चाहे कोई हथियार मुझपर अपनी शक्तिपूर्वक चलाओ और कुछ भी अपना बल शेष मत रक्खो विष्णुजी ने ऐसा वचन सुनकर बड़ा भयानक नाद किया जिससे सब सेना विष्णुजीकी जिसमें देवता उपदेवता और वैकुण्ठ-वासी भी थे आये और विष्णुजी दधीचिके संग युद्ध करने लगे और देवतों संयुक्त सब प्रकार के हथियार दधीचि पर मारे और अकेले दधीचि पर सबने चढ़ाई की और धर्म के प्रतिकूल एक मनुष्य के संग सबने लड़ना चाहा परन्तु दधीचि निर्भय रहा और एक मुट्ठी कुश की लेकर देवतों की ओर चलाई वह अति पवित्र त्रिशूल होकर अन्तकालकी ज्योति के सदृश चारों ओर प्रकाशित होकर सब को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जलाने चला और चाहा कि विष्णु और देवता आदि को नष्ट कर दें परन्तु देवतोंने हथियार डाल दिये और भाग चले उस समय विष्णुजीने मायासे अपने सदृश करोड़ों पार्षद अपने पवित्र शरीरसे उत्पन्न किये परन्तु दधीचिने शिवजी का ध्यान करके सबको जला दिया अपने गणों को नाश हुये देखकर विष्णुने एक आश्चर्यवान् चरित्र किया अर्थात् विराद्रूप प्रकट करके अपने शरीरमें तीनोंलोक और जो कुछ कि उसमें था वह सब दधीचि को दिखा दिया परन्तु उस समय भी दधीचि निडर रहा और कहा कि यह आप माया न करें यह केवल मन की शक्तिहै कुछ ऐश्वरीय शक्ति नहीं तुम हमारे शरीरमें यह गति देखलो और देखनेके पीछे हमसे छल न करो यह कहकर दधीचिने शिवजीका ध्यान किया और सर्वजीव अपने शरीरसे प्रकट कर दिखाये ऐसी गति देखकर सब देवता चलेगये और विष्णुजीकी इच्छा फिर युद्ध करने की हुई उस समय हमने मना किया कि हे विष्णो ! ऐसा हठ क्यों करते हो योग्य और अयोग्य कार्य नहीं समझते आपकी चतुराई और शक्ति कहां गई वेदके विपरीत चलते हो क्या तुम शिवजीके तेजसे अचेत हो जो त्रैलोक्य को क्षणमात्र में नष्ट करते हैं जो वेद और धर्मशास्त्र असत्य होजावें तो तुम निश्शङ्क दधीचि को जीत सक्के हो यह हमारे वचन सुनकर विष्णुजी युद्धसे रहित हुये और दोनों हाथ जोड़कर छूको संग लिये दधीचि की प्रशंसा की और कहा कि हे दधीचि ! छू तुम्हारी शरण में है और उसने हठको छोड़ दिया छूने प्रार्थना की कि हे हमारे मित्र ! हमारा अपराध क्षमा करो मैं मूर्ख अज्ञानी हूं और तुम शिवजीके बड़े सेवक हो तुम्हारे वचन हर प्रकार श्रेष्ठ हैं जो शिवभक्त हैं और द्वैतभावका विचार त्याग करके स्थिर मन और दृढ़चित्त होकर उनका ध्यान करते हैं वे दुःखी नहीं रहते वरन उनको दुःखदायक विष्णु और देवता भी नहीं होसक्के और आप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो भक्तोंके राजा हैं और धन्यभाग आपके हैं कि जिनके ऊपर शिवजी ऐसे दयालु हैं हमको निश्चय है कि त्रिलोकमें शिवसमान अन्य कोई नहीं यह वचन छूके सुनकर दधीचिने उसपर बड़ी दया की शिवभक्तों की यही अवस्था है कि जो कोई उनकी शरणमें आता है उस पर कृपा दृष्टिसे देखते हैं और फिर दधीचिने विष्णु और अन्य देवताओंको शाप दिया और कहा कि रुद्रके क्रोधसे तुम हारोगे और विष्णुजी को भी गणसंयुक्त इसका फल मिलेगा केवल ब्रह्मा बच रहेंगे जिनसे चिन्ता और शोक न रहेगा यह कहकर फिर राजा छूकी ओर प्रीति संयुक्त देखा और कहा कि ब्राह्मण इस संसारमें पूजने योग्य हैं इतना देवताओं व राजों और सर्प आदिकोंसे दधीचि कहकर अपने गृह चले गये दधीचि को विष्णुजीने प्रणाम किया और चिन्ता करके अपने घर लौटगये और ब्रह्माजी विष्णुजी और सनकादिक सब हृदयमें दुःखी हुये परन्तु अहंकार से रहित होकर शुद्धबुद्धिसे पहिंचाना कि शिव सबसे उत्तमहैं जिस स्थानमें कि दधीचिसे युद्ध हुआ उस स्थानका नाम हरपुर तीर्थ है वह थानेश्वरके नामसे प्रसिद्ध है जिनकी सेवासे कुछ शोक नहीं रहता जो मनुष्य थानेश्वर तीर्थमें जाकर शिवपूजन करेगा वह सुख करेगा जो पुरुष कि दधीचि और छूका यह युद्ध पढ़ेगा उसके सब शोक इस संसारमें नष्ट होजावेंगे और आवागमन से रहित रहेगा और जो पुरुष इसको पढ़कर किसी युद्धस्थान में जावेगा उसकी जीत होगी और अच्छी मौतसे मरकर शिवलोक में स्थान प्राप्त करेगा ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

सूतजी बोले कि हे मुनियो ! नारदजीने ब्रह्माजीसे कहा कि दक्ष के यज्ञका विध्वंसन हमने ऊपरके वर्णनसे सुना अब आप विस्तार संयुक्त कहिये कि यज्ञके नष्ट होनेके पीछे फिर क्या हुआ ब्रह्माजीने शिवजीका ध्यान करके कहा कि जिस समय गणोंने यज्ञके मनुष्योंकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसी दुर्गति करके लज्जित किया तब सभ्यजन जहां हम और विष्णुजी बैठे हुये थे वहां आये और रुदन करने लगे और सब विस्तार वर्णन किया हम ऐसी अवस्था और दुर्गति देवताओं और मुनियों की देख कर अतिशोकवान् हुये और त्राहि २ किया उसके पीछे कहने लगे कि त्राहि तुमने शिवजी को क्रोधित किया और तुम सबने देवताओं के सदृश श्रीशिवजी को भी जाना और शिवजीके पापी हुये अब तुम सब अपने पाप शिवजी से क्षमा कराओ और छल को त्याग सचेत होकर शिवजीके चरणोंपर गिरकर सेवा करो ऐसा कौन है जो शिवजी के क्रोधको सहसके वह तुरन्त प्रसन्न होजाते हैं उनकी सेवा करो शिवजी की रक्षामें जाओ तो कुशल है तुम सब विना शिवजीके अपना भाग यज्ञमें लेना चाहते थे सो तुमने फल पाया जो शिवजीके शत्रु सुख चाहते हैं उनका अन्त ऐसाही है जो सर्वसृष्टि को क्षणमात्र में नष्ट करना चाहते हैं उनसे शत्रुता करने में किसको सुख प्राप्त हो सक्ता है और हमभी दधीचिके शापके वश भूलकर यज्ञ में गये इसमें देवता आदिक का कुछ दोष नहीं शिवजी की ऐसीही मायाहै उनकी माया कोई नहीं जानसक्ता उनकी मायाके अधीन संसार भर है उनको कोई जीत नहीं सक्ता तुम चिन्ता न करो शिवजी शीघ्रही तुम्हें क्षमा करेंगे और भलेप्रकार जानो कि जो शिवजी यज्ञमें ऐसा न करते तो मनुष्य वेद की रीतिको त्यागकर नास्तिक होजाते यह कहकर हम विष्णुजी और सर्वदेवता कैलास पर्वत पर पहुँचे उसकी सुन्दरता हम कहांतक वर्णन करें सबसे उत्तम यह कि उस स्थानमें किसी पुरुष को चिन्ता और शोक नहीं और फुलवारी ऐसी जिसमें संसारके सुगन्धित पुष्प फल भांति २ के पक्षी सिंह चीता आदि और चौपाये थे और उसके आगे कुबेर की अलकापुरी को हम सबने देखा फिर हमने पवित्र बड़का वृक्ष देखा जिसके नीचे शिवजी बैठे थे धन्यभाग उनके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो शिवजी के दर्शन करें उनका ऐसा बिचित्र सुन्दर स्वरूप था जिसका वर्णन करना महाकठिन है शिर पर जटा और भस्म धारण किये श्यामघनके सदृश शरीर माथे पर चन्द्रमा और कुशके आसन पर वीर आसनसे बैठे हुये थे ऐसा स्वरूप देखकर सबको भक्ति अधिक हुई और हमने विष्णुजी और दधिगुप्त और मुनि आदिकोंने हाथ जोड़कर अति महिमा और स्तुति की ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

सब देवता बोले कि जयनाथ शंकर दीनबन्धु सबसे उत्तम अपने रक्षामें आयेहुये मनुष्योंके रक्षक परब्रह्म निर्गुण अलख तुम्हारी लीला कोई नहीं जानता जो आपकी इच्छा होती है वही होता है हमारा संकट काटो हम सब आपकी इच्छामें आये हैं और दक्ष प्रजापतिने मूर्खता और अज्ञानतासे आपकी बड़ाई न विचारकर ऐसा कहा और नास्तिक होकर आपको नहीं बुलाया और आपके भक्तों का मान न किया जो शाप देकर अपने घर चलेगये और उसने आदिशक्ति का भी मान न किया और जलने से भी मना न किया और देवताओं ने भी न रोका इसका सब फल पाचुके हैं सो आपको कुछ नहीं कहसक्ते परन्तु देवताओं का दोष है और हम सबने आपको विस्मरण कर दिया सो ऐसे पाप हमारे आप क्षमा कीजिये और कृपादृष्टि से एकबेर देख लीजिये जो आप ऐसा दण्ड न देते तो धर्म नष्टही होजाता और संसार भर छल करता और सबलोग आपकी अवज्ञा करते और वेद का मान कम होजाता और दक्ष अहंकारके मदमें लीन होजाता हम सब मानते हैं कि आपसे कोई दूसरा श्रेष्ठ नहीं है आपही धर्मिष्ठ धर्मदायक धर्मरूप और धर्मके स्थिर करनेवाले हैं तिस पीछे हमने और विष्णुजीने कहा कि आपकी माया सर्वसृष्टि को अचेत किये हुये है आप परब्रह्म निर्गुण हैं और तीनोंरूपसे संसार को उत्पन्न करते हैं हम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब आपकी शरण हैं कृपा कीजिये और इसी प्रकार बड़ी प्रशंसा की और प्रार्थना की कि दक्षको जीवदान दीजिये और भगको नेत्र और भृगुके क्लेश का नाश कीजिये पूषा अपने दांतों को पावे और सब देवतोंके घायल शरीर अच्छे होजावें यह सब बातें आपके यज्ञशाला में चलनेसे पूरी होंगी आगे विना आपके भागके कोई यज्ञ न होगा ऐसी स्तुति श्रवण कर श्रीसदाशिवजी अतिप्रसन्न हुये और मुसकरा कर बोले कि हम कुछभी क्रोध नहीं करते और कल्पवृक्षके सदृश सब के सुखदायक हैं निश्चय जानो कि जो जैसा कर्म करता है वैसाही फल पाताहै यह सब मायामें फँसकर सारवस्तु पर दृष्टि नहीं रखते दक्षने जैसा किया वैसा पाया अब दक्ष बकरे का मुख पाकर जी जावे और भग मित्रके नेत्रोंसे देखे और यजमान दांतोंसे खावे देवतोंके सब शरीर अच्छे होजावें यह कहकर शिवजीने मौन साधा और सब देवता प्रसन्न हुये और विष्णुजीकी सेवा करने लगे और जय २ का शब्द ऊँची वाणीसे कहकर कहा कि हे शिवजी! आपभी यज्ञमें चलें क्योंकि विना आपके यज्ञ पूर्ण न होगा और कृपा करके अपना भाग अङ्गीकार कीजिये यह सुनकर हम सब चुप हुये और शिवजीने इस वचन को अङ्गीकार किया और चले उस समय सबको बड़ासुख हुआ और इस बात से बहुत प्रसन्न थे कि हम यज्ञ की पूर्णता को देखेंगे कोई तो चवँर डुलाता था और कोई छत्र लियेहुये शिवजी की महिमा बखानता था कोई शिवजीके आगे और कोई पीछे जाता था॥

पैंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इस प्रकार हम विष्णुजी और देवता आदि सब शिवजीके संग गये और दक्षके यज्ञमें विराजमान हुये दक्ष का घरभर अतिप्रसन्न हुआ और शिवजी की आज्ञानुसार सब कुछ किया और जब दक्षके शरीरमें बकरेका शिर लगा दिया उस समय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह उठखड़ा हुआ मानो निद्रामें था और शिवजीको देखकर अति-
प्रसन्नमुख होगया और उसे बहुत प्रेम उपजा और बकरेकी जिह्वासे
उसने शिवकी स्तुति की यह स्तुति प्रेमके कारण उत्तम भासी दक्षने
कहा कि हे शिवजी ! आपका आदि और अन्त नहीं जानाजाता
आपको सब पूजते हैं आपने जो मुझको दण्ड देकर ब्रह्मज्ञान दिया
सो यह आपकी बड़ी कृपाहै और मैंने अज्ञानता और मूर्खतासे आप
को जो सबके स्वामी हो नहीं पहिंचाना और निन्दाकी मेरे पाप
क्षमा करो अब मेरी इच्छाहै कि दया करके मुझको भक्ति दीजिये
विष्णुजीने कहा कि आपका यश अमृतसागर के तुल्यहै शुद्ध और
शीतलहै ऐसे समुद्रमें हमारा मन जो हाथीके तुल्यहै और चिन्तासे
जलाहुआहै पैठकर बड़े सुखको प्राप्त होताहै और उसके अन्दरसे नहीं
निकलता इसकारण आप दया करके हमारे पापोंको क्षमा कीजिये
ब्रह्माजीने प्रार्थना की कि सर्वसृष्टि हमको बुरा कहती है परन्तु हम
इस बातको आपके तपके कारण विचार नहीं करते क्योंकि आपके
पूजनसे सब बुरे कार्य नष्ट होजाते हैं ऋत्विज्ने कहा कि हे शिव !
हमने आपको न पहिंचाना और अपने कर्मोंसे शोक और चिन्ता
आदिमें पड़ेरहे आप तो तीनोंलोकमें उदारहैं जिनको हम प्रणाम
करते हैं वही हो आपका प्रकाश अतिसुन्दरहै और इसीप्रकार इन्द्र,
वरुण, कुबेर, योगीश्वर, ब्रह्म, अग्नि, देवता आदि गन्धर्व, अप्सरा,
ब्राह्मण, भृगु, यजमान, लोकपाल और विद्याधर सबोंने अलग २
स्तुति कहकर प्रार्थना की कि हमारे पाप क्षमा कीजिये आप सबके
स्वामी सृष्टिके उपजानेवाले भर्ता विश्वम्भर और नाश करनेवाले हैं
वेद, पुराण, धर्म शास्त्र, यज्ञ और भले कर्मके रूप तुम्हीं हो अब दया
करो और हमारे दोषों को न विचार कर अपनी ओर देखो ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छत्तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! तुम सत्य मानो कि विना शिवजी के चरणोंके पूजनके दुःख दूर नहीं होता चाहे जन्मभर भटके फिरे जो बुद्धि मनुष्यको पीछे होती है वह बुद्धि मनुष्यको प्रथम हो तो वह कुछभी कष्ट न भोगे अब हम अन्यलीला शिवजी की कहते हैं उसको श्रवण करो अर्थात् श्रीसदाशिवजी सबकी जिह्वासे स्तुति और नम्रता के वचन सुनकर अतिप्रसन्न हुये और मुसकराकर कहा कि जो ऐसे गलबलके उत्तम वचन दक्षके सदृश जो हमारे सम्मुख करेगा उसको सर्वऋद्धि सिद्धि प्राप्त होगी और कहा कि हम ब्रह्मा और विष्णु संसार के मुक्ति भुक्तिके देनेवाले हैं और परब्रह्महैं ईश्वरहैं हम सृष्टिको उत्पन्न करके पालना करते हैं और फिर अपनी इच्छासे नष्ट करदेते हैं और तीनों गुणोंसे परे हैं केवल ब्रह्म सच्चिदानन्दरूप हमही हैं और ब्रह्मा विष्णु और सर्वजीव हमाराही स्वरूपहैं यह वेद कहताहै परन्तु अज्ञानी इसमें भेद समझते हैं और चिन्ता पाते हैं जिस प्रकार कि बुद्धिमान् शिर हाथ और मुख शरीरके अङ्गोंको देहसे अलग नहीं गिनते उसी प्रकार जो पुरुष हमको अलग नहीं जानते उनको मैं मिलताहूं और जो मनुष्य कि तीनों देवताओं को अन्यजीवोंसंयुक्त समान गिनताहै और किंचिन्मात्र उसमें भेद नहीं विचारता वह शान्तिपद प्राप्त करके बड़ी पदवी पाताहै और जो कोई कि तीनोंमें भेद गिनताहै वह सहस्र-युग पर्यन्त शोकवान् रहताहै इससे उचितहै कि सुबुद्धिसे सब देवताओं और मुनीश्वरोंके सेवक रहो और विचारो कि विना पूजन ब्रह्मा का विष्णु की पूजन कुछ नहीं और जो विष्णुके विपरीतहैं उनसे मैं प्रसन्न नहीं इसीप्रकार ऐसे उत्तम उपदेश शिवजीने सबको दिये और फिर भृगुकी ओर दृष्टि की और कहा कि जो वरदान तुम मांगते हो वही हो और संसारमें जो कोई विष्णुका या हमारा शत्रु हम दोनों को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अलग समझेगा और विष्णुका भक्त होकर हमारी निन्दा करेगा अथवा हमारा सेवकहोकर विष्णुजीकी बुराईबखानेगा वह सर्वशापका अधिकारी होगा और वह मनुष्य तत्त्वज्ञानसे हीनहै इसी प्रकार जब शिवजी ने यह वार्त्ता की कि शापोद्धार हो तब सब सभाके मनुष्य अतिप्रसन्न हुये और दक्ष कुलसहित सुखी और प्रसन्न होकर अचेत होगया जय जय का शब्द हर ओरसे सुनाई दिया फिर सब पुरुषोंने शिवस्तुति परस्पर पढ़ी ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! जिसने जिस प्रकार की स्तुति की और अपनी इच्छा उस स्तुतिमें कही वह श्रीशिवजीने सबकी पूर्ण की और प्रसिद्धहै कि शिवजी की प्रसन्नतासे सुखोंके ढेर मिलते हैं इस वचन को तुम भलेप्रकार विचारो कि जो पुरुष वेद और धर्मशास्त्र को नित्य पढ़कर उसी का बोध करते हैं परन्तु शिवजी के विपरीत हैं उनको भी इस संसारमें सुख नहीं उसको मुक्ति भी प्राप्त नहीं होती यह वेद और पुराण का वाक्यहै और समाचार सुनो कि शिवजी ने दक्षसे कहा कि तुम यज्ञ का कार्य करो हम प्रसन्नहैं यह श्रवणकर सब प्रसन्नहुये और एक बड़ी सभा नवीन बनाई गई और सब स्त्रियां सुखके राग गीत गानेलगीं और शिवजी की आज्ञासे मुनीश्वरोंने युक्तिसे दक्षका यज्ञ कराया और दक्षने भी सर्वदेवताओं को यज्ञभाग दिया और सबयज्ञ का भाग श्रीसदाशिवजी को देदिया इस कारण कि उसने सबसे उत्तम और बड़ा शिवजी को जानलिया और यथायोग्य सर्वब्राह्मणों को दानदिया दक्षने यज्ञके सम्पूर्ण होनेपर स्त्रियोंसहित स्नानकिया शिवजीने यज्ञको पूर्ण करवाकर दक्षको सुख दिया इसी प्रकार शिवजीने तो यज्ञको पूर्ण करादिया और सर्वदेवता और मुनीश्वर श्रीसदाशिवजी की स्तुति करतेहुये अपने २ घरोंको सिधारे और हम और विष्णुजी अपने २ नगरोंमें चले गये परन्तु शिवजी वहांहीं विराजमान रहे इस कारण कि दक्षने उनको छुट्टी न दी और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा कि आप थोड़े समय के निमित्त यहां विराजमान रहिये कि हम कुलसहित आपकी सेवा करलें सो शिवजीने दक्षको अपना भक्त कर लिया और थोड़े समयके पीछे वहांसे अपने गणोंसंयुक्त कैलास पर्वत पर गये यद्यपि शिवजी प्रसन्न होकर आये परन्तु सतीके वियोगका बड़ा दुःख रहा और बड़े २ चरित्र और कथा वर्णन करके रात्रि दिन बिताने लगे और संसारी जीवोंके समान अपना चरित्र दिखाया इस कारण कि जो अनादि अनन्तहैं उनको दुःख क्या और किस प्रकार होसक्ता है पर हे नारद! शिवजी की ऐसी मायाहै जो हमको और विष्णुजी को अचेत करदेती है उसका भेद हम नहीं जानते हजारों युक्तिकरके हम उनकी महिमाको न जानसके वे परब्रह्महैं और उनकी माया चेली है वे सबके स्वामी हैं और सबसे बड़े हैं वे निर्गुणहैं और वे गुप्त और प्रकट और निरीहहैं उनकी लीलाको जान नहीं सक्ता शेष कहते दीन होगया वेद अपने आप कहताहै कि मैं नहीं जानता और सरस्वती सब कुछ वर्णन करके फिर भी हारमानकर अपनी अज्ञानता को मानती है और विष्णु प्रतिदिवस सेवाकरके अपने मनमें भय किया करते हैं उनके बराबर कौन दीनप्रतिपालकहै वह हरप्रकार भक्तोंके मनोरथ पूरे करते हैं और अपने भक्तोंके लिये नाना प्रकारके दुःख उठाया करते हैं उन्हींकी सहायतासे हम सृष्टि उपजाते विष्णुभी उन्हीं की आज्ञासे सर्वसृष्टिकी पालना करते सो वही शिव निर्गुणस्वरूप हैं॥

सैंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! हमने दक्षयज्ञविध्वंसन और शिव-चरित्र और तत्त्वज्ञान जिससे सबका अहंकार नाश होताहै तुमको सुनादिया अब और जो २ इच्छा हो वह पूछिये यह सुन नारदने हाथ जोड़ नम्रतापूर्वक स्तुतिकर विधातासे पूछा कि हे पिता! यह बताइये कि फिर क्या हुआ ब्रह्माने कहा कि जब सतीने अपना शरीर वहां

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जला दिया तो उससे एक प्रकाशमान ज्योति उठी कि वह पश्चिम की ओर एक देश में गिरपड़ी उसका नाम ज्वालाभवानी हुआ जो सबको प्रसन्न करनेवाली और धर्म की लक्षणाहै उसकी कला प्रत्यक्ष है और उसकी सेवा पूजासे सब कुछ मिलता है उसको ज्वालामुखी कहते हैं पर कल्पभेद के अनुसार सती के और भाग भी पृथ्वी पर प्रकट हुये नारदने कहा कि अब कल्प भेद से सती के सब चरित्र वर्णन करो उनसे और कौन २ देवी प्रकट हुईं ब्रह्मा बोले जब सतीजी दक्षके यज्ञमें गईं और अपना अपमान देखा और शिवशंकरके भाग को न देखा तो क्रोधित हुईं और अपनी माताके पास जाकर बहुत समझाकर कहा कि इन सबोंसे बहुत निन्द्यकर्म दुःख देनेवाला हुआ है हम मरजावेंगी और मुनीश्वर दुःखमें पड़ेंगे हे माता! शिव के गण बड़ा उपद्रव मचावेंगे और कोई दण्ड पाने बिन न रहेगा और हमारे वियोग में शिव बड़े खेदसे लोकमें भ्रमते रहेंगे और फिर हमको पाकर विहार करेंगे ऐसी भविष्य बातें सतीने कहकर चाहा कि अब हम चलें पर उनकी माता और बहिनोंने रोक लिया पर सती प्रसन्न होकर योगधारण कर अन्तर्धान हुईं और तुरन्त गङ्गाकिनारे जाकर स्नान कर अपने कपड़े पहिने और गन्धमादन पर्वतमें शिवपूजा की फिर श्वास ब्रह्माण्डपर चढ़ाकर शरीर छोड़ अपने लोकको गईं उस समय हाहाकार मचा और एक ऐसा बड़ा शब्द हुआ कि जिससे असंख्य दैत्योंके घर नष्ट होगये और देवता आदि अतिदुःखी हुये और सतीके साथ जो गण गये थे वह अतिदुःखी हुये कुछ तो आत्मघात कर मर गये और कोई दूसरी युक्ति करनेलगे पर भृगुने यज्ञकी रक्षाकर गणों की कुछ न चलने दी वे सब जाकर शिवसे पुकारे और शिवने क्रोधित हो अपनी जटा उखाड़ कर उससे गण उपजाये और उन्होंने असंख्य सेना समेत दक्षके यज्ञमें धावा किया और यज्ञको विध्वंस किया।

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और भी बहुत उपद्रव किया और सबको पूरा दण्ड देकर शिवसेवा में पहुँचे तब शिवका क्रोध कुछ कम हुआ पर सतीका वियोग बहुत असह्य हुआ और इसी दुःखमें शिवने अपने गणोंको साथ लेकर गङ्गा के तटमें जहां सतीने अपना शरीर छोड़ा था जाकर सतीके शरीर को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखा और मूर्च्छित होकर मोहित होगये और थोड़ीदेर में उनको चेत हुआ और फिर वही सतीका शरीर उनको दृष्टि आया कि जिस तरह कमलपुष्प उत्तम रीतिसे खिला हो ऐसा स्वरूप देखकर शिव फिर मूर्च्छागत हुये और चाहे वे परब्रह्म निर्गुण मायासे परे और अविनाशीरूप हैं पर संसारकी लीला सबको दिखा कर ऐसे विह्वलहुये कि मनुष्योंको विदित हो कि स्त्रीदुःख कैसा बड़ा है और यह बात प्रकट दिखाई कि मोह सबसे बड़ा है इतना कहकर ब्रह्मा बोले कि हे नारद! कुछ सन्देह न करना शिवकी विचित्रलीला है थोड़ीदेर पीछे जब शिवको संज्ञा हुई तो अपनेको बड़ा अभागी देख बेवश चिल्लाकर रोने पीटने लगे और सन्तोषको धारण न करके अधीरता और निर्बलता प्रकट की और सतीको देख अन्यजीवोंके समान कहने लगे कि हे प्राणप्यारी! उठो मैं तुम्हारे विना बहुत बेचैन हूं वह तुम्हारी तिरछी चितवन नहीं देखता उठो २ हम से क्यों नहीं बोलती हो यह कह सब शरीरको अपने हाथोंसे छुवा और हृदयसे लगाया और बारम्बार उसको कण्ठ लगाकर चूमा और फिर २ उस सतीके शवको लिपट२कर अतिप्रेमके सागरमें मग्नहो मूर्च्छागत हुये और कुछ दिनोंके पीछे सचेत हो सतीके शरीरको अपने शरीरसे लिपटाये चारों ओर दौड़ते फिरे और बड़े दुःख उठाये उन्होंने सब देश, पर्वत, द्वीप, समुद्र, वन, लोकालोक और सब पृथ्वी भरमें भ्रमण किया और सप्तशृङ्ग पर्वत भरतखण्डमें फिरकर देवनदीके तटपर आये वहां वरगद का बहुत अच्छा वृक्षथा वहांपर कोई न था तो बहुत ऊँचे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से धाय २ रोने लगे और साध्वी, सती आदि बहुत नामले २ पुकारने लगे और आंखोंसे अश्रुकी धारा बह निकली जहांपर कि यह शिव के अश्रु गिरेथे वहां नेत्रसरोवर नाम तीर्थ होगया जिसमें नहाकर मनुष्य अपना मनोरथ पाते हैं और वह तपस्वियोंके लिये तपोभूमि है उसके स्नानसे कोई पाप नहीं रहता उसकी लम्बाई दो योजनभर है फिर शिव आगे चले और जहांपर कि सतीका कोई अङ्ग शरीर से जुदा होकर गिरा वही स्थान सिद्धपीठ होगया जिसकी पूजासे सब मनोरथ पूरे होते हैं और उस स्थान पर देवी सब कलाओं से रहकर अपने भक्तोंको सब कुछ कृपा करती हैं ऐसी लीला करके शिव एक स्थानपर बैठगये और जो शेष अङ्ग रहगये थे उनका क्रियाकर्म किया और सब हड्डियां इकट्ठीकर उनकी एक माला बनाई और अपने गले में धारण की और चिताकी भस्म अपने शरीरमें लगाकर उसी जगह बैठरहे और सतीको प्राणेश्वरी सती भवानी आदि नामसे कह स्मरण किया और रो रो कर विह्वल होगये और फिर सचेत हो बहुत रोये और ऐसी लीलाको सब सृष्टिमें कोई न देखपाया और परब्रह्म होकर ऐसी लीला की इस लीलाके पढ़ने सुननेसे बड़ी भक्ति प्राप्त होती है॥

अड़तीसवां अध्याय॥

इतना कह सूत पौराणिक बोले कि हे शौनकादि मुनियो! जब नारदने यह सिद्धपीठका चरित्र सुना तो ब्रह्मासे पूछा कि हे पिता! सतीके अङ्गोंसे जहां २ जो पीठ प्रकटहुये उनको कहिये ब्रह्मा बोले कि हे पुत्र! अब हम ब्योरेवार कहते हैं मनलगा सुनो कि देवपूर जो अतिरमणीक पर्वत है वहां सतीके दोनों चरण गिरे जिससे महाभागा देवी प्रकट हुई और वहां शिवलिङ्ग भी है और वह स्थान सिद्ध पीठहै उसके प्रकट होतेही हम विष्णु और सामरमुनिने उसकी पूजा की और उसे प्रसन्नकर अपना मनोरथ पाया और औट्यानिदेश में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सतीके दोनों नितम्बोंसे कात्यायनी नामक सिद्धपीठ स्थित हुई और वहां भी शिवलिङ्गहै और वह देवी अपनी महिमा प्रकटकर सर्वसृष्टि और हम और विष्णुसे पूजी गईं और कामशैलपर्वत पर योनिके गिरनेसे कामाक्षानामदेवी प्रकटीं जिनको कामरूपा कहते हैं वह भी हम सबके हाथों से पूजी गईं जिससे सर्वमनोरथ पाये और सतीकी अग्निसे पूर्णशैलपूर्णेश्वरी भवानी शिवलिङ्ग सहित स्थित हुईं और जालंधर पहाड़पर सतीके कुच गिरपड़े जिससे चण्डीनाम देवी सिद्धपीठ प्रकटीं और कामरूपसे पूर्व ललितकान्ता नाम सिद्धपीठ प्रकट हुई और गङ्गा के तटपर महामाया का एक अङ्ग कटकर गिरा जिससे वागीश्वरी देवी सुशोभित हुईं और इसीप्रकार सतीके प्रत्यङ्गसे बहुत से सिद्धपीठ प्रकट हुये वहां सब जगह शिवके लिङ्ग स्थापित हुये और हम विष्णु और सब देवतादिकोंने उनकी पूजाकर प्रणाम किया और जो कोई उनकी पूजा करताहै उनके निस्सन्देह सब मनोरथ पूरे होते हैं उन्हों ने हरप्रकारसे अपने भक्तों को मुक्ति दीहै शिवने मुख्य मनुष्योंके उपकारके लिये यह लीला की वह दोनों शिव और भवानी निस्सन्देह सृष्टिके माता पिता हैं उनकी बराबरी लोकमें कोई स्त्री पुरुष नहीं कर सक्ता वे दोनों लोक परलोकका सुख देते हैं वह तीनों लोकमें सबसे बड़े हैं प्रकृतिका मूल जगदम्बा सती से है और विष्णु हम सब उसके सेवकहैं औरशिवब्रह्म निर्गुण सगुण और अप्रमेय हैं इनदोनों की सेवा से नर भवसागर पार होजाताहै फिर सती मैनाकके यहां उपजीं और वहां बड़ी लीला की और सुगमतासे उस पर्वतके कुल को तारा और माता पिता को चरित्र करके बड़ा आनन्द दिया और फिर माता पिता की आज्ञा लेकर तपकर शिवजीको ब्याही गईं और शिवजीकी अर्धांगी हो देवतोंके दुःख छुड़ादिये और फिर शिवका तप कर अपने शरीरका गौर रङ्ग किया फिर दोनों शिवशक्तिमें मिलकर देवताओंके बड़े २ काम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निकाले इस बात को सब जानते हैं कि प्रकृति और पुरुष ब्रह्मस्वरूप हैं हे नारद ! इस प्रकार शिवशक्ति अपने भक्तोंकी भक्ति देख प्रसन्नता दया करते हैं सर्वलोक शिव शक्तिरूप हैं उनसे कोई भी बाहर नहीं शिव सृष्टिके पिता शिवरानी माता हैं इससे उत्तम और कोई बुद्धि नहीं है इस बातके जाननेसे मुक्ति पदवी प्राप्त होती है और यही बुद्धि जब भाग्यसे उदय होती है तो जीव संसारबन्धन से मुक्त होकर परमपद पाता है वे मनुष्य लोकमें धन्य हैं जो शिव और शिवरानी के प्रेममें मग्न होगये हैं और बहुधा गौरीशंकरके चरणों का ध्यान करके पार लग गयेहैं उन्हींकी शक्तिसे मैं सृष्टि उपजाताहूं और उन्हींकी कृपासे विष्णु संसार को पालते जिनको हम विष्णु सनकादिक भी नहीं जानते केवल अपनी बुद्धिके अनुसार उनका वर्णन करते हैं वही शिवशक्ति प्रकट रूप धरकर अपने भक्तोंकी भलाईके लिये नाना प्रकार की लीला करते हैं हमने अपने बुद्धिके अनुसार शिवसतीचरित्र कहा है और इसी प्रकार सब अपनी बुद्धिके अनुकूल शिवसती का वर्णन करते हैं और अन्तको दीन होकर पार नहीं पाते यह शिव और सतीका चरित्र अतिपवित्रता और आनन्द देनेवाला है इसके सुनने से कीर्ति और आयु बढ़ती है और शत्रु भी अपने अधीन रहता है और बड़े २ पाप नष्ट होजाते हैं और शिव अतिप्रसन्न होते हैं यह शिवसती का जो चरित्र पढ़े अथवा औरोंको सुनावे वह अपने कुलसमेत मुक्त होकर औरोंको मोक्ष करे और बहुतसी आपदाओंसे छूटकर सदा प्रसन्न बना रहे और इस संसारमें नाना प्रकारके भोग भोग कर अन्तमें शिवलोक का बास पावे यह चरित्र तो हम कहचुके अब जो और कुछ सुना चाहते हो वह वर्णन करो ॥

इति श्रीशिवपुराणेश्रीशिवविलासेउत्तरखण्डेब्रह्मानारद संवादेद्वितीयखण्डस्समाप्तः ॥ २ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवपुराण भाषा ॥

तृतीयखण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

सूतजी बोले कि हे मुनियो ! नारदने इतना ब्रह्माजीसे सुन कहा कि हे ब्रह्मन् ! बतलाइये कि फिर सतीने क्योंकर अवतार लिया और उनका विवाह शिवसे क्योंकर हुआ और फिर उन्होंने अर्धाङ्गी नाम क्योंकर पाया इसके सिवाय और सब लीला मुझसे कहिये क्योंकि मुझे शिवचरित्र सुननेसे तृप्ति नहीं होती बरन इच्छा बढ़ती जाती है ब्रह्माने अतिप्रसन्न होकर कहा कि सतीने अपने जलने पर शिवसे यह वरदान मांगा था कि हमको सदा आपके चरणोंकी भक्ति बनीरहे और आपकी प्रीति कभी कम न हो मैं केवल यही बात चाहतीहूं यह कह अपना शरीर जलादिया और फिर मैनाके उदरसे अवतारलिया नारदजी बोले कि मैं मैनाको नहीं जानता वह किसकी लड़की और किसके साथ ब्याही गई विस्तारसे वर्णन कीजिये ब्रह्मा बोले कि उत्तर की ओर हिमालय पर्वत सब पर्वतों का राजाहै वह बड़ारमणीक पहाड़ है और एक देशहै जहां उसका राजा रहाकरता था उसके वृक्षोंके पत्तों के साम्हने कस्तूरी तुच्छहै उसकी स्तुति में जिह्वा लालहै वह विना तैल दीपक जलाते और वनके मनुष्य दारु लकड़ी अपने घरों में जलाकर प्रकाश करते वहां की बरफ शिलाके समान कठोर जिसके ऊपरसे लोग मार्ग चलते और उँगलियां जड़वत् होजाती थीं जो कोई छोटा मनुष्यभी वहां पहुँचे तो वहांके बड़े २ पद वाले उसका आदर और सन्मान करते थे उस पहाड़पर ऐसी गायें थीं कि लोग उनकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूछका मोरछल बनाते और वह असंख्य वनमें फिरतीं और उस पर्वत के राजा हरएक मनोरथी का उचित रीति पर मनोरथ पूर्ण करते और वहां की स्त्रियां निर्भय होकर चारों ओर भ्रमण करतीं सैकड़ों प्रकार के सुगन्धित पुष्प फूलेहुये थे अब हम उस पर्वत की श्रेष्ठता को वर्णन करते हैं जिस तरह उस पर्वतने हमसे बड़ाई प्राप्त की तो पहिले हमने विचारा कि सब पहाड़ों पर किसको राजा करना चाहिये सो हिमालय पर्वतमें सर्वराज्यलक्षण देखकर हमने उसको राजा बनाया वह पर्वतों का राजा विष्णुके अंशसे उपजाहै उसका शरीर देवताओंके समान और उसका रूप सत्पुरुषों के समान बहुत ऊंचा और हृदय अतिदृढ़ और पुष्ट मानो धर्मने शरीर धारण कियाहै अतितेजवान् पापोंसे रहित महाबुद्धिमान् कि उसके समान वही है औरों को दिखाई नहीं देता और न उनके पास कोई पहुँचसक्ताहै कि जिसतरह समुद्रमें रत्न हो और किसीको न मिले वह पर्वतों का राजा हुआ और नीतिपूर्वक पापरहित राज्य करके प्रजाकी पालना करनेलगा उसकी प्रजाभी शुद्ध आचरण की नियमव्रत धारण किये हुये है और अपने २ मार्गों में दृढ़ और जो बल अर्थात् कर कि प्रजासे राजाने लिया वह उन्हीं की भलाईके लिये था जैसा कि सूर्य पृथ्वीसे रस लेताहै और फिर वर्षा करके उन्हींको देता और हिमाचल सम्पूर्ण राजाओंके मुख्यलक्षण धारण किये हुये था और सम्पूर्ण शास्त्रज्ञ बुद्धिमान् दूरदर्शी और भेद के छिपाने में ऐसा निपुण था कि जिसकी सम्मतिसे जो बात करनी हो उसको कोई न जानता था और अपने शरीर की चिकित्सा और उपाय विना पालन करता और किसी कार्य में जल्दी न करता और द्रव्यप्राप्ति औरों के आनन्दके लिये उचित समझता वह चुप इसलिये होगया कि मौनसे उत्तमबुद्धि प्राप्त होतीहै और सामर्थ्यवान् होनेपर दीनता स्वीकार की और त्याग व निर्लोभ से कीर्तिका प्रकाश बढ़ा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गर्व और अहंकारसे कुछ प्रयोजन न रक्खा और कामजाल से भिन्न रहा विद्याग्राहक और धर्मका इच्छिक था यद्यपि वह युवाथा पर बुढ़ापा लेकर प्रजाको पिताके समान उदारतापूर्वक पालन करता और जो दण्डयोग्य थे उनको दण्ड दिया कि धर्म स्थिर रहे और हरविद्या और गुणका जाननेवाला था उसके राज्य में चोर चोरी छोड़ वेदकी आज्ञाके अनुसार चलनेलगे उसकी बराबर किसीने लोकमें यश न पाया और जो उसके समान कोई धर्मके काम करता वह बड़ा नीतिमान्था और उसके मित्र उससे प्रीति रखतेथे और उसके राज्यमें किसी को कष्ट न था ऐसे राजा के लिये देवताओं ने अपने मनोरथके पूर्ण होनेके लिये पितरोंसे कहा कि अपनी बड़ी लड़की जिसका मैना नामहै उसे हिमाचलसे विवाह दो इससे देवताओंके बड़े २ काम निकलेंगे और सबके दुःख दूर होजावेंगे पितरोंने देवताओंकी विनयको इस कारण माना कि उन्होंने अपनी लड़कियों के शापको स्मरण किया और शुभलग्न साधकर मैनाको हिमाचलके साथ ब्याह दिया और जो २ रीति भांति आनन्द मङ्गल विवाह में होताहै वह उत्तम भांतिसे हुये और हम और विष्णु और सब देवता आदि इस बातके विचारने से कि जो लड़की मैनासे उपजेगी वही सदाशिवके साथ विवाही जावेगी अतिप्रसन्न हुये और उसको हिमाचलके साथ बिदा कर दिया हिमाचल मैनाको साथ लियेहुये घर गये॥

दूसरा अध्याय॥

सूतजी बोले कि हे शौनक मुनियो! इतनी कथा सुननेके उपरान्त नारदने पूछा कि हे पिता! मुझे एक सन्देह उपजाहै इसलिये मैं आप से पूछता हूं कि मैनाकी और कितनी बहिनें थीं क्योंकि आपने ऊपर कहाहै कि मैना अपनी सब बहनोंमें बड़ीथी और किसने यह शाप दिया ब्रह्मा बोले कि हमारा पुत्र दक्षप्रजापति जिसकी सन्तान असंख्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुई उसने पहिले बहुत पुत्र उपजाये पर उनसे दक्षको कुछ आनन्द न हुआ और वे मुक्ति पाकर परमपदको पहुँचे तब दक्षने साठ कन्या उपजाईं और जिस प्रकार उनका विवाह चन्द्रमा आदिकेसाथ किया वह वृत्तान्त हम तुमसे कहचुके हैं निदान उनमें से एक दक्षकी लड़की जिसका नाम स्वधा था पितरोंके साथ ब्याही गई उससे तीन लड़कियां अर्थात् पहिली मैना जो सबसे बड़ीथी दूसरी धन्या जो मँझली थी तीसरी कलावती जो सबसे छोटी थी वह उपजी यह तीनों बड़ी कीर्तिवाली धर्मरूपा अतिसुन्दर थीं जो मनुष्य प्रभातको इनके नाम लेता है उसके सब मनोरथ पूरे होतेहैं उनके चरित्र शुद्ध जिनके सुननेसे आनन्द प्राप्त होताहै यह तीनों लोकों में सम्मान पाती हैं और वास्तवमें इसी योग्य हैं एक दिन यह तीनों लड़कियां साथमें श्वेतद्वीप पर क्षीरसमुद्रके निकट विष्णुकी सेवामें पहुँचीं और विष्णुजी के दर्शन किये और उनकी स्तुति करने के उपरान्त उनकी आज्ञासे बैठ गईं उस समय हमारे पुत्र सनकादिक भी वहां पहुँच बैठगये और विष्णु को प्रणामकिया सनकादिकको देख सब उठखड़ेहुये और आदर करके प्रणाम किया पर ये तीनों कन्या भाग्यवश बैठीरहीं और प्रणाम भी न किया हे नारद! जैसा शिव चाहतेहैं वैसाही होताहै मनुष्य व्यर्थ दूसरोंको दोष लगाते हैं होता वही है जो शिवकी इच्छा होती है उसीको भाग्य वा कर्म कहते हैं ऐसी ढिठाई तीनों लड़कियों की देख सनत्कुमारने बड़ा क्रोध किया यद्यपि वह बड़े योगेश्वर, बुद्धिमान्, निरहंकार, परमहंस पर उस समय सब बातें भूलगये और शिवकी मायामें फँसकर क्रोध किया ऐसा तीनों लोकमें कौन उपजा है जो शिवकी इच्छा और लीलाको रोक दे सनत्कुमारने कहा कि तुम तीनों बहनें बड़ी मूर्ख हो वेदका आशय तुमने नहीं पाया और तुमने न जाना कि ब्राह्मण संसारभरके मानके योग्य हैं और अहंकार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के वशमें पड़ मनुष्योंके सदृश अपने मार्ग को छोड़ा तुमने हमारा बड़ा अपमान किया इस लिये तुम देवताओं के देश व स्वर्ग को छोड़कर मनुष्योंके देशमें जा रहो यह शाप सुन तीनोंने आश्चर्य में हो विनय की कि हे मुने! हमसे अपराध हुआ कि आपका सम्मान न किया और मनुष्योंके समान हमसे यह कर्म बनपड़ा सो उसका फल भी हम पाचुकी हैं पर विनय यह है कि जब हमारा पाप नष्ट होजावे तब फिर हम इसी प्रकारकी दशा प्राप्त करें कृपा करके यह वर दीजिये यह बिनती सुन सनत्कुमार अतिप्रसन्न हुये और कहा कि तुमने जो विनय की तो अब हम प्रसन्नहैं सो तुमको यह वर देते हैं कि तुममें से जो सब से बड़ी है वह विष्णुके अंशसे जो हिमाचल उपजा है उसकी स्त्री होगी और उसकी लड़की जो उत्पन्न होगी वह शिवरानी होकर तुम्हारे कुल भरके पाप नष्ट करदेगी और जो मँझली धन्यानामा है वह त्रेतायुग में जनकके साथ ब्याही जावेगी उसकी लड़की सीतानाम होकर श्रीरामचन्द्रके साथ ब्याही जावेगी और तीसरी तुम्हारी बहिन द्वापर युगमें वैश्य वर्ण वृषभानको बरैगी उनसे राधानामी लड़की उपजकर श्रीकृष्णजी के साथ ब्याही जावेगी और उसीशरीरसे तुम तीनों स्वर्ग में पहुँचोगी और कहा कि जिसकी बुद्धि शुद्ध होती है उसको आनन्द प्राप्त होता है और बे परिश्रम आपदा और दुःखके उठाने विना यश प्राप्त नहीं होता यह कह सनकादिक चलेगये और यह तीनों लड़कियां भी अपने पिताके घर आईं नारद बोले कि इसके पीछे क्या हाल हुआ ब्रह्माने कहा कि हां हम सब कहते हैं जिसके सुनने से शिवकी भक्ति बढ़ती है॥

तीसरा अध्याय॥

ब्रह्मा बोले कि हे नारद! जब हिमालय विवाहकर अपने घर आये तब बड़ी धूमधाम हुई और ब्राह्मणों को हिमाचलने प्रसन्न किया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औरों को अपने शुद्धशीलसे प्रसन्नरक्खा और भाई आदिको विदा किया फिर देवता मुनीश्वरआदि अपने मनोरथों को पाकर हिमाचल के निकट आये और हिमाचलने सबका आदर सम्मान किया और कहा कि हमारा उत्तम भाग्यहै कि आपने हमारा घर पवित्र किया आपके दर्शनसे हमारे दुःख दूर होगये अब मुझे अपना जानकर कुछ आज्ञा दो देवताओंने प्रसन्न हो कहा कि हम इसलिये तुम्हारे पास आये हैं कि देवताओं का काम तुमसे निकलेगा तुम जानते हो कि जिस प्रकार सतीने अपना शरीर छोड़ा अब तुम ऐसी युक्ति करो कि वही सती तुम्हारी कन्या हो इसमें तीनोंलोकका आनन्द होगा हे नारद! यह युक्ति हिमाचल को बताकर श्रीजगदम्बा की सेवामें पहुँचे और सब ने बड़ी स्तुति की कि देवी प्रकट हुई और अपने पूर्ण स्वरूपसे दर्शन देकर सबको प्रसन्न किया जो उत्तम रथपर चढ़ी थी जब देवता उस महामायाके तेजको न सहसके तो देवीकी कृपासे उनको ऐसे स्वरूप के दर्शनकी शक्ति प्राप्त हुई तब बारम्बार उन्होंने स्तुति की और देवता और मुनीश्वरोंने हाथ जोड़कर विनय की कि हे जगदम्बा! तुम सब से श्रेष्ठ हो तुम्हारी महिमा को वेद भी नहीं जानते हैं जीव तुम्हारी शरणमें आकर कोई खेद नहीं पाता तुमने दक्षके घर अवतार लेकर हमारे नाना प्रकारके दुःख निवृत्त किये और फिर दक्षसे अप्रसन्न होकर तुमने अपना शरीर त्यागदिया और देवताओंके कार्य पूरे न हुये इससे देवता और मुनीश्वर सब दुःखी हैं सो हम तुम्हारी शरणमें आये हैं तुम हमारे मनोरथों को पूर्ण करो अर्थात् फिर पृथ्वी में अवतार लेकर शिवरानी हो जिस से देवताओं का दुःख मिटे और ब्रह्मा और विष्णुभी प्रसन्न होवें इसके सिवाय सनत्कुमारने जो पहिले भविष्यवाणी कही है वह वचनभी पूरा हो केवल तुम्हारे और शिव की कृपाकटाक्ष से हमारे काम ठीक होंगे ऐसी बातें देवताओं से सुनकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवी प्रसन्न हुई और मधुरवाणी से कहा कि बहुत अच्छा हमारी यह पहिलेही इच्छा थी हम अवश्यही अवतार लेंगी हमारा तप आजतक मैना और हिमाचल कर रहेहैं उनसे अधिक हमारा पूजनेवाला और भक्त कोई नहीं उनके घर हमारा अवतार होगा तुम सब इस बातपर निश्चय रखकर अपने २ घरों को जाओ हम तुम सबका दुःख दूर करदेंगी और एक गुप्तवार्त्ता तुमसे हम प्रकट करती हैं कि शिवने हमारे लिये बहुतसे उपाय किये हैं कि हम अवतार धारण करें जबसे हम ने दक्ष प्रजापतिके यज्ञमें अपने शरीर को छोड़ दिया तब से शिव ने गृहस्थोंका धर्म छोड़कर संसारसे अलग हो हमारे वियोगमें दुःखी हुये और हमारे शरीरकी भस्मको अपने शरीरमें मला और हमारी हड्डियों की गर्दनमें माला डाली और वियोगसे दुःखी हो अकेले वनोंका भ्रमण कर देवताओं की सभामें भी नहीं गये अब तुम कुछ सन्देह मतकरो तुम्हारे सब दुःख दूर होजावेंगे और तुमको उचित है कि शिवकी सेवा करते रहो यह कह देवी तो अन्तर्धान होगई और देवता जगदम्बा को प्रणामकर अपने २ घरों को चले और समय को देखते रहे इस चरित्र को जो कोई सुनेगा व सुनावेगा वह प्रसन्न रहकर परमपद पावेगा और उसको सदा धन संतान की वृद्धि होती रहेगी॥

चौथा अध्याय॥

ब्रह्मा बोले कि हे नारद! हिमाचलने देवताओंकी आज्ञा अपनी स्त्री मैनाको सुनाई और मैना अतिप्रसन्न हुई और दोनोंने अतिप्रसन्नताके साथ गृहस्थधर्म को उत्तम रीतिसे अङ्गीकार किया और मैना शिवपूजा करनेलगी और जिस २ बातमें शिव प्रसन्न होते हैं उनमें राति दिन लगी रही और दोनों शिव शिवरानीके ध्यानमें मग्न हुये हे नारद! जो शिवभक्त हैं वे धन्य हैं वे लोक परलोक दोनोंमें अति आनन्द और पुण्य पाते हैं और अपने कुल बरन औरोंके कुलको भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुक्त करदेते हैं शिवपूजासे बड़े २ लाभ हैं निदान हिमाचलने तो देवी का तप किया और मैनासे कहा कि तुम अपने तप से शिवको प्रसन्न करो यह सुनकर दोनों शिवशक्तिका तप करने लगे और पूर्ण तपकर दान करते और रात दिन सिवाय इस कामके सब भुला दिया अष्टमी के दिन व्रत रखते और शिवपूजन करते फिर वह मधुमास व्रत करके उसकी पूर्णताके लिये सुरसरि औषधप्रस्थ देशमें गये और देवी की शिवसहित स्थापना की और तपमें प्रवृत्त हुये इस तपकी अवधि बीस वर्ष है तथाच कभी २ विना अन्न जल रहकर और कभी केवल वायु भखकर शिवशक्तिके तप पूजनमें एक दिनका भी अन्तर न किया और हरदिन नाना प्रकारकी वस्तु शिवपर चढ़ाया करते और हरदिन प्रभात के समय उठकर पूजन करते और अतिप्रीति के साथ स्तुति पढ़ा करते जब यह व्रत पूर्ण हुआ तो उमा प्रकट हुईं जिनका उत्तमोत्तम स-जल घनवत् श्यामस्वरूप जगत् की लीला सर्वाङ्ग पहिले के वर्णनके अनुसार आठ हाथ तीन आंखें सम्पूर्ण वस्त्र और भूषणोंसे अलंकृत थीं बोलीं कि अपना मनोरथ कहो जो मांगो वही दियाजावे मैनाने जो नेत्र खोल जगदम्बाके स्वरूपको देखा तो प्रीतिने बल किया और कहा धन्यभाग कि तुम्हारा दर्शन प्राप्त हुआ और विनय की कि यह बात अवश्य है कि कुछ तुम्हारी स्तुति करूं पर हे माता! मुझको इतना ज्ञान नहीं है और न कुछ किसी प्रकारकी विद्या शक्ति रखतीहूं देवीने अपना हाथ मैनाको छुवाया जिससे उनको कुछ बोध प्राप्त हुआ और प्रेम में मग्न हो आंखोंसे आंसू बहाये और चैतन्य होकर ऐसे कठिन पदों और शब्दोंमें स्तुति की कि जिसको शिवाभी नहीं समझासकीं ऐसी स्तुति सुन देवी बोलीं कि जो कोई इस स्तुति को सुनेगा वा पढ़ेगा वह सर्व प्रकारके आनन्द पावेगा और स्त्री पुत्र सन्तान पाकर और संसार भर का राज्य भोग हमारे लोकमें आवेगा मैना बोली आपको कौन ऐसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वस्तुहै जिसको नहीं देसक्ती हो मेरी यह बिनती है कि पहिले तो मेरे उदरसे सौ पुत्र बड़े वीर धीर उत्पन्न होवें और वे ब्रह्मज्ञानी हों और अपने कुलके नाम करनेवाले और दोनों ओरके घरानों की मुक्ति देनेवाले उत्पन्न हों फिर एक कन्या उपजे जिसमें सब बातें तुम्हारे समान हों और तीनों लोकमें उसके समान दूसरी न हो और देवता आदिके दुःख दूर करनेमें कुल्हारीके समान हो देवी हँसकर बोली कि तुम्हारी बुद्धिको धन्य है जो ऐसा वर मांगा अच्छा हमने दिया तुम्हारे सौपुत्र जैसा कि तुमने कहा उसी तरहके उपजेंगे और जोकि मेरे समान मैंही हूं इससे मैं आप तुम्हारी लड़की होकर तुम्हारे घर अवतार लूंगी तुमने हमारी बड़ी सेवा की है यह कहकर देवी तो अन्तर्धान होगई और मैना जिस ओर देवी गुप्त हुई थीं उस दिशा को प्रणाम कर जय २ कहती हुई अपने घरकी ओर चली और अति प्रसन्न होकर देवीका यश गाती हुई घर पहुँची और दोनों हाथ जोड़ हिमाचलसे सब हाल कह सुनाया जिसके सुननेसे हिमाचलको बहुत ही प्रसन्नता प्राप्त हुई और मैनाकी बड़ी स्तुति की और बड़ा उत्सव मनाया उस देशकी सर्वप्रजा और वहांके निवासी अतिप्रसन्न हुये॥

पांचवां अध्याय॥

ब्रह्मा बोले कि हे नारद! जिस दिनसे कि सतीने अपने शरीरको छोड़ा था उस दिनसे शिव अवधूतस्वरूप अङ्गीकार करके मनुष्यों के समान वियोगसे दुःखी हो संसारमें चारों ओर भ्रमण किया किये और योगियोंके सदृश नग्न होकर सर्वाङ्गमें भस्म मली और जटाजूट शीशमें धार मुण्डोंकी माला कण्ठमें पहिनी और सांपोंके कुण्डल और उन्हीं के हार और कोपीन बांधकर पर्वत की कन्दरामें बैठगये और अपना तप करनेलगे और अकेले नाना प्रकारके दुःख सहे एक दिन नग्नशरीरसे दारुक वनमें गये इस प्रकारसे नग्न देख मुनियों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की स्त्रियां महाकामिनी होकर शिवसे लिपट गईं और सब मुनीश्वरों ने यह देख शिवको शाप दिया कि जिससे शिवका लिङ्ग पृथ्वीपर गिरपड़ा और तीनों लोकमें बड़ा हाहाकार हुआ इतना सुन नारदने कहा कि मैं चाहताहूं कि आप ऐसे शिवचरित्र को विस्तृतसे वर्णन करें ब्रह्माजी बोले हे नारद! जब शिव वनमें नग्न होगये तब मुनि-लोग वनमें गये थे केवल वहां स्त्रियां थीं उन्होंने शिवको देखा कि ऐसी कठिन अवस्था परभी शिवकासा मनोहररूप तीनों लोकमें किसी का नहीं है उन मुनिपत्नियोंके मन विवश होगये एकने कहा देखो उस स्त्री का बड़ा भाग्य होगा जो इनको लिपटे दूसरी बोली यहां चली आवो इनको देखो इसी प्रकार सब स्त्रियां हँस २ कर शिवको लिपट गईं इतनेमें उनके पति वनसे आये और यह हाल देखा और अति क्रोध कर कहनेलगे कि हे मूर्ख, नारकी, अधर्मी! यह क्या पाप करता है तूने वेदके विरुद्ध धर्मको अङ्गीकार किया और जोकि तुमने हमारा धर्म बिगाड़ा इस लिये तुम्हारा लिङ्ग पृथ्वी पर गिर पड़े इतना कहते ही शिवका लिङ्ग धरती पर गिरपड़ा और पृथ्वीके अन्दर पाताल में चलागया और शिव विना लिङ्ग होकर अतिलज्जित हुये और अपने रूपको प्रलयके रूपके सदृश महाभयानक बनाया और किसी पर यह भेद प्रकट न हुआ कि क्यों शिवने यह चरित्र रचा सो शिवलिङ्ग गि-रनेके उपरान्त बड़े २ उपद्रव उठे जिससे तीनोंलोक भयवान् व दुःखी और चिन्तित होकर कांप उठे पर्वत जलनेलगे और दिनमें आकाश से तारे गिरनेलगे हाहाशब्द चारों ओर पूरित हुआ पर किसी पर यह भेद न खुला और सबसे अधिक मुनिलोगों के आश्रमों पर यह उत्पात उठा हे नारद! हर मनुष्य को उचित है कि जो काम वह करे अच्छी तरह समझ बूझकर करे शीघ्रता और अज्ञान से कुछ न करे और जो मनुष्य विद्या पढ़ने से अहंकारी हैं वे शिव को नहीं जानते और पीछे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को दुःख उठाते हैं निदान मुनीश्वर अतिदुःख पाने के उपरांत देवलोकमें गये और वहांभी चैन न पाकर देवताओं समेत हमारे यहां पहुँचे और इन्द्रआदि सब देवताओं ने हमको प्रणाम किया और कहा कि क्या कारण है कि तीनोंलोक जलेजाते हैं हमने बहुत सोचा पर मूल बात को न समझे और सबको साथ ले विष्णुलोक में जाकर विष्णु को प्रणाम किया और स्तुति की और इस उत्पात का कारण पूछा और कहा कि पृथ्वी में भूकम्प और उल्कापात और पहाड़ों का जलना क्यों होरहा है आप इसे कहिये और हम सबपर से इस उपद्रव को टाल दीजिये और ऐसा उपाय कीजिये जिसमें तीनों लोक ऐसे ईश्वरीय कोप से छूटें॥

छठां अध्याय॥

विष्णुजी बोले कि हमने दिव्यदृष्टिसे इसका कारण जाना है जैसा कि हम वर्णन करते हैं हम क्या बतावें जैसे कि बुद्धिमान् भी पशुओं के समान होगये और ऐसा निन्द्यकर्म किया कि जिस बुद्धि की हीनता के कारण ऐसे उपद्रव उठ रहे हैं इन मुनीश्वरों ने अहंकार से शिवको न पहिंचाना चाहे यह बुद्धिमान् भी हैं पर शिवमाया संसार को घेरेहुये है इन्होंने अपनी स्त्रियों को काम भाव शिवके तनमें लिपटे देखकर अपना ब्रह्मतेज दिखाया और जब शिवका लिङ्ग गिरपड़ा उस समय से यह उपद्रव उठे इससे अवश्य है कि हम सब शिवकी शरण में चलें जबतक वह अपने लिङ्गको फिर धारण नहीं करते तबतक चैन नहीं मिलेगा बरन प्रलय होजावेगी यह कहकर विष्णु सबको साथ लेकर शिव के पास गये और नाना प्रकार की स्तुति करनेलगे और कहा कि हे शिव! हमपर कृपा करो और अपने लिङ्गको फिर धारण करो यह सुन शिवने लज्जित हो कहा कि हे विष्णो! तुम्हारा कुछ दोष नहीं है हमने आप यह चरित्र किया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है और बिन स्त्री हम को क्या अवश्य है कि फिर लिङ्ग को धारण करें हम को इसी दशा में आनन्द है यह सुनकर सब देवता फिर शिवकी स्तुति करने लगे और कहा यद्यपि हमको आपसे ढिठाई न करनी चाहिये पर विनय यह है कि सतीजीने फिर हिमाचल के यहां अवतार लिया है वह आपका तप करके फिर तुम्हारी स्त्री होंगी उचित है कि आप लिङ्ग को फिर धारण करें शिव बोले कि जो तुम हमारे लिङ्ग की पूजा करो तो हम फिर नये सिरसे लिङ्ग धारण करें और सृष्टि फिर आनन्द से रहने लगे यह सुन विष्णु हम और भी सबों ने कहा कि हम आपके लिङ्ग की पूजा करेंगे इतने में शिव अन्तर्धान होगये और हम सब पाताल के नीचे जाकर उसी पहिले लिङ्गकी पूजा करने लगे पहिले विष्णु ने फिर हमने फिर इन्द्रने इसी प्रकार सब देवताओं ने क्रमसे पूजा की और इस पूजा में बड़े बड़े उत्सव हुये आकाश से पुष्प बरसे नाना प्रकार के बाजे बजाये तब शिव अपने लिङ्ग से तुरन्त प्रकटे और हँसकर बोले कि हम तुम्हारी पूजा से अतिप्रसन्न हुये अब वरदान मांगो हम सबों ने विनय की कि तीनोंलोक को आनन्द देकर अपने लिङ्गको धारण करो और हमको अहंकार न होवे आपकी भक्ति करते रहें शिवने कहा कि यही होगा और अपने लिङ्ग को धारण करलिया और विष्णु और हमने उत्तम और शुद्ध हीरा लेकर लिङ्ग के समान एक अच्छी मूर्ति बनाई और उस जगहपर स्थापित की और कहा कि इस मूर्ति हारकेशकी जो पूजा करेगा उसको लोक परलोक दोनोंमें सुख प्राप्त होगा सिवाय इसके और शिव के लिङ्ग स्थापन कर बड़ी प्रसन्नतासे पूजा की फिर हम सब उस मूर्ति का ध्यान करके अपने अपने लोकको चलेगये और शिवको सबसे उत्तम समझा और शिवभी अपने लोकमें सुशोभित हुये और चारों ओर भ्रमण करते रहे और कभी कभी मुनीश्वरोंके पास बैठकर अपने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन को बहलाते रहे और कभी पहाड़ पर चढ़जाते और ऐसी युक्तिसे सतीके वियोग को भुला दिया करते जो इस कथा को मन लगाकर सुनेगा वह सदा प्रसन्न रहेगा और शिवलिङ्ग की पूजासे कुलसमेत मुक्ति मिलती है और शिवलोक बास प्राप्त होता है हम और विष्णु सब लिङ्ग को पूजकर आनन्दमें रहते हैं और शिवलोकमें पहुँचते हैं हे नारद! अब क्या सुनोगे॥

सातवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे हमारे पिता! आपने शिवचरित्र वर्णन करके मुझको अतिप्रसन्न किया है परन्तु अब यह प्रार्थना है कि अन्य कथा शिवजी की जब वह कैलासपर्वत पर गये विस्तार सहित वर्णन कीजिये ब्रह्माजीने कहा कि शिवजीने कैलास पर्वत में जाकर सतीजी को स्मरण किया और वीरभद्र आदि गणों से सतीजी की महिमा बखानने लगे और सतीजीके अलग होनेमें शोक प्रकट करके कामदेव की प्रबलता को प्रसिद्ध किया इसकारण कि सब मनुष्यों को यह दृढ़ होजाय कि काम कैसा प्रबल है फिर सर्वलोकमें फिरकर कैलास पर्वत पर बहुत दिन रहे और एकही आसनसे ध्यानमें लिप्त होगये फिर जब ध्यान और समाधि का त्याग किया तब शिवजीके ललाटसे पसीना पृथ्वी पर गिरपड़ा जिससे एक पुरुष उत्पन्न हुआ जिसके चार हाथ लालवर्ण अतितेजस्स्वरूप माला पहिने और बलवान् था जब उत्पन्न हुआ तब रुदन करनेलगा जिस प्रकार कि बालक रोते हैं उस समय पृथ्वीने विचार किया कि हमको इसकी पालना करनी होगी क्योंकि यह बड़ा तेजस्वी भासता है और शिवजीके शरीरसे प्रीति के कारण जो पसीना निकला उससे उत्पन्न हुआ है इस कारण इसके सिवाय सतीभी अपने शरीरको छोड़चुकी हैं अब इसकी पालना कौन करेगा और जोकि मेरे ऊपर उपजा है मैं माता समान हूं अब उचित है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि मातासमान इसको पालूं शिवजीसे मुझको कुछ भय न होगा और जो मैं स्त्री होकर इसकी पालना नहीं करती तो निश्चयहै कि शिवजी मुझको दण्ड देंगे यह विचारकर पृथ्वीने स्त्रियोंके सदृश अपना रूप बनाया जो अतिपवित्र और सुन्दर मानो कामदेव की दूसरी रतिने अवतार लियाहै अथवा विष्णुजीने फिर मोहनीरूप धारण किया ऐसा स्वरूप बनाकर पृथ्वीने बालक को उठालिया और अपने कुचों में बालकका मुख लगाकर दूध पिलानेलगी और हँसकर उसके मुखको चूमा शिवजीने ऐसा देखकर उसकी ओर लज्जासे देखा और पृथ्वी की अभिलाषा जानकर मुसकाये और बोले कि हे पृथ्वी ! तुम्हारे धन्य भाग्य हैं कि हमारा पुत्र तुमको दिखाई दिया तुम रुचिपूर्वक इसकी पालना करो यद्यपि यह पुत्र हमारे शरीरके पसीनेसे उपजा परन्तु तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा अर्थात् इसका नाम भौम होगा और तुमको अधिक सुख देगा यह कहा और उनकी कुछ चिन्ता इस बालकके देखनेसे कम हुई और जो सतीके वियोग का दुःख था वह कुछ घटा और पृथ्वी भी प्रसन्न होकर अपने घर गई और अतिप्रीति से पालना करनेलगी और भौम भी शरत्काल की रात्रिके सदृश बढ़ने लगा कुछ दिनों के पीछे भौम शिवपूजनके निमित्त मधुवनमें गये और शिवजी की बड़ी पूजा की गर्मियों में अग्नि चारों ओर जला कर बड़े श्रम उठाये और शरत्काल में पानी में बैठकर बड़ी पूजा की और अच्छे २ व्रत करके नियम और संयमसे तीन करोड़ शिव पूजन किये ऐसा पूजन करके एक स्थानपर बैठगये और शिवजी प्रसन्न होकर प्रकट हुये शिवजीके दर्शन किये और अतिकठिन शब्दों की एक स्तुति पढ़ी और कहा कि यही आपने मुझको वरदानके बदले कृपा किया कि आप विराजमान हुये मैं कुछ नहीं जानता अब जो बात उचित हो वह कीजिये यह कहकर चुप होरहा शिवजीने कहा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि धन्य तुम्हारी बुद्धि तुम मुक्त होचुके तुम पवित्र मङ्गलग्रह होगये तुम्हारा लोक सूर्यलोकसे भी ऊपर होगा तुम सुखी रहो तुमको सब आनन्द और प्रसन्नता की वस्तु प्राप्त हो यह कहकर शिवजी गुप्त होगये और भौम अपने लोकको गये और परिवारसहित सुख करनेलगे और शिवजीके भक्त रहे हे नारद! इस चरित्रके श्रवण और वर्णन करनेसे सब कुछ अर्थात् धन सन्तान और सुख प्राप्त होता है और सब रोग नाश होजाते हैं अब किस कथा को सुनोगे॥

आठवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि इस चरित्रके सुननेसे अतिसुख प्राप्त होता है अब कहिये कि हिमाचलकी स्त्रीने शिवजीसे वरदान मांगकर क्या किया ब्रह्माजी ने श्रीसदाशिवजी का ध्यान करके कहा कि जब हिमाचल की स्त्रीने शिवजीसे वरदान पाया और शक्तिको प्रसन्न देखा तो सुखी होकर अपने घर सिधारी और पहिले उससे सहस्रपुत्र उत्पन्न हुये उन के नाम मैनाक और क्रौंच आदि थे जिनके शरीर बहुत लम्बे वीर और बलवान् हुये उसके पीछे सतीजी हिमाचलके मनमें प्रवेश करगईं कि उनके सब मनोरथ पूर्ण हों वही तेज सतीजी का हिमाचलने शुभघड़ी पाकर मैना में स्थित करदिया जिस समयसे सतीजी मैनाके मनमें स्थित हुईं तबसे मैना का शरीर अतितेजस्वी भासता था वह गर्भवती होगई इसके प्रकट होनेसे हिमाचल और सब बहुत प्रसन्न हुये इससे अधिक सुख हिमाचल को किसी समय प्राप्त न हुआ था और मैना भी गर्भ धारणके सिवाय ऐसी सुन्दर और तेजस्विनी कभी न भासी थी हिमाचल की यह गति थी कि वह बारम्बार मैनाके निकट आता और नित्य मैना की सखी सहेलियों और मैनासे पूछता कि आपको किस २ वस्तु की इच्छा होती है परन्तु मैना लज्जित होकर कुछ उत्तर न देती उस समय जो मैना चाहती वह वस्तु आपही प्रकट

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होजाती ऐसी कोई भी वस्तु न थी जो मिलने में कठिन होती जितना कि गर्भ बढ़ता जाता था उतनाही तेज अधिक होता था हिमाचलने वह रीति और उत्सव जो कि गर्भ अवस्था में करना उचित है बड़े धूम धामसे की सबकी इच्छानुसार सब कुछ दिया गया और विष्णुजी हम और देवताओंने जाकर शिवरानीकी स्तुति की और अपने २ स्थान पर लौट आये जब नवमास व्यतीत हुये और दशवां मास पूरा होने लगा तब सब चिह्न आकाश और पृथ्वीके अच्छे भासे अर्थात् आकाश निर्मल हुआ अशुभग्रह गुप्त होगये आकाश पर प्रकाश अधिक हुआ पृथ्वीपर किसी को शोक न रहा नदियों में कमल फूल फूले तीनों प्रकारकी पवन चलनेलगी और मुनीश्वरों को तेज प्राप्त हुआ भक्तों के मन प्रसन्न हुये आकाश में बाजों का शब्द बजनेलगा और मुनि और देवता आदिने फूलोंकी वर्षा की और गन्धर्व,सिद्ध,चारण,किन्नर, अप्सरा और विद्याधर अपनी स्त्रियों सहित नाचने और गानेलगे सो मधुमास के शुक्ल पक्ष की नवमी मृगशिरा नक्षत्र में आधीरातके समय शिवरानीजीने जन्म लिया ऐसा कालिकापुराणमें भी लिखा है उस समय हम और विष्णुजी सामग्री समेत उस स्थान पर गये और नाना प्रकारके बाजा बाजे और पुष्पों की वर्षा की और सबोंने अपनी बुद्धि के अनुकूल स्तुति पढ़ी देवताओंने कहा कि जय जय शिवरानी जगदम्बा तुम त्रैलोक्य की माता हो हमारी आपदाको नाश करो तुम हमारे मनकी अभिलाषा से अचेत नहीं हो तुम आदिशक्ति हो और तुम्हारा तेज अधिकहै तुम्हारे सर्वजीव सेवकहैं और ब्रह्मा विष्णु और शिव सब आपके पुत्र कहेजाते हैं तीनों गण तुम्हीं से हैं तुम ब्रह्मस्वरूप आदि शक्ति सबमें हो और सबसे भिन्न भी हो यद्यपि वे तुम्हारी महिमा बखानते हैं परन्तु अन्त को नहीं पहुँचते और नारद, शारद, शुक और सनकादिक आदि बड़े वाचाल और बुद्धिमान् हैं परन्तु वह भी कुछ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर्णन करसक्के और आपकी कृपासे मूर्ख भी स्तुति करते हैं इस बातको उपनिषद् वर्णन करते हैं अपने भक्तोंको मुक्त करती हो और करोड़ों कला अपने वश में किये हो आप अहंकार को भक्षण करनेवाली हो तुम्हीं वेद और वेदान्त हो सहस्रों नाम आपके हैं इसीप्रकार बड़ी स्तुति करके देवीजीकी मूर्तिका ध्यान किया और सब अपने अपने घर गये॥

नवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हमको अब यह अभिलाषा है कि जो इसके पीछे चरित्र हुआ हो उसका आप वर्णन करें अर्थात् वह बालचरित्र जो देवीजीने हिमाचल के यहां किये ब्रह्माजी बोले कि जब देवीजीने जन्म लिया और देवता आदि महिमा बखान के घर चले गये उससमय हिमाचलने बड़ी धूमधाम की और मैना अपनी पुत्रीको देखकर अति प्रसन्न हुई और पहिंचाना कि यही आदिशक्ति हैं देवीजीने अष्टभुजी मूर्ति धारणकर मैना को दर्शन दिये वह स्वरूप वर्णन करना अति कठिन है आठभुजायें तीन नेत्र कुण्डल धारण किये गहना और वस्त्र पहिनेहुये मैना ने देखा और स्तुति करनेलगी और कहा कि आपने बड़ी सहायता करके हमारे गृह अवतार लिया अब मेरी यह प्रार्थनाहै कि यह रूपजो आपने इससमय धारण कियाहै वही मेरे हृदयमें स्थित रहे और अब बालकों के सदृश अपना स्वरूप बनाकर मुझको सुख दीजिये देवीजीने कहा कि यह रूप मैंने इस कारण धारण किया है कि तुम निश्शङ्क रहो और जो रूप तुमने हमारा वरदान लेनेके समय देखा था उसको स्मरण करके विश्वास करो कि मैं वही देवी हूँ यह कहकर देवीजीने बालकों के सदृश रूप बनाया और रुदन करनेलगीं उस समय सब स्त्रियां मैना के आस पास इकट्ठी होगईं सबको कन्या उत्पन्न होनेकी प्रसन्नता प्राप्त हुई और हिमाचल अतिसुखी हुआ और पुरोहित गुरु ब्राह्मण और मुनीश्वर आदि घरके अन्दरगये और देख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर कहा कि देवीजी ने अवतार लिया है भिक्षा बहुत बांटी नगर की सब स्त्रियां शृङ्गार करके बनठनकर बधावा देने आईं हिमाचलने यथा रीति सर्व कार्य किये ब्राह्मणों ने लड़की के नाम काली और गिरिजा आदि रक्खे गिरिजा ने बहुत से खेल और चरित्र संसार की लड़कियों के अनुसार किये और मैनाको प्रसन्न किया करती प्रथम तो कोरा में लिपटकर मुसकाती फिर तुतली जिह्वा से कुछ बातें करती जिनके श्रवणकरने से माता और पिता अतिप्रसन्न होते थे फिर देवीजी का नाम उमा और शिवा भी होगया अर्थात् उस समय जब कि गिरिजा तपस्या करने को जाती थी तब मैना ने चिन्ता से उसको जाने न दिया था यद्यपि हिमाचल सन्तानवान् था तोभी सब से अधिक प्रीति गिरिजा की थी और गिरिजा चन्द्रमा की सदृश बढ़ती जाती थी गिरिजा कौड़ियों का खेल खेलती और सुरसरी में जाकर पानी का खेल करती थी और संसारी रीति के अनुसार विद्या की शिक्षालेती उस को सब विद्यायें आपही स्मरण होगईं और जब बालअवस्था व्यतीत होगई और तरुण अवस्था आनेलगी उस समय के शरीर की सुन्दरता वर्णन नहीं होसक्ती कोकिलों ने गिरिजा की वाणी सुनकर अपने शब्द का अहंकार त्याग दिया और शशि जिसको अपनी सुन्दरता का मद था अतिलज्जित हुआ हरिण गिरिजा की आंखें देखकर बहुत प्रसन्न हुये इस रूपके उत्पन्न करने के पीछे ब्रह्माजी को अन्य स्वरूप बनाने में चिन्ता उपजी अर्थात् गिरिजा अनन्यस्वरूप थीं जिसके बनानेसे हमारी बुद्धिमानी क्रियाकुशलता प्रसिद्ध हुई मानो उमा के उत्पन्न करने से सर्वसृष्टिके उत्पन्न करने का परिश्रम सुफल हुआ और लक्ष्मीजी जिनको विष्णुजीने बड़ी प्रीति से समुद्रसे वस्त्र सहित निकाला हम उनको भी गिरिजाके बराबर कहते हुये लज्जित होते हैं जब हम कोई दृष्टान्त गिरिजा के निमित्त नहीं पाते तो केवल उनको सूर्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कह देते हैं ऐसी त्रिलोक में अन्य स्त्री नहीं हमारी स्त्री किसी प्रकार उनके बराबर नहीं अगर लक्ष्मी का दृष्टान्त दूं तो उनमें चञ्चलता का अवगुण है और न रति को कहसक्ताहूं कि वह गिरिजा के सदृश हैं और न मोहनीरूप उनके दृष्टान्त के योग्य है गिरिजा की सुन्दरता वर्णन करना कठिन है ॥

दशवां अध्याय ॥

नारदजीने कहा कि हे ब्रह्माजी ! जिस प्रकार आपने गिरिजाजी की सुन्दरता बखानी उसी तरह उसके विवाह का कुछ चरित्र वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिवा और शिवजी की लीला आश्चर्य देनेवाली है और तीनोंलोक उनके अधीन हैं इससे तुमको उचित है कि सन्देहरहित होकर उनमें प्रतीति करो कोई कहते हैं कि गिरिजा का स्वयम्बर होकर विवाह हुआ प्रायः यह केवल उन्होंने भ्रम की अवस्थामें ऐसाही देखा होगा परन्तु अन्य मनुष्य और प्रकारसे विवाह का वर्णन करते हैं कि शिवजी नङ्गे होकर भिक्षुकका वेष धारण करके हिमाचलके द्वारे विवाह करनेआये जो बैल पर चढ़े हुये थे और शुक्र और शनैश्चर देवता को संग लिये थे और देवता आदि प्रकट नहीं थे इस प्रकार विवाह के निमित्त आकर प्रथम उसके अहंकार का नाश किया फिर दया करके बरात सजाकर विवाह करने आये और आचार्य यह कहते हैं कि शिवजी गिरिजाके तपसे प्रसन्न हुये और बड़ी बरात लेकर गिरिजा को ब्याह लाये वहांपर बड़ी लीला की और मैना को प्रथम शान्त करके सुखदिया ऐसे २ अनेकप्रकारके विचारों के यह कारण हैं कि जिसको जैसी शिवजीकी प्रीति होती है उसको उसी प्रकार शिवजी दिखलाई देते हैं शङ्का और विचार करना ऐसी बातों पर अयोग्य है प्रथम हम स्वयम्बर विवाह का वर्णन करते हैं जिसमें विष्णु के गणों और देवताओं की बुद्धि कुण्ठित होगई और उनकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ाई जातीरही एकदिन गिरिजा को हिमाचलने तरुण पाकर अपने भाई बन्धुओंसे कहा कि कोई बराबर का देवता ढूंढ़कर विवाह कर दो कि पिता का यही धर्म है उन्हीं दिनों में मैनाने हिमाचल को इस निमित्त बुलाया कि अब गिरिजा बड़ी हुई उसके बर ढूंढ़ने की युक्ति करो यह पुत्री मुझको अतिप्रिय है इस हेतु अच्छा सा गुणवान् बर ढूंढ़ो बरन लोग तुमको कहेंगे कि हिमाचल मूर्ख अज्ञानी और अकुल है हिमाचल प्रसन्न होकर घरसे बाहर आये और मन्त्रियों को बुलाया सभा में मन्त्रियोंने कहा कि स्वयम्बर करना उचित है कि ब्रह्मा विष्णु और दिक्पति सब आवें प्रथम हर पुरुष के गुण भिन्न २ उमा को सुनाओ फिर उनका रूप दिखलाओ जिसके शिर पर उमा माला रखदेवें वही गिरिजापति होगा हिमाचल इस सम्मति से प्रसन्न हुआ और स्वयम्बर का उत्सव लिखकर हरएकको भेजा और इसी से हर एक को समाचार मिला ऐसी वार्त्ता श्रवणकर सब देवता चले और विष्णुजी हम इन्द्र सूर्य चन्द्रमा अग्नि और दिक्पति इत्यादि अपनी २ बरात सजाकर बनठन कर हिमाचल के यहां गये इसी प्रकार और भी राजा आये नारद शिवजी की माया का प्रभाव देखो कि जान बूझकर सब पुरुष कैसे अज्ञान होगये गिरिजा सबकी माता और शिवशक्ति प्रसिद्ध हैं और यह भी सब जानते थे कि वही हिमाचल के यहां उत्पन्न हुई हैं और उन्हीं के संग सबने विवाह करना चाहा शिवजी की माया बड़ी है जब जैसी शिवजी की इच्छा होती है उसीके अनुसार सब मनुष्य कार्य करते हैं किसी को क्या दोष है हिमाचल विष्णु को देखतेही आगे गये और अच्छासा घर रहने को दिया फिर स्तुति की इसी प्रकार हमारा और अन्य देवताओं का यथाशक्ति बड़ा मान किया और बड़ी सेवा की सब ऐसी सभा देखकर प्रसन्नहुये और परस्पर कहनेलगे कि देखिये गिरिजा किसपर प्रसन्न होती हैं कौन उनको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्याहकर संसार बिषे बड़ाई प्राप्त करता है बहुत से मनुष्य नाम बता २ कर कहनेलगे कि उसके साथ गिरिजा का विवाह होगा कोई कहता था कि विष्णुजी अच्छे वर हैं जिसके सङ्ग गिरिजा का विवाह होगा उसीको हम सब से उत्तम प्रधान पुरुष कहेंगे और अन्य मनुष्य इस प्रकार आनन्द करते थे कि हम गिरिजा का विवाह देखेंगे ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हिमाचलने स्वयम्बर में बड़ी बड़ी सोने की चौकियां रखवा दीं और अनेक प्रकारसे घरको सजाकर विष्णु इत्यादि सबको कहला भेजा कि स्वयम्बर में आवें यह श्रवणकर हरएक धूम धाम से आये इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढ़कर चले और अग्नि विश्वानर के पुत्र अपने अरचक्षुगणों को सङ्ग लिये आये इसी प्रकार विष्णुजी दिक्पति वरुण कुबेर यमराज सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि सभा में आये और चौकियों पर बैठ गये हमभी हंस की सवारी पर पहुँचे देखा कि विष्णुजी चतुर्भुजी स्वरूप धारण किये पीले वस्त्र पहिने सभामें बैठे हैं कोई ऐसा देवता न था जो उस सभा में दिखाई न देता हो और हमारी विष्णुजी और सबलोगों की यही अभिलाषा थी कि हमारे सङ्ग गिरिजा का विवाह हो हरएक नगरसे सब मनुष्य स्वयम्बर में आये और सब पर्वत अर्थात् कनकगिरि, देवकूट, पूर्वदिशाके पर्वत विन्ध्य, त्रिकूट, करवीर, चित्रकूट जो पर्वतों का राजा है हिमगिरि आदि सब आये और समुद्रके जीव भी मनुष्यों का रूप धारकर सभा में आये अर्थात् सब सुख की सामग्री वहां थी बाजे बाजने लगे घण्टा ढोल आदि जो देवताओं को अतिप्रिय हैं बाजने लगे और वेदपाठी वेद उच्चारण करनेलगे ॥

बारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! जब ऐसी सभा स्वयम्बर की हुई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब हिमाचलने गिरिजाको आज्ञादी कि स्वयम्बर में जावो उस समय सबकुलकी स्त्रियोंने गिरिजा का नाना प्रकार से शृङ्गार किया गिरिजा शिवजी का ध्यान करके स्वयम्बर की ओर चलीं और सबों ने प्रार्थना की कि गिरिजा को अच्छा सा वर मिले गिरिजा सभा के अन्दर गईं और बीचमें जाकर खड़ी हुईं वहांके मनुष्योंने सहस्रदृष्टि से देखा और अपना को यथाशक्ति भले वस्त्र गहना मुक्ता और इतर इत्यादिसे सज कर गिरिजा को दिखाया जो सखी गिरिजाके साथ थी उसने सबसे पहिले गिरिजा को इन्द्रके पास लेजाकर कहा कि यह इन्द्र हैं जिन्हों ने सहस्र यज्ञ किये जो इन की रक्षामें जाता है उसकी यह रक्षा करते हैं यह चन्द्रमासे भी अधिक सुन्दर हैं इससे उचित है कि इनके साथ विवाह करो इन्द्राणी तुम्हारा नाम होगा और शचीके समान सुख किया करोगी यह सुनकर गिरिजाने एकबेर इन्द्र की ओर दृष्टि की और मौन साधकर प्रणाम करती आगे बढ़ी इसी प्रकार सखी विष्णु आदि देवताओं की प्रशंसा करके कहती कि इनको माला पहिना दो यद्यपि उनके नाना प्रकारके गुण बखानती परन्तु गिरिजा किसी से प्रसन्न न होती फिर जब सखी किसी देवता आदि की प्रशंसा करती तब गिरिजा कहती थीं कि आगे चलो अन्त में हम और विष्णुजी से भी प्रसन्न न हुईं उस समय शिवजी आकाश से प्रकट हुये और गिरिजाने उनको माला पहिनादी ॥

तेरहवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी ! आप इस बातको भले प्रकार वर्णन कीजिये कि शिवजी किस प्रकार प्रकट हुये और गिरिजाने उनके गले में माला क्योंकर डालदी विस्तारसंयुक्त वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि जो जुगुनू को देखकर कमल फूल उठे तो काहेको चन्द्रमा अपनी किरणें उनपर फैलावे गिरिजा जन्म २ की शिवरानी थी वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस प्रकार और किसी को माला पहिनाती जिसके निकट गिरिजा जाकर आगेको चलीजाती वह बहुत लज्जित होता इसीप्रकार गिरिजा ने सब सभा को देखा परन्तु किसी से प्रसन्न न हुई और जब सबसे उत्तमोत्तम और परब्रह्म शिवजी को न देखा तो अतिदुःखी हुई और चिन्ता में डूबकर संतोष के साथ उसने शिवजी का ध्यान किया और विचारा कि क्या कारण है कि शिवजी अभीतक नहीं आये उसने अपने मन में बहुत शिवस्तुति की और कहा कि मेरा क्या दोष है मैं तो तुम्हारी चेरीहूं मुझे दर्शन दीजिये और अपराधों को क्षमा कीजिये और चाहे करोड़ों जन्म मेरे विना पतिके होजावें परन्तु मैं विना आप के और के सङ्ग ब्याह न करूंगी इस कारण कि आदिसे मैंही आप की स्त्री हूं यह कहकर गिरिजा प्रीति में ऐसी लीन होगई कि अचेत होगई उसी समय शिवजी प्रकट हुये उनके तेजस्वरूप को देखकर सब आश्चर्य में हुये और किसीने न पहिंचाना और इस हेतुसे कि शिवजी सब मनुष्यों के अहंकार का नाश करते हैं उन्होंने एक और लीला रची अर्थात् सुन्दर बालकों के सदृश प्रकट हुये जिसको देखकर सब दूर दूर करने लगे परन्तु वह न भागे और निडर रहे तब सबोंने क्रोध करके सभासे निकालना चाहा पर जब वह न हटे तो सबोंने चाहा कि इसको मारडालें अपने अपने हथियारों को उठाया शिवजी ने केवल एकबेर देखा और सबके हाथ और उनके शरीर जड़वत् होगये विष्णुजी ने ऐसा देखकर अपने चक्र को घुमाया पर उनकी भी कुछ न चली उसी समय सबने आश्चर्य किया और शिवजीकी लीलाको न जाना परन्तु गिरिजा यह शिवचरित्र देखकर मुसकाई और सब सभामूर्तिसी होगई उस समय हमने शिवजी का ध्यान किया तब वह लड़का हँसा ऐसा देखकर हमने जाना कि शिवजी यही हैं शिव और शिवाजी को जानकर हमने स्तुति की और कहा कि यह सब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आपकी माया है हमारा क्या दोष है आपने चरित्र रचकर हम सबको भुला दिया कि हम सब जगदम्बा की रक्षा की इच्छा करके आये फिर गिरिजा की स्तुति की और कहा कि अब आप वह चरित्र कीजिये जिससे हमारी चिन्ता दूर हो यह सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और सब चेते फिर उस लड़केको किसीने न देखा और शिवजी दिखाई दिये ऐसा रूप था जिसको करोड़ों काम देखकर लज्जित होजायँ मणि आदिके गहने धारण किये और ऐसे सुन्दर कि जिसका वर्णन करना अतिकठिन है ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! ऐसा रूप सदाशिवका देखकर सब सभा के मनुष्यों ने एक बड़ी स्तुति अपनी बुद्धिके अनुकूल कही विष्णुजी ने प्रार्थना की कि हम आपकी मायामें फँसकर गिरिजाके संग व्याह करनेकी अभिलाषा रखते थे सो आप यह पाप क्षमा कीजिये आप दोनों लोकके माता और पिता हैं इसी प्रकार प्रजापति अर्थात् हमने और इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति, वरुण, वायु, ईशान, कुबेर, शेष, प्रजापति, सिद्ध और हिमाचल आदिने स्तुति पढ़कर अपने २ पापों को क्षमा कराना चाहा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उसके पीछे गिरिजा ने अपने पिता की आज्ञा लेकर शिवजीको माला पहिनादी यह कहकर सबों ने जय २ का शब्द चिल्लाकर कहा और सब की लज्जा दूर होगई उस समय सबको बड़ा सुख प्राप्त हुआ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! उस समयका सुख हम कहांतक वर्णन करें हम सब गिरिजा और शिवजी के पीछेगये विष्णु बाईं ओर और हम दाहिनी ओर और शिवजी बीचमें चले और सब पीछेचले कोई छत्र शिरपर लिये हुये था कोई जय जय शब्द देता दौड़ताथा इसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रकार सब सेवा करते थे और हिमाचल अपने भाइयों और मित्रों साहित चला हिमाचल के नगर में पहुँचे नगर में बड़ी धूमधाम हुई शिवजी के दर्शनके निमित्त नगरकी सब स्त्रियां अपने २ कोठोंपर चढ़ीं जो स्त्री जिस काममें लीन थी उसको त्याग कर शिवजी के देखने को दौड़ी यहांतक कि जो एक नेत्र में काजल दिया था तो जल्दीसे दूसरे नेत्र में न दिया और झरोखों के अन्दर से दर्शन करने में ऐसी लीन हुई कि जो इजारबन्दभी छूटगया तो भी कुछ चिन्ता न की कुछ स्त्रियों ने अपने दूध पीते २ बच्चों को छोड़दिया और दशों इन्द्रियों की शक्तियों को केवल नेत्रकी ज्योति में लाकर उनका दर्शन करनाही सिद्ध समझा उन स्त्रियों की ऐसी अवस्था देखकर विष्णुजी शिवजी और हम बहुत हँसते थे शिवजी हिमाचलके गृह उतरे और बरातके निमित्त अच्छासा घर ढूंढ़ा हिमाचल ने यथाशक्ति सबकी सेवा की फिर शिवजी की अज्ञानुसार कैलास से सब गण आये जिसमें नन्दी और वीरभद्र भी थे उन्होंने हम सब को प्रणाम किया फिर हिमाचल की आज्ञानुसार शिवजी अन्दर गये गर्ग जो हिमाचल के पुरोहित थे सब कार्य करानेलगे उस समय दोनों ओर से बहुतही दान दियागया और हमने और विष्णुजीने हवन कराया जब शिवजी ने गिरिजा का हाथ पकड़ा उस समय हम सबको बड़ा सुख हुआ जो वर्णन नहीं होसक्ता जिसने जिसकी इच्छा की वह उसको मिला और जब कि भांवरें हो चुकीं तब दोनों को एकही शय्यापर बिठाया तब सबने धन्य २ का शब्द ऊंचा किया शिवजी को बड़ा दहेज दिया और हिमाचल ने नाना प्रकार के व्यञ्जन सबको खिलाये बिवाह होचुका शिवजी वहां से आज्ञानुसार चलकर कैलासपर्वत पर आये फिर आज्ञा लेकर हम सब अपने २ स्थानपर चलेगये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोलहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम दूसरी रीति से बिवाह शिवजी का वर्णन विस्तारसंयुक्त करते हैं अर्थात् जिस प्रकार शिवजी अद्भुत रूप धारण करके गिरिजा को ब्याहने गये सो जब गिरिजा तरुण हुई तो मैना ने हिमाचल से कहा कि अब गिरिजा ब्याह करने के योग्य है तुम एकलक्ष पर्वत के राजा हो जैसे तुम हो वैसाही पति गिरिजा के हेतु ढूंढ़ो हमारे सौ पुत्र हैं परन्तु एकही लड़की है हिमाचल ने कहा कि जो उत्तमोत्तम होगा उसके सङ्ग हम गिरिजा का ब्याह करेंगे यह कह राज्यसभा में आये और अपने मन्त्रियों से पूछकर पुरोहितजी को कहा कि तुम गिरिजा के निमित्त अच्छासा पति ढूंढ़ो पुरोहितजी गये प्रथम इन्द्रलोक में जाकर उसकी सुन्दरताई देखी और प्रसन्न हुये और बिवाह के वास्ते कहा परन्तु इन्द्र ने उत्तर दिया कि गिरिजाने शिवजी के निमित्त अवतार लिया है तुम क्या बकते हो क्या तुम चाहते हो कि हम नरकगामी हों उसके पीछे पुरोहित अग्निलोक में गये और यही उत्तर पाया और इसीप्रकार जहां २ वह गया वहां यही उत्तर पाया किसी ने न माना और सबने गिरिजा को सबकी माता विचारकर पुरोहित पर क्रोध किया अन्त में पुरोहितजी सब के बताने से विष्णुकी शरणमें आये विष्णुजीने भी न माना और कहा कि हिमाचलसे यह कहना कि तुम लड़कीसे पूछो कि तुम्हारा पति कौनहै जिस को वह बतावे वही उसका पति होगा यह सुनकर पुरोहितजी पलट गये सब समाचार हिमाचल से कह दिया और गिरिजा अतिप्रसन्न हुई॥

सत्रहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हिमाचलने एकसभा में गिरिजा को बुलाया और जैसा कि विष्णुजीने पुरोहितसे कहा था वैसाही गिरिजा से कहसुनाया गिरिजा ने लज्जित होकर उत्तर दिया कि जो तुम हमारे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाक्य को मानो और सौगन्द खावो तो निश्शङ्क मैं अपना पति पुरोहितजी को बतादूं उसी के अनुसार वह तिलक चढ़ा आवें हिमाचल प्रसन्न हुआ तब गिरिजाने पुरोहित को अलग लेजाकर कहा कि कैलासपर्वत जिसके बराबर तीनों लोक में कोई स्थान नहीं है और जो सबसे उत्तमोत्तम है वहां शिव रहते हैं जिनका सब तप करते हैं उनके साथ मैं ब्याह करना चाहती हूं इस लिये पुरोहितजी चले और एक नाई को साथ लिया परन्तु उससे भी इसबातको गुप्तरक्खा और शिवजी को कैलासपर्वत पर बड़के वृक्षके नीचे देखकर दूरही से प्रणाम किया उस समय शिवजी ध्यान में थे दोनों बैठे रहे परन्तु नाईने पुरोहितजी पर बहुत क्रोध किया और कहने लगा कि तुमने क्यों मुझको ऐसे निर्जन स्थान में लाकर डालदिया ऐसे दैत्यों से जो चारों ओर दिखाई देते हैं काहेको प्राण बचेंगे यहांसे तुरन्त भागो कि गिरिजा के लिये और पति ढूंढ़ें यह मनुष्य गिरिजा के पति होने के योग्य नहीं पुरोहित जी ने कहा कि क्या बकवाद करता है चुपकर शिवजी ने पुरोहित की दृढ़ता देखकर और गिरिजा की प्रीति स्मरण करके ध्यान का त्याग किया तब पुरोहितजी ने हाथ जोड़कर प्रार्थनाकी कि गिरिजा आपके सङ्ग बिवाह करना चाहती है और उसके सब गुण सुन्दरता और कोमलताआदि वर्णन किये और पुरानी कथा सब सुनादी शिवजीने कहा कि तुमको ऐसी बातकहना उचित नहीं क्योंकि हिमाचल तो बड़ाराजा और द्रव्यवान् है और हम निर्धन हैं और योंभी कहा है कि मित्रता शत्रुता और बिवाह यह सब अपने तुल्य मनुष्यों में करने योग्यहैं प्रथम तो मैं त्यागी दूसरे मेरे पास न तो घर और न कोई सेवा करनेवाला है गिरिजा मुझको अपना पति बनाकर क्या सुख उठावेगी बरन भांग घोटते घोटते दुःख पावेगी गिरिजा राजपुत्री है इस लिये उसे किसी राजाके सङ्ग बिवाह करना उचित है सिवाय इसके तुमकोभी तो कुछ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्रव्य आदि न मिलेगा केवल हमारी भस्म मिलसक्ती है पुरोहितजी ने कहा कि धन्यभाग हमारे जो हमको आपकी भस्म मिले यह कहकर पुरोहितजी ने शिवजीके तुरन्तही तिलक चढ़ादिया शिवजीभी अति प्रसन्न हुये परन्तु नाईको यह बातें भल न भासीं जब पुरोहित जी ने जानाचाहा तो शिवजी ने थोड़ीसी राख देकर बिदा किया इसीप्रकार नाईकोभी भस्म देदी यद्यपि पुरोहितजी बहुत प्रसन्न हुये पर नाईको बहुत क्रोध हुआ और कहा कि हे पुरोहितजी ! तुमने बहुत बुरा-कार्य किया कि राजा हिमाचल की बेटी को एक अवधूतके सङ्ग व्याहना चाहा तुमको कुछ लोभ है जो किसी राजाके यहां गिरिजा का तिलक होता तो क्या आजकी तरह हमारी राह कटती शिवजीने तो एक मुट्ठी राख देदी और फिर मुँहसे भी कुछ भलेप्रकार न कहा हमारे घरमें ऐसी बहुत सी राख है जो तेरे घरमें ऐसी राख नहीं है तो लेजा हमको तो राह का खर्चभी न दिया अब हम घर किस प्रकार पहुँचेंगे नहीं मालूम हमको राजा क्या दण्ड देगा चाहे तुम ब्राह्मण अथवा पुरोहित होकर बच जावोगे परन्तु मैं यह सब बातें कहकर जो तुमने की हैं तुम्हारेही शिर धरूंगा यह कहकर नाईने बड़ा क्रोध किया और भस्म को खोलकर फेंक दिया पुरोहितजीके घरमें उस भस्मके प्रभावसे संसारभर के रत्न उत्पन्नहुये एकदिन नाईकी स्त्री पुरोहितजीके घर आई देखा कि सुखकी सर्व सामग्री है और जब पुरोहितजीकी स्त्रीसे ऐसे द्रव्य का कारण सुना तो अपने पतिसे कहा नाईने बड़ा झगड़ा किया कि इस द्रव्यका भाग हमको दो पुरोहितने कहा कि फिर तू क्यों उसके पास नहीं जाता जिसने पहिले भस्म दी थी नाई गया परन्तु निराश चलाआया॥

अठारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब हिमाचलने पुरोहित और नाई का झगड़ा सुना तो उन्होंने दोनोंको बुलाकर कहा कि जहांपर तुम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरिजाके निमित्त बर ढूंढ़ने गये थे वहां की कुछ वार्ता वर्णन करो पुरोहितजीने कहा कि आपकी आज्ञानुसार हम गिरिजाके निकट गये और फिर गिरिजा की आज्ञा पाकर कैलासपर्वतपर पहुँचकर शिवजी का तिलक कर आये और शिवजीकी पूजनकी और उनकी बड़ी स्तुति की और कहा कि तीनों लोक तुम्हारे सेवक हैं सो सिंहआदि जीव भी उनकी सेवा कररहे हैं वह हरप्रकारसे गिरिजाके पति होनेयोग्य हैं इसी प्रकार पुरोहितजीने शिवजी की अधिक महिमा बखानी और भस्म लेकर अपने घर सिधारे जब नाई आया तब उसने अपने शरीर को सिकोड़ लिया और हाय करके शोकवान् हो बोला कि आपके पुरोहितने सब काम बिगाड़ दिये हमको एक बड़े पर्वतमें लेगया जिस के चढ़नेमें मैं बहुत दुःखी होगया वहां ऐसा शून्य स्थान था कि एक मनुष्य भी दिखाई न दिया एक मनुष्य केवल दिखाई दिया जिसका स्वरूप अवधूत था विना वस्त्र और विना घरके था वह योगी था और ध्यानमें डूबा हुआबैठाथा पुरोहितने विनापूछे तिलक चढ़ादिया यद्यपि मैंने मना किया परन्तु उसने न माना उसके पास सिवाय एक बैलके और कुछ द्रव्य आदि न था अब जो उचित और अच्छा हो वह कीजिये यह कहकर नाई अपने स्थान को सिधारा यद्यपि हिमाचल को कुछ खेद हुआ पर मैनाको बहुत शोक और चिन्ता उपजी और मैना ने हिमाचलसे कहा कि हम सुनते हैं कि पुरोहितजी ने एक भिक्षुकके सङ्ग गिरिजा का बिवाह करना चाहा है वह अकेला अवधूत है उसका नङ्गा शरीर है निर्बल और भद्दा है मेरी पुत्री जो ऐसी सुन्दर है उसका बिवाह कैसे ऐसे पतिके साथ होसक्ता है हिमाचलने अपने मित्रों से कहा किसीने तो कहा कि धन्य तुम्हारे भाग्य जो ऐसा पति गिरिजा को मिला और अन्य पुरुषोंने कहा कि ऐसा बिवाह करना उचित नहीं है गिरिजा का बिवाह किसी राजाके साथ होना चाहिये हिमाचलने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा कि जो भगवत् की इच्छा होती है वही होताहै फिर हिमाचलने पहिले का वृत्तान्त जिस प्रकार से सब देवता गिरिजाके ब्याहने से निषेध करते थे और फिर विष्णुजी की आज्ञानुसार गिरिजा की अभिलाषासे पुरोहितजी को भेजा था सब कह सुनाया और कहा कि देखो शिवजीकी भस्मसे अब हमारे पुरोहितजीके घरमें किसी वस्तु की कमी नहीं अब जो हमको उचित हो वह कहो हम उसीके अनुकूल करेंगे ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! ऐसी बातें हिमाचलकी सुनकर सब पुरुष आश्चर्यवान् हुये कुछ मनुष्योंने कहा कि बिवाह करना उचित है और अन्य मनुष्योंने बिवाह करना वर्जित किया अन्तमें बुद्धिमान् और विद्यावान् पुरुषोंने कहा कि हे हिमाचल ! तुम शिवजी को एक पत्र लिखो कि अच्छीसी बरात लावें बरन गिरिजाके सङ्ग बिवाह न होगा जो वह योगी और तपस्वी होंगे तो शीघ्रही तुम्हारी बात को अंगीकारकर भारी बरात लावेंगे उस समय ब्याह करना क्या अयोग्य है इस बात को हिमाचल और मैना ने मानलिया और शिवजी को एक चिट्ठी तिथिसंयुक्त और बरात लानेकी लिखी और यह भी लिखा कि तुम्हारी बरातमें देवताआदि मुनीश्वर शशि नाग और सनकादिक सब बरातके सङ्ग आवें और ब्रह्माजी और विष्णुजी भी शीघ्र आवें बरन तुम्हारा बिवाह गिरिजाके सङ्ग न होगा फिर वही पुरोहितजी लग्न की सामग्री लेकर शिवजी के पास गया शिवजी ने पुरोहितजी की ऐसी अभिलाषा पाकर पहिलेहीसे देवताओं की सभा जमा कर रक्खी थी जिसके तुल्य और कोई न होगी सब मनुष्य ऐसी सामग्री शिवजी की देखकर बहुत प्रसन्न हुये लग्न चढ़ाई और अपना नेग पाया शिवजीसे आज्ञा लेकर हिमाचलके निकट आया और शिवजी की महिमा बखानी नाईकी निन्दा की और कहा कि आपकी सौगन्द है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि गिरिजाका पति अतिसुन्दर और तेजस्वी है यह सुनकर हिमाचल और मैना सब बान्धवों सहित अतिप्रसन्न हुये और भिक्षा बांटी और सुखको प्राप्त हुये और गिरिजा और नगरके लोग अतिप्रसन्न हुये ॥

बीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हिमाचलने सर्वसामग्री इकट्ठा करके एक घर बरातके वास्ते बहुत चौड़ा और लम्बा बनाया जहां एक ओर तो देवीजी और दूसरी ओर सदाशिवजी थे वहां किस बातकी न्यूनता होसक्ती है अब शिवजीकी वार्ता सुनिये कि शिवजीने हिमाचलके पत्र को पढ़ा और हँसे और हिमाचलके अहंकार को जानकर यह चरित्र किया कि आप एक वृद्ध बनगये और इसी प्रकार अपने बैलको भी बुड्ढा बना लिया और उसका भयंकर रूप बनाकर लदलिया और डमरू और शृंगीको बजाकर अलख २ जिह्वा से कहनेलगे और हिमाचलके नगरमें जाकर एक बागमें उतरे और फिर शृंगी और डमरू का शब्द किया जोकि हिमाचल बरात की राह देखता था इससे उस ने बहुतसे मनुष्य बरात देखनेको भेजे वह सब और गिरिजा की सखियां शिवजीके पास जो अवधूत बैठेथे आई और कहा कि तुमने बरात तो नहीं देखी शिवजीने उत्तर दिया कि हमहीं तो दूलह हैं और हमहीं बराती हैं और कोई नहीं यह सुनकर गिरिजा की सखियोंने बहुतसी गालियां दीं और कहा कि हमारे राजा की बेटीको ऐसा कहता है फिर ऐसा न कहना नहीं तो माराजावेगा परन्तु सत्य कह कि तूने बरात तो नहीं देखी हम तेरी सेवा करके तुझको भिक्षा दिलवा देंगी और अच्छे भोजन देंगी और तेरी गुदड़ी को फेंककर भले वस्त्र पहिनावेंगी और जो तेरे साथ लड़के हैं उनके लिये भोजन देवेंगी पर शिवजीने फिर यही कहा और कहा कि तुम गिरिजासे यह कहदेना कि हम वही हैं जिनकी लग्न पुरोहित रखाकर आया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

था गिरिजा हमको अच्छे प्रकार जानती है वह तुमको सब कुछ देवेगी यह सुनकर सब स्त्रियोंने शिवजीके पैर पकड़कर घसीटा और बहुत लात और घूंसे मारे और अन्य स्त्रियोंने नखों और चुटकियोंसे पवित्र शरीरको काटा और किसीने बैलको लकड़ीसे मारकर भगादिया और लड़के जो उनके सङ्ग थे वह इसप्रकार मारेगये कि वर्णन नहीं होसक्ता उन्होंने यह सब कुछ इस कारण किया था कि वह सब मायामें भूलकर शिवजीको न पहिंचाना था शिवजीने कहा कि धन्यहै हे स्त्रियो ! ससुरालमें ऐसी मारखाना भला है तुम्हारा संकोच करना योग्य है जब वह स्त्रियां मारपीटकर चलीगईं तो बैल और शनैश्चर देवता और शुक्रजी रुदन करते शिवजीके निकट आये शिवजी बहुत मुसकराये और कहा कि कुछ खेद न करो ससुरालमें इस प्रकारका सुख मिलता है परन्तु जब वह लड़के इस बातसे प्रसन्न हुये तो उस समय शिवजी ने अपनी झोलीसे नाना प्रकार की भीड़ें निकालकर स्त्रियोंके पीछे छोड़दीं जिन्होंने उन स्त्रियोंका कोमल शरीर काट काट कर दुःखी कर दिया वह सब चिल्लाती हुईं घर आईं जोकि उनके शरीर सूजगये थे पर वह कामदेवकी स्त्रियोंके सदृश मालूम होनेलगीं और इसी अवस्था से गिरिजाके निकट आईं और जो स्त्रियां उनके सङ्ग नहीं गई थीं उनकी ऐसी दुर्गति देखकर बहुत प्रसन्न हुईं और पूछा कि ऐसी गति किसने की है गिरिजा पहिले तो हँसीं और फिर कृपादृष्टिसे उनकी ओर देखा तो वह फिर वैसीही होगईं गिरिजाने पूछा कि यह क्या है उन्होंने उत्तर वही दिया जिस प्रकार उनकी गति हुई थी गिरिजा शिवजीके चरित्र को देख श्रवण कर हँस पड़ी ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! जो मनुष्य हिमाचल की आज्ञानुसार बरात को ढूंढ़नेगये थे वह लौट आये और कहा कि बरात कहीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं मिलती हिमाचल दुःखी हुये परन्तु गिरिजा की सखियों की दुर्गति सुनकर हिमाचल ने यह विचार किया कि वही गिरिजापति होगा हाय हाय करके कहा कि ब्राह्मण आदि तो शिवजी की बड़ाई करते थे यह क्या बात है कि वह अकेले ऐसा स्वरूप बनाकर आये हैं हाय हाय क्या करते क्या होगया मुझको ब्राह्मणने धोखा दिया मेरी ऐसी पुत्री को इसप्रकार का अवधूत ब्याहने आया है हम ऐसे राजा होकर ऐसे भिक्षुकके सङ्ग गिरिजाका बिवाह न करेंगे हिमाचल और मैना ऐसी २ बातें कहकर बहुत चिन्तावान् हुये और भाई बान्धव जो हिमाचलके यहां आयेथे वहभी सब शोकवान् हुये और कहा कि हाय यह जो हमने सामग्री इकट्ठी की थी इसको अब क्याकरें गिरिजाने हिमाचल आदि का चित्तभ्रम देखकर विजया सखी को बुलाया कि तुम इसी समय शिवजी के निकट जावो परन्तु निर्भय रहना और हाथ जोड़कर मेरी ओरसे प्रार्थना करना और मेरी चिट्ठी को देदेना जो कुछ उत्तर देवें उसको मेरे पास लाना वह सखी उसी समय सदा शिवजीके निकटगई और गिरिजाजी की लिखी चिट्ठी को शिवजी के हाथ में देदिया और कहा कि जो आज्ञा दो वह मैं गिरिजासे कहूं गिरिजाने अपनी चिट्ठी में लिखा था कि मैं आपको जानती हूं कि आप परब्रह्म हैं आप दया कीजिये क्योंकि सर्व मनुष्य शोकमें डूबे हुये हैं और मेरे माता पिता बहुत चिन्तामें हैं वह आपकी बड़ाई को नहीं जानते आप अपने रूप को जो अतिसुन्दर और कोमल है धारण कीजिये आपकी माया को कौन जान सक्ता है इस समय सब मनुष्य मुझ पर क्रोध करते हैं और कहते हैं कि यह लड़की क्या तमाशा है यह मेरा अपमान दूर कीजिये और अच्छी बरात और सामग्रीके साथ आइये और मेरे पुरोहित की लाज रखिये उससे सब ग्लानि करते हैं शिवजीने पत्र पढ़ और उत्तर लिख सखी को बिदा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया और गिरिजा अपने मनका उत्तर पा सन्देहरहित और सुखीहुई ॥

बाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हिमाचलने बहुत दुःखी हो गिरिजा को अपने निकट बुलाया और कहा हे बेटी ! तूने यह क्या किया कि देवताओंको छोड़ ऐसा पति स्वीकार किया हमको दुःख दिया बिवाह क्या यह तो एक तमाशा होरहा है मुझको लोग क्या कहेंगे मैं प्रतिज्ञा के कारण कुछ नहीं कहसक्ता तुम्हारी माता कुछ चिन्तायुक्त है कि प्रतिष्ठा गई और हम विष्णु का वचन सत्य समझ ठगगये पर सबसे अधिक पुरोहितने धोखा दिया और जब कि मैं विचार करताहूं कि मेरी लड़की अवधूतके साथ ब्याही जावेगी तो मैं शोकसागरमें डूबजाता हूं बड़ा खेद है कि मैंने तो ऐसी बड़ी सामग्री इकट्ठी की और तुम्हारे पतिके साथ केवल दो कुरूप शिष्य बरातमें आये हैं और बैल जो साथहै वह अतिनिर्बल और भङ्ग धतूराआदि मादक वस्तु और नाना प्रकारके विषोंसे लदा हुआ है क्या अच्छी बरात आई है और क्या अच्छा उत्सव होगा ऐसी बातें हिमाचल की सुन गिरिजा हँसकर कहनेलगी कि हे हिमाचल ! तुम कुछ चिन्ता मत करो हरप्रकारसे शुभ होगा जो इस समय लीला होरही है वह सब आनन्द देगी विष्णुका वचन कुछ भी झूंठा न होगा और लोग तुम्हारी स्तुति करेंगे और तुम्हारे प्रताप को सर्वोपरि जानेंगे लोकमें तुमको बड़ा यश प्राप्त होगा बरन विष्णु और ब्रह्मा और देवताआदि तुम्हारा बड़ा सन्मान करेंगे इसका अन्त बहुतही शुभ होगा अब तुमको उचित है कि उस योगीके निकट जावो और हाथ जोड़कर बिनती करो तुम्हारी इच्छा को वह पूरा करेंगे वे ऐसे योगी हैं कि संसार को क्षण भरमें उपजा-सक्के हैं और निमेष भरमेंही पालन करके एक आनमें प्रलय करसक्के हैं इतना कह गिरिजा घरके भीतर चलीगई और मैनाको बहुत स्तुति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर समझाया हे नारद ! शिव गिरिजा की लीलायें असंख्य हैं वे दोनों एकही रूप हैं उनमें कुछ भेद नहीं है जिसतरह कि वचन और अर्थमें भिन्नता नहीं उसी प्रकार शिव गिरिजामें भी भेदभाव न समझना चाहिये उनकी जो इच्छा होती है वह लीला करते हैं जिसको कोई नहीं समझ सक्ता फिर हिमाचलने सब बान्धवों और जातिके मनुष्योंको बुलाकर जो कुछ गिरिजाने कहा था सबको कह सुनाया और कहा कि यह योगी एक निर्बल बैल साथ लिये अवधूत का स्वरूप रचेहुये आया है जिसके साथ कोई नहीं जो तुम सबकी मति हो वह कियाजावे यह सुनकर सब बोल उठे ॥

तेईसवां अध्याय ॥

सब गिरि अर्थात पहाड़ोंने कहा कि हे हिमाचल ! उस योगीके निकट जाकर पहिले उसकी परीक्षा करो जो कोई उसमें बुराई न हो तो गिरिजाके बिवाहदेने में क्या हानि है और यही अनुमति सबोंने दी हिमाचलने सन्देह छोड़ शिवके पास जानेका पक्का उद्योग किया और कई मनुष्य साथ लेकर चले और निकट जाकर हाथ जोड़ खड़े हो शिवका आदर किया तब शिवने यह लीलाकी कि शनैश्चर और शुक्र जो शिष्यों की भांति साथ थे रोते हुये शिवके पास आये शिव ने रोनेका कारण पूछा और कहा कि जावो खेलो कूदो पर मेरे पास से दूर मत जाना क्योंकि मैं अकेला निर्धन मनुष्य हूं तुम मुझे बड़े परिश्रमसे मिले और बैल की रक्षा भी किये जाना क्योंकि मुझे बहुत नशेसे कुछ दिखाई नहीं देता इसीप्रकार बहुतसी बातें उन्होंने नशा पियेहुये लोगोंके समान कीं पर वह शिष्य न गये और बहुत रोनेलगे फिर शिवने बहुत रोने का कारण पूछा तो दोनों चेलोंने बाबा बाबा कहकर कहा कि हम भूखसे मरते हैं अब कुछ भोजन हमको दो शिव बोले कि हमारे पास तो कुछ भी नहींहै तुमको हम क्या देवें ठहर जावो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निश्चय है कि हिमाचलके घर बहुत खानापीना मिलेगा जब मेरा बिवाह गिरिजाके साथ होगा तब तुमको बहुत भोजन दिया जावेगा दोनों चेले बोले तबतक हमको सन्तोष नहीं आता क्योंकि अभी बिवाहमें विलम्ब है हमतो बहुत दिनसे भूखे हैं यह सुनकर हिमाचलने शिवसे कहा कि जो आज्ञा हो तो हम आपके दोनों शिष्यों को भोजन करावें शिवने कहा कि बहुत अच्छा आप लेजाइये हिमाचलने दोनों को किसी सेवकके साथ करदिया कि इनको भोजन करालावो दोनों शिष्य बोले कि विना तुम्हारे हम भोजन करने नहीं जावेंगे क्योंकि हमतो ऐसे भूखे हैं और वहां हमको कोई अच्छी तरह से भोजन न करावेगा जो घरका स्वामी आपही चले तो हम जावेंगे शिव बोले हे हिमाचल ! तुम आप इनको भोजन कराओ यह बड़े भूखे होरहे हैं अच्छीतरह से इनको भोजन देना और पानी भी पिलादेना यह सुन हिमाचल दोनों को साथ लेकर घर आये और भोजन करानेलगे वे सब भोजन जो इकट्ठा था एकही ग्रास में खागये और कहनेलगे कि हम तो बड़े भूखे हैं भोजन जल्दी दिलावो क्योंकि तुम्हारे यहां सब रक्खा है ईश्वरके लिये तुम ऐसे राजा होकर क्या लोभ करते हो हम भूखे उठेजाते हैं तुमको बड़ा पाप होगा हिमाचल रसोई करनेवाले पर बड़ा क्रोधकर कहनेलगा कि तुम क्यों ऐसी कृपणता करते हो हमारे यहां तो ढेरके ढेर रक्खे हैं जल्दी लाकर खिलाओ जब बाक़ी भोजन आया तो उसको एकही ग्रासमें खागये और पानी भी न छोड़ा और चिल्लाकर कहा कि हमको क्यों नाज नहीं देते हो हमतो मारे भूखोंके मरेजाते हैं हिमाचल अतिचिन्तित हुआ और अपने लोगोंसे कहा कि अन्नका जो पर्वत लगा है इन दोनों को बतलादो उन दोनोंने वह भी खाडाला और जब कि कुछ शेष न रहा तो रोते हुये अपने गुरु की सेवामें गये शिव उन दोनोंको देखकर हँसे और अपने झोलने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में से एक बूटी निकालकर खिलादी तो वह तुरन्त तृप्त होगये ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब दोनों चेले हिमाचलके घरसे गये तब सब लोग हिमाचल के द्वारपर आकर इकट्ठेहुये और कहा कि अब तो नगरमें अन्नका लेशभी नहीं रहा हम क्योंकर जीते रहेंगे अब वह उपाय करो जिसमें सर्वप्रजा जीतीरहे हिमाचल बोले कि वास्तवमें बड़ा उपद्रव मचा है हमारे नगर के तटपर एक उद्यान में एक बूढ़ायोगी जिसके साथ केवल एक बैल है शिष्यों समेत उतरा है और मेरी लड़की के साथ बिवाह की इच्छा रखता है और सर्ववृत्तान्त लड़कों के साथ लानेका वर्णन किया और अतिनम्रता और विनयपूर्वक सब लोगों से सम्मति की कि अब क्या करें सबों ने कहा कि इसका भेद पुरोहित या गिरिजासे पूछना चाहिये हमलोग एक मति हो निश्चय करते हैं कि जो उस योगी में कोई दोष होता तो गिरिजा क्यों ऐसे पतिकी इच्छा रखतीं निदान जब पुरोहित वहां आया तो हिमाचलने पूछा कि तुम सत्य २ कहो कि यह दोनों शिष्य साथ लियेहुये कौन हैं पुरोहित ने उत्तर दिया कि मैं गिरिजाके पता बतानेसे इस योगीको तिलककर आया और सब उनकी सिद्धता कह सुनाई और कहा कि यह तपस्वी शिव हैं और तुम्हारी लड़की गिरिजा पूर्णकलासे आदिशक्ति भवानी है किसी मुख्यकारणसे तुम्हारे घर उपजी क्योंकि जहां २ मैं गया वहां २ मुझे यही उत्तर मिला कि हम सृष्टि की माताके साथ क्योंकर बिवाह करें यहांतक कि विष्णुने भी निषेध करके मुझसे जो कुछ कहा वह तुम सबको प्रकट है जो इससे अधिक कुछ सुना चाहते हो तो गिरिजासे पूछो वह सब जानती होंगी तब और सबोंने गिरिजा से पूछना चाहा गिरिजाने उस सभामें अपनी माता मैना और दो सखियों के साथ पहुँचकर सबको प्रणाम किया हिमाचलने आदरपूर्वक गिरिजासे पूछा ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पच्चीसवां अध्याय॥

हिमाचल ने गिरिजा से कहा कि यह क्या दशा और चरित्र हुआ है जिससे सबलोग दुःखसागरमें मग्न हैं वह योगी कौन है कि जिसके शिष्यों ने सब भोजन खाडाला और पानी पिया हमारे सन्देह को दूर करो और मुख्य वृत्तान्त बताओ जोकि गिरिजा सभामें सब हाल कहते हुये लज्जित होती थी इस लिये हे नारद! तुम उसी समय सभा में जापहुँचे और फिर तुमने आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त जा सुना और तुमने कहा कि हे हिमाचल! कुछ सन्देह की बात नहीं है तुमको और तुम्हारी स्त्री को धन्यबाद है कि गिरिजा आदिशक्ति उत्पन्न हुई वह ब्रह्मा विष्णु और महेश की भी माता है वह सबका प्रलय करती और उसकी महिमा अपरम्पार है उनको तुम आदिशक्ति समझो जो अब तुम्हारे घर में सखियों को साथ लिये हुये फिर रही है उन्होंने प्रेम के वश में पड़ तुम्हारे घर अवतार लिया है और यह योगी हरनाम शिव तुम्हारी लड़की के पति हैं जो ब्रह्मा विष्णु के पिता और सर्वसृष्टि के उपजाने के उपरान्त नष्ट करनेवाले हैं और सब मूल वृत्तान्त वर्णन किया और कहा कि गिरिजा उनको अच्छी तरह से जानती है अब उत्तम है कि तुम सब उन्हीं की शरण में चलो वह तुम्हारे अन्न आदिक को जो गुप्त होगयाहै पूर्ववत् घरों में भरदेंगे और जो २ तुम्हारी इच्छा होगी उसको वे पूरा करदेंगे और अपना स्वरूप ऐसा बनावेंगे जिसको देखकर तुम सब आश्चर्य करोगे और बरात तुरन्त तत्पर होजावेगी जिसमें ब्रह्मा और विष्णु आदि सेवक बन कर आवेंगे हे नारद! इस प्रकार तुमने सबको समझाया और अपने लोकको चले गये और हिमाचल सबलोगों समेत अतिप्रसन्न हुआ॥

छब्बीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल सबको साथ लेकर शिव-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेवा में पहुँचे और सबने हाथ बांधकर स्तुति की तब तो सदाशिव जी सबकी ओर एकदृष्टि से देखकर हँसे और कहा कि हे हिमाचल ! क्या चाहते हो हिमाचल ने अपनी सब इच्छा वर्णन की और कहा कि हमने आपकी लीला कुछ नहीं जानी क्षमा कीजिये मेरा गर्व सब जातारहा क्योंकि आपने कृपादृष्टि से अपना तेज दिखाया कि मैं चैतन्य रहूं आपका वर्णन वेदोंसे भी नहीं होसक्ता जो नारद हमको आश्चर्यरूपी सागर से न निकालते तो हम सब निर्बुद्धिता से इसी आश्चर्य और चिन्ता में मग्न रहते क्योंकि अपनेको ऐसा छिपाया मैंने अहंकार छोड़दिया अब गिरिजा के साथ बिवाह करके सबके दुःख दूर कीजिये और जो कि आपके दोनों चेलों ने नगरभर का अन्न खाडाला है लोग बड़े दुःखी हैं सो इस दुःखको भी दूर कीजिये मेरी प्रतिष्ठा आप के हाथ है मैं आपकी शरण आया हूं तुम्हारे तीनों लोक वश में हैं बरात की अच्छी सामा रचिये और अच्छे शरीर और वस्त्रों को धारण कीजिये अपनी माया को खींचि लीजिये इसमें गिरिजा की हँसी और अपमान होताहै अब इससे अधिक उचित नहीं हिमाचल से यह वचन सुनकर शिव प्रसन्न हुये और कहा कि तुम सब बिदा होजाओ तुम्हारे सब मनोरथ पूरे होंगे तुम सामग्री इकट्ठी करो तुमको अपने राज्य और सामग्रीके जोड़नेका बड़ा अहंकार होगया था उसके नाश करनेको हमने यह लीला रची अब तुम जाकर हमारी अगवानीके लिये बाट देखो यह सुन हिमाचल चलेगये और नगरमें ज्योंकी त्यों सब सामग्री तत्पर होगई जिसको देखकर नगरनिवासी और हिमाचल अतिप्रसन्न हुये और मैनाने गिरिजाकी ओर देखा और बहुत प्रसन्न हुई फिर हिमाचल सब सामग्री उपस्थित करनेलगे और अगवानीके लिये चले और शिवने हिमाचलके बिदा करनेके उपरान्त शृंगीनाद करके अपने डमरू को बजाया जिसके

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शब्दसे सम्पूर्ण देवता, मुनीश्वर और पीतवस्त्र पहिने गणोंसमेत विष्णु और इन्द्रादिक सर्वसृष्टि समेत पहुँचे शिवने सब कपड़ोंसे सजकर दूलहके समान अपना स्वरूप बनाया ऐसा स्वरूप देखकर सब को प्रसन्नता प्राप्त हुई ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! हिमाचल अपने भाई बान्धव और देश की प्रजासमेत अगवानी के लिये आगे पहुँचा और ऐसी सजी सजाई और धूमधामसे बरात देखने से आनन्दरूप होगया और अपनी सामग्री को तुच्छ समझा दौड़कर शिवके चरणोंमें गिरा शिवजीने हाथ पकड़ा और सब हिमाचलके द्वार की ओर गये उस समय सब रीति भांति उत्तम रीतिसे पूर्ण हुई और नगर की स्त्रियां जिस काम में बैठी थीं उसको तुरन्त छोड़ बरात देखनेको चलीं यहांतक कि जिस स्त्रीका पतिभी भोजन कर रहा था तो उस स्त्रीने इस बातकी कुछ परवाह न की तुरन्त घरसे बाहर निकल पड़ी और शिवको ऐसे सुन्दर स्वरूपसे देख प्रेममें बँधकर टकटकी बांधकर यकटक देखने लगीं और गिरिजा की भाग्य को बार बार सराह कर शिवकी बरात पर फूलों की वर्षा करने लगीं जब इस प्रकार शिव बरात समेत द्वार पर पहुँचे तो हिमाचल और मैना ने अहंकार छोड़ बहुत धन द्रव्य शिवको दिया और फिर जो घर बरातके ठहरने को नियत हुआ था उसमें बरात ठहरी और गिरिजाने सिद्धि को भेजदिया जिससे किसी वस्तु की कमी न रह और फिर रीति भांतिके करने और दानादिके पीछे नाना प्रकारके व्यञ्जन बरात को खिलाये हे नारद ! जिन चरणोंके ध्यान में विष्णु और हम रात दिन मग्न रहते हैं वे चरण हिमाचलने अपने हाथों धोये व चारों प्रकारके भोजन खिलाये अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य जो प्रसन्नता कि हम सबको भोजन करने के समय हुई वह वर्णन से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाहर है फिर भोजन के उपरान्त पान बटे फिर हिमाचल की ओर से विनय और नम्रता के वचन कहे गये जब बरात अपने उतरने की जगहमें पहुँची तब हिमाचलके भाईबन्दोंने भोजन पाया और शिवके स्थानमें नाना प्रकारके नृत्य गीत होनेलगे जिसको सुन व्यसनी लोग प्रसन्न होते थे उस समय सब लोगों के मुखों पर शिव और गिरिजा की स्तुति थी॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उस समय हिमाचल के पण्डितने आकर लग्न का मुहूर्त बताया विष्णु और हम शिवको लेकर हिमाचलके घर गये उस समय शिवके रूपका क्या वर्णन करें कि शिवका शरीर सफ़ेद कपूर अथवा कुन्द के फूलके समान था सर्ववस्त्र धारण किये उसके ऊपर मौर शिरपर रक्खे माथेमें चन्दनदिये सर्व भूषणोंसे अलंकृत शिरसे पांवतक सजे जिस का ध्यान करनेसे दोनोंलोक का आनन्द प्राप्त हो करोड़ों सूर्य और चन्द्र की दीप्ति करके युक्त और प्रभा का भरा हुआ रूप था और वृषभ जिस पर महाराज आरूढ़ थे उसकी सजावट और सौन्दर्यको हम कहांतक कहें जब घरके भीतर गये तो हमने शिवकी ओरसे और हिमाचलके पुरोहितने मिलकर सबरीतें पूरी कीं हिमाचलने अर्घ्य मधुपर्कसहित शिव को दिया और दो कपड़े भी शिवको भेंटदिये हमने उसी स्थानपर गिरिजाको बुलाया तब पुरोहित ने होम किया और उसी को साक्षी करके हिमाचलने कन्यादान करदिया और शिवने जब कि गिरिजाके हाथ को पकड़ा तब सबलोग प्रसन्न होगये और हिमाचल के सब कुटुम्बियों ने दोनोंके चरणों की पूजा की और दोनों ओरके सेवक पारितोषिकोंसे तृप्त होगये और भावँरिके होजानेके उपरान्त दोनों एक सुनहरे सिंहासन पर बैठगये और जो कुछ बातें बाक़ी रह गईथीं वह सब हमने

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुरोहितसमेत करा दीं और शिवने हमारी आज्ञासे गिरिजाके मस्तक में सिन्दूर देदिया और हम दोनोंने अपना २ पारितोषिक पाया और आशिष दी और इस बिवाह का आनन्द तीनोंलोकमें छागया फिर स्त्रियां शिवको अन्तःपुरमें लेगईं और वहां जो नियत रीतें हैं सब शिवने कीं और हिमाचलने दूसरे दिन फिर बरात को ठहराया और इसीप्रकार बरातका आदर करके अन्तको शिव गिरिजाको बिदा किया और बरात कैलास पर्वतपर पहुँची और बड़े उत्सवके उपरान्त सबदेवता आदि बिदा होकर अपने २ घरोंको गये और विष्णु और हमभी बिदाहुये और प्रतिदिन शिव और शक्तिका वर्णन करके प्रसन्न होतेथे॥

उन्तीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एक समयमें तुम लोगों की भलाई के लिये हिमाचलके निकट पहुँचे हिमाचलने गिरिजा को बुलाकर तुम्हारे चरणों पर डालदिया और कहा कि तुम इस कन्याके भले बुरे लक्षण वर्णन करो क्योंकि तुम सब कुछ जानते हो तुमने कहा कि यह गिरिजा सब गुणों से भरीहुई शीलवती बुद्धिमती शुभाचरणी और अपने पतिको प्रसन्नता देनेवाली होगी और माता पिता के यशको दुगुना करेगी और इसका पति योगी निर्गुण निरहंकारी नग्न शरीर बुरे कपड़े पहिननेवाला माता पिता रहित होगा यह सुन हिमाचल अतिचिन्तित हुआ पर गिरिजा अतिप्रसन्न हुई क्योंकि ऐसे गुण सुन कर उसने निश्चय किया कि ऐसे तो केवल शिव हैं और अधिकतर वह इस कारण प्रसन्न हुई कि उसको विश्वास था कि नारद का वचन कुछ झूंठ नहीं होता यद्यपि गिरिजा प्रसन्न हुई पर माथेसे कुछ प्रसन्नताके चिह्न प्रकट न किये और हिमाचलने नारद से कहा कि हम क्या उपाय करें तुमने कहा कि भाग्यसे क्या वश है हां हम उपाय बताते हैं जो भाग्य भी सहायता दे अर्थात् जैसे गुण हमने वर्णन किये हैं वैसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गुण शिवमें पाये जाते हैं वही सबसे श्रेष्ठ हैं उनसे विवाह करदो मुझ को निश्चय है कि वह सिवाय गिरिजाके और किसी के साथ व्याह न करेंगे यह सुन गिरिजाको अतिआनन्द प्राप्त हुआ पर चिन्तित होकर मुझसे पूछा कि शिवको तो लोग त्यागी कहते हैं और वे तो सदैव काल ध्यान योगमें मग्न रहते हैं सिवाय इसके यह भी प्रसिद्धहै कि शिवने सतीके साथ प्रतिज्ञा की है कि बिन तुम्हारे हम किसी अन्य स्त्री के साथ प्रीति और विवाह न करेंगे इस लिये मुझे संशय है कि शिव गिरिजा को अङ्गीकार करें वा न करें तब तो तुमने कहा कि आपही सती ने तुम्हारे घर अवतार लियाहै और सब हाल तुमने हिमाचल से कह सुनाया और फिर गिरिजा को उत्तमोत्तम वर देकर तुम चलेगये कुछ दिनों पीछे मैनाने हिमाचलसे धीरेसे कहा कि गिरिजाके विवाह का यत्न करना चाहिये जैसी कि गिरिजा सुन्दर है उसी प्रकार का अच्छा पति ढूंढ़ना चाहिये नहीं तो सब हँसेंगे हिमाचल बोला कि सूर्य चाहे पूर्वसे पश्चिम में उदय हों पर नारदका वचन झूंठ नहीं होगा सन्देह दूर करो और शिवका ध्यान करो और गिरिजा से कहदो कि वह शिवका बड़ा तप करे तब यह मनोरथ सिद्ध हो मैनाने यह सुन-कर बड़ा आनन्द और भरोसा माना और गिरिजाके निकट आकर प्रीतिसे उसे गोद उठालिया आंखोंसे आंसू बहनेलगे मुखसे कुछ बात न निकलती थी गिरिजाने अपनी माताके मन का मनोरथ जाना और कहा कि आज हमने एक स्वप्न देखा है कि मुझसे एक मनुष्य कहता है कि हे गिरिजा! तुम वनमें जाकर तप करो जिससे तुम्हारे माता पिता और तीनोंलोकों को आनन्द प्राप्त हो नारद का वचन झूंठ न होगा तुम्हारा काम केवल तपसे पूरा होगा जब हिमाचल और मैनाने यह स्वप्न गिरिजासे सुना तो अतिप्रसन्न होकर समयके मार्ग देखनेमें रात दिन बितानेलगे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एक समय शिवने चाहा कि हम बड़े श्रमके साथ तप करें और अपने नाम को स्मरण करें यह विचार अपने गणोंसमेत हिमवान् की ओर चले जब हिमवान्में पहुँचे तब अपने डमरू को बजाया वहांपर सुरसरि की धारा बह रहीथी उसी स्थान का नाम औषधप्रस्थ अर्थात् औषधों का कोष है वहां कोई रोग नहीं रहता और सदैव वसन्तऋतु बनी रहती है पक्षी मधुरध्वनि करते और वह स्थान उत्तमोत्तम पक्षियों और फलों और नाना प्रकारके रङ्गोंसे पूरित था ऐसी जगह देखकर शिव तप करनेकी इच्छासे बैठगये और अपने स्वरूपके ध्यानमें लगे और तीनों प्रकारका प्राणायाम अर्थात् कुम्भक रेचक और पूरक किया और नन्दि भृङ्ग आदि गण शिव को ध्यानमें लाकर उसी ध्यानमें प्रवृत्त हुये इसी अवसरमें हिमाचल बड़ी सज धज से शिवके निकट पहुँचे और बड़ी स्तुति की और कहा कि धन्य भाग्य हमारे हैं कि आप यहां आये मुझे जो आज्ञा दीजावे उसकी पालना करूं शिवने हँसकर कहा कि हम तपके निमित्त यहां आये हैं कुछ दिन यहीं रहेंगे और हमारी केवल यही आज्ञा है कि कुछ समय तक हमारे निकट कोई न आवे यह कह चुप होगये हिमाचलने विनय की कि मेरे बड़े भाग्य थे कि आपने अपने शुभ चरणारविन्दोंसे प्रतिष्ठा दी और शिवकी आज्ञा लेकर अपने घर आया और सबसे कह दिया कि जो कोई औषधप्रस्थ पर जावेगा वह बध कियाजावेगा और फिर आप गिरिजासमेत जाकर शिवपर तिल फूल और पुष्प चढ़ाये और आप गिरिजासमेत स्तुति की और कहा कि जो आज्ञा हो तो हमारी यह कन्या गिरिजा सखियों सहित आपकी सेवामें रहे शिवने शिरसे पांवतक देख विचारा कि संसारमें स्त्री उत्तमकार्यों को पूर्ण होने नहीं देती इस लिये स्त्री का पास रखना निषेध कियागया है और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कामदेव का उत्तम शस्त्र केवल स्त्री है क्योंकि स्त्री को देखकर कौन ऐसा है जो छलमें न आगया हो स्त्री विषसे अधिक है क्योंकि एक क्षणभर भी स्त्रीसंगतिसे सम्पूर्ण तप नष्ट होजाता है और यह रोगोंकी खानि है तो हिमाचलसे कहा कि स्त्री और तपस्वीसे क्या सम्बन्ध है वह सर्वतप को भ्रष्ट करडालती है इस लिये हमको गिरिजा का यहां रहना अङ्गीकार नहीं यह सुन हिमाचल आश्चर्य में हुआ तब गिरिजा बोली कि हे तपस्वी! तुम्हारा मत यह है कि पुरुष किसी समयमें प्रकृति से जुदा नहीं प्रकृति बिन संसार कुछ नहीं जो दृष्टि आता है वह सब प्रकृतिका रूपहै प्रकृति जड़ और चैतन्यको लपेटनेवाली है वही संसार को उपजाती वही फिर पालकर नष्ट करदेती है तुम अपनेको नहीं देखते कि हम कौन हैं और हमको क्या करना है और कौन सुननेवाला और कौन कहनेवाला और कौन चलता है तुम ये बातें कुछ भी नहीं समझते फिर गिरिजाने कहा कि तुम बड़े पुरुष हो और हम भी बड़ी माया हैं हमारे अधीन तुम्हारा शरीर है तुम्हारी मतिसे पुरुष और प्रकृति जुदा है पर हमारी मतिसे प्रकृतिसे मिला है कहना सुनना तप करना सब मायाहै जो मायासे अलग है उसको तप करनेमें क्या भय है फिर शिवने कहा कि यह मति जो तुम्हारी है केवल अपने मनसे उपजाई है और अनुमानिक है केवल ब्रह्म सबसे श्रेष्ठ है और माया स्वाधीन नहीं है वह जड़ है जो तुमको ऐसा अहंकार है तो उसको क्यों नहीं रोंकती हो इतना कह शिव चुप होरहे और हिमाचल स्तुति करनेलगा और फिर गिरिजाको उसकी सखियोंसमेत उसीजगहपर छोड़गया गिरिजा अपनी सखियों समेत हरदिन सेवा करती थी वह वनसे नाना प्रकार के पुष्प आदि तोड़कर शिवपर चढ़ाया करती और हरप्रकारसे परीक्षा किया करती पर शिव का चित्त न डोला एकदिन गिरिजाको विचार हुआ कि देखिये शिव हमको कब ग्रहण करेंगे शिवने मनमें जाना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और विचार किया कि जो इसी समय गिरिजा को ग्रहण करता हूं तो इसको बड़ा अहंकार होजावेगा इसके सिवाय तीनोंलोक में मेरी बड़ी निन्दा होगी लोग कहेंगे कि शिव ऐसे कामवेग से मूर्ख होगये सो जब गिरिजा हमारा बड़ा तप करेगी तब गिरिजा का मनोरथ पूरा करूंगा यह सोच शिवशंकर ध्यानमें मग्न हुये उसी समय तारक से दुःख पाकर सब देवता हमारे पास आये और इन्द्रने कामदेव को बुलाकर समझाय बुझाय शिवको वश करनेके लिये उसे शिवके पास भेजा और कामदेव गया पर आपही शिवकी क्रोधाग्नि से जलकर भस्म होगया जिससे तीनोंलोकमें हाहाकार मचगया और गिरिजा ने वनमें जाकर बहुत तप किया और शिवने प्रसन्न हो उसे ग्रहण किया ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनकादि मुनियो ! जब नारदने इतना सुना तो संशययुक्त होकर विनय की कि आप तारक के दुःख देने और कामके जलने और गिरिजाके फिर ग्रहण करने का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त सुनाइये ब्रह्माजी बोले कि जो कश्यप की स्त्री दिति नाम्नी थी उससे अतिबलवान् दो पुत्र एक हिरण्यकशिपु दूसरा कनकाक्ष उपजे जो अतितेजवान् बलवान् और रुष्ट पुष्ट थे उन्होंने तीनों लोकों को अपने वश करलिया देवताओंको स्वप्नमें भी आनन्द न मिलता था उनको विष्णुने अवतार लेकर वध किया और अपने भक्त को बचा लिया हिरण्यकशिपु को नरहरि अवतार लेकर मारा और कनकाक्षको दूसरी रीति से वध किया तब देवताआदि सब प्रसन्न हुये और विष्णु की स्तुति की और दिति ने अतिदुःखी होकर कश्यप के पास जाय रो पीटकर सब वृत्तान्त कहा और फिर बड़ी सेवा करके प्रसन्न किया और एक लड़का आनन्द देनेवाला मांगा कश्यपने कहा कि तुम सहस्र वर्ष पर्यन्त तप करो जो यह तप तुम्हारा सिद्ध होगा तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवश्यही भाग्यवान् पुत्र उपजेगा दितिने बड़ा तप किया और व्र-
तादि किये निदान इन्द्र दितिके तपको जान उसकी सेवा करनेलगा
दितिने इन्द्रसे पूछा कि तुम क्या चाहते हो और किस मनोरथसे हमारी
सेवा करते हो जो तुम्हारी इच्छा हो वह तुमको दियाजावे इन्द्र बोले कि
हम यही वरदान सेवाके बदले मांगतेहैं कि तुम जिस लड़के के लिये
तप करती हो वह लड़का जब उत्पन्न हो वह हमारे भाईके समान होकर
मेरा हितैषी हो और देवताओं के दुःखको दूर कियाकरे यह सुन दिति
ने दुःखी हो अतिचिन्ता की और कहनेलगी कि मेरे साथ बड़ा छल
हुआ मैं बहुत ठगगई निरुपायहो इन्द्रसे कहा कि अच्छा हमने माना
और फिर तप करने लगी अकस्मात् एकदिन अशुद्ध हुई और इन्द्र
छिद्रके मार्गसे प्रवेश करके दितिके गर्भाशयमें चला गया और जो
बालक गर्भ में था उसके सात खण्ड करडाले वह बोल उठा और
जीतारहा मरा नहीं तब इन्द्रने उन टुकड़ों के भी टुकड़े किये पर तोभी
वह सजीव रहा कि यह सब उञ्चासखण्ड होगये पर प्राण उनमें वर्ता-
मान रहे तब दिति निद्रा से जगी और चिन्तित होकर इन्द्रसे पूछा
इन्द्रने सत्य सत्य सब हाल कहदिया तब दिति अतिप्रसन्न हुई वे
उञ्चासों खण्ड उञ्चास मरुद्गण अर्थात् वायु होगये और इन्द्रके भाई
होकर देवताओं में गिनेगये दितिने कश्यप की फिर बहुत सेवा की
और कहा कि इस बेर मुझको एक लड़का वज्राङ्गी दीजिये कि जिस
पर कोई शस्त्र लग न सके कश्यपने कहा कि दश सहस्र वर्ष तप करो
तो निस्सन्देह तुमको ऐसा पुत्र उपजेगा दितिने अतिश्रमसे दशहज़ार
वर्ष तप किया जब तपकी अवधि पूरी हुई तो पुत्र उपजा उसका नाम
वजरङ्ग रक्खा गया जो महाप्रतापवान् पुष्ट वीर धीर तेजवान् हुआ
मानों विष्णुका चौथा अवतार है उसने अपनी माता दितिकी आज्ञा
से इन्द्रको पकड़कर सामने किया और उसको लात घूंससे अच्छीतरह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर मारा और पृथ्वी पर भली भांति घसीटा निदान इन्द्र ने बज्राङ्गी की अधीनता अङ्गीकार की तब हम और कश्यप ने जाकर पूछा कि इन्द्र मरगये या जीते हैं अब उचित है कि हम पर कृपा करके इन्द्रको छोड़ दीजिये तुम अपने कुल में सूर्य हो तुम्हारी स्तुति कहांतक करें बज्राङ्गीने कहा कि हमने तुम्हारे कहनेसे इन्द्र को छोड़दिया मुझको कुछ इन्द्रलोक लेनेकी इच्छा नहीं है यह दण्ड मैंने इन्द्र को अपनी माता की आज्ञा से दिया है यह कह फिर बोला कि हे ब्रह्मा विष्णु! तुम तो तीनोंलोक के स्वामी हो मैं चाहताहूं कि आप तीनों लोक का सार मुझको दें तब मैंने बहुत सोच विचारकर तप और योग का सार उसको बतादिया और फिर हमने एक स्त्री वरांगी नाम्नी उसको दी यह उपाय कर हमतो अपने लोक को चलेगये और बज्राङ्गी कठिन तप करने लगा उसने समुद्र में बैठकर तप किया और उसी समुद्र के तटपर पर्वत के निकट वरांगी तप करनेलगी सो इन्द्रने अपने गणों को उसके तप के नष्ट करने को भेज दिया उन्होंने नाना प्रकारके स्वरूप बनाकर वरांगी को भय दिया पर उस स्त्री पर कुछ न चली और क्रोध में आकर पर्वत को बड़ी भयानक बातें कहीं तब वह पर्वत अति-भयवान् हो मनुष्यरूप धार शरण में आया यह देखकर वह बैठगया अर्थात् इन्द्र की माया गुप्त होगई जैसे शिवके देखनेसे सर्वपाप नष्ट होजाते हैं उसी समय हम वरदान देनेको बज्राङ्गीके समीप गये उसने हमको प्रणाम किया और वरदान मांगा कि हम राज्य नहीं चाहते क्योंकि न तो उसमें कुछ आनन्द है और न परलोक बनता है मुझे अपना सेवक समझ यह वरदान दीजिये कि मुझमें आसुरी भाव न हो और मेरा मन सदा धर्म और तपमें लगारहे और कुमार्गमें न जावे हम यह वरदान देकर अपने लोकको चले और बज्राङ्गीभी जलसे निकल कर बाहर आया और अपनी स्त्रीको बुलाया वह तुरन्त सामने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गई और बहुत रोई पीटी और जब बज्राङ्गी ने रोनेका कारण पूछा तो स्त्रीने सम्पूर्ण दुःखका कारण बताया बज्राङ्गीने उसको बहुत समझाया और धर्मका मार्ग अच्छी भांति बताया पर उसके मनमें समझाने से कुछ काम न किया क्योंकि वह बहुत क्रोधित थी निदान अपने पति की सेवा उत्तम रीतिसे करती रही एक दिन समय पाकर विनय की कि इन्द्र हमारा बड़ा शत्रु है वह बड़ा दुःख देता है आप बदला लेनेवाला एक लड़का मुझे दीजिये और मेरा मनोरथ पूरा कीजिये यह कह अपने पति के चरणों पर गिरपड़ी॥

बत्तीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसी बातें बज्राङ्गीने अपनी स्त्री से सुनकर अतिदुःख में विचार किया कि मैं क्या करूं स्त्री की इच्छा तो है कि देवताओंसे शत्रुता हो और मैं नहीं चाहता मालूम नहीं होता कि क्या उचित है और क्या अनुचित और रीति है कि जो स्त्रीका मनोरथ पूरा होजावे तो वह बड़ा दुःख देनेवाला होताहै तीनोंलोक में कोई प्रसन्न नहीं और जो पुरुष स्त्री का मनोरथ पूरा नहीं करता उसको बड़ा दुःख होता है और वह अन्तको नरक में गिरता है इसी शोच में बज्राङ्गी बहुत दुःखी होकर तप करनेलगा और बहुत काल उसी अवस्थामें रहा निदान हम अतिप्रसन्न हुये और वरदान देनेके लिये उसके पास चलेगये उसने यह वर हमसे मांगा कि हमारे एक पुत्र उपजे जो अपनी माता को आनन्द दे और बड़ाबलवान् और तेजवान् हो हमने मानलिया और अपने लोक को चलेगये और बज्राङ्गी ने भी अपने घर आकर अपनी स्त्री से वरदान पाने का हाल कह सुनाया थोड़े दिनोंमें वह गर्भवती हुई और वह लड़का गर्भ में बहुत बढ़कर अन्त को बहुत भयानक उपजा उसके उपजतेही संसार में बड़ा उपद्रव होनेलगा धरतीमें भूकम्प हुआ तारे आकाशसे गिरने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगे तीनोंलोक में काल पड़गया जिससे देवता आदि सब दीन हो-
गये बिन वायु वृक्ष गिरनेलगे और समुद्र पहाड़पर चढ़नेलगे जब वह
उपजा तो पिता ने सब रीतें पूरीं माता उसकी अतिप्रसन्न हुई और
जो कि वह माता पिताके दुःख दूर करनेवाला उपजा इससे उसका
नाम तारक रक्खा गया उसी तारक ने माता की आज्ञासे पारिजात
पर्वतपर जाकर विजय की इच्छासे तप आरम्भ किया पहिले सौवर्ष-
पर्यन्त दोनों हाथ ऊपरको उठाये हुये दृष्टि जमाये खड़ारहा फिर
सौवर्षतक अँगूठा दबाये तप किया और गरमियोंमें आगमें रहा और
शेषदिवसों में वनों में और जाड़ोंमें पानीके अन्दर बैठरहा और पव-
नादि भक्षण कररहा पर शिव कुछ भी प्रसन्न न हुये तब तो तारक ने
आसुरी तप का प्रारम्भ किया अपने शरीर को काटकर अग्निमें होम
करने लगा और दृढ़तापूर्वक यही तप करने लगा उसके इस कठिन
तपसे तीनोंलोक जलने लगे तब देवताओं ने हमारे निकट पहुँच
अपना दुःख वर्णन किया और कहा कि यह क्या हुआ है कि
तीनों लोकमें इस तरह अग्नि ने जोर पकड़ा है जिससे सब जले
जाते हैं हे नारद! हमने शिवके चरित्र को कुछ न जाना और सबको
अपने साथ लेकर विष्णुके पास गये उन्होंने भी शिवमाया न जानी
फिर शिवके पास गये और प्रणाम और स्तुति के उपरान्त सब वृत्तान्त
विनय किया और कहा कि अबतो आपकी शरणमें आये हैं आप
सबसे श्रेष्ठ हैं इससे अनुग्रह करके हमारे दुःखों को दूर कीजिये शिव
ने हँसकर कहा कि तारक के कठिन तप से तीनों लोक की यह
अवस्था है वह देवतों के दुःख देनेको तप करता है इसी कारण हम
वरदान देने में संकोच करतेहैं यह सुन देवतोंने आश्चर्यमें होकर कहा
कि बहुत उत्तम आप तारक को वरदान दें क्योंकि आपके वरदान देने
से इतनी जल्दी नष्ट न होजावेंगे जैसा कि अब मरेजाते हैं शिव बोले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम मेंसे कोई ऐसा बलवान् और पुष्ट नहीं है कि तारकके तप को माया करके भ्रष्ट करदे विष्णुने गर्वपूर्वक कहा जो मुझको आज्ञा हो तो मैं निस्सन्देह करसक्ता हूं शिवने आज्ञा दी विष्णुजी चले और उन्होंने अपना मोहनीरूप धारण किया पर शिव की लीलासे तारक पर कुछ फल न हुआ इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिव माया अति बलवान् है देखो विष्णु मोहनीरूप से तारकासुर को जो शिवभक्त था कुछ न करसके तो शिवजी को जीतना कितनी कठिन बात है निदान विष्णुने शिवके निकट जाकर विनय की कि आप जाकर तारक को वरदान दीजिये आपकी माया बहुत बड़ी है यह सुन शिव वरदान देनेके लिये चलेगये और ऊंचे शब्द से कहा कि वरदान मांगो मैं तुम्हारे तपसे अतिप्रसन्नहूं तारकने प्रसन्न हो नेत्र खोल शिवको प्रणाम किया और स्तुति करनेलगा और यह वरदान मांगा कि मैं तुम्हारे हाथके सिवाय और किसीके मारे न मरूं और करोड़ों वर्ष तक लोक में राज्य करूं शिवजी ने मान लिया और विमनहो अपने गणोंसमेत चलेगये तब तारक अतिप्रसन्न हुआ और प्रसन्नतापूर्वक अपने घर गया॥

तेंतीसवां अध्याय॥

इतनी कथा सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मा! ऐसा वरदान पाकर तारकने क्या कार्य किया तारक का शेष वृत्तान्त सुनाइये ब्रह्मा बोले कि तारक वरदान पाकर अपने घर आया और अपनी स्त्रीसे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा और सब असुर इकट्ठे होकर तारक को अतिप्रतिष्ठित और बड़ी पदवीवाला विचार उसकी स्तुति करनेलगे और असुरों की सब सेना इकट्ठी होगई जिसमें करोड़ों वीर थे उनके नाम यह हैं कुम्भक, कुञ्ज, महिष, कुञ्जर, कालनेमि, निमि, कृष्णजठर, प्रजाम्बुक, शुम्भ, कालकेतु यह दशों बड़े प्रसिद्ध वीर सेनाधिप थे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और जो सब असुरसेना का सेनानी था उसका ग्रसन नाम था यह सब तीनों लोकों को तुच्छ समझते थे यह सेना लेकर तारकने पहिले इन्द्र पर चढ़ाई की और देवताओंके लोक और इन्द्रके देश को घेर लिया और देवता और दैत्यों का घोरयुद्ध हुआ और नाना प्रकार के शस्त्र चले तारक और इन्द्रसे युद्ध हुआ और निमि और अग्नि भिड़े और कालनेमि और यमराजने लड़कर रुधिर बहाया और नमुचि और निर्ऋतिने लड़ाई करके अपनी २ विजय चाही और महिषासुर और वरुण परस्पर भिड़े और मेघ और पवन ने युद्ध किया और कुञ्ज भिण्डिसे लड़े और जृम्भक और इन्द्रने लड़ाई करके चरित्र दिखाया और शुम्भ और दाहपतिने घोरयुद्ध मचाया और कुम्भज और चन्द्रमाने अच्छी मारपीट की और सूर्य और कुञ्जरने प्रलय किया और ग्रसन सेनापतिने विष्णु से लड़ाई की इसीतरह बड़ायुद्ध हुआ और दैत्योंने कोपित होकर देवताओं को युद्धस्थानमें दुःखी कर दिया और तारकने अपना प्रताप प्रकट किया कि इन्द्र को परास्त करदिया और विष्णुके सामने जा खड़ाहुआ विष्णुने आश्चर्य किया और तारक का यह प्रताप शिवजीके वरदानसे समझा और गुप्त होगये और तारकने सबको जीत लिया और सबको परास्त करके बन्दिमें डाला और अपनी राजधानीमें लेजाकर निर्भय होकर राज्य के सहायकों समेत राज्य करनेलगा और दैत्य देवताओं की बन्दीगृहमें रक्षा करने लगे जहांपर कि महीनदी समुद्र में मिलगई है उस स्थानपर तारक की राजधानी थी वहां सब दैत्य और देवता इकट्ठे होकर रहतेथे और तारकने निर्भय सर्व देश अलग २ भागोंमें बांटकर उनका राज्य असुरों को दिया जहां वे अपने परिवार और मित्र और स्त्रियों सहित आनन्द उठाया करते थे तारक आप तीनों लोक का स्वामी विष्णुके स्थान पर हुआ और निमिको अग्नि की पदवी दी और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कालनेमि को यमराजके बदले नियत किया और निर्ऋति की पदवी नमुचि को दी और वरुण के देश का प्रबन्ध महिषासुर को सौंपा पवन के बदले मेघ हुआ और कुबेरके स्थानपर कच्छ हुआ और इन्द्र की जगह पर जृम्भकने नाम पाया और अहिपतिके स्थानापन्न शुम्भ कियागया और हमारी जगह पर कुम्भ राज्य करनेलगा और मित्रके बदले कुञ्जर स्थित हुआ इसी प्रकार सब देवताओं के स्थानपर दैत्य दानव नियत हुये और सब असुर संसार भरके स्वामी होकर राज्य करनेलगे उनकी राज्य में देवताओंके विशेष कोई मनुष्य दुःखी न था थोड़े दिनोंके बीतने उपरान्त विष्णुने गुप्त देवताओं के निकट जाकर उनको यह उपाय बताया कि तारक बड़ा बलवान् प्रतापवान् है क्योंकि उस पर शिवजी की बड़ी कृपा रहाकरती है इससे हम विचार करते हैं कि वे तुमसे कभी परास्त न होंगे इसलिये अपने मनोरथके पूर्णकरने के लिये उसकी तुम सब सेवा करो और उसको नट बनकर प्रसन्न करो जब वह प्रसन्न होगा तब तुमको अवश्य छोड़देगा ऐसा उपाय बताकर विष्णु तो अपने धाम को गये और देवता भी नटरूप से तारक के पास पहुँचे और ऐसे उपाय से वार्त्ता की कि तारक अतिप्रसन्न होकर कहनेलगा कि जो तुम्हारा मनोरथ हो वह मुझसे मांगो देवताओं ने अतिविनतीकर कहा कि हमको बन्दि से छुड़ा दीजिये तारकने मान लिया और देवताओंने बन्दि से छुट्टी पाकर चाहे अपना २ पद भी पाया पर तौभी दुःखी रहा करते थे और तारक राज्य करता रहा जिसकी राज्य में सिवाय देवताओं के और किसी को कुछ दुःख भी न था ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब देवताओंने असुरोंके साथसे नाना प्रकारके दुःख उठाये तब अति शोकवान् होकर कहनेलगे कि कहां जाइये किससे अपना दुःख कहिये न कोई ऐसा मित्र है और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न कोई ऐसा सहायक है सूर्य चन्द्रमा जो संसारके जीव हैं वह तो आपही तारक की सेवा करते हैं तौभी उनको भय बना रहता है न जानिये यह दैत्य कबतक हमको दुःख देतारहेगा इसी प्रकार बहुत समयतक देवता दुःख और चिन्तामें डूबकर अन्तको मेरे पास पहुँचे और इन्द्र और बृहस्पति भी उनके साथ थे उन्होंने मेरी स्तुति की और बार २ मेरी पूजा करके मुझे प्रणाम किया देवताओंकी उस विनयसे हम प्रसन्न हुये तो मैंने हँसकर कहा कि हे देवताओ ! तुम्हारी सन्तान और बल तुम्हारे आधीन है या नहीं हम तुमको बहुत दुःखी मुँह सुखाये हुये चिन्तित देखते हैं और इन्द्रके मुखमें कुछ तेज नहीं पाते कौन ऐसा संसारमें बलवान् है जिसने तुम सबको दुःखी किया है हे पुत्रो ! हमसे अपने यहां आनेका कारण वर्णन करो देवताओंने बृहस्पतिसे कहा कि आप हम सबकी ओरसे उत्तर दीजिये क्योंकि आप विष्णु और इन्द्रके समान हैं तब बृहस्पतिने हाथ जोड़ मुझसे कहा कि आप हमारे दुःखको क्यों नहीं जानते हैं देखो तारकदैत्य सकल ऐश्वर्य इकट्ठाकर सृष्टि को बड़ा दुःख देता है उसको शिवने वरदान देदिया है जिससे उसने तीनोंलोक को जीतलिया है सूर्यभी उसके देशमें ठंढे होकर गरमी प्रकट करते हैं और चन्द्रमा भी अपनी सब कलाओं से उसकी सेवामें विद्यमान रहकर भयभीत रहते हैं वे केवल शिवको मानते हैं उसके उद्यानमें पवन इस लिये नहीं चलसक्ती कि फूल न गिरपड़ें उसकी सेवामें सर्वऋतु विद्यमान रहती हैं और भयसे वे ऋतु सब फल फलते हैं और वासुकिनाग मानों दीपक बनकर अपने शीश के मुक्तासे मन्दिरमें प्रकाश करते हैं इन्द्र आपही उसकी दिन २ सेवा करते हैं यद्यपि सर्व इस प्रकार उसकी सेवाटहल करते हैं पर वह कुछ भी कृपा नहीं करता जिन वृक्षोंकी पत्तियां देवताओं की स्त्रियां बहुत समझ बूझकर तोड़ती थीं उन तरुओंको वे मूलसे उखाड़ते हैं देव-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पत्नियां उसके सोनेके समय उसकी स्तुति करके अपने अश्रु पृथ्वीपर छोड़ती हैं उन्होंने पर्वतोंके शिखर काटकर वहां विहारके स्थान और अन्तःपुर बनाये हैं और देवता अपने लोक को आंखोंसे नहीं देख-सक्ते वह आपही यज्ञका भाग लेलेते हैं इन्द्रादि को कौन पूछता है हमारा कोई उपाय नहीं चलता जैसा कि सन्निपातके होजानेपर कोई ओषधि काम नहीं करती हम लोगों को विष्णुके चक्र पर बड़ा भरोसा था पर वह भी व्यर्थ होगया इससे हे ब्रह्माजी ! आपको कोई उपाय करना उचित है हमने कहा कि हे देवतो ! तारकने शिवजीसे वरदान पाया है और शिवके सिवाय और कोई नहीं जो उसको दूर करसके और जो शिवके वीर्यसे कोई पुत्र हो वह तारकका बध कर सक्ता है सो यह बात बहुत कठिन है फिर हमने कहा कि देखो शिव हिमाचल पर्वतपर तपकर रहे हैं और गिरिजा अपनी सखियों समेत उनकी सेवा करती हैं जो उन दोनों का मिलाप होजावे तो निस्सन्देह तुम्हारा कार्य पूर्ण हो सिवाय गिरिजाके और कोई तुम्हारा काम नहीं करसक्ता यही उपाय है अब तुमको उचित है कि कामदेव को भेजो वह शिवके पास जावे और शिवके मनमें प्रीति का अंकुर उपजे यह सुन सब देवता हमारी बहुत विनती और स्तुतिकर अपने २ घर आये और इन्द्रने कामदेव का ध्यान किया तुरन्त कामदेव इन्द्रके निकट स्त्री सहित आया और हाथ जोड़ बिनय की कि आपने मुझे क्यों स्मरण किया है इन्द्रने दोनों को कृपादृष्टिसे देखा और कहा कि तुम धन्य हो कि देवताओंके हितैषी हो और हमारे कार्यमें मन लगाते हो जिस कार्यके लिये मैंने तुमको स्मरण किया है वह वास्तवमें तुम्हारा ही काम है यद्यपि हमारे बहुत से मित्र हैं पर तुम्हारे बराबर और कौन हमारा सहायक है अब हमारे कामपर तत्पर होजाओ और जिसतरह पर ब्रह्माजीने युक्ति कही है उसी प्रकार पूर्ण करो और हे प्यारे मित्र !

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वीरों की परीक्षा युद्धके समय कीजाती है और उदारलोग कालके समय जाने जाते हैं और मित्र की परीक्षा तब होती है जब कोई आपदा पड़ती है और दरिद्रता और आपत्तिमें स्त्रीकी परीक्षा का समय मिलता है इस लिये अब मुझको तुम्हारी मित्रता की परीक्षा मिल जावेगी और केवल मेरा ही प्रयोजन नहीं वरन सबके कार्य इसमें संयुक्त हैं कामदेवने यह सुनकर कहा कि आप इतनी बातें घबराहट की क्यों कहते हैं हम सब काम करनेको वर्तमान हैं कि जो कोई तुम्हारे पदके लेने के लिये तप करता हो उसको उसी समय पापी बनाडालूं हमारे सहायक स्त्रियोंके तीक्ष्ण कटाक्ष बाण हैं जिसके बलसे सर्व संसारको जीत सक्ता हूं देवता, दैत्य, ऋषि सब मेरे वशमें हैं और मनुष्य तो सेवकों के समान मुझे पूजते हैं यह बातें सुन इन्द्र अतिप्रसन्न हुआ और कामदेवसे कहा कि बैठजावो और अपना प्रयोजन यों बखानने लगा कि हे मन्मथ! जो काम मुझको तुमसे कहना था वह तो तुम आपही कह रहे हो देखो तारक दैत्यने तप करके शिवजीसे बड़ा वर पाया उसने धर्म को नष्ट कर देवताओंके सब रत्न छीनलिये हैं और सबके शस्त्र निष्फल होगये हैं इससे सब देवता चिन्तायुक्त और दुःखी होरहे हैं इस लिये ब्रह्माजीने मुझसे कहा है कि जो शिवके वीर्य से कोई पुत्र उपजे तो तारक का बध होगा इससमय शिव हिमाचल पर्वत पर स्थित हैं तहां गिरिजा उनकी सेवा कररही हैं जो तुम शिवको छलकर गिरिजाके साथ संयोग करादो तो सब मनोरथ पूरे होजावें और तुम्हारी यह कीर्ति तीनों लोकमें हो और देवताओं को अति प्रसन्नता प्राप्त हो॥

पैंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! कामदेवने इन्द्रसे यह बात सुन कर मानली और शिवके विजय करने की सामग्री कुछ कठिन न समझ अपनी पत्नीसहित इन्द्रसे बिदाहुआ उसके चलनेके समय कई अश-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुन हुये पर भाग्यवश ऐसे अशकुनोंका कुछ विचार न किया और वसन्तादि सर्वसामग्री इकट्ठी की और बड़ी धूमधाम और गर्वके साथ चला और मार्ग में इस बातको विचारता हुआ कि क्योंकर शिवको वश करूं शिवके निकट पहुँच देखा कि चारों ओर वसन्तऋतु फैल गई मोर बोलने लगे वनमें कुसुम फूल उठे टेसूके वृक्ष प्रफुल्लित हुये और सर्वप्रकारके पक्षी मधुर वाणीसे बोलने लगे जिससे सब देवताभी काम वश होगये और जिनको अहंकार था वह भी मोहित होकर काम-जालमें फँसगये और कामीलोग तो मानों उसके चेलेही होगये और कोई चराचर न रहा जिसके कामदेव का बाण न लगा हो और सबका तप एकही बेर जातारहा और बुद्धिमान् कांप उठे और सब देवता अ-पने शुद्धमार्गको छोड़कर कामके बाणोंसे दुःखी होगये यद्यपि संसार में यह अवस्था केवल मुहूर्तभर रही और किसीसे भी धैर्य और संतोष न रहा पर शिव और उनके गुणोंके साथ कामदेव का कुछ फल न हुआ और जब शिवके निकट कामदेव गया तब शिवको देख अति भयभीत हुआ और तुरन्त संसारसे कामदेव का बल नष्ट होगया जैसा कि पहिले सबलोग थे उसी तरहके होगये जैसे नशा पिये हुये आद-मियों का मद उतरजाता है उसीतरह से सबलोगों का मद उतरगया और मन्मथ अपने मनमें कहनेलगा कि मुझसे बड़ा पाप हुआहै शिव के कोपसे हमारी मृत्यु होगी फिर विचारा कि जो मैं शिवके हाथसे मारा जाऊंगा तो उत्तम है क्योंकि मैंभी शिवके गणों में गिना जाऊंगा क्योंकि बहुतसे लोग शिवके हाथसे बध होकर अन्तको शिवके चरणों में पहुँचगये हैं यह विचार फिर अपने तेजसे सृष्टिभर को पहिले की तरह करडाला फिर सबलोग कामदेवके पंजेमें पड़गये शिवने यह दशा देखी और दृढ़तापूर्वक मनको अपने वशसे जाने न दिया और परि-पूर्ण योगसाधा और कामदेव बाण चढ़ाय शिवके बाईं ओर जा खड़ा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआ तब शिवके सिवाय उस तपभूमिमें कोई न था जिसको कामदेव ने मोहित न किया हो कामदेव घात लगायेहुये समयकी बाट देखता था जब शिव ध्यान को छोड़कर अपने स्थान पर बैठे तब गिरिजा सब पूजा की सामग्री लेकर शिवके पास आई जब गिरिजा पूजासे निश्चिन्त होकर अपने सुन्दर अङ्ग ढांपनेलगी तो कामदेवने ऐसा समय पाकर अपना बाण कानतक तान मारा जिससे कुछ प्रीति का अंकुर शिवके मनमें जमा और शिव हँसकर गिरिजाके अङ्गों की प्रशंसा करनेलगे और चाहा कि गिरिजा का हाथ पकड़ूं पर गिरिजा स्त्रियोंके स्वभावके समान लज्जित होकर पीछे हटगई यह देख शिव मनमें सब बातको जानगये और ऐसी प्रीति को विस्मरण कर गये और विचार किया कि क्यों हम इस स्त्रीसे छले गये जिसने मुझे विवश करदिया जब चारों ओर देखा तो कामदेव को अपनी बाईं ओर छिपा हुआ देख कोपित हुये जिससे तीनों लोक कांप उठे और जाना कि प्रलय होनेवाला है सो शिवने अपना तीसरा नेत्र खोल कामकी ओर देख दिया ज्योंहीं देखा त्योंहीं कामदेव भस्म होगया और तीनों लोकमें हाहाकार मच गया और देवता अप्रसन्न और दैत्य अति प्रसन्न हुये और देवता अति भयवान् होकर महा-दुःखी और दीन होगये इतना चरित्र सुनकर नारदने ब्रह्माजीसे पूछा कि हे स्वामी ! यह चरित्र सुनकर मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि शिव तो परब्रह्म निष्पाप, तीनों लोकके स्वामी मायारहित तीनों देवताओं करके सेवित योगमें स्थित उनका नाम कामंजय और मृत्युंजय है और जिनकी शुभदृष्टिसे उनके भक्त कामदेवको वश किये रहते हैं ऐसे शिवको कामने क्यों ऐसा फँसाया और सुगमतासे कामने विजय पाई ब्रह्माजी बोले कि इससे पहिले हमारे एक कन्या उपजी थी जिसका संध्यानाम था फिर एक लड़का उत्पन्न हुआ जिसको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन्मथ और काम कहते हैं हमने उसको वरदान दिया था कि तुम तीनों लोकपर प्रबल रहोगे और हम और विष्णु और हर तुम्हारे वश में रहेंगे यह सुन उसने पहिले मुझेही बाण मारा और मुझसे कुकर्म कराना चाहा हमने उसे क्रोधित होकर शाप दिया कि तुम शिवके तीसरे नेत्रसे जलजाओगे इसी कारण कामने पहिले तो शिवको वश में करलिया और फिर शिवके तीसरे नेत्रसे भस्म होगया अब फिर पिछला चरित्र सुनो कि जब कामको शिवने जलादिया तब कोई तो दुःखी और कोई सुखी हुआ और गिरिजा अति आश्चर्यमें हुई और उसके शरीरसे बहुत पसीना छूटा और अपनी सुन्दरता का अहंकार छोड़ मूर्च्छित होगई और उसका मुख कमल प्रभातके चन्द्रमाके समान निस्तेज होगया गिरिजा की ऐसी अवस्था देख सब सखियोंने उसका हाथ पकड़ सँभाला जब गिरिजा चैतन्य हुई तो लज्जित होकर अपने घर लौटी और शिव हिमाचल पर्वत को छोड़ कैलास पर्वतपर जाकर स्थितहुये शिवके चले जानेके उपरान्त गिरिजा की यह दशा होगई कि वह जिस तरह शिव हर दिन चरित्र करते थे उसको करके शिवका ध्यान किया करती और कामदेव की स्त्री रति रोने पीटने लगी और अपने पतिके चरित्र बखानकर हाय २ करती और उसको अपने शरीर की कुछ सुध न रही जब चैतन्य हुई तो अति खेदसे रोकर अपने पतिके शवसे कहने लगी कि मैंने तुमको बहुत शिक्षादी पर दूसरे के वशमें पड़ तुम को कुछ विचार न हुआ शिव जो रचते हैं वह अमिट है हे नाथ ! तुमने मुझसे कुछ न कहा और मुझसे वियोग कर शिवपुरी को चलेगये अब मैं अनाथ हूं और तुमने जैसा किया वैसा फल पाया किसी के प्राण का दुःख देकर किसीने आनन्द उठाया है फिर सबके जीव जो शिव हैं उनसे ऐसा करके आनन्द की क्या आशा है और जो तुमने इन्द्रलोक में अहंकार की बातें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कही थीं उनका यह फल मिला क्योंकि अहंकारी को परलोक में आनन्द कहां है तुमतो शिवके गणों में मिलगये और हमारा अब कौन है इसी प्रकार की बातें कहकर रतिने अतिविलाप किया और देवता रतिको इस प्रकारसे रोते हुये देख अति शोकवान् हुये और रति को बहुत तरहसे समझाकर शिवके निकट गये ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! विष्णु और हम सब देवताओं को साथ लिये हुये शिवके शरणमें गये और प्रणाम करके बहुत स्तुति की और विनय की कि हे शिव ! हम सब डूबते हैं आप डूबने से बचावें हम सब आपकी शरणमें आये हैं यह विनय हमारी सुनकर शिव प्रकट हुये जो परमहंसों के समान सब सामग्री सजाये हुये जिसको देख हम सब प्रसन्न हुये और एक बार हम सबोंने खड़े होकर अलग अलग शिवकी स्तुति की शिवने प्रसन्न होकर कहा कि हम अतिप्रसन्न हैं जो इच्छा हो वह मांगो और जो स्तुति कि तुम सबने पढ़ी वह हमको अतिप्रिय है जो कोई इसको पढ़ेगा हम उससे अतिप्रसन्न होंगे फिर हम सबने विनय की कि आप तो जानतेही हैं हम क्या कहैं आपसे कौन बात छिपी है यह सुन शिव हँसपड़े और कहा कि हमने जो काम को जलाया तो केवल ब्रह्मा का शाप था हमारा भक्त ब्रह्मा बहुत बड़ाहै जैसा कि विष्णु हमारा भक्त है अब हमारा यह वचन है कि आजसे काम निश्शरीर होकर अतननामसे प्रसिद्ध होगा और शरीर विना केवल मनसे उपजा करेगा फिर समय पाकर रतिको उसका स्वरूप दिखला देवेंगे और वह हमारे पास कैलास में रहा करेगा जब विष्णु का कृष्ण अवतार होगा तब कृष्ण का कामदेव पुत्र होगा और रतिको मिलेगा अब चाहिये कि उस समयके आने तक रति इन्द्रके यहां जाकर स्थित रहे वह विना परिश्रम अपने पति कामदेव को पावेगी उसको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उचित है कि कुछ दुःख न माने और कहीं न जावे जब रुक्मिणी के पुत्र उपजेगा तुरन्त उसको इन्द्र उठालेजावेंगे और समुद्र में डालदेंगे तुरन्त एक मछली निगल जावेगी और वह हमारे प्रताप से नहीं मरेगा बरन उसको एक केवट लेजाकर एक असुर को देगा जब मछली का पेट फाड़ाजावेगा तब वह प्रकट होकर रति के यहां गुप्त रहा करेगा फिर उस असुर को कृष्ण का पुत्र वध करके यहां आवेगा इतना कह सबके देखते शिव अन्तर्धान होगये और देवताओं ने रति को समझा बुझाकर इन्द्रके साथ करदिया और अपने अपने स्थान को सब चले गये इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह शिवचरित्र हमने कहा अब गिरिजा की कथा सुनो॥

सैंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब गिरिजाने काम को जलतेहुये देखा तो तुरन्त वहां से भागकर अतिचिन्तायुक्त विह्वल होकर उठती बैठती अपने घर पहुँची यह दशा देख उसके माता पिता तुरन्त गिरिजाके पास आये और नगरभर में खलभल पड़ी जब गिरिजा कुछ चैतन्य हुई तो उसकी माताने पूछा कि तुमको इस तरह किसने भय दिया कि तुम बार बार ऊर्ध्वश्वास लेती हो गिरिजाने जैसा कि देखा था सब वृत्तान्त वर्णन किया और माता पिताने गिरिजा को भरोसा दिया और बहुत प्रकारसे आश्वास किया पर गिरिजा को कुछ संसार का आनन्द न मिला वह चलते बैठते जाग्रत् और स्वप्नावस्था खाने पीने नहाने आदिके समयमें प्रतिक्षण शिवके चरित्र को न भूलती और न किसी वस्तुमें उसकी इच्छा रही हे नारद! उसी समयान्तर में हम गिरिजाके पास गये और गिरिजाने हमसे लज्जित होकर कहा कि हे नारदजी! तुम कोई ऐसी युक्ति बताओ जिससे हमको शिव मिलें हमने उत्तर दिया कि शिव केवल तपके आधीन हैं जो तुम शिवको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपना पति किया चाहती हो तो तुम वनमें जाकर शिवका कठिन तप करो क्योंकि शिव केवल तपके आधीन होकर संसार को वश करके पालते और फिर उसको नाश करदिया करते हैं रुद्र भी केवल तप करके प्रलय करते हैं और शेष पृथ्वी को शिरपर रक्खे रहते हैं ऐसे तपसे देवता आदि क्या २ प्राप्त नहीं करते गिरिजा बोली सत्य करके यही बात है पर मुझे आप अपना शिष्य कीजिये और विधि बताइये क्योंकि गुरु विना गति नहीं और कोई कार्य सिद्ध नहीं होता और विष्णु ब्रह्मा और हर भी गुरु बिन नहीं हैं हे नारद! तब तुमने शिव का ध्यान करके गिरिजा को पञ्चाक्षरी मन्त्रका उपदेश किया तुम तो वहांसे चलकर हमारे पास आये और गिरिजा वह उपदेश पाकर तप की दृढ़ इच्छा से अपनी सखियों समेत हिमाचल के पास गई सो सखियोंने गिरिजा की ओर से विनय की कि गिरिजा कहते हुये लज्जा करती है उसकी ओरसे हमारी यह विनती है कि अब गिरिजा की इच्छा है कि शिव का तप करे आपकी आज्ञा चाहती है हिमाचलने प्रसन्न हो इस विनय को मानलिया और आज्ञा दे दी फिर गिरिजाने उन्हीं अपनी सखियों समेत अपनी माताके पास पहुँचकर विनती की तो मैना अतिचिन्तित हुई और अँधियारी रात्रिके समान मलिन होकर गिरिजासे कहा कि अपने घरमें तपकरो और माता पिता के घर को किसी स्थल वा देवालय वा तीर्थ से कम न समझो पहिले तुमने जाकर क्या किया अब फिर क्या करोगी व्यर्थ ही दुःख सहती हो अपने घर को देवताओं का घर समझो और यहां रहकर मुझे आनन्द देती रहो गिरिजा ने कहा हे माता! शिव केवल तपके वशमें हैं विना तपके क्या होसक्ता है संसार में जिसने जो पाया है वह केवल तप का फल है तपसे बड़ा सुख मिलता है मैना बोली कि हे गिरिजे! मेरे सौ पुत्र हैं पर तू मुझे सबसे प्यारी है मेरी आंखोंसे तुम दूर न हो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो तू कहे वही मैं करूंगी तुम घर छोड़कर बाहर मत जाओ जो जो मांगोगी वह मैं तुझे दूंगी गिरिजा बोली हे माता! विना जप तपके शिव मेरे साथ विवाह न करेंगे वह तप केवल वनमें होसक्ता है न कि घरमें क्योंकि घर अहंकार मूर्खता दुःख चिन्ता आदिकी खानि है जो घर बैठे तप होसके तो मुनि और राजालोग क्यों वनमें जावें यह सुनि माताने फिर चिन्तित हो कहा कि वन बड़े भय का स्थानहै वहां सिंह और हाथी आदि फिराकरते हैं और वहां बड़े विषैले जीव रहते हैं उनकी पवन भी अभी तुमको नहीं लगी तुम वनके दुःख क्योंकर उठावोगी गिरिजा बोली कि संसार में श्रम उठाने विना कोई अच्छा मनोरथ या वस्तु प्राप्त नहीं होती हमारा यह वचन है कि घर और बाहर सब जगह शिव रक्षक हैं ऐसे कुल या सन्तान को धिक्कार है कि जिसने शिवके चरणों का ध्यान न किया विना शिवके मुक्ति कहां है मैनाने कहा कि देखो जो विष और मादक वस्तु भङ्ग आदि खाकर एक वृषभ पर चढ़ता है वह नग्नशरीर और अशुभसामां रक्खेहुये दरिद्री है तुमको उसकी भक्ति से क्या फल प्राप्त होगा? यह बात गिरिजाने अपनी मातासे सुनकर कहा कि ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि आदि जिस आदिपुरुष का ध्यान करते हैं वही हमारे मन में स्थित होगया है वही तीनों गुणोंसे प्रकट होकर नाना प्रकारके चरित्र करता है अब मुझे आज्ञा दीजिये यह सुन मैना प्रसन्न हुई और अति हर्षपूर्वक कहा कि बहुत अच्छा हमारे कुल को पवित्र करो मैंने जान बूझकर तेरे निश्चय के देखने को यह वचन कहे थे वास्तवमें शिव का तप तेरा मनोरथ पूरा करेगा इस प्रकार गिरिजा माता पिता की आज्ञा पाकर शिव की बहुत स्तुति कर हर २ कहती हुई वनको चली जब मैनाने गिरिजा को वन की ओर जाते हुये देखा तो महादुःखी होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी इसी प्रकार सब कुलके लोगों और नगर-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वासियों ने खेदसंयुक्त गिरिजा को फिर भी वनमें जाने से बर्जा और वनके दुःख हर प्रकारके वर्णन करके यही अनुमति दी कि घरमें तप करना उचित है पर जिस तरहसे चकवे के जोड़को बरातभर की उजियाली अच्छी नहीं लगती इसी प्रकार गिरिजा को यह बातें समझाने की न भाईं और कहा कि तुमलोग कुछ चिन्ता मत करो हम शीघ्रही शिव का वरदान पावेंगी हमको वनका रहना शुभ होगा इसी प्रकार सबसे मधुरवाणी के साथ वार्ताकर ब्राह्मणों को प्रणाम किया और अपने लौट आने तक उनके कालक्षेप को सब कुछ दिया और सर्व प्रकारके मंगन और भिक्षुकों को इस लिये पूर्ण करदिया कि इससे शिव तृप्त होते हैं इसी प्रकार अपनी सब सखियों को देखती हुई और नाना प्रकार से समझाती अपने माता पिता को प्रणाम करती भई और अच्छा मुहूर्त पाय चल दी सब लोगों ने आशिष दिया और देवताओं ने जय २ शब्दकर फूलों की वर्षा की और दुन्दुभी बजानेलगे चलनेके समय गिरिजाके बायेंअङ्ग भुजा और नेत्र फड़क उठे जिससे विदित हुआ कि हमको शिव अवश्य मिलेंगे यद्यपि उस समय नगरनिवासी अतिचिन्तित थे पर अशुभ समझ कोई रोता न था और गिरिजा के चले जाने के उपरान्त उनके माता पिता और भाई सब लोगों समेत मूर्च्छित होगये और हिमाचल के नगर का चमत्कार उड़ गया और नगर मानों कालरात्रि होगया और उस नगरके निवासी कालस्वरूप भासनेलगे जो अपने आपही को देख भय खाते थे और घर श्मशान के समान विदित होते थे और मित्र यमदूतवत् प्रकट होते थे और नाना प्रकार के उद्यान पुष्पवाटिका सींचने पर भी चिताभूमि सदृश सूखगये और सब जीवों का तेज जातारहा नदी नाले अच्छे मालूम न होते थे और सर्वमनुष्य गिरिजा के दुःख और वियोग से चित्रवत् आश्चर्य में रहाकरते थे वे अहर्निश गिरिजा की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बालक्रीड़ा का स्मरण करते थे हे नारद ! तुम इस बात को अच्छी तरह से समझो कि शक्ति विना संसारमें कुछ भी आनन्द नहीं है शक्तिही के प्रकट होनेसे लोकमें बल प्रकट होता है वह अपने चरित्रोंसे सर्वप्रकारके दुःखों को दूर करती है और जैसे कि इन्द्रियां जीव विना निशि बिन चन्द्रमा जलबिन मीन प्रसन्न नहीं उसी तरह गिरिजा विना वह नगर होगया यह दशा देखकर वेदज्ञ मुनि उस नगरमें पहुँचे जिनकी पूजा वहांके सब नगरवासियोंने की मुनि बोले कि हे हिमाचल ! किस शोकमें हो पर हिमाचल दुःख और चिन्ताकी अधिकता से बोल न सके फिर धैर्य धर कहा कि हमारी पुत्री शिवके तप के लिये वनमें गई है और मैनाने बहुत रो रो कहा कि जिस गिरिजा के कभी उष्ण पवनभी न लगीथी वह वनमें गई है जो करोड़ों प्रकार के भोजन खाती थी वह वनमें क्या खाती होगी जिसके सोते हुये उसकी सखियां स्तुति किया करतीथीं उसके लिये सन्देह है कि कहीं वनमें उसको कोई सिंह आदि न खाडाले अब हमारा जीना कठिन है यह सुन मुनिने माया को बहुत बेर धन्य कहा और कहा कि हे शिव ! जब जैसा तुम चाहते हो वैसाही करते हो तुम्हारी माया सबको भुलाये रहती है किसीको दुःखी और किसीको सुखी करती है फिर हिमाचल और मैनासे कहा कि तुम कुछ खेद मत करो तुम्हारी कन्या अनादि सो ब्रह्मा और विष्णु आदि देवताओंसे अपनी सेवा कराया है कि तुम उसको नहीं जानते हो वह अपने तपसे हम सबको आनन्द देगी और तुम्हारी बड़ी कीर्ति होगी इसलिये उचित है कि कुछ दुःख मत करो और शिवके ध्यानमें बने रहो यह कह मुनिने गिरिजा को नमस्कार किया और विदा हुये और हिमाचल और मैना और सब नगरवासी प्रसन्न हुये और शिव का ध्यान करते रहे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अड़तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हिमाचल और मैना का दुःख दूर होगया और शिव की प्रीति अधिक हुई और गिरिजाने मुनीश्वरों के समान अपने को बनाया और वनमें जाकर शिवके सिवाय सबको भुलादिया और फिर तपके लिये शृङ्गतीर्थ को गई जो उस समय से गौरीशिखर के नामसे प्रसिद्ध है और सबलोग उस स्थान को प्रणाम करते हैं वह पर्वत उत्तम तपस्थल है और वहां नाना प्रकारके वृक्ष और फल हैं और सिद्धपीठ है गिरिजाने एक तप का स्थान नियत किया और वहां बैठ अपना कार्य करने लगी और चौंसठ वर्षपर्यन्त शिर नीचे किये एकही आसनसे बैठीरही उष्णकालमें अग्नि तापकर और वर्षा में खुले मैदानमें रहकर और शीतकाल में जलके बीच बैठ महा-उग्र तप किया जब ऐसे उग्रतपसे भी फल न पाया तब उससे भी महा-कठिन तपमें मन लगाया अर्थात् सहस्रवर्ष पर्यन्त वृक्षोंके मूल और पत्र खाकर रही फिर एक वर्षतक केवल हरी घास और शाक आदि खाया फिर थोड़े समय तक पवनही भक्षण की और कुछ समय तक जलमात्र पीकर कालक्षेप किया जब ऐसे तपसे भी सिद्ध न हुई तो उससे भी कठिन तप किया पर ऐसे ऐसे कठिनतपोंके करने से भी उस का मनोरथ पूरा न हुआ तब हिमाचलके घर को लौटगई और अर्घा समेत तीनकोटि पार्थिव बनाकर पूजा की और नाना प्रकार के पुष्प हर रङ्गके गिनकर शिवपर चढ़ाये और रातदिन शिवके गुण कथन और गुण श्रवण और पूजा और ध्यानके सिवाय और किसी बातसे प्रयोजन न रक्खा और इतनी शिवकी प्रीतिमें मोहित हुई कि प्राणा-याम करके अपने को आपमें लय करदिया और ब्रह्मरूप में स्थितरही ऐसे कठिन तप करने में नाना प्रकार की कठिनता सामने आई कि भूतों की सेनाने गिरिजा को चारोंओरसे घेरलिया जिनके अतिभया-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नक शब्द थे उनमें कई तो सिंह और कई हस्ती और कई भैंसा और बैल चमगादर आदि का मुख बनाये हुये गिरिजा को भय देनेलगे कइयों की एक आंख और कई अन्धे काने और कई हजारों नेत्र लगाये कई हाथों विना और कइयोंके बहुतसे कर और कई मुखरहित और कई असंख्यमुख सहित और कइयों के बहुत चरण और कई बिन पांवके थे उनके शरीर का वर्ण श्याम, रक्त, पीत, श्वेत आदि भिन्न भिन्न विचित्र प्रकारसे था और कोई नाचता कोई दौड़ता कोई उछलता कोई गाता हुआ नाना प्रकारके भयदायक रूपोंसे आपसमें लड़ते झगड़ते मरते मारते हुये दिखाई दिये कोई कोई जम्हाकर अपनी दाढ़ें दिखाता और कोई गिरिजाके निकट आकर अपनेको बहुत लम्बा बनाता कोई मार मार शब्द करता हुआ गिरिजा पर चढ़ाई करता कोई गिरिजा की माता का स्वरूप रच रो रो कहता था कि तुम्हारे पिताने तुम्हारे वियोग में खाना पीना छोड़ मरजाने की इच्छा की है इसलिये घर चलो यद्यपि भूत प्रेतोंने इस प्रकारके बहुतसे चरित्र और छल किये पर गिरिजा का ध्यान शिवमें दूनालगा और गिरिजाके तेजसे सब भूत आदि भाग गये कोई जलगया कोई पृथ्वी पर गिरपड़ा कोई डूबगया और गिरिजाके तपके स्थलकी यह दशा हुई कि कैलास पर्वतके समान होगया और वहांके वासियोंने अपने आप ऐसा ज्ञान पाया कि संसार की माया छोड़ ब्रह्मज्ञानमें दृढ़ होगये और सिंहों की यह दशा हुई कि बालकों के समान गायों के आगे खेला करते और बिल्ली चूहोंको प्यार करके लाड़ करती और मोर सांपों की पीठ खुजलाते और वह भी मोरों के शरीर से लिपटजाते थे घोड़ा और भैंसा मिलकर परस्पर प्रीति प्रकट करते यहां तक कि जिनको कुछभी किसी प्रकार का दुःख होता वह उस जगह पर जाकर रहता उस स्थान पर वैर का नामभी न था और तालाब नदी और नाले अतिउत्तमता से बहते और वृक्षोंमें फूल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और फल खिलेहुये थे निदान वहां किसी वस्तु की कमी न थी और तोता मैना आदि पक्षी मधुरशब्द से प्रति समय बोलते निदान उसी स्थान सब ऋद्धि सिद्धि इकट्ठी हुई ऐसा तप गिरिजा का प्रसिद्ध हुआ और हम और विष्णु और इन्द्र और सब देवता आदि वहां पर पहुँचे और देखा कि गिरिजा सिद्धिरूपा हो बैठी है सबने प्रणाम किया इन्द्र ने देवतों से कहा कि गिरिजा का तप सबसे श्रेष्ठ है इस प्रकार का तप किसीने नहीं किया गिरिजाको धन्य है और इसके माता पिता और नगर को भी धन्य है और हमको धन्य है कि गिरिजा के तपको देखा फिर सबलोग शिवके निकट गये पहिले कैलास पर्वत को देखा जिस में अति उत्तम सुन्दर वन मानों छहों ऋतु स्वरूप धारण किये वर्तमान हैं गङ्गाजी की धारा बहती वायु मन्द २ सुगन्धित चलती वहां किसी को भी दुःख न था कहीं मुनिलोग ध्यान करते कहीं सिद्ध तप में लगे कहीं किन्नर गाना गाते ऐसा आनन्द कैलास में देखते हुये शिवके निकट पहुँचे और शिवजी को योगमें स्थित शरीर धारण किये दर्शन किया शिवका स्वरूप देख प्रेमने इतना बल किया जिसका वर्णन नहीं करसक्के जिनके चन्द्रमा भालपर विराजमान शीश पर गङ्गाजी की धारा बहरही माथेपर त्रिपुण्ड्रलगाये हुये सांपों को कानों में पहिने नेत्र लाल २ जिनके देखने से संसार भरके दुःख नाश को प्राप्त हों इस प्रकार का सुन्दरस्वरूप देख हमने उनकी स्तुति की ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

देवगण बोले कि हे शिव ! तुम्हारी बड़ाई और तेज जो असंख्य है उसको कहकर हम पार नहीं पासक्के जिसको नारद भी कहकर आश्चर्य में होजाते हैं तुमने कृपा करके शबरी को मुक्त कर दिया और सुमनी को भी मोक्ष दिया जो महाव्यभिचारिणी थी तुम्हारी सेवा करके बहुतसे पापी तुम्हारे लोकमें आगये हैं जिनको कोई दुःख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं है जब तक कोई तुम्हारे तपमें दृढ़ नहीं होता तबतक उसको संसारसागर से मुक्ति प्राप्त नहीं होती तुम्हीं परब्रह्म परमेश्वर सबके ईश्वर हो उत्पन्न करना पालना मारना सब तुम्हारे वशमें है तुम्हीं हमारे स्वामी हो और तुम्हीं जड़ और चैतन्य की बात जानते हो संसार में जहां तुमसे भिन्न कोई पदार्थ नहीं वह एक वृक्ष के समान है जिसका एक अंकुर दो फल तीन मूल और चार रस हैं तुम्हीं आकाश पृथ्वी दूर और निकट हो मनुष्य तुमको मायाके कारण नहीं जानते और जो तुम्हारे भक्त हैं वे तो सबको शिव जानते हैं तुमसे भिन्न किसी वस्तुको नहीं मानते तुम निर्गुण हो पर कृपा करके सगुणभी होजाते हो और भक्तों के दुःख दूर करने को अवतार लेतेहो कोई २ तुम्हारे चरणों की नाव बनाकर संसारसागर से पार लगगये हैं वह बुद्धिमान् जो अहंकार से हीन हैं वे धीरे २ आपतक पहुँच जाते हैं और आपकी भक्ति विना आवागमन बना रहता है पर आपके भक्तों को यह दुःख नहीं है वे निर्भय रहाकरते हैं और तुम्हारे चरणों की सेवा करके परम पद प्राप्त करते हैं उत्पत्ति के समय ब्रह्मा और पालने के समय विष्णु और प्रलयके समय हर होजाते हो यह तीनों तुम्हीं अकेले हो और तुम वेद कर्म तप जप और योग ध्यानसे मिलते हो जो तुम सगुणरूप धारण न करते तो हमको सुगमरीति से क्योंकर मुक्ति प्राप्त होती हम आपके नाम और गुण वर्णन करनेके योग्य नहीं न हमको ऐसी बुद्धि है तुम्हारी अपरम्पार महिमा है आप हमारे कार्य पूरेकरें तुम देवोंके देव सर्व सृष्टिके इन्द्र भक्तों को शुभमार्गमें स्थित करनेवाले सर्व सृष्टिके कारणरूप अविनाशी अनादि अप्रमेय और तुम्हारा शरीरमात्र विद्या और बुद्धिसे पूर्ण है ऐसा तुम्हारा शुभ शरीर भक्तोंके मनोंमें स्थित रहता है और भक्तलोग कुसंगति और कामको छोड़कर तुम्हारे तपमें प्रसन्न रहा करते हैं तुम पूर्णब्रह्म कालके भी काल हर्षके समूह दुःख रहित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और संसार पर अति कृपालु हो और तुम इच्छा रहित अद्वितीय निरीह और परब्रह्म हो यद्यपि तुम तीनों गुणों से परे हो पर तोभी संसार की भलाई के लिये अवतार लेते हो तुमने सबसे पहिले शरीर धारण किया सो यह शरीर और तुम्हारा अवतार केवल हमारे मनोरथ पूर्ण करनेको है इस तुम्हारे अवतार की महिमा असंख्य और अप्रमेय है हमलोगों का मन जो केवल प्रसन्नता के विचार में लगारहता है वह तुमको क्या जानसक्ता है तुम्हारे जाननेकी बुद्धि संसार को नहीं है जो लोग आपके गुण मन लगाकर सुनते हैं वही तुमको जीतते हैं और कोई तुमको नहीं पाता बहुत लोग धर्ममार्ग छोड़ केवल तुम से प्रीति रखते हैं और अपनी भक्ति तुमपर दृढ़ा कर अति सुगमतासे तुम्हें पाते हैं और संसार में तुम्हारे भक्त सदा तुम्हारी कथा सुनते हैं वे सबसे अधिक तुमको प्रिय हैं तुम उन्हींके सामने प्रकट होते हो तुम देवता, मनुष्य, मुनि, पशु और पक्षी आदि समस्तजीवों में अवतार लेकर अपने भक्तोंके कार्य बनाते हो यह स्तुतिकह हम विष्णु और सब देवता चुप होगये और शिव प्रसन्न होकर बोले कि हे विष्णु! और ब्रह्मा और सब देवता यह तुम्हारी सेना कहां आई है तुम बहुत चिन्तित भासते हो सर्व वृत्तान्त वर्णन करो विष्णु और हमने विनय की कि हमारे धन्यभाग्य हैं कि आपकी कृपादृष्टि हम पर हुई संसार में वे लोग शुभ हैं जिन पर आपकी अनुग्रह की दृष्टि है हे शिव! तुम्हारी महिमा विचित्र है आप हर शरीर में वर्त्तमान हैं आप कानों विना सुनते हैं बिन वाणी वेद प्रकट करते हैं बिन त्वचा स्पर्श जानते हैं जिह्वा विना स्वाद जानते हैं पांव विना तीनों लोककी यात्रा करते हैं आपमें असंख्य कला हैं और आप अपने भक्तों को दुःखी देखकर बहुत आनन्द देते हैं यह कह हम और विष्णु भी चुप होगये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! इतनी बिनती और स्तुति सुन शिवजीने कहा कि जिस मनोरथ के लिये तुम सब हमारे पास आये हो उसको वर्णन करो हे ब्रह्माजी ! और विष्णु तुम देवताओं के स्वामी हो विष्णु और हमने विनय की कि तुम सब जानते हो तुमतो बैठे २ तीनोंलोक को देखते हो तुम्हारी माया संसारभर को वश्य किये हुये है सो तुम हमसे मूर्खोंके सदृश क्या पूछते हो पर आपने आज्ञा दी है तो हम विनय करते हैं कि नारदसे उपदेश पाकर गिरिजा महाकठिन तप कररही है ऐसे परिश्रम से कठिन तप आजतक किसीने नहीं किया इसलिये आपको उचित है कि वहां चलकर गिरिजा को वरदान दीजिये क्योंकि देवताओं की बड़ी इच्छा है कि तुम्हारा बिवाह गिरिजा के साथ देखें और आपकी बरात में चलें शिवने हँसकर कहा कि मूर्खलोग बिवाह करके संसारजाल में फँसते हैं यह काम बुद्धिमानों का नहीं यद्यपि वेदने इस विषय में बहुतसी बातें वर्णन की हैं पर बुरी स्त्रियों की संगति के समान और कोई भ्रष्ट कर्म नहीं जो तुम्हारा कहना नहीं करते तो वेद और धर्मशास्त्र की प्रतिष्ठा कम होती है हम तपके वश में होकर तुम्हारा कहा मानते हैं चाहे हमको बहुत दुःख मिले जब राजा कामरूपने इच्छा की तब हमने दैत्य को मारकर आनन्द दिया और गौतम के सर्व दुःख दूर किये और कृपा करके हलाहल विष पीलिया क्योंकि सब देवता जलेजाते थे और रामचन्द्र के लिये हनुमान् का अवतार धारण कर उनके सेवक बन कर नाना प्रकार के दुःख सहे और जहां २ हमारे भक्तों पर कोई कष्ट पड़ा हमने तुरन्त उनको आनन्द दिया है और हमने ग्रहपति नाम अवतार लेकर विश्वामित्र मुनिके दुःख को दूर किया इसी तरह तुम्हारे लिये भी हम तत्पर हैं जो तुम्हारी इच्छा है वह हम करेंगे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम गिरिजा के साथ विवाह करेंगे तुम सब बिदा होकर अपने २ घरों को जाओ यह सुन हम सब बहुत प्रसन्न हुये और शिव से बिदा हुये और उनके गुण कहते सुनते गातेहुये घरोंको आये और शिवने हम सब को बिदाकर सप्तऋषि का स्मरण किया कि वे आये और स्तुति कर नीचे शिर किये खड़ेहुये और कहा कि जो आज्ञा हो वह हम पालन करें शिवजी बोले कि गिरिजा बड़ा कठिन तप कररही है तुम वहां जाकर गिरिजा को छलो और उसके प्रेम की परीक्षा करो वे उसी समय गिरिजा के पास गये और देखा कि गिरिजा तपरूप बन कर बैठी है उन्होंने अतिचतुरता और बाचालुतापूर्वक कहा कि तुम क्यों ऐसा तप करती हो तुम किसका किस कामके लिये ध्यान करती हो सत्य २ हमसे कहना क्योंकि संसारभर सत्यता पर स्थित है पार्वतीने उत्तर दिया कि यद्यपि मुझे अपने मनोरथ के कहनेमें लज्जा आती है और निश्चय यह कि तुम उसे सुनकर हँसोगे पर मैं कहती हूं मन देकर सुनो हम देवता और मुनियोंके वचनों को सत्य जान यह तप करती हैं इसी कारण कि शिवके साथ हमारा विवाह हो और यह वही बात है कि जैसे किसी को पङ्खों विना अन्तरिक्षमें उड़नेकी इच्छा हो यह बात सुन मुनि बोले कि तुम नारदके चरित्र नहीं जानती हो उनकी बातोंसे तो नगर गांव उड़जाते हैं अब हम एक इतिहास कहते हैं उसको ध्यानधर सुनना कि ब्रह्माजीके पुत्र दक्षने विवाह कर दश सहस्र पुत्र उपजाये वे विष्णुका तप करनेलगे कि नारद ने तुरन्त पहुँच कर उनको उपदेश किया तो वह दक्षके पुत्र फिर घर नहीं आये और दक्षने यह सुनकर और उतने पुत्र उपजाये वह भी नारद का उपदेश पाकर जहां उनके भाई पहिले जा चुके थे चलेगये सिवाय इसके नारदने चित्रकेतु का घर तो नष्टही करदिया और कनककशिपु का बिगाड़ करदिया और जिनको नारदने अपने मत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का उपदेश किया वह द्वार २ भीख मांगते हैं हम नारद को अच्छी तरह पर जानते हैं उनका मन तो मलिन है परन्तु प्रकट में श्वेतवस्त्र पहिने रहते हैं वह और हम बहुत दिनों एकसाथ रहे हैं इससे उनके बहुत दोष हम जानते हैं क्योंकि सहवासियों का हाल अच्छी तरह मालूम होसक्ता है सो तुमभी नारदके कहने पर भूलगई हो इसके सिवाय जब शिवके लिये तुम यह तप करती हो वह शिव तो सदा उदास रहा करते हैं वे निगुर्ण अशुभ निर्लज्ज और बुरेवस्त्र पहिनने वाले हैं उनके कुल परिवार और नौकर चाकर कुछ नहीं उसी ठगने तुमको इतना मोहित किया है कि तुम्हारी बुद्धि नष्ट होगई है ऐसा पति पाकर तुमको क्या आनन्द मिलेगा इस बातको भली भांति अपने मनमें विचारो पहिले शिवने दक्ष की पुत्रीके साथ विवाह करके कुछ दिनभी निर्वाह न किया और दोष लगाकर उसको छोड़दिया और आप अपने ध्यान में लगेरहकर निश्चिन्त रहनेलगे जो केवल एकान्त में रहता है उसके यहां स्त्री का क्या निर्वाह होगा इस लिये अबभी कुछ नहीं गया अपनी हठ छोड़ घर चली जाओ हां विष्णु तुम्हारे विवाह के योग्य हैं जो स्वर्ग के सब देवताओं के स्वामी हैं उनको लाकर तुमसे मिलादेंगे पार्वतीने उत्तर दिया कि वास्तव में यह सब सत्य है पर हमारे हठमें कुछ न्यूनता न होगी अपना वही राग गावेंगी जो आजतक गाती चली आई हैं क्योंकि हम पहाड़से उपजी हैं इससे हममें जड़त्व विशेष है और हम नारद के वचन का त्याग न करेंगी हे मुनिश्रेष्ठ! जो अपने गुरुके वचन को सत्य मानते हैं वह सदा प्रसन्न रहकर आवागमन से छुट्टी पाते हैं और जो अपने गुरुके वचन को झूठ समझते हैं उनको ईश्वर नहीं मिलता चाहे वे कल्पभर भटकते फिरें हमने इस बातको माना कि विष्णुमें सब गुण हैं और शिवमें सब अवगुण भरेहुये हैं पर वे निर्गुण हैं और उन्होंने केवल अपने भक्तोंके लिये शरीर धारा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है उनको अपनी शक्ति और ऐश्वर्य दिखाना अङ्गीकार नहीं वह परम-हंसी गतिमें हैं और अपने को लोक में अवधूतों के समान दिखाते हैं और वस्त्र और आभूषण पहिनना मनुष्यों का काम है वे तीनों गुणोंसे भी श्रेष्ठ और बड़े हैं और धर्म और कुलकी बातें सब मायाके कारण प्रकट होती हैं सो इनको तो शिव स्वीकार नहीं करते क्योंकि वह ऐसेही हैं हमने शिवको अपने गुरु की कृपासे अच्छी तरह प-हिंचाना है मैं निश्चय करके इस बात को कहती हूं कि जो शिव हम से विवाह न करेंगे तो हम जन्मभर विवाह रहित रहेंगी चाहे सूर्य पूर्वसे पश्चिम में उदय हों और सुमेरु पर्वत अपने स्थानसे दूसरे स्थान पर चलाजावे चन्द्रमा में उष्णता उपजे अग्नि शीतल होजावे पर मैं अपनी हठ न छोड़ूंगी हमारे झगड़े में तुमको न पड़ना चाहिये यह कह गिरिजाने सप्तऋषि को प्रणाम किया और चुप होगई और पूर्ववत् शिवके ध्यानमें मग्न होगई ऐसा निश्चय गिरिजा का देखकर सप्त-ऋषि जय २ कह उठे और मनमें अशीषें देनेलगे और कहा कि तुमको शिव अवश्य मिलेंगे और धन्य धन्य कहकर प्रणाम किया और शिव-लोक को चलेगये और शिवके पास पहुँचकर कहा कि हमने गिरिजा की अच्छीतरह पर परीक्षा की और अपनी बुद्धि और वाग्जाल से बहुत छला पर उसने कुछभी धोखा न खाया इस लिये हे शिव ! आप को उचित है कि वहां चलकर पार्वती को वरदान कृपा कीजिये यह कह सप्तऋषि चलेगये ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

इतना सुन नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि जब सप्तऋषि बिदा हो-कर अपने घर चलेगये तो फिर शिवजी ने क्या किया हमको सुना दीजिये ब्रह्माजी बोले कि सप्तऋषि के चलेजाने उपरान्त शिवजी ने ब्राह्मण का रूप धारण किया और ब्रह्मचारियों के समान दण्ड लेकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माथे में त्रिपुण्ड्र लगाया और रुद्राक्ष की माला हृदय और हाथ में पहिनी और जहां पार्वती तप करती थीं वहां ऐसा स्वरूप बनाकर गये गिरिजा ने प्रणामकर कुशल पूछी और कहा कि तुम कौन हो कहां आये हो यह सुन ब्राह्मण ने ठंढी श्वास ले कहा कि हम ब्रह्मचारियों की रीति किये हुये सृष्टि के उपकार के निमित्त इधर उधर भ्रमण करते हैं तुमने हमको धर्मवान् जानकर प्रतिष्ठा और आदर किया इससे हमको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ है अब हम तुम से पूछते हैं तुम ठीक२ हम से बतावो कि तुम कौन हो और किसकी कन्या और क्यों यहां आई हो श्रीजगदम्बा ने विचारपूर्वक एक अपनी सखी से सैन की उसने आदि से अन्ततक सब वृत्तान्त कि जिस प्रकार नारदजी ने आकर भविष्यवाणी कही थी कि गिरिजा का विवाह शिव से होगा सब कह सुनाया तबतो ब्राह्मण ने पछिता कर कहा कि हे गिरिजे! हमसे यह क्या हँसी करती हो तुम क्यों आप हमको उत्तर नहीं देतीं गिरिजा बोली कि जो कुछ हमारी सखी ने आपसे कहा है वह सब ठीक है मैं यह चाहतीहूं कि मेरा विवाह शिव के साथ हो और चाहे मेरा यह मनोरथ अतिकठिन किन्तु दुर्लभ है पर मुझको निश्चय है कि शिव हमारा मनोरथ पूरा करेंगे और मुझे नारदजी के वचन पर पूरा विश्वास है तबतो ब्राह्मणने वाग्जालपूर्वक कहा कि हे गिरिजे! जो चाहो वह करो हमको क्या प्रयोजन है पर जो कि तुमने आदर से मेरा सन्मान किया इस लिये विन कहे मुझसे रहा नहीं जाता इसके सिवाय जान बूझकर कोई ठीक बातका छिपाना बड़ा पाप है ह गिरिजे! तुम हिमाचल की कन्या होकर इतनी मूर्ख होगई हो अपने ऐसे शरीर को जो तपरूप हो रहाहै क्यों राख किये डालती हो और अपनी सुन्दरता को मिटाती हो तुम राजा की कन्या होकर लौंड़ी बना चाहती हो पर भाग्य से क्या वश है तुम विष्णु और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रह्मा को छोड़कर शिवके लिये तप करती हो यह भाग्य की बात है क्या तुम्हारे लिये शिव जैसा अशुभ और अनुचितपति चाहिये शिव क्या विष्णु और इन्द्र की बराबरी करसक्ते हैं शिव की चाल डौल संसार से न्यारी है देखो विष्णु आदि सब गुणवान् कुलवान् और प्रतिष्ठित हैं शिव में इन बातों में से कोई बात नहीं उनके माता पिता भी तो नहीं हैं हां सांप और भस्म शरीर में लगे रहते हैं वे तीनोंलोक से जुदा और उनका कोई बान्धवादिभी नहीं वे बैल पर सवार हो नाना प्रकार के विष और भंगको खाते हैं और शृङ्गी और डमरू हाथ में लियेहुये भूतों के साथ लीला करते हैं वे केवल अकेले वन में उदास बैठे रहते हैं और उन्होंने कामदेव को जलादिया जो स्त्रियों को प्रिय है जो अच्छे गुण हैं वह उनमें कोई भी नहीं और नारदने भी उनके अवगुण न जानकर तुमको ऐसा छला है सिवाय इसके नारद का तो यह स्वभाव है कि सर्वसृष्टि में इसी प्रकार के उत्पात करते हैं देखो उसने दक्षप्रजापति के सब लड़के नष्ट करडाले और कनककशिपु के लड़के को कितना छला फिर चित्रकेतुका तो राज्य छुड़ादिया वह ऊपर से तो बड़ा स्वच्छ और सच्चा रहता है पर मन उसका महामलिन है प्रकट में साधू बनकर सबको दुःख दिया करता है अबभी कुछ नहीं हुआ तुम चैतन्य होकर अपना काम करो और सोनेकी जड़ाऊ अँगूठी छोड़कर कांच को क्यों ग्रहण करती हो और हाथी छोड़कर भैंसे की सवारी की क्यों इच्छा करती हो और चन्दन छोड़ नींब क्यों चाहती हो और गङ्गाजल छोड़ कुवोंकी जल की क्यों अभिलाषा करती हो और सूर्य छोड़ खद्योत की क्या लालसा रखती हो घर छोड़ वन क्यों चाहती हो ऐसी बातें कहकर शिव गिरिजा के स्वरूप की प्रशंसा करनेलगे कि देखो तुम्हारे मुखकमल पर असंख्य चन्द्रमा की कान्ति छारही है तुम्हारा मुख चन्द्र कैसा सुन्दर मानों सुन्दरता का समूह है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारे नेत्रों की प्रशंसा नहीं होसक्ती तुम्हारे ओष्ठ क्या उत्तम कुँदुरू फल से लाल हैं जिनसे मानों मधु टपकता है इसी प्रकार भिन्न २ हर एक अङ्गकी प्रशंसा की और कहा कि ऐसे सुन्दर शरीर को क्यों नष्ट करती हो तुम्हारे ब्याहके योग्य केवल विष्णु हैं उनसे विवाह करो कहां तो मृदङ्ग का शब्द और कहां शृङ्गी और डमरू का अप्रिय शब्द हम तुमसे कहते हैं कि यह बात बहुत ही अनुचित है तुम अबभी चेत करो इस प्रकार छल की बातें कहकर ब्राह्मण तो खेदयुक्त और रूखे हो अलग बैठगये और गिरिजाने शिवनिन्दा सुन मन में कोपित हो बार २ मन में खेद किया और कहा कि ब्राह्मण जान मैंने यह धोखा खाया जो मैं पहिले से इस ब्राह्मण को इतना दुष्ट और शिव के विरुद्ध जानती तो मैं चुप होरहती इसने वेदके विरुद्ध शिवकी इतनी निन्दा की जो इसको अब मैं उत्तर नहीं देती हूं तो शिवकी निन्दा के सुनने का दोष मुझपर होगा यह विचार गिरिजाने उत्तर दिया कि हे ब्राह्मण ! तू हमको क्या धोखा देता है तूने तो वेद के विरुद्ध शिव की अतिनिन्दा की है तुझे ऐसा उचित न था तू ब्राह्मण है इसलिये वध दण्ड अनुचित है अब मैं वेद, पुराण, श्रुति, स्मृति के वचनों के अनुकूल वर्णन करती हूं कि तूने शिवको नहीं जाना इसीसे तेरा वचन वेद के विरुद्ध है कदाचित् तू शिवको जानता तो तेरा वचन विपरीत न होता शिवकी अशुभ सामग्री सब शुभही है कोई देवता शिवसे श्रेष्ठ नहीं है वे माया से परे भगवान् हैं शिव का कोई कुल परिवार नहीं है वे भक्ति के वश में होकर सब बातें धारण करते हैं वे सब विद्यानिधि पूर्ण ब्रह्म अलख जगदीश हैं उन्हों ने अपने श्वास-मार्ग से ब्रह्मा को वेद कृपा किये वही शिव सब के आदि मध्य और अन्त हैं उनका तेज और प्रताप किसी ने नहीं जाना जिससे प्रकृति ने उत्तम शरीर पाया क्या उसको शक्ति की प्रीति से प्रयोजन नहीं

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है शिव स्वाधीन हैं और उनका मार्ग तीनों लोक से विरुद्ध है वही अपने भक्तों को तीनों लोक देते हैं उनकी सेवासे मनुष्य मृत्यु को जीतते हैं ऐसे शिव की निन्दा करने से मनुष्य बड़ा दुःख पाते हैं जो संसार में शिवकी निन्दा करनेवाले हैं उनको स्वप्नमें भी आनन्द नहीं मिलता जो दुष्ट और अनाचारी ब्राह्मण शिव के विरुद्ध हैं वह करोड़ों जन्मपर्यन्त दरिद्री रहा करते हैं तुमने शिव की निन्दा करके अपने लिये नरक का मार्ग खोला तुम्हारे आदर करनेसे मुझे कुछ फल न मिला बरन मेरे सर्व पुण्य क्षीणहोगये अब वेग अपने घर सिधारो क्योंकि मेरा मन अब शिव में लगरहाहै यह सुन ब्राह्मण हँसा और मन में गिरिजा की बड़ी प्रशंसा करके चाहा कि और कुछ कहें गिरिजा ने ब्राह्मण की बात समझ एक अपनी सहेली से कहा कि अब इस जगह को छोड़ और कहीं चलें क्योंकि यहां रहने से बड़ा दुःख होता है यह ब्राह्मण शिवनिन्दा करके हमको बड़ा दुःख देता है शिव की निन्दा करनेवाले को आंख से न देखा चाहिये बरन सुनने से महापाप होता है यद्यपि पापों का बदला नियत है पर शिवनिन्दा का पाप कभी निवृत्त नहीं होता इस ब्राह्मण को देखकर हम और अधिक अपवित्र होंगी और हमारे सब पुण्य नष्ट होजावेंगे जो शिवनिन्दा करनेवाले को आंख से देख ले तो तुरन्त स्नान करडाले और जो अपना वश चले तो उसकी जिह्वा को काटडाले नहीं तो दोनों कान बन्दकर वहां से उठजाना चाहिये इस बातको वेद कहते हैं अब विलम्ब मत करो उठो कि वन में चलकर रहें हमको एक क्षण भर भी वर्षसमान बीतता है हम शिवनिन्दा नहीं सहिसक्ती हैं वहां जाकर तप करेंगी यदि हमारा पूर्ण निश्चय है तो शिव अवश्य प्रसन्न होंगे किसी के धोखा देने से क्या होता है शिव तो केवल प्रेम से प्रसन्न होते हैं और मैंने गुरु से सुना है कि तप करने में इसी प्रकार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के सैकड़ों विघ्न सामने आते हैं जो धोखा खाजाते हैं वे मूर्ख हैं और फल नहीं पाते जो दृढ़तापूर्वक धोखे से बचे रहते हैं वेही सिद्धि पाते हैं शिव अपने भक्तों के पालनकर्ता हैं वे अपने भक्तों को हर प्रकार आनन्द देते हैं वे पहिले तो अपने भक्तों की परीक्षा करते हैं फिर प्रसन्न होजाते हैं यह कह गिरिजा अपनी सखियों समेत वहां से चलीगई ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! इसप्रकार गिरिजाका हठ और प्रेम देखकर शिव प्रसन्न हुये और अपना मुख्यस्वरूप जैसा नारदजीने कहा था धारण किया कि शिर पर जटा और गङ्गा की धारा और चन्द्रमा विराजमान भालपर त्रिपुण्ड्र लगाये हुये कानों में कुण्डल पहिने गोल गोल सुडौल कपोल तीनों नेत्र सूर्य चन्द्र अग्नि ललाई लिये पर एक आंख मूंदे हुये और कण्ठमें हलाहल विष की श्यामता सुशोभित नाक और ओष्ठ महासुन्दर हाथ पांवकी उँगलियां लाल और इसी प्रकार हरएक अङ्ग प्रत्यङ्ग अतिसुन्दर और सुभग जैसा कि गिरिजा ध्यान करती थी उसी प्रकार का स्वरूप धारणकर शिवने दर्शन दिये और कहा कि तुमने हमारा इतना तप किया है कि इतना आजतक किसीने नहीं किया हमारे चरणों की सेवा करके देवता मुनि आदि अति प्रसन्न हुये सो तुम वही आदिशक्ति हो तुम को ग्रहण करके हमभी लोकमें शुभ होते हैं हमारा तप अति दृढ़ है वह भी तुम्हारे तपके कारण हिलगया मैंने पहिले भूतों को फिर सप्तऋषि को भेजा कि तुम्हारे तप की दृढ़ता की कीर्ति संसार भरमें प्रसिद्ध हो तुम कुछ क्रोध मत करो क्योंकि यह सब बातें मैंने तुमसे प्रकट की अवस्थासे की हैं जैसा कि कुलाल घटके सँवारनेको ऊपरसे कैसा मार खिलाता है तुमतो हमारी अनादिशक्ति हो हमने संसारी रीतिके कारण तुम्हारी भक्ति को देखा तुम्हारे विना संसारमें कोई वस्तु नहीं है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारी सेवा सृष्टिभर करता है तुम संसार भर की माता और सदा की देवी हो जिसके चरणकमलों की सेवा देवता आदि सब करते हैं तुम उत्पत्ति पालन और प्रलयके निमित्त तीन गुण धारण करती हो तुमतो तीनों लोककी आनन्ददायी हो तुम्हारे रूप गुण प्रभाव असंख्य हैं तुम्हारे अंशसे लक्ष्मी वाणी ब्रह्माणी और विष्णु की स्त्रियां हैं तुमने मुझे सगुण अवतार लेते हुये जानकर गिरिजा का अवतार लिया है तुम कभी जुदा नहीं हो हम तुम सदा संसार के निमित्त चरित्र रचते हैं जैसा कि शब्द और अर्थ में अन्तर है वैसाही हमारे और तुम्हारे बीचमें अन्तर है केवल संसारीजीवों की दृष्टि में हम तुम दो शरीर रखते हैं पर वास्तवमें एक हैं यह समझकर क्रोध शान्त करो हमारे तुम्हारे चरित्र वेद भी नहीं जानते तुम्हारा तप पूरा होगया है हम सच कहते हैं कि हम तुम्हारे सेवक हैं इस समय हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं जो इच्छा हो वह मांगो यह कह शिव चुप होगये गिरिजाने एकबेर लज्जासे शिव का रूप देख उसको मनमें रक्खा और हाथ जोड़ विनती की कि हम आपकी शरणमें संसारभरके नाते तोड़कर आई हैं जो आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझको मेरी इच्छा के अनुसार वर दीजिये और हमारे पति हूजिये और संसार की रीति के अनुसार हमारे साथ बिवाह कीजिये और हमारे पापों को क्षमा कीजिये अब आप हमारे पितासे जाकर बिनती करें और अपने संसारी चरित्र को दिखावें यह कह गिरिजा चुप होगई शिवने कहा कि जो वरदान तुमने मांगा वह हमको भाया और हम उसे अङ्गीकार करते हैं यह कह शिव अन्तर्धान होगये तब देवताओंने जय २ का शब्द किया और आकाशसे फूलों की वर्षा हुई और विष्णु और हम आदि गिरिजा के चरणों पर आकर गिर पड़े और हर्ष के कारण गिरिजा की स्तुति करनेलगे जो कोई इस स्तुति को पढ़ेगा वह सब मनोरथ पावेगा यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्तुति सुन गिरिजाने सब देवताओंसे कहा कि तुम सब अपने २ घर जाकर प्रसन्न रहो देवताओं के सब काम पूरे होंगे क्योंकि हमने बड़ा तप किया है शिवने हमको वरदान दिया है कि कोई काम तुम्हारा न रहजावेगा देवता तो यह सब आज्ञा लेकर चले गये और गिरिजा घर पहुँची तब जो हर्ष कि हिमाचल और मैना को प्राप्त हुआ उसको नहीं कहसक्के निदान हिमाचलने हर प्रकारसे आनन्द मङ्गल मनाया और असंख्य द्रव्य दान दिया यद्यपि गिरिजाने वरदान का वृत्तान्त किसीसे न कहा पर वह सब लोगों पर प्रसिद्ध होगया और सखियों से सबने सुना और सबने मङ्गल मनाया ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! कोई मनुष्य चाहे करोड़वर्ष पर्यन्त तप कियाकरे पर सदाशिव का जानना महाकठिन है वे शरीर धारण कर नाना प्रकार की लीला रचते हैं और अपने भक्तों के काम संसारी जीवों के समान प्रकट होकर पूरे करते हैं हे नारद ! चैतन्य होकर सुनो जब शिव गिरिजा को वरदान देकर चलेगये तो वहां आपने भिक्षुक का रूप धारण किया और नाचने और गाने में पूर्ण अभ्यास करके एकसहस्र गतिके ज्ञाता बनगये और अपनी बाईं ओर शृङ्गी और दाहिनी ओर डमरू लिया और शरीर भर में श्वेतभस्म लगाकर लाल वस्त्र पहिने और वृद्धावस्था धारणकर बुड्ढोंके समान बदन कांपता था पर वाणी अतिमधुर थी निदान ऐसे अनूपरूप और वस्त्राभरणोंसे अलंकृत होकर श्रीसदाशिवजी हिमाचल पर्वत पर गये और इस प्रकार के नृत्य गान नट कर्तब मधुरस्वर प्रिय शृङ्गी और डमरूनादसे नगर-निवासियों को रिझाया कि चारोंओर से ठट्ठके ठट्ठ पर्वतनिवासी इकट्ठे होगये यहां तक कि कोई बूढ़ा बालक स्त्री पुरुष घरों में न रहा जो वह मधुरशब्द सुन घर से न निकला और कोई भी शिवके उत्तमोत्तम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताल और प्रियस्वर समेत राग से मोहित और विह्वल होकर अधीर होने से न बचा यहांतक कि मैना मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी और गिरिजा भी उस आनन्दस्वर में मग्न होगई और शिव की मूर्ति मन में पाकर प्रसन्न हुई और मन में शिव की स्तुति की तब तो शिव कृपालु होकर बैठगये तब मैना चैतन्य हुई और योगी से अति प्रसन्न होकर हीरा, पन्ना, मोती, मणि आदि से थाल भरकर देने लगी पर उस योगी ने न लेकर गिरिजा को मांगा और फिर नाचने को खड़ा होगया पर मैनाने अप्रसन्न होकर बहुत भय दिलाया और इच्छा की कि उस योगी को निकाल दे इस इच्छा को दृढ़कर मैना ने उच्चस्वर से कहा कि क्या कोई यहां नहीं है कि जो इस योगी को मारकर बाहर निकाल दे यह मूर्ख हमारी कन्या की इच्छा रखता है यह कैसी ढिठाई है इतने में हिमाचल पहुँचा और सब वृत्तान्त सुन क्रोधित हुआ और आज्ञा दी कि इस योगी को यहां से निकालदो हिमाचलके नौकर निकालनेपर तत्पर हुये पर उस योगीके प्रतापसे उसके निकट न जासके हिमाचलने विचारा कि यह कौन मनुष्य है जब विचारपूर्वक योगीको देखा तो उसको उनका चतुर्भुजी स्वरूप शिरपर मुकुट कानोंमें कुण्डल लटकते हुये पीले वस्त्र पहने और जो फूल कि विष्णुपर चढ़ाये जाते हैं उनसे भूषित देखा फिर उसी समय हिमाचलने द्विभुजी मूर्ति इस तरह पर देखी कि अपने को गोपोंके समान भूषित किये मुरली करपङ्कज में लिये चन्द्रमा के समान उत्तम किशोर अवस्था को प्राप्त जिसको देख मनको प्रसन्नता होती थी फिर पहिले हमारे रूप को रक्तवर्ण वेद पढ़ते फिर सूर्य को फिर अग्नि को फिर गणपति को जो तुण्ड किये लम्बोदर हैं देखा कुछ समय में उसने अष्टभुजी भवानीके स्वरूप को अवलोकन किया फिर शिवने अपना मुख्यस्वरूप इस तरह हिमाचल को दिखाया कि शीशपर जटा और गङ्गा की धारा और माथे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर चन्द्रमा और त्रिपुण्ड्र और चन्द्रमाके समान सुन्दर मुख तीनों नेत्र ललाई लिये कीर समान नासिका रक्त ओष्ठ कण्ठमें तीन रेखा श्यामता लिये गलेमें हार पहिने चार भुजा जिनमें शूल कपाल अभयादि नाना प्रकारके वस्त्राभूषणों से अलंकृत उदर बहुत नरम जिसमें त्रिबली पड़ी हुई उत्तमोत्तम कटि और पगतली रक्त कमलवत् लाल नितम्ब गोल नख रक्त ऐसा मनोहर विचित्र स्वरूप देख हिमाचलने अति आश्चर्य में होकर जाना कि सदाशिव हैं जब सदाशिवने जाना कि हिमाचलने हमको पहिचाना तो तुरन्त उसी योगी का स्वरूप धारण किया और फिर हिमाचल से गिरिजा की इच्छा की हिमाचलने तुरन्त प्रणामकर मानलिया योगी तो अन्तर्धान होगये और मैना और हिमाचल चैतन्य होकर शिव को सबसे श्रेष्ठ जाना और देवताओंने अपने मनोंमें इस बातको ठहराया कि शिव गिरिजा का विवाह हमको व संसारभर को और उसके माता पिता को शुभ होगा इस इच्छासे उनसे सबोंने मिलकर हिमाचल के गुरुके घरमें जाकर प्रणाम किया और कहा कि इस समय शिवके चरित्रसे मैना और हिमाचलने शिव को सबसे बड़ा समझ लिया है तुम जाकर ऐसी युक्ति करो जिसमें शिव गिरिजा का विवाह होजावे गुरु बहुत क्रोधित होकर दोनों हाथ कानोंमें रखकर कहनेलगा कि हे देवतो! तुम बड़े मतलबी हो तुमको अन्त का कुछ हाल मालूम नहीं है तुम शिष्य होकर गुरु को संथा देते हो तुम हमारी अच्छी सेवा करते हो जिसमें हमको नरक प्राप्त हो जो मनुष्य विष्णु, महादेव, ब्रह्मादि देवता व ब्राह्मण व अपने गुरु पतिव्रता स्त्री योगी सेवक अपने पति गो तुलसी पुराण गङ्गा वेदमाता गायत्री वेद और दान की निन्दा करता है वह निस्सन्देह नरक में जाकर असंख्य कल्पतक दुःख भोगता है जो तुमको यह कार्य आवश्यक है तो तुमको उचित है कि ब्रह्मा के पास जाकर उनसे सहायता मांगो और अपनी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुद्धि के अनुसार तुम उपाय करो पर मनमें शिव के चरणों का ध्यान रक्खो हमको निश्चय है कि ब्रह्मा अरुन्धती और सप्तऋषियों के समेत जाकर हिमाचल को समझावेंगे हमको अपने तपोबल से पूरा विश्वास है कि शिवके सिवाय और कोई गिरिजा को नहीं पावेगा यह कह गुरु चुप हो रहे ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! गुरु की आज्ञासे सब देवताओंने हमारे पास जाकर अपने मनोरथ को अक्षर प्रतिअक्षर कहा हमने अति अप्रसन्नतासे देवताओं को धिक्कार देकर धर्म की बातें वर्णन कीं अर्थात् हमने कहा कि तुम मुझको शिव की निन्दा कराना सिखाते हो क्या अच्छे लड़कों का यही धर्म है मुझको नरक का मार्ग बतलाते हो यही सेवा करना लड़कों को उचित है शिव की निन्दा सब को दुःख देनेवाली और अर्थ, धर्म, कामको नष्ट करनेवाली आपदा की मूल और सर्वप्रकार के आनन्द मङ्गल को उखाड़नेवाली है हम इस विषयमें कुछभी सहायता न करेंगे तुम सब मिल शिवके समीप जाकर विनय करो क्योंकि दूसरे की निन्दा दोनों लोकमें दुःख देती है और अपनी निन्दा बढ़ाती है यह बात हमसे सुन वे सब कैलास पर्वतमें जाकर शिव की अतिप्रशंसा करनेलगे और बोले कि हिमाचल आपका बड़ा भक्त है उसने तुमको परब्रह्म जानकर इच्छा की है कि अपनी कन्या आपको देकर मुक्ति प्राप्त करें इस बातको आप स्वीकार करें शिवने यह विनती देवताओं की सुनकर हँस दिया और उनको अतिप्रसन्न कर विदा किया और अतिसुन्दर शरीर धारण कर हाथ में श्वेत रत्नोंकी माला पहनी और माथे पर तिलक लगाकर गले में शालग्राम की मूर्ति बांधी और उत्तमोत्तम वस्त्र पहने हुये वैष्णवी वस्त्रों से भूषित हुये और अति चतुरता से हिमाचल के घर चले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिमाचल अपने सब परिवार समेत आदर के लिये उठ खड़ा हुआ और गिरिजाने बड़ी भक्ति से ऐसे ब्राह्मण की पूजा की और पहचाना कि यह शिव हैं ब्राह्मणने अशीष देकर कुशल पूछी हिमाचलने कहा कि आप कौन हैं और किस कार्यके निमित्त आये हैं ब्राह्मणने कहा कि मैं ब्राह्मण हूं पृथ्वी भर का पर्यटन करता हूं अपने गुरु की कृपासे तीनों लोकों को पहचानकर सब बातों का ज्ञाताहूं जो मनुष्य तीनों लोकमें कोई काम करताहै वह मैं अपने मनही में जानलेताहूं सो इस बात की साक्षी देताहूं कि तुम्हारी इच्छा है कि गिरिजा का बिवाह शिवके साथ करदें ऐसी तुम्हारी मूर्खता जानकर मैं तुम्हारी भलाई के लिये तुम्हारे घर आया हूं और मैं तुम से कहता हूं कि तुम ऐसी अच्छी कन्या को ऐसे बुरे और निर्गुण मनुष्य को क्यों देते हो यह तुम्हारी इच्छा अशुभ है जिनकी सेवा सम्पूर्ण सृष्टि देवता, मुनि, दैत्य, सिद्धादि सब करते हैं उनके साथ गिरिजा का बिवाह करना उचित है तुम्हारे अधीन एक लक्ष पर्वत हैं इसी प्रकार विष्णुभी बड़े महाराजाधिराजहैं और शिवके आगे पीछे भाई बन्धु आदि नहीं हैं यह बात तुम आपही भाई बन्धुओं से पूछलो और जो तुम यह कहोगे कि गिरिजा को शिव के सिवाय दूसरा पति स्वीकार नहीं तो यह बात प्रकट है कि रोगी को कुपथ्य बिन कोई गुणकारी औषध नहीं भाती यह कह ब्राह्मण चल दिये और हिमाचलके अतिखेद और चिन्ता से आंसू बह निकले और मैना ने हिमाचलसे कहा कि हमारी बात सुनो जो अन्तको अच्छा फल देगी तुमको उचित है कि सब पर्वतों को बुलाकर उस ब्राह्मणके वाक्योंके लिये मति पूछो क्योंकि उसकी बातें सुनकर मुझको बड़ा सन्देह हुआ है जबतक उस बात की सफ़ाई न होगी मुझे बहुतही भय बना रहेगा और तुम भी ब्राह्मण की बात को अच्छी तरह पर शोचो नहीं तो मैं या तो घर छोड़ बनमें जा रहूंगी या विष खाकर मरजाऊंगी या गिरिजा

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को साथ लेकर तुम्हारे घरसे निकलकर किसी निर्जनस्थान में जारहूंगी यह कह मैना अति कोपित होय गिरिजा को साथ लेकर कोपभवन में जा बैठी और कुचैल वस्त्र पहिन सर्व प्रकार के वस्त्राभूषण उतार धरती पर लेटगई और अनुचित वचन कह पृथ्वी को खोदती थी यह चरित्र देख हिमाचल बहुत दुःखी हुये और मैनाके पास जाकर ठहर ठहरकर समझानेलगे और कहा कि क्यों पृथ्वी पर पड़ी हो फिर हिमाचल बड़ा अचरज करने लगे यह चरित्र शिवने कुछ उत्तम किया ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह दशा देख हिमाचलके सब परिवार के लोग और सब नगरनिवासी अतिदुःखी हुये और देवताओंने परस्पर कहा कि क्या करते क्या होगया और सब स्त्री पुरुष शिव का ध्यान करनेलगे और कहा कि जो आपने किया वह सब शुभ हो यह कह चुप होगये और गिरिजा भी बहुत मुरझाकर शिव का ध्यान करने लगी सो शिवने यह चिन्ता गिरिजाकी जानकर सप्तऋषियों का स्मरण किया वे तुरन्त आये जो सूर्य की कान्तिके समान महाप्रकाशवान् गङ्गाजीसे भीगे हुये जटा धारण किये हाथ में माला शरीर में भस्म रमाये महाउज्ज्वल स्वरूप शिव शिव मुखसे कहते थे और उन्होंने शिवको प्रणाम किया और धन्वा के समान आठों अङ्ग बनाकर दण्डवत् कर हाथ जोड़े हुये शिर झुकाया और बड़ी स्तुति की शिव बोले कि हमने तारकदैत्य के लिये गिरिजाके साथ विवाह करने की देवताओंसे प्रतिज्ञा की थी वह समय निकट है इससे तुम हिमाचलके पास जाकर उससे और उसकी स्त्री से हमारे विवाह के निमित्त कहो और जिसतरह देवताओं का काज सुधरे वह सब तुमको करना उचित है हमारा सगुण स्वरूप केवल देवताओंके निमित्त है यह सुन सप्तऋषि अतिप्रसन्न होकर परस्पर कहने लगे कि हम बड़े भाग्यवान्

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं जिसकी ब्रह्मा विष्णु प्रेमसे रात्रि दिन सेवा किया करते हैं वह आज हमको सृष्टिके उद्धारके लिये अपने विवाह के निमित्त भेजते हैं सो वहांसे चलकर हिमाचल के समीप गये हिमाचलने प्रणाम करके पूजन किया और आने का कारण पूछा सप्तऋषि बोले कि शिव सृष्टिके पिता और गिरिजा सृष्टि की माता हैं संसारकी भलाईके लिये शिवने गिरिजाके साथ विवाह करने की इच्छा की है उसी कार्यके निमित्त आपके पास हमको भेजा है तुम गिरिजा को दो तुम्हारी संसारमें बड़ी कीर्ति होगी ब्रह्माजीने इस विषयमें शिवकी बड़ी इच्छा की और गिरिजाने भी बड़ा कठिन तप किया इस लिये शिवने विवाह की इच्छा की है उसीसमय में कुम्भजऋषि की स्त्री और अरुन्धतीने भी मैनाके पास कोपभवनमें जाकर देखा कि वह महामलिन वस्त्र पहने महाचिन्तासे युक्त धरतीपर पड़ी हुई है उन्होंने यह दशा देखकर कहा कि हे मैना! उठो उठो मैना मुनीश्वरों की स्त्रियों को पहचानकर उठ बैठी और कहा कि धन्यभाग्य हैं कि तुमने आकर मुझे कृतार्थ किया मैं आपकी चेली हूं जो आज्ञा दो तो मैं उसका पालन करूं अरुन्धती बोली कि हम तुमको विना कारण अप्रसन्न होते हुये जानकर मनाने को आई हैं देखो हिमाचल गिरिजा का शिवके साथ विवाह करता है तुम क्यों अप्रसन्न हुई हो क्या तुम शिवको नहीं जानती हो अब तुरन्त हिमाचलके पास चलो इसी प्रकार वसिष्ठ की स्त्री अरुन्धतीने शिवके बहुत गुण वर्णन किये फिर दोनों उठकर हिमाचल की सभा में आईं और मैनाने सप्तऋषियों को प्रणाम किया और अपने पतिके चरणों का ध्यान करतीहुई अरुन्धती के साथ बैठगई और सप्तऋषियोंने कहा ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

सप्तऋषि बोले कि हे हिमाचल! तुमने शिव के चरित्र को न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाना बड़े धोखेमें पड़े तुमको कुछ धर्म का विचार नहीं तुम केवल एक ब्राह्मण के कहनेपर अपने वाक्य से बदल गये तुमको उचित है कि दृढ़बुद्धि रक्खो और धोखा न खाकर गिरिजा के साथ शिवका बिवाह करदो और शिव के श्वशुर होकर संसार भर में श्रेष्ठ होजावो और संसार में तारकनाम दैत्य बड़ा अन्याय कर रहा है उसके वध करने के लिये यह बिवाह पहले ठहराया गया है हिमाचल ने कहा कि मैं अतिनम्र होकर हाथ जोड़ विनय करताहूं कि मुझको आप इस बातकी आज्ञा दें कि मैं आपसे इस बात को पूछूं कि मैं तो एक लाख पहाड़ों का महाराजा हूं और शिव के पास राज्य की एक वस्तुभी नहीं है वह संसार से जुदा अशुभ बनवासी अवधूत है मैं क्यों-कर ऐसे मनुष्य के साथ उसका बिवाह करूं मैं इस विषय में तुमसे नीति चाहताहूं और प्रकट है कि बैर मैत्री बिवाह बराबरवाले से करना चाहिये इस प्रकार के पति को कन्या देकर पिता नारकी होताहै इसी प्रकार काम मोह भय लोभादि के कारण जो अपनी कन्या ब्याह देता है उसकोभी बहुत दुःख मिलता है इससे मैं गिरिजा का बिवाह शिवसे न करूंगा यह सुन अरुन्धती ने हिमाचल से कहा कि वेद के अनुसार तीन प्रकारके वचन होते हैं पहिले यह कि जिनका सुनना प्रकट में आनन्द उपजाता हो पर भीतर झूठ और आनन्द के नाश करनेवाले हों दूसरे जो सुनने में अमृत के समान हों और दया धर्म से खाली न हों और उनका अन्त अच्छा हो तीसरे जो पूरे सत्यधर्म से भूषित हों सो हम बीचवाले वचन का आश्रय लेकर कहते हैं और बाक़ी दोनों छोड़कर वेद के अनुसार तुमको समझाते हैं कि शिव संसारभर के राजा हैं और सबके स्वामी जिनको अगुण सगुणरूप दोनों कहतेहैं जिनके कबेर के समान सेवक हैं उनको दरिद्री कहना उचित नहीं वे तीनों गुणों के वश करनेवाले और तीनों लोक के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शरीर हैं और हर ब्रह्मा विष्णु उन्हीं के तीनों गुणों से उपजे हैं और सर्ववृत्तान्त सती के शरीर छोड़ने और फिर गिरिजा के उपजने का वर्णन किया और कहा कि यह गिरिजा तो सनातन से शिव की शक्ति है इसलिये तुमको उचित है कि इसका बिवाह शिव के साथ करदो इसमें तुम्हारे लिये दोनोंलोक में यश होकर तुम्हारा कुल पवित्र होगा और सब देवता तुम्हारे वश में होजावेंगे नहीं तो गिरिजा तो अवश्य करके शिवको पावेगी और तुम पश्चात्तापके सिवाय कुछ न पावोगे जो वरदान शिवने गिरिजा को दिया है वह क्या नहीं होगा शिवकी इच्छा झूठी नहीं होती देखो शचीके पति इन्द्र ने बहुत से पर्वतों के पंख काटडाले और एक पवनने बल करके कनकशैल के शृङ्ग को फोड़ा इस लिये उचित नहीं है कि शिव से हठ करो और तुमको सब कुल की रक्षा करना उचित है नहीं तो बड़ा उपद्रव होगा देवता आदि सब तुम्हारे शत्रु होजावेंगे जैसा कि राजा अनरण्य ने अपनी कन्या ब्राह्मण को देकर अपने कुलको बचालिया इसीप्रकार तुमको उचितहै कि गिरिजा शिवको देकर कुलकी रक्षा करो हिमाचल ने कहा कि अनरण्य राजा की कथा कहो वशिष्ठ बोले कि वेदचन्द्र जो चौदहवां मनु है उसकी सोलहवीं पीढ़ी में अनरण्यनाम राजा उपजे वह मङ्गलारण्य राजा के सदृश प्रजा का पालन करनेवाले राजगद्दीपर बैठकर अपने न्यायपूर्वक राज्य करतेरहे उनके सात पुत्र और एक कन्या उपजी जिसका नाम पद्मा था वह राजा और रानी को प्राण के समान प्रिय थी जब वह बिवाहने योग्य हुई तब उसके लिये पति ढूँढ़ने लगे इतनेमें पिप्पलादमुनि अपने आश्रम को जातेथे वन में देखा कि एक गन्धर्व अपनी स्त्री से विहार कर रहाहै यह देख मुनि भी कामके वशीभूत होकर स्त्रीसे भोग की इच्छा करनेलगे सो पुष्पभद्रा के तटपर पद्मा को देख सबसे पूछा कि यह किसकी पुत्री है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबने उत्तर दिया कि अनरण्य राजा की लड़की है मुनि स्नान और विष्णु का पूजनकर राजा के समीप गये और कामी होकर उससे लड़की को मांगा राजा चुपहुये और मुनि ने बारम्बार उस लड़की को मांगा पर जब उत्तर न पाया तो क्रोधित होकर कहा कि तू हमको लड़की नहीं देता चुप मार बैठ रहाहै मेरे पास वह विद्या है कि इसी समय तुझे जलाये देता हूं मुनिके ऐसे कोप के वचन सुन राजा स्त्री पुत्र और भृत्योंसमेत आश्चर्य में होकर रोने लगा तब एक बुद्धिमान् पण्डित ने राजा को शिक्षा दी कि अब आपको उचित है कि मुनि को लड़की देदो कुल को जलनेसे बचावो राजा ने मानकर लड़की देदी कि जिससे कुलपरिवारपर उष्ण पवनभी न आनेदी हे हिमाचल ! इसी तरह पर तुमको करना उचित है अब केवल सात दिन शेष रहगये हैं कि शुभमुहूर्त विवाह के लिये आवेगा अर्थात् मृगशिर नक्षत्र चन्द्रबार और योग करण केन्द्र के शुभग्रह उत्तम फल देंगे और लग्न का स्वामी अपने स्थान पर आवेगा यह अतिउत्तम मुहूर्त आवेगा उस दिन तुम गिरिजा को शिवके साथ ब्याह दो इसीतरहपर सप्तऋषि तीनि दिनतक ठहरेरहे चौथे दिन हिमाचलने लग्न लिखाया जो सप्तऋषि लेकर शिवके पास गये और हिमाचल ने बड़ा मङ्गलाचार मनाया ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सप्तऋषियोंने शिवके पास जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया शिवजी बोले तुमने अच्छा काम किया है तुम बड़े निष्पाप ब्रह्मज्ञानी धर्मात्मा वेदज्ञ तीनोंलोकों का हित चाहनेवाले हो तुमभी हमारे विवाह में अपने शिष्योंसमेत निमन्त्रण में आना यह सुन सप्तऋषि तो बिदा हुये और हे नारद ! फिर शिवजीने तुमको स्मरण किया तो तुम तुरन्त प्रसन्नतापूर्वक पहुँचे और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमने हाथ जोड़कर शिवकी स्तुति की और विनती की कि हमारे बड़ेभाग्य हैं कि आपने मुझे स्मरण किया अब मुझ सेवक को आज्ञा दीजिये शिवजीने संसार की रीति अनुसार कहा कि गिरिजा ने हमारा बड़ातप किया हमने प्रेम के वश में होकर उसको वरदान दिया है कि उसके साथ बिवाह करेंगे तुमको चाहिये कि हमारी ओर से सब देवताओंको निमन्त्रण दो और यह बात अच्छीतरह पर समझादेना कि जो हमारी बरात में संयुक्त न होगा वह हमारा प्यारा न होगा नारदजी तुरन्त चले और पहिले विष्णुजी के पास फिर मेरे पास और इसी तरहपर सनकादिक भृगु आदि के समीप पहुँचे और सबको शिवजी का संदेश सुनाया और इन्द्रलोक में फिर ध्रुवलोक में फिर सप्तऋषि और नन्दालोक आदि और सूर्य चन्द्र और भूलोक आदि सर्वस्थानों में संदेशा पाकर बिवाहको निमन्त्रण दे आये सबने अतिप्रसन्नता से अङ्गीकार किया फिर हे नारद ! तुम देवता मुनीश्वरों के यहां गये और तीनोंलोक में कोई जगह न रही जहां तुमने जाकर शिव की ओर से निमन्त्रण न पहुँचाया हो और निमन्त्रण देने के उपरान्त तुम शिवके समीप पहुँच स्तुति करनेलगे और यह भी कहा कि हे महाराज ! आपके निमन्त्रण को ब्रह्मा विष्णु और सर्वसृष्टि ने बड़ी प्रसन्नता से अङ्गीकार किया और फिर तुम शिव की आज्ञा से वहीं स्थित रहो सो ब्रह्मा, विष्णु, सनकादिक, लोकपाल, इन्द्रादिक, गणपति, अग्नि, धर्मराज, वरुण, कुबेर, पवन, ईशान, दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा, हिंगुलाज, ज्वालामुखी, देवी, देवता, मुनि आदि धीरे २ समय २ पर कैलास में अपनी सर्वसामग्री परिवार स्त्रीगण सेना और सभासद् लेकर आये और अपने पद के अनुकूल बैठे और बरात अच्छीतरह इकट्ठी होनेलगी और नाना वर्ण के खेल तमाशे लीला होनेलगीं और विष्णुजी और हम शुभ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लग्न पाकर शिवजी के समीप आये और प्रणाम के उपरान्त बिनय की कि अबतो चलने का समय आगया ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिवजी ने आज्ञा देदी कि बरात तय्यार हो यह सुनतेही तुरन्त सबने अपने २ को भूषित किया और सोलहों शृङ्गार करनेलगे और विष्णु और हम और देवता आदि बरात के साजने में लगे और चारों ओर से शुभसामग्री जैसे कि ध्वजा पताका चँवरादि गाड़ेगये देवपत्नियां शुभगीत गानेलगीं और रत्न और मोतियों से चौक ठीक कियेगये प्रतिद्वार में सोनेके कलश कदलीखम्भ और इसी प्रकार की और सामग्रियां आनन्द देनेवाली जमाई गईं उस समय के शिव की सुन्दरता हम कह नहीं सक्ते वह कहनेसे बाहर है और विष्णु और हम और इन्द्र आदि अपने २ प्रसिद्ध वस्त्रों से भूषित हुये सवारों के रिसाले और हाथियों के समूह घोड़ों के छलबल प्रशंसा के योग्य देखने के लायक थे जब शुभमुहूर्त आया शिवजी महाराज बरात समेत चले और नन्दी वीरभैरव आदि भी अपने गणों सहित साथ हुये उस बरातमें असंख्यसेना चली शिवजी ने पहिले संसारी रीति के अनुकूल ब्राह्मण के चरणों का ध्यानकर डमरू बजाया और चले आकाश से फूलों की वर्षा हुई और दुन्दुभी बजीं और बहुत से बाजे गाजे बन्दीजन आदि बरात के साथ चले ॥

उञ्चासवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हिमाचल ने भी अपने भाई बान्धव और सब नदी नद और समुद्रों को स्त्रियोंसहित निमन्त्रण दिया और अपने नगर को हर प्रकार से सजाया और बहुत से मन्दिरों को रत्नादिकों से पूर्णकर भूषित किया और अच्छा मँडवा अच्छी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चीज़ों से छाकर बन्दनवार और मोतियों के झालर लटकादिये और सब भाई बन्धु जिनको निमन्त्रण दिया था उनके घर इकट्ठे हुये वहां एक आश्चर्यदायक सामग्री तय्यार हुई और हिमाचल ने अपने दानसे सब मंगनों को अयाचक किया और हर स्त्री पुरुष ने अपने २ को सजाया नाना प्रकारके साज सजनेलगे और स्त्रियों के समूहने इकट्ठे होकर गिरिजा को नहलाया और जो २ कुलदेवता आदि की पूजा नियत है सब गिरिजा से कराई और शिव की ओर से तुमको देवताओंने आगे हिमाचल के पास भेजा जहां तुम्हारी बहुतही सेवा हुई और सब रीतों के पूर्ण करने के उपरान्त हिमाचल ने पहिले अपने पुत्रको बरात की अगवानी के लिये भेजा और आपभी बरात आनेकी बाट देखने लगा और जब बरात निकट पहुँची तो हिमाचल अपने सर्वबान्धवों सहित आपही अगवानी को चले और ऐसी बरात की बहार और असंख्य सेना विचित्र सामग्री देखकर साथियों समेत बहुत आश्चर्य में हुये और झुककर हम सबको प्रणाम किया और कुछ भी स्तुति करनेमें न चूके और चारों ओर बड़ी प्रसन्नता छाईहुई थी हिमाचल ने एक बहुत अच्छा पहाड़ बरात के स्थित होनेको दिया फिर हिमाचल विदा होकर गया और तय्यारी करने के पीछे अपने पुत्र को भेजा कि अब बरात हमारे द्वार पर आवे सो उस समय सब बरात बड़ी सामांसहित अपने २ वाहनों पर चढ़कर चली उस समय की सामांका वर्णन कोटिन जिह्वा से सैकड़ों वर्ष में भी नहीं होसक्ता तब मैना के मन में आई कि पहिले मैं अपने जामाता को देखूं तब द्वारचारकी रीति पूरी कीजावे यह विचार हे नारद! मैना ने तुमको बुलाया और अपना मनोरथ वर्णन किया और कहा कि जिसको तुम परब्रह्म और सबसे श्रेष्ठ कहते थे उसे देख सब काम कियेजावेंगे यह तुमसे कहकर मैना शीशमहलमें बैठगई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पचासवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब मैना राज्य के अहंकार से यह अधर्मरूपी विचार अपने मन में लाई और शिवजी के स्वरूप की परीक्षा चाही तब शिवने यह सब जाना और अप्रसन्न हुये मनमें कहा कि इस बुद्धिहीन स्त्रीने मेरी कईबेर परीक्षा की यह तो तर्कणा की खानि है देखो मैं क्या चरित्र करताहूं जिसमें यह मूर्खा स्त्री ऐसी बातों को भूलजावे यह विचार विष्णु को बुलाया और कहा कि तुम और ब्रह्मा बड़े हित चाहनेवाले हो तुमसे अधिक हमको कोई प्रिय नहीं अब हम आज्ञा देते हैं कि तुम सब पहिले जुदा २ अपनी २ सेनासहित हिमाचल के द्वार पर चलो सबके पीछे हम आवेंगे यह सुन विष्णुने सबको आज्ञा सुनाई जिसके अनुकूल अलग २ सब चले और हिमाचल के द्वार में प्रवेश करनेलगे मैना ऐसी धूमधाम के साथ बरात देख बड़ी प्रसन्नता से कहने लगी कि वाह २ क्या अच्छी बरात है और उसकी यह दशा हुई कि जिसको देखती तुमसे पूछती कि यही गिरिजा के पति हैं पहिले जब मैना ने गन्धर्वोंके राजा वसुको देखा तो तुमसे कहा कि क्या यह शिव हैं तुमने उत्तर दिया कि नहीं यह तो शिवकी सभा के गानेवाले हैं मैना बोली कि जिसकी सभाके ऐसे गानेवाले और नाचनेवाले हैं वह कब मुझको देख पड़ेंगे फिर यक्षों के स्वामी मणिग्रीव को देखा और तुमसे कहा कि यह शिव हैं तुमने उत्तर दिया कि नहीं फिर मुंचनाम लोकपाल और चक्षुगणोंसहित आ निकला मैना ने कहा कि यह शिव हैं तुमने कहा कि नहीं इसी प्रकार धर्मराज, निर्ऋति, सर्प, वरुण, पवन, कुबेर, ईशान, आठोंदिक्पति, रुद्र, इन्द्र, चन्द्र, ग्रहपति, शुक्र, प्रजापति, सप्तऋषि, ब्रह्मा, विष्णु जो एक पीछे एक आते थे उनको देख मैनाने तुम से प्रसन्न होकर कहा कि यही शिव हैं और तुम उत्तर देते

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थे कि नहीं यह शिव नहीं यह शिवके भक्त हैं मैना अतिप्रसन्न हुई और अपने को धन्य समझा और समझी कि हमारा कुल जीवन्मुक्त होगया क्योंकि जिसको हमने देखा वही शिव का भक्त ठहरा और वही गिरिजा का पति है यह कह मैना के सब दुःख दूर होगये ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! मैना ने तुम्हारी और गिरिजा की बहुत प्रशंसा करके तुमसे कहा कि हमने शिवको न देखा यह कहती थी कि शिव सम्मुख आये तुमने तुरन्त कहा कि यह शिव हैं गिरिजा के पति यही हैं अच्छीतरह देखो मैनाने देखा और शिव की माया से उसकी आंखें ऐसी होगईं कि उसकी दृष्टि में सन्देह उत्पन्न हुआ इसी समयमें शिवका दल उसको ऐसा दिखाई दिया कि सबही भूत प्रेत हैं कइयों के तो हाथही नहीं और बाजों के बहुत हाथ हैं मैना ऐसा दल देख बहुत डरी उस सेना में शिवको बैल पर चढ़े त्रिनेत्र चन्द्रमा और मुकुट विराजमान व्याघ्राम्बर और गजचर्म धारण किये हाथों में डमरू कपाल त्रिशूल और सर्वशस्त्र लिये शीशपर जटाजूट कानों में सर्प पांचमुख मुण्डों की माला धारण किये कण्ठ में हलाहल की श्यामता शरीर में सर्प लिपटाये हुये देखा सो हे नारद ! उस समय तुमने मैना से कहा कि इधर उधर क्या देखती है अब क्यों शिव का रूप नहीं देखती जब मैनाने ऐसा रूप और वैसी सेना देखी तो भयभीत होकर महादुःखी हुई और धरती पर गिरपड़ी और मूर्च्छित हुई तब बड़ा हाहाकार हुआ और सबको बड़ा खेद हुआ सब लोग ओषधि आदि उपायकर मैना को चेतमें लाये और तुमसे कहा कि तुझपर धिकार है कि तू बड़ा झूंठा बुद्धिहीन पापों की खानि नास्तिक और छली है तुझे लोग वृथा ही विष्णुका भक्त कहते हैं यहां से तू दूर हो अब तुझको आंखों से न देखूंगी तू बड़ा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छली है तूने हमारी कन्या को खराब किया कि वह अवधूतों भूतों की सेना लेकर मेरी लड़की के साथ बिवाह करनेको आया है हमारा और हिमाचल का जन्म वृथा हुआ मेरे साथ सबोंने छल किया सप्त-ऋषियों ने क्या कुछ कोताही की है और वह अरुन्धती कहां गई जिसने मुझको गुड़ देकर ईंट मारी यह कह गिरिजा को बुलाकर कहा कि तुमने बनमें जाकर यह क्या कर्म किया है तुमने रत्न छोड़ कांच मोल लिया और चन्दन छोड़ काठ को अपने शरीर में लगाया और हंस न लेकर कौवा लिया और गङ्गाजल छोड़ कुयें का पानी पिया सूर्य से प्रयोजन न रख कर जुगुनू से मनोरथ चाहा घी न भाया कि रेंड़ी के तेल से रुचि हुई तुमने यज्ञ की भस्म को दूर कर चिता की भस्म लगाई अर्थात् विष्णु और अन्य देवताओं को छोड़ शिव के लिये तप किया तुम बड़ी भाग्यहीन हो तुझको धिक्कार है और तेरे कर्मों पर धिक्कार और तेरे उपदेष्टा पर धिक्कार और तेरी सखियों और तुझको भी धिक्कार है अब मुझको आनन्द कहां है ऐसा संसार में कौन है जो मेरे इस दुःख को दूर करे और मुझको दुःखसमुद्र में डूबतेहुये भुजा पकड़कर निकाले यह हमारे कर्मों का फल है हमने बड़ेप्रेमसे पुत्री के लिये तप किया था जो ऐसा भय-वान्स्वरूप दुःख देनेवाला और उसका फल हमको मिला और बार-म्बार पृथ्वीपर गिरकर मूर्च्छित होगई और जब फिर चेतमें आई तो गिरिजा की ओर दृष्टिबन्द करके धिक् २ कहनेलगी और कहा कि खेद है तू न मर गई वन में भी तुझे किसीने न पूछा कि इस समय हमारे कुल में बट्टा लगाया मैं तेरा शिर काटडालूंगी पर शिवको तुझे न दूंगी तुझको अपने समेत कुयें में कूदकर मरूंगी चाहे कोई अधर्म मुझसे हो पर तुझे अवधूत के साथ नहीं ब्याहूंगी हिमाचल ने भी बड़ी मूर्खता की जो नारद के वचन पर इतना विश्वास किया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अब मैं क्या करूं जिससे मेरा दुःख दूर हो ऐसे २ वचन कहती हुई रोरो धरतीपर गिरपड़ी यह देख सब आनन्द दुःख से बदलगया और समझाने के पीछे सबलोगों ने आनन्द मनाया ॥

बावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब यह दशा मैना की हुई तब नगर भरमें उदासी छागई और देवता आदि वहां पहुँचकर मैना को समझानेलगे कि तुम यह क्या करती हो कि सब शुभसामां का अशुभ किये देती हो मैनाने यह सुनकर जो कुछ मनमें आया देवताओं को बुरा भला कहा और दिक्पति आदि को उठा दिया तब हे नारद ! तुमने मैना से कहा कि तुम्हारी बुद्धि कहां गई है तुम उठकर सब अपना काम करो यह सब शिव की लीला है शिव परब्रह्म हैं तुम उनको अवधूतके स्वरूपसे देख कुछ संशय मत करो तुम्हारे इस वचन को सुनकर मैनाने दूर २ किया और सप्तऋषि अरुन्धती समेत आकर मैना को समझानेलगे उनको भी मैनाने क्रोधित होकर निकाल दिया तब तो हम आप गये जब अच्छीतरह से शिव की स्तुति की तब मैनाने महाकोप को प्राप्त होकर कहा चुप रहो ऐसी झूठी बातें मत कहो अन्त को हिमाचलने मैना को आकर बहुत समझाया कि सबके स्वामी और पिता शिव मेरे द्वारपर आये हैं तुमको जो उचित है वह करो शिवके बराबर दूसरा कौन है इस बातको वेद कहते हैं देखो एक बेर पहिले शिव अवधूत स्वरूप बनाकर हमारे यहां आये थे और ऐसे नाचे गाये कि स्त्री पुरुष सब अधीर होगये थे उन्होंने कैसे २ रूप दिखलाये थे जिनको देखकर हम और तुम दोनोंने गिरिजा का देना मानलिया यद्यपि ऐसी २ बातें कहकर हिमाचलने समझाया पर मैनाके मनमें कुछ न आया और कहा चाहे तुम गिरिजा को गर्दन बांधकर पहाड़ से डालदो वा समुद्रमें डुबादो पर निश्चय जानो कि शिव गिरिजा को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न पावेंगे तब गिरिजाने मैनासे कहा और अच्छी तरह पर समझाया कि मैं शिवके सिवाय और किसीके साथ बिवाह न करूंगी यह बात क्योंकर होसक्ती है कि सिंह का भाग सियार को मिले यह शिव हैं मुझे इनके सिवाय और कोई भर्ता करना अङ्गीकार नहीं यह सुन मैना अतिक्रोधमें आई और गिरिजा को पकड़कर भलीभांति तमाचों से मारा तब तुमने और देवताओं समेत गिरिजा को मैनासे छुड़ाकर भगा दिया जब मैना का कोप शान्त न हुआ बरन और बढ़ा तब आप विष्णुजी समझानेके लिये गये ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

विष्णुजीने कहा कि हे मैना ! तुम शिवको नहीं जानती हो वह सबसे बड़े हैं और सबके स्वामी अनादि हैं उन्हींसे प्रकृति पुरुष सनकादिक और हम और ब्रह्माआदि सब उत्पन्न हुये वे हमारी बिनती से सगुणरूप धारण करते हैं और सृष्टिके हित चाहनेवाले हैं उन्होंने हमको वेद कृपाकिये हम उन्हींकी सेवा करते हैं और इसीप्रकार बहुत स्तुति की और फिर कहा कि सबको शिव और शिव को सब समझो हम तुम सब शिव हैं बरन सर्वसृष्टि को शिव समझो जिस प्रकार कि एक शरीर नाना प्रकारके वस्त्र पहिनता है इसी प्रकार शिव को समझना चाहिये शिव की भक्ति बड़ा आनन्द देनेवाली है वही माता पिता और भाई है शिवधर्म बड़ी प्रसन्नता प्राप्त करनेवाला और दुःख मिटानेवाला है हम सम्पूर्ण कार्य उन्हीं की शक्ति से करते हैं उन्हींके तपसे हमको चक्र प्राप्त हुआ है शिवसेवासे सब देवता अमर होगये हैं शिवके लिये सम्पूर्ण मुनि संसार छोड़देते हैं हे मैना ! तुमको सब धर्मरूप कहते हैं सो आज हम तुमको समझाते हैं तुम्हारे बड़े भाग्य हैं कि सदाशिव हम सब समेत तुम्हारे द्वारपर आये हैं तुम इस बात को अच्छे प्रकार समझो कि शिव की भक्ति बिन संसार भर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का बखेड़ा वृथा है शिव का तप बहुत सीधा है शिव की भक्ति और तप बिन अन्य तप व्रत वेदपठन विद्या धन द्रव्य दया दान सत्य मौन-धारण योगादि सब वृथा और निष्फल हैं यह सब बातें कुछभी आनन्द नहीं देतीं उनके बहुत रूप और असंख्य लीला हैं जैसे कि तुमने तब अनेक रूप देखे थे और अब भयानक स्वरूप को भी देख लिया जो कोई मनुष्य किसीको कुछ देने को कहे और न देवे उसकी बराबर और कोई पापी नहीं हमने बहुत जीव देखे हैं पर ऐसा किसीको नहीं देखा जो देकर लेलेवे अब उठो और अपना काम करो शिव तुम्हारा बड़ा कल्याण करेंगे मैं सत्यही कहता हूं कि शिव गिरिजा का अब बिवाह होगा॥

चौवनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मैना को विष्णुजी के पवित्र वचन सुनकर कुछ ढाढ़स हुआ और उठकर लज्जापूर्वक विष्णु से बोली कि आपने मुझको समझाने से बड़ा भरोसा दिया पर मैं अपने मन से निरुपाय हूं कि वह बातको समझलेता है पर उसमें समझने की समाई नहीं मेरा मन यह काम करने को नहीं चाहता यह सुनकर श्रीविष्णुजी ने हे नारद! तुमसे कहा कि तुम शिवजीके पास जाकर बिनती करो कि मैना के मन से अपनी माया को खींच लेवें कि मैना अपनी दशा पर आजावे जिसमें गिरिजा का बिवाह हो और सब मनुष्य प्रसन्न होजावें जब तुम शिवजीके चरणोंमें विष्णुकी आज्ञा से पहुँचे तो शिव विष्णु की इच्छा समझ अतिसुन्दर होगये कि एक मुख दो नेत्र शरीर का रङ्ग चम्पा के फूल के समान सर्वप्रकार से मोहिनीरूप धारण किया और उत्तमोत्तम रत्न और जड़ाऊ कपड़ों से शरीर को सजाया खिला माथा जो अग्निसमान चमकता और चन्दन कस्तूरी अगर कुमकुम इतर आदि लगाये और मणियों से जड़ी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुई अँगूठियां हाथों में पहिनेहुये और आँखों में काजल लगाये रत्नोंसे जड़ाहुआ मुकुट रक्खे जड़ाऊ कुण्डल कानोंमें बिराजमान किशोर अवस्था को प्राप्त मानों संसार भर की सुन्दरताई इकट्ठी होकर शिव में स्थित हुई थी हे नारद ! जो परब्रह्म आदि मध्य अन्तरहित सृष्टि उपजानेवाला है उसने ऐसे रूप से प्रकट होकर कैसी २ लीला की सो हे नारद ! तुमने शिवजीका ऐसा स्वरूप देख अतिआनन्द माना और स्तुति करने लगे और मैना से कहा कि शिवजी के रूप को देखो मैना ने शिवजी का रूप देखा तो जो आनन्द उसको प्राप्त हुआ वह लिखने और वर्णन करनेमें नहीं आता और हम और विष्णु और इन्द्र आदि शिवकी सेवा करनेलगे और फिर हर ओर से प्रसन्नता छागई और देवता जय शिव शम्भु ऊंचे २ स्वर से कहनेलगे और अप्सरा नाचनेलगीं और शङ्ख मृदङ्गआदि बाजे बजने लगे और मैनाने कहा कि हमारे बड़े भाग्य हैं और शिव सब बरातसमेत हिमाचल के द्वार को चले ॥

पचपनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! वे लोग संसार में बड़े भाग्यवान् हैं जो शिवजीकी भक्ति रखते हैं वे लोगभी पूजने योग्य हैं क्योंकि वे मुक्त होकर औरोंकोभी मोक्ष देते हैं शिवजीकी भक्ति तीनोंलोक को भाग्य से प्राप्त होती है चाहे करोड़ों जन्मोंतक तप कियाकरे पर शिव का पाना कठिन है वही सदाशिव देवताओं को साथ लिये हुये और संसारी मनुष्यों के समान हिमाचल के द्वारपर चले तब नगरकी सब स्त्रियां देखनेको चलीं और अतिप्रसन्नता से जो जिस दशा में बैठी थीं उसीप्रकार से चलीं और शिवजी को देख परस्पर कहने लगीं कि गिरिजा को तपके कारण ऐसा पति मिला है और सब मिलकर परस्पर गाने लगीं और मैना ने अतिप्रसन्नतापूर्वक शिवकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आरती उतारी और गिरिजा ने अपनी माता से छिपकर शिव को देखा जैसा स्वरूप गिरिजा को दिखाई दिया उसकी कहांतक प्रशंसा हो सक्ती है ऐसे रूपको गिरिजाने मनमें ध्यान किया फिर उनको दूसरा स्वरूप दिखाई दिया कि शिर में जटा पञ्चमुखी शीश में गङ्गाजी की धारा बहती हुई जैसा कि कई स्थान पर वर्णन होचुका है और उसी प्रकार के गिरिजा को दिखाई दिये ऐसे स्वरूप को गिरिजा ने प्रणाम किया और हिमाचल ने कुल और संसार की रीति के समान बड़ी धूमधाम से सब रीतें पूरीं और द्वारचार पूरी हुई तब गाना नाचना और फूलों की वर्षा और नाना प्रकार के आनन्द मङ्गल होनेलगे और इस रीति के पूर्ण होने के उपरान्त बरात अपने वासस्थान को गई ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हिमाचलने सबप्रकार की सामग्री दासदासी सबकुछ बरातके लिये भेजदिये और गिरिजा ने ध्यान करके बरात में सिद्धि को प्रकट करदिया जिससे किसी बात की न्यूनता न रही और विष्णु आदि सब हिमाचल की स्तुति करने लगे और यह न जाना कि यह सब सिद्धि गिरिजा की है पर शिव इस बात को जान गये और मन में अतिप्रसन्न हुये फिर हमने हिमाचल के पास आकर कहदिया कि अब विलम्ब मत करो लग्नका मुहूर्त आनपहुँचा हिमाचल ने प्रसन्न होकर अपने पुरोहित को बुलाया और पण्डित वेद पढ़तेहुये नाना प्रकारके बाजे बजवाते हुये चले और शिवजीसे विनय की गई कि अब आप हमारे घर चलें सो हम शिवसहित हिमाचल के घरको गये और उचित स्थानोंपर बैठे और गिरिजा को भीतर से बुलवाया जब सबने गिरिजा को आतेहुये देखा तो प्रणाम किया और गिरिजा को उत्तम स्थानपर बैठाकर बिवाह की सब रीतें होने लगीं और गिरिजा को सर्वप्रकार के भूषण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहिनाये गये और दोनों ओर से दानादि बहुत हुआ जो जिसको इच्छा थी वही उसको मिला उस समय बड़ा आनन्द और मङ्गलाचार हुआ सबकी जिह्वा से जय शिव गिरिजा निकलता था स्त्रियां मङ्गल-गीत गाती थीं और फिर बरात चलकर अपने निवासस्थान में आई और हरप्रकार के भोजन परसे गये और हिमाचल ने छप्पन प्रकार के भोजन अपने घरमें बनवाये और सँदेशा भेजा कि भोजन करने को बरात आवे सो सब बरात चली हिमाचल ने सब के पावँ धोये और जब शिवके चरण धोनेलगे तो प्रसन्नता से विह्वल होगये क्योंकि उन्होंने यह बिचारा कि ये वही चरण हैं जिनका विष्णु और ब्रह्मा ध्यान करते हैं और अच्छी सोने की चौकी पर बैठाया और रसोईंदार भोजन लानेलगे और हर प्रकार के स्वादिष्ठ भोजन सामने रक्खेगये वह भोजन चारोंप्रकार के थे जिनमें छवोंरसों का स्वाद था और देवता और मुनि आदि पहिले पांच ग्रास खाकर फिर भोजन करने लगे स्त्रियों ने गालियां गाईं जिनमें वह सब के नाम लेती थीं और बराती प्रसन्न होकर बहुत धीरे २ भोजन करते थे जब भोजन कर चुके तब पान बांटे गये और हिमाचल ने सबके आगे बहुत विनय की और बरात बिदा होकर अपने निवासस्थान में आई और जब हमने बिवाहकी शुभलग्न पूर्व के विचार के अनुसार देखा तो हिमाचल से बिवाह का विचार कहदिया हिमाचल ने एक अपना लड़का शिवजी के लानेको भेजदिया शिवजी देवता और मुनियों सहित तुरन्त चले और नाना प्रकारके बाजे बाजने लगे नाच होने लगा आकाश से फूलों की वर्षा हुई ऊंचेस्वर से वेद पढ़ेगये उस समय का आनन्द करोड़ों जिह्वाओं से भी वर्णन नहीं होसक्ता ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उस समय सबको प्रसन्नता थी कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजी का बिवाह अपने नयनों से देखेंगे और शिवजीकी सुन्दरता ऐसी थी कि हम और विष्णुजी देख कर बहुत अचम्भे में हुये मैना ने शिवजी की आरती की और शिव भीतर गये और देवता और मुनिआदि भी जाकर भीतर बैठे और शिवजी के मुखचन्द्रको चकोर की भांति देखनेलगे उस समय मँड़वेके चारों ओर की धरती चार प्रकार से पवित्र की गई उसके नीचे सिंहासन के ऊपर शिवजी बैठे और गिरिजा आईं जो सोलहो शृङ्गार किये सखियों को साथ लिये थीं जिनको देखकर कौन स्तुति करने की शक्ति रखता है विष्णुजी और हम सब देवताओं ने हाथ जोड़ गिरिजा को प्रणाम किया और मुनि आदि ने शुभ अशीष दी और दोनों ओर के मुनियोंने पहिले गणपति और गौरी का पूजन किया और और रीतें पूरने लगे हे नारद! पञ्चदेवता अनादि हैं और पांचों को बराबर जान कर पांचों की पूजा करनी चाहिये सो जिस प्रकार कि वेद में बिवाह की रीतें लिखी हैं उसी प्रकार हिमाचलने कीं और मैनाने चीर कपड़े बहुत महीन और उत्तम शिवजी को दिये और दो उसी प्रकार के गिरिजा को दिये और दो आप पहिने और गिरिजा हिमाचल की दाहिनी ओर आकर बैठीं और शिव गिरिजा के सामने बैठे मुनीश्वरों ने वेद पढ़ा और मैना भी कन्यादान के समय आई और गोत्र नाम पूछने लगे और अपने कुल को कहने लगे और हिमाचल ने गर्ग विष्णु और हम से कहा कि अब आप लोग कन्यादान करदीजिये पर हम लोग शिवजीका गोत्रोच्चारण न करसके लाचार होकर चुप होरहे तब हिमाचल ने शिवजीसे कहा कि अपना गोत्र और कुल वर्णन करो क्योंकि इसके विना कन्यादान नहीं होसक्ता शिवजीने लीला करके कुछ मुख से न कहा चुप होगये तब सबलोग आश्चर्य करने लगे और सबको बड़ा दुःख हुआ क्योंकि आशा टूटगई और हिमा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चल का यह वचन और हठ किसीको न भाया और परस्पर एक दू-
सरेको देखनेलगे और शिवजीकी लीला किसीने न जानी गिरिजा
सबसे अधिक अपने पति के मुख को देख चिन्तित हुई और शिव
का ध्यान किया शिवजीने गिरिजा की ऐसी चिन्ता जानकर ना-
रद पर अपनी इच्छा प्रकट की सो नारद तुरन्त हँसकर अपना बीणा
बजानेलगे यह दशा देख और भी सबको अचम्भा हुआ और हिमा-
चल पर अति अप्रसन्न हुये और सबलोगों ने नारद को मना किया
कि यह क्या करते हो दुःखमें बीणा बजाने का कौन समय है सो
नारद बोले कि तुमने जो शिवजी का गोत्र और कुल पूछा है सो
हमने शिवजी का सैनके अनुसार उत्तर दिया अर्थात् शिवजी का
कुल और गोत्र नाद है नादही से शिव स्थित हैं शिव नादरूपी श-
रीर हैं और नादपूर्ण शिव हैं शिवका कुल और गोत्र ब्रह्मा विष्णु और
हम सब कोई नहीं जानते और कौन मनुष्य है जो उसमें वार्त्ता करे
तुमतो मूर्खों के समान बातें करते हो जिस शिवके एक दिनमें अ-
संख्य विष्णु और ब्रह्मा बीतजाते हैं वह तुम्हारे पुत्र के समान गिरिजा
के तप और ध्यानसे होगये शिव शरीरसहित शरीररहित निष्कुल
सकुल अगोत्र सुगोत्र सब कुछ हैं ऐसे शिवजी को भक्ति विना कोई
नहीं जानसक्ता अब समय जाता है तुरन्त कन्यादान करदो और
यही बात सबने हिमाचलसे कही हिमाचलने कुश और जल लेकर
कन्यादान करदिया और गिरिजा का हाथ शिवजीके हाथ में पकड़ा
दिया जिससे हिमाचल की तीनोंलोक में कीर्ति हुई शिवने गिरिजा
का हाथ पकड़ा सो यही बिवाहकी रीति लोक में प्रसिद्ध हुई ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उस समय सबके मनों में आनन्द
उपजा और लौंड़ी सेवक चाकर पारितोषिक से भरपूर हुये और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरिजा को शिव के वामभाग में बैठाकर होम करने लगे और उत्तम रीति से भाँवरी होनेलगीं जिनको देखकर कौन ऐसा था जिसको अतिआनन्द न प्राप्त हुआ हो तब शिवजीने ऐसा चरित्र किया कि भाँवर फिरते हुये गिरिजा का एक अँगूठा कपड़े के हटाने से हमारी दृष्टिमें पड़ा हमने तो उसको कामकी दृष्टि से देखा और यद्यपि हमने सँभाला पर तौ भी कामदेव धरतीपर गिरपड़ा उससे असंख्य वटुक और जटाधारी तेजपूर्वक उपजे वे हमारी स्तुति करके शिवके सामने खड़े हुये शिव ने उनको देखकर बड़े क्रोध से त्रिशूल उठालिया उस समय सब देवता मुनिआदि कांप उठे और हाथ जोड़कर सब शिव जीकी स्तुति पढ़नेलगे और इतनी सब ने मिलकर विनती की कि शिवजी प्रसन्न होकर कहनेलगे कि अच्छा ब्रह्माजी तुम सुखपूर्वक अपना कार्य करो हम अप्रसन्न नहीं हैं हमने सब वटुकोंको सूर्यको सौंप कहा कि तुम सब इनकी सेवामें विद्यमान रहा करो वे सूर्यकी सेवा में रहनेलगे और ब्रह्मचर्य रहकर वेद के बड़े जाननेवाले हुये और सूर्य की सेवा में बहुत सुख से रहनेलगे इसके उपरान्त जो बिवाह का कार्य शेष रहगया था वह सब करादिया फिर हिमाचलने हम सबको जो उचित था कृपा किया और शिव को रत्नादि और हर प्रकार का धन द्रव्य दहेज में दिया और उदारता का ऐसा हाथ खोला कि कोई उस समय भिक्षुक और मंगन न रहा और विनती पढ़ीगई फूलों की वर्षा हुई बाजे आदि बजे और नाच गानसे संसार में प्रसन्नता छागई हम सबतो बासस्थान को चले आये और स्त्रियां शिव को घरके भीतर लेजाकर सब रीतें पूरने लगीं और उन स्त्रियों ने शिवके साथ नाना प्रकारके हास्य किये और फिर शिव गिरिजा को अन्तःपुर में लेगईं और चारोंओर से जय २ का शब्द पूर्ण हुआ और सबने आयु और धन की वृद्धि के निमित्त आशीर्वाद दिये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनसठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सब रीतों के पूरनेके उपरान्त स्त्रियां शिव और गिरिजा को अन्तःपुर में लेगईं और उत्तम शय्यापर अच्छे अच्छे बिछौने बिछाकर दोनों को बैठाला और तिरछी दृष्टि और बांकी नज़र से सब स्त्रियां देखने लगीं उस समय शिव और गिरिजा का स्वरूप जो कपड़ों और भूषणोंसे सजाथा वह वर्णन नहीं होसक्ता और सब देवपत्नियां शिवके निकट गईं जिनमें सावित्री हमारी स्त्री और जाह्नवी सती लक्ष्मी सरस्वती कुम्भजकी स्त्री अहल्या गौतम की स्त्री तुलसी स्वाहा रोहिणी शतरूपा संज्ञावर्त्त अदिति और सोलहों संसार की माता जो अपनी कृपा से संसार के दुःख का नाश कर देती हैं इसी प्रकार देवताओं की पुत्रियां इन सबने आकर चारों ओर से शिव को घेर लिया पहिले सरस्वती ने कहा कि हे देवताओं के देवता! तुमने प्राण के समान स्त्री पाई अपनी प्यारी के मुखको देखो लक्ष्मी ने कहा कि हे देवताओं के देवता! सब लज्जा दूर करके अपनी प्यारी को छातीसे लगा लो जिसके विना तुम्हारा जीवन दुःख-दायक था अब उसके साथ भलीभांति विहार करो सावित्री ने फिर कहा कि तुम भोजन करके अपनी प्यारी को भोजन कराकर पान खिलाओ और अपनी स्त्री को पाकर प्रसन्न रहो तुम तो बड़े कामी हो जाह्नवी बोली कि हे कामी महापराक्रमी! बाज़ार से अच्छी कंघी लाकर अपने हाथ से अपनी प्यारी के बालों को सुधारा करो इसमें बड़ा आनन्द मिलता है अदिति ने कहा कि हे कामके मद भरेहुये शिव! गिरिजा को आनन्द से रक्खो और बहुत प्यार करो क्योंकि स्त्रियों को इससे अधिक आनन्द नहीं है और अतिप्रीति से उनके दुःख दूर करो शची बोली हे शिवजी! सर्व सुन्दरों के राजा कामदेव के भरे हुये जिसके लिये उसके शरीर को लिये चारों ओर संसार में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिरे हो और लज्जा दूर करके भस्म को शरीर में लगाये घूमतेरहे अब इससे अधिक तुमको कौन सिद्धि प्राप्त होगी अब गिरिजा से भली भांति विहार करो लोपामुद्रा ने कहा कि अच्छे २ भोजन खाकर उत्तमोत्तम अन्तःपुर में पान चाब २ कर सोनेकी अच्छी रीति अङ्गीकार करो यह बात स्त्रियों को अति प्रसन्नता देनेवाली है हमने तुमको गिरिजा से मिलादिया चाहे यह बात मैना मानती न थी अब भली भांति भेंटें कीजिये अहल्या बोली कि तुमने बुढ़ापा छोड़ किशोर अवस्था को धारण किया और स्त्री के निमित्त बहुत उपाय किये तुमने बहुत युक्तियां करके जाया पाई तुमको शुभ हो तुलसी बोली कि हां तुमने तो स्त्री को छोड़ कर कामदेव को भस्म करदिया था और बड़े संसार के त्यागी और कामरहित बनगये थे फिर तुमने क्यों अरुन्धती को सिखाकर भेजा स्वाहा ने कहा वाह वाह स्त्री के वचन सुनकर लज्जित मत होना जो वह कोई ढिठाई सैन लाड़ दुलार की बातें कहे तो उसको बुरा न जानना क्योंकि यही रीति है रोहिणी बोली तुम तो कामशास्त्र के बहुत ज्ञाता हो अपनी स्त्री के समीप रहकर अपना काम करो और स्त्रियों के कामरूपी समुद्र में पैरकर पार हो और वसुन्धराने कहा कि तुम सब जानते हो स्त्री के मनोरथ को समझकर उसकी इच्छा पूरी करो कि भेंटसे वियोग का दुःख दूर होजावे शतरूपा बोली कि भूखा खाने के विना तृप्त नहीं होता यह छिपी हुई बात जानकर प्यारी के साथ भोग करो शङ्खाने कहा कि अब गिरिजा को शिव के साथ भेज दो जहां अच्छा मन्दिर पुष्पोंसे सजा हो और वहां रत्नों का दीपक जलता हो इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिव ऐसी २ हास्य की बातें सुनकर अतिलज्जित हुये और कहा कि हम तुम सब स्त्रियों के हाथ जोड़ते हैं और विनय करते हैं कि हमारे समीप ऐसी बातें मत कहो तुमतो संसार की माता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हो हम तुम्हारे पुत्र के तुल्य हैं ऐसी लाघवता तुमको उचित नहीं यह वचन सुनकर सब स्त्रियां लज्जित होगईं और चित्र समान चुप होकर रहगईं उस समय शिव को प्रसन्न पाकर रति बोली कि हे शिवजी ! तुमने तो अपनी स्त्री को पाया और प्रसन्न हुये पर तुमने मेरे पति को वृथा ही जलादिया अब आशा रखती हूं कि मेरे पति को जिलादीजिये इस समय सर्वसंसार में मेरे विना सबको आनन्द है यह कह रति रोनेलगी जिससे सबको बड़ा दुःख हुआ और रति ने जो अपने पति की जलीहुई भस्म बांधे थी उसको खोलकर शिवजी के आगे खड़ी होगई रति का रोना सुनकर सब स्त्रियां रोनेलगीं शिव ने रति का रोना और देवपत्नियों का शब्द सुनकर एकबेर अमृत दृष्टि से देख दिया कि तुरन्त कामदेव अपनी भस्म से उत्पन्न होगया रति अतिप्रसन्न हुई और कामदेव शिवजी की स्तुति करने लगा शिवजी ने कहा कि तुम कुछ शोच मतकरो और बाहर बरात में जाबैठो कामदेव ने निवासस्थान में जाकर हमको और विष्णुजी को प्रणाम किया हमने अशीष दी कि तुम शिव और गिरिजा के प्यारे हो अब तुमको कोई भय नहीं तथाच कामदेव स्थित हुआ और शिवजीने गिरिजा को अपने वामभाग में बैठाकर भोजन कराया और आप भी भोजन किया और फिर स्त्रियां अतिप्रसन्नता से शिवजी और गिरिजा को मुख्य अन्तःपुर में लेगईं जो नाना प्रकार के विचित्रवस्तु और रत्नादि से भूषित था और उसको अपने हाथ से विश्वकर्मा ने बनाया था दोनोंने एकही जड़ाऊ सेजपर बैठकर पान खाया और शिवजी इधर उधर मन्दिर को देखनेलगे देखा कि वहां स्वर्ण का दीपदान और सोने के कलश उत्तमोत्तम सोने के शीशे ठौर २ पर रक्खेथे और चारोंओर मोतियों की झालरें लगी हुई थीं और चन्दन कस्तूरी अगरआदि से मन्दिर सुगन्धित होरहा था और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विष्णुलोक ब्रह्मलोक इन्द्रलोक और गोलोक कि जिसमें रासमण्डल गोपियों का होरहा था उनके चित्र लिखे थे और कहीं पर कैलासपर्वत बना हुआ था जहां बुढ़ापे और मौत का भय नहीं ऐसी २ चीज़ें देख कर शिव अतिप्रसन्न हुये वहां पर शिव और गिरिजा ने नाना प्रकार के बिहार किये जब प्रभात हुआ तो चारों ओर से बाजे बाजनेलगे और देवता और मुनिआदि पूर्ववत् जयकार आनन्द करनेलगे विष्णु जीने धर्मराज से कहा कि तुम जाकर उपायसे शिवजीको निद्रा से जगाकर उठावो धर्मराज ने जाकर कहा कि महाराज कृपा करके उठिये और बासस्थान में चलकर सबको आनन्द दीजिये शिवजी ने धर्मराज की यह बात सुनकर हँसे और कहा तुम चलो और फिर बिछौनेपर से उठकर लज्जा से शिर नवाये चलनेकी इच्छा की और बड़ोंकी आज्ञा पाकर अपने बासस्थान में मन में हँसते हुये चले॥

साठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब शिव निवासस्थान में गये तब हमने सब देवताआदि को बुलालिया और सबने मिलकर शिव को प्रणाम किया और फिर विष्णु और हमने उच्चस्वर से कहा कि हे नारद और सप्तऋषियो! तुमने बड़ी कृपा की केवल तुम्हारी कृपा से बिवाह हुआ जिससे आज के दिन कितना आनन्द फैल रहा है फिर विष्णु और हमने बहुतसा दान दिया और हिमाचल से बिदा मांगी हिमाचल बहुतलोगों समेत आकर विनय करने लगा कि हे देवतो! हमको मत छोड़ो यद्यपि मुझसे आपलोगों की कुछ सेवा न बनपड़ी सेवा तो क्या मैं तो आपके चरणभी न धोसका मैं अति-लज्जित हूं और केवल झूठानाम ज्यवनार का करके वृथा ही आपके आहार विहार का विघ्नकर्ता हुआ और केवल छिउल के पत्ते आप लोगों के आगे रखकर आपका समय वृथा गँवाया यहां तक कि

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुष्प भी आपलोगों की भेंट न करसका मैं अतिलज्जित हूं आशा रखता हूं कि आप मेरी छुटाई का विचार न रखकर फिर मेरे गृह को पवित्र कीजिये इसके उपरान्त हम और विष्णुजी और सब देवताओं ने कहा कि तुमको धन्य है हमने ऐसा आनन्द कहीं नहीं उठाया इस प्रकार का मनहरण ठौर और भोजन नहीं मिला तुम कल्पवृक्ष हो ऋद्धि सिद्धि तुम्हारी चेरी हैं तुम्हारे घर जगदम्बा उपजीं तुम्हारे समान संसार में और कौन है तुम धन्य हो और तुम्हारी सभा और नगर धन्य है जहां शिवजी आकर सुशोभित हुये इसी प्रकार दोनों ओर से बड़े नम्रता के वचन प्रकट हुये फिर हिमाचल बरात को अपने घर भोजन कराने को लेगये और बरात को भोजन कराने लगे स्त्रियां गालियां गानेलगीं जिनका आशय यह था कि हे शिवजी! यद्यपि तुम अपनी सम्पूर्ण सामग्री अशुभ रखते हो पर अपने भक्तों को सब कुछ देते हो शिव ने यह वचन सुन वरदान दिया कि जो इसको पढ़ेगा वह सर्वदा प्रसन्न रहेगा॥

इकसठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इस प्रकार तीन दिनतक हिमाचल ने विनती करके बरात को जाने न दिया चौथे दिन हमने पश्चिम मुखसे शिव गिरिजा को बिठलाकर होम कराया और लखौर से दूर चोभी जुवे और गोलीआदि की जो रीतें शेष थीं वह सब पूरीगईं फिर अभिषेक कियागया और सब ने अशीशें दीं फिर सब बरात को भोजन दियागया और निवासस्थान में आकर रातभर सब देवता आदि ने हिमाचल की स्तुति में भोर करदिया जब प्रभात को हिमाचल से बिदामांगी तो हिमाचल अतिविनयपूर्वक आज्ञा न देकर कई दिनतक बरात को ठहराये रहे और हिमाचल के शील और प्रीति की अधिकता से किसीको यह इच्छा न हुई कि ऐसी संगति छोड़ दें सो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबने वहांके रहने को और संगति को उत्तम जाना और जब कुछ दिनों पीछे बिदा होने का वचन मुख पर लाये तो हिमाचल अपने को वियोग के दुःख को उठानेवाला न समझकर चुप होरहे देवताओं ने बहुत समझा कर हिमाचल की बहुत स्तुति की और कहा कि शिव परब्रह्म जिनके हम सेवक हैं तुम्हारे घर आये तुमसे अधिक संसार में कौन भाग्यवान् है यह कह सब देवता और मुनि आदि दुःख की अधिकतासे लौट आये और कुछ कोई किसी से न कहसका निदान निरुपाय होकर हिमाचल ने लज्जा से एक सभा इकट्ठी कर सब से कहा कि शिव बिदा होनेवाले हैं यह सुन सबके चेत जाते रहे और सब मुरझागये पर हिमाचल ने गुरु की आज्ञा से सर्वप्रकार की सामग्री विद्यमानकर बरात को घर के अन्दर बुला लिया सो बरात के लोग आये और हमने शिव गिरिजा को बीच में बैठा दिया और गौरी गणपति की पूजा कराकर सब काम जो करने के योग्य थे पूरे करा दिये और हिमाचल ने दहेज में पकवान, फल, हाथी, घोड़े, रथ, लौंड़ी, चाकर, गौआदि इतना दिया जिसकी संख्या नहीं हो सक्ती इसके उपरान्त हिमाचल ने मैना और सब परिवार समेत खड़े होकर हाथ जोड़ विनय की कि हमारे बड़े भाग्य से गिरिजा ऐसी पुत्री हमारे घर उपजी जिससे हमारा कुलभर पवित्र होगया मुझको आशा है कि जो ढिठाई या अपराध मुझसे हुआ हो वह आपलोग क्षमा करें यह सुनकर सब देवता बोल उठे कि हे हिमाचल ! तुम मुक्त होगये क्योंकि शिवजी ने तुमपर दया की है और क्योंकि तुमने गिरिजा को शिवजी के साथ बिवाह दिया यह हमपर बड़ी कृपा हुई और इसी प्रकार देवताओं ने मैना से बड़ी स्तुति की फिर शिव और गिरिजा के गुणों का वर्णन होनेलगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बासठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! फिर हिमाचल और मैना समेत सर्व कुल बार २ शिवजी की स्तुति करनेलगा फिर सब बरात बासस्थान में आई और फिर हम सब बिदा होने के लिये हिमाचल के द्वारपर गये और शिवजी हिमाचल के घरके भीतर गये जहां सब स्त्रियां इकट्ठी होकर शिव को बिदा करनेलगीं शिवजीने कहा कि बरात सब बिदा होगई मुझेभी आज्ञा दो कि बिदा होजाऊं यह सुन मैना ने बड़े प्रेम के साथ शिवजी को गिरिजा सौंपी और कहा कि यह गिरिजा मुझे प्राणसे भी अधिकप्रिय है और अभी इसकी छोटी अवस्था है और अति कोमलाङ्गी इसको संसार की रीति अबतक मालूम नहीं और बहुतसीधी है आप इसको प्रीति और कृपा से रक्खें और इसके अपराध क्षमा करना मैं तुम्हारे निछावर होती हूं इसको अपनी लौंड़ी के समान प्रसन्न रखना यह कह शिवजी के चरण पकड़ मोहित होगई शिवजी बोले कि तुम और हिमाचल धन्य हो जिनकी संसार में सब स्तुति करते हैं तुम अपने कुल परिवार समेत मुक्ति पावोगे देखो हमको भक्तजन वैर भय प्रीति भक्ति और सम्बन्ध हर प्रकार से पाते हैं यह कह और मैना से बिदा हो शिवजी हिमाचल के समीप आये और हाथ जोड़ खड़े हो बिदामांगी हिमाचल अति प्रेम और भक्ति से अश्रु-पात कर कहनेलगे कि हमारे अपराध क्षमा करना और मुझे अपना चेरा समझ सब दुःख दूर करना यह कह शिवजी को बिदा किया और बरात बड़ी धूमधाम से चली और सर्वप्रकार के बाजे बजने लगे ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! शिवजी तो इस तरह बिदा होकर नगर के बाहर स्थित हुये और मुनियों ने हिमाचल से कहा कि अब गिरिजा को भी बिदा कीजिये जब यह सन्देशा भीतर मैना के पास भेजा तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मैना प्रीतिसागर में डूबगई और नगर भर की स्त्रियों को बुलाया सो वह सब सज सजाकर गिरिजा को बिदा करने आईं मैनाने गिरिजा को स्नान कराय विचित्र वस्त्राभूषणों से अलंकृत किया और सब स्त्रियां गिरिजा के भाग्य का बखान करने लगीं और फिर ब्राह्मणों की स्त्रियों ने गिरिजा को पातिव्रतधर्म की शिक्षा की और कहा हे गिरिजे ! अपने पति की सेवा लोक में अतिआनन्द देनेवाली है सो तुम रात दिन सेवा में लगी रहना इसके समान कोई तप स्त्री के लिये दूसरा नहीं है यद्यपि माता पिता अपनी संतान के बड़े हितैषी हैं पर वे अपनी संतान को मुक्ति नहीं देसक्के संसार में चार वस्तु अतिसुखदायक हैं पहिले प्रियतम दूसरे धर्म तीसरे स्त्री चौथे सन्तोष पर इन चारों की परीक्षा आपत्तिकाल में होसक्ती है वेद कहते हैं कि अपना पति चाहे मूर्ख व रोगी व दरिद्री लँगड़ा काना दया न रखनेवाला व्यभिचारी छली धूर्त कठोर वा नम्र अथवा उसमें किसी प्रकार का दोष हो पर तो भी स्त्री को उचित है कि उसको शिवजी और विष्णुजी के समान समझे यह स्त्रियों के लिये मुक्ति का बड़ा द्वारा है जो स्त्रियां अपने पति की प्रतिष्ठा नहीं करतीं वे निस्सन्देह सीधी नरक में जाती हैं और उनको कोई भी करोड़ों कल्पतक नरक से नहीं निकालसक्ता इसलिये स्त्रीको सब छोड़ केवल अपने पति की सेवा करनी उचित है स्त्री को उचित है कि मन कर्म वचन इन तीनों से अपने पतिकी सेवा करे उसके लिये यही बड़ा धर्म, तप, व्रत, योग, जपादि है और वेदों में लिखा है कि चारप्रकार की पतिव्रता स्त्रियां होती हैं पहिली उत्तमा वह है जो स्वप्नमें भी दूसरे पुरुषका मन में विचार न लावै दूसरी मध्यमा जो दूसरे पुरुष को अपने पुत्र व पिता व भाई के समान समझे तीसरी निकृष्टा जो अपने धर्म का विचार करके दूसरे पुरुष की संगति से बची रहे चौथी अतिअधमा जो अपने पति व कुलके भय से दूसरे की संगतिसे

In Public Domain. Chambal Archive. Et...

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi, and eGangotri

बचजावे और समय का भय न करना यह भी चौथे प्रकार की स्त्री में गिनागयाहै पतिव्रता स्त्रियों की बड़ी प्रतिष्ठा है और जो स्त्री अपने पति को छोड़ यारों के साथ भोग करें वह असंख्य कल्प पर्यन्त रौरव नरक में बास पाती हैं वह पुंश्चली स्त्रियां केवल एक क्षणभर के आनन्द के निमित्त बहुत युगोंतक नरक दुःख उठा पछिताती हैं स्त्रीसे चाहे करोड़ों पाप हुयेहों पर वह केवल अपने पतिव्रतधर्म से परमपद पाती हैं और शिवजी जितना स्त्रियों पर कृपा करते रहे हैं उतना दूसरों पर नहीं और यह भी प्रकट हो कि और सब धर्म प्रयास विना प्राप्त नहीं होते पर स्त्रियों का धर्म केवल परिश्रम रहित है क्योंकि वह अपने पति की सेवासे मोक्ष प्राप्त करती हैं जो स्त्रियां अपने पति के विरुद्ध होती हैं वे निस्सन्देह नारकी हैं उनकी पहिचान यह है कि वह दूसरा जन्म धारणकर युवावस्था मेंही विधवा होजाती हैं या पतिसहित भी हैं पर उसी प्रकार के पापों को भोगती हैं यद्यपि स्त्री की जाति भ्रष्ट प्रसिद्ध है पर जो स्त्रियां अपने पति की सेवा करती हैं वे पवित्र हैं वेद भी पतिव्रता स्त्रियों की बड़ाई करते हैं उसकी समानता संसार में किसीको प्राप्त नहीं है स्त्री को उचित है कि पहिले अपने पति को भोजन कराकर पीछे आप खावे और पति के सुलाने के पीछे आप सोवे उसको बिठलाकर आप बैठे और अपने पतिसे किसी अवस्था में क्रोधित न होवे और न अपने पतिका नाम मुखपर ले और जब पति उसको बुलावे अपने घर के सब काम छोड़ उसके पास जावे और हाथ जोड़ विनय करे कि क्यों आपने इस दासी को स्मरण किया है फिर जो पति आज्ञा दे उसको हठ विना पूरा करे और द्वारपर देरतक खड़ी न रहे और अपने पति के सब धन द्रव्य की रक्षा करे और कोई वस्तु अपने पति की आज्ञा विना अपने आप न दे और आप पति का जूठाखावे और कोई भी व्रत पति की आज्ञा विना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न रक्खे और किसी नाच गाने की सभा को न देखे और ऋतु के दिनों में अपना मुख तीन दिनतक पति को न दिखावे और जब तक स्नानकर पवित्र न होजावे तब तक कोई बात अपने पति को न सुनावे और स्नानकर पवित्र हो या तो अपने पति के कमलमुख को या जो पति न होवे तो पति का स्मरणकर सूर्य देखे इससे पति की आयु बढ़ती है और सदा अपने अलंकृत को रक्खे और नेत्रों में काजल लगाये रहे और बुरी स्त्रियों से प्रीति और संगति न रक्खे अपने मुख से पति के निन्दा की बात न निकाले और एकान्त में न रहे और दूसरे के घर जाकर नङ्गी न होवे और न ढिठाई करे जहां जहां अपने पति की प्रसन्नता और इच्छा देखे वहां अधिक आपभी प्रीति बढ़ावे और अपने पति को किसी में न छोड़े आपत्तिकाल में भी पति को एकसाही देखे जो घर में कोई वस्तु कम होजावे तो अपने पति से न कहे पर ऐसी युक्ति करे जिससे उसका पति जान जावे ऐसी रीति पकड़े जिससे पति को परिश्रम न पड़े यदि किसी तीर्थयात्रा की इच्छा हो तो अपने पति के चरणों को धोकर जल पी-जावे क्योंकि उसके लिये उसका पति विष्णुजी महादेवजी से भी श्रेष्ठ है जो स्त्री अपने पति की इच्छा विना व्रतादि करती है वह अपने पति की आयु को न्यून करती है और आप नरक में जाती है और जो स्त्री अपने पति को क्रोधित होकर उत्तर देती है वह स्यारिन होकर वन में रहती है स्त्री को उचित है कि ऊंची जगह न बैठे और न किसी स्त्री की बात करे और झूठ और बुरे वचन मुख से न निकाले और लड़ाई बखेड़े को तो अपने सामने आने न दे जो किसी समय उसका पति मारपीट करे तो स्त्री को क्रोध न करना चाहिये और न भागना चाहिये कदाचित् स्त्री क्रोध में पति के मारेजाने का उद्योग करे तो दूसरे जन्म में शेरनी होती है और जो स्त्री अपने पति को

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छोड़ आप अकेले मिष्टान्न भोजन करे वह मेढ़कनी होती है और जो स्त्री अपने स्वामी की दृष्टि बचाकर दूसरे मनुष्य पर काम की दृष्टि डाले वह कानी व कुरूपिणी आदि का जन्म धारती है जो स्त्री अपने भर्ता को बाहरसे आतेदेख आगेलेवे और नाना प्रकार की सेवा करे और अच्छे २ मीठे वचनों से प्रसन्न करे उसको हर जन्ममें बहुतही आनन्द मिलता है मानों उस स्त्री ने संसारभर को अपने ऊपर प्रसन्न करलिया देखो कुम्भज ब्राह्मण की स्त्री अनसूया ने इस धर्म से कितना आनन्द उठाया और वराह मुनि को अपने तेज से जलाकर दूसरे एक ब्राह्मण को जिलाया और एक कथा पतिव्रता धर्म की मुनि कहते हैं कि एक तपस्वी तप करते थे एक बगली ने उनके शिरपर बिष्ठा करदी जब तपस्वी ने ऊपर देख दिया उसी समय बगली जलकर भस्म होगई तपस्वी ने जाना कि हमारा तप पूर्ण होगया इसी विचार से तप को छोड़ चलते फिरते एक पतिव्रता स्त्री के द्वारपर आये उसने तपस्वी की बड़ी सेवा की और द्वारपर तपस्वी को ठहराकर आप घर में दान के लिये बस्तु लेनेगई संयोग से उसके पति ने घरमें किसी काम को कहा वह उसी कार्य में लगगई और वह बात स्मरण से जातीरही जब वह पति की सेवा करचुकी तो दान लेकर द्वारपर आई उसको देख तपस्वी ने क्रोधित होकर शाप देने की इच्छा की स्त्री ने कहा कि मुझको भय नहीं है क्या मैं बगली हूं इतनाक्रोध क्यों करते हो इतना सुन तपस्वी का अहंकार टूटा और बारम्बार प्रशंसाकर इस बातको निश्चय जाना कि पतिव्रताधर्म सब धर्मों से बड़ा है इस लिये हे गिरिजे! तुम इस बातपर भली भांति निश्चय करो कि संसार में पति से बड़ा स्त्री के लिये कोई देवता नहीं है॥

चौंसठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मैनाने बहुतसी बातें इसी प्रकार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की गिरिजा को सुनाकर फिर उसके बिदा करने की इच्छा की और गिरिजा के वियोग का दुःख स्मरणकर अतिदुःखी हुई और गिरिजा को बार बार लिपटाकर फिर छोड़ दे और फिर लिपटा ले इसी प्रकार शिवजी की सेवा के लिये बारम्बार कहती हुई धाय धाय रोने लगी और कहा कि दूसरे के फन्दे में पड़कर कुछ आनन्द नहीं मिलता और गिरिजा भी प्रीति से चरणों पर गिरपड़ी और मूर्च्छित होगई मैनाने उसे अपनी छाती से लिपटालिया फिर गिरिजा की सखियां गिरिजा को मैनासे छुड़ाकर लेचलीं और इसी प्रकार गिरिजा हर एकसे बिदा होकर आप रोती और दूसरों को रुलाती चली यद्यपि सब स्त्री पुरुष प्रेम के वश में थे पर गिरिजा की सखियों को बहुत ही दुःख था उस समय मानों वियोग रूपही धारकर हिमाचल पर्वत पर स्थित हुआ ऐसी ऐसी बातें कहकर गिरिजा रोतीथी कि जिसको सुनकर बड़े धैर्यवान् अधीर होते थे यहांतक कि पशु पक्षी भी रोने लगे और हिमाचलकोभी बड़ा दुःख हुआ यद्यपि बहुत गम्भीरता की पर सह न सके वह भी धाय २ रोनेलगे और कोई पण्डित ज्ञानी शेष न रहा जिसको उस समय शिवाय रोने पीटने के कुछ ज्ञान रहा हो तब ब्राह्मणोंने हिमाचल और उसके मित्रों से कहा कि शुभ समय जाता है वेगही बिदा करो हिमाचल ने निरुपाय होकर गिरिजा को पालकी पर सवार कराकर स्त्रियों का धर्म सिखाया और मैना और सब स्त्रियां और पुरुष एकमति होकर गिरिजा को आशिष देनेलगे और हिमाचल ने वह दासियां जिनको गिरिजा चाहती थी वह सब शिवरानी को देडालीं और जितने तोता, कोकिला, सारिकाआदि मधुरवाणी के पक्षी गिरिजाके थे सब साथ कर दिये और सब गिरिजा को देकर बिदाकिया गिरिजाके चलने के समय मार्गमें शुभ शकुन हुये तब बाजा बजनेलगे और प्रसन्नता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की सब बातें दिखाई देनेलगीं और धन द्रव्य बहुत लुटाया गया और हिमाचल और शिवजीकी ओर से जिन २ मनुष्योंको उचित था हाथी घोड़ा आदि धन समेत दियागया हिमाचल ने चलने के समय अपने पुत्र समेत बिनती की कि हम कुछ दूरतक आपके साथ चलेंगे जब कुछ दूरतक गये तो देवताओंने हिमाचल को बिदा किया हिमाचल यह कहकर कि मुझे तीनों लोक में बड़ाई प्राप्त हुई और सब को प्रणामकर बिदा हुये और शिवजी से विनय की कि मुझे आप अपनी भक्ति कृपा कीजिये और बड़ी स्तुति की शिवजीने प्रसन्न होकर हिमाचल को बिदा किया और हिमाचल के यहां जितने कि बुलाये हुये लोग आये थे वह भी बिदा हुये और विन्ध्यपर्वत ने हिमाचल से कहा कि तुम शिवजी से सम्बन्ध करके हम सब से श्रेष्ठ हुये जब शिव कैलास में बरात समेत पहुँचे तब हर प्रकार के आनन्द की सामग्री इकट्ठी हुई बाजा बजनेलगे और शिवजी की आरती उतारीगई और शुभलग्न पाकर शिव गिरिजाने मन्दिर में प्रवेश किया॥

पैंसठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मन्दिर में प्रवेश करने के उपरान्त सर्वास्त्रियां इकट्ठी होकर दोनों शिव गिरिजा की आरती उतारनेलगीं और नाच गाना और फूलों की वर्षा होनेलगी और विष्णु और हम सबने दोनोंका पूजन किया और हम सबको ऐसा आनन्द प्राप्त हुआ जैसे गूंगे को वचन और दरिद्री को धन और अन्धे को नेत्र और योगी को योग और रोगी को अमृत प्राप्त होने से बरन इससे कोटि भाग अधिक प्रसन्नता हुई और हम सब ने अलग २ एक स्तुति पढ़ी जिससे शिव अति प्रसन्न हुये और सबको उत्तम उत्तम भोजन दिया इसी प्रकार कई दिनतक हम सब कैलास पर्वत पर रहे फिर बिदा होने की आज्ञा मांगकर यह बिनय की कि जो हम सबका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनोरथ है वह आप भले प्रकार जानते हैं सो क्रमपूर्वक सब बिदा हुये और शिवजी ने विष्णु और हम से कहा हमको तुमसे अधिक कोई प्रिय नहीं है तुम्हारे कहने से मैंने गिरिजा के साथ बिवाह किया अब तुम अपने लोकको जाओ तुम्हारे सब काम पूर्ण होंगे तारक दैत्य वेगही यमलोक में जावेगा तुम सब देवताओं को निर्भय करदो और हमारी सेवा में कोई बात न भूलियो यह कह शिवजी हँसे और चुप होरहे और विष्णु और हमभी हँसकर बड़े आनन्द से जय जय शिव शम्भू कहते हुये बड़ी स्तुति करके चले बरात के चलेजाने के उपरान्त शिवगण उनकी सेवा करनेलगे शिवजी संसार के पिता और गिरिजा संसार की माता हैं हम उनका शृङ्गार क्या वर्णनकरें शिवसमान संसारमें और कौन सहायकहै उन्होंने परब्रह्म होकर संसार के दुःख दूरकरने को बिवाह किया कि यह लीला हमारी संसारी जीव कहकर और सुनकर मोक्षप्राप्तकरें यह शिवगिरिजा का बिवाह अति मङ्गलदायक है जो इसको न सुने वह पशु है इस संसार में मुक्ति मिलनेकी इससे अधिक और कोई युक्ति नहीं कि शिवजी का यश गावे यद्यपि उनका यश अनन्त है पर जितना सुने उसके लिये उसकी भलाईको उतनाही बहुत है जो इस कथा को प्रीतियुक्त सुनेगा वह प्रसन्न रहकर शिवजी के समान होजावेगा और जो इस कथाको दूसरों को सुनावेगा वह भी आनन्द में रहेगा जो थोड़े में भी थोड़ा पढ़ा करेगा वह भी धन्यता के योग्य होगा जो चारोंवर्ण इस कथा को पढ़ेंगे मुक्ति पावेंगे और उनके सर्वरोग दूर होंगे और अन्त में मुक्ति मिलेगी ॥

इति श्रीशिवपुराणेश्रीशिवविलासेतीर्थखण्डेब्रह्मानारदसंवादेसाङ्गो-
पाङ्गशिवगिरिजाविवाहवर्णनन्नामतृतीयखण्डस्समाप्तः ॥ ३ ॥

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐगणाधिपतये नमः ॥

शिवपुराण भाषा ॥

चतुर्थखण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

इतना सुन शौनक ने कहा कि हे सूतजी ! शिवजी का बिवाह सुन नारदजी ने ब्रह्मा से फिर क्या पूछा सूतजी बोले कि नारद ने ब्रह्माजी से यह प्रश्न किया कि मैंने बहुत कुछ वेदपुराणों में पढ़ा पर मेरे मन की तृष्णा न गई मैं संसार भर में फिरता रहा पर शिव का तत्त्वभेद न मिला फिर विष्णुजी के कहनेके अनुसार मैंने आपकी सेवा में पहुँचकर थोड़ासा शिवजीका चरित्र सुना तो मन को उत्तम रीति से पूर्ण धैर्य प्राप्त हुआ और मुझको इस बात का पूरा विश्वास होगया कि शिवजी का चरित्र संसार के लिये बहुत ही आनन्द म-ङ्गल देनेवाला है और शिवके तप बिना संसार में किसीको कुछभी सुख नहीं मिलता और न किसीके दुःख और रोग नष्ट होते हैं सो अब मुझे यह इच्छा है कि आप मुझसे यह वर्णन करें कि जब शिवजी गिरिजा के साथ बिवाह करके कैलास पर्वतपर सुशोभित हुये तो फिर उन्होंने कौनसे भक्तोंके सुखदायक चरित्र किये और हिमाचल ने बिदा होकर कौन २ कार्य किये और तारकदैत्य का वध और कार्त्तवीर्य की उत्पत्ति और त्रिपुरासुर का प्राकट्य आदि सब सुना दीजिये क्योंकि आपसे अधिक तीनों लोक में कोई शैव नहीं है और न आपके बराबर कोई शिवजी के चरित्र का जाननेवाला है यह प्रश्न सुनकर ब्रह्माजी अतिप्रसन्न हुये और शिवजी के प्रेमानन्द में डूबगये थोड़ी देरके पीछे ब्रह्मा ने कहा कि हे पुत्र ! तुमको धन्य है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और तुम्हारी बुद्धि धन्य है मुझको इस बातका भलीभांति विश्वास हुआ कि तुम्हारे मनमें शिव की स्थिति होगई अब सुनो कि जब सदाशिव गिरिजा को बिवाहकर घर लाये तब देवताओं का मनोरथ समझ तारकासुर के वध की इच्छा की अर्थात् हम विष्णु और सब देवता बिदा होकर अपने घरोंको गये और शिवजीकी कृपा का भरोसा रक्खा पर कोई बात प्रकट न हुई तो एक समय सब देवता मुनि आदि एकस्थान पर इकट्ठे हुये और सम्मति करके कहनेलगे कि बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनी देर हुई और हमारा कार्यसिद्ध न हुआ फिर तेज अर्थात् अग्नि से कहा कि तुम चातुरता से शिवजी के समीप जाकर देखो कि वे क्या कररहे हैं और यद्यपि इतना समय व्यतीत होगया और हमारी सुधि शिवजी ने न ली यह आज्ञा पाकर अग्नि देवता बिदा होकर कपोत का स्वरूप धारण कर शिवजी के निवास-स्थान में पहुँचे और विष्णुजी और हम सब देवताओं को साथ लेकर कैलास पर्वत पर गये जोकि सब लोग अतिचिन्तित और दुःखीथे और जब शिवजी को वटवृक्ष के नीचे न देखा तो हम सबों ने गणों से पूछा कि महाराज सदाशिवजी कहां हैं गणों ने उत्तर दिया कि वे तो बहुतसमय से घरके भीतर गिरिजा के पास हैं बाहर नहीं आये हम क्या जानें कि शिवजी घर के भीतर क्या करते हैं यह सुन विष्णुजी और हम और देवता आदि सदाशिवजी के द्वारपर गये और बहुत ऊंचे शब्द से पुकारे शिवजी शब्द सुन तुरन्त गिरिजा को छोड़ बाहर आये जब हमने उनका दर्शन किया तो स्तुति करने लगे उस समय हमको अनन्त प्रेमने घेर लिया यहांतक कि प्रसन्नता से हम सब रोने लगे और कहा कि हम सब आपकी शरण में आये हैं आशा रखते हैं कि आप कृपा करके हमारे दुःख को दूर करें आप को वेद ब्रह्म सगुण और निर्गुण करके कहते हैं आपकी कृपाकटाक्ष

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से हमारा कार्य सुधरता है हम आपकी महिमा कहांतक वर्णन करें आपकी महिमा नारद, शारद, शेष, वेद कहकर थकजाते हैं और अन्तको अपनी मूर्खता बताते हैं आपकी कृपा से एक मूर्ख मनुष्य भी आपके चरित्र और महिमा वर्णन करसक्ता है जैसे कि सन्त और वेद कहतेहैं आप भक्ति और तपके अधीन हैं और दया के समुद्र व सर्वसंसार के स्वामी हैं आप तो निर्गुण और ब्रह्मा विष्णु हर से श्रेष्ठ हैं और गुणनिधिआदि ने आपकी सेवा से जो कुछ पाया वह उदय से अस्ततक प्रसिद्ध है कुछ वर्णन करने की आवश्यकता नहीं हमारी ओर क्यों दयादृष्टि नहीं करते हम आपकी शरण में आये हैं अब हमको बहुत सुख देना चाहिये आप सगुण स्वरूप केवल हम भक्तों के उपकार के लिये धारण करते हैं ऐसी स्तुति शिव की पढ़कर हम और विष्णु सब शिव के आगे शिर झुकाये खड़ेरहे॥

दूसरा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह देवताओं की बनाई हुई स्तुति शिवजी ने सुनकर प्रसन्नता और हर्ष से हँसकर कहा कि तुम सब जिसकार्य के निमित्त आये हो वह विस्तार से वर्णन करो यह सुन सब देवताओं ने हाथ जोड़ विनय की कि अपना सब विहारानन्द छोड़कर देवताओं का काम पूरा करो शिवजी ने कहा कि अच्छा हमारा वीर्य जाता है जिसको शक्ति हो वह धारण करले विष्णु ने अग्नि से सैनकी और शिवजी ने विष्णुजी की इच्छा जानकर वह वीर्य पृथ्वीपर डालदिया और अग्नि ने देवताओं की आज्ञा पाकर तुरन्त उसको धारण करलिया अग्नि कपोत का शरीर धारणकर अपनी चोंच से वीर्यको निगल गया और अपने घर की ओर उड़ गया हे नारद! शिवजी की माया धन्य है कि जिसके वश में संसार भर है जब शिवजी के लौटजाने में विलम्ब हुआ तो गिरिजा चिन्तित होकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहां सब देवता शिवजी के पास खड़े थे आई और इतना क्रोध प्रकट किया कि सब देवता भयभीत हुये और गिरिजा ने होंठ चाब कहा कि हे देवताओ! तुम सब अपने मतलब के यार हो बिन प्रयोजन तुम किसी के मित्र नहीं तुमने अपने प्रयोजन के लिये मुझको बांझ करदिया मुझको और शिवजी को अपने पास बैठालरक्खा कदाचित् मुझे अप्रसन्न करके अपना मनोरथ पूरा हुआ जानते हो तो यह बात स्वप्नमें भी न होगी और जो कि तुम हमारे विहारके विघ्नकर्ता हुये इससे तुम्हारी सब स्त्रियां बांझ होंगी यह देवताओंको शाप देकर अग्निसे कहा कि हे भाग्यहीन वह्नि! तू इतना दुष्ट है कि तूने भक्ष्याभक्ष्य का कुछ विचार न किया अब तुम सब चीजें खाया करोगे क्योंकि तुमने शिवजी का वीर्य खालिया है तुमको बहुत दुःख मिलेगा तूने शिवजी को नहीं जाना जब यह शाप गिरिजा ने अग्नि को दिया तब सब देवता आदि दुःखी हुये और शिव और पार्वती अन्तःपुर में गये और सब देवताआदि गर्भ धारणकिया सो सब अपने उदर को गर्भ से पूरित देख बहुतही लज्जित और दुःखी हुये निदान सब देवता मिलकर शिवजी की शरण में गये और शिवजी की स्तुति करने लगे कि हे देवताओंके देवता दीनजनों के रक्षक! हमारे ऊपर कृपा करो तुम्हीं तीनों देवता त्रिनेत्र तीनों भुवन के रखनेवाले तीनों वेद हो अब हमको मुक्त करो तुम त्रिमूर्ति तीनोंपद तीनों धाम तीनों अग्नि तीनों गुण और त्रिशूल धारण करनेवाले हो इसी प्रकार बहुतसी स्तुति सुनकर शिवजी प्रकट हुये जिनको देखकर देवता अतिप्रसन्न हुये और फिर स्तुति करके बोले कि हमारी सहायता करो और हमारे दुःख मिटावो हम आपके सेवक हैं हमारे प्राण बचाइये अब हमारी लोक में निन्दा होती है कि जबसे हमने गर्भधारण किया है तब से महादुःखी हैं हमारे हृदय जलेजाते हैं यह सुन शिवजी हँस-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पड़े और कहा कि हे विष्णो और सब देवताओ ! तुम तुरन्त वीर्य को मुख के मार्ग से बाहर निकाल दो कि हम प्रसन्न होजावें यह आज्ञा पाकर देवताओं ने तुरन्त वीर्य निकाल दिया जिसका वर्ण स्वर्णवत् मानों सोनेका एक पर्वत आकाशतक होगया और देवता ऐसे दुःख से छूटे पर अनल को यह शिव ने आज्ञा न दी और उसको कुछ भी आनन्द न हुआ तब अनल बहुत दुःखी होकर शिवजीकी स्तुति करने लगा,और महादुःखी होकर कहनेलगा कि हे देवताओंके देवता! अब आपको हमारी सहायता करनी चाहिये अब मैं क्या करूं मेरे इस कष्ट को दूर कीजिये और आज्ञा दीजिये कि अब मैं क्या करूं आपके चरण छोड़ कहां जाऊं अब वह उपाय बताइये जिससे यह मेरा दाह दूर हो शिवजीने कहा कि हमारे वीर्यको तुम स्त्रियों को देदो कि तुमको आनन्द मिले अग्निने धैर्य धारणकर विनयकी कि आपके वीर्य की ज्योति को स्त्रियां क्योंकर धारण करसकेंगी तब हे नारद ! तुमने शिवजी की आज्ञा से उत्तर दिया कि हे वह्नि ! जो स्त्रियां माघ मास में आग तापती हों उनके शरीर में तेज को बांटदो यह सुन अग्नि प्रसन्न होकर प्रभात को उठ नदी किनारे आग जलाकर बैठ गया उस समय बहुतसी स्त्रियां स्नान करनेको उस स्थान पर आईं क्योंकि शरदी ने उनको बहुत दुःख दिया और जलती हुई आग देखकर उनको आग तापने की इच्छा उपजी पर अरुन्धती ने समझ कर औरतों को आग तापनेसे निषेध किया सो अरुन्धती ने बहुतही मनाकिया पर किसीने न माना और आगके पास बैठकर तापने लगीं तब वह वीर्य धीरे २ निकलकर रोम के मार्गसे स्त्रियों के शरीर में प्रवेश करनेलगा जिससे अग्नि का बोझ हलका हुआ और वह अतिप्रसन्न होकर दाह को दूर हुआ देख मग्न होगया और वह स्त्रियां तुरन्त गर्भवती हुईं और दुःखी होकर अपने घरों को गईं वहां

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऋषीश्वरों ने यह दशा देखकर इतना क्रोध बढ़ाया कि वे स्त्रियां पक्षियों के समान उड़नेलगीं और अपनी यह अवस्था देख अति दुःखी हो हिमगिरि की पीठ में वीर्य को छोड़ दिया उसका तेज स्वर्णवत् झलकने लगा और फिर उठाकर गङ्गानदी में डालदिया जब वह वीर्य देवनदी में पड़ा तो नदी कांपकर बहनेसे थमगई और शिवजी के वीर्यको न सहकर दुःखी हो बड़ा नाद करनेलगी और उस वीर्य को अपनी लहरके अन्दर लाकर किनारे फेंकदिया उस जगह पर सरपत के बोझ पड़ेहुये थे वहीं वीर्य जाकर रुकगया और लड़केके स्वरूप से प्रकट हुआ तब आकाश से जय २ शब्द हुआ उस लड़के का अतिसुन्दर स्वरूप मुख नाक और हाथ बहुतही सुडौल और जलती हुई अग्नि के समानवर्ण नख अतिरक्त सुन्दरचरण जिसको देखकर करोड़ों कामदेव लज्जित होजावें तो उसी समय गिरिजा की दोनों छातियों से दुग्ध की धारा बहनिकली जिसको देख शिव और गिरिजा अतिप्रसन्न हुये गिरिजा ने शिवजी से कहा कि क्यों यह दूध हमारी छाती से निकला है शिवजी ने मुसकराकर कुछ न कहा॥

तीसरा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उस समय सब देवता, सिद्ध, मुनि और गण आदि इकट्ठे होकर बड़ा आनन्द मानते हुये फूलों की वर्षा करते कैलासपर पहुँचे अप्सरा नाचती किन्नर गाने बजानेमें लगे और गन्धर्वोंने प्रसन्न होकर आनन्द के बाजे बजादिये इसी प्रकार बड़ी धूमधाम से उत्सव हुआ और तीनों लोक में सबको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और सबके दुःख इकबारगी दूर होगये यह सब प्रकार के मङ्गल उसलड़के के उत्पन्न होतेही चारों ओर हुये उसी समय गाधिके पुत्र विश्वामित्र जो प्रसिद्ध ब्राह्मण हैं तुरन्त वहां आये सो उन्होंने उस लड़के की स्तुतिकर आदर किया वह बालक विश्वामित्र की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बनाई हुई स्तुति सुन प्रसन्न हो कहनेलगा कि हमारा संस्कार करो आजसे तुम हमारे पुरोहित हुये तुम तीनोंलोकों के मानके योग्य होगे विश्वामित्र ने विनयपूर्वक कुछ सोचकर कहा कि हम ब्राह्मण के घर नहीं उपजे जो आपका संस्कार करें मैं तो गाधिसे जो क्षत्रिय है उपजा हूं और नाम मेरा विश्वामित्र है यह संस्कारादि कार्य करना ब्राह्मण का धर्म है और उसीके योग्य है और को दुःख होताहै अब आप अपना वृत्तान्त कहिये कि तुम बालकरूप धारण किये हुये कौन हो तुम्हारे माता पिता कौन हैं वे दोनों तुमको छोड़कर कहां चले गये क्योंकि हम तुमको अकेला देखते हैं तुम्हारा तेज अद्भुत है आप ब्रह्मचारी या गृहस्थ हैं या तीनों देवताओं में से कोई हैं या आपही ब्रह्मस्वरूप बालरूप से प्रकट हुये हैं हमने ऐसा बालक आजतक नहीं देखा तुम तो उपजतेही बातें करके आनन्द देतेहो और अपने संस्कार के लिये मुझे आज्ञा देतेहो मुझ पर कृपा करके सच २ कह दो यह सुन लड़केने हँसकर कहा कि हे विश्वामित्र! हम अपना चरित्र तुमसे कहते हैं पर उसको अभी छिपारखना और पूछने पर भी किसी से न कहना हम गिरिजा और शिव के पुत्र हैं और दैत्यों को मार कर तीनों लोकों को आनन्द देनेवाले हैं फिर अपना प्रताप विस्तार से कह सुनाया और कहा कि हे विश्वामित्र! तुम ब्रह्मर्षि होकर सब ब्राह्मणों से प्रतिष्ठा पावोगे यहां तक कि ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठभी तुमको 'ब्रह्मर्षि' कहेंगे यह हमारा वर है और अब तुम शिव और गिरिजा की लीला को अप्रमेय समझकर हमारे संस्कार में विचार और विलम्ब मतकरो विश्वामित्र ने तुरन्त आज्ञा मानकर संस्कार किया तब शिवजी के पुत्र ने प्रसन्न होकर विश्वामित्र को वरदान देकर अपना पुरोहित किया उसीसमय अग्नि ने भी तुरन्त वहां पहुँच और शिवजी के पुत्र को देख बड़ा आनन्द माना और लड़केको प्रणाम किया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और विश्वामित्र ने जो बातें कहीं उनका उत्तर ठीक २ उस बालक से पाया और उस बालक ने अपनी सब कथा अनलसे वर्णन की और अग्नि और विश्वामित्र उस लड़के में पूर्णबल और प्रताप देख कर बहुत प्रसन्न हुये और अग्नि ने अपना लड़का समझकर उसको अपनी गोद में उठाकर छाती से लिपटालिया और मुख चूमा और अतिप्रीति से उस लड़के को अपना पुत्र माना और अतिप्रसन्न होकर बहुतसे अपने शस्त्र कृपा किये और शिवजीका पूर्णतेज उस बालक में स्थापन करके उसे असंख्य वरदान दिये और एक सांगि अर्थात् शक्ति कृपा की और अपना हाथ उसके शिरपर फेरा तब लड़केने कहा कि अब आप दोनों जावें क्योंकि अभी हमको बहुत से चरित्र करने हैं यह कह दोनों को विदाकर आप अनलकी दीहुई शक्ति हाथ में ले श्वेत गिरिपर चढ़गये और अतिभयानक शब्द से नाद किया कि मानों प्रलय हुआ चाहती है और फिर देवताओं के मनोरथ पूर्ण होने के लिये अपनी शक्ति पर्वत के शृङ्गपर मारी कि तीनोंलोकों में हाहा-कार होगया और पर्वत फटकर गिरपड़ा और उसके दो टूक होगये और बड़ाही शब्द हुआ उस समय महावीर दशपद्म राक्षस कालवश हुये जो पहिले वहां रहते थे और उतने उनके मारने को चले धरती कांप उठी तीनों लोक हिलगये और देवता और मुनि चिन्ताकर क-हने लगे कि यह क्या होता है पर कुछ भेद न समझे और इन्द्रादि देवता देखनेके लिये चले देखा कि गुह अर्थात् वही लड़का पर्वत पर खड़ा है और उस पर्वतने मनुष्यों के समान अपना रूप बनाकर इन्द्र से भेंट की और हाथ जोड़ इन्द्र से विनय किया कि हे इन्द्र! आप तीनोंलोक के राजा हैं सृष्टि की पालना आपका धर्म है इस समय मुझको बड़ा दुःख हुआ है इस बालक ने मुझको शक्ति मारकर ऐसा भयानक शब्द किया कि सर्वजीवों को दुःख पहुँचा धरती कांप उठी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और सब पर्वत वन नदी भी कांप उठे असंख्यजीव मरगये यह सब इस बालकने किया है जो खड़ा है नहीं मालूम यह कौन और किसका पुत्र है इसने इतना दुःख मुझे शत्रुता से वृथा दिया है हे इन्द्र ! आप इसको जल्दी से बध करडालें नहीं तो यह प्रलय ही कर डालेगा यह सुन इन्द्रने उस लड़के पर बड़ा क्रोध किया और कुछ छिपाहुआ भेद न जानकर उस बालकके मारडालने की दृढ़ इच्छा की और शिवजी की लीला से इन्द्रभी चूका और इन्द्र ने धावा करके वज्र उसकी दाहिनी कांख में मारा कि तुरन्त उस स्थान से एक मनुष्य उपजा जो बल पराक्रम में बराबर था जिसका नाम साष्य रक्खा गया और वह सबका मनोरथ पूरा करता है और साष्यने उपजतेही एक बड़ा भयानक शब्द किया कि इन्द्र ने क्रोधित होकर अपना वज्र बाईं कांखमें मरिदया कि एक दूसरा मनुष्य उपजा जिसको विसाष्य कहते हैं और उपजतेही वह भी नाद करने लगा इन्द्र ने क्रोधित होकर उस बालक के हृदय में अपना वज्र मारा पर कुछ फलदायक न हुआ और एक मनुष्य और प्रकट होकर खड़ा होगया उसका नाम नैगमेय कहते हैं वे तीनों पहिले बालक के सहायक होगये और चारों प्रलयकाल की अग्नि के समान प्रकट हुये और उस बालक ने अपने तीनों गणोंसमेत इन्द्र पर धावा किया इन्द्र उनका प्रलय करनेवाला तेज उनमें देख निर्बल हो कांप उठा और हाथ जोड़ उनकी शरण में आया और अपने सब शस्त्र फेंक दण्डवत् की और जो इन्द्र के साथ सेना थी उसनेभी आदर और मान करने से कोई बात उठा न रक्खी उस बालक ने इन्द्र की यह दशा देख कुछ ढाढ़स पाया और इन्द्र को अभय किया इन्द्र निर्भय होकर प्रसन्न हुये और सब देवताओं ने हाथ जोड़ स्तुति की और कहा कि तुम बालक नहीं हो बरन तुम तो ब्रह्म हो हमने तुम्हारा प्रताप नहीं जाना और अहंकार से यह दशा हुई अब तुमको न पहिं-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चान कर ग्लानिपूर्वक देखा कृपा करके हमारा सब अपराध क्षमा करदो हम आपकी शरण में हैं हमको अपनी शरण में लीजिये हमको इस बात का निश्चय है कि तुम ब्रह्मरूप हो किसी भक्त पर प्रसन्न होकर तुमने अवतार धारा है अब सच कहिये कि आप कौन और किसके पुत्र और क्यों उपजे तब बालक ने कहा कि हे इन्द्र! वेगही सिधारो और प्रसन्नतापूर्वक अपना राज्य करो यह कह बिदा किया और कुछ भी भेद न बताया और इन्द्र अपने राज्य में जापहुँचे॥

चौथा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! वही स्त्रियां जिनका हम पहिले वर्णन कर चुके हैं उसी समय स्नानके निमित्त उस नदीके तट पर आपहुँचीं और सुन्दर बालक देख उस बालक के निकट चलीआईं और बालक को अति सुन्दर पाकर हर स्त्री का मन चाहा कि इसको लिया चाहिये और सबने उठालेने की इच्छा की और कहनेलगीं कि यह बालक मेरा है हम इसको लेवेंगी हमारे गर्भसे उपजा है और परस्पर झगड़ने लगीं सो बालक ने उनके झगड़ेको इस प्रकार से दूर किया कि सबकी छातियों से दूध पिया इससे वह माता के समान होगईं और उसके असंख्य नाम रक्खेगये पार्वतीनन्दन १ सेनानी २ पावकभू ३ स्कन्द ४ गङ्गासुत ५ शरजन्मा ६ षण्मुख ७ गुह ८ आदि फिर उन स्त्रियोंने बालक को अपने घर लेजाकर बड़ा उत्सव मनाया और वेदके अनुसार कर्म किये वेद पढ़ाया और उनके जन्मका महीना कार्त्तिक की छठी थी और शुभलग्न और मुहूर्तमें उन्होंने जन्म लिया था और स्कन्द ने अपनी माताओं को विचित्र चरित्र दिखलाये एक दिन ब्रह्मा विष्णु और इन्द्र आदि सब इन्द्र की सभा में विराजमान थे कि हे नारद! तुमने उचित समय जानकर शिव के ध्यान के उपरान्त स्कन्द के जन्म का हाल वर्णन किया देवता बोले कि मालूम होता है कि शिव ने हमपर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृपा की कि अपने लड़के को उपजाया अब हमारे सबकाम पूरे होगये और हमारी प्रसन्नता का समय आया है यह बातें होरही थीं कि स्कन्द अपने लड़कों के साथ खेलते २ उसी स्थानपर पहुँचे सो ऐसा तेजवान् बालक देख मुनि और देवताओं ने पूछा कि यह कौन और किसका लड़का है और कहनेलगे कि इसको बुलाकर पूछना चाहिये इस सुन्दर स्वरूप से तृप्त होना उचित है उन्होंने लड़के को बुलाकर कहा कि तुम कौन हो स्कन्द बोले कि हम लड़के के स्वरूप से शिव जी हैं शिवजी वही हैं जो लोक के हित चाहनेवाले हैं और जिनका तुम ध्यान करते हो वही शिवजी का रूप हम हैं जिनको योगीजन ध्यान करके भी नहीं पाते हमको लोक में गुह कहते हैं विष्णुजी ने कुछ विचार कर कहा कि जो तुम शिवजी हो तो अपना स्वरूप दिखावो कि हमको इस बात का निश्चय होवे कि तुम वास्तव में शिवजी हो यह सुनकर स्कन्द ने अपने भयानक स्वरूप में विराद्रूप दिखाया कि जिसमें करोड़ों ब्रह्माण्ड इन्द्र उपेन्द्र वर्तमान थे सो सर्व सभा हर रोम में ब्रह्माण्ड देखकर कांप उठी और घबड़ाकर विष्णुजी और हमने शरण २ पुकारी और कहा कि वास्तव में आप शिवजी का रूप हैं अब आप अपना वही रूप धारण करलीजिये सो स्कन्दने मानलिया और वही रूप धारा फिर विष्णुजीने हाथ जोड़ स्तुति पढ़ी और कहा कि हे षण्मुख! शिव गिरिजा के पुत्र! तुम शिवजी का रूपही हो अब हम पर कृपा करो कि आज हमने अपना स्वामी पाया तुमतो अनादि निर्गुण और सगुण स्वरूप हो इस समय तुमने स्कन्द अवतार धारण किया इस प्रकार विष्णु ने बड़ी स्तुतिकर स्कन्दको विमानपर चढ़ाय हम और देवताओं समेत लेचले और शिवजी के मन्दिर की ओर हुये हर एक के मुखसे जय२ शब्द निकलता था और सब प्रकार के बाजे बजते थे कोई दान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करता कोई गाना गाता इस प्रकार से आनन्द मनाते हुये कैलास में पहुँचे और स्कन्द को शिवजी के पास लेजाकर खड़ाकिंया तब शिवजी गिरिजा को बड़ा आनन्द मिला और गिरिजा के स्तनोंसे दूध निकलपड़ा और वही दशा होगई जैसी कि पुत्र के उपजने में होती है शिवजीने पूछा कि यह किसका पुत्र है तब हे नारदजी! तुमने यह समझकर कि शिवजी यह चरित्र लीला के निमि करते हैं उत्तर देकर आरम्भ से अन्ततक सब समाचार कह सुनाया यह सुन शिवजी और पार्वतीजी ने बहुत प्यार करके लड़के को लिया और गोद में लेकर दूध पिलाया और दोनों शिवजी और पार्वतीजी बहुतही प्रसन्न हुये और सब शिवजीके गण लड़केको गोद में लिये हुये देखकर प्रसन्न होगये और स्कन्द को प्रणाम किया और वीरभद्र भैरव और नन्दी ने सेवकों के समान प्रणाम किया और विष्णु और हम और सब देवताओंने माथा झुकाकर आदर दिया तब विष्णु और हम और मुख्य २ देवताओं ने शिवजी गिरिजा की सेवा की पहिले विष्णुजी ने स्कन्द की नीराजन किया फिर लक्ष्मी और फिर हमने अपनी स्त्री सहित फिर इन्द्र ने शचीसमेत फिर सब देवता बराबर नीराजन स्कन्दजी का करते गये तब बड़ा उत्सव हुआ मुनीश्वर अपना मनोरथ पाते हुये जय जय करनेलगे बाजे बजे और सर्व प्रकार के आनन्द की सामग्री में कोई बात शेष न रही और स्कन्द शिवजी की गोद में खेलने लगे और वासुकि नाग का गला अपने दोनों हाथों से ज़ोर से पकड़ उसके साथ खेलने लगे और वासुकि नाग स्कन्द के चरणों पर लोटता था शिवजी ने स्कन्दजी का यह चरित्र देखकर बहुत हँसकर गिरिजा की ओर देख दिया गिरिजा ने भी हँस दिया तब विष्णु और सब देवताओं ने बिनती की॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पांचवां अध्याय ॥

देवतालोग बोले कि सब के स्वामी सबके दुःख दूर करनेवाले तुम निर्भय करनेवाली युक्ति धारण करो कि देवताओं की सब भीति दूर होजावे आपकी केवल कृपाकटाक्षही देवताओं के लिये बहुत है हम आपकी शरण में आये हैं हम पर कृपा कीजिये हमको अपना सेवक जान हमपर कृपा करते रहिये और संसार में जो आपका यश गाते हैं वह कुछ दुःख नहीं पाते और चाहे कोई मनुष्य करोड़ों युक्ति करे पर विना आपकी भक्ति के मुक्ति प्राप्त नहीं होती तुमने ब्रह्मरूप होकर हम सेवकों के उपकार के निमित्त अवतार धारण किया और विष्णु और ब्रह्मा और सनकादिक भी आपका बहुतही ध्यान करते हैं और आपको नहीं पाते सो हमारी भाग्य धन्य है कि हम आपको कैलास पर्वत में शरीर धारे आंखों से देख रहे हैं जो इस समय आपने अपना रूप शिशुवत् बनाया है उसको भी देखकर हमको कितनी प्रसन्नता प्राप्त होती है आपकी गति आपही जानते हैं इसी तरह देवताओं ने अतिनम्रता से बहुतही स्तुति की फिर विष्णु ने विनय की कि हे शिवजी! हमारे आनन्द देने के लिये स्कन्द को आज्ञा दीजिये कि तारक दैत्य का वध करें क्योंकि इनका अवतार इसी लिये हुआ है शिवजी ने हँसकर कहा कि हमने तो इसी लिये बिवाह किया था तुम सब जाकर अपना २ काम करो फिर शिवजी और गिरिजा ने अच्छी तरह से स्कन्द का प्यार किया और अति-प्रसन्न हुये फिर देवताओं ने स्कन्द के लिये शिव की आज्ञा लेकर पर्वत के निकट त्वष्टापुर में एक उत्तमोत्तम मन्दिर बनाया जिसकी सुन्दरता वर्णन नहीं होसक्ती उस मन्दिर में एक स्थान को अच्छी चीज़ों से सजाया उस मन्दिर के बहुत से खम्भे और झालर आदि रत्न और मोतियों से बनाये गये थे जब वह मन्दिर तय्यार होगया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब विष्णु ने हमारे समेत सब मुनियों को बुलाकर उस मन्दिर में स्कन्द का अभिषेक किया और सिंहासन पर बैठाला और विष्णु और हम सबोंने उनको संसारभर का और अपना स्वामी ठहराकर राज-तिलक किया और भेंट दी और अच्छेप्रकार सेवा कर शस्त्र भी भेंट दिये तब शिव और गिरिजा भी आगये और ऐसी देवताओं की सभा देख प्रसन्न हुये और अपनी सब सेना स्कन्द को कृपा की और पार्वती ने एक वस्त्र सब अस्त्रों पर पहिननेवाला ऐसा कृपा किया जो शत्रुओं के युद्ध में सर्वप्रकार के दुःखों से बचा रक्खे और विष्णु ने वैजयन्तीमाला देकर एक फूलों की माला अपने हाथ से बनाकर स्कन्द के कण्ठ में डालदी और हमने भी विष्णु के समान स्तुतिकर शरीर की रक्षा के निमित्त कई चीज़ें दीं और वरुण ने सवारी के लिये उनको कनकेता नाम बकरा दिया और मित्रावरुण ने चढ़ने को गरुड़ दिया और अरुण ने ताम्रचूड़ शस्त्र दिया उस समय चारों ओर से आनन्द दिखाई देता था हम और विष्णु और देवता आदि स्कन्द की स्तुति में लगे और सब स्कन्द के चरणों पर गिरपड़े ॥

छठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! ऐसे समय में एक ब्राह्मण जिसका नाम नारद था यज्ञ करता था वह अजमेध यज्ञ था उसको एक बकरे की आवश्यकता थी कि वह यज्ञ में बलि दे तथाच कनकेता स्कन्द का बकरा जो वरुण ने दिया था वह स्कन्द की इच्छा जानकर नारद ब्राह्मण की ओर भागगया और नारद ने उस बकरेको हर प्रकार से योग्य समझ पकड़ लिया और उसने यज्ञ की सब सामग्री इकट्ठी की संयोगसे वह ब्राह्मण किसी दूसरे ग्राम में किसी कार्य के निमित्त गया बकरा ब्राह्मण के जानेके उपरांत मंच उखाड़कर अपने घर भाग गया और सातोंद्वीपों की पृथ्वी को जीतकर पृथ्वी के नीचे चला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और शेषलोकपर्यन्त पाताल को भी जीतलिया और फिर ऊपर के लोकको चला प्रथम गले में रस्सी बाँधे हुये स्वर्ग को गया और आकाशको भी जीत लिया और सर्वब्रह्माण्ड पर विजय पाकर विष्णुपुरी में पहुँचा वहां खलबली पड़गई और वह बकरा बहुतही विवश होगया जब नारद ब्राह्मण घर आया देखा कि रस्सी बँधी हुई है पर वहां बकरा नहीं है तो आश्चर्य में होकर पूछने लगा सबने उत्तर दिया कि हमने उसे जाते नहीं देखा न जानिये वह बकरा था या क्या था क्योंकि उसके शरीर में बड़ा तेज दिखाई देता था मानों वह अग्निरूप था नारद ब्राह्मण अतिचिन्तित हुआ और अच्छे बुद्धिमान् पण्डितों को बुलाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि आपलोगों की क्या मति है क्योंकि मेरा सब परिश्रम नष्ट होगया मैं अब क्या करूं सब ब्राह्मण यह चरित्र स्कन्द का समझकर कहने लगे कि तारक दैत्य के वध के लिये स्कन्द का अवतार हुआ है और देवताओं ने अपने २ शस्त्र दिये हैं तुमको उचित है कि वहां जाकर स्कन्द से अपना वृत्तान्त वर्णन करो तथाच नारद चलकर स्कन्द के द्वार पहुँचा और द्वारपालों से कहा कि तुम स्कन्द से कहो कि एक ब्राह्मण नारद नामी द्वार पर खड़ा है द्वारपाल बोला कि कहो तुम्हारा क्या मनोरथ है नारद ने तब सब वृत्तान्त वर्णन किया द्वारपाल ने समय पाकर स्कन्द से बिनती की कि नारद ब्राह्मण हठ से द्वारपर आपके दर्शन के लिये खड़ा हुआ है स्कन्द हँसकर बोले कि नारद हमारा भक्त है उसे भीतरलावो नारद ने आकर और प्रणामकर वेद के अनुसार स्तुति की और विनय की कि जो बकरा मैं यज्ञ के निमित्त लाया था वह भाग गया है तुम्हारे राज्य में रहकर हमारा यज्ञ रहजावे तो आश्चर्य की बात है मेरे इस दुःख को दूर कीजिये नारद ब्राह्मण के ये वचन सुनकर स्कन्द ने अपने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वीरबाहु गणको बुलाया और कहा कि नारद के बकरे को ढूंढ़ दो जहां कहीं तुमको बकरा मिले पकड़कर तुरन्त लावो वीरबाहु यह आज्ञा पाकर अपनी सेनासहित बेगसे चला सो उसने उस बकरे को तीनों भुवन और नीचे के लोक में ढूंढ़तेहुये विष्णुलोक में उत्पात मचाते पाया सो वीरबाहुने उसके सींगोंको पकड़कर घसीटते हुये स्कन्द को सौंपा स्कन्द हँसकर बकरे पर चढ़े और अपने वाहन के बलके दिखाने को उसको इतनी सामर्थ्य दी कि मन के समान बेपरिश्रम तीनों भुवन में फिरा अर्थात् एक मुहूर्त्त भर में तीनों लोकों में घूमकर लौट आया जब घर पहुँचे तो स्कन्द प्रसन्न होकर वाहन से उतर भीतरगये तब नारद ब्राह्मण बोला कि महाराज! हमारे बकरेको देदीजिये हमारे यज्ञ का समय आगया है स्कन्द बोले कि यह बकरा बलिके योग्य नहीं है क्योंकि हमारे चढ़ने के लिये यही है जो फल तुम यज्ञ करने से चाहते हो वह फल हमने तुमको यज्ञ विना देदिया यह सुनकर नारद ब्राह्मण हाथ जोड़ स्तुति करनेलगा और स्कन्दजी का यश गाता अपने घर चलागया और देवता और मुनि आदिने स्कन्दकी स्तुति करने के उपरान्त यह विनय की कि हमारे ऊपर जो दुःख है उसको दूर करो स्कन्द ने हँसकर कहा कि हे देवताओ! तुम निश्चिन्त रहकर आनन्द करतेरहो जिसने तुमको इतना दुःख दियाहै उसको अपने गणोंसमेत जाकर वधकरेंगे और एक निमेष मेंही दैत्योंकी सेना मारडालेंगे और हम तुमको हरप्रकार से आनन्द देंगे तुमने जो शिवजी की सेवा की है उसका फल हम देवेंगे और जो कुछ कि हुआ है वह सब शिवजी की लीला जानों वे सत्त्व रज तम तीनों गुण धारण करके असंख्यलीला करते हैं जब रजोगुण उपजता है तब दैत्य अधिक होजाते हैं और राक्षस तमोगुण से बढ़ते हैं और देवता और मुनि सतोगुण से अधिक होजाते हैं वे अपने २

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समय में अपनी २ शक्ति उपजाते हैं अब सतोगुण उदय होता है हर प्रकारसे असुरों का नाश होगा यह जानकर तुम सब प्रसन्न रहो और शिवजी अपने भक्तों को बड़ा आनन्द देनेवाले हैं और दुष्टों के लिये वे बड़े भयानक हैं सुनकर सब देवता बहुत प्रसन्न होकर जय जय कहनेलगे और स्कन्द की स्तुति की ॥

सातवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! स्कन्द से यह वचन सुनकर विष्णुने देवताओंसहित कहा कि हे स्कन्द ! आप शिवजी के पुत्र वरन आप शिवजी ही हैं और असुरों के वन के लिये बड़वाग्नि के समान हो और तुम में और तुम्हारे पिता में कुछ अन्तर नहीं है तुम परब्रह्म हो इसी प्रकार बहुतसी स्तुति की उससमय गिरिजा गङ्गा वह्नि और मुनिपत्नियां आदि स्कन्द की माता आकर और अपने पुत्र का इतना प्रभाव देखकर परस्पर झगड़ने लगीं और सब उसको अपना २ पुत्र वर्णन करने लगीं तब हे नारद ! तुमने जाकर सब को समझाया और तुमने शिवजी की इच्छा से स्कन्द की उत्पत्ति का ठीक २ वृत्तान्त वर्णन करदिया और कहा कि यह शिवजी व गिरिजा के पुत्र हैं इन्होंने देवताओं के मनोरथ पूरे करने को अवतार लिया है यह सुन गिरिजा के सिवाय और सब दुःखी हुईं तब तो प्रसन्न होकर स्कन्द ने गङ्गा से कहा कि तुम तो संसार की माता हो और शिवजी की स्त्री और इसी प्रकार से सबको समझादिया और फिर विष्णुजी और ब्रह्माजीसे कहा कि हम दैत्यों को एक क्षणभर में नाश करदेंगे कुछ संशय मत करो हम इसी कार्य के लिये उपजे हैं हमने आप दैत्यों को अपना बल देकर इतनी ऊंची पदवी पर पहुँचाया पर अब उनको अवश्य ही मारडालेंगे क्योंकि अब वे वेद के विरुद्ध कर्म करने लगे अब तुम तत्पर होजावो और शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की सेवा करो जो काम या उत्सव करो उसमें शिवजी की जय प्रसन्न होकर बोलते रहो यह आज्ञा पाकर एकबारगी सम्पूर्ण देवताआदि शिवजी की जय बोल उठे और सब देवताआदि सेनासहित सज कर स्कन्द के साथ चले और शिवजी गिरिजा और गणों को साथ लेकर कैलास को गये उस समय तारक ने यह सुनकर और देवताओं के सब उपाय का परिणाम जानकर बड़े क्रोध से देवताओं पर धावा किया और चतुरङ्गिणी सेना सजाकर करोड़ों फ़ौज साथ लिये हुये चला और युद्ध के बाजे बजने लगे तब हे नारद! तुमने तारक के पास जाकर कहा कि अब तुम्हारे लिये बड़ी आपदा आपहुँची है क्योंकि देवताआदि ने शिवजी की सेवा करके तुम्हारे मारडालने का उपाय किया है और सब वृत्तान्त आरम्भ से अन्ततक कहकर सुनाया कि शिवजी को कल्पवृक्षवत् समझो वे सबको एकही नेत्र से देखते हैं और भक्ति सेवा के अधीन रहते हैं इस लिये तुमको उचित है तुमभी उपाय करो और उसके पीछे देवताओं से युद्ध करो हमारा वचन झूठ नहीं होता जो तुम विजय चाहते हो तो हमारी मति मानों जो हमारी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा इसी समय अवश्य नाश होजावेगा यह बात तारकासुर ने नारद की मृत्युवश न मानी और हँसकर नारद से कहा कि तुम विष्णुजी के पास जाकर कहदो कि अब तुम जहांतक वीरता करसक्के हो करो कुछ किसी प्रकार की कमी न करना और इस दूध पीते बच्चे को अपना अगुवा करके लड़ाई किया चाहते हो जान पड़ता है कि तुम इस युक्ति से मरा चाहते हो क्योंकि ऐसी युक्ति से तुम्हारा कार्य न होगा तुम्हारी वीरता हमने कईबेर देखी है तुम पराया भरोसा करते हो सो और के बल से विजय नहीं मिलती क्योंकि एक मुचुकुन्द के बल से तुमने चाहा था कि हम पर प्रबल होजावें सो हमने भी उसकी वीरता देखली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है और सब देवताओं को उसके समेत बन्दि में डाल दिया अब तुम एक छोटे लड़केको साथ लेकर बड़ा युद्ध किया चाहते हो सो ऐसी बुद्धि की हीनता के कारण तुम सब पुत्र सहित मारे जावोगे तुमको दिक्पतिसमेत वध करके त्रिभुवन का राज्य निष्कण्टक होकर करूंगा हे नारद ! तुमने यह बात सुनकर तारक को क्रोधित होकर उत्तर दिया कि हे तारक ! अहंकार बड़ाही दुःख देनेवाला है जिस मुचुकुन्द का तुमने वर्णन किया वह शिवजी का भक्त है और शिवजी उसके सहायक हैं और जिसके ऊपर शिवजी कृपा करते हैं वह देवताओं मुनीश्वरों और मनुष्यों से अधिक शक्ति रखता है और जिसको तुम दूध पीनेवाला बालक कहते हो वह तो प्रलय करनेवाला शिवरूप है तारकने क्रोधित होकर फिर कहा कि तुझको वीरों का बल क्या मालूम है तुम वहां जावो जहां से यह बातें सीखकर आये हो हे नारद ! तुम तुरन्त तारक की सभासे उठकर हमारे यहां आये और हम और विष्णुजी से यह सब समाचार कहा और यह भी कहा कि यह बालक तारकासुर को विजय करेगा हमारा यह वचन सत्य है कि यह शिवजी का लड़का तीनोंलोक में निर्भय है हे नारद ! तुम्हारे इस वचन को हम सब सुनकर अति प्रसन्न हुये और युद्ध की इच्छा से शिवजी का ध्यानकर उठ खड़े हुये और स्कन्द को सेनापति बना कर इन्द्र के हाथी पर चढ़ाया और सब लोकपाल इकट्ठे हुये युद्धके बाजे बजने लगे अर्थात् भेरी, दुन्दुभी, मृदङ्ग, वीणा, बीन और गाना नाच होनेलगा और अति प्रसन्नता से बड़ा आनन्द छागया स्कन्द हाथी इन्द्र को देकर आप विमान पर आरूढ़ हुये और चारों ओरसे शिवजी के सुत का जय यह शब्द ऊंचे हुआ और वरुण, इन्द्र, अनल, यमराज, कुबेर, ईशान आदि आठों दिक्पति अपनी सेनासहित युद्धके आनन्द में तत्पर होगये और विष्णुजी शिवजी का ध्यान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करके महा आनन्द को प्राप्त हुये उनकी सेना का हम वर्णन नहीं करसक्के वे तो तीनों भुवनके स्वामी हैं फिर स्कन्द को सबसे आगे करके यह सेना चली और स्कन्द पर्वतसे उतरकर अन्तर्वेद में स्थितहुये और उसका मध्यभाग जो हरिविनया के नामसे प्रसिद्ध है उसको युद्धस्थल ठहराकर तारकासुर को सन्देशा भेजा ॥

आठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! तारकासुर अच्छे विमान में छत्र चमर होते हुये आरूढ़ हुआ और सेनासहित युद्धस्थलमें पहुँचा और दोनों सेना भी अन्तर्वेद में पहुँचीं जिनको तृणवत् मृत्यु भासती थी दोनों ओरसे गढ़ी बनाई गई एक हाथियों की पंक्ति दूसरी घोड़ोंकी तीसरी रथोंकी चौथी प्यादोंकी क्रमसे सजाई गई और दोनों ओर के वीर सांग, शूल, फरसा, पाश, कृपाण, भिन्दिपाल, तोमर, मुद्गर, चक्र, भुशुण्डी, नाराच, हथियार सजाकर युद्धस्थल में अपनी वीरता दिखाना चाहते थे नाना प्रकारके बाजे बजनेलगे और प्रशंसा करनेलगे निदान इसी समय में दोनों ओर के भटोंने युद्ध बड़े वेगसे रचा और देवता और दैत्यों का घोरयुद्ध हुआ और दोनों ओर की चतुरङ्गिणी सेना नष्ट हुई यहांतक कि निमेष में यह युद्धस्थल भटोंके सब शरीरोंसे भरकर भयानक होगया बहुतसे वीर पृथ्वी पर गिरकर मार मार का शब्द उच्चारण करते थे कोई तलवार से घायल और मुद्गर और गदा से मूर्च्छित और कइयोंके हृदयमें पाशने शरीर भरके खण्ड २ करडाले कई कबन्धरूप बन शीशरहित युद्धस्थान में नाचते और खेलते लहू की नदी बह चली भूत, प्रेत, पिशाचादि ने तृप्त होकर लहू पिया और गीध, कौआ, चील आदिने रुचिपूर्वक मांस खाया रक्त पिया और वेतालने आकर हाथियोंके शिर अपने शिरोंपर रक्खे इसीप्रकार पहिले धीरे २ देवता और दैत्य मरे पर क्रुद्ध

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

समयके उपरान्त युद्धस्थल प्रलयरूप ही भासने लगा तारक आप इन्द्र से भिड़ा और अग्नि संह्राद परस्पर लड़े यमराज के साथ जम्भने युद्ध रचा और निर्ऋतिके साथ सम्बल पवनके साथ पवन और धनपति के साथ बृहत्सेन और घननाद उशना के साथ सुना सूर्य के साथ सुलभ चन्द्रमा के साथ लड़े और इन्होंने घोरयुद्ध रचा और दोनों अपनी २ विजय चाहते थे पर कोई परास्त न हुआ और युद्धस्थल उन वृक्षों के समान जो अग्नि से जलजातेहैं देखने में भयानक भासता था तारकासुर ने इन्द्र के हृदय में सांगी मारी जिस से इन्द्र हाथी पर से धरती पर गिरपड़ा इसी प्रकार और दिक्पति भी दैत्यों से हार कर भागचले और कोईभी युद्ध में दैत्यों के सम्मुख खड़ा न रहसका यह पराजय देवताओंकी देख मुचुकुन्द ने विचार किया कि मुझे देवताओं की सहायता करना उचित है मैं शिवोपासक हूं और मेरे सहायक शिवजी हैं यह शोच तारक दैत्य के सम्मुख आया और दोनों युद्ध करते रहे कोई न हारा निदान मुचुकुन्द ने असि हाथ में लेकर तारकदैत्य के हृदय में मारी तारक ने हँसकर कहा कि तुम मनुष्य हो हमको तुम्हारे साथ युद्ध करने में बहुत लज्जा आती है बड़ा खेद है कि जो शस्त्र तुमने चलाया उसने कुछ भी हमारे शरीर पर फल न किया मुचुकुन्द बोले कि मैं शिवजी की कृपासे अब तुझको जीता नहीं छोड़ता और सम्मुख खड़ा हुआ ऐसा कौन दैत्य है जो मेरे हथियारों को हँसे यह कह तारक के एक असि मारी तारकके अभी वह लगी न थी कि उसने तुरन्त सांगी मारकर मुचुकुन्द को घायल कर पृथ्वीपर लिटादिया मुचुकुन्द ने पृथ्वी से उठ अति क्रोधित हो तारक के बध का विचार कर अपने धनुष को उठालिया और ब्रह्मास्त्र चढ़ाया उस समय हे नारद! तुमने मुचुकुन्द को मनाकिया कि यह तुम्हारे हाथ से नहीं मरेगा मनुष्य के हाथ से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसकी मृत्यु नहीं है तुम्हारा क्रोध वृथा है इसको केवल स्कन्द मारेंगे तुम सब चुप होरहो स्कन्दजीका चरित्र देखो जिस जगह कुछ अपना वश न चले वहां चुप रहना उत्तम है यह कह तुम देवताओं समेत स्कन्दजी की सेवा में पहुँचे उनकी स्तुति और पूजा करने लगे और बाजे बजने लगे उत्सवकी सब सामग्री तैयार हुई जब कि देवताओं को ऐसा आनन्दकरते हुये दैत्यों ने देखा तो महाकोपित हुये और बड़ा नादकर बाणों की वर्षा करनेलगे और वीरभद्र महाक्रोधकर युद्धस्थान में आये ॥

नवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! वीरभद्र अपने गणों को साथ लिये हुये युद्ध करनेलगे और दोनों ओरसे बड़ी चढ़ाई हुई और दोनों ओर के नाना प्रकारके शस्त्र चलायेगये और वीरभद्रने क्रोध में त्रिशूल को हाथ में लिया और इकबारगी झपटकर त्रिशूल को तारकके शरीर में मारकर धरती पर गिरादिया तारक क्षणमात्रके उपरान्त चैतन्य हुआ और वीरभद्र को सांगी से मारा और वीरभद्र ने फिर तारक पर त्रिशूल चलाया इसी प्रकार बहुतबेर दोनों ओरसे शस्त्र चलतेरहे और दैत्य और देवताआदि सब पीछे खड़ेरहे जब बहुत समयतक दोनोंमें कोई परास्त न हुआ तब हे नारद ! तुमने जाकर वीरभद्र से कहा कि हमारी बात मानकर लड़ाईको छोड़ दो यह तुम्हारे हाथ से नहीं मरेगा तारक बड़ा पराक्रमी वीर है जब आप शिव इसके साथ युद्ध करेंगे तब यह मरेगा वीरभद्र ने तुमसे क्रोधित होकर कहा कि तुम युद्ध और वीरता की बातें क्या जानते हो तुमतो केवल तप करना जानते हो तुमको वीरों का वृत्तान्त सुनाते हैं उनके चार धर्म होते हैं पहिले जो स्वामी विना युद्ध करते हैं और अपने प्राण का लोभ न करके भलीभांति लड़ते हैं वह प्रथम प्रकार से वीरभद्र हैं दूसरे जो स्वामी के साथ युद्धस्थान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में संसार की लज्जासे मरजाते हैं वे दूसरे प्रकारके हैं उनको शूर कहते हैं तीसरे जो अपने स्वामी के साथ युद्ध में से भागकर चलेजाते हैं वे क्रूर हैं उनको नरक मिलता है और चौथे वे जो निकम्मे होकर घर में बैठे हैं और उनका स्वामी युद्धमें माराजावे वे कायर हैं उनको कहीं सुख नहीं मिलता लोक में तो निन्दा और परलोक में एककल्पपर्यन्त नरक में पड़ेरहते हैं इस समय मैं सत्य २ कहताहूं कि जो शिवजी मेरे पास आकर मुझको तारकके बधसे रोकें तो लाचारी है नहीं तो आज मैं पृथ्वी को विनातारक के करदूंगा यह कह वीरभद्रने तारक के साथ युद्धरच त्रिशूल चलाया और दोनों लड़ने लगे और दोनों ओर की सेना भी परस्पर लड़नेलगी और दैत्यों को देवताओं ने बड़ी वीरता से परास्त किया दैत्य अपनी थोड़ी सेना मरीहुई देख भाग चले तब तारक महाक्रोधित हुआ मानों प्रलय करदेगा और एक करोड़ हाथ बनाकर हाथी पर सवार होकर देवताओं के पकड़ने को उनकी सेना के भीतर चला और असंख्य देवताओं को मार डाला और अपने हाथी को छोड़दिया उसके भय से सब हाथी आदि डरगये और तारक ने देवताओं को जीतलिया उस समय तारक का तेज कोई सह न सका और सबलोग बड़े दुःखी हुये और उसके हाथीने सब हाथी आदिकों को मारडाला यह दशा देखकर विष्णुजी से न रहागया तो उन्होंने तुरन्त चक्र उठाकर तारक के साथ युद्धकर देवताओं को आनन्द दिया देवताओं में दूना बल होगया और विष्णुजी और तारक से घोरयुद्ध हुआ जिसमें दोनों ओरसे असंख्य देवता और दैत्य मारेगये तारक ने बाणोंकी वर्षासे देवताओं को फिर भयभीत किया विष्णुजी ने क्रोधित होकर अपने चक्र को तारकके ऊपर चलाया तब पृथ्वी कांपउठी पर चक्र को तारकके शरीर में जमने का कोई स्थान न मिला तारक ने अपने गुरु को प्रणाम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर सैकड़ों प्रकार की माया दिखाई कभी तो वृक्ष कभी बाण फिर हाथी घोड़े सर्प और नाना प्रकारके शस्त्र आकाशसे गिरनेलगे और राक्षस जिनका शब्द हाथियों के समान था उपजे यह तारक की माया किसीने न जानी बरन देवताओं ने भी जाना कि प्रलय हुआ चाहती है यह विचार वह युद्धस्थान से भागकर स्कन्द के पास पहुँचे और अतिभयभीत होकर स्कन्दसे बिनती की कि हम आपकी शरण में आये हैं आप कृपा करके जल्दी तारक का बध कीजिये बिन आप के और कोई तारक के बध योग्य नहीं है आपका अवतार इसीलिये हुआ था स्कन्द ने हँसकर देवताओं से कहा कि हमको अपना पराया कुछ नहीं भासता हमतो अभी लड़के हैं और मैं इस बात की परीक्षा करतारहा कि मैं किसी के साथ लड़ूं चाहे मैं धनुर्विद्या नहीं जानता तो हे नारद! तुमने स्कन्द से यह सुनकर उत्तरदिया कि आपतो शिवसे उपजे हैं और सृष्टिके रक्षक देवताओं को तुमहीं से सुख है तुम बालक युवा और वृद्ध नहीं हो तुम्हारा बल वेदोंसे प्रकट है तारकने देवताओं को विजय कर बड़े २ दुःख दिये हैं इस लिये आपको तारक का बध करडालना चाहिये यह सुन स्कन्द पहिले हँसे और फिर क्रोधित हुये और विमान छोड़ पैदल चले और अपनी शक्ति को लिये तारक की ओर पैदल जल्दी २ पग उठाते थे तब तारक ने हँसकर कहा कि इस बालक की आशा पर देवताओंने अपने बलको नष्ट करदिया है वे भी बड़े बुद्धिहीनहैं मुझको निश्चयहै कि मैं सब देवताओं को मार-डालूंगा यहांतक कि इन्द्र और विष्णुभी मुझसे जाने न पायेंगे यह सुन शक्ति हाथ में लिये हुये स्कन्द से लड़ने को चला देवताओं से कहा कि हे देवताओ! तुमने युद्धस्थान में बालक को अगुआ बनाया है तुम बड़े निर्लज्ज हो इसका फल हम अब तुमको देते हैं जिसकी आशापर तुम सब रहते हो वह हमारे भयसे भाग जावेगा यह दोनों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाई विष्णु और इन्द्र बड़े छली हैं मुख्य करके छोटा भाई तो छलमें अद्वितीय है और माया करनेमें विख्यात है इसने बलिके साथ क्या काम किया और मधुकैटभ का शीश छल करके कटवाडाला फिर अमृतके बांटनेके समय कैसा छलकिया है इसने वेदके विरुद्ध स्त्रियों को मार डाला और बालिके बधमें धर्मका कुछ विचार न किया रावण कि ब्राह्मण जाति था जिसका मारना वेद में मना है इसने मारडाला और अपनी स्त्री को विना पाप छोड़ दिया और इसने अपनी माता का शिर काटडाला और अपने कुलगुरु पर कुछ भी दया न की और इसने परस्त्रियों के साथ भोग करके वेद की रीति को छोड़ दिया और अनुचित रीति से विवाहकर कलियुग की चाल चलकर बड़ाही अधर्म किया और इसी प्रकार सब वेदों की निन्दा करते हुये विष्णुने कुछ भी ध्यान न किया आश्चर्य है कि ऐसे मनुष्य के बल और आशा पर देवताओं ने युद्ध का उद्योग किया और उनका बड़ा भाई इन्द्र तो बहुतही बुरा और अनाचारी है उसने अपने पिता के लड़के को दिति के गर्भ से गिरादिया और केवल संसार के आनन्द के लिये ऐसे काम करते उसको धर्म का विचार न हुआ गौतम की स्त्री से भोग किया व्रत ब्राह्मण को मारडाला और विश्वरूप के सब पुत्र मार डाले उसने संसार के आनन्द के निमित्त कैसे कैसे अधर्म नहीं किये और वेद के धर्म त्याग दिये इससे इनका तेज हत होगया इस समय भी लड़के को अगुआ बनाया है जो अभी मारा जावेगा यह पापभी इन्हीं पर पड़ेगा नहीं तो लड़का भागजावेगा तारक यह बात देवताओं से कहकर फिर स्कन्द से बोला कि तुम कुछ अहंकार मत करो यहां तुम्हारी कुछ न चलेगी जो मनुष्य ब्राह्मण का अपमान करता है उसके धन, प्राण, घर, बल आदि कुछ नहीं रहसक्ता अब वेद का वचन सत्य करके जो चाहूं कि सबका विनाश करडालूं यह हक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनी सांगी को उठाया हे नारद ! यह कहते हुये तारक की शक्ति नष्ट होगई क्योंकि बड़ों की निन्दा और उनके कर्म कहने में तुरन्तही शक्ति क्षीण पड़जाती है पर जो सदाशिवजी की इच्छा होती है वही होता है शिवजी की माया में फँसकर तारक ने भी यह वचन कहा संसार में कौन ऐसा है जिसकी बुद्धि शिवमाया से ठीक रहसक्ती है निदान तारक ने अच्छे अच्छे चुनेहुये वीरों को सेनापति करके बाक़ी सेना को पीछे रक्खा और आपही स्कन्द और इन्द्र के सामने गया ॥

दशवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद ! ऐसी शक्ति दिखातेहुये तारक को इन्द्र ने देखा और अपना वज्र मारकर उसको पृथ्वी पर गिरा दिया पर तारक ने तुरन्त धरती से उठकर इन्द्र को सांगी मारकर पृथ्वीपर गिरा दिया तब देवताओं की सेना में बड़ा हाहाकार मचा क्योंकि उनके राजा की यह दशा हुई तारक ने इन्द्र को पृथ्वी पर पड़ाहुआ देख अपनी लात से उसके पेटको दबाया और हाथ से वज्र छीनलिया और उसी से इन्द्र को मारा यह दशा देख स्कन्द ने बड़ा क्रोध किया और अपना त्रिशूल तारक के हना तारक त्रिशूल का ताड़न न सह कर धरती से उठ खड़ा हुआ जिससे स्कन्द घायल होकर धरती पर गिरपड़े और सब देवता आदि हाहाकार करनेलगे पर क्षणमात्र के पीछे स्कन्द उठकर पूर्ववत् नाद करनेलगे और उन्होंने त्रिशूल उठालिया तब त्रिशूल बिजली के समान चमक उठा और सर्वदिशा प्रकाश से पूर्ण होगई और सूर्य चन्द्र और अग्नि के समान प्रकाश को देखकर स्कन्द ने त्रिशूल को मनाही की और ऊंचे शब्द से पुकारा तब तारक फिर सांगी लेकर सामने आखड़ा हुआ देवताओंने उत्सव के बाजे बजाये और तारक और स्कन्द लड़नेलगे उससमय अतिघोर युद्ध हुआ दोनों शिर, गला, कटि, जांघ, पीठ और हृदयमें शस्त्र मारते थे दोनों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओर की सेना ऐसा युद्ध देखकर अति आश्चर्य में हुई और देवताओं की आशा टूट गई कि तारक को स्कन्द नहीं मारसकेंगे उसी समय आकाशवाणी हुई कि अभी स्कन्द तारकका बध कर डालते हैं तुम कुछ सन्देह मतकरो फिर स्कन्द ने अपनी सांगी तारक की दोनों भुजों में मारी पर तारकने भी उसका विचार न किया और अपनी सांगीसे स्कन्द को घायल करके पृथ्वीपर लिटादिया स्कन्दने सचेत होकर फिर तारक के सांगी मारी और दोनों युद्ध करनेलगे देवताओं को अतिचिन्ता हुई सूर्य का प्रकाश हतहुआ पवन थमगई और नदी पर्वत और वनोंसे भयदेनेवाला शब्द होनेलगा और धरती कांपने लगी मानों भूकम्प हुआ है अग्निदेवता शान्त पड़गये ऐसा संसारमें कौन था जिसको दुःख न हुआ और हिमगिरि, मेरु, श्वेतकोट, उदयाचल, अस्ताचल, मलयागिरि, कैलास, गन्धमादन, मैनाक, बिन्ध्याचल, महेन्द्र, मन्दर और हिमालयआदि पर्वत चिन्तासे दुःखी थे ऐसे दुःख की दशा देख स्कन्द बोले हे पर्वतो! कुछ सन्देह मत करो तुम्हारे देखते देखते केवल सांगीसे तारकासुर दैत्य को बध कर डालताहूं इसी प्रकार सब देवताओं आदिसे कह शिवगिरिजा का ध्यान किया और तारकके बध करनेको सांगी अपने हाथमें उठाई जिसमें श्रीगौरी-शङ्करने असंख्य तेज और बल डालदिया और क्रोधित होकर स्कन्द ने तारकके हृदयमें सांगी को मारा सो तारक निर्जीव होकर धरती पर गिरपड़ा फिर स्कन्दने अपना हाथ उसपर नहीं डाला और जो शिव का तेज तारक के शरीर में था वह स्कन्द के शरीर में प्रवेश कर-गया और तारक की सब सेना भागकर पाताल को गई इसी प्रकार दैत्यों का अच्छेप्रकार बध हुआ जिससे देवताओं को अतिप्रसन्नता प्राप्तहुई और सब देवता मुनि और गण अतिप्रसन्न होकर स्कन्द की स्तुति करनेलगे और गन्धर्ब और किन्नर और अप्सरा आदि गाने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बजाने लगे नाना प्रकारके बाजे बजे और सबने बहुत स्तुति करनेके उपरान्त बिनती की कि हम सबको आपके चरणों की प्रीति दिन दिन बढ़े यही वरदान हम आपसे मांगते हैं ऐसी स्तुति देवता और पहाड़ोंसे सुनकर स्कन्द बोले कि हमने तुम्हारी स्तुतिसे प्रसन्न होकर तारकका बध किया सो आगेके लिये भी तुमसे कहते हैं कि जब कोई तुम पर दुःख पड़ेगा तब हम तुम्हारे सहायक होंगे यह बात देवताओंसे कहकर पहाड़ोंसे बोले कि तुम सब प्रतिष्ठाके योग्य हो और तपस्वी और मुनि तुम्हारी सेवा करेंगे तुम्हारे देखनेसे मनुष्यों के दुःख दूर होंगे जो तीर्थ वा शिवालय वा तपभूमि तुम पर होगा वह सर्वानन्द और सुखदेगा और जो पर्वत कि हमारे माताके बदले है वह तपस्वियों को उत्तमफल देकर सब पर्वतों का राजा हो और दूसरे पर्वत भी शिवलिङ्ग के समान पापों को नष्ट कियाकरें यह वर-दान देकर चारोंओरसे धन्य धन्य और जय जय का शब्द हुआ और देवताओंने बड़ी स्तुति करके हरप्रकार से स्कन्द की पूजा की॥

ग्यारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब उन देवताओं का वृत्तान्त जो भागकर पातालमें छिपगये थे सुनो उन दैत्योंमें से एक बाण नाम दैत्यों का स्वामी लड़ाईसे मुँह मोड़ भागगया था वह क्रौञ्चद्वीप में जाकर नाना प्रकारके उपद्रव करनेलगा उसने कई पर्वत फोड़डाले और कई सघनवन उजाड़ कर दिये और क्रौञ्चके शिरमें एक अपना चरण इस वेगसे मारा कि क्रौञ्च पर्वत घबड़ाकर स्कन्दके पास आ-कर कहनेलगा कि इस समय आपने तारकके बधसे संसार भरके दुःख छुड़ादिये मैं हीं अकेला सृष्टि भर में दुःखी हूं फिर उसने अपना सर्व वृत्तान्त आदिसे अन्ततक कह सुनाया और कहा कि जिसने मुझको दुःख दियाहै उसके साथ आठ कोटि दैत्य हैं मैं मनुष्य का स्वरूप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धारणकर आपकी शरण में न आता तो न जानिये वह क्या करता अब आपकी शरण आया हूं क्योंकि आपको छोड़ किसके पास जाऊं स्कन्द ने यह दैत्यराज की कथा और उसका उत्पात सुन उनके मारडालनेकी चिन्तना की और सांग हाथ में लेकर शिव गिरिजा का ध्यान कर उस दैत्य की ओर क्रोध से चलाई उसके चलने से दशों दिशा में असंख्य प्रकाश फैल गया और क्षण भरमें उन दैत्यों को उनके अधिपति समेत जलादिया और फिर वह सांग स्कन्दके पास यह कार्य करके लौट आई स्कन्दने पर्वतसे कहा कि अब तुम अपने घर को लौट जाओ हमने उस दैत्यको सेनासहित मारडाला यह सुनकर क्रौंचने स्कन्द की बड़ी स्तुति की और अपने घर को गया और हर प्रकार से देवताओं ने उत्सव किये फिर स्कन्दने उसी स्थानपर तीन शिवलिङ्ग स्थापित किये और उनके नाम यह रक्खे पहिला प्रतिज्ञेश्वर और कहा जो कोई इनकी पूजा करेगा वह तुरन्त अपना मनोरथ पावेगा दूसरे का नाम कपालेश्वर तीसरा कुमारेश्वर और इनके लिये यह वरदान दिया कि इनकी पूजासे दोनों लोकमें सुख प्राप्त होगा और इन तीनों के नाम लेने से करोड़ों दुःख मिट जावेंगे और उसी जगहके निकट एक जयस्तम्भ स्थापितकर एक और शिवलिङ्ग स्तम्भेश्वर भी स्थापन किया जिनकी पूजासे सब मनोरथ पूरे होते हैं इन चारों लिङ्गोंमें शिवजी और देवताओं का तेज स्थित हुआ और एक और शिवलिङ्ग सब देवताओं और मुनीश्वरोंने स्थापितकर उनका नाम रामेश्वर रक्खा जिनसे प्रजाकी सर्वकामना सिद्ध होती हैं इन लिङ्गोंके स्थापित होनेके उपरान्त बड़ा उत्सव हुआ चारों ओरसे जय २ और बम् बम् का शब्द छागया और देवताओं का सब दुःख मिटगया ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इसी समयमें जब कि देवता और दैत्य लड़ाईमें लगे थे और दैत्य स्कन्दजी का तेज न सहकर चारों ओर भागे उनमें से हम बाण दैत्य का वृत्तान्त तो कहचुके हैं और दूसरा प्रलम्बनाम दैत्य शेषके घरमें जाकर दशकोटि सेनासहित बड़ा उपद्रव मचानेलगा बहुतसे मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट करदिया और शेषके पुत्रोंने बाहर निकल प्रलम्बसे सामना किया निदान शेषके पुत्र हार मानगये उनका नाम कुमुद था उसने स्कन्द की शरणमें आकर स्तुति की और प्रलम्बके उपद्रव की सब कथा कह सुनाई और कहा कि इसको मारडालो तथाच हम और इन्द्रनेभी इस बातको कहा और फिर शेषने बिनती की कि आप जल्दी इस दैत्य को नष्ट करें मैं आप की शरणमें आयाहूं स्कन्दने यह सुन अपनी शक्ति को उठालिया और शिवजी व गिरिजा का ध्यान करके दैत्यकी ओर फेंकदी जिसके प्रकाश से संसारभर प्रकाशित होगया उसने सातों पाताल नांघकर बेगही दशकरोड़ दैत्यों को प्रलम्ब समेत मारकर भस्म करदिया और फिर उसी प्रकारसे स्कन्दके हाथमें आगई तब स्कन्दने कुमुदसे कहा कि हमारी शक्तिने प्रलम्ब का नाश करदिया अब निर्भय होकर अपने घरको जाओ शेष आप तो स्कन्दजी की सेवामें तत्पर रहे और कुमुद लौटगये और हर प्रकार के उत्सव देवताओंने किये और हम और सब देवताओं ने स्कन्द की स्तुति की और कहा कि अभी तो तुम केवल सातदिनके लड़के हो और उसे इस प्रकारसे दैत्यों का नाश करते हो तो जिस स्थान पर स्कन्दने देवताओं सहित यह विचार किया वह सत्तीर्थके नामसे बड़ातीर्थ प्रसिद्ध हुआ और जिस मार्ग से कि कुमुदनाग धरती को तोड़कर पाताल में गया था वह सिद्धकूलके नामसे विख्यात हुआ उसकी बड़ी महिमा है जो वहां

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्नान करते हैं उनके सबदुःख मिटजाते हैं और अन्तको कैलासपर्वत में स्थान मिलता है इस प्रकार की और बहुतसी लीला स्कन्दोंने कीं जिससे सबदुःख मिटगये और बहुत आनन्द प्राप्त हुआ स्कन्दजीके चरित्र अतिपवित्र हैं उनके सुनने सुनाने से मोक्ष प्राप्त होता है ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! स्कन्दने इसी प्रकारके बहुत से चरित्रोंसे संसारको सुख दिया और देवता स्कन्दसे अतिप्रसन्न रहकर अतिआनन्दसे परस्पर मिल रहनेलगे फिर उन्होंने कहा कि आप कैलासपर्वत पर चलकर रहिये क्योंकि सबने अपना मनोरथ पालिया है स्कन्दजीने इस बातको मान लिया और विष्णु और हमको शुभ मुहूर्त देखने को आज्ञा दी सो हमने मुहूर्त कर देवताओं समेत स्कन्द से विनय की कि शुभमुहूर्त आगया है सो स्कन्द प्रसन्न होकर अपने माता पिता का ध्यान कर चले उस समय चारों ओर से जय शिव गिरिजा का शब्द सुनाई देता था और स्कन्द उत्तमोत्तम बिमान पर आरूढ़ होकर स्तुति सुनतेहुये चले और पीछे इन्द्र ऐरावत हाथी पर आरूढ़ छत्र लेकर तय्यार हुये और सब दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा समेत आगे २ जय जय शब्द करते हुये और शेष सर्व देवता आदि चारों ओरसे स्कन्दके साथ हुये और शिवके पास पहुँच कर सबने दूरसे नम्रतापूर्वक खड़े होकर प्रणाम किया और स्कन्द ने शिवके निकट जाकर दण्डवत् की शिवने गोदमें उठाकर उनको छातीसे लगाया और मस्तक सूंघा और बार २ मुख की ओर देखा और शरीर भरमें हाथ फेरा और गिरिजा अपने पुत्रके आनेका समाचार सुनकर सखियों समेत अपने मन्दिरसे उतर आईं और तुरन्त लड़के को गोदमें उठालिया और शिवके बाईंओर बैठकर बड़े लाड़ प्यारसे स्कन्द को हृदयसे लगाया ऐसी शिव पार्वती की लीला देख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर सब देवता आदिने अपने अपने हाथ बांधकर शिर झुकाय शिव की बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिव ! आपने शिशुरूप से प्रकट होकर तारकका बध किया तारक अपने परिवार समेत मारा गया और बाण प्रलम्ब भी अपनी सर्व सेनासहित मारेगये हमारे सुख देनेवाले तुम तीनों हो इसीप्रकार गिरिजा और स्कन्द की भी स्तुति की फिर प्रणामकर चुप होगये शिव गिरिजा और स्कन्द यह स्तुति सुन अतिप्रसन्न हुये और शिवने दयादृष्टि से सबको अवलोकन कर कहा कि मैंने केवल तुम्हारे लिये सगुण अवतारधर विवाह किया यह लड़का मुझे बहुत प्यारा है जिसने तारकको बध किया अब तुम अपने अपने घरोंमें जाकर प्रसन्न रहो इसी प्रकार तुम्हारे आनन्दके चाहनेवाले हैं क्योंकि हम भक्तके अधीन रहते हैं हमारे स्मरण को मत भूलना हम गिरिजा पुत्र और गणों सहित तुम्हारे सहायक हैं यह कह सबको बिदा किया और स्कन्दके कुशलपूर्वक पलट आने के कारण ब्राह्मणों को बहुत दान दिया और बड़ा उत्सव किया और भैरव आदि गण बहुत प्रसन्न हुये इसीप्रकार से योगिनी और गणोंने बड़े २ आनन्द किये और हिमाचल ने स्कन्द को अपनी गोदमें बैठाकर बहुतही दान किया और शिवसे बिदा होकर अपने देश को गये और देवता आदि सब अपने २ घरों को पहुँचकर आनन्द के बाजे बजानेलगे और पूर्ववत् अपना २ राज्य करने लगे हे नारद ! जहांतक हमको स्कन्द का वृत्तान्त मालूम है हमने तुमको सब कह सुनाया है यह चरित्र सब दुःखों के दूर करनेवाला और आनन्द देने वाला है जिसके सुनने से सब दुःख और आपदा नष्ट होजाती हैं और मुक्ति मिलती है यश बढ़ता है इस चरित्र के सुनने और सुनाने वाले दोनों परलोकमें परमगति पाते हैं इस चरित्र के सुननेसे भाग्य बढ़ता है और शिव मिलते हैं और गिरिजा अपने भक्तों की सदा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सहायक हैं हे नारद ! और क्या सुना चाहते हो नारद बोले कि तारक के बध करने के उपरान्त स्कन्द ने क्या चरित्र किये वह वर्णन कीजिये ॥

चौदहवां अध्याय ॥

नारद बोले कि हे ब्रह्माजी ! स्कन्द का चरित्र सुनकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई अब शिव गिरिजा के और चरित्र वर्णन करो मैं आपसे एक प्रश्न करता हूं आशा है कि आप प्रसन्नता से उत्तर देंगे अर्थात् आप गणपति का चरित्र सुनाइये कि वह किसके पुत्र हैं क्योंकि पञ्चदेवता के पूजने की आज्ञा है उसमें एक गणपति भी हैं वे किस समय से पूजेगये और तीनों लोकोंको फिर क्योंकर जीता और क्योंकर प्रसिद्ध हुये हां हमने कई बार सुना है कि गणपति जी गिरिजा के पुत्र हैं पर मुख्य वृत्तान्त नहीं जानता और जो कि शिवके विवाह में आपने कहा था कि गणपति की पूजा कीगई और शिव ने नमस्कार किया मुझे इसमें बड़ा संशय है ब्रह्माजी बोले कि शिवकी मायाको कोटिधन्य है तुमने क्या अच्छा प्रश्न किया जो सृष्टि का उपकारी है हम आपसे गणपति की उत्पत्ति और उनका पद आदिसे अन्त तक सुनाते हैं सो गणपति प्राचीन देवता विष्णुआदिके समान हैं शिव परब्रह्म और स्वामी हैं वह अलग पांचों देवताओंमें बँटेहुये हैं उन्होंने बड़ी लीला और चरित्र किये जिनको हम थोड़ासा कहते हैं कि शिव गिरिजाके साथ विवाह करके अन्तःपुर में विहार करनेलगे और शिव-गिरिजा में ऐसा प्रेम बढ़ा कि रात दिन बीतते कुछ भी जान न पड़े यह दशा देख सब देवता हमारे पास आये और हमभी चिन्तित होकर उन सबको साथ लिये हुये विष्णुके पास पहुँचे और स्तुति करनेके उपरान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया कि शिव दिव्य एकसहस्र वर्षसे विहार कररहे हैं नहीं जानते कि ऐसे विहारसे कैसा पुत्र उपजेगा आप कहें यह सुनकर विष्णु बोले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि सब अच्छा और शुभ होगा कुछ भय मत करो और हे ब्रह्मन्! हमको यह युक्ति करना चाहिये कि किसी उपायसे शिवजी का वीर्य पृथ्वी पर गिरा लो कि गिरिजासे पुत्र उपजने न पावे नहीं तो ब्रह्माण्ड भर को जलादेवेगा इस वचनके सुननेके उपरान्त हमतो अपने घर चलेगये और देवता कैलास पर्वतको गये देवताओंने शिवजी के द्वारपर जाकर बड़ा नाद किया तथाच शिवजी बाहर निकल आये देवताओंने प्रणाम करके स्तुति किया और कहा कि संसारको पवित्र करो शिवजी देवताओं का मुख्य वृत्तान्त समझ कहने लगे कि हमने तुम्हारे मनोरथ को समझा है तुमने वृथा ही हमारे आनन्द में विघ्नडाला यह बहुत बुराकाम हुआहै हमारा वीर्य शिरसे नीचेको आताहै उसको तुम में से कौन लेताहै यह कह अपना वीर्य पृथ्वी पर फेंक दिया जिसके तेजसे उजियाला होगया सो अग्नि कपोत का रूप धारणकर वीर्य को चखगये और जब उड़कर आकाश को चले तब अपनेमें उस वीर्य के धारण की शक्ति न पाकर उसे पृथ्वी पर फेंकदिया पहाड़ भी कांपउठा और इसतरह स्कन्द उपजे जिनका वृत्तान्त हम पहले वर्णन करचुके हैं पर अब हम गणपति का वृत्तान्त वर्णन करते हैं अर्थात् उस समय शिवजीने सब देवताओं से कहा कि तुम वेगही हमारे पास से भागजाओ ऐसा न हो कि गिरिजा इस बातको जानकर तुम पर क्रोध करें सो देवता भागचले और शिवजी उनके भागने का चरित्र देखते रहे कि गिरिजा ने आकर महाक्रोध किया जिससे कि जाना जाता था कि प्रलय होवेगी और देवताओं को शाप दिया यद्यपि गिरिजाने ऐसा शाप देवताओं को देदिया पर तोभी क्रोध उनका न गया नेत्र लाल और उनमें आंसू भरेहुये और शरीर बहुत नरम और दुःख की अधिकता से भूमि खोदती थीं कि शिवजी ने गिरिजा को इतना दुःखी पाकर गोद में उठालिया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ी विनय की बातें कीं और कहा कि इतनी तुम मुझसे क्यों अप्रसन्न हुई हो मेरा कोई अपराध नहीं यदि अज्ञानतामें कोई अपराध होगया हो तो क्षमा करो जो कोई तुम्हारा नाम मुखसे लेताहै उसके सब कार्य हम पूर्ण करदेते हैं तुम्हारे विना मानो हम अङ्गहीन हैं तुम तो सब की माता हो अब तुम्हारे मधुर वचन सुने विना मुझे आनन्द नहीं तीनोंलोकके कार्य तो तुम्हारे अधीन हैं तुम्हारे विना सब निर्बल हैं अब प्रसन्न होकर दुःख को दूर कीजिये ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह शिवका वचन सुन गिरिजा बोलीं कि क्या तुम नहीं जानते जो दुःख मुझकोहै संसार में सन्तान बिन किसी स्त्री को सुख नहीं और न सन्तानहीन होने के बराबर कोई दुःख है कि आपकी बराबर पति को पाकर भी पुत्रहीन रही इसी से मुझको किसी समय आनन्द नहीं होता पहिला हमारा जन्म सन्तानरहित होकर बीतगया अब यह जन्म भी वैसाही बीता चाहता है हमारे साथ देवताओं ने यह कर्म करके इतना दुःख दिया है कि बांझ होनेको पहुँच गई जो स्त्री संसार में सन्तानहीन है उसको ब्रह्मा ने वृथा ही उपजाया संसार के हजारों ऐश्वर्यपर धिक्कार है जो पुत्र न हो लोक में उसी समय शुभकर्मों का फल प्राप्त हुआ मालूम होताहै जब शुभगुणयुक्त पुत्र उत्पन्न होताहै यह कह गिरिजा बहुत रोईं शिव ने गिरिजा को उठाकर हृदय से लगाया और कहा कि हम ऐसी युक्ति बताते हैं जिससे तीनों लोक में सब कार्य पूर्ण होंगे और हम और विष्णु और ब्रह्मा सब उसके वश में हैं हम उसको गुरु अर्थात् गणपति कहते हैं वह मुख्य हमारा रूप है जिनकी सेवा से दुःख दूर होकर सुख मिलता है तुम एक वर्षपर्यन्त उनका व्रत करो तुम्हारा मनोरथ पूरा होजावेगा उसका नाम आपदा का दूर करनेवाला और आनन्द देने-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाला है अँधेरे पक्ष की चौथ को यह व्रत किया जाता है सो गणेश-
चौथ व्रतके रखनेकी युक्ति यह है कि व्रतरख पवित्रतापूर्वक चन्द्रमा के
उदय होतेही पूजा करे यह व्रत सब व्रतों का राजा और हर कामना का
देनेवाला है जिसतरह कि सब मन्त्रों में प्रणव हमारे भक्तों में विष्णु
नदियों में गङ्गा देवियों में तुम वर्णों में ब्राह्मण इन्द्रियों में मन बड़ों में
माता ऋतुओं में वसन्त पुरियोंमें काशी सहायकों में भाई और पुत्र
और नक्षत्रों में चन्द्रमा दैत्यों में प्रह्लाद कवियों में शुक्र अक्षरों में मकार
शस्त्रों में त्रिशूल मन्त्रगणों में पञ्चाक्षरी बीजमन्त्रों में प्रणव पुराणों
में भारत आश्रमों में संन्यास है वैसेही सब सेवाओं में शिवकी भक्ति
बड़ी है इसी प्रकार यह गणेशचौथ का व्रत सब व्रतों में बहुत बड़ा है
कलियुग में राजा शेषसेनने इस व्रत को करके बड़ा आनन्द पाया
और शतरूपा जो मनु की पत्नी थी उसने यही व्रत करके दो पुत्र उप-
जाये और कर्दम की स्त्रीने भी यही व्रत करके कपिलनाम विष्णु
अवतार को पाया और वशिष्ठजी की स्त्री ने इसी व्रत से शक्ति अपनी
पुत्री को उपजाया और अदिति ने इसी व्रत के प्रताप से वामन अव-
तार को अपना पुत्र किया शचीने इसी व्रतते जयन्त को पाया और
अनसूया ने चन्द्रमा को प्राप्त किया इसी प्रकार और बहुत मनुष्यों ने
इसी व्रतसे लड़के प्राप्त कियेहैं हम कहांतक वर्णन करें हे गिरिजे! तुम
भी इसी व्रतके प्रभाव से अवश्य पुत्र पावोगी गिरिजा ने अतिप्रसन्न
होकर कहा कि बहुत अच्छा मैं अवश्यही यह व्रत धारण करूंगी पर
आप इस व्रत का नियम परिपूर्ण कहें शिवजी बोले कि हे देवि!
कृष्णपक्ष की चतुर्थी को शुद्धमन से बहुत सवेरे शयन से उठकर स्नान
करे और जो कुछ करना उचित है वह सब करे फिर व्रत की दृढ़ इच्छा
कर यह संकल्प करे कि हे गणेश! हम तुम्हारा व्रत आज करते हैं
हमारा मनोरथ पूरा करना हम तुम्हारे चरणों की शरण में आये हैं हे

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गणपति ! व्रत हमारा पूर्ण होजावे हमारे दुःख दूर होवें तुम सब कुछ जानते हो सब फलों के दाता हो तुमको वेदों ने विघ्नहर्ता कहा है इस प्रकार संकल्प करके दिन गणपति की वार्त्ता में व्यतीत करे जब दिनान्त हो स्नान कर अपने स्थान पर बैठे और सब पूजा की सामग्री इकट्ठी करे और गणपति की पूजा के निमित्त अच्छा स्थान तय्यार करे जिसके चारोंओर केलेके खम्भ लगाये गयेहों और बड़ी प्रसन्नता से नाना प्रकार के बाजे बजवावे जब कि आकाश में चन्द्रमा उदय हो तुरन्त अर्घ्य दे और गणेश की मूर्ति सोने या चांदी या तांबे या गोबर की जैसी सामर्थ्य हो बनवावे और उसको रखकर कलश स्थापित करे जिसके ऊपर दीपक रक्खा हो ध्यान लगाकर षोड़शोपचार से पूजन करे और लाल फूल, कपड़े, चन्दन, कुशा, पुवे, दूध आदि आगे रखकर फिर आचमन करादेवे और अच्छी स्तुति करके प्रेम में मग्न हो प्रणाम करे और बड़ाही प्रेम उपजावे और इसी प्रकार अपनी भक्ति से गणपति को प्रसन्न करलेवे फिर प्रणाम करके विसर्जन करे और निश्चयकरे कि हमारा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा और वही पुवा पूजा करानेवाले ब्राह्मण को खिलाकर दक्षिणा में चांदी दे नहीं तो जैसी अपनी सामर्थ्य रखता हो ब्राह्मणों को दक्षिणा दे और आप भी मीठा भोजन करे जो इस प्रकारसे गणेश का व्रत करते हैं उनका मनोरथ पूरा होजाता है तुम भी इसी व्रत को करो ॥

सोलहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह वचन सुनकर गिरिजा ने पूछा कि हे शिवजी ! जो आपने गणपतिके व्रतमें चन्द्रमा को अर्घ्य देना कहा उसका मुख्य कारण नहीं जानाजाता शिवजी बोले कि गणेश ने पहिले चन्द्रमा को शाप देकर फिर आप कहा कि तुमको प्रथम अर्घ्य दिया जावेगा गिरिजा बोलीं कि इस कथाको विस्तारसे कहिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजी बोले कि हमारी आज्ञाको जिससे ब्रह्मा सृष्टि रचते हैं मानकर स्वर्ग जाने की इच्छा की और गणपति का एकाग्रचित्त हो पूजन किया गणपति ने प्रसन्न होकर कहा कि वरदान मांगो ब्रह्माजी बोले कि हम सृष्टि उपजाया चाहते हैं और उसकी वृद्धि निर्विघ्न चाहते हैं गणपतिने कहा कि यही होगा फिर गणपति धीरे २ आकाशकी ओर चले जब कि गणपति चन्द्रमाके मन्दिर में पहुँचे तो पांवके फिसलनेसे गिरपड़े उनका उदर बहुत बड़ा और शरीर स्थूल था चन्द्रमा देखकर हँसपड़े गणपतिजी चन्द्रमा को हँसते हुये देख क्रोधमें भरगये और उनके नेत्र लाल पड़गये और चन्द्रमा को यह शाप दिया कि चन्द्रमा कलङ्की तू अपनी सुन्दरता पर गर्व करता है तू महामतिहीन है यही मनमें विचारता है कि मैं अतिसुन्दर देखनेके योग्यहूं उसके अहंकार से तू मुझे हँसा इसका फल तुरन्त मिलेगा जिससे संसारमें बड़े दुर्भागी होकर आजसे जो कोई तुमको देखेगा उसको अवश्य करके कुछ कलङ्क लगजावेगा यह शाप देकर गणपति गुप्त होगये और चन्द्रमा क्षीणाङ्ग होकर हततेज होगया और सब देवता और इन्द्रने दुःखी हो कर ब्रह्माजीके पास जाकर सर्व वृत्तान्त वर्णन किया ब्रह्माजी बोले कि इसमें कुछ बुराई नहीं चन्द्रमाने अपना किया हुआ पाया है गणपति का शाप झूठ नहीं होसक्ता इसलिये तुम सब गणपति की शरणागत जाओ निश्चय है कि वह अपने शापको शान्त करेंगे तब देवताओं ने विनयकी कि आप यह उपाय बतावें जिससे गणपति प्रसन्न होकर शाप को शान्त करें ब्रह्माजीने कहा कि गणपति का व्रत कृष्णपक्ष की चतुर्थी को है उसको जब करे तब गणपति प्रसन्न होते हैं सो यह वचन ब्रह्माजी का सुनकर बृहस्पतिको चन्द्रमाके पास भेजदिया और बृहस्पतिने जिस रीतिसे बताया उस तरह से चन्द्रमाने गणपति के व्रत का आरम्भ किया और गणपति खेलते हुये शिशुरूपसे चन्द्रमा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को दिखाई दिये चन्द्रमाने प्रणाम करके बहुत बड़ी स्तुतिकी गणपति ने कहा कि हम प्रसन्न हैं जो वरदान तुमको चाहिये वह देवें चन्द्रमा ने विनयकी कि आपके शापसे छूटकर सबके दर्शनके योग्य होजाऊं गणपति बोले कि उपायसे तुम्हारा शापोद्धार होगा जैसा हम तुमको बताते हैं कि हरमासके शुक्लपक्ष की चौथको हमारा शाप तुमपर बना रहेगा और तिथियोंमें कुछ किसीको तुम्हारे देखनेसे कलङ्क न लगेगा पर जो मनुष्य कि पहले दूज और तीजमें तुमको देखेगा उस पर कुछ चतुर्थीके देखने का फल न होगा पर जिससे कि हमारा पहिला वचन झूठ न हो इस लिये हम तुमसे कहते हैं कि जो मनुष्य भादों की शुक्लपक्ष की चौथ को तुम्हारे दर्शन करेगा उसको बराबर वर्ष भर कलङ्क लगा करेंगे और वह वर्ष भर दुःखी रहेगा चन्द्रमा बोले कि इसके दूर होने की युक्ति कहिये गणपति बोले कि प्रतिमास की कृष्ण-पक्ष की चौथ को जो कोई मनुष्य चन्द्रमाके उदय होनेके समय मेरा पूजन करे और रोहिणी समेत तुम्हारी पूजा करेगा और तुम को अर्घ्य देगा और हमारी कथा को सुनकर ब्रह्मभोज करेगा और आप सिवाय मीठे भोजनके नोन आदि न खावेगा तब उस चौथका फल जो वर्णन कियागया उस पर न होसकेगा और जब भादोंमास का आरम्भ हो तो उजियाले पक्ष की चौथमें हमारी पूजा स्त्री सहित करे इस व्रत से सब प्रकारके क्लेश और कष्ट दूर होजाते हैं और उस मनुष्य को चौथका कुछ दुःख नहीं लगसक्ता यह कह गणपति अन्तर्धान होगये और चन्द्रमा फिर तेज धार कर प्रसन्न हुआ इस कथाके सुनने से पाप नष्ट होजाते हैं हे गिरिजे ! जो तुमने हमसे पूछा था वह हमने तुमको सुनाया इसमें कुछभी सन्देह नहीं है कि इस व्रत के करने से पुत्र न उपजता हो बरन जो मनोरथ हो वही प्राप्त होता है शिवजी तो यह कहकर चुप होगये और गिरिजाके मनका दुःख नष्ट होगया ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्रहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! यह सुन गिरिजा ने ब्राह्मणों को बुलाकर शौचपूर्वक व्रत का आरम्भ किया और नाना प्रकार की वस्तु चढ़ाकर पुवे भी गणपति को भेंट किये और उत्तम रीति से ब्रह्म-भोज कर आप भी भोजन किया इसी प्रकार प्रतिमास व्रतकर अच्छी तरह दान दक्षिणा देती रहीं जब एक वर्ष पूरा होगया तो दक्षिणा आदि देकर बड़ा उत्सव किया और बड़ा गाना बजाना हुआ और गिरिजा ने अपने पति अर्थात् शिवजी की भी पूजा की और व्रतके पूर्ण होनेके अनन्तर गिरिजा अति प्रसन्नहुई और शिवकी ओर बार २ देखा शिवने अपनी माया जानकर अपने हृदय से लगालिया और गिरिजा का मनोरथ पाकर एक चन्दन के वन में जो पर्वतपर था और जहां सब सुख के पदार्थ थे जाकर गिरिजा के साथ मैथुन किया सो गणपति उस स्थानपर आये उस स्वरूप से कि बहुत भूखे प्यासे नङ्गे दरिद्री सफ़ेद केश किये भालपर श्वेत तिलक लगाये महादीन कौवे का शब्द बोलते दांत कुचैल डण्डा लिये कपड़े पहिने हुये बहुतही दुर्बल दुखियारों के समान शिव के द्वारपर आकर कहनेलगे कि हे शिव! क्या करतेहो हम तुम्हारी शरण आये हैं हम सात दिनके भूखे हैं भोजन चाहते हैं हमको भोजन कराकर जल पिलाओ ऐसा शब्द सुनकर शिव तुरन्त उठखड़े हुये और शिवका वीर्य उस स्थानमें पात होगया और गिरिजाभी उठकर अपने वस्त्र पहिन तुरन्त शिवके साथ द्वारपर आई सो उस दुर्बल ब्राह्मणने प्रणाम किया और बड़ी स्तुति की शिव बोले कि हे ब्राह्मण! तुम कहां से आये हो और हमारे मन्दिर में क्यों पधारे तुम्हारा क्या नाम है हमारे बड़े भाग्य जो आप आये तुम हमारे यहां अतिथिके समान आये हो और प्रकट है कि अतिथि की सेवा के बराबर कोई धर्म नहीं और गिरिजा ने भी कहा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि हे ब्राह्मण ! ऐसी धूप में कहांसे आये हो जो गृहस्थ अतिथि के चरणों को जल से धोकर पीजावे तो सर्वतीर्थों का फल उसे प्राप्त होता है कदाचित् वह अतिथि निराश हो लौटजावे तो उसके सब शुभ कर्म नष्ट होजाते हैं ब्राह्मण बोले कि हे गिरिजे ! तुम संसारमें धन्य हो मैं बहुतही भूखा प्यासा हूं कृपा करके मुझको भोजन दो गिरिजाने उत्तमोत्तम भोजन ब्राह्मण को कराया ब्राह्मण ने तृप्त होकर प्रसन्नतापूर्वक कहा कि हे गिरिजे ! तुम्हारी कामना पूरी हो तुमको संसारी रीतिके विरुद्ध ऐसा पुत्र मिले जो गर्भ से उपजा न हो यह कह वह ब्राह्मण गुप्त होगया और शिव गिरिजा की शय्या में जहां वीर्य पड़ाहुआ था मुख्यरूप से प्रकट हुआ जो बालकों के समान करोड़ों सूर्यों की ज्योति धारण किये और कोटि कामदेव के समान शरीर सुन्दर धारण किये अच्छे चम्पा के समान हाथ पांव कमलवत् कोमल अङ्ग से इधर उधर शय्या स्थान में फिर रहे थे जब कि शिव और गिरिजा ने देखा कि इकबारगी वह ब्राह्मण अन्तर्धान होगया तो चारोंओर ढूंढ़नेलगे और मनमें उन्होंने बहुत दुःख और कष्ट माना इतने में आकाशवाणी हुई कि तुम प्रसन्न रहो हे गिरिजे ! तुम संसार की माता हो वह ब्राह्मण आप गणपति थे तुम्हारे व्रत से प्रसन्न हुये और शिशुके समान होकर तुम्हारे बिछौने पर पड़े हैं जाकर देखो जिसको योगी ध्यान करते हैं वह तुम्हारा पुत्र हुआ है तुम अतिथि के चलेजाने का पश्चात्ताप मत करो घरमें जाकर आनन्द करो गिरिजा प्रसन्न होकर मन्दिरमें गईं कि एक अतिसुन्दर बालक देखा जो हँस २ कर शय्या पर पड़ा खेलरहा है और घर की उँचाई देख कर प्रसन्न होता है और दूधके लिये रोता है गिरिजाने तुरन्त जाकर यह सब वृत्तान्त शिव को कह सुनाया और कहा कि जल्दी आवो व्रत का फल मिलगया शिवने आकर बालक को देखा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अठारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! गिरिजाने तुरन्त बालक को उठा लिया और चूमचाटकर अपने स्तनोंसे दूध पिलाया और शिव को जो आनन्द प्राप्त हुआ उसका वर्णन हमसे नहीं होसक्ता केवल इ-तना वर्णन करताहूं कि जिस तरह दरिद्री धन पाकर प्रसन्न होता है उससे लाखभाग अधिक गिरिजा को आनन्द हुआ बरन उस स्त्री के समान जो अपने पतिके वियोगमें बहुत समयतक दुःखी रहै और फिर अपने भर्त्ताको पाकर प्रसन्न होजावे उससे भी अधिक गिरिजा को आनन्द मिला या कि किसी स्त्रीने जिसके अकेला लड़का हो और अपने ऐसे दूर हुये बालक को पाकर प्रसन्नता उठाये उससे करोड़ों भाग अधिक गिरिजा को आनन्द मिला या उस खेती करनेवालेके स-मान जो काल या वर्षा न होनेके कारण चिन्तित हो और जल की वर्षा देखे उससे भी करोड़ों हिस्से अधिक गिरिजा को हर्ष हुआ या बहुत दिनोंके अन्धेने आंखें पाई हों या किसीने डूबनेके समय नाव पाई हो या किसीने अग्नि लगनेके समय भयभीत होकर फिर अपने ब-चाव का स्थान पाया हो या बहुत दिनोंके भूखेने छत्तीस व्यञ्जन पाये या प्यासेने ठण्ढा पानी पाया या किसी कृपण मनुष्यने व्यापारमें बड़ा धन पाया या किसी योगी ने बहुत परिश्रम करनेके उपरान्त अपने इष्टदेव को देखा हो या किसी भक्तने बहुत समय के अनन्तर भजनकर भक्ति पाई हो इन सबसे करोड़ों भाग अधिक गिरिजा को आनन्द प्राप्त हुआ जब गणपति दूध पीचुके तो शिवने फिर अपनी गोदमें उठाकर शिर और हाथ चूमें और नाना प्रकारके आशीर्वाद दिये और सब ब्राह्मण आदिकों को बुलाकर रत्न मोती पारितोषिक दिये और बहुतसी सवत्सा गौवें दीं और अन्नादि बहुतही दान किया और विष्णु और हम और देवता मुनि आदि सब शिवके ऐसे पुत्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखने को गये और हिमाचल अतिप्रसन्नतापूर्वक रत्न साथ लियेहुये वहां पहुँचे और सब ब्राह्मण और मङ्गनों को दान मानसे परिपूर्ण करदिया एकलाख बहुमूल्य रत्न पांचलाख भार सोना तीनलाख घोड़े एक हज़ार हाथी जिनपर सोने की अम्बारियां थीं और दशलाख गौ और असंख्य भूषण और वस्त्र ब्राह्मणों को दान दिये इसी प्रकार हम और विष्णु ने भी बड़ा दान ब्राह्मणों को दिया और देवता शेषनाग गन्धर्वादि ने एक हज़ार अच्छे बरतन और एक सहस्र माणि और एक सहस्र माणिक्य और रत्न और असंख्य चन्द्रकान्त माणि एक सौ वैडूर्यमाणि और इन्द्रनीलमणि और पांचलाख नागरत्न और असंख्य अग्नि से शुद्ध किये वस्त्र इसी प्रकार बहुत कुछ दान किया और लक्ष्मी ने कौस्तुभमणि और सरस्वती ने हार ब्राह्मणों को दान दिया और वरुण और कुबेर ने भी हीरे पन्ने कपड़े बहुत ही मंगनों को देडाले यहांतक कि कोई मंगन भिक्षुक और बन्दी-जन न रहा और विष्णु और हम सबने आकर लड़के को देख बहुत आशीर्वाद दिये विष्णु ने कहा कि हे बालक! तुम ने शिव को बहुत प्रसन्न किया तुम्हारा बल पवन के समान होगा और सब सिद्ध तुम्हारे आश्रय रहेंगे मैंने यह आशिष दी कि तुमको सब पूजेंगे और तुम्हारा तेज और कीर्ति किसी समय में कम न हो और तुम्हारी बुद्धि तीव्र हो तुम बड़े विद्वान् होगे तुम हमारे समान सबको उपकार करोगे तुम्हारे स्मरण करने से तीनों भुवन के विघ्न दूर होजावेंगे लक्ष्मी ने कहा कि जहां तुम होगे हम अवश्य होंगी वहां ऋद्धि सिद्धि प्रीति-पूर्वक स्थित रहेंगी सरस्वती बोली कि तुमको कविता में बड़ी शक्ति होगी तुम्हारे स्मरण से कविताशक्ति शीघ्र प्राप्त होगी तुम्हारी काव्य हमारे समान होगी तुम सदा रहोगे सावित्री ने कहा कि हम सब वेदों की माता हैं हमारी कृपासे तुम वेदों के ज्ञाता होगे हिमाचल ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा कि तुमको शिव के चरणों में बड़ी भक्ति प्राप्त हो तुममें विष्णु के समान बल हो मैनाक बोले तुम कामदेवके समान सुन्दर और समुद्र के बराबर गम्भीर होकर विष्णु और शिव के समान धर्मवान् होगे वसुन्धरा ने कहा कि तुम्हारे अधीन पृथ्वी भर के सब रत्न और मणि रहेंगे और तुम्हारी कृपासे सर्वप्रकार का विघ्न विनाश को प्राप्त होकर तुम हरप्रकार का आनन्द देनेवाले होगे और तुम में हमारे समान दया धर्म शील होगा पार्वती ने कहा कि तुम सिद्धि के देनेवाले और सिद्धयोगी के समान होकर मृत्यु के जीतनेवाले सब से अलग अपने पिता के समान होगे शिव ने कहा कि तुम सर्वानन्द देनेवाले और सबके सेवने योग्य और पूजने योग्य मुझे बहुत प्यारे होगे इस तरह से सबने मिलकर गणपति को अशीषें दीं यह गणपति की उत्पत्ति जो मनुष्य सुने सुनावेगा वह अपने सब मनोरथ पावेगा ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! फिर शिव ने बड़ा भारी उत्सव रचा आप उत्तमोत्तम स्थान पर जो रत्नोंआदि से जटित था बैठे दाहिनी ओर विष्णु और बाईं ओर पर हम बैठे और विष्णु के पार्षद और चन्द्रमा दिक्पति और धर्मराज आदि अपने स्थानपर बैठगये नाचगाने की समाज हुई तब वेद पुराण आगम निगम ने शिव की स्तुति की बाजे बजनेलगे इसी समय में सूर्यके पुत्र शनैश्चर गणपति के देखने को आये और शिव और विष्णु और ब्रह्मा और धर्मराज और चन्द्रमा की स्तुतिकर आज्ञा ले मन्दिर के भीतर गये और पहिले द्वारपर पहुँचे जहां द्वारपालों ने जाने से रोंकलिया शनैश्चर ने कहा कि हम लड़के के देखने के लिये जाते हैं हमको मत रोंको द्वारपालों ने कहा कि गिरिजा की आज्ञा बिन हम नहीं जानेदेते हमको शिवकी शपथ है तुम यहीं खड़ेरहो हम गिरिजा से आज्ञा लिये आते हैं यह कह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वारपाल भीतरगया और गिरिजा से शनैश्चरके आने का हाल कह सुनाया सो गिरिजा की आज्ञा से शनैश्चर भीतर गये देखा कि गिरिजा स्वर्ण की चौकी पर बैठीहुई अतिप्रसन्न हैं और पांच बांदियां सेवा कर रही हैं शनैश्चर ने स्तुति की गिरिजा ने आशिष दी और कहा कि क्या कारण है कि तुम आधा शिर झुकाकर देखते हो तुम क्यों अच्छी तरह लड़के को नहीं देखते क्या तुमको हमारा यह आनन्द भला मालूम नहीं हुआ शनैश्चर बोले कि तुमसे कुछ छिपा नहीं है मैं तुम्हारी आज्ञा से कहता हूं कि भाग्य बलवान् है सर्वमनुष्य संस्कार के अधीन हैं और शुभाशुभ कर्म दोनों लोकमें दूर नहीं किये जासक्ते और स्वर्ग, नरक, जन्म, मरण, आकाश, पाताल, देवता, मनुष्य, आवागमन, धन की पूर्णता, दरिद्रता, कुल, अकुल, पुत्रहीन, सपुत्र आदि सब भाग्य के व्यवहार हैं इसी प्रकार हम भी अपने भाग्योंसे आधे देखनेवाले होगये हैं और जिस कारण कि हम ऊपरको दृष्टि नहीं कर सक्ते उसकी कथा वर्णन करता हूं यद्यपि यह कथा इस योग्य नहीं कि ढिठाई से विनय कीजावे पर जो कि तुम मेरी माता और हम तुम्हारे पुत्र के समान हैं तो इस समय में लज्जा क्या है अर्थात् हम बाल्यावस्था से शिवके भक्त होकर और उन्हींके ध्यान और तप में प्रवृत्त रहकर उन्हींका नाम जपते थे जब युवा हुये तो हमारे पिता ने हमारा बिवाह करदिया और चित्ररथ की कन्या जो हमको ब्याही गई उसने मेरी बड़ी सेवा की संयोगसे एक दिन ऋतु के दिनों से निश्चिन्त होकर स्नान और शृङ्गार किया और ऐसी सुन्दर बनी कि जो उसको मुनिलोग भी देखलें तो मोहित होजावें वह कामकी भरी तिरछी चितवन किये हुये हँसती हमारे पास आई और कहा कि मुझ को देखो और हमारे साथ भोगकर हमारी इच्छा पूरी करो मैंने कुछ भी उसकी ओर ध्यान न किया और उसी तरह शिव के ध्यान में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगारहा उस समय मैं बहुतही बुद्धिहीन था उसके महीन शब्द को न सुना जब उसने अपने मनोरथ का पूर्ण होना कठिन जाना तो कोपित होकर मेरी ओर क्रूरदृष्टि से देख यह शाप दिया कि तुमने बुद्धिमान् होनेपर यह कैसा भारी पाप किया कि अपना धर्म न जाना हमारा समय जातारहा जो अपराध तुमसे हुआ है उसका तुमने विचार न किया इसीसे तुमको शाप देतीहूं कि तुम शुभ न होगे और नरक में पड़ोगे और जिसको तुम आँखोंसे भलीभांति देखो वह जड़ पेड़ से जलजावे यह कहकर वह बराबर मेरे पास खड़ीरही तब मैंने ध्यान करना छोड़ उत्तर दिया और प्रसन्न होकर कहा कि मैं ऐसे शाप को नहीं सहसक्ता यह वचन सुन हमारी स्त्री खेदकर नम्रताकर अतिलज्जित हुई और मेरा मन कुछ भी खेद को प्राप्त न हुआ मैंने वह शाप धारण करलिया हे गिरिजे ! उस रोज़ से मैं किसी वस्तु को आंख भरके नहीं देखता क्योंकि मुझको जीवके निर्जीव होनेका भय हर समय बना रहता है यह वचन सुन गिरिजा अपनी सखियों समेत बहुतही हँसी और कहा कि हे शनैश्चर ! तुम हमारे पुत्र को देखो शनैश्चरने विचार किया कि गिरिजा के पुत्र को देखूं या न देखूं क्योंकि जिसको मैं देखता हूं उसको दुःख अवश्य होता है यह विचार वृष को साक्षी कर चाहा कि लड़के को देखूं और बहुत धीरे चुपरहकर एक दाहिने नेत्रके कोनेसे बालक की ओर देखा कि तुरन्त गिरिजानन्दनका शिर उड़गया शनैश्चर तुरन्त नेत्र हटाकर चिन्तित हुये पार्वती यह दशा देख रोने पीटने लगी और शनैश्चर को बुरा भला कहा और लड़केका सब शरीर हृदयसे लगाकर महादुःख किया यहां तक कि पृथ्वी में गिरकर मूर्च्छित हुई जिस तरह कि वायु के कारण केलेके वृक्ष जड़से उखड़ पड़ते हैं यह दशा देखकर सब स्त्रियां रोने लगीं ऐसे रोने पीटने का शब्द मन्दिर के भीतर सुन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर विष्णु आदि आश्चर्यकर अन्दर गये और सब कुछ देखा और शिवभी संसारी मनुष्यों के समान रोनेलगे और देवता आदि सब के सब रोये सो विष्णु और हम देवताओं समेत आकर उपाय से गिरिजा को चेत में लाये ॥

बीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! गिरिजा चैतन्य होकर फिर खेद और दुःख से मूर्च्छित होगई और फिर हम सबने किसी उपाय से जगाया तब विष्णु और हम सबने गिरिजा को हरभांतिसे समझाया कि संसार का सम्बन्ध क्या है ये सब सम्बन्ध आदि केवल मोहके कारण हैं गिरिजा ने उत्तर दिया कि हमारा जीना अब कठिन है देवताओं की युक्ति को मैंने कुछभी न जाना मेरा बालक निर्जीव होगया हम अभी तीनों लोक को जलादेंगी क्योंकि मेरे दुःखी रहने में और सब सुखी नहीं रहसक्ते कदाचित् हमारा पुत्र शीशसमेत जो न उठेगा तो संसारभर को आनन्द न मिलेगा यह कहकर मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़ी और फिर सचेत न हुई उस समय सब चित्रवत् चुप होगये और शिवके पास आकर बहुतही लज्जा से कहनेलगे कि हे शिव ! यह क्या चरित्र हुआ जिससे सबको दुःख मिलता है हम सबको इस बात का निश्चय है कि आपकी माया सब पर प्रबल है अब वह उपाय बतलाइये जिससे बालक फिर जीउठे और तीनोंलोक को आनन्द मिले शिवजी बोले कि जो बात होनेवाली है वह रुक नहीं सक्ती चाहे कोई कोटि उपाय करे जो ईश्वर ने भालपर अक्षर लिख दिये वे अवश्य होते हैं फिर विष्णु से कहा कि तुम मुख्य हमारे रूप हो हम में और तुम में कुछ अन्तर नहीं है वेदोंने हमारी तुम्हारी बराबरी कही है अब तुम और किसीका शीश काटकर बालकपर लगा दो तुम्हारी कृपा से बालक जी उठेगा विष्णुजी तुरन्त गरुड़पर चढ़कर चले और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेगही शिवकी आज्ञानुसार उत्तर की ओर चक्र लियेहुये पहुँचे और पुष्पभद्रानदी के तीरपर जाकर वनमें एक हस्ती को हथिनी और बच्चों समेत देखा कि वह अपने सबों समेत उत्तर की ओर शिर किये सो रहाहै विष्णुने तुरन्तही उस हस्ती का शीश चक्र से काटकर लोहू टपकता हुआ गरुड़पर रखलिया और चाहा कि चलूं इतने में हथिनी जगी और बहुत चिल्लाकर अपने बच्चेको जगाया और फिर बहुत रोई और फिर विष्णु को चारों ओरसे घेरलिया और उत्तम रीतिसे स्तुति की और कहा कि हे विष्णो ! यह आपने कैसा कर्म किया आप तो धर्मरूप हैं जो हमारे नरको जिलाते नहीं तो हम सबके मारने का पाप आप पर होगा विष्णुजी ने प्रसन्न होकर उसके शिर से एक और शिर लगाकर उसको ज़िन्दा करदिया और कहा कि एक कल्पतक तुम जीते रहोगे और तुरन्त विष्णुजी चले और हम सबके और गिरिजा के पास जाकर शिर देदिया गिरिजा ने उस शीश को युक्ति से जोड़दिया और शिवजी ने अपनी दयादृष्टि से जिलादिया जिसके देखने से गिरिजा इतनी प्रसन्न हुई कि हमसे वर्णन नहीं होसक्ता और तुरन्त दूध पिलाकर लाड़प्यार किया और विष्णु की बड़ी प्रशंसा हुई और कहा कि तुम शिवरूप हो और तीनों लोक को आनन्द देनेवाले हो हमने यह शिव का चरित्र जानलिया है विष्णुजी ने प्रसन्न होकर अपने गले की कौस्तुभमणि निकालकर लड़के को पहिना दी और विष्णु और हमने बालक को आशीर्वाद देकर हमने अपना भूषण भी लड़के को पहिना दिया इसी प्रकार हिमाचल देवता मुनि आदि सबोंने बहुतसी आशिषें दीं और दान मान से सब ब्राह्मण मङ्गन अयाचक होगये और ऐसा बड़ा उत्सव हुआ कि सृष्टि भर प्रसन्न होगई देवताओं ने दुन्दुभी बजाई गिरिजा लड़के को खिलाने और प्यार करने में प्रवृत्त रहकर आनन्दसागर में डूब गई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इक्कीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शनैश्चर लज्जा के कारण एक कोने में चिन्तायुक्त बैठा था संयोग से गिरिजा ने देखलिया सो शनैश्चर से कहा कि तुमने अपनी दृष्टि से हमारे पुत्र का शिर उड़ा दिया इस से मैं भी तुमको शाप देती हूं कि तुमभी अङ्गहीन होजावोगे यह सुन सूर्य कश्यप और यमराज क्रोध से पूर्ण होगये और तुरन्त उठ कर चाहा कि विष्णु को शाप देवें विष्णु ने हमसे और देवताओं से कहा कि इनकी सेवा करके उनको दूर करो सो हम और देवताओं समेत उनको समझाने लगे कश्यप ने कहा कि यह शनैश्चर हमारा पोता निष्पाप है गिरिजा ने मनाकरने पर भी आप अपने लड़के को दिखलाया था शनैश्चर का क्या अपराध है हम भी अपना ब्रह्मतेज गिरिजा को दिखाते हैं जिससे गिरिजा के पुत्र का अङ्गभङ्ग होता है यमराज बोले कि गिरिजा ने किस पाप पर शनैश्चर को शाप दिया हम भी गिरिजा को शाप देते हैं क्योंकि शत्रु के मारने में कुछ दोष नहीं हमने यमराज को मना किया कि आप क्या स्त्रियों की बानि को नहीं जानते यह वचन सुन उसने क्रोध दूर किया और गिरिजा ने भी शान्त हो शनैश्चर से कहा कि तुम सब ग्रहों के राजा होकर शिव के प्यारे अमर होजावोगे और हमारे वर से तुम शिवके बड़े भक्त होगे हमारे शाप से कुछ खण्डित होजाओ पर तुमको कुछ दुःख न होगा यह कह गिरिजा भीतर चलीगई और शनैश्चर ने सभा में विष्णु और हम सबको प्रसन्नतापूर्वक प्रणाम किया और नये शिर से आनन्द मङ्गल गाना नाच होनेलगा शिवजी ने पहले सब सामग्री इकट्ठीकर गणपति की पूजा की फिर विष्णुजी हम देवता मुनि आदि सबने गणेशजी को पूजा और अपने भूषण सबने गणपति को दिये और तीनों देवता एकही बेर कहने लगे कि हे पुत्र! तुम्हारी सबसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहिले पूजा हुआ करेगी कि वह कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो तुमको ब्रह्म-
ज्ञान प्राप्त होगा तुम परम सिद्धि देनेवाले होगे और अतिकृपा से
अपने समान करलिया फिर सब देवताओंकी सम्मति से गणपति के
यह नाम रक्खे गये लम्बोदर एकदन्त विघ्नेश शूर्पकर्ण हेरम्ब गणेश
गजवदन विनायक आदि अनेक जो विस्तारभय से नहीं लिखे फिर
सबने बहुतसी चीजें गणेश को दीं अर्थात् शिवने योग और ब्रह्मज्ञान
विष्णुजी ने अपनी माला और विद्या जो हर समय प्रसन्नता देती है
और हमने कमण्डलु और धर्मराज ने सिंहासन और इन्द्र ने दूसरा
सिंहासन रत्नों का जड़ाहुआ और सूर्यने वस्त्र और दो माणि और कु-
ण्डल और छत्र चन्द्रमा ने माणिका माला कुबेरने मुकुट और असंख्य
धन और अग्नि ने वह्निशुद्धांशुक पवनने जड़ी हुई अँगूठी पार्वतीजी
ने हार और सावित्री ने कण्ठ का भूषण और पृथ्वी ने चढ़ने के लिये
मूषक और देवताओंने शीतगिरि देकर पूजन किया इसप्रकार हर एक
ने अपनी २ वस्तु देकर जयजय शब्द किया और विष्णुने देवताओं
समेत एक बड़ी स्तुति गणपतिकी की कि जिसको जो मनुष्य तीनों
काल पढ़े तो कभी उसपर किसी प्रकार की आपत्ति न पड़े और न
उसको किसी समयपर भय प्राप्त हो यदि विदेश जाने के समय पढ़े तो
उसका उद्योग सुफल हो और उसके सब कष्ट नष्ट होजावें इसीप्रकार
वह स्तोत्र बड़ा फल देनेवालाहै फिर शनैश्चरने विष्णुजी से बिनती
की कि आप गणपति के तेजका बखान करें सो विष्णुजीने इस शनै-
श्चर की बिनती मान गणपतिका कवच कह सुनाया हे नारद ! वह
कवच अतिगुप्त है और सिद्ध है फिर विष्णुजी और हम बिदा होकर
अपने घरको गये इतना कह सूतजी बोले कि हे शौनको ! यह कथा
सुन नारदने संदेह किया कि हमने गणपतिका चरित्र और प्रकार से
सुना है और तुमने औरही रीतिसे वर्णन किया अर्थात् हमने सुनाथा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि गणेशको गिरिजा ने अपने शरीरके मैल से उपजाया शिव ने शीश काट डाला आप विस्तार से वर्णन करें ॥

बाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हां कल्पभेद से दूसरी रीति से गणपति के उत्पन्न होनेकी जो कथा है उसको हम वर्णन करते हैं कि जब शिवने गिरिजा से विवाह किया और उसको घर लाये और दैत्यों का बध करके विहार में प्रवृत्त हुये तो संयोग से एक दिन गिरिजा की सहेलियों ने कहा कि देखो शिव के असंख्यगण हैं और तुम्हारे एकभी नहीं है यद्यपि शिवके गण तुम्हारे अधीन हैं पर तुम भी कोई गण उपजाकर उसको अपने द्वार का द्वारपाल बनाओ कि उस गण की रक्षासे किसी गणके आने जानेका कुछ भय न रहे गिरिजाने प्रसन्न होकर कहा कि अच्छा समय पर ऐसाही होजावेगा तथाच एकसमय गिरिजा नन्दी को द्वारपर रक्षाके निमित्त बिठा आप स्नान करने लगीं शिवलीला करके द्वारपर आये और चाहा कि भीतर जावें पर नन्दीने मना किया शिव नन्दी को डरवाकर भीतर चलेगये गिरिजा अन्य स्त्रियोंके समान ऐसी दशामें शिव को देख अतिलज्जित हुई और लज्जासे अपने शरीर को छिपाते हुये भाग चलीं और अपनी सहेलियों के वचन को स्मरण किया फिर कई दिनों के अनन्तर गिरिजाने इच्छा की कि ऐसा गण उपजाना चाहिये जो हमारे अधीन अतिबलवान् पराक्रमी शिवके गणोंसे अधिक और तेजस्वी हो यह विचार अपने शरीरसे मैल निकाल एक मूर्ति बनाई और गणपति नाम लेकर जीवदान दिया वह अतिसुन्दर मानो रूप का सागर उपजा गिरिजा अतिप्रसन्न हुई और कहा कि तुम हमारे पुत्र और श्रेष्ठगण हो फिर लाड़ प्यार किया और अतिप्रसन्न होकर भूषण और पट्टवस्त्र दिया और गणपतिने प्रणाम किया और कहा जो काम मुझे सौंपो वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूरा करूं गिरिजा बोलीं कि तुम हमारे द्वारपाल होजावो और किसी के टालनेसे कभी द्वारसे न हटना और न कोई हमारी आज्ञा बिन भीतर आनेपावे तुमको कुछ किसी से भय न होगा फिर गणपति को हृदयसे लगाकर द्वारपर बैठाया सो गणेशजी हाथमें डण्डा लेकर द्वारपर बैठे और गिरिजाने स्नान की इच्छा कर सब सेवकों पर सामग्री जोड़नेको कहा और स्नानके निमित्त बैठीं कि शिव गणों समेत आपहुँचे और गणोंको बाहर छोड़ चाहा कि आप भीतर जावें पर गणपतिने रोका और कहा कि अभी भीतर जानेका समय नहीं है क्योंकि हमारी माता स्नान कररही है यह कह अपने डण्डेको आगे कर शिवको वहीं पर रोंकलिया शिवने कहा कि तुम कौन हो जो मुझे नहीं जानते न भीतर जाने देते हो हम शिव गिरिजापति इस मन्दिर के स्वामी हैं तुम बड़े बुद्धिहीन मालूम होते हो तुम किसके पुत्र हो किसने तुमको उपजाया क्या बकते हो यह कह जब शिव भीतर चले तो गणपतिने तुरन्तही अपना डण्डा शिवपर मारा और कहा कि कौन शिव और कहां रहते हो किस कार्यके निमित्त हमारी माताके पास जाते हो हम गिरिजा की आज्ञा बिन किसी को चाहे कैसाही बड़ा हो भीतर नहीं जाने देंगे जब शिव फिर प्रश्नोत्तर के उपरान्त भीतर जानेलगे तो फिर गणपति ने डण्डा मारा तब तो शिव ने क्रोधित होकर अपने गणों को बुलाया कि तुम सब जाकर इससे पूछो कि कौन है गणों ने आकर पूछा गणपति ने कहा कि हम गिरिजासुत हैं तुम कौन हो जो हमसे पूछने आये हो और फिर बड़ी वार्ता हुई सो गणों ने जाकर उनसे कहा कि वह नहीं उठता शिव ने कहा कि उसको द्वारसे उठादो गणों ने बहुतेरा चाहा कि गणाधिप को उठालेवें और फिर भी परस्पर बड़ा झगड़ा होनेलगा इसी समय में शिव भी निकट गये और भीतर से गिरिजा ने यह शब्द सुनकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनी सहेलियों से कहा कि बाहर जाकर देखो कि क्या होरहा है ॥

तेईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! गिरिजा की सहेलियोंने सब हाल आंख से देखकर गिरिजा से कह दिया और कहा कि न जानिये शिव की क्या बानि है कि वे बेसमय आया करते हैं अभी केवल मुँह ही से तकरार होती है पर जानाजाता है कि तुम्हारा पुत्र विजय पाकर आवेगा इस समय तुमको उसकी सहायता करना उचित है गिरिजा ने कहा कि तुम गणपति से कह दो कि शिव किसी प्रकार न आनेपावें सो सहेली ने यही आज्ञा गणपति को सुना दी तब गणपतिने शिवके गणों से कहा कि तुम्हारे मनमें जो हो वह करो हम सब तरह से तय्यार हैं हमारी आज्ञा विना बलात्कार तुम्हारा जाना कठिन है शिवके गण फिर दुःखी होकर शिवके पास गये और सब वृत्तान्त वर्णन किया शिवने कहा वह तो अकेला है तुम इतने इकट्ठे होकर क्यों युद्ध नहीं करते यह कहकर चुप होरहे इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! देखो शिवकी लीला कैसी अचरज देनेवाली है जो शिव एक बाण से सृष्टि भर को नष्ट करसक्ते हैं वह अपने पुत्रके साथ लीला करके युद्धकी इच्छा रखते हैं निदान शिवकी आज्ञा पाय गण हथियारबन्द होकर गणपति के समीप पहुँचे और कहा कि हे बालक ! क्या तू चाहता है कि हम जलकर भस्म होजावें तुम यहां से तुरन्त भाग जाओ नहीं तो इसबेर तुमको मारही डालेंगे तेरी ढिठाई हमने अबतक सही है तब गणपतिने सहनशीलतापूर्वक उत्तर दिया कि ऐसी लम्बी क्यों लेते हो साम्हने आवो तुमतो बड़े वीर हो युद्ध किये हुये हो हमतो केवल अज्ञानबालक हैं और कभी युद्ध को आंख सेभी नहीं देखा पर तोभी हम युद्धसे मुख न मोड़ेंगे शिवजी गिरिजा के पुत्रके बलको देखकर धन्य २ कहेंगे यह सुनकर शिवके गणोंने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गणपतिके ऊपर धावा किया और दोनों ओरसे युद्ध होनेलगा शिव के गणों ने शूल बाणादि सब शस्त्र गणपति के ऊपर चलाये पर गणपतिने उनके सब हथियार दण्ड से काटडाले और सबको युद्धस्थल से भगादिया कुछ दूर भागकर फिर वे अपनेको धिक्कार देतेहुये लौट आये इस विचार से कि शिवको क्या मुँह दिखावेंगे कि एक लड़के से परास्त होकर भाग आये न जानिये इस छोटेसे बालकने यह बल और वीरता कहां से पाई और फिर गणपतिको पुकारकर कहा कि अब तक तो शिशु जानकर हमने तुमको छोड़दिया है पर अब नहीं छोड़ेंगे यह कह कर बहुतसे हथियार गणपति की ओर चलाये गणपति ने भी सब को मारा तब बड़ाभारी युद्ध हुआ निदान फिर भी शिवके गण परास्त होकर भागे और गणपति उसीतरह द्वारपर स्थित हुये ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिवने ऐसा चित्र विचित्र करके केवल अपने गणोंका गर्व दूर करदिया और अपनी शक्ति प्रकट करके दिखाई कि तीनों भुवन शक्तिके अधीन हैं वही शक्ति शिवकी स्त्री है हे नारद ! ऐसे समयमें तुमने आकर हमसे यह हाल सब कह सुनाया और जब कि तुमने विष्णुलोक में जाकर विष्णु से यह सब समाचार कहा तो विष्णुजी बड़ा आश्चर्य करनेलगे सो हम विष्णुजी देवता आदिने शिवजीके समीप जाकर प्रणाम किया और स्तुति करनेलगे और विनय की कि इस समय कौन लीला आपने कर रक्खी है कहिये शिवने कहा कि हमारे द्वार पर एक बालक खड़ा है निकट है कि वह प्रलय करदेगा इससे तुम सब जाकर युक्तिसे उसको प्रसन्न करो और ऐसा उपाय करो कि जिसमें प्रलय न हो सबोंने कहा कि हे शिव ! यह सब तुम्हारी लीला है कि एक बालक ऐसा युद्ध कर रहा है यह कह सब गणपति के पास गये हमको आते हुये देख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गणपतिने एक बाल उखाड़ लिया हम सबने कहा कि क्षमा करो आप से कोई युद्धकी कांक्षा नहीं रखता यह हमने कहा था कि गणपतिने तुरन्त अपने परिघको सँभाला कि हम सब लौट कर शिवके पास गये तब शिवने क्रोध करके इन्द्रआदिसे कहा कि तुम जाकर उस बालकको बध करो तुम्हारा बड़ा यश होगा सो इन्द्रादि युद्धके निमित्त तत्पर होकर गणपतिके ऊपर बाण और अन्यशस्त्र वर्षाने लगे उसी समयमें शिव और गिरिजाने दो शक्तियां उपजाईं जो तुरन्त युद्धस्थल में पहुँचकर दोनों ओर के शस्त्र अपने ओष्ठ खोलकर निगलजाती थीं और जिसप्रकार कि पर्वत समुद्रके बीच में स्थिर है उसी प्रकार गणपतिने अकेले सेनाको दुःखी करदिया और वे सब बेहथियार खाली हाथ युद्धस्थल में खड़े रहे और कहा कि अब हम क्या करें? कोई शस्त्र बाक़ी नहीं रहा जिससे युद्ध करें और केवल वीरभद्र देखतेथे कि दोनों शक्तियोंने प्रकट होकर सबोंको दुःखी करदिया है निदान हे नारद! तुमने देवताओं समेत शिवके निकट जाकर कहा कि हमको जान-पड़ता है कि यह सब तुम्हारी लीला है अब जो आप शीघ्रही सुधि नहीं लेते तो प्रलय होजावेगी फिर शिवकी आज्ञानुसार इन्द्र विश्वा-मित्र यमराज आदि ने पहुँचकर गणपति के ऊपर अपने २ शस्त्र चलाये पर वृथाही गये गणपतिने अपने दण्डेसे सबको मारा जिससे हाहाकार मचगया और सब देवताओं ने शिवकी शरणमें रक्षा पाई हे नारद! उस समय तुमने शिवसे कहा कि हे शिवशङ्कर, संसार के उ-पजानेवाले! अपनी लीलाको जो फैलादी है समेट लीजिये और संसार की रक्षा कीजिये कदाचित् यह गिरिजा का गण जीतारहा तो यह प्रलय करदेगा इसलिये इस गणका शिर काटलीजिये आपके सिवा और कोई मारनेवाला प्रकट नहीं जाना जाता यह कह तुम चुपहुये और शिव हँसे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पच्चीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह वचन तुम्हारा सुनकर शिव लड़ाई के लिये अपने उत्तम २ शस्त्रों समेत तत्पर हुये और अतिक्रोधित होकर विष्णु और प्रसिद्धगणों को साथ लिया और डमरू बजा दिया तब सब देवता जो कई बेर युद्धस्थलसे भागचुके थे वीरता से गरजनेलगे और विष्णु ने भी आप गणेशसे युद्ध किया जो शस्त्र कि विष्णुने गणपतिके ऊपर प्रलय की अग्नि के समान चलाया वह गणेशजीने अपने दण्डसे दो खण्ड करडाला निदान बहुत युद्ध करने के उपरान्त विष्णु ने शिवसे कहा कि हम इस गण का बध करेडालते हैं शिव बोले कि बहुत अच्छा और गणपतिने अपनी इतनी वीरता प्रकट की कि सब देवता युद्धस्थानसे पीठ दिखाकर भागगये तब विष्णुने अपने मुखसे गणेशजी की प्रशंसा की और कहा कि आज तक कोई इतना नहीं लड़ा विष्णु यह कह रहे थे कि गणपतिने अपना परिघ उठाकर मारा पर विष्णुने अपने परिघसे उसको काटडाला गणपतिने एकका प्रहार विष्णुकी छाती में मारा जिसको विष्णु न सहकर धरतीपर गिरपड़े तब हाहाकार मचगया फिर विष्णुजी शिव की कृपासे उठ खड़ेहुये इसीप्रकार बड़ी देरतक दोनों में युद्ध रहा कोई परास्त न हुआ निदान विष्णुने एकही बेर असंख्यबाण गणपतिपर चलाये और इस विचार से कि विजय होगी अपना शङ्ख बजादिया यह शङ्ख का शब्द सुनकर सब देवता लौट आये और फिर युद्ध करनेलगे और एकही बेर सब देवता गणपतिपर चढ़धाये गणपतिने गिरिजाको स्मरणकर अपनी मुष्टिका चलाकर सब देवताओं के शस्त्र निष्फल कर डाले और इतने वेगसे शस्त्र चलाये कि कोई नहीं देखता था कि कब बाण लिया और कब मारा उससमय सब देवता आदि अतिआश्चर्य में हुये पृथ्वी कांपगई पर्वत हिलगये और यह जानपड़ा कि प्रलय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होती है विष्णुने सबको दुःखी जान और प्रलय के चिह्न देख दया की राहसे तुरन्त गणपति पर कूद पड़े और वेगही दौड़कर गणपति का शूलसे शिर काटडाला तब हम और देवताआदि निर्भय होकर अतिप्रसन्न हुये और शिवजी की स्तुति करनेलगे॥

छब्बीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! तब तुमने शिवकी आज्ञानुसार गिरिजाके पास जाकर युद्ध का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त कह सुनाया और तुमने अपने वचन की वाचालता को इस प्रकार से कहकर बताया कि हे गिरिजा! देवताओं की दुष्टता को देखो कि आपके पुत्र का बध करडाला उन्होंने क्या यह अच्छा किया है तुम्हारे प्रताप और तेजका कुछ विचार न किया उचित है कि तुम अपना तेज देवताओंको दिखा दो कि वे अपने कर्मों का दण्ड पावें और तुम्हारी बड़ाई बनी रहे यह कहकर हे नारद! तुमतो चलेगये और फिर तुम्हारी इच्छा युद्ध देखने की थी गिरिजा अपने गण की दुर्दशा सुन इकबारगी रो उठी और बहुतही शोककर मूर्च्छित होगई अपने शरीरसे सौ शक्तियां उपजाईं और चाहा कि उनके द्वारा सेनाभर का नष्ट करडालूं उन शक्तियों का यह स्वरूप था कि शरीर महाविकराल और तन वदन बहुतही भयानक हाथ पांव ताड़के वृक्षके समान उदर बहुत बड़ा उँगलियां नाना प्रकार की छोटी बड़ी रङ्गीन उन्होंने हाथ जोड़कर गिरिजा से बिनती की कि जो आज्ञा हमको मिले वह हम पूर्ण करें गिरिजा ने अतिक्रोध से कहा कि जितने देवता सेना में हैं सबको खाजाओ कोई बचने न पावे क्योंकि उन्होंने हमारा पुत्र मारा है सो वे सब वहां पहुँचकर देवताओंको भक्षण करनेलगीं और विष्णु और हम सब देवता दुःखी होकर कहने लगे कि क्या प्रलय आगई है या शिवने अपनी शक्तिका बल दिखाया है यह कहकर हम सबने शिव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की ओर देखा और हे नारद ! तुमने शिव की आज्ञासे कहा कि जब तक गिरिजा प्रसन्न न होंगी यह प्रलयरूप कष्ट नष्ट न होगा यह सुन तुम और सब देवता गिरिजाके समीप जाकर हाथ जोड़ शिर झुका स्तुति करने लगे और विनय की कि वास्तव में हम अपराधी हैं तुम क्षमा करो क्षमा करो प्रलय होती है हम आपके सामने काला मुँह किये खड़े हैं गिरिजाने कहा कि जो हमारा पुत्र जी उठे और सब देवता पहिले उसकी पूजा करें तो हम प्रलय न होनेदेवें सो देवताओं ने यह हाल शिवसे वर्णन किया तथा च शिवने गणपति के शरीर को अच्छे प्रकार धोया और कहा कि उत्तर की ओर जाकर ढूंढ़ो जो जीव पहिले मिले उसका शिर काटकर इसके शरीर में जोड़ दो यह जी उठेगा सो विष्णुने जाकर प्रसूनभद्रानदी के वनमें एक हाथी को अपनी मादा और एक अपने बच्चेसमेत सोते हुये देखा और तुरन्त हाथी का शिर काट अपने गरुड़पर रख चाहा कि चलूं पर हथिनी जगउठी और उसने इनकी ऐसी स्तुति की कि विष्णुने प्रसन्न हो दूसरा शिर उपजाय धर से जोड़दिया और वह हाथी फिर जी उठा और उसको आशिष दी कि तुम एक कल्पतक फिर जीतेरहोगे और फिर शिव के पास पहुँचकर शिर गणपतिके धरसे जोड़दिया और शिवने प्रसन्न होकर जीवदान दिया और सबके दुःख दूर होगये और सबको आनन्द हुआ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! गिरिजाने अपने पुत्र को जीता देख आनन्द मनाया और बहुत प्रकारके वस्त्र देकर कहा कि इससमय हम तुम्हारे भालमें सिन्दूर देखती हैं सो तुम्हारी पूजा सिन्दूरसे हुआ करेगी जो कोई तुम्हारी पूजा करेगा उसके पास सिद्धियाँ बनी रहेंगी यह हमारी आज्ञा है और शिवने भी अतिप्रसन्नता से कहा कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हे देवताओ ! यह हमारा पुत्र है और गणपति इसका नाम है सो गणपतिने भी उठकर सबको प्रणाम किया और कहा कि हमारा अपराध क्षमा करो सो तीनों देवताओं ने कहा कि तुम्हारी पूजा हम तीनों देवताओंके समान होगी और पहिले तुम्हारी पूजा हुये विना पूजा का कुछ फल न मिलेगा यह कह सबने पहिले गणपति की पूजाकी और प्रणाम कर यह वरदान दिया कि जो कि तुम भाद्रकृष्णचतुर्थी को उपजे हो इससे तुम्हारा चौथ को व्रत होगा जो बहुतही सुखदायी होगा और सबको तुम्हारी सेवासे आनन्द मिलेगा सबको तुम्हारी पूजा आदि करनी चाहिये फिर विष्णु और सब देवताओंने गणपति की एक अतिउत्तम और पवित्र स्तुति की इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनियो ! जब ब्रह्माजी इतना कहचुके तो आनन्दमें मग्न होगये उसी आनन्दमें एक स्तुति गणेश की निर्माण कर नारद को सुनाई फिर कहा कि देवता शिवसे बिदा होकर चलेगये ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! गिरिजा के दोनों पुत्र अर्थात् स्कन्द और गणपति सुबह को उठकर शिव गिरिजा को प्रणाम करते और दिन २ उनमें प्रेम बढ़ाते एक दिन शिवने गिरिजासे कहा कि अब हमारी इच्छा है कि हमारे पुत्रोंके बिवाह होजावें हमको स्कन्द और गणपति बराबर प्यारे हैं पहिले हम किसका बिवाह करें यह बात माता पितासे सुनकर दोनोंने परस्पर बड़ी तकरार की स्कन्द कहते थे कि पहिले हमारा बिवाह होना चाहिये और गणपति भी यही कहते थे तथाच शिव गिरिजाने दोनोंको बुलाकर कहा कि तुम दोनों बराबर हो हम इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि तुममें जो पृथ्वीभर की परिक्रमा करके पहिले लौट आवे उसका पहिले बिवाह करदेवेंगे सो दोनों पृथ्वी की परिक्रमा को चले पर गणपतिने यह विचारा कि हमको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सृष्टि भरके परिक्रमा की शक्ति नहीं है हम क्या करें इसी चिन्ता में कुछ विचार किया और स्नान कर माता पिताके सामने खड़े होकर बिनती की कि हम आपकी पूजा करेंगे पूजन के स्थान पर बैठिये यह सुन शिव और गिरिजा आसन पर बैठे और गणपतिने बार २ परिक्रमा कर दोनों की पूजा की फिर माता पिताने कहा कि स्कन्द तो जाचुके तुम भी पृथ्वी की परिक्रमा को जाओ गणपतिने विनय की कि क्या हमने पृथ्वी की परिक्रमा नहीं की तुम धर्म की मूर्ति होकर ऐसा कहते हो तब शिव गिरिजा ने कहा कि कब तुम सृष्टि की परिक्रमा कर आये गणपति बोले कि तुमको वेद त्रिभुवनका रूप कहते हैं सो हमने तुम्हारी परिक्रमा में तीनों लोक की परिक्रमा क्या नहीं की इसके सिवाय वेद लिखता है कि जो मनुष्य माता या पिता की परिक्रमा करता है उसको संसार भर की परिक्रमाका फल मिलता है जो मनुष्य कि माता पिता को घरमें छोड़कर आप तीर्थ को जाता है उसको पितरोंके मारने का पाप लगता है लड़के को माता पिताके चरणही बड़े तीर्थ हैं माता पिता ब्रह्मा विष्णु और शिव हैं इनसे बढ़कर और कोई नहीं इसी प्रकार स्त्रियों को अपने पति की सेवा से अधिक और कोई धर्म नहीं कहागया अब आप या तो वेद के मार्ग को छोड़दें नहीं तो हमारा बिवाह करदें शिव गिरिजा गणेश का यह वचन सुनकर दुःखी हुये और गणपति की ऐसी चतुराई देखकर अतिप्रसन्न हुये और कहा तुमको शुभमति उपजी है जिससे तुमने ऐसे धर्म के वाक्य कहे और हम तुमको यह कहते हैं कि तुम्हारा वचन वेदपुराण और शास्त्रके समान विश्वासयोग्य समझा जावेगा हम तुम्हारा बिवाह करदेवेंगे इतनेमें शिवजी की इच्छा जान विश्वरूपने अपनी दो कन्याओंके साथ जिनका सिद्धि और बुद्धि नामथा गणपति के साथ बिवाह करदिया और बिवाहमें बड़ी धूमधाम हुई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जैसा कि शिवजीके बिवाहमें हिमाचल की ओरसे सब बातें हुई थीं ऐसी स्त्रियां पाकर गणपति अति प्रसन्न हुये और कितने समयके उपरान्त गणपतिके दो पुत्र उपजे अर्थात् सिद्धिसे तो क्षेम और बुद्धिसे लाभ उनके समान संसारमें कोई पण्डित और कलावान् न हुआ इतने में स्कन्द संसारभर की परिक्रमा करके लौट आये तो हे नारद ! तुम ने पहिले स्कन्द के मनको बहुत बहकाया और स्कन्द से कहा कि देखो माता पिता ने तुमको बहकाकर गणपति का पहिले बिवाह करदिया और गणपतिने दो स्त्रियोंसे दो पुत्र उपजाये हैं जब कि माता पिता ऐसा छल करते हैं तो और क्यों न करें हमारी समझ में यह काम उन्होंने अच्छा नहीं किया जो तुम्हारे मन में आवे अब तुम वही बात करो जो आपही माता पिता अपनी सन्तान को बेंचे या विष देदेवे या राज्य धन द्रव्य आदि लूट लेवे तो मनुष्य किसके पास जाकर अपना दुःख कहे इसमें यही उत्तम है कि फिर उनका मुख न देखे हे नारद ! ऐसी बातों के करने से तुम्हारा तेज घटगया और स्कन्द अपने माता पिताके घर गये और अपने माता पिताकी स्तुति करने के अनन्तर अति दुःखी होकर स्कन्दजी क्रौञ्चपर्वत पर चले गये यद्यपि माता पिता ने जानेसे बर्जित किया पर स्कन्दजी न लौटे हे नारद ! शिवजी के चरित्र ऐसे आश्चर्य देनेवाले हैं कि कोई उनको नहीं जानता जो चाहते हैं वही करते हैं जैसा कि वेद कहते हैं वह नाना प्रकारके अवतार धारणकर और अद्भुतचरित्र रच अपने भक्तों को प्रसन्न करते हैं हे नारद ! जब से स्कन्दजी क्रौञ्चपर्वत में स्थित हुये तबसे क्रौञ्चपर्वत की औरही दशा होगई वह पर्वत यश बढ़ानेवाला पाप घटानेवाला और अति आनन्द देनेवाला होगया सो तब से स्कन्दजी उसी पर्वत पर स्थित हैं जिनके दर्शन से सब पाप छूटजाते हैं और हरमास की पूर्णमासी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को सब देवता और मुनि एकही साथ जाकर स्कन्दके दर्शन करके कृतार्थ होजाते हैं और जो कोई उस दिन मल्लिकार्जुन के दर्शन करे उसके सब पाप जलजावें और यद्यपि शिवजी और गिरिजाने क्रौञ्च में जाकर स्कन्दको मनाया पर फिर स्कन्दजी लौट न आये बरन शिवजीके आने का हाल जानकर इच्छा की कि कहीं और जगह जाकर स्थित होवें सो वहांसे तीन योजन दूर जाकर स्थित हुये शिवजी हर पूर्णमासीको वहां जाया करते हैं हे नारद! यह चरित्र हमने तुमको सुनाया जिसके सुननेसे सब पाप नष्ट होजाते हैं और मल्लिकार्जुन की बड़ाई वेद गाते हैं और उनके दर्शनसे अन्तमें कैलास मिलता है और इस गणपति के चरित्रको जैसा कि हमने वर्णन किया कोई सुनेगा तो वह संसार में आनन्द और अन्तमें शिवका धाम पावेगा॥

इति श्रीशिवपुराणेब्रह्मनारदसंवादे चतुर्थः खण्डः समाप्तः॥ ४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवपुराण भाषा ॥

पांचवां खण्ड जिसको युद्धखण्ड कहते हैं ॥

पहिला अध्याय ॥

सूत पौराणिक बोले कि हे शौनको ! नारदने फिर ब्रह्माजीसे कहा कि आप वर्णन करें कि सदाशिवजीने क्योंकर दैत्योंका बध किया ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब कि स्कन्दने तारकका नाशकर देवताओं को आनन्द दिया तब तारकके तीनों पुत्र अर्थात् तडिन्माली तारकाक्ष और कमलाक्ष तपका उद्योग कर महाकठिन तप में प्रवृत्त हुये पहिले केवल हमारे ध्यानमें एक पांवसे खड़े रहे और सौ वर्ष पर्यन्त केवल जल पीकर और सहस्र वर्ष तक केवल पवन भक्षण कर तप किया किये और फिर एक हज़ार वर्षतक केवल अंगुष्ठके बल खड़े रहे फिर दोनों हाथ ऊपरको उठाये हुये हज़ार वर्ष तक स्थित रहे तो उनके पास जाकर हमने कहा कि तुम्हारे तपसे हम अतिप्रसन्न हुये जो वर तुमको चाहिये वह मांगो तीनों दैत्योंने कहा कि जो आप प्रसन्न हैं तो हमको यह वरदान दीजिये कि हम किसीके हाथसे मारे न जावें हमने कहा कि तुम तीनों यह वरदान मत मांगो बरन जो जिसको इच्छा हो तुममें से वह उस वस्तुको मांगे यह सुन तीनों दैत्योंने विचारकर कहा कि इसी स्थानपर एक पुर बस जावे जहां आपकी मूर्ति स्थित हो और हम तीनोंके लिये एक २ नगर अलग २ जिनका अन्तर हज़ार २ कोसका हो तय्यार होजावें और यह तीनों पुर एकही रीतिके हों और जो मनुष्य केवल एकही

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बाणसे तीनों पुरों को नष्ट करे वही मनुष्य हमाराभी बध करे यह सुन· कर हमने कह दिया कि यही होगा सो हमने तुरन्त मयदानवको बुलाकर आज्ञा दी कि तीन नगर बनावो और हम यह कहकर चले गये और मयने हमारी आज्ञासे तीनों नगर तय्यार कर दिये हरएक नगर सौ २ योजन बड़ा था और उसमें स्वर्गसेभी अधिक आनन्द था और हमने क्रम से तीनोंको तीनोंपुर बांटदिये जिन्होंने उन नगरों में स्थित होकर अतिआनन्द पाया कोई तीनों भुवनमें वस्तु न थी जो उनके यहां न हो और असंख्यसेना भी थी और हरएकके घर में शिवा- लय बने थे जिसमें सबलोग शिवजी की पूजा करते और दिन दिन हवन और यज्ञ हुआ करते जो सामग्री कि तीनोंलोकमें किसीके घर न निकले वह छोटी २ जातियोंके यहांभी वर्तमान थी स्त्रियां पाति- व्रतधर्म में स्थित थीं और तीनों दैत्य शिवके भक्त थे और शिवजीकी पूजाके निमित्त उन्होंने नानाप्रकार के मन्दिर बनवाये वहां यह रीति थी कि शिवजीकी पूजा विना कोई भोजन न करता क्योंकि तीनों दैत्यों ने इस बातकी मनाही की थी कि सबलोग शिवजीका पूजन करें अर्थात् शिवजीको पार्थिवरूप मनमें समझकर पूजा किया करें और जो कोई आज्ञा न मानेगा तो दण्ड पावेगा अर्थात् बध किया जावेगा और वेद पुराणके मतके सिवाय और कोई बात धर्मके वि- रुद्ध उन नगरों में नहीं होने पाती थी ब्राह्मण रातदिन शिव २ कहा करते थे यहांतक कि जितने पृथ्वी पर धर्म हैं वे सब उन नगरों में होतेथे जब इनका तेज बढ़ा तो देवताओंने घबड़ाकर बड़े २ दुःख उठाये उनके शरीरमें अग्निके सदृश जलन उपजी और सब मिलकर हमारे शरण हुये और मेरी स्तुति कर कहा कि अब सब देवता त्रिपुर के तेजसे जलेजाते हैं और अपने २ पदोंसे गिरेजाते हैं आपके सि- वाय और कौन रखनेवाला है यह सुनकर हमने कहा कि उन्होंने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमारा बहुत तप करके इस प्रकारका वरदान प्राप्त किया है हम उनको जाकर वेदके विरुद्ध क्योंकर मारसक्ते हैं और जो कि वे शिवजीके सेवक हैं और उन्हींकी कृपासे नाना प्रकारके आनन्द उठाते हैं देखो शिवजीके भक्तपर कोई शस्त्र नहीं चलसक्ता उनकी भक्ति से हज़ारों करोड़ों आपदायें नष्ट होजाती हैं और हर एक मनुष्य उनके तपके छोड़नेसे तुरन्त नष्ट होजाते हैं सो इस वर्णनके अनुसार हम एक इतिहास कहते हैं कि रावण जो शिवजीका भक्त हुआहै उसका कोई बध न करसका बरन विष्णुका चक्र भी कुण्ठित होकर रावणका शिर जुदा न करसका तब आकाशवाणी हुई कि हे विष्णो ! जो किसी कारण रावण शिवजीकी सेवा छोड़देवे और शिवजीके विरुद्ध हो-जावे तो निस्सन्देह शिवजी उसकी सहायता न करेंगे इस लिये तुमको उचितहै कि अवतार लेकर शिवजीका नाम जपो जब शिवजी प्रसन्न होकर तुमको अपना बाण कृपा करेंगे तब रावण तुम्हारे हाथ से मारा जावेगा यह सुनकर विष्णुजीने शिवजीकी बड़ी पूजा की और शिवजीने रावणकी उत्तमबुद्धि को नष्ट करदिया जिससे रावण ब्राह्मणों को दुःख देनेलगा और विष्णुजीने भी रामचन्द्रका अवतार लेकर शिवजीका तप कर शिवजीसे वह बाण प्राप्त किया जो प्रलय करनेवाला है और उसी बाणसे रावणका बध करके सीताको प्राप्त किया सो इसका तात्पर्य यह है कि अब हम तुम सब शिवजीकी शरण में चलें और उनके चरण पकड़कर उनको प्रसन्न करें और शिवजीकी महिमा बखानें सो हम सब देवताओं समेत शिवजी के पास पहुँचे और हरएक पदमें जय २ का शब्द मिलाकर एक बड़ीभारी स्तुति की और कहा कि जब २ देवताओं को कोई संकट पड़ा है तब २ तुम्हींने दुःख दूर किया है अब एक दया की दृष्टि हम पर कीजिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरा अध्याय ॥

देवतालोग बोले कि हे शिवजी ! हमारे दुःख को दूर कीजिये क्योंकि तुम भक्तोंके बचानेवाले और भक्तोंके दुःख दूर करनेवाले हो दैत्योंने अतिबल और तेज प्राप्त करके हम सबको दुःखी कर रक्खा है अब हमसे अपने शरीर का दाह भी सहा नहीं जाता आपकी शरण में आये हैं हम सब आपको छोड़कर कहां जावें क्योंकि कोई देवता सिवाय तुम्हारे हमारी रक्षा नहीं करसक्ता शिवजी बोले कि हमको सब तुम्हारा दुःख मालूम होगया पर त्रिपुर बड़े धर्मवान् और दाता हैं उन्हींके बलसे इतने आनन्द से रहते हैं संसार में पुण्य के बराबर दूसरी वस्तु आनन्द देनेवाली नहीं जबतक उनकी पुण्य वृद्धि पर है तबतक वे मारेजा नहीं सक्ते और इस कार्यके लिये तुमको अवश्य यत्न करना चाहिये वे हमारे भक्त सब अपने सेवकों समेत हैं हमको उचित नहीं है कि हम अपने भक्तोंको बिगाड़दें और न हमसे तुम्हारे दुःख देखे जासक्ते हैं क्योंकि जो हमारी शरणमें आता है उसकी हम अवश्यही रक्षा करते हैं इससे तुमको उचित है कि विष्णुके पास जाकर अपना सब दुःख कहो वे हमारे मुख्यस्वरूप सृष्टि के पालनेवाले हैं यह सुन सब देवता विष्णुजी के समीप गये और स्तुति करनेके उपरान्त अपना सब दुःख कहा और हर प्रकार विष्णुजी की पूजा में प्रवृत्त हुये विष्णुने देवताओं की बिनती सुनकर वेद और शास्त्र के अनुकूल उत्तर दिया कि सनातन से शिवजी की पूजा ही और भक्ति पुण्यदायक है सो उस स्थानपर जहां शिवजी की पूजा हो कोई दुःख वा कष्ट नहीं रहसक्ता सूर्य के उदय होनेसे अँधेरा दूर होजाता है उसी तरह शिवजी के तेजको भी समझना चाहिये यह सुन देवताओं ने दुःखी हो लज्जासे विनय की कि हे देवताओंके स्वामी ! हम सब दुःखी और अधीर हैं हम क्या करें क्योंकि यह बात स्पष्ट है कि जब तक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्रिपुर जीते रहेंगे हमको कुछ भी आनन्द न मिलेगा सो आप कहिये कि हम कहां चलेजावें या हम सबको आप विना मृत्यु मारडालिये या त्रिपुर का नाश कीजिये दो कामों में से एक काम करके तुम प्रसन्न हो और हमारा भी कष्ट छुड़ादीजिये शिवजी की आज्ञा पाय प्रसन्न-वदन आपके पास आये थे अब हमारे धर्म जाने में क्या विलम्ब है यह कह सब देवता गूंगोंके समान चुप होगये और विष्णुने शिवजी की आज्ञाका विचारकर सोचा कि किसी उपायसे देवताओं का दुःख दूर करना उचित है और फिर शिव का ध्यानकर यज्ञगणको स्मरण किया सो यज्ञके अन्दरसे मखपति उपजे और विष्णु की स्तुति करने लगे विष्णुने देवताओंसे कहा कि इनकी पूजा करो सो देवताओं ने तुरन्त प्रसन्न होकर शङ्खनाद किया और मख अर्थात् यज्ञ करके मख-पतिके ध्यान में लगे और अतिपवित्र स्तुति की कि मखपति प्रकट हुये और विष्णु की स्तुति करनेलगे और विष्णुने देवताओं से कहा कि त्रिपुर तुम्हारे ऐसे उपायोंसे मारे नहीं जासक्ते जिनके देखने से पाप नष्ट होजाते हैं उनका मखपति क्या करसक्ता है वे शिवजी के वरदान से इतना आनन्द कररहे हैं कि संसार में कोई उनके बराबर नहीं हे देवताओ ! संसार में कौन है जो शिवके भक्त का विनाश करे वे शिवकी आज्ञा बिन नहीं मारेजावेंगे शिवजी की आज्ञा बिन ब्रह्मा हम देवता यज्ञ सुनीश्वर आदि उनका कोई कुछभी नहीं करसक्ते शिवजीने केवल संसार की भलाई के लिये अवतार लिया है एक अंश की देवताओंने पूजा करके कैसा पद पाया है ब्रह्माने भी उनकी सेवा कर यह पद पाया और हमको भी यह पालन करने की बड़ाई उन्हींने सेवा करने से कृपा की है शिवपूजा विना किसीको कुछ सिद्धि नहीं मिली इससे हम कहते हैं कि त्रिपुर केवल शिवकी सेवा करनेसे मरसक्ते हैं हमको निश्चय है कि हम सब शिवजीकी पूजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करके त्रिपुरविजय पावेंगे यह कह विष्णुने सब देवताओं समेत शिव-पूजनका आरम्भ किया और एक करोड़ पार्थिवलिङ्ग मट्टी से बनाकर पहिले आवाहन करके अक्षत और सुगन्धमयी पुष्प और बिल्व-पत्र से पूजा की और विष्णुजी शिवजीके ध्यानमें मग्न हुये और शिवजीके प्रसन्न होनेसे असंख्य भूतों की सेना त्रिशूल, शक्ति, गदा आदि लिये हुये प्रकट हुई विष्णुने उनको देखकर कहा कि तुम तुरन्त पुर का नाश करदो अर्थात् तीनों पुरको जलाकर अपने मकान को लौट आवो संसारमें तुम्हारा यश फैलेगा यह सुन वह भूतों की सेना पवनके समान चली और त्रिपुरमें पहुँचकर फैलगई पर शिवके चरित्र से जब वह नगर के भीतर पहुँची तुरन्त जलकर भस्म होगई क्योंकि जिनको शिव की भक्ति दृढ़ है उनके समीप संकट आकर आपही नष्ट होजाता है सो देवताओं ने फिर विष्णु के समीप जाकर यह हाल सुनादिया और विचार करने लगे कि किस उपाय से त्रिपुर विनाश को प्राप्त होंगे बरन अभिचार अर्थात् हठधर्मी से भी शिव के भक्तों पर कुछ कष्ट नहीं पड़सक्ता वास्तव में शिव की भक्ति के कारण यह दैत्य बचगये हैं शिवजी के कारण दैत्य पुरुष स्त्री क्या २ पाप नहीं करते पर उनको कुछ पाप नहीं लगता इससे जो शिव आपही हमारी सहायता करें तो हमको आनन्द मिलसक्ता है हम ऐसी कोई युक्ति करें जिससे उनका धर्म नष्ट होजावे तब निस्सन्देह कुछ कठिन नहीं कि आप शिव उनको नाश करदेंगे उसी विचार में विष्णु ने देवताओंसे कहा कि तुम सब अपने २ घरोंमें जाकर शिवजीके नाम का स्मरण रक्खो और अहर्निश शिवका पार्थिवपूजन किया करो और उनकी स्तुति करो यह सुनकर देवता अति प्रसन्नता से अपने अपने घरों को चले ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीसरा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! देवताओंके बिदा होनेके उपरान्त विष्णु ने माया करके शिवपूजनके उपरान्त अपने शरीर से एक मनुष्य उपजाया जो सारा शिर मुड़ाये हुये मैले और अशुद्ध वस्त्र पहिने पंगुल वस्त्र से मुखको ढांपे धर्म कहते विष्णुके सामने आखड़ा हुआ और हाथ जोड़ अर्हण वचन बोला और कहा कि मुझको क्या आज्ञा होती है विष्णुजी बोले कि तुम हमारे शरीरसे उपजे हो इससे हमारा काम अच्छीतरह से पूरा करो तुम हमारे रूप हो यह कहकर विष्णुने एक ग्रन्थ बहुत बड़ा जिसमें सोलहसहस्र श्लोक थे बनाया उसमें नीचे लिखी बातें थीं और वह पुस्तक छल और झूठ की भरी हुई थी उसमें कोई ठीक धर्म नहीं लिखा हुआ था और वह वेद शास्त्र और पुराणसे विपरीत था जिसको पढ़कर कुछभी आनन्द न मिलता था और उसमें वेद पुराण और शास्त्र की बहुतही निन्दा लिखी थी और वर्णाश्रमके लिये बहुत मनाही थी जिससे नरक मिलनेमें कुछ भी देर न लगे और केवल नरकही को नरक और स्वर्ग ठहराया था और प्रत्यक्ष आंखों से देखी हुई चीज़ के सिवाय परोक्ष आनुमानिक वस्तु का विश्वास नहीं लिखा था उसमें सब बातें कुमति और संशय की थीं और नाना प्रकार के वितण्डाबाद लिखेहुये थे उसमें पातिव्रत धर्म और देवता बरन शिवजी की पूजाके लिये भी मनाही थी और दशकर्म का कुछभी विचार न था और सिवाय चेटक नाटक के कुछभी बात सच न थी उसके माननेसे शौच तप सब नष्ट होजाते और वह पुस्तक इन्द्रफल के समान थी उस पुस्तकको देखकर कहा कि तुम त्रिपुरमें जाकर सबको यह पुस्तक पढ़ादो वहांके निवासी सब वेद और पुराणके अनुकूल सब कार्य करते हैं तुम वहां जाकर अपना धर्म उपदेश करो कि उनका धर्म नष्ट होजावे और वह शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की पूजा छोड़ देवें और जब तुम अपना कार्य पूर्ण करलो तब अपने नौकरों और चेलों समेत मरुस्थलमें स्थित होजावो तबतक कि जब तक कलियुग न आवे वहां गुप्त रहा करना जब कलियुगका आरम्भ होजावे तब तुम मेरे उपदेशको भली भांति प्रसिद्ध करना तुम कुछ सन्देह मतकरो तुम्हारी बड़ी पदवी होजावेगी यह आज्ञा मुण्डी ने सुनकर और बहुत चेले किये विष्णुने कहा कि तुम बिदा होजावो और हमारा जो अर्हण एक नाम है उसका स्मरण करते रहना तुमको कभी कुछ भय न होगा सो मुण्डी चेलों समेत चलकर त्रिपुरमें पहुँचे और बहुत से खेल करके उन्होंने बहुत मनुष्यों को अपना चेला किया ऐसा कोई न था जो मुण्डी के पास जाकर चेला होने विना अपना धर्म लेकर घर चला आवे हे नारदजी ! शिवजीकी लीलासे तुमभी मुण्डी के शिष्य हुये क्योंकि उसमें देवताओं का कार्य था और फिर तुमने त्रिपुरके पास जाकर इस प्रकार मुण्डी की प्रशंसा की कि त्रिपुर भी मुण्डी के शिष्य होगये और मुण्डी ने त्रिपुरसे यह प्रण करलिया कि हमारी आज्ञा किसी दशा में भङ्ग न कीजावे इस बात के मानने के पीछे मुण्डी ने मुखसे वस्त्र उठाकर त्रिपुरको चेला बनाया और मन्त्र दिया और फिर नाना प्रकार के करने और न करने के काम सुना दिये जब त्रिपुर चेले होगये तो फिर कोई मनुष्य रह न गया जो मुण्डी का चेला न हुआ हो ॥

चौथा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! त्रिपुरके चेला करने के उपरान्त मुण्डीने कई आज्ञायें त्रिपुर को सुना दीं और कहा कि हमारा मत सब मतोंसे बड़ा है जिसको नारदने भी माना है इस मतके मार्ग ये हैं कि यह संसार अनादि है इसका आदि अन्त कुछ नहीं और न इसका कोई कर्ता और न बनानेवाला है यह सनातनसे इसी प्रकार चला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आया है समय पर आपही प्रकट होता है और इसी तरह समय पाकर अन्तर्धान होजाता है समय पाकर अच्छा बुरा होजाता है ब्रह्मा से लेकर घास मिट्टी तक जितने प्राणीमात्र हैं मरने के समय सब बराबर हैं और जीव ईश्वर है जो अपने शरीर में वर्तमान है इसके सिवाय कोई संसारका स्वामी नहीं है और ब्रह्माआदि जो देवता बहुत पुराने हैं वेभी अमर नहीं हैं बरन यह सब मृत्युके वशमें हैं हां यह बात है कि कोई तो विलम्बमें और कोई वेगही मरता है मृत्युसे कोई नहीं बचता और निश्चय करके जो शरीरधारी हैं वे नष्ट होजावेंगे और दुःख सुख भोग फिर शरीर धारण करेंगे और सब जीव एकहीसे बराबरी का पद रखते हैं इनमें कोई बड़ा छोटा नहीं है और भोग और भोजन में सब बातों में बराबर हैं कुछ बड़ाई छुटाई की बात नहीं है क्योंकि एक स्त्री सुन्दर और दूसरी कुरूप मालूम होती है सो वह दोनों मैथुन में एकहीसी हैं और सवारी चाहे किसी तरह की हो बराबर है और बिछौना चाहे सजा हुआ चाहे न हो सोने में बराबर है जो कि हमको भी मृत्यु का भय है और इसी तरह ब्रह्माजी और विष्णुजी और महेश जी को भी मौत का डर है और कोई काल से न बचेगा तो जानो कि हममें और उनमें कुछ बड़ाई छुटाई नहीं है जैसे वह वैसे हम इसी प्रकार जातिका झगड़ा है और वेद और शास्त्रआदि सब झूंठे और फलरहित हैं केवल सब धर्मों से उत्तम धर्म हिंसाका त्याग करना है उससे बढ़कर और कोई धर्म नहीं है और कोई पाप औरों के दुःख देने से बड़ा नहीं है और चार प्रकार के दान सब दानों से बड़े हैं पहिले रोगी के लिये औषध देना दूसरे भयभीत को शरण में लेकर निर्भय करना तीसरे भूखों को खिलाना चौथे विद्यार्थीको विद्या पढ़ाना और अच्छी २ चिकित्सा और औषधों से शरीरको आरोग्य रखना चाहिये और धन द्रव्य इकट्ठाकर अपने शरीरकी पालना उत्तम है और नरक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वर्ग इसी संसारमें हैं जो आनन्द है वह स्वर्ग है और दुःख नरक है दूसरेके वशमें रहना बन्धन है इससे छूट जाना ही मुक्ति और मोक्ष है और दुःखसे वासना समेत छूटजाना ही यही परममोक्ष है और वेदोंने जो दो मार्ग प्रवृत्ति और निवृत्ति कहे हैं उनका तात्पर्य यह है कि जीवों का दुःख देना यही प्रवृत्तिधर्म है और दया और कृपा रखना जीवोंका निवृत्तिधर्म है देखो जीवोंका बध करके और तिल और यव और घृत अग्निमें डालकर स्वर्ग की इच्छा करते हैं इससे कोई मूर्खता अधिक नहीं है और इसी प्रकार अपना बड़ा धर्म वर्णन किया जिसको त्रिपुरने ठीक समझा और अपने गुरु की आज्ञासे पुराने मतको छोड़ फिर नये मतमें स्थित हुआ फिर मुण्डी ने अपने मतकी आज्ञा सुनाई और कहा जबतक मृत्यु न आवे सदा आनन्द और विहार करना चाहिये और जो कोई दान मांगे तो अपना शरीर भी देदेना उचित है ऐसे मनुष्यके बराबर संसारमें दूसरा नहीं यदि कोई मनुष्य भिक्षुक या याचक कोई वस्तु मांगे और उसको वह वस्तु न दीजावे और कोई मङ्गन अपना मनोरथ पाये विना चलाजावे तो उसका सब धन द्रव्य नष्ट होजाता है और अपने शरीरका जो गीदर और सियार और कुत्तेआदिके ग्राससे अधिक नहीं उसका कुछ लोभ न करना चाहिये और अन्त को मरनेपर जिसको कृमि आदि खाडालेंगे इसके लिये इतनी सामग्री इकट्ठी करनी क्या अवश्य है और देखो जब कि ब्रह्मा आदिने परस्पर एक दूसरेसे विवाह कर लिया तब तो उनका धर्म बनारहा और गोत्रके छोड़नेमें बड़ा पाप ठहराया और चार वर्ण को वर्णन करके चार भाइयोंके जुदे २ वर्ण कहते हैं यह बहुत ही विरुद्ध है सो तुमको उचित है कि सबका नाता बराबर समझो कुछ किसी तरह का अन्तर और भेद मनुष्यों में बड़ाई और छुटाईका न जानना चाहिये क्योंकि यह बातें केवल वाचालता और चतुरता की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद ! इसी प्रकार की बहुत बातें सुनकर वेद के विपरीत सब मनुष्य हुये और सब स्त्रियां पातिव्रतधर्म छोड़ स्वतन्त्र और कुमार्गी हुई और जिसने जिसके साथ चाहा भोग विलास किया और सब कर्मों से अधिक चेटकने प्रचार पाया किसी स्त्रीको बांझसे सन्तानयुत करदिया किसी स्त्रीके पुरुष को जिलादिया और सिद्ध अञ्जन आंखोंमें दिलवाकर सब चीजें दिखाईं और सिद्धों के देश को प्रकटकर दिखाया इसी प्रकार हर प्रकार की माया और छल फैलाकर सब स्त्री और पुरुष को अपने वशमें करलिया यहां तक कि त्रिपुरसे ले छोटे मनुष्यतक प्राचीनधर्म छोड़ अर्हण के धर्म पर स्थिर होगये और देवयजन पितृकर्म भूलही गये और सब धर्म, तीर्थ, व्रत, यज्ञ और इसी प्रकार जो वेदके कर्म वे सब छूटगये केवल यह धर्म रहगया कि सबने रातको भोजन करना बन्द कर दिया ॥

पांचवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! वेद, पुराण, धर्मशास्त्र और स्त्रियों का धर्म और शिव और विष्णु की पूजा और यज्ञ और हवन स्नान और दान व्रत और शुभ कार्यादि सब छूटगये और वेदके विरुद्ध नास्तिक मत त्रिपुरभरमें छागया और धनने वहां के वासियों से मुख छिपाया और चारों ओरसे दरिद्र ही दरिद्र दिखाई दिया हे नारद ! वह सब बातें तुम्हारे सबब से हुई हैं तीनों भाइयोंने शिवजी की पूजा को छोड़दिया और देशमें उपद्रव होनेलगा देवताओंने यह दशा देख आनन्दमें मग्न हो इन्द्र को साथ लियेहुये मेरे पास जाकर सब हाल कहा सो हम सबको साथ लियेहुये विष्णुके निकट गये और उनकी स्तुतिकर कहा कि आपके उपाय से बड़ा काम हुआ अर्थात् आपके रूप अर्हणने शिष्यों समेत त्रिपुरमें जाकर नारदके चेला करनेके उपरान्त सबको अपने मतमें ले आये अब निश्चय है कि आप त्रिपुर को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जलादेंगे विष्णु बोले कि शिव देवताओंके कार्यको पूर्ण करेंगे यह कह और हम सबको साथ लियेहुये शिव के समीप गये और देवताओं समेत स्तुति करनेलगे और विनयकी कि देवताओं को आनन्द देकर दैत्यों का विनाश करो सो शिवजी ने कहा कि हम देवताओं के कार्यको जानगये अब तुरन्त त्रिपुर नष्ट होजावेंगे यह शिवजी से वचन सुन देवता अतिप्रसन्न हुये और शिवजी की बहुत स्तुति की जो इस चरित्रको सुने सुनावेगा वह अपने सब मनोरथ पावेगा॥

छठवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! तब गिरिजा अपने लड़के को दिखलाती हुई और जय शम्भु जय शिवनाथ स्तुति गाती हुई शिव के पास आई और कहा कि षडानन अपने पुत्र का खेल देखो सो शिवने लड़के को गोद में बिठाया और प्रसन्नता के कारण लड़के को गोद में लेकर नाचने लगे यहांतक कि सब विद्यमान देवता शिवजी के साथ नाचनेलगे तब बड़ा उत्सव हुआ निदान गिरिजा षडानन को साथ लिये हुई भीतर घर में चलीगई और यह न जाना कि दैत्यों के हाथ से देवताओं को कितना दुःख मिला है यद्यपि देवताओंने बहुतही स्तुति की और अपना कष्ट सुनाया पर शिवने कुछ न सुना तब विष्णु और हम सब शिव के द्वार पर बैठकर परस्पर कहने लगे कि अब कहां जावें किससे कहैं क्या करें हमारी नाव को कौन पार लगावेगा तो कुछ थोड़े २ शिव प्रसन्न हुये थे सो वह भी घर में चलेगये प्रायः हमसे कुछ सेवा में अपराध हुआ देवताओं के बड़े भाग्य हैं कि इन अपकर्मों के करनेपर भी शिव अबभी उन पर कृपा करते हैं फिर देवताओं ने सम्मति की कि चलो स्त्रियों समेत शिवजी के भीतर जावें यह अनुमति देवताओं की शिवजी जानगये और गणपति को भेजा जिन्होंने डण्डों से मारकर सबको निकाल दिया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यहां तक कि इन्द्रभी दुःखी होकर गिरपड़े तब कश्यपमुनि ने धैर्यधर कहा कि शिवने यह क्या चरित्र किया कि दया छोड़ ऐसा दण्ड देते हैं और फिर जाकर विष्णु से यह सब हाल कह सुनाया कि कुछ ह-मारा मनोरथ पूरा नहीं हुआ सब परिश्रम वृथा गया विष्णुजीने कहा कि धैर्य रक्खो शिवजी अवश्यही सब दुःख दूर करदेवेंगे और सबको शिवजी का एक मन्त्र जिसमें दशहज़ार अक्षर हैं बताकर कहा कि इसका चौदह करोड़ जप करो शिवजी प्रसन्न होकर तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे तथाच सब देवता जपकर सिद्धि की बाट देखते थे कि शिव प्रकट हुये और कहा कि हे विष्णु और ब्रह्मा आदि! तुम्हारी दृढ़ता धन्य है हम प्रसन्न हैं अपनी इच्छा के अनुसार वर मांगो सो शिवको प्रसन्न पाकर सबने स्तुति की और कहा कि तीनोंपुर का नाश करो यह कह फिर देवता स्तुति करनेलगे शिव प्रसन्न होकर 'भविष्यति' ऐसा कहनेलगे और दैत्यों पर कोपित होकर अपने बाण को छोड़ दिया जिसने सूर्य के समान प्रकाशवान् होकर सब दैत्यों को नष्ट करडाला पर जो शेष बचे उन्होंने उन सबको अमृत के कुण्ड में जो वहां था छोड़ दिया जिससे वह फिर लोहतन होकर बादल के समान गर्जे और बिजली के समान चमके और अग्नि के समान भड़ककर देवताओं को धमकाने लगे शिवजी ने विष्णु और हमसे कहा कि तुम दोनों बछड़े बनकर वहां जाकर अमृत को पी लो तुमको नहीं जानेंगे सो हम और विष्णु बछड़े बन दो पहर दिन चढ़े वहां पहुँचे और हमको किसीने न देखा और विष्णु और हम लौटकर शिवजी की स्तुति करनेलगे और शिवजी की लीला से वह अन्धे होगये और शिवजी की स्तुति में हमने शिवका विराट्-रूप वर्णन किया यह सुन शिवजी ने कहा कि हे देवताओ! तुम चिन्ता मत करो अब तुम वेगही सिद्धि पावोगे त्रिपुर नष्ट होंगे इस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बातका निश्चय मानना यह कहकर शिवजी तो चुप होगये और हम सब वहां स्थित रहे इतनेमें नन्दीगणोंके राजा और बहुत गणों समेत आये उनको देखकर देवताओं ने अतिआनन्द माना और विनय की कि हे शिलादिमुनि के पुत्र, नन्दी ! कोई ऐसा उपाय करो जिसमें तीनोंपुर मिलजावें नन्दी बोले कि शिवजी ने तुमको आज्ञा दी है कि तुरन्त एक रथ बनावो और सारथि और रथ बाण धनुष आदि सब नवीन ठीक करके रक्खो हमको निश्चय है कि शिवजी अवश्यही त्रिपुर का नाश करेंगे यह कहकर नन्दी तो अपने घर चलेगये और देवताओं ने अतिप्रसन्नता के साथ जय २ शिव कहा और इन्द्र ने विश्वकर्मा को बुलाकर शिवजी की आज्ञा सुनाई और विष्णु और हमने विश्वकर्मा का आदर करके कहा कि तुम शिवके सारथि होना और बाण और धनुषभी तय्यार करदो तुमको इन्द्रकी अवश्यही सहायता करनी चाहिये क्योंकि तुम्हारे समान देवताओंका और कोई सहायक नहीं है तुम सब कारीगरों के राजा हो विश्वकर्मा ने सदाशिव का ध्यान किया तो उसके मनमें रथके बनाने की युक्ति बैठगई और उसने सब कुछ तय्यार करदिया ॥

सातवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! विश्वकर्मा ने रथ तय्यार किया वह रथ मानो सृष्टि भरके बाज़ार के समान था उसमें सूर्य दहिना चक्र अर्थात् पहिया चन्द्रमा बायां पहिया इसी प्रकार बारहों सूर्य सोलहों कला वर्तमान थीं और उस रथको नाना भांतिके वस्त्रोंसे भूषित किया और मन्दरगिरि उदयाचल अस्ताचल मेरुआदि पर्वत और वर्ष, मास, तिथि, मुहूर्त, कला, पल, विपल, मेघ, आकाश, दशों इन्द्रियां इसी प्रकार और भी सब रथके खण्ड हुये और चारों वेद उस रथके घोड़े और व्यास आदि घोड़ों के चरानेवाले हुये और कर्म धर्म के शास्त्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और पुराण और न्यायशास्त्र ये सब मुख हुये और आश्रम वर्ण आदि भी अङ्गके अवयव हुये और गङ्गाआदि चार सागर चमर लेकर चारों ओर रथके खड़ेहुये और लोकालोक पर्वतआदि उसकी सीढ़ियां हुईं और प्रणव चाबुक विष्णुजी बाण हिमाचल धनुष हुआ निदान जो ब्रह्मासे लेकर तृण पर्यन्त है वह सब इस रथ में था जब यह सामग्री तय्यार होगई और वह रथ शिवजी के द्वार पर खड़ा किया गया तो शिवजी आये तब सबोंने बिनती की कि महाराज ! आप रथपर सवार होवें और त्रिपुरका नाश करके तीनों लोकको आनन्द देवें शिवजी ने गणपतिको बुलाकर उनकी पूजा की फिर रथ पर चढ़कर आकाश और पृथ्वी को कँपाते हुये चले और सबने जय २ शब्द पढ़ा पृथ्वी इस रथ का भार न सहकर कांप उठी और जिस प्रकार रथ चलता था उसी प्रकार वह टेढ़ी होती थी निदान शिवजी अपनी सेनासमेत देवताओं को प्रसन्न करते हुये चले उससमय शिवजी के आश्चर्य-दायक चरित्र से तीनों पुर इकट्ठे हुये और शिवजीने उत्तम समय पाकर अपने धनुषमें विष्णुपति अस्त्र को लगाय और अपने तेज को उसी अस्त्र में स्थिर करदिया सो धनुष और बाण दोनों प्रकाशमान हुये और घास और फूसभी जो हरेभरे थे जलनेलगे और सृष्टि भर में वह प्रकाश उदय हुआ और शिवजी ने उस समय मनमें यह विचार किया कि अब तीनों पुर को जलादूं जब विलम्ब हुआ तब विष्णु हम और इन्द्रने बिनती की ॥

आठवां अध्याय ॥

देवताओं ने कहा कि हे शिव ! तुम्हीं देवताओंके रक्षक हो और इसी प्रकार बहुत स्तुति की और बिनती की कि अब विलम्ब मत कीजिये तीनों लोक जलेजाते हैं त्रिपुर को नष्ट कीजिये क्योंकि देवताओं का मन दुःखी है शिवजी ने वही अस्त्र त्रिपुर पर छोड़ दिया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसके छोड़नेसे बड़ाशब्द हुआ कि जैसे प्रलयकालके बादल गर्जते हैं और इतनी अग्नि उठी कि तीनोंलोक जलने लगे और धरती कांपगई पर्वत जलगये शेष पृथ्वी को शिरपर न रखसके नदियां सूख गईं और दिग्गज और कूर्म जो पृथ्वी को सँभालेहुये हैं सब बलहीन होगये और सब मुनि और सिद्ध ध्यान छोड़ अचम्भेमें हुये सो तुरन्त बाण के पहुँचतेही तीनों पुर जलकर भस्म होगये और बाण सबको जलाकर शिवजीके पास लौटआया और त्रिपुरमें कोई मनुष्य जीता न बचा और सब दैत्य शिवजी के हाथ से मरकर मुक्ति पागये और सब शिवजीके गण हुये क्योंकि भक्तिका बीज नष्ट नहीं होता उससमय शिवजी का स्वरूप ऐसा भयानक था और जानाजाता था कि अब प्रलयमें कुछ विलम्ब नहीं है और महातेज के कारण हम और विष्णु आदि कोई उनको आंखभर नहीं देखसक्के थे और सब अपने आप कांपते थे कोई मनुष्य शिवजी के समीपतक न जासका सो विष्णु और हमने दूर से स्तुति की और इसी प्रकार सब देवताओंने दूरही से एक एक स्तुति शिवजी की धीरे धीरे मधुरस्वर से गाई सबसे पहिले विष्णु ने स्तुति की और कहा कि क्रोध को दूर करो फिर हमने स्तुति की फिर लोकपाल, देवता, सिद्ध, नाग, मुनि और वेदों ने अपनी २ स्तुति को काव्य में युक्तिपूर्वक गाया सो ऐसी बहुतसी स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और सबको दया और कृपा की दृष्टि से देख दिया सो हम सब शिवजीको प्रसन्न पाकर उनकी सेवा करनेलगे और चारों ओर से जय का शब्द हुआ॥

नवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिवजी अति प्रसन्न होकर कहने लगे कि तुम सब हमसे अपनी इच्छा का वरदान मांग लो देवताओं ने कहा कि आपने त्रिपुर को नष्ट करके हमको बड़ा आनन्द दिया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आपकी कृपा से हम सब कृतार्थ होगये जब २ कोई हम पर कष्ट पड़े तब उसको दूर किया कीजिये और अपनी भक्ति हमको दीजिये हम को अपना सेवक समझिये जो कोई अपराध हमसे होतारहे उसको क्षमा करते रहिये आप हम सबके पिता और राजा हैं शिवजी ने ॐ कहकर हम सबको प्रसन्न किया तब नृत्य और गान का बड़ा उत्सव हुआ ऐसे आनन्द के समय में अर्हण ने अपने चारों शिष्यों समेत आकर शिवजीको प्रणाम किया और सब देवताओंको भी दण्डवत् की फिर नम्र होकर शिवजी से कहा कि आपकी आज्ञा से मैंने यह मत सोचे बिचारे विना वर्णन किया मुझपर ऐसी कृपा हो कि मुझे ऐसे नष्टकर्म का कोई पाप न लगे और मुझे आज्ञा दीजिये कि अब मैं क्या करूं और कहां और किस स्थानपर स्थित रहूं और अपनी पुस्तक को जो सोलह सहस्र है क्या करूं और मेरे शिष्यों के लिये क्या आज्ञा होती है सो विष्णु ने शिवजी की आज्ञानुसार कहा कि हे अर्हण ! तुम मरुस्थल में शिष्योंसमेत जाकर स्थित रहो और शिवजी के स्मरण को मत भूलना और कलियुग के आनेतक अपना मत प्रकट न करना यह जो हुआ है वह सब शिवजी की आज्ञानुसार हुआ है तुमको कुछ पाप नहीं है और जब कलियुग का आरम्भ हो तो इधर उधर अपने मतको फैलाना और सब स्त्री पुरुषों का मन अपने अधीन करना जिससे सब लोग महापापी होजावेंगे कलियुग पापों का बीज है तुम्हारा मत कलियुग में भलीभांति चलेगा सब लोग सन्मार्ग से बदल जावेंगे यह कहकर अर्हण विष्णु ने शिष्यों समेत बिदा किया हे नारद ! जब कलियुग आवेगा अर्हण मरुस्थल से निकलकर अपने मत को प्रकट करेगा और हे नारद ! यद्यपि मयदानव त्रिपुर में था पर शिवजी की कृपा से बचा रहा और शिवजी की स्तुति कर हम सबको भी प्रणाम किया शिवजीने मयदानव की स्तुति सुनकर प्रस-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्नता से कहा कि हे मयदानव ! तुम निर्भय रहकर तलातलमें स्थित हो सो मयदानव वहां जाकर रहने लगा और यह शिवजी की कृपा मयदानव पर देखकर सब प्रसन्न हुये और शिवजी की बड़ी स्तुति करके हम सब अपने २ स्थानों को चलेगये और शिव गिरिजा और पुत्रसहित कैलास पर्वत पर स्थित हुये सब योगिनियों ने मङ्गल-गीत गाये जो मनुष्य इस चरित्र को सुनेगा या सुनावेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

दशवां अध्याय ॥

इतना सुन नारद ने कहा कि हे ब्रह्माजी ! मुझे त्रिपुरके दग्धकी कथा सुनने से अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई है पर आप वर्णन करें कि मय दानव क्योंकर त्रिपुर के साथ न जला ब्रह्माजी बोले कि मयदानव शिवजी का भक्त था इससे वह इस अग्नि से बचारहा सो प्रकट हो कि कश्यप की स्त्रियोंमें एक स्त्रीका नाम दनु था उसके साठ लड़के बड़े वीर धीर उपजे वे तीनों लोकमें प्रसिद्ध बुद्धिमान् थे उनमेंसे यह एक मय भी था उसने भक्तिपूर्वक शिवजी का बड़ा तप किया और काशीमें भी बड़ा तप किया और अपनी इन्द्रियों को जीतकर ध्यान-पूर्वक पञ्चाक्षरीमन्त्र भलीभांति जपा और गरमियों में अग्नि और वर्षा में वनमें और शीतकालमें जलके भीतर बैठकर कठिन तप करता रहा और शिवजी की मृत्तिका की पार्थिव बनाकर शिवको पूजा और उसीके प्रमाण चावल बिल्वपत्र और हररङ्ग के सुगन्धित पुष्प चढ़ाये और स्थिर होकर दृढ़ आसन और ध्यान से श्वास रोंक बैठ रहा शिवजी ने बहुत प्रसन्न होकर बरम्ब्रूहि २ कहा पर मय ने इस वचन को भी न सुना तब शिवजीने अपनी मूर्ति को मयके ध्यान से खींच लिया मयने आश्चर्य कर नेत्र खोलदिये तो देखा कि शिवजी खड़े हुये हैं जिनका महागौर शरीर भस्म लगाये हुये भाल पर चन्द्रमा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विराजमान और अपने मुख्य स्वरूप और मुख्य लक्षणोंसे सुशोभित हैं तो ऐसा सुन्दर स्वरूप देख मय उठ खड़ा हुआ और शिर झुका प्रणाम कर स्तुति की और कहा क्या वरदान मांगूं आप तो सब कुछ जानते हैं और चुप होगया शिवजी ने कहा बहुत अच्छा हम तुमको तुम्हारे हृदय की मनसाके अनुसार यह वरदान देते हैं कि तुम सब दैत्यों के आचार्य होकर सदा निर्दोष रहोगे जिस तरह कि देवताओं में विश्वकर्मा हैं उसी तरह तुम दैत्यों में हो तुमको जरा मृत्यु प्राप्त न होगी और हमारे ध्यान में लगे रहकर नाना प्रकार की कारीगरी कर सकोगे हम तुमको कभी नष्ट नहीं करेंगे व तुम्हारे मनमें कभी पाप न आवेगा यह कह शिवजीने मयके शरीरको स्पर्श कर दिया जिससे मय को अतिआनन्द प्राप्त हुआ और शिव अन्तर्धान होगये मय उस ओर को प्रणाम कर अपने घर गया दैत्यों ने शिवजी के वरदान के कारण उसको अपना आचार्य बनाया यह मयदानव का चरित्र अतिपवित्र सुनने और सुनानेवाले को मयके समान करदेताहै और कभी भ्रष्टबुद्धि के कारण उससे कोई पाप नहीं होता अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

इतना कहकर सूत पौराणिक बोले कि हे शौनको ! इस चरित्र के सुनने के उपरान्त नारदने ब्रह्माजी से कहा कि हे पिता ! अब शिव जीका और चरित्र वर्णन कीजिये ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! तुम को और तुम्हारी बुद्धि को धन्य है कि शिवजी की ऐसी भक्ति है और तुमने विष्णु की सेवा करके शिवजी की इतनी भक्ति पाई है हमने वेदों को बहुतही छाना है और जो कुछ कि वेदों से हमको निश्चय प्राप्त हुआ है उसका मूल हम वर्णन करते हैं अर्थात् पहिले हरमनुष्य असंख्य जन्म पर्यन्त हमारी पूजा करके विष्णु की भक्ति पाता है और फिर बहुत जन्मतक विष्णुजी के तपसे शिवजी की प्रीति उप-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जती है तुम निस्सन्देह शिवजीके बड़े भक्त हो अब शिवजी का चरित्र वर्णन करते हैं जिस तरह कि शिवजीने जलन्धर दानवको मारा और बहुतही पवित्र इतिहास जिसको सुनकर सब मनोरथ प्राप्त होते हैं कहताहूं कि किसी समय एकबेर इन्द्र और सब देवताओं ने शिवजी के दर्शन के लिये एक सभा की जिसमें ग्यारहों रुद्र और बारहों सूर्य आठोंवसु विश्वेदेव जो तेरह हैं और उञ्चास पवन और सब दिक्पाल और उपदेव आदि वर्तमान थे सो इन्द्र ऐसी सभाको अपने साथ ले बड़े उत्सवके साथ रजोगुण धारण कियेहुये शिवजीके दर्शनको चले और केवल शिवजीके दर्शनसे उनका संसार में यश पाना स्वीकार था शिवजीने लीला करके अपना स्वरूप भयानक बनाया और अवधूतोंके समान हो इन्द्रके नगरमें प्रकट हुये इन्द्रने पूछा कि तुम कौन हौ जाना जाता है कि तुम शिवजीके सेवकों में से कोई हौ हमको बताओ कि शिवजी अपने स्थानपर रहते हैं इस तरहसे कई बेर इन्द्र ने पूछा पर कुछ उत्तर न पाया इन्द्रने बहुत क्रोध किया और भय देकर कहनेलगे क्या तू भूत तो नहीं है जो उत्तर नहीं देता अब वज्रसे तुझको मारडालताहूं यह कह अपना वज्र शिवजीपर छोड़ा कि शिवजी की गर्दनमें लगा और शिवजी वज्र की शक्तिके स्थिर रखनेके लिये नीलकण्ठ होगये अर्थात् श्यामचिह्न कण्ठमें धारण किया और वज्रभी जलकर भस्म होगया और शिवजी का तेज इतना भभक उठा कि चारों ओर दाह फैल गया और सब देवता स्त्रियों समेत जलने लगे यह दशा देखकर सब कम्पित हुये बृहस्पतिने सदाशिव का ध्यान किया और पहिंचाना कि येही शिवजी हैं सो स्तुति करके इन्द्रसे कहा कि यह जो खड़े हैं सदाशिव हैं तुरन्त दण्डवत् करके स्तुति करो सो इन्द्र और बृहस्पति और सब देवता स्तुति करने लगे और कहा कि यह पाप हमारा क्षमा करो हम आपके दर्शनोंके लिये तत्पर थे पर आपने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आपही कृपा करके गुप्तरीति से बेपरिश्रम हम सबको दर्शन दिये ऐसी उत्तम और बृहत् स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और कहा कि वर-दान मांगो यह तुम्हारी स्तुति सुनकर हम बहुत प्रसन्न हैं देवगुरुने कहा कि क्रोध दूर करके इन्द्र की रक्षा कीजिये जो आपका नेत्र भालपर तेजरूपहै उसकी तीक्ष्णता दूर होजावे यह वचन सुन शिवजी बोले कि वह अग्नि जो हमारे नेत्र से निकलगई है उसको किसी प्रकारसे अपने भालमें स्थान नहीं देसक्ते जैसा कि सर्प अपनी केंचुल को जुदा करके फिर उसको आप नहीं पहिनता पर तोभी हम कृपा करेंगे इस तेज को हम बहुत दूर फेंकदेंगे कि इन्द्र पर कष्ट न पड़े और जो कि तुमने इन्द्रको जीवदान दिया इसलिये तुम्हारा नाम जीव प्रसिद्ध होगा यह सुनकर बृहस्पति और इन्द्रआदि अति प्रसन्न हुये और शिवजी ने उस तेज को हाथ से समुद्र में फेंक दिया और शिवजी अन्तर्धान होगये और सब देवता जय २ कहते हुये अपने २ घरों को चलेगये ॥

बारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब कि शिवजीने अपने नेत्रके तेज को दूर फेंक दिया तो वह सुरनदी सागरमें गिरपड़ा और तुरन्त ही बालकके स्वरूपसे प्रकट होकर अतिभयानक रोदन करनेलगा पृथ्वी उसके शब्द से कांप उठी और वह शब्द चारों ओर पूरित हुआ सब आश्चर्य करने लगे और पर्वत चलायमान और समुद्र सूख गये और देवता और मुनि सब आश्चर्य में होकर हमारे पास जाकर कहनेलगे कि हे ब्रह्मन् ! यह क्या शब्द है कहां से आता है इसको दूर करो कि देव-ताओं को आनन्द प्राप्त हो हमने कहा कि यह शब्द सुनकर हमभी आश्चर्यमें हैं तुम सब अपने घरोंको चलेजाओ हम जहांसे यह शब्द आता है वहां जावेंगे फिर हमने सबको बिदा करदिया और आप ढूंढ़ते हुये पहिले समुद्रके तट पर आये और देखा कि एक अतिसुन्दर बालक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पड़ाहुआ है हमको निश्चय हुआ कि वह शब्द इसीका था हमको आते देखकर समुद्र अपने पुत्रसमेत हमारी ओर आया और प्रणाम के उपरान्त उस लड़के को हमारी गोद में डालकर आप खड़ारहा हमने पूछा कि यह किसका पुत्र है समुद्र ने कहा कि यह बालक समुद्र में उपजा हमारा है आप इसका नाम रख दीजिये और आपही संस्कार भी कीजिये निदान यह वार्त्ता होहीरही थी कि लड़केने हमारी दाढ़ी पकड़ी और इतनी खींची कि हमारी आंख से आंसू निकलपड़े और हमने बहुत दुःखी होकर बड़ी युक्ति से अपनी दाढ़ी को छुड़ाया और समुद्र से कहा कि तेरा पुत्र अतिबलिष्ठ होकर तेरी कीर्ति को सब देशों में बढ़ावेगा और जो कि हमारी दाढ़ी को इसने इतना पकड़ा कि आंसू बहे इससे इसका नाम जलन्धर होगा और तुरन्तही युवा होकर वेदों को जानेगा अब जहां से उपजा है वहां जावे यह कहकर हमने शुक्र को बुलाया और बड़ा उत्सव किया और राज्याभिषेक करके ब्राह्मणों को बहुत दान दिया और जालन्धरी नगर उसकी राजधानी हुई जिससे देवताओं की सब बात बनीहुई बिगड़गई समुद्र ने बड़ी धूमधाम से उत्सवकी रीतें पूरीं और हमने जलन्धर से कहा कि तुम्हारे कुल के गुरु शुक्र होंगे यह कहकर हमतो अन्तर्धान होगये और जलन्धर जालन्धरी को बसाकर रहनेलगा और समुद्र प्रसन्नता से कपड़ों में न समाता था उसने कालनेमि दैत्योंके राजा को बुलाकर अपने पुत्र की शक्ति का वर्णन किया कालनेमि कुलसमेत अतिप्रसन्न हुआ और इच्छा की कि अपनी पुत्री जलन्धर को बिवाह दूं फिर शुक्रजी की सम्मति लेकर बड़ी धूमधाम से बिवाह होगया और इन दोनों कुलों में सम्बन्ध के कारण अतिप्रीति और मित्रता उपजी जलन्धर पहिले वह आपही बड़ा बलवान् था दूसरे जब शुक्र से सहायता मिली तो उसने तीनों लोक को अपने अधीन करलिया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुत्रसमान प्रजा का पालन किया और जो दैत्य कि पाताल में भाग-कर स्थित हुये थे वहभी जलन्धरकी आज्ञा से निर्भय होकर जलन्धर के समीप आपहुँचे और परस्पर मिल प्रसन्न हो रहनेलगे जलन्धर ऐसा राजा हुआ कि जिसके राज्य में कोई पाप नहीं होता था उसकी आज्ञा से तीनों लोक में किसीने अवज्ञा न की और वह ऐसा प्रताप-वान् था कि भलों को सुख और बुरों को दुःख देता और उसने सबों से अपने २ वर्ण के अनुकूल धर्म कराया कोई कुमार्गी न होने पाया उसका प्रताप और तेज तीनोंभुवन में फैल गया ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! एकसमय जलन्धर अपनी सभा में बैठा था और सब वीर और दैत्यों के अधिप और सब दैत्य और शुक्र आदि चारों ओर से अपने २ स्थानपर घेरा किये हुये थे कि इतने में राहु शीशरहित सभा में आये जिनको देख अति आश्चर्य कर जल-न्धर ने शुक्र से पूछा कि हे शुक्र ! इनका शिर किसने काट डाला है शुक्र बोले हम पुरातन कथा कहते हैं जब देवता और दैत्य परस्पर लड़े थे और देवता परास्त हुये तब दैत्यों में राजा बलि थे और शिवजी के दृढ़भक्त थे सब देवता दैत्यों से हारकर विष्णु की शरण में गये विष्णुजी ने देवताओं पर दयाकर कहा कि तुम सब जाकर दैत्यों से सलाह करलो और समुद्र को दोनों समूह भली भांति मथो तब समुद्रसे अमृत निकलेगा उसको तुम सबोंको पिलाकर दैत्योंके साथ छल करेंगे और जब कि तुम अमृत पीलोगे तब दैत्यों पर प्रबल हो-जाओगे सो दैत्यों के राजा बलि के पास आकर इतनी मित्रता उप-जाई कि दैत्य और देवता दोनों मन्दरगिरि को उखाड़कर समुद्र के तट पर गये और वासुकिनाग को मन्दरगिरि में डालकर मन्दरगिरि को मथानी बनाया और समुद्रको मथनेलगे वे सब बल में समान थे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब विष्णुजी इन्द्र के हितैषी ने बड़ा छल किया और पहिले देवताओं को वासुकिनाग के शिर की ओर खींचनेको कहा सो दैत्योंने विष्णु जी के छल को न जानकर आप इच्छा की कि नहीं हम शिर की ओर खींचेंगे हम क्यों पूंछकी ओर लगें सो सब दैत्य शिर की ओर और देवता पूंछकी ओर वासुकिनागको मन्दरगिरिमें लपेटकर समुद्र मथने लगे और आप विष्णुजी भी देवताओंके साथ मथने लगे और दोनों गणपति की पूजा को पहिले भूलगये इसीसे पहिले हालाहल विष उपजा जिसके निकलने से सब जलने लगे और देवता और दैत्य दुःखी होकर भागचले और इन्द्र और विष्णुजी ने देवताओं समेत शिवजी की शरण में जाकर स्तुतिकर शिवजीको प्रसन्न किया और शिवजी उस हालाहल विष को आप पीगये जिससे चारों ओर आनन्द फैला और फिर समुद्र मथने लगे और धीरे २ सब रत्न निकाल लिये पर विष्णुजी ने छल करके उत्तम २ रत्न तो देवताओंको दिये और मद्य दैत्योंको देकर अमृत देवताओं को पिलाया उससमय राहु देवताओं के साथ बैठा था कि विष्णुजी ने उसका शिर काट डाला सो उस जगह पर देवताओं और दैत्यों से बड़ा युद्ध हुआ जिस में करोड़ों दैत्यों के स्वामी मारेगये और जो शेष रहे वह पाताल में जाकर बचे उससमय वे भयभीत थे पर जब से आपका अवतार हुआ है और आप राजा हुये हैं तबसे दैत्यों को पाताल से प्रकट होनेका समय मिला है यह दशा सुनकर जलन्धर इस कारण कि उसके पिता समुद्रको देवताओं और दैत्योंने मथन किया था अतिकुपित हुआ और अग्नि के समान प्रज्वलित होकर नेत्र लालकर दांतों से अपने ओष्ठ चबानेलगा और घस्मरदूत को बुलाकर कहा कि तुम इन्द्रके पास निर्भय होकर जाके कहो कि तुमने हमारे पिता समुद्रको क्यों मथा था और सब रत्न उसके निकाल लिये और आप देवताओं समेत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अमृत पीकर दैत्योंको मद्य पिलाई और ऐसे छल से दैत्यों को परास्त किया क्या तुमने यह बात अच्छी की है बरन इसका फल तुमको मिल जावेगा सो वह दूत चलकर इन्द्र की सभामें गया और अहंकारसे अपना मस्तक इन्द्र के सामने न झुकाया और कहा कि जलन्धरने जो समुद्र का पुत्र है तुमको यह संदेशा भेजा है कि जो रत्न तुमने समुद्र से निकाल लिये हैं वह सब हमको सौंपो तो अभी सब बात बनजावेगी क्योंकि जो दिन का भूला हुआ रातको आवे तो वह भूला नहीं कहाजाता और तुम हमारी शरण में आवो नहीं तो तुमको इसका फल दिया जावेगा इन्द्र यह सब सुनकर जलन्धर को बड़ा बलवान् और पराक्रमी समझ कुछ तो भयभीत हुआ और कुछ क्रोधित होकर कहनेलगा कि तुम हमारी ओर से जलन्धर को यह उत्तर देदो कि पहिले किसी समय में पहाड़ोंने हमारे लोक में उड़कर उसको नष्ट करदिया था और बहुत से यहां के वासियों को मारडाला था हमने पर्वतों के पंख काटडाले और जो शेष रहगये वह डूबकर समुद्र में छिपगये और समुद्र ने उनको रक्षापूर्वक रक्खा सिवाय उनके और भी बहुत बेर हमारे शत्रुओं को समुद्र ने स्थान दिया है और दैत्यों कोभी समुद्र ने छिपाया था उसीवास्ते हमने समुद्र को मथा है और उसके रत्न निकाल लिये हमारा प्रताप और भाग्य इसी प्रकारका है पूर्व में एक और शत्रु देवताओं का उपजा था जिसको शंखासुर कहते हैं हमने उसेभी तुम्हारे समान अपना प्रताप दिखाया था और हमारे भाईने उसको बध करडाला जिसको समुद्रने भी न बचाया इस लिये हे दूत! जलन्धर से कहदेना कि क्यों बुद्धिहीन होकर ऐसे दुर्विचारों में पड़ता है ऐसा संसार में कौन देवता और दैत्य है जो मुझे दुःख दे क्या वह हमारे बल और प्रतापको किसीसे नहीं सुनता हमने बड़े २ दैत्योंको अपने छोटे भाईकी सहायता से मारडाला है जो जल-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न्धर अपनी भलाई चाहता हो तो इतने हाथ पांव न फैलावे जो इस बात को न मानेगा तो सिवाय दुःख और लज्जा के और कुछ न पावेगा यह सुनकर दूत ने कहा कि हे इन्द्र ! आजके दिन तुम अहंकार मत करो क्योंकि जलन्धर ने संसारभर का राज्य पाया है उसीके अधीन संसारभर है तुमको उचित है कि गर्व छोड़कर सब रत्न जलन्धर को सौंपो और आप चलकर जलन्धर की छाया में रहकर सदा आनन्द में रहो नहीं तो तुमको बहुतही कष्ट होगा इन्द्र ने क्रोध करके कहा कि जो हमने पहिले कहा है वही तुम जाकर जलन्धर से कह दो जो ईश्वर की इच्छा होगी वह होगा तुम इतनी वार्त्ता और तकरार क्यों करते हो यह कह इन्द्र ने दूत को तो बिदा किया और आप क्रोध और भय की दशा में चिन्तारूपी सागर में डूबगया और दूत ने जलन्धर के पास पहुँच इन्द्र के प्रश्न उत्तर की वार्त्ता सब विस्तार से कह सुनाई यह सुन जलन्धर क्रोधरूपी अग्निसे जल उठा और उसके ओष्ठ फड़कने लगे ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि जलन्धरने अति क्रोधित होकर सब देवताओं के परास्त करनेका उद्योग किया और एक बड़ी भारी सेना दैत्योंकी इकट्ठा की और राक्षस और दैत्य और दानव करोड़ों इकट्ठे होगये और शुम्भ निशुम्भके समान उस वीरसेनामें यूथप थे और कालनेमि भी और यूथपों समेत आया सो ऐसी उत्तम सेना लेकर जलन्धर देवलोकको चला उससमय पृथ्वी कांपउठी और दैत्य मार्गमें गर्जते हुये चले और देवलोकमें पहुँचकर उसको चारों ओरसे घेरलिया और जलन्धर नन्दन वनमें स्थित हुआ यह दशा देख इन्द्र क्रोधित हुये और बृहस्पति अपने गुरु की आज्ञा लेकर देवताओं की सेना लिये हुये इन्द्र अपने पुरसे बाहर आये और दोनों सेना परस्पर लड़नेलगीं और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाना प्रकारके शस्त्र चलनेलगे और देवता और दैत्य बड़ी प्रसन्नतासे परस्पर एक दूसरे पर वार करने लगे लहूकी नदी बह निकली दोनों ओरसे बड़े २ भारी भट मरे उनके सब युद्धस्थल में ढेरके ढेर होगये और हाथी और घोड़े रथ प्यादे आदि और देवता और दैत्य मृत्युवश हुये पर दैत्य देवताओंसे जो मारेजाते थे उनको शुक्र मृतजीवनीविद्या की शक्तिसे जिलादेते थे अर्थात् शुक्रमन्त्रको जलपर पढ़ मरेहुये दैत्यके भालपर छिड़कते थे और वह जी उठते थे और इसीप्रकार द्रोणागिरिसे बृहस्पति जिलानेवाली ओषधि लेजाकर देवताओंको जिलाया करतेथे जहां इसतरह का गुरु हो वहां क्या भय होसक्ता है निदान देवता और दैत्य फिर लड़नेलगे और किसीने विजय न पाई जब जलन्धरने देखा कि देवता मरकर फिर जीते होगये तो बड़ा क्रोधित हुआ और शुक्र से बहुत बिनती कर पूछा कि हमने बहुत देवताओं को मारा पर वे सब जीउठे हम केवल यह बात जानते थे कि संजीवनीविद्या केवल आपही जानते हैं दूसरा कोई नहीं जानता शुक्रने कहा कि एक पवित्र ओषधि जिलानेवाली द्रोणागिरि पर्वतपर है उसको बृहस्पति लाकर देवताओं को जिला देता है जो तुमको विजय की इच्छा है तो द्रोणागिरि को जड़से उखाड़ कर समुद्रमें डलवादो जलन्धरने प्रसन्न होकर द्रोणागिरि को मूलसे उखाड़ा और समुद्र में डालदिया और फिर युद्धस्थलमें जाकर बड़ी लड़ाई की और हस्तलाघवता और वीरतासे सामना किया जो दैत्य कि मारेजाते थे शुक्र उनको तुरन्त जिलादेते थे पर जब कि बृहस्पति देवताओं को मराहुआ देखकर फिर द्रोणागिरि पर ओषधि लेने गये तो वहां पर्वतही को न देखा ओषधि कहां होसक्ती है बृहस्पति ने अतिचिन्तित होकर समझा कि जलन्धर ने उसको नष्ट करदिया है और अतिभय से लौटकर दूर से कहा कि हे देवताओ ! युद्ध करना छोड़दो जलन्धर बड़ा बलवान् है यह रुद्रके अग्निसे उपजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है यह परास्त न होगा देखो इसने तो पहाड़ को मूलसे खोदडाला है यह सृष्टि भरका राजा होगा अब तुम समय को देखते रहो यह गुरु का वचन सुन देवता युद्धस्थान से भागचले और जिसको जहां जगह मिली वह वहीं जाटिका और दैत्योंने यह दशा देखकर भयानक नाद किया और विजय के बाजे बजने लगे और जलन्धर देवताओं के पुरमें चलागया और इन्द्र और बड़े बड़े देवता आदि सब सिमिटके एक कुन्तल में जा छिपे और वहांभी उनका भय न गया इसी प्रकार उन्होंने बड़े बड़े कष्ट उठाये और जलन्धर देवताओं के वश करने के अनन्तर राज्य करने लगा जहांपर कोई देवताओं की राजधानी थी वहां दैत्योंने अपनी राजधानी ठहराई और चन्द्र, अनल, यम, कुबेर, सोम, सूर्य, पवन आदि सब देवताओंके जुदा पदपर दैत्यों को नियत किया वह ऐसा प्रतापी और शक्तिमान् हुआ कि जिसको हम कह नहीं सक्के उसने संसार भर का राज्य करके पुत्रों के समान प्रजा पाली और फिर शुम्भादिको राज्य दे आप सेनासमेत देवताओं के ढूँढ़ने को सुमेरु पर्वतपर चला॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! देवताओं ने जलन्धर को आतेहुये देखा और बहुत घबड़ाकर विष्णु का स्मरण किया और हाथ जोड़ शिर झुकाते स्तुति कहते जयविष्णु जयविष्णु ऐसा बारम्बार कहने लगे और बिनती की कि आपतो सदासे देवताओंके सहायक हैं हम पर इस समय बड़ा कष्ट है आप प्रकट होकर दैत्यों को नष्ट करें अब हमारे सम्मुख जलन्धर चलाआता है जो उचित हो वह कीजिये आपने देवताओं को दुःखी देख मत्स्य अवतार लिया और मुनिके सब दुःख दूर करके आप प्रलयमें विराजमान हुये फिर देवताओंके निमित्त कूर्मावतार लेकर पर्वत को पीठ पर रक्खा जब हिरण्यलोचन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ाबलवान् होकर देवताओं को दुःख देने लगा तब तुमने युद्धकर उसको नष्ट करदिया और उसके भाईने जब कि प्रह्लादके साथ बड़ी हठ की तो तुमने नृसिंह अवतार धारण कर उसका उदर विदीर्ण कर दिया और केवल देवताओंके कार्य सुधारने को तुमने वामन होकर बलिके साथ छल किया और सब पृथ्वी उससे निकालकर हम सबको देदी और परशुराम का अवतार लेकर सहस्राबाहु के गर्वको नष्ट किया और राजा विना पृथ्वी को करदिया और शिवकी भक्ति में स्थित होकर सर्व संसार का उपकार करते रहे और जब कि रावण ने शिव के वरदान से बड़ी पदवी पर पहुँचकर सबको दुःख दिया तो तुमने रामचन्द्र होकर शिवसे बाण लिया और उसी बाण से रावण को मार डाला फिर तुमने कृष्ण अवतार ले पृथ्वी भर के भार को उतारा और जब कि दैत्योंने वेदों को छीन लिया और पृथ्वी भर म्लेच्छोंसे पूर्ण होगई तब तुमने बौद्धरूप हो वेदोंको उनसे छीन लिया और वेदों की निन्दा कर दैत्यों की बुद्धि भ्रष्ट करदी और तुम कलियुग में कल्की अवतार धारणकर सब म्लेच्छों को नष्ट करोगे इसी प्रकार तुम भक्तों के लिये असंख्य अवतार ले उनके दुःख दूर किया करते हो और आप कष्ट सह भक्तों को आनन्द देते हो अब हमारे दुःख को दूर कीजिये इस समय हमारा रक्षक तुम्हारे सिवाय कोई नहीं इस समय अपने पीतवसन की झलक क्यों नहीं दिखाते इसी प्रकार देवताओं ने बड़ी स्तुति की यह स्तुति जो कोई सुने सुनावेगा वह कभी कष्ट न पावेगा निदान ऐसी स्तुति पढ़ते विष्णु ने जाना कि देवताओं पर कुछ दुःख पड़ा है सो तुरन्त उठकर गरुड़पर चढ़े इतनी शीघ्रता विष्णु की लक्ष्मी ने देखकर कहा इतनी जल्दी कहां जाते हो विष्णुने कहा कि तुम्हारे भाई जलन्धरने देवताओं पर चढ़ाई की है और वह हमारी स्तुति कररहे हैं सो हम उनकी रक्षा को और दैत्यों के साथ युद्ध करने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को जाते हैं लक्ष्मी ने जलन्धर के प्रेम के कारण कहा कि तुम जलन्धर हमारे भाईको किस तरह मारोगे विष्णु ने कहा कि जलन्धर बड़ा बलिष्ठ और पराक्रमी है हमारे मारेसे नहीं मरेगा वह रुद्र का अंश है और ब्रह्माके वरदानसे ऐसे कष्ट देवताओं को देरहा है पर जो मैं नहीं जाता तो हमारा नाम मिटजावेगा और वेदके मार्ग भ्रष्ट होजावेंगे यह कहकर विष्णु चले और शङ्ख, चक्र, गदा, असि और बाण लिये हुये गरुड़ को तय्याकिया और जहांपर जलन्धर था जा पहुँचे उस समय गरुड़ने शीघ्रही अपने परों को डुलाया और वायुके समान जो मेघों को उड़ादेती है दैत्यों को उड़ादिया जलन्धर ने पवन से दैत्यों को दुःखी देखकर बड़ा क्रोध किया और सिंहके समान विष्णुपर जा पहुँचा और विष्णु और जलन्धर से बड़ा युद्ध हुआ और दोनों ओरसे बहुतही बाण चले और बाणों के छा रहने से आकाश दिखाई नहीं देता था विष्णुने जलन्धर के रथवाले घोड़े छत्र ध्वजा धनुष् काट शङ्ख-ध्वनि की और एक बाण जलन्धर के हृदयमें क्रोधसे मारा और जलन्धर ने भारी गदा गरुड़ के शिरपर मारी कि गरुड़ न सहकर धरती पर गिरपड़े विष्णुने निर्भय होकर असि लेकर गदा काटदी जलन्धर ने क्रोधकर विष्णुके हृदय पर एक तमाचा मारा और फिर दोनों लिपटकर भली भांति मल्लयुद्ध करनेलगे और नाना प्रकारके दांव पेंच हुये जब दोनोंमें से कोई न हारा तब विष्णुने बादल के समान गर्ज कर कहा कि हे जलन्धर ! तेरे समान हमने तीनोंलोकमें कोई वीर नहीं देखा तुम्हारे सिवाय और कोई हमारा तेज नहीं सहसक्ता हमने कुछ अपने बल को नहीं रखछोड़ा और तुम्हारे पराक्रम से हम प्रसन्न हैं हम से वरदान मांगलो इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! राजनीतिका मुख्य तात्पर्य यही है कि उपायसे अपना मनोरथ पूरा करे जलन्धरने यह सुनकर विष्णुसे कहा कि हम आपसे यही वरदान मांगते हैं कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आप लक्ष्मी हमारी बहन समेत हमारे घर में आकर स्थित होवैं इसी प्रकार जितने देवता हैं वह सब हमारे वशमें होकर हमारे घरमें रहें विष्णुजी जलन्धर का यह वर मांगना सुनकर अति दुःखी हुये और मानकर जलन्धर के घरमें स्थित हुये और जलन्धर तीनों लोक को जीतकर बड़े आनन्द से रहने लगा॥

सोलहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारदजी! जलन्धरने तीनोंलोक जीतकर देवताओं के बदले दैत्यों को नियत कर दिया और संसारभरके राजों को जीतलिया और सब देवता गन्धर्व सिद्धादिकों को अपने अधीन करलिया और जितने संसार में बहुमूल्य रत्न और विचित्र और अद्भुत वस्तु हैं उनको लेलिया और सब दिक्पालों को बुलाकर अपने नगर में प्रजा के समान बसादिया और उनके बदले दैत्यों को नियत कर दिया और इन्द्रसे ऐरावत हस्ती छीन लिया और कल्पवृक्षभी उसके वश में आया और उच्चैःश्रवा घोड़ा भी उसके हयशाला में बँधगया और जो मुख्य २ वस्तु जैसे छत्र वरुण का और रथ प्रजापति का और अंशुक अनलके थे वह सबसे छीनकर उसने अपने अधीन करलिये फिर उसने बड़े दया धर्म से आज्ञा चलाई और वह पुत्र के समान प्रजा का पालनकर दैत्यों में अद्वितीय गिनागया उसके राज्यमें किसी को कुछ दुःख न था और न देशमें कहीं कुछ किसी प्रकार का कष्ट था और न चोरी होती चारों वर्ण अपने अपने धर्म और आश्रममें स्थित और कोई मनुष्य अधर्मी न था तीनों प्रकारके दुःख में किसी को एक भी न था और वेदके विरुद्ध कोई कर्म नहीं होता था कोई मनुष्य अकाल-मृत्यु न पाता था किसी मनुष्य के मन में पाप न उपजता और सब जीव स्वाभाविक द्वेष उचित न जानकर मित्रता और प्रीति से बसेरा करते थे और छलछिद्र तो थाही नहीं स्त्रियां सब अपने पतिव्रत धर्म में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थित थीं ब्राह्मण धर्म की कथायें कहा करते थे कोई मनुष्य दरिद्री न था हे नारद! यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि शिवजीकी लीला ऐसी बलवान् है उस समय में अर्थात् जलन्धर के राज्य में सिवाय देवताओंके और किसीके मनमें कुछ कष्ट न था एकादिन सब देवता इकट्ठे होकर शिवजी का स्मरण और ध्यान कर स्तुति करने लगे और देवताओंने कहा कि हे शिवजी! अब कोई उपाय और मति रह नहीं गई अबतो आपही की कृपा होनी चाहिये क्योंकि हम को विष्णुजी का बड़ा भरोसा था सो उन्होंने अपनी स्त्री लक्ष्मी समेत जलन्धर के घर में डेरा किया जब तक कि हमारा काम विष्णु से निकलता था हम आपको श्रम न देते थे यह सुन शिवजी ने आकाशवाणी से कहा कि हे देवताओ! कुछ भय मत करो हम तुम्हारी आशा पूर्ण करेंगे देवताओं ने यह सुनकर बड़ा आनन्द मनाया और हे नारद! शिवजी ने तुम्हारे मन में युक्ति सुझाई जिससे तुमने जलन्धर के राज्य में जाकर विष्णु आदि को देखा जलन्धर ने तुमको देखकर अगवानी की और तुम्हारी पूर्ण पूजा की और कुशलप्रश्न के उपरान्त आगमन का कारण पूछा और कहा कि जो कुछ आपने संसार में आश्चर्यदायक चरित्र देखा हो तो वर्णन करो तब तुमने उत्तर दिया कि एक दिन हम कैलास में गये जो सृष्टि भर में श्रेष्ठ है और शिवजी की स्तुति और प्रणाम के उपरान्त इतनी सामग्री देख कर मैं आश्चर्य में रहा और विचार किया कि इतनी सामां किसीके यहां न होगी सो मैं तुम्हारी सामां देखने आया हूं यह सुनकर जलन्धर ने अपनी सामग्री तुमको दिखाई और पूछा कि हे नारद! सच कहना दोनों जगह से कहां सामग्री अधिक है नारद ने कहा कि वास्तव में तुम्हारे घर सब रत्न वर्त्तमान हैं पर दाररत्न नहीं है शिवजी के घर ऐसी स्त्री है जिसके समान संसार में और कोई स्त्री नहीं जिसकी सुन्दरता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर ब्रह्मा भी मोहित हुये थे उसकी उपमा हम किससे देवें उसने शिवजी को जो कामदेव के शत्रु कहलाते हैं वश करलिया है ब्रह्मा ने बहुत चाहा कि दूसरी स्त्री शिवरानी के समान बनावें पर न बनासके इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह कहकर तुम चले गये और जलन्धर कामज्वर से रोगियों के समान दुःखसागर में डूबगया और काम के वश हो शिवजी को देवताओं के समान समझ राहु को शिव जीके पास भेजा हे नारद ! शिवजी के असंख्य चरित्र हैं उन्होंने जलन्धर का ज्ञान खींच लिया शिवजीकी लीला बड़ी आश्चर्य देनेवाली है सो राहु अपने स्वामी की आज्ञा मानकर शिव के पास जा छः डेवढ़ीतक चलागया जब कि सातवें द्वार में जहां नन्दी गणों के राजा द्वारपाल बनकर बैठे थे गया तो नन्दीने रोंका और शिवजी की आज्ञा लेकर और आप साथ होकर सदाशिव के पास लेगया शिवजी ने भौंहकी सैन से आज्ञा दी कि कहो राहु ने कहा कि हे शिवजी ! जलन्धर जो सब से श्रेष्ठ है और जिसके आधीन देवता और विष्णु भी हैं उसकी आज्ञा सुनिये उसने कहा है कि तुमतो तपस्वी योगी नग्नशरीर मरघटों में पड़े रहते हो तुम भोग विलास से प्रयोजन नहीं रखते हड्डियों की माला पहनकर अवधूतों के समान रहते हो तुमको ऐसी कोमलाङ्गी स्त्री से क्या प्रयोजन है ? तुमतो वन के रहनेवाले हो ऐसी स्त्री तो हमको चाहिये इससे तुमको उचित है कि ऐसी रत्नदारा हमको दो यह सुनकर शिवजी कुपित हुये और तुरन्त शिव के भवोंमें से एक मनुष्य उपजकर आगे खड़ाहुआ जिसका अतिभयानक शरीर वज्र के समान दृढ़ सिंहकासा स्वरूप तीक्ष्णजिह्वा किये जलतीहुई अग्नि के समान सब बाल खड़ेहुये इसी प्रकार महाभयानक डील डौलसे विष्णु का चौथा अवतार जानाजाता था और शिवजी की इच्छा समझ कर राहु के खालेनेके उद्योग से चला यद्यपि राहु भागा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर उस नये उपजे हुये गणने जाने न दिया और पकड़लिया राहु अतिकम्पित हो शिवजी से कहनेलगा कि मुझको ब्राह्मण जानकर छुड़ा दो यह मुझको खायेडालता है मैं तो आपका ब्राह्मण हूं यह विनय के वचन राहु से सुनकर शिवशंकर ने कहा कि छोड़दे २ सो गण ने राहुको छोड़ शिवजी के पास आकर विनय की कि मैं बहुत भूखा हूं मेरे लिये कुछ भोजन बतला दीजिये भूखकी आग से मैं जला जाताहूं शिवजीने कहा कि जो तुम ऐसे भूखे हो तो अपने हाथ और पांव को खाडालो गण ने वही किया कि सिवाय शिर के अपने सब अङ्ग खाडाले यह दशा देख शिव अति आश्चर्य में हुये और अतिप्रसन्न होकर कहा कि हम तेरी आज्ञाके पालन से अतिप्रसन्न होकर तेरा नाम कीर्तिमुख रखते हैं तुम हमारे द्वारपाल होगे जो कोई पहिले तेरी पूजा न करलेवेगा उसको हम स्वप्न में दर्शन न देंगे हे नारद! उस दिन से कीर्तिमुखगण शिवजी के द्वारपर रहते हैं कीर्तिमुख के पूजे विना शिवजी की सब पूजा नष्ट और भ्रष्ट होजाती है निदान जब राहु कीर्तिमुख के हाथ से छूटकर भागे तो कैलासपर्वत के एक गढ़ेमें ऐसे गिरे कि राहु के अङ्ग भङ्ग होगये सो राहु ने जलन्धर के समीप आनकर सब हाल कह सुनाया॥

सत्रहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! दूत के वचन सुनकर जलन्धर अतिकुपित हुआ और सब दैत्यों को आज्ञा दी कि सब इसी दिन शिव के कैलास पर्वत पर चढ़ाई करें और सब सरदार और सेनाधिप अपने २ शस्त्र लिये हुये चतुरङ्गिणी सेनासे तैयार हों और एक कोटि असुर और पांचसौ कबन्ध और सौ कुलधूम्र सब चलें और कालक और ध्रुव और मुरज कालनेमि भी जो दैत्यों में प्रसिद्ध हैं साथ रहें यह आज्ञा देकर आपभी घर से जलता भुनता हुआ निकला उस समय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जलन्धर की स्त्री ने बहुत समझाया और हाथ जोड़कर मनाकिया और कहा कि शिव से कोई युद्ध करके न जीता आप देवताओं के बड़े सहायक विष्णुजी वहतो तुम्हारे घर हैं पर जलन्धर ने मृत्युके वश होनेसे कुछ न माना हे नारद ! जब मृत्यु आती है तो बुद्धि भ्रष्ट होजाती है और जो मनुष्य चलनेके समय स्त्री ब्राह्मण का आदर नहीं करता वह फिर नहीं लौटता बरन वह काल के मुखमें पड़जाता है सो सब सेना के आगे शुक्र फिर जलन्धर और फिर उनके पीछे सब सेना चली पहले तो जलन्धर को राहु दिखाई दिया और फिर मुकुट शिर से गिरपड़ा यह बुरे शकुन साम्हने हुये और शुम्भ निशुम्भ दोनों सेनानी नियत किये गये और कालनेमि भी आज्ञा पाकर सेना सहित चला इसी प्रकार और बहुत दैत्यवंशी राजा कैलासपर्वत को चले जब कि जलन्धर सेना सहित कुछ दूर नगर से बाहरगया तब विष्णुने देवताओं को बुलाकर कहा कि अब कष्टके दूर होने का समय है तुम गुप्त शिवजी के समीप जाकर जलन्धर की चढ़ाई के समाचार कहो सो देवता छिपे २ शिवजी के पास पहुँचकर स्तुति कर जैसा विष्णुजी ने कहा था सब विनय करनेलगे और जलन्धर के बध की इच्छा विनयपूर्वक प्रकट की शिवजी ने हँसकर कहा कि अब धैर्य रक्खो तुमको कुछ कष्ट न होगा यह कह फिर विष्णुजीको बुलाकर कहा कि तुमने जलन्धर को क्यों नहीं मारा और वैकुण्ठ छोड़ उसके घरमें क्यों जारहे विष्णु ने कहा कि जलन्धर बड़ा बलवान् है कोटि यत्न से भी वह नहीं मरसक्ता और जो कि तुम्हारा अंश है इससे उस पर कोई शस्त्र नहीं चलता मैंने उसके साथ बहुत युद्ध किया पर वह न मरा वह आपही के मारे मरेगा आप कृपा करके उसको मारें तुम तो पृथ्वी से लेकर आकाशतक के स्वामी और तीनों गुणों से परे हो शिवजी ने कहा कि जलन्धर हमारे अंश से उपजा है इससे उस पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम त्रिशूल नहीं चलासक्ते और हथियार जो त्रिशूलके सिवाय हैं वह जलन्धर पर काम न करेंगे इससे हमने एक उपाय सोचा है अर्थात् तुम सब अपना २ तेज देते जाओ हम उसका एक शस्त्र बनावेंगे और उसी शस्त्रसे जलन्धर को जलावेंगे यह सुन हम विष्णु इन्द्र और सब देवताओं ने अपना २ तेज देदिया सो हम सबका तेज इकट्ठा होकर प्रज्वलित हुआ और शिवजीने उसमें से एक शस्त्र बनाया जिसका नाम सुदर्शनचक्र रक्खा गया वह कोटि सूर्यवत् प्रकाशमान और अग्नि समान प्रज्वलित था और जो तेज कि सुदर्शनचक्रके बनाने से शेष रह गया था उससे वज्र बनाया जिससे देवताओं को अति आनन्द प्राप्त हुआ सुदर्शनचक्र को देखकर विष्णु और वज्र को देख कर इन्द्र अतिप्रसन्न हुये और दैत्यों के बध का पूर्ण विश्वास हुआ इतने में जलन्धर कैलासपर्वत के समीप पहुँचगया और उस पर्वत की एक कन्दरा में सेना सहित डेरा किया उसको देखकर सब देवता छिपे छिपे अपने २ स्थानों को जहां पहिले रहते थे चले और शिवजी के गणों ने दैत्यों की सेनाके आने के पहिले शिवजी को समाचार दिया और कहा कि दैत्यसेना आनेही चाहती है जो आप उचित जानें वह करें शिवजीने नन्दी गणपति और वीरभद्र को आज्ञा दी कि तुम और गणोंसमेत जाकर दैत्योंसे भलीभांति लड़ो यह आज्ञा पाकर शिवजीके गण चले और पर्वत के नीचे उतर आये ॥

अठारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शिवजीके गण जयशिव जय मृत्युंजय जय ईश कहते हुये प्रसन्नतापूर्वक गाते बजाते हुये दैत्य-सेना से लड़ने लगे और ऐसी मारपीट दोनों ओर से युद्धस्थान में हुई कि पृथ्वी कांप उठी और हर प्रकार के शस्त्र दोनों ओर से चले और युद्धस्थल अस्थि मांस रुधिर से पूर्ण होगया बरन रुधिर की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नदी बह निकली वह स्थान चलने के योग्य न रहा जो दैत्य कि गणों के हाथ से मारे गये उनको शुक्र ने जिलादिया और जब कि फिर गणों ने दैत्यों की सेना का बध किया तो फिर भी शुक्रजीने उनको जिला लिया इसीप्रकार बारम्बार गणोंने दैत्योंका बध किया और शुक्रने फिर २ उनको प्राणसहित किया निदान गणों ने कोई उपाय न देख दुःखी हो शिव के समीप जा सब हाल कहा और कहा कि हमसे दैत्य न मरेंगे यह सब काम आप करें शिवजी क्रोध कर कहने लगे कि यह शुक्र मृत्युञ्जयमन्त्र पाकर ऐसे कार्य कर रहा है तब शिवजी के मुख से एक कृत्या नामी स्त्री जिसका स्वरूप अति भयानक था उपजी उसकी दाढ़ें बड़ी भयंकर पर्वत के समान नासिका और बड़ाभारी मुख अतिही भय देनेवाली आंखें अन्धे कुवें के समान स्तन पर्वत के शिखर सदृश लाल २ बाल खड़े हुये ऐसे स्वरूप से प्रकट होकर शिवजी की सेना से युद्धस्थान में आई और पहिले अति भयंकर नादकर दैत्यों को खानेलगी दैत्य दुःखी हो कर भागने लगे उनकी कोई युक्ति न चली और फिर कृत्या शुक्र को अपनी योनि में दबाकर उड़गई और सब के देखते २ दृष्टि के ओट होगई जब कृत्या शुक्रको उड़ा लेगई तब दैत्यों को बड़ा भय उपजा मानों मारे बिन मर गये और उनकी सेना में हाहाकार मच गया और शिवजी के गण प्रसन्न होकर दैत्यों को चारों ओर से घेरकर शेरके समान गर्जनेलगे दैत्योंने भागजानेके सिवाय और उपाय न देखा और चारों ओर भाग कर फैलगये जिस तरह से कि घास फूस पवनके वेग से उड़जाती है उसी प्रकार दैत्य उड़गये यह दशा दैत्यों की देखकर शुम्भ और निशुम्भ और कालनेमि यह तीनों सेनप अति दृढ़ता से गणों के साथ सामना करनेलगे और अन्त में शिवजी के गणों को बहुत मारकर दुःखी करदिया सो वह हारमान भागचले कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इतनेमें गणपति नन्दी वीरभद्र आदिने दैत्योंको रोंककर सब गणों को फिर धैर्य दे बुलालिया और फिर दोनों सेना ऐसी लड़ीं कि कालनेमि और नन्दी गणपति और शुम्भ वीरभद्र और निशुम्भ एक साथ लड़े और युद्धस्थान में अपनी २ वीरता दिखानेलगे वीरभद्र ने निशुम्भ के हृदय में बाण मारा निशुम्भ धरती पर गिरपड़ा वीरभद्र ने चाहा कि सांगी से उसे मारही डालूं इतने में शुम्भने उठकर वीरभद्र को बड़े क्रोध से अपनी सांगी मारदी सो वीरभद्र दुःख पाय धरतीपर गिरपड़े और कालनेमि के शरीर में नन्दी ने सात बाण मारे जिसके लगने से रथ के घोड़े सारथी निर्जीव होगये और कालनेमि ने क्रोधित होकर नन्दी के धनुष् को काटडाला नन्दीने धनुष् को फेंककर त्रिशूल चलाया जिसके लगनेसे कालनेमि मूर्च्छित होकर धरती में गिरपड़ा और जब सचेत हुआ तो नन्दी को उठाकर पर्वत के ऊपर फेंकदिया और गणपति और शुम्भ लड़नेलगे गणपति तो मूषकपर चढ़े और शुम्भ रथ पर चढ़ा हुआ था इतना लड़े कि कोई युद्ध से मुख नहीं मोड़ता था निदान गणपति ने एक बाण शुम्भ के हृदय में मारा और तीन बाण से सारथी को पृथ्वी पर गिरादिया शुम्भ ने क्रोधकर गणपतिको साठ बाण मारे और गणपति के मूषकवाहनको तीन बाण मारकर शिर धरसे जुदा करदिया मूषक धरती पर गिरपड़ा और गणपति भी मूषक के ऊपर से पृथ्वीपर गिरपड़े और पैदल होगये और फिर अपनी सांगी का शुम्भ के ऊपर वार किया कि शुम्भ सांगी के लगने से पृथ्वीपर गिरपड़ा और गणपति फिर मूषक पर सवार हुये विजय गणेशजीकी हुई बाजे बजनेलगे सब गण अतिप्रसन्न हुये और जय जय शब्दकर विजय के बाजे बजानेलगे इतने में वृन्दानामक शुम्भ का पितामह कोपित होकर गणपति के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगा सो गणेशजी दौड़कर वृन्दा के पास पहुँचे उनके साथ असंख्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भूत, प्रेत, कूष्माण्ड, पिशाच, भैरव, गण, वेताल, शाकिनी, डाकिनी, योगिनी, किलकिल शब्द करते अर्थात् सिंह और हाथियों का नाद करते थे उन्होंने सेना समेत शुम्भ को विकल करदिया और वीरभद्र की सेना ने दैत्योंको अतिदुःखी किया उन्होंने बहुत दैत्योंको खाकर लहूतक पीलिया इतने में नन्दी भी आगये और ऐसे बाण छोड़े जो दैत्यों की ओर सर्पवत् चले और दैत्यों की सेना नष्ट करदी कुछ तो दैत्यगण खाये गये कुछ दैत्य मारेगये कुछ मूर्च्छित हुये कुछ भाग गये कुछ गिरपड़े इसी प्रकार सब दैत्यों की सेना नष्ट हुई जो शेष बचे वह महालज्जा को प्राप्त हुये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जलन्धर अपनी वीरसेनाकी ऐसी दुर्दशा देख बड़े क्रोध से रथ पर चढ़ कटकसहित गणों की ओर चले और दैत्यों की सेना फिर सँभलकर लड़ने पर तय्यार हुई युद्ध के बाजे बजनेलगे और दोनों सेना फिर लड़ने लगीं और जलन्धर ने बाणों की वर्षा की और पांच २ बाण गणपति और नन्दी को और बीस बाण वीरभद्र को मार और बड़ा नाद किया सो वीरभद्र ने एक सांगी जलन्धर पर ऐसी चलाई कि जलन्धर मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिर-पड़ा और उठकर बड़े क्रोधसे गदा वीरभद्रके ऐसी मारी कि वीरभद्र विकल होकर धरती पर गिरपड़े और इसी प्रकार जलन्धरने नन्दी को भी पृथ्वीमें वार करके गिरादिया तब गणपतिने क्रोधित होकर तुरन्त अपनी सांगी से जलन्धर की गदा को काटडाला और तीन बाण जलन्धर के हृदय में मारे और सात बाण चलाकर रथ के घोड़े और पताका ध्वजा और छत्र काटदिया जलन्धरने अपनी सांगी चला-कर गणपति को घायल किया और दूसरे रथपर चढ़कर वीरभद्र के पास पहुँच लड़ने लगा सो वीरभद्रने धनुष् काट कर जलन्धर के भाल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में परिघ मारी जलन्धर धरती पर गिरपड़ा और फिर चेतकर एक ऐसी परिघ वीरभद्र के मारी कि वीरभद्र मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़े उस समय ऐसी दशा वीरभद्र की देखकर सब गण भागनेलगे और शिवजीके समीप जाकर सर्व वृत्तान्त वर्णन किया और कहा कि दैत्योंने हम सबको विकल करदिया अब जो उचित हो वह आप करें शिवजी यह हाल सुन बैलपर चढ़े और त्रिशूल लेकर दैत्यों की सेना पर चढ़ाई की युद्धके बाजे बजने लगे और शिवजी ने अपनी डमरू बजादी जबकि गणों ने शिवजी को आते देखा तो प्रसन्नमुख होगये और फिर लौटकर लड़नेपर तय्यार हुये और फिर उन्होंने दैत्यों से घोरयुद्ध किया और शिवजीने अपना ऐसा भयंकररूप धरा जिसको देखकर बहुत भय पाया और दैत्यों की सेना महाभय खा भाग चली सो दैत्यपतिने सेना की यह दशा देख शिवजी पर बहुतसे बाण छोड़े और शुम्भ निशुम्भ कालनेमि, हयमुख, असिलोमा, बलाहक, प्रचण्ड एकही साथ शिवजी पर चढ़ाई करके बाण चलाने लगे यहांतक कि आकाश दिखाई न देता था पर शिवजीने सब बाणों का जाल काट डाला और अपने बाणोंसे आकाश पूरित कर दिया और फरसा लेकर असिलोमा का शिर काटडाला और बलाहक को भी बध करडाला और घस्मरको पाशसे बांध लिया हे नारद! शिवजी की लीला देखो कि जो सृष्टि उपजाकर प्रलय करनेवाला है वह संसारी रीतिके समान कैसी २ लीला करता है फिर शिवजीने अपना बैल दैत्यों की सेना में छोड़दिया जिसने अपने सींगों से असंख्य दैत्यों को मारडाला जो शेष रहे वह भयभीत हो भागगये जैसे शेरके हाथोंसे हाथी विकल हो-कर भागजाता है वही दशा दैत्यों की हुई निदान जलन्धरने शुम्भ निशुम्भ और कालनेमि से कहा कि देखो जो संसार में उपजते हैं वे अवश्यही एक दिन मरते हैं उसका कोई उपाय नहीं ऐसी मृत्यु कौन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चाहेगा जो दोनों लोकमें यश और कीर्ति बढ़ाये लोकमें दो प्रकार की मृत्युवाले सूर्यमण्डल को भेदनकर स्वर्गको जाते हैं अर्थात् एक योगी दूसरा जो युद्ध में सम्मुख होकर निर्भय प्रसन्नतापूर्वक मरजावे इससे अब तुम मृत्यु का भय दूरकर भलीभांति सामने होकर युद्ध करो यद्यपि ऐसी २ बातोंसे जलन्धर ने बहुत कुछ प्रबोध किया पर उनके मनों में कुछ न आया तब जलन्धरने उनको बहुत धिक्कारदे कहा कि तुमने उपजकर वृथाही माता को दुःख दिया क्या तुमको युद्धसे भागना योग्य है क्या एक दिन तुममें कोईभी मृत्युके पंजे से बचा रहेगा यह कहकर सिंह के समान गरजा और आप लड़ाईपर तय्यार हुआ ॥

बीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जलन्धरके शब्दसे धरती कांप उठी और समुद्र पर्वत सब थर २ कांपनेलगे और दैत्य जो पहिले भागगये थे सब लौट आये जलन्धरने कहा कि हे शिवजी ! मालूम हुआ कि तुम कुछ बल रखते हो क्योंकि तुमने हमारे साथ युद्ध की इच्छा की अब अपनी वीरता दिखाओ कि तुमको हम वीर समझें यह कह शिवजीके ऊपर उसने शत्रुबाण चलाया जिसको शिवजीने बीचहीसे काटडाला और शिवजीने सुगमतापूर्वक एक बाण चलाकर जलन्धर के रथ सारथि और घोड़ों समेत रथ धनुष् आदि सबको नष्ट करडाला तब जलन्धरने शिवजीके मारनेको अपना तमाचा उठाया और छिपकर एक बाण शिवजी को मारा शिवजी ने उसको अपने बाणसे एककोस पीछे फेंकदिया तब जलन्धरने विचार किया कि शिवजी बड़े बली हैं ऐसे युद्ध करने से मैं इनसे न जीतूंगा कोई ऐसी माया करूं जिससे शिवजी मोहित होजावें और शिवजी नाद को बहुत प्रिय जानते हैं यह शोच ऐसी माया फैलाई कि गन्धर्व अप्सरा और किन्नरादि उपजकर मनुष्यों के समान नानाप्रकार का नाचगान करने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगे और मृदङ्ग, मुरली, वीणा आदि नाना प्रकार के बाजन बजने लगे सो शिवजीके मनमें सुनने की इच्छा उपजी और उस आनन्द-रूपी नादमें मग्न होगये और जो कि इस बातका नियम है कि राग सुनने से बुद्धि जाती रहती है जैसा कि शिवजी ने आप राग की बड़ाई को दिखाया और नाद तो आप शिवजीका रूप है इससे शिव जी उसमें मग्न होगये शिवजी सिवाय नाद के और किसी से मोहे नहीं जाते यह बात वेद कहते हैं इसीसे शिवजी ने वेदके वचनों को स्थिर रखकर नादमें अपना मन लगाया उस समय शिवजीके हाथों से सब शस्त्र गिरपड़े और शिवजीने उस तुरीयावस्था में कुछ न जाना और जलन्धर ने कामवश शिवजी के समान अपना स्वरूप बनाया जिसके दश भुजा पांचमुख तीननेत्र थे और एक बैल माया से बना कर उसके ऊपर चढ़ा और जो मुख्य लक्षण शिवजीके हैं वह भी सब धारण कर शुम्भ निशुम्भ को युद्धस्थल में ठहराकर आप गिरिजा के समीप गया और गिरिजाने लोकरीति से उसको शिवजी जाना और जबकि गिरिजा सखियों के बीचमें से उठी और जाना कि यह छलसे ऐसा स्वरूप बनाकर आया है तो तुरन्त वेद की रीति के अनुसार अन्तर्धान होगई और जलन्धर लज्जित होकर युद्धस्थान को लौट आया और गिरिजा ने विष्णुजी का ध्यान किया तो विष्णुजी तुरन्त आये गिरिजाने सब वृत्तान्त जलन्धर का वर्णन किया और पतिव्रत धर्म की बहुत कुछ प्रशंसा की और कहा कि जलन्धर की स्त्री बड़ी पतिव्रता है उसीके धर्म से जलन्धर नहीं मरता क्योंकि पतिव्रता स्त्री विधवा नहीं होसक्ती इससे तुमको उचित है कि जलन्धरपुरी में जाकर उसकी स्त्रीके पतिव्रत धर्म का नाश करो और वृन्दा जो जलन्धर की स्त्री है उसके साथ छल करो कुछ धर्म विचार न करना क्योंकि धर्म-शास्त्र लिखता है कि जो बुरेके साथ बुराई करे तो कुछ पाप नहीं होता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह सुन विष्णुजी तुरन्त जलन्धरपुरी को गये और जब जलन्धर युद्ध-स्थल में आया और अपनी माया को दूर किया तो शिवजीने चैतन्य होकर युद्ध का स्मरण किया यह भी शिवजी की माया थी क्योंकि संसार में जो शिवजी के भक्त हैं उनके ऊपर तो माया कुछ अपना फल करही नहीं सक्ती तो शिवजी पर क्या फल होसक्ता था निदान शिवजी अतिक्रोधित होकर जलन्धर के ऊपर दौड़े जलन्धर ने अपने बाणों से शिवजी को छिपादिया शिवजी ने अपने बाणों से उसके बाणों को काटकर उसको दुःखी किया यद्यपि बड़ाही युद्ध शिवजी और जलन्धर से हुआ पर कोई उनमें न हारा और जो दैत्य कि शिवजी के हाथ से मारेगये वह मुक्त होगये उन दैत्यों की क्या अच्छी भाग्य थी जो शिवजी को सम्मुख देखतेहुये अपने प्राण देते थे हे नारद ! यह लीला जिस तरह कि विष्णुजी से हमने सुनी थी तुमसे कहदी ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! गिरिजा की आज्ञासे विष्णु जलन्धरपुरी में पहुँचे और विचार किया कि किसी प्रकार वृन्दा जलन्धर की स्त्रीका पतिव्रतधर्म बिगाड़ूं इसी शोचमें शिवजी का ध्यान किया तथाच शिवजीके ध्यान करतेही विष्णुजी को यह ज्ञान हुआ कि वह तपस्वीरूप से एक शिष्य को साथ लिये हुये वृन्दा के उपवनमें गये वृन्दा ने उसी रातको स्वप्न में देखा था कि मेरा पति जलन्धर मारागया और यह भी देखा कि मेरा पति जलन्धर भैंसे पर तेल लगाये हुये सवार नंगा और शिरके अशुभबाल बनवाये हुये कालेफूलों की माला पहने चारों ओर राक्षसोंसे घिरे यमदिशा को चलाजाता है और फिर देखा कि नगरभर समुद्र में डूबा चाहता है और चारोंओर अँधेरा छा रहा है यह दुस्स्वप्न देखकर उठी और सूर्य को उदय होते राहु समेत प्रकाशहीन देखा ऐसे अशकुनों के देखने से वह एकाएक रोने पीटने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगी और घबराहट से इधर उधर फिरने लगी यद्यपि उसने अपने उद्यान की बहार और इधर उधर घूमने से मनके दुःख को भुलाया पर मनने कुछभी आनन्द न पाया निदान अपनी दो सखियों को साथ लेकर जलन्धर के उद्यानको गई पर वहांभी फूल फल देख कुछ हर्ष न उठाया घूमने में दो राक्षस उसके दृष्टिगोचर हुये जो अतिभयानक थे उनको देखकर रानी भाग गई और आगे जाकर एक तपस्वी को शिष्यों समेत देखा कि मौन साधे बैठा है वृन्दा दौड़कर दोनों अपने हाथ उसकी गर्दन में डालकर लिपटगई और कहा कि हमारी रक्षा करो सो तपस्वी ने दोनों नेत्र खोलकर बड़ा क्रोध किया और हुंकार दी कि वे दोनों राक्षस भागगये और जलन्धर की स्त्री अतिप्रसन्न हुई और प्रणामकर उनके तपकी प्रशंसा करनेलगी और कहा कि आप मेरे पति का वृत्तान्त जो शिवजी से युद्ध करने के निमित्त गया है कहिये विष्णुजी ने हँसकर ऊपर की ओर देखा कि तुरन्तही दो बन्दर आपहुँचे और प्रणाम करके बैठे और फिर तपस्वी की सैनसे गुप्त होगये और एक क्षणभी न बीता कि दोनों बन्दर फिर पहिले की तरह आकर बैठगये उनके हाथ में जलन्धर का शीश और धड़ था उन्होंने योगी के आगे रखदिया और आप दुःखी होकर बैठरहे वृन्दा अपने पतिका शिर देखकर धरती में गिरपड़ी तब मुनिने पानी आदि छिड़क वृन्दा को जगाया और वृन्दा फिर रोकर अपने पतिका शिर अपने शीश से लगा रोने लगी और कहा मैं तो तुमको शिव के साथ युद्ध करने में मना करती थी पर तुमने न माना और इसी प्रकार वह बातें कह २ कर रोती थी फिर मुनि से कहा कि आप हमारे ऊपर कृपा करके हमारे पति को क्यों नहीं जिलाते तुम इस योग्य हो कि मेरे पतिको जिलादो क्योंकि मैं तुमको देख चुकीहूं मुनि बोले कि जो मनुष्य शिवजी की क्रोधाग्नि से मारा गया उसको हम जिला नहीं सक्ते पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारे दुःख को देखकर हम जिला देवेंगे यह कह शिरको शरीर से जोड़दिया और आप अन्तर्धान होगये और उस शरीर में आप प्रवेश कर गये और जलन्धर के समान उठकर बैठगये और अपनी स्त्री को गले लगाया और वृन्दा ने कुछ न जाना और बड़ी प्रसन्नता से मैथुन कर अपना धर्म खोदिया और उत्तम रीति से विहार किया और कई बेर भोग विलास किया एक समय विष्णुजी ने अपना शरीर धारण किया जिसको देख वृन्दा ने पहिंचान लिया और बहुत दुःखी हुई और ऐसा छल विष्णुजी का जानकर वृन्दा ने विष्णुजी को बहुत भय दिया और क्रोधित हो कहनेलगी कि तुमने वेदके विरुद्ध परस्त्री के साथ मैथुन करके मेरे धर्म को नाश किया तुम ऐसा स्वरूप मुनीश्वरोंका बनाये हुये बड़े धर्मवान् हो यह कहकर फिर शाप दिया कि जो दोनों राक्षस तुमने दिखाये वह दोनों बड़ेबली होकर तुम्हारी स्त्री को भगालेजावेंगे जिससे तुम बहुत दुःख पाकर वन २ फिरा करोगे जहां तुमको हरप्रकार के कष्ट मिलेंगे और जो बन्दर तुमने हमको दिखाये वही तुम्हारे सहायक होंगे यह कहकर वह बहुत रोई और चिता बनाकर अपने पति के साथ जलने की इच्छा की और यद्यपि विष्णुजीने बहुत मनाया पर पतिव्रत धर्म को दृढ़कर उसने कुछ न माना और तुरन्त शिव गिरिजा का ध्यान करके सती होगई और उसका तेज सबके देखते हुये गिरिजाके शरीर में प्रवेश करगया यह दशा देख विष्णुजी बार २ पछताते उसकी सुन्दरता के स्मरण में दुःखी हुये और चिता की भस्म अपने शरीर में मल उसी स्थान पर स्थित हुये और अपने मुख्य स्थान और लक्ष्मीको छोड़ दिया यह दशा देख देवता सिद्ध उसी के निकट आगये वे सब विष्णुजी को बड़े २ इतिहास सुना २ कर समझाने लगे कि तुम तो आप धर्म के पालने वाले प्रतिसमय में रहे हो तुमको परस्त्रीगमन करना उचित न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

था चलो अपने वैकुण्ठ में विहार करो परस्त्रीकी प्रीति छोड़दो जो पाप कि भाग्य वश हुआ है वह शिवजी की कृपा से नष्ट होजावेगा अब कुछ खेद मत करो और अपने स्थान को चलो हम आपको समझाते हैं यह हमारी बड़ी ढिठाई है आप क्षमा करेंगे तुम्हारी लीला का जाननेवाला कोई नहीं है सो इतने समझाने पर भी विष्णुजी ने किसीको उत्तर तक न दिया और उसी प्रकार शोकमें बैठरहे हे नारद! शिवजी की बड़ी माया है उसीके अधीन सब हैं जैसा शिवजी के मन में आता है वैसाही सब कुछ होता है॥

बाईसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! जब शिवजी सचेत हुये तो उन्होंने देवताओं को दुःखी करदिया अन्त को जलन्धर ने शिवजीकी वीरता और पराक्रम देख विचार किया कि अब मुझे माया करनी चाहिये कि शिवरानी को प्राप्त करूं यह सोच उसने माया से एक गिरिजा बनाई और उस अनुकरण गिरिजाको बिठलाकर शिवजी के सम्मुख लाये इस तरह पर कि शुम्भ निशुम्भ दोनों भाई मारतेजाते थे और वह गिरिजा रोती हुई कहती थी कि हमारी रक्षा करो इतने में जलन्धर ने ऊंचे शब्द से कहा कि हे सदाशिवजी! अपनी स्त्री को देखो जो यह स्त्री तुमको अतिप्रिय है उसको हम पकड़ लाये हैं और उसकी ऐसी दुर्दशा कर रहे हैं क्या तुम नहीं देखते तुमको धिक्कार है तुम अपनेको बड़ा समझते हो यह वचन सुन और माया की गिरिजा देख शिवजी अतिदुःखी हुये और मौन साधि बुद्धि विस्मृत की और जब कि शिवजीने लीला करके अपनेको ऐसा शोकवान् दिखाया तब जलन्धर ने धनुष को कानतक खींचकर तीन बाण शिवजी के ऊपर चलाये एक शिर में दूसरा छाती में तीसरा उदर में शिवजी जलन्धर की सब माया जान महाभयंकर रूप धारण कर अग्निके प्रकाशवत् प्रकटे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसा भयानक स्वरूप देख सब दैत्य भय खा युद्धस्थान छोड़ भाग चले यहां तक कि शुम्भ और निशुम्भ भी पीठ दिखाकर भागे और जलन्धर की सब माया नष्ट होगई और शिवने अति तेजरूप से शुम्भ निशुम्भ को यह शाप दिया कि तुमने जो छल करके गिरिजा को दुःख दिया यह बड़ा पाप तुम से हुआ है और हमारे युद्ध से मुख मोड़कर भागे तुम्हारा धर्म जातारहा इससे तुम गिरिजा के हाथों से मारे जावोगे इतने में जलन्धर ने क्रोधित होकर बाणोंसे शिवजी को छिपादिया तब शिवजी कोपित हुये और जलन्धर के बाणों को काटडाला इतने में जलन्धर ने एक परिघ बैलपर मारा कि बैल धर्म भूलकर लड़ाई से भागा यद्यपि शिवजी ने उसको बहुत खींचा पर वह युद्धस्थल में न ठहर सका तबतो शिवजी अति कोपित होकर महा-भयंकर होगये और सुदर्शनचक्र को हाथ में उठालिया जो कोटि सूर्य के समान चमकता था और जलन्धर के साम्हने छोड़दिया उस चक्र का दशों दिशाओं में तेज पूर्ण होगया और सर्व पृथ्वी और आकाश दग्ध होनेलगा सो उसने जाकर जलन्धर का शिर शरीर से भिन्न कर दिया और बड़ाशब्द हुआ उस समय पृथ्वी थरथर कांपने लगी और पर्वत जलगये और जलन्धर का तेज शिवजी के शरीर में प्रवेश कर गया और जय २ शब्द हुआ हे नारदजी ! उनके बड़े भाग्य हैं जिनकी यह दशा होवे क्योंकि देवता मुनि बड़े २ उपाय से इतना शिवजी को प्रसन्न नहीं करसक्के उस समय हम और इन्द्र और देवता आदि बड़ी २ स्तुति करने लगे ॥

देवताओंकी की हुई स्तुति ॥

हे शिवजी ! तुम हर प्रकार से भक्तों के दुःख दूर करनेवाले हो तुम को मन वाणी और वेद आदि किसीने नहीं पाया वे भी नेति नेति कह अपनी अज्ञानता जनाते हैं तुम्हारी महिमा अपार है जिसको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नारद, शारद, शेष, महेशभी नहीं पाते केवल अपनी बुद्धि के अनुसार कहते हैं तुम्हारे एक निमेष में करोड़ों इन्द्र विष्णु बीत जाते हैं तुम किसी से बनाये नहीं गये बरन परब्रह्म हो तुम दीनदयालु और घट घट व्यापक हो तुमने यदुवंशी को मुक्ति दी और उसी की स्त्री कलावती तुम्हारी भक्ति से मुक्त हुई तुमने मदयन्ती स्त्री को मोक्ष दी और सौमुनि के पुत्र को क्या अच्छी गति दी और राजा तिमिरघनको तुमने अपना करके सात जन्मतक बराबर आनन्द कृपा किया और तुमने चन्द्रसेनका मान रखलिया और श्रीकरगोप को अपना भक्त बनाकर वह द्रव्य दिया जो देवताओं को भी नहीं मिलता तुम्हीं ने सत्यरथ की आपदा दूर की और धर्मगुप्त तुम्हारे व्रत करने से दरिद्रतासे छूटगये तुमने चित्रधर्म के दुःख को दूर करदिया और उसमें उसकी लड़की को कितना सुख नहीं दिया अर्थात् उसका पति चन्द्राङ्गद राजा यमुना के भीतर डूबगया था और तुमने मरने न दिया तुम्हारे बलसे तक्षक को कुछ हानि और भय न होने पाई और एक स्त्री पुरुष होगई अमद्र देशके ब्राह्मण को आपने मोक्ष दिया और उसकी स्त्री चञ्चला को उबार लिया भद्रामुखगिरि के कष्ट को दूर कर दिया और पिङ्गला की इच्छा के अनुसार उसको धन आनन्द और सुख दिया और भद्रामुख अपने भक्त की इच्छा पूरी की ऋषभ को तुमने हरप्रकार आपमें मिला लिया आपकी सेवा वामदेव करके कैसी गतिको पहुँचा तुमने राजा दुर्जनको तारदिया जिसने असंख्य स्त्रियोंके साथ व्यभिचार किया था और तुमने शबरी और शूकर को कैसी अच्छी गति देकर भस्म की माहात्म्य प्रकट की और भद्रसेन का पुत्र सुधर्मा और तारक मित्रके पुत्र को उत्तम गति देकर रुद्राक्ष की बड़ाई दिखाई तुमने गङ्गा को जिसका नाम महानन्दा था तार दिया और सुश्रुमान् तुम्हारी भक्ति से बहुत दिनोंतक जिया तुमने शारदा के पति को जिलाकर उसके सौभाग्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को स्थिर रक्खा और बन्दिक नाम पापी ब्राह्मण को बहुत अच्छी गति दी और उसकी स्त्री बीचुका जो पुंश्चली थी उसे मुक्ति देदी और तुमने दक्षके यज्ञ को विध्वंस कर उसके गर्व का नाश कर दिया और काम को दग्धकर शिवरानी का गर्व हरा और बालक का रूप धारणकर तारकदैत्य को मारडाला तुमने गणपति को अपना बल देकर सब गणोंसे प्रबल करदिया और फिर त्रिशूलसे उनका शिरकाट फिर भी जिलादिया और दैत्यों को देवताओं समेत जलते हुये देखकर हलाहल विष को आप पीलिया तुमने पहिले त्रिशूल लेकर अन्धक के शिर को काटडाला फिर कृपा कर उसको अपने गणों में करलिया तुम ने त्रिपुर को जलाकर भस्म कर दिया और काल को तुम्हींने जलाया और धर्म को पालना के साथ रक्खा तुमने विष्णु ब्रह्मा के मोह को दूर करके मन्त्रशास्त्र को कील डाला तुमने नरहरि अवतार के गर्वको नाश करदिया और शरभ का अवतार धारण किया और अत्रिके पुत्र होकर कामरूप का वध किया तुमने कपि का स्वरूप धारणकर राम लक्ष्मण के दुःख को दूर करदिया और सूर्य और चन्द्रमा आदि सातों ग्रहोंने तुम्हारी कृपा से यह नाम पाया और राहु केतु भी तुम्हारी कृपा से उसी पद पर पहुँचकर ग्रह होगये तुम्हारी सेवासे ब्रह्मा विष्णु सृष्टि का पालन पोषण करते हैं तुम तीनों गुणों से परे हो और सगुण हो बे हाथों के बड़े २ कार्य करते हो हे नारद ! हम तीनों ने ऐसी स्तुति शिवजीकी की जो कोई इस स्तुति को सुनेगा वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा और शिवजी का लोक पावेगा ॥

तेईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! देवताओंने यह स्तुति कर फिर शिव से विनती की कि आपने जलन्धर को नष्ट करके हमलोगों को निर्भय करदिया अब और कोई कण्टक नहीं है पर अकस्मात् एक और दुःख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमलोगों को उपजा है अर्थात् विष्णुजी उस स्थान पर जहां जलन्धर की स्त्री सती होगई है भस्म लगाये हुये लोट रहे हैं वे किसी का कहना सुनना नहीं सुनते अब कोई उपाय कीजिये कि जिसमें विष्णुजी फिर हठको छोड़ अपना पुराना मार्ग धारण करें शिवजीने हँसकर कहा कि हे देवताओ! यह सब हमारी माया की लीला है हमारी माया तीनों लोक को नचाया करती है विष्णुजी की बुद्धिको हमने भ्रष्टकर यह लीला कराई है विष्णुजी मुझको बहुत प्रिय हैं इससे हमने यह लीला कर उनके अहंकार को दूर कर दिया अब जो उपाय हम बतलाते हैं वह तुम सब करो कि विष्णुजी का मोह दूर होजावे अर्थात् अब तुम सब देवी की शरणमें जाकर अपना दुःख वर्णन करदो वह तुम्हारे सब कार्य करेंगी और विष्णुजी मुख्य स्वरूप पर आजावेंगे यह कह शिवजी अपने गणोंसमेत अन्तर्धान होगये और देवता गिरिजा की स्तुति करने लगे और कहा कि हम तुम्हारी शरण में आये हैं हमको दुःखसे छुड़ादो यह स्तुति जो पढ़ेगा वह कभी मोह और दरिद्रतामें न पड़ेगा यह स्तुति देवता कररहे थे कि आकाश में एक अग्नि का कुण्ड दृष्टि पड़ा और उस कुण्ड में से शब्द हुआ कि हमने तीनरूप से अलग २ तीनों गुणसे अलंकृत होकर संसार में अवतार लियाहै एक गिरिजा दूसरी लक्ष्मी तीसरी सरस्वती सो हे देवताओ! तुम उनकी शरणमें जाओ तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा इतना सुन देवता स्तुति करनेलगे जिसके हरश्लोक में जय २ शब्द था सो तीनों देवियोंने तीन बीज देकर कहा कि जहां विष्णुजी बैठे हैं वहां इनको बोदो तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी ऐसे वचन देवियों के सुनकर जहां विष्णुजी बैठे थे देवताओं ने जाकर वह तीनों बोदिये जिससे तीन प्रकारकी वनस्पति उपजी उनका नाम धात्री मालती और तुलसी हुआ धात्री जो हमारी स्त्री है उसी से धात्री और लक्ष्मी से मालती और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरिजा से तुलसी उपजी और यह तीनों देवियां रज सत् तम तीनों गुणों को धारण किये हुई स्त्रियों के समान प्रकट होकर वृन्दा स भी अति सुन्दर विष्णु के आगे खड़ी हुई उनको देख विष्णु आश्चर्य में हुये और तुरन्त कामवश हो उठ खड़े हुये सो धात्री और तुलसी ने तिरछी चितवनसे विष्णु की ओर देखा और मालती यह दृष्टि उनकी सवतियाडाह से न सहकर दुःखी हुई और मनमें क्रोध किया इससे वह शिव पर नहीं चढ़ाई जाती और विष्णुजी धात्री और तुलसी पर मोहित होकर उनको साथ लिये हुये वैकुण्ठ में आये और उनका मोह जाता रहा जो मनुष्य इस जलन्धर के वध को पढ़ेगा वह शिव-लोक में स्थान पावेगा॥

चौबीसवां अध्याय॥

सूतजी बोले कि इस कथा के सुनने के उपरान्त नारदने ब्रह्माजीसे पूछा कि सुदर्शनचक्र विष्णुजी का शस्त्र प्रसिद्ध है नहीं जानते कि वह यही सुदर्शनचक्र है जो शिवजी ने सब देवताओं से तेज लेकर जलन्धर के वध निमित्त बनाया या वह कोई दूसरा है मुझको बता दीजिये यह सुनकर ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! सुदर्शनचक्र एकही है दूसरा नहीं जब दैत्य अतिबल और द्रव्य प्राप्तकर देवताओं को दुःख देने लगे तो विष्णुने शिवजीकी बड़ी सेवाकर सुदर्शनचक्र पाया और उसीसे सब दैत्यों का वध करते हैं कल्पभेद से हरचरित्र लीला वर्णन व्याख्यान कथा और इतिहास में बहुत अन्तर है पर बुद्धिमान् को चाहिये कि जो उसे सन्देह उपजे पूछे पर सत्यमार्ग से भटक न जावे सो जब जलन्धर के वध को बहुत समय बीता तब दैत्य दानव के लड़के बड़ेबली होकर उपद्रव मचाने लगे जिनसे संसार में मनुष्यों को बड़ा दुःख प्राप्त हुआ और तप योग यज्ञ देवताओं की पूजा ध्यान वर्णाश्रम और सबधर्म में विघ्न पड़नेलगा और गोबध बहुत होनेलगा और सब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अच्छे पहिलेमार्ग जातेरहे सो देवता और मुनि सब दुःखी होकर ह-
मारे पास गये और शरण २ कहकर हमारी स्तुति की और अपने कष्ट
को वर्णन किया हम सबको साथ लेकर विष्णुजी के पास गये और
बड़ी स्तुति कर विनय की कि अब दानव और दैत्य बड़ा दुःखदेते हैं
इन सबको नष्ट करो हम सब आपकी शरण में आये हैं विष्णुजी
प्रसन्न होकर कहने लगे कि तुम सब अपने २ घरोंको चलेजावो हम
दैत्यों से युद्ध करेंगे यह कह और दैत्योंके साथ युद्ध करनेलगे पर
दैत्यों को न जीतसके क्योंकि वे बड़े बली थे विष्णु ने विचारा कि
हम बिन सहायता विजय न पावेंगे और शिवजी की रक्षा बहुत
दुर्लभ है यह विचारकर तुरन्तही अन्तर्धान हुये और कैलास पर्वत के
निकट योगके निमित्त बैठ गये और एक कुण्ड खोदकर उसमें अग्नि
भर दी और बहुतही कठिन पूजन करने लगे यद्यपि पार्थिवपूजन
मन्त्र और ध्यान आदि बहुत से योग किये परन्तु शिवजी प्रसन्न न
हुये तब विष्णुजीने विचारा कि किस प्रकार शिवजी प्रसन्न होंगे अन्त
में विश्वास हुआ कि शिवजी सहस्रनाम के जपने से अति प्रसन्न
होंगे इस कारण सहस्रनाम जपनेलगे और हरएक नाम के पीछे एक
कमल का फूल चढ़ाकर प्रणाम करते थे इसी प्रकार बहुत दिन पर्यन्त
पूजन करतेरहे शिवजी ने प्रसन्न होकर चाहा कि अपनी प्रसन्नता
प्रकटकरें परन्तु उन्होंने परीक्षा के निमित्त सहस्रपुष्प में से एकपुष्प
कमल का उड़ालिया विष्णुजी को कुछ न भासा अन्त में पूजा क-
रते २ एक फूल कम होनेसे उनको खेद हुआ इस कारण कि और
कमलपुष्प के प्राप्त होनेकी उनको कुछ भी आशा न थी और पूजन
मेंभी अन्तर पड़ता था इस विचार से उन्होंने शिवजीका ध्यान किया
जिससे उनको यह भासा कि हमारे नेत्र तो कमलपुष्प से कम नहीं
तुरन्तही नेत्र को निकाल बहुतही प्रसन्न होकर शिवके अर्पण किया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजी ने दर्शन दिया और आम्रेडितम् मन्त्रको पढ़ा और कृपादृष्टि से देखा विष्णुजी ने शिवजी को प्रणाम किया शिवजी मुसुकराये और कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो वह मांगो विष्णुजी ने अतिपवित्र स्तुति पढ़ी फिर प्रार्थना की कि हम दैत्यों से हारगये हैं उनको हम किसी प्रकार नहीं जीतसक्के ऐसा यत्न कीजिये जिससे वे मारेजायँ शिवजी ने कृपा की और सुदर्शनचक्र दिया और कहा कि हमारे इस समय के रूप का ध्यान और सहस्रनाम जिसको तुमने जपा और सुदर्शनचक्र जो हम तुमको देते हैं इन तीनों से तुम शत्रुओं और दैत्यों को मारकर जीतलोगे त्रैलोक्य में कोई तुमको न जीतसकेगा सुदर्शनचक्र को लघुकार्य पर न छोड़ना यह सम्पूर्ण कार्य का सिद्ध करनेवाला है वह सबको सिवाय ब्राह्मणों के जलावेगा यह कहकर शिवजी तो अन्तर्धान हुये और विष्णुजी सुदर्शनचक्र को लेकर हँसी खुशी रात्रि दिन सहस्रनाम का जप करते और अपनेभक्तों को उसी की शिक्षा देतेरहे अबभी जो कोई सहस्रनाम और विष्णुस्तुति पढ़ेगा उसके सर्वकार्य सिद्ध होंगे उसके शत्रुओं का नाश होगा त्रैलोक्य में सुखी रहेगा विद्या की वृद्धि होगी रोगों को दूर करेगा वह सर्व प्रकार से लाभदायक है ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे ब्रह्माजी ! और भी शिवजीके चरित्र वर्णन करो जिस प्रकार दैत्यों को नष्ट किया ब्रह्माजी बोले कि अब हम शङ्खचूड़ के मारने का वृत्तान्त वर्णन करते हैं सुनो कि जिस प्रकार शिवजीने शङ्खचूड़को मारा इसके श्रवण करनेसे शिवभक्ति अधिक उत्पन्न होती है पाहिले यह विचार लो कि हमारा पुत्र मरीचिसे कश्यप उत्पन्न हुआ जिसने हमारे लड़के दक्ष प्रजापति को तेरह पुत्रियां ब्याहि दीं जिससे बहुत सन्तान उत्पन्न हुई और देवताआदि सब उसी प्रकार से हैं ऐसा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोई नहीं जो उस कुल का वर्णन विस्तारसंयुक्त करे हम केवल एक मनुष्य का इतिहास वर्णन करते हैं जो भक्ति की वृद्धि करता है और इच्छा का देनेहारा है अर्थात् कश्यप की स्त्री पतिव्रता और सुन्दर थी उसके चारपुत्र हुये वह दैत्य और बड़े वीर थे उनमें से एकपुत्र विप्रचित्ति बड़ाही वीर और बलवान् था उसका एकपुत्र दम्भनामी विष्णु जी का बड़ा सेवक और भक्त था परन्तु कोई पुत्र न उत्पन्न होने से अपने बड़ों की इच्छा और विष्णुजी की आज्ञानुसार पुष्कर में योग करने गया और एक लक्ष वर्षपर्यन्त कठिन योग करता रहा कि कोई पुत्र उपजे विष्णुजी ने ऐसा पूजन देखकर दर्शन दिया और प्रसन्नता से कहा कि वरदान मांग उसने उत्तर दिया कि मैं ऐसा पुत्र चाहताहूं जो बड़ावीर हो मेरे अधीन हो सर्व संसार को जीते और बड़ा बुद्धिमान् हो विष्णुजी ने अङ्गीकार किया और जब विष्णुजी अन्तर्धान होगये तब दम्भासुर घर में आये और अपनी स्त्री से सब कहा वह बहुत प्रसन्न हुई और मङ्गनों को बहुत भिक्षा दी थोड़े दिन के पीछे वह गर्भिणी हुई और सुदामा नामे एक कृष्णजी का भक्त जो राधाजी के शाप से वैकुण्ठ या गोलोक में था उसके गर्भ में आया जब नव दशमहीने हुये तो शुभदिन और शुभनक्षत्र में उसका जन्म हुआ दम्भासुर ने जातकर्म करके बड़ी धूमधाम से भाईबन्धुओंकी अनेक प्रकार से सेवा की और अधिक प्रसन्न हुआ और लड़के का नाम शङ्खचूड़ रक्खा शङ्खचूड़ सर्वविद्यानिधान हुआ और उसने अपना आचरण भी बहुत अच्छा रक्खा मा बाप को सुखी रखनेलगा और जैगीषव्य से उपदेश लेकर योग करने गया और हमारे पाठपूजन में ऐसा लीन रहा कि हमको बहुत प्रसन्न किया और इसी हेतु से हम वरदान तत्काल देनेआये शङ्खचूड़ ने हमसे यह वरदान मांगा कि हम देवताओं से न हारें और तीनों लोक में हमारी जीत हो और हम बड़ेवीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हों हमने अङ्गीकार किया और कृष्णकवच उनको दिया और आज्ञा दी कि तुम बदरिकाश्रम में जाकर धर्मध्वज की पुत्री तुलसी से जो योग करती है अपना विवाह करो यह वरदान देकर हम अन्तर्धान हुये और शङ्खचूड़ ने कृष्णकवच को सिद्ध किया और अपने कण्ठ में बांधलिया और उस स्थानपर अर्थात् बदरिकाश्रम में जाकर जहां तुलसी योग करती थी वहां पहुँचा और तुलसी की सुन्दरता देखकर मोहित हुआ और कहा कि तुम कौन हो किसकी पुत्री हो और किसकारण ऐसा योग करती हो मैं तुम्हारा सेवकहूं मुझसे सब वर्णन करो यह सुनकर तुलसी ने कहा कि मैं धर्मध्वज की पुत्रीहूं योग के निमित्त यहां बैठीहूं तुम कौन हो जो हमारी परीक्षा लेते हो तुम यहां से चलेजावो क्योंकि स्त्री मोहिनीरूप होती है वह अपवित्र है और योगीश्वरों के पूजनआदि को नष्ट करती है शङ्खचूड़ ने कहा कि संसार में दो प्रकार के स्त्री पुरुष होते हैं अर्थात् बुरे भले कामी और तपस्वी परन्तु मैं कामी और पापी नहीं उसी प्रकार तुमभी इनसे रहित हो मुझको ब्रह्मा ने भेजा है मैं तुम्हारे साथ गन्धर्व विवाह करूंगा मैं शङ्खचूड़ हूं तीनों लोक का जीतनेवाला और दम्भासुर का पुत्रहूं प्रथम जन्म में गोप सुदामा था और कृष्णजी की पूजा करता था पर राधाजी ने क्रोध किया और शाप दिया जिस कारण मुझको दानव होना पड़ा मुझको कृष्णजी की कृपा से प्रथम जन्म की स्मृति है तुलसीजी ने कहा कि तुम बहुत भले और लोभ और कामआदि से रहित हो जो मनुष्य स्त्रीके अधीन नहीं है वह बड़ा भाग्यवान् है पर जो मनुष्य स्त्री के वश है उससे बढ़कर संसार में कोई बुरा नहीं स्त्री चाहे जैसी पवित्र और पतिव्रता हो परन्तु वह मरेहुये पुरुष के समान अपवित्र है ब्राह्मण दशदिन में क्षत्रिय द्वादश दिन में वैश्य पञ्चदश में और शूद्र पूर्ण मास में पवित्र होजाते हैं परन्तु स्त्री किंचित् किसी समय में पवित्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं होती यह वार्त्ता वेद में लिखी है सब देवता मुनीश्वर और पितर आदि स्त्रीसे ग्लानि करते हैं स्त्रीके दिये हुये पिण्ड पितरों को नहीं पहुँचते और न देवताआदि उसके पुष्प चढ़ाये हुये अङ्गीकार करते हैं जिसका हृदय स्त्री के अधीन है उसका पाठ पूजन सब मिथ्या है उसका जन्म मिथ्या है पुरुष का जन्म फलदायक है हे नारद ! यह वार्त्ता उन दोनों में होरही थी कि हम उस स्थान पर गये और शङ्खचूड़ से कहा कि तुम क्यों इस प्रकार वार्त्तालाप करते हो और क्यों गन्धर्व विवाह नहीं करते तुम दोनों एकही वर्ण के हो फिर हमने तुलसी से उसके कुल और जप तप का हाल कह सुनाया और आज्ञा दी कि तुम विवाह करो और कहा कि शङ्खचूड़ विष्णुजी का बड़ा भक्त है इसके सङ्ग विवाह करने से कृष्णजी तुमको बहुत चाहेंगे और वैकुण्ठ देंगे यह कहकर हम चलेगये और उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक गन्धर्वविवाह करलिया शङ्खचूड़ तुलसी को लेकर घर सिधारा और माता और पिताको प्रणाम किया और सब समाचार सुनाया जिससे वह बहुत प्रसन्न हुये उसके पीछे दम्भासुरने शङ्खचूड़को राजतिलक देदिया और आप तप करने गया शङ्खचूड़ अच्छे प्रकार राज्य करने लगा ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! ऐसा सुनकर उनके गुरु शुक्र बहुत से दैत्योंसमेत शङ्खचूड़ के निकट आया शङ्खचूड़ने नाना प्रकार से सेवा की शुक्रजी ने आशिष और प्रशंसा के उपरान्त देवता और दैत्योंकी कथा वर्णन की अर्थात् वह शत्रुता जो दोनों में बड़े समय से चली आती थी और देवताओं की जीत दैत्यों की हार बृहस्पति की सहायता और देवताओंके चरित्र कहकर शङ्खचूड़ को सब दैत्यों का राजा बनाया सो दैत्यों ने बहुत प्रसन्न होकर भेंटदीं शङ्खचूड़ ने बहुत प्रसन्न होकर एक बड़ी भारी सेना दैत्यों और वीरों की इकट्ठीकर इन्द्रलोक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर चढ़ाई की और नगर को घेर लिया इन्द्र ऐसा देखकर देवताओंकी सेना लेकर लड़ने को गया दोनों सेना बहुत लड़ीं अन्त में देवताओं ने बड़ी वीरता से दैत्यों को हरादिया शङ्खचूड़ ने ऐसी हार देखकर अपने बड़े वीरों को लड़ाई के निमित्त भेजा वे देवताओंसे लड़े अन्त समय में देवता ऐसी लड़ाई देखकर बिखरगये और भाग गये तब दशों दिक्पति दैत्योंके सम्मुख हुये और महायुद्ध हुआ इन्द्र, वृषपर्वा, अनल, गौ, श्रुति, संहार, यम, कालिम्बका, वरुण, चञ्चल पवन, कालिकेय, कुबेर, दम्भ, ईश, विप्रचित्ति, ऋभु, राहु, चन्द्रमा, कनकाक्ष, मङ्गल, शुक्र, ब्रह्मपति, कालासुर, काल, यम, विश्वकर्मा, शनैश्चर, रक्ताक्ष, वसुगण, प्रजेशगण, धूम्रलोचन, नलकूबर, रत्नसार, इन्द्र का पुत्र, किविट, मन्मथ, दीप्तिमान्, अश्विनीकुमार, सब दिक्पति, ग्रह, देवताओं और अच्छे २ वीरों से दो २ मनुष्यों ने अलग २ लड़ना चाहा और बहुत दिनोंतक लड़ाईरही परन्तु कोई न जीता अन्तसमय में दैत्योंने शुक्रजीका ध्यान किया और एकही बेर देवताओंके सम्मुख होकर चढ़ाई की देवता भागे उस समय ग्यारहों रुद्र दैत्यों के सम्मुख हुये और इतना त्रिशूल से मारा कि सब दैत्य भागगये ऐसी दुर्गति देखकर शङ्खचूड़ आया और इतने बाण चलाये कि देवता भागगये ग्यारह रुद्र खड़ेरहे उस समय आकाशवाणी हुई कि यह ग्यारह रुद्रोंसे शङ्खचूड़ न हारेगा और न मारा जायगा क्योंकि ब्रह्माजी के वरदान से यह पृथिवी का राजा होगा तुम चलेजावो और समय देखो यह आकाशवाणी सुनकर देवताओं ने लड़ाई त्यागी दैत्य जीते और आनन्दपूर्वक घर गये शङ्खचूड़ पृथिवी का राजा हुआ उसने देवताओंकी द्रव्य दैत्यों को देदी और यज्ञ का भाग भी लिया और इन्द्रपदवी को धारण किया प्रजाओं को पुत्र सदृश पालने लगा उसके राज्यसे किसी को किञ्चिन्मात्र खेद न हुआ और सब मनुष्य अपने २ धर्म कर्म वर्ण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और आश्रम में स्थित रहे उसके समय में काल नहीं पड़ा अन्न अनन्त उपजा औषध भी बहुत गुणकारक उत्पन्न हुई पर्वतों में भांति भांति के रत्न और मणि निकले यहांतक कि सिवाय देवताओं के और किसीको भी किञ्चिन्मात्र खेद न हुआ शङ्खचूड़ कृष्णजी का बड़ा भक्त था यद्यपि राधाजी के शाप से दानवरूप से उत्पन्न हुआ पर दैत्यों के सदृश न था॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी! शङ्खचूड़ को राधिकाजी ने क्यों शाप दिया ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जो गोलोक कहलाता है वहां श्रीकृष्णजी रहते हैं वहां कृष्णजी के मित्र सुदामा रहते थे राधा जी ने उसका अनाचार देखकर उसे शाप दिया जिससे उसने दैत्य होकर शरीर धारण किया नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी! गोलोक कहां है जहां श्रीकृष्णजी विराजमान हैं और कौनसी बुरीबात देख कर राधाजी ने शाप दिया ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र! प्रथम हमारा लोक है जहां हम शिवजी के ध्यान में मग्न रहते हैं उसके ऊपर वैकुण्ठ है जहां विष्णु भगवान् विराजमान हैं उसके ऊपर शिवशासन है जहां शिवजी के भजने से किसी को खेद और शोक नहीं होता उसके ऊपर वीरभद्र का लोक है जहां स्कन्द अर्थात् स्वामिकार्त्तिक रहते हैं उसके ऊपर उमालोक है जहां शिवरानी विराजमान हैं उसके ऊपर शिवलोक है जहां शिवजी परब्रह्म जगत् के स्वामी अन्तर्यामी विराजमान हैं उसको आनन्दवन और काशी भी कहते हैं वहां के राजा शिव हैं जो तीनों देवताओं के उत्पन्न करने वाले हैं वे निर्गुण और सगुणरूप हैं उनको आदिशक्ति ब्याही हैं उन्हींके बायें अङ्ग से विष्णुजी और दहने अङ्ग से हम और हृदय से रुद्र उत्पन्न हुये हैं हम और विष्णुजी शक्ति की अग्नि से उत्पन्न हुये हैं और रुद्रशिव हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और शिव तीनों गणों से उत्तमोत्तम हैं उमापति और सृष्टि के स्वामी हैं इस प्रकार का जो शिवलोक हमने वर्णन किया उसीके निकट गोलोक है वहां श्रीकृष्णजी विराजमान हैं अर्थात् जहां शिवजी की गौवें रहती हैं वहां शिवजी ने कृष्णजी का स्थान बनाया है कि वह उनकी पालना करें तब से वह गोलोक और कृष्णलोक कहलाता है प्रथम शिवजीने विष्णु को दिया था पर विष्णुजीने कृष्णजी का अवतार धारा और लक्ष्मीजी ने राधाजी का अवतार धारा उनका शिव जीने अभिषेक करके ब्रह्माण्ड का राज्य दिया और बड़ाभारी वरदान देकर सबसे उत्तम पदवी दी और कहा कि हे कृष्णजी ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसाही करना तुम्हारी महिमा और बड़ाई विष्णुजी से भी अधिक होगी तुम गोपियोंके संग विहार करना इस कारण श्रीकृष्णजी श्रीराधाजी को लेकर गोपियों के नगर में आये और गौवों की पालना करनेलगे एक दिन श्रीकृष्णजीने राधाजीको कहीं भेजदिया और आप विरजा के संग विहार करनेलगे यह किसी सखीने राधासे कह-दिया राधाजी क्रोधवती होकर इस चरित्रको देखने आईं और विरजाके घर जाकर रथ से उतरीं और चाहा कि अन्दर जावें पर सुदामा जो एक लक्ष गोपों के साथ द्वारपर बैठा था उसने राधाजी को अन्दर जाने न दिया बहुत चिल्लाहट हुई कृष्णजी ने जाना कि राधा आई हैं इस हेतुसे भयवान् होकर आपतो अन्तर्धान हुये और विरजा ने अपने शरीर को नदी बनालिया जो चारों ओर मीठे जल से बह निकली जब राधिका जी ने अन्दर जाकर दोनों में से किसी को न पाया तब विष्णुजी पर बड़ाक्रोध किया और विरजा को नदी देखकर बहुत रोई पर विरजा श्रीसदाशिवजी की आज्ञानुसार कृष्णजी के वियोग के दुःख को देख प्रकट हुई और कृष्णजीने फिर राधाजीको विस्मरण करदिया और वि-रजा के सङ्ग विहार करनेलगे जब फिर राधाजीने सुना तो कोपभवन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गईं और वस्त्र और गहने आदि शरीर से उतार भूमि पर लोटनेलगीं ऐसी गति सुनकर श्रीकृष्णजी कोपभवन में राधाजी के निकट आये और सुदामा उसीप्रकार एकलाख गोपोंकी सेना लेकर द्वारे खड़ा रहा राधाजीने कृष्णजी को देखकर कहा कि कहां आता है पराई स्त्री से संभोग करता है और इसी में मग्न रहता है यहां से चला जा अपनी इच्छानुसार जहां जी में आवे तहां जा तेरे पास बहुत स्त्रियां हैं हमारे निकट आनेका क्या प्रयोजन है हमारे जानेसे विरजा तो नदी होगई तुमको भी उचित है कि नद होकर परस्पर मिलो और भोगविलास करो तुम यहां से निकलजावो तुम्हारे सर्वकार्य मनुष्यों के सदृश हैं इससे हमारा यह शाप है कि तुमभी मनुष्य का शरीर धारो और यहां से जाकर भारतखण्ड में विराजमान हो ऐसा शाप देकर राधाजी ने अपनी सखियों को आज्ञा दी कि इसको इस स्थान से निकाल दो कृष्णजी वहां से निकालेगये पर गुप्त रहे जब सुदामाने अपने स्वामी की ऐसी गति देखी तो राधाजीसे कहा कि तुमने क्यों ऐसा शाप दिया तुम सब गोपियां कृष्णजी के अधीन हो राधाजी ने कहा हे मूर्ख! तू नहीं जानता कृष्णजी हमारे सेवक हैं कृष्णजी और सब हमारे वश में हैं हमारे विना तीनों लोक के काम नहीं होते इस हेतु से तुमको भी शाप देती हूं कि तुम दानव का जन्म लो क्योंकि तुम ने दैत्यों के समान कृष्णजीका मान किया और हमसे ग्लानि करते हो हमारे विना तुम्हारी कोई रक्षा न करेगा हमारे शापसे तुम यहां न रह सकोगे सुदामा ने उत्तर दिया कि अब तुम्हारी बुद्धि मनुष्यों के सदृश है इस कारण तुम भी मनुष्यों का शरीर धारो और कलङ्कित हो कोई गोप तुम्हारे सङ्ग विवाह न करे और कृष्णजी को फिर पाकर सौवर्षपर्यन्त दुःख भोगो हे नारद! शिवजीने ऐसे ऐसे चरित्र किये और फिर अपनी माया को खार्च लिया उस समय विष्णु भगवान्

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहां आये और देखा कि दोनों रुदन करते हैं विष्णुजी ने कहा कि तुम कुछ भी खेद न करो और दानव होकर संसार का राज्य करो शिवजी के सिवाय तुमको कोई न जीतेगा उनके हाथसे मरोगे और फिर यहां चले आवोगे और हम और राधा भी अवतार धारकर मनुष्यों की सदृश लीला करेंगे यह कहकर कृष्णजी राधाजी को लेकर गोलोक में रहे और सुदामा दानव हुये और समय पर राधिकाजी और श्रीकृष्णजी ने अवतार लिया और भक्तोंके सुखदेने को बड़े बड़े अच्छे चरित्र किये यह हमने पुरातन कथा कही है अब और क्या श्रवण करने की अभिलाषा है॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

नारदजी बोले हे हमारे पिता! शिवजीने किस प्रकार शङ्खचूड़ को मारा यह भेद हमसे कहो ब्रह्माजीने कहा कि शङ्खचूड़ ने सब देवताओंको निकाल दिया और फिर अच्छा राज्य किया देवता आदि सब चिन्तावान् होकर इन्द्र के निकट गये और उनको आगे करके मुनीश्वरों सहित हमारे पास आये और हाय २ करके शङ्खचूड़ का सारा वृत्तान्त कहा और कहा कि हम गुप्त होकर इधर उधर मारे २ फिरते हैं यह कहकर सब रोये इस कारण हम सबको लेकर विष्णु भगवान् के निकट गये और स्तुति पढ़कर शङ्खचूड़ का वृत्तान्त कहा और रुदन करके विष्णुजीकी सेवा करने लगे विष्णुजी ने कहा कि शङ्खचूड़ हमारा बड़ा भक्त है इस हेतु से वह सिवाय त्रिशूल के और किसी से न मरेगा यह कहकर विष्णुजी हम सबको लेकर शिवलोक में गये यह लोक विष्णुलोक से ऊपर है उसकी महिमा बखाननी अतिकठिन है ड्योढ़ी पर पहुँच कर शिवजीकी आज्ञानुसार अन्दर गये और बड़ी स्तुति पढ़ी और कहा कि हमारी दुर्गति को देखिये और कृपादृष्टि कीजिये हम दैत्यों के हाथसे मारे जाते हैं यह कहकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम सब रोनेलगे परन्तु शिवजी ने यह दशा देख हम पर दया की ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! शिवजी प्रसन्न हुये और कहा कि हे देवताओ ! अभय रहो तुम्हारा कल्याण होगा शङ्खचूड़ने प्रथम जन्म में कृष्णजी की पूजा की थी परन्तु शाप राधाजीसे पाया था और आदि से अन्त पर्यन्त सब वृत्तान्त कहते ही थे कि श्रीकृष्णजी राधिकाजी सहित तहां आये और स्तुति करने लगे और कहने लगे कि आपकी मायामें फँसकर और अपने तईं भूलकर हमने ऐसा शाप पाया आप अब क्षमा करें शिवजी ने कहा कि हमारी ऐसीही इच्छा थी तुम्हारा अभिमान और अहंकार तोड़ने के निमित्त हमने यह चरित्र किया अब अपने धाम को जावो और आनन्द से रहो परन्तु ऐसा अपराध फिर न करना और जब क्रीड़ाकल्प में तुम दोनों मनुष्य का शरीर धारकर अवतार लोगे तौ तुम्हारा शाप नष्ट होजायगा और फिर गोलोकमें आनन्द करोगे तुम्हारा मित्र सुदामा दानव होकर शङ्खचूड़ कहलाता है उसने देवताओं को बहुत दुःखी किया है जिससे वह चारों ओर मारे मारे फिरते हैं यह सब रोते पीटते हमारे निकट आये हैं हम उनका दुःख दूर करेंगे यह श्रीकृष्णजीसे कहकर देवताओं की ओर देखा और कहा कि तुम कैलास पर्वत पर जावो और रुद्र जो हमारा अवतार है उनसे सब वृत्तान्त कहो वह तुम्हारे दुःख को दूर करेंगे और हम में और रुद्र में कुछ भेद न जानना वह केवल देवताओं के निमित्त अलग रूप धारण किये हैं हमारा वहां सगुणरूप है जो कोई हममें और रुद्रमें भेद समझता है वह कष्ट भोगता है यह सुनकर हम प्रसन्न हुये और राधाजी और श्रीकृष्णजी गोपसहित चले गये हम भी इन्द्र और और देवताओं संयुक्त कैलास पर्वतपर गये और प्रणाम के पीछे प्रार्थना की कि हे गिरिजापति ! हम सब तुम्हारे शरण हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमारे दुःखों को नाश करो शङ्खचूड़ का सब वृत्तान्त सुनाया रुद्रने उत्तर दिया कि तुम अपना कार्य सिद्ध समझो और अपने अपने घर सिधारो हम शङ्खचूड़ को दैत्यों सहित मारेंगे और नानाप्रकार से तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करेंगे यह अमृत तुल्य वाणी शिवजीकी सुनकर सब देवता प्रणाम करके अपने अपने घर सिधारे ॥

तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शिवजीने शङ्खचूड़के मारने की युक्ति विचारकर अपने भक्त पुष्पदन्त को बुलाया और कहा कि हे पुष्पदन्त! तुम गन्धर्वराज हो सो शङ्खचूड़ के निकट जावो और कहो कि जो तुमने देवताओं का राज्य छीन लिया सो भला नहीं किया तुम ऐसी माया से अभिमानी और अहङ्कारी होगये हो अभी कुछ नहीं गया तुमको उचित है कि देवताओं का राज्य देदो और कुछभी झगड़ा न करो अगर अपनी मृत्यु नहीं चाहते तो पाताल में जावो और राज्य करो बरन हमसे युद्ध करो तुमको हम तुरन्तही मार डालेंगे और फिर देवता अपना राज्य छीन लेंगे यह सुनकर पुष्पदन्त शङ्खचूड़के निकट गया वह ऊंची अटारीपर बैठा हुआ था और तीन करोड़ दैत्य उसके निकट थे और सेवा करते थे वह ऐसी सेना देखकर आश्चर्यवान् हुआ अन्तमें शङ्खचूड़ के निकट बैठगया शङ्खचूड़ ने पूछा तुम किसके दूत हो और क्यों ऐसे बेखटके बैठेहो तुम्हारे कर्म सेवकों के ऐसे नहीं जिस काम को आये हो वह कहो पुष्पदन्तने सब वृत्तान्त जो शिवजी ने कहा था कह सुनाया और अपनी ओर से यह कहा कि चाहे देवताओंको राज्य दो या युद्ध के निमित्त चलो शङ्खचूड़ने कहा कि हम शिवजीके भयसे देवताओंको राज्य न देंगे हम भले प्रकार जानते हैं कि यह राज्य पृथ्वीका वीरों और दैत्योंके निमित्त है हम युद्ध करेंगे जिससे दोनों लोक में सुख मिलता है मुझको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह आश्चर्य है कि महादेवजी ऐसे महात्मा होकर देवताओं की रक्षा करते हैं हम प्रातःकाल कैलास पर्वत पर आयेंगे शिवजी को जो उचित हो वह करें पुष्पदन्त ने मुसकराके कहा कि शिवजी सबसे उत्तम हैं तुम ऐसे अहंकारी न हो उनको और देवताओं के सदृश न समझो वह परब्रह्म भगवान् हैं उनके अधीन ब्रह्मा और विष्णुजी हैं उनसे युद्ध करके तुम मृत्यु को प्राप्त होगे उनके गणोंके तो सम्मुख हो लो उनसे लड़ना तो बहुतही कठिन है ऐसे ऐसे वचन कहकर पुष्पदन्त चुप होरहा तब शङ्खचूड़ ने कहा कि मैं विना शिवजी के लड़े अप्रसन्न रहूंगा सारी सृष्टि काल से उत्पन्न होती है और कालही से नष्ट होजाती है हार अथवा जीत दोनों में मैं प्रसन्न हूं और कृष्णजी हमारे बड़े काल हैं और दयालु भी हैं हे पुष्पदन्त! यह सारा वृत्तान्त जैसा मैंने कहा शिवजी से कह देना पुष्पदन्त वहांसे उठ कर शिवजी के निकट आये और सारा समाचार कह सुनाया॥

इकतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! पुष्पदन्त से ऐसे कठिन वचन सुनकर शिवजी को क्रोध हुआ और आज्ञा दी कि सब तय्यार होवें और वीरभद्र, नन्दीगण, भृङ्गि, क्षेत्रपाल, भैरव और मुनिभद्र इन सबके नाम पुकार २ कर बोले कि तुम सब शस्त्रादिक लेकर चलो यह सब प्रसन्न होकर बाजे बजाने लगे और सेनाको लेकर बाहर आये शिवजीने कहा कि सब सेना और सेनापति हमारे सङ्ग चलें पर गजानन अर्थात् गणपति अपनी सेनासहित यहां रहजायँ शिवजी शस्त्रादिक लेकर बैल पर चढ़े हुये चले और कैलासपर्वतके बाहर ठहरे और बड़े २ सेनापति गण वीरभद्र, नन्दी, महाकाल, बाण, सुभद्रक, विकृत, पिङ्गलाक्ष, मणिभद्र, विरूपाक्ष, विशालाक्ष, वाष्कल, गतिहूत, वृष, दृष्टदंष्ट्र, कालङ्कर, दुर्गम, विद्रुम, बलभद्र, कपिल, कुशाम्बर, ताम्रनयन,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विकर्ण,कीचर,बिल्वल, शतद्रन, अभिलाषी, भृङ्गी,द्रव्यबल और आठों भैरव, ग्यारहों रुद्र और क्षेत्रपाल आदि गणोंके स्वामी और राजाभी शिवजीकी सेना के सङ्ग हुये इस सब सेनाके स्वामी वीरभद्र हुये वीरभद्र की रक्षा के निमित्त भवानी सहस्रभुजा किये विमानपर चढ़कर आईं उनके वस्त्र लाल थे और मुण्डों की माला पहिने थीं हाथ में खप्पर था और हाथों में अनेक प्रकार के शस्त्र थे गाती और नाचती एक योजन की लम्बी जिह्वा किये भयंकररूप धारण कर तेंतीसकोटि डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, कूष्माण्ड, ब्रह्मराक्षस, वेताल और पिशाच आदि को लिये आईं उसके पीछे देवता आदि की सेना थी जिसमें इन्द्र, वरुण, कुबेर, पवन, सूर्य, चन्द्रमा और नवग्रह, वसुकर्मा, अश्विनीकुमार, बृहस्पति, धर्म और आठों वसुआदि सब देवता थे यह सब शिवजी की सेना के सङ्ग हुये शिवजी ने सबको अलग २ बिठाया और एक बेर कृपादृष्टि से देखा जिससे उनको बड़ी शक्ति प्राप्त हुई शिवजी विन्धुभागा नदी के किनारे विराजमान हुये और बड़के वृक्ष के नीचे बैठगये ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब पुष्पदन्त शङ्खचूड़ के पास से चले आये तब शङ्खचूड़ अपनी रानी के निकट आया और सब वृत्तान्त कहा कि मैं प्रातःकाल शिवजी से युद्ध करूंगा उसकी रानी ने सुनकर शोक किया और रोनेलगी और कहा कि शिवजीके सब अधीन हैं तुम उनसे न लड़ो वह अन्तकाल के स्वामी हैं तुमको ऐसी बात अयोग्य है इस प्रकार शिवजी की महिमा बखानी और कहा कि कल रात्रि को मैंने बुरा स्वप्न देखा अर्थात् मेरा बायां अङ्ग फरका ऐसा देखकर तुमको उचित है कि शिवजी से युद्ध न करो परन्तु शङ्खचूड़ ने कुछ न सुना और कहा कि मुझको कुछ खेद नहीं क्योंकि तीनों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोकमें सर्व कार्य समय पर होते हैं समय पर अच्छी और बुरी बातें सुख दुःख वृक्षों का फलना फूलना देवताओं और सृष्टि की उत्पत्ति और संसार का जीना मरना और अन्तकाल आदि सबही होते हैं इस कारण समय सबसे उत्तम है ऐसे २ वचन अपनी स्त्री को समझाकर संभोग किया और धर्मको भूलगया परन्तु उसकी स्त्री को भोग करना अच्छा न भासा क्योंकि वह श्रीसदाशिवजीके साथ लड़ने जाता था पर शङ्खचूड़ बहुत समझाकर भोग विलास करता रहा और प्रातःकाल उठकर अपने पुत्र को तिलक दिया और अपनी रानीको रोदन करते देखकर अपने पुत्र को उपदेश कर और स्त्रीको सौंपकर लड़नेको चला और सेनापति को बुलाकर कहा कि आजही परीक्षा का दिवस है इस कारण सब सेना लेचलो क्योंकि शिवजी देवताओं को राज्य देने और मुझको अपना अधीन बनाने की इच्छा रखते हैं इस लिये चलकर भलीभांति युद्ध कीजिये षडशीति कम्बूदैत्य पचास कुल असुर बन्दर एककोटि वीर्य और सात कुल दानव धूम्र यह सब शस्त्रादिक लेकर निकल चलें और कालिकेय अपनी सेनाको सङ्ग लिये चलें यह आज्ञा देकर वह घरसे निकला और सोने चांदीके विमानपर चढ़कर शिवजी के संग लड़ने चला उससमय बाजे बजने लगे बाजे बजाने वाले एक अक्षौहिणी और तीनलाख थे सब सेना और सेनापति निश्शङ्क और प्रसन्नतापूर्वक चलेजाते थे शङ्खचूड़ वहां पर गया जहां शिवजी विराजमान थे और राजनीति को स्मरण कर शिवजी की सेना के निकट ठहरा॥

तेंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शङ्खचूड़ ने एकदूत भेजा और सब वृत्तान्त कहकर उसको उपदेश दिया वह शिवजी की शरण हुआ और दीक्षप नदीके निकट जहां शिवजी विराजमान थे वहां पहुँचकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजी को प्रणाम किया और कहा कि शङ्खचूड़ ने यह कहा है कि तुम्हारी क्या अभिलाषा है शिवजी ने कहा कि तुम हमारी ओरसे यह कह देना कि तुम मुरजके वंश में हो और सुदामा तुम्हारा नाम था श्रीकृष्णजीके मित्र थे परन्तु राधाजी के शापसे दैत्य हुये परन्तु मूलसे दैत्य नहीं हो इस कारण तुमको उचित है कि प्रथम जन्म और धर्म का स्मरण करके देवताओंके सङ्ग शत्रुता न रक्खो और यथायोग्य राज्य करो और देवताओं को यथाशक्ति सुख दो जो इसके विरुद्ध करोगे तो दुःख प्राप्त होगा जो राज्य तुमने देवताओंसे छीनलिया है उसे फेरदो तुम और सब देवता कश्यप मुनिसे उत्पन्न हो तुममें किसी प्रकार का अन्तर नहीं तुम दोनों परस्पर मिलो और आनन्द करो इससे हम प्रसन्न हैं जो इसके विपरीत करोगे तो तुमको दुःख प्राप्त होगा संसार में सबसे बड़ा पाप अपने भाईबान्धवोंसे शत्रुता रखना है हम किसी की ओर नहीं पर सेवासे प्रसन्न हैं और अपने सेवककी बड़ी रक्षा करते हैं और सुखी रखते हैं इसी प्रकार शिवजीने बहुतसे उपदेश वेद और धर्मशास्त्र की रीतिके दिये दूतने कहा आपने जो कहा कि परस्पर की शत्रुता बुरी होती है वह सत्य पर विष्णुजीने जो राजा बलिसे छल करके उनका नगर और राज्य छीनलिया और उनको पाताल भेज दिया यह क्या उनको उचित था कि उनके पिताको मारडाला फिर देवताओं और दैत्योंने सागरको मथा देवताओंको क्यों अमृत मिला और क्यों महिषासुरको देवीजीने विना किसी दोषके मारडाला फिर तारक और त्रिपुर मारे गये इसी प्रकार उन्होंने अन्धक गज और जलन्धर आदि को मारा तब उनके यह बुद्धि नहीं थी कि अपने भाइयों के सङ्ग शत्रुता करना पाप है क्या इसको ज्ञातिद्रोह नहीं कहोगे यह शत्रुता देवताओं और दैत्यों की बहुत प्राचीन है समय पर सुख दुःख सब होते हैं क्योंकि सब काम समय पर होते हैं पाना और न पाना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीत और हार जीना और मरना सब समय पर होता है यह तुमको उचित नहीं कि देवताओं अथवा दैत्योंके युद्ध में तुम ईश्वर होकर पक्षपात करते हो क्योंकि शत्रुता और मित्रता तुल्य मनुष्यों से होती है परन्तु तुम ऐसे ईश्वर और स्वामी को यह अयोग्य है कि हमारे सङ्ग युद्ध करो तुमको क्या लज्जा भी नहीं आती ऐसी २ बातें दूत की सुनकर शिवजी हँसे शिवजी ने उसकी प्रशंसा की और कहा कि प्रथमही से हम अपने सेवकके अधीन हैं वेद की आज्ञानुसार चलते हैं उसीकी आज्ञा से हमने दैत्यों को मारा है हम किसी की रक्षा नहीं करते अब हमारे आनेका कारण यह है कि इन्द्रआदि देवता हमारे शरणागत हुये जितने दैत्य होगये हैं उन सबसे तुम बड़े हो और कृष्णरूप विष्णुजी के भक्त हो इससे तुमभी उनके समान हो और उत्तमोत्तम हो इस हेतुसे हम लज्जावान् नहीं अधिक कहना निष्फल है तुम देवताओं का राज्य देदो और पाताल में जाकर राज्य करो देवताओं से शत्रुता रखनी बुरी है यद्यपि कैसाही धर्मवान् हो तोभी देवताओं की शत्रुता से कोई नहीं बचा जो इस वचन से अप्रसन्न हो तो युद्धस्थानमें चलो और लड़ाई करो हे दूत! तुम यह सब बातें शङ्खचूड़ से कहदेना जो उसकी इच्छा हो वह करे हम अवश्य देवताओं का मनोरथ पूर्ण करेंगे यह कहकर शिवजी चुप होरहे और दूतभी उठकर चलागया और शङ्खचूड़ से सब वृत्तान्त कहा॥

चौंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शङ्खचूड़ने लड़नेको अच्छा समझकर सुलह न की और सेना को तय्यार किया बाजे जो लड़ाई में बजवाये जाते हैं वह बजवादिये और युद्धस्थानमें खड़ा हुआ शिवजी भी आये और देवता और दैत्य लड़नेलगे इन्द्रजी पुरुष भियाके सङ्ग शुक्र और बृहस्पति मृत्यु और पुष्करके साथ और इसी प्रकार दोनों ओरके बड़े २

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नामी सेनापति परस्पर युद्ध करने लगे नाना प्रकार के शस्त्रादिक चलायेगये जिससे बहुतसे देवता और दैत्य हाथी और घोड़े मारेगये इसीप्रकार बहुत दिनोंतक युद्ध होतारहा परन्तु न किसी की जीतहुई न हार अन्तविषे दैत्यों ने चढ़ाई की और देवता भागगये तितर बितर होगये उस समयमें वीरभद्र और नन्दी आदि शिवजी के गण सम्मुख हुये वीरभद्र ने अपने त्रिशूल से सब दैत्यों को कुरूप बनादिया इस हेतुसे दैत्यों को युद्ध त्यागना पड़ा यह दुर्गति देखकर शङ्खचूड़ने भागती हुई सेनाको प्रसन्न किया और आप लड़ने चला और इतने बाण बरसाये कि सब शिवगण भाग गये केवल नन्दी और वीरभद्र जो शिवजी के अंशसे उत्पन्न हुये हैं युद्धस्थान में खड़ेरहे शङ्खचूड़ ने नन्दी के बाण मारा कि वह धरती पर गिरपड़ा और फिर उठकर लड़ने लगा वीरभद्र ने अपना त्रिशूल शङ्खचूड़ के मारा पर शङ्खचूड़ ने उसे काटडाला और वीरभद्र को अपने शस्त्र से मारा कि वह पृथ्वीपर गिरपड़ा वीरभद्र तुरन्त उठा और क्षेत्रपाल दैत्य से लड़नेलगा भैरव ने शङ्खचूड़ को अपने त्रिशूल से मारा कि वह अचेतता को प्राप्त हुआ उससमय बड़ा युद्ध हुआ भैरवको आकाशवाणी हुई कि शङ्खचूड़ विना शिवजीके और किसीसे न मरेगा तुम शिवजीके निकट जावो वे मार डालेंगे शिवगण उनके पास गये और सब वृत्तान्त कह सुनाया ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! शिवजी ने देवताओंकी हार सुन कर और अपने गणों की दुर्गति देखकर वीरभद्र को आज्ञा दी कि तुम जाकर लड़ो यह श्रवणकर वीरभद्र सेनासहित गया और युद्धस्थान में जाकर शिवजी के समान शङ्ख बजाया और क्रोध किया कि दैत्य कांपगये और एक अक्षौहिणी दैत्यों की सेना नाश करदिया महाकाली ने सबका रुधिर पिया और दैत्यों को तोड़ २ कर निगलने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगीं और बार बार युद्धस्थल में लड़नेलगीं और एकही हाथ में सात लाख करोड़ घोड़े और एकलाख करोड़ हाथी रखकर खागईं और सहस्रों कबन्ध इधर उधर फिरनेलगे और वीरभद्र ने क्रोधवान् होकर एक करोड़ दैत्यों को मारडाला अन्त में विप्रचित्ति १ वृषपर्वा २ जम्भासुर ३ वीरविकम्पन ४ यह चारों वीर वीरभद्र के सम्मुख हुये और भिन्न २ होकर लड़े महामारी ने जाकर दैत्यों को नष्ट किया फिर भैरव ने दैत्यों को खाया उस समय सब दैत्य हारे और वीरभद्र जीते देवता बहुत प्रसन्न हुये और अनेकप्रकार के बाजे बजनेलगे आकाश से पुष्प की वर्षा हुई उस समय शङ्खचूड़ अपने कवच को कण्ठमें पहने विमानपर चढ़कर बहुतसी सेना लेकर मारूबाजा बजवाते युद्धस्थान में आया और अपनी भागी हुई सेना को इकट्ठा किया और अपने कमठेको तान २ कर बाण मारने लगा उस समय अँधेरा होगया बहुतसे देवता हार मानकर भग गये वीरभद्रही खड़ारहा शङ्खचूड़ ने अपनी माया से पर्वत सर्प अग्निआदि को उपजाया और इन्हीं की वर्षा की जिसमें वीरभद्र गुप्त होगये मानों बदली में सूर्य छिपगये और अतिआश्चर्य में होकर शिवजी का ध्यान किया और महाशक्ति को छोड़ा दैत्यों की माया का नाश हुआ तब शङ्खचूड़ ने क्रोधे करके वीरभद्र के रथ और धनुष को अतिपवित्र बाण से काटडाला घोड़े मर कर पृथ्वी पर गिरपड़े दूसरे बाण से वीरभद्र को मारा जिससे वह पृथ्वी पर गिरपड़ा जब वीरभद्र सचेत होकर उठा तो दूसरे रथ पर चढ़कर शङ्खचूड़ के रथ सन्नाह और घोड़े और शक्ति आदि को काटडाला और धरती पर गिरादिया उसके सारथी को मारडाला और अपनी शक्ति से शङ्खचूड़ को अचेत करदिया शङ्खचूड़ थोड़े समय के पीछे उठा और गर्जनेलगा फिर वीरभद्र ने अपनी शक्ति से गिरा दिया इसी प्रकार कईबेर गिराया परन्तु शङ्खचूड़ ने उठकर अन्त बिषे अपनी सांगी से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वीरभद्र को पृथ्वीपर गिरा दिया और मारडाला यह शिवजी का वरदान था महाकाली ने वीरभद्र को उठाकर शिवजीके सम्मुख रख दिया और सब वृत्तान्त कह सुनाया शिवजी ने वीरभद्र को छुआ और वह जीता होगया वीरभद्र फिर उठकर चिल्लाने लगा और युद्धस्थान में गया और अपने त्रिशूल को चलाया कि शङ्खचूड़ पृथ्वीपर गिरपड़ा जब चेत हुआ तब जितने बाण वीरभद्र को मारे वह सब व्यर्थ हुये अन्त बिषे अपनी सांगी को वीरभद्र के हृदय पर मारा कि वह पृथ्वी पर गिरपड़ा पर फिर वीरभद्र उठे और शङ्खचूड़ ने अपने त्रिशूल से चाहा कि फिर उसे मारूं परन्तु महाकाली ने उसकी रक्षा की और सब गण भी आगये देवता अति प्रसन्न हुये दैत्यों ने भी अपनी भागी और थकी सेना को इकट्ठा किया दोनों सेना युद्धस्थान में खड़ी रहीं दोनों ओर से बाजे बजे और वीर परस्पर लड़नेलगे ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! फिर बड़ायुद्ध हुआ और दिन रात के सदृश होगया कालीजीने भयंकर शब्द निकाले जिससे सब दैत्य अचेत होगये और पृथ्वीपर गिरपड़े कालीजी ने महामदको पिया और नाचने लगीं और कालीजी के सिवाय और बहुतसी देवियों ने कालीरूप धारण किया और मद को पीकर नाचने लगीं उस समय दैत्यों को बड़ा दुःख और शोक उत्पन्न हुआ पर देवता प्रसन्न थे शङ्खचूड़ सब दैत्यों को इकट्ठा कर युद्धस्थान में खड़ा होकर वीरभद्र से लड़ने लगा दोनों वीरों के शरीर इस प्रकार घायल हुये मानों ढाक के वृक्ष खड़े थे शङ्खचूड़ने अग्निबाण चलाया जिससे चारों ओर आग फैल गई वीरभद्रने वरुणास्त्र छोड़ा जिससे सब अग्नि नाश होगई इसी प्रकार शङ्खचूड़ने नाना प्रकारके बाण छोड़े पर वीरभद्रने सबको नष्ट करदिया अन्तमें शङ्खचूड़ने नारायणबाण छोड़ा उसको भी वीरभद्रने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाशुपत अस्त्रसे दूर करदिया फिर शङ्खचूड़ने चक्र छोड़ा महाकालीने तुरन्तही निगललिया और शङ्खचूड़ को किसी प्रकार जीतने न दिया कालीजीने अपने धनुष को जिसका शब्द अन्तकाल से कम न था खैंचकर अग्निबाण छोड़ा पर शङ्खचूड़ने वैष्णवास्त्र से दूर करदिया फिर कालीजीने नारायणास्त्र छोड़ा पर शङ्खचूड़ने रथ से उतर दण्डवत् की जिससे वह निष्फल होकर दूर गया इसी प्रकार कालीजीने ब्रह्म अस्त्रादि सब छोड़े परन्तु शङ्खचूड़ने सबका नाश किया शङ्खचूड़ने भी दिव्यास्त्र व शक्तिआदि कालीजी को मारे पर सब निष्फल हुये बहुत दिनोंतक लड़ते रहे अन्त विषे कालीजीने पाशुपत अस्त्र के छोड़ने की इच्छा की पर आकाशवाणी हुई कि यह किस निमित्त छोड़तीहो यह तुमसे न मरेगा क्योंकि कृष्णजी का भक्त है महाकालीजीने उस को तो न छोड़ा पर अधिक क्रोधवान् होकर सातलाख दानवों को खालिया और अपने शरीरको भयङ्कर बनाया शङ्खचूड़ ने रुद्रशिलीको मुखमें रखलिया जिससे कालीजी हट गईं शङ्खचूड़ ने अपने खड्ग को छोड़ा कालीजीने उसे भी खालिया और मुख खोलकर शङ्खचूड़ का ग्रास करनेचलीं परन्तु वह मायासे गुप्त होगया कालीजीने उसके रथ और सारथि को तोड़ फोड़ डाला शङ्खचूड़ फिर प्रकट हुआ और अपना चक्र चलाया पर कालीजी ने उसे ग्रास किया और एक ऐसा घूँसा मारा कि वह अचेत होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा कालीजी ने घुमाकर आकाश की ओर फेंकदिया और एक करोड़ दैत्यों को मारकर रुधिर पीलिया और अपने केशों को बिखराकर युद्धस्थानमें नाचीं शङ्खचूड़ ने उठकर कालीजी को प्रणाम किया और विमान पर चढ़कर निर्भय लड़नेलगा ऐसा धैर्य शङ्खचूड़ में देखकर देवीजी ने महाभयङ्कर शरीर बनाया और रुद्र महाधनुष को हाथ में लिया और चाहा कि उसी समय प्रलय करें पर आकाशवाणी हुई कि इसकी मृत्यु तुम्हारे हाथसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं तुम मिथ्या युद्ध करती हो तुम शिवजीके निकट जावो वह तुरन्तही मारेंगे यह वाणी श्रवणकर महाकाली शिवजीके निकट गईं ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

इतना सुन ब्रह्माजी बोले कि हे हमारे पुत्र ! महाकालीजी शिवजी के निकट गईं और सेना को लेजाकर सब वृत्तान्त कहा जिसको सुनकर शिवजी चिन्तवान् हुये और फिर हँसकर अपनी माया को विचारा और शङ्खचूड़के पहिले जन्म का वृत्तान्त वर्णन किया फिर श्री सदाशिव अपने गणोंको साथ लेकर बैलपर चढ़करचले और क्षेत्रपाल, वीरभद्र, भैरव और नन्दीश्वर की ओर एकबेर देखा जिससे उनको महाशक्ति प्राप्ति हुई सर्व शस्त्रादिक लिये भयंकररूप धारण किये युद्धस्थान में आये दैत्यों ने उनको रुद्र कालान्तक करके देखा और सब डरगये शङ्खचूड़ ने शिवजी को देख रथसे उतर प्रणाम किया और शिवजी की आज्ञानुसार धनुष और बाण लेकर शिवजी से लड़नेलगा शिवजी और शङ्खचूड़ सौ वर्षपर्यन्त लड़ते रहे और देवता और दैत्य चुपचाप बैठेरहे उस समय हम अपने कुल सहित और वैकुण्ठवासी आकाशपर युद्ध कौतुक देखते रहे और जो बाण शङ्खचूड़ ने छोड़े वह शिवजीने काटडाले और जो २ शस्त्र शिवजी ने मारे वह शङ्खचूड़ ने तुरन्तही काटडाले अन्त बिषे शङ्खचूड़ ने क्रोध करके शिवजी को चक्र मारा शिवजीने अपने घूंसे से उसको चूर २ करके धरती पर फेंक दिया शिवजीने शङ्खचूड़ को घायल करके पृथ्वी पर गिरा दिया जब चेता तब फिर रथ पर चढ़कर शिवजी के सम्मुख हुआ शिवजी ने शङ्खचूड़ को आते देखकर डमरू बजाया और शृङ्गीनाद करके अपना धनुष टङ्कोरा जिससे यह जानाजाता था कि अन्तकाल आगया चारोंदिशासे शिवगण गर्जनेलगे जब शिवजीने शङ्खचूड़ से तिष्ठ तिष्ठ शब्द कहा तो देवता बहुत प्रसन्न हुये और जय जय करनेलगे उस समय शङ्ख-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चूड़ ने अपनी शक्ति चलाई क्षेत्रपाल ने तुरन्तही ग्रास किया शिवजी और शङ्खचूड़ परस्पर इतना लड़े कि सब डरगये शिवजीने पाशुपत अस्त्र चलाया जिससे वह पृथ्वी पर गिरपड़ा और फिर उठकर लड़ने लगा और रुद्रबाण से शिवजी को और अन्यबाणों से भैरव को मारा और बहुत भुजायें अपने शरीर में माया से उत्पन्न कीं और हरएक से इतने बाण चलाये कि सब देवता दुःखी हुये अन्त बिषे शिवजी ने सब भुजा काटडालीं फिर शङ्खचूड़ अपनी गदा लेकर शिवजी की ओर झपटा शिवजी ने उसे काटडाला और अपने त्रिशूल से शङ्खचूड़ के हृदय को फाड़डाला उसके उदर से एक मनुष्य तिष्ठ तिष्ठ कहते उपजा शिवजी ने अपने शस्त्र से उसका भी शिर काटडाला वह शिर कांपने लगा और उसने भयंकररूप धरकर देवताओंको बहुत दुःख दिया तब सदाशिवजी की आज्ञानुसार कालीजी दैत्यों की सेना में घुसगईं और दैत्योंको खानेलगीं इसी प्रकार बहुत पक्षी आदि को खाया महामारी नेभी सेना का ग्रास किया और क्षेत्रपाल भैरव नन्दी और वीरभद्र ने बहुत दैत्यों को खाया और बहुतों का नाश किया और सारे सेनापति दैत्यों को नष्ट करनेलगे और योगिनीगण दैत्योंको खानेलगीं ज्वर नेभी शरीर धारकर दैत्यों को मारडाला ऐसी दुर्गति देखकर सब दैत्य भाग गये और सन्निपात ने भी सबको दुःखी किया नन्दी ने भी दैत्यों को मारडाला उस समय सब देवता ऐसे प्रसन्न हुये कि वर्णन नहीं होसक्ता और शिवजीभी आनन्द को प्राप्त हुये ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! शङ्खचूड़ने इस प्रकार अपनी सेना की दुर्गति देखकर क्रोध किया और शिवगणों को डाट डपट कर शिवजी से कहा कि तुम मेरे सम्मुख होकर लड़ो दैत्यों के मारने से क्या फल मिलता है ? वीर निर्बल मनुष्यों से नहीं लड़ते मैं वह हूं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो तुम्हारे मद को नष्ट करूंगा यह कहकर शिवजी पर बड़े २ बाण मारे शिवजी ने सब काटडाले शङ्खचूड़ ने एक माया को उपजाया जिस को शिवजी ने महादिव्यबाणों से उसे दूर करदिया शङ्खचूड़ पृथ्वी में गुप्त होगया उस समय हम और विष्णुजी ने जय जय की शिवजी ने क्रोध करके चाहा कि शङ्खचूड़ को मारडालें और अपना त्रिशूल उठा कर चाहा कि मारें पर आकाशवाणी हुई कि हे शिवजी ! जब तक यह कृष्णकवच पहिने रहेगा और तुलसी इसकी स्त्री पतिव्रता रहेगी तब तक यह तुलसी समेत न मरेगा क्योंकि ब्रह्माजी का यही वरदान है यह सुनकर शिवजीने त्रिशूल न छोड़ा विष्णुजी शिवजीकी अभिलाषा जानकर आये और कहा कि जो आज्ञा हो सो करूं शिवजीने कहा कि तुम किसी प्रकार से कृष्णकवच उसके कण्ठ से उतार लो और उसकी स्त्री का पातिव्रतधर्म नष्ट करडालो यह सुनकर विष्णुजी ब्राह्मण होगये और शङ्खचूड़ के पास गये ब्राह्मण को शङ्खचूड़ने प्रणाम किया ब्राह्मणने आशीर्वाद देकर कहा कि पानी पिलावो शङ्खचूड़ने पानी पिलवाया फिर ब्राह्मण ने कहा कि हमको कृष्णकवच देदो शङ्खचूड़ ने निश्शङ्क उसको देदिया यद्यपि वह अतिप्रिय था हे नारद ! उदारता इसीको कहते हैं जो शत्रुभी ब्राह्मण बनकर कोई वस्तु मांगे तो निश्शङ्क देदे यद्यपि प्राण जावे पर ब्राह्मण विमुख न जावे जिसके निकट विष्णुजी भिखारी ब्राह्मण बनकर जावें उसके धन्य भाग्य हैं जिसके यहां से भिखारी विमुख होकर न जावें उसके भी धन्यभाग्य हैं उसके समान संसारमें अन्य नहीं इसी उदारता पर राजा बलि, दधीचि, जरासंध, सांख्य आदि अतिकीर्तियुक्त होगये हैं फिर विष्णुजी शङ्खचूड़का वेष धारकर उसके घरगये और बड़े चरित्रों से उसकी स्त्रीका जो पतिव्रताथी धर्म नाश किया और लौटकर शिवजी से सब वृत्तान्त कहा शिवजीने सुनकर अपने विजयके त्रिशूल को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उठालिया जिसमें पृथ्वी और आकाश दिखाई देते थे वह मध्याह्न के सूर्य समान था और उसके सब शस्त्र थे शिवजीने त्रिशूल को छोड़ा जिससे शङ्खचूड़ जलकर भस्म होगया और फिर शिवजी के हाथ में आगया और बहुतेरे दैत्य जलगये इस हेतु सब दैत्य भाग गये जो कुछ बचे वह भागकर पाताल में छिप रहे देवताओं ने बड़ा आनन्द किया और सभा रची जिसमें देवताओं की स्त्रियों ने नाचा शङ्खचूड़ गोलोकमें गये और शाप से छूटकर वैसेही होगये उसकी हड्डियों के शङ्ख बने वह विष्णुजी को अतिप्रिय हैं और देवता और मुनि जो विष्णुजी के परिवार में हैं उन सबको भी प्यारे लगते हैं पर शिवजी को प्रिय नहीं उस समय हम और इन्द्र सब देवता शिवजी के पास गये और बहुत स्तुति की और बेर बेर प्रणाम और दण्डवत् किया फिर सब देवता शिवजी की आज्ञानुसार अपने २ घर सिधारे उस समय संसार भर आनन्दपूर्वक था सब के दुःख दूर हुये शिवजी भी अपने गणों को लेकर कैलास पर्वत पर गये शिवजी जो परब्रह्म हैं वह दीन-जनों के रक्षक हैं जो इस चरित्र को सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसको किञ्चित् भी दुःख प्राप्त न होगा उसको शिवजीकी भक्ति अधिक होती है वह भुक्ति मुक्ति दोनों को प्राप्त करेगा चारों वर्णों के दुःख भस्म हो जायेंगे यह शिवचरित्र दोनों लोकों का फलदायक है॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

नारदजी बोले हे ब्रह्माजी! विष्णुजीने किस प्रकार तुलसी का पातिव्रतधर्म नष्ट करडाला ब्रह्माजी बोले कि यह चरित्र शिवजी और विष्णुजी की भक्ति को अधिक करता है मन लगाकर सुनो विष्णुजी शङ्खचूड़ का वेष धारणकर तुलसीके घर गये और तुलसीके द्वारपर जाकर जीतने के बाजे बजवादिये यह देखकर तुलसी अतिप्रसन्न हुई और बहुत धनआदि भिक्षुकों और ब्राह्मणोंको दिया फिर अपने रूप को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बनाकर अनेक प्रकार से शृङ्गार कर बैठी विष्णुजी उसके घर गये तुलसीने चरण धोये और स्तुति करके चांदी की चौकी पर बिठलाकर ताम्बूल दिये और कहा कि धन्यभाग्य हैं जो आप जीतकर आये और शिवजी की बहुत स्तुति करके पूछा कि किस प्रकार तुमने उन को जीता मुझको प्रतीति नहीं विष्णुजी ने कहा कि हमने युद्ध-स्थान में जाकर बहुत लड़ाई की देवता भागगये फिर शिवजी और वीरभद्र लड़ते रहे देवता और दैत्य मारे गये उस समय ब्रह्माजी ने सुलह करवादी हमने ब्रह्माजी की आज्ञानुसार देवताओं को कुछ देदिया शिवजी अपने घरगये और देवता आदि भी अपने २ लोकों को सिधारे यह कहकर विष्णुजी अपनी सेज को सजा हुआ पाय तुलसी के साथ भोगविलास करने लगे पर तुलसी को मैथुन करती समय सन्देह उपजा कि यह कोई दूसरा मनुष्य है सो तुलसी ने कहा कि तुम शङ्खचूड़ नहीं तुमने हम से छल किया है और हमारे पातिव्रत धर्म का नाश किया है अब सत्य २ वर्णन करो कि तुम कौन हो विष्णुजी ने डरके कहा कि हम विष्णुजी हैं देवताओं के निमित्त यह कार्य किया विष्णुजीने अपने दर्शन दिये जब तुलसी ने विष्णुजी को देखा तो क्रोध करके कहा कि तुमने हमारे पाति-व्रतधर्म को नष्ट किया तुमने यह छल करके हमारे स्वामी को मरवा डाला इस हेतु से हमारा यह शाप है कि तुम पत्थर होजावो जो तुम को दयासिन्धु कहते हैं वह मूर्ख हैं हमारा स्वामी जो तुम्हारा भक्त था उसको तुमने देवताओं के मनोरथ सिद्ध करने के लिये मरवा डाला यह कहकर तुलसी रोने लगी यह देखकर विष्णुजी डरे और शिवजीका ध्यान किया शिवजीने तुलसी को दर्शन दिया और कहा कि तुम रुदन मत करो अपने २ कर्म सब भोगते हैं दुःख और सुख कोई वस्तु नहीं वह समुद्र के समान है जिसमें दोनों प्रकार का जल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है तृष्णा उसकी लहर है धर्म विना कोई पार नहीं होसक्ता तुम दोनों से हम कहते हैं कि जो तुमने प्रथम योग और तप किया था वह निष्फल न हो तुम दोनों हमारे मांस हो तुम्हारा पति कृष्णजी का मित्र सुदामा नामी था उसे राधिकाजी ने शाप दिया इससे वह यहां उत्पन्न हुआ अब वह मारागया और इस शरीरको त्यागकर वह फिर वैसाही होगया तुमभी इस शरीर को छोंड़ो और विष्णुजी के साथ विहार करो तुम्हारा पातिव्रत धर्म नष्ट नहीं हुआ देवताओं की भलाई के लिये जो हमने तुम्हारे पति का बध किया था उस पर क्रोध न करना तुम नदी के समान होकर गण्डकी नदी के नामसे प्रसिद्ध होगी और विष्णुजी के अंशसे जो समुद्र है उसकी स्त्री होकर विहार किया करोगी सिवाय इसके तुम दोनों एक और रीति से इकट्ठे रहोगी अर्थात् तुम पृथ्वीमें इसी नाम अर्थात् तुलसीके नामसे प्रसिद्ध होकर उपजोगी और विष्णु के शरीर में चढ़ा करोगी कि विष्णु अपने कर्म का फल पावें और विष्णु तुम्हारे शापसे पत्थर बनकर गण्डकी नदीके तीर स्थित रहैं और उस जगह बड़े तीक्ष्णदंष्ट्रावाले भयदायक जीव उपजकर पत्थर को काट २ कर बहुत टेढ़े सीधे टुकड़े बनाया करेंगे वे टुकड़े शालग्रामके नामसे प्रसिद्ध होंगे और टूटे फूटे टुकड़े केवल पत्थर कहलावेंगे और चक्रके भेदसे वेद ने शालग्राम शिला बहुत विस्तारसे वर्णन किया है उन शालग्रामके साथ तुम्हारी भेंट सदा हुआ करेगी जो पुण्य बढ़ाने वाला और पापों का नाश करनेवाला है और जो कि तुम शङ्खचूड़ की स्त्री हो और बहुत युगोंतक उससे विहार किया इससे तुम्हारा संयोग शङ्खके साथ हुआ करेगा इस बातमें भेद करनेवाला दुःख पावेगा यह बातें तुलसीसे कहकर शिव अन्तर्धान होगये और तुलसी अतिप्रसन्न होकर अपना शरीर छोड़ वैकुण्ठ चलीगई और उत्तम स्वरूप धारण कर विष्णुजी के साथ विमान पर चढ़ी और उसको हर प्रकार का

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आनन्द प्राप्त हुआ और उसके प्रथम शरीर से गण्डकी नदी उपजकर ऐसी तेजोवती हुई कि जो कोई मनुष्य उसके जलको देखे या स्पर्श करे उसके सब पाप दग्ध होजावें और उसके तट पर विष्णुजी पर्वत के आकार से स्थित हुये जिनके दूरही के दर्शनसे पाप क्षीण होजाते हैं और बड़े २ कठोर दांतवाले कीड़े उपजकर बड़े २ छिद्र किया करते हैं उनसे जो टुकड़े होकर गण्डकी नदी में गिरते हैं वही शालग्राम की मूर्तियां हैं जो अतिपवित्र और दुःख दूर करनेवाली हैं उनमें जो चक्रसहित हों वह पूजने के योग्य हैं उनके बहुत प्रकार हैं लक्ष्मी नारायण आदि परन्तु हमने विस्तारके भयसे नहीं लिखा जो नदीसे बाहर मिलती हैं वे पिङ्गलादि नामसे प्रसिद्ध हैं और गृहस्थके पूजने योग्य नहीं हैं चारवर्ण के विशेष जो मनुष्य हैं उनके पूजने योग्य हैं वह मूर्तियां दो भांति की हैं एक प्रकार आनन्द और दूसरी प्रकार दुःख देती हैं यह शालग्राम शिला तीन वर्ण के विशेष शूद्रवर्ण के पूजनेयोग्य नहीं हैं शालग्राम शिलाको बहुत बड़ी बड़ाई है जैसे कि नर्मदा के पत्थरों की महिमा है शालग्राम और नर्मदा की मूर्तियां स्वयं स्वरूप विष्णु और शिव हैं और शालग्राम शिला को तुलसी-पत्र अतिप्रिय है कदाचित् तुलसीपत्र से अलग शालग्राम की मूर्ति रक्खी जावे तो बहुतही दुःख प्राप्त होगा और कष्ट और दुःखके विशेष स्त्री का वियोग होगा चाहे मरजाने से या और किसी प्रकार से इसी प्रकार शङ्ख का वियोगभी शालग्राम को बहुत दुःखदायी है जब तुलसी शङ्ख शालग्राम इकट्ठा करे और एकही स्थानपर रक्खे तब दोनों लोक का सुख प्राप्त होता है यह विष्णु का इतिहास मुक्ति देनेवाला सुनने सुनाने से आनन्द देता है शङ्खचूड़ वध और शिवका चरित्र सब मनोरथ पूरे करनेवाला है दुःख को दूर करता है और अतिपवित्र है और जो कि इस इतिहास में विष्णुका भी यश कहागयाहै इससे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और भी अधिक आनन्ददायक हुआ शिव और शिवकी लीला अति आश्चर्यदायक है वे भक्तों के अधीन होकर कैसी २ लीला करते हैं हे नारद! अब क्या सुनना चाहते हो॥

चालीसवां अध्याय॥

नारदजी बोले हे ब्रह्मन्! जिस तरह शिवने अन्धकासुर को बध किया वह कथा सुनने की मुझे अभिलाषा है कृपा करके वर्णन कीजिये ब्रह्माने कहा कि जब विष्णुने नरहरि और शूकर का अवतार लेकर दिति के पुत्रों को मारा तब दितिने बड़ा विलाप किया और कश्यप की शरणमें जाकर सेवा करनेलगी और हर प्रकार अपने पति कश्यप के प्रसन्न होनेके उपाय में सब शृङ्गार आदि को छोड़ ब्रह्मचर्य स्वरूप धारणकर रहनेलगी वह केवल कश्यप की इच्छा के अनुकूल मीठे वचन कह बहुत बकने से बची रहती कश्यपने प्रसन्न होकर कहा कि हम तुम्हारी सेवासे अति प्रसन्न हुये वरदान मांगो और पातिव्रत धर्म वर्णन किया और कहा कि कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसको हम शिवजी की कृपा से नहीं देसक्ते दिति ने कहा कि देवताओं ने हमारे साथ शत्रुता करके विष्णु के द्वारा मेरे दोनों पुत्र और बहुत दैत्यों को बध कराया इस बातका मुझे बड़ा दुःख है इसीसे मैं आपकी शरण में आईहूं मुझे ऐसा पुत्र कृपा कीजिये जो देवताओंसे बध न होसके कश्यप बोले कि अच्छा हमने दिया पर मृत्युंजय जो रुद्र है जिसके समान कोई देवता और दैत्य नहीं उसके सामने विष्णु और ब्रह्मा की कुछ नहीं चलती उसके समान और दूसरा कोई नहीं उसके समान वही है जब तुम्हारे लड़का उपजे तब उसको भलीभांति समझा देना कि वह किसीप्रकार मृत्युंजय को क्रोधित न होने दे क्योंकि शिवके कोपित होनेपर फिर और कोई बचानेवाला नहीं है यह बात वेद कहते हैं इतना कह कश्यप चुप होगये और दिति कश्यप के तेजसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गर्भवती हुई और इतना दितिका तेज बढ़ा कि कोई मनुष्य बहुत तेजसे उसकी ओर नहीं देखसक्ता था दशवें मास दितिके पुत्र उपजा जिसका विचित्र स्वरूप था अर्थात् उसके हज़ार शिर और दो हज़ार आंखें, हाथ, पांव और भुजा थीं और बहुतही सुन्दर तेजस्वी हृष्ट पुष्ट ऐसा कि जो सब देवता और मुनि उसको उठावें तो भी न उठसके और वह अन्धों के समान इधर उधर झुकाहुआ चलता था इससे उसका नाम अन्धक रक्खागया और जैसा उसका अन्धक नाम था उसीप्रकार उसने सब कार्य भी किये वह मतवालों के समान चलता और अपने समान दूसरों को नहीं समझता इसी प्रकार अन्धकासुर ने संसार में बहुत उपद्रव मचाये और सब रत्न देवताओंसे लात मारकर छीनलिये उसने संसारभर को अपना सेवक जानकर अप्सरा गन्धर्व और देवताओं को अपने घर डाललिया और परस्त्रियों को और धन द्रव्य कोष को छीन लिया इसी प्रकार अन्धक दैत्यों को साथ लियेहुये तीनों लोक में नानाप्रकार के उपद्रव करतारहा और देवता और मुनीश्वरों को महादुःख देता था वह इन्द्र की सभामें जा इन्द्रासनपर बैठ केवल देवताओं को ही नहीं बरन इन्द्र को भी अपनी आज्ञा सुनाता और देवताओंको तो अपना चाकरही जानता था और इन्द्र को कुछ भी बड़ा न समझता था वह अंकुशरहित हस्ती के समान था जिसको दैत्य और देवता कोई रोंक नहीं सक्के थे एक दिन सब दैत्यों के अधिपति ने आकर प्रणाम के उपरान्त कहा कि हे अन्धक ! जितने देवता और मुनि हैं वह सब तुम्हारे शत्रु हैं उन्होंने बड़े छल से दैत्यों का बध कियाहै इसीप्रकार इन्द्र दैत्यों का बड़ाशत्रु है उसने पहिले दैत्यको जो सबसे प्रथम उपजा था मारा और देवताओं ने मुनीश्वरोंकी सम्मति से हम दैत्यों का बड़ाभारी वन जलाया है इससे आप पुरानी शत्रुता का विचारकर तीनों लोककी विजय कीजिये सो अन्धक तीनों लोक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के विजय करने के निमित्त तय्यार होगया और उसने बड़ी सेना इकट्ठी की यह दशा देख देवता और मुनि सब दुःखी हुये और इन्द्रने आप कश्यपके पास जाकर अतिविनयसे वर्णन किया कि हे पिता! तुमने देवताओंको बड़े आनन्द से रक्खा अब अन्धक सबको निकाले देता है आप देवता और मुनीश्वरों के ऐसे दुःख को किस निमित्त नहीं देखते हो वह क्षण क्षण पर हमको आज्ञा दिया करता है और चाहे वह हमसे छोटा है पर हमको बड़ा नहीं समझता हम भाई होनेके कारण सब कुछ सहते हैं अब वह दैत्यों को लेकर लोक के विजय पानेकी इच्छा रखता है अब बड़ा उपद्रव होगा तीनों लोक का कार्य बिगड़ जावेगा॥

इकतालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! ऐसी बातें इन्द्रसे सुनकर कश्यप अति आश्चर्यमें होकर कहनेलगे कि हे इन्द्र! जो दुःख कि तुमको अन्धकने दिया है उससे कुछ भय मत करो हम उसको दूर करदेंगे यह कहकर इन्द्रको बिदाकर अन्धक को बुलाया और कहा कि जो हम कहते हैं उसको छल छोड़ मानो कि अदिति और दिति दोनों हमारी स्त्रियों से दैत्य और देवता उपजे वह बराबर हमारी सेवा करते हैं हम को दोनों प्यारे हैं हम तुम दोनों को बराबर सिखलाते हैं तुम तीनों लोककी विजयका विचार छोड़दो क्योंकि बड़ा दुःख है तुम और इन्द्र राज्यको आधी आध करके शत्रुता छोड़दो और एकही मत से दोनों काम कियाकरो मुझे तङ्ग न करो नहीं तो बड़ा दुःख पाओगे यह कहकर अन्धकको बिदा किया अन्धक कुछ दिन तो चुपका बैठा रहा पर थोड़ेही दिनों में फिर दैत्यों की संगति से उपद्रव मचानेलगा और फिर वही बातें करनेलगा जिससे देवता आदि को दुःख पहुँचे वास्तव में संगति से बड़ा फल है यह दशा अपने पुत्र की देखकर दिति

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अतिअप्रसन्न हुई और एक दिन उसको बुलाकर समझानेलगी और जैसा कि पहिले कश्यपने कहा था वही बात विचारकर कहा कि हे अन्धक! तेरे कर्म देखकर मुझे दुःख प्राप्त होताहै मैं तुमसे एक बात कहतीहूं उसको करो फिर जैसा तुम्हारे मनमें आवे वैसाही करना अर्थात् तुम शिवजीकी सेवा करो उनसे शत्रुता मत रक्खो क्योंकि उनसे शत्रुता करके आनन्द नहीं मिलता और शिवकी बड़ी स्तुति करके कहा कि शिवका तप किया करो अन्धकने यह माता की आज्ञा मान सबोंकी संगति छोड़ी और इन्द्रियों को जीत कठिन तप करने लगा अर्थात् पहिले तीनों ऋतुओं में वन और जल में बैठकर परिश्रम करता रहा फिर इन्द्रियों को जीतके केवल वनफल खानेलगा कुछ दिन तक ऊर्ध्वबाहु हो एक पाँव से सूर्य के सामने खड़ारहा फिर केवल अंगुष्ठ के बलपर खड़ारहकर शिवका ध्यान करता रहा जब इस तपसे भी शिव प्रसन्न न हुये तो श्वास रोंक तीनों प्रकार का प्राणायाम किया तब अन्धक का तेज बहुत बढ़ा कि उसकी ओर देखा नहीं जाता था ऐसा कठिन तप करतेहुये देख देवता भयभीत होकर हमारी शरण में आये हम सबको लेकर विष्णुजीके निकटगये विष्णु सब हाल सुनकर हम सब को साथ लिये शिवके समीप पहुँचे और स्तुति की जो अतिपवित्र है॥

बयालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसी स्तुतिकर सब चुप हो खड़े रहे शिव बोले कि हे विष्णुजी और ब्रह्माजी और सब देवताओ! हम प्रसन्न हुये जो कार्य हो वह कहो हम वरदान देनेको उद्यत हैं देवताओं ने कहा कि अन्धक के कठिन तपसे हम अतिभयभीत हैं इसलिये आप जाकर अन्धक को वरदान देवें कि हमारा दुःख दूर होजावे यद्यपि वह वरदान पानेसे देवताओं का पूरा शत्रु होजावेगा कि जिसतरह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोई मनुष्य अग्नि से जलकर पानी में कूद पड़ता है पर पानी के कूदनेसे भी उसे चैन नहीं पड़ता बरन उसके फफोले पड़जाते हैं ऐसे मनुष्यके लिये बुद्धिमान् वैद्य दरकार होता है इससे हम सबकी इच्छा है कि आप कृपा करके अन्धकके कठिन तप की अग्नि को बुझादेवें और फिर हमारे लिये भिषक् के समान होकर चिकित्सा करें यह सुन कर शिव वरदान देने को चले और वाहन और गिरिजा और गणों समेत पहुँचकर वरम्ब्रूहि २ बोले अन्धक ने प्रणाम स्तुति की और कहा कि मैं केवल यह वरदान मांगता हूं कि अपने पिताके वरदान के अनुसार मैं सिवाय आपके और किसीके हाथ से मारा न जाऊँ ऐसा कीजिये कि मेरे पिताका वचन ठीक हो शिवजी बोले कि अच्छा हम यही वरदान देते हैं पर जो तुम तीनों लोकके राजा होकर अपना धर्म बिगाड़ कुकर्मी होजावोगे तो हम निस्सन्देह बड़ा क्रोध करेंगे जिससे तुम्हारा सब पाप नष्ट होजावेगा ऐसी दशा में भी हम बड़ी दया करेंगे जिसमें तुम्हारा श्रम निष्फल न जावेगा यहकह शिवजी अन्तर्धान होगये और अन्धकने प्रसन्नतापूर्वक घर आकर अपने माता पितासे वर पाने का हाल कह सुनाया जबकि देवताओंने सुना कि शिवजी ने अन्धक को ऐसा वरदान दिया तो वे बहुत घबड़ाये और इन्द्र से जाजाकर सब हाल वरदान पाने का कह सुनाया अभी सब देवता इन्द्रके पास जाकर सब हाल कहरहे थे कि चारोंओरसे दैत्योंने अन्धक के पास आकर देवता और दैत्यों की पुरानी शत्रुता की गाथा कह सुनाई पर अन्धक ने कुछ न कहा केवल इन्द्रपुरी के देखनेको रथपर चढ़ चला और अपने घरके समान इन्द्रपुरीमें पहुँचगया अन्धक को इसी तरह करते हुये देखकर इन्द्र और देवताओं समेत बहुत भय-भीत हुये सो इन्द्रने तुरन्त उठकर अन्धक को बराबर एकही गद्दीपर बैठा लिया उस समय अन्धकके तेजसे देवता प्रभातके तारोंके समान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेजहीन होगये इन्द्रने मनमें दुःखी होकर अन्धकसे आने का कारण पूछा और कहा कि आपने बड़ी कृपा की जो यहां आये जो आज्ञा हो उसे पालन करें जो हमारे घरमें रत्न, धन, द्रव्यआदि हैं उसे आप सब अपना समझकर लेलीजिये अन्धक ने अहंकारसे उत्तर दिया कि तुम केवल मुझे अपनी सब सामग्री दिखा दो और मुझे किसी वस्तुके लेने की इच्छा नहीं है और तुम्हारे पास जो ऐरावत हाथी और उच्चैःश्रवा घोड़ा आदि उत्तम २ रत्न हैं और उर्वशी अप्सराआदि महास्वरूपवती स्त्रियां वह सब मुझको दिखलादो उनके देखने से केवल मैं प्रसन्न हूंगा निदान निरुपाय होकर इन्द्रने अपनी सब सामग्री दिखादी और अन्धक ने सब सामग्री देखी और आश्चर्यकर फिर इन्द्र की जगहपर बैठगया और बड़ा उत्सव हुआ और अन्धक ने आज्ञा दी कि नृत्य की सभा हो इन्द्रने भयभीत हो सब चेलियों और गन्धर्व और अप्सरादिसे कहा कि भलीभांति नाच गाकर अन्धक को प्रसन्न करो सो ऐसाही हुआ और सबतरहके बाजे ताल स्वरसमेत बजनेलगे और सातोंस्वर इक्कीस मूर्च्छना और तीनग्राम के साथ गान होने लगा ऐसे नृत्यगान से अन्धक ने मोहित होकर चाहा कि अप्सरागणों को अपने वशमें करूं पर देवताओं ने न माना जब अन्धकने देवताओं की ऐसी अवज्ञा देखी तो अतिक्रोधित होकर बड़ा नाद किया और देवता भी बदल गये इन्द्रने देवताओंसे कहा उठो ईश्वरका स्मरण करो भलेप्रकार लड़ो क्योंकि स्त्रियों के देदेने से मरजाना उत्तम है सो देवता तुरन्त लड़ने पर तैयारहुये और अन्धकने पांचसौ धनुष् अपने हजार हाथोंसे लेकर हरएक धनुष् में बहुत २ बाण लगाये और बड़ी लड़ाई हुई इन्द्र ने अन्धक के सामने आकर वज्रसे अन्धक को बहुत मारा अन्धक ने क्रोधित होकर अपने त्रिशूल गदाआदि नाना प्रकार के शस्त्र छोड़े सो इन्द्र देवताओं समेत युद्धस्थल छोड़ भागगये और दैत्योंने जो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ देवताओं की सामग्री थी सब लूटली और इन्द्रको भी अपने वश करलिया और अन्धक अपनी माता दितिको भी वहीं बुला राज्य करने लगा और डौंड़ी पिटाई कि सब प्रजा आनन्दपूर्वक रहे कुछ कोई सन्देह मत करे इन्द्रका राज्य बीत गया मेरे राज्य करने का समय है सब वर्ण अपने २ धर्म में स्थित रहकर हमारी आज्ञा पालन करें जो आज्ञा के विरुद्ध करेगा वह हमारे हाथ से मारा जावेगा यह आज्ञा देकर आप इन्द्रपुरी का राज्य करनेलगा॥

तेंतालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उसके राज्यमें कोई मनुष्य या जीव सिवाय देवताओंके दुःखी न था न किसीको कुछ दुःख मिलता निदान देवता अति दुःखी हो हमारे पास पहुँचे और सब वृत्तान्त कह दिया और यहभी कहा कि देवता यज्ञभाग नहीं पाते पवन, सूर्य, चन्द्रमा तक उसके अधीन होकर उसकी आज्ञा पर चलते हैं हम सब देवता छिपे रहते हैं यह कह देवताओंने हमारी बड़ी स्तुति की हमने कहा कि तुम कुछ खेद मत करो तुम्हारे सब दुःख दूर होजावेंगे और बहुत से पुरातन इतिहास कहकर सबों को साथ लिये हुये विष्णुजी के पास जा बहुत स्तुतिकर अन्धक के अन्याय का हाल वर्णन किया विष्णुजी बोले कि तुम सब अपने २ घरों को जावो हम वेग ही जहां दैत्य होंगे पहुँचकर उनको नष्ट करदेंगे यह सुनकर देवता अपने २ स्थानोंको पलटगये और विष्णुजीने तुरन्त गरुड़पर आरूढ़ हो अपने शस्त्रों समेत अन्धक के पास पहुँच बड़े शब्द से तिष्ठ तिष्ठ कहकर बाण चलाये जिनके चलने से तीनों लोक जल उठे पर अन्धक ने वारुणास्त्र चलाकर दूर करदिया इसी प्रकार विष्णुजी बड़े २ अस्त्र अन्धकपर चलाते रहे और अन्धक निवारण करतारहा और जब कि अन्धकने विष्णु को अपने शस्त्रों से दुःखी कर दिया तो विष्णुजीने

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोपित होकर सुदर्शनचक्र को अपने हाथ में लेकर छोड़दिया जिस से संसार जलने लगा जानागया कि प्रलय होरहा है और अन्धक भी दैत्यों समेत भयभीत होगया और शिवका ध्यानकर अपने त्रिशूल को चला सुदर्शन को अपना काम न करने दिया इसी प्रकार लड़ते २ विष्णुजी ने शिवका ध्यान करके मन में बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिव ! मैं देवताओंके मनोरथ क्योंकर पूर्ण करूं आप आज्ञा दें शिवजी बोले कि मुझे तुम्हारे बराबर कोई वस्तु बरन प्राण भी प्रिय नहीं हैं जो तुम्हारा शत्रु है वह मुख्य करके हमाराभी शत्रु है तुम्हारी सेवा बिन हमको किसीने नहीं जाना हर मनुष्य हमारी भक्ति चाहताहै तो तुम्हारी भक्ति पहिले करले तुम आपही कुरीतिसे देवताओं के पक्षमें उद्यत हुये हो जब तक अन्धक ब्राह्मणों से शत्रुता न करेगा तब तक हम उसके ऊपर क्रोध न करेंगे क्योंकि ब्राह्मण हमको गौरी सेभी अधिक प्रिय हैं इससे तुम कोई युक्ति करो जिससे अन्धक हमारे तप और भक्ति को छोड़कर ब्राह्मणों से शत्रुता उपजावे यह आज्ञा पाकर विष्णुजी ने अन्धकसे कहा कि तुम्हारी वीरता और बल देख कर हम अति प्रसन्न हुये वरदान मांगो अन्धक ने गर्व से कहा कि वरदान लेना छोटे मनुष्यों का काम है हमको किस बात की इच्छा है जो हम तुमसे मांगें तुमको जो इच्छा हो वह मांगो वह तुमको देदें विष्णुजी ने अति प्रसन्न होकर कहा कि हम तुमसे वर मांगते हैं कि तुम शिवजीकी भक्ति छोड़कर आप शिव बनकर विहार किया करो अन्धक ने विष्णुजी की माया में भूलकर कहा कि 'तथास्तु' ऐसा ही होगा फिर विष्णुजी और अन्धक अपने २ घरों को चलेगये और अन्धक ने आप अपने को शिव ठहराकर तीनों लोक को वश कर लिया और सबको दुःख देनेलगा ब्राह्मणोंके मानको स्थिर न रक्खा और आप अपनेको परब्रह्म प्रसिद्ध किया और जप, तप, यज्ञ, होम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदि सब बन्द करदिया और दैत्योंको दिक्पति के स्थानपर नियत कर दिया तब दैत्यों की सब रीतियों का प्रचार होगया जिनसे धरती पर बड़े २ पाप होने लगे देवताओं का मान हीन होगया वर्णाश्रम-धर्म कुछ शेष न रहा स्त्रियां अनाचारसे मैथुन कराने लगीं पातिव्रतधर्म नष्ट होगया इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मृत्यु के समय इसीप्रकार बुद्धि भ्रष्ट होजाती है॥

चवालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि, हे नारद! उस समय देवता और मुनीश्वरों की दशा बहुत बुरी थी वह दैत्यों के भय से इधर उधर भागे फिरते थे जैसे कोई विक्षिप्त मारा २ फिरे और जब देवता और ब्राह्मण बहुत दुःख पाकर शाप देनेलगे तबसे अन्धक का तेज कम होगया एक दिन सब देवताओं ने इकट्ठे होकर कहा कि अबतो अन्धक हमको कुछ धर्म कर्म करने नहीं देता न हम विष्णु और शिवजी की पूजा करने पावें सब तरह से आपदा और दुःख है कौन उपाय से यह मर-सक्ता है बृहस्पति बोले कि अन्धक शिवजी के सिवाय संसारभर से अबध्य है जब कि शिव ने प्रसन्न होकर वर दिया था तो उसके साथ यह भी प्रण था कि जब तुम पाप करने लगोगे तब हम ऐसा क्रोध करेंगे जिससे तुम्हारा तेज घट जावेगा सो शिवजी ने पहिले ब्राह्मणों के दुःख देनेका निषेध किया था सो अब वह समय आगया है उत्तम है कि हम सब चलकर शिवजीकी शरण होवें वे सब दुःख दूर करदेवेंगे सो हे नारदजी! फिर तुमको सब देवताओं ने इस वृत्तान्त के कहने के लिये शिवजी के पास भेजा और तुम वहां से चलकर शिवजी को मन्दार के वन में देखकर स्तुति करनेलगे तुम्हारी स्तुति सुनकर शिवजी बहुत प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे नारदजी! किस कार्य को आये हो तुमने अन्धक के अन्यायका सब हाल उनसे कह सुनाया

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजी ने कहा कि तुम मन्दार के पुष्पों की माला पहनकर अन्धक के पास जाकर हर प्रकार हमारी प्रशंसा करना और ऐसी युक्ति करना जिसमें वह क्रोधित होकर हमारे पास आवे सो तुम बिदा होकर मन्दारपुष्प वनसे तोड़ उसकी माला कण्ठ में लटकाये हुये अन्धक के समीप गये अन्धक सब दैत्यों समेत तुम्हारी माला को जिसमें उत्तम सुगन्ध थी देखकर आश्चर्य में हुआ और कहा कि ये पुष्प कहां उपजते हैं उस उद्यान का कौन रक्षक है ये पुष्प मैं अपने भुजबल से लिया चाहता हूं तुमने उत्तर दिया कि मन्दराचल में जो वीरकानिक वन है उसमें यह पुष्प उपजते हैं वहां शिवजी के गण रक्षक हैं वे गण बड़े बलिष्ठ हैं और शिव जिनके बराबर दूसरा नहीं है अपनी स्त्री सहित उसी वन में विहार करते हैं उनको जीतनेवाला सृष्टि में कौन है पर हां उनकी सेवा करने से यह पुष्प मिलसक्ते हैं इसके विशेष उस वन में और भी सैकड़ों प्रकार के पुष्प हैं कइयों से अच्छी सुगन्ध टपकती है और कई वृक्षोंसे रत्न और कइयों से वस्त्र और कई तरुओंसे चारों प्रकार का अन्न वहां कुछ किसीको दुःख नहीं होता न किसीको कुछ भूख, प्यास, चिन्ता, लज्जा, खेद व्याप्त होता है शिवजीकी सेवासे मनुष्य इन्द्र को जीतलेता है ऐसे २ उपदेश के वचन कहकर तुमतो बिदा हुये और अन्धक ने दैत्यों की सभा रच मन्दारके फूलोंकी प्रशंसा की और कहा कि तुम सब उद्यत होकर हमारे साथ फूलों के लानेको चलो कोई यहां रह न जावे यह कह अन्धक सेना सहित चला और शिवकी महिमा भूलगया ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! अन्धक ने जाकर मन्दराचलको देखा कि वह नाना प्रकार की औषध और जड़ीबूटी से सुशोभित है और सिद्ध मुनीश्वर देवतागण उसकी रक्षा करते हैं और चन्दन,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अगर, साल, चम्पा, बेल और रुद्राक्षादि हजारों प्रकारके वृक्ष वर्तमान हैं और गन्धर्व, किन्नर, अप्सरादि नाचते गाते हैं और हंस, चकोर, अरना, सिंह, बघेलाआदि जीवों से भरा हुआ है ऐसी बहार देखकर देवताओं को देखा और बड़े क्रोधसे कहा कि हे मन्दराचल! तू हमको भलीविधि जानता है मैं अपने बराबर संसार में दूसरेको नहीं समझता और किसी के हाथ से मरने के योग्य नहीं संसार भर मेरे वश्य में है देवता, मुनि, दैत्यादि सब मेरे चेले हैं इसीप्रकार तुमभी हमारी प्रजा और अधीन हो हमारी आज्ञा सुनो कि आज से हम तेरे निकटके वन को अपने विहार और भोगके लिये नियत करते हैं जो तू हमारी आज्ञा न मानेगा तो तेरे लिये अच्छा न होगा हे नारदजी! इसी प्रकार अन्धकने चारों प्रकार की राजनीति के वचन कहे पर शिवजी का पर्वत कुछभी न डरा और अन्तर्धान हुआ जब कि अन्धकने पर्वतको अन्तर्धान होतेहुये देखा तो क्रोध करके कहा कि देख मैं आज तुझे भस्मके समान कियेडालता हूं यह कहकर पर्वत को जड़से उखाड़कर मट्टीके समान पीस डाला और बहुत योजन की दूरी पर फेंकदिया तब उस वनके रहनेवाले सब थर २ कांपनेलगे और पर्वत उठते, बैठते, कांपते, भागते शिवजीके समीप गया उस समय शिवजी गौरी के साथ विहार कर रहे थे गौरीने पर्वत को कांपतेहुये देखकर कहा कि तू आज क्यों कांपरहा है और धरती आकाश और पाताल भी कांपता है किसने इतना क्रोध किया है शिवजीने कहा कि नहीं जानते कि किसने इतना उपद्रव उठाया है देखिये आज कौन यमलोक को जाता है जिसने यह काम किया होगा उसको अवश्य दण्ड दिया जावेगा चाहे वह हमारा पुत्र भी होगा यह कहा और पर्वत को प्रसन्न करके जो टुकड़े पहाड़ के टूट टूटकर गिरपड़े थे वे शिवजी की कृपा से दैत्यों की सेनामें गिरनेलगे और दैत्यों को बड़ा दुःख प्राप्त हुआ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तब तो अन्धक क्रोधित होकर कहनेलगा कि हे पर्वत ! मुझको नहीं जानता कि मैं परब्रह्म हूं तू ऐसा छल क्यों करता है प्रकट होकर क्यों नहीं लड़ता यह सुनकर शिवजी ने बड़ा क्रोध किया इतने में हम और इन्द्र और देवता आदि सब शिवजी की सेवामें पहुँचकर स्तुति करनेलगे वह ऐसी स्तुति है कि जिसके सुनने सुनाने से दोनों लोक में मुक्ति मिलती है ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद ! जब शिवने ऐसी स्तुति सुनी तो अन्धक पर अति क्रोधित होकर अपने गणों से कहा कि तुम जाकर दैत्यों को नष्ट करो सो गण चले और नन्दी सब गणों के सेनानी होकर युद्धस्थानमें पहुँच बड़ा भारी युद्ध करनेलगे और गणोंने बहुत दैत्यों को नाना प्रकारके शस्त्रोंसे वध करडाला और नन्दीके तेजको कोई न सहसका नन्दीने हुण्ड, शुण्ड, जृम्भासुर, कुञ्जासुर, कार्तस्वन, पाकहारीत, मदनमर्दन आदि दैत्योंके अधिपोंको मारा जिससे सब दैत्योंको बड़ा दुःख पहुँचा और अन्धक अति शोकवान् होकर भय-भीत हुआ और शुक्र अपने गुरुके समीप जा स्तुति करनेके उपरान्त कहनेलगा कि तुमने बहुतबेर दैत्यों का दुःख मिटाया है हम तुम्हारी शरणमें आये हैं और तुम्हारी सेवासे देवताओंको ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु और शिव समेत तृणवत् जानते हैं तुम्हारे बलपर दैत्य देवताओं पर ऐसे प्रबल हैं जैसे सिंह हाथी पर और मोर सर्पपर तुम्हारी कृपा से विष्णु दैत्योंसे भयभीत रहते हैं और वज्रव्यूह जिसको देवता वज्रके समान तय्यार करते हैं उसके भीतर दैत्य सन्देह रहित होकर प्रवेश करजाते हैं तुम्हारी सेवाके बलसे दैत्य पर्वतके समान युद्धस्थान में स्थिर रहते हैं इस समय हे भृगो ! शिलादके पुत्र नन्दीगणने असंख्य दैत्यों को युद्धस्थानमें वध करडाला है और हुण्ड और शुण्ड आदि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अच्छे २ दैत्यों को मारकर धरती पर लिटादिया अब जैसा उचित हो वैसा कीजिये हम आपकी शरण में आये हैं तुमने जो विद्या प्राप्त की है उसके वर्तने का समय यही है दैत्यों को जिलाओ कि संसार में तुम्हारा नाम हो भृगु ने हँसकर कहा कि सहस्र वर्षपर्यन्त जो विद्या हमने केवल धान की तुष का धुआं पीकर प्राप्त की है उसकी सिद्धि देखो विद्या दैत्यों को आनन्द देनेवाली है हम मरे हुये दैत्यों को मृत्यु निद्रासे जगाते हैं और जिस तरह कि सूखे धानों को पानी हरा करदेता है उसी प्रकार हम दैत्यों को जिलाये लेते हैं यह कहकर हरएक दैत्य पर अपना मन्त्र पढ़ा वे तुरन्त जीकर यह समझे कि निद्रा से जागे हैं अन्धक अपने वीरों को जीता देखकर अतिप्रसन्न हुआ और शिवजी के गणों ने भृगुनन्दन की यह सिद्धि नन्दी से वर्णन की नन्दी ने तुरन्त शिवजी के पास जा विनय की कि जो दैत्य हमारे हाथ से मारे जाते हैं उनको शुक्र बार २ जिला देता है हमारी विजय क्यों कर होगी यह सुनकर शिवका रूप अतिभयंकर होगया नन्दी से कहा कि ब्राह्मणों में जो अतिनीच शुक्र है उसको हमारे पास पकड़ लावो यह सुनकर नन्दी सन्देह छोड़ दैत्यों की सेना में प्रवेश कर गये देखा कि शुक्र की रक्षा बहुत दैत्य करते हैं निदान नन्दी ने सबको मोहितकर शुक्र को पकड़ लिया कि जैसे बाज लवा को पकड़ता है और घसीटते हुये लेचले यद्यपि शस्त्र चला कर शुक्र ने अपना छुटकारा चाहा पर नन्दी ने अपने शरीरसे अग्नि उपजाकर सब भटों को जलादिया और शिवजी के पास शुक्र को पकड़ लेचले और शुक्र को शिवजी के आगे खड़ा करके कहा कि जो उचित हो वह आप करें शिवने कुछ न कहा और शुक्र को अपने उदर में डाल लिया कि जैसे कोई फल खालेवे दैत्यों को अतिदुःख प्राप्त हुआ और विजय की आशा न रही जबकि अन्धक ने यह दशा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनी तो दैत्यों को धिक्कार देनेलगा और कहा कि आजके दिन मैं नन्दी का बध ही करडालूंगा और शुक्र को छुड़ाकर इन्द्र को विष्णु और देवताओं समेत बध करडालूंगा और जो कि शुक्र योगशास्त्र में निपुण हैं इससे उनके मरनेका कुछ भय नहीं यह कह फिर गणों और दैत्यों से युद्ध होनेलगा और नन्दी ने गणों समेत इतना युद्ध किया कि दैत्यों की सेना बिखरकर बहुत भागी ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अपनी सेना को भागतेहुये देख कर अन्धक आप रथ पर चढ़ युद्धस्थल में पहुँचा और कई एक वीर लड़ने लगे तब बलभद्र, साख्य, विसाख्य, गणेश, सोम, नन्दी और नन्दीश्वर आदि शिव के गणराजों ने अन्धक के ऊपर एकही बेर चढ़ाई की तब बड़ाभारी युद्ध हुआ और शुक्रने शिवके उदर में ब्रह्माण्ड भर देखा इसी प्रकार वह सौवर्षपर्यन्त उदर में घूमा किया पर छिद्र न पाया तब शिव के योग को करके लिङ्गके छिद्र के द्वारा कि जिस मार्ग से वीर्य आता है प्रकट होकर शिवजी की स्तुति करने लगा ऐसी सावधानता शुक्र की देख शिव प्रसन्न हुये और कहा जो कि तुम शुक्र के मार्ग से प्रकट हुये इससे तुम्हारा शुक्र नाम होगा तुम हमारे पुत्र हो अब अपने घर को सुखपूर्वक चलेजावो शुक्र दैत्यों की सेना में आये जिनको देखकर दैत्यों ने बड़ा आनन्द मनाया और अन्धक शुक्र को रक्षापूर्वक किसी स्थान में बिठाकर आप लड़ाई करनेलगा और गणों को दुःखी करदिया यहां तक कि गण युद्धस्थान से भाग कर खड़ेहुये और लज्जा से शिवके पास जाकर कहा कि हमको दैत्य-गणों की सेना मारे डालती है शिवजी बोले कि हमारा रथ साजो सो जिस प्रकार से कि त्रिपुर के बध करने के निमित्त रथ तय्यार कियागया था उसी तरह से रथ बनायागया शिव अपने गणों के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुःख को स्मरणकर क्रोध के साथ रथपर चढ़े और युद्धस्थानमें पहुँच कर अन्धक से लड़ने लगे जो बाण और हथियार अन्धक चलाता था उसको शिव अपने बाणों और अन्य उत्तम शस्त्रों से निवारण करते थे और जो शिव शस्त्र छोड़ते थे उसको अन्धक दूर करता था निदान अन्धकने एक मुष्टिका शिव को मारी शिवनेभी उसको मारकर पृथ्वी पर मूर्च्छित करके गिरादिया उस समय शिव की इच्छासे चामुण्डा देवी जो दुर्गा का रूप है प्रकट हुई जो नाना प्रकार के शस्त्र धारण किये जिनका घनवत् शब्द महाभयंकर दंष्ट्रा विकराल स्वरूप महा-कठोर आंखें लाल २ किये लाल ही कान बहुतही लम्बे काली आंखें ऐसे स्वरूप से चामुण्डा देवी सेना में प्रवेशकर दैत्योंको विदीर्ण करने लगी और अपने केशों को बिखराकर नृत्य करने लगी अन्धक ने क्रोधित होकर अपना शूल चण्डी के सम्मुख कर दिया ऐसी ढिठाई अन्धक की देख शिवजीने बड़ा क्रोध किया और अपने त्रिशूल से अन्धक को छेदलिया जिससे लहू की नदी बह निकली केवल अ-न्धक के अस्थि और चर्म त्रिशूल पर रहगये बाकी लहू सब निकल गया और वह कमल के समान त्रिशूल पर रक्खा रहा शिवजी ने शत्रुता भुलाकर अन्धक को उत्तम बुद्धि दी जिससे वह सतोगुण धारण करके दैत्यभाव से छुटा और शिवजी की स्तुति करनेलगा॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

अन्धक ने बहुत स्तुति करने के उपरान्त कहा कि हे शिवजी! मैं तुम्हारी शरणागत हूं मेरी ओर दया की दृष्टि कीजिये यह स्तुति सुनकर शिवजी ने दया की दृष्टि से अन्धकासुर की ओर देखदिया और उसकी बहुतसी प्रशंसाकर कहा कि धन्य २ हम तुमसे अति प्रसन्न हुये जो इच्छा हो वह वरदान मांगलो अन्धक ने कहा कि मुझको अपना गण करके अपने निकट रक्खो और वीरभद्र के समान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुझको भी समझो और मुझको सारूप्यमुक्ति दो कि तुम्हारे चरणोंकी सेवा किया करूं शिवजी ने कहा कि अच्छा सो अपना गण बनाकर मुझको मुक्त किया और उसको अपने साथ लेजाकर कैलासपर्वत पर स्थित हुये इतना कह ब्रह्माजी बोले कि उस समय विष्णु व हम और देवताओं ने पहुँचकर शिवशंकर को प्रणाम किया और हम सबोंने अलग २ शिवजी की स्तुति की इस स्तुति और चरित्र को जो कोई सुने सुनावेगा वह अपने कुलसमेत प्रसन्न रहेगा उसके सामने कोई दुःख न आवेगा परलोक में उसको शिवजीकी समीपता प्राप्त होगी यह स्तुति सब देवताओं की बनाई हुई शिवजी ने सुनकर प्रसन्नता-पूर्वक सब को बिदा किया और शिव सबगणों समेत कैलासपर्वत में विराजमान रहे ॥

उनचासवां अध्याय ॥

इतना सुन नारद ने कहा कि हे ब्रह्मन् ! इस चरित्र के सुनने से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई अब आप और सदाशिवजी का चरित्र सुनावें आपके बराबर शिवजी का भक्त कौन है ब्रह्मा बोले कि विष्णु के साथ जिसतरह से शिवजी का युद्ध हुआ वह हम वर्णन करते हैं मन लगा कर सुनो कि मरीचि हमारा पुत्र जो शिवजी का भक्त था उससे कश्यप उपजे जो सदाशिवजी के भक्त हैं उनके तेरह स्त्रियां थीं जिनसे बड़ी सन्तति हुई उसकी बड़ी स्त्री दिति थी उससे बयासी दैत्य बड़े वीर धीर उपजे जिनका नाम कनककशिपु और कनकाक्ष था जो बहुतसमय पर्यन्त तप करते रहे और कनककशिपुके चार पुत्र उपजे जिनमें प्रह्लाद सब से छोटा था प्रह्लाद से विरोचन शिव का बड़ा भक्त उपजा और विरोचन से बलि शिवजी का भक्त बड़ा उदार और देवताओंके साथ युद्धकरने में अति बलवान् उपजा उसके एक लड़का बाण के नाम से प्रकट हुआ जो बड़ा शिवजी का भक्त था वह सत्संगति का मित्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और अपने व्रत नियम में अतिदृढ़ और निरहंकार सहस्रबाहु धारण किये था उसने अति उदारता से सर्व ब्रह्माण्ड का राज्य किया और इन्द्र के समान उसके नौकर थे उसने अपनी राजधानी शोणितपुर में स्थापनकर बड़ी धूमधामसे राज्य किया उसके राज्यमें किसीको भी दुःख न था एक दिन वह शिवजी की भक्ति और प्रेममें आनन्दित होकर अपनी सहस्रबाहु से बाजा बजाकर शिवजीके आगे ताण्डवगति से नृत्य करने लगा शिवजी अतिप्रसन्न हुये कहा वरदान मांगो बाणासुर ने बिनती की कि आप हमारे सदा सहायक रहा करें और मेरे दुःख दूर किया करें सो शिवजी मानकर अपने कुलसमेत बाणासुरके घरमें स्थित हुये और अपनी शक्ति समेत बाणासुर की रक्षाकरने लगे एकदिन सब देवताओं के राजा शिवजी देवगणों समेत नर्मदा नदीके तटपर बड़ा उत्सव रच विहार करनेलगे तो सब देवता सिद्धआदि सब शिवजी का विहार देखने आये उस समय नाच गाना बजाना और नाना प्रकार की आनन्द की बातें होने लगीं तो शत्रुओं को दुःख और भक्तों को सुख प्राप्त हुआ तीनों प्रकारकी वायु बहनेलगीं नाना प्रकार के फूल खिल उठे पक्षी मधुरवाणी से बोलनेलगे मानों वे भी गायक बनकर गाते हैं वन फूल उठा ऐसे समयमें शिवजीने रुचिपूर्वक विहार किया और फिरते २ कामके वश हो नन्दीगण को बुलाकर कहा कि तुम तुरन्त कैलास में जाकर गिरिजा को अपने साथ लेआवो वे अपना सब शृङ्गार किये हुये आवें हम उनके साथ विहार करेंगे सो नन्दी ने तुरन्त गिरिजा की सेवामें जाकर सब हाल कह सुनाया गिरिजा ने कहा कि तुम चलो हम शृङ्गार करके तुम्हारे पीछे आती हैं नन्दी चला और गिरिजा शृङ्गार करनेलगीं इतने में नन्दी ने शिवजी के निकट पहुँचकर कहा कि गिरिजा पीछे आती हैं शिवजीने कहा कि तुम शीघ्रही जाकर अपने साथ ले आवो नन्दी फिर गये और गिरिजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से चलने को कहा गिरिजा ने कहा अच्छा चलती हैं तुम बैठो यह कहकर उन्हों ने शृङ्गार करने में अपना बहुत समय लगाया और शिवजी अप्सराओं के नाच और रङ्गको देखकर बहुतही कामवश हुये और गिरिजा ने जब कि आनेमें बहुत विलम्ब किया तो सब सभाकी स्त्रियों ने सम्मति की कि हम सब अपना २ रूप औरही प्रकार का पवित्र धारण करें यह सोच सब स्त्रियां अपना २ स्वरूप धारण करने लगीं कि शिवजी को सन्देह उपजे सो नन्दीने उर्वशी के रूप को और केशवी ने लक्ष्मीके स्वरूप को और घृताची ने कालीके स्वरूप को विश्वाची ने चण्डीके रूपको और प्रेमगोजाने सावित्री के रूपको और मैनाने गायत्री के रूपको और पद्मावती ने विजयस्थलाके रूप को और जयाने सहजन्या के रूपको धारण किया और जितनी कि अप्सरा थीं उन सबोंने इसी तरह सब देवपत्नियों के स्वरूप को धारण किया और ऊषाने जो बाणासुर की कन्या थी गिरिजाका स्वरूप धारण करलिया और कहा कि इससमय शिवजी को अपने वश करलेवैं और भलीभांति शिवजीके साथ भोगविलास करें यह सब सम्मति और स्वरूप का धारण करना गिरिजा जान गईं और ऊषा को बुलाया और हँसकर कहा कि तुमने कामवश हो हमारे स्वरूपको धारण किया इसलिये हमारा वचन सुनो कि मधुमास की शुक्लद्वादशी को सोते हुये कोई मनुष्य तुम को मिलेगा उसके साथ मन भरके भोगविलास करना वही तुम्हारा पति है हमारा वचन सत्य है यह कहकर गिरिजा अति प्रसन्नतासे शिवजीके समीप गईं यह लीलाकर शिवजी अपनी सर्वसभासमेत अन्तर्धान होगये और सब अप्सरा अतिलज्जित होकर गिरिजा की स्तुति करनेलगीं हे नारद ! अब और चरित्र सुनिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पचासवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! एकदिन बाणासुर ने अपने ताण्डवनृत्य से शिवजी को अतिप्रसन्नकर बिनती की कि आपकी कृपासे मैं बड़ा बलिष्ठ हुआहूं पर जो आपने मुझको सहस्रभुजा कृपा की हैं वह मेरे शरीरपर भाररूप हैं क्योंकि उनके बल से कोई कार्य आजतक नहीं किया न कोई युद्ध तीनोंलोकमें मुझसे हुआ आपकी बराबर मेरे सामने कोई बलवान् नहीं है मैं तीनोंलोकमें केवल युद्धनिमित्त फिरता हूं और मैं दिक्पालों के पास युद्ध की इच्छा से गया सो मुझे आते हुये देखकर दिग्गज भाग गये हे शिवजी ! मेरी भुजायें बल की अधिकता से खुजलाया करती हैं आप उनको दूर करें मैंने इन्द्र को जीत अपने अधीन किया है वह मुझ से सदा ही अपने मन में डरा करता है मैंने अग्नि को आग के बदले और पितृ को पाककर्ता और वरुण को द्वारपाल और पवन को बाजा बजानेवाला और कुबेर को हाथियों का रक्षक और सूर्य चन्द्रमा को मशालची अपना बनाकर बाक़ी देवताओं को अपने नगर का रक्षक करदिया है इसी प्रकार मैंने सब ब्रह्माण्ड को जीतकर सबको अपने अधीन करलिया है पर मुझको युद्ध की बहुत बड़ी इच्छा है आप कृपा करके मेरा मनोरथ पूरा करें या तो और कोई मेरे हज़ारों भुजा काटडाले या मैं उसकी भुजा छांटदूं यह सुनकर शिवजीने बड़ा क्रोध किया और प्रकट में क्रोध और भीतर से प्रसन्न हो बाणासुर से कहा कि तुझे धिक्कार है २ कि तुझे इतना गर्व है तू दैत्यों के कुल में महाअधम है तू बलिका पुत्र और मेरा भक्त होकर ऐसी ख़राब बातें बकता है यह तेरा अहंकार वेगही मिटजावेगा हमारे समान कोई मनुष्य तेरे निकट आवेगा उसके साथ तू लड़के अपना अहंकार भूल जावेगा वह आकर तेरी भुजा काटडालेगा केवल हमारी इच्छा से तेरे प्राण बचजावेंगे मैं तुझको वह समय भी बताताहूं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब कि यह सब बातें प्रकट होंगी कि जब तुम्हारा केतु जिसका शिर मनुष्य के शीश के समान और मोर का स्वरूप है पवन बिन गिरपड़ेगा और नानाप्रकार के अशकुन प्रकट होंगे तब तुम निश्चय जानना कि अब वही समय आया है और युद्ध के निमित्त तत्पर होना यह कह शिवजी चुप होगये और बाणासुर बहुतही प्रसन्न हुआ और शिवकी बड़ी पूजा की फिर घर में जाकर अपनी स्त्री से सब हाल कह सुनाया उसकी स्त्री का नाम कन्दला था वहभी शिवजी की बड़ी भक्ता थी जबकि उसने सुना तो अतिचिन्तित हुई और कहा कि यह क्या आनन्द समय का है बरन बहुत बुरी बात हुई क्या तुम इस बात को नहीं समझे तुमतो सब तरह से नष्ट होगये क्या तुमको शिवजी से यही वर लेना उचित था तुम्हारी बुद्धि अधिक अहंकार से नष्ट होगई शिव सदा अहंकार का नष्ट करते हैं तुम्हारी सब भुजा कटजावेंगी तुम कभी हारे न थे पर अब अवश्यही हारोगे यह शिवजी ने तुमको शाप दिया है वर नहीं दिया इससे उत्तम है कि अबभी शिवजी को प्रसन्न करके उनकी इतनी सेवा करो कि तुम्हारा भला हो यह कहा और महादुःख से शिवजी को ध्यान में लाकर बाणासुर के चरणों पर गिर पड़ी तब आकाशवाणी हुई कि हे कन्दला ! तुम कुछ मन में खेद न करो उस समय शिवजी तुम्हारे सहायक होंगे और बाणासुर के गर्व को नष्ट करके उस पर कृपा करेंगे यह सुनकर कन्दला कुछ प्रसन्न हुई पर इस बात को बाणासुर ने कुछ न जाना वह घर से निकलकर बाहर आया और फिर अपने सभ्योंको इकट्ठाकर युद्ध के निमित्त सम्मति की और सब मिलकर बाट देखनेलगे कि देखिये कब समय आता है कि जब युद्ध होगा ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारदजी ! अब तुमको हम बाणासुर की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कन्या अर्थात् ऊषा का चरित्र सुनाते हैं जो युद्धका मूल है और जिसमें बाणासुर की भुजायें कटगईं यह सब लीला शिवजी की समझो जो शिवजी की इच्छा है वही होता है सो बाणासुर की कन्या जिसको गिरिजाने वर दिया था कि तुमको पति मिलेगा वह एक दिन ऊषातिथि अर्थात् वैशाखसुदी द्वादशीको शिवजी की पूजाकर अर्धरात्र को सोने लगी तब गिरिजा की इच्छा से अनिरुद्ध कृष्णचन्द्र के पोतेने पहुँचकर ऊषा के साथ भोग किया ऊषा रोने पीटनेलगी और अनिरुद्ध गिरिजा के प्रभाव से तुरन्त मतलब करके अपने घर चला आया ऊषा मुरदेके समान होकर बहुत रोई और अपनी सखियों से यह सब हाल कह सुनाया और उसके मिलने की इच्छा करके अपनी सखियों से बड़ी प्रशंसा की और गिरिजा का ध्यान किया उस समय कुम्भाण्ड की पुत्री चित्ररेखा जो ऊषा की सखी थी उसने ऊषा को समझाया और पहिले जन्म का सब हाल कह सुनाया जिसको सुन कर ऊषा अति प्रसन्न हुई और अतिविनयकर कहा कि जिस पति को गिरिजा ने कृपापूर्वक हमको रात्रिके समय दिखाया है उसको तुम छिपाकर मेरे पास लावो और मुझसे मिला दो यह बात तुमको कुछ कठिन नहीं है जिसने हमारे मनको छीनलिया है जो तुम उससे हम को न मिलावोगी तो मैं अवश्यही मरजाऊँगी इसमें कुछ सन्देह न होगा और कहा कि तुम सब हमारी सखी इस बातको समझ लो कि जिस मनुष्य के मिलने से रात्रि के समय मुझको बहुत दुःख और सुख प्राप्त हुआ है जो वह मनुष्य न मिला तो मेरे मरने में कुछ संशय न जानना यह सत्यही कहती हूं चित्ररेखा ने हँसकर कहा कि हम तुम्हारे सब दुःख दूर करदेंगी जिससे तुमको बड़ा आनन्द प्राप्त होगा जो वह तीनों भुवनमें है तो तुझसे तुरन्त मिलादूंगी यह कहकर वह चित्ररेखा कपड़े पर सब के स्वरूप लिखती गई और आदि से अन्ततक जितने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवताआदि आकाश के निवासी थे सब का रूप देखा जब ऊषा ने उनमें से किसी को न पहिंचाना तो फिर वह मनुष्यों के रूप बना २ कर दिखलाने लगी जब चित्ररेखा यदुवंश के घराने को लिखने लगी और शूरसेन, वसुदेव, राम, कृष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्धका चित्र लिखकर दिखाया तो ऊषाने तुरन्त अनिरुद्ध का स्वरूप देख करके कहा कि यही है जिसने हमारा चित्त चुराया उसको युक्तिसे लावो कि हमारा दुःख दूर होजावे चित्ररेखा ने यह जानकर कि यह कृष्ण के पोते अनिरुद्ध पर मोहित है शिवजीका ध्यानकर योगमाया की और ज्येष्ठ शुक्लचतुर्दशी को कृष्ण के द्वारपर गई और योगमाया कर कृष्ण के मन्दिर में गई देखा कि अनिरुद्ध अपनी स्त्री के साथ मद्य पीरहे हैं और जिनकी किशोर अवस्था श्यामरूप महासुन्दरस्वरूप को देख कर अपने तामसयोग को प्रकट करके अँधेरा करदिया और अपने शिर पर शय्या को जिसपर अनिरुद्ध बैठे थे लेकर योगके कारण उड़ी और लाकर ऊषा के पास रखदिया और आश्चर्यकर ऊषा ने उसको अति गुप्तरीति से भीतर लेजाकर चाहा कि भोगविलास करूं उस समय यह वृत्तान्त द्वारपालों और रक्षकों ने जानलिया और अति आश्चर्यकर ऊषा के अपकर्म और छलपर पश्चात्ताप किया और ऊषा के घरके भीतर जाकर अनिरुद्ध को देखा कि वह तुरन्त भोग करना चाहता था यह देखा और तुरन्त बाणासुर के पास जा उनकी स्तुतिकर कहा कि तुम ऐसे राजा तीनोंलोक के हो जिससे ब्रह्मा भी डरते हैं हे स्वामी ! इस समय तेरी लड़की के घरमें एक अकेला आदमी बैठा है तुम चलकर आपही उसे देखलो जो उचित हो उसके लिये आज्ञा दो यह सुनकर बाणासुर अतिदुःखी होकर क्रोधित हुआ और जाकर अनिरुद्ध को देखा और विचार किया कि यह मनुष्य कोई बड़ावीर और हठयुद्ध करने वाला दृढ़प्रण है और व्यभिचारी है यह महाकामी मूर्ख पापी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किस युक्ति से यहां पहुँचा है इसने मेरे कुलधर्म को नष्ट करदिया यह विचार कर अपने वीरों को आज्ञा दी कि तुम दया छोड़ इसको प्राण से मारडालो यह आज्ञा देकर उसने अनिरुद्ध को देखा और अनिरुद्ध का शरीर तेज से भरा हुआ देख बहुत सन्देह किया सो दश सहस्र सेना अनिरुद्ध के मारने को खड़ी हुई और छिंधि भिंदि नाद करकर अनिरुद्ध को चारोंओर से घेर लिया अनिरुद्ध भी निर्भय होकर युद्ध के निमित्त खड़ेहुये और एक परिघ हाथ में उठाकर तुरन्त द्वार की ओर चले और इतना उस सेनाको मारा कि एकभी न बचा फिर और सेना जो आई उसको मारा फिर एकलाख बीर आकर और लड़नेलगे उनको भी अनिरुद्धने भगादिया यह दशा बाणासुर देख अपने रथपर आरूढ़ हो आपही युद्ध करने को तत्पर हुआ उसके रथ पर कुम्भाण्ड मन्त्री सारथी के बदले बैठा था अनिरुद्ध ने असि से सारथी समेत बाणासुर को दुःखी करदिया तब बाणासुर ने अनिरुद्ध पर सांगी चलाई अनिरुद्ध सांगी को हाथ से पकड़कर उसी सांगी को बाणासुर के ऊपर चलाया ऐसा युद्ध देखकर दैत्य और देवता आश्चर्य में हुये निदान बाणासुर अनिरुद्ध को बड़ाबली समझ अन्तर्धान होगया और छललक्षिणी युद्ध करके अनिरुद्ध को बड़ा दुःख दिया और नाग-फाँस से अनिरुद्ध को बांधकर बहुतसे दुर्वचन कहे फिर कुम्भाण्ड को आज्ञा दी कि तुरन्त इसका शिर काटडालो क्योंकि राजनीति की यही आज्ञा है कि इसने हमारे कुल में लाञ्छन लगाया जो अतिपवित्र था इसके शरीर के खण्ड २ कर राक्षसों को खानेके लिये बांट दो याकि मरे हुये पानी के कुवें में डाल दो कि यह जीता न बचे इसका मार डालना ठीक है कुम्भाण्ड ने शिवजी का ध्यान करके बाणासुर से कहा कि यह बात ठीक नहीं है क्योंकि इसके बध करने से आत्मघात का पाप होगा तुम भलीभांति समझो कि यह दशा तुम्हारी शिवजी

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की अप्रसन्नता से हुई है यह अनिरुद्ध कृष्ण का नाती शिवजीकी कृपासे बड़ाबल रखता है इसी प्रकार कुम्भाण्ड ने बाणासुर को बहुत प्रकार से समझाकर क्रोध दूर किया फिर अनिरुद्ध को अच्छे उपदेश देकर भले प्रकार समझाया और कहा कि अब तुम बाणासुर का हाथ छोड़कर गुप्तकथन करो और कहो कि हम तुमसे हारगये हमको प्राण-दान दो अनिरुद्ध ने कहा कि हे मूर्ख ! तू क्षात्रधर्म नहीं जानता क्षत्रियों को लड़ाई में सम्मुख होकर मरना आनन्द और मोक्ष देनेवाला है जो धर्महीन रहा तो जीना किस कामका है वह मनुष्य दोनों लोक में आनन्द नहीं उठासक्ता ऐसे २ वचन सुनकर बाणासुर अतिक्रोधित हुआ और चाहा कि अनिरुद्ध का बध करडालूं इस इच्छा से त्रिशूल उठाया तब आकाशवाणी हुई जिसको सबने अनिरुद्ध समेत सुना कि हे बाणासुर ! तू यह क्या करता है तू बलिका पुत्र शिवभक्त है यह बात अच्छी नहीं करता यह बालक मारडालने के योग्य नहीं इसके शिवजी रक्षक हैं शिवजी सबके स्वामी हैं जिनके अधीन तीनोंलोक हैं वही शिवजी पालनेवाले और प्रलय करनेवाले हैं वही तीनों गुण अर्थात् ब्रह्मा विष्णु और हर हैं तुमको चाहिये कि ऐसे शिवजी की शक्तिसहित सर्वदा पूजनकिया करो तब जो शिवजी कृपा करेंगे तो तुम्हारा गर्व नष्ट होगा यह आकाशवाणी सुनकर बाणासुर उस जगह से उठकर घर में गया और भोगविलास में कालक्षेप करनेलगा अनिरुद्ध ने भी देवी का स्मरण किया और मन में बड़ी स्तुति की सो श्रीमहाकालीजी प्रसन्न हुईं वह गिरिजा के समान एक शक्ति हैं और अनिरुद्ध को जो नागफाँसमें बँधा हुआ था नागफाँस को जला डाला और पहिले के समान अनिरुद्ध को आनन्द देकर आप अन्तर्धान होगईं अनिरुद्ध फिर भी ऊषा के समीप गये और जो मन में आया वह किया यह हमने ऊषाचरित्र सुनाया ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि जब चित्ररेखा अनिरुद्ध को लेकर आकाश को चली तब अनिरुद्ध की स्त्री बड़े ज़ोरसे रोनेलगी जिसको सब यदुवंशी और कृष्ण बलराम ने सुना और अनिरुद्ध को न देखकर अति चिन्तित हुये चार महीनेतक उनको अनिरुद्ध का हाल कुछ मालूम न हुआ कि कहां गये कौन लेगया निदान शिवजीकी आज्ञा से तुम हे नारदजी ! कृष्णजी के पास गये और अनिरुद्ध का वृत्तान्त आदि से अन्ततक कहा कृष्ण और बलराम अतिदुःखी हुये निदान राम और कृष्ण असंख्य वीरों की सेना साथ लेकर शोणितपुर को गये और गरुड़ भी श्रीकृष्णजीकी सहायता के निमित्त आये और शोणितपुर को चारोंओर से घेर लिया और नानाप्रकार के उपद्रव मचाने लगे बाणासुर ऐसे उत्पात को न सहकर युद्ध की इच्छा से आया और रुद्र भी जिनकी रक्षा में शोणितपुर था बाणासुर के संयुक्त हुये हे नारद ! उस समय बड़ाभारी प्रलय के समान युद्ध हुआ कि कृष्ण और रुद्र यह दोनों लड़नेलगे वीरभद्र प्रद्युम्नके साथ कोपकर्ण और कूष्माण्ड दोनों बलरामके साथ लड़नेलगे और आप बाणासुर सांगी लियेहुये लड़नेलगा और बाणासुरके पुत्रने साम्ब के साथ युद्ध रचा नन्दीश्वर जो शिवजीके वाहन हैं गरुड़के साथ लड़नेलगे इसी प्रकार सम्पूर्ण भट एक २ होकर युद्ध करनेलगे ऐसे युद्ध देखनेके लिये हम और सब देवताआदि आये शिवजी के गणोंके साथ यदुवंशी पूर्णतासे लड़े सबतरह से राम और कृष्ण और प्रद्युम्न दृढ़तापूर्वक युद्ध में स्थिर रहे कोई एकभी न हटा जहां एक ओर शिव और दूसरी ओर कृष्ण हैं वहां भागना किस तरह होसक्ता है पर जब राम और कृष्णने बहुत बड़ी चढ़ाई करके शिवजीके गणों को दैत्यों समेत युद्धस्थानसे मुँह फेरदिया और पीछे हटाकर गर्जने लगे तब शिवजीने अतिकोपित

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर केवल अपने नादसे परसेना को बहुत दुःख दिया शिवगण भी लौटकर लड़नेलगे कि कृष्ण अति कुपित होकर अतिक्रोधसे शिवजी के ऊपर अच्छे बाण छोड़नेलगे शिवजीने सब बाण काटे कृष्णने ब्रह्मास्त्र शिवजीके ऊपर छोड़ा शिवजीने ब्रह्मशर छोड़कर उसको व्यर्थ करडाला इसी प्रकार जो बाण और शस्त्र कृष्णने शिवजीके ऊपर चलाये वह कोई फलदायक न हुये शिवजी ने काट दिये और कृष्णकी सेना को डाटदिया किसी शस्त्रको न छोड़ा केवल शस्त्र रहित होकर कृष्ण की सब सेनाको भगादिया जिससे कृष्ण अतिकोपित हुये और उन्होंने शीतज्वर को शिवजीके ऊपर छोड़ा जिससे सबके शरीर थरथराने लगे और बहुत विकल हुये शिवजीने पित्तज्वर छोड़ा जिसने शीतज्वरका मुख मोड़ दिया शीतज्वर शिवजीके पास पहुँचा स्तुति की शरण में आया शिवजी ने दोनों ज्वरों से कहा कि जो तुम को स्मरण करे उसको न सताओ प्रसन्न रहो जाओ हमने तुमदोनों को अपना सेवक बनालिया जबकि कृष्णने शिवजी का यह चरित्र देखा तब दुःखी हुये आनन्द जाता रहा प्रद्युम्न और वीरभद्रने बहुत समय तक युद्ध किया निदान वीरभद्रने वही शक्ति प्रद्युम्न पर छोड़दी जिसने तारक को मारा था प्रद्युम्न अति विकल हो युद्धस्थल को छोड़ भाग गये इसी प्रकार बलभद्रआदि सम्पूर्ण यादववंशी वीर युद्धस्थान से भाग गये तब गरुड़ने अपने पंखों को फैला कर बड़ा उपद्रव किया नन्दीश्वर बैलने अपने सींगोंसे पंखोंको छेद उठालिया सो बड़ी कठिनतासे गरुड़ नन्दीसे छूट भागगये और युद्धस्थान छोड़ दिया कृष्ण अपनी सेनाकी यह दुर्दशा और उनका भागना देख चिन्तावान् हुये और दारुक अपने सारथी से कहा कि देखो हम बाणासुर की भुजा काटने आये थे क्योंकि आप शिवजी ने उनको यह शाप दिया था कि कृष्ण तेरी भुजा काटडालेंगे हमको अपनी भाग्यका बड़ा पश्चा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्ताप है कि इस समय आप जिन्होंने शाप दिया था हमसे विरुद्ध हैं युद्ध करने पर खड़े हैं अपने वचन को झूठा करते हैं हमारी हीनता करते हैं न जानिये इनके मनमें कैसी आई मुझे कई वचन शिवजीसे कहने हैं तुम उनके निकट हमारा रथ लेचलो हम उनको बाणासुर के शाप की बात स्मरण करादेंगे कि शिवजी बाणासुरकी सहायता न करें सो दारुकने ऐसाही किया कृष्णने पहुँच कर हाथ जोड़ शिव जीकी स्तुति की शिर झुकाया अहंकार दूर किया शिवजीके शरणागत हुये और यह वचन कहे कि हे शिवजी! तुम सबके स्वामी सब से श्रेष्ठ हमको प्रसन्न करनेवाले हमारे कष्ट हरनेवाले सदासे रहे हम तुम्हारी आज्ञा से बाणासुर की भुजा काटने आये थे क्योंकि तुमने बाणासुर को यही शाप दिया था उस वचन का स्मरण कीजिये मुझे प्रसन्न कीजिये बाणासुर की रक्षा छोड़ दीजिये कि हमको हर प्रकारकी सिद्धि और विजयका अवकाश मिले तुम्हारा वचनभी न टले शिव जीने कहा कि हे कृष्ण! तुम हमारे बड़े और श्रेष्ठ और राम के भक्त हो हमने तुम को अपने बराबर का पद दिया है तुमतो पूर्ण विष्णु के अवतार हो तुम्हारे काम हमको बहुत प्यारे हैं तुमने जो कुछ कि कहा सत्य है और हमभी भक्तिके आधीन हैं उस भक्ति के करनेवाले भक्त के आधीन होकर यह लीला करते हैं हमारे देखते २ बाणासुरकी भुजा क्योंकर कटसक्ती है अब तुम जाकर हमपर जृम्भणास्त्र छोड़ना हम निद्रावश सोजावेंगे तब तुम अपना कार्य करना संसार में यश पाना यह सुन कृष्ण अपने स्थानपर आये और शिवजी पर उन्होंने जृम्भणास्त्र छोड़कर सुलादिया फिर बाणासुर की सेना को हिला दिया॥

तिरपनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि जब बाणासुरने अपनी सेनाके बल की न्यूनता देखी तो क्रोधित हुआ और महानाद करते हुये श्रीकृष्ण महाराज के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समीप आकर सामने हुआ और बहुत ही युद्ध किया सब शस्त्र चलाये कृष्णने उसके सब शस्त्र निष्फल करडाले और अपने धनुष्शार्ङ्ग को चढ़ाया और बहुतही बाण चलाये सो बाणासुर भी इनकी वीरता को मानगया और सबको निवारण किया कृष्ण को बाणों से छालिया दोनों सेना युद्ध करनेलगीं जब कुम्भाण्ड यदुवंशी सेना को मारने लगा और उनको अपनी वारों से दुःखी किया तब श्रीबलरामजी ने अपना हल मुशल हाथ में लेलिया और कुम्भाण्डके भाल को हलसे हिलाया कुम्भाण्डने बलराम को त्रिशूल मार धरती पर गिरादिया फिर दोनों युद्ध करनेलगे गरुड़ने कृष्ण की इच्छा पाकर दोनों पङ्ख फैला दिये और असंख्य दैत्यों को गिरादिया यहांतक कि दैत्यों की सेना युद्धस्थानमें रुक न सकी बाणासुरने अपना त्रिशूल गरुड़ पर चलाया और धरतीपर गिरादिया जब गरुड़ सचेत हुआ युद्धसे भागगया फिर बाणासुर और कृष्ण इतना लड़े कि संसारभर में हाहाकार होगया बाणों की वर्षा से आकाश दिखाई न देता था देवता भयभीत और निराश हुये कहनेलगे कि न जानिये यह क्या होता है शिवजी के चरित को न जाना उनकी लीला न पहिचानी कृष्णने बाणासुर के रथके घोड़े मारडाले और वीरों के समान गर्जने लगे फिर एक बाण बाणासुर के हृदयमें मारकर पृथ्वी पर गिरादिया जब बाणासुर चेतमें आया तो कृष्णपर त्रिशूल चलाया कृष्णने त्रिशूल और गदा काटडाली और उसको अपने बाणों से पाट दिया बाणासुरने कृष्ण के धनुष् को निष्फल करदिया और कृष्णने भी बाणासुरके सब शस्त्र व्यर्थ करडाले सेना मारडाली और बड़ाभारी युद्ध किया और शिवजीका शाप स्मरण किया और शिवजीसे बहुत बल पाकर बाणासुर को पकड़ लिया और आरी से उसकी सब भुजा काटडालीं केवल चार भुजा रहनेदीं बाणासुर को शिवजी की कृपा से कुछ कष्ट न पहुँचा तुरन्तही घाव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भरगये उस समय कृष्णको इतना कोप हुआ कि वीरभावसे चाहा कि बाणासुर का शिर धड़से जुदा करडालूं तो तुरन्त शिवजीने जो सो रहे थे कृष्ण की ओर देखदिया और कुछ तिरछी दृष्टिसे अपनी भुजा ऊंची कर क्रोधपूर्वक कहा कि हे कृष्ण ! जो तुमको हमने आज्ञा दी थी वह तुम सब करचुके अब चक्र न चलाना और बाणासुर का शीश न काटना यह सुदर्शन चक्र हमने तुमको दिया था हमारे भक्तों पर यह चक्र नहीं चलसक्ता देखो तारक और रावणपर यह तुम्हारा चक्र न चला अब मत लड़ो हमारे भक्त पर इतना क्रोध मत दिखाओ अब इसके साथ प्रीतिकर अनिरुद्ध को ऊषा सहित अपने घर लेजाओ कृष्ण ने स्वीकार किया शिवजी ने बाणासुर को बुलवाकर कृष्णसे प्रीति करादी बाणासुरने ऊषा और अनिरुद्ध को दान मान आदि से संतुष्टकर कृष्ण को देदिया और सब रीतों के पूरने के उपरान्त कृष्ण विदा हुये और अपने नगरमें पहुँचे बाणासुर भी गण बनकर दैत्यों से देवता हुआ बाणासुरने देवताओं की बड़ी सेवा की जिससे शिव जीने प्रसन्न होकर उसे ऐसी गति दी ॥

चौवनवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदजी बोले कि जब श्रीकृष्ण अपने कुल समेत अनिरुद्ध को साथ लिये हुये द्वारका चलेगये तो बाणासुर ने क्या किया और शिवजी ने क्योंकर बाणासुर को अपना गण बनाया ब्रह्मा जी बोले कि श्रीकृष्णचन्द्र के चले जानेके उपरान्त बाणासुर अपनी मूर्खता पर बहुत पछताया और अपने अहंकार पर धिक्कार किया तब नन्दीश्वर ने उसको बहुत समझाया और कहा कि जो तुमने अपना अहंकार शिवजी को दिखाया उसीका यह फल है शिवजी तुम्हारे अपराध क्षमा करेंगे वे भक्तवत्सल हैं तुम इतनी चिन्ता मत करो शिवजी की इच्छा से जो कार्य हो उसीमें प्रसन्न हो गर्व छोड़ शिवजीकी सेवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और ध्यान में लगेरहो ताण्डवनृत्य करके शिवजी को रिझाओ यह वचन नन्दीश्वर के सुनकर बाणासुर अतिप्रसन्न हुआ और शिवजी के समीप जा रोनेलगा और अहंकार दूरकर स्तुति करने लगा सैकड़ों प्रकार से प्रणामकर ताण्डवनृत्य करने लगा और उसने पूर्णरीति से पदगत प्रत्यालीढ़ प्रमुखगत मदनबाणगत सरकम्पाआदि सब प्रकार की गतें और भाव दिखाये जिससे शिवजी प्रसन्न हुये जोकि शिवजी को राग और नाच प्यारा है तो कृपाकर बाणासुर से कहा कि तेरे नाच राग और प्रेमसे हम प्रसन्न हुये वरदान मांग तू हमको बहुत प्रिय है इससे हमने इस प्रकारकी लीला करके तेरे गर्व को नष्ट कर दिया है बाणासुर ने प्रसन्नतापूर्वक शिवजी का वचन सुन हाथ जोड़ बिनती की कि हे शिवजी ! मेरा शरीर दैत्यभाव से छूटकर मैं निर्भय आपके गणों में गिनाजाऊं और जो मेरी पुत्री ऊषा से लड़का उपजे उसको हमारा राज्य शोणितपुर कृपा करो वह किसी समय देवताओं से शत्रुता न करे और मेरे कुल से दैत्यपन उठजावे और यह भी मैं आपसे मांगता हूं कि मुझको आपकी नवधाभक्ति प्राप्त हो तुम्हारे भक्तों में से मैं विशेष प्रीति करूं सब जीवों पर कृपा रक्खूं तुम्हारी माया मुझपर कुछ फल न करे इसके सिवाय और जो कुछ उचित हो मुझको वरदान दीजिये आप हरप्रकार से मुझे अपनी शरण में लीजिये इतना वर मांग बाणासुर शिवजी के चरणों पर गिरपड़ा और प्रेम की अधिकता से आंखों से अश्रु की धारा बहचली और मारे प्रीति के जिह्वा कुछ कह न सकी यह दशा बाणासुर की देखकर शिवजी ने अतिप्रसन्न होकर बाणासुर को धरती से उठालिया और हँसकर कहनेलगे कि हे बाणासुर ! तुम हमारे बड़े भक्त हो हमने तुमको अपना करलिया जो वर कि तुमने मांगा वह सब हम तुमको देते हैं और तुम हमारे गणों के राजा होकर महाकाल के नाम से प्रसिद्ध हो किसी से परास्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न होंगे हमारी कृपा से सब देवता तुम्हारे सेवक होंगे तुमपर माया अपना फल न करेगी और जो मुझको बहुत प्रिय हैं वह तुमसे बहुत प्यार रक्खेंगे यह कह बाणासुरको दया की दृष्टि से देखा फिर अपने दोनों हाथ बाणासुर के ऊपर फेरदिये तब बाणासुर ने शिवजी की बड़ी स्तुति की जिसको सुनकर शिवजी तो अन्तर्धान हुये और बाणासुर महाकाल गणपति होकर शिवजी की सेवा में पहुँचा ॥

पचपनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम नागासुर अर्थात् गजके बध का वर्णन करते हैं कि जिसतरह शिवजी ने उसको अपने त्रिशूल से बधकर अपना गण बनाया कि जब शिवजी की आज्ञा से जगदम्बा ने विष्णु और हम पर कृपा करके देवताओं और मुनीश्वरों आदि के उपकार के निमित्त महिषासुर का नाश किया तब उसके पुत्र गजासुर नामीने बहुत दुःखी होकर अपने पिता के बध को स्मरणकर चाहा कि देवताओं से बदला लेवैं इसी इच्छा से वह तपके निमित्त वन में चलागया और हमारे प्रसन्न होनेके लिये उसने अति परिश्रम के साथ तप किया उसके तप करने की यह इच्छा थी कि जो स्त्री या पुरुष कामजित् नहीं वे मुझे न मार सकें सो वह गजासुर हिमनग द्रोणीमें स्थित होकर ऊर्ध्वबाहु किये आकाश में दृष्टि लगाये अँगूठे के बल खड़ाहुआ इसी प्रकार वह बहुत वर्षोंतक खड़ारहा जिससे उस में तपका ऐसा तेज झलकने लगा कि सूर्य भी उसके सामने कान्तिहीन होगया जब गजासुर का तप पूर्ण होगया तो उसके शरीर से अग्नि की ज्वाला उठी जो अपने तेज से संसारभर को जलानेलगी धरती भर दिक्पालों समेत जलने लगी समुद्र नदी सहित घबड़ाये ग्रह नक्षत्र आदि गिरनेलगे महाउल्कापात हुआ दशों दिशा जलने लगीं सो देवता मुनिआदि महादुःखी हो मेरे समीप पहुँच गजासुर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के तपका हाल कहनेलगे कि तुम कृपा करके गजासुरके पास जाकर वरदान दो कि हम ऐसे दुःखसे छूटें हम आपकी शरणमें आये हैं सो हम भृगु और दक्ष आदि अपने पुत्रों को साथ लिये हुये गजासुर के तपके स्थानपर गये और उसके ऐसे तपको देखकर सब आश्चर्य में हुये हमने कहा कि हे गजासुर ! हम प्रसन्न हैं जो इच्छा हो वह वर लो तो गजासुरने नेत्र खोल प्रणाम किया फिर स्तुति कर कहा कि जो पुरुष अथवा स्त्री कामदेव के आधीन हैं वह मुझको किसी दशा में न मारसकें तीनों लोकमें मुझको कोई न जीतसके न मुझपर कोई शस्त्र चलाने के योग्य हो मैं तीनोंलोकसे अधिक बलवान् तीनों भुवन को अपने आधीन करूं हमको तीनोंलोक का सुख प्राप्त रहे यह सुन हमने कहा कि अच्छा यह वर हमने तुमको दिया यह कहकर हम चलेगये और गजासुरने अपने घर पहुँच बहुत सेना इकट्ठीकर तीनों भुवनको जीतलिया और निष्कण्टक राज्य करता रहा और देवताआदि को अपने आधीनकर उनके सब रत्न छीनलिये प्रजा का पालन भलीभांति करता था इसीप्रकार वह बहुत दिनोंतक राज्य करता रहा निदान वह धर्मके विरुद्ध पाप करनेलगा और ब्राह्मणों को नाना प्रकारके दुःख देनेलगा और मनुष्यों किन्तु देवताओं से भी सेवा कराने लगा और तपस्वियों, योगियों और धर्मवानोंको बहुत सताने लगा क्योंकि उस को अपने पिता के बध का स्मरण सदा बना रहता था अकस्मात् एक दिन गजासुर आनन्दवनमें जो शिवजीकी राजधानी है बड़े अहंकार-पूर्वक पहुँचा उसके जाने से काशीवासी अतिभयवान् हो शिवलोक में जाकर शिवजीकी स्तुति करने लगे और जो २ उत्पात गजासुर ने काशी में किये थे वह सब विस्तार से वर्णन किये और कहा कि गजा-सुरने तीनोंलोक को जीतकर काशी में अपना चरण रक्खा है उसने सबको अपने अन्याय से दुःखी किया है तुम्हारे सिवाय उसको और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोई विजय करनेवाला नहीं वह बड़ा बलवान् हृष्ट पुष्ट और शरीरधारी है हाथी की गति चलता है जिसके चलने से पर्वत चलते हैं और वृक्ष टूटकर गिरपड़ते हैं और जिसकी आज्ञासे बादल आकाशसे उड़जाते हैं उसके भयसे समुद्र सूखजाते हैं उसके शरीर की लम्बाई सौ हज़ार योजन है और उतनाही चौड़ान है और वह चौकोण बना हुआ है और नाना प्रकार की माया करता है वह इस समय बाराणसी क्षेत्र में सबको कष्ट देरहाहै जोकि तुम्हारे भक्तोंने उसके हाथसे बड़ाकष्ट पाया है इस लिये तुम दैत्यका बधकर सबको प्रसन्न करो काशी सदा आपसे रक्षित रही है यह सुन शिवजी तुरन्त त्रिशूल लेकर गजासुरके बध के लिये काशीजी में पहुँचे शिवजीने ऐसा भयंकर नाद किया कि दैत्य सेनामें बड़ा हाहाकार मचा तब काशीवासी जय २ शब्द कह प्रसन्न हुये जब गजासुर ने शिवजी को त्रिशूल लिये हुये देखा तो शिवजी को धमकाकर बहुत गर्जा शिवजी और गजासुर लड़नेलगे उस समय विचित्र युद्ध हुआ कि गजासुरने जो २ शस्त्र शिवजी पर चलाये शिवजीने सबको काटकर ऐसा भयंकररूप धारा जिसको देखकर सब दैत्य युद्धस्थान छोड़ भागगये यह दशा देखकर गजासुर नङ्गीतलवार अपने हाथमें लेकर शिवजीके मारनेको चला और कहा कि अब तुम को जाने नहीं देता शिवजीके गण भागकर शिवजी के शरणागत हुये शिवजी ने गणों को अभयकर इच्छा की कि अब गजासुर का बध करना चाहिये और इस विचारसे कि यह किसी और के हाथ से न माराजावेगा इस लिये तुरन्त अपने त्रिशूलसे तृणके समान गजासुरके शिर को छेद लिया त्रिशूलके लगनेसे गजासुर पवित्र होगया और दैत्योंके मार्ग से च्युत हुआ और अपने को छत्रके समान शिव के शीशपर देख बड़ी प्रसन्नतापूर्वक शिवजी से बिनती की कि हे शिवजी ! तुम परब्रह्म हो मेरे बड़े भाग्य हैं जो आपके हाथ से मेरी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मृत्यु हुई और सब पापों से शुद्ध होगया मेरी यह विनय है कि आप कृपा करके मुझे परमपद कृपा करें आप सबसे श्रेष्ठ मृत्युञ्जय हैं संसार में एक न एक दिन सब मरेंगे ऐसी मृत्यु जो मुझको मिली है उसको वेदोंने बहुत कठिन कहा है मुझे अब जीने की इच्छा नहीं है इस लिये आप मुझको मारडालें ऐसे सात्त्विकी वचन सुनकर शिवजी ने कहा कि हम तुम्हारे ऐसे वचनों से प्रसन्न हुये वर मांगो गजासुर ने कहा कि जो आप इतने प्रसन्न हैं तो मेरी यह इच्छा है कि आप मेरे शरीर के चर्म का प्रतिदिन धारण किया करो और तुम्हारे त्रिशूल से हरदिन मेरे शरीर को स्पर्शन हुआ करे और कृत्तिवासा के नाम से प्रसिद्ध हो जिसको मनुष्य मुखपर लातेही अपना मनोरथ पावें यह वचन गजासुर का सुनकर शिवजीने कहा कि 'तथास्तु' फिर शिवजी बोले कि तेरा यह शरीर हमारा लिङ्ग होकर कृत्तिवासेश्वर के नामसे ख्यात हो जिसके केवल दर्शनहीसे मोक्ष प्राप्त हो और दर्शन करने वाले के सर्व पाप तुरन्त नष्ट होजावें जितने हमारे लिङ्ग काशी में हैं उन सब में यह लिङ्ग सब से बड़ा मणिके समान हो यह कहकर शिवजीने गजासुर को परमगति दी उस स्थान पर बड़ा उत्सव हुआ फिर हम सब बिदा होकर अपने अपने लोक को गये यह शिवजी का चरित्र गजनाशन दोनों लोकमें आवागमन से छुड़ादेता है जो इसको सुने सुनावे उसको शिवजी अपना करलेते हैं ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम नृसिंहावतार का वर्णन सुनाते हैं कि जिस तरह पर विष्णुजीने नृसिंहावतार धारण किया और दितिके दोनों पुत्रों को देवताओं के आनन्द देनेके लिये बध किया शिवजी का कैसा अद्भुत चरित्र है कि जब विष्णुजीने नृसिंहरूप धारणकर दितिके दोनों पुत्रों को नष्ट किया तब दितिने बड़ा दुःख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया और महाशोकवती हुई तब दुन्दुभिने जो दिति का भाई था उसे बहुत समझाया पर दितिके शान्त न होने से वह ऐसा कष्ट न सहसका इससे उसने विचार किया कि किसी प्रकार देवताओं को कष्ट देना उचित है क्योंकि उन्हों ने विष्णुजीसे हमारे बहनोई को मरवा डाला है वे किसके बलपर भरोसा रखते हैं किसके कारण अमर हैं मुझको कौन उपाय करना चाहिये जिससे वे दुःख पावें निदान बहुत शोच विचारकर उसने इस बातपर निश्चय किया कि ब्राह्मण वेद से अपनी रक्षा करते हैं और देवता ब्राह्मणोंसे जब ब्राह्मण नष्ट होजावें तब वेदभी विनाश को प्राप्त होंगे जब वेद नष्ट हों तो आपही देवता भी निर्बल होंगे तब सबको जीतकर देवताओं का राज्य हम भोगेंगे और जिस प्रकारसे ब्राह्मण संसार में बड़े हैं कि वह वेदके मार्ग पर चलते हैं उसी प्रकार काशीमें ब्राह्मणों का अच्छा घर है इस लिये पहिले काशी में जाकर ब्राह्मणों को मारना चाहिये फिर और स्थानों पर पहुँचकर सब को खाजाऊंगा यह विचार दुन्दुभि काशी में गया और हज़ारों ब्राह्मणों का बध करडाला कि जब ब्राह्मण कुश लेने के निमित्त वनमें जाते थे वह तुरन्त उसीस्थान पर पहुँचकर ब्राह्मणों को खाजाता था यहां तक कि कोई हड्डी भी न छोड़ता था वह बड़ी माया करताजाता था वन में पशु नदी में मगर और पृथ्वी में मनुष्य बनकर ब्राह्मणों को खाडालता था जब कि दोपहर के समय मुनीश्वर योग और ध्यान में लगते थे और रात्रि को भी उन्होंके समान अपना स्वरूप रच चख जाता उसने अपना स्वरूप बना बनाकर असंख्यमुनीश्वरों को खाया और किसीने इस बातको न जाना यहांतक कि वह हड्डी भी नहीं रखता था एक दिन रात्रिके समय एक शिवभक्त शिवजी की पूजा करता था जब वह ध्यान लगाकर शिवजी का स्वरूप देखने लगा तब दुन्दुभिने सिंह का स्वरूप बनाकर चाहा कि उसको खाजाऊं पर अपने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में इतना बल न देखा कि पर्वत के समान बड़ा होकर उसको खाना तो क्या बरन उसको पकड़ न सका तब श्रीशिवजी प्रकट हुये उसने चाहा कि शिवजी को भी ग्रास करजाऊँ और शिवजी की ओर चला शिवजी महाकोपित हुये उसको शिवजीने पकड़लिया और हाथों से मार मार कर मारडाला उस शिवभक्तके प्राण बचगये नेत्र खोल शिव जीके दर्शन पाये उस समय सब काशीवासी इकट्ठा हुये और दुन्दुभि को जो भयङ्कररूप से पड़ा था देखकर प्रसन्न हुये क्योंकि उस समय तक ब्राह्मणोंके गुप्त होजानेसे काशीके लोग आश्चर्य में थे ब्राह्मणोंने मिलकर शिवजी की स्तुति की और विनय की कि इसी स्वरूपमें आप यहीं स्थित रहकर हरव्याघ्रके नामसे प्रसिद्ध होवें अपनी नगरी काशी की रक्षा करें यह सबसे श्रेष्ठ स्थान होगया क्योंकि यहां आप प्रकट हुये हैं तुम्हारे दर्शनसे हम अतिप्रसन्न हुये यहां आकर हमारी रक्षा करो शत्रुओं का विनाश करो यह सुनकर शिवजी 'तथास्तु' कहकर बोले कि जो निश्चयपूर्वक हमारे रूप को देखेगा उसके सब दुःख दूर करूंगा और उसको दोनों लोकमें बड़ा सुख कृपा किया जावेगा इस हमारे चरित्र का स्मरणकर जो युद्धके निमित्त जावेगा उसको निस्सन्देह विजय प्राप्त होगी तब हम और विष्णुजी सब देवताओं समेत आकर शिवजीकी स्तुति करनेलगे फिर विनय की कि आपने दुन्दुभि को मारकर हम सब को तीनों भुवन समेत रख लिया हमपर कृपा किया करो हम आपके सेवक और आप हमारे स्वामी हैं यह सुनकर शिवजी तुरन्त उसी लिङ्गमें प्रवेश कर अन्तर्धान हुये और विष्णु और हम सब देवताओं और ब्राह्मणों समेत अपने अपने स्थान को गये ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

इतना कह फिर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! किसी समय में उत्पल और विदल दो दैत्य बड़े बलवान् उपजे वे दोनों वनमें जाकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुत वर्षोंतक कठिन तप करते रहे और हमारी भक्तिमें उन्होंने एकही पाँवसे खड़े होकर बड़ा कालक्षेप किया सो हम प्रसन्न होकर उनके वर देने को गये और कहा कि वर मांगो तब दोनों भाई कहनेलगे कि हम किसी मनुष्यके हाथसे न मारे जावें और सबसे अधिक बलवान् रहैं हमने शिवजी का स्मरण कर कहा कि ऐसाही होगा सो वह अपने २ स्थानों को चलेगये उन्होंने तीनों लोक को जीत लिया वे हर प्रकार देवताओं को दुःख देनेलगे उनके अधिकार धन और हर प्रकार की वस्तु बढ़गई देवता और मुनि दुःखी होकर हमारी शरण में आये और सर्व वृत्तान्त कहा हमने कहा कि वे तो हमारे वरदान से मारेजाने के योग्य नहीं केवल शिवजीके हाथसे मरेंगे इससे तुम शिवजी का ध्यान करो उनकी कृपासे तुम्हारा दुःख दूर होगा सो देवता आदि बिदा हुये कुछ दिनों के पीछे तुम उन्हीं दैत्योंके समीप गये और तुमने उनकी बहुत प्रशंसा कर उनकी सामग्री को भी बहुत सराहा और फिर तुम गिरिजा की प्रशंसा करने लगे और तुम बहुत गिरिजा के सुन्दरता की प्रशंसा कर बिदा हो चले आये दोनों दैत्योंने गिरिजा की इतनी प्रशंसा सुनकर चाहा कि किसी ढबसे गिरिजाको छीनलावें और बहुत समयतक इसी विचार में रहे कि कब गिरिजा हमारे हाथ में आवेगी यह सब वृत्तान्त शिवजी जानगये एक दिन शिवजी ने एक विचित्र लीला रच आपतो गणों के साथ बाजी खेलनेलगे और गिरिजाजी ने अपनी सखियों के साथ इतना खेल किया कि जो सबके मन भाया अकस्मात् मृत्यु के पञ्जे में फँसे हुये दोनों दैत्यों ने आकाशमार्ग से आकर गिरिजाजी को खेल करते देखा और तुरन्त विमान उतार गणोंके स्वरूपसे गिरिजाजी के सामने गये और इच्छा की कि शिवा को लेभागें यह दशा देख शिवजीने गिरिजा से युक्तिपूर्वक कहा कि यह तुम्हारे गण नहीं बरन दैत्य हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह किसी और पुरुष के हाथ से मारे नहीं जासक्के इनको तुम्हीं वध करो यह शिवजीकी सैन समझकर गिरिजा ने चाहा कि दोनोंका विनाश करूं सो गिरिजाने युक्तिसे अपने गेंद को उन दोनों के ऊपर फेंकदिया वे देरतक घूमते रहे अन्तमें पृथ्वी पर गिरकर मरगये उस समय विष्णु और हम और सब देवताओंने आकर उस स्थानपर जहां ज्येष्ठेश्वर उपलिङ्ग है शिवजी की और गिरिजा की स्तुति की और विनय की कि आप भक्तों के निमित्त अवतार धारण किया करते हैं जैसा कि इस समयभी गयन्दकेशलिङ्ग आपका प्रकट हुआ निदान शिवजी से बिदा हो सब अपने २ स्थानों को चलेगये और काशी-वासी भी बिदा हुये और वह शिवजी का लिङ्ग उसी स्थानपर स्थित रहा जिसकी सेवासे दोनों लोक में असंख्य आनन्द मिलता है वह लिङ्ग कुण्डलेश के नाम से प्रसिद्ध है हे नारद ! यह चरित्र शिवजी का जो हमने तुमको सुनाया बड़ा सुखदायक है जो कोई इसको सुने सुनावेगा वह दोनों लोक में बड़ा ही आनन्द पावेगा यह युद्धखण्ड जो हमने तुमको सुनाया उस के सुनने और पढ़ने से सब पाप नष्ट होजाते हैं कभी भी तीनों व्याधि सामने न आवें और असंख्य द्रव्य धन प्राप्त हो शत्रुभी कभी बलवान् न हो और मोक्ष पाकर आवागमन से छूटे ॥

इति श्रीशिवपुराणेब्रह्मानारदसंवादेपञ्चमखण्डस्समाप्तः ॥ ५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवपुराण भाषा ॥

छठा खण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

इतनी कथा सुनाकर श्रीसूतजी शौनकादि मुनियों से बोले कि हे तापसो ! जब ब्रह्माजी कहचुके तो नारद मुनि ने सन्देहयुक्त होकर फिर पूछा कि हे पिता ! आपने अन्धकासुरकी कथा कही पर मुझे उसमें कुछ संशय उपजा है कृपा करके आप उसको निवृत्त करें कि शिवजी मन्दराचल को कैलास छोड़कर कब गये कृपा करके आप इस कथा को विस्तारसे वर्णन करें ब्रह्माजीने नारद की बहुत सराहना कर कहा कि पूर्वसमय में एक दिन शिव जो कैलास के महाराजा हैं विश्वेश्वरपुरी को गये साथमें श्रीजगदम्बा गिरिजाजी महाराणी और बहुत गण भी थे सो विष्णु और हमभी देवता और अपने कुलपरिवार और गणों समेत मुक्तिपुरीमें शिवजीके समीप गये और इन्द्र, देवता, मुनि, सिद्ध, अहीश आदि भी सब विद्यमान हुये उस स्थान पर शिवजी के तेज और सभा के शृङ्गार को हम कहांतक वर्णन करें अकथ्य है निदान शिवजी हम सबों को साथ लिये हुये विश्वनाथ के समीप पहुँचे पहिले मणिकर्णिका में स्नान कर फिर विश्वनाथजी के दर्शन किये और अतिप्रेम से विश्वनाथजी की पूजाकर शिवजी अति प्रसन्न हुये फिर गिरिजाने भी विश्वनाथ की पूजा की फिर गणों ने विश्वनाथ के पूजन में अपना प्रेम दिखाया और बड़ी स्तुति की फिर विष्णु हम फिर सब देवता, मुनि, सिद्ध आदि विश्वनाथजी की पूजाकर स्तुति करतेरहे जब कि कैलासवासी शिवजीको ऐसी लीला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करते विश्वनाथजी ने देखा तो विश्वनाथ प्रसन्न होकर दोनों भुजा फैलाकर गिरिजापति से मिले और प्रेम की अधिकता से आंसू बहे कुशल प्रश्न और अन्य संसारीरीतों के पूछने के उपरान्त विश्वनाथजी ने कहा कि हे गिरिजापति, चन्द्रभाल! हम तुम एकही रूप हैं कुछ किसी प्रकार का अन्तर नहीं है संसार के उपकार निमित्त तुमने सगुण रूप धारण किया है हम पर तुम्हारी बड़ी अनुग्रह हुई जो आप यहां आये अब जो आज्ञा हो कहिये यह सुन गिरिजापति शिवजी ने कहा कि हे विश्वनाथ! हम और तुम किसी प्रकार से दो और जुदा नहीं हैं तुम तो तीनोंलोक के स्वामी हो मुझको आज्ञा दो और आप इसी स्थानपर स्थित रहकर संसार का राज्यकर तीनों लोक का पालन कीजिये यह सुन विश्वनाथजी हँसकर बोले कि तुम तो पूर्णरूप से शिव ब्रह्म अनादि और आदि अन्त से रहित हो इसी स्थान पर अपनी राजधानी नियत कर अपने गणों और गिरिजासमेत रहो और कुछ दिनोंतक कैलास के समान देवताओं और मुनीश्वरों को लिये हुये यहां स्थित रहकर भरतखण्ड को कृतार्थ करदो और संसारी मनुष्यों के समान अनुग्रहकर शत्रुओं का नाश करो जितना कि तुम कैलास को प्रिय जानते हो उसी प्रकार इस स्थान को भी प्रिय जान कर स्थित रहो जो कोई इस पुरीमें रहे उसको मोक्ष दो आपकी आज्ञा में तीनों लोक हैं आपसे विरुद्ध होकर कहीं किसी का ठिकाना नहीं आप सबसे श्रेष्ठ और स्वामी हैं आपके सेवक तीनों लोक हैं विष्णु और ब्रह्मा भी तुम्हारे अधीन हैं उन्होंने तुम्हारी ही सेवासे ऐसे २ अधिकार पाये हैं और विष्णु और ब्रह्मा की रक्षा तुम्हारे अधीन है जब कि इनको कोई दुःख पड़े तब आपको उनकी सहायता करनी उचित है ब्रह्मा सब सृष्टि उपजाते हैं विष्णु पालते हैं इन्द्र इन्हीं दोनों की आज्ञा से राज्य करते हैं इसलिये संसार के उपकार के निमित्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनके कार्य किया करना जो कोई काम इनसे न बनपड़े उसके पूरे करने में अपना साहस अवश्य करना ऐसे वचन विश्वनाथजी के सुनकर गिरिजापति बोले कि हे देवताओं के देवता, महादेव ! तुम परब्रह्म हो काल हो जैसी आज्ञा आपने मुझे दी है उसका पालन करूंगा यद्यपि कैलास पर्वत जहां हमारे नौकर चाकर हैं हमको प्रिय है पर हमको काशी कैलास से भी अधिक प्यारी है हम काशी में रहेंगे यह सुन विश्वनाथजी अन्तर्धान होगये और सदाशिव के पूर्णांश से गुप्त होकर विश्वनाथ उसी स्थान पर रहे जो मनुष्य वहां मरता है उस को तारकमन्त्र देकर मुक्ति कृपा करते हैं और कैलासनाथ गिरिजापति भी गिरिजासमेत उसी स्थानपर स्थित हुये इसी से काशी बड़ी सिद्धि-पीठ हुई जहां जीव जप, तप, संयम और भक्ति बिना मुक्ति पाते हैं वह काशी तीनोंलोकसे श्रेष्ठ और प्रज्ञानक्षेत्र के नामसे तीनोंलोकमें प्रसिद्ध है वहां शिवजी की सगुण निर्गुण दोनों मूर्ति दयाभाव से अपनी सभासमेत विराजमान हैं सो हम विष्णु, देवता, मुनि, सिद्ध, नाग, देवताओं समेत उन्हीं दोनों मूर्तियों की सेवा करते हैं और स्तुतिकर शीश झुकाते हैं जिस तरह से कि काशी में शिवजी गिरिजापति ने राज्य किया उस कथा को हम वर्णन करते हैं कि विश्वनाथ की आज्ञा पाकर शिवजी गिरिजापति काशी में स्थित हुये और हर प्रकार से मनुष्यों के कष्ट हरे और काशी को अपनी राजधानी बनाया जो बड़ी मुक्ति देनेवाली है गिरिजाभी उसी काशीस्थानमें रहीं जो अन्नपूर्णेश्वरी देवीके नामसे प्रसिद्ध हुईं इसीसे काशी में कोई भूखा नहीं रहता वे अपनी प्रजा के सब मनोरथ पूरे करती हैं और जो शिवजीने अपनी एकमूर्ति उपजाई थी जिसका भैरव नामहै उसने हमारे पांचवें शिर काट डाले और त्रिशूल को हाथ से लेकर बड़ा नाद किया मैंने उस मुखसे शिवजीकी निन्दा की थी इसीसे भैरव शिवजीकी आज्ञासे प्रकट होकर

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमारा शीश काटडाला था सो भैरवको हमारे शिर काटने से चाण्डाली हत्या लगी थी इससे वे संसार भर में फिरते रहे जब कि वे काशीजी में आये तो तुरन्त उनकी हत्या जाती रही जहां पर कि वह हमारा शीश गिराया उस स्थान पर शिवजी ने बड़ा नृत्य किया वह बड़ा तीर्थस्थल होगया और कपालमोचन के नाम से ख्यात हुआ वह तीर्थ सर्वपापों को नष्ट करता है सो भैरव जो शिवजी ही हैं जिनका ऊपर वर्णन कियागया तो शिवजी ने इन्हीं भैरव को कोतवाली का पद दिया और कहा कि तुम्हारा पाप नाश होगया यह लीला हमने इस लिये कही कि संसारमें फिर ऐसा कोई कर्म न करे तुम काशीजी की रक्षा करते रहो पापियों को दण्ड दिया करो और सब प्रजा को कृतार्थ करो यद्यपि भैरव का चरित्र बहुत बड़ा है पर विस्तारभय से कहा नहीं गया पर जब भैरवकी उत्पत्ति और अवतारका वर्णन करेंगे वहां उनका वर्णन विस्तार से किया जावेगा ॥

दूसरा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि एक दिन गिरिजापति गणों को साथ लेकर नन्दीश्वरपर आरूढ़ और गिरिजा को भी बैलपर साथ लिये आनन्द-वन के देखने को चले और आनन्दवन में पहुँचकर गिरिजा से उस क्षेत्रकी लीला कह उसकी स्तुति करते विचरनेलगे उस क्षेत्र की प्र-शंसा कौन जिह्वा से होसक्ती है उसमें नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प जैसे मन्दार, कनैर, चम्पा, केतकी, अनार, चमेली, मालती, कुन्द, मौलसिरी, जाही, जुही, कमल जिनमें भौंरे अन्धे होकर लिपटते थे खिलेहुये थे और उत्तमोत्तम ताल तमाल आदि वृक्षों पर पक्षी मधुर-स्वर से गान करते तीनों प्रकार की पवन चलती मुनीश्वर नदी कि-नारे अपना नियम करते सिंह आदि वैरभाव छोड़ अन्य जीवों को कुछ दुःख नहीं देते थे ऐसा उत्तम वन देखकर गिरिजापति अति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसन्न हुये और माली को बुलाया और उसको पारितोषिकादि दे कृतार्थ करदिया फिर वन के भीतर पैठे और गिरिजा से कहा कि जिस तरह हम तुमको चाहते हैं उसी तरह यह काशी हमको प्रिय है उसी प्रकार यह आनन्दवन हमको प्यारा है जिसमें मरने से मोक्ष प्राप्त होती है बरन यह ब्रह्मज्ञान का क्षेत्र है यहां मरकर तुरन्त भक्तजन आप शिवजी होजाते हैं यह आनन्दवन हमको प्राणके समान प्रिय है इसके रहने वाले सदा प्रसन्न हैं यह गिरिजा से कह शिव आगे चले देखा कि आनन्दवन में हरिकेश अतिप्रेम से तप कररहे हैं और अशोकवृक्ष के नीचे बैठेहुये शिवशिव कहरहे हैं उनमें केवल त्वचा और नाड़ियां दिखाई देती हैं मांसका नाम नहीं मानों तप आपही रूप धार तप कर रहाहै जिसके चारों ओर वनके जीव सेवा कररहे हैं बड़े २ भयंकर जीव जैसे सिंह सर्प आदि अपने स्वाभाविक वैरभाव को छोंड़ रक्षा के लिये खड़े हैं और उन हरिकेश पर नाना प्रकारकी वनस्पति उगी हुई हैं यह हरिकेश की दशा गिरिजा ने देखकर शिवजीसे कहा कि इसको वर दीजिये जो यह मांगे यह तो आपका भक्त है तुम्हारे भरोसे पर जीता है इसके भाल पर हस्त कमल रक्खो यह सुन शिवने बैल से उतर उसके शरीर को छूकर कृतार्थ कर दिया हरिकेश ने नेत्र खोल दिये शिव को देखा कि कोटि सूर्यकी प्रभा समान महातेजवान् और कोटिचन्द्र के सदृश भस्म रमाये पञ्चमुख त्रिनेत्र लालीलिये दश भुजा गौरशरीर गिरिजा वामभाग में भाल में चन्द्रमा विराजमान आगे खड़े हैं ऐसा स्वरूप देखकर यक्षपति अर्थात् हरिकेश अपने मन में फूला न समाया शरीर के रोम खड़े होगये मुख से बात नहीं निकलती थी फिर उसने शिवजीको प्रणाम किया और स्तुति करने लगा और कहा आपने जो मेरा शरीर छुआ मुझे अमृत से भी अधिक स्वाद मिला मैं आपकी शरण हूं आप हमारे स्वामी हैं यह सुन शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरिकेश के मांगे बिन वर देनेलगे कि हरिकेश ! तुम बड़े भक्त हो तुमको हर प्रकार का आनन्द प्राप्त हो यह काशीपुरी मुझे अति प्रिय है इसकी तुम रक्षा किया करो और शत्रुओं को क्रोधित होकर दण्ड दो भलोंका पालन करो तुम दण्डधर और दण्डकर होकर दण्डपाणि के नामसे प्रसिद्ध होगे और हमारे गणों के भी स्वामी होकर जिसको अनाचार करते देखो उसको शिक्षा करो और तुमको दो गण सम्भ्रम और उद्भ्रम अपनी आज्ञा के प्रतिपाल के निमित्त कृपा होते हैं वे पापियों को भलीभांति दण्ड देंगे और तुमको हम आज्ञा देते हैं कि काशी में हमारे भक्तों के सिवाय और कोई बसने न पावे व अभक्तोंको यहांसे दुःख दे निकाल दो तुम यहां अन्न देनेवाले और प्राण के दाता और ज्ञानदाता होकर हमारी आज्ञा से मुक्ति देनेवाले भी होगे जो मनुष्य तुम्हारी सेवा करके हमारी पूजा करेगा वह मुक्ति पावेगा जो मनुष्य मोक्षकी कांक्षा करता है उसको उचित है कि वह पहिले हमारी सेवा करके हमारी पूजा इस स्थानपर करे तुम हमारे गणों के आगे चलनेवाले होकर दण्ड का देना अपने आधीन समझो यह कहा और अपने बैलपर चढ़कर चले और पार्वती समेत अपने स्थान पर पहुँचे उस दिन से दण्डपाणि और दण्डविनायक काशी के निवासियों को आनन्द देकर वहां स्थित रहते हैं वे दुष्टों के लिये बड़े भयंकर शिवजी के भक्तों के दुःख दूर करनेवाले रहा करते हैं दोनों गण सम्भ्रम और उद्भ्रम शिवजीके शत्रुओंको उपदेश करते हैं और दण्डपाणि शिवजी की इच्छानुसार सर्वकार्य करते हैं वीरभद्र ने दण्डपाणि का अनादर किया और अप्रसन्न होकर दूसरे स्थानपर जारहे अर्थात जब उन्होंने दण्डपाणि की सेवा न की इससे वीरभद्र को काशी का वास प्राप्त न हुआ और इसीसे अगस्त्यमुनि भी काशी में न रहसके उनको दण्डपाणि की सेवा न करने से काशी छोड़देनी पड़ी और एक मनुष्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धनंजयनामी वैश्य वर्ण बड़ाधनवान् शिवजी की भक्तिमें मन न देता था इसी प्रकार उसकी माता भी कुछ प्रेम शिवजीसे न करती थी जब धनंजय की माता मरगई तो धनंजय उनके अस्थि काशी में लाया पर उसको कुछभी शिवका प्रेम न था दण्डपाणिने शिवजीकी इच्छा से यह चरित्र किया कि उनके गणने धनंजयकी माताकी हड्डियोंको देखा गणका देखनाही था कि वे हड्डियां वहीं गुप्त होगईं धनंजय निरुपाय हो घर लौट आया इसीप्रकार काशीमें रहकर जो दण्डपाणि को सेवा से प्रसन्न न रक्खे तो वह काशीमें रहने नहीं पाता और उस पर बड़े बड़े कष्ट पड़ते हैं सो जिसको काशीमें रहने की इच्छा हो वह दण्डपाणि की अवश्य पूजा करे और शिवकी भक्तिकर मुक्ति पावे ॥

तीसरा अध्याय ॥

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता ! हमारी इच्छा है कि आप हरिकेशके सम्पूर्ण वृत्तान्त आदिसे अन्त तक वर्णन करें ब्रह्माजी बोले कि किसी समयमें रत्नभद्रमुनि यक्षपति गन्धमादन पर्वतमें रहा करते थे उनके घरमें संसार की सर्ववस्तु थी और वह बड़ा कुलपरिवार और सन्तानवान् था जितने यक्ष थे उन सबका यही राजा था हाथी, घोड़ा, पालकी आदि सब सामग्री वस्त्र और रत्नोंसमेत सब कुछ थी और वे महा-सुन्दर शिवजी की भक्तिमें दृढ़ और स्त्रियों की संगतिसे भिन्न रहा करते थे उनकी स्त्री पतिव्रता थी वह रत्नभद्र की इच्छा बिन कोई कार्य न करती रत्नभद्र उसको बहुत चाहता था उसके समान पति की प्रिया स्त्रियां लोकमें कम हैं वह रत्नभद्र को शिव जानती थी सो यह दोनों स्त्री पुरुष संसार की भलाईके कार्य करते और इसमें शिवजी की प्रस-न्नता जानते साधु को प्रिय जानते और शिवजी के समान साधुको समझ उसकी सेवा करते और शिवजी के पूजनपाठ में लगे रहकर सदा परिश्रम और प्रयत्न करते उनके मन शिवमन्दिर थे और उदारता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में विख्यात थे और नित्य उठ पार्थिवपूजन करते और रुद्राक्ष हाथमें लिये भस्म तनमें लगाये जिसका नाम पूर्णभद्र था माता पिता अति प्रसन्न हुये जब उनको जरावस्था प्राप्त हुई और दोनों मरे तो शिवपुरी में पहुँचे उनकी मुक्ति होगई पूर्णभद्र ने उनका क्रियाकर्म किया फिर आप राजा होकर चतुरङ्गिणी सेनासे सदा आनन्द करता रहा पर जब कोई उसके सन्तान न हुई इससे वह इस विचारसे कि पुत्र दोनों लोक में आनन्द देता है और स्वर्ग में पहुँचाता है और गृहस्थाश्रम का अलंकार उसीसे है और अपने कुलके लिये सूर्यके सदृश है और जो संसारकी अग्निमें जलगये हैं उनके लिये अमृतवत् है और जो दुःख-सागर में डूबगये हैं उनके लिये नाव है जिसके विना और किसी उपायसे गोत्र नहीं चलता अतिदुःखी हुआ उसको संसारी सुख दुःखसे बदलगया इस दुःखसे उसको सर्वपदार्थ अशुभ और व्यर्थ भासने लगे उसकी स्त्री कनककन्दलानामी और पतिव्रता भर्ताकी प्यारी शिवभक्ता दृढ़बुद्धि धर्म में अतिदृढ़ थी उसको पूर्णभद्र ने अपने समीप बुलाया और उससे कहा कि मु के बड़ादुःख उपजा है संसार की सामग्री सब मेरे घरमें उपस्थितहै पर मुझको कुछ भला नहीं भासता मैं क्या करूं कहां जाऊं मेरे दुःख का दूर करनेवाला कौन है सन्तान विन प्राण जीवन धन पद पर धिक्कार है वरन सहस्रों धिक्कार है यह कहकर रोनेलगा स्त्री ने ठंढी श्वास खींचकर कहा कि तुम ऐसे बुद्धिमान् होकर क्या व्यर्थ दुःख करते हो इसका उपाय मैं बताती हूं उपाय करनेवाले को लोकमें कोई वस्तु अप्राप्त नहीं जिनका मन शिवजीके प्रेममें मग्न है उनके सब मनोरथ पूरे होते हैं तुम शिवजी के शरण में जाओ क्योंकि उनकी सेवासे सब कुछ मिलता है वे सन्तान धन घर घोड़े हाथी स्त्री सुख आनन्द कुल मुक्ति मुक्ति सब देसक्ते हैं जो शिवजी के भक्त हैं उन को सब कुछ मिलसक्ता है विष्णुने भी शिवजी की भक्ति करके पालना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करने की पदवी प्राप्त की है और शिवजीकी कृपासे इन्द्रादि दिक्पति और शिलाद मुनि अपने पुत्रों सहित जिनका नाम मृत्युंजय और नन्दीश्वर प्रसिद्ध है और श्वेतकेतु उपमुनि अन्धक दैत्य जो भृङ्गी करके विख्यात हैं और दधीचिमुनि, ब्रह्मा, शुक्र, विश्वामित्र अर्थात् कौशिक, बाणासुर, गौतम, बृहस्पति आदि सब शिवजी की भक्ति करके कैसे २ पदपर पहुँचे हैं अर्थात् शिलादमुनि के पुत्र मृत्युंजय भृङ्गीके नामसे प्रसिद्ध होकर शिवजी के गणों में गिनेगये श्वेतकेतु कालफांसमें पड़कर भी प्राणसे बचा उपमुनिने शिवजीकी सेवासे क्षीर-समुद्र पाया दधीचि मुनिने सब देवताओं को परास्त किया ब्रह्माजीने सदाशिवजीकी सेवा से यह पद पाया है शुक्रने संजीवनी मन्त्र शिव जीसे पाया विश्वामित्रने शिवजीकी सेवासे दूसरी सृष्टि बनाई गौतम ने शिवजीकी सेवाकर अपने पाप छुड़ाये बृहस्पतिने काशी में शिव जीकी पूजा सब देवताओं के गुरु होगये शिवजी तो वेगही प्रसन्न होकर वर देनेवाले हैं यह बात वेद पुराण कहते हैं तुम निश्चय करके शिवजी की शरण जाओ यह सुन पूर्णभद्र आनन्दमें मग्न हो काशी में गये और शिवजीके समीप पहुँच उनको भलीभाँति गाना सुनाया क्योंकि नादविद्यामें अतिचतुर थे उसने इक्कीस मूर्च्छना और पांचसौ इक्यावन तान और बारह श्रुतिभेद जिनकी बहुतसी शाखा हैं शिवजी को सब सुनाई ऐसा अच्छा गाना यक्षपतिका सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये कहा वरदान मांगो पूर्णभद्र ने स्तुति की और चरणों पर ध्यान लगा चुपरहे ॥

चौथा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! पूर्णभद्र की स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये फिर कहा कि वर मांगो पूर्णभद्रने विनयकी कि मुझे सन्तान कृपा करो शिवजी अङ्गीकारकर अन्तर्धान होगये पूर्णभद्र फिर प्रसन्न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर घर आया और अपनी स्त्री से वर पाने का हाल कह सुनाया कुछ दिनोंके उपरान्त पूर्णभद्र की स्त्री गर्भवती हुई समय पाकर पुत्र उपजा जिससे उनको अतिप्रसन्नता हुई उसका नाम हरिकेश हुआ जब वह बालक आठ वर्ष का हुआ तो उसने शिवजी में बहुत प्रेम बढ़ाया जब वह बालक लड़कों में खेलता तो मिट्टी का शिवलिङ्ग बनाकर उत्तमोत्तम पुष्प मँगाकर पूजन करता और लड़कों से उस शिवलिङ्ग की पूजा कराता और शिव २ आप कहता और दूसरों से भी कहलाता निदान शिवचरित्र के सिवाय उसके कान और बातों में ध्यान न देते यही चर्चा रखता उसकी आँखों ने सिवाय शिवजी के और कुछ न देखा और सिवाय शिवजी के चरणोंके जो कमलवत् हैं किसीका ध्यान न किया और उनकी नाक ने और कोई सुगन्ध न सूंघी उसकी जिह्वा ने शिवनाम के स्वादके सिवाय और कोई स्वाद न चक्खा उसकी त्वचाने सिवाय सदाशिव को और किसी से स्पर्श न किया न उसके वाक्य ने शिवजी के विरोध कोई वचन स्वप्न में भी वर्णन किया हाथ शिवजी की पूजा में और पांव कैलासपति के क्षेत्रोंमें प्रवृत्त रहे निदान रात्रि दिवस उसको हरबातमें शिवजीसे काम था वह हरअवस्थामें शिवजी को देखता और सदा भस्म रमाये रुद्राक्ष के सर्वाङ्ग वस्त्र बनाये शिव २ कहते हुये अहर्निश बिताता पूर्णभद्र ने यह दशा अपने पुत्र की देख कहा कि हे पुत्र ! तुम हमारे बड़े शिवजी के कठिन तपसे उपजे हो तुमको उचित है कि गृहस्थधर्म धारण करो तपस्वियों के मार्ग को छोड़ो हमारे घर में सब प्रकार का धन द्रव्य उपस्थित है तुम राजनीति को देखो यह मार्ग जो तुमने अङ्गीकार किया है दरिद्रियों का है बाल्यावस्था में विद्याध्ययन और युवावस्था को भोगविलास में बिताकर तीसरी अवस्था तप में व्यय करो हमारे कुलका यही प्रचार है निदान हरिकेश अपने पितासे विकल्पित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर घर से भागगया जब नगर के बाहर गया तो उसे दिशाभ्रम होगया और अति चिन्ता से पश्चात्ताप करने लगा और कहा कि मैं तो बालकपन से घर में रहा अब कहां मारा मारा फिरूं मुझको कुछ नहीं सूझता यह दुःख मुझे पिछले जन्म के पापों से मिला हां एक समय मैंने अपने पिता के पास शैवलोगों से सुना था कि जिनको माता पिता छोड़ दें या कुलके लोग त्याग दें और जिसको कोई सहायक न हो और पापी, अधर्मी, दरिद्री, चिन्तित, भयभीत और जिनको कहीं शरण न मिले जिनके पास कुछ नहीं है जिनको यह कुछ न सूझपड़े जो संसार में सब तरह से अनाथ हो ऐसे मनुष्य के सहायक शिव और काशी है इस बातको मनमें विचारकर प्रसन्न हुआ और विदेशियोंसे काशीमार्ग पूछकर वहां पहुँचगया और बड़ा आनन्द पाया और मणिकर्णिकामें जाकर स्नान किया फिर विश्वेश्वर महादेव की पूजा की फिर आनन्दवन को गया और दृढ़तापूर्वक कठिनतप करनेलगा निदान जो वर शिवजी ने उसको दिया वह हम पहले कहचुके हैं हरिकेश ने अपने कुल को तारदिया वास्तव में शिव के भक्तों की ऐसेही महिमा है उसके माता पिता काशीवासी होगये शिवके भक्त अकेले मुक्त नहीं होते बरन कुलभरको मुक्त करते हैं यह चरित्र दोनों लोक में आनन्द देनेवाला है॥

पांचवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इसीतरह शिव काशी में राज्य करते थे कि एक महाबलवान् दुर्गनामी दैत्य देवताओं को दुःख देनेलगा जिससे धर्म नष्ट होगया उसको वर था कि तीनोंलोकमें पुरुषके हाथ से न मरेगा इस वरके बलसे उसने तीनों लोकको जीतलिया और पृथ्वी पर आकर ठहरा उस समय विष्णु और हम सब देवता मुनियों समेत शिवजीकी शरण गये यह सम्पूर्ण वृत्तान्त सुन शिवजीने गिरिजा से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा कि तुम इस शत्रुको बध करो यह आज्ञा पाकर गिरिजाने विन्ध्य-
वासिनी होकर सदाशिवजीके ध्यानके उपरान्त दुर्ग दैत्य को मार
डाला तबसे गिरिजा का नाम दुर्गा प्रकट हुआ और देवता आदिको
बड़ा आनन्द मिला फिर देवता दुर्गाकी स्तुति करने उपरान्त अपने
अपने लोकको चले गये इसी प्रकार बहुत दिनोंतक शिवजीने काशी
में राज्य किया जब कि राजा दिवोदासने कष्ट दिया तो शिवजी ने
काशीको छोड़ा और मन्दराचलमें जाकर बड़े उपायसे राजधानी गई
इतना सुन नारदजी आश्चर्यकर ब्रह्माजी से कहनेलगे कि वह दिवो-
दास कौन है जिसने शिवजीसे काशी छुड़ाई फिर शिवजीने किस
उपायसे काशी को पाया ब्रह्माजीने विस्तारसे यह कथा इस प्रकार सु-
नाई कि इससे पहिले पद्मकल्प स्वायम्भुव मन्वन्तरमें मनुके कुल में
एक राजा रिपुंजय उपजा जो अपने नामके समान क्षात्रधर्ममें अति
दृढ़ था और ब्रह्मभक्त और शिवपूजक था उसने राज्य छोड़ काशीमें
बड़ातप किया इससे संसार में बड़ा काल उठा जिससे मनुष्यों को बड़ा
दुःख मिला कितने मरगये कितने महादुःखमें पड़े इसीसे लोग अ-
पना घर छोड़ पर्वतों की कन्दराओंमें चलेगये जब देश राजाहीन
होगया तब चोरी होनेलगी मांसविक्रय मानों एक व्यवहार होगया धर्म
भ्रष्ट हुआ सब बातें धर्मके विरुद्ध हुईं यज्ञादि कर्म नष्ट होगये कोई
प्रसन्न न रहा देवता आदिने जाकर हमसे रोकर कहा कि आप कुछ
उपाय करें हमने शिवजीका ध्यान करके दुःख का हाल जानलिया
और काशीमें जाकर जयशब्द किया और जहां वह तप करता था
वहां गये और उससे बहुत समझाकर कहा कि तुम फिर राज्य करो
तुम्हारे राज्य करनेसे वर्षा होगी जिससे प्रजा इस दुःख से मुक्त होगी
तुमको वासुकि अपनी कन्या देंगे उसका नाम अनङ्गमोहिनी है वह
पातिव्रतधर्म में अतिदृढ़ है उससे तुमको बड़ा आनन्द मिलेगा राजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने उत्तर दिया कि तुम्हारी आज्ञा मैं भङ्ग नहीं करसक्ता पर मैं इस बात पर राज्य करता हूं कि देवता आकाशमें स्थित हों और नागादि पातालमें रहकर फिर पृथ्वीपर न आवें हे नारद! हमने अहंकारपूर्वक इसको मान लिया मुझको शिवमाया ने मोह लिया जिससे तीनों देवता और इन्द्रादि सबने पृथ्वी छोड़ी इतनेमें हम शिवजीके समीप गये शिवजीने कहा कि किस देश का राजा मन्दरगिरिपर तप कररहा है हम उसको वर देने जाते हैं तुमभी साथ चलो निदान उसके पास पहुँचकर शिवजीने कहा कि वर मांगो मन्दरगिरिने कहा कि मैं काशी के बराबर हुआ चाहताहूं आप मेरे ऊपर स्थित हों मेरी यही इच्छा है कि आप गिरिजा और गणोंसमेत कुशद्वीप को चलें यह सुनकर शिव जी आश्चर्य में हो चिन्तित हुये हमने कहा कि हे शिवजी! हमने आपकी माया में भूलकर रिपुंजय को वरदान देदिया है कि देवता धरती पर न रहेंगे आप मन्दरगिरि की विनय को मानें मेरे वचनको सुन शिवजी अपना लिङ्ग काशी में स्थित करके गणों समेत मन्दरगिरिको गये इस बात को किसीने न जाना हे नारद! उस समय भी शिवजी लिङ्गरूप होकर काशीमें स्थित रहे काशी को न छोड़ा उस लिङ्ग का नाम अविमुक्त हुआ जो आनन्दवन अर्थात् काशीमें वर्तमान है उस लिङ्गके नाम लेनेसे सर्वकार्य पूर्ण होते हैं पहिले हमने भी उस लिङ्ग का हाल नहीं जाना जब शिवजी अपने अविमुक्तस्थान को छोड़कर मन्दरगिरि को गये और विष्णुजी भी अपना धाम त्याग कर मन्दरगिरिपर सुशोभित हुये तो सूर्य, गिरिजा, गणपति, देवता मुनि आदि सब अपने २ तीर्थ छोड़ वहीं जारहे और शेष पाताललोक को चलेगये सबके मनोंमें बड़ा दुःख उपजा जब हम सब चले गये तो रिपुंजय राज्य करने लगा उसने अपनी राजधानी काशी नियत की और अपनी विद्या और बल से देवताओं की ऐसी रीतें

In Public Domain. Chambal Archives

प्रचलित कीं कि कोई मनुष्य उस के राज्य में कुकर्म नहीं करता था देवताओं ने यथाशक्ति रिपुंजय के राज्य में कुकर्म देखने के बहुत उपाय किये पर कोई कुकर्म न देखा तब तो देवताओं ने अपने गुरु बृहस्पति के समीप जाकर स्तुति करने के अनन्तर कहा कि आप ऐसी युक्ति बतावें जिससे रिपुंजय को कोई पाप लग जावे और वह राज्यसे निराश रहकर प्रतापहीन होजावे हमलोग अपने २ पुराने घरों को पावें पहिले तो वेद कहते हैं कि पृथ्वीपर रहना दुर्लभ है जो वहां का बास भी मिला तो परमपद मिलने में क्या सन्देह है मुख्य करके काशी में जहां आप सदाशिवजी विराजमान हैं कि मरने में मुक्ति प्राप्त होती है जिसने काशीको छोड़ा वह मानो सर्व प्रकार से बिगड़ा मुक्ति उससे निराश होगई काशीजीके चाण्डाल भी अन्य स्थानके राजाओंसे भले हैं क्योंकि अन्य स्थान में आवागमन और मृत्यु का भय रहता है काशीजी में यह भय कहां है ऐसे वचन देवताओं के सुनकर बृहस्पति बोले कि धर्म छोड़ने विना राज्य नहीं मिलता और धर्म त्याग बिन वहांका पाना कठिन है सो राजा रिपुंजय धर्मवान् है पर तुम कुछ संशय मत करो उपाय करो जिससे रिपुंजय का धर्म नष्ट होजावे जानाजाता है कि राजा रिपुंजय अज्ञानी होगया है कि तुम सबको दुःख देता है वह अवश्यही नाश को प्राप्त होगा क्योंकि देवताओंसे शत्रुता करके कौन प्रसन्न रहा है जब कि नल, दधीचि, शंख, ययाति, रावण, बाणासुर आदि बहुतसे देवता अपने धर्म को छोड़कर सुखी नहीं हुये हैं तो मनुष्य क्या वस्तु है तुम तेज को बुलाकर कहो कि वह पृथ्वी से अपना अंश खींचले अग्नि बिन पृथ्वी पर कोई कार्य न होगा रिपुंजय का राज्य अपने आप नष्ट हो-जावेगा यह उपाय बृहस्पति से सुनकर सब देवता हँस पड़े और इन्द्र ने तुरन्त अग्नि को बुलाकर सब हाल कहा अग्निने तुरन्त आज्ञा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पालन की अर्थात् उसने इन्द्र की आज्ञासे तीनों प्रकार की अग्नि अर्थात् प्रत्यक्ष, जलगत, जठरगत को पृथ्वीसे अन्तर्धान करलिया जिसके गुप्त होनेसे धरतीके रहनेवाले महादुःखी होगये और सब इकट्ठे होकर रिपुंजयके समीप गये जब रिपुंजय ने इस बात को सुना तो उसको निश्चय हुआ कि यह देवताओंने मेरे साथ शत्रुता की है वह कुछ चिन्तित न हुआ और अपनी प्रजा से कहा कि तुम कुछ शङ्का न करो मैं अपने बलसे तुम पर कोई दुःख न आनेदूंगा यह कहकर प्रजा को बिदाकिया फिर अपने मन में विचारनेलगा कि देवताओंने आज अग्नि को बुलालिया है कलके दिन और किसीको बुलावेंगे इससे मुझको उचितहै कि मैं देवताओं की सहायता न लेकर अपनेही प्रताप से राज्य करूं यह सोचकर उसने सब देवताओंको जो उसके यहां रहा करते थे बिदा करदिया और फिर उसने तीनों प्रकार की अग्नि आप होकर सब प्रजा का भय दूर किया और आपही पवन और जल और आपही चन्द्रमा होकर प्रकाश करनेलगा निदान जिस वस्तु से प्रजा का उपकार होता था उसने वही शरीर धारण किया यह देख कर सब देवता लज्जा में डूब गये उनके उपाय ने कुछ काम न किया॥

छठवां अध्याय॥

इतना सुन नारद बोले कि हे पिता! पूर्वमें कोई ऐसा राजा दिवोदास अर्थात् रिपुंजयके समान नहीं हुआ जिस पर देवताओं की युक्ति ने भी फल न किया हो सो हे ब्रह्मन्! मुझे इच्छा है कि ऐसे प्रतापी राजा का वृत्तान्त विस्तारसे सुनूं कि जिसने अपनी प्रजा को दुःखी न होने दिया और फिर देवताओं ने लज्जित होकर और कोई युक्ति सोची या बैठरहे और शिवजी काशी छोड़ मन्दराचल पर्वत पर स्थितहुये वहां उन्होंने क्या क्या चरित्र किये फिर उन्होंने क्योंकर काशीको पाया ब्रह्माजी बोले धन्य हो हे नारद! कि तुम सदैव शिवकथामृत पीने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के प्यासे रहते हो तुम सब बातें केवल शिवजी का चरित्र और लीला जानो जिसके अधीन संसार भर है ऐसा संसारमें कौन है जो शिवजी को कुछ दुःख देसके अब हम सम्पूर्ण कथा कहतेहैं दिवोदास शिवजी का बड़ा भक्त था उसने जब देखा कि काशीको शिवजी प्राणके समान समझते हैं तो उसने भी काशीकी बड़ाई जानकर काशी में रहना अङ्गीकार किया उससे देवताओं की कुछ न चली क्योंकि यह काशी में अतिनम्रतासे रहा करता था उसने राज्य उत्पातरहित किया किसी को कुछ दुःख न होता था युद्ध में सिंहवत् था यद्यपि उसको राज्य की सर्वसामग्री प्राप्त थीं और देवताभी उसकी आज्ञापालन करते थे और गन्धर्व विद्याधरोंसे उसकी सभा भरी रहती थी और धनद्रव्य की कुछ गिनती न थी पर तोभी वह धर्म के मार्ग बिन अन्य कुकर्म में न चला सर्वप्रकारकी सुचाल छोड़ अपना राज्य करता रहा उस दिवोदास ने सूर्य होकर शत्रुओं को जलाया चन्द्रमा होकर मित्रोंको आनन्द दिया और जो कि धनुष्को युद्धस्थानमें उठाकर विजय पातारहा इस से उसको लोग इन्द्र कहने लगे वह अग्निरूप था क्योंकि उसने अपने शत्रुओं के नगर को अपने तेजसे जलादिया और धर्म अधर्म में विवेक करके दण्ड देने के कारण धर्मराजा जानागया और वह अपराधियों को दण्ड देता धर्मात्माओं और भले मनुष्यों को आनन्द कृपा करता और उसने अपने शत्रुओं के जीतने से वरुण की और वायुके समान चलनेसे पवन की और दण्डियों को धन देने से कुबेर की समानता प्राप्त की और सबके पालने और शत्रुओंके जीतने से शिवजी का पद पाया और तप और योग के कारण विष्णु के समान था और सबको भाग्यफल देनेसे ग्रह उपग्रह से अधिक था उसके समान कौन कलावान् था जिसने सर्व कलावानों को अपनी कला सिखाने से तृप्त करदिया रूप में अश्विनीकुमार से भी अधिक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनूप था गानविद्या में विद्याधरों को भी जीत लिया गन्धर्वों को शिवजी के प्रसन्न करनेके समय अपने गानेसे अहंकाररहित करदिया इसी प्रकार उसने अपने गुणों और कलाओंसे परिपूर्ण देवताओं के समान होकर राज्य किया और यक्षों को नाना प्रकार के अधिकार सौंपे नागों कोभी नाना प्रकार के पद प्राप्त हुये गुह्यक छिपरहे और उन्होंने दिवोदास की सेवामें दृढ़ रहकर दैत्यों के स्वभाव का त्याग किया उसके प्रतापसे इन्द्रने ऐरावतहस्ती और सूर्यने उच्चैःश्रवा घोड़ा देदिया उसके वीर सबसे अजित हुये जिनके सम्मुख देवताओं का धैर्यभी जातारहा उसने बड़े धर्मसे राज्य किया बरन आकाशके राज्य से पृथ्वीके राज्यकी इतनी बड़ाई थी कि आकाशमें तो केवल एकही चन्द्रमा है उसके यहां धरती पर असंख्य चन्द्रमाओंका घर था आकाश पर केवल एक कामदेव अनङ्ग था धरतीपर सर्व मनुष्य पूर्णकामके भरे थे आकाशपर इन्द्र पर्वतों के पङ्ख काटनेवाले हैं पर धरती पर एक यही गोत्र अर्थात् अपने कुल का मारनेवाला हुआ आकाश पर चन्द्रमा पन्द्रह २ दिनके पीछे घटता है पर धरती पर कोई ऐसा क्षीण होनेवाला न था आकाश पर तो केवल एक प्रकारके नवग्रह प्रसिद्ध हैं पर पृथ्वी पर सब गृह नवग्रहों से सुशोभित थे आकाश पर केवल एक सुवर्णगर्भ अर्थात् ब्रह्मा हैं धरती पर सर्वमन्दिर सुवर्ण के अलंकृत थे आकाश पर हंसादि केवल सात घोड़े प्रसिद्ध हैं पर धरती पर असंख्यजाति के घोड़े थे जिस तरह आकाश अप्सराओं से अलंकृत है उसीतरह रिपुंजय का नगर अर्थात् काशीभी अप्सराओं से खाली न था स्वर्ग में केवल पद्मा अर्थात् लक्ष्मीजी अकेली हैं पृथ्वी में पद्माकर अर्थात् सम्पूर्ण कमलकी खानि वर्तमान थी आकाशपर धनदायक केवल एकही कुबेर है धरती में घर २ असंख्य धनद उपस्थित हैं इसी प्रकार राजा प्रजा और नगर कोई धर्मशास्त्र के विरुद्ध न

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलता उसके राज्य में कोई मनुष्य अपनी स्त्री के सिवाय दूसरी स्त्री से भोगविलासमें प्रवृत्त न हुआ स्त्रियां भी पातिव्रत धर्ममें लगी थीं और कोई मनुष्य उसके नगर में धनहीन, हिंसक, अधर्मी और निर्लज्ज, चुगुलीखानेवाला, दुश्शील, असत्यवादी न था और उसके नगर में मूर्ख ब्राह्मण, क्षत्रिय वीरतारहित, वैश्य व्यापाररहित और शूद्र सेवाहीन न था चारों आश्रम अपने २ धर्ममें दृढ़ थे और शेष अन्यजातें अपनी पुरानी चालों में प्रवृत्त थीं और न कोई अनाचारी, दुष्टशत्रु, कृपण, छली, पतिहीन स्त्री उसके राज्यमें थी चारों ओर वेदाध्ययन शास्त्र अभ्यास होते थे उपाय बिन मद्यपान और यज्ञ बिन मांसभक्षणका प्रचार न था बालक माता पिता की सेवा करते छोटे भाई अपने बड़े भाइयों की सेवा छलरहित करते नौकर चाकर अपने स्वामी की सेवा धर्मपूर्वक करते चाहे स्वामी पर आपदा भी पड़े दण्ड के शब्द को संन्यासीके सिवाय और किसीके पास न सुना वहां धनवानों से तपस्वी का पद बड़ा था उससे योगी की बरन मुख्य करके ब्रह्मज्ञानी की पदवी श्रेष्ठ थी और उससे भी बढ़कर शिवके योगी को मानते थे स्थान २ पर ब्रह्मभोज होते ब्राह्मणोंकी सेवा को राजासे लेकर प्रजातक प्रिय जानते चारोंओर कुवाँ, बावली, तालाब पग २ पर फुलवाड़ियां और उद्यान उपस्थित थे जिनके बनवानेवाले मनका मनोरथ पाते, सब मनुष्य तीर्थ, व्रत, दान, देवाराधनमें प्रवृत्त रहते किसीको किसी से कुछ दुःख न था और ब्रह्मभक्ति के सिवाय और कोई कार्य न था सर्वस्त्री पुरुष केवल वेद की आज्ञापर चलते और अपनी प्राचीन रीति को कुछभी न छोड़ते वे सब धनवान् और हृष्ट पुष्ट होनेपर भी कुकर्मों से बचेरहते और प्रतिदिन शिव की भक्ति में मग्न रहते किसी को द्रव्य, पुत्र, वस्त्र, भूषण आदिका दुःख न था बरन सर्व स्त्री पुरुष मानो रत्न और भूषणों की खानि थे सबसे अधिक द्रव्यवान् दिवोदास राजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

था क्योंकि जिसके राज्यमें किसीको कुछ दुःख न हुआ उससे अधिक कौन धनवान् है क्योंकि उसने अपनी प्रजाको अपने पुत्रके समान पाला उसके रक्षक शिवजी थे उसको कोई वस्तु दुर्लभ न थी हे नारद! सत्य है जिसके सहायक शिवजी हों उसको किस तरह दुःख पहुँचे जिसके मनमें रातदिन सदाशिव रहते हैं उसको आनन्द के सिवाय दुःख नहीं होसक्ता उसके राज्य में देवताओंने ढूंढ़ने पर भी कोई दोष न पाया और देवताओंने युक्तियोंके करने पर भी सिद्धि न पाई दिवोदास राजनीति और धर्ममें बड़ाज्ञानी और मित्र था वह तीनों शक्ति और षट्गुणोंको धारण करके चारों उपायों को अच्छी तरहसे जानता जिनके कारण उसकी दुर्दशा नहीं होती थी निदान जब देवता सब उपाय करके थकगये और राजा की हानि न हुई तब इन्द्रने देवताओं समेत हमारी शरणमें आकर स्तुतिकर अपना दुःख वर्णन किया और कहा कि जिस तरह से राजा दिवोदास को कोई पाप लगजावे वह पृथ्वीके राज्यसे हीन होजावे और हमको फिर पृथ्वी मिले वह उपाय कीजिये जबतक यह न होगा हमारे दुःख दूर न होंगे स्वर्गसे अधिक पृथ्वी का पद है उससे अधिक तीर्थका पद पृथ्वी में सर्वोपरि काशी क्षेत्र है हमने सोचकर उत्तरदिया कि दिवोदास बड़ा धर्मात्मा है हमने अपने प्रयोजन से उसको राजा बनाया था वह देवताओं को दुःख देकर तपके कारण बचा रहता है उसको दुःख नहीं होता पर जो दुःख तुमको है वही कष्ट मुझे भी है क्योंकि हमको प्रयाग बहुत प्रिय था पर अब मुझको प्रयाग में रहना कठिन होगया प्रयाग बिन मुझे क्या आनन्द है कुछ सुख नहीं यह कह देवताओं को अपने साथ ले विष्णुके समीप गये और स्तुति करनेके उपरान्त विनय की कि ऐसा कुछ उपाय कीजिये जिस में हमारे देवताओं को आनन्द प्राप्त हो दिवोदास राज्यहीन होजावे विष्णु ने अतिखेद से कहा कि हे ब्रह्मा!

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुझको बड़ादुःख है मैं चाहताहूं कि दिवोदास धरतीसे निकाला जावे पर वह बड़ा धर्मवान् है काशीके पालन करने के कारण शिवजी भी उसको चाहते हैं मुझे वृन्दावन प्राणवत् प्रिय था वह मुझसे छूटगया हमारा कुछ बल नहीं है यद्यपि हमारी इच्छा है और शिवजी भी काशीके न मिलने से बहुत दुःखी हैं अपना दुःख सदा कहा करते हैं बिन अपराध शिवजी भी उसके राज्यमें कोई विघ्न नहीं डालसक्के जो कि देवता आदि की कुछ युक्ति नहीं चलती इसका यह कारण है कि काशी मुख्य शिवजी का स्वरूप है जैसा कि परमशैव अर्थात् विश्वनाथने भी इस बात को कहा था ऐसे काशी में दिवोदास धर्मके साथ रहता है उसके राज्यके नाश होने का क्या कारण है पर हां जो सदाशिवजी कृपा करें तो सम्भव है कि हम सबके कार्य पूर्ण होवें हम सब उनके समीप चलें अपना दुःख वर्णन करदें उनकी सेवा करें निश्चय है कि शिवजी प्रसन्न हों क्योंकि काशी उनको अतिप्रियहै यह सम्मतिकर विष्णु और हम देवताओं समेत शिवजीके पास गये और प्रणाम कर हाथ जोड़ स्तुति की ॥

सातवां अध्याय ॥

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि शिवजी ने स्तुति सुन कर कहा कि तुम सब मिलकर कहां आये हो हे विष्णु ब्रह्मा और देवताओ ! अपना दुःख वर्णन करो तुमने क्या दुःख पाया सबने शोच विचार उत्तर दिया कि हे महाराज ! दिवोदास दृढ़ धर्म धारणकर पाप छोड़ पृथ्वी का राज्य कररहा है जहां नाना प्रकार का आनन्द प्राप्त है यद्यपि वह ब्रह्मभक्त है पर हठ से उसने किसी देवता और नाग आदि को पृथ्वी में नहीं रहने दिया यद्यपि दिवोदास देवताओं की सेवा में लगा रहता है पर तीर्थ बिन हमको आनन्द नहीं इसके सिवाय सबको काशी अतिप्रिय है आपको भी प्राण के समान प्यारी है वह काशी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निर्वाणपद सबको देती है इससे उचित है कि आप कोई उपाय इसके निकालने का करें दिवोदास के राज्य छोड़ने पर हम सब राज्य पावें काशी को देखकर मन प्रसन्न करें शिवजी ने कहा कि दिवोदास ने हमारी बड़ी सेवा की है काशी जो हमारे दूसरे शरीरके समान है उसके रक्षकको दुःख नहीं मिलसक्ता यह कहकर शिवजी चुप होगये और काशीके प्रेममें मग्न होकर अपने शरीरको न सम्हाल सके आंखों से आंसू बहने लगे कुछ देर के पीछे चेतमें आये और काशी की स्तुति करनेलगे कि हे आनन्ददेनेवाली काशी! अपनी अप्रसन्नता दूरकरके मुझको कब मिलेगी तेरे वियोग की अग्नि मुझको जलाती रहती है अमृतभी दुःख देताहै जो तू हमको न मिली तो निश्चय जानना कि हमारा जीना कठिन है ऐसे २ अधीन वचन कहकर शिव मूर्च्छित होगये गिरिजाने कहा कि हे शिव! तुम तो सबके स्वामी हो संयोग वियोग सब तुम्हारे हाथ है तुम तो तीनों लोक के राजा हो तुम्हारी कोप की दृष्टि से प्रलय होती है इसी प्रकार बहुत स्तुतिकर कहा कि वेगही काशी को सिधारो तुमको कौन देवता मुनि और मनुष्य रोक सकता है तुम तो स्वाधीन हो काशी क्यों छोड़दी है काशी तो सर्वोपरि है जिसके निवासी यमराज से नहीं डरते मुझको काशी अतिप्रिय है पापियों के लिये मोक्ष की जगह है इससे आप वह उपाय करें कि फिर काशी मिले मनको शीतलता प्राप्त हो ऐसी बातें गिरिजाकी सुन कर शिवजी प्रसन्न हो कहनेलगे कि हे गिरिजा! तुम मुझे बहुत प्यारी हो पर काशी मुझको दूनी तुमसे प्यारी है अब तुम्हारे अमृतके समान वचन पानकर मुझे कुछ २ आनन्द मिलता है पर तुमको मालूम है कि हम दिवोदास का आदर और मान करते रहते हैं सिवाय इसके उसने ब्रह्मासे आज्ञा पाकर काशीका राज्य लिया है क्योंकि उसने कहा था कि जो पृथ्वीमें देवता आदि न रहें तो हम राज्य अङ्गीकार करते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसी से हमको काशी छोड़नी पड़ी दिवोदास मुझको बहुत प्रिय है क्योंकि वह हमारी पुरी की रक्षा करता है वह बहुतही धर्म में दृढ़ प्रजा के पालन में चतुर और हमारी सेवा में प्रवृत्त है उसके राज्य को हम क्यों छीनलेवें अपनी इच्छा को क्यों छोड़ें क्योंकि संसारमें जो धर्मवान् हैं मैं उनका रक्षक हूं इसमें कुछ सन्देह नहीं उनकी कुछ भी हानि नहीं होती इस बातको तुम भलीभांति जानतो जो कोई हानि पहुँचाने की इच्छा रखता है तो उसको आपही दुःख पहुँचता है हम निर्दोष किसीके हानि पहुँचानेमें उद्योग नहीं करते हमको कोई बात नहीं मिलती जिससे काशी को पावें शिवजी इसी चिन्तामें थे कि काशी क्योंकर पावें कि अकस्मात् योगिनियों को अपने सम्मुख में देखी उनको बुलवाकर बिठाया और बहुत आदर करके कहा कि तुम सब काशी को जावो दिवोदास जो धर्मपूर्वक राज्य करता है उसके धर्म में विघ्न करो कि वह काशी को छोड़दे वही उपाय करो कि हम फिर काशीमें सुशोभित होकर आनन्द उठावें इसी प्रकार बहुत कुछ सिखा पढ़ाकर भेजा आप समयको देखतेरहे योगिनीगणों ने तुरन्त काशी में पहुँच अपना देवस्वरूप बदला और वहां स्थित हुईं और काशीको देखकर अतिप्रसन्न हुईं फिर कई योगिनियां तपस्विनियों के समान हुईं और कई रोगिनियों का स्वरूप धार बहुत रोनेलगीं कोई मालिनि कोई नाइन कोई दाई कोई रोटी पकानेवाली कोई बजाने वाली कोई गानेवाली कोई सामुद्रिकविद्या की जाननेवाली और पुत्र देनेवाली कोई चित्रादि लिखनेवाली कोई मूर्ति लिखनेवाली इसी प्रकार से बहुत रूप धारण कर घरों में आनेजाने लगीं यद्यपि उन्होंने सर्वप्रकार की उत्तम युक्तियां कीं पर दिवोदास के नगर में कोई पापी न हुआ तब इकट्ठी होकर परस्पर कहनेलगीं कि हम मन्दराचल पर्वतमें जाकर क्योंकर अपना मुख शिवजी को दिखलावें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो चौंसठ योगिनियां मणिकर्णिका के आगे स्थित हुईं और शिवजी के समीप लज्जा से न जासकीं जो उनको प्रणाम करता है उसको कोई दुःख नहीं पहुँचता॥

आठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! योगिनीगणों के न लौट जाने से शिवजी को चिन्ता उपजी तो रवि से कहा कि तुम काशी में जाकर तुरन्त समाचार लावो कि योगिनीगणों के अधिक विलम्ब करने का क्या कारण है हमको बड़ी चिन्ता है तुम अपने उपाय से राजा दिवोदास का धर्म भ्रष्ट करो कि वह राज्य से हीन होजावे पर ध्यान रहे कि दिवोदास की कुछ प्रतिष्ठा जाने न पावे क्योंकि वह धर्मवान् है अपनी बुद्धिमानी से उसके धर्म को छुड़ादो फिर यहां चलेआवो तुम तीनों लोक में श्रेष्ठ हो तुम्हारा नाम जगच्चक्षु है तथाच सूर्य देवताओं का स्वरूप बदलकर काशी में पहुँचे और बहुत प्रकार के स्वरूप उन्होंने रचे पर उनकी भी कोई युक्ति न चली कहीं वह भिखारी कहीं उदार कहीं ज्योतिषी कहीं पर दीन मतिहीन कहीं योगी कहीं जटाधारी कहीं नग्न कहीं वेद के विरुद्ध धर्म करनेवाले कहीं छली हुये किसी स्थानपर उन्होंने इन्द्रजाल फैलाया कहीं उन्होंने ब्रह्मज्ञान प्रकटाया कहीं वह मीमांसक कहीं विद्वान् कहीं सर्वज्ञ किसी स्थान पर ब्राह्मण कहीं राजकुमार कहीं नीच कहीं उच्च इसीप्रकार उन्होंने असंख्य उपाय किये पर कुछ न चला एक वर्ष बीतगया निरुपाय हो उन्होंने अपनी निन्दा की और कहा कि मुझको धिक्कार है कि मैं कुछ न करसका मैं क्या करूं कुछ नहीं चलती जो शिवजी के पास जाताहूं तो डरता हूं कि जल न जाऊं तब ब्रह्मा और विष्णुजी की भी कुछ न चलेगी इससे काशी में रहना ठीक है क्योंकि शिवजी की आज्ञा न मानने का पाप जो होगा वह सब काशी में रहने से नष्ट होजावेगा काशी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजी का रूप है उसका सेवन बड़ा धर्म है बाक़ी सब अन्धेकुवें हैं यद्यपि त्रिवर्ग अर्थात् अर्थ धर्म काम अङ्गीकार करना बहुत उत्तम है पर धर्म का स्वीकार करना बहुत ही अच्छी बात है यह तनु अवश्य ही नष्ट होजावेगा उचित है कि ऐसे शरीर को पाकर धर्म को प्रीति के साथ बचावे अर्थ और काम बचाने के योग्य नहीं क्योंकि विरुद्ध धर्मवालों को वैकुण्ठ नहीं मिलसक्ता जो यह दोनों इस योग्य होते तो शिवजी इनको किस लिये जाकर भस्म कर डालते कइयों का यह वचन है कि अर्थ रक्षा के योग्य है पर हम इस वचन को झूठ जानते हैं क्योंकि हरिश्चन्द्र कुश ययाति ने धर्म के लिये अर्थ छोड़दिया दधीचि ब्राह्मण और मुख शिबि राजाने अपने शरीर को नष्टकर धर्म पकड़ मोक्ष प्राप्त किया इसके सिवाय राजाबलि और विरोचन प्रह्लाद ने धर्मके लिये दुःख उठाये सो काशी सेवन से कोई अधिक धर्म नहीं है वह हमारी रक्षा करेगी और शिवजी भी क्रोध न करेंगे जो मनुष्य काशी पाकर फिर उसको प्रसन्नतासे छोड़ते हैं वे मानो रत्नोंके बदले कांच लेते हैं जो शिवजी को छोड़कर कोई काशी सेवन करता है तोभी शिवजी प्रसन्न होते हैं क्रोध नहीं करते सूर्य ने यही विचार कर अपने बारह शरीर धारे और अतिप्रेमसे काशीमें स्थित हुये उनके यह बारह नाम हुये जो आगे लिखेजाते हैं वे सबकी कामना पूर्ण करते हैं प्रथम सूर्य लोलार्कनामी असिसंगम पर स्थित हैं वह सब तीर्थों का शिरोमणि है दूसरा उत्तरार्क जो भक्ति करने पर बहुत बड़ा फल देता है वह उस स्थान पर है जहां पहिले प्रियव्रत ने जो सबसे पहिले स्त्री हुई तप किया था और शिव और शिवरानीसे वर पाकर गिरिजा की सखी होगई उस स्थान पर एक बकरी ने राजा की लड़की होकर मुक्ति पाई तीसरा सूर्य आदित्यनामी शाम्बपुर में उपस्थित है वहां शाम्ब का कुष्ठ दूर हुआ था पांचवां सूर्य मयूषादित्य जो शिव गिरिजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की सेवा से शिवके दाहने नेत्र हुये और वह आठों वसुओं में भी एक वसु है छठवां खखोलादित्य है जब कद्रू विनता से विवाद हुआ और विनता हार गई और कद्रू की लौंड़ी हुई यह हाल सुनकर गरुड़को बड़ा कष्ट हुआ इसी से गरुड़जी अमृत लेने के निमित्त सुरपुर गये और देवताओं के जीतने के उपरान्त अमृत लेकर अपनी माता विनता के पास चले गरुड़ कश्यप के पुत्र थे मार्गमें विष्णुने रोका जिस से बड़ा युद्ध हुआ जब विष्णु गरुड़ को न जीतसके तो उन्होंने छल करके वर मांगा कि हमको भी अमृत दो और हमारे वाहन भी तुम्हीं होजावो गरुड़ने मानकर अमृत दिया और विष्णु के वाहन हुये और विनता ने कनिकस्थान पर खखोलादित्य रवि नियत किया उसीके तपसे विनता की लज्जा दूर हुई सातवां सूर्य अरुण आदित्यनाम है जिनको अरुण विनता के लड़के के नाम से प्रसिद्ध किया वे महादेव के उत्तर ओर विराजमान हैं जिनकी सेवा से सर्वकष्ट दूर होते हैं आठवां सूर्य बृहदादित्य जिनकी अतिपवित्र महिमा है और जिनकी सेवासे हारीत मुनीश्वर जो अल्पायु थे युवा होगये वे रोगों को दूर करते हैं और आनन्द और आरोग्यता देते हैं बड़े बुद्धिमान् हैं उनका स्थान विशालाक्षी देवी के दक्षिण ओर है शिवजी को बृहदादित्य बहुत प्यारे हैं नवांसूर्य केशवादित्य नामक है जिन्होंने विष्णु से उपदेश पाया अर्थात् एकदिन सूर्य ने देखा कि विष्णुजी पादोदक तीर्थ पर शिवजी के लिङ्गकी पूजा कररहे हैं उसने तुरन्त उसी स्थानपर आकर विष्णुजी से पूछा कि तुम सबसे श्रेष्ठ हो तुम किसकी पूजा करते हो विष्णुजी बोले कि शिवजी सबसे बड़े हैं हम उन्हींकी पूजा करते हैं तुमभी शिवजी के लिङ्ग की पूजा करो यह सुन कर सूर्य हर दिन शिवलिङ्ग को पूजते हैं और उनको गुरु जान कर उसके ऊपर स्थित हुये दशवां सूर्य विमलादित्य नामी जिनको हरिकेश ने वनमें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थापित किया था प्रबाहु का पुत्र जो उच्चदेश में रहता था भाग्यवश कुष्ठी होगया सो सब लड़के और घर छोड़कर काशी में आया और सूर्यकी पूजाकर अच्छा होगया तबसे वह मुख्य करके सुकुष्ठ के निवृत्त करने में प्रसिद्ध है ग्यारहवां सूर्य कनकादित्य नाम विश्वेश्वर के दक्षिण की ओर स्थित है हरदिन गङ्गाकी स्तुति करते हैं इसीसे उनका मुख गङ्गा की ओर है बारहवां सूर्य यमआदित्य नामी उस स्थान पर है जहां यमराज ने कठिन तप किया था उनके देखनेसे यमपुरी जाना नहीं पड़ता वे यमराज के स्थान से पश्चिम की ओर और वीरेश्वर से पूर्व हैं यमराजने उनको स्थापित करके बड़ा तप किया था उस स्थान पर आकर जो कोई मनुष्य चतुर्दशी के दिन भरणीनक्षत्र में श्राद्ध करते हैं उनको गया के समान फल होता है हे नारद ! यह बारहों सूर्य जो काशी में स्थित हैं हमने वर्णन किये इनकी कथा के सुननेसे रोग दोष दूर होजाते हैं इनकी सेवा से शिवजी अतिप्रसन्न होतेहैं इनसे मनुष्य अखण्ड आनन्द पाता है शिवजी अष्टमूर्ति करके संसार में प्रसिद्ध हैं इससे बारहों सूर्य शिवजी के भक्त हैं बारहों सूर्य के शिवजी वर देनेवाले हैं वे मुख्य शिवजी के सेवक हैं सिवाय इसके पांचों देवता शिवजीके सेवक हैं जिस तरह सब नदियां समुद्र में गिरती हैं उसी प्रकार सब देवता शिवजी में लीन होते हैं शिवजी सर्वरूप होकर काशी में अपनी पूजा कराते हैं जो कोई शिवभाव छोड़ कर और की पूजा करे अर्थात् और देवता को भी शिवरूप न जानकर उस देवता के भाव से पूजन करे वह महामूर्ख जड़ पशुवत् है यह वेद कहते हैं शिवजी सब में प्रकट हैं और वे निर्गुण ब्रह्म आनन्द देनेवाले हैं यह सुनकर नारद अति प्रसन्न हुये फिर ब्रह्मा से पूछा कि यह बारहों प्रकार के सूर्य काशी में अपना रूप धारण करके स्थित हुये फिर उन्होंने क्या किया वह सब वर्णन कीजिये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नवां अध्याय॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जब कि सूर्य काशी में स्थित रहकर शिवके पास लौट न गये तब शिवजी अति विकल हुये और खेदसे आंसू बहानेलगे और बोले कि काशी पाकर कब हमारा दाह मिटेगा हाय सूर्य भी लौटकर न आये इसीप्रकार बहुत धीरे २ रोरोकर काशी को बहुत स्मरण किया और कहा जो काशीका समाचार लावे उसको सब कुछ देनेको उपस्थित हूं पर हां वेदज्ञ ब्रह्मा निस्सन्देह वहांका वृत्तान्त लासक्तेहैं यह समझ मुझे बुलाया और अति आदरकर बैठाया और यह कहा कि हमारे भाग्य फिरगये हैं आगे जो हमने योगिनी-गणों और सूर्य को भेजा था वह लौट नहीं आये नहीं जानते कि क्या कारण है काशी का प्रेम मेरे मनमें प्रिया के समान है जिसका स्मरण बना रहताहै हमको मन्दरगिरि पर प्रेम नहीं जैसा कि मछलियोंको ताल नहीं भाता इस तरह विषभी दुःख नहीं देता जिसतरह कि काशी का वियोग दुःख देरहाहै यद्यपि चन्द्र भाल पर है पर काशी के वियोग का दाह नहीं मिटता इसलिये हे ब्रह्मन्! हम तुमसे एक इच्छा करते हैं कि तुम हमको प्राण के समान हो तुम काशीमें जाकर हमारा कार्य पूरा करो कुछ विलम्ब मत करो मेरे दुःख का विचार करो तुमको काशी की यात्रा का पुण्य प्राप्त होगा हमारा दुःख दूर होगा यह सुन हम हंसपर आरूढ़ हो काशी की ओर गये और अपने भाग्यकी बड़ाई की हमने दुर्बल ब्राह्मण बन काशीमें प्रवेश किया और राजा दिवोदास को देखा सो राजा तुरन्त उठखड़ा हुआ और उसने हमको आदर सन्मान कर बैठाया फिर आगमन का कारण पूछा मैंने कहा कि मैं तो बहुत समयसे यहां रहता हूं और तुमको भलीभांति जानताहूं पर तुम मुझको नहीं जानते तुम्हारे बराबर संसार भरमें कोई राजा नहीं है तुम तो महीसुर देशपाल हो और तुम्हारी प्रजा, सन्तान, भाई, बन्धु, आरोग्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और अच्छे हैं तुम्हारे भय से देवताओं को शक्ति नहीं कि शुद्धमार्ग छोड़ अशुद्ध को स्वीकार करें मनुष्य किस गणना में है हम जिस कार्यको आये हैं वह यह है कि मैं यज्ञ किया चाहताहूं मेरे पास शुद्ध धन देवता आदि उपस्थित हैं और तुम्हारी राजधानी श्रीकाशी कर्म-भूमि है और सर्वोपरि है सिवाय शिवजी के और कोई संसार भर में काशी से उत्तम नहीं जैसा कि वेद कहते हैं धर्म छोड़ने से सब जगह बड़ा पाप होता है पर काशी में शिवजी की कृपा से कुछ पाप का भय नहीं काशी शिवजी का दूसरा शरीर है वह मानो मोक्ष देने को मुक्ति-रूप है तुम जो शिव के प्रसन्न करने को काशी का पालन करते हो यही कारण है कि किसी की युक्ति तुम पर नहीं चलती सिवाय इसके एक और बात मैं तुमको बताताहूं कि सिवाय विश्वनाथ शिवजीके और कोई प्रणाम के योग्य नहीं जिनके प्रणाम करनेसे सबका मनो-गत मिलता है तुम और देवताओंके समान शिवको न जानना वे सबसे श्रेष्ठ हैं जैसा कि वेद कहते हैं विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, अग्नि, पवनआदि सब शिवकी प्रसन्नता के निमित्त उपजे हैं जो ब्राह्मण कि कुछ प्रतिफल राजाओं को दिया चाहते हैं वे इसी प्रकार का उपदेश देते हैं इससे हमनेभी तुमको यह उपदेश दिया कि तुम्हारी इच्छा पूरी होजावे आप हमारे यज्ञ में सहायता दें यह कह ब्राह्मण चुप होगया राजा ने उत्तर दिया कि तुम आनन्दपूर्वक यज्ञ करो जो इच्छा हो वह आप लेवें मैं सर्वप्रकार से आपका सेवक हूं जो मेरे घर में है वह निस्सन्देह आपका है मेरी सब सामग्री और प्रताप सब औरों के निमित्त है क्योंकि वेद में प्रजा का पालन बड़ा धर्म कहागया है और प्रजा के दुःखी होने से जो अग्नि उपजती है वह बहुतही तीक्ष्ण वज्र की अग्नि से भी अधिक फल रखती है क्योंकि वज्र की अग्नि तो केवल थोड़े मनुष्यों को जलाती है और प्रजाके दुःख की अग्नि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो सबको भस्म करडालती है हे ब्राह्मण! हमारी यही रीति है कि मैं सर्वब्राह्मणों का दास हूं जिनसे मेरे दुःख नष्ट होजाते हैं जब मुझको स्नान की इच्छा होती है तो मैं ब्राह्मणों का चरण धोकर उसीसे अभिषेक करताहूं और जो ब्रह्मभोज करताहूं उसको सौ यज्ञ से कम नहीं समझता मेरी इच्छा अहर्निश यह रहा करती है कि मेरे घर कोई अतिथि आवे मुझको अपने धर्म की सौगन्द है कि मेरी इच्छा पूरी हुई कि आप मेरे घर पधारे आप यज्ञ करें मैं सहायता दूंगा यह बात सुनकर ब्राह्मण प्रसन्न होकर हरिसर में यज्ञ करने को गया और राजा की सहायता से दश अश्वमेध यज्ञ किये वह स्थान दशाश्वमेध यज्ञ के नाम से प्रसिद्ध होकर तीर्थ होगया और गङ्गा के निकट होनेसे वह स्थान और भी मुक्तिदायक होगया हम उसी स्थान पर शिवलिङ्ग स्थापित कर स्थित होगये और राजा में कोई दोष न पाया यद्यपि हमने बड़ी युक्ति की और काशी को सर्वगुणसम्पन्न पाकर हमभी शिवजी के पास लौटगये चाहे हमने शिव की अवज्ञा की पर हमको कुछ संशय न उपजा क्योंकि जो कोई काशीजी का सेवन करता है उस पर शिव क्रोध नहीं करते काशी निर्भयता और निष्कण्टकता का स्थान है वहां शिवजीके भक्त निर्भय रहते हैं बड़े २ पापी काशी में रहकर अपने पापोंका कुछ भी विचार नहीं करते देखो सूर्यने क्या पाप करके काशीमें शरण ली शिवजीको काशी गिरिजा से अधिक प्रिय है काशी मुख्य शिवजी की देह है हरएक मनुष्य वहां जाकर दोषोंसे पवित्र होजाता है वहां यमराजसेभी पापी नहीं डरते और वहां किसी देवता की आज्ञा नहीं चलती जो आनन्द पापियोंको काशी जी में है वह वैकुण्ठ में भी नहीं जो मनुष्य काशी में शिवलिङ्ग की स्थापना करे वह अपने मन में किसी बड़े पाप को न डरे यही जान कर हमने शिवजीका लिङ्ग अपने स्थान में स्थापित किया उसका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम ब्रह्मेश्वर महादेव है वे सर्व मनोरथों के पूर्ण करनेवाले हैं जो इस कथा को सुनता है उसके सब दुःख दूर होते हैं ॥

दशवां अध्याय ॥

इतना सुनकर नारदजीने पूछा कि हे ब्रह्मन् ! जब आप काशीजी में स्थित होगये तो फिर सदाशिवजी ने क्या किया ब्रह्माजी प्रेमसागर में डूबकर और शोचकर बोले कि हे नारद ! अपने भक्तों के निमित्त शिवजी निर्गुण ब्रह्म मनुष्य के समान होकर लीला और चरित्र करते हैं जब हमको आने में विलम्ब हुआ तो शिवजी बारम्बार चिन्तित होकर रोनेलगे जिह्वा से अक्षर नहीं निकलता था नेत्रों से आंसू चलते थे काशी के स्मरण में कहने लगे कि जिस तरह काशी मुक्ति देनेवाली है ऐसा कोई क्षेत्र संसार में नहीं जिसको हम भेजते हैं वही वहां रहजाता है योगिनी जाकर वहां भोगिनी होगई और ब्रह्माजी ऐसे बुद्धिमान् होकर निरुपाय हो वहीं रहगये इसीप्रकार बहुत शोच कर जो बातें मनुष्यों की हैं वह उन्होंने कीं अर्थात् शिवजीने अपने गणों को बुलाया सो ३५ गण शिवजी के समीप आये उनके यह नाम हैं शंकुकरण, महाकाल, घण्टाकरण, महोदर, सोमनन्द, नन्द-सेन, कालपिङ्गल, कुकुट, कुकूट, मयूरबाण, गोकरण, तारक, तिलप्रण, सुरतदर्भ, चण्डकेश, विन्दकछाग, कपर्दी, संगलाक्ष, वीरभद्र, किरात, चतुरस्त्र, निकुम्भ, तेजाक्ष, भारभूत, अक्षक्षेमक, लाङ्गल, सुखादि, दुःखादि इत्यादि ३५ गण शिवजीको बहुत प्रिय हैं शिवजीने कहा कि तुम सब काशी में जाकर हमारा दुःख दूर करो तुम सब बड़े कार्य करने में कुशल हो सो जिस तरह से कि हमको स्कन्द, गणपति, साख्य, विसाख्य, नैगमेयी, नन्दी, भृङ्गी प्रिय हैं उसी प्रकार तुमभी मुझको प्रिय हो तुमसे काल भी भयभीत रहता है देखो योगिनी, सूर्य और ब्रह्मा जो काशी में हमारी आज्ञासे गये उनकी कुछ खबर नहीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिली हमको बड़ा दुःख है हे शंकुकरण! तुम तुरन्त काशी में जाकर और वहांसे लौटकर हमको प्रसन्न करो सो दोनों गण तुरन्त चले जैसे कोई मनुष्य इन्द्रजाल की माया से गुप्त होजावे वे दोनों तुरन्त अन्तर्धान होगये जब कि काशी में पहुँचे तो उनके मन प्रफुल्लित होगये जो चिन्ता मनमें थी दूर होगई वह भी शिवका लिङ्ग स्थापन कर स्थित होगये और शिवके पास न लौटजानेसे उनके ऊपर कुछ पाप न हुआ हे नारद! वास्तव में काशी को जो किसीतरह से पाकर फिर छोड़ते हैं उन्होंने वेद का अर्थ नहीं समझा मानो मिली हुई मुक्ति उनके हाथ से जाती रही है वे बड़े मूर्ख और शिव के विरुद्ध हैं शिवने दोनोंकी ढील को समझ कर दोगण और भेजे वह भी काशी में शिवलिङ्ग स्थापित कर स्थित होगये शिवके समीप लौट न गये तबतो शिव को बड़ी चिन्ता हुई अपने शिरको हिलाया मनमें काशी की बड़ाई की और प्रशंसा करके कहा कि हे काशी! तुमको महामोहहारिणी कहते हैं परन्तु मेरे लिये मोहनविद्या होगई हमने बहुत गण भेजे तुमने सबको मोह लिया यद्यपि इस बात का निश्चय है पर हम फिर भी और गणोंके भेजने में सन्देह न करेंगे क्योंकि बुद्धिमान् उपायसे भूल नहीं करते अपनी सिद्धिके लिये उपाय नहीं छोड़ते क्योंकि भाग्य के लौटजानेपर कार्य करनेवाला आनन्द नहीं पाता देखो चन्द्रमा सूर्यग्रहण के होनेपर भी अपनी गति नहीं छोड़ते पूर्वजन्मके कार्योंका नाम संस्कार है ऐसे संस्कारके दूर करने के लिये उपाय करना उचित है विचार करो कि संस्कारके बलसे भोजन पकाने के लिये बरतन आदि सब उपस्थित हैं भोजन भी रक्खा हुआ है पर जब तक हाथ से मुखमें न डालाजावे वह अपने आप मुख के भीतर नहीं जासक्ता निदान भाग्य पर उपाय को प्रबल करके पांच गणों को भेजा पर वहभी काशी में जाकर मृतक पुरुषों के समान फिर न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लौटआये उन्होंने भी शिव का लिङ्ग स्थापनकर काशी में रहना अङ्गीकार किया शिवने उनको भी स्थित होते हुये जानकर कहा बहुत अच्छा हुआ और गण भी जाकर इसीतरह स्थित होते जावें क्योंकि हमारे गणों का काशी में रहना हमारे रहनेके समान है पीछे हमभी काशी में जाकर रहेंगे यह विचार कर शिवने कण्डूर आदि चार गण और भेजे वह भी उपाय करके अधीर होगये और स्वाभिद आदि चार शिवके लिङ्ग स्थापितकर काशी में ठहरे इन चार लिङ्गोंकी बड़ी महिमा है जिनकी पूजा से फिर पाप सामने नहीं आते शिवने फिर तारकादि २२ गणों को भेजा वे काशीमें जाकर सब युक्ति करके थक गये निदान इकट्ठे होकर कहनेलगे कि हमको सहस्रों धिकार हैं कि शिवके गण होकर उनका काम पूरा न करसके एक मनुष्य भी हमारे जालमें न आया हम मानो सदाशिव के शत्रु हैं इससे हम सबको नरक प्राप्त होगा क्योंकि जो शिवजीका कार्य नहीं करते वे मानो इन्द्रियोंसे रहित आयु बिताते हैं उनको पग २ पर नरक है वे करोड़ों शुभकार्यकर आनन्द नहीं पाते जो सदाशिव का काम न करके अपना मुख दिखाते हैं उनको अवश्य ही नरक प्राप्त होता है वह मानो दुःखके रूप हैं ऐसी दशा में गणों ने शिवजीका ध्यान किया तब उनको शुभमति प्राप्त हुई कहने लगे कि जो मनुष्य विश्वासघाती और स्वामी की आज्ञा भङ्ग करनेवाले हैं उनका तीनों लोक में कहीं ठिकाना नहीं लगता केवल उनके लिये संसार भरमें एकही काशीजी का स्थान है उसीके रहने से वह पापों से शुद्ध होजाते हैं ऐसे वेदके वचनों को स्मरण कर निश्चयपूर्वक राजासे छिपकर काशी में स्थित होगये और पिछली चिन्ता को भुलादिया और राजाने भी उनको नहीं जाना उन्होंने शिवलिङ्ग अपने २ नाम से स्थापित किये उन लिङ्गों की सेवा से किसने क्या नहीं पाया कपर्देश्वरलिङ्ग की बड़ाई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कौन बखान सक्ता है उसी स्थानपर विमलोदक जिसके जलके स्पर्श करनेसे मनुष्य शिव के समान होजाता है उसका इतिहास आनन्द देता है वह इसतरह पर है कि त्रेतायुग में एक बाल्मीकि ऋषीश्वर शैव काम और इच्छाजित् हुये वह उसी कुण्डपर स्नान कर तप करते थे एक दिन उन्होंने एक बड़े भयानक पिशाचको देखा सो ऋषीश्वर ने उसको मलिन स्वरूपसे देख दुःख का कारण पूछा और उसपर प्रसन्न हुये और उसको कुण्ड के भीतर शिवलिङ्ग दिखाकर स्नान कराया और उसके सर्वाङ्गमें भस्म लगा दी जिससे वह पिशाच मुक्ति पाकर सुन्दर स्वरूप धार शिवपुरी को चलागया उसी समयसे यह कुण्ड संसार में प्रसिद्ध हुआ उसका नाम पिशाचमोचन है एक शिवके योगी को वहां भोजन कराने से कोटि ब्रह्मभोज का फल मिलता है जो इस इतिहास को सुनेगा वह दोनों लोकमें आनन्द पावेगा इस कपर्देश्वर लिङ्गके सिवाय और गणोंके स्थापित कियेहुये लिङ्गभी वहां अतिप्रतिष्ठित हैं उनकी पूजाकर सबगण आनन्द में रहे और अन्यजीव भी जो उनकी सेवा करते हैं वे निस्सन्देह शिवरूप हैं यह कथा अति आनन्द देनेवाली है जो इसको पढ़कर कोई यात्रा को जावे वह सदा आनन्द में रहेगा कभी उसको दुःख प्राप्त न होगा और उसको भूत पिशाच कभी दुःख न देसकेंगे ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! शिवजी अपने गणोंके न लौटने से अतिचिन्तित हुये कहा कि अब कौन जावे राजा ने मुझको बड़ा दुःखदिया हमारी भाग्य विपरीत है क्योंकि हमको कोई मित्र दिखाई नहीं देता यह विचार फिर कुछ शोचकर हँसे और काशी का स्मरण कर कहा कि जो काशी में रहते हैं वह मानों मेरे उदर में समाये हुये हैं उनको कुछ भय नहीं है जैसे हव्य को यज्ञ में जलते हुये कुछ भय नहीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो काशी में लिङ्ग के स्थित करनेवाले हैं वह हमारे जङ्गम लिङ्गवत् हैं जो शिवकी कथा सुनकर शिव काशी मुख पर लाते हैं वे उच्चगति पाते हैं पांच कोसतक काशी हमारा शरीर है वहां जो रहते हैं उनको अति आनन्द मिलता है जो काशीसेवन करते हैं वे हमारे शत्रु और पापी नहीं हैं हम ऐसी काशी की बड़ाई भलीभांति जानते हैं मुक्ति तो काशी की लौंड़ी है जो हमारे शुद्धमन के भक्त हैं उनको भी यह काशीकी बड़ाई विदित है इसीसे हमारे गणोंने काशी की बड़ाई समझ कर दृढ़तापूर्वक काशी में अपना स्थान बनाया है नहीं तो वह और किसी तरह से मुझको छोड़ वहां न रहसक्के अच्छा हुआ उनके भाग्य उत्तम हैं अब औरोंको भी भेजना उत्तम है यह दृढ़ विचारकर गणपति को बुलाकर आदर और प्यारकर गोद में बैठाल लिया और कहा कि दिवोदास जो काशी में राज्य करता है वह हमको बड़ा दुःख देरहा है क्योंकि उसी के कारण काशी मुझ से छूटगई सब देवताओंको बड़ा दुःख है जबतक कि वह राज्य करता है हम काशी में नहीं जासक्के आगे जो अच्छे लोग हमने काशी में भेजे वह सब वहां रह गये मुझे काशीके देखेहुये विना चैन नहीं आता ऐसा कौनहै जो वहां जाकर हमारा काम करे हमारे गणों में कोई ऐसा दिखाई नहीं देता जितने हमारे गण हैं वह सब युद्धके कामों में प्रवीण हैं पर उनमें कोई ऐसा बुद्धिमान् नहीं हमको कोई ऐसा देख नहीं पड़ता तुम्हारे भाई स्कन्दने भी बड़ाकाम किया है केवल तुम्हीं हमको बुद्धिमान् भासते हो तुम सब काम बुद्धिके बलसे करते हो जिसको जैसा चाहो तुरन्त वैसाही करोगे इससे तुमको उचित है कि तुम आपही हमारा काम पूरा करो और काशी में जाकर स्थित होजावो और सब गणों समेत छिपे छिपे रहकर राजाको दुःख पहुँचावो जिससे हमारा काम निकले और जो पिता पुत्रमें प्रीति होती है उसीको प्रकट करके हमारा कार्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिद्ध करो यह कह शिव और गिरिजा दोनोंने आशिष और स्तुतिके उपरान्त गणपतिको भेज दिया गणपति चलकर मार्गमें नाना प्रकार के उपाय शोच आनन्दपूर्वक काशी में पहुँचे और ब्राह्मणका स्वरूप धार काशी में प्रवेश किया चलने में अच्छे शकुन हुये सो गणेशजी ज्योतिर्विद् ब्राह्मण होकर काशी में घूमने लगे सब काशीवासी बड़ी प्रीतिसे उनका आदर सन्मान करने लगे जब गणेशजी का आदर पूर्णरूप से काशीवासी करनेलगे तो उन्हों ने एक यह नई बात रची कि रात्रिके समय आप मनुष्यों के अन्तःकरण होकर उनको दुस्स्वप्न दिखानेलगे और फिर प्रभातको उसीस्वरूप से उनके घरों में जाकर स्वप्नफल कहते थे उनको जहां तक कि दुस्स्वप्न थे कि जिनका फल भी बहुत बुरा होता है सब दिखादिये जिनके सुनने से बहुतेरे मनुष्य काशी छोड़ इधर उधर भागगये और गणेशजी ने किसी के ग्रहों को बुरा बताया जिनके सुनने से लोगों को बड़ी चिन्ता उपजी इसी प्रकार ऐसे बहुत उपायोंसे काशीवासियों को दुःखी किया और माया करके घरोंके भीतर जाकर स्त्रियों के मनों में बड़ा सन्देह उपजाया जिसके सुननेसे स्त्रियों को आश्चर्य हुआ ऐसी ऐसी बातोंसे गणेशजीसे सब स्त्री पुरुष प्यार करने लगे यहां तक कि दिवोदासकी स्त्री भी गणेशजी को प्रिय जानने लगी स्त्रियां परस्पर गणेशजी की अतिप्रशंसा करती थीं कि जैसा हमने यह ब्राह्मण देखा है ऐसा कोई आजतक नहीं देखा न सुना इसकी बात असत्य नहीं होती यह ब्राह्मण महाशीलवान् बुद्धिमान् है यह तो थोड़ेही जलमात्रसे प्रसन्न होजाता है और यह अतिसुन्दर, निष्क्रोध, शान्त, बड़े आनन्दके साथ दूसरों के उपकारके लिये तत्पर रहता है किसी की निन्दा नहीं करता यह बड़ा बुद्धिमान् है अहंकारी व्यभिचारी कृपण नहीं इसके सब काम अच्छे हैं और यह बुद्धिमान्, पवित्र, दृढ़स्वभाव, बड़ा उदार, प्रतिष्ठित,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शौचयुक्त, दयाभावसहित है किसीसे दान नहीं लेता दूसरोंकी पीड़ा जानता है इसी प्रकार जो शुभगुण हैं वह सब इसमें पाये जाते हैं यह उत्तम गुणोंकी खानि है और ज्योतिषविद्या भलीभांति जानता है इस के बराबर कोई देखा सुना नहीं गया निदान रानी गणेश को राज-मन्दिर में ठहराकर उनका आदर करती एक दिन दिवोदास की स्त्री लीलावती ने अवकाश पा राजा से बिनती की कि हे राजन् ! एक ब्राह्मण यहां आया है वह मानो सर्वविद्याओंकी खानि है जानाजाता है कि वह ब्रह्म है जो शरीर धारण किये आया है हे राजन् ! वह दर्शन करने के योग्य है राजा प्रसन्न होकर कहने लगा कि उसको हमारी आज्ञा से बुलावो सो लीलावती रानीने अपनी सखी भेजकर उसको बुलालिया जब गणेशजी निकट पहुँचे तो राजाने देखा कि मानो ब्रह्मतेज आप स्वरूप धारण किये चलाआता है राजाने अगवानी कर बड़ी प्रसन्नता से प्रणाम किया गणपति ने वेदके मन्त्र से आशीर्वाद दिया फिर राजा ने बिठाया दोनों ओर से कुलश प्रश्न और आदर के उपरान्त वार्त्तालाप हुआ जोकि वह दोनों धर्मवान् और बुद्धिमान् थे इस लिये ऐसी संगति से राजाने अति प्रसन्न होकर गणेशजीको तो बिदा करदिया और अपनी रानी की प्रशंसा करनेलगा और उससे कहा कि जो प्रशंसा तुमने ब्राह्मणकी की वास्तव में यह ब्राह्मण उसके योग्य है यह त्रिकालज्ञ है अब हम कल प्रभात को ब्राह्मण को बुलाकर भविष्य के लिये कई प्रश्न करेंगे सो प्रभात होतेही राजाने गणेशजी को बुलाया और बहुत प्रकारके बहुमूल्य रत्नादि उन्हें भेंट दिये और अलग लेजाकर ब्राह्मण से यह पूछा कि मैंने देश का राज्य किया और प्रजा को पुत्रके समान पाला मैंने धर्मपूर्वक भोग भी बहुत किये और हरप्रकार के दान भी दिये और ब्राह्मणों के चरण पूजने के उपरान्त मैंने कोई दूसरी बात नहीं जानी इससे बढ़कर कोई बात

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं समझी मैं ब्राह्मणोंसे श्रेष्ठ देवताओंको नहीं जानता देवताओंने मेरे ऊपर क्या २ उपद्रव नहीं किये पर ब्राह्मणोंके चरण पूजने के कारण मेरा कुछ न होसका मैंने अपने धर्म को किसी समय नहीं छोड़ा और न मेरी कुछ निन्दा हुई पर ऐसी बातोंके कहनेसे कुछ लाभ नहीं अब मेरी इस बातको सुनिये कि मेरे मनमें अब कोई अभिलाषा नहीं रही न किसी वस्तु की इच्छा होती है मेरे मन में त्याग बसा है न जानूं मुझे क्या होगया आप भलीभांति विचारकर मुझे इसका उत्तर देवें ब्राह्मण ने कहा कि जो आपने मुझसे पूछा है तो मैं अवश्य ही इसका उत्तर दूंगा क्योंकि बिन पूछे राजाओंके सामने कोई उत्तर देना योग्य नहीं यह बात राजनीति और वेदके विरुद्ध है जिससे आपका मन नहीं लगता उसको हम कहते हैं निश्चय जानना कि तुम बड़े भाग्यवान् हो क्योंकि तुमको ब्राह्मणों से इतना प्रेम है तुम्हारा शरीर यश कीर्तिसे अलंकृत है विद्या में सबसे श्रेष्ठ हो तुम्हारे बराबर इन्द्र भी नहीं है क्योंकि सृष्टिभर की कला सब तुम में हैं तुम बड़ाई में विष्णुके समान हो तुम्हारा तेज अग्नि के समान है सत्यता में धर्मराज के समान हो युद्ध में निर्ऋतिके समान धन में कुबेर के सदृश हो आज्ञा देनेमें तुम रुद्रकी बराबरी रखते हो भार उठानेमें शेष के समान क्रोधमें सूर्य प्रसन्नता में चन्द्रमा हो बुद्धिमानी और निपुणता में बृहस्पति और गम्भीरता में समुद्र हो नीति में तुमको भृगु के समान कहना उचित है उँचाईमें हिमाचलपर्वत और राज्य के कारण तुमको राजामनु कहना उचित है पवित्रता में गङ्गा नाम के समान मुक्ति देने में काशी हो और दाह के दूर करनेमें मेघ नाश करनेमें शिव पालन करनेमें विष्णु और यश करनेमें ब्रह्मा और वाचालतामें सरस्वती और सुन्दरतामें कामदेव हो और पद्मा अर्थात् लक्ष्मी आप तुम्हारे हाथ में हैं क्रोधमें हलाहल विष और वचन में अमृत यह लक्षण मुख्य तुम्हारे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुखसे प्रतीतहैं जैसा कि हमने वर्णन किया अब और सुनिये कि अठारह दिनके पीछे उत्तरसे एक ब्राह्मण तुम्हारे पास आवेगा वह जो तुमको उपदेश करे उसे सत्य समझना उसके कहनेको मानना तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा यह कह ब्राह्मण राजासे आज्ञा लेकर अपने डेरेको लौटगया और राजा यह वचन ब्राह्मण का सुन प्रसन्न हुआ और इस भेद को गुप्त रक्खा और समयको देखतारहा और गणपति भी अपने पिता की आज्ञा पूर्ण करनेसे अतिप्रसन्न हुये और अपने बहुत स्वरूप कर काशी में स्थित रहे जब कि काशी दिवोदास के अधीन न थी उससमय मेंभी गणेशजी काशी के बहुतसे स्थानों में वर्तमान थे सो वही स्थान गणेशजी ने भलीभांति सजाये एक सिद्धस्थान है जब कि विष्णुने आकर राजा को भगाया तब शिवजी ने फिर काशीको सिरे से बसाया अर्थात् शिवजीने मन्दरगिरिसे आकर सबसे पहिले गणेश जीकी बहुत प्रशंसा की फिर अपने मन्दिरमें जाकर बड़े आनन्द से रहे हर प्रकार से अपनी पुरी काशीकी रक्षा करने में लगेरहे चारोंओर योगिनीगणों को रक्षा के लिये स्थापित किया और सात और गणों को स्थापित किया आठवीं ओर ब्रह्मा और विष्णुको रक्षा के निमित्त रक्खा जो भक्तोंको बड़ा आनन्द देते हैं यह शिवचरित्र दोनों लोक में अति आनन्ददायक और सबकी कामना देनेवाला है ॥

बारहवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदजी बोले कि दिवोदासने क्योंकर राज्य छोड़ा और शिवजी क्योंकर पर्वतसे उतरकर काशीमें पहुँचे क्या २ चरित्र किये विस्तारसे वर्णन कीजिये ब्रह्माजीने कहा कि शिवजीने जबकि गणेशकोभी देखा कि काशीसे लौट न आये तो अतिचिन्तित हुये और महाखेदकी दृष्टिसे विष्णुकी ओर देखकर कहा कि तुम संसार भरका आनन्द देनेवाले और विश्वम्भर हो हमको तुम प्राण से भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अधिक प्रियहो तुमसे कौन अधिक आनन्द देनेवाला है हमने बहुत मनुष्यों को काशी भेजा पर वे सब वहां स्थित होगये न तो वे लौट आये न हमारा काम पूरा किया न जानिये कि उनपर क्या दुःखपड़ा हमको काशी के देखे बिना चैन नहीं हमको काशी प्राण से भी अधिकप्यारी है यह बात हम सत्य कहते हैं जोकि तुम हमारे मनका सब सुख दुःख जानते हो इससे मैं इच्छापूर्वक तुमसे कहता हूं कि तुम आप जाकर हमारा काम पूरा करो पर तुमभी औरोंके समान कि जैसा उन्होंने किया है वैसा न करना तुमतो सब योग्य हो हमारी प्रेरणासे तुमने बहुत अवतार लिये हैं जिस तरह हमारा काम हो करना तुम को कुछ पाप न होगा अधिक क्या समझावें तुम हर प्रकार से सब कार्य करनेके योग्य हो विष्णुने कहा कि आपतो परब्रह्म हैं जब जो इच्छा आपकी होती है वही करते हैं हमारा निश्चय इसी पर है यश अपयश के दिलवानेवाले आपही हैं डूबी हुई नावके आपही केवट हैं जिसको आप अपनी आज्ञादें उसके बड़ेभाग्य हैं वेदने इस बातको भलीभांति वर्णन किया है अर्थात् जिसको आप अपना सेवक समझ लें वह भाग्यसे भरपूर है अपनी बुद्धि के अनुसार सब कोई उपाय करते हैं परन्तु सिद्धि आपके आधीन है संसार में सब कार्य मुरदे के समान हैं और यह जीवभी स्वाधीन नहीं पर आप सब कर्मोंके साक्षी और जीवदान देनेवाले हैं और मन्त्र भी तुम्हारे अधीन है तुम्हारी सेवासे शुभ मति उपजती है उसीसे सर्वकार्य पूर्ण होते हैं आपकी सेवा किये हुये विना न तो शुभकार्य और न सिद्ध कर्म पूर्ण होते और न कोई कार्य पूरा होता इस जीवको केवल तुम्हारी ही शुभदृष्टि से आनन्द मिलता जो कार्य कि होनेके योग्य नहीं जो वे भी बुद्धिमानी और युक्ति के साथ तुम्हारे स्मरणपूर्वक कियेजावें तो ऐसे कार्य भी सिद्ध हों उनमें कुछ विघ्न न हो तुम्हारी प्रदक्षिणा करके किसी मनो-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रथ को जावे तो सब काम निकलसक्ते हैं आप कृपा करके जो मुझको भेजते हैं मैं अवश्य माया के बलसे काम पूरा करूंगा मुझको कुछ मुहूर्त देखनेकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरे लिये केवल वही मुहूर्त शुभ है जबकि आपने आज्ञा दी मैं जाताहूं प्राणों के जानेपर भी मैं कार्य करने से न हटूंगा आप कृपाकी दृष्टि रक्खें यह कह विष्णुने शिवजी को बार २ प्रणाम किया और उनकी स्तुति और भजन कर काशी को चले दूरहीसे काशीको देखकर प्रसन्न होगये और शिरझुका काशी को प्रणाम किया और काशीके भीतर शुभ शकुन होते हुये गये जहां पर गङ्गा और वरुणा परस्पर मिली हैं सबसे पहले विष्णु उसी स्थान पर गये और हाथ पांव धोकर सचैल स्नान किया और जो दुःख उनको काशी के वियोग से था वह दूर होकर मन निर्मल होगया उसी दिन से वह स्थान पादोदक तीर्थ के नामसे प्रसिद्ध हुआ और अपने स्वरूपको विष्णुने उस स्थान पर पूजा जिसकी पूजासे पापियों को पापसे मुक्ति मिलती है वही मूर्ति आदिकेशवके नामसे प्रसिद्ध है उस स्थान को श्वेतद्वीप कहते हैं सिवाय इसके उस स्थानपर और बहुत तीर्थ जैसे क्षीरदधि है जिसके स्नान से दुःख दूर होजाते हैं और शङ्खतीर्थ जो उससे दक्षिण है और उससे दक्षिण चक्रतीर्थ और गदा-तीर्थ और पद्मतीर्थ और रमातीर्थ और गरुड़तीर्थ और नारदतीर्थ और प्रह्लादतीर्थ आदि हैं उनमें स्नान करने से सर्वपाप छूटजाते हैं और दुःख और शोक का नाम भी नहीं रहता अन्य तीर्थ विस्तार भयसे वर्णन नहीं किये ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि विष्णु अपनी केशवीनामक मूर्ति में प्रवेशकर कुछ २ अंशों से निकल शिवके कार्य में प्रवृत्त हुये इसबातको सुन नारदजी ने पूछा क्यों विष्णुजी अंशांशी होकर निकले और कहां

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गये ब्रह्माजी बोले कि जिस कारण पूरा रूप विष्णुका केशवी मूर्तिसे बाहर न निकला वह यह है कि जब अगले जन्मके पुण्य प्रकट होते हैं तब काशी मिलती है फिर वेदने कहा है कि कदाचित् काशी अपने भाग्य से मिलजावे तो फिर उसे छोड़ना न चाहिये त्याग करने वाला अतिपापी भाग्यहीन और मूर्ख है और जिस पर शिवजी की कृपा नहीं होती वह काशीमें नहीं रहसक्ता जिसपर शिवजी बहुतही प्रसन्न होते हैं वह सदा काशी में रहता है जो मनुष्य काशी में स्थित नहीं होते उनका जन्म वृथा है संसार के सर्वतीर्थ सेवकों के समान काशी की सेवा करते हैं काशी महाश्रेष्ठ और तीनों लोकसे निराली है जिसके रहनेवाले पापी नहीं होसक्ते काशीके बराबर और वस्तु नहीं है उसका सेवन, तप, यज्ञ, पूजा आदिके समान है वहांका चाण्डाल भी और देशोंके राजासे श्रेष्ठ है तीनों लोकमें सब स्थानों पर पापका भय है पर काशीवासी जीवोंको नहीं देवताओं को इच्छा रहा करती है कि हम काशीमें मरें क्योंकि वहां मरने से स्वर्गसेभी अधिक आनन्द मिलता है हे नारद ! इसीसे विष्णु अपने पूर्णस्वरूपसे केशवीरूप धार काशी में स्थित हुये और अपने एक छोटे अंशसे जो उसी मूर्ति से निकाला काशी के भीतर गये और गरुड़ और लक्ष्मी भी उस स्थान से कुछ दूर उत्तर की ओर स्थित हुये उस स्थान को जहां गरुड़ और लक्ष्मी स्थित हुये धर्मक्षेत्र बोलते हैं जिसके दर्शन से आनन्द प्राप्त होता है विष्णुने अपना स्वरूप इसप्रकार का धारण किया जो तीनों लोकको अधीर करदेवे कि अपने को उत्तमोत्तमवस्त्रों से भूषित किया और मधुरवाणी और ज्ञान ध्यानसे सम्पन्न होकर आपको पुण्यकीर्त नामसे प्रसिद्ध किया और गरुड़भी पुण्यकीर्त अर्थात् विष्णुके शिष्य होकर विनयकीर्तके नामसे विख्यात हुये जो पोथी हाथमें लिये गुरु की सेवामें लगे और लक्ष्मी भी मनुष्योंके समान उत्तम स्वरूप धारण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किये गोमोक्षनाम से प्रसिद्ध हुई और हाथ में पुस्तक लिये हुये मानो मूर्तिकारने चित्र खींचलियाहै जीवोंका धैर्य उसरूप अनूपके देखनेसे जाता है सो विष्णु अपना स्वरूप बदल यहचरित्र करनेलगे कि जब उनके देखने के लिये काशीवासी समूह के समूह आये तो विष्णु और गरुड़ गुरु चेलेकी तरह परस्पर संवाद करने लगे शिष्य गुरुकी स्तुति कर कहता कि हे गुरो ! वह धर्म वर्णन कीजिये जिससे संसार को आनन्द मिले तब गुरु अपने मनमें मुसकरा ऊंचे शब्द से सबको सुनाकर कहनेलगे कि हे शिष्य ! यह सृष्टि अनादि है इसका कर्ता कोई नहीं यह पुरानी है इसी प्रकार चली आती है अपने आप उपज कर फिर आपही नष्ट होजाती है यही बात अच्छेलोग और वेद कहते हैं ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त बराबर जन्म और मृत्यु में हैं आत्मा ही ईश्वर है सिवाय आत्मा के और कोई स्वामी नहीं ब्रह्मा आदि जो देवता कहेजाते हैं काल ने उनको भी खाने से नहीं छोड़ा हां कोई शीघ्र उपजता है कोई विलम्ब में मरता है पर शरीर धारण करके सब मरजावेंगे जो इस बात पर निश्चय करता है वही चतुर है जो मन में विचार करो तो प्रकट होगा कि संसार में न कोई बड़ा है न छोटा है न कोई दुःखी है न सुखी है आहार विहार में सब समान हैं न कोई बुरा है न अच्छा है न कोई पापी है न पापरहित क्योंकि भोजन सबको तृप्त करता है पानी सबकी प्यास बुझाता है स्त्री चाहे किसीप्रकार की हो भोग करने में समान है सवारी चाहे किसी प्रकार हो उससे प्रयोजन केवल चढ़ने का है बिछौना चाहे कैसाही हो सोनेमें जो आनन्द प्राप्त है वैसा सबमें सुख है और सबको देवताओं समेत मृत्यु का भय लगाहुआ है और ब्रह्मा विष्णु भी मृत्युसे डरते हैं जो शरीरधारी हैं वे बुद्धि विद्या और मनमें एकसे हैं यह सब झगड़ा मिथ्या है केवल एक बात अवश्य ध्यान रखने के योग्य है कि किसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीव को दुःख देना बड़ा पाप है और जीवों पर दया करने के समान कोई धर्म नहीं चार वेद अठारह पुराण छःशास्त्र इस बात पर एकमति हैं और दान चार बड़े हैं रोगी को औषध देना, भयभीत को निर्भय करना, भूखेको भोजन कराना, विद्यार्थी को विद्या पढ़ाना और औषध और मन्त्रके प्रभावसे धन सञ्चितकर अपने शरीरको पालना यहां नरक स्वर्ग दोनों हैं और किसी जगह विचार न करो सुख को स्वर्ग और दुःख को नरक जानो आनन्दसे मरनाभी मुक्ति है और बासना सहित क्लेशके दूरहोने को प्रमोक्ष अर्थात् मुक्ति समझना चाहिये वेद में जो दो प्रकारकी आज्ञा है एक प्रवृत्ति दूसरी निवृत्ति उनका आशय यह है कि जो जीवाहिंसा है वह प्रवृत्ति है और जिस स्थानमें जीवों पर दया है उसको निवृत्ति समझना चाहिये और वेदान्तों का यह वचन है कि अगले प्रमाणोंसे अधिक और कोई विश्वास योग्य प्रमाण नहीं सो विचार करो कि यह लोग तृण काष्ठ को काटकर जीवों को मारडालते हैं और तिल घी आदि आगमें जलाते हैं कि स्वर्ग मिले इससे और कौन आश्चर्य की बात है इसी प्रकारके और भी बहुत धर्म कहे और सब काशीके निवासी मोहित होगये और पुराने धर्मसे विमन होने लगे और इसी प्रकार लक्ष्मीजीने भी काशी की स्त्रियों को धर्म सिखाकर अपने अधीन करलिया और बौद्धधर्म को उन्हें सुनाकर उनकी इच्छा पूरी की और शरीर के पालने की शिक्षा दी और पातिव्रत धर्मको दूर करादिया अपने उपदेशसे वर्णाश्रमको मिटादिया उनके उपदेश का संक्षेप यह है जो स्त्रियों को सुनाया कि वेद जो आनन्दब्रह्म स्वरूप कहते हैं सो वह बहुत जन्म का नहीं है यह बात अशुद्ध है वरन उसका आशय यह है कि यह तन जब तक इन्द्रियों समेत परिपूर्ण है तब तक आनन्द करना चाहिये और जो कोई मनुष्य मांगे तो शरीर भी दे देना चाहिये जिससे कि केवल पृथ्वी का

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भार है इसकी उत्पत्ति पर धिकार है जिस शरीरको कौवे, कुत्ते, स्यार, कृमि, कीट अपना भक्ष्य समझते हैं उसका नाश अवश्य है एकदिन जल जावेगा उसके रखने से क्या लाभ है ? इससे उत्तम है कि इस से और जीवों को लाभ पहुँचे और जो कि सर्वसृष्टि के उपजानेवाले अकेले ब्रह्मा हैं तो सब लोग परस्पर भाई के समान हैं फिर उन्होंने परस्पर विवाहादि करके कुछ धर्म पर विचार न किया इस समय के मनुष्य बड़ेबुरे मनके हैं व्यर्थही वेद पर चलते हैं जो मनुष्य चारवर्ण वर्णन करते हैं सो विचार करनेसे चारोंवर्ण का होना सूचित नहीं होता क्योंकि शरीर पृथ्वी है जहां से चार पुत्र उपजे सो चारोंवर्ण अलग २ क्योंकर होसक्ते हैं यह जाति का विचार करना मिथ्या है और भी ऐसी बातेंझूंठ हैं जाति कुछ नहीं यह बातें केवल वाग्जालही हैं बरन यह समझना चाहिये कि मनुष्य सब बराबर हैं इसी तरह और बहुत बातें सिखलाकर स्त्रियोंके पातिव्रत धर्म को छुड़ाया सो स्त्री पुरुष दोनों व्यभिचारी होकर अपनी २ इच्छा के अनुसार परपुरुषों और परस्त्रियों के साथ भोग करनेलगे और राजा के पुत्र अपनी दासियोंके साथ बिगड़ गये पुरुष स्त्रियों के कहे पर चलनेलगे जो स्त्री ने कहा वही किया इसी प्रकार सब मनुष्य धर्म के विरुद्ध कार्य करनेलगे जिससे चारों ओर पापरूपी सेना फैल गई सिद्धभी ऐसे अधर्म के कारण राजा समेत प्रतापहीन हुये और राजा दिवोदासने ब्राह्मणका वचन स्मरणकर राज्यसे हाथ खींचलिया और मनुष्योंकी यह दशा देखकर ब्राह्मणकी बात को सत्य जाना वह मार्ग देखता था कि कब ब्राह्मण आवे और मेरा दुःख दूर हो इसी विचारमें रात दिन डूबारहता किसीसे कुछ मनकी बात न कहता ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि जब अठारहवां दिनआया जैसा कि ब्राह्मण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अर्थात् गणपतिने कहाथा तो राजा अति प्रसन्न हुआ और भोरकी निद्रासे उठकर नित्यकर्म से छुट्टी की और ब्राह्मणके आनेकी बाट देखनेलगा सो दोपहरके समय विष्णुजी ब्राह्मण के स्वरूपसे कई विप्रों को साथ लिये हुये अग्निसमान तेज धारे आये राजाने दूरसे देखा समझा कि वही उपदेश करनेवाले ब्राह्मण आते हैं तो बहुत प्रसन्नहुआ और अगवानीकर प्रणाम किया और अशीष पाने के अनन्तर ब्राह्मण को अन्तःपुर में लेगया पूजन यजन और सेवनके उपरान्त उनका बहुत आदर और सम्मान किया और उत्तमोत्तम भेंटदी और अपने भाग्य की सराहना करनेलगा जब देखा कि उन का परिश्रम दूर होगया तब राजाने बिनती की कि हे महाराज ! मैं सदा दुःखी रहा करताहूं इसका कारण जाना नहीं जाता राज्य का भार तो कुछ जाना नहीं जाता मैं क्या करूं कहां जाऊं जिससे मेरा कष्ट मिटै और मुझे आनन्द प्राप्त हो इसी चिन्ता में एक मास बीतगया है पर मेरा कष्ट नष्ट नहीं होता फिर अपने राज्य पालन प्रताप विजय और ब्राह्मण के मान करने का वर्णन करके कहा कि मुझको दुःख के उपजने का यह कारण जाना जाता है कि मैंने अपने तपोबल से गर्ववान् होकर देवताओं को तृणवत् समझा है मेरी यह दशा है कि मैंने सब भोगोंको भोगा पर अब मुझको रोगरूप भासित होते हैं रीति है कि जो कोई मनुष्य बराबर एक कल्पपर्यन्त जीता रहै तौभी वह मरने से नहीं बचता और मुझको राज्य करना चक्कीके चलानेके समान होगया है इससे आप ऐसा उपदेश करें जिससे हम आवागमन से छूटें मैं आपकी शरण में आया हूँ जो आप मुझसे कहें उसको आधीनतापूर्वक स्वीकार करूंगा मुझ को तो आपके दर्शनसे अतिआनन्द मिला है मुझको इस बात कामी विचार आता है कि देवताओं की शत्रुतासे किसीने भी आनन्द नहीं पाया जैसा कि त्रिपुर, राजाबलि, वृत्रासुर, उपव्रत,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दधीचिमुनि, सहस्रबाहु आदिकी कथायें साक्षी हैं इन सबको इन्हीं देवताओं ने नष्ट करदिया बरन उन्होंने शिवको बहकाया और छल किया यद्यपि उनमें बहुतसे शिवके पूजक थे तौभी शिव के हाथों से नष्ट होगये देवताओं के भी बड़े २ छल हैं इसलिये बहुत से मनुष्यों का वचन है कि देवताओं की शत्रुता आनन्द नहीं देती पर मुझको इस बातका कुछ भय नहीं है कि देवता मुझसे विरुद्ध हैं क्योंकि मैं ब्राह्मणोंका सेवकहूं जो बड़ाई देवताओंने यज्ञ, जप, तपसे प्राप्त की है वह मैंने ब्राह्मणों की सेवासे पाई है हम उनके समान हैं कुछ भी कम नहीं मुझे आपसे यह इच्छा है कि आप मेरे उपदेश करनेवाले होकर मुझे आवागमनसे छुड़ा देवें यह सुनकर विष्णुजी ब्राह्मणका रूप धारेथे उन्होंने दिवोदास की बड़ी प्रशंसा की और कहा हे राजन् ! जो कुछ कि हमको कहना था वह तो तुमहीं कहचुके हो तुमने जो कहा वह सत्य है तुम्हारे प्रताप को हम जानते हैं तुम्हारे समान न कोई राजा हुआ है न होगा तुमने देवताओं के साथ कुछ शत्रुता नहीं की क्योंकि तुम बुद्धिमान् हो तुम धर्मात्मा और वेदज्ञ हो तुम्हारे राज्य में कोई कार्य वेद के विरुद्ध नहीं होता तुमने प्रजा अच्छीतरह पाली जिससे देवताओं को भी आनन्द प्राप्त हुआ है पर हां मुझे एक बड़ा पाप मालूम होता अर्थात् तुमने जो शिवजीको काशीसे दूर करदिया यह बड़ा भारी पाप हुआ जो यह पाप किसी ढबसे दूर होजावे तो अतिप्रसन्नता के साथ तुम्हारे तीनों प्रकारके रोग दूर होजावें अब इसके दूर करने का केवल उपाय यह है अर्थात् वेदका वाक्य यह है कि जो कोई मनुष्य शिव का लिङ्ग स्थापित करता है उसके सर्वपाप नष्ट होजाते हैं वह हर प्रकार से निर्मल होजाता है मनुष्य के शरीरमें जितने रोम वर्त्तमान हैं उतने पाप शिवलिङ्ग स्थापन करनेवाले के विनाश को प्राप्त होते हैं मुख्य करके काशी में शिवलिङ्ग स्थापन करके किसी पापसे स्वप्न में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी डरना न चाहिये जो काशी में एक लिङ्ग भी शिवजीका स्थापित करदे तो मानों बहुतदेशोंमें शिवलिङ्ग स्थापित करचुका समुद्रके रत्नों की संख्या है जो उसमें उपजते हैं पर शिवलिङ्ग के स्थापित करनेकी बड़ाई असंख्य है इससे उचित है कि आप शिवलिङ्गकी स्थापना करें इससे तुम बड़े यशवान् होगे और अपना मनोरथ पाओगे विष्णु ने यह कहा और चुप होकर कुछ देरतक पढ़ पढ़ाकर राजाके शरीर को अपने हाथसे स्पर्शकर कहा कि हमने ज्ञानदृष्टि से देखा है वह तुमसे कहताहूं धन्य है तुमको तुम बड़े ज्ञानी शुभ गुणयुक्त हो तुम्हारे समान पृथ्वी पर दूसरा राजा नहीं जिस मनुष्यको कुछ धन अथवा देशकी इच्छा हो वह प्रभात के समय प्रतिदिवस तुम्हारे नाम को जपे हम तुम्हारे समीप आनेसे अतिलाभयुक्त हुये यह कहकर ब्राह्मण हँसते हुये बार २ शिर को हिलाने लगे और फिर कहा कि इस राजाके बड़े भाग्य हैं जो अब मुक्ति पावेगा जिस किसी को हम, ब्रह्मा, इन्द्र, देवता मुनिआदि और शेष ध्यान करते हैं वे शिवजी उस राजा को प्रतिदिन स्मरण करते हैं जैसे इसके भाग्य हैं वैसे तीनोंलोकमें किसी के नहीं उसको संसार के अलभ्यपदार्थ प्राप्त हैं इस तरह बहुत बातें अपने मनमें समझ फिर ध्यान छोड़ राजा से कहनेलगे कि हमारी इच्छा पूर्ण हुई तुम इसी शरीर से परमपद चलेजाओगे सर्वप्रकार से परम आनन्द पाओगे जब तुम शिवजीका लिङ्ग स्थापित करोगे तब तुम शिवपुरमें जाकर मृत्युसे छूटोगे आजके सातवें दिन शिवजी के गण तुम्हारे लेनेको आवेंगे तुम किस धर्मका फल इसको जानते हो हम केवल काशी सेवनसे समझते हैं कि तुमने वही पद पाया जिसने काशी की भक्ति भले प्रकार की वह तुम्हारे समान कृतार्थ होजाता है क्योंकि काशी सेवन करनेवाला शिवको बहुत प्रिय है यह कहकर ब्राह्मण अर्थात् विष्णु चुप होगये राजा अतिप्रसन्न हुआ और शिष्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समेत राजाने विष्णुरूपी ब्राह्मणको उनकी आज्ञानुसार सब कुछ दिया और कहा कि तुमने मुझको भवसागर से पार उतारा जो कुछ कि मैं आपको दूं वह सब तुच्छ है सो विष्णु विदा होकर अपने स्थान को गये और काशी भर में भ्रमणकर वहीं स्थित हुये और स्नान के उपरान्त शिवपूजा की और गरुड़ को शिवके समीप भेजा और शिवके आगमन की बाट देखते रहे और अग्निबिन्दु ब्राह्मण को देश कृपा किया और पञ्चनदके ऊपर बैठकर प्रीतिसे शिवका स्मरण करनेलगे॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

नारदके प्रश्न करने के उपरान्त ब्रह्माजी बोले कि राजाने ब्राह्मणरूपी विष्णुसे उपदेश पाकर अपने प्रभृतिजनों को बुलाया सो सब राजा, प्रजा, मन्त्री, मण्डलेश्वर अपने परिवार, पुरोहित, यज्ञ करानेवालों, सेनापतियों, सेना, राजकुमारों और वेदपाठियों आदि सहित आये फिर राजाने रिपुंजय अपने बड़े पुत्रको बुलाया फिर अपनी सर्वस्त्रियों को बुलाया जब सब आचुके तो जो ब्राह्मण ने कहा था वह सब हाथ जोड़कर प्रसन्नताके साथ सबको सुना दिया और कहा कि अब हम सात दिन और पृथ्वीपर हैं फिर अवश्यही शिवपुरीको जावेंगे यह सुन कर सब लोगों को आश्चर्य उपजा पर किसीने राजा के भय से कुछ न कहा फिर राजा तुरन्त उठकर घरके भीतर गये और सामग्री इकट्ठीकर शुभलग्न पा रिपुञ्जयको युवराज का अभिषेक किया फिर काशी में आकर बड़ी सामग्री इकट्ठी की और गङ्गा के पश्चिम की ओर शिवकी पूजा की और जितना धन देशों के जीतने से इकट्ठा किया था और जो द्रव्य कि शुभरीति से संग्रह हुआ था वह सब शिवालय के बनाने में व्यय करदिया काशी में वह स्थान प्रसिद्ध है उसकी बड़ाई तीनों लोक में विख्यात है जिसके केवल स्मरण करनेसे कुछ दुःख नहीं उपजता उस शिवालय में शिवलिङ्ग नरेश्वर के नाम से स्थापित किया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिर राजा के मनमें अतिप्रसन्नता उपजी और उसका मुख सूर्य के समान चमकने लगा कारीगरों को बड़ा पारितोषिक दिया सब बाजे बजनेलगे और सब काशीके देवताओं अर्थात् वासियों को बहुत कुछ दिया और अन्य मनुष्यों कोभी भरपूर करदिया और सब सामग्री इकट्ठी करके षोड़शोपचार से पूजा की राजा के मन में दुःख था वह दूर होगया राजाने शिवको सबसे श्रेष्ठ समझा और काशीके रहने वालों को जो मनुष्यरूप में शिव हैं बहुत आदर किया और जितने लिङ्ग काशीमें सुनने देखने या विचार से विदित होते हैं उन सबकी पूजा कराई और जितनी काशी में देवताओं की मूर्तियां थीं उनकोभी पूजा फिर शिवके ध्यानमें डूबा और सिवाय शिवलिङ्ग के और किसी देवता की राजाने आप पूजा न की और पूजन और प्रणाम के अनन्तर ध्यान में मग्न हुआ जब विष्णु के बताने के अनुसार सातवां दिन आया उस दिन राजाने शिवलिङ्ग की बड़ी पूजा की और पूजन और प्रणाम के उपरान्त स्तुति करने लगा तब आकाश से उत्तम विमान पृथ्वीपर उतरा उसके ऊपर शिवके गण चारों ओर बैठे थे उन सब की चार २ भुजाथीं जिनका तेज दूरतक फैलगया सूर्यवत् दीप्ति थी वे सब हाथों में त्रिशूल लिये हुये थे उनके पांच २ मुख और तीन २ आंखें उत्तम सुन्दर शरीर जटाजूट धारे सर्पोंसे अलंकृत सब नीलकण्ठ शशिभाल पर शरीरमें भस्म रमाये शरीर भरमें सर्प लिपटे निदान हर बातमें शिवके समान थे और बहुत स्त्रियां भी विमानपर विराजमान थीं जो अपने हाथमें चँवर लिये हुई थीं मानों संसारभर की सुन्दरता केवल विमान में आबैठी थी शिवगण विमान से उतरे और उनसे अपनी पूजा ली और गणोंने राजा की आज्ञानुसार राजाके शरीर को स्पर्श किया सो राजा तुरन्तही देवताओंके समान दिव्यदेह होगया उसके शरीर में सम्पूर्ण लक्षण शिव और गणों के समान प्रतीत हुये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और तुरन्त विमान पर आरूढ़ हो अपनी समाजसहित गणोंके साथ शिवपुरमें गया और गणोंमें गिनागया मुक्ति प्राप्त हुई और वह स्थान जहांसे राजा शिवपुरको गया था भूपालश्रीके नामसे बड़ा तीर्थ हुआ जो लिङ्ग दिवोदासेश्वरके नामसे प्रसिद्ध है उसकी पूजासे फिर मनुष्य को आवागमन का भय नहीं रहता यह बड़ा पवित्र इतिहास है जिसके पढ़ने सुनने से मनके मनोरथ पूरे होते हैं कुछ कष्ट नहीं रहता तीनोंलोक में सिद्धि प्राप्त होती है॥

सोलहवां अध्याय॥

नारद के प्रश्नके उपरान्त ब्रह्मा बोले कि हे नारद! विष्णुकी आज्ञानुकूल गरुड़ शिव के समीप आये और आदर सम्मानकर खड़े हो स्तुति की शिवने पूछा कि तुम कहां से आये गरुड़ ने कहा कि सब वेदपुराण और सब गण इस बातपर एकमति हैं कि संसार में वह सब से अधिक चतुर है जो आपकी सेवा और आज्ञापालन करे यद्यपि आप सब कुछ जानते हैं पर आप संसारी रीति से पूछते हैं पर मुझको इन बातों से क्या प्रयोजन है मैं हर प्रकार से सेवक हूं यह कहा और सब योगिनीगणों, गणेश और विष्णु के चरित्र की सब कथा वर्णन की और कहा कि विष्णु ने मुझको आपके पास भेजा है यह सुनकर शिवजी हँसे और गिरिजा अतिप्रसन्न हुई और वीरभद्र के आनन्द का वर्णन नहीं होसक्ता इसी प्रकार और सबगण भी महाप्रसन्न हुये शिवजी ने गरुड़से कहा कि तुम हमारे बड़े हितकारी हो तुमसे अधिक और कोई मुझको प्रिय नहीं जो इच्छा हो वह मुझसे वरदान लेलो तुम हमारे उत्तमभक्त और प्राणसे प्यारे हो हमारी आज्ञा से विष्णु के वाहन हुये गरुड़ने प्रीतिसागर में डूबकर विनय की कि मुझको और वर क्या चाहिये इससे अधिक और क्या है कि हमने आपके चरणोंको देखा इन्हीं चरणों के प्राप्त होने को ब्रह्मा, विष्णु,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवता, मुनि आदि कैसा २ तप करते हैं जब कि आप मुझपर प्रसन्न हुये तो मैं मायाके बन्धन से मुक्ति पाचुका मुझको यही बड़ा वरदान है हां जो आपने प्रसन्न होकर वरके लिये कहा है तो मेरी यह इच्छा है कि मुझको भक्ति प्राप्त हो आपके चरणारविन्द की प्रीति कदापि कम न हो आपके भक्तों की सेवा करूं किसी से शत्रुता न हो शिवजी ने कहा कि यही होगा फिर शिवजी ने सबको बुलाकर चलने की तय्यारी की उस समय मन्दरगिरि महादुःखी हो शिवजी के चरणों पर गिरपड़ा और कहा कि महाराज मुझे मत छोड़ो शिवजी बोले तुम खेद न मानो तुमको मैं बहुत प्यारा जानता हूं हम तुमपर लिङ्ग-रूप होकर स्थित रहेंगे और मनसे तुमको कभी न भुलावेंगे इसी प्रकार बहुत समझाकर उसका कष्ट दूर किया और लिङ्गरूप होकर मन्दरगिरि पर स्थित हुये फिर काशी जाने लगे और शुभ लग्न पाकर चले चलने के समय सब को बड़ा आनन्द हुआ जिसतरह शिवजी गिरिजा और पुरीसहित चले और जो प्रसन्नता चलने के समय हुई उसको कोई कोटि मुखसेभी वर्णन नहीं करसक्ता शिवजीने गरुड़ से कहा कि तुम आगे जाकर विष्णुको हमारे आने का समाचार दो सो गरुड़ उसी समय विष्णुके समीप आये जब कि विष्णु अग्निबिन्दु नामी एक मनुष्य को उपदेश देरहे थे कि गरुड़ने पहुँच कर विष्णुको प्रणाम किया॥

सत्रहवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! प्रणामके उपरान्त गरुड़ने विष्णुसे कहा कि महाराज! शिवजी आते हैं यह सुनकर विष्णु अतिप्रसन्न हुये और ध्वजा देखी जो असंख्य सूर्यों के समान झलकती और जिसके प्रकाश से चारों ओर उजियाला होगया नानाप्रकार के बाजोंका शब्द सुना जय २ हुआ यह सामान देख विष्णुने भी कहा कि जय शिव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिर अग्निबिन्दु से कहा कि हमारा चक्र छूले कि तुझको मुक्ति प्राप्त हो सो अग्निबिन्दुने ऐसाही किया और मुक्त हुआ और गरुड़को सब कुछ देकर ब्रह्मा को बुलाया और योगिनीगण और सब सूर्यों को साथ लेकर गणेश के समीप आये और ब्रह्मा को सबके आगे करके प्रसन्नतापूर्वक चले और काशी के भीतर शिवको देखकर प्रणाम किया हमने चावल, फल, फूल हाथमें लेकर रुद्रसूक्त पढ़ आशिष दी क्योंकि हमको शिवने संसारी रीतिसे प्रणाम करने को निषेध किया उन्होंने संसारीजीवों के समान आप मुझे प्रणाम किया और विष्णु ने शिवको प्रणाम किया गणपति की ओर जब शिवने देखा तो गणपति चरणों पर गिरपड़े शिवने गणपति को उठाकर शिर सूंघने के उपरान्त अपने आसन पर बैठाया और बहुत प्रकार से गणेश की प्रशंसा की योगिनीगण शिवकी इच्छा पाकर प्रणामके उपरान्त मङ्गल गानेलगीं और बारहों सूर्यनेभी प्रणाम किया शिवने विष्णु को अपने आसनपर बाईं ओर बैठालिया और हमको दाहिनी ओर बैठाया और गणों की ओर देखकर केवल देखनेही से उनका सत्कार किया और योगिनियों का शिर हिलाकर आदर किया और बारहों सूर्य से यह कहकर कि बैठ जाओ आनन्द दिया तब जब कि शिव काशी से बाहर बैठे थे उत्तमोत्तम सभा अलंकृत थी कौन ऐसा था जो उससमय आनन्द से फूला न समाता और काशी के मनुष्य तालाब के कमल के समान विराजमान थे और जोकि चन्द्रमा शिवके वियोग से मुख मूंदे थे शिवके आनेसे फूल उठे उस समय हमने शिवको प्रसन्न देख कर विनती की कि हे सदाशिव ! मुझसे कुछ आपकी सेवा हो नहीं सक्की इसको क्षमा करना फिर काशीकी बड़ाई वर्णन की शिवने कहा कि हम तुमसे प्रसन्न हैं तुम कुछ भय मत करो तुम किसी प्रकार दण्ड के योग्य नहीं क्योंकि पहिले तो ब्राह्मण हो जिसकी बड़ाई बहुत है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूसरे अश्वमेधयज्ञ करने से कोई पाप नहीं रहता तीसरे तुमने हमारे लिङ्ग काशी में स्थापित किये इससे तुम्हारे सब पाप नष्ट होगये जो मनुष्य काशीमें एक लिङ्ग भी स्थापित करे उसके असंख्यपाप नष्ट हो-जाते हैं सिवाय इसके ब्राह्मण से चाहे हज़ारों पाप हों पर वह दण्ड के योग्य नहीं जैसा कि वेद कहते हैं जो ब्राह्मण को दण्ड देते हैं उनका आनन्द थोड़ेही दिनोंमें जातारहता है इसी प्रकार शिवने योगिनी सूर्य और गणों को भरोसा देकर उनकी लज्जा दूर की फिर शिवने विष्णु को देखा पर जिह्वा से कुछ नहीं कहा और मनमें शिव और विष्णु दोनों अतिप्रसन्न हुये उस समय सबोंने शिवकी बार २ स्तुति की सो शिव और गिरिजा बहुत प्रसन्न हो शुभदृष्टि से सबकी ओर देखने लगे उस समय गोलोक में पांच गौ आकर शिवके सम्मुख खड़ी हुईं जो शिवको अतिप्रिय हैं और जिनकी सेवाके लिये विष्णु को गोलोकमें बसाया उनके नाम सुनने से सर्वपाप नष्ट होजाते हैं देवता और पि-तरों को आनन्द प्राप्त होता है उनके नाम यह हैं सनन्दा १ सुमना२ शिवा ३ सुरभि ४ कपिला ५ शिवने प्रसन्नतासे उनकी ओर देख दिया सो उनके थनों से दूध टपककर कुण्डरूप होगया जो कपिलाह्रद के नामसे प्रसिद्ध हुआ उसमें स्नानसे कोई पाप नहीं रहता शिवकी आज्ञा से सबदेवताओंने उसमें स्नान करके तर्पण किया और शिवसे कहा कि यहां स्नान करने से हम अतिप्रसन्न हुये हैं तुम्हारे धर्म से हमने अतिप्रसन्नता प्राप्त की हमारी इच्छा है कि इस स्थानकी बड़ाई बहुत हो शिवने कहा कि हे विष्णु और सब देवता! हम कहते हैं कि यह सबसे बड़ा तीर्थ है जो मनुष्य इसमें तर्पण श्राद्धआदि करेगा उसको गयासे भी अधिक फल प्राप्त होगा इसको शिवगयाख्यतीर्थ कहेंगे और हमारे नाम वृषभध्वजादि कहकर एक पाप भी किसीको न रहेगा और दूध, शहद, घी, जलके समान चारोंयुगमें काशी के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भीतर वर्त्तमान रहेंगे इससे हम सब अंशस्वरूप से स्थित होंगे और सब को वर देंगे और यहां चाहे कोई किसी दशामें मरेगा उसको मुक्ति दीजावेगी शिव काशीको यह वर देरहे थे कि नन्दीश्वरगण आये दोनों हाथ जोड़ प्रीति से शिवकी स्तुति करनेलगे ॥

अठारहवां अध्याय ॥

नन्दीश्वरने कहा कि हे महाराज शिवशंकर दीनबन्धु ! एक कृपा की दृष्टि इधरभी करदीजिये मैंने आपकी आज्ञासे आठ बैलका रथ सजाया है जिनके गलेमें घण्टे पड़ेहुये हैं और आठ घोड़े जिनकी गर्दन में भूषण पहिनाया गयाहै रथमें लगे हैं और सूर्य्य, चन्द्रमा, पवन, गंगा, सरस्वती, ब्रह्मा, व्याहृति आदि सब अपने २ उचित स्थानोंपर अलंकृत हैं अर्थात् यह सब रथकी सामग्री हैं ऐसा जो रथ बनाहुआ है उसपर आप सवारी कीजिये यहकह नन्दीश्वर चुप होगये और विष्णु हम और देवता आदि अतिप्रसन्न हुये और शिवनेभी प्रसन्न होकर दया की दृष्टिसे देख पूर्ण भक्ति कृपा की फिर शिवजी ने चलनेका उद्योग किया सब लोग इस इच्छाको जानगये फिर सुरमाताओंने नीराजन करके शिवजीकी स्तुति की उससमय बड़ाउत्सव हुआ सब मनुष्योंकी जिह्वा से जय २ शब्द प्रकट हुआ नाना प्रकारके बाजे बजनेलगे शिवजीको उठतेहुये जानकर विष्णु ने अपना हाथदिया शिवजी उठखड़े हुये गणोंने अपने २ डमरू बजादिये जिससे चारोंओर शब्द पूरित होगया और तीनों लोक के निवासी आये जिनका ब्योरा संक्षेपसे वर्णन करते हैं अर्थात् तेंतीस करोड़ इन्द्रादि देवता दो कोटि तुरङ्गगण एक कोटि भैरवीदल नवकोटि चामुण्डीसमाज और वीरभद्र की सेना और दूसरेगण अष्टकोटि जो बालकसमानहैं और छियासी हजार मुनि ब्रह्मज्ञानी और सप्तकोटि गणेशजी के गण श्रीगणाधिप के साथ जिनका स्वरूप श्रीगणेशके समान था हाथों में फरसा लिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और घरों के रहनेवाले अन्य ब्राह्मण और आठ कोटि पाताल के निवासी नाग अर्थात् तक्षक आदि तीन कोटि गये और शिवजी के नौकर दनु और दिति की सन्तान अर्थात् दैत्य और दानव दो दो कोटिआये आठकोटि गन्धर्व और आधा करोड़ राक्षस और यक्ष और पङ्खवालेपर्वत और बे परके आठहज़ार और गरुड़ छःअयुत और एक अयुत विद्याधर और साठहज़ार ईश्वर और तीनसौ वंशपती और वनकी ओषधि आदि शरीर धारण किये और आठलाख सात समुद्र उत्तमोत्तम रत्न भेंटलिये और तीनहज़ार और पांचअयुत नदियां और आठोंदिग्गज सब उस स्थानपर आये जहां शिवथे और शिवको देखकर अतिप्रसन्न हुये सब मिलकर शिवजीकी सेवा करनेलगे और हर्ष से खिलखिलाते थे कोई नाचता था कोई गाता था कोई जय २ का शब्द उच्चारण करता था कोई ध्यानमें लगा था कोई शिरसे पांवतक शिवके स्वरूप को देखता था कोई शिवजीपर चँवर डुलाता था कोई हाथ जोड़ स्तुति करता इस प्रकार सबको सेवाकरते देख शिवजी ने सबकी ओर कृपाकी दृष्टि से देख दिया और सबका आदर करके शिवजी रथपर चढ़े और गिरिजा को बाईं ओर बैठाया जब शिवको गिरिजासमेत रथपर विराजमान देखा तो इन्द्रादिकों ने बड़ी स्तुति की इसी प्रकार विष्णु और हमसबोंने अपनी २ स्तुति पढ़कर सुनाई सो शिवजी सबकी ओर कृपासे देखकर काशी के भीतर गये और अपने शरीर काशीको देखकर बहुतही प्रसन्न हुये और जय काशी और जय आनन्दवन इसी प्रकार बहुत से वचन शिव मुखपर लाये और प्रेम की अधिकता से शरीरभर गद्गद हुआ जिह्वा रुकने लगी उस समय जैगीषव्य शिवजीके भक्तने गुफा से निकलकर शिवजी के दर्शन किये शिवजीने भी उनको निकट बुलाकर दर्शन दे प्रसन्न किया फिर काशी के निवासी सर्व ब्राह्मण आये शिवजी उनका भी आदर करके वरुणा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के निकट पहुँचे और दो मन्दिर हिमाचल के बनाये हुये देखकर प्रसन्न हुये आगे जाकर अपने भवन की तय्यारी के लिये विश्वकर्मा को आज्ञा दी सो विश्वकर्मा ने शिवजी की आज्ञा से तुरन्त राजगृह निर्मित किया जिसमें तीनों लोक से अधिक सामग्री लगाई शिवजी का मन्दिर अति आश्चर्यदायक तय्यार हुआ सो शिवजी गिरिजा पुत्रों गणों और देवताओं आदि समेत अति प्रसन्न हो उसमें प्रवेशकर गये सर्वदुःख नष्ट होगये और संसारीरीति के अनुसार सब को प्रतिष्ठित करके बिदाकरादिया और आप गिरिजा और परिवार समेत वहां जाकर प्रसन्नरहे जो इस चरित्रको सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसको बहुतही आनन्द प्राप्त होगा यह शिवजी और काशीका आख्यान किसी पाप को जलाने विना नहीं रखता सब पाप नष्ट होजाते हैं और दोनों लोक के सुख प्राप्त होते हैं और शिवजी गिरिजा और गणों समेत प्रसन्न होते हैं और उसको तीनों लोक में कोई वस्तु अलभ्य नहीं॥

उन्नीसवां अध्याय॥

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि हे पिता! जब शिवजी चले तो वह तुरन्त अपने भवन में स्थित हुये वा मार्ग में कहीं ठहरे और जो मनुष्य योगी, ब्राह्मण आदि दर्शनों के निमित्त आये उन का चरित्र विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी ने कहा कि पहिले शिवजी जब काशी में आये तो सबसे पहिले जैगीषव्य अपने भक्त के घरमें गये वह राति दिन एकान्त में रहा करते थे और शिवजी के ध्यान में डूबे रहते उनके प्रेम से शिवजी और गिरिजा और सब गण उनके अधीन थे जब कि शिव काशी को छोड़ मन्दराचल पर्वत पर जारहे थे तबसे जैगीषव्यमुनि ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं उसी समय अन्न और जल करूंगा जब फिर शिवजी के चरणकमल देखूंगा सो यही उद्योग कर वह एकान्त में जा छिपे और शिवजी के ध्यान में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रात दिन रहे सो उन्हों ने अट्ठासी हज़ार वर्षतक न तो पानी पिया न भोजन किया यह बात यातो मुनि ने योगबल की शक्ति से की वा उनपर शिवजी की पूर्ण कृपा थी मुनि की बड़ाई सिवाय शिव के और कौन जानसक्ता है इसी कारण शिव ने सैकड़ों उपाय अपनी काशी के लिये किये क्योंकि शिव भक्तवत्सल हैं धर्मात्मा राजा की हानि अपने भक्त के लिये उचित समझी जैगीषव्य की कुटी में शिवजी के जाने की कथा इसभांति है कि शिवजीने नन्दीश्वरगण को आज्ञा दी कि यहां एक गर्त है जिसके भीतर एक हमारा भक्त जैगीषव्य रहता है उसके शरीर में केवल चर्म और आस्थि रहगई हैं उन्होंने हमारे दर्शन के निमित्त बड़े २ दुःख सहे अर्थात् जबसे हमने काशी छोड़ी तब से वह अन्न जल रहित रहे हैं हमको उन्हें दर्शन दिये बिन आनन्द नहीं इसलिये तुम हमारा कमल गुफा के भीतर लेजाकर इसी कमल से मुनिके शरीर को स्पर्श करना वह भलेचंगे होजावेंगे उस समय तुम तुरन्त उन्हें साथ लेकर आना सो नन्दी ने ऐसाही किया मुनिने शिवके दर्शन किये और अतिप्रेम से मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़े जब चैतन्य हुये तो तुरन्त स्तुति करने लगे जो आप उन्होंने बनाई थी और कहा कि मैं तीनों लोक में आपको सर्वोपरि समझ कर आपकी शरण में आया हूं ऐसी स्तुति सुन शिव अति प्रसन्न हुये कहा कि वर मांगो जो हमारा है वह सब तुम्हारा है मुनिने विनय की कि जो आप प्रसन्न हैं तो हमारे शिरपर अपना हस्त कमल रखिये मेरी इच्छा है कि आपके चरणों से कभी दूर न रहूं आपके निकट और आपके प्रेम में डूबा रहूं दूसरी यह इच्छा है कि जो लिङ्ग कि मैंने आपका स्थापित किया है उसमें आप गणपति और स्कन्द सहित स्थित होवें शिवजी बोले बहुत अच्छा ऐसाही होगा और बिन तुम्हारे मांगे हम यह वर तुमको देते हैं कि तुमको योग प्राप्त हो जिससे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निर्वाणपद मिलेगा तुमहीं योगशास्त्र के आचार्य होगे तुमहीं सबको उपदेश करोगे और सब संदेहों को दूर करोगे और जैसे हमारे गण भृङ्गी और सोम और नन्दीश्वर हैं वैसेही तुम भी हमारे एक गण होगे हमारे भक्त जरा और मृत्युसे वर्जित हैं तुम मुझे बहुत प्यारेहो यद्यपि संसार में बड़े २ संयम नियम और भी हैं पर तुम्हारे नियम के समान एक भी नहीं है अर्थात् तुम्हारा नियम है कि बिन हमारे देखे भोजन नहीं करते पानी नहीं पीते वास्तव में जो मनुष्य हमारे दर्शन बिन भोजन करता है उसके समान दूसरा पापी नहीं है और जो हमारी पूजा बिन जल पीता है वह तो मानो नरकमें प्रवेश करता है मानो वह बुरी बस्तु का खानेवाला है उसके समान पापी संसार में दूसरा नहीं हम तुम्हारे ऐसे नियम से अतिप्रसन्न हैं तुम हर समय हमारे निकट रहोगे तुमको जीवन्मुक्ति प्राप्त रहेगी तुम्हारी समानता किसी भक्त के साथ तीनों लोक में न की जावेगी तुमको कभी कुछ दुःख न होगा जो लिङ्ग तुमने हमारा स्थापित किया है वह जैगीषव्य-केश्वर के नाम से प्रसिद्ध होगा जो मनुष्य उसकी तीन वर्षतक सेवा करेगा वह पूर्णयोग पावेगा उसके दर्शन से सिद्धि और आनन्द प्राप्त होगा और निन्दा और पाप नष्ट होजावेंगे और जो मनुष्य तुम्हारी गुफामें तुमको प्रणाम और दण्डवत् और स्मरण कर जावेगा वह छःमहीने में सुगमतापूर्वक योग पाकर सिद्ध होजावेगा उसके सब पाप नष्ट होजावेंगे यह हमारी आज्ञा है इसका नाम ज्येष्ठेश्वर क्षेत्र होगा इस स्थान पर आने से सर्व प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त होगी यहां पर एक शिवयोगी के भोजन करानेसे करोड़ योगियों के खिलाने का फल होगा और जो तुम्हारा लिङ्ग स्थापित किया हुआ है उसमें हम पूर्णरूप से सदा स्थित रहेंगे पर कलियुग में यह लिङ्ग सबकी दृष्टि से छिपा रहेगा जो योगी योगके साधनेवाले हैं उनको योग दिया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जावेगा उसके दर्शन से सर्व पाप नष्ट करूंगा जो स्तुति तुमने बनाकर पढ़ी वह सब स्तुतियों की शिरोमणि होगी इसके पढ़नेसे सब मनोरथ पूरे होंगे बड़े २ पाप जातेरहेंगे पुण्य बढ़ेगा भय दूर होगा सर्वयोग साधनेके लिये अतिलाभदायक होगा हमारी भक्ति बढ़ेगी हानि न होने पावेगी इसके पढ़ने सुनने से लोक में कोई ऐसा कार्य नहीं जो न होसकेगा इससे यह तुम्हारी स्तुति युक्ति से पढ़नेके योग्य है और प्रतिदिन सुननी चाहिये यह सुनकर मुनि शिवजीके चरणों पर गिर पड़े और स्तुति करनेलगे शिवजी ने उनको पृथ्वीपर से उठा कर अपने हृदयसे लगालिया और विष्णु और हमने भी मुनिको लिपटा लिया ऐसी दयालुता शिवजी की देख सबको आनन्द प्राप्त हुआ सब के मन में शिवजीके प्रेमने बल किया और सबने शिवजी की स्तुति की और शिवजी की सेवा में प्रवृत्त हो जय २ करनेलगे जब शिवजी ने आगे जाना चाहा तब सब ब्राह्मण अगवानी को आये ॥

बीसवां अध्याय ॥

नारदजी ने पूछा कि जो वार्त्ता ब्राह्मणों और शिवजी में हुई वह वर्णन कीजिये वे ब्राह्मण कितने थे ब्रह्माजी बोले कि जब सदाशिव जी काशी को छोड़ मन्दर गिरिपर चलेगये थे तब काशीके ब्राह्मणों ने अतिदुःखी हो सम्मति की और अपने घरोंका प्रेम छोड़ केवल काशीकी प्रीति को दृढ़कर क्षेत्रसंन्यास लिया और शिवजीकी प्रीति में अटल हो काशीमें स्थित हुये और अपने दण्डसे पृथ्वी खोद वृक्षों के मूलादि निकाल खाते थे उस स्थान का नाम पुष्करिणी हुआ जिसके दर्शनसे सब अर्थ पूरे होते हैं उसी स्थानपर उन्होंने शिवलिङ्ग स्थापित किया और सदाशिव का तप करते रहे और उन्होंने युक्ति पूर्वक रुद्राक्ष की माला पहिनकर शरीर में भस्म लगाई और प्रतिदिन शतरुद्री का जपकर शिवलिङ्ग की पूजा किया करतेथे और शिव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीके ध्यान में प्रवृत्त रहकर शिवजी के स्मरण के सिवाय और कुछ नहीं जानते थे और शिवजी के उत्तमोत्तम व्रत रखकर पापों के करने से बचते थे और उन्होंने अपने २ स्थानों में शिवलिङ्ग स्थापित किये थे जब कि ऐसे ब्राह्मणों ने शिवजी का आगमन सुना तो अतिप्रसन्न हो शिवजीके दर्शनको चले उनकी संख्या नीचे लिखेके अनुसार थी॥

उस स्थानका नाम जहांसे ब्राह्मण आये	संख्या	उस स्थानका नाम जहांसे ब्राह्मण आये	संख्या
दण्डाघाट	५०००	ध्रुवतीर्थ	६००
मन्दाकिनीतीर्थ	१००००	पितृकुण्ड	१००
हंसक्षेत्र	३००	उर्वशीह्रद	१००
ऋणमोचनतीर्थ	१२०००	प्रथोदकतीर्थ	१३००
दुर्वासातीर्थ	१२०००	यक्षिणीह्रद	३१००
कपालमोचन	१६०००	पिशाचमोचनकुण्ड	१६००
ऐरावतह्रद	३००	मानसर	३००
मैनकुण्ड	२००	वासुकिह्रद	१ अयुत
गन्धर्वाप्सरसाख्य	६००	सीताह्रद	८००
वृषपतितीर्थ	३६०	गौतमह्रद	६००
वैतरणी	१५०	दुर्गतिहर	११००
गङ्गाके	निकटवर्ति	ब्राह्मण	५५५

यह सब पूर्वोक्त ब्राह्मण शुभवस्तु हाथ में लियेहुये जय २ कहते शिवजीके समीप आये और शिवजीका एकदृष्टि से दर्शनकर कृतार्थ होगये उन ब्राह्मणोंने शंकरसूक्त पढ़कर स्तुतिकी शिवजीने प्रसन्न होकर कुशल पूछी ब्राह्मणोंने कहा कि जब आप कृपा करते हैं तो कुशल ही है दुःख कोई नहीं और कहा हे महाराज! जब आपने काशी को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छोड़दिया तो हमारे मनों में दुःखने अपना स्थान किया और हम सबने सम्मति की कि सब छोड़ काशी में पड़े रहैं क्योंकि काशी को शिवरूप करके बखाना गया है यहांके रहने से कुछ हानि न होगी सो हम सब यहां स्थित रहे और आपके ध्यान में लग आपको देख बड़ाफल पाया इससे अधिक और कोई फल वेदने भी नहीं कहा धन्य है आपकी काशी जो तीनों लोक से निराली है जहां रहनेसे कोई पाप नहीं रहता यहां रह कर जो आपका ध्यानकरे वह सबसे श्रेष्ठ है और वह धन्य है फिर ब्राह्मणों ने काशी की बहुत स्तुति कर कहा कि काशी और शिवजी एकही रूप हैं इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद! वास्तव में काशी शिवका स्वरूप और शिव काशी का अङ्ग हैं यह बात निश्चय करके वेद कहते हैं जैसे कि गौरीशंकर एकही तनु हैं वैसेही काशी और विश्वनाथ एकही हैं इनमें कुछभी अन्तर नहीं है जैसे कि शब्द और अर्थ में कुछ भिन्न भावना नहीं वैसेही इनमें भी भिन्नता नहीं जो मनुष्य काशी में बसकर शिवका भजन करे उसके समान कोई भाग्यवान् मनुष्य नहीं निदान काशी की प्रशंसा के वचन सुन शिवशंकर अतिप्रसन्न हुये और श्रीमुखसे बोले कि तुम सब धन्य हो कि तुम सबने मुझको अपना अधीन करलिया तुम्हारी जो काशीपर इतनी भक्ति है तो तुम सब मुझहो जो काशीके भक्त हैं वे अवश्य मेरे भक्त हैं जो दोनों के भक्त हैं उनकी बराबरी कौन करसक्ता है जब तुम दोनों प्रकार से मेरे भक्त हो तुम्हारी बराबर और कोई हमारा भक्त नहीं है तो हर प्रकार से तुम निर्भय होगये हो यह काशी हमको अतिप्रिय है इसके सेवन करनेवाले पापी नहीं होसक्ते यह काशी हमारे सिवाय तीनोंलोक से भिन्न है यहां किसी दूसरेकी आज्ञा न यमराज की कुछ चलसक्ती है तुम काशीवासियों से न हम और न काशी दूर है तुमको जो वर चाहिये मांग लो हम प्रसन्नता से देवेंगे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काशी में क्षेत्रसंन्यास करनेवाले मुझे अतिप्रिय हैं वे इस भवसागर से पार उतर जावेंगे ऐसे अमृत वचन शिवजीके सुन वे ब्राह्मण मानों अमृत पीकर जीगये वे सब बार २ प्रणाम करके प्रसन्न हुये और दोनों अपने हाथ बांध सब ब्राह्मणों ने यह वर मांगा कि आप काशी को कभी न छोड़ें हमको केवल यही वर दीजिये और काशी में ब्राह्मणों का शाप किसी पर फल न करे यहां के मरनेसे सायुज्यमुक्ति मिले और आपके चरणों का प्रेम अधिक हो माया की बन्धि में कोई न फँसे और जो लिङ्ग कि हम सबने यहां स्थापित किये आप उनमें सदा शक्तिसहित स्थित रहें शिवजी बोले कि यही होगा और फिर सब की ओर दया की दृष्टिसे देख सबके दुःख दूर कर दिये और फिर श्रीमुखसे काशीकी बड़ाई बखान सबको बिदा करदिया सो सब ब्राह्मण बिदा होकर शिवजी की पूजा में प्रवृत्त हुये और शिवजी वहां स्थित रहकर अपने भक्तों समेत नाना प्रकार की लीला करते रहे ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! शिवजीने काशी में स्थित होकर विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञादी कि पूर्वकालके समान शिवनगरी तुरन्त रचो और सब उत्तमोत्तम शिवालय बनाओ और गणों के रहने के लिये उत्तमोत्तम मन्दिर सजाओ और देवताओं के लिये भी उसीके अनुसार भवन रचो और गिरिजा और उनके पुत्रों के लिये मन्दिर अतिसुन्दर निर्माण करो फिर विश्वेश्वरजी महाराज का भवन बनाओ निदान हरप्रकारसे हमारा मन्दिर अतिसुन्दर बनादो जैसाकि तुमको वर दियाथा यहसुन विश्वकर्माने अतिकृतकृत्य हो दण्डप्रणामके अनन्तर सब मन्दिर बनाये जहां जिसका स्थान था वहां नये शिरसे भवन बनाये और उनको मणि और बहुमौल्य वस्तु और नाना प्रकार के रङ्गोंसे अलंकृत किया गणपतिका मन्दिर बड़ी कारीगरीसे बनाया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसे देख आश्चर्य होता है और विश्वनाथका मन्दिर ऐसा निर्मित किया जिसकी प्रशंसा हम वर्णन नहीं करसक्के जो असंख्यरत्नोंसे अलंकृत और नाना प्रकारकी शिलाओंसे सुशोभित जिसमें तीनोंलोक की सम्पदा लगाई वह सर्वोपरि मन्दिर बना इतना सुन नारद ने प्रश्न किया कि आप विश्वनाथजीके मन्दिरका विस्तारसे वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! उस सुन्दर मन्दिर की भीतें सुवर्ण की रत्नोंसे जड़ीहुई जिनके स्पर्शसे शब्द होता और वे जलतीहुई अग्नि और सूर्य के समान प्रतीत होती थीं उनमें बारह सहस्र खम्भे और इक्यासी २ भूधर थे जिनको देख चौदह भुवन की सुन्दरता लज्जित होती और जो शिलायें कि खम्भोंकी दृढ़ता के निमित्त लगी हुई थीं केवल चन्द्रकान्तिमणि की थीं और उनमें पद्मराग और मरकतमणि की पुतलियां बनी हुईथीं जिनके हाथों में रत्नों के दीपक बने हुये थे जो रातदिन जला करते थे और उत्तम सफ़ेद पत्थरपर रत्नों की बेलें और बूटे और सब देवताओं की मूर्तियां सुशोभित थीं और जितने रत्नाकर समुद्रमें रत्न थे वह सब गणों ने इकट्ठे किये थे और जितनी उत्तमोत्तममणि नागोंके कोषोंमें थीं वह भी सबगणों ने तुरन्त लादीं और रावणने असंख्य सुवर्ण अपने पास से भेजा था इसी प्रकार और दैत्यों में जो शिवभक्त थे उन्होंने नाना प्रकार के रत्न प्रेषित किये यह जो हमने वर्णन किया इसको केवल संसार की रीति समझना नहीं तो शिवको क्या इच्छा है क्योंकि जो वह चाहें तो असंख्य रत्नों के वृक्ष उत्पन्न करदें न कि दूसरों का धन लेवें निदान विश्वनाथ के समान दूसरा मन्दिर न था जिसकी शोभा एक मनुष्य से सुन हिमाचल मोहित होगया इतना सुन नारद ने आश्चर्यपूर्वक ब्रह्मा से पूछा कि आप इस कथा को विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये ब्रह्मा बोले कि जिस समय में शिव काशी में पहुँच मन्दिर की तय्यारी करने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगे थे उन्हीं दिनों गिरिजा की माता मैना ने अति खेद से ठंढी श्वास भरकर कहा कि बहुत सा समय बीता कि गिरिजा का हाल मैं नहीं जानती मैं निश्चयपूर्वक जानती हूं कि जो गिरिजा को यहां आनन्द था वह वहां क्यों होगा क्योंकि गिरिजा के पति के पास भस्म और बुड्ढे बैल के सिवाय और क्या होगा यह सुनकर हिमाचल अतिचिन्तित हुये कहा कि जबसे गिरिजा गई मानों हमारे घरसे धन चला गया यह कहकर हिमाचल ने गिरिजा के देखने और उसके धन देने के लिये तय्यारी की और अपने साथ दो कोटि तुला मुक्ता और सौ तुला हीरा और ग्यारह लाख तुला विद्रुमनाद और षोड़श सहस्र तुला इन्द्रनीलमणि और नव कोटि तुला पद्मरत्न और विद्रुम रत्नादि साथ लिये और उत्तमोत्तम वस्त्र भूषण और छत्र और सोने की कुछ गणना नहीं इसी प्रकार हिमाचल यह सब सामग्री गिरिजा के देने को लदाकर अतिअहंकार से मन्दराचल में पहुँचे जब सुना कि शिव काशी को पधारे तो चलकर काशी में आये देखा कि असंख्य रत्नों से मन्दिर अलंकृत है कलश सोने के और पताका उत्तमोत्तम मणियों की बनी हुई हैं और विश्वनाथजी का मन्दिर जो बहुत ऊंचा और आश्चर्यदायक है देखकर मनमें हिमाचल अति लज्जित हो अहंकारहीन हुआ और कहा इससे बढ़कर कोई मन्दिर तीनों लोकमें नहीं जो धन इसमें दिखाई देता है वह कुबेर के घर और वैकुण्ठमें भी नहीं है इसी विचार में था कि उसको एक काशी का मनुष्य दिखाई दिया हिमाचल ने पूछा कि यह किसका नगर है उस शिवभक्तको शिवजी ने विदेशियों की सेवा का काम सौंपा हुआ था बोला कि यह शिवपुरी है अभी उनको मन्दरगिरि से आये छःदिन बीते हैं वे अभी ज्येष्ठेश्वर में गिरिजादि सहित रहते हैं तुमतो कुछ मूर्ख जानपड़ते हो कि गिरिजापति को नहीं जानते जिनकी सेवा तीनों लोक करते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह कह उसने काशी का सब वृत्तान्त कह सुनाया फिर जो मन्दिर शिवका काशी में बनता था उसका हाल कहा हिमाचल इस प्रकार से शिवजी को धन में पूर्ण देख अति प्रसन्न हुये और उस पुरुष को बहुत धन दे बिदा किया और फिर अपने मनमें शोचने लगे कि शिवजी और गिरिजा महाधनी हैं मैं उनके सामने तृण के समान भी नहीं मैं आजतक सत्यमार्ग भूले हुये था कि शिवजी को दरिद्री जानता था अब मुझे पूर्ण विश्वास हुआ कि शिवजी से बड़ा कोई नहीं है मैं भेंट नहीं करूंगा क्योंकि मेरे पास भेंट करने के योग्य सामग्री नहीं है बहुतही न्यूनसामग्री है फिर उसने अपने सेवकों को बुलाकर आज्ञादी कि रातभरमें एक शिवालय बनवाओ भोर न होने पावै क्योंकि जो काशी में शिवालय बनाता है उसके दोनों लोक का दुःख निवृत्त होजाता है सो रातभर में शिवालय बनगया हिमाचल ने चन्द्र कान्तिमणि का शिवलिङ्ग बनाकर शिवालय में स्थापित किया और उसकी स्थापना में असंख्य धन व्यय किया और एक पाटी जिसमें अपना नाम और गोत्र आदि सब लिखा था शिवालय में लगादी और तुरन्त पञ्चनद में स्नानकर कामराज शिवजी की पूजा में प्रवृत्त हुये और जो कुछ धन द्रव्य शेष रहगया था वह सब इधर उधर फेंक दिया और आप साथियों समेत घर पहुँचा और हिमाचल ने जो रत्न फेंक दिये थे वह अपने आप इकट्ठे होकर शिवलिङ्ग बनगया यह दोनों लिङ्ग अर्थात् एक जो हिमाचल ने स्थापित किया और दूसरा जो शेष रत्नों से बन गया पञ्चनदह्रद और हरव्रता के तटपर प्रकट हुये यह आख्यान पढ़ने और सुननेवालों के लिये आनन्ददायक और भक्ति का बढ़ानेवाला है ॥

बाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी ! जब प्रभात के समय हण्डन और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुण्डन नामी दो गणों ने उठकर दो नये शिवालय देखे तो अतिप्रसन्न हो दौड़ दौड़कर जाके शिवजी से यह सब वृत्तान्त कहा कि महाराज किसी बड़े धनवान् भक्त ने आपका शिवालय वरुणानदी के तट पर बनाया है कल सन्ध्यातक उस स्थानपर हमने कोई मन्दिर नहीं देखा था इस समय हमने देखा है शिवजी ने गिरिजा को रथ पर चढ़ा वरुणानदी के निकट पहुँच शिवालय देखा यद्यपि वह एक रात्रि में बना था पर ऐसा उत्तम था कि उसके समान दूसरा न था शिवजी गिरिजा सहित भीतर गये और चन्द्रकान्तिमणि का शिवलिङ्ग देख उनको यह इच्छा हुई कि इसके बनानेवाले को जानें इतने में उनकी दृष्टि पाटीपर पड़ी उसको पढ़ शिवने गिरिजा से कहा कि अपने पिता के बनाये हुये शिवालय को देखो वह तुम्हारे देखने को यहां आया था पर उत्तम अवकाश भेंटका न पाकर लौटगया और हमारा लिङ्ग स्थापित कर गया तुम्हारा पिता धन्य है अब मुझे वह बहुत प्रिय जान पड़ता है गिरिजा ने यह बात सुनकर अति प्रसन्नता और प्रेम से कहा कि यह शिवलिङ्ग हमारे पिता ने वरुणा के तटपर स्थापित किया है इसमें आप पूर्णांश से रात दिन स्थित रहें और यह लिङ्ग गिरीश्वर के नाम से प्रसिद्ध होकर इसके पूजनेवाले दोनों लोक में आनन्द पावें शिवने कहा यही होगा फिर शिव और गिरिजा ने इस लिङ्ग को और भी बहुत प्रकार के वर दिये और सबसे उस लिङ्ग की पूजा कराई फिर वहांसे निकलकर शिव और गिरिजा बाहर आये इधर उधर भ्रमण करते थे जब धीरे २ कालराज के समीप पहुँचे तो कालराज के उत्तर एक उत्तम शिवलिङ्ग देखा गिरिजा बोलीं कि यह लिङ्ग तो इस समय नवीन दिखाई दिया है जिसके तेजका प्रकाश आकाश तक फैला हुआ है इसकी उत्पत्ति, स्वरूप और प्रभा वर्णन कीजिये शिवजी ने उत्तर दिया कि तुम्हारा पिता हिमाचल बहुत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रत्नादि लदवाकर लाया था सो हमारा लिङ्ग स्थापित कर जो धन कि उसके पास शेष रहगया था वह यहां फेंक गया उस के पुण्य से सब इकट्ठा होकर यह लिङ्ग बन गया इसका नाम रत्नेश्वर होगा हे गिरिजा! हमारे लिये या तुम्हारे लिये जो कोई मनुष्य भक्तिपूर्वक धन संकल्प करताहै उसका फल इसी प्रकार का होता है और दोनों लोक में आनन्द मिलता है और जोकि काशी के शिवभक्तों में यह लिङ्ग रत्नोंका है इससे हम इसका नाम रत्नेश्वर रखते हैं और जो सुवर्ण कि तुम्हारा पिता डालगया है उससे तुम इस लिङ्गका शिवालय बनाओ क्योंकि शिवालय बनवाने में सर्व कर्म जो अपूर्ण रहजाते हैं वह पूर्ण होते हैं और लिङ्ग स्थापित करने से हरवस्तु प्राप्त होती है इसी प्रकार कलश चढ़ाने से भी वही फल होताहै ध्वजा के स्थापित करनेसे जितने पर्व ध्वजा के हों उतने कल्पपर्यन्त वह मनुष्य कैलास में रहता है और वायु के चलनेसे जितनी बेर वह वस्त्र हिले उतने समयतक वह मनुष्य शिवपुर में स्थिति पाता है यह सुन गिरिजाने गणों को शिवालय बनानेकी आज्ञादी सो सोम और नन्दी आदि गणों ने हिमाचलके फेंके हुये सुवर्ण से शिवालय बनादिया जिसको देख गिरिजाने बहुत प्रसन्न हो सब गणोंको बहुत वर दिये फिर शिवने गिरिजाके कहने के अनुसार रत्नेश्वर शिवलिङ्ग को यह वर दिया कि जो कोई इस लिङ्ग की पूजा करेगा वह मानों सब लिङ्गों की पूजा करचुका यह लिङ्ग अनादि सिद्ध होगा सो एक नाचनेवाली स्त्री केवल रत्नेश्वर शिवलिङ्गमें नृत्यकर मुक्त होगई यह कथा विस्तारभय से वर्णन नहीं की फिर शिव और गिरिजा अपने स्थानपर आये और हरप्रकारके आनन्दमें लगेरहे इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिव और गिरिजा परब्रह्म हैं केवल संसार की भलाई के लिये ऐसे ऐसे चरित्र और लीला शरीर धारण करते हैं इस चरित्रके पढ़ने सुनने से दोनों लोकमें सुख प्राप्त होता है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जबतक भवन तय्यार नहीं होचुका तबतक शिव काशी में भ्रमण करतेरहे और बहुत से शिवालयों में पहुँच बड़ीलीला और उत्सव किया किये और विराजेशपीठ जो प्रसिद्धस्थल है वहांपर शिवजी और स्थानोंसे अधिक ठहरे और त्रिलोचन शिवलिङ्ग जो वहांपर है उसकी बड़ाई वर्णन की और विष्णु से काशी की महिमा और सब शिवलिङ्गों की स्तुति जो काशी में हैं और तीर्थादिकों की बड़ाई वर्णन कररहे थे कि इतने में नन्दीश्वर ने आकर विनयकी कि महाराज भवन बनचुका है मैं रथ साजकर लाया हूं आप कृपाकरके चलिये क्योंकि इन्द्र और ब्रह्मा आदि सब द्वारपर स्थित हैं अब सबकी यह इच्छा है कि आप वहां चलकर सुशोभित होवें शिवजी अति प्रसन्न हो गिरिजासहित भवनमें गये उस समय बड़ी धूमधामहुई बाजे बजनेलगे वेदध्वनि ने चारोंदिशा पूरित कीं और दान बहुत हुआ उस समय सब लोक भरमें आनन्द छागया हम सब प्रसन्न हुये गन्धर्व गानेलगे अप्सरा नाचने लगीं उत्तम पवन बही आकाश से पुष्पों की वृष्टि हुई निदान सर्व सामग्रीआनन्द की इकट्ठी हुई उस समय कोई ऐसा मनुष्य न था जिसके मन में कुछ दुःख रहा हो सर्व मनुष्य आनन्दसागर में डूबगये फिर हम विष्णु और देवताओंने शिवजी का अभिषेक किया और सब तीर्थों का जल छोड़ा और उत्तमोत्तम वस्त्र और भूषण शिवजी और गिरिजा ने पहिने विष्णु और हम सब ने भेंट दी आरती उतारी विष्णुने एकबेर मुख की चार बेर चरणों की दो बेर नाभिकी सातबेर सर्वाङ्गकी आरती उतारी इस तरह चौदह बेर आरती उतारी जाती हैं फिर हम और विष्णु और सब देवतादिने एक एक स्तुति बनाकर पढ़ी और विनय की कि हमारी पालना प्रसन्न होकर करो यह कह हम सब चुप होगये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! ऐसी स्तुति सुन शिवजी प्रसन्न हुये और जिसने जो मांगा उसको वही वर कृपा किया फिर विष्णु को हमारे सहित निकट बैठाकर उनसे कहा कि आपके समान हमारा कार्य करने वाला दूसरा नहीं है तुम्हारी बड़ाई से हमने काशी पाई जो तुम्हारी इच्छा हो वह वर माँगो विष्णुने प्रणाम कर कहा कि हमको अपनी भक्ति कृपा करो शिवजी बोले यही होगा फिर शिवजीने काशी की बड़ाई वर्णन की फिर मुक्तमण्डप की गाथा कह सुनाई जहां पर कि महानन्द ब्राह्मण ने मुक्ति पाई थी उसका दूसरा नाम कुकुटमण्डप है यह बात सुनकर नारदजीने पूछा कि कबसे उस स्थानका नाम कुकुटमण्डप हुआ और कृपा करके महानन्द की कथा सुनावो ब्रह्माजी बोले कि विष्णुने शिवजीसे विनयकी कि आप मुझको यह भविष्यत्-कथा सुनावें मुख्य करके कुकुटमण्डप की कथा कहें कि क्यों कर वह तीनों लोक को सुखदायक होगा यह सुनकर शिवजी बोले कि हम भविष्यत्कथा कहते हैं कि अब जो द्वापरयुग आवेगा उस युगमें यहां एक मनुष्य महानन्दनामी ब्राह्मण उपजेगा वह ऋग्वेद में बड़ा पण्डित होकर दानादि न लेगा और वह महाशीलवान् शुभकार्य-कर्ता और छलादि से रहित रहकर हर प्रकारसे शुभकार्य करेगा कुछ दिनके उपरान्त उसका पिता मरजावेगा और जब वह तरुण होगा तब कामदेवके वेगसे एक अन्यजाति की स्त्री को बिठाकर अपने प्राचीनमार्ग को छोड़ उसके साथ भोग विलास करेगा और उसके अधीन होकर मद्यादि पियेगा जो वस्तु अभक्ष्य हैं उनको खावेगा और धनवान् विष्णुभक्तों को देख आप भी वैष्णव बनकर शिवभक्तों की निन्दा करेगा इसी प्रकार शैव बनकर वैष्णवों की निन्दा करेगा निदान इसी प्रकार वही छली होकर अपने सब धर्म नष्ट करदेगा और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मस्तकमें तिलक लगाकर श्वेतवस्त्र पहनकर बड़ी माला पहनेहुये बड़ी धूर्तता करेगा झूठ बोलने के लिये बड़े २ उपाय करेगा वह अपने छलसे सबको धोखा देगा प्रकट में निर्मल पर हृदयमें महामलिन और उस पर यह कि एक पर्वत का निवासी तीर्थस्नान के निमित्त आवेगा जो बहुत धन देनेको साथ लावेगा वह चक्रतीर्थ में स्नान कर यह बात कहेगा कि मैं जातिका चाण्डाल हूं पर धनवान् हूं दान देना चाहताहूं, पर यहां कोई दानलेना अङ्गीकार न करेगा और अंगुली उठा उसकी ओर सैनकर सब कहैंगे कि यह जो बैठा है तुम्हारा दान लेगा यह सुनकर वह चाण्डाल उसके पास जाकर दान लेनेके लिये विनती करेगा तब महानन्द कहेगा कि जितना धन तुम लाये हो वह सब मुझको दो और किसीको न दो तो मैं लेता हूं चाण्डाल कहेगा कि जो द्रव्य मैं लाया हूं वह सब शिवजी की प्रसन्नताके निमित्तहै मैं तुमको शिवके समान जान सब तुमको देकर प्रसन्न करूंगा काशी में जो अतिनीच हैं वे भी शिवके अंश हैं उनके समान और कोई नहीं निदान वह चाण्डाल महानन्द को दान देकर चला जावेगा और महानन्द को उसी दिनसे सब चाण्डाल मानने लगेंगे सो महानन्द घर में गुप्त रहाकरेगा और लज्जा और संकोच के कारण अपनी स्त्रीसहित नगर से निकल जावेगा और काशी छोड़ कीलक देशको जावेगा मार्ग में ठगों का समूह आकर उसको पकड़ वन में लेजावेगा और धन द्रव्य लेनेके अनन्तर वे कहेंगे कि अब हम तुझे मारे डालते हैं जिसको स्मरण करना हो करले तब महानन्दको बुद्धि उपजेगी कि जिसके लिये हमने यह धन लेकर धर्म खोदिया वहभी खोदिया और मरने के समय हमने काशीभी छोड़ी इसी प्रकार वह अपने कुलका स्मरण करेगा निदान ठग उसको मारडालेंगे फिर चारों ठग काशीमाहात्म्य सुनकर काशी में आवेंगे और मुक्तमण्डप के समीप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थित होकर प्रतिदिन गङ्गा स्नानकर शिवकथा सुन निर्मल होजावेंगे फिर वे हमारी कृपा से मोक्ष पावेंगे उस समय से इसका नाम मुक्तमण्डप होजावेगा ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! यह कथा शिव से सुनकर विष्णु अति प्रसन्न हुये इतने में बड़े शब्द से घण्टा सुनाई दिया शिव ने नन्दी से कहा कि देखो यह शब्द कहां होता है मुझे वे मनुष्य अतिप्रिय हैं जो घण्टा कि मुझको बहुत प्रिय है बजाते हैं सो नन्दी ने देख आने के पीछे विनय की कि महाराज शृङ्गारमण्डप जो आपका घर है वहां यह उत्सव होरहा है आपकी पूजा आपके भक्त कररहे हैं यह सुन शिव अतिप्रसन्नता से उठ सर्वसभा सहित उस स्थान पर गये उस स्थान का नाम रङ्गमण्डप था जो शृङ्गारमण्डप के नाम से प्रसिद्ध है सो शिव गिरिजा सहित पूर्वमुख बैठगये और हम दाहनी ओर और विष्णु बाईं ओर बैठे इन्द्र पंखाडुलानेलगे अन्य देवता चारों ओर स्थित हुये और सर्वगण पीछे खड़े होकर सेवामें प्रवृत्त हुये उस समय शिवने अपना दाहना हाथ उठाकर विष्णु के द्वारा सबसे कहा कि यह लिङ्ग हमारा जिसका नाम विश्वनाथ है देखो यह परम ज्योतिःस्वरूप है और सब को आनन्द देता है और इसका नाम अविमुक्त और मुक्तिद भी है इसकी सेवा से कोई पाप रह नहीं जाता तीनों लोक में विश्वेश्वर के समान और कोई हमारा दूसरा लिङ्ग नहीं है यह पूर्ण सदाशिव है और हमारी परमज्योति और सर्वलिङ्गों से श्रेष्ठ है तीनों लोक के सार यह तीन हैं अर्थात् विश्वेश्वर हमारा लिङ्ग १ मणिकर्णिका २ और काशीपुरी ३ यह कहकर शिव और गिरिजाने विश्वनाथ का पूजन किया और बड़े उत्सव और आनन्दके उपरान्त स्तुतिकी फिर वीरभद्र और गणपति ने पूजन किया फिर विष्णु ने लक्ष्मी सहित उनको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूजा फिर हमने सावित्री सहित पूजा की निदान सबने क्रमपूर्वक उनको पूजा और बड़ा उत्सव हुआ नाना प्रकार के बाजन बाजे और नाच गान सब कुछ हुआ देवताओं की पत्नियां भलीविधि नृत्य करने लगीं और किन्नर और गन्धर्व उत्तम रीति से गाये आकाश से फूलों की वर्षा हुई मुनीश्वरों ने स्तुति की उस समय वेद और पुराण सब शरीरधारकर आये और उन्होंने शिव और गिरिजा की स्तुति की जो अति पवित्र और रोचक है फिर विष्णु और हम सब देवताओंने स्तुति की उस समय शिवने गिरिजा सहित अति प्रसन्न हो कृपा की दृष्टि से सबकी ओर देखदिया जिससे हम सबके मनोरथ पूरे होगये फिर शिव सबके देखते २ गिरिजा और पुत्रों सहित अन्तर्धान होगये और विश्वनाथ के लिङ्ग में समागये इस बात को कोई मनुष्य न जानसका शिव का प्रभाव आश्चर्यदायक है फिर अपने लोक में जाकर कैलास-वासी होगये और लिङ्गरूप करके काशीमें स्थित रहे यह देख सब अचम्भे में रहगये और स्तुति करके मनमानी मुक्ति पाई और अपने २ अंशों को काशी में स्थापित करके चलेगये और शिवका नाम जप कर उनका ध्यान करके प्रसन्न रहे और सदाशिव और गिरिजा के चरित्र वर्णन करतेरहे जिनके वर्णन से मन में शिवकी प्रीति उत्पन्न होती है यह शिवचरित्र अति आनन्द का देनेवाला है इसके पढ़ने से शिव अति प्रसन्न होते हैं ॥

इति श्रीशिवपुराणे षष्ठखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे काश्यु-
पाख्यानवर्णनंनामपञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवपुराण भाषा ॥

उत्तरार्द्ध ॥

सातवां खण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

नारदने पूछा कि हे ब्रह्माजी ! आप शिवजीके सब अवतार वर्णन कीजिये जिस प्रकार शिवजी ने अवतार धार कर अच्छे २ चरित्र और लीलायें कीं जो शिवजी के सेवक हैं उनको धन्य है वह मुक्ति को प्राप्त होते हैं और अन्य मनुष्योंको भी पार लगाते हैं उनके समान तीनों लोक में कोई नहीं श्रीब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ! शिवजी परब्रह्म निर्गुण और सगुण स्वरूप वपुधारी सत्‌चित् आनन्द सर्वव्यापक निरुपाधि अलख निरञ्जन ज्योतिस्स्वरूप हैं जिनको वेद भी नेति २ वर्णन करके उनका आदि और अन्त नहीं विचारसक्के सब अपनी बुद्धि से उनकी स्तुति वर्णन करते हैं और मुनीश्वर भी उसी प्रकार स्मरण करके ध्यान धरते हैं वे विना पांवोंके चलते विना नेत्रों के देखते विना कान सुनते विना मुख के खाते जिह्वा विना पढ़ते विना हाथ के सब काम करते विना नाकके सूंघते विना गुदके मलका त्याग करते हैं जिनके ऐसे २ कार्य हैं उनका हम वर्णन नहीं करसक्के वेद कहते हैं कि ऐसे निर्गुणरूप जो शिवजी हैं उन्होंने सगुणरूप धार सब चरित्र किये और परमशक्ति और शिवजी ने अवतार धारण करके अपने भक्तों के मनोरथ पूर्ण किये जिस समय कि विष्णुजीने ब्रह्माजी को प्रकट किया तब शिवजी वरदान देनेको आये तब शिवजी से विष्णुजीने यह वरदान मांगा कि आपभी अवतार धारण कीजिये शिवजी ने 'तथास्तु' कहकर कहा कि युक्तिपूर्वक हम भी अवतार लेंगे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और हमारा नाम रुद्र होगा जो देवताओं के दुःख दरिद्र दूर करेगा और तुम्हारे और तुम्हारी शक्ति के कष्ट मिटावेगा यह कहकर शिवजी अन्तर्धान होगये और रुद्रअवतार हमसे उत्पन्न हुये वही कैलास पर्वत पर स्थित हैं और अनेक प्रकार की लीला करके अपने भक्तोंको सुख देते हैं और अपनी शक्तिके संग विहार करके सर्व उपाधियों से रहित हैं उस अवतार ने अपने सन्तों की रक्षा की और सतीके संग विवाहकर सब दुःखों का नाश किया गिरिजा को हिमाचल के यहांसे ब्याह लाये और संसारमें बहुत लीलायें कीं और स्कन्द का अवतार लेकर तारकासुर को मारडाला और अन्धक, त्रिपुर और जलन्धर को नष्ट किया जिससे उनके भक्त सुखी हुये इसी प्रकार नाना प्रकार के चरित्र किये जिस से उनके भक्तोंके कष्ट दूर हुये और अन्य देवताओं का अहंकार जातारहा उनके सेवक हम विष्णुजी और देवता, मुनि, सिद्ध आदि सब हैं हम सब रात्रिदिन उन्हीं का पूजन करते हैं और अपने मनोरथ सिद्ध करालेते हैं यह शिवजी का पहला अवतार है क्योंकि वेद भी कहते हैं कि इस अवतार के स्वरूप चरित्र और नाम सब परमशिव के ऐसे हैं यही शिवजी अपने भक्तों के निमित्त अवतार धारण करते हैं अब हम शिवजी के सब अवतार वर्णन करते हैं हे नारद ! तुम चित्तलगाकर सुनो ॥

अवतारों का वर्णन ॥

प्रथम पांच अवतारों का वर्णन–जिस समय हमारी यह अभिलाषा हुई कि सृष्टि उत्पन्न करें तो पहिले हमने श्रीसदाशिवजी का ध्यान किया शिवजीने दर्शन दिये उनका नाम सद्योजात था उनके शरीर का रूप श्वेत और ललाई लिये था उनके साथ चार शिष्य थे हमने उनको पहिचाना और प्रणाम करके स्तुतिकी शिवजीने दयालु होकर हमको शक्ति दी और कहा कि सृष्टि उपजावो फिर वामदेवका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवतार धारण करके अपने चार शिष्यों को साथ लिये दर्शन दिया उनका शरीर लाल था फिर तत्पुरुष का अवतार धारणकर पीतवर्ण से सुशोभित चार शिष्यों समेत प्रकट हुये और मुझको सुलभ ज्ञान दिया फिर श्यामरूप अवतार धारण करके मुझको दर्शन दिये अन्तमें ईशान अवतार हुआ इस अवतार का श्वेतवर्ण था और चार शिष्यों को संगलिये थे उन्होंने मुझे योग और ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी यह पांचों अवतार अतिपवित्र हैं और केवल हमारी ही इच्छानुसार प्रकट हुये थे दूसरे आठ अवतारों का वर्णन-यह आठों अवतार शर्व १ भव २ रुद्र ३ उग्र ४ भीम ५ पशुपति ६ ईशान ७ महादेव ८ हैं और यह जल १ पृथ्वी २ अग्नि ३ आकाश ४ यज्ञ ५ वायु ६ चन्द्रमा ७ सूर्य ८ में रहते हैं सो यह आठों भी मुख्य श्रीसदाशिवजी के रूप हैं- तीसरे एक अवतार-वाराहकल्पमें जो वैवस्वतमन्वन्तर होता है और जो सातवां मनु प्रसिद्ध है वह भी शिवजी का अवतार है और पूर्ण अवतार नारीश्वर है जो हमारी रक्षाके निमित्त होताहै चौथे अट्ठाईस अवतार-जो व्यास कि द्वापर और कलियुगमें अवतार लेते हैं वह मुख्य हमारे अवतार हैं और वह अट्ठाईस हैं अर्थात् वह सदाशिवजी व्यास का अवतार लेकर योगशास्त्र और पुराणों को बनाकर अपने शिष्योंको पढ़ाते हैं और वेद और पुराणके धर्म को स्थित करते हैं उन अवतारों के यह नाम हैं श्वेत १ सुतार २ सुहोत्र ३ कङ्कण ४ साख्य ५ जगाक्ष ६ जैगीषव्य ७ दधिवाहन ८ ऋषभाख्य ९ मृङ्ग १० तप ११ अत्रि १२ बाल १३ गौतम १४ वेदशिर १५ धेनुकर्ण १६ गुहबाल १७ शिखण्डी १८ जटामाली १९ अट्टहास २० दाहक २१ लाङ्गली २२ श्वेतत्रिशूल २३ दण्डी २४ मुण्डेश्वर २५ सोमसुरमा २६ लङ्गकेश २७ सहिष्णु २८ ॥ नन्दीश्वर अवतार-जब शिलादमुनिने बड़ा तप किया तब शिवजीने उनको दर्शन देकर कहा कि वरदान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

मांगो शिलादने कहा कि मुझको ऐसा पुत्र दीजिये जो कभी मृत्युको न प्राप्त हो शिवजीने 'एवमस्तु' कह नन्दी अवतार धारणकर शिलाद की अभिलाषा पूर्ण की और जब हमसे और विष्णुजी से झगड़ा हुआ तो सदाशिवजी भैरव अवतार ज्योतिस्स्वरूप होकर शरीर धारण करके आये और हमारा झगड़ा दूर कर दिया था उस समय हम श्रीसदाशिवजी को अपना पुत्र विचारकर निन्दा करने लगे इस लिये मुझको अहंकारी समझकर शिवजीने क्रोध किया और भैरवरूप धारणकर मेरा पांचवां शिर काटडाला और वीरभद्र का अवतार लेकर इस बातको प्रसिद्ध किया कि जो शिवजीके विरुद्ध हैं उनको स्वप्न में भी सुख नहीं सो जो २ शिवजीके विरुद्ध थे उनको दण्ड दिया और सहस्र भुजासे नाना प्रकार की लीला कीं और जब कि विष्णुजीने नरसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकशिपु को मारा तब नरसिंह अवतार ने इतना क्रोध किया कि पहिलेसे भी अधिक उनपर दुःखपड़ा वह सब शिवजी के शरण हुये शिवजीने शरभरूप धारण करके नरसिंहके मद को नष्ट किया और देवताओं को सुख दिया उस समयसे शिवजीका नाम हर हुआ क्योंकि शिवजीने नरसिंहके मदको हर लिया था और जब देवासुरसंग्राम हुआ तो देवता जीतकर बहुत अहंकारी हुये सो शिवजी ने यक्षरूप धारण करके अवतार लिया और उनके मद को नष्ट किया अर्थात् शिवजीने देवताओं को एक घास काटने को कहा सो सब देवताओं से वह न कटसकी इससे देवता बहुत लज्जित हुये और शिवजीने दशरूप महाकाल के धारण किये और दशों देवियों के पति हुये और तन्त्रविद्या को प्रकट करके अनेक भक्तों को मुक्ति दी और फिर ग्यारह रुद्र का रूप धारणकर कश्यप के गृह उत्पन्न हुये और दितिके पुत्रों को मारकर देवताओं को मुक्ति दी और बड़ी २ लीला कीं और अत्रिके पुत्र होकर संसार की सीमा स्थित की और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रह्मतेज प्रसिद्ध किया और विश्वानर के तप को देखकर उसके यहां जन्म लिया और कालविहार को जीता और प्रह्लाद मुनि का अवतार धारकर विष्णुजी के मद को तोड़ा और अवधूत बनकर इन्द्र को अहंकार से रहित किया और रामचन्द्रजी के मनोरथ पूर्ण करने के निमित्त कपीश अवतार धारकर हनुमान् के नाम से विख्यात हुये और बहुत लीला करके रामचन्द्रजी के सब कार्य सिद्ध किये और बहुत राक्षसों को मारा और लक्ष्मणजीके प्राण की रक्षा की और जब गिरिजाने भैरवकी कुदृष्टि देख भैरवको शाप दिया और कहा हे पुत्र! जो तुम मुझको मनुष्य कीसी दृष्टिसे देखतेहो इसहेतु तुम मनुष्य बनो तब भैरवजी ने भी शाप दिया कि तुमभी हमारे प्रकार होजाओ और वहां हम तुम्हारे पुत्र हों इस कारण शिवजीने पृथ्वीपर अवतार लिया गिरिजा का तो नाम शारदा हुआ और शिवजी का नाम महेश हुआ और महानन्दा वेश्या ने शिवजीकी बहुत भक्ति की शिवजीने वैश्यरूप धार कर उसके दुःखों का नाश किया और एक राजा भद्रायुष् नामी ऋषभमुनि का शिष्य और शिवजी का बड़ा भक्त था शिवजी ब्राह्मण बनकर गये और उसको कष्टों से रहित किया और आहुक नामी भील जिसकी स्त्री को आहुकी कहते थे शिवजीने रूप धार उनको कृतार्थ करदिया वह दोनों दूसरे जन्म में नल और दमयन्ती हुये शिवजीने हंस बनकर दोनों को मिलादिया और राजामुनि के छोटे लड़के नभगाक्रय ने अपने भाइयों से भाग न पाया शिवजीने कृष्णदर्शन नाम अवतार लेकर उसको भाग दिलवाया और जब राजा सत्यरथ लड़ाई में मारागया तो उसकी रानी जो गर्भवती थी वनमें भाग गई वहां उसके एक लड़का उपजा रानी तो मरगई पर लड़का रोता रहगया सो शिवजी उस पर दयालु हुये और भिक्षुक बनकर एक स्त्री को उपदेश दिया कि इसका पालन करो और फिर शिवजी ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसी लड़केको बापकी जगह राजा बनादिया और इन्द्र का अवतार धारकर उपमुनि ब्राह्मण की परीक्षा ली जब उसको पापोंसे शुद्ध पाया तब दोनों लोक का सुखदिया और जब गिरिजाने बड़ा तप वन में किया और सब देवता शिवजी की शरण में गये तब देवताओंको बिदाकर जटिलरूप धारण करके गिरिजा की परीक्षा ली और फिर वरदान देकर उसके साथ अपना विवाह किया और नटका रूप धारकर हिमाचल के गृह बड़ी २ लीला की और ब्राह्मण बनकर मैनाको बहुत भटकाया और शिवजी अश्वत्थामा द्रोणाचार्यके पुत्र हुये और फिर किरात होकर अर्जुन का दुःख दूर करदिया और उसको वरदान देकर कौरवों को नष्ट किया और गोरख होकर योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया और यथायुक्ति योगियोंके धर्म को स्थित किया उनके दो बड़े शिष्य थे जिनमें से एक गोपीचन्द्र था और जिस समय कि अधर्मियों ने अपना शौच त्याग करके भ्रष्ट होना चाहा कि भक्तों आदि को दुःख प्राप्त हो तब शिवजीने ब्राह्मण के घर अवतार धारा और शंकरजी कहलाये और अधर्मका नाश किया और शंकरजीने अद्वैत और संन्यास मत उपजाया और ज्योतिर्लिङ्ग जो सूर्यदेवता के स्थित किये हुये हैं वहभी शिवजीके अवतार हैं यह सब भक्तों के फलदायक और सुखी रखनेवाले हैं इसी प्रकार शिवजीने बहुत अवतार लिये जो अपने भक्तों के सम्मुख बड़े २ चरित्र करते हैं यह चरित्र तीनों लोक के सुखदायक हैं जिनके कहने और सुनने से बहुत सुख मिलता है यह अवतार संक्षेप में तुमसे कहे अब जो सुना चाहतेहो सो कहो॥

दूसरा अध्याय॥

कैलासवासी शिवजीका वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी! तुम संसार में परमशैव हो मेरी इच्छा है कि शिवजीके अबतारों का वर्णन विस्तार से सुनूं यह सुन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर ब्रह्माजी प्रेम में डूबगये जब चेते तो कहनेलगे कि हम तुमको शिवजी की लीला सुनाते हैं उन मनुष्यों के धन्य भाग्य हैं जो इस लोक में शिवजी की भक्ति रखते और उसलोक में कैलासवासी होते हैं शिवजी निर्गुण सबसे श्रेष्ठ निष्पाप हैं और ब्रह्मा और विष्णुजी के उत्पन्न करनेवाले हैं उन्होंने हमको और विष्णुजी को प्रकृति से उपजाया और कहा जाओ संसार को उत्पन्न करके उस का पालन करो तब हमने और विष्णुजी ने प्रार्थना की कि तुमभी अवतार लेकर प्रलय किया करो तो उन्होंने समय पाकर हमारे भवों के बीच से अपने अंश से अवतार लिया और महेश कहलाये और कैलास पर्वत पर बास करनेलगे शिवजी और महेश में कोई भेद नहीं जो उनको भिन्न २ समझते हैं वे कष्ट भोगते हैं महेशजी दुःख दरिद्र हरते और पापोंसे रहित हैं और बड़े दयावान् हैं और शरीर धारकर भक्तोंके मनोरथ पूर्ण करते हैं उन्होंने शबरी शबर और मद्र को मुक्त किया और भद्राक्षराजाके कष्ट दूर किये गङ्गाजीको जलनेसे बचाया और कालको जलाकर भस्मासुर को उसीके हाथ से मरवाडाला और करोड़ों पापी भक्तों को मुक्ति दी और अपने भक्तों के निमित्त करोड़ों अवतार धारे ऐसे अवतारों को शिवजी का दूसरा रूप विचारो उन्होंने हलाहल विष को पीकर देवताओं के प्राण बचाये एक बड़ापापी इन्द्रद्युम्न राजा अज्ञानतामें नाम लेनेसे मुक्तिको प्राप्त हुआ और उन्होंने नन्दवैश्य और किरात को मुक्त करके अपना द्वारपाल बनाया और शिवजी ने भिक्षुक का रूप बनाकर दारुकवन में जाकर चरित्र किये और फिर मुनीश्वरों से अपने आप शाप लिया उसी समय से शिवलिङ्गपूजा लोक में प्रचलित हुई और काशीके राजाकी लड़की जिसका नाम सुन्दर था वह शिवालय में झाड़ू देती थी इससे वह मुक्त हुई और एक बड़े भारी चोर को तार दिया और रावण को राज्य दिया जब उसने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्राह्मणों को दुःख दिया तो शिवजीने अधर्म विचार कर अपने तेजको रावणसे लेलिया और अपना बाण रामचन्द्रजी को देकर रावण को मारडाला और राजाश्वेतके निमित्त कालका नाश किया राजादाशार्ह को उसकी स्त्रीसहित तारदिया और पञ्चाक्षरीमन्त्र की तीनों लोकमें बड़ाई प्रसिद्ध की और मित्रशठ पर दयालु हुये जो अपने राज्य को छोड़बैठा और फिर स्त्रीसहित मुक्त हुआ और चन्द्रसेन और श्रीगर्भ दोनों ने तेरसका व्रत करके मुक्ति प्राप्त की और धर्मगुप्तनेभी इसी व्रत से मुक्ति पाई और शिवजीने राजा चन्द्राङ्गदको तक्षकके भयसे रहित किया और सीमन्तिनी स्त्री सोमवारके व्रत रखनेसे मुक्त हुई और शिव ने इन्द्र ब्राह्मण को तारदिया और पिङ्गल को अपनासा बनालिया वह सीमन्तिनी की पुत्री थी और पद्मा और पशुपतिकोभी मुक्त किया और दुर्जन नामी यवनदेश का राजा भस्म लगानेसे मुक्ति को प्राप्त हुआ और सुधर्मा भद्रसेन का पुत्र और मन्त्री का पुत्र तारक रुद्राक्ष धारण करके शिवजी की कृपा से पार लग गया महानन्दा को और उसके कुलकोभी जलनेसे बचाया देवरथ ब्राह्मण की पुत्री शारदा को कृतार्थ करदिया और बिडम्ब और उसकी स्त्री वीचिका जो व्यभिचार के कारण दोनों भ्रष्ट होगये थे उनको अपना यश सुनाकर कृतार्थ कर दिया और इन्द्रके मद को विचित्र चरित्र करके हरा और जब बृहस्पति की बनाई हुई स्तुति सुनी तो प्राण छोड़दिये और जब चन्द्रमा अपनी गुरुकी स्त्री को भगा लेगया तब शिवजीने उसका अहंकार तोड़कर बृहस्पति को उनकी स्त्री दिलादी इसी प्रकार शिवजीने अनन्तचरित्र किये जो भक्तोंको सुख देते हैं यह शिवजी का पहला अवतार है जो कैलासपर्वतपर विराजमान हैं वे अपने गणोंको सङ्ग लिये संसार की भलाई के निमित्त नाना प्रकार की कथा वर्णन करते हैं और सनक सनन्दन शिवजी की बड़ी सेवा करते हैं कभी तो शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कैलास पर्वत में बड़ वृक्ष के नीचे बैठते हैं और गूढ़ध्यान लगाकर अपनेको देखते हैं और समाधि करके अहंब्रह्मको प्रकट करते हैं और कभी महाराजा बनकर आनन्दपूर्वक अपने भवन में बैठकर विहार करते हैं कभी धर्म की वार्त्ता करते हैं और कभी लड़कों को खिलाते हैं कभी तपरूप धारण करके नग्न होजाते हैं और कभी मुण्डों की माला पहनकर सांपों की सेली बनाये भस्म धारण करते हैं कभी संसार त्यागकर भूत प्रेत उत्पन्न करते हैं और कभी छोटे लड़के की सदृश खेलते हैं कभी परमहंस होकर एकान्त में बैठते हैं और कभी सगुणरूप धारणकर गिरिजाके संग विहार करते हैं कभी हम और विष्णुजी उनकी सेवा करते हैं कभी उनके सामने अप्सराआदि नाचती हैं और रात्रि दिन स्तुति करती हैं कभी वे प्रदोषकाल में भस्म धारण करते हैं और गिरिजा सहित बैठकर विष्णुजी को बिठालेते हैं उस समय सब देवता आरती करते हैं विष्णुजी मृदङ्ग बजाते हैं सरस्वती वीणा अलापती हैं लक्ष्मीजी राग छेड़ती हैं हम ताल बजाते हैं इन्द्रभी बांसुरी लेतेहैं इसी प्रकार अपने २ भजन स्वर सहित कहकर शिवजी को प्रसन्न करते हैं और शिवजी भी अपनी शक्ति को लिये सगुणरूप धारण करके नाना प्रकार की लीला और चरित्र करके भक्तों को सुख देते हैं यह दूसरा रूप शिवजी और गिरिजा का भक्तों को प्रसन्न करनेवाला है हे नारद! शिवजी अनन्त अवतार धारकर भक्तोंकी प्रसन्नता के निमित्त अनन्त लीला करते हैं चाहे जैसा बुद्धिमान् हो और वह पृथ्वीके कण और आकाशके तारे गिनलेवे पर शिव के चरित्रों का अन्त पाना दुर्लभ है करोड़ों नाम रूप लीला और चरित्र शिवजी के हैं करोड़ों युग मुनीश्वरोंको शिवजीके वर्णन करनेमें व्यतीत हुये परन्तु उनने भी आदि और अन्त न पाया हे नारद! तुमने शारदा शेष और २ देवताओंने शिवजी का यश गाया पर कुछभी अन्त न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाया शिवजीके समान सुख देनेवाला कौन है जो वे अपने कठिन मार्ग को प्रसिद्ध करें तो कोई मुनि अथवा देवता न समझे देखो वे अपने शरीर में तो भस्म धारण करते हैं पर भक्तों को रागरङ्ग देते हैं आप तो दिगम्बर हैं पर औरों को दुशाला देते हैं आप हलाहल विष पीते हैं औरों को अमृत देते हैं आप तो मुण्डों और सांपों की सेली पहनते हैं पर भक्तों को रत्न देते हैं आप प्रेतोंकी सभा में विराजमान हैं पर औरोंको अनेक प्रकार की सेना देते हैं आपतो श्मशान भूमि में रहते हैं पर सेवकों को बड़े २ घर देते हैं आप बैलपर चढ़ते हैं पर भक्तों को हाथी घोड़ेकी सवारी देते हैं सर्वदेवता सेवा करने से प्रसन्न होते हैं पर शिवजी विना सेवाके प्रसन्न होजाते हैं हे नारद! ऐसे महाराज और स्वामीको त्यागकर मूर्ख मनुष्य इधर उधर भटकते हैं यह प्रथम अवतार जो शिवजी का हमने वर्णन किया परिपूर्ण अवतार शिवजी का है वेदमें लिखा है कि इस अवतारके स्वरूप चरित्र लीला और नाम आदि सब शिवजी के समान हैं वही शिवजी अपने भक्तों के निमित्त सगुणरूप धारण करते हैं और नाना प्रकारकी लीला और चरित्र दिखाते हैं अब हम इन अवतारों का वर्णन जो शिवजी ने धारण किये करते हैं॥

तीसरा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम अब शिवजी के पांच अवतारों का वर्णन करते हैं जो ब्रह्मरूप होकर वेद में वर्णन किये गये हैं उन्होंने प्रथम मुझको सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी और फिर ज्ञान दिया हर कल्प के आदि में उपदेश देतेरहे जिससे मैंने सृष्टि उत्पन्न की—पहिला अवतार—जब कि श्वेतलोहित उन्नीसवां कल्प आया तो मैंने विचारा कि सृष्टि उत्पन्न करनी चाहिये यह विचार शिवजी का ध्यान किया शिवजी बालकरूप धार शिष्यों को संग लिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्वेतलोहित वर्ण से प्रकट हुये जो बड़ी कृपा दृष्टि से देखते थे ऐसा बालक देखकर मुझको प्रीति उपजी और मैंने यह विचार कर कि कौन है शिवजी का ध्यान किया तो मुझको यह भासित हुआ कि यही तो स्वामी परब्रह्म हैं फिर मैंने स्तुति की और कहा कि आपके समान कौन है जो मेरे लिये प्रकट हुये मुझको ऐसी शक्ति दीजिये कि मैं सृष्टि उपजाऊं और आपकी भक्ति मेरे हृदय से न जावे और सृष्टि के उत्पन्न करने में दोषी न होऊं शिवजी ने 'तथास्तु' कहा और बोले कि तुमको हृदय से हमारी प्रीति है इससे हम प्रकट हुये क्योंकि हम भक्तों के अधीन हैं हमारा नाम सद्योजात है हम योगाभ्यास को प्रसिद्ध करके अपने शिष्यों को मुक्त करेंगे फिर शिवजीके अङ्ग से चार लड़के उपजे उनका श्वेत वर्ण था और शिष्य के नाम से प्रसिद्ध होकर योगशास्त्र की रीतों के प्रकट करने को शास्त्रपाठी हुये उनके यह नाम हैं सनन्दन १ नन्दन २ विश्वनन्द ३ उपनन्दन ४ इन चारों शिष्यों को लेकर शिवजी ने योगशास्त्र को सब संसार में प्रकट किया जिससे मनुष्य आवागमन से निर्भय होजाते हैं वे कल्पभर हमको सुख देतेरहे कुछ हमको सृष्टिकर्म में दुःख नहीं हुआ अपने भक्तों को मुक्ति दी और योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया-दूसरा अवतार-जब बीसवां रक्तकल्प आया तो उसमें हमारा रक्त वर्ण था हमने लालवस्त्र और लालही माला पहिनी और सृष्टि के उत्पन्न करने की अभिलाषा करके श्रीसदाशिवजी का ध्यान किया वह बालक का रूप धार लालवस्त्र लाल नेत्र किये लालही गहने पहिन कर प्रकट हुये मैंने उनका नाम वामदेव जानकर प्रणाम किया और स्तुति की और प्रार्थना की कि आप ऐसी कृपा करें जिससे मैं सृष्टि बनाऊं शिवने एवमस्तु कहा और चार लड़के उपजाये जिनका वर्ण, रूप, वस्त्र आदि सब लाल थे उनके नाम यह हैं विरज १ विवाह २

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विशोक ३ विश्वभावन ४ शिवजी ने चारों शिष्यों समेत योगको स्थापित करके हमको शिक्षा दी और सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी—तीसरा अवतार—जब कि पीतवास इक्कीसवां कल्प आया तो मैंने सृष्टि उपजाने की शक्ति प्राप्त करने के निमित्त शिवजी का ध्यान किया शिवजी का रङ्ग और रूप पीत था भुजा सुडौल और सर्व अलंकार पीतही धारण किये मेरे सम्मुख हुये मैंने ध्यान करके पहिंचाना और स्तुति की और शिवगायत्री का जप किया उनका नाम तत्पुरुष हुआ मैंने प्रार्थना की कि मुझको सृष्टिके उत्पन्न करने की शक्ति और अपनी प्रीति दीजिये शिवजीने सुनकर चार लड़के जो पीतवर्ण पीत ही वस्त्र आदि धारण किये थे उपजाये उन्होंने और शिवजी ने संसार भर में योगशास्त्र प्रकट किया (चौथा अवतार) जब एक दिव्यसहस्र वर्ष पीतवास कल्पका व्यतीत हुआ और परिवृत कल्प आया तो मैंने सृष्टि उपजाने के निमित्त शिवजी का ध्यान किया शिवजी बालक बन कर काले वस्त्र, काला यज्ञोपवीत, मुकुट और काली भस्म धारण किये प्रकट हुये मैंने शिवजीका अघोररूप पहिंचाना और स्तुति करके शिवजीको दण्डवत् की और कहा कि मुझको सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दीजिये शिवजी ने 'तथास्तु' कहा फिर अघोर अवतार ने कहा कि यह हमारा रूप कष्टों को दूर करेगा और हमारा मन्त्र सर्व कार्यों को सिद्ध करेगा यह कहकर अपनी भुजा से चार बालक उत्पन्न किये जो शिवजी के रूपके समान थे उन्होंने योग अघोर को प्रसिद्ध किया जिसमें सब जीव तुल्य वर्णन किये गये हैं इसके समान कोई वस्तु संसार भर में नहीं (पांचवां अवतार) ईशान इस प्रकार प्रकट हुआ कि जब विश्वरूप तेईसवां कल्प आया तब हमने पुत्र के निमित्त शिवजीका ध्यान किया कि सृष्टि अति बुद्धिमान् और विद्यावान् हो और शिवजी सर्वदा प्रसन्न रहें प्रथम विश्वरूपा भवानी प्रकट हुई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनकी सर्वसामग्री, रूप, वस्त्र और भूषण आदि सब श्वेत थे फिर वैसेही वस्त्र आदि से ईशान शिवजी प्रकट हुये मैंने ध्यान करके पहिंचाना कि ईशानरूप हैं और स्तुति करके प्रणाम और दण्डवत् की और प्रार्थना की कि ऐसा यत्न कीजिये जिससे सृष्टि की वृद्धि तुरन्त हो और मैं आपका प्यारा बनारहूं शिवजीने 'एवमस्तु' कहा और मुझको अच्छी रीति की शिक्षा दी मैंने सृष्टि उपजाई और ईशान शिवजी ने शक्ति विश्वरूपा सहित चारपुत्र उत्पन्न किये जिनका वस्त्र आदि श्वेत था उनके नाम यह हैं जटी १ मुण्डी २ शिखण्डी ३ और अर्धमुण्डी ४ ईशान शिवजीने अपने लड़कों सहित योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया जिससे देवता मुनीश्वर और गुरु सब प्रसन्न हुये और ऐसा धर्म प्रकट किया जिससे मनुष्य आवागमन से निर्भय हुये हे नारद जी! इसी प्रकार पांचों कल्पों में शिवजी ने पांच अवतार धारण किये ये अवतार संसार के मनुष्यों को आनन्द देते हैं और इनकी कथा के श्रवण करने से आनन्द प्राप्त होता है॥

चौथा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम अष्टमूर्ति अर्थात् आठ अवतारों का वर्णन करते हैं जिनके भीतर सर्वसंसार भासता है जैसा सूत में रत्न और मणि आदिक पिरोये हों वैसेही उन अवतारों में संसार है उन आठों अवतारों के यह नाम हैं शर्व १ भव २ रुद्र ३ उग्र ४ भीम५ पशुपति ६ ईशान ७ महादेव ८ यह आठों अवतार पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ यज्ञभूमि ६ सूर्य ७ चन्द्रमा ८ में रहते हैं अर्थात् शर्वरूप होकर पृथ्वी का भार अपने ऊपर लिये हैं और संसार भरको प्रसन्न रखते हैं और जब भवरूप धारण करके जल में रहते हैं तब सब जीवों के क्लेश नष्ट करते हैं और रुद्ररूप होकर अग्नि से प्रकाश करते हैं और उग्ररूप धारकर सब जीवों को जीता रखते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और पशुपतिरूप धारकर क्षेत्रज्ञ हैं जिससे संसार भर को सुख मिलता है और ईशानरूप धारण करके सूर्य में हैं जिससे पृथ्वी और आकाश प्रकाशित है और महादेवरूप होकर चन्द्रमा में हैं जो सब जीवों की पालना करते हैं यह आठों रूप शिवजी के हैं शिवजीसे भिन्न कुछ नहीं शिवजी सबमें प्रकट हैं जिस प्रकार कि पृथ्वी पर जल डालने से वृक्ष की वृद्धि होती है अर्थात् उसके सींचने से जड़, टहनी, फल और फूलआदि दृढ़ होते हैं उसी प्रकार शिवपूजन से सब दृढ़ होजाते हैं और जिस प्रकार कि लड़के की प्रीति पिताको होती है उसी प्रकार संसार भर से प्रीति रक्खे—तब श्रीसदाशिवजी उसपर दयालु होते हैं जो मनुष्य किसीसे बुराई रखता है वह शिवजी से वैर बिसाहता है और कभी मुक्ति पाताही नहीं यह समझकर शिवजी का भजन करना उचित है किसी से शत्रुता न रक्खे यह आठों स्वरूप जीवको सुख देते हैं जो मनुष्य अपनी भलाई चाहे वह इनकी सेवाकरे उनके चरित्रोंके श्रवण और कथनसे लाभ प्राप्त होता है यह कथा अति पवित्र है और शिवजीकी भक्ति की वृद्धि करती है और मुक्ति देती है इतना कह श्री ब्रह्माजी बोले कि अब हम अर्धनारीनरके अवतारका वर्णन करतेहैं कि जब हम सृष्टि उपजाने लगे तो यद्यपि हमने माता के सदृश सन्तानों की वृद्धि चाही परन्तु किसी प्रकार सृष्टि की वृद्धि न हुई इससे हमको चिन्ताहुई तब आकाशवाणी हुई कि तुम मैथुनी सृष्टि उत्पन्न करो—यद्यपि हमारी भी अभिलाषा हुई कि ऐसी सृष्टि उपजावें पर हमारी युक्ति निष्फल हुई यह देखकर हमने यह बिचारा कि विना शिवजीकी सहायताके हमारा मनोरथ सिद्ध न होगा इस कारण तप करनेलगे शिवजी प्रसन्न हुये और अर्धांगीरूप धारणकरके आये हमने स्तुति की शिवजीने कहा कि हम तुम पर अतिप्रसन्न हैं और तुमको वही वरदान देते हैं जिसकी तुमको इच्छा है यह कह फिर शक्ति को अपने शरीर से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अलग किया जिससे दो स्वरूप अलग २ दीखे यह चरित्र देख मैं बहुत प्रसन्न हुआ और आकाशवाणी और सृष्टि की वृद्धि न होने का वृत्तान्त सब वर्णन किया और हमने शक्ति से कहा कि आप दक्ष हमारे पुत्र के घर अवतार धारें और शिवजी भी अवतार धारण करके तुम्हारे साथ विवाह करें यह सुनकर शक्तिने 'एवमस्तु' कहा और अपनी भवों के बीच से अन्य शक्तियां उत्पन्न कीं वह शिवजीको देखनेलगीं—शिवजीने मुसकराकर कहा कि ब्रह्माजीने बड़ा तप जप किया है इसलिये उसके मनोरथ पूरे करो शक्तिने प्रसन्नतापूर्वक हमारे कार्य पूर्ण किये और फिर शिवजी के शरीर में समागईं—शिवजी भी वरदान देकर अन्तर्धानहुये—मैंने यह वरदान पाकर मैथुनीसृष्टि उत्पन्न की—यह अवतार अभिलाषाको पूर्ण करता है और कहने और सुननेवाले को सुख और लाभ देता है॥

पांचवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जो वाराहकल्प इस समय में बीत रहाहै इसमें वैवस्वत नाम मनु हैं जो हमारे प्रपौत्र हैं इस कल्प के हरद्वार युग में व्यास अवतार प्रकट होताहै—जो श्रुति शाखा का विस्तार करता है फिर व्यासजी संसारी जीवोंकी कुबुद्धि देखकर पुराण बनाते हैं कि उनको लाभ प्राप्त हो परन्तु संसारी जीव ऐसी २ युक्तियोंसे भी मूर्ख रहते हैं यद्यपि व्यासजी का मत अतिसुगम है कुछ कठिन नहीं और उनसे वेदका सार प्राप्त होताहै और वे वचन अतिमनोहर हैं परन्तु तौ भी उन मूर्खों को वे वचन समझ में नहीं आते उस समय शिवजी संसार को ऐसी मूर्खता में देखकर कलियुग में व्यासजी के कहनेसे अवतार धारतेहैं और व्यासजी के मत को प्रसिद्ध करते हैं वही चरित्र शिवजी का हम विस्तार से वर्णन करते हैं—पहिला अवतार—प्रथम द्वापर के पहिले मन्वन्तर में हम व्यास

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुये और वेद को चारभाग अर्थात् ऋक् १ यजुः २ साम ३ अथर्वण ४ में बांटा और उनकी शाखाओं को बढ़ाया फिर पुराण बनाये क्योंकि संसारीजीवों की बुद्धि युग के प्रवेशसे नष्ट होगई थी हमने युक्तिपूर्वक वेदकी रीतियां पुराणों में इस प्रकार मिलादीं कि लोग प्रसन्न हों जैसे कोई किसी रोगी को तीखी कड़ुई औषध न दे पर मीठी औषध देकर प्रसन्न करे यद्यपि मुझे व्यासजी ने अनेक प्रकार से यत्न किये कि व्यासमत प्रसिद्ध हो परन्तु यत्न निष्फल हुआ और किसी ने भी पुराणों को न पढ़ा तब मैंने चिन्तित होकर शिवजी का ध्यान किया और स्तुति की कि हे महाराजधिराज ! द्वापर व्यतीत हुआ और कलियुग आगया पर किसी ने भी पुराणों को नहीं छुवा हमारा मत प्रसिद्ध नहीं होता इससे उचित है कि आप दयालु होकर सहायता करें हमारे धर्म को दृढ़ कीजिये ऐसी २ प्रार्थना मेरी सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और शरीर धारण किया और द्वापर के अन्त और कलि-युग के आदि में एक ब्राह्मण के गृह छागलागिरि में जो हिमालय पर्वत का एक भाग है जन्म लिया उनका नाम श्वेत हुआ उत्पन्न होने के समय जय २ कार हुआ नाना प्रकार के बाजे बजे आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई तीनों लोक में सब मनुष्य और जीवआदिक प्रसन्न होकर वहां आये और शिवजी की स्तुति की शिवजी ने प्रकट होकर अगमयोग प्रकट किया शिवजीके चार बड़ेशिष्य हुये वह आ-श्रम जाननेवाले बड़े योगाभ्यासी निष्पाप थे उनके नाम यह थे श्वेत १ श्वेतशिष्य २ श्वेताश्व ३ श्वेतलोहित ४ शिवजीने उनको योग का ध्यान सिखाया और योगको संसारभरमें प्रकट किया इससे सर्वसंसारी जीवों ने योगको बड़े २ यत्नोंसे सीखा और वेद और पुराणसे अच्छे २ धर्म और मत प्रकट किये शिवजीने श्वेतरूप धारण करके व्यासजी को प्रसन्न किया-दूसरा अवतार-दूसरे सत्यनाम द्वापर में व्यासजीने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रजापति का अवतार लिया और वेद के भाग किये और संसार के लाभ निमित्त पुराण बनाये परन्तु यह सब निष्फल हुआ और किसी ने भी वह मत अङ्गीकार न किया व्यासजी ने दुःखी होकर शिवजी का ध्यान किया शिवजीने प्रसन्न होकर पृथ्वी पर अवतार लिया उनका नाम सुतार हुआ उन्होंने व्यासजीके मतको प्रसिद्ध किया और योगशास्त्र का प्रकाश किया उनके चार शिष्य थे दुंदुभि १ सत्यरूप २ ऋचीक ३ केतुमान् ४ उन्होंने शिष्यों सहित व्यासजी का धर्म प्रकट करके संसारी जीवों को बहुत प्रसन्न किया—तीसरा अवतार—तीसरे द्वापर में शुक्रजी ने व्यासजी का जन्म लिया और वेदों के भाग करके पुराणों को बनाया सिद्धता न होने के कारण शिवजी का ध्यान किया तब कलियुग के आदि में शिवजी ने अवतार धारा उनका नाम दमन था उनके चार शिष्य थे विशोक १ विकेश २ व्यास ३ सुप्रकाश ४ दमन शिव अवतार ने योगाभ्यास की रीतियां निकालीं और अपने चेलों सहित संसार में उनका प्रकाश किया और पुराणों के मत को स्थित करके मनुष्यों को मुक्तिका मार्ग दिखा दिया—चौथा अवतार—चौथे द्वापर में बृहस्पति ने व्यासजी का अवतार लिया और वेद के भाग करके पुराणों को प्रसिद्ध किया पर कलियुग के कारण उनकी अभिलाषा पूर्ण न हुई इस लिये उन्होंने शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने प्रसन्न होकर सुहोत्र अवतार पृथ्वी पर धारण किया और व्यासजीके मनोरथ पूर्ण किये उस समय भी शिवजी के चार शिष्य हुये जिन्होंने व्यासजी के मत को प्रकट करके योगाभ्यास की शिक्षादी उनके यह नाम हैं सुमुख १ दुर्मुख २ दुर्मद ३ दुरतिक्रम ४—पांचवां अवतार—पांचवें द्वापर में सविता देवता ने व्यासजी का अवतार लेकर वेदों के भाग किये और पुराण बनाये तब भी शिवजीने सूर्यदेवता की प्रार्थना से पृथ्वी पर अवतार लिया

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

उनका नाम कनक था उनके चार शिष्य थे उन्होंने व्यासजी के मत को प्रकाश किया उनके नाम यह हैं सनक १ सनातन २ सनन्दन ३ सनत्कुमार ४ उनके नाम यह हैं प्रभु १ विभु २ निर्मम ३ निरहंकृत ४— छठा अवतार—छठे द्वापर में मनुजी ने व्यास जन्म धारा और अपना नाम महत् रक्खा उन्होंने अन्यव्यासोंसे जो व्यतीत हुये अच्छे २ पुराण बनाये और उनकी वृद्धिके निमित्त शिवजीका ध्यान किया शिवजी ने प्रसन्न होकर पृथ्वीपर अवतार लिया उनका नाम लोकाक्ष था उन्होंने योग पुराणों को अपने चार शिष्यों सहित प्रकट किया उनके नाम यह हैं सुधामा १ विरुज २ शङ्ख ३ अम्बुज ४—सातवां अवतार— सातवें द्वापर में शतक्रतु ने व्यासजी का जन्म लिया और वेद के भाग करके पुराणों को बनाया जिससे मनुष्य नाना प्रकार के मत और धर्म देखकर आश्चर्यवान् हुये पर उनको किसीने अङ्गीकार न किया तब व्यासजीने श्रीसदाशिवजी का स्मरण किया शिवजीने जैगीषव्य का अवतार धारणकर चार शिष्य उपजाये उनके यह नाम हैं सारस्वत १ पराहन २ मेघनाद ३ सुवाहन ४ शिवजीने चार शिष्यों संयुक्त उस मत को फैलादिया फिर जैगीषव्य ने योग को प्रकट किया यद्यपि वह शिवजी के अवतार थे पर उन्होंने शिवजी की ऐसी भक्ति की जिससे दासत्वभाव प्रकट हुआ जैगीषव्य के समान और कोई व्रत करनेवाला नहीं हुआ अर्थात् जबसे शिवजी काशीपुरी को त्याग करके मन्दरगिरिपर गये तब से न तो उन्होंने जल पिया और न कुछ खाया उन्होंने यही प्रण किया था कि जबतक शिवजी के दर्शन न होंगे तबतक पानी पीना अयोग्य है जैगीषव्य की कथा सुनने और पढ़ने से आनन्द प्राप्त होता है॥

छठा और सातवां अध्याय॥

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि हे पिता! यह बताइये कि क्या

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कारण था कि शिवजीने काशी छोड़ी तो ब्रह्माजी ने सम्पूर्ण कथा आदि से अन्ततक वर्णन की कि जिसतरह काल पड़ा और राजा दिवोदास के वर पानेसे काशी देवताओं से रहित हुई और शिवजी भी विन्ध्याचल पर जायरहे और फिर शिवजी ने काशी के वियोग से दुःखी होकर क्रमपूर्वक योगिनीगण और सूर्य और ब्रह्मा और अपने ३५ गणों को दिवोदास के धर्म छुड़ाने के निमित्त काशी में भेजा और वे फिर काशीमें रहकर न लौटे फिर गणपति वहां गये फिर जो २ चरित्र विष्णु और गणेश ने वहां किये और फिर विष्णु ने ज्यों बौद्धमत के देवताका स्वरूप धारण करके सबका धर्म भ्रष्ट करडाला और फिर राजा दिवोदास ने कि विष्णु का आदर करके उनसे अपना वृत्तान्त कहा और उसने शिक्षा पाई और फिर वह वहां सबसे विष्णुरूपी ब्राह्मण का उपदेश कह काशी छोड़ गोमती नदी के तटपर गया और फिर काशी में आकर उसने शिवलिङ्ग स्थापित किया और जिसतरह शिवजीके गण आकर उसको विमानपर चढ़ा काशी लेगये और गरुड़से यह वृत्तान्त सुन शिवजी काशी में आये और जिसतरह से कि शिवजी ने गणपति का आदर कर विष्णु को दूसरे सिंहासन पर बिठाया और ब्रह्माजी को दाहनी ओर स्थान दिया फिर नन्दी के कहने से सजेहुये रथ पर शिवजी का आरूढ़ हो काशी में जाना और तुरन्त जैगीषव्य की गुफा में जाकर दर्शन देना और ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को वहीं पर स्थित रहकर ज्येष्ठेश्वर लिङ्ग का स्थापित होना और ज्येष्ठा नाम देवीका प्रकट होना और फिर वहीं पर नन्दीश्वर को भेजकर जैगीषव्य को गुफा में से बुलाना और यह वर देना कि हम काशी में रहेंगे इसी प्रकार सम्पूर्ण कथा आदि से अन्ततक कह सुनाई॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि अब हम शिवजी के अट्ठाइसों अवतार का वर्णन करते हैं चित्त देकर सुनो जबकि आठवें द्वापर में वशिष्ठमुनि ने व्यासजी का अवतार लेकर वेद के चार भाग किये और पुराण बनाये तो उनका प्रचार न होने से उन्होंने शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने दधिवाहन नाम अवतार लिया और कृपादृष्टि से व्यास जी के मत को प्रकट किया शिवजी के चार लड़कों के यह नाम हैं कपिल १ आसुरि २ पञ्चशिख ३ शाल्वल ४–नवांअवतार–नवें द्वापर में सारस्वत ने व्यासजी का जन्म लेकर वेद के भागकर पुराणों को बनाया पर सिद्धि न हुई इसहेतु शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने प्रसन्न होकर ऋषभका अवतार लिया उनके चार शिष्य यह थे पराशर १ गर्ग २ भार्गव ३ आंगिरस ४ जिन्होंने योगाभ्यास करके व्यासजी को सहायता दी और उनके मत को प्रकाशित किया और निवृत्तिधर्म को प्रसिद्ध किया हे नारद ! ऋषभजी के चरित्र अति प्रसिद्ध हैं जो मनुष्य उनको पढ़ता अथवा सुनता है वह आपही शिवरूप होजाता है उन्होंने भद्रायुष को कैसा सुख दिया और उसके क्लेश सब दूर किये और केवल एक दिन की सेवा से मुद्र ब्राह्मण और कङ्काली को मुक्त किया–दशवां अवतार–दशवें द्वापर में त्रिधारा नाम व्यासजी ने वेदको चार भागों में किया और पुराणों को बनाया फिर शिवजीको स्मरण करके उनकी स्तुति की शिवजी ने भृगुशृङ्ग जो हिमालय पर्वत का एक भाग है उसमें अवतार धारण किया और उनका नाम भृगु था उनके चार लड़के थे निरमित्र १ जगद्बोधन २ गुप्तशृङ्ग ३ तपोधन ४ सो शिवजी ने इन्हींके द्वारा व्यासजी की अभिलाषा पूर्ण की–ग्यारहवां अवतार–ग्यारहवें द्वापरमें त्रिवृत्तने व्यास जी का जन्म लेकर वेदों के भाग किये और पुराणों को बनाया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फिर शिवजी का ध्यान करके वरदान मांगा शिवजी ने कलियुग में गङ्गाजी के द्वारा अवतार लिया उनका नाम तप था तपके चार पुत्र उत्पन्न हुये लम्बोदर १ लम्बाक्ष २ लम्बकेश ३ प्रलम्ब ४ जिन्हों ने व्यास के मनोरथ को पूर्ण किया—बारहवां अवतार—बारहवें द्वापर में भरद्वाजने व्यासका जन्म लेकर शिवजी का ध्यान किया शिवजीने पृथिवी पर अवतार लिया और हेमकिञ्चकमें विराजमान हुये उनका नाम अत्रि था उनके चार पुत्र सरोज १ समबुद्धि २ साधु ३ शर्व ४ थे जिन्होंने व्यासजीके मनोरथ सिद्ध किये—तेरहवां अवतार—तेरहवें द्वापरमें धर्मनारायण ने व्यास का अवतार धारकर वेदोंके भाग किये और पुराणोंको प्रकट किया परन्तु सर्वयत्न निष्फल हुये शिवजी गन्धमादन पर्वतपर बालखिल्य ऋषिके आश्रममें उत्पन्न हुये उनका नाम बालि था उनके चार पुत्र हुये जिनके नाम यहहैं सुधामा १ कश्यप २ वशिष्ठ ३ वर्जा ४ उत्पन्न हुये और व्यासके मनोरथ पूर्ण किये—चौदहवां अवतार—चौदहवें द्वापर में रक्ष जिनका नाम विभ्री भी है उन्हों ने व्यासजीका अवतार धारकर वेद और पुराणके मत प्रसिद्ध करके शिवजीका ध्यान किया शिवजी अङ्गिरसके कुलमें उत्पन्नहुये उनका नाम गौतम था उन्होंने व्यासके सर्वकार्य सिद्धकिये उनके चार पुत्र उत्पन्न हुये अत्रि १ देवसत् २ अबल ३ सहिष्णु४—पन्द्रहवां अवतार—पन्द्रहवें द्वापरमें त्रय्यारुणिने वेदके चार भाग किये और पुराणोंको प्रकट किया और फिर शिवजीका ध्यान किया सो शिवशंकर गङ्गातट पर हिमालय पर्वतके पीछे जन्मे उनका नाम वेदस्वर था उनके चार पुत्र हुये गुण १ गुणवाह २ कुशरीर ३ कुनेत्र ४ जिन्हों ने व्यासजी की सहायता की और निवृत्त मत को दृढ़ किया—सोलहवां अवतार—सोलहवें द्वापर में धनञ्जय ने व्यास का जन्म लिया और यथाविधि वेदके भाग किये और पुराणों को बनाया और अपने मत की वृद्धि न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देखकर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने पृथ्वी पर जन्म लिया उनका नाम गोकरण था गोकरण उस वन का भी नाम था जहां शिवजी ने अवतार लिया फिर वह वन अघहर क्षेत्र कहलाने लगा जिसकी सेवा करने और जिसमें रहनेसे सर्वकार्य सिद्धहोते हैं शिवजी ने अपने चार पुत्रों कश्यप १ उशना २ च्यवन ३ ब्रह्मपति ४ सहित व्यासको सिद्धि दी–सत्रहवां अवतार–सत्रहवें द्वापर में कृतञ्जय ने व्यासजीका जन्म लेकर वेदोंके चार भाग किये और पुराणोंको प्रकट किया पर निष्फलताके कारण शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने हिमालय पर्वतकी चोटीपर महालय अवतार लिया उनका नाम गुफा-वासी भी था उन्होंने व्यासजी के मनोरथ पूर्ण किये उनके चार पुत्र थे उतथ्य १ वामदेव २ महायोग ३ महाबल ४ ॥

नवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि जब अठारहवें द्वापरमें ऋतञ्जयने व्यासका रूप धारण कर वेदों के भाग किये और पुराणों को प्रकट करके मनोरथ सिद्ध न देखा तो शिवजीका ध्यान किया शिवजीने हिमालय पहाड़के एक शिखरमें जिसको सिद्धक्षेत्रभी कहते हैं उसके शिखण्डनामी पर्वत पर वनमें अवतार लिया उनका नाम शिखण्डी था शिखण्डी के चार पुत्र थे वाचश्रव १ ऋचीक २ शावाश्य ३ सजनीश्वर ४ इनसब ने व्यास के कार्य सिद्ध किये–उन्नीसवां अवतार–उन्नीसवें द्वापर में भरद्वाजने व्यास का जन्म लेकर वेदोंके भाग किये और पुराणों को प्रकट किया पर सिद्धि प्राप्त न हुई इसलिये उन्होंने शिवजीका ध्यान किया शिवजी ने हिमालय पर्वत पर जटामाली का अवतार लिया और चार पुत्र उत्पन्न करके व्यासजी के मनोरथ सिद्ध किये उनके यह नाम हैं रण्य १ कौशल्य २ लोकाक्षी ३ जुघ्म ४–बीसवां अव-तार–बीसवें द्वापर में गौतमने व्यासजीका जन्म लिया और वेदों के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाग किये और पुराणों को निर्मित कर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने हिमालय पर्वत के पीछे अट्टहासका अवतार धारा उसका नामभी अट्टहास था उन्होंने अपने शिष्यों सहित व्यास की कामना पूरी की शिष्यों के नाम यह हैं सीमन्त १ बरबरीबुद्ध २ ऋग्बन्धु ३ किष्किन्धरा ४–इक्कीसवां अवतार–इक्कीसवें द्वापर में व्यास ने अवतार धार पूर्वोक्त सर्वकार्य कर शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने दारुक अवतार लिया इसी कारण वह वन दारुक कहलाता है उनके चार पुत्र थे प्लक्ष १ दललायन २ केतुभानु ३ गौतम ४–बाईसवां अवतार–बाईसवें द्वापर में सूष्मायलमुनि ने व्यासजी का जन्म लेकर शिवजी का ध्यान किया और शिवजीने काशी में अवतार लिया उनका नाम लाङ्गली था उनके चार पुत्र उत्पन्न हुये जिनका भल्लानि १ मधुपुङ्ग २ श्वेत ३ गुप्तकान्त ४ नाम था–तेईसवां अवतार–तेईसवें द्वापर में तृणबिन्दु ने व्यासका जन्म लेकर पुराणादि रच शिव का ध्यान किया शिवजी ने कालिञ्जर पर्वत पर महाकाय सुतश्वेत नाम अवतार लिया वहां भी शिवजीने चार पुत्र उत्पन्न किये–ओषधि १ बृहदक्ष २ देवल ३ कव्य ४–चौबीसवां अवतार–चौबीसवें द्वापर में कुक्षि जिनको बाल्मीकि भी कहते हैं उन्होंने व्यासजी का जन्म धारण कर रामचन्द्रजी की लीला और चरित्रों का बखान किया फिर वेद के चार भाग कर पुराणोंको प्रकट करके शिवजीका ध्यान किया सो नैमिष वन में शिवजीने शूलीनाम अवतार लिया और व्यासजी की कामना पूरी की उनके चार पुत्र यह थे शालिहोत्र १ सहजहोत्र २ युवनाश्व ३ अहिर्बुध्न ४ पचीसवां अवतार–पचीसवें द्वापर में ब्रह्मसप्तने शिवजीका बड़ा तप किया और शिवजी की आज्ञानुसार वेद और पुराणों को बनाया उनके पुत्र उपमन्यु ने बालअवस्था से शिव जी की बड़ी भक्तिकी जब उनका मत न फैला तब व्यासने निराश

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

होकर शिवजीका ध्यान किया शिवजीने दण्डी मुण्डी का अवतार लिया उनके यह चार पुत्र हुये बहुल १ कुण्डकर्ण २ कुम्भाण्ड ३ प्रवाहक ४–छब्बीसवां अवतार–छब्बीसवें द्वापर में पराशरव्यास हुये जो हमारे पौत्र और शक्ति से उपजे थे और वैशम्पायन के पिता थे वह संसार में सब से उत्तमोत्तम धर्म के प्रकट करनेवाले हुये उनके समान शिवजीका भक्त कोई नहीं हुआ उन्होंने वेदके चार भाग किये और अठारह पुराण बनाये शिवजी ने दयालु होकर उनके प्रकट करनेको अवतार धारा उनका नाम सहिष्णु था वह भद्रनाटनगर में विराजमान हुये वहां शिवजीके चार शिष्य हुये उलूक १ विद्युत २ संबल ३ अश्वलायन ४ यह सब व्यासजी के सहायक हुये–सत्ताईसवां अवतार–सत्ताईसवें द्वापर में ज्ञानकर्ण ने व्यासावतार ले कार्य सिद्ध करके शिवजी का ध्यान किया शिवजी ने प्रभासक्षेत्र में अवतार लिया उनका नाम सौम्यकर्म था उनके चार शिष्यों के यह नाम हैं अक्षपाद १ सुमुनिकुमार २ उलूक ३ वत्स ४ सौम्यकर्म अवतार ने योगशास्त्र को प्रकट किया और पुराणके मत को स्थित करके अद्वैत धर्म को दृढ़ किया और मुनीश्वरों को पढ़ाकर उनके द्वारा मत को प्रसिद्ध कर दिया जो मनुष्य इस मतके विरुद्ध थे उनको जीतलिया फिर व्यासजी ऐसी अवस्था देखकर कि हमारे मत के कोई विरुद्ध नहीं बहुत प्रसन्न हुये और शिवजीकी बड़ी स्तुति की और उनके शिष्यों की प्रशंसा संसारभर करनेलगा यह द्वापर के २७ अवतार हमने कहे अब वह अवतार अर्थात् जो शिवजीने कलियुग के आदि में लिया कहते हैं मन देकर सुनो ॥

दशवां अध्याय ॥

अट्ठाईसवां अवतार–ब्रह्माजी बोले कि अट्ठाईसवें द्वापर में विष्णु जीने देवताओं की स्तुति सुनकर व्यासजीका अवतार लिया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेदके भाग करके पुराणोंको प्रकट किया पर उनके प्रसिद्ध न होनेसे शिवजी की स्तुति करके उनका ध्यान किया शिवजी ने व्यास की प्रार्थना सुनकर अवतार लिया और उनके सहायक हुये यह सुनकर नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी ! मेरी अभिलाषा है कि आप इस कथा को विस्तार से कहैं ब्रह्माजीने कहा अच्छा हम इसको विस्तार से कहते हैं तुम ध्यान धर कर सुनो जिससे अतिसुख प्राप्त हो और अनेक प्रकार के कष्ट निवृत्त होजावें क्योंकि इस कथा में दोनों ईश्वरों अर्थात् शिवजी और विष्णुजी की लीला और चरित्र हैं इन दोनों ने मनुष्य जन्म लेकर बड़े २ चरित्र किये और बड़े दीनदयालु और भक्तोंके सुखदायक हैं–पूर्वकाल में देवासुरसंग्राम हुआ था उसमें बहुत दैत्य मारे गये समय पाकर वह सब दैत्य फिर पृथ्वी पर उत्पन्न हुये और कुसंगति में रहकर कुमार्ग में चलनेलगे और युग के प्रभाव से उनकी बुद्धि नष्ट होगई सब विपरीत बातें करने लगे और अभिमानी होकर आपको भूल गये और इन्द्रियों के वश हुये सबमें शत्रुता फैल गई और पांचों देवताओं का पूजन त्यागकर वेदके विरुद्ध विचरनेलगे इसी प्रकार देवताओंने संसार को सत्यमार्ग पर न चलते देखकर विष्णुजीकी सेवा में पहुँच रोतेहुये अपना दुःख वर्णन किया और उनसे दुःखके निवृत्त की इच्छा की सो विष्णु भगवान्ने अङ्गीकार करके पराशरके पुत्र होकर जन्म लिया उनका नाम द्वैपायन था और उनकी माताका नाम सत्यवती था उन्होंने वेदके चार भाग करके उनकी शाखाओं को फैलाया और फिर पुराण बनाये यद्यपि बड़े २ यत्न किये कि वह प्रसिद्ध हों पर कुछ फल न हुआ तब द्वैपायनजी देवताओं और मुनीश्वरों सहित विष्णुजीकी शरणमें गये विष्णुजीने कहा कि तुम जाओ कुछ चिन्ता न करो हम अवतार लेंगे यह सुनकर सब आनन्दपूर्वक अपने २ घर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आये विष्णुजीने वसुदेव यदुवंशीके यहां अवतार लिया जिनके समान दूसरा राजा न हुआ और उनकी स्त्री देवकीके समान कोई स्त्री पतिव्रता नहीं हुई विष्णुजीका नाम कृष्णजी हुआ जिनके नाम जपनेसे सर्वकार्य सिद्ध होते हैं और उनको स्मरण करनेवाला मनुष्य तरजाताहै और वसुदेव की दूसरी स्त्री रोहिणी नाम से शेषजीने अवतार लिया उनका नाम बलदेव था जिनके सेवक देवता और मुनि आदि हैं कृष्णजीने व्रज में आकर यशोमति और व्रज के पति नन्द को अपनी लीला विलास से अति प्रसन्न किया और सब गोपियों को कुमारलीला से मोहित किया और पूतना आदिको जिनको राजा कंस ने भेजा था मारडाला और गोपियोंके संग लीला और खेल किये जो सुख कि बड़े २ योगियोंको बड़े तपसे प्राप्त नहीं होता वह व्रजवासियोंने सहजही पाया और शत्रुओंको मारकर सेवकों को और भक्तों को सुख दिया उन्होंने सब से उत्तम अपना आचरण सब को दिखाया और अहंकारियों का मद नष्ट किया और ग्यारहवर्ष पर्यन्त व्रजमें विराजमान रहकर बलदेव सहित मथुरा में गये वहां उन्होंने बड़े बड़े चरित्र किये और कंसका उसके कुलसंयुक्त नाश किया और यदुवंशियोंको बहुत ही सुख दिया और बहुत से शत्रुओंको मारकर असंख्य भक्तों के प्राण बचाये और जरासन्ध के बलके अभिमान का नाश किया और कालयवनको नष्ट करके भक्तों को आनन्दपूर्वक रक्खा फिर बहुतसी राजकन्याओं के साथ अपना विवाह किया और रुक्मिणी आदि जो बड़े २ महाराजोंकी कन्या थीं उनसे विहार किया और बड़े २ चमत्कार दिखाये जिससे श्रीकृष्णजी का वंश उत्पन्न हुआ उसकी हम संख्या नहीं कर सक्ते कृष्णजी की रानियां १६१०८ थीं जिनसे दश २ पुत्र उत्पन्न हुये जो बड़े वीर थे यह चरित्र श्रीकृष्णजीने करके गृहस्थ धर्मको दिखलाया और उसकी बड़ाई की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और गिरिवर पर्वतको अपनी कनिष्ठिका से उठाकर भक्तों को सुखदिया और पाण्डवों पर दयालु होके उनको कौरवों से बचाया और सुदामा को गुरु के घर की वार्त्ता स्मरण कराके उसको धन और मान से भरपूर किया और द्रौपदी की लाज रखली और विदुर को अपना भक्त बना लिया और पाण्डवोंसे राजसूययज्ञ पूर्ण करा दिया महाभारत में एकपक्षीके अण्डोंको बचा दिया फिर पृथ्वीका भार नाना प्रकार से उतारा तदनन्तर यदुवंशियों के कुलको अभिमानी देखकर ब्राह्मणों से शाप दिलवाकर उनको नष्ट करदिया और जब अपने लोक को सिधारे तो प्रथम अपने कुल का नाश करदिया और उद्धव अपने मित्रको अद्वैत ज्ञान सिखाया और फिर उनको बदरीवनमें भेज दिया और व्याधा को निर्वाणपद दिया और जो उसने किया था उसका बुरा न माना और फिर श्रीकृष्णजी दारुकसारथी को मुक्ति देकर अपने लोकको गये यह हमने कृष्णचरित्र संक्षेपमें कहा है जिसके सुनने से मुक्ति प्राप्त होती है और पाप दूर होजाते हैं कृष्णजी ने धर्म को फिर स्थित किया पर व्यासजीको कुछ प्रसन्नता न हुई क्योंकि उनका निवृत्तिमार्ग प्रसिद्ध न हुआ उनको रात्रि दिवस यह शोच था कि किसी प्रकार हमारा मत फैले तब व्यासजीने शिवका ध्यान किया और कहा कि हे कृपासिन्धो! मैंने यद्यपि वेद के आशय पुराणों में प्रकट किये परन्तु कलियुग के प्रभाव से इनको कोई नहीं समझता प्रवृत्तिमत की तो बढ़ती होजाती है पर निवृत्ति की हानि होती है इससे आप अवतार लें और हमारे मत की वृद्धि करें और निवृत्तिमार्ग को दृढ़करें शिवजीने दयालु होकर ब्रह्मचारी का शरीर धारणकिया और बड़ी २ लीलायें कीं और योगमाया से सब संसार को मोहित करलिया कि उस शरीर से एक श्मशान में पहुँचकर देखा कि एक मुरदा पड़ा हुआ है सो योगमाया से उस शव में प्रवेश करगये और एक पर्वतकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कन्दरा में स्थित हुये सो हम और विष्णु दोनों यह हाल जानकर उनकी सेवा में गये उनका नाम लाकुलीश था जहां शिवजी विराजमान हुये उसे सिद्धक्षेत्र अथवा कायावत्वार कहते हैं शिवजी ने चार शिष्य किये और व्यासजीके धर्म को प्रकट किया उनके नाम यह हैं उशिक १ गर्ग २ मित्र ३ रुन्ध ४ इससे तीनोंलोक में आनन्द हुआ और सबका दुःख नष्ट होगया ऐसे २ चरित्र लाकुलीश शिवजीने किये हे नारद ! हम तुमको सबका सार सुनाते हैं जिससे तुमको पूरा विश्वास प्राप्त हो कि हर द्वापरके अन्त में विष्णुजी आप अवतार लेकर वेदके भाग करते हैं और हर कलियुग के आदिमें शिवजी अवतार धारतेहैं और विष्णुजी हर बेर चार शिष्य करके वेद, योग और आश्रमों को प्रकट करते हैं और वह लिङ्ग का पूजन करके भस्म धारण करते हैं हे नारद ! हमने यह कथा विष्णुजी से सुनी है जो इस कथा को सुनेगा अथवा पढ़ेगा वह मुक्त होगा दधिवाहन अवतार से लाकुलीश अवतार पर्यन्त २८ अवतार हैं और सब ४२ हैं ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

नन्दिकेश्वर अवतार का वर्णन ॥

श्रीब्रह्माजी बोले हे नारद ! अब हम नन्दिकेश्वर अवतार का वर्णन करते हैं कि शिलादमुनि शिवके बड़े भक्त हुये वे शिवकी भक्ति करने से महाधनपात्र और ऐश्वर्यवान् थे पर उनके कोई पुत्र न होता था इस लिये शिलादने इन्द्रका अतिकठिन तप किया सो इन्द्र प्रसन्न होकर वर देनेको गये और कहा कि वर मांगो शिलादमुनि ने प्रणाम कर हाथ जोड़ विनयकी कि मुझको एक पुत्र कृपा कीजिये कि जो माता के गर्भ से न उपजकर अमर रहे इन्द्र ने कहाकि तुम ऐसा हठ मतकरो हम ऐसा पुत्र नहीं देसक्ते बरन हम केवल ऐसा पुत्र देसक्ते हैं जो माता के गर्भ से उपज कर मरे तुम भलीभांति बिचारो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि संसार में कौन है जिसको मृत्यु नहीं ऐसा पुत्र तो विष्णु और ब्रह्माभी नहीं देसक्के देखो ब्रह्मा और विष्णु के लिये भी वेद कहते हैं कि वे शिव से उपजे और वह भी समय पर मरते हैं यह बात सुनकर शिलादमुनिने इन्द्रसे कहा कि हम तो केवल उसी भांतिका पुत्र चाहते हैं जैसाकि हमने कहा तब इन्द्रने शिलादमुनि की हठ को दृढ़ समझ कर कहा कि ऐसा पुत्र मृत्युंजय शिवजी देसक्के हैं क्योंकि शिवजी मृत्यु के वश में नहीं हैं वरन वे काल को जीते हुये हैं यह कहकर इन्द्र तो चलेगये और शिलाद शिवजीका तप करनेलगे इसी प्रकार दिव्यसहस्रवर्ष तप करते शिलादमुनि को बीत गये और शिलाद का शरीर च्यूंटी, सर्प, बिच्छू आदि कृमिकीटों का घर बनगया और शरीर में केवल अस्थि और चर्म शेष रहगया रक्त और मांस का चिह्न भी न रहा सो शिवजी ने प्रसन्न हो सुन्दर स्वरूप धार शिलाद मुनिके समीप आ उसको अपने हाथसे स्पर्श किया जिससे शिलाद मुनि हृष्ट पुष्ट हो आरोग्य होगये शिव बोले कि तुम क्या चाहते हो सो शिलादमुनि ने बहुत स्तुतिके अनन्तर एक पुत्र मांगा कि जिसको काल न व्यापे और वह अमर होकर माता के गर्भ विना उत्पन्न हो शिवजी बोले कि संसारमें कोई है कि जो उपज कर मृत्युसे बचे हां हम मृत्युंजय अर्थात् कालके जीतनेवाले और माताके गर्भ विना उपजे हैं इससे हम आय तुम्हारे पुत्र होंगे हमारा नाम नन्दी होगा और आगे ब्रह्मानेभी पृथ्वी में हमारे अवतार लेने के लिये तप किया था हमने उनको वर किया था कि समय पाकर हम पृथ्वी में अवतार लेंगे सो ब्रह्माको हमने आप वर दिया था वहभी पूरा होगा और तुम्हारी इच्छा पूर्ण करनेसे मानो एक पन्थ दो कार्य होंगे मैं संसार का पिता और तुम मेरे पिता हुये यह कह शिव अन्तर्धान होगये और शिलादमुनि ने अतिप्रसन्न हो यज्ञ करने की इच्छा की और

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सर्वसामग्री इकट्ठी करने के अनन्तर यज्ञ करनेलगे सो शिव उसी यज्ञ के बीचमें से उपजे जो प्रलयकाल की अग्नि के समान देदीप्यमान महासुन्दर त्रिनेत्र चार भुजा धारण किये जिनमें शूल, टङ्क, गदा और असि लियेहुये और जटाओं का मुकुट शिर पर धारे दोनों कानों में कुण्डल पहने मेघवत् गम्भीर शब्द से शोभित और उनके सर्वाङ्ग बालकों के समान थे उससमय आकाशसे मेघवर्षा करनेलगे और किन्नरादि आकाशचारी गाने बजानेलगे देवताओं ने पुष्पवृष्टि की और सबने शिवका अवतार पहिंचाना उस समय बड़ा उत्सव हुआ और चारों ओरसे जय २ का शब्द पूरित हुआ ॥

बारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! शिलादमुनि ने उस बालक से कहा कि तुमने उपजकर हमको अति आनन्दित किया इससे तुम्हारा नाम नन्दी है तुमतो शिव हो मुझको अपनी शक्ति कृपा करो यह कह शिलादमुनि स्तुति करनेलगे सो सब देवताओं के बिदा होनेके अनन्तर शिलादमुनि नन्दी को साथले अपने स्थान को गये नन्दी ने मार्ग में यह लीला की कि पहला तन छोड़ मनुष्यों का शरीर धरा इससे शिलादमुनि ने बड़ा दुःख माना पर अन्त में निरुपाय हो संसारी रीतों को पूरा किया और नन्दी मनुष्यों के बालकोंके समान खेल किया करते जब नन्दीकी दशवर्ष अवस्था हुई तो शिवकी आज्ञा से मित्रा और वरुण दो मुनीश्वर शिलादमुनि के समीप आकर कहने लगे कि यह बालक सर्व्व विद्यानिधान होगा पर इसकी आयु अतिन्यून होगी यह कहकर दोनों मुनि तो चलेगये और शिलादमुनि को महादुःख उपजा और इस महाचिन्ता से वह नन्दीको लिपटकर रोने लगा और मूर्च्छित हो धरती पर गिरपड़ा तबतो नन्दीश्वर मनुष्यों की तरह समझाने लगे कि आप इतना दुःख न मानें हम कोई इसका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उपाय करेंगे कि हम शिवकी सेवा करके काल को जीत लेवेंगे यह समझाकर नन्दीश्वर रुद्रजप करनेलगे तो शिव गिरिजासहित तुरन्त नन्दी के समीप आये और कहा कि तुमको कुछ मृत्यु का भय नहीं तुम हमारे समान शिव हो हमने दोनों मुनीश्वरों को केवल तुम्हारी परीक्षाके निमित्त भेजा था तुमतो मृत्युञ्जयहो तुमको कुछ भय नहीं यह कह शिवने अपने शरीर को नन्दीके शरीरसे लगादिया और गिरिजा और सब गणों की ओर देखकर कहा कि यह नन्दीश्वर जरा और मृत्युसे रहित हमारे समान बलिष्ठ होकर मुझे बहुत प्रिय होगा और हमारे पास स्थित रहेगा यह कह शिवने अपनी माला नन्दीश्वर के गलेमें पहना दी कि तुरन्तही नन्दी भी त्रिनेत्र और दशभुजा धारे होकर शिवके तुल्य होगये उससमय शिवने नन्दी का हाथ पकड़ कहा कि तुमको क्या करदूं यह कहा और अपनी जटाके ऊपर से पानी छोड़ा जिससे नदियां बहनेलगीं उनके यह नाम हैं जटोदक १ तिस्रोता २ वृषध्वनि ३ स्वर्णोदक ४ जटक ५ और जो शिवका लिङ्ग नन्दीश्वरने स्थापित किया था उस का नाम भुवनेश्वर हुआ उसके निकट सरमदनाम बड़ा तीर्थ होगया जो मनुष्य उन नदियों में स्नान कर भुवनेश्वर की पूजा करे वह तीनों लोक में बड़ासुख पावे और शिवकी सायुज्य मुक्ति प्राप्त करे फिर शिवने गिरिजा से कहा कि हम नन्दीश्वरका अभिषेक करेंगे और वह सब गणोंका एकही स्वामी बनाया जावेगा गिरिजाने इस बातको अतिप्रसन्नतासे मानलिया फिर शिवने सब गणोंका स्मरण किया सो वे सब आये और विनय की कि क्या आज्ञा है क्या समुद्र को सुखावें वा मृत्युको नष्ट करदें अथवा यमराजको उनके दूतों समेत बांधलावें अथवा ब्रह्माको पकड़लावें वा इन्द्रको देवताओं सहित पकड़ें अथवा दानव और दैत्योंको जलादेवें वा अग्निही को पकड़लावें अथवा इनके सिवाय और कोई आपका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वैरी हो उसका वध करें वा आप किसीपर प्रसन्न हुये हैं, शिव बोले कि यह नन्दीश्वर हमारा पुत्र है और सबका स्वामी और मुझको प्यारा है यह तुम सबका अधिपति और स्वामी है तुम सब मिलकर इसका अभिषेक करो सो सबने मानकर जय २ शब्द पूरित किया और ब्रह्मा और विष्णु और सब देवतादि ने इकट्ठे होकर नन्दीश्वर का अभिषेक किया और ब्रह्माने शिवकी इच्छा जानकर मरुतकी कन्या सुयशा के साथ नन्दी का विवाह करादिया उस समय बड़ा उत्सव हुआ और नन्दीश्वर स्त्रीसहित सिंहासन पर बैठे लक्ष्मीने मुकुट आदि भूषण नन्दीको दिये और गिरिजा ने गलेका हार कृपा किया और विष्णु ने अपने रथकी ध्वजा कृपा की और हमने कनक-हार दिया फिर शिव नन्दीको नाना प्रकार की वस्तुदे उनको सर्व कुल परिवार सहित अपनी पुरीको लेगये जहां नन्दी शिवका गिरिजा सहित ध्यान किया करते हैं और कैलास में पहुँचकर शिवकी नाना प्रकार की सेवा में लगेरहे हे नारद! शिवकी महिमा देखो कि उन्होंने एकभक्त के लिये आप बालक का अवतार धारा जो इस चरित्र को पढ़ेगा वा मन लगाकर सुनेगा वह धन, स्त्री, पुत्र और आनन्द से इस लोक में भरपूर रहकर परलोक में मुक्ति पावेगा तेंतालीसवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

भैरव अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम भैरव अवतारका वर्णन करते हैं कि एक दिन स्कन्दजी के पास कुम्भज जाकर कहने लगे कि आप मुझे भैरवचरित्र सुनाइये मैंने बहुत मनुष्योंसे भैरवजी के अनेक चरित्र सुने हैं यहभी श्रवण किया है कि वे काशीके कोतवाल हैं उनसेसब संसार बरन कालतक डरता है एक तो भैरव भूतों में भी हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिनके अधीन सर्व योगिनीगण हैं और जो सर्व संसार को भयानक दृष्ट आवे उसका नाम भी भैरव है इन्हीं भैरव में वे भी हैं या और कोई भैरव हैं भैरव कब और किस कार्य के निमित्त उपजे थे यह सब वृत्तान्त आप मुझे सुनावें यह बात कुम्भज मुनिसे सुनकर स्कन्द मुनि बोले कि भैरव सदाशिवजीके पूर्णरूप हैं न तो वे भूतोंमें हैं और न भयानक वे तो आपही सदाशिव हैं जिनको मूर्खलोग नहीं जानते किन्तु ब्रह्मा और विष्णु भी इनकी महिमा नहीं जान सक्के और न नारद और शारद और देवता मुनिआदि उनका पार पासक्के हैं यह कुछ अचरज की बात नहीं है बरन शिवजी की माया को कोई नहीं जान सक्का पर हां जिनके ऊपर शिव कृपा करें उनके सामने माया नहीं आसक्की एक समय सबदेवता मुनि आदि इकट्ठे बैठकर विचार करने लगे कि सृष्टि में कौन प्रभु है यद्यपि बहुत विचार किया पर कुछ न जाना तब तो सब चिन्तित होकर कहने लगे कि चलो मेरुपर्वत पर चलकर ब्रह्मा से पूछें वे मूल बात बतावेंगे निदान ऐसाही किया और मुझसे स्तुति के अनन्तर पूछा कि महाराज आप बतावें कि ब्रह्म कौन है और कौन दोषों से रहित अविनाशी, सबके मनके जाननेवाला, निर्गुण, सगुण, सर्व संसार का स्वामी, विश्वम्भर, प्रलयकाल जिनकी आज्ञा से तुम भी प्रजा को रचते हो और विष्णु उन्हींकी आज्ञा से पालन करके हर प्रलय करते हैं और जिनके भयसे शेष पृथ्वी को धरे हुये हैं और जिनके अनुशासन से सूर्य प्रकाश किये रहते हैं और जिनकी आज्ञासे चंद्रमा तारागणों समेत आकाश में प्रकट होते उनको बताइये इतना सुन हमने कहा कि हे देवताओ ! वह हमहीं हैं हमारे नामों को सुनकर तुम आपही समझ लो कि परब्रह्म हमहीं हैं और कोई हमारे नाम ब्रह्मा, स्वयम्भू, धाता, अज, परमेष्ठि आदि बोलते हैं यह कह स्कन्दजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोले देखो ब्रह्माजी शिवकी माया से क्योंकर मोहकर अपने को परब्रह्म वर्णन करनेलगे शंकरजीकी माया अतिबलवती है यह वार्त्ता होरहीथी कि विष्णुजी उत्तमोत्तम चतुर्भुजी स्वरूप धारणकिये पीताम्बर ओढ़े क्रोध से नेत्र रक्तकिये थे प्रकट हुये उन्होंने देवताओं से कहा कि देखो ब्रह्मा की मूर्खता यह ऐसे मूर्ख वचन क्यों कहता है हे ब्रह्मा ! तुम वेद पुराण के विरुद्ध ऐसी बात क्यों कहते हो हमारी नाभिकमलसे उपजेहो तुम्हारी बड़ाई हमारे अधीन है और तुम हमारी आज्ञा से सृष्टि रचतेहो हम सब तुम्हारे सब कर्मों में सहायता करते हैं और तुम सर्वसृष्टि को उपजाकर उनकी रक्षा में प्रवृत्त रहतेहो हम पृथ्वीका भार उतारते हैं हम परमज्योति और परब्रह्म हैं हम परमात्मा निर्गुण और निर्दोष हैं और हरप्राणी में प्रकट होरहे हैं मेरे विरुद्ध होना मानो अपने जीवसे हाथ धोनाहै हम यज्ञपुरुष हैं हमसे बड़ा कोई संसार में नहीं वेद ने आप हमको ब्रह्म करके बखाना है तुम अपने नाम पर गर्व मतकरो सत्य २ कहो निदान इसी प्रकार ब्रह्मा और विष्णुने बहुत विवाद किये और शिवजीको किसीने कुछ न जानकर आपही आपको ब्रह्म ठहराया ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अन्तको यह बात ठहरी कि वेद जिसको परब्रह्म कहदेवें वही परब्रह्म मानाजावे और वेदों का पूरा निर्णय समझा जावे सो इसी प्रयोजन से ब्रह्मा और विष्णु ने वेदों को बुलाकर अतिनम्रता से कहा कि हे वेदो ! संसार में तुम्हारे वचन पर सब का पूर्ण विश्वास है तुम यह बतालादो कि परब्रह्म कौन है यह सुन वेद बोले जोकि तुमने हमपर इस बातको रक्खा तो हम सत्यही सत्य कहेंगे जिससे तुम्हारे मनों का संशय दूर होजावेगा पहिले ऋग्वेद ने कहा कि जहां सर्व जीवधारी स्थित रहते हैं और करोड़ों ब्रह्माण्ड

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिखाई पड़ते हैं जिनको वेद परमतत्त्व करके वर्णन करता है और जिनको सन्तों ने सबसे श्रेष्ठ ठहराया है वे सदाशिव ही हैं जो प्रलयमें भी नष्ट नहीं होते यह कह ऋग्वेद चुप होरहा यजुर्वेद बोला कि जिसको सर्वजीव यज्ञ करके सेवन करते हैं जो परमानन्द स्वरूप है और जिसका ध्यान योगी मन में करते हैं और बिन उसकी इच्छा के दर्शन प्राप्त नहीं करसक्के और जिन को हम नेति २ वर्णन करते हैं वे शुद्ध सदाशिव हैं फिर सामवेद ने कहा कि जिससे तीन लोक प्रकट होते हैं और जिसको योगी अति विचार से समझते हैं और जिसके अंश से उत्पत्ति करनेवाला और पालन करनेवाला और प्रलय करनेवाला है वह केवल सदाशिव है फिर अथर्वणवेद बोले कि जिस को सन्त परब्रह्म वर्णन करते हैं उसकी भक्ति करके उसका यश गाते रहते हैं जो केवल आपही मुक्तिके देनेवाले हैं वह सदाशिव हैं यह वचन वेदके सुनकर दोनों देवता बहुतही हँसनेलगे और शिव की माया से मोहित होकर कहने लगे कि योगियों का पति, कुरूप जटा धारण करनेवाला, विष खानेवाला, नग्न शरीर, बैल पर चढ़ने वाला जिसके भूषण सर्प हैं श्मशान की भस्म शरीरमें मर्दनकर भूतोंकी संगति में रहता है वह परब्रह्म क्योंकर होसक्ता है जिसकी संगति से सबको ग्लानि है यह कहकर दोनों हास्य करने लगे तब तो प्रणवने कहा कि हे सृष्टिके उपजानेवाले ब्रह्मा ! और हे पालनेवाले विष्णो ! हमारी बात मन लगाकर सुनो तुम अपने मुखों से ऐसी विपरीत बात मत कहो तुम तीनों लोकके उपदेष्टा और विश्वासित हो वेदके मत को खण्डन मतकरो वेदोंने सत्यही कहा है परम शिवका कुछ रूपरेख नहीं है पर वे तीनों लोक में नाना प्रकार की लीला करते हैं तुम्हारे लिये उन्होंने स्वरूप धारण किया है वे तीनों लोकके अन्तर्यामी हैं वे तुम्हारी विनय के अनुसार ब्रह्माके भ्रूमध्यसे उपजे और शिवके बहुत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

लीलाधारी रूप हैं जिन्होंने अपने भक्तोंके लिये बड़े २ चरित्र किये हैं हम शिवके चरित्रोंके मूल वर्णन करते हैं जिससे तुम्हारी मति परब्रह्मके विरुद्ध न हो और तुमको अटल बुद्धि प्राप्तहो सो कहते हैं कि जब कोई जीव न था बरन संसार, निर्गुण, प्रकृत, पुरुष, ब्रह्मा, विष्णुवर्ण, सृष्टि आदि कुछभी न था तब केवल अद्वितीय, निर्गुण, मायासे परे, ज्योति मात्र सदाशिव थे जिनको वेद नेति २ करके बखानते और अहर्निश वर्णन करके फिरभी उनके भेद को नहीं जानते ऐसे निर्गुण स्वरूप शिवके नामसे विराजमान हैं वही अलख निरञ्जन स्वरूप शिव तीनों गुणोंसे श्रेष्ठ हैं जिनके अंशसे तुम तीनों देवता उपजेहो उसमें शिवजी के पूर्ण अंशसे हर हैं तुम दोनों को उनकी सेवा करनी उचित है जो और शिवजी शिवलोक में रहते हैं वही हर, रुद्र और अविनाशी हैं और जो शक्ति सहित अवतार लेते हैं वही शिव कैलास में स्थित हैं और शक्ति रहित मृत्यु को जीतेहुये दिखाई देते हैं और सर्व प्रकारकी लीला करके स्वाधीन रहते हैं उनके चरित्र कोई जानने नहीं पाया जो उनकी इच्छा होती है वही करते हैं वे मायाजाल से परे हैं जिन के सब देवता और मुनि दास हैं जिनके चरित्रों को वेद और पुराण और धर्मशास्त्र नहीं जानते तुम उनकी माया से भूलकर पशुओं के समान भटकते फिरतेहो वही शिव लीलाधारी अपनी इच्छाके अनुसार बहुत से रूप धारण करते हैं कभी शरीर धारते कभी शरीररहित कभी योगी और कभी भोगी कभी भूतोंकी संगतिमें और कभी नग्न शरीर में भस्म लगाये सेलीके भूषण पहिने जटा रखायेहुये कभी परमहंसी गति को दिखलाते कभी अपने में आपही को देखकर ध्यान करते हैं कभी चक्रवर्त्ती राजाओंके समान नाना प्रकारके भोग भोगते हैं और शक्ति समेत सिंहासनपर बैठकर राज्य करके प्रजा पालन करते हैं और सब देवता और दैत्य उनको प्रसन्न करके अपना २ मनोरथ पाते हैं उन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का यश लक्ष्मीजी गाती हैं विष्णु मृदङ्ग बजाते हैं ब्रह्मा ताल देते हैं सरस्वती बीणा धारण करती हैं इन्द्र बांसुरी बजाते हैं वे शिव ऐसे हैं यद्यपि यह सबबातें प्रणव ने सुनाईं पर उन दोनों के मनमें क्रुद्ध न आया कारण यहथा कि शिवजी की मायासे वे इसबातको नहीं मानते थे इतनेमें शिवजीने इच्छाकी कि इनका मोहदूरकरना चाहिये॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

स्कन्दजी बोले कि हे कुम्भज! इतनेमें दोनोंके बीच एक ज्योति प्रकट हुई जिस के प्रकाश से सब पृथ्वी और आकाश पूर्ण होगया उसमेंसे एक सुन्दर स्वरूप उपजा जिसको देख ब्रह्माने पांचवें मुखसे यह कहा कि हे विष्णो! हमारे और तुम्हारे बीच में यह कैसी आश्चर्यदायक ज्योति प्रकटहुई है जिसमें किसी मनुष्यका स्वरूप दिखाई देता है यह कह वह कहही रहे थे कि ब्रह्माको इस प्रकारका स्वरूप भासित हुआ कि एक मनुष्य नीललोहितवर्ण, चन्द्रभाल, त्रिशूल हाथमें सर्पों का भूषण बनाये खड़ा हुआ है सो ब्रह्माजीने कहा कि तुमतो वही हो जो हमारी भ्रूके मध्यसे उपजे थे तुम्हारे रोनेके कारण हमने तुम्हारा नाम रुद्र रक्खा था और भी बहुत से नाम रक्खे थे तुमको उचित है कि हमारी शरण में आवो हम तुम्हारी रक्षा करेंगे जब कि ब्रह्माजी ने मोहवश ढिठाई से यह वार्त्ता की तो ऐसा गर्व ब्रह्मा का देख शिवजी ने महाकोप किया और एक मनुष्य को उपजाया जो भक्तों को आनन्द देनेवाला और शत्रुओं के लिये अति भयंकर है उसके भाल में चन्द्रमा तीनों नेत्र लाल शरीर में सर्प लिपटे हुये निदान हर प्रकार अपने समान अपनी लीलाके लिये प्रकट किया उस उपजेहुये मनुष्य ने हाथ बांध शिवजी से बिनती की कि हमारा नाम रख दो और जो मुझे काम करना है वह कह दो शिवजी बोले कि तुम काल के समान भासित होते हो इससे तुम्हारा नाम कालराज हुआ और

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

जोकि तुम विश्वके भरण की शक्ति रखतेहो इससे तुम्हारा नाम भैरव भी है और जोकि तुमसे कालको भी भय होगा इससे कालभैरव भी तुम्हारा नाम है और जोकि तुम गणों के दुःख मिटानेवाले हो इससे अमरादिक भी तुम्हें कहेंगे और तुम भक्तोंके पाप खाडालोगे इससे तुम्हारा पापभक्षणभी नाम है इसीतरह औरभी तुम्हारे नाम होंगे और सब भक्तों के मनोरथ तुमसे पूर्ण होंगे अब अपना काम सुनो कि पद्मसुत जो ब्रह्मा है यह महाशत्रु है इसको भलीभांति शिक्षा दो और इसके सिवाय और भी जो संसार में इस विधि के विरोधी हैं उनको दण्ड दो और हमारी मुक्तिनगरी अर्थात् जो काशी हमारी है और हमको प्राणके समान प्रिय है उसका स्वामी हमने तुमको किया तुम सदाके लिये वह स्थान अपना समझो अर्थात् तुम काशीके कोतवाल होकर सबको शिक्षा दोगे काशी में तुम्हारी दुहाई फिरेगी तुम वहां अपना राज्य करोगे और जो मनुष्य काशी में पाप करें उनको उपदेश करो तुम्हारा तेज तीन लोक में कोई न सहसके और जो कोई काशी में शुभ अशुभकर्म करते हैं उनको चित्रगुप्त नहीं लिख सक्ते वहां यमराज की आज्ञा नहीं चलती यह सुन कालभैरव प्रसन्न हुये और मनमें सोचनेलगे कि ब्रह्मा को क्या दण्ड देना चाहिये फिर विचार किया कि ब्रह्माने पांचवें मुखसे शिवजी की निन्दाकर उनको पुत्र बनाया है इस लिये उचित है कि उसका वही पांचवां शिर काटडालूं इस इच्छासे भैरव क्रोधितहुये पहिले उनका स्वरूप महाभयानक होगया सो बाईं अंगुलीके नखसे ब्रह्माका पांचवां शिर काटलिया उस समय बड़ा हाहाकार मचगया और देवता और मुनिआदि सब कांपने लगे और विष्णु भी हाथ जोड़ स्तुति करने लगे और ब्रह्माजी भी कांपकर महादुःखी हुये और शतरुद्रीका जप करनेलगे और शिवजी की शरण में गये सो शिवजीने कहा कि हे विष्णो ! और ब्रह्मा कुछ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भय मतकरो तुम दोनों सृष्टिके उपजानेवाले और पालनकर्ता और मैं प्रलयका करनेवालाहूं तुम मुझको अपने समान प्रियहो हम तुम तीनों देवताओंमें कुछ भेद नहीं है पर जिस मुखसे ब्रह्माने निन्दाकी केवल उसे हमने कृपा करके दण्ड दिया हमने यह चरित्र कर तुम्हारा मोह दूर कर दिया जब तुमने वेद और पुराणों की आज्ञाओंको न समझा तो मुझको तुम्हारी भलाई के लिये प्रकट होना पड़ा इसके पीछे भैरव से शिवजी ने कहा कि हे भरणकर्ता भैरव ! जो काम करना वह समझ बूझकर करना ब्राह्मण चाहे कैसाही भ्रष्ट होगया हो पर उसका वध करना महापाप है तुमको ब्रह्मा के पांचवें शिर काटडालनेके कारण दोष लगगया है उसको दूर करो और कायापालव्रत धारण करो यद्यपि तुमको पुण्य पाप कुछ नहीं है पर वेदके अनुसार सब करना चाहिये कि अन्य मनुष्यभी ऐसा करें तुम शिरको हाथ में लियेहुये भिक्षाटन करते सर्वलोकों की परिक्रमा करो यहकहकर शिवजी ने एक स्त्री प्रकट की जिसका शरीर बहुत बड़ा था उसका नाम ब्रह्महत्या रक्खा वह महाभयंकर और महाभय देनेवाली सामग्री धारे जिसका भयदायक रक्त शरीर रक्तही वस्त्र पहिने सर्वशरीर में रुधिर लगाये बड़े भयानक दांत जिसकी जिह्वा मुखसे निकली हुई आकाशतक शिर उठाये हाथ में खप्पर लिये जिसमें से लहू पीती थी और प्रलयकाल के मेघ समान महाभयंकर ब्रह्महत्या को शिवजी ने प्रकट करके उससे कहा कि काशी हमारी नगरी है वहां जब तक भैरव लौट न आवें तब तक उनको न छोड़ना चाहे कोई करोड़ों उपाय करे और सिवाय काशी के तुम्हारी तीनों लोक में गति होगी यह रहस्य कहकर शिव अन्तर्धान होगये और भैरवने भी शिवजी की आज्ञा स्वीकार की और ब्रह्मा का शिर लिये हुये भिक्षा मांगते फिरे और ऊंचे शब्द से सबको अपना पाप जो लगाथा सुनातेथे यद्यपि भैरव शुद्ध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

थे पर संसारी मनुष्यों की शिक्षा के निमित्त उन्होंने ऐसा किया ॥

सोलहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! भैरव को ब्रह्महत्या ने न छोड़ा और वह पीछे २ बड़ाशब्द करती हुई चली जहां भैरव जाते वहां वहभी जाती भैरव संसारभर में भ्रमण करते फिरे और सातों द्वीप में जो जो तीर्थ थे वह सब भैरव ने अकेले किये और साथ में वही स्त्री थी और कोई नहीं था यहां तक कि वह पाताललोक तक गये पर वह स्त्री न छूटी निदान उन्होंने ऊपरके लोकमें भी भ्रमण किया परन्तु वह न हटी इसी प्रकार भैरव ब्रह्मलोकपर्यन्त फिरे जहां भैरव शिर लेकर जाते थे वहांके निवासी अन्न धन से परिपूर्ण होजातेथे निदान महादुःखी हो भैरव नारायणलोक को इस इच्छा से चले कि वहां जानेसे पापसे छूटेंगे विष्णुने भैरवको देख लक्ष्मी से कहा कि देखो परब्रह्म शिव आते हैं यह धरती धन्य है और हम तुम सब शुभ हैं यह तो पूर्ण स्वरूप से सदाशिव हैं जिनके नाम लेने और दर्शन करने से फिर मनुष्य का शरीर नहीं मिलता वही कृपा करके यहां आते हैं जब कि भैरव निकट आये तो विष्णुने सर्वसभासहित उठकर भैरव की स्तुति की और कहा कि तुम तो सब पापों के दूर करनेवाले और भक्तों के आनन्ददायक और अविनाशी हो तुम यह क्या चरित्र और लीला कररहे हो हमसे वर्णन करो और जो तुम हाथ में शिर लियेहुये भ्रमण कररहे हो इसका क्या कारण है तुमतो संसार के महाराजाधिराज हो यह तुम्हारा भीख मांगना आश्चर्य देता है भैरव बोले कि हम ब्रह्मा का शिर काट पापी हुये उस अधर्म से छूटनेके कारण सर्वसृष्टि में फिरते हैं विष्णु ने कहा कि मुझसे तीनोंलोक के मोहने वाली अपनी माया को दूर रखिये तुम सृष्टि भरके स्वामी हो जो तुम्हारी इच्छा होती है वही सब करते हो वह सब तुमको शोभायमान है तुम तो संसार से भिन्न हो तुमको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुण्य पाप से कुछ प्रयोजन नहीं तुम्हारे नाम जपने से सर्वपाप भाग जाते हैं जब तुम प्रलय में सब देवता, दैत्य, मुनीश्वर और वर्णाश्रमों को नष्ट करतेहो तब तुमको क्यों पाप नहीं लगता उस समय ब्रह्मा का तो अभावही करदेतेहो अब केवल तुमको एकही शिरके काटने से पाप लगसक्ता है अन्य कल्पोंके ब्रह्माओंके शिर तुम्हारे गलेमें पड़े हुये हैं उनकी ब्रह्महत्या तुमको क्यों नहीं लगती अब अपनेको पापी ठहराते हो तुम्हारी विचित्र लीला है देवता और मुनि उसको कोई नहीं जानते और जिस भांति कि सूर्य के उदय होनेसे अँधियारा जाता रहता है उसी भांति तुम्हारे भक्त के चाहे वह कैसाही पापी हो पाप नष्ट होजाते हैं जो मनुष्य एकबेर तुम्हारा ध्यान करता है उसके दुःख और ब्रह्महत्या आदि पाप दूर होते हैं तुम्हारे नाम लेनेसे पापों का पर्वत नष्ट होजाता है चाहे कोई शत्रु भी तुम्हारे नाम शिव, शंकर, शशिशेखरादि ले वह भी आवागमनसे छूटे और वह सदा कैलास में स्थित रहेगा तुम्हारा नाम शुभ है तुमको यह शिर हाथमें लेकर भ्रमण करना उचित नहीं है हमारी बड़ी भाग्य है कि जिसको योगी योग करके नहीं पाते वह हमारे लोकमें आज विराजमान हुये हम धन्य हैं और हमारा लोक धन्य है जो आप ऐसे स्वामी को आज देखते हैं आपकी दृष्टि अमृतकासा गुण रखती है जिसको देखकर फिर आवागमन का भय नहीं रहता जो अच्छे लोग तुम्हारा भजन करते हैं वे स्वर्ग और मोक्ष तृण के समान जानते हैं विष्णु यह कह रहे थे कि भैरव ने भीख मांगी सो लक्ष्मी ने भिक्षा देकर प्रणाम किया और भैरव आगे चले और पीछे २ ब्रह्महत्या साथ हुई॥

सत्रहवां अध्याय॥

स्कन्दजी बोले कि हे कुम्भज ! विष्णु ने ब्रह्महत्या को भैरव के पीछे जाते देखकर कहा कि भैरव का पीछा छोड़कर जो तुझे वर

In Public Domain. Charkha Archive Fi

चाहिये वह हमसे मांग ले ब्रह्महत्याने हँसकर कहा कि मैं शिवजीकी आज्ञासे भैरवके पीछे फिरकर अपने को शुद्ध करती फिरती हूं भैरव को कुछ दुःख नहीं देती हूं जो कोई भैरव का नाम लेता है मैं तुरन्त उसका घर छोड़ भागजातीहूं हमारा अधिकार भैरवपर केवल इतनाही है कि यह बात केवल शिवजी की आज्ञासे हुई है उस आज्ञाको कौन भङ्ग करसक्ता है यह कहकर ब्रह्महत्या उसी प्रकार भैरवके पीछे चली भैरवने विष्णुके ऐसे विश्वास को देखकर कहा कि जो इच्छा हो वह हमसे वर मांग लो हमको यह चाण्डाली हत्या कुछ दुःख नहीं देसक्ती हम यह आपही संसारके लिये चरित्र कररहे हैं विष्णु बोले कि हम को यही बड़ा वर मिला कि आप हमारे लोकमें आये हम यह चाहते हैं कि हम प्रतिदिन आपके चरणकमलों का ध्यान किया करें और हमको हरदिन आपके दर्शन मिलें भैरवने कहा अच्छा यही वर हमने तुमको दिया तुमभी देवता और मुनीश्वरों को वर दिया करो और तीनों लोकके स्वामी होकर आनन्दपूर्वक बैठे रहो यह कहा और सब देशोंकी परिक्रमा कर काशीकी ओर चले वह काशी जिसकी बराबर तीनों लोकमें कोई क्षेत्र नहीं और जहां सबको परममुक्ति प्राप्त होती है जब भैरव काशीके समीप पहुँचे तब ब्रह्महत्या अतिभयवती हो चिल्लाने लगी जब भैरव बैठगये तो वह हाहाकार करके पृथ्वी के नीचे चली गई और भैरवके हाथसे शिर धरती में गिरपड़ा भैरव अतिप्रसन्न हुये और सब देवता और मुनीश्वरोंने जय २ उच्चारण किया भैरव नाचने लगे हे कुम्भजमुनि ! काशी की महिमा देखो वह सबसे श्रेष्ठ है यह काशी शिवजी को कैसी प्यारी है कि जो पाप भैरव का और किसी स्थानमें नहीं छूटा था वह काशीके भीतर जाते २ छूटगया हम उसकी महिमा कहांतक कहें वह तीनोंलोकसे निराली और मोक्ष देनेवाली पुरी है वह सबसे श्रेष्ठ कपालमोचन तीर्थ है जिसके दर्शनहीसे सब पाप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नष्ट होजाते हैं और जिसके स्मरण से बड़े २ पाप छूटजाते हैं और मुक्ति मिलती है और वहां देवता और पितरों के तर्पण करने से ब्रह्म-हत्यादि छूटजाते हैं इसके समान दूसरा तीर्थ नहीं है जैसा कि वेद और पुराणादि कहते हैं और जो कि मार्गशीर्ष की कृष्णअष्टमी को भैरव का अवतार हुआ तो उस दिन जो कोई व्रत करे उसके जन्म भरके पाप दूर होजावें इसी प्रकार उस दिन जागरण का भी यही फल है और जो कदाचित् भैरवके निकट जाकर काशीमें इस व्रतको करे तो जो पाप किये हुये हों वे सब दूर होजावें कोई भी दोष न रहे और जो उस दिन भैरव का पूजन करे तो एक वर्ष के बड़े २ पाप सब जाते हैं और जो अष्टमी, चतुर्दशी और रविवार को कोई भैरव की यात्रा करेगा उसके सब पाप छूटजावेंगे और जो कोई भैरवकी आठ परिक्रमा करे तो उसको तीनों प्रकारके पाप न लगेंगे यह भैरवका व्रत सब व्रतों का राजा है और चारों फल का देनेवाला है जो मनुष्य दोनों लोक में सुख प्राप्त करने की इच्छा रखता हो वह इसी व्रत को निश्चयपूर्वक करे इस व्रत के करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं इस भैरवचरित्र के सुनने से मुक्ति होती है और बड़ा आनन्द मिलता है चवालिसवां अवतार पूर्ण हुआ॥

अठारहवां अध्याय॥

वीरभद्र अवतार का वर्णन॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! इससे पहले हम वीरभद्र अवतार का विस्तारसे वर्णन करचुके हैं अब संक्षेपमें कहते हैं कि दक्षप्रजापति हमारे पुत्रने बुद्धिकी हीनतासे शिवके साथ वैर बढ़ाया और उनकी निन्दा की पर शिवशङ्करने ऐसे वचनों का कुछ विचार न किया इतने में वह यज्ञ करनेलगा सब देवता और हमभी अपने परिवारों सहित उस यज्ञ में आतेगये यद्यपि बड़ी धूमधाम थी पर शिवजी विना कुछ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शोभा न थी दधीचि मुनिने सबको समझाया कि तुम सब जाकर शिवजी को यहां लावो पर यह बात किसीको न भाई यहांतक कि विष्णु और हमने भी शिवजी को भुलादिया अन्त को दधीचिमुनि यह बात कहकर कि यह यज्ञ पूर्ण न होगा बाहर चलेगये इस बात को दक्ष प्रजापति उत्तम समझकर हम सबकी सहायता से यज्ञ करने लगा संयोगसे सती अपने पिता के यज्ञ का होना सुनकर अतिप्रसन्न हुई और शिवजी से हठ करके आज्ञा पा दक्षके यहां गई और वहां शिवजी की अतिअप्रतिष्ठा देख क्रोधित हुई और कहा कि हे दक्ष ! और ब्रह्मा और विष्णु और सबदेवता और मुनिआदि ! तुम सब की शुद्धबुद्धि जाती रही है तुम सबने शिव विना यज्ञ करना चाहाहै इसका फल तुम सबको मिलेगा फिर योगधारण कर सती जलगई तब हाहा-कार होगया और सब विकल हुये सती का मरना सुन बीसहजार गणोंने अपनी प्रसन्नता से अपने प्राण छोड़दिये और शेषगणों को जिन्होंने उपद्रव उठाया उन सबको भृगुने मन्त्रों के बलसे उच्चाटन करदिया उन सबने भागकर शिवजीके पास पहुँच सर्ववृत्तान्त वर्णन करदिया और शिवजी ने हे नारद ! तुम से सब वृत्तान्त पूछा और फिर तुम्हारा वर्णन सुन शिवजीने अतिकोपित हो अपनी एक जटा उखाड़कर शिला पर मारी उस समय पर्वत और नदियों समेत तीनों लोक कांप उठे उस जटाके प्रथमभागसे एक मनुष्य चतुर्भुजी स्वरूप त्रिनेत्र किये महाभयानक हाथ में त्रिशूल लिये वीरभद्रनामी उपजा और शिवजीके साम्हने आखड़ा हुआ और उसने अपने रोमोंसे अपने समान असंख्य गण उपजाये वे सब अट्टहास करते थे और जटाके दूसरे भागसे श्रीमहाकाली महाभयानक स्वरूप धारे अपने साथ क-रोड़ों योगिनियों को लियेहुये बड़ाशब्द करते प्रकट हुईं फिर वीरभद्र और कालीने हाथ जोड़कर शिवजीसे अपना काम पूछा तब शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने बड़े कोप से आज्ञा दी कि तुम दक्षके यहां पहुँच उसके यज्ञ को विध्वंस कर सबको दण्ड दो यह आज्ञा पाकर वह सब सेना चली जिसके चलनेसे चारों ओर शब्द पूरितहुआ और वीरभद्र चले जिससे पृथ्वी कांप उठी और वायु प्रचण्ड चलनेलगी वीरभद्र के रथ में बीस अयुत सिंह लगेहुये थे और रथ बीस कोस लम्बा था जिसमें असंख्य छत्र लगे थे और वह गण जो वीरभद्रसे उपजे थे सो चौंसठ करोड़ थे वह भी वीरभद्रके साथचले इनके सिवाय और बहुतसे शिवगण विमान पर आरूढ़ हो चले जिनमें अतिप्रसिद्ध गण थे और यह सब सेनाकी संख्या जो गणों के साथ चली चौंसठ करोड़ थी और सहस्र कोटि भूतोंकी सेना थी और क्षेत्रपाल भी अपनी सेनासमेत चले और भैरव भी असंख्य सेना लेकर साथ हुये इसप्रकार इतनी सेना लेकर वीरभद्र चले जिसकी गणना नहीं होसक्ती यह वृत्तान्त दक्षकी स्त्री बीरनी ने जाना जिसने सती का आदर किया था उसने सबसे समझा कर कहा कि अब कुशल नहीं है शिवजी महाकोपित हुये यह बात बीरनी सबसे कह रही थी कि सेना पहुँच गई और जहां हिमालय पर्वतके सुवर्णके शिखर हैं और मायापुरीके निकट जहां गङ्गा बहरही हैं उस देशका नाम कनखल है वहीं पर दक्ष यज्ञ कर रहे थे निदान वीरभद्रने पहुँचकर प्रलयकी अग्निके समान होकर उच्चस्वर से कहा कि हम शिवजी की आज्ञा से आये हैं तुममें से किसी को बिन बध किये न छोड़ेंगे॥

उन्नीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! वीरभद्र ने यह कह यज्ञस्थान को जला दिया और सबगणों को आज्ञा दी कि अकाल प्रलय करो यह सुन गणोंने महाक्रोधकर यज्ञके विद्यमान देवताओं और मनुष्यों की दाढ़ी केश आदि सब उखाड़डाले और सबको शस्त्रों से मारा ऐसी मार देख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिक्पालोंने क्रुद्ध सामना किया पर वे सब वीरभद्रसे परास्त होगये और इन्द्र की भुजा उठ न सकी और त्रिशूल से विकल होगये और अनल की शक्ति काटकर उसे त्रिशूलसे घायल करदिया और यमराज का कालदण्ड काटकर मूर्च्छित करदिया और नैर्ऋति का खड्ग तोड़कर उसके हृदय में त्रिशूल मारा और वरुण की पाश काट उसको अपने बाणसे घायल किया और पवन की ध्वजा नष्टकर उसे फरसे से मारा और कुबेरकी गदा तोड़ उसे अपने त्रिशूल से घायल किया और चन्द्रमा को लातसे मारा और आठों वसुओं का मुशल काट दुःख दिया इनके सिवाय और जो युद्ध के लिये खड़े थे उन सबको अपने शस्त्रोंसे हना यह दशा देख सब देवता भाग खड़े हुये और उनका कोई उपाय न चला और गणोंने महाभयंकर अट्टहास किया और यज्ञको नष्ट करनेलगे इससे अत्रिमुनि भागकर विष्णुके चरणों पर गिरपड़े और कहा कि हमारी रक्षा करो हम आपकी शरण में हैं आप यज्ञरूप और यज्ञकी रक्षा करनेवाले हैं हम देवताओं और मुनि आदि के दुःखको कहां तक वर्णन करें यह जो शिवके गण आये हैं इनको निवारण करो सो दक्षप्रजापति भी विष्णु से यह बिनती करके चरणों पर गिरपड़े और बड़ीभारी स्तुति की और कहा कि ऐसी कृपा कीजिये जिससे यह गण निवृत्त हों कदाचित् गणों ने हमारा यज्ञ नष्ट करडाला तो हमारी बड़ाई में अन्तर पड़जावेगा ऐसी २ विनय कर दक्ष हाथ जोड़ विष्णुके आगे खड़ा हुआ ऐसी देवताओं और दक्षकी बिनती सुनकर विष्णु गणोंपर क्रोधित हुये और लड़ाई के लिये खड़े होगये और सबशस्त्र विष्णुके स्मरण करने से आये विष्णु रथ पर आरूढ़ हो युद्धके निमित्त चले और गणों के सामने खड़े होकर ज्वलित अग्निके समान दिखाई दिये और गणोंको अपने बाणोंसे विकल करके युद्धस्थान से भगादिया तब श्रीमहाकाली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महाकोपित होकर बड़ाशब्द करती हुई विष्णुके सम्मुख चली और काली की सेनाभी विष्णुके ऊपर चढ़धाई और विष्णुको चारों ओर से घेर लिया और क्षेत्रपालभी अपनी सेना लेकर विष्णुसे लड़नेको चले और भैरवभी विष्णुके साम्हने चढ़धाये सो इन तीनोंने विष्णुसे बड़ा युद्ध किया विष्णुकी बहुत सेना मरगई निदान विष्णुने सबको परास्तकर अपना तेज ऐसा बढ़ाया कि कोई उनसे भिड़ न सका अन्तको भैरव और काली और क्षेत्रपाल विष्णु की सेना के भीतर पैठे कि जिस तरह राहु चन्द्रमा को घेर लेताहै तबतो विष्णुने अपना धनुष हाथ में लेकर सौ बाण चलाये और साथ उसके अपना शंख बजादिया उस समय जो सब देवता वीरभद्र के भय से भागगये थे सब विष्णुके सपीप आगये और दोनों ओरसे महासंग्राम हुआ श्रीमहाकालीने हँसकर अपना मुख पृथ्वीसे आकाश तक फैलादिया और बहुतसी सेना अपने मुखके भीतर डाली और कइयों का शिर तोड़कर खालिया और क्षेत्रपाल ने सौ बाण चलाकर बहुत सेना मार डाली और भैरवने भी अपने त्रिशूलसे असंख्य सेना बध की इस प्रकार काली भैरव और क्षेत्रपाल ने देवताओं और विष्णु की सेना बहुतही मारडाली और विष्णुने भी सब बाणों को जो चलानेवाले थे छोड़ दिया और योगमाया से सब बाणों को अभिमन्त्रितकर चलाया फिर योगमाया से अपने समान बहुतसे पार्षद शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुये प्रकट किये जिन्होंने गणोंको मारकर बड़ाभय दिया ऐसी योगमाया विष्णुकी देखकर वीरभद्रने अतिक्रोधित हो अपना त्रिशूल चलाया जिससे विष्णुकी योगमाया सब नष्ट होकर अकेले विष्णुजी रहगये और वीरभद्र ने अपनी गदा विष्णुजी के मस्तक में मारी सो विष्णु न सहकर पृथ्वी में गिरपड़े और दोनों सेनामें हाहाकार मचगया और विष्णुने फिर उठकर अपना चक्र हाथ में लिया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो प्रलयकाल के असंख्यसूर्यों के समान प्रकाशमान था उसकी अग्नि चारों ओर फैल गई और आकाश और पृथ्वी जलनेलगे उसको देख सब गण आश्चर्य में हो विष्णु के साम्हने ठहर न सके वीरभद्र ने शिवका ध्यान किया कि उनको चक्र के रोक देने की शक्ति प्राप्त हुई जिसके बलसे वीरभद्र ने चक्र न चलने दिया ॥

बीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! विष्णुजी के हाथसे चक्र न चलसका जिस के चलने से प्रलय होजाताहै और विष्णुभी पर्वतके समान खड़े रह गये विष्णुने मन्त्र पढ़ा जिससे शरीर तो डोलसका पर चक्र को कुछ भी चलनेकी शक्ति न हुई उस समय हमने आकर विष्णुको समझाया कि जो होना है वही होगा आप वृथा ही हठ करते हैं क्या दधीचि मुनि का वचन अन्यथा होसक्ता है अब आप इसको शिवकी इच्छा जान इस विषय में परिश्रम न करें आप अपने वैकुण्ठको चलें सो विष्णु अपने धाम को चलेगये तब वीरभद्र नाना प्रकार के उपद्रव करतेहुये यज्ञके पास पहुंचे पहिले तो यज्ञ के स्थानको फूंक दिया और किसी गणने यज्ञ करानेवाले की दाढ़ी उखाड़डाली और जो शिव के विरुद्ध मुनीश्वर थे उनको मारडाला कई गणों ने यज्ञ का स्थान किसीने यज्ञ का सामान भ्रष्ट करडाला और जितने यज्ञके पात्रथे वह गङ्गाजी में फेंकदिये और जल डाल सब यज्ञकुण्ड बुझादिये उस समय मख हरिण का रूपधार भाग चला वीरभद्र इस बातको जानकर उसे आकाश से पकड़ लाये और उसका शिर तुरन्त काटडाला और धर्मराज और दक्षप्रजापति और कश्यपके शिर पर अपनी लात मारी इसके सिवाय कृष्टनेमि और कृशाश्व और अङ्गिरस मुनीश्वरों के शिरों को लात से मारा और सरस्वती की नाक काटडाली जो देवताओं की माता थी और नखसे भग के नेत्र निकाल लिये और भृगुमुनि की

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मूछें उखाड़ डालीं और मुष्टिका के प्रहारसे पूषाके दांत तोड़ डाले ऐसी बातोंसे भी संतोष न रखकर दक्षको पकड़ उसका शिर काटनेलगे पर जब शिर न कटा तो वीरभद्र ने शिवका ध्यानकर शिवजीकी आज्ञानुकूल उसका शिर मड़ोड़कर आगमें डाल दिया इसी प्रकार बहुत से उपद्रव कर यथाशक्ति सबको प्रतिफल दिया और उसी चिताभूमि में प्रलय करनेवाले रुद्रके समान विराजमान हुये उस समय हम ब्रह्मा और विष्णु आदिने शिवके निकट जा विनयकी कि आपके गण वीरभद्रने यज्ञको विध्वंसकर सबको विकल करदिया है दक्षप्रजापतिने वास्तव में बहुतही निर्बुद्धिताका काम किया कि आपको अवधूत समझ यज्ञमें न बुलाया आपने जो दण्ड सबको दिया वे उसके सब योग्य थे पर हमारे अपराधों पर दृष्टि न करके अब दया कीजिये अब सबको यह शुभमति उपजी है कि आप सर्वोपरि हैं आप कृपा करके यज्ञ पूर्ण करें और वह उपाय करें जिसमें दक्ष जीउठे और इसी प्रकार सबको आनन्द दो क्योंकि सबने निश्चय करके यह बात ठहराई है कि तुम्हारे भाग बिन यज्ञ न होगा जो आप सबप्रकार दण्ड न देते तो धर्म नष्ट होकर पाप फैलजाता आपकी बड़ाई छोड़ने से मनुष्य वेदहीन होजाते अब हम सब आपकी शरण में आये हैं सो शिवजी प्रसन्न हुये और वीरभद्र की ओर दया की दृष्टिसे देख दिया और वीरभद्र शिवके चरणों पर गिरपड़े बिनती की कि जो आज्ञा मुझे मिले उसका पालन करूं शिवजीने कहा कि अब तुम सबगण क्रोध दूर करो क्योंकि अपना २ सब दण्ड पाचुके हैं यह कह सब गणों को बिदा किया और सबकी ओर कृपाकी दृष्टिसे देखदिया जिससे सबके अङ्ग पूर्व के समान होगये और जो मरगये थे वह सजीव मनुष्यों के समान उठ खड़े हुये और भृगु के बकरेकी दाढ़ी जमाई और दक्षके शरीर पर बकरेका शिर करके उसको जिलादिया दक्षने विचित्र स्वर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से शिवकी स्तुति की शिवजीने यज्ञ के पूर्ण करने के लिये आज्ञा दी सो यज्ञ पूर्ण हुआ और सबको यज्ञभाग देकर शिवजी को भी पूर्ण भाग दिया इसी प्रकार श्रीशिवशङ्कर यज्ञ पूर्णकर अपने गणों सहित कैलासपर्वत को लौटआये और विष्णु और हम और सब देवता आदि अपने २ लोकों को चलेगये हमने अपनी बुद्धिके अनुसार वीरभद्रावतार का चरित्र कह सुनाया जो इस चरित्र को पढ़े वा सुनेगा वह इस लोक में प्रसन्न रहकर अन्त में शिवपद पावेगा इस अवतार की कथा बड़ी आनन्द देनेवाली है ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

शरभ अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम शरभ अवतार का वर्णन करते हैं कि पूर्वकाल में दिति के दो पुत्र कनककशिपु बड़ा पुत्र और कनकाक्ष छोटा पुत्र उत्पन्न हुये जो देवताओं के बड़े शत्रु और जिनके अधीन सर्व संसार था संसार भर में केवल उन्हींकी आज्ञा चलती उन्होंने देवताओं को बड़ा दुःख दिया और दोनों ने मिलकर संसार भर का धर्म भ्रष्ट करडाला और अधिक पापों के कारण संसार में बड़े उपद्रव उठने लगे उनमें से जो छोटा भाई कनकाक्ष था उसको तो विष्णुने वाराह अवतार धार कर मारडाला और जो कनककशिपु था उसके चार पुत्र उपजे उन चारों में से प्रह्लाद सब से छोटा था वह बड़ा सत्यवादी, तपस्वी, धर्मवान्, आत्मज्ञानी था और विष्णुका बड़ा भक्त हुआ उसने उपजतेही विष्णु की पूजा की सिवाय विष्णु के उसने संसार में और कुछ किसी वस्तु को न देखा और जो विष्णुजी का अष्टाक्षरी मन्त्र है उसको प्रतिदिन आनन्द से जपता एक दिन कनककशिपुने प्रह्लादको गुरुके पास विद्याध्ययनके लिये सौंपा वह गुरुके यहां भी वही विष्णुका अष्टाक्षरी मन्त्र पढ़ा करता था और जो गुरु

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजनीति आदि पढ़ाता वह प्रह्लाद न पढ़ते एक दिन कनककशिपु ने प्रह्लाद को परीक्षा लेने के लिये अपने पास बुलाकर पढ़ने का हाल कुछ पूछा और कहा कि हे पुत्र ! जो गुरु से पढ़ा हो वह सुनाइये प्रह्लादने उत्तर दिया कि हमने विष्णु का नाम पढ़ा है जिसकी सेवासे दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है उस वैकुण्ठवासी विष्णु के समान संसार में और कोई नहीं है यह सुनकर कनककशिपु ने प्रह्लाद को अपनी गोद से फेंक दिया और कहा कि विष्णु कौन है जिसके चरणों की प्रीति तुमको उपजी है तुम विष्णु ब्रह्मा और शिवआदि देवताओं को छोड़कर हमारी सेवा किया करो मुझसे बड़ा और संसार में कौन है मुझसे देवता और दैत्य सब डरते हैं ऐसा वचन पिता का सुनकर प्रह्लाद ने कुछ भय न किया और ऊंचे शब्द से फिर विष्णु का नाम लेकर कहा कि हमपर उपकार करनेवाला वही है यह कह विष्णु के चरणों में और भी प्रीति बढ़ाकर अन्य बालकों से भी प्रीति कराने लगा हे नारदजी ! यह धर्म बड़ाआनन्द देनेवाला है कि अपने स्वामी के चरणोंकी सेवा न छोड़े निदान कनककशिपु ने ऐसी बुद्धि अपने पुत्र प्रह्लाद की देखकर दैत्योंको बुलाकर आज्ञा दी कि इसको मारडालो यह बालक हमारा शत्रु होकर हमारे विरोधियों की सेवा करता है यह आज्ञा सुनकर दैत्योंने प्रह्लाद को कितना ही मारा पर प्रह्लाद के शरीर में एक घाव तक भी न लगा क्योंकि विष्णु ने प्रह्लाद की रक्षा की कनककशिपुने प्रह्लाद का न मरना सुनकर क्रोध करके प्रह्लाद को अपने पास बैठाया और कहा कि हे पुत्र ! तेरा स्वामी कहां है मुझको बतला दे मैं तेरा बध करता हूं वह तुझे बचा लेवे यह कहकर खड्गले प्रह्लादका शिर काटने को तय्यार होगया पर प्रह्लाद को कुछ भी भय न हुआ उत्तर दिया कि वह हमारा स्वामी सब जगह वर्तमानहै और सब में विद्यमान है बिन उसके कौन मारनेवाला है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वही स्वामी भक्त का रक्षक है यह सुनकर कनककशिपुने कहा कि फिर क्यों वह तेरा स्वामी उस खम्भे में दिखाई नहीं देता यह कहकर खम्भे में तलवार चलाई उसमें से महाभयङ्कर शब्द निकला और फिर भक्तके पालनेवाले विष्णु नरहरिरूप होकर उसी खम्भेसे निकल आये और ब्रह्मा का वर स्थिर रखकर कनककशिपु का उदर विदीर्णकर मारडाला और सिंहका सा घोर शब्दकर दैत्यों को भी मारा और महाक्रोधित होकर बड़ाभयानक रूप बनाया जैसा कि प्रलय की अग्नि हो फिर नरहरि ने बड़ाशब्द किया जो तीनोंलोक में छागया और तीनोंलोक भयभीत हुये पृथ्वी कांप उठी पर्वत जलने लगे दिग्गज न रहसके तब नरहरि ने अपना स्वरूप और भी अधिक भयानक कर सहस्र चरण और सहस्रही नेत्र धारण किये और तीनों अग्नि और सूर्य प्रकट होकर तीनों भुवनों को जलानेलगे ऐसा स्वरूप नरहरि का देखकर देवता वहां ठहर न सके बरन कुछ दूर भागगये और विष्णु और हम और बड़े २ देवता दूरही से स्तुति करने लगे और हमने प्रह्लाद से कहाकि तुम नरहरिको शान्त करके सबलोगों के दुःख दूर करो प्रह्लाद इस बातको मान नरहरि के पास गये पर तौभी उनका क्रोध न गया बरन वह और चिल्लानेलगे तब तो इन्द्रादि सब देवता वहांसे भागकर शिवजीकी शरण में गये और हम और इन्द्र और दिक्पति आदि देवताओंने शिवजी की स्तुति की और विनय की कि हम सब आपकी शरण में आयेहैं ऐसा उपाय कीजिये कि जिसमें नरहरि का क्रोध शान्त हो इसी प्रकारका क्रोध वीरभद्र ने दक्ष के यज्ञ के बिगाड़ने के पीछे किया था जिसको आपहीने दूर किया था हम को इस क्रोधाग्नि का बुझानेवाला दूसरा दिखाई नहीं देता ॥

बाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा हे नारदजी ! ऐसी स्तुति सुनकर शिवजीने प्रसन्न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हो इस इच्छासे कि नरहरि का क्रोध दूर करें वीरभद्र अपने गण का स्मरण किया सो वीरभद्र अट्टहास करते नरहरि के समान करोड़ों गणोंको साथ लिये हुये आये वह महाभयङ्कर रूप था उन्हों ने हाथ जोड़ शिवजी से कहा कि मुझे क्या आज्ञा होतीहै शिवजी बोले तुम जाकर नरहरि का क्रोध शान्त करो तुम उनको नम्रतापूर्वक समझाना कदाचित् उनके क्रोध की अग्नि तुम्हारे समझानेसे दूर न हो तो हमारा भाव बल करके दिखादेना और केवल वचनोंहीसे उनका गर्व नष्ट करडालना और उनका संकोच मानकर उनको दण्ड न देना अधिक तेजको अधिकहीसे दूर करना और न्यून को न्यूनसे निवारण करना इसी प्रकार नरहरिके शरीरको अपने में मिलाकर हमारे पास लाना यह सुन वीरभद्र शान्तरूप बनगये और नरहरिके पास जाकर जैसे पिता अपने पुत्र से उपदेश के वचन कहे तैसे कहनेलगे कि हे विष्णु ! तुमने नरहरिअवतार संसार के स्थित होने के निमित्त लिया है तुम प्रलय होने का उपाय मत करो तुम तीनों लोक के पालनके निमित्त हो अब शिवजीकी आज्ञा मान अन्तर्धान होकर सबको आनन्द दो और दूसरे अवतारों की चालचलो यही शिवजीकी आज्ञा है तुमको शिवजीने प्रलय करनेको अपना तेज नहीं दिया तुम्हारे समान तीनों लोक में दूसरा शिवभक्त नहीं है तुमने उत्तमरीतिसे वेदके धर्म स्थापित कर दैत्यों को नष्ट करदिया जिस कार्यके निमित्त यह तुमने अवतार धारण किया वह कार्य सुगमता से पूर्ण होगया अब तुम क्यों अपना भयानक स्वरूप बनाये हुये हो इसलिये उचितहै कि इस रूप को निवृत्त करो यह वीरभद्रका वचन सुन नरहरिने अग्निके समान हो अतिकोप से उत्तर दिया कि तुम अपने घर चलेजावो जहां से आये हो यह वचन मेरी इच्छाके विरुद्ध कहकर क्यों मेरा क्रोध बढ़ाते हो इस समय हम यही जानते हैं कि हमको कौन निवृत्त करने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाला है तीनों लोक हमारे अधीन हैं संसार में हमारा सिखानेवाला कौन है हम सबके स्वामी हैं सर्वसंसार हमारी कृपा से स्थित है हमारे तेज से सर्वसंसार है हमारी नाभिकमल से ब्रह्मा उपजे हमको वेद सच्चित् आनन्द कहता है हम सबके स्वामी, स्वाधीन, सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता और प्रलयकेभी करनेवाले हैं और सर्वसंसार के राजा हैं वह कौन है जो हमको सिखाता है और किसने अपना भारी प्रभाव तुमसे प्रकट करके तुमको हमारे दूर करने के लिये भेजा है हम कालके नष्ट करनेवाले और संसार के नष्ट करनेवाले भूत के भूत हैं और देवता हमारी कृपा से जीते हैं वीरभद्र ने कहा कि तुम उसको चलकर क्यों नहीं देखते जो प्रलयका करनेवाला है जिसके हाथमें पिनाक और त्रिशूल है यह तुम्हारे वचन बहुतही अयोग्य हैं तुमको निश्चय करके दुःख प्राप्त होगा यह रीति है कि मरनेके समय सब की बुद्धि विरुद्ध होजाती है तुम्हारे भेजेहुये जितने अवतार हुये जो दशा उनकी हुई है वही तुम्हारीभी होगी अर्थात् शिव क्रोधकर तुम्हारा शरीर नष्ट करदेवेंगे तुम शिवकी बड़ाई और प्रताप नहीं जानते उनको देवताओंके समान जान ऐसा गर्व करते हौ तुम प्रकृति हो और शिव पुरुष हैं जिन्होंने तुम्हारे शरीरमें वीर्य स्थितकिया और तुम्हारी नाभि से कमलपुष्प उत्पन्न हुआ जिसमेंसे पञ्चमुखी ब्रह्मा उपजे और ब्रह्मा की भृकुटिसे शिव उत्पन्न हुये और उन्होंने सबके ऊपर अपना रूप दिखाया उन्हीं शिवने हमको तुम्हारे अहंकार के दूर करने के लिये भेजा है तुम केवल एक दैत्य का बधकर इतना अहंकार करतेहो अब वृथा मत चिल्लावो यह बात तुम्हारे लिये बहुत बुरी है जब हम क्रोध करेंगे तो तुम लज्जित होगे और तुम अपनी निर्बलता देखकर अपना क्रोध शान्त करोगे संसार में जो मनुष्य बुरे हैं उनके साथ उपकार करना अपने ही को हानिकारक होता है जैसा कि सर्प को दूध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पिलाने से उसके विषकी ही वृद्धि होती है जो तुम शिव को अपना बनाया हुआ और अपना अधीन कहते हो तो हमको निश्चय हुआ कि तुम संसारके उत्पन्न और पालन करनेवाले नहींहो और न स्वाधीन और मुक्ति देनेवाले हो शिवजी की आज्ञा से अवतार लेते हो जब तुमने कमठ अवतार लिया तो तुम क्या नहीं जानते कि शिवने तुम्हारे शिरको जलाकर अपने हार में पिरोलिया जब तुमने वराह अवतार धारा तो शिवजी ने तुम्हारे दांत उखाड़कर अपना त्रिशूल तुम्हारे शरीर में मार तुम्हारा अहंकार दूर किया और शिवने भैरव अवतार लेकर तुम्हारे पुत्र ब्रह्मा का शिर काटा कि अबतक ब्रह्मा के पांचवां शिर नहीं है क्या यह बात तुम भूल गये हो तुम दक्ष प्रजापति के यज्ञ का स्मरण करो हमने क्षणभर में तुम्हारा शिर काटडाला जब तुमने दधीचि मुनि के साथ युद्ध किया था तब क्या शिवजी का प्रताप नहीं देखा था कि तुम देवताओं समेत मुनि की शरण में गये थे जिस चक्र के बल पर तुम इतना अहंकार करते हो यह तुमको किसने दिया था क्या तुमको सहस्र कमलपुष्प की पूजा भूलगई जिससे तुमको यह चक्र मिला था और शिवजी की माया से तुम्हारी बुद्धि नष्ट होकर तुम क्षीरसमुद्रमें अकेले पड़े रहते हो तुम क्योंकर सतोगुणी और निर्दोष होसक्ते हो हम तुमसे लेकर तृणपर्यन्त सब शिवजी की शक्तिके अधीन हैं तुम्हारा यह सब प्रताप और बल शिवजी की कृपासे है वही शिवजी निष्पाप और तीनोंलोक के उपजानेवाले हैं तुम वृथाही इतना गर्व करते हो अबभी समझ जावो तुम और ब्रह्मा शिवजी से बलवान् नहीं हो उनका प्रताप सर्वोपरि है तुम काल हो और शिवजी महाकाल हैं और कालों के काल महेश हैं वही शिवजी संसार के सिखानेवाले हैं तुम और ब्रह्मा नहीं जो शिव क्रोधित होंगे तो तुम्हारा बचानेवाला कोई न होगा तुम्हारे लिये सिवाय मृत्यु के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और क्या होगा यह सुनकर नृसिंहने कोपित हो चाहा कि वीरभद्रको पकड़ लेवें पर वीरभद्र ने अपना शरीर आकाश में छिपा लिया और शिवजी का तेज जलती हुई अग्नि के समान प्रतीत हुआ जिसकी उपमा सूर्य, वह्नि और बिजली से भी नहीं देसक्के वह तेज चारों ओर फैलगया उस समय सब तेज शिवजी के तेज में आकर मिलगये आकाश दिखाई न देता था जिससे देवता और मुनि आश्चर्यमें हुये पर शिवजी की लीला किसी ने न जानी इतने में शिवजी इस स्वरूप से प्रकट हुये कि उनका आधा शरीर सिंहका दो पंख और चोंच धारे सहस्र भुजासे सुशोभित शीशमें जटा मस्तकमें चन्द्रमा विराजमान महा भयङ्कर दाँत और नख उनके वज्र के समान थे और वही मानो उनके शस्त्र थे एक कण्ठ आठ चरण और उनके नेत्र क्रोध में भरे हुये सूर्य के समान चमकते थे और सिवाय हुंकार के और कोई शब्द सुनाई न देता था और वे दांतों से ओठ काटते हुये थे ऐसा भयानक स्वरूप देखकर विष्णुका अहंकार दूर होगया और वह अति निस्तेज होगये कि जैसे सूर्य के उदय से खद्योत और जैसे सिंह के सामने सिंह का बच्चा होजाता है तैसेही शरभ अवतार के प्रादुर्भूत होने से विष्णुजी की दशा होगई सो शरभजी ने बल करके अपना शरीर हिलाया और अपनी दो भुजासे नरहरि की दोनों भुजा पकड़ दो भुजासे नरहरि का हृदय और पूँछ से नरहरि के चरण पकड़ तुरन्त उनको धरलिया और उनको आकाशकी ओर लेउड़े फिर आकाशसे पृथ्वीपर डालकर फिर पृथ्वीमें उतरकर पकड़ा इसीप्रकार बारम्बार उड़कर नरहरि को निर्बल करदिया उस समय देवता और मुनीश्वर सब स्तुति करनेलगे और नरहरि का सब अहंकार दूर होगया और वह महादीन होगये सो उन्होंने शिवजीके एकसौ आठ नाम वर्णन कर स्तुति की और कहा कि हे शरभेश्वर! जब मुझे क्रोध उपजे तो आप इसी प्रकार मेरा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अहंकार दूर किया कीजिये यह कह और अपना शरीर छोड़कर अन्तर्धान होगये उस समय हमने देवताओं और मुनीश्वरों समेत शरभेश्वर महाराज की बड़ी सेवा करके स्तुति वर्णन की तब शरभेश्वर शिवजी ने कहा कि यह बात भलीभांति समझलो कि हम और विष्णु कुछ भिन्न नहीं हैं वरन एकही रूप हैं ऐसे चरित्र करके हम परस्पर लीला करते हैं हम और विष्णु समान हैं कुछ भी न्यूनता नहीं जो विष्णुके विरुद्ध है वह मेरा भी विरोधी है और मुझे छोड़ विष्णु की भक्ति नहीं होसक्ती यह कह शिवजीने नरहरि का शिर और चर्म उठालिया शिरको तो अपनी माला का सुमेरु बनाकर चर्म ओढ़ लिया और सबके देखते २ शिव अन्तर्धान होगये और देवता आदि भी अपने २ मनोरथ पा अपने २ धामों को गये हे नारद ! इस चरित्र के पढ़ने सुनने से दोनों लोक में बहुत आनन्द मिलता है छियालीसवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

यक्षावतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! अब हम यक्षावतारका वर्णन करते हैं जिसने तुरन्तही सब देवताओं का मद हरा कि जब देवता और दैत्य समुद्रके मथनेके समय लड़े और दैत्य देवताओंसे परास्त होगये तो देवता मारे अहंकार के शिवजी को भूल आप अपनेको पृथ्वी आकाश पाताल का स्वामी समझने लगे और इकट्ठे होकर गर्वपूर्वक वार्त्ता करनेलगे सो पहिले विष्णु ने कहा कि हमने शत्रुओं को परास्त किया हमने कालनेमि का वध किया तब इन्द्र बोले कि हमने बहुत दैत्यों को सहजही मारलिया और म्लक्षादि दैत्यों को हमने मारा इसी प्रकार सब देवता अहंकारसे अपनी २ वीरता वर्णन कर सराहना करनेलगे शिवने देवताओं का ऐसा अहंकार जान विचित्र चरित्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया अर्थात् यक्षरूपसे देवताओं के पास जाकर सबसे कुशल पूछी किसीने न जाना कि यह शिव हैं फिर कहा कि तुम सब इस स्थान पर बैठे हुये क्या करते हो जानाजाता है कि तुम अहंकार में भरेहुये हो क्या कारण है कि तुम सब बैठे हो देवताओं ने कहा कि क्या तुमने नहीं सुना कि यहां देवासुरसंग्राम हुआ था हमने दैत्योंको नष्ट कर-डाला शेष बचे वह भागगये यक्षरूपी शिवजी बोले कि हे विष्णुआदि देवताओ ! ऐसा मत कहो तुम्हारे ऊपर और कोई है तुम इतनी अहं-कार की बात मत कहो कोई बड़ा पुरुष तुमपर है वह तुम सबसे अति बलिष्ठ और तेजस्वी है जो बात वह चाहता है उसी बातको करता है जो तुमको इस बातका निश्चय न होवे तो तुम सब मिलकर एक तृणको काट तो डालो इतना कह शिवजी ने एक तृण देवताओं के ऊपर फेंकदिया सब देवताओंने अपने २ शस्त्र उसपर चलाये पर वह कुछभी न हिला जैसे पड़ा था पड़ारहगया तो इन्द्रने अति कोपकर अपना वज्र उस तृणपर चलाया पर वह निष्फल हुआ उससमय विष्णु ने क्रोधित होकर अपना चक्र मारा पर वहभी निरर्थक हुआ तब सब देवता लज्जित हुये और सबको अतिविकलता प्राप्त हुई इतने में आ-काशवाणी हुई कि हे देवताओ! तुम कुछ अपने मनोंमें संशय मतकरो तुम सबने अहंकारी होकर अपने स्वामी को नहीं पहिंचाना जो तुम सब से श्रेष्ठ है उसको तुमने मारे गर्वके भुलादिया वह तुम्हारे मदको देखकर यक्षरूपसे प्रकटे और उन्होंने तुम्हारा अहंकार दूर करदिया अबभी तुम गर्व दूर कर अपने स्वामीके चरण पकड़ो और शिवकी शरणमें जा-कर फिर कभी ऐसा अहंकार न करना यह जो तुम्हारे सामने खड़े हैं यक्षरूपी सदाशिव हैं यह सुनकर सब देवता यक्षेश्वर महादेव के च-रणों पर गिरपड़े और बहुत प्रकारसे प्रणाम कर अहंकारसे रहित हुये और निश्चय किया कि जो संसार में बल शिवजी को है वह और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किसीको नहीं है फिर शिवजीकी स्तुति देवताआदि सब करनेलगे और कहा कि हम सब आपकी शरणमें हैं हमारा अहंकार दूर होगया अब आपसे आशा रखते हैं कि फिर हमको अहंकार न उपजे शिव ने प्रसन्न होकर ॐकार उच्चारण किया फिर सब अपने घरों को चलेगये सैंतालीसवां यक्षेश्वर अवतार पूर्ण हुआ इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह यक्षेश्वर शिवजी का चरित्र अति पवित्र है इसके पढ़ने सुननेसे बड़ा सुख प्राप्त होता है अब हम दशमहाकाल शिवजी के अवतारों का वर्णन करते हैं–शक्तिसहित शिवके दश अवतारोंका वर्णन–पहिला शिवजी का महाकालरूप है जिनके स्मरणसे अतिसुख प्राप्त होता है और महाकाली नाम इस अवतार की शक्ति हैं जिनकी सखियां आनन्दमें रहती हैं–दूसरा तारनाम अवतार जिनकी शक्ति का नाम तारा है–तीसरा बालि जिनकी शक्ति का नाम भुवनेश्वरी है–चौथा विघ्नेश जो सोलहक्लेश दूर करते हैं उनकी शक्तिका नाम विद्या है–पांचवां भैरव जिनकी शक्तिको भैरवी कहते हैं–छठा छिन्नमस्तक जिनकी शक्तिका नाम छिन्नमस्तका है जो अतितेजोमयी है–सातवां धूमावत जिनकी शक्ति को धूमावती कहते हैं–आठवां बगलामुख जिनकी शक्तिका नाम बगलामुखी है–नवां मातङ्ग अवतार शिवका है जिनकी शक्तिको मातङ्गी कहते हैं–दशवां कमल जिनकी शक्ति को कमला कहते हैं इन दशों अवतारों का पूजन और दशों शक्ति के सेवनसे सर्व मनोरथ पूर्ण होते हैं और अपने भक्त को कृतार्थ करदेते हैं ५७ अवतार पूर्ण हुये॥

चौबीसवां अध्याय॥

ग्यारह रुद्रावतार का वर्णन॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम ग्यारहों रुद्रोंका जो शिवजी के अवतार हैं वर्णन करते हैं वे अतिबलवान् और सुखके देनेवाले हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और दैत्योंको नष्ट करतेहैं उनकी उत्पत्ति कि क्यों यह उपजे और जिनके चरित्रोंके सुननेसे वीरता और सुख बढ़ता है हम कहतेहैं कि पूर्वकालमें दैत्योंने महाबलिष्ठ हो देवताओं को बड़ा दुःख दिया यद्यपि देवता दैत्योंसे बहुत लड़े पर उनके बल से परास्त होगये और साम्हना न करके इधर उधर भाग गये एक दिन सब देवता मिलकर कश्यप के पास पहुँचे और अपने पिता कश्यपके साम्हने हाथ जोड़ कर अपना दुःख कहा कश्यपने शिवका स्मरण कर सब देवताओंसे कहा शिवकी इच्छा शुभ है वह धन्य हैं कि तुम्हारा दुःख दूर करेंगे कुछ दिनतक समय देखो वह तुम पर अनुग्रह करेंगे तुम अपने २ घरों में जाकर शिवका ध्यान किया करो हमभी तुम्हारे लिये शिवका तप स्त्री सहित करेंगे सो कश्यपने देवताओंके बिदा करनेके अनन्तर शिवका बड़ाकठिन तप किया ऐसा कठिन तप कश्यप का देखकर शिव प्रसन्न हुये और कश्यपके समीप प्रकट होकर खड़े होगये कश्यप स्तुति करनेलगे और बारम्बार अपनी स्त्री सहित शिवके चरणों पर गिरे और कहा यद्यपि जो वर मैं मांगना चाहताहूं अनुचित है पर मैं ढिठाई से वर्णन करता हूं कि आप मेरे घर अवतार लें और मेरे पुत्र हों देवताओं के साथ मित्रता करके दैत्योंका विनाश करें और देवताओं को उनका राज्य दिलादें और सदा देवताओं की सहायता करें तुम सब देवताओंके राजा हो यह कह कश्यप चुप होगये शिव यह कह कर कि अच्छा यही होगा अन्तर्धान हुये और कश्यप के मनमें बास किया कश्यपने शिवकी अनुग्रह जान अपना तेज सुरभी अपनी स्त्री में स्थित करदिया जिससे सुरभी महाप्रकाशित हुई सो सब देवताओं ने कश्यप के स्थान में आकर शिवजीकी जो गर्भ में थे स्तुति की और फिर अपने २ स्थानों को लौटगये और समय पाकर सुरभी से ग्यारहरूप धारण करके शिव उपजे और सुरभी को कुछ प्रसवकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीड़ा न हुई उस समय सब देवताओं को आनन्द प्राप्त हुआ पृथ्वी शोभायमान होगई देवता और मुनीश्वरों के सब दुःख दूर होगये विष्णु और हमने देवताओं समेत आकर एकादश रुद्रके दर्शन किये और प्रीतिपूर्वक स्तुति की और कहा कि आप दैत्योंको जीत हम सब को हर्ष दें फिर हमने कश्यपसे उनका जातकर्म कराके उनके यह नाम रक्खे कपाली १ पिंगल २ भीम ३ विलोहित ४ शास्त्रभृत् ५ अभय ६ अजपाद ७ अहिर्बुध्न्य ८ शम्भु ९ भव १० विरूपाक्ष ११ तब बड़ा उत्सव हुआ यह ग्यारहों रुद्र उपजतेही बड़े बलिष्ठ भासित हुये हे नारद! यह कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि वे तो शिवके रूप थे सो माता पिता की आज्ञा पाकर देवताओं के साथ चले और देवताओं की सेना इकट्ठी करनेके उपरान्त उन्होंने दैत्यों पर धावा किया और बड़ा युद्ध हुआ सो दैत्योंके सामने देवता न ठहरकर भागकर ग्यारहों रुद्रोंके सामने आये रुद्रोंने कहाकि तुम कुछ भय मत करो हम एक निमेष में दैत्यों को नाश करदेंगे हमारे प्रतापके सामने वे नहीं ठहर सकेंगे यह कहा और दैत्योंसे सामना किया दैत्य रुद्रके तेजके आगे ठहर न सके और बड़े बड़े वीर दैत्य बहुत युद्ध करनेके उपरान्त युद्ध-स्थल से भाग चले और अपने लोक में जाकर छिपगये देवताओं को विजय पाने से बड़ा आनन्द हुआ और अपने पुराने लोक को रुद्रों की कृपासे पाकर महाप्रसन्नचित्त हुये और ग्यारहों रुद्र सदा देवताओं के साथ रहकर इसी भांति की सहायता करते रहे इस प्रकार हमने रुद्रचरित्र वर्णन किया जिसके सुनने से बड़ा पापी मनुष्य भी शुद्ध हो जाता है॥

पच्चीसवां अध्याय॥

दुर्वासा अवतार का वर्णन॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जिस तरह शिवजी ने अत्रिमुनि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के पुत्र होकर अवतार लिया वह कथा हम तुमको सुनाते हैं कि हमारे पुत्र अत्रि हमारी आज्ञासे अपनी स्त्री सहित ऋष्यमूक गिरिपर जाकर विन्ध्या के तट पर बैठे और सौवर्ष ऐसा कठिन तप किया कि केवल वायु भक्षणकर एक चरण से खड़े रहे इस इच्छा से कि हमको शिव अपने समान एक पुत्र कृपा करेंगे ऐसे कठिन तप से एक जलती हुई अग्नि उपजकर संसार भरको जलानेलगी और तीनों देवता मुनीश्वरों सहित अत्रि के पास आये अत्रिने सबको अपने सामने अपने मुख्य वाहनों समेत मुसुकराते खड़े हुये देखा और दण्डवत् कर विनय की कि तुम तीनों देवता रजोगुणी, सतोगुणी, तमोगुणी, उत्पन्नकर्ता, पालनकर्ता, संहर्ता एक साथ हमारे पास आये हो अब मैं किसकी सेवा करूं मैंने तो एकही देवता की पूजा की थी अर्थात् वह जो सब का स्वामी है फिर क्यों तुम तीनों देवता एकही साथ आये इससे मुझे अतिचिन्ता उपजी है इसका कारण कहिये फिर वर दीजिये यह सुन तीनों देवता बोले कि जिस तरह पर तुमने अपने मनमें संकल्प किया था वही तुम्हारे साम्हने आया तुमने ईश्वर का तप किया और प्रकट है कि हम तीनों एकही रूप हैं कुछ किसी प्रकार का भेद तीनों में नहीं हम इससे प्रकट हैं कि तीन पुत्र हम तीनों के अंशसे उपजेंगे जो तुम्हारे यश को बढ़ाकर तीनों लोकमें प्रसिद्ध होंगे यह वर अत्रि को देकर तीनों देवता अपने २ स्थानको चलेगये और अत्रिभी इस आशा पर कि हमारे तीन पुत्र होंगे प्रसन्नचित्त हो अपने घर सिधारे और समय पाकर अत्रिके तीन पुत्र तीनों देवताओंके अंशसे उपजे अर्थात् ब्रह्मा के अंशसे विधु विष्णुके अंश से दत्त और शिव के अंश से दुर्वासा पर हम दुर्वासा का चरित्र वर्णन करते हैं अर्थात् शिवने दुर्वासा का शरीर धारणकर बहुत चरित्र किये उन्होंने ब्रह्मतेज धारा और सबका आदर किया और बहुतों के धर्म की परीक्षा की और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

असंख्य मनुष्यों को धर्म कृपा किया उनका पहिला चरित्र यह है कि सूर्यवंशी राजा अम्बरीष विष्णु का बड़ाभक्त दृढ़व्रती था और वह विष्णु की आज्ञा भली भांति मानकर सतोगुण धारण किये राज्य करता और सदा एकादशीव्रत रखकर द्वादशी में पारण किया करता एक दिन उसने एकादशी का व्रत करके चाहा कि द्वादशी में पारण करें उसी समय दुर्वासा पहुँचे उनको केवल परीक्षा लेनेकी इच्छा थी अम्बरीषने उनका अतिआदर सत्कारकर भोजन करनेको निमन्त्रण दिया सो दुर्वासा मानकर शिष्यों सहित नदी किनारे स्नानके निमित्त गये और वहां इतना विलम्ब किया कि अम्बरीष की परीक्षा लें राजा अम्बरीष दुर्वासा की बाट देखते रहे पर द्वादशी समाप्त होनेलगी उस समय राजा अम्बरीषने पारण में विघ्न देख महाखेदयुक्त हो ब्राह्मणों से पूछा तो जब ब्राह्मणोंने वेदके अनुसार उनको आज्ञादी कि आप पारण करें तो उन्होंने व्रत पारण करलिया दुर्वासा राजा अम्बरीषके व्रतपारण करनेका हाल जानकर अति क्रोधित हुये और राजा के पास आकर चाहा कि राजाकी भक्तिकी परीक्षा लेवें और चक्रके भयसे भागकर वर्ष भर तीनों लोक में भागते फिरे फिर राजा की शरण में आकर चक्र को अपने पीछे लगायेहुये पहुँचे जो राजा वास्तवमें ब्रह्मभक्त होगा तो मन में लज्जित होकर मेरा दुःख दूर करेगा कदाचित् वह विष्णुकी पूरी भक्ति नहीं रखता तो अपना व्रत छोड़ देगा यह विचार महाकोप से राजाको शाप देनेलगे सो विष्णु के चक्र ने दुर्वासाके मनकी इच्छा जान ली और अपना तेज बढ़ाय दुर्वासा की ओर चला दुर्वासा भागनेलगे और सर्वदेश और सब देवताओं के लोक फिरकर राजाके पास आये और कहा कि हे राजन्! हम तुम्हारी शरण में आये हैं जो मूर्ख हैं वह इस चरित्र को क्या जानें वह इस चरित्रको औरही तरह समझते हैं यह नहीं जानते कि दुर्वासा तो आप शिवका अवतार हैं उनको कहां

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

दुःख होसक्ता है निदान दुर्वासा को राजाने देख कर लज्जापूर्वक चक्र से कहा कि तुम दूर होजाओ अब ब्राह्मण को छोड़ दो यह सुनकर चक्र हटगया और राजाने दुर्वासा को भोजन कराकर आपभी भोजन किया दुर्वासा ने अतितृप्त और प्रसन्न होकर राजा को आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता न करना हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त यह चरित्र किया है तुमको धन्य है तुम शुभ हो जो हमारे ऐसे क्रोध को तुमने सहा तुमको विष्णु की बड़ीभक्ति प्राप्त होगी यह कह दुर्वासा अति प्रसन्न हो चलेगये जब विष्णुजी दशरथ के पुत्र रामचन्द्र हुये तब भी दुर्वासा ने ऐसाही चरित्र किया इसीप्रकार श्रीकृष्णजीकी परीक्षा लेकर उनको रानी सहित अपने रथका खींचने वाला बनाया और श्रीकृष्णजीकी ऐसी ब्रह्मभक्ति देख उनको वज्राङ्ग करदिया और द्रौपदी की परीक्षा लेकर पाण्डवों को भरपूर किया और हंस और डिम्भक दो भाई जो बड़े उपद्रवी थे उनके पास जाकर अपना अपमान कराया और फिर उनको शाप देकर नष्ट करडाला सो शिवने दुर्वासा का अवतार लेकर इस प्रकार के बहुतचरित्र किये हैं और बहुत रीतों से संन्यास मत फैलाया और बहुतों को ज्ञान देकर मुक्त किया॥

छब्बीसवां अध्याय॥

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता! यह कथा हमने संक्षेप में सुनी पर मेरी इच्छा है कि आप विस्तारसे जिस तरह कि दुर्वासाने रामचन्द्र और कृष्णादि की परीक्षा लेकर उनको वर दिया वह कथा सुनाइये ब्रह्माजी बोले कि जब रामचन्द्रने देवताओंके काम पूरे करने के लिये दशरथ के घर अवतार लिया और देवताओंके लिये असंख्य चरित्रकर समय तक राज्य किया तब हमने मृत्युको उनके समीप भेज कर संदेशा भेजा कि आप अपनेलोक में आकर हम वियोगियों को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आनन्द देवें सो काल मुनीश्वरों के स्वरूप से रामचन्द्रके पास आकर बैठा रहा और समय पाकर विनय की कि महाराज मुझे आपसे कुछ गुप्त वृत्तान्त कहनाहै कि जिसको दूसरा मनुष्य न जाने हमारी तुम्हारी वार्त्तामें जो कोई आजावे तो चाहे वह कोई हो उसका परित्याग कर दो रामचन्द्रने माना और लक्ष्मणसे कहा कि तुम द्वारपर खड़े रहो कोई यहां न आने पावे फिर काल से कहा कि तुम कौन हो कहांसे आये हो क्या आज्ञा देते हो कालने कहा कि हमको ब्रह्माने भेजकर आप को संदेशा दिया है कि अपने लोकमें आओ यह वार्त्ता होरही थी कि दुर्वासा परीक्षाके निमित्त आये और लक्ष्मणसे कहा कि रामचन्द्र को तुरन्तही हमारे आने का समाचार दो तब लक्ष्मणजी अति चिन्तित हुये कि जो रामचन्द्र के पास भीतर जाता हूं तो वह मेरा त्याग करदेवेंगे और जो नहीं जाता तो दुर्वासा का कोप सहना पड़ेगा यह तीखे ब्राह्मण अपनी क्रोधाग्नि से मुझे जलावेंगे ऐसी दशा में उनको यह बात सूझी कि दुर्वासा की ढिठाई करना उत्तम नहीं क्योंकि यह बात वेद के विरुद्ध है कि ब्राह्मण से ढिठाई करो और यद्यपि श्रीरामचन्द्र का वियोग मेरे लिये दुःखदायक है पर दुर्वासा की आज्ञा माननी बहुत उत्तम है यह मन में कहकर अति लज्जा के साथ रामचन्द्र के समीप जाकर दुर्वासा का सन्देशा कहा सो काल लक्ष्मण को देखतेही अन्तर्धान होगया और रामचन्द्रने अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण कर लक्ष्मण से कहा कि हे प्राणप्यारे लक्ष्मण ! इस समय हमारे साथ बड़ा छल होगया अर्थात् काल मुनीश्वर के स्वरूप से आकर ऐसी युक्ति करके मुझको दुःखी करगया वह वचन जो उसने हमसे लिया था उसको तुम जानते हो उसको तुम सत्य करो और बड़े शब्द से रोने लगे लक्ष्मण भी मूर्च्छित होगये तब दुर्वासा ने भीतर जाकर सबको समझाया ऐसी लीला कर दुर्वासा अपने स्थान को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिदा हो चलेगये और लक्ष्मण ने रामचन्द्रसे बिदा हो सरयूके तट पर योगमार्गसे अपना शरीर छोड़ा और अपना पूर्वरूप धारण किया कुछ दिन पीछे रामचन्द्रभी अपनी सर्व अयोध्या नगरी समेत वैकुण्ठ में विराजमान होगये अब हम कृष्णचन्द्रजी का चरित्र वर्णन करते हैं कि जिस तरह दुर्वासाने उनकी परीक्षा की श्रीकृष्णजी प्रसिद्ध बड़े ब्रह्मभक्त हुये वह देवताओं के सब कार्य पूर्णकर अपने नगर में स्थित हो ब्रह्मभक्तिपूर्वक रहने लगे ऐसे ब्रह्मभक्त श्रीकृष्णजीकी परीक्षा के निमित्त दुर्वासा आये कृष्णने अतिनम्रता, आदर, मान और शील से दुर्वासा को लिया और उत्तमोत्तम भोजन कराये तब दुर्वासा ने कहा कि हम रथ पर चढ़ा चाहते हैं पर इस बात पर कि तुम और रुक्मिणी तुम्हारी रानी उसको खींचकर चलाओ ऐसा करने से जो तुम्हारी इच्छा होगी मैं तुमको वर दूंगा कृष्णने अतिप्रसन्नता से इस बात को स्वीकार कर दुर्वासा की इच्छा पूर्ण की सो दुर्वासाने प्रसन्न होकर कहा कि हमारी आज्ञा से पायस लो और नग्नशरीर होकर उसको लिपटा लो कि तुम्हारा कोई अङ्ग खुला न रहे कृष्ण ने यह भी किया तब दुर्वासा ने प्रसन्न होकर यह वर दिया कि जहां २ तुम्हारे शरीर में पायस लिपट रही है वहां २ तुम्हारे कोई शस्त्र बेध न करेगा और तुमको किसी कार्य के करने का पापभी न होगा कृष्ण ने यह वर पा दुर्वासा के आनेको शुभ समझा और बड़ी स्तुति की दुर्वासा तो अन्तर्धान हुये और कृष्ण अतिप्रसन्नहो पापोंसे रहित हुये हे नारद! अब द्रौपदी का चरित्र सुनो एक दिन द्रौपदी अपनी सखियों समेत गङ्गास्नान को गई और स्नान करनेलगी सो उसके पूर्व की ओर कुछ दूरी पर दुर्वासाभी स्नान करते थे जब सर्वाङ्ग मलकर धोनेलगे तो दुर्वासा की कोपीन नदी में छूटगई लज्जा से दुर्वासा जलसे बाहर नहीं निकल सक्के थे यह वृत्तान्त द्रौपदीने जानकर अपना अञ्चल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फाड़ कर दुर्वासा की ओर बहादिया उसको दुर्वासा पहन पानी से बाहर आये और प्रसन्न होकर द्रौपदी से कहा कि हमारी लज्जा जो तुमने रक्खी है उसका फल तुमको मिले इस बातके सब देवता साक्षी हैं कि तुम्हारी लज्जा सदा रहेगी तुम पर जो कष्ट पड़े वह नष्ट होजावे यह बात कहकर दुर्वासा अन्तर्धान होगये पर किसीने न जाना कि यह कौन थे और एक और चरित्र दुर्वासा का सुनो कि एक दिन दुर्वासा सरोवरमें स्नान करने को गये और अपना स्वरूप ऐसा मैला कुचैला बनाया जैसा कभी किसीने न देखा था उस समय संयोग से गन्धर्वों की तीन पुत्रियां भी स्नानके निमित्त गईथीं उनके यह नाम थे पहिली का नाम रत्नाढ्या, दूसरी का नाम रत्नचूड़ा, तीसरी घृतपूर्णीके नामसे प्रसिद्ध थी उन्होंने दुर्वासा को देखकर बहुतसे दुर्वचन कहे और कहा कि हमारे ऊपर ब्रह्माने प्रसन्न होकर सुन्दर उत्तम पति हमारे लिये भेजा है यह सुनकर दुर्वासाने उनको शाप दिया और सब को अपना ब्रह्मतेज दिखाकर कहा कि तुम चाण्डाली होकर बड़ा कष्ट पावोगी पर जब तीनों शरण हुईं तो कहा कि तुम मलमास व्रत करके फिर पहिलेके समान होजाओगी यह कहकर दुर्वासा अन्तर्धान होगये इसी प्रकार के और बहुतसे चरित्र दुर्वासा ने किये हैं जिनके स्मरण करने से सर्वकष्ट निवृत्त होजाते हैं उनहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

ग्रहपतिके अवतारका वर्णन॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! अब हम ग्रहपति अवतारके चरित्र सुनाते हैं कि नर्मदानदी के तट पर नर्मपुरनगर में विश्वामित्र मुनि ब्रह्मचारी शिवजीके बड़ेभक्त जो सदायज्ञ करते रहते थे वे शार्दूलगोत्र में उपजे और अपने क्रियाकर्म में अतिदृढ़ और शिवजी की भक्तिमें बहुत स्थिर सर्व विद्यानिधान और बड़े बुद्धिमान् थे उन्होंने गृहस्था-

श्रम को सबसे श्रेष्ठ जान सचक्षुमतीके साथ अपना विवाह किया और गृहस्थाश्रम में स्थित रहकर अपनी स्त्रीसहित षट्कर्म करते थे और स्त्री सहित शिवपूजन नित्य प्रति करते और प्रतिदिन पांचों यज्ञकर बलिवैश्वदेव में प्रवृत्त रहा करते थे पर समय बीतगया कोई उनके पुत्र न उपजा तब एक दिन स्त्रीने हाथ जोड़ विनय की कि मैंने आपके साथ आठों प्रकारके भोगकर सदा निश्चिन्त विहार किया है पर मुझे एक इच्छा है जिसकी अभिलाषा गृहस्थ करते हैं विश्वामित्र ने कहा कि हम शिवजी की अनुग्रहसे सब कुछ देसक्ते हैं जो तुम्हारी इच्छा हो वह वर हमसे लेलो स्त्रीने कहा जो आप प्रसन्न हैं तो मुझे शिव जीके समान एक पुत्र दीजिये विश्वामित्रने शिवजीका ध्यान करके कहा कि तेरी इच्छा पूरी होगी शिवजीमें सब तरह की शक्ति है यह बात कुछ दूर नहीं यह कह विश्वामित्र तपके निमित्त काशीमें आये और मणिकर्णिका में स्नानकर विश्वनाथ की पूजा की और सबको यथाविधि पूजा फिर अपने मनमें विचार किया कि काशीमें कौन ऐसा शिवलिङ्गहै जो शीघ्रही सिद्धि देताहै सो वीरेश्वरको शीघ्रही सन्तान-दाता जानकर चन्द्रकूप जलसे स्नान किया और दृढ़तापूर्वक स्नान करनेलगे और प्रतिदिवस वीरेश्वर के ध्यान में प्रवृत्त रहे और द्वादश मास पर्यन्त इस प्रकार व्रत किया कि एक मास में केवल एक वस्तु खाकर दूसरे मासमें केवल दूध पिया इसी प्रकार एक मासमें केवल एक तरकारी खाकर एक मास में तिलचाबकर एक मासमें पानी पीकर एक मासमें केवल पञ्चगव्य में कालक्षेपकर एक मासमें चान्द्रा-यण किया फिर एक महीने में केवल कुशकी जड़ें खाईं इसीप्रकार द्वा-दश मास बितादिये और त्रिकाल वीरेश्वर महादेव की पूजा करते जब तेरहवें महीने स्नानकर प्रातःकाल वीरेश्वरके निकट गये तो वीरेश्वरके बीच में से एक आठ वर्ष का अतिसुन्दर बालक जिसका महासुन्दर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गौर शरीर सफ़ेद भस्म रमाये सुन्दर केश जो जटा के समान लटके थे धारण किये निकला निदान सर्वाङ्ग अतिउत्तम वेद पढ़तेहुये और विश्वामित्र की ओर देखते खड़ा होगया विश्वामित्रने दोनों हाथ जोड़ स्तुति की तब बालकने कहा कि वर मांगो विश्वामित्र बोले हे शिव जी ! तुमसे कौन बात छिपी हुई है तुमतो सब जानते हो मैं केवल इतनी बिनती करता हूं कि मेरी जो इच्छा है उसको पूरी करो शिव जी सुनकर बोले अच्छा तुम्हारी इच्छा शीघ्रही पूर्ण होगी और तुम फिर नये शिरसे युवावस्था को प्राप्त होगे यह कह वह बालक अन्तर्धान होगया और विश्वामित्रने प्रसन्नतापूर्वक घरमें लौट आकर अपनी स्त्रीसे सब वृत्तान्त कह सुनाया निदान जो उसने शिवजीसे वर पाया था वह प्रकट किया यह सुनकर संसारी मनुष्य विश्वामित्र के स्थान पर गये और विश्वामित्र की स्तुति करनेलगे और सचक्षुमती के भाग्य की बड़ाई की और अपने अपने स्थान को लौटते गये और विश्वामित्र अपनी स्त्री सहित शिवका तप करते रहे ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि शिवके वरदान से अच्छे समय सचक्षुमतीके गर्भ रहा और विश्वामित्र ने गर्भ की रक्षा आरोग्यता और पालन के निमित्त पांचवें आठवें मासमें बहुत दान किया दशवें मासमें शुभलग्न पर पुत्र उपजा दोनोंने मिलकर बड़ा उत्सव किया यहांतक कि तीनों देवता भी बहुत प्रसन्न हुये आकाशसे फूलोंकी वर्षा हुई मन्दिरभर में सुगन्ध फैली देवताओं ने दुन्दुभी बजाई चारों ओरसे मोर शोर करने लगे और गन्धर्व और देवपत्नियां नाना प्रकारसे नृत्य करने लगीं सर्व ओरसे धन्य २ का शब्द पूरित हुआ हम देवताओं समेत वहां गये और विष्णु भी लक्ष्मीसहित सिधारे और गौरीको साथ ले बहुतगणों समेत शिवजी सुशोभित हुये और इन्द्र, सनकादि, आठोंवसु, देवता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और नागआदि उस उत्सवमें पहुँचे और सब रुद्र गङ्गासहित रत्न भेंट लेकर आये सबने विश्वामित्र और सचक्षुमती को प्रणाम किया और उस बालकको शिवका अवतार वर्णन कर सबने स्तुति की उस समय शिवजीकी आज्ञा पाकर हमने उस बालकके जातकर्म किये मुनीश्वर वेद पढ़नेलगे और हमने वेदमें विचारकर उसका ग्रहपति नाम रक्खा इसके पीछे सब अपने २ स्थानों को सिधारे और विश्वामित्र ने चौथे मास निष्कर्म की रीति की और छठे महीने अन्नप्राशन किया बारहवें मास चूड़ाकर्म हुआ फिर कान छेदेगये पांचवें वर्ष दीक्षा हुई फिर वह बालक वेद पढ़नेलगा फिर गुरुसे मन्त्र दिलवाकर सब विद्या सिखाई हे नारद ! तुम नवें वर्ष वहां गये और विश्वामित्रने तुम्हारी बड़ी सेवा की फिर तुम बालक का हाथ देख कहनेलगे कि हे विश्वामित्र ! तुम्हारे पुत्रके सर्वअङ्ग अतिशुभ हैं पर एक कुलक्षण है अर्थात् बारहवें वर्ष अरिष्ट है उसकी रक्षा करनी तुमको उचित है तुम तो यह कहकर चलेगये और ग्रहपतिके माता पिता अतिदुःखी हो रोनेलगे यह दशा माता पिता की देखकर ग्रहपति ने कहा कि तुम इतना क्यों रोते हो तुम्हारे प्रभावसे हमारे मारनेके लिये कालभी शक्ति नहीं रखता हमारे रक्षक सदाशिवहैं जिनको वेद कालका भी काल कहते हैं जिसने कालकूट को खालिया हम मृत्युंजय की सेवा करके मृत्युको जीत लेंगे इस बातको सत्यजानो यह अमृत समान वचन सुन माता पिता को कुछ आनन्द हुआ कहनेलगे कि फिर इस बातको कहो फिर कहो जिससे मृत्यु निकट नहीं आती हे पुत्र ! तुम जाकर शिवजी की सेवा करो और हमारी सहायता करो शिवकी सेवा करके बहुत मनुष्यों ने मृत्यु को जीत लिया है शिव भक्तोंका भय हरनेवाले हैं शिवके समान अपने भक्तोंको आनन्द देनेवाला और कोई नहीं शिव और शक्ति दोनों भक्त की बड़ी रक्षा करनेवाले हैं इसलिये तुम जाकर शिवकी शरण पकड़ो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह आज्ञा माता पिताकी पाकर ग्रहपतिने काशीमें जाकर मणिकर्णिका में स्नान किया और विश्वनाथ की पूजाकर अपने को धन्य समझा और शिवका लिङ्ग स्थापितकर तपमें प्रवृत्त हुआ और वे गङ्गासे आठसौ घड़े पानी लाकर शिवको स्नान कराते और नित्य प्रति एकसौआठ श्वेतकमलों की माला शिवको पहिनाते एकपक्ष केवल वृक्षों के मूल खाकर बिताया और छःमास पर्यन्त यही नियम निबाहा दूसरा नियम न बदला फिर पानी फिर केवल एकबूंद पानी पीकर दोवर्ष इस तरह से काटे सो उसके जन्म के बारहवें वर्ष शिवने बालककी परीक्षा की अर्थात् वज्र बांध ग्रहपति के समीप आकर कहा कि हम इन्द्र हैं तुमसे बहुत प्रसन्न हुये वर मांगो ग्रहपति ने मधुरवाणी से कहा कि हमको आपसे मांगनेकी कुछ इच्छा नहीं है मैं शिवको अपना वर देनेवाला जानता हूं इन्द्रने हँसकर कहा कि शिव कुछ हमसे भिन्न नहीं हैं हम सब देवताओंके स्वामी हैं ग्रहपतिने कहा कि तुम यहांसे दूर होजावो हमको वर देनेवाले केवल शिव हैं तुम किस योग्यहो हमको तुम क्या वर देसक्तेहो हमको इच्छा नहीं है कि और किसी देवतासे वर मांगें हमारे को आनन्द देनेवाले सर्वप्रकारसे शिव हैं यह सुन इन्द्रने वज्र उठाय बड़ा भय ग्रहपतिको दिया ग्रहपति वज्र की ज्वाला देख मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिरपड़े और तुरन्त शिवका स्मरण किया सो शिव तुरन्त प्रकट हुये और उनको अपने हाथ से उठाकर बिठाया और कहा उठो २ हे ग्रहपति ! अब कुछ दुःख न होगा तुम्हारा कल्याण होगा यह सुन कर ग्रहपति ने उठकर देखा कि शिव खड़े हैं जिनके वामभाग में श्रीभवानी सकल सृष्टिकी माता विराजमान हैं शिव महागौर स्वरूप शरीरभर में भस्म लगाये हैं ऐसे शिवके परिपूर्ण लक्षण देख प्रीतिसागर में मग्न हुआ यह दशा देख शिव हँसकर बोले कि हे ग्रहपति ! तुम इन्द्र से बहुत डरे तुम मत डरो हमने आप इन्द्र होकर यह चरित्र

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया है हमारे भक्तको काल भी दुःख नहीं देसक्ता और कौनहै जो ऐसी कठोरता करे हम तुमको वर देते हैं कि तुम देवताओं में पवित्र होकर तीनों लोक में भ्रमण किया करो और सबकी मानसीगति को जानकर तीनोंरूप से संसार के कार्यकरो और धर्मराज और इन्द्र के मध्य अपना राज्य स्थापित करो और तुमने जो हमारे लिङ्ग की स्थापना की है उसके सेवकको कदापि दुःख न होगा यह कह शिवने ग्रहपति के माता पिता को बुलाकर उन सबको दिक्पति करदिया और फिर सबके देखते २ अन्तर्धान होगये और उसी लिङ्ग में जो ग्रहपतिने स्थापित किया था समागये और ग्रहपति की पुरीका नाम चक्षुमती हुआ जो तेजसे पूर्ण है वहांके निवासी नित्य सब बलिवैश्वदेव करते हैं और ग्रहपति दूसरे दिक्पाल हैं जो महातेजयुक्त मस्तक में चन्द्रमा धारण किये जिनके गण भी बड़े वीर धीर हैं सो ग्रहपति अपने गणों सहित सदा अपनी पुरीमें रहा करते हैं और माता पिता और कुल परिवार सहित उसी देशमें भ्रमण करते हैं वहां सबको अप्रमेय सुख प्राप्त है किसी को कुछ भी दुःख नहीं होता जो जीव अग्नि में प्रवेश करते हैं और जो अग्नि की पूजाआदि करते हैं वह उसी देश में जाकर विहारपूर्वक रहा करते हैं जो मनुष्य आप या दूसरे के निमित्त अग्नि की पूजा करते हैं व जो काष्ठादि देकर किसी का शीत छुड़ादेते हैं वे सब उसी लोकमें जाकर बड़ा आनन्द पाते हैं और ग्रहपति सबकी सेवाके योग्य हैं यह शिवका अवतार बड़ातेज और शीघ्र वर देनेवाला है और अग्निही से सर्वपाक सिद्ध होते हैं जिनको देवता भोजन करते हैं इससे उचित है कि अग्नि की बड़ी पूजा कीजावे वह अग्नि शिव का तेज है जो विश्वामित्र का पुत्र हुआ इस अँधेरे संसार में अग्नि के सिवाय और कोई वस्तु चमकने वाली और प्रकाश की नहीं है इसके विना तीनों लोक का निर्वाह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं और तीनोंलोक का आनन्द इसीपर घटित है जो इस ग्रहपतिके चरित्र को पढ़े सुनेगा वह दोनोंलोक में बड़ा आनन्द पावेगा सत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

वृषेश्वर अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माने कहा कि हे नारद ! अब हम वृषेश्वर शिवजी के अवतार का वर्णन करते हैं एक समय देवता और दैत्यों ने मिलकर समुद्र मथन किया और विष्णुसहित बड़ी युक्ति कर सब रत्न समुद्र से निकाल लिये सो लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, शार्ङ्गनामी धनुष् विष्णु ने लिये और सूर्यने उच्चैश्श्रवा घोड़ा और मद्य दैत्योंने ली और इन्द्रने कल्पवृक्ष और ऐरावत हाथी लिया और कामधेनु गौ मुनीश्वरों को दी और शिवने कालकूट विष और चन्द्रमा लिया फिर धन्वन्तरि हाथ में अमृत लिये हुये निकले सो अमृत दैत्योंने छीनलिया देवताओंने विष्णुसे पुकार की विष्णुने स्त्री होकर माया की और देवताओं को अमृत पिलादिया और धन्वन्तरि वैद्य आरोग्य की रक्षा करने और वैद्यक विद्यामें बड़े प्रवीण हुये और जो स्त्रीरत्न थी उसको दैत्यों ने उसकी और लड़कियों समेत जो उपजी थीं लेजाकर पातालमें ठहराया और फिर निकलकर देवताओं से भलीभांति लड़े फिर उनसे परास्त हो उनके भयसे पातालमें जाकर रहनेलगे पर विष्णु पीछा करते हुये उनके लोकमें गये और वहां की स्त्रियों को देखकर मोहित होगये और उन्हीं के साथ विहार करके वहां रहगये और वहां विष्णुसे बहुत लड़के उत्पन्न हुये वे लड़के विष्णुके समान बड़े बलिष्ठ हुये वह बालक पाताल से निकल सब देवता आदि को दुःख देनेलगे यहांतक कि इन्द्रादि देवताओंका संकोच छोड़ नाना प्रकार के उत्पात करनेलगे तो देवताओंके कहनेसे हमने देवतादि को साथ लेकर शिवजीके समीप

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाकर स्तुतिपूर्वक विनय की कि विष्णु ने पाताल में जाकर बहुत स्त्रियोंसे विहारकर बहुत लड़के उपजाये हैं वह अपने लोकको लौट नहीं आते और विष्णु के वह लड़के बड़े बलिष्ठ होकर बड़े उपद्रव मचातेहैं सो शिवजीने ऐसी दीनता सुनकर अपना स्वरूप बैलके समान धारण कर बड़ा नाद किया और तुरन्तही जहां विष्णु थे वहां पहुँचे और महाघोर शब्द किया जिससे वह नगर भर कांप उठा सो विष्णुने क्रोधित होकर अपने लड़कों को लड़ाईके लिये आज्ञा दी तो जब वह लड़के शिव अवतार के सम्मुख आये तो वृषेश्वर अवतार ने अपने सींगों से सब को मारडाला यह सुन विष्णुने कोपित होकर वृषेश्वर का साम्हना किया और अच्छे २ शस्त्र चलाये तब तो वृषेश्वरने कोपित होकर भयानक शब्द कर अपने नख और सींगोंसे विष्णुको विकल करदिया विष्णुने अहङ्कार छोड़ वृषरूप शिवको पहिचान स्तुति की और कहा कि हमारा अपराध क्षमा करो शिवजी बोले कि तुम ऐसे कामी होगये कि तुमने अपने लोक को भुलादिया अब बेगही इन स्त्रियों को छोड़ अपने लोक को चलेजावो फिर ऐसा न करना यह सुन विष्णुने अतिलज्जा से कहा कि हमारा यहांपर चक्र रक्खाहै शिवजीने कहा कि उस चक्रको यहीं रहने दो हम तुम्हारे लिये दूसरा चक्र देवेंगे सो शिवजी ने दूसरा चक्र बनाकर विष्णु को दिया और कहा इसी समय चलेजावो सो विष्णुने सब देवताओंसे अलग जाकर कहा कि यहां जो स्त्रियां अमृत से उपज कर स्थित हैं वे हर प्रकार आनन्द देनेवाली हैं जो इनसे भोग करता है वही इनका स्वामी है सो देवताओं ने उन स्त्रियों के पास जाने की इच्छा की पर शिवजी ने उनकी इच्छा जान तुरन्त यह शाप दिया कि जो इस स्थान पर शान्त मुनीश्वरों और मद्यप दैत्योंके विशेष आवेगा तो वह तुरन्त मरजावेगा यह सुनकर सब देवता भयभीत हो अपने २ घरों को चलेगये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और शिवजी और विष्णु और देवता सब अपने लोकको गये जो इस चरित्र को सुनेगा वह आनन्द पावेगा बहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

तीसवां अध्याय ॥

पिप्पलाद अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजीने कहा हे नारद ! अब हम पिप्पलाद अवतार का वर्णन करते हैं दधीचिमुनि जो तीनों लोकमें प्रसिद्ध हैं और जिन्हों ने युद्ध स्थानमें इन्द्रको परास्त किया और विष्णु और सब देवताओंको शाप दिया और सुवर्चा उनकी स्त्रीने सब देवताओं को शाप देकर कुछ संकोच न किया उन्हींसे एक पिप्पलाद बालक उपजा जिनको शिवजी का अवतार कहते हैं इतना सुन नारदने कहा कि हे पिता ! पहिले सुवर्चा के देवताओं के शाप देने का वृत्तान्त सुनाइये फिर पिप्पलाद के अवतार का वर्णन कीजिये ब्रह्मा बोले कि जब इन्द्र वृत्रासुरसे हारकर देवताओं समेत हमारी शरणमें आये तब हमने देवताओं से कहा कि तुम सब दधीचिके घरमें जाकर उनके अस्थि मांगो और उससे एक वज्र बनाओ और उसी वज्रसे वृत्रासुरका बधकरो तुम्हारी सहायता शिवजी करेंगे यह सुनकर देवताओं ने दधीचि के पास जाकर उनकी हड्डियां मांगीं सो तुरन्तही दधीचिने अपनी अस्थि देदीं और आप शिवलोक सिधारे और देवताओं ने उन्हीं हड्डियों से विश्वकर्माके द्वारा वज्र बनाया और इन्द्रने उसको अपने हाथ में लेकर वृत्रासुर को मारडाला संसारभर में आनन्द फैला जब यह हाल दधीचिकी स्त्री सुवर्चाको मालूम हुआ तो अति चिंतित हो उसने अपने पातिव्रत का तेज दिखाया अर्थात् देवताओंको यह शाप दिया कि आजसे सब देवता पुत्रहीन होवें यह कहकर चाहा कि सती होजावें पर आकाशवाणी ने निषेध किया तब सुवर्चा ने पीपलके मूलमें बैठकर अपनेको ढाढ़स दिया इतने में एक बालक उसी वृक्षके नीचेसे उपजे जो शिवजी के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवतार हैं उनका चारों ओर यश छागया और सुवर्चाने अपना ल-
ड़का देख सब दुःख भुलादिये और पुत्रको शिवजीका अवतार जान
स्तुति की और कहा कि हमारी मूर्खता दूर करो और पीपल के वृक्षके
नीचे अपना स्थान करो और सदा प्रसन्न बैठेरहो और मुझको आज्ञा
दो कि मैं भी अपने पतिके लोकको जाऊं और वहां पति समेत रहकर
तुम्हारा ध्यान किया करूं तुम शिवहो हमको भलीभांति विदित हुआ
है यह कह और बड़ी प्रसन्नतासे सुवर्चा सतीहोगई और शिवलोकमें
जाकर दधीचि सहित सदाशिवकी सेवामें लगीरही और सब देवता
और मुनि और विष्णु और हम आदि आकर उस बालकको शिवका
अवतार समझ बड़ा उत्सव करने लगे और जो कि शिवजी पीपल
के वृक्ष के नीचे उपजे इससे हमने उनका पिप्पलाद नाम रखदिया
और सब मिलकर पिप्पलाद की स्तुति करने लगे फिर पिप्पलादकी
आज्ञा पाय हम सब अपने २ लोकों को गये और पिप्पलाद उसी
पीपल की जड़ में बैठ कर तप करते रहे एक दिन पिप्पलाद मुनि
पुष्पभद्रा नदीके तटपर चले जातेथे मार्ग में एक स्त्री को देखा चाहा
कि उसके साथ अपना विवाह कर गृहस्थाश्रम धारण करें सो इस
इच्छा से वह उस स्त्रीके माता पिता के घर संसारी रीतिसे गये और
अनरण्य लड़की के पिता ने पिप्पलाद का बड़ा सन्मान करके पूजन
किया पिप्पलाद ने उनसे उस कन्या को मांगा राजा पिप्पलाद को
निर्बल देख चुपरहा तब पिप्पलाद ने कहा कि जो तुम अपनी कन्या
नहीं देते तो मैं तुमको इसी समय भस्म किये देताहूं जब राजा ने
पिप्पलाद का तेज देखा तो रोते पीटते अपनी लड़की पिप्पलाद से
ब्याह दी सो पिप्पलाद अपने साथ स्त्री लेकर अपने स्थान को लौट
आये और राजा की कन्याने पातिव्रत धर्म भली भांति निबाहा शिव
के अंश से तो पिप्पलाद और गिरिजाके अंश से पद्मा अर्थात् राजाकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुत्री थी दोनों ने भलीभांति भोग विलास किया एक दिन पिप्पलाद की स्त्रीने अपनेको भलीभांति सजाया और पिप्पलाद की आज्ञा लेने के उपरान्त गङ्गास्नानके निमित्त चली मार्ग में धर्मराज ने राजाका स्वरूपधार उसकी परीक्षा लेनी चाही और पद्मासे कहा कि तुम्हारा पति तो बूढ़ा कुरूप और अशुभ है तुम उसको छोड़ हमारे पास आकर विहार करो मुनिकी स्त्री होकर क्या आनन्द पावोगी यह कहकर चाहा कि पद्माके हाथ पकड़लें पर पद्माने अति क्रोधित होकर कहा हे दुष्ट! दूर हो दूर हो मुझे कदाचित् स्पर्श न करना मुझे तू कुदृष्टिसे देखता है तेरा नष्ट होजावे यह शाप सुनकर धर्मराज मुरझागये और राजा का शरीर छोड़ मुख्यरूप धार विनय की कि हे माता ! मैं धर्मराज हूं परीक्षा से मैंने यह बात कही थी अच्छा किया जो मुझे दण्ड दिया अब कृपा करो क्योंकि तुम जगन्माता हो पद्मा ने धर्मराज को पहिंचानकर कहा कि सत्ययुग में तुम पूर्णरूप रहो तुमपर कुछ भी कोई कष्ट नहीं हो पर त्रेतामें एक पैर और द्वापर में दो पैर और कलियुग में तीसरा और चौथा पांव तुम्हारे कट जावें क्योंकि मेरा वचन वृथा नहीं होता यह पद्मा का वचन सुन धर्मराज ने प्रसन्न होकर कहा कि तुमने मुझको बड़े नरक से बचालिया तुम हमारी माता हो अब मैं बहुत प्रसन्न होकर तुमको वर देता हूं अर्थात् तुम्हारा पति युवा होकर अतिसुन्दर होजावे वह अतिकलावान् विद्वान् बड़ा चरित्र करने वाला हो इसी प्रकार तुमभी अति सुन्दरी होकर युवावस्था में सदा स्थित रहो और तुम्हारे दश पुत्र बड़े विद्वान् उपजें और तुमको किसी प्रकार का दुःख न हो यह कह धर्मराज अपने लोक को चलेगये और पद्मा भी अपने स्थानको लौट आई पिप्पलाद अवतार ने बहुतेरों को संसारसागर से डूबतेहुये निकाला और जब संसारी मनुष्यों को शनैश्चर के दुःख से दुःखी देखा तो वर दिया कि आजसे शिवभक्तों को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जन्म से सोलहवर्ष तक शनैश्चर कुछ दुःख न देवेगा उसी समय से शनैश्चर सोलहवर्ष पर्यन्त बालकों का कुछ नहीं करसक्ता शनैश्चर का अशुभ फल पिप्पलाद के नाम के स्मरण से नष्ट होजाता है अर्थात् पिप्पलाद, कौशिक, गाधिमुनि के स्मरण से शनैश्चर का अशुभ फल नहीं होता हे नारद ! पिप्पलाद संसार भरके आनन्द देनेवाले हैं और पद्मा भी गिरिजा का अवतार हैं उनके स्मरण से सन्तान की वृद्धि होती है दधीचि बड़े उदार हुये उनकी बराबरी कोई नहीं करसक्ता है यह पिप्पलाद का आख्यान अतिपवित्र है जो हमने वर्णन किया इसके पढ़ने सुननेवालों को दोनों लोक में सब कुछ मिलता है तिहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

महेश अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि एकदिन शिव और गिरिजा दोनों ने भोग के निमित्त संसारी जीवों के समान सम्मति कर भैरवको द्वार पर बैठाया और आप अन्तःपुर को गये और बहुत समय तक मनुष्यों के समान विहार में प्रवृत्त रहे एकदिन गिरिजा मतवालों की तरह घर से बाहर निकली और भैरवने गिरिजाको कुदृष्टि से देखा और बाहर जाने से रोंक लिया गिरिजा ने बड़ाक्रोध कर शिवजीकी इच्छा पर भैरवको यह शाप दिया कि तूने हमारे पुत्र होकर हमको कुदृष्टि से देखा और माता पुत्र का भाव छोड़ मनुष्यों के समान कुमार्गी होना चाहता है इसलिये तू मृत्युलोक में जाकर मनुष्य शरीर धारेगा तब तू ऐसे पाप से छूटेगा यह सुन भैरव अतिदुःखी हुये भैरव कि वह भी लीला करनी चाहते थे उन्होंने भी श्रीगिरिजा महाराणी को यह शाप दिया कि जो दशा हमारी हो वही अवस्था तुम्हारी भी हो यह शब्द सुन शिवजी बाहर निकल आये और हँसकर दोनों को समझाया भैरव ने विनय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की पृथ्वी में भी हम आपके पुत्र होकर उपजें इसीसे शिवजी के साथ सब लड़कों को अवतार धारण करना पड़ा शिवजी का नाम महेश और गिरिजा का नाम शारदा हुआ चौहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

अवधूतपति अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले अब हम अवधूतपति अवतार की कथा कहते हैं जिन्होंने इन्द्र के अहंकार का नाशकिया एकदिन इन्द्र ने सदाशिवजी के दर्शन की इच्छासे तुरन्त सब देवताओं को बुलाया और हरप्रकार की सामग्री इकट्ठी की यह कहकर कि हम सब देशों के महाराजा हैं हमको बहुत सामग्री सहित शिवजी की भेंट करनी चाहिये सो ग्यारहों रुद्र बारहों सूर्य आठोंवसु तेरहों विश्वेदेवा और सब मरुद्गण और सबदिक्पति और देवता और मुनीश्वर भलीभांति सज सजाकर बड़ी धूमधाम से इकट्ठे हुये और बृहस्पति को साथ लेकर चले और सब प्रेम में मग्न कोई गाते कोई बजाते कोई हँसते चले और नाना प्रकार के बाजे बजते थे अप्सरा नाचती हुई चली जातीथीं और इन्द्र हर प्रकार के देवताओं का जुदा २ समूह बनाकर सबको साथ लिये हुये चले जब कैलास पर्वत के समीप इन्द्र पहुँचे तो शिवजी ने यह इन्द्र का गर्व जानकर लीला के निमित्त अपना भयंकर रूप धारा कि नेत्र जलते हुये भयानक साजसाजे अर्थात् अवधूतरूप था इन्द्रने अवधूत को देखकर प्रणाम किया और पूछा कि आप कौनहैं कहांसे आते हैं जाना जाता है कि आप इसी समय शिवजीके पास से आते हैं कृपा करके कहिये कि शिवजी कहां हैं क्या करते हैं कहीं चले तो नहीं गये अवधूतने कुछ उत्तर न दिया फिर इन्द्रने कहा कि शिवजी कहां हैं बतला दो इसी प्रकार इन्द्र ने कई बार पूछा पर कुछ उत्तर न पाया तब तो इन्द्रने क्रोधित होकर अपना वज्र उठाया और कहा हे दुष्ट,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवधूत ! तू हमको उत्तर नहीं देता क्या मद्य पियेहुये है मैं तुझको वज्र से मारताहूं तेरा कौन रक्षक है यह कह और वज्रको अवधूतपर चलाया सो वज्र उनकी गर्दन में लगा जिससे श्यामरंग का चिह्न पड़गया और वज्र जलकर भस्म होगया और देवताओं की सेना में हाहाकार मचगया और शिवजी में इतनी ज्वाला बढ़ी कि सब देवता जलनेलगे इन्द्र ऐसी लीला देख कांप उठे और अपने गुरु का स्मरण किया सो बृहस्पति ने शिवजी का ध्यान किया और शिवजी को जान स्तुतिकर इन्द्रसे कहा कि यह अवधूत नहीं वरन आप सदा शिवजी हैं इतना कह बृहंस्पति ने आदर कर स्तुति की और कहा कि ये सबके स्वामी हैं फिर इन्द्रादिक सब देवताओं ने प्रीतिपूर्वक शिवकी स्तुति की ऐसी स्तुति सुनकर शिव प्रसन्न हुये और कहा कि यह स्तुति सुनकर हम प्रसन्न हुये वर मांगो यह सुन बृहस्पति अति प्रसन्न हुये और यह वर मांगा कि इन्द्र आपका सेवक है इसकी रक्षा अवश्य है इन्द्रने आपका तेज नहीं जाना इस पर अनुग्रह करना उचित है और अपनी क्रोधाग्नि को दूर करो यह सुन शिव बोले कि सर्प अपनी केंचुली को दूर करके फिर ग्रहण नहीं करता पर तो भी हम कृपा करके इस ज्वाला को इतनी दूर फेंकदेवेंगे कि इन्द्र पर उस का कुछ फल न होगा और जो कि तुम ने इन्द्र को जीवदान दिया इससे तुम्हारा जीव नाम हुआ यह कह उस ज्वालाको उन्हों ने गंगा में फेंक दिया जिससे जालन्धर उपजा उसका वृत्तान्त हम वर्णन कर चुके हैं यह चरित्रकर अवधूत शिव अन्तर्धान होगये और देवताओं को बड़ा आनन्द मिला और अपने २ स्थानों को लौट गये जो मनुष्य इस अवधूतेश्वर अवतार के चरित्र को पढ़ेगा या सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्द पावेगा पचहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेंतीसवां अध्याय ॥

श्रीहनुमान्‌जी के अवतार वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम हनुमान् शिवअवतार का वर्णन करते हैं जिन्होंने रामचन्द्रकी सहायता कर दैत्योंको बध कर डाला उन्होंने कपिजाति में देह धारणकर रामचन्द्र से बड़ा प्रेम उपजाया और शिवकी आज्ञा पाकर रामचन्द्र की सेवा करते रहे यह हनुमान्, महावीर, कपिनाथ, शिवके अवतार हैं इनकी कथा इस तरह है कि जब शिवने मोहनीरूप को देखा तो केवल रामचन्द्र के कार्य के निमित्त इस तरहपर लीला की कि शिव मोहित होकर मोहनीरूप को लिपटगये सो शिवका मद अर्थात् वीर्य धरती पर गिर पड़ा जिसको नगमुनिने शिवकी सैनसे रखलिया इस इच्छा से कि उसके द्वारा रामचन्द्र के कार्य सुधारेंगे सो अञ्जनी से हनुमान् उपजे और कपिअवतार लेनेका यह कारण था कि चारमास तक रामचन्द्र ने शिवका बड़ा तप वन में किया निदान शिवजी ने परीक्षा लेने के उपरांत अपने गणों सहित अवतार लिया और अपना धनुष् रामचन्द्र को दिया जो सदाशिव प्रलय के समय हाथ में लेते हैं और शिवसे आज्ञा पाकर सब देवता बन्दर और रीछका अवतार लेतेगये और जब कि रामचन्द्र ने रावण को अति बलिष्ठ समझकर शिवजी की बड़ी स्तुति की तो अञ्जनीके द्वारा शिवजी ने भी अवतार लिया और विष्णु अर्थात् रामचन्द्र का दुःख दूर किया उन्होंने उपजतेही सूर्य को खालिया तब देवताओं ने जाना कि यह शिवजी का अवतार है रामचन्द्र के बड़े बड़े कार्य किये उनमें से रामचन्द्र की पत्री को सीता के पास पहुँचाया और रावण की पुष्पबाटिका को नष्ट करदिया लङ्का को जलादिया समुद्र में सेतु तय्यार किया जब लक्ष्मण शक्ति से मूर्च्छित हुये और रामचन्द्र अतिदुःखी हुये तो हनुमान् ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

औषध लाकर लक्ष्मण को जिला दिया और रामचन्द्र का दुःख दूर किया और रामचन्द्र को कीर्ति देकर आप रावण का बध किया और दैत्यों को मारकर देवताओं को हर्ष दिया और जोकि भक्तिभाव की रीतिको अङ्गीकार कर भक्ति को संसार में प्रसिद्ध किया इससे राम-दूतके नामसे प्रसिद्ध हुये रामचन्द्रके कार्य के पूर्ण करने के निमित्त शिवने हनुमान् का अवतार लिया फिर उनकी भुजा उखाड़कर राम और लक्ष्मण को बड़ाहर्ष दिया और उनकी सेवासे असंख्य पापियों ने मुक्ति पाई है हे नारद ! इस बातको निश्चय जानो कि सदाशिव अपने भक्तोंके निमित्त असंख्य तन धारणकर अपनी बड़ाई का कुछ विचार नहीं करते यही दशा विष्णु की भी है कि अर्जुन पाण्डव के रथवान् होकर उनका रथ हांका इतना सुन नारद के पूछने के अनुसार ब्रह्मा ने कहा कि सनकादि हमारे चारपुत्र जो परम शैव हैं सदाशिव की मूर्ति हृदयमें रख तीनोंलोकमें भ्रमण करते हैं वे एकदिन विष्णुलोकमें गये और वैकुण्ठको देख अतिप्रसन्नतासे चाहा कि विष्णु के दर्शन करें सो छः डेवढ़ी तक भीतर चलेगये सातवीं डेवढ़ी पर जय और विजय विष्णु के गणोंने रोंका और किसी प्रकार भीतर जाने न दिया सनकादिकने क्रोधित हो शिवकी प्रेरणासे यह शाप दिया कि तुम दोनों यहां न रहोगे तुमने हमको विष्णु के मन्दिर में जाने से रोंका यह तुम्हारा राक्षसोंके समान कर्म है इससे तुम दोनों राक्षस हुये और तुरन्त यहांसे च्युत होकर पृथ्वीपर जाओ यह शाप सुनकर दोनों सनकादिकों के चरणों पर गिरपड़े और उनको प्रसन्न किया इतने में विष्णु भी भीतरसे निकल आये उन्हों ने उनकी बड़ी स्तुति की सो वह विष्णुजी को प्रसन्न कर आज्ञा पाय हमारे लोक को चले आये और वह दोनोंगण दितिके पुत्र होके कनककशिपु और कनकाक्षके नाम से प्रसिद्ध हुये वह ऐसे बलवान् हुये कि उन्होंने तुरन्तही तीनों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोक को जीतलिया और स्वाधीन होकर तीनों भुवनका राज्य करते रहे निदान देवताओं की इच्छानुसार कनकाक्ष को विष्णुने बराहरूप धर मारा और कनककशिपु को नरसिंह अवतार धर उसका उदर विदीर्ण किया और जो कि दोनों को तीन जन्मतक राक्षस होने का शाप था इससे फिर उन दोनोंने कुम्भकर्ण और रावण होकर शिवकी बड़ीभक्ति की इससे रावणने देवताओं को परास्तकर तीनों लोक का राज्य किया और फिर रावणने तुम्हारे उपदेशसे मोहित हो कैलासको मूलसे उखाड़ लिया इससे शिवजी ने बड़ाभारी शाप दिया और यह कहा कि हमारे समान कोई मनुष्य तुम्हारा अहंकार नष्ट करेगा सो शाप के कारण उन्हों ने कुमार्ग अङ्गीकार किया और संसारमें बड़े २ उपद्रव मचाये देवतादि दुःखी हो विष्णुके समीप गये और रावणका सर्व वृत्तान्त वर्णन किया विष्णु बोले कि रावण शिवजी का भक्त है वह किसीसे जीता नहीं जासक्ता पर हम शिवजी की अनुमति पाकर तन धारण करेंगे और शिवजी का तपकर उन्हींसे बाण लेकर रावण को मारेंगे यह कह देवताओं के बिदा करने के उपरान्त चाहा कि मनुष्य होकर चार प्रकार का अवतार लें सो अयोध्यापति दशरथ के यहां इस तरह अवतार लिया कि कौशल्या से रामचन्द्र और कैकेयी से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुहन उपजे यह चारों एक ही विष्णु के स्वरूप हैं जिन्होंने अलग अलग चार अवतार लिये और राजाजनक की लड़की सीताके साथ रामचन्द्र का विवाह हुआ निदान रामचन्द्र दशरथकी आज्ञासे राज्य छोड़ देवताओं के कार्य करनेके निमित्त वन में गये जहां सीता को रावण ने हरलिया और हर तरह रामचन्द्र को दुःख दिया निदान रामचन्द्र ने अगस्त्य से उपदेश पाकर शिवका तप किया और शिवजीने प्रसन्न होकर रावण के वधके निमित्त आज्ञा देकर अपना धनुषबाण कृपा किया सो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रामचन्द्र ने रावण को सेना सहित वध करके सीता को पाया ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

नारदने कहा कि यह रामचन्द्रका चरित्र अतिसंक्षेपसे है हे ब्रह्माजी! इसको विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि रामचन्द्र के चरित्र अतिपवित्र यश, कीर्ति, आरोग्यता और मुक्ति के देनेवाले हैं यह अवतार विष्णुने देवताओं के लिये पूर्णांश से धारण कियाहै उन्होंने बहुतसे बालचरित्र किये जिससे माता पिता रात दिन बड़े प्रसन्न रहे फिर विश्वामित्र के यज्ञ में जाकर रक्षा की और सुबाहु को सेना सहित मारडाला और मारीच भी मारे गये फिर विश्वामित्र के साथ जनकपुर में जाकर राजा जनककी इच्छा पूरीकी वहां चारों भाइयोंका विवाह होगया जब कि राजा दशरथ अपने लड़कों और बहुओं समेत अयोध्या को लौट आये उस समय का आनन्द कौन बखान सक्ताहै निदान देवताओं ने अपने कार्य के निमित्त बड़े बड़े उपाय करके भरत की माता को निन्दा दिलाई अर्थात् रामचन्द्र को दशरथ से वनवास दिलाया पहिले रामचन्द्र चित्रकूट को गये और कई दिन लक्ष्मण और सीता सहित वहीं ठहरे रहे और वहां मत्तगयन्द शिवजी की पूजाकी जिसको हमने स्थापित किया था वही शिवजी चित्रकूटके रक्षक हैं यात्रा करनेवालोंके पाप भक्षण कर जाते हैं जो मनुष्य चित्रकूट में जाकर उनकी पूजा न करे उसको जाने का कुछ फल नहीं मिलता रामचन्द्र ने भी उससे वरदान पाया भरत अवधवासियों सहित वहां गये और हाथ जोड़ बड़ी भक्तिसे लौटने के लिये बिनती की पर रामचन्द्र ने न माना और अपनी पादुका देकर भरत को बिदा किया फिर चित्रकूट को छोड़ दण्डक वनको जहां मुनीश्वर रहते हैं गये और सीता को बीच में छोड़ बुरे वनके होनेके कारण चले मार्ग में विराध को जो सीता को उठाकर आकाश में उड़ा था मारडाला फिर कुम्भज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के स्थान में गये और अगस्त्य के उपदेश से पञ्चवटी को गये जहां कामदेव की सताई हुई शूर्पणखा ने आकर रामचन्द्र से विवाह की इच्छा की निदान रामचन्द्र और लक्ष्मणजीने न माना सो शूर्पणखा यह कहकर कि अपने किये हुये का फल पाओगे सीता को भय देने लगी और अपने नाम के समान उसने अपना शरीर बनाया जिससे लक्ष्मणने जाना कि यह राक्षसी है सो तुरन्त उसकी नाक काटली वह रोती पीटती अपने भाई दूषण के पास गई और सब वृत्तान्त कह सुनाया वह शूर्पणखा को आगेकर युद्ध के निमित्त चले रामचन्द्र ने सीता लक्ष्मण को सौंप जितने राक्षस लड़ने आये थे उतने अपने रूप बनाकर सिवाय शूर्पणखा के सबका वध किया वह रोती हुई रावण के समीप गई और सर्व वृत्तान्त रामचन्द्र का कहा सो रावण ने रामचन्द्र को बड़ा बलिष्ठ जान मारीच को सीता के उठालाने के निमित्त कहा उसने न माना निदान रावण भयभीत हुआ और दोनों इस कार्य के निमित्त चले मारीच रावण का मातुल विचित्र हरिण बन रामचन्द्र के सामने फिरने लगा रामचन्द्र छल में आकर हरिणके वध के निमित्त चले पीछे से लक्ष्मण भी चले सो राम और लक्ष्मणके पीछे रावण आकर सीता को उठा ले गया मार्ग में सीता को रोते देख जटायु ने रावण से युद्ध किया जिसके पंख रावण ने जला डाले जब रामचन्द्र और लक्ष्मण ने लौटकर सीताको न देखा तो अतिखेद कर पृथ्वीपर गिरपड़े और रोतेहुये सब जगह ढूँढ़ने लगे सो जटायुसे सब हाल सुना और जटायु ने यह हाल रामचन्द्र का सुनकर अपने शरीर का त्याग किया रामचन्द्र ने आप उसका दाहकर्म किया और पिता के समान शोककर फिर सीता को ढूँढ़ने लगे इतना खेद रामचन्द्र का देख अगस्त्यजी आये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पैंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि अगस्त्यमुनि को देखकर लक्ष्मण ने प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़कर शिर झुकाया मुनिने उनको अति दुःखी देख रामचन्द्रसे कहा कि हम वेदका मत आपको सुनाते हैं कि तुम्हारा यह अथाह दुःख दूर होजावे तुम स्त्री के निमित्त ऐसा दुःख क्यों करते हो स्त्री किसकी होती है तुम वेदमार्ग छोड़कर हाय हाय कहते हो और रोते हो यह शरीर जो पांच तत्त्व से बना हुआ है और जड़ है उस पर इतनी प्रीति क्या करते हो केवल जीव सब इन्द्रियों से पवित्र है और सच्चिदानन्द सब से भिन्न जन्म मरण से रहित है वह स्त्री पुरुष नपुंसक कुछ नहीं है उसका कोई आकार नहीं पर सब में विद्यमान है वह अनादि, निरञ्जन, अलख, ब्रह्म, मायासे परे, निर्भय, नामरूप रहित है और स्त्री जो अतिभ्रष्ट और उसका शरीर मलमूत्र से परिपूर्ण है तो बताओ कि सिवाय चर्म के उसके शरीर में क्या है इस बातको न समझ बुद्धिके विरुद्ध सब कार्य कररहे हो तुमको उचित है कि ज्ञान धारण करके ऐसी चिन्ता मतकरो और यह समझलो कि केवल शरीरही मरने के योग्य है आत्मा नहीं मरता ब्रह्म एकही है दो नहीं कौन स्त्री और कौन पुरुष है यह सुन सीता के वियोग दुःख दूर करो तुम वृथाही मोह के वश में पड़गये हो शिवशंभूका स्मरण कर खेदको भूलो यह बात सुन रामचन्द्र बोले कि आप जो कहते हैं कि तन जड़ है उसको क्या दुःख होसक्ता है और आत्मा को तनसे भिन्न बताते हो फिर किसको दुःख होता है उसको बतला दीजिये और मुझको सीता के वियोग का दाह है वह शरीर को जलाता है जो बात कि हम शरीर में प्रतिदिन देखते हैं उसके लिये आप क्या कहते हैं मैं आपसे पूछताहूं कि दुःख सुखका भोगनेवाला कोई है वा नहीं यह सुन अगस्त्यजी बोले कि शिवजीकी माया जानने के योग्य नहीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीनों लोक उसीमें मोहित हैं उसका नाम प्रकृति है उससे सम्पूर्ण संसार को उपजाहुआ समझो और ऐसी प्रकृति का स्वामी शिवजीको समझो जो अनादि और पवित्र है उसीसे यह तीनों लोक दिखाई देते हैं क्योंकि सबका आत्मा वही है जिस तरह कि लकड़ी अग्निके योगसे प्रज्वलित होती है इसी तरह शिवजी से सब जीव अपने २ कर्मों में बँधे हुये प्रकट होते हैं वही पुरानी वासना संसार की क्षेत्रज्ञ है और अन्तःकरण जो चार प्रकार का है उससे उसीका प्रकाश है वही जीव अपने कर्मों के फल पाता है वही कर्मफल को भोग करता है और सब दुःख सुख अपने कर्मों के अनुसार होता है माया की फाँसी से दुःख सुख है जो माया से भिन्न हैं वे संसार पर प्रबल हैं और मूर्ख संकल्प विकल्प से संसार में संसार देखते हैं रामचन्द्र ने कहा कि जो तुमने कहा वह सब ठीक है पर हमारा दुःख दूर नहीं होता जिस तरह कि मद्य बड़े २ बुद्धिमानों को मतवाला करडालता है इसी प्रकार भाग्य के भोग्य महा दुःखदायक हैं उसी भाग्य के अधीन होकर किसी का वश नहीं चलता उससे सब दुःख सुख होता है हमने भाग्य को सर्वोपरि शिवजीके समान समझलिया है वह मुझे दुःख देता है अब मैं यह चाहताहूं कि जिसने मेरी स्त्रीको बहकाया है उस को मारडालूं हम सूर्यवंशी दशरथके पुत्र हैं जो शीघ्रही न मारूंगा तो हमारे जीने से क्या लाभ है हमको इस समय तत्त्वबोध से कुछ प्रयोजन नहीं हमारा मन सीताके वियोगमें दुःखी है काम क्रोधको अग्नि के समान शत्रु कहा गया है हमारा शरीर उनसे जल रहा है किसी प्रकार वह अग्नि नहीं बुझती यह अहंकार का भरा हुआ वचन सुन अगस्त्यने जाना कि हमारा उपदेश लाभदायक न हुआ मनमें कुछ क्रोध करके कहा कि हे रामजी ! तुम्हारा कुछ अपराध नहीं है यह शिवजीकी माया है जिसके अधीन होकर सब देवता मुनिआदि भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुद्धिको छोड़ दुःख सुख प्राप्त करते हैं जो मनुष्य कि काम और क्रोधके अधीन हैं वे उपदेशसे शुद्धमार्गको नहीं मानते उनको उपदेशके वचन इस तरह अच्छे मालूम नहीं होते जिस तरह कि मरनेवाले रोगी को औषध और चिकित्सा उत्तम नहीं भासती जो अपनी स्त्रीकी प्राप्तिके निमित्त रावण का वध किया चाहते हो रावण बड़े भारी दैत्योंका स्वामी है तुम लङ्का में क्योंकर जाकर सीता को प्राप्त करोगे जिसके यहां देवता सब कार्य और सेवा करते हैं और देवताओं की स्त्रियां रावणके ऊपर पङ्खा डुलाती हैं वह शिवजीकी कृपासे संसार भरका राजा है यद्यपि उसने कुमार्ग धारण किया है तो भी उसको दुःख नहीं मिलता तुम अपने को और शत्रु की शक्ति को नहीं देखते मेघनाद के समान जिसका पुत्र है और जिसको शिवजीने वर दिया है और जिसने इन्द्र को जीतकर सब देवताओंको अपने सामने से भगादिया और कुम्भ-कर्ण के समान जिसका लघुभ्राता है और उसका दूसरा भाई विभीषण अमर है और रावण का सब गढ़ सुवर्ण से बना हुआ है और देवता और दैत्य कोई उसको जीत नहीं सक्ता वहां किसी को कुछ भय नहीं उसके पास करोड़ों चतुरङ्गिणी सेना विद्यमान हैं उसको तुम जीता चाहते हो जैसे बालक चन्द्रमा को अपने हाथ से पकड़ना चाहता है वही तुम्हारी ज्यों की त्यों अवस्था जान पड़ती है यह कह अगस्त्य चुप होगये ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि जब यह वचन अगस्त्यजीके रामचन्द्र ने सुने तो ठण्ढी सांस भरकर अगस्त्य के चरणों पर गिरपड़े और हाय २ करके चिल्लाकर रोनेलगे और कहा कि हे मुनि ! हम दुःख सागरमें डूबते हैं हमको डूबनेसे बचालो यह सहायताका समय है और उपदेश, ज्ञान, बुद्धि का समय नहीं क्योंकि इस समय हम वियोगकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अग्नि से जलते हैं वह उपाय बताइये जिससे सीता मिलें फिर जो आप ज्ञान मुझको सिखावें वह हम मानेंगे मुझे अपना सेवक जानकर क्रोध न कीजिये हम क्षत्रिय मूर्ख और अहंकारी हैं हम वियोगाग्नि से जले हुये हैं आपका वचन जो अमृतके समान है हमारे मन में नहीं ठहरसक्ता आपके सामने हम दूसरा शिक्षा देनेवाला गुरु नहीं देखते आप वह बात सिखावें जिससे सीता मिलें यह सुन अगस्त्य ने शिव लीला की बड़ी स्तुति की और कहा कि जो तुम यही चाहते हो तो शिवजी की शरणमें जाओ और उनका कठिन तप करो और शिवजी के नाम वेदके अनुसार जपो और मनुष्यत्व छोड़ तेजका भरा हुआ रूप धारण कर रावणका वध करो तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा तुम्हारे सामने कोई ठहर न सकेगा तुम सुगमता से सीता पावोगे शिवजी तुम्हारी ओर होकर रावणका पक्ष न करेंगे यह सुन रामने अतिप्रसन्न हो कहा कि हे अगस्त्यजी ! तुम समुद्रके मथनेवाले और इल्वलके शत्रु संसार में प्रसिद्ध हो आप जो मुझपर प्रसन्न हुये तो हमारे सब मनोरथ पूरे होंगे अब तुरन्त शिवजीके मन्त्रकी दीक्षा देकर शिवजी की पूजाकी युक्ति बता दो जिससे शिवजीकी सेवा में प्रवृत्त होजाऊं और शिवजी मुझसे बहुतही प्रसन्न होवें अगस्त्यजी ने कहा कि पहिले हम शिवपूजा की तिथि और बार वर्णन करते हैं जिनमें शिवजी की पूजा का आरम्भ करे अष्टमी या चतुर्दशी जो शिवजी की तिथि प्रसिद्ध है वा एकादशी जो विष्णु की तिथि कहलाती है उनके शुक्ल पक्षमें शुभमास पर शिवजी की पूजा का आरम्भ करे इस तरह कि पहिले मुहूर्तभर रात्रि रहे उठ स्नान नित्यकर्म से निश्चिन्त होजावे फिर संकल्प करे और अपना सर्व शरीर श्वेतवस्त्रों से भूषित करके युक्तिपूर्वक भस्म अवश्य लगावे सब बातोंसे उत्तम भस्म धारण करना अवश्य है क्योंकि भस्म लगाने से सिद्धि प्राप्त होती है फिर रुद्राक्ष

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहां जहां जिस जिस अङ्गमें चाहिये युक्तिसे धारण करे हे रामचन्द्र! भस्म विन शिव प्रसन्न नहीं होते न सिद्धि प्राप्त होती है फिर व्रत कर प्रसन्नतापूर्वक ध्यान करे। ध्यान.। जो परब्रह्म सदाशिव ब्रह्मा और विष्णु के उपजानेवाले सब के स्वामी कैलासवासी हैं उनके स्वरूप का ध्यान करे कि गौर शरीर भस्म रमाये जिनके वामभागमें गिरिजा विराजमान हैं पांचमुख तीननेत्र चार भुजा लालरंग की जटाजूट धारे सब भूषणों को पहिने हुये हैं और सांपों को जनेऊके बदले लपेटे हुये हैं और त्रिशूल, डमरू, वर और अभय धारण किये बाघम्बर ओढ़े कोटि सूर्य के समान महाप्रकाशमान और कोटि चन्द्रमा के सदृश शीतल यह ध्यान कर शिवजी की पूजा करे फिर शिवजी के सहस्र नाम का पाठ करे यह कह अगस्त्यने रामचन्द्र को वेदका लिखा हुआ सहस्रनाम जिसके जपसे शिवजी तुरन्त प्रसन्न होते हैं और सर्व कष्ट नष्ट करते हैं बतादिया फिर कहा हे रामचन्द्र! तुम इस सहस्रनाम को रात दिन जपो जो कोई भय उपजे तो तुम कुछ न डरना शिव तुम्हारी रक्षा करेंगे और तुमको पाशुपतास्त्र कृपा करेंगे जिसको पाकर शत्रुके वध करने के अनन्तर सीता को पावोगे वह धनुष् जो तुम को सदाशिवजी कृपा करेंगे उसके चढ़ाने से समुद्रतक सूख जावेंगे उसी से शिव प्रलय करते हैं धनुष् शिव को अतिप्रिय है और दूसरी युक्ति हम नहीं जानते शिवजी की शरण होने से हर प्रकार का आनन्द मिलता है सर्वकार्य तुरन्त सिद्ध होजाते हैं फिर अगस्त्यने उनलोगों का वृत्तान्त संक्षेपसे सुनाया जो शिवजीकी सेवासे अपने २ मनोरथ पाचुके हैं फिर अगस्त्य अपने आश्रम को चलेगये ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि रामचन्द्रने रामगिरि पर जाकर गोदावरी के तटपर शिवलिङ्ग की स्थापना कर भस्म और रुद्राक्ष धारण किया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवलिङ्ग को गौतमी नदी के जल से जो समुद्र से उपजी है पूजन करके नाना प्रकार के वन के पुष्पों और फलों से पूजा की और सिंह के चर्मपर आसन जमाया और सदाशिव का ध्यान किया और इस प्रकार की मूर्ति सदाशिव की अपने हृदयकमल में स्थित की—ध्यान जो रामचन्द्र ने किया—कोटि सूर्य के समान जिनकी सुन्दर कान्ति और जिनमें कोटि चन्द्रमा के समान शीतलता भोग और कामना के हेतु सर्व प्रकार के भूषण और वस्त्रोंसे अलंकृत पांचमुख तीन नेत्र ललाई लिये जटा प्रकाशमान डमरू, त्रिशूल, वर, अभय धारण किये चार भुजा से सुशोभित भाल में चन्द्रमा बाघम्बर ओढ़े सर्पका जनेऊ पहिने शिर में जटा के बीच गङ्गा की छटा मस्तक में त्रिवेद कण्ठ में हलाहल की श्यामता कान में कुण्डल के बदले दो सर्प लटकते हुये दोनों चरणकमल के समान विराजमान गौर शरीर भस्म रमाये अतिदयावान् अनादि, अप्रमेय, अविनाशी, अद्वितीय, विद्या, हर्ष, सत्यता और धर्मके स्वरूप इसी प्रकार का ध्यान करके रामचन्द्र शिवसहस्रनाम का जप करने लगे और वनके पुष्पों और जड़ों और वायु आदि खाने से चारमास बिताये शिवजी ने चाहा कि रामचन्द्र की परीक्षा लेवें सो अकस्मात् समुद्रमें बड़े वेगसे भयानक शब्द हुआ और जिस तरह कि प्रलय में समुद्र अपनी मर्यादा से बढ़ जाता है सो रामचन्द्र ने चारों ओर देखा पर शब्द के सिवाय और कुछ दिखाई न दिया इतने में अग्निकी ज्वाला चारों ओर इतनी फैली कि चारोंओर से उस ज्वाला से बचना कठिन हुआ रामचन्द्र ने नेत्र मूँदलिये उस समय उनको यह विचार हुआ कि यह किसी दैत्य की माया है तुरन्त धनुर्बाण हाथ में लेकर बाणों से उस ज्वाला को मारनेलगे और जितने कि और शस्त्र थे सब उस ज्वाला की ओर फेंक दिये पर किसी शस्त्र ने काम न दिया इसके सिवाय रामचन्द्र के हाथ से धनुष धरती पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गिरकर भस्म होगया और बाण और तरकस और अन्य अस्त्र शस्त्रों की भी यही दशा हुई यह दशा देखकर रामचन्द्र मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिरपड़े और यही दशा लक्ष्मण की भी हुई निदान रामचन्द्र ने शिवजीका ध्यान किया तब तो रामचन्द्रके नेत्र खुल गये और उनका सब दुःख दूर हुआ देखा कि एक महातेजोवान् जिनका अतिप्रकाश-युत भाल अर्धचन्द्र धारण किये नन्दीपर सवार अपने मुख्य लक्षण प्रकट किये श्रीसदाशिवजी विद्यमान हैं कोई लक्षण बाक़ी न रहगया जो उनमें न था वामभाग में गिरिजा विराजमान थीं ऐसे स्वरूप को देख कर रामचन्द्र अति प्रसन्न हुये फिर विष्णु को लक्ष्मी सहित गरुड़ पर चढ़ेआते देखा जो रुद्राध्याय जपते हुये चलेआतेथे फिर मुझे हंस पर आरूढ़ हुये रुद्रसूक्त जपते अपनी ओर आते देखा फिर रामचन्द्र ने उसी ज्वाला से मुनीश्वरों का समूह अर्थात् ब्रह्मा अथर्व शिर से शिवकी स्तुति करते निकलते देखा और फिर देखा कि दिक्पाल अपने मुख्य लक्षणों और स्त्रियों सहित हाथ जोड़े सामश्रुति पढ़ते चले आते हैं फिर गङ्गा को प्रसिद्ध नदियों सहित और समुद्र को वेदका मन्त्र पढ़तेहुये अपनी तरफ आते देखा इसी प्रकार शेषादिको स्त्रियों सहित और नन्दीगण और गणेश को मूषकपर चढ़े और षणमुखको मोरपर आरूढ़ जिनके दाहें बायें ब्रह्मा काल और चण्डीश और भृङ्गी गण-नाथको असंख्य गणों समेत आते देखा फिर कन्दबमुनिको त्र्यम्बक मन्त्र जपते और शिवका यश गाते और चित्ररथ गन्धर्वादि अप्सरों और हंसको अपने गणोंसहित और उत्तमोत्तम ग्रहोंको सूर्य चन्द्रमा समेत और अच्छे २ शिवभक्तों और इसी प्रकार सबको अपनी ओर आते देखा ऐसी देवसभा शिवकी देख जो आनन्द रामचन्द्र को प्राप्त हुआ वह कहने में नहीं आता रामचन्द्र ने शिवको ऐसे स्वरूप और सभाके साथ प्रणाम करके बड़ी स्तुति की ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अड़तीसवां अध्याय॥

रामचन्द्रने असंख्य प्रणाम करनेके उपरान्त कहा कि हे सदाशिव! तुम्हारे चरणों को प्रणाम है इसीसे हमारा सब काम है यह कह फिर सदाशिव का नाम जपनेलगे तब शिवने यह लीला की कि एक सोने का रथ प्रकट हुआ जो परिपूर्ण रत्नों और मोतियों से अलंकृत था सो शिव वृषभ से उतर रथ पर आरूढ़ हुये उस समय चारों ओर से जय २ का शब्द हुआ और देवपत्नियां स्तुति करने लगीं और विष्णु और हम भी स्तुति में प्रवृत्त हुये हरप्रकार का उत्सव हुआ ऐसे समयमें शिव ने रामचन्द्रकी ओर देखा और रामचन्द्र को शिर झुकाये देख तुरन्त रथसे उतर रामचन्द्रको रथपर बैठा लिया और वह धनुष् जिसको हर हाथ में लेकर प्रलय करते हैं रामचन्द्र को दिया और ब्रह्मा ने पाशुपतास्त्र और कृपा करके अपना तेजभी दिया फिर अक्षय तूणीर देकर रामचन्द्रके सब दुःख नष्ट करदिये और शिवने कहा कि यह बाण प्रलय करनेवाला है इसको किसी ऐसेही बड़े कार्यपर छोड़ना व जब प्राणों का संदेह हो तब चलाना कदाचित् इसके विरुद्ध और किसी समय इस को छोड़ोगे तो जानना कि प्रलयही होजावेगी तुम्हारा बड़ा आदर करके हमने तुमको यह बाण कृपा किया यह बाण सब शस्त्रों से श्रेष्ठ है फिर शिवने सब देवताओं से कहा कि तुम सब अपने २ शस्त्र रामचन्द्र को दो क्योंकि रामचन्द्र मेरे सबसे बड़े सेवक हैं और जो कि रावण बड़ा बलवान् है इसलिये तुम हमारी आज्ञा से वानर और रीछ आदि होकर रामचन्द्र की सहायता करो इस बात में मुख्य तुमलोगों का बड़ा लाभ है सो यह आज्ञा शिवकी सबने मानी और विष्णुने नारायणशर और ब्रह्माने बधदण्ड और इन्द्रने अग्निबाण इसीप्रकार सबने अपने २ बाण रामचन्द्रको दिये फिर रामचन्द्रने शिवकी स्तुति की और कहा कि समुद्र के पार मनुष्य का जाना कठिन है क्योंकि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसका चारसौ कोस का चौड़ान है कदाचित् पार लांघ भी जावे तो लङ्काका जीतना अति कठिन सिवाय इसके दैत्य बड़े बलवान् हैं उन को जीतना बड़े आश्चर्य की बात है और मुख्य करके जब कि ये सब आपके सेवक हैं फिर हम केवल दो मनुष्य और वे असंख्य क्यों कर जय पावेंगे शिवने कहा कि हम आप तुम्हारी सहायता करेंगे उनके मरनेका समय निकटही है तुम कुछ संशय मत करो क्योंकि वे धर्म से विरुद्ध होगये हैं यही उनके शीघ्रही मरनेका हेतु है वे तुम्हारी सीता को उठालेगये हैं ब्राह्मणों को नाना प्रकार के दुःख दिये हमने उनका पक्ष छोड़ दिया है और सब देवता जो किष्किन्धा नगरी में बन्दर का स्वरूप धार उपजे हैं उनकी सहायता से तुम समुद्र में सेतु बांधना और वेगही समुद्र के पार जा रावण का बधकर सीताको लाना रामचन्द्रने विनय की कि यह सब कार्य तो आपकी अनुग्रह से हो-जावेंगे पर मेरी इच्छा है कि जो आपभी अपने अंश से किसी को उत्पन्न करके साथ भेजें तो मेरा सर्वकार्य पूर्ण होगा और मुझको अपनी सिद्धि पर पूरा विश्वास होगा शिवजीने मानलिया और कहा कि रुद्र के अंश से हनुमान् का अवतार होचुका है वे हरतरह तुम्हारा काम पूरा करेंगे तुमको कुछ श्रम न होगा वही सर्वकार्य करलेंगे अ-धिक कहने से कुछ लाभ नहीं है हम हर तरह तुम्हारा काम पूरा क-रेंगे हमने अभीसे सब राक्षसों को मार रक्खा है तुमको केवल यश और कीर्ति दिलाना बाकी है ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! फिर शिवजी ने रामचन्द्र को अपनी गीता का ज्ञान दिया और आप अन्तर्धान होगये और रामचन्द्रने अगस्त्यके समीप जाकर यह सब वृत्तान्त कहा अगस्त्यजी अति प्रसन्न हुये और कहा कि तुम्हारा सर्वकार्य सिद्ध हुआ वास्तव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में जिसपर शिवजी प्रसन्न हैं उसका दुःख दूर होना क्या कठिन है तुम संसारमें पालन के निमित्त दूसरा शरीर हो और जो कि अब तुमने शिवजी से वरदान लिया तो अब तुम तुरन्त जाकर ऋष्यमूक पर्वत पर लक्ष्मीसहित स्थित होजावो थोड़े दिन वहां कालक्षेप करो वहां शिवजी वानर के स्वरूप से आकर तुमसे मिलेंगे उन्हींके द्वारा तुम्हारे सर्वकार्य पूरे होंगे रामचन्द्रने अङ्गीकार किया और ऋष्यमूक पर्वतपर जाकर हनुमान् से भेंट हुई उन्होंने रामचन्द्र के सब कार्य किये यहां तक कि रावण मारा गया और सीता को रामचन्द्र ने पाया इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मन्! मेरी इच्छा है कि हनुमान्जी का वृत्तान्त जन्म से बालक्रीड़ा और अन्य चरित्रों सहित सुनूं और यह भी कि हनुमान् ने रामचन्द्र की क्योंकर सहायता की ब्रह्माजी बोले कि अगले कल्प में शिवजी ने संसार के शुद्ध करने वाली लीला करने को वानरों के कुल में अपना रूप धारण किया इस तरह कि पहिला द्वीप जो जम्बू के नाम से प्रसिद्ध है और जिसके सम्बन्धी नवखण्ड हैं उन में से जिस खण्डका नाम किम्पुरुष है वहां केशरी नामक वानरों के राजा रहते थे वे शिवजी के बड़े भक्त सत्यवादी और निष्पाप थे उनकी स्त्री महासुन्दरी पतिव्रता अञ्जनी षोडश वर्ष की आयु को प्राप्त थी एकदिन अञ्जनी अपने सोलहों शृङ्गार किये और नाना प्रकार के उत्तम २ भूषण पहने पर्वत के एक शृङ्ग पर खड़ी हुई उस समय एकपवनका देवता समीर जिसका नाम प्रभञ्जन भी था अञ्जनी को देखकर मोहित हुआ और काम की दृष्टिसे अवलोकन कर अधीर हुआ सो अपना स्वरूप छिपा अञ्जनीके शरीर में प्रवेश करगया अञ्जनीने अपना शरीर कुछ भारी देखा पर इसका कारण न जान उसने केवल यह जाना कि मानो सिवाय मेरे पतिके और कोई दूसरा मनुष्य मेरे शरीर को स्पर्श कररहा है यह जानकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा कि तुम कौन हो जो हमारे शरीर को स्पर्श करते हो हे देवता ! मुझको मतछुवो पाप छोड़ प्रकट हो अपना स्वरूप मुझे दिखावो यद्यपि तुम कामसे भरे हुये हो पर हमारा पतिव्रत धर्म मत छुड़ावो जो तुम न मानोगे तो तुरन्तही जलकर भस्म होजावोगे यह अञ्जनी का वाक्य सुन प्रभञ्जन भयभीत हो अपना मुख्यरूप धारण कर सामने आखड़ा हुआ और कहा कि हम भलीभांति जानते हैं कि तुम पतिव्रत धर्ममें दृढ़ हो और पापरहित हो और अच्छे चरित्र करनेवाली हो और हम इन्द्रके भाई प्रभञ्जन नामक देवता हैं संसारका उपकार करते हैं और हम संसार भर में भीतर और बाहर सब जगह जाकर पवित्र रहते हैं और हमारे स्पर्शसे किसीको कुछ पाप नहीं होता हमने ब्रह्म सच्चिदानन्दके समान तुमको आकर दर्शन दिये हैं तुम कुछ संशय मत करो और सदाशिवजी के भजने में प्रवृत्त रहो उनकी इच्छा बड़ी बलवती है उसको कोई वर्णन नहीं करसक्ता यद्यपि हम कामवश तुम्हारे शरीर के भीतर प्रवेश करगये पर तुम मन वच कर्म से मुझ पर कुछ क्रोध मत करो मैं तुम्हारी बिनती करता हूं तुमको कुछ पाप न होगा और यह बात प्रकट है कि देवताओं की इच्छा फल दिये विना नहीं रहती इससे तुम्हारे एक बड़ा बलवान् पुत्र शङ्करके अंशसे उत्पन्न होगा जो शिवके समान बड़ा तेजस्वी होगा और हमारे समान वेगगामी और शत्रुओं के वधमें बड़ा चतुर होगा और तुम्हारे कुलका कोई कपि तुम पर व्यभिचारका दोष न रक्खेगा वह रामचन्द्र और सीता का खिलौना होगा और तुमको अति आनन्द देगा तुम्हारे तीनों प्रकारके ताप नष्ट होजावेंगे तुम उस बालक को शिवका अवतार जानना वह रामचन्द्रके कार्य पूर्ण करेगा और यह सब शिवजी की लीला जानना यह कह पवन देवता अन्तर्धान हुये उसके थोड़े दिनों के पीछे अञ्जनी गर्भवती हुई और पवन के आशीर्वाद से शिवजी अपने सर्वांश से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अञ्जनी के गर्भमें आकर स्थित हुये और अञ्जनी अपने गर्भ में शिव के अंशको समझकर अति प्रसन्न हुई दशमास के उपरान्त अञ्जनीके पुत्र उपजा जो महासुन्दर और तेजस्वी था तब सब देवताओं ने आकाश से आकर दुन्दुभी बजाई अप्सरों ने नाचा गन्धर्वोंने मङ्गल गीत गाये तीनों लोक में बालक के जन्म का आनन्द छागया और संसारके कष्ट सब नष्ट हुये ॥

चालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! उस समय एक बड़ा उपद्रव हुआ कि जब अञ्जनी ने देखा कि पवन के वचन के अनुसार पवनपूत में कोई शिवका मुख्य लक्षण नहीं है और उसका स्वरूप वानर के समान है तब उसने अतिदुःखी होकर उसको पर्वतके एक शिखरसे नीचे डाल-दिया इससे बड़ा शब्द हुआ और पर्वत खण्ड २ हो नीचे धस गया धरती कांपने लगी समुद्र सूखगया और तीनों लोक विकल हुये और हनुमान्ने पृथ्वीपर गिरकर आकाशकी ओर देखा और सूर्यके निक-लनेको देखकर जाना कि कोई पका हुआ फल है सो उसके निगलने की इच्छा की थी कि उसी समय उस स्थानपर राहु आकर हनुमान् के देखनेसे क्रोधित हुये परन्तु हनुमान्ने सूर्यके रथको चलनेसे रोक लिया और राहुको तृणवत् समझ उसकी ओरभी मुख फैला दौड़े राहु तुरन्त भागगये और हनुमान्ने बड़ा भयानक शब्द किया जिस से देवताओंके लोकमें हाहाकार मचगया और देवता आश्चर्यमें हुये सो इन्द्र ऐरावत हस्ती पर आरूढ़ हो वज्र हाथ में लिये उसकी ओर चले इतनेमें हनुमान् ने अपना स्वरूप कालके समान धारणकर सूर्य के पकड़ने को अपना मुख फैलाया पर जब इन्द्रको भी अपनी ओर आते देखा तो मुख फैला इन्द्रके पकड़नेको चला इन्द्रने क्रोधित होकर अपने वज्रसे हनुमान् को घायल किया और हनुमान् धरती पर गिर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पड़े हे नारद ! यह चरित्र शिवने इस लिये किया कि वज्रकी सिद्धि जाती न रहे और समीर अपने पुत्रको मरा हुआ जान रोनेलगा और शिवका स्मरण कर अतिदुःख से मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिरपड़ा और शिवकी स्तुति करने लगा उस समय सदाशिव ने आकाशवाणी में यह कहा कि तुम इतने दुःखी मत हो यह बालक हमारे अंश से उपजा है इसको मारनेवाला तीनों भुवन में कोई नहीं है और तुमभी आठ वसुवों में से हमारी देह हो तुमको उचित है कि अपनी श्वास खींचकर सब ओरसे अपने अंश अर्थात् वायुको खींच लो सब देवता अपने आप दुःखी होजावेंगे तुम भलीभाँति जानते हो कि भय बिन प्रीति नहीं होती यह आज्ञा पा पवन प्रसन्न हुआ और अपने अंशों को खींचलिया फिर शिवके पास आनन्दसे बैठगया और वायुके इकट्ठे होनेसे सब देवताओंके उदर फूलगये संसारभर विकल हुआ और देवता मुनि आदिने आकर इस अकस्मात् दुःखका वर्णन किया हम सब को साथ लेकर क्षीरसागर में गये और विष्णु से सर्व वृत्तान्त कहा विष्णुने शिवका ध्यानकर हम सबसे कहा कि इन्द्रने बहुत बुरा कर्म किया है जिसके कारण पवनने शिवकी प्रेरणा से ऐसा उपद्रव मचाया है देखो इन्द्र ने शिवपर वज्र चलाया है उचित है कि हम सब अब तुरन्त चलकर शिवकी शरण में जावें यह कहा और हमारे और देवताओं सहित शिवके पास गये और स्तुति और प्रणामके उपरान्त कुछ लज्जाके साथ देवताओंका उपद्रव सुनाया शिवने हँसकर कहा कि बहुत कारणों और बहुत कार्योंके लिये हनुमान् उपजे हैं वे हमारे अंश और पवनके पुत्र हैं उनको इन्द्र ने मूर्खतासे मारा है उत्तम है कि पहिले पवनको प्रसन्न करो फिर हनुमान्के पास चलकर उनको आशीर्वाद दो सो ऐसाही किया हनुमान् शिवकी कृपादृष्टि के पड़तेही उठ खड़े हुये उनको देखकर सब देवता और मुनिआदि और सबसे अधिक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पवन प्रसन्न हुये और शिवकी आज्ञा को स्मरण कर सब देवता आदि हनुमान्को वर देनेलगे ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! सबसे पहले विष्णुने पवनकी ओर देख हनुमान्को यह वर दिया कि तुम्हारा बालक असंख्य बलिष्ठ होकर इन्द्रआदि सकल देवताओं के कार्य के निमित्त हमारे दुःखों के समूहको दूर करे उसके ऊपर सुदर्शनचक्र भी निष्फल होवे हमने कहा हे पवन! तुम्हारे पुत्रको कोई हमारी फांसीसे भी न बांध सकेगा वह तीनोंलोक में निर्भय रहकर सबके दण्डसे बचा रहे सूर्यने कहा कि हम से भी अधिक इसका तेज और बल हो हम इसको शिव का अवतार समझ सब विद्या पढ़ादेंगे इन्द्रने कहा कि इसके शरीरमें वज्रभी अपना फल न करेगा और जोकि यह कुलिश अर्थात् वज्र से घायल हुआ है इससे इसका नाम हनुमान् हो अग्निने कहा कि इसकी देहमें अग्नि अपना प्रभाव न करे यमराज बोले कि हमारा दण्ड भी इसपर निष्फल होगा वरुण बोले कि यह जलमें कभी न डूबेगा निर्ऋति बोले कि इस पर हमारा शस्त्र कुछ काम न करे पवनने कहा कि यह हमारा पुत्र हमसे भी अधिक हो कुबेर बोले कि इसके सर्वकार्य पूर्ण हों ईश अर्थात् रुद्र बोले कि यह सबसे अधिक बलवान् होगा चन्द्रमाने कहा कि इसको तीनोंलोकमें अधिक आनन्द प्राप्त होगा शेष आदि जो नागोंमें सबसे बड़े हैं उन्होंने कहा कि इस पर कोई विष फल न करेगा और अन्यदेवता बोले कि इसको हमारे शस्त्रों से कुछ भय न होगा मुनीश्वर बोले कि यह बालक ऊर्ध्वरेता हो और लोहेके समान इसका शरीर अतिदृढ़ हो किसीके हाथसे न मरेगा यह शिवका अवतार है रामचन्द्र के कार्यों को पूराकर उनके दूतके नामसे प्रसिद्ध होगा और उनके दुःख दूर करेगा यह सुनकर विष्णु और हम सबोंने हनुमान्को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने शरीर से लगा लिया और सबने पवनके ऐसे बालकके पानेके कारण बड़ी प्रशंसा की और फिर सबने हनुमान्‌जीकी स्तुति की तब शिवने कहा कि रामचन्द्रके अवतार के लिये हमने कपिका अवतार लिया है सो रामचन्द्र के कार्यकर उनका प्रेम हम सबको दिखादेवेंगे कि रामचन्द्र हमको कितने प्यारे हैं हमारे इस प्रकारके अवतार धारण करने से चाहे हमको कोई हँसे या कुछ कहे पर हमको अपने भक्तों के कार्य करने अवश्य हैं फिर शिवने पवनसे कहा कि हम प्रतिदिन तुम्हारे पुत्र की रक्षा करेंगे उस पर कुछ कष्ट न होगा और हमारे त्रिशूल से भी उसकी मृत्यु न होगी यह लीलाकर शिव और सब देवता अन्तर्धान होगये ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! सब देवताओंके अन्तर्धान होने के अनन्तर पवन हनुमान् को गोद में लेकर अञ्जनी के पास गये और हनुमान् को अञ्जनी की गोद में देकर सब कथा कह अन्तर्धान हुये अञ्जनी ने हनुमान् को अपने स्तनोंसे दूध पिलाया और केशरी ने भी हनुमान् को देखकर बहुत आनन्द मनाया सो हनुमान् के खेल कूदको देखकर दोनों प्रतिदिन प्रसन्न रहाकरते थोड़े दिनों में हनुमान् इतने बलिष्ठ हुये कि पृथ्वीसे उड़कर आकाश में जाकर फिर धरतीमें कूद पड़ते थे कभी पवन और कभी सूर्य के पास जाकर खेल करते थे और सितारों को खिलौना समझ पकड़ लेते थे तब पवन मना करता और वे चन्द्रमा को चटुवाके समान चाटते और नट के समान आकाश में नाचते कभी गङ्गा जो आकाशमें हैं उसमें स्नानकर अपनी पूंछ फटकारते और वह धरती तक आजाती और पर्वतों के तृण उड़जाते थे ऐसे चरित्र हनुमान् के देखकर देवता और मुनि अति-आश्चर्य में होते थे एक दिन हनुमान् मुनियोंके यहां गये पर किसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने उनको न पहिंचाना और उनके पराक्रम के खेल देख कहनेलगे कि यह कौन और किसका पुत्र है अभी तो यह दशा है आगे न जानिये क्या करेगा इससे उचित है कि इसको सब मिल शाप दें कि भय जातारहे ऐसा विपरीत विचार मन में लाकर मुनियों ने हनुमान् को यह शाप दिया कि हे वानरबालक, मूर्ख! अपने बलपर इतना अहंकारी है कि उचित और अनुचित को विचार नहीं करता और तू प्रेतों और भूतोंके समान कार्य करता है हमारे स्थानों में आकर उपद्रव करता है तेरी बुद्धि जातीरही इससे तुम्हारा बल तुमको विस्मरण होजावे यह शाप हनुमान् ने सुना और कुछ विचार न किया इतने में आकाशवाणी हुई कि हे मुनियो! जो शाप तुमने हनुमान् को दिया यह बात तुमने अच्छी नहीं की यह हनुमान् शिवका अवतार है तुम अपने तपका अहंकार करके भूल गये यह रामचन्द्र के निमित्त अवतार हुआ है अब विष्णु के कार्य कौन करेगा? इससे तुम अपने शापको खण्डन करो यह सुन सब मुनीश्वरों ने शिवका अवतार पहिंचाना और कहा हे शिवके अवतार, हनुमान्! हमारे अपराध क्षमा करो सो अब हम अपना शाप इसतरह खण्डन करते हैं कि जब तक तुमको रामचन्द्र न मिलेंगे तबतक तुम इस अपने बल को भूले रहोगे यह कहा और फिर बोले कि अब तुम सूर्य के पास जाकर विद्या सीखो सो हनुमान् ने माता पिता के समीप जा यह सब चरित्र कहा और माता पिता की आज्ञा ले सूर्य के पास जा विद्या पढ़नेलगे सो थोड़े दिनों में सब विद्या सीख गये फिर सूर्य से कहा कि जो उचित हो वह हम से गुरुदक्षिणा मांगलो सूर्यने हनुमान्को शिवका अवतार जान स्तुति के अनन्तर कहा कि हे हनुमन्! हम तुम्हारा मुख्य वृत्तान्त जानते हैं तुम शिवका अवतार हो तुमने रामचन्द्र के लिये अवतार धारण किया है सो तुम पम्पापुर में जाकर बालि और सुकण्ठ जो दोनों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाई हैं उनके पास रहो और सुग्रीव जो हमारा पुत्र है उसका पक्ष करना वहीं तुमको रामचन्द्र आकर मिलेंगे हमको यही गुरुदक्षिणा चाहिये यह सुन हनुमान्ने माता पिताके पास आकर यह सब वृत्तान्त कहा वह सुन प्रसन्न हुये और कहा कि तुम शिवअवतार होकर हमारे घर उपजे हमारे धन्य भाग्य हैं हम पर कृपा रखना कि हम पर माया अपना बल न करे अब तुम जाकर अपने गुरुकी आज्ञा पालन करो क्योंकि जिस कार्य को उपजे हो उसे पूर्ण करना उचित है यह आज्ञा माता पिता से पा हनुमान् अतिप्रसन्न हुये ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हनुमान् माता पिता की आज्ञा पा उनको प्रणामकर पम्पापुर को गये चलने में कुछ दुःख न हुआ और गङ्गाको सुगमतापूर्वक उल्लंघनकर और चित्रकूट को प्रणामकर रेवा और नर्मदा से पार हो अगस्त्यमुनिके समीप जा उनकी संगति की और उन्हीं से रामचन्द्र की भक्तिकी आज्ञा पाकर पम्पापुर पहुँचे और घरके विवाद से सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर चलेगये जहां हनुमान्को भी जानापड़ा जब रामचन्द्र और लक्ष्मण सीता के वियोग में दुःखी होकर उनके निकट पहुँचे तो हनुमान् अगवानी कर उनको ऋष्यमूक में लाये और सुग्रीवके साथ मित्रता कराय हर प्रकार से रामचन्द्र को प्रसन्न किया और रामचन्द्र के हाथ से बालि का बध कराया और सीता को ढूंढ़ने लगे और समुद्र से पार उतर लङ्का में पहुँचे और बड़ी लीला कर रामचन्द्र को सीता का हाल सुना कर धैर्य दिया और सीतासे बिदा होकर रावणकी पुष्पवाटिका को उजाड़डाला और सब दैत्यों को मार अक्षयकुमार का भी बध किया और अतिसुगमतासे लङ्काको जलाया जिसमें विष्णुके भक्तों के घर बचगये और रावणके गर्वको तोड़ समुद्र से उतर वानरों के यूथों से सब वृत्तान्त वर्णन किया और मार्ग में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उद्यानों को उजाड़ते रामचन्द्र के समीप पहुँचे और सीता की चूड़ा-
मणि दी रामचन्द्र ने यह दशा देख कहा कि हे हनुमन्! शिव के
अवतार तुम हर प्रकार हमारे हितैषी हो हमारे अधीन हो तुमने हमारे
दुःख दूर किये खेद है कि हमने अज्ञान अवस्था में तुमको अपना
दूत बनाया यह अपराध क्षमा करना यह दशा देख सबको ज्ञान हुआ
और सबने हनुमान् को प्रणाम किया हनुमान् ने जाना कि यह सब
हमको शिव का अवतार समझ लेंगे तो फिर आज्ञा देने में ढील
करेंगे तो कोई कार्य न होगा रघुवीर का कार्य क्यों कर पूरा होगा सो
ऐसी माया की कि सबको यह बात भूल गई उनको इतना स्मरण
रहा कि यह बड़े बलिष्ठ हैं फिर रामचन्द्र ने हनुमान् को अपने अङ्ग
से लगालिया और लङ्का जानेकी तय्यारी होगई और समुद्र के तट
पर पहुँचे समुद्र को देख आश्चर्य में हुये पर किसीको श्रम करना न
पड़ा महावीर ने सेतु बांध दिया उसी स्थान पर रामचन्द्रने शिवका
लिङ्ग स्थापित किया और उसका नाम रामेश्वर रक्खा उसी सेतु के
मार्ग से श्रीरामजीने अपनी सेनासहित लांघकर रावण पर चढ़ाई की
दोनों ओर बड़ा युद्ध हुआ हनुमान् अकेले बहुतसी दैत्यसेना मार
रामचन्द्रकी सेना को बचाया जब लक्ष्मण शक्ति से घायल हुये तब
रामचन्द्र भी शोकसे दुःखी हुये जो कि रातके बीतने पर लक्ष्मणके
जीनेमें सन्देह था सो तुरन्त हनुमान् जाकर दैत्यों को जीत ओष-
धियों का पर्वत उठालाये और लक्ष्मण को जिला दिया और इतनी
रामचन्द्र की सहायता की कि रावण का सब तेज नष्ट होगया और
अपने कुल परिवार पुत्र कलत्रों सहित रावण का बध किया जब
युद्धस्थल से महिरावण राम और लक्ष्मण को पकड़ लेगया तब
रामचन्द्र ने हनुमान् का स्मरण किया सो हनुमान् ने जाकर महि-
रावण की भुजा उखाड़ी फिर सबको जीत रामचन्द्र सीता को ले

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अयोध्या में आये इसी प्रकार महावीरजी ने बहुत से चरित्रकर दैत्यों का बध किया यह चरित्र जो कोई सुने सुनावेगा वह लोक परलोक में बड़ा आनन्द पावेगा ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

वेश्यानाथ अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अब हम वेश्यानाथ अवतार का बखान करते हैं नन्दीग्राम जो संसार में प्रसिद्धहै वहां नन्दानामी वेश्या जो अतिसुन्दरी अप्सराओंसे भी अधिक रहतीथी गानविद्या में अतिप्रवीण शिवकी भक्ति में अति चतुर थी और प्रतिदिन भस्म धारती और भूषणों के बदले रुद्राक्ष पहनती और शिवका यश गाती उसके घरमें एक बन्दर और एक कुत्ता था उसने उनके शरीरमें भी रुद्राक्ष पहनाया और दोनों को शिवके मन्दिर में नचाती आप ताल देकर गाती इसी प्रकार वह नित्यप्रति उत्सव रचती जब कुछ समय बीता तो शिव प्रसन्न हुये और वेश्यानाथ का तनुधार उसकी परीक्षा के निमित्त त्रिपुण्ड्र मस्तक में धारा और रुद्राक्ष भूषणों के बदले पहिने निदान हर प्रकार शिव के वस्त्राभूषणों से अपने को सजाया और शिव २ कहते हाथ में कङ्कण पहनकर महानन्दा के घर आये ऐसे वस्त्र देख महानन्दाने बड़े आदरसे वेश्यानाथको ठहराया और हाथमें जड़ाऊ कङ्कण देख लेनेकी इच्छा की और महालोभ से कहनेलगी कि तुम्हारे हाथ के कङ्कण को देखकर हमारी बुद्धि जातीरही है यह तुम्हारा कङ्कण स्त्रियों के योग्य है वेश्यानाथ ने कहा कि तुम इसका मोल क्या दोगी महानन्दाने कहा कि हमारे कुलमें व्यभिचार पाप नहीं है बरन यही कुलधर्म है जो तुम यह कङ्कण हमको दोगे तो मैं तीन राततक तुम्हारी स्त्री होकर विहरूंगी यह सुन वेश्यानाथ बहुत हँसकर बोले कि जो तुमने कहा उसको हमने ठीक समझा यह कङ्कण लो तुम तीन दिन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तक हमारी स्त्री होचुकी हमारा हृदय तीनबार छुवो कि तुम्हारी प्रतिज्ञा पकी समझी जावे महानन्दाने माना और तुरन्त वह कङ्कण देदिया फिर वेश्यानाथ ने बड़ा आनन्द मान अपना सुवर्ण का लिङ्ग जो रत्नोंसे जड़ाथा महानन्दा को अपनी स्त्री समझ सौंपा और कहा कि इसको रक्षापूर्वक रखना मुझको यह प्राणसे भी अधिक प्रिय है इसके न होनेसे जीनेकी आशा नहीं है सो महानन्दाने वह लिङ्ग लेलिया और शिवमन्दिर के भीतर उसको स्थापित कर दिया फिर अपने घर में वेश्यानाथ के साथ शृङ्गारकर आधीरात तक बातें करतीरही फिर शिवने यह चरित्र किया कि अकस्मात् अग्नि उपजकर शिवमन्दिर में लगगई वायु वेग से चली और वह लिङ्ग की मूर्त्ति जो वेश्यानाथ ने सौंपी थी जलगई पर कुत्ता और बन्दर दोनों बचेरहे यह दशा देख दोनों महानन्दा और वेश्यानाथ अतिदुःखी हुये और महानन्दा कुछ भेद न जानकर रोनेलगी और वेश्यानाथने भी रोकर कहा कि हे वेश्या ! अब हम जीते न रहेंगे क्योंकि मैं पहिले कहचुकाहूं कि जब यह मूर्ति न रहेगी तो मैं न जीऊंगा हमारा स्वामी जो जलगया तो हमारे जीने पर धिक्कार है हमारे लिये चिता बनाओ जो ब्रह्मा विष्णु भी आकर हमको निषेध करेंगे तौभी हम न मानेंगे ऐसी हठको देख महानन्दाने अति लज्जापूर्वक रोते पीटते चिता बनाई और वेश्यानाथ सबके देखते २ उस चितामें आग जला उसमें बैठ गये तब महानन्दा ने सबको बुलाकर कहा कि मैं कङ्कण लेकर तीनदिन के निमित्त इसकी स्त्री हुई थी इस समय में हमारा यह पति जला जाता है मैं भी अपने धर्म के स्थित रखने के लिये इसके साथ सतीहूँगी यह सुन उसके बन्धुओं ने मना किया पर उसने कुछ न सुना और अपना धन ब्राह्मणों को दे शिवका ध्यानकर तीन परिक्रमा करने के अनन्तर चाहा कि चिता में प्रवेश करूं कि दीनदयालु शिवजी अपने मुख्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रूप से प्रकट हुये और रोंका और अपनी कृपादृष्टि से उसकी ओर देख उसके पाप नष्ट करदिये यह रूप देख महानन्दा आश्चर्य में हुई शिव हँसे और हाथ पकड़ कहा कि तुम कुछ आश्चर्य मतकरो हमने तुम्हारी परीक्षाके निमित्त यह लीला की है तुम्हारा ऐसा भाव देख हम प्रसन्न हैं जो इच्छा हो वह वर लो महानन्दा बोली मुझे तीनों लोकके आनन्दसे कुछ काम नहीं केवल अपने चरणोंकी भक्ति कृपा कर कुल परिवारसहित मोक्ष दे अपने लोक में स्थान दीजिये कि आवागमनसे छूटूं यह सुन शिवने गणोंका स्मरण किया वह विमान ले आये शिवने अपने सामने सब समेत महानन्दा को विमानपर आरूढ़ कराया और बड़े उत्सव से अपने लोकमें भेज दिया वहां वे सब गिरिजा की सेवा करनेलगे यह पवित्र कथा सब पापों को दूर करनेवाली और दोनों लोक का आनन्द देनेवाली है और हर प्रकार की चिन्ता दूर कर अतिआनन्द कृपा करती है॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

द्विजेश अवतार का वर्णन॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम द्विजेश अवतार का वर्णन करते हैं राजा भद्रायुष जिसके लिये शिवने ऋषभका अवतार लेकर उसकी रक्षा और पालन किया और जिसका हम वर्णन कर चुके हैं सो भद्रायुष के धर्म की परीक्षा के निमित्त दूसरीबेर शिवने द्विजेश अवतार धारण किया शिव अहंकार के भङ्ग करनेवाले और भक्तों को मुक्ति देते हैं वे नाना प्रकार के रूप धारणकर भक्तों को पालते और शत्रुओं के वध का कारण होते हैं शिवके समान तीनों लोक में और कोई स्वामी नहीं वेद और पुराण सब उनको सब से श्रेष्ठ कहते हैं उन्हींके अधीन तीनोंलोक और देवता और दैत्यादि सब हैं हे नारद! राजा भद्रायुष अति प्रतापवान् होकर शिवकी पूजा में अति विख्यात

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआ उसने अपने आपको बन्धिसे छुड़ालिया और ऋषभ से वर पा सब शत्रुओं को जीत आप राज्य करने लगा और राजा चन्द्राङ्गद की कन्या कीर्तिमालिनी के साथ उसका विवाह हुआ एक दिन भद्रायुष अहेर खेलने के लिये रानी सहित वन में गये और वसन्त ऋतुभर वहां रुचिपूर्वक विहार किया ऐसे समय में शिवने चाहा कि राजा की परीक्षा करें और फिर शिवने स्त्री साहित ब्राह्मण का स्वरूपधार एक माया का सिंह रचा जो ब्राह्मण और ब्राह्मणी पर लपका और वे दोनों भयभीत होकर भागे और राजा भद्रायुष को सुनाय ज़ोरसे रोनेलगे और भद्रायुषके पास गिरते पड़ते आकर कहा कि हे राजन्! हमको बचालो हम तेरी शरण में आये हैं यह सिंह जो चला आता है हमारे भोजनकी इच्छा रखता है इससे हमको बचावो और यह हमको खाने न पावे यह सुन राजा भद्रायुषने अपना धनुष उठालिया अभी तीर चलाया भी न था कि सिंहने ब्राह्मण की स्त्रीको पकड़ लिया स्त्री हाय २ करके बहुत रोई और सिंहने निर्भय होकर उसको खालिया यद्यपि राजा ने अपने बहुतसे बाण उसपर मारे पर उसे कुछ दुःख न हुआ और वहां से निकल वन को गया ब्राह्मण ने संसारी रीति के अनुसार बड़ा खेद किया और देरतक रोता रहा और राजा भद्रायुष से कहा कि हे राजन्! तेरे सब बाण और शस्त्र निष्फल हुये तुझे धिक्कार है द्वादश सहस्र हस्ती का बल क्या हुआ और तेरा तेज जलकर भस्म होगया वह तेरा खड्ग और शंख और कपाल कहां चलागया और तेरा भीष्मप्रभाव क्या हुआ और तेरा विद्याबल कहां गया क्या उनमें से कुछ भी नहीं है न कुछ तेरे पास उपाय है क्या कोई भी युक्ति तेरे पास सिंहके निवारण की न थी वेदों में लिखा है कि क्षत्रिय ब्राह्मणों की रक्षा करें जब अपना कुलधर्म न रहा तो वह मनुष्य क्या जीता है यह सुन राजा बहुत पछिताया और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुत शोच विचारकर दीन होगया और कहा वास्तवमें हमारा सब बल नष्ट होगया हमारे भाग्य लौटगये मुझे बड़ापाप हुआ हमारा कुल-धर्मभी जातारहा मैं जानता हूं कि मेरा राज्य नष्ट होगया इससे उचित है कि इस ब्राह्मण को प्रसन्न करूं चाहे इस इच्छा में प्राणभी जावें यह विचार राजाने ब्राह्मण के चरण पकड़ कहा कि अब तुम दुःख मत करो मुझपर अनुग्रहकर जो इच्छा हो मुझसे लेलो मैं अपना सर्वराज्य स्त्री तुमको अर्पण करताहूं और मैं भी सेवा के निमित्त उद्यत हूं ब्राह्मणने कहा कि अन्ध को दर्पण और भीख मांगनेवाले को घर और मूर्ख को पुस्तक और स्त्रीरहित पुरुषको धन और द्रव्यसे क्या प्रयोजन है जब मेरी स्त्री नहीं है तो मैं राज्यसे क्या प्रयोजन रखताहूं मुझको अपनी स्त्री दो और कुछ नहीं चाहताहूं भद्रायुषने कहा कि यह कौन धर्म है तुमने इसको कहांसे सीखा क्या तुम्हारे गुरु ने यही धर्म तुम्हें बताया तुम नहीं जानते कि परस्त्री की संगति दोनों लोक में तीनों ताप देती है संसारमें सब वस्तुवों के दाता हैं कइयोंने अपने शरीरके देनेमें भी शङ्का नहीं की पर स्त्री के देनेवालेको नहीं देखा क्योंकि परस्त्री के साथ भोग करने से जो पाप होताहै वह किसी उपाय से नहीं जाता ब्राह्मण ने कहा कि हम ब्राह्मण के वध से जो पाप होता है उसको भी दूर करसक्ते हैं परस्त्रीके साथ भोग करना क्या ऐसा बड़ापाप है इससे जो तुम को नरकसे बचनेकी इच्छा हो तो अपनी स्त्री हमको दो यह वचन सुन राजाने मनमें अतिभयसे विचार किया कि रक्षा न करने के बराबर राजा के लिये दूसरा बड़ा पाप नहीं है इस लिये स्त्री के दान से दूसरे बड़े पाप से बचना उचित है स्त्रीके दानके उपरान्त मैं भी अग्नि में जल जाऊंगा यह शोच तुरन्तही अपनी स्त्री ब्राह्मण को देदी और आप शुद्ध होकर देवताओं को प्रणाम किया और शिवजी को स्मरण कर शिवजीका नाम जपा और अग्निकी प्रद-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्षिणाकर चाहा कि उसके भीतर गिरूं तो तुरन्तही शिवजी अपने मुख्यलक्षणों से प्रकट हुये जिनको देख भद्रायुष अति प्रसन्न हुआ आकाश से पुष्पों की वर्षाहुई विष्णु और हम देवताओं सहित वहां पहुँचे राजाने स्तुति की शिवजीने प्रसन्न होकर कहा कि वर मांगो हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त ब्राह्मण का रूप धारा वह स्त्री जिसको सिंहने खाया गिरिजा है हमने माया का सिंह रचा था अब तुम कुछ सन्देह मत करो तुम हमारे परमभक्त हो भद्रायुष बोले कि हमको तो यही बड़ावर मिला है कि तुमने प्रकट हो दर्शन दिये पर यह वर मांगताहूं कि मुझको अपने कुल सहित अपना गण बनालो कि तुम्हारी सेवामें प्रवृत्त रहूं इसी शरीरसे हम आपके लोकको चलें रानी ने कहा कि मेरी यह इच्छाहै कि मेरे माता पिताभी आपकी सेवामें पहुँचें शिवजी ने माना फिर यह वरदे शिव अन्तर्धान हुये और राजा भद्रायुष बहुत दिनोंतक राज्यकर उसी शरीरसे अपनी स्त्री माता पिता और पुत्र सहित शिवलोकमें पहुँचा इसी प्रकार यही बात राजा चन्द्राङ्गदको स्त्री सहित प्राप्त हुई जो इस चरित्रको पढ़े व सुनेगा वह शिवके लोक में पहुँचेगा अठहत्तरवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

जितनाथ अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अब हम जितनाथ अवतार का वर्णन करते हैं अर्बुदाचल पर्वतमें एक भील अपनी स्त्री सहित रहता वह शिवजीका बड़ाभक्त था एक दिन वह भील जीविका के निमित्त कहीं बाहर चलागया स्त्री को घर में छोड़ा शिवजीने परीक्षा के निमित्त यती का रूप धारा और संध्या को भीलके घर में गये तब भील भी आया और यती को देख प्रसन्न हुआ और प्रणाम के उपरान्त पूजा की तब यती ने कहा कि हे भील ! कोई अच्छा स्थान हमारे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहने को दो हम केवल रातभर रहकर चलेजावेंगे भीलने कहा कि हमारा घर बहुत तङ्ग है सिवाय दो मनुष्यों के तीसरा नहीं रहसक्ता यह सुन यती चलने लगे भील की स्त्रीने भीलसे कहा कि यतीके ठहरने के लिये स्थान दो नहीं तो बड़ा अधर्म होगा तुम दोनों घर के भीतर जाकर रहो मैं बाहर जारहूंगी तब भील ने कहा कि स्त्री का बाहर रहना और यती का फिर जाना दोनों बुरी बातें हैं उचित यह है कि मेरी स्त्री और यती घर के भीतर रहैं मैं बाहर अपना निर्बाह करलूंगा सो भीलने ऐसाही किया कि दोनों को घर में रख आप बाहर रहा और शस्त्र बांध रात भर घर के चारों ओर पहरा देता रहा उस रात्रिको एक महाभयानक सिंह ने अपने और सिंहों समेत आकर भील को घेरलिया भीलने उनके साथ युद्ध कर बहुतेरों को मारडाला निदान सिंहोंने भील को मार उसका सब मांस खालिया केवल हड्डियां पड़ी रहगईं जिनको देख यती ने बड़ा खेद किया भीलनी ने कहा कि तुम कुछ चिन्ता मत करो वह बहुत धन्य है जिसने ऐसी मृत्यु पाई शिवजी अति प्रसन्न होंगे मैंभी चिता लगाकर सती हूंगी क्योंकि स्त्रियोंका यही धर्म है सो भीलनी चिता बना अपने पतिकी हड्डियोंके साथ अग्निमें बैठगई तब सब देवता वहां आये और यती ने भी अपना स्वरूप मुख्य लक्षणों समेत बदला और कहा कि तुम धन्य हो २ हम प्रसन्न हैं जो चाहो वर लो भीलकी स्त्री प्रसन्नता से मूर्च्छित हुई उसकी जिह्वा से कुछ न निकला तब शिवजी बोले कि हे भीलनी ! वर मांगले फिर कहा कि हमारा यती का स्वरूप हंस होकर तुम दोनों की भेंट करादेगा तुम दोनों दूसरा शरीर धारण कर बड़ा आनन्द पावोगे इस तरह कि तेरा पति मगधदेश में राजा वीरसेन का पुत्र हो नल के नामसे प्रसिद्ध होगा वह पृथ्वीभर का स्वामी होगा और तुम राजा भीम जो मद्रदेश का स्वामी है उसकी पुत्री हो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर दमयन्ती के नाम से विख्यात होगी तुम दोनों परस्पर विवाह कर संसारी भोग भोगकर अन्त में मुक्ति पावोगे यह कह शिव तुरन्त अन्तर्धान होगये और भील राजा नल होकर तीनों लोक में प्रसिद्ध हुआ और भीलनी दमयन्ती हुई उसी यतीके रूप हंसने शरीर धार नलका विवाह दमयन्ती से करादिया उनके समान किसीने राज्य नहीं किया दोनों बड़े शिवभक्त हुये उनसे इन्द्रसेन राजा हुआ इन्द्रसेन से चन्द्राङ्गद जो शिवका बड़ाभक्त था उसकी स्त्री का नाम सीमन्ती था वह अपने पतिसे भी अधिक शिवकी भक्ति करती और सोमवारको व्रत रख शिवको पूजती और ब्राह्मणों को स्त्री सहित शिव और पार्वती जान बहुत प्रेम से सेवन करती यह कथा प्रसिद्ध है यह यतीका अवतार अतिपवित्र है और हंस अवतारका चरित्र भी बड़ा शुद्ध है जो इन दोनों अवतारोंकी कथा सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसको दोनों लोकमें आनन्द मिलकर मुक्ति होगी उन्नासीवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

कृष्णदर्शन अवतारका वर्णन ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अब हम कृष्णदर्शन अवतार का वर्णन करते हैं सूर्यके पुत्र मनुके इक्ष्वाकुआदि दश पुत्र उपजे नवां पुत्र मनुका जिसका नाम वह्निक था वह विद्या पढ़नेको गुरु के यहां गया और बहुत समयतक गुरुके यहां रह विद्या पढ़ता रहा इतने में वह्निक के न होनेपर घर में इक्ष्वाकुआदि सब भाइयोंने जुदा २ होकर अपने पिता के धनको बांट लिया पर वह्निकका कुछ भाग न लगाया जब वह्निक घर आया और सबको अपना २ भाग लिये देखा तो उनसे पूछा कि हमारे भाग में क्या २ आया है क्योंकि हम भी भाग पानेके योग्य हैं भाइयों ने उत्तर दिया कि बांटने के समय तुम्हारा भाग हम सब भूल गये अब भाग नहीं मिलसक्ता हमने पिताको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारे भाग में दिया उन्हीं से ले लो यह सुनकर वह्निकने अति आश्चर्यपूर्वक अपने पितासे कहा कि भाइयोंने हमें भाग न दिया कहा कि अपने पिताको अपने भागमें लो इससे मैं आपके पास आयाहूं यह सुन मुनि अचम्भाकर चुप हो रहे और अपने पुत्रको धर्म में दृढ़ समझ शिवजीका ध्यानकर कहा कि उनके वचन दुःखदायक हैं उनको तुम मत मानो मैं कोई ऐसी वस्तु नहीं हूं कि जिससे तुमको आनन्द हो या तुम्हारे खाने पीने में आऊं उन्होंने तुमसे बड़ाछल किया जो मुझे तुम्हारे हिस्से में दिया पर जो उन्होंने मुझे तुम्हारे भाग में दिया तो बहुत अच्छा हम सदाशिवजी का ध्यानकर तुमको उपाय बताते हैं कि अङ्गिरस मुनि एक बड़ाभारी यज्ञ कररहे हैं उनको छःदिनसे यज्ञकी युक्ति भूलगई है जिससे यज्ञ पूरा नहीं होता इसलिये तुम वहां जाकर उनको उपदेश करो वे तुम्हारे उपदेश से यज्ञ पूर्णकर जो धन कि यज्ञसे शेष रहेगा वह सब तुमको देवेंगे सो वह्निकने ऐसाही किया और अङ्गिरसमुनि का यज्ञ दो सूक्त पढ़कर पूर्ण कराया अङ्गिरस शेषधन वह्निकको दे आप वैकुण्ठको चलेगये पर जब वह्निक उस धनको लेनेलगे तो शिवजी ने यह चरित्र किया कि अति उत्तम सुन्दरस्वरूप धारे कृष्णदर्शन के नाम से प्रसिद्ध हो परीक्षा के निमित्त वह्निक के पास आ कहा कि तुम कौन मनुष्य बुद्धिहीन हो हमारा धन लेते हो तुमको किसने भेजा है सच सच कहो वह्निक बोले कि अपने पिता की आज्ञासे हम यहां आये हैं वैकुण्ठके जानेके समय अङ्गिरस ने शेष धन हमको दिया है यह सुन कृष्णदर्शनने बड़ा झगड़ा किया कहा कि तुम्हारा पिता अतिधर्मवान् है तुम उसके पास जाकर पूछो जो वह कहेगा हम मानेंगे सो वह्निकने फिर मुनिके पास जाकर कहा कि हमको ब्राह्मण धन देकर आप वैकुण्ठवास हुआ पर एक मनुष्य उत्तर से आकर वह धन हमको लेने नहीं देता वह कहता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है कि यह धन मेरा है तुझे किसने दिया है जब मैंने आपका नाम बताया तो कहा कि उनके पास जाकर पूछो जो कहेंगे तो मानूंगा तब मुनि ने आश्चर्य कर शिवका ध्यान किया और शिवजी की लीला वह्निक को बताई फिर वह्निक से कहा कि वह सदाशिवजी हैं जब यज्ञकी शेष सामग्री रहजाती है तो वह सदाशिवजीकी कहीजाती है वे रूप धार तुम पर अनुग्रह करनेको आये हैं तुम जाकर तुरन्त उनकी सेवाकर उनको प्रसन्न करो वे सबके स्वामी हैं जिनका ब्रह्मा विष्णुभी ध्यान करते और सब देवता मुनि और सिद्ध चारण सेवासे मनोरथ पातेहैं यह कह मुनि अपने वह्निक पुत्र सहित तुरन्त वहां गये और वह्निक ने हाथ जोड़ विनती की कि हमारे पिता ने तुमको जान लिया कि तुम सदाशिव हो तीनोंलोक सब तुम्हारे हैं मैंने आपको नहीं जाना और तुमसे तकरार की हमारे अपराध दूर करो और हम पर प्रसन्न होकर सब धन लेलो फिर श्राद्धदेव मुनि वह्निक के पिता ने हाथ जोड़ बहुत स्तुति की इतने में विष्णु ने हम और सब देवताओं समेत आकर शिवजी की स्तुति की और ऐसे स्वरूप को देख सबने बड़ा आनन्द मान बड़ा उत्सव किया फिर उसी कृष्णदर्शन शिव अवतारने वह्निक से कहा कि हम तुम्हारी सत्यता देखकर बहुत प्रसन्न हुये हमने सब धन तुमको दे दिया तुम इसको लो और तुम अपने पितासहित मुक्ति पावोगे तुमको बड़ा ज्ञान प्राप्त होगा यह कह अन्तर्धान हुये और सब देवता आदि भी अपने २ स्थानों को चले गये और श्राद्धदेव मुनि वह्निक सहित अपने स्थानमें पहुँचे सो वह्निक चक्रवर्ती राजा हुआ और उसने शिवजीका बड़ाही तप किया और संसार में सर्वप्रकार के भोग भोगकर अन्तमें शिवपुरी को पहुँचा और गणों में गिना जाकर शिवजीकी सेवा में प्रवृत्त रहा जो इस चरित्र को सुनेगा वा पढ़ेगा वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अड़तालीसवां अध्याय ॥

भिक्षुनाथ अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! अब हम भिक्षुनाथ अवतारका वर्णन करते हैं पूर्व में एक राजा सत्यरथनाम शिवजी का बड़ाभक्त हुआ वह विदर्भदेशका राज्य करता सो एक समयतक वह विदर्भदेश में न्यायके साथ राज्य करतारहा एक दिन समय पाकर राजा शाल्वने सत्यरथ पर धावा करके उसके देश को घेर लिया और दोनों राजों में बड़ा युद्ध हुआ सो बहुत युद्ध करने के उपरान्त सत्यरथ परास्त हुआ मारागया रात्रि के समय उसकी रानी युक्ति कर घरसे बाहर भाग गई और पूर्वकी ओर शिव और गिरिजा का ध्यान कर चली वह गर्भवती थी बहुत मार्ग के चलने से थक कर तालाब के पास जा एक वृक्ष के नीचे बैठ गई भाग्य से शुभ लग्नमें उसी दिन उसके पुत्र उपजा और रानी बहुत प्यासी होकर उस तालाबमें पानी पीने गई अभी पानी न पिया था कि एक ग्राहने उसको निगल लिया और नया उपजा हुआ बालक भूख प्याससे रोनेलगा शिवजीको उस बालक पर बड़ी दया उपजी और ऐसी कृपा की कि तुरन्त एक ब्राह्मणकी स्त्री बालकके समीप पहुँची और उसके साथ भी एक बालक एकवर्ष की आयुका था वह विधवा निर्धन स्त्री भिक्षाटनकर कालक्षेप करती उसने आकर लड़का पड़ा हुआ देखा और बड़ा अचरजकर कहा कि यह किसका बालक है कौन डालगया है कोई स्त्री पुरुष यहां दिखाई नहीं देता जिससे इस बालक का हाल पूछूं उचित है कि मैं इस बालक को उठाकर अपने पुत्रके समान पालूं पर इसके कुलके हाल पूछने विना इसका उठाना उचित नहीं है ब्राह्मणी को ऐसी चिन्तामें देख शिवजी प्रसन्न हुये और आप भिक्षुकरूप से प्रकट हो स्त्री से कहा कि तुम कुछ संशय मत करो इस बालकका पालन करो इसके पालनेसे तुमको शीघ्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ही सब प्रकार का आनन्द और भोग प्राप्त होगा स्त्री ने प्रसन्न होकर कहा तुम्हारी आज्ञा से मैं इसे पालती हूं पर आशा रखती हूं कि आप इसके जन्म और कर्म आदि का वृत्तान्त सुनादीजिये मैं जानती हूं कि तुम निस्सन्देह शिव हो और यह बालक पूर्वजन्म में तुम्हारा भक्त रहाहै कोई कर्म इससे करते नहीं बना इससे इसकी यह गति हुई यह सुन शिव स्त्रीसे अति प्रसन्न हुये और उसको अपना भक्त जान कहा कि यह विदर्भदेशके राजा सत्यरथ का पुत्र है पूर्वजन्म के कर्म से इसने ऐसा दुःख पाया है राजा शाल्व ने इसके पिता को मारडाला तब इसकी माता वन में भाग आई सो इस बालकके उत्पन्न होनेके उपरान्त ग्राह ने पानी पीते उसे खाडाला स्त्री ने आश्चर्यकर शिवजी से पूछा कि इस बालक के पूर्वजन्म का वृत्तान्त वर्णन करो कि क्यों इसको ऐसा दुःख प्राप्त हुआ और हमारा यह बालक और हम दरिद्र अवस्थामें हैं शिवरूपी ब्राह्मण बोले कि पूर्वजन्म में इसका पिता माण्डव्यदेश में जो दक्षिण में प्रसिद्ध है वहांका राजा हुआ और वह अपनी प्रजा के पालने और नीति धर्ममें प्रसिद्ध हुआ वह शिवजी का बड़ाभक्त था सदा प्रदोष व्रत करता एक दिन राजा प्रदोषका व्रत किये हुये शिवपूजन कररहा था कि इतने में नगरके बीच बड़ा शब्द हुआ राजा तुरन्त सदाशिवजी की पूजन छोड़ चले मन्त्री वहां से लौटा आता था और जिस शत्रुने कि नगर में उपद्रव मचाया था उसको भी पकड़े हुये साथ लाता था सो मन्त्रीने सब वृत्तान्त कहा राजाने शत्रु को देखा और बहुत क्रोधकर उसका शिर काटडाला उस अशुद्ध अवस्था में फिर भी शिवजी की पूजा छोड़ भोजन कर लिया उसके पुत्रने भी यही अधर्म किया और धर्मको भूलही गया सो राजा इस जन्म में विदर्भदेशका राजा होकर शाल्वके हाथ से मारागया और यह उसीका पुत्र है जो तुम्हारे सम्मुख खड़ा है और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रानी जिसको ग्राहने खालिया उसका वृत्तान्त यह है कि वह पूर्वजन्म में भी राजा सत्यरथकी रानी थी उसने अपनी सौतको धोखा देकर मारडाला उसका फल उसको यह मिला कि उसको ग्राह ने खाया और तुम्हारे पुत्र का यह हाल है कि वह पूर्वजन्ममें ब्राह्मण था इसने अपना जन्म दान लेने में बिताया अब तुमको उचित है कि इन दोनों बालकों से भलीभांति शिवकी पूजा कराओ यह कह शिवने उस स्त्री को अपने मुख्य चिह्नों समेत दर्शन दिये जिससे स्त्री ने अतिप्रसन्न हो गद्गदवाणीसे स्तुति की फिर शिव अन्तर्धान होगये स्त्री ने तुरन्त उस बालकको उठा लिया और अपने बालक सहित घरमें आई और एक गांव में जिसका नाम चक्र है वहां रहनेलगी और दोनों बालक शाण्डिल्यमुनिसे शिक्षा ले शिवकी भक्ति करनेलगे वे दोनों प्रदोषव्रत रखते इस तरह चारमास बीते एक दिन दोनों मिलकर महानदीमें स्नानकर शिवबाना कियेहुये घरको लौटे आतेथे कि शिव ने दोनों को अपना भक्तजान कृपापूर्वक यह लीला रची कि मार्ग में उन्होंने धनका भरा एक घट पाया घर में आकर अपनी माता से यह हाल कहा ब्राह्मणी ने शिव का अति धन्यवाद किया फिर दोनों शिवका व्रत करते रहे जब एक वर्ष बीतगया तो शिवने यह चरित्र किया कि एक दिन दोनोंने वनमें गन्धर्वकी कन्या देखी ब्राह्मणके पुत्रने उसके पास जानेसे निषेध किया पर राजाके पुत्रने निकट जा वार्ता करनेके उपरान्त उसके साथ अपना बिवाह करलिया और शिवने ऐसी कृपा की कि उसने अपने कुलके राज्यको प्राप्त करके राजकाज किया और वही ब्राह्मणी राजाकी माता होकर आनन्द से काल बिताने लगी राजाका नाम धर्मगुप्त हुआ और ब्राह्मण के पुत्र का नाम शुचिव्रत था दोनों ने शिवकी बड़ी भक्ति की और सदा प्रसन्न रहे यह शिव अवतार का चरित्र अति पवित्र है दोनों लोक में आनन्ददायक है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भिक्षुनाथ शिव अवतारके स्मरणसे सर्व कष्ट नष्ट होजाते हैं बयासीवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

नरजरेश्वर अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम नरजरेश्वर अवतारका वर्णन करते हैं जिसने उपमुनि ब्राह्मणका दुःख दूर किया व्याघ्रपाद मुनि जो तप में प्रसिद्ध हैं उनके एक पुत्र उपजा जिसका नाम उपमुनि रक्खा गया वह सदा अपने मातुलके घर मातासहित रहता भाग्यवश दरिद्रताने आघेरा संयोगसे एक दिन उपमुनिने दूध पिया उसके पीने से और अधिक दूध पीनेकी इच्छा हुई और हठसे बार २ अपनी माता से दूध मांगा सो दरिद्रता के कारण दूधका ठिकाना कहां था उसने यव कूट पानीमें घोल दूधके ओढ़रसे उपमुनिको पिला दिया उपमुनि ने उसे पीकर कहा कि यह तो दूध नहीं है यह कहकर रोनेलगा और बार २ अपनी माता से दूध मांगता था निदान उसने दुःखी हो उपमुनि से कहा कि मैं तो अपने भाग्यसे महाधनहीन हूं मैंने पूर्वजन्म में शिवके निमित्त कुछ दान नहीं दिया जो देती तो इस जन्ममें धनवान् होती हम वनमें रहते हैं भोजन भली भांति नहीं मिलता धन द्रव्य कहां हो धन बिन शिवकृपा नहीं मिलता शिवपूजा बिन सिवाय दुःखके कभी आनन्द प्राप्त नहीं होता यह सुन उपमुनिको पूर्वजन्मके संस्कारसे बुद्धि उपजी और अपनी माता से कहा कि अब तुम कुछ खेद मत करो मैं शिवका तप करताहूं और शिवको प्रसन्नकर क्षीरसागर वरमें मांग लूंगा यह कह और माताकी आज्ञा ले हिमगिरिमें जा बड़ा तपकर वनफलोंसे शिवका पूजन किया और पञ्चाक्षरी मन्त्र जपा जब उपमुनि को तप करते बहुतसा समय बीता और शिव प्रसन्न न हुये और वर देनेके निमित्त न आये तो तीनों लोक उपमुनिके तपसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जलने लगे सो देवताओं की बिनती के अनुकूल हम सबको ले-
कर शिवके पास गये और स्तुतिके उपरान्त सब वृत्तान्त कहा शिव
हँसकर बोले कि तुम कुछ संशय मत करो उपमुनि दुग्ध के निमित्त
तप कररहाहै सो अब हम उसको वर देंगे तुम सब अपने २ स्थानों
को चलेजावो देवताओंके चलेजानेके उपरान्त शिवजीने उपमुनि की
परीक्षा लेने के निमित्त आप तो इन्द्ररूप और गिरिजा को शची और
गणों को देवताओंका स्वरूप बना और नन्दी का ऐरावत रूप रच
उपमुनिके समीप जाकर कहा कि वर मांगो उपमुनिने कहा कि हे
इन्द्र ! तुमको हमारा प्रणाम है हमको शिवके भजनेकी शक्ति कृपा
करो हम केवल शिवसे वर मांगेंगे और किसीसे वर मांगनेकी इच्छा
नहीं इन्द्रने कहा कि हे मुनिपुत्र ! क्या तू हमको नहीं जानता और
अन्य देवताओंके समान हमको विचारता है मैं सब देवताओं का
राजा हूं मुझको अप्रसन्नकर कभी किसीको आनन्द नहीं मिलता
मेरी पूजाकर जो मनमें आवे वह ले ले और शिव निर्गुण देवताओं
की गणना में नहीं और वह दीन और निर्बल हैं वह तो दक्षप्रजा-
पति के शाप से भूत होगये हैं और महाअशुभ हैं इससे उनका वचन
सत्य नहीं होता बरन उस समय से कोई शिवजी को नहीं पूजता
ऐसे मनुष्य से क्यों कर तुम्हारा काम निकलेगा उपमुनिने सुनकर
बड़े क्रोधसे उत्तर दिया कि हे इन्द्र ! तुम देवताओं के राजा होकर
शिवजी की निन्दा मुख पर लाये तुमको क्या होगया है जो तुमने
शिवजीको नहीं पहिंचाना शिवजी वह हैं जिनकी ब्रह्मा विष्णु और
सब देवता सेवा करते हैं उनको वेद भी नेति २ कर वर्णन करते हैं
और वेदान्ती उनको ब्रह्मके नामसे प्रसिद्ध करते हैं और सन्त विवाद
छोड़ उनका भजन करते हैं वे तीनों गुणसे परे शुद्धपवित्र, परमात्मा,
निर्गुण, सगुण और सबके स्वामी हैं हे मूर्ख, इन्द्र ! तू उनको नहीं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानता जिनके समान दूसरा कोई नहीं है और मैंने तेरी जिह्वासे शिवजीकी निन्दा सुनी यह मुझ पर बड़ा पाप होगा इस लिये मैं तेरा भी नष्ट करूंगा और आपभी मरजाऊंगा यह कह और भस्म लेकर मन्त्र पढ़ इन्द्रपर चलाई और आपभी सब तरहसे पवित्र हो चाहा कि अपने को मारडालूं यह देखकर शिवजी अतिप्रसन्न हुये और नन्दीने शिवजी की सैन समझ तुरन्त भस्मास्त्र पकड़ लिया जिससे अग्नि दूर होगई और शिवजी ने पूर्वके समान अपना निजरूप धारा और इन्द्रके वह सब लक्षण गुप्त होगये जिस रूपका उपमुनि ध्यान करते थे वही रूप सामने खड़ा होगया उससमय सब देवता उस स्थानपर आकर शिवजी की स्तुति करनेलगे आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई और हर प्रकारसे आनन्द मङ्गल हुआ उपमुनिने शिवजी को प्रणाम किया शिवजीने उपमुनिको निकट बुलाकर स्कन्दके समान अपने समीप बैठाया और अपना हाथ उपमुनिके शरीर पर फेर दिया और कृपादृष्टि से उपमुनि को अवलोकन कर कहा कि तुम हमारे दृढ़भक्त हो हम तुमसे अति प्रसन्न हुये गिरिजा तुम्हारी माता और हम तुम्हारे पिता हैं तुम सदा युवा रहोगे कोई तुमसे पाप न होगा तुमपर मृत्यु का वश न चलेगा तुमको दूध, दही, घी और शहद के बहुत से समुद्र मिलेंगे तुमको सदा आनन्द रहेगा और तुम सदा बलवान् रहकर प्रसन्न रहोगे और हमारे भक्तों के शिरोमणि होगे तुम्हारा कुल और गोत्र सब आनन्द में रहेगा और स्त्री पुत्र सब हमारी भक्तिमें लगे रहेंगे और पशुपति व्रतको पावोगे तुम्हारा वचन अतिस्पष्ट होगा और तुम बड़े वाचाल होगे हम सदा तुम्हारे पास रहेंगे तुमको सब कुछ मिलेगा यह कह शिवजी अन्तर्धान हुये और उपमुनि भी अपने आश्रम को चलेआये जो यह चरित्र पढ़े और सुनेगा वह आनन्द में रहेगा तिरासीवां अवतार पूर्ण हुआ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पचासवां अध्याय ॥

जटाधारी अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले कि अब हम जटाधारी अवतार का वर्णन करते हैं कि जिसतरह शिवने गिरिजा को धोखादिया इस अवतार का वर्णन शिवके विवाह में विस्तार से होचुका है यहां केवल संक्षेप से इसका वर्णन होता है जब गिरिजा तपके निमित्त माता पिता की आज्ञा ले वनमें गई इस इच्छा से कि हमारे पति सदाशिव हों सो गिरिजा के कठिन तपके कारण कई वेर शिवने मुनीश्वरों को गिरिजा की परीक्षा के निमित्त भेजा पर गिरिजाने कुछ भी मुनीश्वरों से धोखा न खाया अपने तपमें दृढ़ रही निदान शिवको भी गिरिजाके देखने की इच्छा उपजी सो शिवजी जटाधारी ब्राह्मण का स्वरूप बना गिरिजाके पास गये और बहुत वार्त्ता और विवाद के उपरान्त जब कुछ न चली तो शिवजीने प्रसन्न होकर अपना मुख्य स्वरूप गिरिजाको दिखाया और कहा हे गिरिजा ! तुम मुझे बहुत प्यारी और हमारी प्राचीन शक्ति हो हमने परीक्षा के निमित्त सब काम किये हैं हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं वर मांगो उत्तम है कि तुम हमारे साथ चलो और कैलासपर्वतको अपने चरणों से सुशोभित करो गिरिजाने लज्जासे शिर झुका और विचारकर कहा कि जो तुम प्रसन्न हो तो हमारे पति होकर हमारा विवाह अपने साथ करो शिवने कहा अच्छा यही होगा और अन्तर्धान हुये चौरासीवें अवतार का चरित्र पूर्ण हुआ ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

नर्तकनट अवतार वर्णन ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! अब हम नर्तकनट अवतार का वर्णन करते हैं कि जैसे शिवजीने नर्तकनट अर्थात् नाचने गानेवाले का रूप धारण करके मैना और हिमाचलको धोखा दिया सो वर देने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के अनन्तर एक दिन शिवजी नाचने और गानेवाले का रूप धर मैना और हिमाचल के घर गये और उनको प्रसन्नकर भिक्षाके बदले गिरिजा को मांगा पहिले तो क्रोधकर निंकाले गये पर जब हिमाचल और मैना ने जाना कि यह तो सदाशिव हैं तो गिरिजा का देना मानलिया और शिवने बड़ी २ लीलाकर गिरिजा को ब्याहा पचासीवां अवतार पूर्ण हुआ ॥

द्विजावतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! जब मैनाने शिवको जाना कि यह सब से श्रेष्ठ सर्वोपरि हैं इनको कन्या देना उचित है तब सब देवताओं ने परस्पर यह सम्मति की कि यह मैना और हिमाचल की बुद्धि दूर करनी चाहिये इस विचारसे पहिले वे हमारे पास फिर हमारी आज्ञासे सदाशिव के पास गये और कहा जो हिमाचल तुमको सदाशिव समझ गिरिजा को देवेगा तो इसी शरीरसे तुम्हारे लोकमें चलाजावेगा फिर रत्न और अन्य अद्भुत वस्तु कहांसे मिलेंगी देवताओं को ऐसे जीनेसे मरना उत्तम है आप कोई ऐसा उपाय करें जिससे उनकी वह दिव्य बुद्धि कि हम शिवको अपना जामाता बनाते हैं जातीरहे शिव ब्राह्मण बन वैष्णवस्वरूप धार हिमाचलके समीप गये और कहा कि तुम ऐसे राजा होकर अपनी कन्या साधु अवधूत को देते हो यह बात तुमको उचित नहीं यह साधुका वचन हिमाचल को इतना लगा कि उन्होंने विवाह का फेरना उत्तम समझा फिर शिवने यह चरित्र कर कैलास में पहुँचकर सप्तऋषियों का स्मरण किया वे आये सो उनको हिमाचल के पास समझाने बुझाने को भेजा और कहा कि वे दोनों फिर हमारे विवाह करनेको नहीं मानते तुम ऐसी युक्ति करो कि विवाह होजावे सो सप्तऋषि ने हिमाचल और मैनाको बहुत समझा बुझाकर शिव का विवाह करदिया हे नारद ! ऐसी लीला शिवने ब्राह्मण का

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवतार धार की है जो इस कथा को पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा छियासीवें अवतार का चरित्र पूर्ण हुआ ॥

बावनवां अध्याय ॥

अश्वत्थामा अवतार का वर्णन ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! द्रोणाचार्य जो ब्राह्मणोंमें बड़े विद्वान् थे उनको कौरवोंने अपना गुरु बनाया जिनसे उनको धनुर्विद्या प्राप्त हुई फिर उन्होंने उन्हीं के लिये कठिन तप कर शिवजीको प्रसन्न किया शिवने द्रोणाचार्य के पास आकर कहा कि तुम्हारी बनाई हुई स्तुति सुनकर हम अतिप्रसन्न हुये जो चाहो वर लो द्रोणाचार्य ने कहा कि मुझको अपने अंश से एक पुत्र कृपा करो जो हमको कौरवों सहित आनन्द दे और वह सबको जीत बड़ा बलवान् हो मौत उसके सामने न आवे शिवजी ने यही वर दिया और अन्तर्धान हुये और द्रोणाचार्य ने अतिप्रसन्नता से यह हाल अपनी स्त्री को सुनाया और वे दोनों शिव की भक्ति में दृढ़ रहे निदान समय पाकर शिवने बड़े पुत्र होकर अवतार लिया जिसका नाम अश्वत्थामा रक्खागया उसने द्रोणाचार्य की आज्ञा पा कौरवों का पक्ष किया उसके भयसे पाण्डव कुछ न कर सके सो विष्णु की प्रेरणा से अर्जुनने शिवका तप किया और शिवसे पशुपत अस्त्र पाया जिससे अर्जुन कौरवों पर प्रबल हुये पर फिर भी अश्वत्थामा ने अपना इतना तेज दिखाया कि कोई कुछ न करसका और सुगमतासे पाण्डवोंके पुत्रोंका वध किया निदान अर्जुनने रथपर चढ़ अश्वत्थामा का पीछा किया अश्वत्थामा कुछ न डरा और मार्ग में खड़ा होगया और ब्रह्मास्त्र अर्जुनपर छोड़ा जिससे अर्जुन ने अति दुःखी हो कृष्णसे कहा कि हे विष्णो ! यह क्या होता है एक ज्वाला सबको जलाये हुये हमारे सामने चली आती है इसको आप दूर करें हम आपकी शरण में हैं कृष्णने शिवका ध्यान कर जाना कि यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रह्मास्त्र है तो अर्जुन से कहा कि यह ब्रह्मास्त्र है तुम्हारे नष्ट करनेको अश्वत्थामा ने चलाया है इसको कोई निवारण नहीं करसक्ता अब तुम तुरन्त शिवका ध्यान करो जो अपना शस्त्र कि शिवने प्रसन्न होकर तुमको दिया है उससे इसको दूर करो और कोई युक्ति नहीं है यह सुनकर अर्जुनने शिवका ध्यानकर तुरन्त पशुपति अस्त्र छोड़ा उससे ब्रह्मास्त्र दूर होगया अर्जुनको अत्यानन्द प्राप्त हुआ यह देख अश्वत्थामा ने इस इच्छासे कि संसार में पाण्डवों का वंश न रहे और जो अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की स्त्री उत्तराकुँवरिके गर्भ था उसके वध के निमित्त फिर अपना अस्त्र छोड़ा सो उत्तरा अतिविकल हो कृष्णजी की शरण में गई कृष्णने ध्यानकर यह चरित्र जान सदाशिवकी आज्ञापूर्वक अपना चक्र चलाया और उत्तरा के गर्भ की रक्षा की और कृष्ण सब पाण्डवों को लेकर अश्वत्थामा की शरण में गये और पाण्डवों और अश्वत्थामामें मित्रता और प्रीति करादी जिससे उपद्रव शान्त होगया सब लोग आनन्दसे रहनेलगे और अश्वत्थामा ने पाण्डवों पर प्रसन्न हो बहुत वर दिये यह शिवके अवतार अश्वत्थामा का चरित्र अति पवित्र संसार में आनन्द देता है वे सदा गङ्गाकिनारे रहते हैं और सबकी दृष्टि से छिपे हैं यह शिव अवतारकथा अतिशुद्ध निर्मल सुनने और पढ़नेवालों को बड़ा फल देती है इसके सुनने से सब काम पूरे होते हैं सत्तासीवें अवतार का चरित्र समाप्त हुआ॥

तिरपनवां अध्याय॥

किरातेश्वर शिव अवतार का वर्णन॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम किरातेश्वर अवतारका वर्णन करते हैं अर्थात् जिस तरह शिवजीने किरातका अवतार धारण किया और अर्जुनको पशुपति अस्त्र बहुत वरदानों समेत कृपा किया और यह भी वर दिया कि तुमको कोई जीत न सकेगा और महा-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भारतके युद्धमें अर्जुन को जय दिलाई इतना सुन नारद बोले कि हे पिता ! आप कुछ विस्तार से अर्जुन का वृत्तान्त और किरातेश्वर शिवजी का वर्णन सुनावें ब्रह्माजी बोले कि पूर्वकाल में सोमवंशी कुलमें राजा ययाति हुये जिनके पांच पुत्र उपजे उनमें सब से छोटा लड़का पुरु जो रानी शर्मिष्ठा से उपजा वह राज्य पा धर्मपूर्वक प्रजा पालन करतारहा उसके कुल में राजा शन्तनु हुआ जिसके समान दूसरा राजा न हुआ उसकी दो स्त्री गङ्गा और सत्यवती थीं जो पुत्र कि गङ्गासे उपजा उसका नाम भीष्म था जो बड़ा तपस्वी इन्द्रियजित् था और सत्यवती दूसरी रानीसे चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य उपजे जो कि चित्राङ्गद को समनामी गन्धर्व ने मारडाला इससे विचित्रवीर्य को राज्य मिला उनकी दो रानियां थीं राजा उन्हींके साथ रात दिन भोग विलास करता जिससे राजा को राजयक्ष्मा का रोग होगया यद्यपि सब उपाय कियेगये पर राजा मरगया निदान राजा शन्तनु का कुल नष्ट होगया यह देख सत्यवती रानी ने व्यासजी का स्मरण किया और व्यासजी के द्वारा दोनों रानियों से सन्तान उपजाये बड़ी रानी से धृतराष्ट्र उपजे जो अन्धे थे और छोटी रानी से पाण्डु हुये तीसरी बेर राजा की दासी व्यास के समीप गई उससे विदुरनाम विष्णु के बड़े भक्त उपजे इसी प्रकार सत्यवती तीनों पुत्रोंको देख भीष्म समेत अति प्रसन्न हुई वे तीनों पुत्र बड़े प्रतापवान् हुये जिन्हों ने संसार में बहुत धर्म चलाये और राजा सुबल की कन्या गान्धारीके साथ धृतराष्ट्रका विवाह हुआ और राजा शूरसेनकी लड़की कुन्ती पाण्डुको व्याही गई जो वसुदेव की बहिन थी और पाण्डुकी दूसरी रानी माद्री मद्रदेश के राजा की पुत्री थी धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि सौ पुत्र उपजे और पाण्डुसे पांचपुत्र उनके यह नाम हैं युधिष्ठिर भीम अर्जुन तो कुन्ती से और नकुल और सहदेव माद्रीसे और विदुर के साथ पारशवी राजा देवक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की कन्या व्याही गई जिससे बड़े धर्मवान् पुत्र उपजे यह सब लड़के परस्पर खेलते पर भीम अथाह बलके कारण उपद्रव मचाता यह बात दुर्योधनको भली न लगती वह इस उपायमें रहाकरता था कि भीमको किसी प्रकार मारें निदान दुर्योधन की कोई युक्ति न चली और कौरव पाण्डवमें बड़ा वैर होगया और मन्त्रीके उपदेशसे धृतराष्ट्रने पाण्डवों को वाराणसी में लाक्षाभवन के भीतर जलाने को भेज दिया सो वे शिवजीकी कृपा और विदुर की सम्मति से बचेरहे और दक्षिणदेशमें जाकर मार्गमें हिडम्बदैत्य को भीमने मारा और व्यासके उपदेश से चक्रपुर में स्थित हुये जहां भीमने एक दानव को वध कर एक ब्राह्मण का काज सँवारा और इसी स्थान पर द्रौपदी का स्वयंवर सुन कुन्ती सहित वहां गये और मत्स्य बेधनेके उपरान्त द्रौपदीसे विवाह किया और वहां कृष्णसे भी भेंट हुई यह चरित्र पाण्डवों का सुन धृतराष्ट्र ने फिर उनको अतिप्रीति प्रकट कर बुलालिया और आधा राज्य पाण्डवों को दे खाण्डवप्रस्थमें रहनेकी आज्ञा दी कि कुछ विवाद और झगड़ा न होवे सो पाण्डव खाण्डवप्रस्थ में रहे राजा युधिष्ठिरने और बहुतदेश जीते और धृतराष्ट्र की मतिसे प्रजा पालनकर राजसूय यज्ञ किया फिर अर्जुन तीर्थाटनके लिये संसारभर में भ्रमण कर द्वारकामें गये और कृष्ण की अनुमति से सुभद्रा को भगालाये और अपने साथ व्याह किया जिनसे अभिमन्यु उपजे अब दूसरे प्रकार हम अर्जुनके बलका बखान करते हैं कि पूर्वसमयमें श्वेतकी नाम महाराजा शिवजी का बड़ाभक्त हुआ शिवजीने दुर्वासासे कहा कि तुम जाकर श्वेतकीको यज्ञ करादो सो दुर्वासा ने यज्ञ कराया और बारहवर्ष तक बराबर घृत की धारा यज्ञकी अग्निमें पड़ती रही इससे अग्नि अतितृप्त हो अजीर्णता से निस्तेज होगया और हमारे पास आकर कहा कि मैं अति विकल हूं सो अर्जुन और कृष्णने हमारी आज्ञासे अग्नि को शरण में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ले उनको खाण्डववन भलीभांति जलाने दिया उस समय मयदानवको जो उसी वन में रहता था कृष्ण की आज्ञा से अर्जुनने भाग जाने दिया सो मयने एक वाटिका पाण्डवों को ऐसी बनाई कि जिसमें जल पृथ्वी आदि कुछ न भासता था उस स्थान पर दुर्योधन की बुद्धि ने कुछ काम न किया और सब लोगोंके हँसने से दुर्योधन अतिलज्जित होगया और पुराने वैर को फिर उठा जुवें के द्वारा पाण्डवों से सब धन और राज्य लेलिया फिर द्रौपदी को भी जुवें में जीता और दुश्शासन दुर्योधन के भाईने द्रौपदी के पट खींचे पर दुर्वासा के आशीर्वाद से इतने वस्त्र बढ़गये कि दुश्शासन दीन होकर खड़ा रहगया और द्रौपदी की लाज रहगई निदान पाण्डवों को बारह वर्ष के लिये राज्य से च्युत होकर अपने राज्य से निकलजाना पड़ा और जो कि सूर्यने एक बर्तन पाण्डवों को दिया था उसीसे वह कालक्षेप करते इसी प्रकार पाण्डव द्रौपदीसहित देशाटन करते रहे ॥

चौवनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि पाण्डवों ने द्वैतवन में जाकर नाना प्रकारकी आपदायें उठाईं उनके भोजनके निमित्त वही सूर्य का दिया हुआ पात्र था उसमें यह गुण था कि जबतक द्रौपदी भोजन न करले तबतक उसके भीतरसे भोजन कम न होता इसी प्रकार समय बीतगया दुर्योधन ने इस वृत्तान्त को न जाना सो उसकी यह इच्छा हुई कि पाण्डवोंको किसी मुनि आदि से शाप दिलाना चाहिये सो दुर्वासा की बड़ी सेवाकर वर लेनेकी आज्ञा पाई और कहा कि मैं पाण्डवों का नाश चाहताहूं दुर्वासा ने उसको बहुत धिक्कार दिये और कहा कि यह बात कभी न होसकेगी उनकी रक्षा करनेवाले आप शिवजी हैं और विष्णुने जो अवतार धारा है वे शिवजी की आज्ञासे रातदिन उनकी रक्षा करते हैं पर अच्छा हम तुमसे प्रसन्न हैं कुछ उपाय करेंगे यह कह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुर्वासा पाण्डवों के समीप गये उनके साथ दशहज़ार शिष्य थे और दुर्वासा उस समय गये जब द्रौपदी भोजन करचुकी थी दुर्वासा ने पूजन पाकर भोजन मांगा और अपने शिष्यों समेत स्नान करनेको गये तब पाण्डवोंको अतिचिन्ता उपजी चाहा कि हम सब मरजावें क्योंकि जब दुर्वासा लौटकर भोजन न पावेगा तो हम सबको बड़ा भारी शाप देवेगा यह विचार करहीरहे थे कि आकाशवाणी हुई कि तुम कुछ शोच मत करो कृष्णजीका स्मरण करो यह सुन द्रौपदीसहित सबने कृष्णका स्मरण किया सो कृष्णने तुरन्त आकर सूर्यका दियाहुआ वही बर्तन मांगा और एक शाकका पत्र बर्तनमें देखकर उसको खाया उसके खातेही दुर्वासा और सब मुनि और सब शिष्य तृप्त होगये और अपने स्थान को ऊपरही ऊपर चलेगये यह सुनकर पाण्डव अतिप्रसन्न हो कृष्ण की स्तुति करनेलगे कृष्णने कहा कि हम मथुरा को छोड़ द्वारका को गये और वहां सबको बसाया और शत्रुओं पर विजय पानेके लिये उपमुनिके समीप गये उनके उपदेश से बदरिकाश्रम में जाकर सात मास पर्यन्त शिवजीका तप किया शिवजीने प्रसन्न हो हमको वरदिया जिससे द्वारका पहुँच हमने शत्रुओं को जीता इससे तुमको भी हम कहते हैं कि तुम शिवजीकी सेवा करो शिव बिन तुम्हारा काम न निकलेगा यह कह अन्तर्यामी श्रीकृष्ण भगवान् अन्तर्धान हुये और पाण्डवोंने एक भील दुर्योधन के पास उनके आचरण की परीक्षा के निमित्त भेजा जिसने वहांका सब हाल देखकर पाण्डवों से कहा पाण्डव दुर्योधन का प्रताप और धन देख दुःखी हुये इतने में व्यासजी आये जो मस्तक में त्रिपुण्ड्र लगाये भस्म, रुद्राक्ष धारण किये जटा जूट रखाये मुखसे शिव २ कहते थे ऐसा रूप व्यास का देख पाण्डवोंने उठ कर प्रणाम किया और आदरसहित बैठाकर हरप्रकार उनकी पूजा की और कहा कि हमने वनमें आकर बड़ादुःख पाया तुम हमको भूलगये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह तुमने बड़ा अनुग्रह किया कि हमको दर्शन दिये अब हमारे कष्ट निवृत्त होजावेंगे हमको आप उबार लें कि फिर हम राज्य पावें वैसाही आप हमको उपदेश करें व्यासजी बोले कि तुम धन्य हो कि सत्य और धर्म को ऐसे समय में भी नहीं छोड़ते यद्यपि यह बात हमको उचित है कि तुम दोनों ओर के मनुष्यों को एकसा समझें पर जोकि वे बहुत अधर्मी और तुम धर्मिष्ठ हो इस लिये हम तुम्हारे पक्षपर हैं तुमपर शिवजी अति प्रसन्न होंगे हर प्रकार तुम्हारा कष्ट नष्ट करेंगे वे सबके स्वामी हैं और सब देवता और मुनि उन्हींकी सेवा करते हैं वे अपने भक्तों का दुःख देख नहीं सक्ते और वेद और पुराण का यह वचन है कि शिवजी शीघ्रही प्रसन्न होते हैं इससे हम तुमको यह उपदेश करते हैं कि शिवजीकी सेवा करो वे तुमको अवश्य जय देंगे पाण्डवों ने कहा कि हम सब मिलकर शिवजी की पूजा करें या हममें से एक मनुष्य करे तब व्यासजी ने शिवजी का ध्यानकर शोचके कहा कि नहीं केवल अर्जुन पूजा किया करे फिर व्यासजीने शिवार्चन की सब विधि उनको बतादी और कहा कि क्षत्रिय को पहिले इन्द्रकी सेवा उचित है इससे तुम पहिले इन्द्र को प्रसन्न कर फिर शिवजी के मन्त्र को धारण करो तुम इन्द्रकील जो गङ्गाके तट पर है वहां जाकर तप करो और क्षत्रियधर्म के अनुकूल अपने शस्त्र अपने साथ लेते जाव कि जो कोई शत्रु आवे तो उसका बध करना यह कहा और इन्द्र का मन्त्र अर्जुन को दिया फिर पार्थिवपूजा की युक्ति सिखाई और भी शिवपूजा की रीतियां बताईं और दृष्टिबन्ध होने की विद्या की शिक्षा की फिर अपना हाथ अर्जुन के शरीर में फेरदिया और बहुत आशीर्वाद दिये फिर अर्जुन के सर्वाङ्ग में भस्म लगादी ऐसी कृपाकर व्यास अन्तर्धान होगये और पाण्डव कुन्ती माता और द्रौपदी सहित शिवजी के प्रेम में डूब गये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पचपनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि व्यासजीके जानेके पीछे सब भाइयोंने अर्जुन को अतितेजस्वी देखा सबको निश्चय हुआ कि हमारे संकट कट जायेंगे फिर सब मनुष्योंने आशिष देकर अर्जुनको तपके लिये भेजा अर्जुन सबको प्रणाम करते शुभनक्षत्र देखतेहुये चले और इन्द्रकील के निकट जहां गङ्गाजी बहती हैं पहुँचकर अशोकवन में विराजमान हुये वहां वेदी बना तेजस्स्वरूप धारकर पहिले गुरु की स्तुति की उसके पीछे आसनपर विराजमान हो पञ्चसूत्र पार्थिव विधिपूर्वक ब-नानेलगे और फिर पार्थिवपूजन के मन्त्र का जप किया इसीप्रकार तीनों समय अर्थात् प्रातःकाल मध्याह्न और सायंकाल पार्थिवपूजन करते थे पहिले दिन उन्होंने इन्द्र की पूजा की कि शिवजीकी पूजन में कुछ विघ्न न पड़े फिर शिवजीका ऐसा ध्यान किया कि अर्जुनके शिरसे अग्नि निकली जिससे सब वन प्रकाशित हुआ उस वन में इन्द्रके बहुत सेवक रहते थे उन्होंने इन्द्रसे जाकर प्रार्थना की कि नहीं मालूम कौनसा मनुष्य अर्थात् तपस्वीश्वर जप कररहा है जिसकारण हम सब जलने से बचगये इन्द्रने ध्यान करके यह विचारा कि यह हमारे पुत्र अर्जुन के कार्य हैं यह विचार कर इन्द्र को बड़ा दुःख हुआ और बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारकर हाथमें लाठी लेकर अर्जुनके निकट गये और खड़े होगये अर्जुन ने ब्राह्मण को देखकर उसकी हर प्रकार से पूजा और सेवा की ब्राह्मण ने पूछा कि तुम यह तप किस निमित्त करते हो अर्जुन ने सब वृत्तान्त कह सुनाया इन्द्रने कहा कि तुम ऐसा तप निष्फल करतेहो तुमको ऐसा उचित नहीं क्योंकि संसार के सुख थोड़े दिन रहते हैं केवल मुक्ति का विचार रखना चाहिये सो मुक्ति देना इन्द्र के अधीन नहीं इस कारण यह तुम्हारा तप वृथा है जो मनुष्य मुक्तिदेनेवाला है उसीकी सेवा करो अर्जुन ने कहा कि हे ब्राह्मण!

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आप अपने घर सिधारिये आपको इन बातों से क्या प्रयोजन है हम व्यासजीकी आज्ञानुसार सर्वकार्य करेंगे ऐसी दृढ़ता अर्जुनकी देख कर इन्द्रको पुत्र की अतिप्रीति उपजी और अपने मुख्यरूप को धारण करके अर्जुन को दर्शन दिये और कहा कि हमने ब्राह्मण बनकर तुम्हारी परीक्षा ली अब तुमको कुछ खेद न होगा दुर्योधन जो तुम्हारा शत्रु है वह निस्सन्देह जीतनेके योग्य नहीं क्योंकि उसके सहायक भीष्म द्रोण और कर्ण आदि हैं जिनको हम नहीं जीतसक्ते उनको तीनों लोक में कोई नहीं जीत सक्ता तीनों लोकमें उनके समान कोई बलवान् नहीं इस कारण तुमको उचित है कि शिवपूजन करो वह मुक्ति भुक्ति सब देते हैं उन्हीं की प्रसन्नतासे हम विष्णुजी और ब्रह्माजी ऐसे २ पदों को प्राप्त हुये हैं आजसे हमारे मन्त्रका त्याग करके शिव जीके मन्त्रको जपो और पार्थिवपूजन करके शिवजीका ध्यान करो तुम्हारी पूजामें कोई विघ्न न उत्पन्न होगा शिवजी वरदान देकर तुमको सुख देंगे यह कहकर और आशीर्वाद देकर उन्होंने अर्जुनके शरीर को छुवा और अपने लोकको चलेगये सो अर्जुनने स्नान और न्यास करके शिवजीका ध्यान किया और फिर पार्थिवपूजन करके एक पाँवसे सूर्यके सम्मुख होकर शिवमन्त्र जपा और जिस प्रकार व्यास जीने उपदेश किया था उसी प्रकार किया जिससे सर्व मुनीश्वर आश्चर्य करते थे फिर मुनीश्वरोंने कैलास पर्वत पर जाकर श्रीसदाशिव जीसे प्रार्थना की कि अर्जुन आपका जप तप कर रहाहै हमारी अभिलाषा है कि आप वहां जाकर अर्जुनको वर देवें यह श्रवणकर शिव जी प्रसन्न हुये और मुसकराकर कहा कि तुम सब अपने २ स्थान को जावो हम अर्जुन का कार्य सिद्ध करेंगे यह सुनकर सब देवता अपने २ स्थान पर सिधारे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छप्पनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि शिवजीने सब देवता और मुनीश्वरोंको बिदा करके इच्छा की कि अर्जुन के निकट जाकर वर देवें परन्तु उस समय यह चरित्र हुआ कि दुर्योधन ने अर्जुन को तप करते सुना कि वह राज्य की वृद्धि के निमित्त तप करताहै इस हेतु मूक नाम एक दैत्य को अर्जुनके मारडालने के लिये भेजा दैत्य भैंसे का शरीर धरकर तपःस्थल में आया अर्जुन ने दूरही से उसको देखा कि वह अनेक प्रकारके उपद्रव करता मेरी ओर चलाआता है उसने विचारा कि यह निश्चय मेरा शत्रु है इसे दुर्योधन ने भेजा होगा इस कारण कि जिस को देखकर अपने हृदय में बुराई आवे उसको वैरी जानना चाहिये और जिसके देखने से अपने मन में प्रसन्नता प्राप्त हो उसको अपना मित्र जानना चाहिये यह बुद्धिमानों ने शत्रु और मित्र की पहिंचान रक्खी है यह विचार कर अपना धनुष् और बाण लिया उसी समय शिवजी भी भीलपतिका शरीर धारण करके अपने गणोंसमेत अर्जुन की परीक्षा लेने और वरदान देनेचले कांधे पर तरकस था जो बाणों से भराहुआ था हाथों में धनुष् बाण लिये हुये थे और लुङ्ग और केश बांधे हुये थे निदान सब वस्त्र वीरों के धारण किये हुये थे दैत्यने यह अभिलाषा की थी कि अर्जुन के सम्मुख होवें पर भीलरूप शिवने अपना बाण उसकी पूछपर मारा जो दैत्य के मुखसे बाहर निकल गया और वह मरगया अर्जुन ने भी अपना बाण चलाया पर जब दैत्य को पृथ्वी पर गिरते देखा तो बिचारा कि वह हमारेही बाण से मरा है इस लिये अपने बाणके लेनेके निमित्त अर्जुन शिव २ कहते आये उधर से शिवका गण अपने स्वामीका बाण लेने आया अर्जुन ने कहा कि हमने मारा है हमारा यह बाण है और गणने कहा कि नहीं हमारे स्वामी भीलपति ने राक्षस मारा है इसमें बड़ा विवाद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआ अर्जुन ने तुरन्तही बाण उठालिया गणने कहा कि तुम क्यों ऐसा लोभ करते हो यह बाण तुम्हारा नहीं है तुम क्यों तपस्वियोंका रूप धारकर ऐसा छल करते हो अर्जुन ने कहा कि हे मूर्ख ! तू क्या बकता है यह हमारा बाण मुख्य चिह्नों सहित है देखले तब गण ने कहा कि हे मूर्ख ! तू तपस्वी नहीं क्योंकि जो तप करता है वह असत्य नहीं बोलता तुम हमको अकेले न जानना हमारे साथ बहुत से गण हैं हमारा स्वामी महाबलवान् राजा है और उसीका यह बाण है यह तुम्हारे पास न रहेगा जो मनुष्य चोर, झूठा, अहंकारी, छली और कपटी होता है उससे तप नहीं होसक्ता इससे हमारा बाण दे दो क्यों पराया दोष अपने शिरपर लेते हो हमारे स्वामी ने तुम्हारे प्राणबचाने के लिये तुम्हारे शत्रु को मारडाला और उनकी भलाई को भूल कर उनका बाण नहीं देते जो तुम्हारी यही अभिलाषा है कि यह बाण मुझे मिलजावे तो चलकर हमारे स्वामी से लेलो वह ऐसे बाण दे दिया करते हैं अर्जुनने ऐसे कठिन वचन सुनकर शिवजी का ध्यान कर क्रोध करके कहा कि हे मूर्ख ! तू अहंकारी है तू ऐसे कठोर वचन हमें कहता है जैसे तेरी जाति और कुल है उसी के अनुसार तू बात करता है हम राजा हैं और तू चोर है इसी प्रकार तेरा स्वामी भी होगा हम क्यों तुझसे या तेरे स्वामी से बाण मांगें उचित है कि तू या तेरा स्वामी हमसे मांगे या युद्ध करलेवे जो जीतेगा उसी का बाण हो तुम यहां क्यों ठहरेहो तुरन्तही जावो और अपने स्वामी को बुला लावो हम शिवजीके आश्रय पर बैठे हैं हम निर्भय हैं वह गण आश्चर्यवान् होकर शिवजीके निकट आया और कहा कि एक तपस्वी बाण लेकर ऐसी २ बातें करता है शिवजी की इच्छा हुई कि अर्जुन के तेज और शक्ति को देखें इस लिये अपने गणों समेत अर्जुन के निकट आये ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्तावनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अर्जुन ने शिवजी की अनन्तसेना देखकर कुछ भी खेद न किया और अपना धनुर्बाण लेकर उनके सम्मुख हुआ शिव किरातरूप ने संसारी मनुष्यों के सदृश प्रथम दूत अर्जुनके निकट भेजा और कहा कि तपस्वी से कहो कि हमारी सेना भरपूर अपनी आंखसे देखे और हमारा बाण दे दे और तुरन्तही यहां से चलाजावे वरन वह मारा जावेगा उसकी स्त्री रोती फिरेगी यह समाचार सुनकर अर्जुनने कुछभी भय न किया और कहा कि हे दूत! अपने स्वामी से जाकर कहदे कि जो हम डरकर अपना बाण तुझे दे दें तो हमारे कुलमें बट्टा लगजायेगा चाहे स्त्री अथवा भाई सब दुःखी होजावें पर हम बाण न देंगे क्या शेर सियार को देखकर डर जाते हैं या राजा वनके मनुष्यों को देखकर भयवान् होजाते हैं यह सुनकर दूतने वहां से चलकर किरात के पास आ उनसे सब वृत्तान्त कहा किरात अपनी सेना सहित युद्ध करने को उद्यत हुआ और अर्जुनके निकट पहुँचकर अपना शङ्ख बजाया अर्जुन शिवजी का ध्यान कर उनके साथ लड़ाई करनेलगा और गणों ने अपने स्वामी की आज्ञानुसार इतने बाणों की वर्षा की कि अर्जुन महादुःखी हो श्रीसदाशिव जीका ध्यान करनेलगे और सब बाण काटकर अपने इतने बाण किरात की सेनामें वर्षाये कि वह सब भागगये केवल किरात शिवअवतार खड़े रहे और दोनों ने भलीभांति हर प्रकार का युद्ध किया और दोनों ने उत्तमोत्तमबाण चलाये किरात तो दया करके बाण मारते थे पर अर्जुन अज्ञान अवस्थामें तीर चलता था किरात अवतारने अर्जुनके सब अस्त्र शस्त्र काट डाले अन्तमें दोनों मल्लयुद्ध करने लगे जिससे सर्व सृष्टिमें हाहाकार मचगया सबदेवता दुःखी हुये पृथ्वी कांप उठी किरात अर्जुन को पकड़कर आकाशकी ओर लेगये अर्जुन वहां भी न हारे और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुत लड़े और किरातके दोनों पांव पकड़कर उनको चारों ओर घुमाया निदान किरातनाथ ने मुसकराकर अपने भक्त के वश हो अपना उत्तमोत्तम स्वरूप धार उसको दर्शन दिया जिसके देखने से अर्जुनको प्रसन्नता प्राप्त हुई और जिस रूपका अर्जुन नित्य ध्यान करते थे वही रूप आगे खड़ा देखा और लज्जित होकर पश्चात्ताप किया फिर प्रणाम करके स्तुति की और कहा कि हमारे सब पाप क्षमा कीजिये और शिव जीके चरणों पर गिरपड़े शिवजीने अर्जुन को पृथ्वीपर से उठाया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता न करो तुम हमारे बड़े भक्त हो हमने तुम्हारी परीक्षा करने के निमित्त ऐसा चरित्र किया और तुमसे युद्ध करके तुम्हारी शक्ति देखी इस युद्ध से तुम्हारा बड़ा नाम होगा अब जो कुछ चाहते हो वह हमसे मांगो अर्जुनने शिवजीकी बड़ी स्तुति की और कहा कि हम क्या मांगें आप तो अन्तर्यामी हैं सब कुछ जानते हैं पर आपकी आज्ञानुसार यह मांगताहूं कि मुझे दोनोंलोक की ऋद्धि सिद्धि कृपा करके दीजिये यह कहकर अर्जुन हाथ जोड़कर खड़े होगये शिवजीने अपना पशुपति अस्त्र अर्जुनको दिया और कहा अब तुमको कुछ खेद न होगा हमने तुमको अपना भक्त जानकर यह शस्त्र दिया है किसीसे न हारोगे और सब शत्रुओं को जीतोगे हम कृष्णजीसे कहदेंगे वे तुम्हारी रक्षा करेंगे वे हमारे अंश और बड़े भक्त हैं तुम अपने भाइयों सहित राज्य करो यह कहकर उन्होंने अर्जुनके शरीर पर अपना हाथ फेर दिया और कहा कि जब तुमको क्लेश होगा तब हमारा स्मरण करना हम सब संकट काटदेंगे फिर शिवजी अन्तर्धान हुये और अर्जुन भी प्रसन्नतापूर्वक पशुपतिअस्त्र लेकर अपने स्थान में आये और भाइयों से सब वृत्तान्त कहकर सुख दिया यह सुनकर श्री कृष्णजी वहां आये और कहा कि जैसा हम पहले कहते थे वैसाही अब भी कहते हैं कि शिवजी की सेवा कियाकरो यह कहकर श्रीकृष्णजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वारकाको सिधारे और पाण्डव सुखीरहे जब बारहदिन हुये तब पाण्डवों ने अपने नगरमें जाकर शत्रुओंको जीतलिया कौरव मारेगये युधिष्ठिर राजा हुये जो मनुष्य इस किरातेश्वर शिव अवतार का चरित्र पढ़े वा सुनेगा वह अपना मनोरथ पाकर शिवलोक में जावेगा ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन करते हैं अर्थात् वह शिवजीके बारह अवतार जो लीला कर फिर ज्योतिर्लिङ्ग होगये वह अपने भक्तों को बड़ासुख देनेवाले हैं जिनके दर्शन करने और पूजनेसे मनुष्य निष्पाप होजाता है और प्रातःकाल उनके नाम लेनेसे सुख प्राप्त होता है और कोई पाप नहीं रहनेपाता यह अवतार भक्तोंके निमित्त पृथ्वीपर हुये थे और फिर उन अवतारों का नाम ज्योतिर्लिङ्ग हुआ सोमनाथ १ मल्लिकार्जुन २ महाकाल ३ ॐकारनाथ ४ केदारनाथ ५ भीमशङ्कर ६ विश्वेश्वर ७ त्र्यम्बक ८ वैजनाथ ९ नागेश १० रामेश्वर ११ घुस्मेश्वर १२ इन बारहों अवतारों की अनन्त महिमा है हम इन बारहों अवतारों की कथा भिन्न २ वर्णन करते हैं प्रथम सोमनाथ सौराष्ट्रनगर में रहते हैं उनको चन्द्रमा ने दक्ष प्रजापति से शाप पाकर जब उनका प्रकाश जातारहा था स्थापित किया था और शिवजी लिङ्गरूप धार कर उस स्थानपर स्थित हुये जिनकी सेवासे दुःख और शोक स्वप्न में भी नहीं आते वहां पर चन्द्रकुण्ड है जो सर्वपापों को नष्ट करदेता है दूसरा मल्लिकार्जुन जो श्रीनगर में विराजमान है वहां शिवजी अपने पुत्र स्कन्द के लिये गये और उस स्थानपर ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये जिनके देखने पूजने और सेवने से नाना प्रकार के सुख मिलते हैं और मुक्ति प्राप्त होती है तीसरे महाकाल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उज्जयिनी में विराजमान हैं उन्होंने दूषण दैत्यको जलाकर अपने भक्तोंका पालन किया और उसी स्थान पर ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये उनके दर्शन करनेसे दोनों लोक में मनुष्य आनन्द से रहता है उसको कभी शोक नहीं होता—चौथे ॐकारनाथ वे विन्ध्याचल पर्वत पर विराजमान हैं जिन्होंने विन्धुका दुःख नाश किया और दो रूप धारणकर उसीपर्वत पर स्थित हुये वह भुक्ति मुक्ति दोनों देते हैं उनके दर्शनसे अनन्त दोष नष्ट होजाते हैं उन दोनों अवतारोंको प्रणवस्थल प्रणवेश पार्थिव और परमेश्वर भी कहते हैं यह ज्योतिर्लिङ्ग भक्त के कार्य पूर्ण करने में प्रसिद्ध हैं—पांचवें केदारेश्वर जो नरनारायण हैं और भक्तों के कार्य सिद्ध करते हैं वे हिमालय पर्वत पर केदार स्थान में स्थित हैं जिनके दर्शन से अपवित्र भी पवित्र होजाते यह भरत-खण्ड के स्वामी हैं जिनकी सेवासे संसारी मनुष्यों को सुख मिलता है छठवें भीमशङ्कर जिन्होंने भक्तके निमित्त भीम को मारडाला और ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये—सातवें विश्वेश्वर जो काशी में विराजमान हैं और भुक्ति मुक्ति सब कुछ देते हैं जो उनकी भक्ति करते हैं वे सुखी रहते हैं जिनके पूजने और देखनेसे परमपद प्राप्त होता है—आठवें त्र्यम्बक जिन्होंने गौतम के लिये अवतार लिया और गौ-तम के पाप नष्ट करने के निमित्त गौतमीनदीके किनारे ज्योतिर्लिङ्ग होकर विराजमान हैं जिनके दर्शन से सब पाप नाश होजाते हैं तीनों लोकों में सुख प्राप्त होता है—नवें वैद्यनाथ अथवा बैजनाथ वह चिता-भूमि में विराजमान हैं उनकी अनन्त महिमा है जिनके दर्शन करने से सब पाप भाग जाते हैं यह अवतार रावणके लिये हुआ था—दशवें नागेश अवतार जो दारुकवनमें विराजमान हैं वे अपने भक्तों का पालन करके दुष्टोंको दण्ड देते हैं—ग्यारहवें रामनाथ जो सेतुबन्ध में विराजमान हैं जिन्होंने रामचन्द्र को सुख दिया था और प्रीतिके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कारण वहीं रहे जो कोई इनको गङ्गाजी से स्नान करावे उसके सर्वपाप नष्ट होकर इस लोक में सुख और परलोकमें कैलास मिलता है—बारहवें घुस्मेश्वर इस प्रकार हुआ कि दक्षिण दिशामें देवागिरिके निकट एक ग्राम में सुधर्मानाम एक ब्राह्मण रहता था उसकी दो स्त्रियां थीं तो घुस्मा जो दूसरी स्त्री ब्राह्मण की थी उसके शिवजीकी सेवा करने से पुत्र उपजा पर पहिली स्त्रीने उस नये लड़केको मारडाला शिवजी उस स्थान पर प्रकट हुये और उस मरेहुये लड़केको जिलादिया घुस्मा को बड़ा आनन्द हुआ और शिवजी ज्योतिर्लिङ्ग होकर उस स्थान पर स्थितहुये उनका नाम घुस्मेश्वर हुआ जो इस ज्योतिर्लिङ्गके दर्शन करेया पूजनकरे वह दोनों लोकमें बड़ासुख पावे हे नारदजी! ज्योतिर्लिङ्गकी सेवासे मनुष्य अनेकप्रकार के मनोरथ पाते हैं इन द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों को लिङ्गराज भी कहते हैं उनके दर्शन करने और पूजने से दोनोंलोक में आनन्द प्राप्त होता है और इस चरित्र के सुनने और पढ़नेसे सुख मिलता है सर्वपाप नष्ट होजाते हैं यह हमने शतरुद्रखण्ड वर्णन किया है इसके श्रवण करने और वर्णन करनेसे मनुष्य सब मनोरथ और सुख पाता है और दूसरे लोकमें निर्वाणपद मिलता है हे नारदजी! अब किस कथा के सुननेकी अभिलाषा है वह कहो शिवजी के १०० अवतारों की कथा पूर्ण हुई॥

इति श्रीशिवपुराणेसप्तमखण्डेब्रह्मनारदसंवादे
ऽष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५८॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवपुराण भाषा ॥

आठवां खण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

सूतजी बोले हे शौनको ! फिर नारदजीने ब्रह्मासे कहा कि यद्यपि आपने शिवके गुण वर्णन किये हैं पर मुझे तृप्ति नहीं होती इसलिये मैं चाहताहूं कि अब आप लिङ्गोंकी महिमाका बखान करें अर्थात् जितने पृथ्वीमें शिवके लिङ्ग हैं उनका विस्तार कि कौन लिङ्ग किस तीर्थपर है वर्णन करें और यह भी बतावें कि किस स्थानमें कितने शिवजीके लिङ्ग हैं उनका हालभी कहिये ब्रह्माजीने कहा कि लिङ्गों की संख्या कुछ नहीं है पृथ्वीभर में लिङ्गही लिङ्ग समझो और तीर्थ जितने हैं और जो कुछ कि तीर्थों से विशेष हैं लिङ्ग से कोई वस्तु भिन्न नहीं है जो वस्तु जिस प्रकारपर देखी सुनीजावे उस वस्तुको शिवका स्वरूप जानो पर तौभी अपनी बुद्धिके अनुसार जहांतक कि विष्णुसे हमको मालूम हुआ है वहांतक हम लिङ्गों का वर्णन करते हैं कि धरती आकाश पृथ्वी देवता दैत्य और मनुष्यों को जहां जहां कि शिवने उनके स्मरण के अनुसार उनको दर्शन दिया है उस स्थान पर अतिप्रसन्नता से स्थित होगये हैं जिनकी पूजासे मनुष्योंके मनोरथ मिलते हैं धरती में असंख्य शिवजी के लिङ्ग हैं पर हम जो उनमें अतिप्रसिद्ध और वर्णनके योग्य हैं उन्हीं का बखान करते हैं उन सबसे बड़े और श्रेष्ठ ज्योतिर्लिङ्ग हैं जो पूर्णांशसे विराजमान हैं पहिला सोमनाथ जो सौराष्ट्रमें गिरिजासहित है दूसरा मल्लिकार्जुन जो श्रीशैलमें है तीसरा महाकाल जो उज्जयिनी में है चौथा अमरेश जो हिमालय पर्वत में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थित है पांचवां गणनाथ छठा भीमशंकर जो डाकिनी तीर्थस्थल पर है सातवां विश्वनाथ जो काशीमें प्रसिद्ध है आठवां त्र्यम्बक जो गौतमी के तट पर है नवां वैद्यनाथ जो चिताभूमि में है दशवां नागेश जो दारुकवन में विख्यात है ग्यारहवां रामेश्वर जो सेतुके ऊपर है द्युतिमान् जो शिवग्रहमें विराजमान है जो मनुष्य प्रभातके समय पवित्र हो बारहों ज्योतिर्लिङ्गोंके नाम जिस मनोरथ करके पढ़े उसका कार्य पूर्ण होजावे उसको संसार में आनन्द और परलोक में मुक्ति हो इन ज्योतिर्लिङ्गों का प्रभाव अप्रमेय है उसका कौन वर्णन करसक्ता है इन बारहों ज्योतिर्लिङ्गों के विशेष जो छः मासतक बराबर एक लिङ्ग की भी पूजा करे तो उस मनुष्य के सर्व मनोरथ पूर्ण होजावें और वह मनुष्य फिर आवागमनमें न पड़े तीनों लोकमें आदर पानेके योग्य होजावे जो नीचजाति का मनुष्य भी इनमेंसे किसी एककेदर्शन करे तो वह उच्च जातिमें उपजे और बड़ा धनवान् सुखी हो क्योंकि शिवके भक्त और वेदपाठी और ध्यान करनेवाले और ज्ञानी इन्हींकी भाग्य में मोक्ष है जो मनुष्य कि जन्म से नपुंसक हैं और अन्य मनुष्य आदि भी उनके दर्शन से ब्राह्मणही मुक्ति प्राप्त करते हैं इससे ज्योतिर्लिङ्गों का दर्शन और पूजन अवश्य है आगे हम अलग २ एक २ ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन विस्तारसे करते हैं अब हम इन्हीं के बारहों ज्योतिरूपलिङ्गों का वर्णन करते हैं उनकी अप्रमेय महिमा है और जिनके दर्शनसे दुःख दूर होते हैं पहिले सोमेश्वर अन्तकेश उस स्थान पर है जहां महीसागर नामी समुद्र मिलता है दूसरा रुद्रनाम जो भृगुकक्षामें है तीसरा दुग्धेश चौथा कर्दमेश पांचवां भूमेश छठा भीमेश्वर सातवां लोकनाथ आठवां त्र्यम्बक अर्थात् त्रिनयन नवां बैजनाथ दशवां भूतेश्वर ग्यारहवां गुप्तेश्वर बारहवां व्याघ्रेश इन बारहों उपलिङ्गों के दर्शन से अतिआनन्द प्राप्त होता है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन लिङ्गोंका वर्णन जो पूर्व में हैं ॥

प्रयाग जो तीर्थराज कहाजाता है वहां ब्रह्माके स्थापित किये हुये ब्रह्मेश्वरलिङ्ग सर्वोपरि हैं और सोमेश्वर नामी लिङ्ग दश हयमेध तीर्थ पर स्थित है जो सब उपद्रवों को दूर करके आनन्द देता है और भारद्विजेश्वर और माधवेश शिवटङ्कमें है और नागेश्वर संकटेश्वर नगर में और काशी में अविमुक्तेश्वर और वृद्ध काल और कृतकालेश्वर और तिलभाण्डेश्वर और दशहयमेधेश्वर और मणिकृतेश्वर और तारेश्वर और गोधूमेश्वर और महाभूतेश्वर और किदारेश्वर और रामेश्वर और वटकेश्वर और पूरेश्वर और सिद्धनागेश्वर और पत्तन में दूरेश्वर और मृगेश्वर विराजमान हैं और बैजनाथ जिनकी महिमा वेदने बखानी है और नागेश्वर और सिद्धेश्वर और कामेश्वर और विमलेश्वर और व्यासेश्वर और भाण्डेश्वर और हुंकारेश्वर और कुमारेश्वर और शुक्रेश्वर और वटेश्वर और सूर्येश्वर और भीमेश्वर और भूतेश्वर और ज्ञानेश्वर और पूरेश्वर और कोटेश्वर और स्वप्नेश्वर और कर्दमेश्वर और अचलेश्वर भी हैं और पुरुषोत्तमपुरी में भुवनेश्वर हैं जो सर्वमनोरथों को देनेवाले हैं वहां गुरु जगन्नाथ के बदले स्थित होकर दर्शन करने वालेके सर्वकष्ट नष्ट करदेते हैं यह सब पूर्वके लिङ्ग हैं अब हम दक्षिणके लिङ्गों का वर्णन करते हैं ॥

दूसरा अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! अब हम मत्तगयन्दलिङ्गका वर्णन करते हैं जिनको हमने यज्ञकी वेदी में स्थित किया एक समय कलियुग के प्रारम्भ में हमने इच्छा की कि एक ऐसा यज्ञ करना चाहिये जिससे धर्म अधिक होकर सर्वपाप नष्ट होजावें यह विचार हमने विष्णुके समीप जा अपना मनोरथ कहा और यहभी कहा कि हमारी इच्छा यज्ञ करनेकी है आप कोई स्थान बतादेवें जो अतिशुद्ध हो यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुन विष्णुने कहा कि चित्रकूट जो प्रसिद्ध पर्वत है और जिसकी ओर देखनेसे पापी मनुष्य पापरहित होजाता है जहां कि मन्दाकिनी बह-रही है और जिसमें स्नान करने से कोई पाप नहीं रहता और वह नदी और पर्वतके बीच धनुष् के समान है वह स्थान मुझे बहुत प्रिय है वहां जाकर तुम एकपुरी बसावो और शिवलिङ्ग भी वहां स्थापित करो हम भी वहां बारह अंगुलभर की प्रतिमा मूर्ति से प्रकट होंगे और तुम्हारे यज्ञकी वेदीमें स्थित होंगे जो मनुष्य कि हमारी मूर्तिके दर्शन करेगा उसके दुःखों को दूर करदेंगे और त्रेता और द्वापर युगमें अव-तार लेकर संसारको आनन्द देंगे हम एकरूपसे चाररूप होकर दशरथ के घर अवतार लेंगे जहां हम चारोंके नाम राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न होंगे और दशरथ की आज्ञासे लक्ष्मण और सीतासहित उसी स्थान में आकर रहेंगे फिर वहांसे दण्डकवनमें जाकर रामेश्वर लिङ्ग स्थापित करेंगे और उनकी सेवाकर वर पा रावण को कुल परिवार समेत वध करेंगे हे ब्रह्मन् ! शिवजी की सेवा विना कोई काम पूरा नहीं होता यह बात हम तुमसे सत्य सत्य कहते हैं इस लिये तुमको उचित है कि पहिले शिवलिङ्ग को स्थापित कर फिर यज्ञ करो जो हमारे लिये पुरी बसाना उसके लिये राजा भी बनाना हम राम अवतार लेकर उनकी वहां पूजा करेंगे यह कह विष्णु अन्तर्धान हुये और हम तुरन्त विष्णु की आज्ञा से वहीं आये और शिवलिङ्ग की स्थापना की फिर हमने अपने पुत्रों और देवताओं समेत उस लिङ्ग की बड़ी स्तुति की सो शिव वहां प्रकट हुये और मेरी प्रीति को देख उन्हों ने कहा कि हे ब्रह्मन् ! वर मांगो मैंने विनय की कि मेरे ऊपर कृपा करके अपने पूर्णांश से वहीं स्थितरहो क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं यहीं यज्ञ करूं और जो पुरी कि यहां बसाऊं उसके राजा आप होवें और तुम्हारे लिङ्ग का नाम मत्तगयन्द हो यात्रियों के पापोंको नाश करदे जो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनुष्य कि यहां आकर तुम्हारे लिङ्ग का दर्शन न करे उसको यात्रा का कुछ फल न हो यह सुन शिवजीने मान लिया और तुरन्त उस लिङ्गके भीतर प्रवेश करगये हमने उसी स्थानपर यज्ञ करके एक पुरी विष्णु के लिये बसाई जिसके देखनेसे पापों के समूह नष्ट होते हैं और मत्तगयन्द उसके राजा हुये और वह कैलासके नाम से प्रसिद्ध हुआ और शिवलिङ्ग के सामने मन्दाकिनी घाट शिवगङ्गा के नामसे प्रसिद्ध हुआ जिसके स्नानसे सब पाप दूर होते हैं जो मनुष्य प्रभात को उठकर मन्दाकिनी का स्नानकर मत्तगयन्द की पूजा करे वह सब मनोरथ पावे और मरनेके उपरान्त शिवपुरीमें स्थान पावे कदाचित् वहां जाकर कोई मनुष्य शिवपूजा न करे तो यात्रा भरका फल जाता रहे जब मत्तगयन्द का दर्शन करले तब यात्रा का फल मिलता है रामचन्द्र ने आप वहां जाकर इसलिङ्ग की पूजा की है अब हम कोटेश्वर लिङ्ग का वर्णन करते हैं कि संकर्षण पर्वत के पूर्व जहां कोटनामी तीर्थ जो महाशुद्ध है वहां कोटेश्वरनामी शिवलिङ्ग है जिसके दर्शन पूजन और स्नान से कोई पाप नहीं रहता अन्तमें उसको शिवलोक मिलता है जो मनुष्य कि संकर्षण पर्वतमें जाकर तीर्थस्नानके उपरान्त कोटेश्वरलिङ्ग की पूजा करे तो सहस्र गोदान का फल पावे और उसके सर्वपाप भस्म होजावें और शिवजी उस पर प्रसन्न रहें और चित्रकूट के दक्षिण ओरसे आगे पश्चिम ओर को तुङ्गारण्य पर्वत है जहां गोदावरी नदी बहरही है वहां पशुपति नामी शिवलिङ्ग है जो कोई गोदावरी में स्नान करके शिवलिङ्ग की पूजा करे वह सदा संसार में प्रसन्न रहे रामचन्द्र ने पशुपतिलिङ्ग की पूजा के उपरान्त गोदावरी में स्नान किया उसके दक्षिण कालिञ्जरपर्वत है जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध है जहां बहुतोंने तप करके सिद्धि पाई है उसका नाम मुक्तक्षेत्र है जो सब पापों का क्षय कर असंख्य आनन्द देता वहां बहुत से अति पवित्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीर्थ हैं और वहां मन्दाकिनी नदी बहती है जिसके केवल अवलोकन से पाप नष्ट होजाते हैं उस स्थानपर नीलकण्ठ शिवजी का लिङ्ग है जिसके देखनेसे पाप दूर होजाते हैं वह लिङ्ग गिरिजा सहित विराजमान है वह लिङ्गराज राजों के समान है जो मनुष्य कि उस तीर्थ में स्नान करके नीलकण्ठ की पूजा करता है वह सम्पूर्ण मनोरथ पाता है और फिर आवागमन से छूट जाता है देवता और मुनि और सिद्ध आदिने इस लिङ्ग की पूजा से परमपद पाया है कालिञ्जर तीर्थराज है जहां शिव नीलकण्ठ हैं उनकी महिमा पढ़ सुनकर फिर कोई मनुष्य संसार में नहीं उपजता यह आख्यान अतिपवित्र है ॥

तीसरा अध्याय ॥

इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मन्! हमको अत्रीश शिवलिङ्ग की महिमा विस्तार से सुनाइये ब्रह्मा बोले कि जो हमने नीलकण्ठ शिवलिङ्गका वर्णन किया है उसके दक्षिण ओर अत्रीश्वरनाम शिवजी का लिङ्ग है जो मधुवनमें विराजमान है कि अत्रि हमारा पुत्र जो अनसूया का पति है उसने चित्रकूट पर्वतके निकट अति श्रम से स्त्री सहित तप किया है और शिवके ध्यानमें लग रहा इतनेमें ऐसा काल पड़ा कि एकसौ वर्षतक संसार भरमें पानी न बरसने से अति विकल रहा यहां तक कि मुनीश्वरों कोभी अति दुःख प्राप्त हुआ सब कुवें तालाब नदी समुद्र आदि सूख गये और वृक्षादिभी सूखे बिन वर्षा किसी को चैन न पड़ा शुभकार्य दिन २ घटने लगे ऐसी दशा देख अनसूया ने अत्रि से कहा कि संसारभर दुःखी है ऐसा कोई उपायकरो जिसमें जलबरसे और धरतीमें आनन्द होवे पर अत्रि उसीतरह योगधारण किये हुये बैठेरहे क्रुद्ध अनसूयाका वचन न सुना तो जो अत्रिके शिष्य थे वहभी वर्षा न होनेके कारण दुःखी हो चलेगये तब तो अनसूया दृढ़तापूर्वक पार्थिव पूजा करने लगी शिव प्रकट हुये जिनके देखने को देवताओं और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुनीश्वरों का समूह इकट्ठा होगया यहांतक कि गङ्गाआदि सम्पूर्ण तीर्थ भी दौड़े आये अत्रि और अनसूया का तप देख सब आश्चर्यमें हुये और विष्णु आदि सबने कहा कि तपके निमित्त कौन श्रेष्ठ है निदान यह बात ठहरी कि तपके लिये शिवसे अधिक कोई श्रेष्ठ नहीं है क्योंकि वेद की भी यही आज्ञा पाईगई उसके उपरान्त देवताआदि सब अपने २ स्थानों को चलेगये पर गङ्गा वहीं रहीं क्योंकि शिव वहां विराजमान थे और इसी प्रकार चौवन वर्ष अत्रिमुनि को तप करतेहुये बीतगये एक दिन अत्रिने ध्यान छोड़कर कहा कि जलदो सो अनसूया कमण्डलु हाथ में लेकर वनके मार्गसे जल लेने गई गङ्गाने अनसूया को चिन्तित देखकर कहा हे अनसूया ! कुछ चिन्ता मत करो तुम धन्य हो कहां जाती हो तुम्हारी इच्छा मैं पूरी करूंगी यह सुन अनसूया अतिप्रसन्न हुई और कहा कि तुम कौन हो क्यों यहां खड़ी हो तुम्हारे देखने से मुझको तुम्हारी बड़ी प्रीति उपजी है गङ्गाने कहा कि इस स्थानपर शिव ब्रह्मा विष्णु आदि तुम्हारी और तुम्हारे पति की पूजा देखने के लिये आये थे और तुम दोनों की प्रशंसा करते हुये अपने २ लोक को चलेगये पर हम शिवके रहनेसे उनके प्रेमके कारण यहां रहगई हैं मैं तुम्हारे अधीन हूं जो तुमको चाहिये वह हमसे वर लो अनसूया बोली कि यहीं स्थित रहो गङ्गा वहीं रहीं और अनसूया ने जल कमण्डलु में भर अत्रिको दिया अत्रिने जल पी चिन्तित हो अनसूया से कहा कि यह जल तुमने कहांसे पाया है अनसूया ने सब हाल कह सुनाया अत्रिने तुरन्त उठ गङ्गा को देखा और स्नानकर गङ्गा की स्तुति की और अनसूयाने भी बड़े आनन्द से गङ्गाजी में स्नान किया फिर गङ्गाजी ने कहा कि अब मैं जाती हूं तब दोनोंने हाथ जोड़ बिनतीकी कि तुम यहीं रहो गङ्गा जी ने कहा कि जो एकवर्ष की शिवपूजा का फल हमको दो तो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम रहैं अनसूया ने मान लिया और गङ्गा वहां स्थित हुई इतने में शिव प्रसन्न हो उसी स्थानमें अपने मुख्य चिह्नों समेत प्रकट हुये और अत्रिने शिवजीको शक्तिसमेत देख स्तुति की शिवजी बोले कि हम प्रसन्न हैं जो चाहिये वर ले लो अत्रि और अनसूया ने यह सुनकर बिनती की कि जो तुम प्रसन्न हो तो यहीं स्थित होजावो शिव अच्छा कह गङ्गा सहित वहांरहे जहां कि अत्रि और अनसूया ने लिङ्गकी स्थापना की थी और अत्रीश्वरके नाम से प्रसिद्ध हुये और गङ्गाका नाम मन्दाकिनी प्रसिद्ध हुआ उसी स्थानपर बहुत से मुनि अपने परिवार सहित आकर स्थित हुये जो गङ्गा किनारे खेती और यज्ञ करने के अनन्तर शिवजी को प्रसन्न करते रहे फिर शिव प्रसन्न हुये जिससे भलीभांति वर्षा हुई और सबको आनन्द प्राप्त हुआ अत्रि और अनसूया धन्य हैं जिन्होंने शिवजी को प्रसन्नकर वर्षा कराई जो मनुष्य अत्रीश्वर के दर्शन करेगा उसके सब मनोरथ पूरे होंगे जो अत्रीश्वर चरित्र को पढ़े सुनेगा उसको इस लोक में आनन्द और परलोक में परमपद प्राप्त होगा ॥

चौथा अध्याय ॥

नारदजी के पूछनेपर ब्रह्माजी बोले कि नर्मदा नदी के तटपर असंख्य शिवलिङ्ग हैं जिनकी गणना नहीं होसक्ती और जितने पत्थर नदी में पड़े हैं वह सब शिवरूप हैं उनकी बड़ी महिमा है पर हम प्रसिद्ध २ लिङ्गोंका वर्णन करते हैं जिनके केवल दर्शन से आनन्द प्राप्त होता है वे यह हैं अवतारेश्वर, परमेश्वर, सुखेश्वर, ब्रह्मेश्वर, रमेश्वर, विमलेश्वर, मदनेश्वर, कुमारेश्वर, पुण्डरीकपति, मण्डपेश्वर, तीक्ष्णेश्वर, धनुर्धरेश्वर, शूलेश्वर, कुम्भेश्वर, कुबेरेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर, नागेश्वर, रामेश्वर, नन्देश्वर, कण्टकेश्वर, चन्द्रेश्वर जहां पर कि समुद्र मिलता है वहां घृतकेश शिवका भी लिङ्ग है और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुरतेश्वर, वरचलेश्वर, सोमेश्वर, मङ्गलेश्वर, हरेश्वर, इन्द्रेश्वर और दयेश्वर भी हैं जो दोनों लोक में आनन्द देते हैं और नन्दिकेश्वर रेवा नदी के किनारे हैं उसी स्थान पर ब्रह्महत्याहर तीर्थ भी है इतना सुन नारदजी बोले हे ब्रह्मा ! लिङ्गकी महिमा और ब्रह्महत्याहर तीर्थका हाल विस्तारसे कहिये ब्रह्माजी बोले कि जब कौरव और पाण्डवों में बड़ा युद्ध हुआ था और जिसमें दोनों ओर से बहुतसे जीव मारेगये युधिष्ठिर ने कि शत्रुओं को जीताभी पर तो भी मनको कुछ आनन्द न हुआ मनमें हर समय लज्जा और दुःख बनारहा सो एकदिन राजा युधिष्ठिर ने अति विकल हो श्रीकृष्ण से कहा कि हमने अपने कुल का नष्ट किया इससे प्रति समय मेरे मन में उदासी छाई रहती है क्योंकि मुझको नाना प्रकार की हत्या लगी हैं ऐसी हत्याओं के दूर करने के निमित्त जो उपाय आप जानते हों वह कहिये श्रीकृष्ण बोले कि नन्दिकेश्वर जो शिवजी का लिङ्ग है उसीके दर्शन से सब पाप दूर होजाते हैं उसकी पूजा से सिद्धि प्राप्त होती है और जो उनकी सेवा करते हैं वह तो साक्षात् शिवरूप हैं और जो नन्दिकेश्वर में अर्थात् रेवानदी में एक हत्याहरण तीर्थ भी है जिसके देखनेसे पाप दूर होते हैं उसी रेवानदीके पश्चिमी तटपर कर्णिकापुरी है उसकी महिमा अति प्रसिद्ध है जहां घर २ शिवजीकी सेवा होरही है और असंख्य शिवालय वर्तमान हैं रात दिन वहां के मनुष्य शिवजी के भजन में लगे रहा करते हैं वहां दुःख का लेशभी पाया नहीं जाता वहां एक ब्राह्मण भी रहाकरता था जो उतथ्यवंश में उपजा था वह काशी में मरगया उसके सातोंपुत्रोंने उसके धनको परस्पर बांटा कुछ दिनोंके पीछे उन लड़कों की माता ने मृत्युके समय अपने पुत्रों से कहा कि मुझको केवल काशी देखनेकी इच्छा रहगई है सो अब मेरा पहुँचना कठिन है पर हमारी हड्डियां काशी में पहुँचा देना सो इस बात को बड़े पुत्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने माना और माता के मरजाने के उपरान्त जब कि क्रिया कर्म से सुचित्त हुये तो वही बड़ा पुत्र जिसका नाम सुबाहु था अस्थि ले अपने नौकर समेत काशी में गया और पहिले दिन घरसे चल बीस योजन पर गांव में एक ब्राह्मणके घर ठहरा जब चार घड़ी रात बीती तो घर का स्वामी अर्थात् ब्राह्मण बाहरसे घर आया और गौको घरमें बांध चाहा कि दूध दूहे उसके बच्चे ने कोपित हो उस ब्राह्मण को इस बेग से एक लात मारी कि वह मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिरपड़ा फिर ब्राह्मण ने उठकर उस बच्चे को इतना मारा कि वह मूर्च्छित हुआ और गौ दूहकर बच्चेको रस्सीसे बांध दिया छोड़ा नहीं यह अपने बच्चे की दशा देख गौ रोई बच्चेने बहुत समझाया पर कुछ न माना और कहा कि प्रभात को जब ब्राह्मण का पुत्र मुझको दूहने आवेगा जबतक मैं अपने सींगोंसे छेदके मार न डालूंगी जबतक मेरा क्रोध दूर न होगा बच्चे ने कहा कि तुमको बड़ा पाप होगा वह शाप क्योंकर दूर होगा यह बात उचित नहीं गौ ने कहा कि वह स्थान मुझे स्मरण है जहां जाने से हत्या नष्ट होजाती है यह सुन बच्चा तो चुप होगया और वह विदेशी ब्राह्मण गौका वचन सुन आश्चर्य में हुआ और इस बात के याचने के लिये अपना जाना बन्दकर इस बात के तमाशा देखने को वहीं रहा जब भोर हुआ ब्राह्मण तो बाहर चलागया उसके पुत्र ने चाहा कि गौ दुहूं गौ ने अपने सींगों से मारकर ब्राह्मण के पुत्र को बध करदिया यह दशा देख सब पड़ोसी बान्धव ब्राह्मण के इहां इकट्ठे होगये और गौको छोड़दिया और वह गौ जो श्वेतरङ्ग की थी तुरन्त काली होगई और पूछ उठाये कई बेरभागचली विदेशी ब्राह्मण जो हत्याहरणस्थल देखना चाहता था गौके पीछे नौकर समेत चला गौ नर्मदा में जहां नन्दिकेश्वर शिवलिङ्ग हैं गई और तिससमय स्नानकर वैसीही श्वेत होगई ब्राह्मणने देख बड़े आश्चर्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से कहा धन्य है यह तीर्थ और यह स्थान अतिशुद्ध है और आप नौकरसमेत स्नानकर आगे चला मार्गमें उसको एकसुन्दर स्त्री मिली उसने कहा ठहरजाओ अपनी माता की हड्डियां इसी तीर्थमें छोड़ दो तेरी माता देवतों के समान होकर मुक्ति पावेगी क्योंकि सदा वैशाख शुक्ल सप्तमी को गङ्गा यहां आया करती हैं सो आज वही दिनहै और मैं वही गङ्गा हूं उसी तीर्थ में जाती हूं यह कहकर वह गङ्गा अन्तर्धान होगई और ब्राह्मणनेभी लौटकर हड्डियोंको उसी स्थानपर डालदिया सो ब्राह्मण की माता देवीरूप होगई और उसने अपने पुत्रको बहुत अशीषेंदीं फिर शिवलोक को चलीगई ब्राह्मणने आकर यह समाचार सबको सुनाया इतना सुन नारद ने पूछा कि किस कारण वैशाख की सप्तमी को गङ्गा वहां आती हैं और नन्दिकेश्वर शिवलिङ्ग उस स्थान पर क्योंकर स्थित हुआ ब्रह्माजी बोले कि पूर्वकाल में ऋषिका नाम एक विधवा ब्राह्मणी शिवजीकी बड़ी भक्ता थी वह लड़कपनमें विधवा हुई उसने पार्थिवपूजनकर अति तप किया सो उसी तप में एक मुर नाम दानव ने चाहा कि ब्राह्मणी के साथ भोग करके उसका तप नष्ट करदें सो ब्राह्मणी अति विकल हो शिवजीकी स्तुति करनेलगी और कहा मेरी लज्जा सब आपके हाथ है क्योंकि तुम सदा अपने भक्तों की रक्षा करते हो शिव तुरन्त प्रकट हुये और दानवों को मार डाला और ब्राह्मणीसे कहा कि जो इच्छा हो हमसे वरदान मांग.ले ब्राह्मणी ने प्रसन्न होकर शिवकी बड़ी स्तुति की और कहा कि अब कौन वस्तु है जो मुझको प्राप्त नहीं है तुमने अपने दर्शनसे मुझको कृतार्थ करके सब कुछ दिया है यह स्तुति सुनकर शिव अतिप्रसन्न हो बहुत वरदे अन्तर्धान हुये और पूर्ण अंशसे लिङ्ग स्वरूप होकर नन्दिकेश्वर नाम से उसी स्थान पर स्थित होगये और वहीं अंशरूप हो वितललोक में हाटकेश्वर के नाम से प्रकट हुये उस समय ब्राह्मणी ने गङ्गा से कहा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि तुमभी इसी स्थान पर स्थित होजावो मेरी यह इच्छा है क्योंकि तुम्हारे दर्शन से मुझ को बड़ा आनन्द हुआ है गङ्गाने कहा कि तुम सी कोई धन्या, भाग्यकी पूरी संसार में दूसरी स्त्री नहीं जिसके लिये शिव प्रकट हुये हैं मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं और मैं तुमसे कहती हूं कि हम सदा वैशाख शुक्लपक्ष की सप्तमी को आया करेंगी यह कह गङ्गा अन्तर्धान हुई उसी दिनसे वह स्थल तीर्थ होगया जहां सब मनोरथ पूरे होते हैं और जिसके स्नानसे सम्पूर्ण प्रकारके पाप शान्त होजाते हैं यह चरित्र अतिपवित्र और दोनों लोक में आनन्द देनेवाला है ॥

पांचवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! रेवाके किनारे असंख्य शिवलिङ्ग हैं जिनको बुद्धिमान् जानसक्ते हैं यह रेवा नदी शिवको बहुत प्यारी गिरिजा के समान है और जिसके पत्थर शिवलिङ्ग के समान हैं वे पत्थर सबके पूजने के योग्य हैं उसके दोनों तटों पर शिवके असंख्य मन्दिर विराजमान हैं वहां देवता मुनि आदि प्रति दिन पर्यटन किया करते हैं और अपनी पत्नियों सहित शिवकी पूजामें लगे रहते हैं उसके उत्तर की ओर कपीश्वर शिवलिङ्ग हनुमान् का स्थापित किया हुआ वर्त्तमान है वहां पर हनुमान् ने बड़ा तप किया था जिससे उनकी ब्रह्महत्या का पाप छूट गया इतना सुन नारदने पूछा कि आप इस चरित्र को विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माने कहा कि शिव रामचन्द्र की कामना पूर्ण होनेके निमित्त वानरका रूप धार हनुमान्के नामसे प्रकटहुये थे और हर प्रकारसे रामजी की सहायता कर दूतके नाम से प्रसिद्ध हुये और सीताके समाचार लाने के उपरान्त समुद्र में कूद गये और लङ्का को जलादिया रावण के लड़के को मारडाला और समुद्र में सेतु बांधा और सब सेना उतार लेगये रामचन्द्र को कुछ श्रम न करनेदिया और आप रावण को कुलसहित मारडाला और रामचन्द्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और लक्ष्मणके सब दुःख दूरकर महिरावणकी भुजा उखाड़ली लक्ष्मण को जिलाया और रामचन्द्र लक्ष्मण और सीता समेत आकर समयतक राज्य करते रहे पर रामचन्द्र रावण ब्राह्मण के वध करने से समय तक पश्चात्ताप करतेरहे निदान नैमिषारण्य में जहां हत्याहरणतीर्थ है उसमें अपने भाई सहित जाकर अपने पाप दूर किये और उसमें लक्ष्मण सहित स्नान करके शिवलिङ्गकी स्थापना की जिससे वह अतिपवित्र होगये एक दिन हनुमान् कैलास पर्वत पर गये और अतिगर्व से शिवजी के दर्शन की इच्छाकर चले नन्दीश्वर ने आकर रोका और कहा कि तुम इतनी जल्दी शिवके दर्शन किया चाहतेहो तुम शिवके दर्शन योग्य नहीं तुमने तो रावण ब्राह्मणको वध किया है तुम अपने गर्व में धर्मको भूलगये अब तुमको चाहिये कि रेवाके किनारे जाकर शिवलिङ्ग की स्थापना करो तब तुम्हारा पाप दूर होगा तब शिवके दर्शन को आना शिव तुम पर कृपा करेंगे यह सुन हनुमान्ने रेवानदी के तटपर जाकर शिवलिङ्ग स्थापित किया और उसकी पूजा करने लगे और बार २ शिवको प्रणाम करके बड़ी स्तुति की तब शिव प्रसन्न हुये और हनुमान् के पास प्रकट होकर कहा कि हम बहुत प्रसन्न हैं तुमतो हमारे रूप हो हमने तुमसे यह तप इसलिये कराया कि संसार में ब्राह्मण की बड़ाई स्थिर रहे यह कहकर शिव अन्तर्धान हुये और हनुमान् के सब दुःख दूर होगये और उन्होंने कैलास में जाकर शिवका दर्शन पाया फिर कोई पाप न रहगया जो कोई मनुष्य पवनेश्वरलिङ्ग की पूजा करता है उसका कोई पाप नहीं रहता जो मनुष्य इस चरित्र को पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्द और मोक्ष पावेगा ॥

छठा अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! एक दिन हम और विष्णु दक्षिण की ओर जा रेवानदीके तटपर स्नान के उपरान्त बैठगये उस स्थान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर सब देवता और मुनिआदि इकट्ठे हुये और एक उत्तम सभा रचीगई सो सबने हमसे और विष्णुसे पूछा कि तुममें वह कौन मनुष्य है जो नाशरहित, ब्रह्म, निर्दोष, सर्वसृष्टिका स्वामी, निर्गुण, अलख, ईश्वरों का ईश्वर, सबसे श्रेष्ठ, विश्वंभर और नष्ट करनेवालाहै कृपा करके वर्णन करो सो हमने पहिले शिवकी माया में पड़कर कहा कि हम परब्रह्म तीनोंलोकके स्वामी सबसे श्रेष्ठ हैं यह बात हमारे नामों से जो वेद कहते हैं प्रकट है यह मेरा वचन सुनकर विष्णु क्रोधित हो कहने लगे कि तुम बिन जाने ऐसी बातें वेदके विरुद्ध मत कहो क्या तुमने वेद सब भुलादिये तुम तो वही हो जो हमारी नाभिकमल से उपजे तुमतो हमारे अधीन हो बरन हम परब्रह्म हैं हमसे बड़ा कोई संसार में नहीं हमको वेद और पुराण सब ब्रह्म कहते हैं तुम अपने नामोंके गर्व में मत रहो क्योंकि अन्धेका नाम नयनसुखभी होता है और कृपणका नाम उदार होताहै निदान हमने विष्णु का वचन न माना और शिवकी माया में हम दोनों ने भूलकर परम तत्त्व को विस्मरण किया और अपनेको परब्रह्म ठहराया निदान यह बात ठहरी कि वेद जिसको सर्वोपरि कहदेवें वही बड़ा समझा जावे हमारे स्मरण करनेसे वेद आये पूछनेपर उन्होंने कहा कि तीनों गुणसे भिन्न जो प्रकाशवान् हैं और जिनके शरीर में करोड़ों ब्रह्माण्ड हैं वह सदाशिव हैं जो प्रलय करनेवाले हैं वे एकही तरह सदा रहते हैं जिनका योगी बड़े उपाय से ध्यान करते हैं इसी प्रकार शिवकी बड़ी प्रशंसा की यह सुन हम दोनोंने मूर्खता से यह वचन कहा कि शिवतो निर्गुण, विषके खानेवाले, जटाधारी, वृषपर सवार होनेवाले, नग्नशरीर, योगी, सर्पोंके भूषण पहननेवाले, औढर भूतों प्रेतोंके साथी और अशुभवस्त्रधारी हैं वे परब्रह्म क्योंकर होसक्ते हैं यह कह हम दोनों ने हँस २ कर वेदों को चुप करादिया यह हमारी दशा देख प्रणव ने कहा कि तुम दोनों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संसार उपजाने वाले और पालनकर्ता हो ऐसी मूर्खता न करो तुम वेदके वचन मत छोड़ो और शिवको परब्रह्म समझो उन्हों ने तुम्हारे लिये चाहे वे निर्गुण हैं पर बहुत शरीर धारण किये उनके अगणित चरित्र और असंख्यभाव देखकर सत्यमार्ग को मत भूलो पर यह प्रणव का वचन हमपर गुणदायक न हुआ तब तो शिवजी ने चाहा कि हम दोनोंके अहंकार का नाश करें जैसा कि आगे वर्णन होता है ॥

सातवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि उस समय उन झगड़ोंमें हम दोनोंके सामने एक बड़ी ज्वाला दिव्यरूपसे प्रकट हुई जो पृथ्वीसे आकाश तक थी उसका आदि अन्त नहीं जाना जा सक्ता था तिस पीछे शिवजी कृपा-दृष्टि से लिङ्गरूप धारकर उस स्थानमें रेवानदी के किनारे उत्पन्न हुये क्योंकि शिवजी अपने भक्तोंके क्लेश दूर करनेके लिये करोड़ों युक्तियां करते हैं शिवजी के प्रकट होतेही सबका अहंकार जाता रहा और पृथ्वी प्रकाशवान् होगई सब जय २ शब्द कहनेलगे वह लिङ्ग आठ अंगुल का था और चारअंगुल नीचे और चार अंगुल ऊपर था इस लिङ्ग के प्रकट होतेही शिवजी के गण शिवलोक से आये और लिङ्ग को पूजने लगे फिर देवताओं और मुनीश्वरों ने पूजा की उस स्थानपर बड़ा आनन्द हुआ और सबका शोक जातारहा नाना प्रकारके बाजे बजने लगे और सभोंने अपने २ मुखसे शिवजी का यश गाया और हम और विष्णुजी भी लिङ्गके निकट आये तब विष्णुजीने कहा कि यह कौन तीसरा मनुष्य है हमने कहा कि हे विष्णुजी ! हमारा और आपका इसी बात पर निर्णय होजायगा अर्थात् जो यह लिङ्ग चार अंगुल नीचे और चार अंगुल ऊपर है उसको जो छूलेगा वही हम दोनों में परब्रह्म है विष्णुजी ने मानकर कहा कि हम नीचे का भाग छुवेंगे और तुम ऊपरके भाग को छुवो विष्णुजी शूकर का रूप धारकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नीचेको चले और हम हंस बनकर ऊपर को उड़े शिवजीने ऐसी लीला की कि वह लिङ्ग अतललोक तक चलागया जिससे वहां के लोग कृतकृत्य होगये और अतलवालों ने शिवलिङ्ग को भलेप्रकार पूजा और शिवजी की स्तुति मयदानव के पुत्रने की उस समय विष्णुजी वहां आये और शिवजीने अपने लिङ्ग को बहुत बढ़ाया यहां तक कि वितललोकमें पहुँचा वहां के मनुष्यों ने शिवलिङ्ग की बड़ी पूजाकी इतने में विष्णुजी भी वहां पहुँचे पर वह लिङ्ग और नीचे को चला गया और सुतल लोकमें पहुँचा वहां राजा बलिने उनकी बड़ी पूजा की जब विष्णुजी वहां पहुँचे तो शिवजी का लिङ्ग बढ़कर तलातल में गया वहां त्रिपुरासुर ने उनकी पूजा की जब विष्णुजी वहां पहुँचे तो लिङ्ग बढ़कर महातलमें पहुँचा जहां तक्षक आदिने उनकी पूजा की वहां विष्णुजी के पहुँचने के समय वह लिङ्ग बढ़कर रसातल में गया जहां दानवके पुत्र दत्तने उनको पूजा विष्णुजी वहां गये तो शिवका लिङ्ग बढ़कर तुरतही पाताल में गया जहां वासुकि नागादि ने उनकी पूजा की इसी प्रकार विष्णुजी चौदहों भुवनमें गये पर लिङ्ग को न छूनेपाये जब लिङ्ग शेषलोकमें गया तब शेषजीने उनका बड़ी धूमधामसे पूजन किया अन्तमें वह लिङ्ग विष्णुजी को पीछे २ फिरते देखकर गुप्त होगया और विष्णुजी थककर लौट आये और शिवजीको सबसे बड़ा समझने लगे और बड़े लज्जित हुये हे नारद! शिवजी ऐसे २ चरित्र करते हैं तुम भले प्रकार से विचारलो॥

आठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! इस तरह तो विष्णु का अहंकार दूर हुआ अब मेरी गति सुनो कि जब हमने चाहा कि शिवलिङ्गके ऊपर हाथ रक्खें तो वह लिङ्ग तुरन्त भुवर्लोकको गया जहां गुह्यकादिने शिवजी के लिङ्गकी पूजाकी फिर वह लिङ्ग सूर्यलोकमें पहुँचा जहां कि सूर्यने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनका पूजन किया इतने में हम वहां जा पहुँचे पर शिवलिङ्ग स्वर्ग-भवन में पहुँचा जिसका प्रमाण वेदने सूर्यलोकसे ध्रुवतक वर्णन किया है उसके भीतर और बहुतसे लोक हैं फिर शिव मुझको पीछा करते समझ चन्द्रलोक में गये जहां कि चन्द्रमाने उनकी बड़ी पूजाकी.इसी प्रकार वह लिङ्ग उडुलोक, शुक्रलोक, भूमिलोक, बृहस्पतिलोक, सप्तर्षिलोक, महर्लोक, जनलोक, विष्णुलोक, स्कन्दलोक, शिवलोक, गोलोक आदिमें गया जहां उनकी बड़ी पूजा हुई और जब हम पहुँच जाते थे तो तुरन्त शिवलिङ्ग आगेको चलाजाता था निदान मैं अति दुःखी हुआ तब केतकीपुष्प ने मुझसे कहा कि तुम यहां हो कहां चले और तुम इतने घबड़ायेहुये क्यों हो सो हमने अपना सब वृत्तान्त वर्णन करदिया केतकी के पुष्पने हमसे कहा कि हम तुम्हारी सहायता करेंगे अब तुम लौट चलो यह बात हम सबके सामने कहदेंगे कि तुमने शिवकी मूर्तिको छूलिया है यह बात सुनकर हम उसके साथ चले मार्गमें सुरभी हमको मिली उसने हमसे वृत्तान्त पूछा सो हमने सब वृत्तान्त उससे भी कह सुनाया उसने भी हमसे प्रतिज्ञा की कि हम तुम्हारी इच्छा पूर्ण करदेंगे यह कहकर वहभी हमारे साथ चली और हम अति अहंकारसे दोनोंको साथ लियेहुये विष्णुके समीप आये ॥

नवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हमने दोनों को साथ लियेहुये विष्णुके पास आकर उनसे पूछा कि तुमने शिवलिङ्गको छूलिया विष्णुने निषेध करके हमसे पूछा तो हमने कहा कि हां वास्तव में हमने लिङ्ग को स्पर्श किया है जो तुमको निश्चय न हो तो हमारे दोनों गवाहों से पूछ लो दोनोंने कहा कि हे विष्णो ! हम पक्षपात रहित कहते हैं कि शिवलिङ्ग को ब्रह्माजीने छूलिया है और ब्रह्माजीकी बिनतीके अनुसार शिवने हम दोनों को तुम्हारे सामने साक्षी देने को भेजा ऐसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोनों के झूठ वचन सुन शिव अतिक्रोधित हुये और ऊंचे शब्द से आकाशवाणी हुई कि हमारा लिङ्ग कब ब्रह्माजीने छुआहै तुम दोनों धर्मके विरुद्ध क्या झूठ बकते हो केतकी आज से हमारे शिर पर न चढ़ेगी और हे सुरभी ! जिस मुखसे तुमने यह बात कही और अपने को नीच बनाया उसी मुख से कलियुग में तुम विष्ठा भक्षण करोगी तब हमको ज्ञान हुआ कि जिसने हमारे अहंकार को दूर करदिया वही सबसे श्रेष्ठहै फिर हमने शिवका एक और लिङ्ग देखा और नाना-प्रकार के शिवके रूप दिखाई दिये कहीं वे गणपति सहित और कहीं देवी के साथ और कहीं शिवको सब देवता और मुनीश्वर पूजतेहुये और कहीं हम और विष्णु पूजा करते हुये देखा जब विष्णु और हमने आंखें खोलीं तब केवल शिवका एकस्वरूप भासित हुआ और जब कि शिवजीने अपनी माया खींची तब हमने उनको अपना स्वामी जाना और दोनोंने हाथ जोड़ बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिवजी ! हमको अपना सेवक जानकर यहीं प्रकट होजाइये सो शिव प्रकट हुये उस स्वरूप का हम बखान नहीं कर सक्के जिस स्वरूप से शिवजी उस स्थान पर प्रकटे हम दोनों दर्शन करतेही कृतार्थ होगये और स्तुति करने लगे और अपने अपराधों का क्षमापन चाहा फिर सुरभीने बिनती की कि यद्यपि मैंने बड़ा पाप किया है पर मेरी यह इच्छा है कि मेरे शिरपर हाथ रखकर आप मेरे पाप दूर करदें और दूसरा यह मनोरथ है कि मैं अपने दुग्धकी धारासे आपका अभिषेक करूं यह कह हम और विष्णु और सुरभीने बड़ी प्रसन्नतासे अपने परि-वार और गणोंको बुलाया वहां पर एक बड़ी सभा स्थित हुई और सबने शिवजीकी पूजा की और बार बार शिवजी की स्तुति की और शिवजी को सबसे श्रेष्ठ समझा शिवजी ने हम सबकी स्तुति सुनकर कहा कि हम केवल तुम्हारे गर्वके दूर करनेको लिङ्गरूप होकर प्रकटे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि तुम्हारे अहंकार का नाशकर तुमको अप्रमेय आनन्द कृपा करें अब आगे ऐसा दुःखदायक विचार न करना और यह दूसरा लिङ्ग जो हमने प्रकट किया है उसकी महिमा सुनो कि इसकी पूजा से सब रोग दूर होजावेंगे इससे अधिक और कोई लिङ्ग अहंकार के नाश करनेवाला न होगा जो हमारे इस लिङ्गकी पूजा करेगा उसके घर सम्पूर्ण प्रकार की ऋद्धि सिद्धि बनी रहेंगी उसको कभी अधर्म की बुद्धि न उपजेगी जैसे कि कमल के पत्तेपर जल स्पर्श नहीं करता उसको दोनों लोक में मनोरथ प्राप्त होंगे यह सबको वरदे शिव अन्तर्धान होगये और सर्वमनुष्य जय जय कह अपने अपने स्थान को चलेगये जो मनुष्य इस चरित्र को पढ़ेगा वह अतिप्रसन्न रहेगा और मोक्ष पावेगा दक्षिण के लिङ्ग सम्पूर्ण हुये ॥

दशवां अध्याय ॥

पश्चिम के लिङ्गों का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अब हम पश्चिमदेश के शिवलिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनकी पूजा दर्शन और ध्यान से भक्तों को धन सम्पत्ति आदि यश कीर्त्ति असंख्य प्राप्त होती है सर्वपाप नष्ट होजाते हैं द्रुपदपुरी में रामेश्वर विराजमान हैं और वहां शिवका दूसरा लिङ्ग कालेश्वर भी है और मथुरा में गोपेश्वर लिङ्ग है जिसकी पूजा से गोपों को अतिसुख प्राप्त हुआ और कृष्णनेभी उन्हीं की पूजा से तीनोंलोक का राज्य पाया और वहां शिवका दूसरा लिङ्ग रङ्गेश्वरनामी है और कान्यकुब्जपुर अर्थात् क़न्नौज के निकट मदारेश्वर शिवलिङ्ग है जिसके देखनेसे सर्वपाप नष्ट होजाते हैं और द्वारका में द्वारकेश्वर शिवलिङ्ग है जो महाआनन्द कृपा करते हैं अब हम उन लिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनकी महिमा तीनों लोक जानते हैं पश्चिम समुद्रके तटपर गोकर्ण तीर्थ है जहां बड़ापाप भी नहीं रहसक्ता जिसके केवल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्मरण से तीनों प्रकार के ताप दूर होजाते हैं और ब्रह्महत्या आदि बड़े २ पाप जिस स्थान के केवल देखने से भागजाते हैं जिस प्रकार कि शिवके स्थान मन्दराचल आदि हैं इसी प्रकार गोकर्ण भी उनका स्थल है जैसा कि वेद और पुराणभी इस बातको कहते हैं जिस तरहसे कि सूर्यके उदय से अँधियारा और तारे आदि नष्ट होजाते हैं उसीतरह गोकर्ण के देखने से सर्व पाप नष्ट होजाते हैं दूसरा कोई स्थान ऐसा पापों के क्षय करनेवाला नहीं है वहां असंख्य मनुष्योंने तपकर मोक्ष पाया है और जहां कि हम और विष्णुआदि देवताओं समेत रहकर सेवामें लगे रहते हैं और जो फल कि और स्थानों में करोड़ोंवर्ष के तपसे प्राप्त होताहै वह गोकर्ण में केवल एकदिवस में मिलता है ऐसा जो गोकर्ण क्षेत्र है वहां महाबलनामी शिवलिङ्ग है जिसको रावणने पकड़ न पाया उस लिङ्ग को गणपति ने उसीस्थान पर स्थापित किया यद्यपि उस स्थानपर और करोड़ों लिङ्गहैं पर सबके राजा महाबल हैं वे पूर्णशिवके रूप हैं उनका मन्दिर सुवर्ण और रत्नोंसे अलंकृत है और चारों द्वारोंपर सब देवता स्थित रहते हैं अर्थात् विष्णु, हम, इन्द्र, आठों वसु, मरुद्गण, विश्वेदेव, सूर्य और चन्द्रमा तारोंसमेत पूर्वके द्वारपर रहते हैं और मृत्यु, अग्नि अपने गणों सहित और पितृगण और चित्रगुप्त और रुद्रगण दक्षिण के द्वारपर स्थित हैं और गङ्गाआदि प्रसिद्ध नदियां अन्य नदियों और समुद्रसहित पश्चिम के द्वारपर रहते हैं और पवन और कुबेर और चण्डी और जगन्माता भद्रकालिका उत्तरके द्वार पर विराजमान हैं यह सम्पूर्ण शिवको अपनी पूजा सेवा और उत्सव से प्रसन्न करते हैं और चित्रसेन और विश्वावसुआदि सर्व गन्धर्व महाबल लिङ्गका प्रतिदिन यश गाते हैं और पूर्वचित्ती मेना और घृताची और रम्भाआदि नृत्यसे शिवको प्रसन्न करती हैं और क्रतु, वशिष्ठ, कश्यप, याज्ञवल्क्य, विकम्प, आङ्गिरस, जैमिनि, भरद्वाज, विश्वामित्र, भृगुराज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऋषि और मुनि सीमन्त आदि और अत्रि और मरीचि और दक्ष और हे नारद ! तुम और संन्यासी और वनचारी और सब आश्रमोंके उत्तमोत्तम मनुष्य उनकी सेवामें लगेरहते हैं महाबललिङ्ग सर्वोपरि है जिनकी सेवा देवता करते हैं और सब मिल उनको प्रणाम करते हैं और नाच और गानेसे उनको हर्ष देते हैं वे सब देवताओं के स्वामी हैं सिवाय इनके और करोड़ों शिवलिङ्ग और तीर्थ वहां हैं जिनकी सेवासे बड़े २ दुःख और पाप नष्ट होते हैं और आप वेद उनकी महिमा वर्णन करते हैं महाबललिङ्ग का रङ्ग कृतयुग में श्वेत और त्रेतामें लाल और द्वापर में पीला और कलियुग में श्याम होता है सो युगके अनुसार महाबल लिङ्ग का उसी रङ्ग में ध्यान करना चाहिये ब्रह्महत्यादि पाप भी महाबलके दर्शन से दूर होजाते हैं और दोनों लोकमें सिद्धि प्राप्त होती है जो मनुष्य पर स्त्रीसे भोग करते हैं और अनाचारी, दुश्शील, कृपण, नपुंसक, मूर्ख, वितण्डावाद करनेवाले, चोर, कामी और जुवा खेलने वाले आदि जो बड़े २ पापी हैं वे भी महाबलके दर्शनकर पापों से शुद्ध होजाते हैं वहां अगस्त्यमुनि ने तप किया है और सनकादिक ने भी उसी स्थान पर तप किया है और नैर्ऋति के पुत्रों ने भी उसी शिवलिङ्ग की पूजा कर राज्य पाया और वह्नि भी उसी स्थान पर तप करके दिक्पति हुआ और कामदेव ने उसीस्थल पर तप करनेसे संसार को फँसाया और शिशुमार और भद्रकालिका और दुर्मुख मुनि और नाग और इलावर्त और गरुड़ और रावण और कुम्भकर्ण और विभीषण आदि सैकड़ों भक्तोंने उनकी सेवाकर अपना २ मनोरथ पाया हम कहांतक उनका वर्णन करें उस क्षेत्रमें असंख्य लिङ्गस्थापन किये हुये हैं जो स्थापन करनेवालों के नामों से प्रसिद्ध हैं जिनकी पूजा से परमपद प्राप्त होता है जिस तरह कि गोकर्णक्षेत्र अति पवित्र है उसी प्रकार महाबल शिवकी अप्रमेय महिमा जो कोई मनुष्य वहां

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाकर चतुर्दशी का व्रत करे वह अति सुगमता से अपनी कामना पाता है वहां मित्रसहने जाकर हत्या से छुट्टी पाई और वह मुक्ति पा पापों से रहित हुआ ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदजीने पूछा कि आप मित्रसह का वृत्तान्त वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि यह महाभद्र शिवलिङ्ग का चरित्र मित्रसह के वृत्तान्त सभेत गुप्त रखनेके योग्य है जिसको गौतमने प्रकट किया प्रकट हो कि गतसमयमें इक्ष्वाकुवंश में मित्रसह राजा बड़ा धर्मात्मा हुआ वह बाणविद्या में अतिप्रवीण, बड़ावीर, धीर, बलवान्, वेद पुराणका ज्ञाता, धर्मरूप, शुद्ध मार्ग चलनेवाला, दयालु और सब राजाओं में शिरोमणि, इन्द्रियजित् केवल अपनी स्त्री से प्रेम करने वाला था एक दिन उसको आखेटका व्यसन हुआ सो उसने वनमें जाकर भलीभांति शिकार किया और सिंहआदि बहुत से पशुओंको मारा जिनके शब्द चारोंओर पूरित हुये राजाने ऐसी निर्दयता से प्रसन्न हो शुभमार्ग भुलादिया वहां वनमें एक निशाचर रहता था वह राजा की दृष्टि में आया राजाने उसको मारडाला उसके भाईको बड़ा दुःख हुआ उसने अपने मनमें समझा कि यह राजा तो देवता और दैत्य दोनों का स्वामी है मैं क्योंकर इसको जीतूं क्योंकि यह युद्धसे जीता न जावेगा बड़ावीर है इसे छलसे मारना उचित है क्योंकि इसने मेरे भाईको मारडाला है यह सोच वह मनुष्य का रूप धार राजा के पास आया और हाथ जोड़ शिर झुका राजा से कहा कि हे महाराज सूर्यवंश के शिरोमणि ! मैं इस समय आपकी शरणमें आया हूं मेरी रक्षा करो मैं दीन ब्राह्मण हूं राजा ने उसे मित्रों के समान समझ अपना पाककर्ता बनाया और शिकार खेल उसको साथ लिये हुये अपनी राजधानी को लौटगया उस समय राजा की रानी मदयन्ती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो दमयन्ती के समान थी उसने सब अपने सम्बन्धियोंकी ज्यवनार की और पहिले अपने गुरु को खिलानेलगी सो उसी राक्षसने भोजन में आमिष अर्थात् नरमांस मिलाकर गुरुके सामने रखदिया जिसको राजाने न जाना पर गुरुवशिष्ठ जानगये और राजा पर बड़ाक्रोध किया और कहा कि तुझको धिक्कार है कि हमारे सामने मनुष्य का मांस रक्खा तुम धूर्त हो जोकि तुमने राक्षसोंका भोजन हमारे सामने परसाया इससे तुम राक्षस होकर अपने कर्मका फल पाओगे सो राजा ने ध्यान करके देखा कि यह छल राक्षस पाककर्ताने किया है तो राजा ने निर्दोष होनेके कारण कोपित हो विचार किया कि पाप बिन वशिष्ठ ने वृथाही हमको शाप दिया हम भी वशिष्ठको शाप देवेंगे यह विचार शाप देनेकी इच्छा से उन्होंने हाथमें पानी लिया पर रानीने विनय की कि गुरु चाहे अपना कितना ही क्रोध करे पर आपको क्रोध न करना चाहिये यह बात वेद कहता है और राजा के चरणों पर गिरकर बहुत समझाया कि गुरु को शाप देना उचित नहीं है निदान राजा चुप होरहा और गुरुके शापसे तुरन्त राक्षस हो वन में चलागया और कल्माषपादके नामसे संसारमें प्रसिद्ध हुआ और महाभयंकर भूत हो बहुत जीवोंको खानेलगा कुछ उसको धर्म अधर्म का स्मरण न रहा उस दशा में एक दिन कल्माषपादने एक मुनिको जो अपनी युवा स्त्री से भोग करता था पकड़ लिया जैसे शेर शशे को पकड़ लेता है स्त्री अपने पतिको राक्षस के पंजे में देख मूर्च्छित होगई और कहा हे राजन्! तुम क्या कर्म करते हो तुम बड़े धर्मात्मा राजा थे तुम्हीं राजा होकर अपनी प्रजा पर अनीति करते हो क्या दया को तुमने भुला दिया है तुम्हीं अन्यायियोंके समान होकर ब्रह्महत्या करते हो तुम हमारे पति को छोड़दो नहीं तो मेरा जीना कठिन है क्योंकि विना पुरुष के स्त्री का जीना दुर्लभ है मुझको यह पति प्राण से भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अधिक प्रिय है विना उसके हमारा जीना नहीं होसक्ता हे राजन्! अपनी कृपाहीसे मेरे पतिको छोड़दो यह ब्राह्मण युवा वेदज्ञ, तपस्वी, पापरहित और दयावान् है इसके छोड़नेसे तुमको बड़ा फल प्राप्त होगा अभी विवाह हुये थोड़े दिन बीते हैं यद्यपि स्त्री बहुत रोई और पीटी पर राजाको कुछ भी दया न उपजी और उसका शिर तोड़ उसको निगलगया उसकी स्त्रीने चाहा कि सती होजावे इस इच्छासे उसने चिता बना राजा को शाप दिया कि हे राजन्! जब तू अपनी स्त्रीसे भोग करना चाहेगा तो तू उसी समय तुरन्त मरजावेगा यह कह वह तो जलगई और देवलोक में अपने पतिके साथ भोग भोगने लगी हे नारद! सती होना बड़ा धर्महै और राजाभी शाप की अवधि भोग मुख्यरूप से अपने घर आया पर रानीने मुनि की स्त्रीके शाप देनेका हाल जाना तो जब राजा ने मैथुन करना चाहा रानीने निषेध किया क्योंकि वह विधवा होनेके दुःख भलीभांति जानतीथी निदान राजा मैथुन विना अन्य भोगों को वृथा समझ राज्य काज छोड़ वन में चलागया और वनमें फिरतारहा और संसार भर राजा विना अतिदुःखी रहा सो राज्य के मन्त्रियों ने जाकर गुरुसे सब वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि अब सूर्यवंश अस्त हुआ जाता है यह आपके अनुग्रह का समय है सो वशिष्ठने आकर सूर्यवंशके स्थिर रहनेके निमित्त रानीसे लड़का उपजाया जिसका नाम अंशुमान् है और अंशुक हुआ जिससे संसारभर के मनोरथ पूरे हुये और कल्मापपादने वन में एक स्त्रीको देखा जो राजाके पीछे २ बड़े क्रोधसे चलती थी और वह महाभयंकर रूप ब्रह्महत्या के नाम से प्रसिद्ध थी जो ब्राह्मण के वध करने के कारण रूप धार राजा के पीछे रहाकरती थी राजा ने इस बातको जान बड़े बड़े तीर्थों की परिक्रमा की कि वह दूर होजावे और बड़े बड़े पवित्र मन्त्रों का जप किया यद्यपि बहुत से उपाय किये पर कुछ लाभ न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुआ तब राजाने मिथिलापुरी में जाकर गौतम से भेंटकर प्रणाम किया और अपना सब वृत्तान्त कहा गौतम ने महाबल शिवलिङ्ग की पूजा के लिये आज्ञा दी सो राजा ने तुरन्त स्नानकर गोकर्ण महाबललिङ्ग की पूजा की और राजा की ब्रह्महत्या छूट गई और शिव सेवाकर परमपद पाया ॥

बारहवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदजी बोले हे ब्रह्मन्! इस कथाको विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्मा बोले कि जब राजा सब मन्दिरों और तीर्थों में घूम आये और ब्रह्महत्याने पीछा न छोड़ा तो वह मिथिलापुरको गये और नगर के किनारे बैठकर अतिचिन्ता में मग्न हुये उसी समय देखा कि गौतममुनि चले आते हैं जो शिष्यगणों में सुशोभित महातेजस्स्वरूप हैं जब राजा के निकट पहुँचे तो राजाने प्रणाम किया और गौतमने भी राजा की बड़ी प्रशंसा कर कहा कि तुम और तुम्हारी प्रजा कुशल से है यहां क्यों आये हो तुम मुझको बड़े दुःखी भासित होते हो अपना वृत्तान्त वर्णन करो राजा ने कहा कि सब कुशल है पर मुझको ब्रह्महत्या लगी है अर्थात हमने एक ब्राह्मण को मारडाला सो वही हत्या पिशाची के रूप से मुझे हर समय दुःख देती है वह किसी प्रकार मेरा पीछा नहीं छोड़ती मैंने यज्ञ, हवन, तीर्थ, दान, व्रत, मन्त्र, जप, ध्यान और देवपूजनादि बहुत कुछ किया पर वह हत्या नहीं छोड़ती अब आप कहिये कि आप इस समय कहांसे आते हैं क्योंकि आपके मुखसे विदेश का श्रम प्रतीत होता है हमारे पाप कृपा करके दूर करदीजिये गौतमने कहा कि धन्य हो जो तुमने हमारे सामने अपना पाप वर्णन किया तुम कुछ भय मत करो सर्व प्रकार शिवजी अपने भक्तों के रक्षक हैं शिवजीने अपने भक्तोंके पाप के दूर करने को पृथ्वी में लिङ्गरूप प्रकट किया है वे गोकर्ण में लिङ्ग विराजमान हैं जिनको महाबल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहते हैं उनकी महिमा वेद बखानते हैं उनके समान पापों का क्षय करनेवाला और कोई नहीं इसी प्रकार गोकर्ण तीर्थ पापोंके दूर करने में सबसे श्रेष्ठ है वहां तुम जाकर पहले गोकर्णमें स्नानकर शिव महाबललिङ्ग की पूजा करो हम अभी वहांसे चले आते हैं वहां बड़ाभारी मेला हुआ करता है शिवरात्रि शिवजी को सब व्रतों से प्रिय है उसके समान दूसरा व्रत नहीं जैसा कि वेद कहते हैं इस व्रतको करके चाण्डाल भी मुक्ति पाता है वह शिवरात्रि फाल्गुन कृष्णपक्ष की चतुर्दशीको होती है व्रत करनेके उपरान्त रातभर जागता रहे और शिवजीके लिङ्ग की पूजाकरे और तण्डुल और बिल्वपत्र शिवजी पर चढ़ावे और प्रणाम करके बारम्बार दण्डवत् करे यह शिवरात्रि का शिवव्रत शिवजी की बड़ी कृपासे मिलता है सो देवता और सब मुनि आदि गोकर्ण में गये थे और सर्वदेशों से स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बालक, युवासमूह के समूह आये हमने भी अपने शिष्यों समेत जाकर महाबलकी पूजासे बड़ा आनन्द उठाया है और गोकर्णमें स्नानकर दान दिया और महाबलकी पूजा और जागरण कर सर्वमनुष्य अपने अपने स्थानों को लौट गये वहां राजा जनक भी गये थे सो जनककी विनय के अनुकूल हम यहां आये हैं क्योंकि उनको यज्ञ करना है हम इस समय वहां से आते हैं और मार्ग में एक बड़ी आश्चर्य की बात देखी है ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! गौतम के इस वचन को सुनकर राजाने पूछा कि जो बात तुमने आश्चर्य की मार्ग में देखी है वह वर्णन करो गौतम बोले कि लौटने के समय मार्ग में एक तालाब के ऊपर हम स्थित हुये और स्नानआदि नित्यकर्म से निश्चिन्त होकर बैठे उसी समय एक स्त्री को जो चाण्डाली के समान थी और उसके कुष्ठ भी था और उसके शरीर भर में लहू और चरबी भरी हुई थी और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कृमिआदि उसको खाये जाते थे आई हमने जाना कि यह स्त्री मरने वाली है यही बात हम देखरहे थे कि एक विमान जो सूर्य के समान प्रकाशमान और जिसमें शिवजीके गण बैठेहुये जो परिपूर्ण लक्षणों से युक्त थे मानो वह शिवजीके सामनही थे उतरा गणों को देख हमने प्रणाम करके पूछा कि तुम कहां आये हो उन्हों ने कहा कि यह स्त्री जिसको तुम देखते हो उसके लेनेको आये हैं यह सुन बड़े अचम्भेसे मैंने पूछा कि यह स्त्री तो बड़ी पापिनी भासती है बड़े आश्चर्य की बात है कि इस स्त्री के लेने को तुम आये हो क्योंकि इसकी दशासे यह बात पाई नहींजाती कि कोई कर्म इसने शिवपुरके जानेके योग्य किया होगा यह सुन शिवगण बोले कि यह स्त्री पहिले जन्ममें एक ब्राह्मण की स्त्री थी और उसका नाम सुमुनि था जब इसका पति मर गया तब यह धर्म छोड़ नाना प्रकार के पाप करनेलगी यहांतक कि जाति पांतिसे निकाली गई और संस्कार वश एक शूद्रके यहां बैठगई एक दिन इसका पुरुष कहीं बाहर गया और इसने मद्य पानकर मांस खानेकी इच्छा से एक गौके बच्चे को बकरेके सन्देहसे मारडाला जब देखा कि यह तो बकरी का बच्चा नहीं है यह बछड़ा है तो भी जान बूझकर " शिव-शिव " रटते उस बछड़ेका आधा शरीर खागई और आधा जो शेष रहा उसको इधर उधर फेंककर प्रसिद्ध किया कि सिंह इसको खागया है निदान नाना प्रकारके पाप कर अन्त में मरकर यमराज के यहां गई यमराजने नरकके दण्डको भी छोटा समझ उस को चाण्डाल के घर में जन्म दिया सो वह एक डोमके घर उपज कर जन्म की अन्धी और कोढ़िन हुई सब भाईबन्धुओं ने उसको छोड़ दिया और किसीने विवाह उससे न किया थोड़ेदिनों में उसके माता पिता भी मरगये वह भूखी प्यासी इधर उधर फिरनेलगी ऐसी दशामें बालकपन और युवा अवस्था बीतगई और बुढ़ापेमें इसने बड़ा दुःख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाया संयोगसे जब मनुष्य गोकर्ण को चलनेलगे तो उनके साथ यह स्त्री भी गई कि उनके साथ कुछ खाने पीनेका ठिकाना लगे पर उसको कौन देता था जिस दिन कि शिवरात्रि थी उस दिन वह भी गोकर्ण में पहुँची और सबलोगों से मांगती थी कि मुझको भी कुछ भोजन वस्त्र दो यह सुन एक मनुष्यने उसके दोनों हाथोंमें बेलपत्र फेंकदिया उस डोमनी स्त्रीने बेलपत्र को कुछ खाने की चीज़ न जानकर धरती में फेंकदिया अकस्मात् वह बेलपत्र शिवजी पर गिरा और वह रात भर इसी तरह मांगती रही पर कुछ न मिला वह रातभर इसी तरह जागती रही जब सब मनुष्य प्रभात को स्नानकर महाबल शिवलिङ्ग की पूजाकर अपने २ घरों को गये तब वह स्त्री निराश होकर उठती, बैठती, रोती, पीटती लौटकर वहां पहुँची और मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिरपड़ी इतनेमें सदाशिव ने प्रसन्न होकर एक विमान उस स्त्री के लेने को भेजा अब वह स्त्री शिवलोक को जाती है क्योंकि पहिले जन्म में उसने शिव २ कहा था और इस जन्ममें शिवरात्रि के दिन जागरण कर शिवलिङ्ग को बिल्वपत्रसे पूजा श्रीसदाशिवजीका नाम अतिशुभ है यह नाम पापों को दग्धकर भस्म करदेता है यह नाम लेकर बड़े २ पापी परमपद पाते हैं और बहुतोंने शिवरात्रि व्रत किसी मनोरथ विना कर शिवपूजा और जागरण करने से कैलास पाया है शिवरात्रिकी महिमा कौन वर्णन करसक्ताहै निदान शिवके चारों गणों ने उस स्त्री को तेज से पूर्ण करदिया जिससे उस स्त्री का अतिसुन्दर स्वरूप होगया और उसी विमान में चढ़ाकर कैलास में लेगये वहां वह गिरिजा की सखी होगई ऐसी बड़ाई गोकर्णक्षेत्र और महाबल लिङ्गकी है यह कह गौतम चलेगये और वह राजा तुरन्त गोकर्ण में आया और जिसतरह कि गौतमने शिवलिङ्गकी पूजा बताई थी उसी तरह मित्रसह राजा ने सब कार्य किये गोकर्णके सब तीर्थों में स्नान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया और नाना प्रकार का दान दिया और महाबललिङ्गकी पूजाकर शिवरात्रि व्रत का धारण किया और रातभर जगकर बड़ा उत्सव मनाया सो राजा की हत्या छूटगई जिससे वह अति प्रसन्न हुआ और शिवजी का परमपद मिला यह मित्रसह राजा और महाबललिङ्गकी कथा सर्वरोगों को नष्ट करती है इस चरित्रके पढ़ने और सुननेवाले प्रसन्न रहकर अन्त में परमपद को जाते हैं ॥

चौदहवां अध्याय ॥

उत्तरके शिवलिङ्गों का वर्णन ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! अब हम उत्तरके शिवलिङ्गों का वर्णन करते हैं मन लगाकर सुनो कि नैमिषक्षेत्र जो प्रसिद्ध है वहां ललितेश्वरका शिवलिङ्ग बड़ा आनन्ददायक है जिसकी पूजा देवता और मुनिआदि करते हैं यह लिङ्ग ललिताजगदम्बा ने स्थापित किया था और वहीं पर ललिता ने बड़ी कठिनता से तप किया और उन्हीं की सेवासे उन्होंने अपना मनोरथ पाया था इस लिङ्ग की पूजा से असंख्य मनुष्योंको मुक्ति मिली है वहां और एक दधीचीश्वर शिवलिङ्ग है उसको दधीचिमुनि ने स्थापित किया था यह दधीचि शिव के बड़ेभक्त हैं जिन्होंने क्षुवथमुनि को जीता था इनका वृत्तान्त हम आगे वर्णन करचुके हैं जो मनुष्य दधीचीश्वर शिवलिङ्ग की पूजा करे वह किसी समय में किसीसे न हारे सदा निर्भय रहकर हृष्ट पुष्ट रहे उसके शरीर में कोई शस्त्र और घाव न लगे अब हम एक शिवलिङ्ग का वर्णन करते हैं जिनकी पूजा से पूजनेवाला मनुष्य प्रसन्न होजाता है जो हमने गोकर्णक्षेत्र का वर्णन किया था वहां चन्द्रभालनामी शिवका लिङ्ग है जिसको रावण कैलास से लाया था और अपने घर लिये जाता था पर शिव वहीं रहगये उसके साथ न गये और वैद्यनाथ जो उसी लिङ्ग के साथ आये थे वह चिताभूमि में स्थित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होगये दोनों लिङ्ग रावण के साथ न गये यहां अब इन लिङ्गों का संक्षेप से वर्णन करते हैं पर आगे इसी खण्ड में विस्तार से वर्णन करेंगे एक समय रावण ने हिमालय पर बड़ा तप किया और शिव का लिङ्ग स्थापित कर बड़ा होम किया पर शिव प्रसन्न न हुये तब रावण ने अपने नवशिर काट शिवके लिङ्गपर चढ़ादिये और चाहा कि दशवां शिर भी काटकर चढ़ावे कि शिव अतिप्रसन्न होकर प्रकट हुये और कहा कि वरलेलो रावण ने कहा कि मुझको ऐसी शक्ति कृपा करो कि तुमको लेजाकर मैं अपने नगर में स्थापित करूं शिव बोले कि अच्छा हमारे लिङ्ग को लेजाकर स्थापित करो पर जो मार्ग में तुम किसी स्थान पर हमको रखदोगे तो हम वहीं रहजावेंगे तब रावण ने चतुरता से कहा कि अच्छा पर दो रूप धारण करो हम मञ्जूषा में रखकर लेजावेंगे वह सुन शिवलिङ्ग के दो रूप होगये सो रावण दोनोंको मञ्जूषा में करके लेचला मार्गमें शिवने यह माया की कि रावणको बड़े वेगसे लघुशङ्का हुई रावण रोक न सका उसने देखा कि एक गोप पशुओं को चराता है उससे रावण ने कहा कि मञ्जूषा लेलो मैं मूत्र करूं अहीरने कहा कि मैं एक मुहूर्तभर लियेरहूंगा फिर मैं पृथ्वी में रखदूंगा यह कह गोपने मञ्जूषा लेली और रावण कि दो घड़ीतक मूत्र करतारहा पर उसका मूत्र न रुका अहीर मञ्जूषा को अधिक न रखसका और उसने उसको धरतीमें रखदिया सो दोनों लिङ्ग पृथ्वी में उसी स्थानपर स्थित होगये रावण उनको बड़े बल से उठाने लगा जब वह बल करके थकित हुआ तो उसने अपने अँगूठेसे शिव-लिङ्ग को दबाया और निरुपाय हो अपने घर चला गया दोनों लिङ्ग वहीं रहगये जो लिङ्ग पीठ की ओर था वह वैद्यनाथके नामसे प्रसिद्ध हुआ और बारह ज्योतिर्लिङ्गोंमें गिना जाता है और चिताभूमिमें विराजमान है और अगले तरफ़ जो लिङ्ग था वह चन्द्रभाल के नाम से वि-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ख्यात होकर गोकर्णक्षेत्रमें स्थित हुआ उसकी अप्रमेय महिमा है सब जीव चन्द्रभाल की बड़ाई तीनोंलोक में जानते हैं वहां शिवरात्रि को बड़ी भीड़ होती है और देवता मुनि और सिद्ध आदि सब आते हैं और सब देशोंसे चारों वर्णवाले समूहके समूह आते हैं जिनके पाप छूटजाते हैं सर्व रोग नष्ट होते हैं वह निष्पाप होकर परमपद पाते हैं जैसा कि वेद कहता है और भी वहां पर असंख्य लिङ्ग हैं जो दोनों लोक में आनन्द देते हैं उनमें यह विचित्र सिद्धता है कि माघमास की कृष्ण चतुर्दशी को सब सिंह और हाथी आदि चारकोसकी दूरी तकके वहां से भाग जाते हैं और भी दुःखदायी जीव वनके चले जाते हैं और दशमी के दिनसे तीनों प्रकार की पवन चलने लगती है और शिव के मन्दिर के पास आकर बन्द होजाती है और नाना प्रकारके बाजे सुनाई देते हैं इसी तरह बड़े २ बादल आकर उसी स्थानपर अच्छे २ शब्द करते हैं वह आश्चर्य की बातें देख सब जय जय शब्द कहते हैं सब स्त्री और पुरुष बड़ा आनन्द और धन्यवाद करते हैं सब मनुष्य भलीभांति नाचते गाते हैं चतुर्दशीपर्यन्त शिव वहां विराजमान रहते हैं जिनकी पूजा सब लोग करते हैं वहां शिवरात्रि व्रत को जागरण करके सब मनोरथ मिलते हैं यह कथा जो कोई पढ़े और सुनेगा वह संसार में प्रसन्न रहकर अन्तमें परमपद पावेगा ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि अब हम उत्तरके प्रसिद्ध २ शिवलिङ्गोंका वर्णन करते हैं जिनके दर्शन से सर्वपाप नष्ट होजाते हैं और सब मनोरथ पूरे होते हैं जिनकी पूजासे कोई दुःख और पाप नहीं रहता उनमें से एकतीर्थ पञ्चप्रयाग है जहां स्नान करनेसे तुरन्तही सर्वप्रकारके दुःख जातेरहते हैं वहां शिवके लिङ्ग हैं उनका हम वर्णन करते हैं अर्थात् सुरप्रयाग में ललितेश्वर और देवेश्वर दो लिङ्ग शिवके हैं जो प्रसन्न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होकर अपने भक्तको कृतार्थ करदेते हैं उसके उत्तर ओर रुद्रप्रयाग में रुद्रेश्वर शिवलिङ्ग है जिसकी पूजासे सम्पूर्ण पाप दूर होजाते हैं और कनखलक्षेत्र में जहां कि शिवने दक्षप्रजापति के यज्ञ का विध्वंस कर फिर प्रसन्न हो यज्ञ पूर्ण कराया और उसी स्थानपर लिङ्गस्वरूप होकर स्थित हुये और दक्षेश्वरके नामसे प्रसिद्ध हैं इनकी बहुत बड़ी महिमा है जिनकी पूजासे कोई दोष और पाप नहीं रहता उसके निकट सती कुण्ड प्रसिद्ध है जिसके ऊपर बिल्वेश्वर नाम शिवलिङ्ग हैं उनकी पूजा से धर्मकी वृद्धि होती है और बिल्वपर्वतके ऊपर जो बेलका वृक्ष है उसके नीचे बिल्वेश्वर शिवलिङ्ग स्थित हैं जिनके केवल दर्शन से मनुष्य शिवसमान होजाता है और दक्षेश्वरके निकट नीलशैलके ऊपर नीलेश्वर शिवलिङ्ग है वह लिङ्ग भक्ति और प्रीति का बढ़ानेवाला है जिसके देखनेसे पाप दूर होकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होती है यह लिङ्ग गङ्गाजीके तटपर है वहां स्नान करना चाहिये और उसी जगह भीम-चण्डिका का स्थान है उसके निकट उत्तमकुण्ड है उसके स्नान करने से बड़ा आनन्द और भक्ति प्राप्त होती है आजतक वहां शङ्खध्वनि श्रवण पड़ती है पर पापीलोग उसको नहीं सुनते पूर्वकाल में असम चित्तनामी ब्राह्मण बड़ापापी हुआ है उसने किसी शिवके भक्तसे उप-देश पाकर शिवके नामका जप किया सो शिवने प्रसन्न होकर उसको अपना गण बनाया उसका नाम नील रखलिया और आपभी नीले-श्वरके नामसे प्रसिद्ध हुये तबसे नीलेश्वर शिवलिङ्ग की बड़ी महिमा हुई वे दोनों लोक में हर्षदेते हैं और बिल्वेश्वर शिवलिङ्ग के निकट त्रिमूर्तेश्वर शिवका लिङ्ग है वहां रक्तजल तीर्थ अतिपवित्र है जो मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करके शिवकी पूजा करे वह परमपद पावे उसके निकट नन्दीश्वर शिवका लिङ्ग है और शिवतीर्थ भी वहीं है जो मनुष्य शिवतीर्थमें स्नान करके नन्दीश्वरलिङ्गको पूजता है वह दोनों लोक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में आनन्द पाता है उसीके निकट भद्रेश्वर शिवका लिङ्ग है जिसकी पूजासे मनुष्य शिवका गण होजाताहै और उसी जगह भैरवेश्वर शिव-लिङ्ग है जिसकी सेवासे बड़ासुख होता है फिर शालिहोत्रेश्वर शिवका लिङ्ग है जिनकी सेवासे शालिहोत्रने सब विद्या पाई और कौमुदीतीर्थ के तट पर चन्द्रेश्वर शिवजी का लिङ्ग है जहां कि चन्द्रमाने शिवकी पूजाकर शिवजीके भालमें स्थान पाया और कुब्जाम्र तीर्थ और पूर्ण तीर्थ जो गङ्गाजीके बीचमें है उस स्थान पर गङ्गाके बीचमें सोमेश्वर शिवजी का लिङ्ग है उसकी पूजासे दोनों लोकमें जीव प्रसन्न रहकर शिवजी का गण बनजाता है और अग्नितीर्थमें अग्नीश्वर शिवजी का लिङ्ग है जिसकी पूजा से कभी मुख्य शक्ति कम नहीं होती और वायुतीर्थ में पवनेश्वर शिवजीका लिङ्ग सर्वपापोंके क्षीण करनेवाला है वहां गङ्गा के पश्चिमी तटपर तपोवन है जहां कि लक्ष्मणने बड़ातप किया था और शिवजी की कृपा से पवित्र हुये थे इस कथा का संक्षेप यह है कि जब रामचन्द्र लङ्का जीतचुके और सीता और लक्ष्मणसमेत घर आये तो लक्ष्मणजीको क्षयीरोग उपजा क्योंकि उन्होंने मेघनादको मारा था सो वशिष्ठमुनिके उपदेश के अनुसार लक्ष्मण तपोवनमें गये और बारह वर्षतक बिन भोजन किये तप करते रहे फिर सौ वर्ष पर्यन्त वन फल खाकर तप किया फिर सौ वर्ष वायु भक्षणकर षडक्षरी मन्त्र जपते रहे और एक चरण से धरतीमें खड़े होकर शिवका ध्यान किया सो शिवने प्रसन्न हो वहां पहुँच लक्ष्मण से कहा कि अब तुम शुद्ध होगये अब यह रोग तुमको नहीं रहेगा यह कह शिवजी तो अन्तर्धान होगये और लिङ्गरूप वहीं स्थित हुआ और उसका नाम लक्ष्मणनाथ विख्यात हुआ जिसके दर्शनसे कोई रोग नहीं रहता और लक्ष्मण भी शेषका शरीर धारणकर उसी स्थानपर स्थित होगये यह थोड़े लिङ्गोंका जो मायाक्षेत्रमें हैं हमने वर्णन किया अब और सुनिये कि जो नैपाल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में पशुपतिनाथ शिवका लिङ्ग है वे महिषभाग अर्थात् भैंसे के शरीर का एकभाग हैं जिनकी महिमा वेद बखानते हैं इनका विस्तारपूर्वक वृत्तान्त हम आगे लिखेंगे यह पशुपतिनाथ भक्तोंको बड़ा आनन्द देने-वाले हैं और दूसरा शिवका लिङ्ग नैपालमें मुक्तनाथहै जिनकी पूजासे बड़ा आनन्द मिलता है इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हमने चारों दिशाके लिङ्गों का वर्णन किया अब और क्या सुनोगे॥

सोलहवां अध्याय॥

इतना सुन नारद बोले कि हे ब्रह्माजी! शिवलिङ्ग की पूजा किस समयमें आरम्भ हुई मैं इसको विस्तारसे सुना चाहताहूं ब्रह्माजी बोले कि लिङ्ग की पूजा सनातन से है हम उसका प्रारम्भ नहीं बतासक्ते यह बात वेद कहते हैं पर हम कल्पभेद के अनुसार जितना कि सुना है कहते हैं मन लगाकर सुनो कि दारुनामी वन जो प्रसिद्ध है वहां शिवके बहुतसे भक्त रहाकरते थे और मुनिआदि भी वहां रहकर तीनों काल शिवपूजन करते और शिवका नाम हर समय जपते और हवन आदि हर समय करते इसी प्रकार उनको बड़ा समय बीता और वह समय आया जिसमें उनके ऊपर शिव प्रसन्न हो प्रकट हों सो एक दिन मुनिआदि वनके बाहर जीविका के निमित्त निकलगये और सदाशिवसतीके वियोगमें रोते चिल्लाते नङ्गे भस्म रमाये सहस्रों कामदेव के समान सुन्दर गौर अङ्ग बड़ी छविसे वहां पहुँचे पहिले तो मुनियों की स्त्रियां वहांसे भाग गईं पर जब ध्यान से सदाशिवजी को अव-लोकन किया तो शिवजीकी माया से सर्वस्त्रियां कामवश हो घरों से बाहर निकल आईं और शिवके समीप मैथुन के निमित्त खड़ी होगईं और कामदेव के वेग से मूर्च्छित हो शिवजीके शरीर में लिपट गईं इतने में सब मुनि आदि बाहर से आकर इस दशा के देखनेपर क्रोध में पूर्ण हुये और शिवजी को मनुष्य के समान जान यह शाप दिया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि तेरा लिङ्ग इसीसमय गिरजावे यह शाप देतेही तुरन्त शिवजी का लिङ्ग कट कर धरती में गिरपड़ा और शिवजी की माया से वह लिङ्ग तीनोंलोक में भ्रमण कर सबको जलाने लगा सो तीनों लोक दुःखी हो उन मुनियोंसमेत मिलकर हमारे पास गये और कहा कि यह क्या चरित्र होताहै कि सब सृष्टि जलीजाती है हमने ध्यान कर सब हाल जान मुनियों से कहा कि तुमने मूर्ख होकर जो काम किया है उसका फल यह है क्या तुम नहीं जानते कि वेद कहता है कि जो दिनमें अपने घर आवे उसीका नाम अतिथि है उसको प्रसन्न किये विना फेरदेना बड़ापाप है लौटानेवाले मनुष्य के सब शुभ कार्य नष्ट होजाते हैं शिवजी तुम्हारी परीक्षा के निमित्त तुमलोगों के घरगये थे पर तुमने उनको नहीं पहिंचाना और शाप दिया वही शिवजी का लिङ्ग तीनोंलोक को जलाये देता है शिवजीकी अप्रसन्नतासे कहां कुशल है हम और विष्णुभी जिसके सेवक हैं जब तक कि वह शिवलिङ्ग स्थित न होजावेगा तब तक सृष्टि में आनन्द न होगा यह सुन सब मुनिआदि शिवजी की शरण में गये जिसमें हम और विष्णुभी थे निदान हम सबकी स्तुति सुन शिवजीने प्रसन्न हो कहा कि वर मांगो हम सबने बिनती की कि लिङ्गको रोककर शान्त करो शिवजी बोले कि जो गिरिजा योनिरूपसे लिङ्ग को धारण करे तो हम शान्त होंगे गिरिजा के सिवाय तीनों भुवन में और कौन है जो हमारे लिङ्ग को रोकसके यह सुन सब देवता आदि ने गिरिजा को प्रसन्न किया जिसने योनिरूप हो शिवजीका लिङ्ग धारण किया जिससे सबको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और सबने बड़ी स्तुति की पर संसार के माता पिता को नग्न देख किसीने उनकी पूजा न की पर जब शिवजी ने आज्ञा दी कि हमारे लिङ्ग की पूजा करो तो सबने उसी दशा में पूजा की और उसी दिन से लिङ्ग पूजनेकी चाल होगई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्रहवां अध्याय ॥

नारद बोले अब मुझको अन्धकेश्वर शिवलिङ्ग की कथा सुनाओ कि क्योंकर वह अन्धकके नाम से जो उनका शत्रु था प्रसिद्ध हुये ब्रह्माजी बोले हे नारद ! युद्धखण्ड में हम विस्तार से अन्धकेश्वर की कथा कहचुके हैं कि जिस तरह शिवजीने अन्धक को अपने त्रिशूल से छेदकर फिर उसी शरीर से उसको अपना गण बनालिया और वह सदाशिवजी के निकट रहकर सेवा में रहताहै यह कथा एक कल्पकी है अब जो दूसरे कल्प में हुआ उसको हम कहते हैं कि अन्धक कक्ष-दैत्य से उपजा था उसने हमारा बड़ा तपकर हमसे यह वर पाया था कि तीनों लोक में कोई उसको न मारसके यह वर पा उसने तीनों लोक को जीत अपने अधीन करलिया और सब देवताओं को नि-काल कर आप तीनोंभुवन का राज्य करनेलगा और नैर्ऋत्य कोण के समुद्र में एकगर्त अर्थात् गढ़ा था उसमें वह अपनी सेना सहित रहनेलगा उसीमें से वह निकलकर सेनासहित देवताओं को दुःख दिया करता था और फिर उसीगर्त में चलाजाता था देवताओं की वहां कुछ नहीं चलती थी सो सब देवता दुःखी होकर शिवजीकी शरण में गये उस समय शिवजी मन्दराचल पर थे सो उन्होंने देवताओं की स्तुति सुनकर कहा कि तुम कुछ सन्देह मतकरो हम अन्धक को मारडालेंगे तुम जाकर उसके साथ युद्ध करो फिर हम भी आतेहैं सो देवताओं ने सेना सजा अन्धकके साथ युद्ध किया और बड़ा युद्ध देवता और दैत्यों का हुआ निदान दैत्य परास्त हुये और अन्धक ने युद्ध से भागकर चाहा कि अपने उसीगर्त में घुस जावें पर शिवजीने तुरन्त पहुँचकर शीघ्रही उसको पकड़लिया और अपने त्रिशूलसे उस को छेदकर ऊपर को उठालिया उस समय अन्धक त्रिशूल के प्रभाव से भवजाल से छुट्टी पाकर स्तुति करनेलगा और कहा कि जो कोई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनुष्य तुमको मरने के समय देखता है तो वह भी शिवरूप होजाता है सो वही कृपा मेरे ऊपर होनी चाहिये शिवने कहा कि मैं तेरे भाव को देखकर प्रसन्न हुआ वर मांगले अन्धक ने कहा कि मुझको अपनी भक्ति कृपा करके अपनागण बनालो और लिङ्गरूप होकर यहीं स्थित रहो शिवने माना और वहीं लिङ्गरूप से स्थित हुये जिसका नाम अन्धकेश्वर संसारमें प्रसिद्धहुआ जो कोई उस लिङ्ग की षट्मास तक पूजा करे उसका मनोरथ पूरा होजावे जिस तरह कि देवल ने पूजनकर सब मनोरथ पाये ॥

अठारहवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता ! देवल का वृत्तान्त विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी ने कहा जो कि दधीचि ब्राह्मण शिव का परमभक्त था जिसका वर्णन हम पहले करचुके हैं उनका पुत्र शिवदर्शननामी था शिवदर्शन की स्त्री का नाम दुकूला और वह अपनी स्त्री के अधीन रहाकरता और सदा भोग विलास में लगारहता उसके चार पुत्र उपजे पर तौभी शिवदर्शन सदा दधीचि के भयसे प्रतिदिन शिवकी पूजा किया करता एकदिन दधीचि किसी दूसरे ग्राममें गये और शिवदर्शन को शिवपूजन के निमित्त कहगये संयोग से दधीचि बहुत दिनोंतक ग्रामसे न लौटे यहांतक कि शिवरात्रि आगई सबने व्रत रक्खा पर शिवदर्शन ने कामवश हो अपनी स्त्री से भोग किया और सुचित्त हो स्नान करने के विनाही शिवजी की पूजा की ऐसी बेधर्मी शिवदर्शन की देखकर शिव क्रोधित हुये और कहा कि हे मूर्ख ! तूने हमारे व्रतमें स्त्रीके साथ अधर्मसे भोगकिया सिवाय इसके स्नान बिन हमारी पूजा की और जोकि तुमने जानबूझ यह जड़कर्म किया है इस लिये हमारे शापसे तुम जड़ होजाओ और तुम किसी को छूनहीं सकोगे केवल नेत्रों से देखा करोगे सो शिवदर्शन तुरन्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जड़ होगया जब कि दधीचि मुनीश्वर ने लौटकर पुत्र की यह दशा देखी तो सर्ववृत्तान्त के सुनने के उपरान्त अति चिन्तित हो रोनेलगा और पुत्र को बहुत धिकार दिये और उसकी स्त्री को तुरन्त घरसे निकाल दिया और पुत्र के मुक्त होने के निमित्त गिरिजा की पूजा का आरम्भ कर दिया और दधीचि और शिवदर्शन दोनों ने गिरिजा को अपने तपसे प्रसन्नकिया गिरिजाने शिवको प्रसन्नकर शिवदर्शन को उनकी गोदमें डालदिया सो शिवने घृतसे शिवदर्शन को स्नान कराकर एकगांठ देकर जनेऊ पहनाया और उसका नाम बटुक रक्खा और शिवगायत्री उसको देकर सोलहों वर्ण कृपाकिये और अपनी पूजा का अधिकार दिया उसने शिवका नाम मुखसे लिया तब शिव और गिरिजाने प्रसन्न होकर उससे कहा कि जो धन और द्रव्य कोई हमारे ऊपर चढ़ावे वह तुम लियाकरो हमारी पूजामें तुम प्रसन्न होगे इसी प्रकार चण्डिका की पूजामें भी तुमको अधिकार है यहां तक कि घृत और तैल आदि जो हमारे ऊपर चढ़े वहभी तुम लियाकरो तुमको कुछ दोष नहीं है तुम तिलक लगाकर स्नानके उपरान्त शिवका मन्त्र पढ़ प्रति दिन शिवजीकी सन्ध्या करतेरहो और हमारी गायत्री का ध्यान रक्खो पहिले हमारा भजन करके फिर और कार्य करना हमने तुम्हारा अपराध क्षमा करदिया पर फिर ऐसा काम न करना तुम ब्राह्मण के समान हो हम और शिवरानी की भक्तिमें लगेरहो तुम सबकी पूजाके योग्य होगे बिना तुम्हारी पूजा हम किसी के सहायक नहीं होंगे और युद्धमें तुम जिसकी ओर होगे उसीकी जय होगी जोकि तुम तप से भ्रष्ट हुये इससे तुम्हारा नाम भ्रष्ट भी होगा और ब्रह्मभोज आदिमें तुम्हारे खिलाने से वह काम पूरा होजावेगा इसी तरह शिव और गिरिजा ने बटुक को बहुत वर देकर चारों दिशा में उसको स्थापित कर सबकी पूजाके योग्य ठहराया हे नारद ! ब्रह्मभोजमें जो बटुक को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ाई प्राप्त हुई उसका वर्णन हम तुमको सुनाते हैं कि उसी नगर में राजा भद्रक के यहां प्रतिदिन ब्रह्मभोज हुआ करता था और शिवने एक ध्वजा उस राजाको देकर कहाथा कि तुम इसको प्रभात के समय बांध दियाकरो जब कि ब्रह्मभोज पूर्ण होचुकेगा तो यह ध्वजा अपने आप गिरपड़ेगी सो राजा प्रतिदिन ब्रह्मभोज किया करता एक दिन अपने आप वह ध्वजा ब्रह्मभोज विना गिरपड़ी राजाने आश्चर्यकर सब ब्राह्मणोंसे इसका हेतु पूछा ब्राह्मणों ने कहा कि पहिले बटुक शिवके पुत्र खाचुके इससे यह ध्वजा यज्ञके पूर्ण होनेपर गिरपड़ी अब तुम और ब्राह्मणों को खिलाओ कुछ सन्देह की बात नहीं है हे नारद ! यह देवलकी कथा अति पुनीत है जो इसको पढ़ेगा उसको शिव गिरिजाकी पूजा का फल मिलेगा चारोंदिशा के शिवलिङ्ग पूर्ण हुये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

बारहो ज्योतिर्लिङ्गोंका वर्णन ॥

नारदजी बोले हे ब्रह्मन् ! अब बारहों ज्योतिर्लिङ्गोंकी कथा वर्णन कीजिये कि वे क्योंकर प्रकट हुये ब्रह्माने अतिप्रसन्न हो कहा कि बारहों ज्योतिर्लिङ्गों की कथा वर्णन करते हैं पहिला सोमेश्वर लिङ्ग जिनकी पूजासे सब मनोरथ प्राप्त होते हैं जिनकी अप्रमेय महिमा है और जिनकी सेवासे बहुतों ने परमपद पाया है जिनके भजन से क्षयीरोग भी नष्ट होजाता है और मनुष्य संसार में नाना प्रकार के भोग पाकर अन्तमें मोक्ष प्राप्त करताहै और उसके बहुत सन्तान और सम्पदा होकर उत्तमयश और कीर्ति होती है और सर्वकष्ट नष्ट होते हैं जिनके भजन से चन्द्रमा का क्षयीरोग नष्ट होगया इतना सुन नारदजी ने पूछा कि इस चरित्र को विस्तार से वर्णन करो ब्रह्माजी बोले कि हमारे अंगुष्ठ से जो दक्षप्रजापति उपजा उसने हमारी आज्ञा से सृष्टि को बहुत बढ़ानाचाहा और वीर प्रजापति की कन्या से विवाह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर दशसहस्र पुत्र उपजाये जिनको तुम भली विधि जानते हो वे तुम्हारे उपदेशसे त्यागी होगये फिर भी दक्षने एकसहस्र पुत्र उत्पन्न किये वहभी तुम्हारे उपदेशसे भ्रष्ट होगये तब दक्षप्रजापतिने क्रोधित होकर तुमको यह शाप दिया कि तुम सदा संसार में फिरकर कहींपर न ठहरोगे फिर दक्षने साठ कन्या उपजाकर दश धर्मराज को और तेरह कश्यपको और सत्ताईस चन्द्रमाको और इसीप्रकार अङ्गिरस और कृशाश्व आदि को दो दो देदीं चन्द्रमाने सबसे अधिक रोहिणी के साथ प्रेम बढ़ाया हे नारद ! जो मनुष्य बहुतस्त्रियों को व्याहकर सब के साथ समान प्रीति न करे उसके सामने असंख्य आपदा आती हैं और उसको कभी आनन्द नहीं मिलता वह सदारोगी रहकर अन्तमें नरक को जाता है सो और दक्ष की कन्याओं को चन्द्रमाके बराबर प्रेम न करने के कारण बड़ा दुःख उपजा वे सबदुःखी होकर दक्षके समीप गईं और रो पीटकर दक्षसे सबवृत्तान्त वर्णन किया दक्षने चन्द्रमा को बुलाकर बहुत समझाया और कहा कि वेदकी रीति के अनुसार सबस्त्रियों से बराबर प्यारकरो फिर चन्द्रमा को विदाकिया कुछ दिनों तक चन्द्रमा दक्षके उपदेश पर चला पर थोड़े दिनोंके पीछे वह रोहिणी को पहिले के समान सबसे अधिक चाहनेलगा तब वे फिर उसीतरह दक्षके समीप जाकर चिल्लाईं दक्षने फिर चन्द्रमाको बुलाकर बड़े क्रोध से कहा कि हे मूर्ख ! तूने हमारा उपदेश न माना अब यहां से जा तुझे क्षयीरोग होजावेगा जिससे तुम भोगविलासके कामके न रहोगे यह कहतेही चन्द्रमा क्षयीरोग में ग्रसित हो बहुत दुःखी हुआ उसका तेज नष्ट होगया तब चन्द्रमा की सर्व स्त्रियां अतिदुःखी हुई और देवताभी चन्द्रमा विना चिन्ता में पड़कर उसको हमारी शरण में लाये हमने चन्द्रमा को बहुत धिक्कार देकर कहा कि जबसे इसने राजसूय यज्ञ किया तबसे इसको धर्माधर्म नहीं सूझता इसने अपने गुरुकी स्त्री

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तारा को भगाया जो हम इसको न बचाते तो शिवजी ने इसको जलाही दियाथा यह बात इसके मनसे भूल गई यह सुन चन्द्रमा दुःखी हो हमारे चरणों पर गिरपड़ा और उसने बार २ हमारी स्तुति कर कहा कि वास्तव में मैंने बारम्बार बड़े पाप किये हैं पर आपने मुझको हरबेर बचालिया है फिर इस तरह का अधर्म नहीं करूंगा ऐसी बिनतीकर वह हमारे सामने हाथ बांध खड़ारहा ॥

बीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि चन्द्रमा की यह बिनती और दीनता देख मुझे दया आई मैंने कहा कि तुम सौराष्ट्रदेश में जो तीनों लोकमें प्रसिद्ध है और जहां प्रभासक्षेत्र में शिव पूर्णांशसे विराजमान हैं और वह देश शिवजी को अतिप्रिय है वहां तप करने से सर्वदोष और पाप दूर हो-जाते हैं वहां पहुँचकर तुम शिवलिङ्ग को स्थापित करो और उत्तमोत्तम वस्तु चढ़ाकर शिवजीकी पूजा करो और मृत्युञ्जयमन्त्र का जप करना और सर्वन्यासकर एकही आसनसे बैठना और हर प्रकार की चतुरता को छोड़देना और योग धारणकर शिवजीका स्मरण करना और अ-पने मनोरथ के पूरे होनेपर निश्चयरख शिवजीके प्रेम में लगेरहना क्योंकि शिवजी प्रेम विना प्रसन्न नहीं होते उनके समान अपने भक्तों को पालनेवाला और कौन है तुम हर प्रकार मृत्युञ्जय शिवजीको प्रसन्न करो तुम्हारा यह रोग नष्ट होजावेगा क्योंकि असंख्य मनुष्योंने शिवजीकी भक्ति से सब कुछ पाया और बहुतोंने मृत्यु को जीता है और बहुधा बड़े बड़े पापी भी मुक्ति पागये हैं सो चन्द्रमाने हमारे वचन को सुनकर तुरन्त प्रभासक्षेत्र में शिवलिङ्ग की स्थापना की और छः मासतक कठिन तप करता रहा और विधिपूर्वक एकअर्बुद मृत्युञ्जय का जप किया शिवजी प्रसन्न हो प्रकटे और चन्द्रमाको वरलेने के लिये आज्ञा दी चन्द्रमा ने प्रणाम और स्तुति के अनन्तर क्षयीरोग के दूर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होने के लिये विनय की और कहा कि तुम्हारी भक्ति मुझको सदा बनीरहे शिवजी बोले कि दक्ष का शाप परिपूर्ण नष्ट नहीं होसक्ता परन्तु तुम क्रम से प्रतिमास में घटा बढ़ा करोगे फिर चन्द्रमा ने स्तुतिकर विनय की कि तुम यहां लिङ्गरूप से स्थित रहो इतने में हम और विष्णु ने भी आकर चन्द्रमा की इच्छानुसार कहा कि तुम लिङ्गरूप होकर शक्तिसहित इस स्थानपर स्थित होजावो इस प्रकार सबकी बिनती सुनकर शिवजीने मान ली और पूर्णांश से गिरिजासहित उसी स्थान पर स्थित होगये उस लिङ्ग की सबने पूजाकर बड़ाउत्सव किया उस दिनसे शिव वहां पूर्णांश से स्थित हैं फिर देवता आदि सब अपने २ स्थानों को चलेगये सोमेश्वर लिङ्ग की बड़ी महिमा है जैसा कि वेद कहते हैं चन्द्रमा का क्षयीरोग दूर होते कुछभी विलम्ब न हुआ और उनकी सेवासे हर प्रकार के रोग दूर होजाते हैं बहुधा मुनीश्वरों ने उनकी सेवाकर परमपद पाया है इस लिङ्गके सामने चन्द्रमा का बनाया हुआ एक कुण्ड है जो मनुष्य उसमें स्नान करे उसका मनोरथ पूर्ण होता है यह चरित्र अति आनन्द देनेवाला है जैसा कि देवता और मुनि आदि और वेद पुराण सब इस बात में सम्मति रखते हैं जिनकी सेवासे फिर आवागमन नहीं होता और हे नारदजी ! तुम और शारद और सनकादिक और शेषआदि भी उनकी महिमा वर्णन करते गूंगे होजाते हो इस चरित्र के सुनने से शिवजी अतिप्रसन्न होते हैं ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि अब हम मल्लिकार्जुन शिवलिङ्ग का वर्णन करते हैं यद्यपि हमने चरित्रको अतिविस्तारसे बखाना है पर यहां भी संक्षेप से कहतेहैं कि जब शिवजीके पुत्र स्कन्दजी संसारभर की परिक्रमा कर कैलास में आये तो हे नारद ! तुमने उन से गणपति के अधिकार का सर्ववृत्तान्त वर्णन किया जिसको सुन गुह अतिदुःखी हो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने माता पिता शिवजी और शिवरानी जीके पास जाकर चुपचाप बैठ रहे और स्तुति करनेके उपरान्त अप्रसन्न हो क्रौञ्चगिरि में गये यद्यपि माता पिताने उनको बहुत मनाया समझाया पर स्कन्दजीने कुछ न माना तब गिरिजाजीने अपने पुत्रके वियोग में बहुत रोदन किया तब शिवजीने गिरिजा से कहा कि तुम कुछ दुःख मत करो तुम्हारा पुत्र तुरन्तही तुम्हारे पास आवेगा गिरिजाने कहा कि तुम देवताआदिको मनाने के लिये भेजो कि हमारा पुत्र यहां आवे कदाचित् वह यहां न आवेगा तो हम तुम वहां चलेंगे शिवजीने गिरिजा को इतना दुःखी देख देवता और मुनियोंको गुहके पास भेजा उन्होंने बहुतेरा स्कन्दजी को समझाया पर उन्होंने किसी का कहना न मानकर और भी बहुत हठकी उन्होंने लौटकर शिवजीसे सबहाल कह सुनाया सो शिव और शिवरानी पुत्रके वियोग में अतिदुःखी हुये सो वियोग का दुःख न सहकर स्कन्दजी के पास गये गुह माता के आने का हाल जानकर तुरन्त तीन योजन और अधिक क्रौञ्चपर्वत पर चलेगये कि माता पितासे भेंट न हो निदान माता पिताभी पुत्र की ऐसी हठ जानकर वहां न गये और ज्योतिरूप होकर उसीस्थान पर स्थित होगये वही संसार में ज्योतिर्लिङ्ग प्रसिद्ध है उसीको सब मल्लिकार्जुन कहते हैं सो हर पर्वमें पुत्रके प्रेमसे माता पिता उसस्थान पर जाया करते हैं कि पुत्र की भेंटसे प्रसन्न होवें पन्द्रहवें दिन तो शिवजी और पूर्णमासीको गिरिजा वहां जाया करती हैं पर वहां नहीं ठहरते वे अपने स्थानको लौट आया करते हैं और रात दिन गुह का स्मरण करते हैं यह दूसरा शिवलिङ्ग बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से है उनके दर्शन से हर प्रकार का आनन्द मिलता है इसकी महिमा तीनों लोक में प्रसिद्ध है हे नारदजी ! जब कि यह ज्योतिर्लिङ्ग प्रकट हुआ तो हम और विष्णु और सब देवता आदिने जाकर उसकी पूजा की और हम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबने बड़ी स्तुति की तब शिवजी प्रकट हुये और हम सबको वहीं वर देकर उसी स्थान में अन्तर्धान होगये इस दूसरे ज्योतिर्लिङ्ग चरित्र के पढ़ने सुनने से सर्व प्रकार का आनन्द मिलता है ॥

बाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी! अब हम तीसरे ज्योतिर्लिङ्ग की महिमा का बखान करते हैं जिनकी सेवासे बहुतेरोंने परमपद पाया है कि अवन्तीपुरी जो सातपुरियों में से है और जिसको उज्जयिनी कहते हैं जिसकी ओर देखनेसे पाप भागजाते हैं और शिवजी और शिवरानी में प्रेम बहुत बढ़ता है वहां एक शुद्धाचारी शिवजी का भक्त ब्राह्मण रहता जो भस्म धारण किये हुये रुद्राक्ष पहने सदा शिवशंकर कहा करता था और निष्काम शिवजीकी भक्ति में लगारहता वह सबकाम वेदकी आज्ञानुसार कर दान आदि नहीं लेता था और विधिपूर्वक पार्थिव पूजन करता सो शिवजीने प्रसन्न होकर उसे अपनी अप्रमेय भक्ति कृपाकी उसके चार पुत्र थे वहभी शिवजी की सेवा में तत्पर रहते उनके ये नाम हैं पहला देवप्रिय-दूसरा प्रियमेधा-तीसरा सुकृत-चौथा धर्मवादी उसी समय में एक असुर बड़ाबलवान् तीनोंलोक को दुःख देनेवाला जिसका नाम दूषण था उपजा वह रत्नमाल गिरि पर अपनी स्त्री सहित रहनेलगा उसने हमारा बड़ा तप किया था और हमसे उसने बड़े बल का वर प्राप्त किया था सो उसने अहंकारसे सब देवताओं को भी जीत लिया और उसी पर्वत पर रह तीनोंलोक की राज्य करनेलगा उसने तीनों लोक का धर्म मिटा भांति २ के पाप किये और सबको दुःख पहुँचाया सो सब देवता और मुनिआदि मेरे पास आकर पुकारे हमने कहा कि हमतो उसे वर देचुके हैं पर उसको शिवजी मारडालेंगे तुम धैर्य रक्खो यह कह हमने सब देवता आदि सहित शिवजीके समीप जा प्रणाम दण्डवत् और स्तुति के उपरान्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विनय की कि हम सबको दूषण दैत्य बड़ा दुःख देता है तीनोंलोकमें कोई सुखी नहीं तुम सदा दैत्यों का नाश किया करते हो कृपा करके उसका भी बध करो शिवजी बोले कि तुम सब अपने २ स्थानों को चले जावो हम उसको नष्ट करेंगे जब पुत्रों सहित हमारे भक्त को जो उज्जयिनी में रहता है यह दैत्य दुःख देगा तब हम उसको मारडालेंगे यह सुनकर हम सब अपने २ स्थान पर आकर समय को देखनेलगे सो शिवजी की माया से दूषणके मनमें यह बात उपजी कि शिवजीके भक्तों को दुःख देनाचाहिये इसी विचारसे उसने अपने वीरोंको आज्ञा दी कि देवताओं का मूल ब्राह्मण हैं व उनका मूल शिवभक्त हैं इससे तुमको उचित है कि शिवभक्त को जड़पेड़ से नष्ट करो यह कह आप से सेनासहित शिवभक्तों के बध करने के निमित्त चला और पहिले उज्जयिनी में पहुँचा क्योंकि उसने सुना था कि उज्जयिनी में शिवके भक्त बहुत से रहते हैं उसने उज्जयिनी को चारों ओर से घेरलिया और इतना अन्याय और उपद्रव किया कि सब उज्जयिनीके निवासी अति दुःखी होकर रोने लगे वे लोग विकल हो घरबार छोड़ बाहरको भागे उनको दैत्योंने पकड़ लिया पर शिवजीके भक्त बराबर अपने घरोंमें बैठे रहे क्योंकि उनको पूर्ण विश्वास था कि शिवजी हमारे सहायक हैं हम क्यों भागें निदान दैत्य सेनासहित उस स्थान पर पहुँचा जहां शिवजीके भक्त बैठेहुये थे दैत्य ने आज्ञा दी कि इनको बन्दीमें छोड़ो और तुरन्त मारडालो यहकह आप दैत्यों सहित उनके मारनेके लिये आगे चला पर शिवभक्तों के मनमें कुछभी भय न हुआ उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि वे उस स्थानतक नहीं पहुँचे जहां कि शिवभक्त ब्राह्मण पार्थिवपूजा कररहे थे कि उनके चारों ओर की धरती फटकर वहां गढ़ा होगया और ऐसा महाभयानक शब्द हुआ कि तीनों लोक कांप उठे बहुत से दैत्य मूर्च्छित होकर गिरपड़े बहुत

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से भागगये पर दूषण दैत्य तोभी उसके भीतर पैठगया कि उनको मार डालें निकट था कि वह ब्राह्मणों के समीप पहुँचजावे कि शिवजी ने प्रकट हो अतिक्रोधसे कहा कि तुम्हीं हमारे भक्तोंको मारोगे देखो हम इसी लिये प्रकटे हैं तुम्हारे मारने में अब कुछ भी विलम्ब नहीं है हम महाकाल हैं अपने भक्तोंको बचाते हैं अब तू आगे न आना पर तो भी दूषणदैत्यने कुछ न माना आगे चला शिवजीने एक हुंकार किया जिससे दूषण जलकर भस्म होगया और सब दैत्य जो उसके साथ थे उसी समय जल गये बाक़ी दैत्य भागकर पृथ्वीके नीचे छिपरहे और ब्राह्मण अपने चारों पुत्रों सहित शिवजी को देख अतिप्रसन्नता से शिवजी की स्तुति करनेलगा इतने में सबदेवता और मुनिआदि उस स्थान में आगये और हम और विष्णुभी बड़े प्रेमसे सभाके साथ हुये देवताओं ने दुन्दुभी बजाई आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई हम सबने शिवजी की स्तुति की तब ब्राह्मण ने शिवजी से विनती की कि हे सदाशिव ! आपने आके अपने भक्तोंको कृतार्थ करदिया और हर प्रकार सबदुःखों को दूरकरके तीनों लोकको रखलिया पर मेरी विनय है कि इसी गर्तमें आप भवानी और गणोंसमेत स्थित होवें और जो दूषण दैत्य संसारका कालथा उसको तुमने नष्ट करडाला इससे तुम्हारा नाम महाकाल हो तुम्हारी पूजासे संसारभर मनोरथ पावे सो और सबनेभी इसी बात की विनय की शिवजी ने अङ्गीकार किया और ब्राह्मण की स्थापित की हुई जो शिवलिङ्ग की मूर्ति थी उसीके भीतर शिवजी प्रवेश करगये उस समय ब्राह्मणने अपने पुत्र हम विष्णु और सब देवता और मुनि आदि समेत उस मूर्ति की पूजा की फिर सब अपने २ लोक को चलेगये ॥

तेईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा हे नारद ! महाकाली की पूजा से कोई बात

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुर्लभ नहीं बरन परमपद मिलता है और महाकालके समान भक्तका आनन्द देनेवाला दूसरा कोई देवता नहीं उनकी पूजा से सब मनोरथ पूरे होते हैं और पाप दूर होते हैं और धन स्त्री पुत्र आनन्द अधिक होकर दुःख का लेशभी नहीं रहता आयु बढ़ती है और सर्वरोग नष्ट होजाते हैं राजा चन्द्रसेन की आपदा इन्हीं की पूजा से दूरहुई और इन्होंने श्रीकर को अपना सेवक बनालिया इतना सुन नारदने पूछा कि हे ब्रह्माजी ! श्रीकर का चरित्र विस्तार से वर्णन कीजिये ब्रह्माजी बोले कि उज्जयिनीमें चन्द्रसेन राजा हुआ वह शिवका बड़ा भक्त था और महाकाल की बड़ी सेवा किया करता और मणिभद्र जो शिवका गण था उसकी चन्द्रसेनसे बड़ी प्रीति होगई उसने प्रसन्न होकर राजा को एक चिन्तामणि दी जिसके देखने सुनने स्पर्श करने और स्मरण से सर्वदुःख दूर होकर आनन्द प्राप्त होता है और लोहा, पीतल और पत्थर आदि जो उसमें छूजावे वह तुरन्त सोना होजावे राजा चन्द्रसेन उस मणि को पहनकर सूर्यके समान प्रकाशता था जब यह वृत्तान्त दूसरे राजाओंने सुना तो उन सबको लोभ उपजा और हर प्रकार के उपायों से आकर राजासे वह मणि मांगी क्योंकि यह रीति है कि मूर्खलोग दूसरे का धन देख जला करते हैं और प्रकट है कि देवतासे जो वस्तु प्राप्त हो उसको किसीको न देना चाहिये सो पृथ्वी भरके राजाओंने इकट्ठे हो चन्द्रसेनपर धावा किया और उज्जयिनी को चारों ओर से घेरलिया पर उस समयभी राजा अतिदृढ़ता और सन्तोष से निर्जलरह महाकाल की शरणमें गया और रात्रि दिन उनकी पूजा की महाकालने उस समय यह चरित्र किया कि एक गोपी अपना पांच वर्ष का बालक लियेहुये वहां आई और चन्द्रसेन की पूजा देखने लगी बालकको शिवजीकी पूजा की बड़ी अभिलाषा उपजी उसने प्रेम पूर्वक एक पत्थर उठा उसको स्थापित किया और तन मन से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकी पूजा की और सबविधि से पूजा में लगा केवल अपनी बुद्धिसे सब बातें कीं वह बारम्बार शिवजी को प्रणाम करके नाचनेलगा जब उसकी माता ने उसको भोजनके निमित्त बुलाया तो वह अपनी माता के पास न गया तब उसकी माताने उस स्थान पर जाकर अपने पुत्र को भलीभांति मारा और हाथ पकड़कर खींचलिया पर तोभी वह शिव जीके प्रेममें डूबकर न गया तब उसकी माता ने शिवलिङ्ग को बहुत दूर फेंक दिया और अतिक्रोध से बालकको मारा उस समय वह बालक बहुतरोया और मूर्च्छित हो पृथ्वी में गिरपड़ा जब उसने नेत्र खोले तो उसको विचित्र लीला देख पड़ी अर्थात् उसने अच्छा बनाहुआ शिवालय देखा जिसमें नाना प्रकार के रत्न और मणियां लगी हुई थीं उसके खम्भे जड़ाऊ सोनेके और द्वारभी सोनेके थे और हज़ारों स्वर्ण के कलश चढ़े हुये बीचमें रत्नों का एक सिंहासन रक्खा हुआ ऐसी शिवजीकी बड़ाई देख वह बालक आश्चर्यपूर्वक अति प्रसन्न हुआ और उसने शिवपूजा की महिमा जानी और दण्डवत् कर पृथ्वी में गिरपड़ा और शिवजीकी बहुत स्तुति की और कहा कि हमारी माता जो अतिमूर्खा है उसका अपराध क्षमा कीजिये जो फल मुझे आपकी पूजा में हुआ उसके बदले मैं केवल यह चाहताहूं कि मेरी माता का अपराध दूर होजावे जब सन्ध्या को वह लड़का अपने घर चला तो देखा कि नयानगर इन्द्रलोकके समान स्वर्णका बसा है उसमें रत्न मणि और मुक्ता चारों ओर वर्तमान हैं उसमें सबसे श्रेष्ठ इसकी माता का मन्दिर है जिसमें एक शय्या रत्नोंसे जड़ी हुई रक्खी है जिसपर श्वेत वस्त्र पड़ेहुये हैं उसके ऊपर उसकी माता गोपी सोरही है जो उत्तमोत्तम वस्त्राभूषणोंसे अलंकृत है उसका स्वरूप औरही प्रकारका प्रकाश युक्त होगया है सो उसने अपनी माता को नींद से जगाया उसकी माता ने भी उठकर जब यह चरित्र देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और अतिप्रसन्न हो बालक को अपने शरीर में लिपटा लिया और शिवजी की कृपा समझ राजाके पास यह सब हाल कहला भेजा सो राजा शिवजी का यह चरित्र सुन अतिप्रसन्न हुआ और अपनेमित्रों सहित जाकर देखा और अतिप्रेम में डूबकर बड़ा आनन्द माना और बालक के साथ बहुत प्रेम बढ़ाया और कहा कि उस राजा की बड़ी भाग्य है कि जिसकी प्रजा शिव की भक्ति में इतनी दृढ़ हो ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि इसीतरह रातभर शिवजी के चरित्र और महिमा कहते एकक्षणके समान बीतगई और शत्रुओं का भय कुछभी किसी के मनमें न रहा प्रभात को जब राजाओंने अपने दूतोंसे यह शिवजी का चरित्र सुना तो वे अतिआश्चर्यमें हुये और परस्पर कहनेलगे कि जहांपर सदाशिव ऐसे प्रसन्न हैं वहां किसी की क्या चलसकेगी निदान वे सबशस्त्रों को डालकर चन्द्रसेनके समीप गये और चन्द्रसेनने सबका आदर किया फिर सबने महाकाल के दर्शन किये फिर गोपी के मन्दिर में जाकर गोपी की बड़ी प्रशंसा की और जब कि गोपीके स्थापित कियेहुये लिङ्ग को देखा तो सब शिवजी की भक्तिमें स्थिर होगये और एक बड़ीभारी सभा सजाई गई जिसमें सब राजाओं ने गोपीके पुत्रसे भेंट की और उसको बड़ी २ सौगातें दीं और जितने संसारमें गोप थे उन सबका राजा उस लड़के को बनाया उस समय हनुमान्जी वहांपर प्रकट हुये सो सब राजा उठ खड़ेहुये और हनुमान् जीको जानकर सबने स्तुतिकी जो बहुत बड़ी है और कहा कि मेरे बड़े भाग्यहैं जो आप यहां आये यह कह सब राजा प्रसन्नहुये और हनुमान् जीने उस गोपी के लड़के को उठालिया और अपने हृदयमें लगाकर उसके सबशरीर को स्पर्श कर लिया और सबराजाओं से हनुमान्जी ने कहा कि यह महाकाल शिवजी का लिङ्ग अतिशुभ है वह बड़ा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुख देनेवाला सबदुःखोंका नाशकरनेवाला भक्तों का मनोरञ्जन और शत्रुओं का नाश करनेवाला है कल तेरसि तिथि और शनैश्चर का दिन था सो प्रदोषके समय इस गोपीके बालकने शिवजीकी पूजाकी महाकालने प्रसन्न होकर उसको राजाचन्द्रसेन सहित कृतार्थ करदिया महाकालके समान दूसरा स्वामी नहीं तीनबेर महाकालका नाम लेने से दुःख और पीड़ा नष्ट होजाती है यद्यपि प्रदोष व्रत सब व्रतों का राजा है पर जो प्रदोष शनिवार को पड़े तो वह और भी अधिकशुभ है और जो कृष्णपक्ष में प्रदोष होता है उसकी अप्रमेय महिमा है ऐसा योग पाकर जो महाकाल की पूजाकरे तो व्रती और महाकाल का पूजक सब अच्छे फल पावें और मोक्ष पाकर सदाशिवजी के समीप रहाकरें इस बालकने ऐसेही योगमें कलके दिन महाकाल की पूजा की थी इस बालक के समान दूसरा कोई गोपों के यश बढ़ानेवाला न होगा इसकी आठवीं पीढ़ी में नन्दनामगोप उपजेगा वह पूर्ण शिवजी का सेवक होगा वह गोपेश्वर शिवलिङ्ग की पूजा करेगा सो शिवजीकी आज्ञा से विष्णु आप उसके पुत्र होकर कृष्णके नाम से प्रसिद्ध होंगे आज से इस बालक का नाम श्रीकर होगा यह कह हनुमान्‌जी ने उसको शिवजीके पूजा की विधि बतादी इस प्रकार श्रीहनुमान्‌जी राजाचन्द्रसेन और श्रीकर पर अनुग्रह कर अन्तर्धान होगये और सब राजा चन्द्रसेन से आज्ञा लेकर अपनी २ राजधानियों को लौट गये और श्रीकर हनुमान्‌जीके उपदेशके अनुकूल ब्राह्मणके द्वारा शिवजी की पूजामें लगे और चन्द्रसेन दोनों लोकमें प्रसन्न रहकर अन्त में परमपद को पहुँचे हे नारदजी ! महाकाल की ऐसी महिमा है यह चरित्र अतिपवित्र है जिसके पढ़ने सुनने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है—तीसरा अवतार पूर्ण हुआ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पच्चीसवां अध्याय ॥

चौथे ज्योतिर्लिङ्गका वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! एकसमय तुम गोकर्णक्षेत्र में जिसका हम वर्णन करचुके हैं गये और गोकर्णमें स्नानकर तुमने महाबल शिवलिङ्गकी पूजा की और वहांसे लौटकर तुम शिवलिङ्गों के दर्शन करते रेवानदी जिसका नर्मदा भी नाम है और शिवकी पुत्री प्रसिद्ध है उसके तटपर पहुँचे रेवानदी की महिमा तो तीनोंलोक में प्रसिद्ध है कि जिसके दर्शनमात्र से सबपाप और दुःख दूर होजातेहैं और जिसमें स्नान करके संसार में नाना प्रकार के आनन्द और अन्तमें परमपद प्राप्त होतेहैं तीनों लोक की नदियों में गङ्गा सर्वोपरि है जिसमें स्नान करने से अप्रमेय सुख प्राप्त होता है उससे श्रेष्ठ रेवा है जैसा कि वेद और पुराण बखानते हैं चौदह दिन यमुना में स्नान करनेसे पाप नष्ट होजाते हैं और तीन दिन सरस्वती में स्नान करने से और एक दिन गङ्गामें स्नान करने से सबपाप निवृत्त होते हैं और रेवाके केवल दूरही से दर्शनसे उतना फल होताहै और जिसके कङ्करभी शिवजीके समान हैं और जहां शिवनिर्माल्य लेने से भी कुछ दोष नहीं वहां और जो तारयन्त्र तीर्थ है वह सबपापों का दूर करनेवाला है हे नारद ! तुमने वहां जाकर स्नानकिया और प्रणवेश्वर शिवलिङ्ग की पूजाकी वहां तुमने विन्ध्याचल पर्वत को देखा जहां संसार भरका आनन्द मालूम होता है वहां नाना प्रकार के वृक्ष और जीवधारी हैं और वह पर्वत दो प्रकार के रूप रखताहै सो तुमको अतिसुन्दरतासे देवताओं के समान रूप धारण किये देख अति प्रसन्न हुआ और तुम्हारी अगवानी कर तुमको उसने प्रणाम किया और बहुत बिनतीके साथ तुमको अच्छे स्थान पर बैठाया और शुभ वस्तुओं से तुम्हारी पूजा की और तुम्हारे आनेसे कृतार्थ हुआ और कहा कि अब मैं अपने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबकुलोंमें श्रेष्ठ कहलाऊंगा मेरी अयोग्यदशा जो पर्वत होनेके कारण है जातीरहेगी यह सुन तुमने ठंढी श्वास खींची तब विन्ध्याचल ने कहा हे नारद ! आपके ठंढी श्वास लेनेका क्या कारण है आप कृपा करके वर्णन कीजिये यद्यपि पृथ्वी थांभनेका बल मेरु में है और शिव जीके सम्बन्ध के कारण हिमाचल मानके योग्य है पर मेरु केवल मेरी समझ में देवताओं के रहने से श्रेष्ठ गिनागया है और निषध, नील, मन्दराचल, रैवत, क्रौञ्च, किष्किन्धा, श्रीगिरि, सह्य आदि पर्वत पृथ्वीके थांभने में हमारे समान नहीं हैं विन्ध्याचल के ऐसे अहंकारके वचन सुन तुमने मनमें कहा कि अहंकार से सिवाय दुःखके सुख नहीं मिलता क्या श्रीगिरि से कोई पर्वत अधिक श्रेष्ठ और उत्तम है जिसके शिखर देखकर परमपद मिलता है निदान तुमने विन्ध्याचल से कहा कि वास्तवमें तुम सत्य कहतेहो तुम ऐसेही हो पर सुमेरु तुमको कुछ भी नहीं जानता इसीसे हमने ठंढी श्वास खींची थी यह कह हे नारद ! तुमतो चलेगये और विन्ध्याचल अति चिन्तित हुआ और कहा कि मुझे धिक्कार है जिसका ऐसा बलवान् शत्रु है मैं क्या करूं जिससे मैं सुमेरु को जीतसकूं निदान उसने नाना प्रकारके विचारों के उपरान्त यह बात मनमें शोची कि शिवजीकी शरणमें जाकर उनके उपदेशके अनुसार चलूं कि मेरी विजय हो उनकी सेवा से किसने मनोरथ नहीं पाया यह विचार वह नर्मदा के तट पर गया जहां ओंकारेश्वर लिङ्ग विराजमान हैं और वहीं से रेवानिकली है वहांपर विन्ध्याचलने शिव-लिङ्ग की स्थापना की जिसका नाम अमरेश्वर है और उसका दूसरा नाम परमेश्वर है सो षट्मास पर्यन्त वह बराबर शिवजी के ध्यान और पूजा में लगारहा अन्तको शिवजी विन्ध्याचल के ध्यान के अनुसार उसके सामने खड़े होगये और कहा "वरंब्रूहि" विन्ध्याचलने शिवजी की मूर्ति अपने मुख्य लक्षणों समेत अपने आगे खड़ी देखी ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छब्बीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि विन्ध्याचल ने ऐसे सदाशिव का शुद्ध स्वरूप देख प्रणाम कर बड़ी स्तुति की और कहा कि मैं आपकी शरण हूं हमारा दुःख दूर करदीजिये हमसे वृथाही सुमेरु शत्रुता रखता है और वह अपने को हमारा स्वामी और वीर समझता है मैं आपसे यह बात चाहता हूं कि मैं उसको जीतसकूं शिवजी बोले अच्छा यही होगा उस समय सब देवता और मुनि वहां इकट्ठे होगये और सबने शिवजी को प्रणाम किया और विन्ध्याचलने देवता और मुनि आदि सहित शिवजी से विनय की कि आप कृपा करके यहां स्थित हों सो शिवजी स्वीकार करके जो लिङ्ग कि विन्ध्याचलने स्थापित कियाथा उसमें प्रवेश करगये और दूसरा लिङ्ग पूर्णांश से जो तारेश्वर था वह दूसरा लिङ्ग शिवजी के अंशसे हुआ तथाच जो यन्त्रस्थल लिङ्ग है वह तारेश्वर है और जो पार्थिवलिङ्ग है वह परमेश्वर लिङ्ग है उस समय वहां बड़ा उत्सव हुआ और सबने उस शिवलिङ्ग की पूजा की फिर अपने २ स्थानों को लौटगये और विन्ध्याचल अपने घरमें आकर कहने लगा कि मुझको सुमेरु के अहंकार का कारण मालूम होगया वह यह है कि उसकी चन्द्रमा और सूर्य नक्षत्रोंसमेत परिक्रमा करते हैं इससे उसको अपनी बड़ाईपर अहंकार है सो मैं आज इतना बढ़ूंगा कि सूर्यको चलनेसे रोंकदूंगा इस उपायसे मैं सुमेरुको जीतूंगा यह शोच वह इतना बढ़ा कि उसने सूर्य की गति को रोंकलिया और सूर्य सहस्रों किरणोंसे प्रकाश फैलाकर आगे को चले पर घोड़े आगे न चलसके वे वहीं ठहर गये जिससे दो दिशा अर्थात् इन्द्रलोक और कुबेरलोक में बहुत गरमी और किरणों की अधिकता से बड़ा दुःख फैला और सर्वमनुष्य जलनेलगे और वरुण और यमराज की दिशामें अँधेरा छागया जिससे वहां के पुरुष स्त्री सब विकल होगये निदान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसीतरह तीनोंलोक दुःखी हुये और देवता मुनि आदि मिलकर हमारे पासगये और सब वृत्तान्त कह सुनाया हमने कहा कि विन्ध्याचल ने सुमेरुके जीतने को रेवानदी के तट पर प्रणवेश्वर शिवलिङ्ग के निकट बड़ातप किया है और आप भी एक प्रणवेश्वर नामक लिङ्ग स्थापित किया है उनके वर से उसने इतना बल पाया है इससे तुमभी सब मिलकर वहां जाओ और प्रणवेश्वरकी सेवाकरो तुम्हारे लिये उत्तम होगा सो वे सब जाकर शिवजी की पूजा करनेलगे शिवजीने प्रसन्न होकर कहा कि तुम सब हमारी काशीपुरी में जाकर अगस्त्यमुनि से यह सब वृत्तान्त कहो वह तुम्हारा काम करदेवेंगे यह सुनकर सब देवतादि ने अगस्त्यके समीप जाकर प्रणाम किया और उनके पूछने पर बृहस्पति ने कहा कि विन्ध्याचलने सूर्य को रोंक लिया है हम शिवजीकी आज्ञानुकूल तुम्हारे पास आये हैं अगस्त्यने अङ्गीकारकर सबको बिदा किया और काशीको अति दुःखसे छोड़कर विन्ध्याचलके पास गये जिनको देख विन्ध्याचल कांप उठा और कहा कि मैं आपका सेवकहूं जो आज्ञा हो उसका पालन करूं अगस्त्यजी बोले कि जब तक हम लौट न आवें तबतक तुम इसी तरह रहना यह कह अगस्त्य दक्षिण की ओर जाकर फिर न आये और विन्ध्याचल अगस्त्यमुनिके आने की बाट देखता रहा न अगस्त्य लौटे न विन्ध्याचल बढ़सका इससे तीनों लोकको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ यह चरित्र अतिपवित्र है जिसके पढ़ने सुनने से संसार में आनन्द और अन्त में परमपद प्राप्त होता है ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हमारे पुत्र स्वायम्भुवमनु बड़े प्रतापी हुये जिन्होंने सब धर्मों का वर्णनकर सब पापोंको दूर करदिया उन्हों ने शिवजी की बड़ी भक्ति की और स्मृति बनाकर सब विवादों को दूर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया उनके तीन कन्या और दो पुत्र उपजे जिनके बड़ी सन्तान हुई एक लड़के का नाम उत्तानपाद और दूसरेका नाम प्रियव्रत था और इसी प्रियव्रतने रथपर चढ़ सूर्यके समान संसारभरमें भ्रमणकर सबद्वीप और समुद्रों को बनाया उसके सात पुत्र उपजे जिनको उसने हमारी आज्ञा से क्रमपूर्वक एक २ द्वीप देदिया और आप शिवजीकी भक्ति में प्रवृत्त हो परमपद पाया उनमें सबसे बड़ा लड़का आग्नीध्र था जो जम्बूद्वीप का स्वामी हुआ उससे नाभिनामक पुत्र उपजा उससे ऋषभ हुआ उसके सौपुत्र उपजे जिनमें सबसे बड़े पुत्र का नाम भरत था जो चक्रवर्ती राजाहुआ और नव लड़के योगी होगये जिनके साथ तुमने बड़ी वार्त्ता की और इक्यासी लड़के सिद्ध हुये बाक़ी क्षत्रिय होकर अपने क्षात्रधर्म में दृढ़रहे भरतका यश तीनों लोकमें फैलगया वह शिवजी का बड़ा भक्त था जो लड़का जिस खण्ड में राजा हुआ वह खण्ड उसीके नाम से प्रसिद्ध हुआ निदान स्वायंभुवमनु की बड़ी पुत्री जिसका नाम आकूती था वह रुचिमुनि से व्याही गई सो रुचि पुत्रकी प्राप्तिके निमित्त विष्णुजीका तप करनेलगे विष्णुने प्रसन्न होकर कहा कि वर मांगो रुचिमुनि बोले कि हम तुम्हारे समानपुत्र चाहते हैं विष्णुजीने कहा कि यही होगा यह कह विष्णुजी अपने लोकको और मुनि अपने घरको लौट आये निदान प्रसूतिकालमें विष्णुजी दो रूप हो आकूती के उदरसे उपजे जिनका नाम हमने नरनारायण रक्खा उससमय हम सबने आकर बड़ा उत्सव किया फिर सब अपने २ लोक को चलेगये सो दोनोंने अपने दोनों पुत्रों को विष्णु जानकर दीक्षा की फिर नरनारायण दोनों हिमाचल पर्वत में तप के निमित्त गये और जो हिमाचल की एक शाखा केदारके नामसे प्रसिद्ध है वहां दोनोंने बड़ा तप किया और पार्थिवपूजा शिवजी का अखण्ड ध्यान करते रहे इसी प्रकार बहुत काल उनको तप करते हुये बीता तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजी अति प्रसन्न होकर प्रकट हुये जहां कि नरनारायण तप करते थे दोनोंने शिवजीको अपने सामने खड़ा देखकर बड़ी स्तुतिकी और कहा कि हमको अपनी भक्ति कृपा करो यह कह नरनारायण चुप होगये शिवजीने कहा कि तुम्हारी ऐसी शुभ स्तुति है कि हम अति प्रसन्न हुये जो मन की इच्छा हो वह मांगलो तुम हमारे रूप हो भक्तों के लिये तुमने धरती में अवतार लिया है यह सुनकर नरनारायण बोले कि हमको अपने चरणों की भक्ति दो और इसी स्थानपर अपने पूर्णअंशसे स्थित होजावो यहसुनकर हँसकर केदारमें जहां नर और नारायण तप करतेथे अपने पूर्णअंशसे स्थित होगये और ज्योतिर्लिङ्ग होकर केदारेश्वर के नामसे प्रसिद्ध हुये नारायणने उनकी पूजा की उस समय शिवजी ने कृपालु होकर सबको कृतार्थ करदिया फिर हम सब अपने २ स्थानों को चलेगये और नरनारायण अति सुखपूर्वक वहां रहे वे प्रतिदिन केदारेश्वरकी पूजा करते हैं उस स्थानको बदरी वनभी कहते हैं जहां देवता और मुनिआदि शिवजी की पूजा करते हैं यह केदारेश्वर शिव अवतार सब भरतखण्ड के पापों के दूर करने वाले हैं नारद आदिमुनि विष्णु नरनारायण और इन्द्रादिसहित इन की पूजा किया करते हैं केदारेश्वर के केवल दर्शन से सबपाप जल जाते हैं वहां जाकर जो मनुष्य कि बर्फमें गलजाते हैं वे परमपद पाते हैं उनको बेप्रयास मुक्ति मिलजाती है और जिनके दर्शन के लिये चलकर जो मार्ग में मरजावे तो भी मुक्ति मिलती है इनकी असंख्य महिमा वेद और पुराण वर्णन करते हैं जब कि कृष्णचन्द्र विष्णुजी के अवतार ने जरासन्ध से हारकर केदारेश्वर में जाकर बड़ा तप और पूजा की और सात मासतक शिवका ध्यान किये हुये केवल एक चरणसे योग धारण कियेहुये खड़ेरहे तो शिवजीने प्रसन्न होकर वरदान मांगने की आज्ञादी कृष्णने अप्रमेय बल मांग सबको जीता और जब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि राजा पाण्डु के लड़के वहां गये कि केदारेश्वरके दर्शन करें और अपने पापों से छूटें तो शिव भैंसे का रूपधर वहां से भाग चले सो उन्होंने अतिप्रेम से श्वासा को इतना रोंका और यह विनय की कि जो पाप हमको महाभारत के युद्ध में हुआ है उसको कृपा करके दूर करो और यहीं स्थित होजाओ तो शिव पिछले धड़से उसी स्थान पर स्थित होगये जिससे पाण्डु के पुत्रों के सर्व दुःख निवृत्त होगये और अगले धड़से नैपाल में जाकर उस देशको कृतार्थ करदिया और हरिहररूपसे वहां सबको सुख देते हैं उनके दर्शनसे सब पाप छूट जाते हैं यह चरित्र हमने केदारेश्वर का वर्णन किया अब हम भीम-शंकर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि जिस प्रकार कामरूप देश में शिवजी प्रकटे और जिस कारण उनका प्रादुर्भाव हुआ वह सब चरित्र हम वर्णन करते हैं कि पूर्वकालमें भीमनामी दैत्य जो कुम्भकर्णके वीर्यसे उपजा था और जिसकी माताका नाम कर्कटी था वह अपनी माता सहित सह्य पर्वतमें स्थितहो तीनोंलोकको तृणवत् समझ नाना प्रकारके उपद्रव करनेलगा एक दिन उसने अपनी माता से पूछा कि हमारे माता पिता कौन हैं वे कहां गये हैं तुम अकेली यहां क्यों रहती हो तू हमको विधवा स्त्री के समान विदित होती है सो उसकी माताने कहा कि तुम कुम्भकर्ण के पुत्र हो जो रावण का छोटा भाई था जिसको दशरथके पुत्र रामचन्द्र ने मारडाला यह सुनकर भीमने पूछा कि तेरा पति और है और मेरा पिता अन्य मनुष्य था और कुम्भकर्ण और रावण कौन थे और राम कौनहैं जिन्होंने उनको मारडाला तुम सब वृत्तान्त वर्णनकरो सो उसने आदि से अन्ततक रावण के कुल और शूर्पणखा का चरित्र और सीता हरण और फिर लङ्कामें श्रीरामजी का गमन और सब दैत्यों का बध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विस्तार से कह सुनाया और कहा कि जब मैं विधवा होगई तो अपने माता पिता के घर रहनेलगी वह मेरा दुःख देख मुनियोंको जो मेरे पतिके बध करने के कारण हुये खानेलगे और दण्डकवन में मुनियों को भक्षणकर दैत्योंको बसाया एकदिन उन्होंने अगस्त्यके एकशिष्य को जिसका नाम तीक्ष्णाह्व था भोजन करनेकी इच्छा की सो हमारे माता पिता को उन्होंने क्रोध की दृष्टिसे देखकर जलादिया और मैं माता पिता रहित होकर तुमको लेकर यहां भागकर बसी शेष वृत्तान्त रामायण में है॥

उन्तीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! रामचन्द्रका चरित्र सुन भीम अतिकोपित हो बदला लेनेके विचार में हुआ कहनेलगा कि देवताओं ने हमारे साथ बड़ी बुराई की है जिनकी सहायता विष्णुने कर हमारे कुल को नष्ट करादिया दैत्योंकी बड़ी अप्रतिष्ठा हुई है जो मनुष्य अपने पिता का बदला न लेवे वह महानीच है सो वह तपकी इच्छा से वन में जाकर हमारा तप करनेलगा और इतना कठिन तप किया कि सहस्रवर्ष पर्यन्त श्वास रोंकेहुये बैठारहा पर हम देवताओं का दुःख समझ उस पर प्रसन्न न हुये सो भीमके उग्र तपसे तीनों लोक जलने लगे और देवता और मुनि आदि अपने २ लोकों से भागकर हमारी शरण में पहुँचे और भीम के तप का वृत्तान्त वर्णन कर कहा कि वह दैत्य की स्त्री और कुम्भकर्ण से उपजा है और अपने पिता का बदला लेनेकी इच्छा से तप कररहा है उसके तेजसे तीनोंलोक जलेजाते हैं तुम जाकर उसको वर दो कि तीनोंलोक जलनेसे बचेरहें यद्यपि यह वचन कहना हमको उचित नहीं पर हम अपने प्रयोजन से कहते हैं हमने देवताओं को बिदाकर उसके पास जाकर उसको वर मांगने की आज्ञादी भीमने कहा कि मुझको अप्रमेय बल कृपा करो कि मैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने पिताके शत्रुओं को जीतूं हम यह वर देकर अन्तर्धान होगये और भीम प्रसन्नचित्त तुरन्त अपनी माता के पास गया और कहा कि मैं सब मुनि और देवताओं का वध करडालूंगा तुम अपने नेत्रों से ऐसा सुख देखोगी यह कहा और एक भयानक शब्द किया कि तीनों लोक कांप उठे देवताओं को भय और दैत्यों को आनन्द प्राप्त हुआ सब दैत्य अपने २ परिवारों सहित उसके समीप गये और भीमको अपना राजा बनाया और भीमने दैत्यों सहित इन्द्र पर चढ़ाई की सो सम्पूर्ण देवता भाग गये और विष्णु की शरण में पहुँचे विष्णु देवताओं को साथ लियेहुये दैत्य के साम्हने खड़े हुये निदान घोरयुद्ध मचा दोनों ओरके मनुष्य बहुतही लड़े और विष्णु और भीमने भली भांति युद्धकर हर प्रकार के शस्त्र चलाये निदान विष्णुजी ने अति कोपित हो ब्रह्मास्त्र हाथमें लिया उस समय आकाशवाणी हुई कि हे विष्णो ! तुम अपने लोकको चले जाओ इस दैत्यको तुम नहीं जीत सकोगे इसको शिवजी बध करेंगे यह आकाशवाणी सुनकर विष्णु तुरन्त अन्तर्धान होगये भीमने जय पा अपनी सेनासहित लौटकर देवताओं के जीतने का हाल अपनी माता से आकर कहा और तीनों लोकका राज्य करनेलगा और देवताओंके स्थान पर दैत्यों को दृढ़ स्वामी बनाया उसने सबके रत्न छीनलिये और वेद पुराण और स्मृति के सब धर्मों को बिगाड़ डाला ॥

तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हम विष्णु और सबदेवता आदिने शिव जीकी शरणमें जाकर दण्ड और प्रणाम के उपरान्त स्तुति की और सब वृत्तान्त भीमका वर्णन करके उसके नष्ट होनेकी विनय की और कहा कि विना तुम्हारे और किसी से वह नहीं मरेगा शिवजी बोले कि अच्छा समय पर हम उसको मारेंगे जब कि वह कामरूपदेशके राजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रियधर्म को जो हमारा भक्त है दुःख देगा तब हम उसको मारडालेंगे तब तक तुम अपने २ स्थानों में जाकर दुःख सहो सो हम सब लौट कर समयकी बाट देखने लगे एक दिन भीम के मनमें आया कि जो शिवजी अपने बाण रामचन्द्रको न देते तो हमारे पिता आदि किसी प्रकार न मारेजाते वही शिव देवता और मुनियों की रक्षा किया करते हैं उन्हींके बल पर विष्णु बलवान् रहते हैं उसको मैं मारडालूं पर वह शिव देख नहीं पड़ता इस लिये शिवजीके भक्तों को दुःख देना चाहिये वे अपने भक्तों का अपमान न देख सकेंगे निश्चय है कि वे तुरन्त आवेंगे यह इच्छाकर वह अपनी सेना सहित शिवभक्तों को ढूंढ़नेलगा और सबसे पहिले कामरूप के राजा को शिवजी का सेवक समझ वहां आया और नाना प्रकारके उपद्रव कर सब मन्दिर खोददाले और घरों को नष्ट करदिया और धन और सामग्री सब लूटली सो सब प्रजा दुःखी होकर राजा के पास जा पुकारी इतने में भीमने राजा के गढ़को घेरलिया और राजाको पकड़ बांधलिया और उसको बहुत मारा और राजाके पैरों में बेड़ियां डालदीं और सब राज्य को राजा से छीन सबका स्वामी आप बना पर राजाने ऐसी दुःख की दशामेंभी शिवजीकी पूजा न छोड़ी और गङ्गाके स्मरणसे मानसी स्नानकर पार्थिव पूजा की और दक्षानामक उसकी रानी जो उसीके पास बन्दिमें थी वहभी बराबर शिवजीको पूजती रही सो शिवजी प्रसन्न होकर गुप्त रीतिसे वहां आये और पार्थिव में स्थित हुये जिसकी पूजा राजा करता था सो एक मनुष्य ने राजा को पूजते हुये देख भीमको खबरदी कि देखो वह इस समय तक पूजा नहीं छोड़ता अब आप उसे अपनी आंखों से देख लेवें सो भीम खड्ग हाथ में लेकर बड़े क्रोध से राजा के पास आया इस इच्छा से कि उसको इसी समय मारडालूंगा और जो मनुष्य उसकी सहायता करेगा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसकोभी नहीं छोडूंगा सो जब वह राजाके समीप गया तो दूत का कहना ठीक पाया और कहा हे राजन् ! तू यह क्या कर रहा है हमसे सत्य २ कह राजाने कहा कि हम तो शिवजी अपनी आपदा के दूर करनेवाले की पूजा कर रहे हैं वे अपने भक्तों के बड़े रक्षक हैं जो तुम्हारे मन में आवे वह करो शिवजी रक्षा करनेवाले हैं यह कहकर राजाने शिव की स्तुति की भीमने हँसकर कहा कि हम तेरे स्वामी को भलीभांति जानते हैं वे हमारा क्या करसकेंगे हमारे पिता आदिने क्या शिवजी की स्थापना नहीं की थी क्या वे शिवजी के भक्त न थे जिन्होंने एक नीचके समान मीच पाई जब तक मैं शिवजीको नहीं देखता हूं तब तक तुम उनको अपना स्वामी समझतेहो तू यह कैसा अकर्म कर रहा है इस मूर्तिको अपने सामने से फेंकदे पर राजा को कुछभी भय न हुआ और अतिदृढ़ता से बैठारहा क्योंकि शिवजीके भक्तोंकी यही रीति है कि आपत्तिकाल में और भी अधिक शिवजी की प्रीति करते हैं राजाने इसी विचार से कि शिवजी अपने भक्तों के प्रति समय रक्षक हैं वे अवश्य सहायता करेंगे तो भीम से कहा कि तू बड़ा मूर्ख है जो शिवजीको औरोंके समान जानता है जानाजाता है कि तू मरणप्राय है कदाचित् शिवजी क्रोध करेंगे तो तुम जलकर भस्म होजावोगे शिवजी वे हैं जिनके सेवक ब्रह्मा और विष्णु भी हैं औरों की क्या गणना है जो तुम हमारे साथ कुछ बुराई करोगे तो उसी समय जलकर भस्म होजावोगे भीमने कहा कि हम भलीभांति तेरे शिवजीको जानते हैं जो तू इसी समय शिवजी की पूजा नहीं छोड़ता तो निश्चय जानना कि तू प्राणसे बध किया जावेगा निदान ऐसा विवाद दोनों से हुआ राजाने कहा कि तेरे मनमें जो आवे वह कर मैं शिवजी की पूजा नहीं छोड़ता भीमने बहुत दुर्वचन सुन खड्ग हाथ में ले कहा कि तेरे शिवजी कहां हैं इस समय आकर तेरी सहायता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करें मैं तेरा शीश धड़ से भिन्न करता हूं यह कहकर भीमने खड्ग चलाया उसीसमय शिवजी पार्थिव के भीतर से प्रकट हुये ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! जब शिवजीको गणोंसमेत भीमने देखा तो शिवजीका महाभयंकर स्वरूप देखकर भयवान् हुआ सो शिवजी ने तुरन्त उसका खड्ग जलादिया और बड़े वेग से कहा कि हमारा बल देख और अपनी शक्ति हमें दिखादे जिस पर तुझको इतना अहंकार है सो भीमको बलने इतना बहँकाया कि वह युद्धके लिये साम्हने हुआ और शिवजीके साथ भले प्रकार लड़ा और दैत्यों और शिवगणोंसे युद्ध होनेलगा वह युद्ध देखकर हम और विष्णु आश्चर्य में खड़ेरहे जो बाण भीमने शिवके ऊपर छोड़े वह सब शिवजीने अपने पिनाकनामी धनुष से काटडाले और हर प्रकार के शस्त्र भीमने शिव पर छोड़े जिनको शिवजीने अपने शस्त्रों से दूर किया और अपने त्रिशूल से भीमको धरती पर गिरादिया जिसको देखकर सब दैत्य रो उठे पर भीम फिर पृथ्वीसे उठकर युद्ध करनेलगा और जो २ बातें युद्ध की होती हैं वह दोनों ओरसे हुई इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हमने तुमको निराश हो शिवजीके समीप भेजा और कहा कि शिवजीसे कह दो कि यह क्या होताहै भीमको मारडालें तुमने जाकर सदाशिवजी की बहुत स्तुति करके बिनती की कि भीम को मारडालिये सो शिवजीने मानकर तुमको हमारे पास भेजा इतने में सब दैत्यों और भीमने शिवजीके ऊपर इकबारगी धावा किया उस समय हाहाकार मचगया और सब देवता रोनेलगे और हम और विष्णु कहनेलगे कि यह क्या होताहै उस समय शिवजीने क्रोधित होकर हुंकार दिया जिससे एक ज्वाला उपजी और सब दैत्यों को जलादिया और भीमको भी उसी ज्वालाने परिवारसहित भस्म करडाला सो वही

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भस्म सदाशिवजीकी नासिकाकी वायुसे उड़ श्रीसदाशिवजी और सब देवताओंके शरीरसे स्पर्शकर पृथ्वीमें गिरी जिससे लाखों गुणदायक औषध प्रकट हुई और जिनके गुणसे सिद्ध लोग नाना प्रकारके रूप धारण करते हैं और जिनके कारण बहुतसे कार्य सिद्ध होते हैं और जिनके बलसे भूत और प्रेतआदि भागते हैं ऐसी लीला सदाशिवजी की देखकर देवतादिकों को अति सुख हुआ और सबने हाथ बांध सदाशिवजी की स्तुति की और कहा कि तुम यहीं स्थित रहो सो शिवजी अपने पूर्णांश से उसी स्थान पर जहां भीमको जलाया था स्थित हुये और यद्यपि वह देश अतिपवित्र था पर जब शिवजी वहां स्थित हुये तो शुद्ध होगया और वह भीम पूर्वशंकरके नामसे प्रसिद्ध हुआ जो पत्थर के रूपसे वहां है जो इस चरित्र को पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा भीमशंकर नाम छठे ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र पूर्ण हुआ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

विश्वनाथलिङ्गका वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम काशीपति विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्गका वर्णन करते हैं जो सब पापोंको क्षय करनेवाले और मोक्षदाता हैं वे ब्रह्महत्याको निवारण करते हैं कि प्रलयके उपरान्त जब शिवजी ही निर्गुणरूपसे रहगये और सर्वसृष्टि को अपनेमें लीनकर अकेले थे और कोई वस्तु सूर्य चन्द्रनक्षत्र कुछ न रहा केवल वही परब्रह्म गुणातीत और जिसके वर्णन में वेद भी गूंगा बहिरा है और मन वचन और इन्द्रियोंसे भी वह प्रतीत नहीं होसक्ता उससमय वह अकेलाही रहगया तब उसका कोई वर्ण और रूप न था और वह छोटे बड़े मोटे पतले कुछ भी न थे निदान हर प्रकार से निर्गुणरूप था सो उसी निर्गुण ब्रह्मने सगुणरूप धारने का विचार किया और तुरन्त पाञ्चभौतिक शरीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धार सगुणरूप हो शिव हरके नाम से प्रसिद्ध हुये और उनके शम्भु महेशादि और बहुतसे नाम हुये हे नारद! निर्गुणस्वरूप और सगुण ब्रह्ममें कुछ भी भेद नहीं यह श्रीमुखका वचन है फिर सगुण ब्रह्मने अपने शरीरसे शक्ति उपजाई और एकरूपसे दो स्वरूप हुये वही शिव जी परमपुरुष तीनों गुणों के उपजानेवाले और शक्ति प्रकृतिरूप ने अपनी लीला के निमित्त एक क्षेत्र पांच कोस का निर्माण किया जिसको आनन्दवन, काशी, वाराणसी, अविमुक्ति, रुद्रक्षेत्र और महा-श्मशान आदि बहुत नामों से मनुष्य जानते हैं वह स्थान श्रीपरम शक्ति और परमशिवजीका हुआ यह स्थल श्रीसदाशिवजी को बहुत ही प्रिय है सो शिवशक्ति ने उस स्थान में बहुत विहार किया और लीला करनेके निमित्त अतिसुन्दर शरीर धारणकिया फिर उनको यह इच्छा हुई कि किसी बलवान् पुरुष को उपजावें सो अपनी बाईं भुजा से उन्होंने एक मनुष्य को जो अतिसुन्दर और चारभुजा धारणकिये था श्याम रङ्गसे उपजाया उसने तुरन्त शिवजी को प्रणाम कर कहा कि मुझे क्या आज्ञा होती है और मेरा क्या नाम है शिवजी ने कहा कि तुम तीनोंलोकके स्वामी हो इससे तुम्हारा नाम विष्णु प्रकट होगा और चारभुजा होनेके कारण तुम्हारा नाम चतुर्भुज होगा और हरि और अच्युत और भगवान् आदि और भी बहुत नाम तुम्हारे होंगे अब तुम कठिनतासे तप करो कि तुममें अधिक तेज बढ़े और श्वास मार्ग से वेद पढ़ादिया और आप अन्तर्धान होगये और विष्णु ने शिवजी की आज्ञा मान तप करने के निमित्त पहिले अपने हाथोंसे पुष्करिणी को खोदा और अपने श्रमजलसे उसे भरदिया और पचास हजारवर्षपर्यन्त ध्यान में डूबरहे पर जब उनको कुछ तपका फल वि-दित न हुआ तो विष्णु अतिचिन्तित हुये सो इन्होंने घनकी गरजके समान आकाशवाणी सुनी कि तुम फिर तप करो तुमको वर मिलेगा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विष्णुजीने फिर बड़ा तप किया और अति प्रेमसे शिवजीके ध्यानमें डूबे सदाशिवजी उमाशक्ति सहित वहां प्रकट हुये और शिवजी ने अपना शिर हिलाया और विष्णुकी स्तुतिकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की सो उसी दशामें शिवजीके कानसे मणिकर्णी उस स्थान पर गिर पड़ी जिससे वह स्थल मणिकर्णी नामसे प्रसिद्ध हुआ और शिवजी ने विष्णुसे 'वरम्ब्रूहि' कहा विष्णुने कहा कि हमको अपनी अप्रमेय भक्ति कृपा करो और इस तीर्थको सबसे श्रेष्ठ और उत्तम पद कृपा करो शिवजी ने माना और कहा कि अब तुम फिर सृष्टि के उपजाने के निमित्त तप करो और हमारे ध्यान में दृढ़ होजावो यह कह शिवजी अन्तर्धान होगये और विष्णु फिर तप करनेलगे सो बहुत समयतक विष्णुने तप किया पर शिवजी प्रसन्न न हुये क्योंकि शिवजीकी और लीला करने की इच्छा थी जब विष्णु तप करते २ थकगये तो उनके शरीरसे इतना पसीना निकला कि धरतीभर में भरगया वह पसीना मानो ब्रह्मरूप ही था जिसने पृथ्वी भर को भरदिया विष्णुजी अति चिन्तित हो आश्चर्यमें हुये और शिवजीकी माया कुछ भी न जानी और काशी उसी जलमें डूबगई पर शिवजीने उसको अपने त्रिशूल से स्थित करलिया व विष्णु उसी जलके भीतर सोगये और बहुत समय तक अचेत सोया किये उससमय शिवजीने यह चरित्र किया कि विष्णु की नाभि जो तालाब के समान थी एक कमल उपजाया जो कोटि सूर्यके सदृश प्रकाशमान था फिर शिवजीने यह लीलाकी कि अपने दहिने अङ्गसे मुझको उपजाया और उसीकमलके ऊपर मुझको प्रकटाया पर शिवजीकी मायासे मैंने कुछ न जाना कि मैं क्योंकर उपजा हूं फिर मैंने विचार किया कि जहां इस कमल की जड़ होगी उसी स्थानसे मैं उपजा हूंगा सो कमल की नालके मार्गसे चला कि उसके मूलतक पहुँचूं मैं सौ वर्षतक चलतारहा पर उस कमल की जड़ न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिली तब मुझे अतिचिन्ता हुई और जो मनुष्य सर्वोपरि है उसकी शरण में गया आकाशवाणी हुई कि तप करो यह सुन मैं तप करने लगा और शिवजी ने अपनी लीलासे विष्णु को सचेत किया और वह चैतन्यहो मेरे साम्हने खड़े होगये और उन्होंने 'वरम्ब्रूहि' मुख से कहा मैंने पूछा कि तुम कौनहो सो हम और विष्णुमें बड़ा वाद हुआ इसी विवाद में शिवजी ज्वालारूप से प्रकट होकर धरती से आकाश दिखाई दिये सो हम दोनों उसकी थाहके जाननेके लिये चले और निराश लौटकर शिवजी की शरण में गये तब शिवजी प्रसन्नहो प्रकटे और कहा कि तुम दोनों हमको प्राणके समान प्रिय हो हे ब्रह्मन्! तुम सृष्टि उपजावो और हे विष्णो! तुम उसे पालो तुमको हम कार्यों का बल कृपा करते हैं फिर शिवजी अन्तर्धान होगये हम दोनों ने वही मूर्ति अपने हृदय में धारण करली और विष्णु अन्तर्धान हो वैकुण्ठ लोकके निर्माण करनेके उपरान्त उसी स्थानपर स्थित हुये और मैंने सब ब्रह्माण्ड को उपजाया और चौदहलोक और असंख्य उपलोक जो संख्या में पचासकोटि योजन हैं और चौदह भुवन और जैसे कि सात लोक पृथ्वीके ऊपर हैं वैसेही पृथ्वीके नीचेभी हैं शिवजी ब्रह्मरूप होकर ब्रह्माण्ड उपजाते हैं और विष्णुरूप होकर पालते और हररूप धर सब ब्रह्माण्ड को अपने में लय करते हैं और मुख्य उनका नाम शिवजी है इसी प्रकार उन्हीं शिवजी के तीनरूप हैं उनकी महिमा वेद नेति २ कह पुकारते हैंवे आप निर्गुण हैं परब्रह्म विष्णु और हरके द्वारा संसारभरमें प्रकट और सगुण स्वरूप हैं जैसा कि परम शिवजीके दो रूप वर्णन कियेगये हैं एक क्षर और दूसरा अक्षर जो दिखाई देता है वह तो क्षर है और जो निर्गुण और देखने में नहीं आता वह अक्षर है सो शिवजी निर्गुण और सगुण दोनों रूपसे विराजमान हैं जिन की महिमा कोई नहीं जानता उन दोनों में कुछ भेद नहीं है जैसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धागे और मोती में और फूल और सुगन्धमें और अग्नि और ज्वाला में कुछ अन्तर नहीं है बरन वे एकही हैं इस बातको कोई धर्मवाले जानते हैं कि यह बात अति कठिन और गुप्त है धर्मज्ञ मनुष्य पहले सगुणरूपको जान निर्गुण स्वरूप देखते हैं और निर्गुणको पाकर फिर सगुणकी ओर ध्यान देते हैं उचित है कि जबतक निर्गुण का पूरा हाल जाना न जावे तब तक सगुणरूपके जानने में लगारहे जब भक्त निर्गुण रूप को जान लेता है तो वह फिर पापों से शुद्ध होजाता है ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! निर्गुणरूपके ज्ञानके उपरान्त जीने के सब कार्य नष्ट होकर पवित्रता प्राप्त होती है और सर्वलोक ब्रह्मरूप दिखाई देनेलगते हैं ऐसी बुद्धि और ज्ञान केवल अच्छे योगियोंको प्राप्त होता है वह सब विधि निषेध से भिन्न होकर ब्रह्मस्वरूप होजाता है और उसको पुण्य पाप और दुःख सुख से कुछ प्रयोजन नहीं रहता यह ज्ञान महाकठिन और दुर्लभ है इसको कोई सत्पुरुषही जानते हैं और योगी बहुत जन्मों के अभ्यास से कुछ २ जानते हैं इसीसे शिवने ज्ञानको अतिकृपा करके उपजाया है जो ज्ञान सब वस्तुओंसे श्रेष्ठ है इसका विस्तार इस तरह पर है कि एक दिन शिवने संसार के लाभके निमित्त यह समझा कि ब्रह्माने हमारी आज्ञासे सृष्टि उपजाई तो सब ब्रह्माण्डके जीव अपने २ कर्मोंमें बँधे रहेंगे वे हमारे रूप को क्योंकर जानसकेंगे बरन वे संशयसागर में डूबे रहेंगे सो शिवने पांच कोसतक काशीको जो अपने त्रिशूल में उठारक्खा था धरती में छोड़दिया और अपनेलिङ्ग अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथको भी उसी काशी में स्थापित कर दिया और अविमुक्त अपने लिङ्ग से कहा कि यह हमारा क्षेत्र काशी अविच्छिन्न है यह प्रलय में भी नष्ट न होगा यह हमारे अंश से उपजा है और तुम्हारे त्यागनेके योग्य यह काशी नहीं है और न

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होगी यह हमारे अंशसे उपजी है और हमको यह बहुत प्यारी और हमारे दुःख दूरकरनेवाली है जो मनुष्य इसके दर्शन कर जावेगा उस को फिर आवागमन न होगा और जो मनुष्य काशी में केवल यात्रा करजावेगा वह परमपद प्राप्त करेगा और जो दूरके रहनेवाले काशीको हमारे नाम के साथ स्मरण करेंगे तो वे ब्रह्माके दिन में भी नष्ट न होंगे इस बातको निश्चय रक्खो जब समय पाकर हम प्रलय करेंगे तो काशीको अपने त्रिशूलपर रखकर बचालेंगे और जब ब्रह्मा ब्रह्माण्ड उपजावेंगे तो फिर हम उसको पृथ्वी में रखदेवेंगे और हम भी उसी स्थान पर स्थित होकर संसार भर को पार लगावेंगे यह वचन सदाशिवने अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथ लिङ्गसे कहकर उनको काशी सहित मृत्युलोक में छोड़ दिया सो अविमुक्तने काशीको लेकर इस असार संसार को अपने चरणारविन्दों से पवित्र किया उस दिनसे काशी पापों की दूर करनेवाली हुई जहां मुक्ति दासियों के समान रहा करती है और संसार भरको अति सुगमता से मुक्ति देनेवाली है जिनको हम और विष्णु सेवन करते हैं जो मनुष्य किसी प्रकार के मोक्ष के योग्य नहीं हैं उनको भी काशी मुक्ति देतीहै और वह पांच कोस तक निष्केवल शिवका रूप है उसमें असंख्यगुण हैं पर संसारमें कौन ऐसा है जो उसका एकगुणभी वर्णन करसके शिव विश्वनाथ और काशी के उपजने के उपरान्त संसार उत्पन्न हुआ और सदाशिव की आज्ञानुसार वह दुःखों के दूर करने को मानो कुल्हाड़ी है सो अविमुक्त काशी को पाकर अतिप्रसन्न हुये और संसारभर सनाथ होगया हे नारद! जब कि लिङ्गरूप विश्वनाथ काशी सहित प्रकट हुये तब विष्णु और हम अपने गणों सहित शिव शिव कहते उस स्थान पर आये और इन्द्र सब देवता और सब दिक्पति और सनकादिक और सिद्धादि सहित आगये जो शिव उच्चारते और हम सब ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिलकर उस स्थान पर बड़ा उत्सव करके सुख माना और बड़े प्रेमसे शिवलिङ्ग की पूजा की और अष्टाङ्गप्रणाम कर प्रेम सागर में डूबगये और हम और विष्णु इतने प्रसन्न हुये कि फिर दूसरीबार षोडशोपचारसे सामग्री इकट्ठी कर उनका पूजन किया और उससे अधिक किसीको श्रेष्ठ न समझा फिर मनुष्योंने भी दूसरी बार पूजा की फिर हम सबने मिलकर स्तुति की जिसके सुनने से शिव प्रसन्न होकर तुरन्त प्रकटे जिनका उत्तम चतुर्भुजी स्वरूप, पांच शिर, चन्द्रमा भाल पर, कानों में कुण्डलके बदले सर्प, त्रिनेत्र, कण्ठमें हलाहल का चिह्न विराजमान, हृदयमें उत्तमोत्तममाल और उनके सम्पूर्ण अङ्गप्रत्यङ्ग अतिसुडौल और सुन्दर गौरशरीर जिसमें श्वेतभस्म लगी हुई, बाईं ओर शक्ति विराजमान, शिलादमुनिके पुत्र सहित प्रकटे ऐसा स्वरूप सदाशिव का देख हम सब कृतार्थ होगये और प्रणाम किया और प्रणामके उपरान्त स्तुति पढ़ी और कहा कि हे अविमुक्तनाथ ! आप यहीं स्थितरहें और कभी भी यहांसे न जावें कि यह काशीनगरी सर्वोपरि पद पावे और मोक्षक्षेत्रके नामसे प्रसिद्ध होवे और यह तुम्हारा लिङ्ग सबसे श्रेष्ठ पूर्णांशसे है सो सदा स्थित रहे यह सुन विश्वनाथजीने अतिकृपासे "एवमस्तु" कहा और यही वचन शक्ति और नन्दी ने भी कहा फिर शिव सबको वर देकर उसी लिङ्ग से अन्तर्धान होगये वही ज्योतिर्लिङ्ग विश्वेश्वर विश्वनाथ अविमुक्तनाथ शिवका है जिसके दर्शन पूजासे सब दुःख दूर होजाते हैं और वही काशीक्षेत्र प्रसिद्ध है जो जीवन्मुक्ति कृपा करती है न तो तीनों लोकमें काशी के समान दूसरी पुरी है और न विश्वनाथ लिङ्गके समान दूसरा लिङ्ग है यह सत्य है, सत्य है, सत्य है ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! विश्वनाथ और काशीके चरित्र भक्तोंको मुक्ति देनेवाले हैं जहां मणिकर्णिका ऐसा तीर्थ आनन्द देनेवाला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विराजमान है जो मनुष्य तीनबेर काशी और विश्वेश्वर को कहे वह इस लोकमें मनोरथ और परलोकमें परमपद प्राप्त करे वेद और पुराण इस बातको कहते हैं कि शिव केवल भक्तिके अधीन हैं इससे अविमुक्त होकर प्रकट हुये जब इस नाशवन्त संसारमें काशी आई तो इस लोकमें सबलोगोंको अतिआनन्द प्राप्त हुआ संसारमें तेज फैल गया किसी को कुछ दुःख न रहगया और सर्व मनुष्य शिवकाशी शिव शंकरकाशी कहनेलगे और उत्तमरीति से नाचनेलगे और घर २ में मनुष्यों ने आनन्द की सभायें सजाईं और संसार के मनुष्य काशी विश्वनाथ के दर्शन करने के निमित्त बड़े धूमधाम से चले जिनके साथ उनके पुत्र और स्त्रियां थीं वह शिवजी की समाज जो काशीमें इकट्ठा हुई उसका वर्णन नहीं होसक्ता वे सब गाते बजाते हुये पहुँच कर शिवके चरणोंको स्पर्शकर अपने हृदयसे लगानेलगे कोई अपना सब धन लुटाने लगा इतनेमें जो मनुष्य शैव थे पर वह दर्शन करने नहींगये उन्होंने परस्पर कि शिवकी महिमा वर्णनकर सबको उपदेश किया कि अवश्य चलना चाहिये एक स्त्री ने उन सब के मुखों से विश्वेश्वरनाथ के गुण सुन अपने पतिसे जो कृपण था कहा कि तुम भी चलो कि विश्वनाथ के दर्शन प्राप्त होवें और वह विश्वेश्वरनाथ के बड़े बड़े वचन कहकर चुप होरही ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! यह वचन अपनी स्त्रीका सुनकर उसके पतिके मनमें अतिदुःख उपजा क्योंकि उसने जाना कि वहां जानेसे कुछ द्रव्य खर्च होगा कहा कि हे स्त्री ! तू बुद्धिहीन होगई है तूने यह विचित्र वार्त्ता कहां से सुनी हमारे मनको क्यों जलादिया तुम कहां आज जाकर किसकी संगतिमें बैठीहो और तुमको यह किसने शिक्षा दी जो निष्केवल मेरे दुःख का कारण है तुम भलीभांति जानती हो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि मैं वृथा खर्च करने से भिन्न रहता हूं अर्थात् बड़े श्रमसे कौड़ी २ जोड़कर यह रुपया इकट्ठा किया है बड़ी भाग्य से द्रव्य मिलता है जिसके न होनेसे कितना दुःख प्राप्त होता है इससे बुद्धिमान् सदा धन सञ्चित करते हैं सो ऐसे विचार और बुद्धि को अपने मनसे दूर करके अपने घरके कार्य में लगी रह स्त्री जो शिवजी के प्रेम में डूबी हुईथी अपने पतिके इस बचन को सुनकर पाँवपर गिरपड़ी और हाथ जोड़कर कहा कि वास्तव में धन का संग्रह करना बहुत अच्छा है पर शिवजी के लिये उसको व्यय करना उचित है तुम और धन संग्रह करलेना शिवजी की भक्तिसे तो बहुत धन प्राप्त होता है जिह्वा उसीका नाम है जो शिवजीका वर्णन करे और मन उसीको कहते हैं जो शिवजी के ध्यान में डूबारहे और कान वही हैं जो शिवजी का गुण सुने और नाक वही है जो शिवके चरणों की सुगन्ध ले नेत्र वही हैं जो शिवजीकी मूर्ति को अवलोकन करें हाथ भी वही उत्तम हैं जो शिवजीकी पूजाकरें पैर वही हैं जो शिवजीके क्षेत्रमें चलें शिर उसीको कहते हैं कि जो शिवजीके प्रणाम में टेढ़ा हो धन और द्रव्य वही है जो शिवजीके कार्यमें खर्च हो जो वस्तु प्रियहो वह सब शिव जीके लिये जाननी चाहिये और सब कर्मोंको शिवजी पर वारना चाहिये विश्वनाथ की पूजा बड़े २ पापोंके दूर करनेवाली है यह समय शिवजीके दर्शनके निमित्त उत्तम है फिर ऐसा समय न मिलेगा और न ऐसे साथी मिलेंगे इस लिये चलने की तय्यारी करना चाहिये संसारमें धर्मसे कोई काम बढ़कर नहीं है धर्मके अधीन धन है उसके पति कृपणने यह सुनकर कहा कि जो भाग्यमें लिखा होता है वही होता है हम क्यों उपायकरें और क्यों निरर्थक रुपया खर्चकरें भाग्य में कोई न्यूनाधिक्य नहीं करसक्ता भाग्यको ब्रह्मा विष्णु भी नहीं बदलसक्ते जिन हाथोंसे मुझको रुपया खर्च करना पड़े उन हाथों को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में जलाना उत्तम समझता हूं जिन हाथोंसे धन को छल से उपजावें क्या उन्हीं हाथोंसे उसको खर्च करना उचित है तू हमको वृथाही लुटाया चाहती है स्त्री ने फिर चिन्तित हो शिवजी के गुण वर्णनकर चलने की सम्मति दी तब तो उसका कृपणपति अतिक्रोधित हो स्त्रीको झिड़ककर दुर्वचन कहनेलगा और कहा कि स्त्रियों को अपने पतिकी आज्ञामें चलना चाहिये न कि तेरे समान पति पर आज्ञा चलानी उचित है जो तूने फिर इस वचन को कहा तो मैं अपने प्राण देडालूंगा तेरी मृत्यु तो है मैं घरबार छोड़कर जाता हूं तू घरमें भलीभांति रहकर जो मनमें आवे वह कर यह कहकर वह कृपण अपने घरसे चलागया और स्त्री अतिदुःखी शिव के प्रेम में डूबीरही ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! कृपण वनमें जाकर बहुत रोया उस समय एक शैव वहां आन पहुँचा और उससे रोने पीटने का हेतु पूछा कृपणने सब वृत्तान्त उसे कह सुनाया शैवने शिवका ध्यान कर कृपणसे पूछा कि तुम्हारी सम्मतिने तुम्हें धर्म की अच्छी सीख दी थी पर तुमने शिवकी माया में बँधकर कुछ नहीं सुना जो मनुष्य शिवकी सेवा नहीं चाहते वे मानों अमृत छोड़ विष पीते हैं जो धन तुमने बड़े परिश्रम से इकट्ठा किया है वह तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं जावेगा वह पुरुष धन्य है जो शिवकी प्रसन्नताके निमित्त शिव के तीर्थोंमें जाकर शिवके प्रेममें दानादि करते हैं तुमको उचित है कि विश्वनाथ के दर्शन के निमित्त तत्पर होजावो इस मनुष्यतनु की देवता भी इच्छा करते हैं ऐसे शरीरको पाकर जो फिर भी भूलारहा तो पश्चात्तापके सिवाय कुछ हाथ नहीं आता जब शैवने इस प्रकार उत्तमोत्तम शिक्षाके वचन जो शिवकी स्तुतिके भरे हुयेथे कहे तो कृपण अतिप्रसन्न हो शिव के प्रेम में परिपूर्ण होगया और शिवकी भक्ति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और स्तुति की और कहा कि मैं मूर्ख अवस्था में था अब मुझे अति आनन्द प्राप्त हुआ है धन्य भाग्य मेरे कि आपके समान मुझे उपदेशक मिला मैं तो इस समयतक शिवकी माया में भूला हुआ था ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! शिवके भक्तने कृपणसे कहा कि संसार में उत्तम और मध्यम और निकृष्ट तीन प्रकारके मनुष्य होते हैं उत्तम वह पुरुष हैं जो संसार को नाशवन्त समझकर अहंकार को छोड़ देते हैं और मनसे सदाशिव के तप में लगे रहते हैं और नातेदारों जैसे भाई और लड़का आदिको छोड़ द्वैतभाव लोभादिको बारम्बार दूर करते हैं और अहंकार और लोभ काम और क्रोध छोड़ योग में स्थित होकर सदाशिव का ध्यान करते रहते हैं और असंख्यज्ञान पा संसारी माया छोड़ संतोष धारणकर वनमें स्थित रहते हैं और कामदेवको जलाकर और सब नित्यकर्मों को छोड़ केवल मनमें शिवजी का ध्यान करते और संसार में रहकर संसारसे भिन्न रहते हैं और चिता की भस्म अपने भाल में मलकर फिर आवागमन में नहीं पड़ते वही परमहंसरूप कहेजाते हैं उनके समान और दूसरा कोई संसार में नहीं है और मध्यम वह हैं जो कभी हाथी पर चढ़ते हैं और कभी शिर पर बोझ रक्खेहुये चलतेहैं कभी धनवान् और कभी निर्धन और कभी स्वादिष्ठ भोजन से तृप्त और कभी भूखे और कभी सुन्दर बसनों से भूषित और कभी नग्न शरीर और कहीं लोग उनका आदर करते हैं और कहीं उनका अति अपमान होता है कभी यशवान् और कभी आनन्दवान् कभी चिन्तित निदान उनकी अवस्था विपर्यय रहती है उनका जन्म एकसा नहीं कटता और अधम वह हैं जो अन्य जीवों पर दया न करके किसीके मारडालने के विचार में रहकर पाप करने में रातदिन प्रवृत्त रहते हैं और दूसरेके लिये सदा बुराई किया करते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और दूसरेको प्रसन्न देखकर ईर्षासे जला करते हैं ऐसे मनुष्य नरक में पड़ते हैं और क्रमपूर्वक एकसौबीस नरकों में भ्रमण कर अपने कर्मों का स्मरण करतेहैं और ऊंचेस्वरसे शरण २ पुकारतेहैं और कहते हैं कि इसबेर ऐसे नरकसे छूट जावेंगे तो फिर वह काम कि जिनसे ऐसी ह-मारी दशा हुई नहीं करेंगे फिर यमके दूत उनको नाना प्रकार के कष्ट देते हैं और उनको इतनी भूख लगती है जिसकी कुछ संख्या नहीं और उनको एक दाना भी नहीं मिलता यद्यपि उनको प्यास बहुत लगती है पर उनको एक बूंद भर पानी भी नहीं दिया जाता फिर वह नाना प्रकारके शरीर धारणकर जो किसी जन्म में उनसे शिवजी की कृपासे कुछ शुभकर्म बन पड़ा तो फिर अपनी मुख्य अवस्था प्राप्त करलेते हैं और उत्तम पदवीके मनुष्य भी कुसंगतिसे पापी होकर नरकमें जाते हैं और अधर्मी भी सत्संगति पाकर परमपद पाते हैं जैसा कि विश्वामित्र आदि रावण और कुम्भकर्णादि के वृत्तान्तों से यह बात स्पष्ट विदित होतीहै सुसंगति और कुसंगति का परिणाम कितना फलदायक होता है सो जो मनुष्य शिवकी सेवा करता है वही उत्तम मुक्ति के योग्य है ऐसे उपदेशके वचन शिवभक्तसे सुनकर कृपण को ज्ञान उपजा और आज्ञा ले अपने घरमें आकर स्त्रीसे कहने लगा कि वह स्त्रियां धन्य हैं जो शिवजीकी पूजा करनेवाली हैं वही मोक्षके योग्य हैं स्त्रीने कहा कि ऐसी शुद्धबुद्धि तुमने कहांसे पाई कृपणने सब वृत्तान्त कह सुनाया फिर दोनोंने आनन्द से संतान सहित काशी में जाकर असंख्यधन शिवजीके निमित्त खर्च किया और उत्तमोत्तम सुगन्धित पुष्प और बेलपत्र जो खण्डित न थे लेकर शिवजीकी पूजा अतिप्रेमसे की और स्तुति की फिर अपने घरको लौट आये ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! विश्वनाथ और काशीपुरीसे बढ़कर कोई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्तम नहीं है काशीमें मुक्ति दासीके समान सेवा करती है वह काशी चौकोण पांच कोस लम्बी है जो तीनों लोककी सार और तीनों लोकके लिये धर्मरूपा है एक तिलके समान उस पांच कोसमें कोई धरती ऐसी नहीं है जहां मरकर मनुष्य मुक्ति न पावे और काशीको शिवजी कभी नहीं छोड़ते वह करोड़ ब्रह्महत्या और करोड़ पापों के दूर करनेवाली है वह हरप्रकारसे सबके ऊपर बड़ाई रखती है जहां विष्णुजी भी अपना मरना चाहते हैं इसी प्रकार सब देवता और मुनि और सिद्ध और नाग और मुनीश्वर आदि भी यही चाहा करते हैं कि हम काशी में मरें हमारी शक्ति नहीं है कि काशी की महिमा वर्णन करसकें और सुनिये कि जो हमारे भौंह के बीच में से शिवजी ने कृपा करके अवतार लिया वह कैलास में रहनेलगे और दक्षप्रजापति की पुत्री के साथ अपना विवाह किया जो फिर हिमाचल की लड़की होकर शिव जीके साथ दूसरी बार ब्याही गई वही शिवजी निर्गुणरूप हुये और उन्होंने नाना प्रकारकी लीला कीं और अपने गणों और गौरी सहित काशीमें आकर विश्वनाथके दरबारमें आये और विष्णु और हम सब देवतादि सहित वहां आये कैलासवासी शिवजी ने गिरिजा सहित विश्वनाथ की बड़ी पूजा की इसी प्रकार विष्णुने सब देवताओं समेत विश्वनाथकी पूजाकर स्तुतिकी सो विश्वनाथजीने कैलासवासी शिव जीसे भेंट की और विश्वनाथ ने कैलासवासी शिवजी से कहा कि हम और तुम एक हैं कुछ भेद नहीं है हमको कुछ आज्ञा दीजिये शिवजीने कहा कि हे विश्वनाथ ! आप यहां काशी में स्थित रहें तब विश्वनाथ ने कहा कि तुमभी कृपा करके गिरिजा और गणों समेत यहां स्थित रहो और सृष्टिभर के राजा होकर सब जीवों को मुक्ति दियाकरो जैसा कि तुमको काशी प्रिय है उसी तरह हम इस काशी को प्रिय जानते हैं हमलोगों को यहां ठहराया करेंगे और तुम उनको मुक्ति दियाकरो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह कहकर विश्वनाथ अन्तर्धान होगये और गुप्त रीति से पूर्णांश पूर्वक वहां स्थित हुये सो जो मनुष्य वहां मरता है उसको मुक्ति कृपा करते हैं और कैलासपति शिवजी भी शक्ति सहित वहीं रहते हैं धन्य है काशी जहां दोनों शिवजी के रूप विराजमान हैं और विष्णु और हम सब देवताओं और मुनीश्वरों आदि सहित दोनों मूर्तियों की सेवा और पूजनमें रहा करते हैं विश्वनाथ के समान दूसरा लिङ्ग नहीं है और अन्य जितने लिङ्ग हैं वह मानों विश्वनाथ लिङ्ग की सन्तान और परिवार हैं और विश्वनाथजी महाराज सब शिवभक्तों के राजा हैं और हरेश्वर मन्त्री और ब्रह्मेश्वर वेदपुराणके सुनानेवाले और भैरव कोतवाल और तारकेश्वर धनाध्यक्ष और दण्डपाणि चोबदार और वीरेश्वर भण्डारी अर्थात् खज़ांची और ढुण्ढिराज अधिकारी हैं अन्य और सब लिङ्ग विश्वनाथके आज्ञापालक हैं और वहां महारानी अन्नपूर्णेश्वरी भी हैं जो काशीवासियों को पालती हैं और विष्णु सुर आदि असंख्य लिङ्ग काशी में विराजमान हैं जिनकी सेवा से दोनों लोकमें आनन्द और मोक्ष प्राप्त होता है॥

अब यहांपर हम प्रसिद्ध लिङ्गोंका वर्णन करते हैं
जो काशीमें स्थित हैं॥

१ विष्णुसुर २ केशवमुख ३ लोलार्क ४ मिहर ५ कृतवासुकेश्वर ६ वृद्धकालकेश्वर ७ कालेश्वर ८ कलशेश्वर ९ प्रवृत्तेश्वर १० पशुपति ११ केदारेश्वर १२ कामेश्वर १३ शम्भुत्रिलोचन १४ चण्डेश्वर १५ गरुडेश्वर १६ गोकर्णेश्वर १७ नन्दिकेश्वर १८ प्रीतिकेश्वर १९ भारभूतपति २० मणिकर्णेश्वर २१ रत्नेश्वर २२ नर्मदेश्वर २३ लाङ्गलेश्वर २४ वरुणेश्वर २५ शनीश्वर २६ सोमेश्वर २७ जीवेश्वर २८ रवीश्वर २९ सङ्गमेश्वर ३० हरीश्वर ३१ हरिकेश्वर ३२ शैलपर्वतेश्वर ३३ कुण्डकेश्वर ३४ यज्ञेश्वर ३५ सुरेश्वर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३६ शक्रेश्वर ३७ मोक्षेश्वर ३८ रमेश्वर ३९ तिलभाण्डेश्वर ४० गुप्तेश्वर ४१ मध्यमेश्वर ४२ भूमीश्वर ४३ बुद्धेश्वर ४४ शुक्रेश्वर ४५ ताटकेश्वर ४६ धन्वेश्वर ४७ ऋषीश्वर ४८ ध्रुवेश्वर ४९ महादेवेश्वर ५० त्रिसन्ध्येश्वर ५१ कपर्देश्वर ५२ नीलेश्वर ५३ शरेश्वर ५४ ललितेश्वर ५५ त्रिपुरेश्वर ५६ हरेश्वर ५७ बाणेश्वर ५८ श्रीश्वर ५९ रामेश्वर ॥ जो मनुष्य विश्वेश्वर अर्थात् विश्वनाथ का नाम लेकर विदेशगमन करता है वह अति आनन्द पाताहै उसको विदेश में कोई दुःख नहीं पहुँचता और विश्वनाथ की सेवा करके हरिकेश दण्डपाणि के नाम से प्रसिद्ध हो सब शिवगणों के राजा हुये और गुणनिधि ब्रह्मदत्त का पुत्र विश्वनाथ की सेवा और भक्ति से कुबेर होगया और हम और विष्णु और देवता आदि उन्हीं की सेवासे ऐसे २ पद पर पहुँचे यह विश्वनाथलिङ्ग सबसे श्रेष्ठ है और विश्वनाथ का देश काशी है जो मनुष्य काशीको छोड़ देता है वह मनुष्य नहीं वरन पशु है मानों उसकी हथेली से मुक्ति उड़गई काशी का चाण्डाल और स्थानों के राजाओं से उत्तम है उसको यमराज का भय नहीं है और न उसको आवागमन का संशय है जो गति कि मुनि आदि ध्यान से पाते हैं वह गति काशी में विश्वनाथ बे परिश्रम देते हैं उनके पूर्ण उपासक अगस्त्य मुनि हैं और विश्वामित्र ने उन्हींकी सेवा से ब्रह्मऋषि का पद पाया और वशिष्ठ मुनि उन्हीं की पूजा से तीनों लोक में पूजे गये यह सदाशिव विश्वनाथ का आख्यान अतिपवित्र और इसके पढ़ने सुनने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अब हम त्र्यम्बकेश्वर शिवज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जिस तरह कि हमने विष्णुसे सुना है गौतम ऋषि जो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवजीके बड़े भक्त हुये और जिनके भाल में भस्म और सब अङ्गों में रुद्राक्ष और जिह्वा पर शिव और परम शिव और शिवजीके गुण प्रति समय कहते रहा करते हैं उनकी स्त्री अहल्या नामी बड़ी पतिव्रता थी और गौतम जनक के पुरोहित प्रसिद्ध हैं जब उनके पुत्र उपजा तो वे तपके निमित्त अपने शिष्यों और अहल्या सहित ब्रह्मशैल के दक्षिणकी ओर जाकर तप में प्रवृत्त हुये सो उन्हीं दिनों में वर्षा न होनेसे संसार में काल पड़गया और एकसौ वर्ष पर्यन्त जल न गिरा सब संसार के मनुष्य अति विकल हुये यहांतक कि कुवोंमेंभी जल न रहा और न कोई हरा वृक्ष रहा नदी और नद सब सूखगये और गरमी इतनी बढ़ी कि बहुत से जीव जलकर भस्म होगये और अन्य मुनि भी योग धारणकर अपनी स्त्रियों सहित अपना कालक्षेप करनेलगे गौतमने संसारको इतना विकल देख वर्षा होनेके निमित्त वरुण के तपका आरम्भ किया हे नारद! दूसरेकी भलाई के बराबर और कोई धर्म संसार में नहीं मानो सब शुभकर्म इसी धर्म के अधीन हैं अच्छे पुरुषों की यही दशा होती है कि दूसरे की भलाई के लिये बड़े २ उपाय करते हैं और दूसरे के आनन्द के निमित्त आप दुःख सहते हैं इस बात से शिवजी अतिप्रसन्न होते हैं निदान जब कि गौतमने अहल्यासहित बड़ा तप किया तो वरुण प्रसन्न होकर गौतम के सामने खड़े होकर बोले कि वरदान मांगो गौतमने कहा कि संसार में वर्षा हो हमारा यह मनोरथ पूर्ण हो वरुण ने उत्तर दिया कि यह बात हमारे अधीन नहीं है यह बात केवल परमेश्वर के अधीन है अर्थात् लाभ, हानि, मौत, जीना, वर्षाकाल, यश, निन्दा, पुण्य, पाप, जय, पराजय, उत्पत्ति, प्रलय, नरक, स्वर्ग यह सब बातें शिवजी के अधीन हैं उन्हीं के भय से सूर्य और चन्द्रमा और नक्षत्र उदय होते और अग्नि और मृत्यु और शेष और दिक्पति और सर्व संसार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन्हींकी आज्ञा से अपना २ कार्य करते हैं और देवता और मुनि और सिद्ध और प्रजापति और सर्वसंसार शिवके भक्त हैं वे परब्रह्म हैं वही निर्गुण, सगुण, स्वामी, स्वतन्त्र, मायापति और सब से श्रेष्ठ हैं हे गौतम ! हम ऐसा वर नहीं देसक्ते और जो तुमको वर नहीं देते तो यह बात निष्केवल धर्म के विरुद्ध है इसलिये हमपर कृपा करके वह वर हमसे मांगो जो हम देसकें गौतम ने कहा कि तुम सत्य कहते हो पर ऐसी बात करो जिसमें हमको और तुमको कुछ पाप न होवे वरुणने कहा कि फिर तुम उसी प्रकार का वर मांगो जो हम देसकें गौतमने कहा कि आप एक अक्षय जलका कुण्ड कृपाकरें वरुण ने अतिप्रसन्न होकर गौतमकी अति प्रशंसा की और कहा कि पृथ्वी में एक गर्त बनावो हम तुमको अक्षयकमल देते हैं सो गौतमने पृथ्वी में एक गर्तकिया जिसको वरुण ने जलसे भरदिया और कहा हे गौतम ! यह गर्त जो एक हाथ भर का है बड़ातीर्थ होकर तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध हो इसकी सेवासे सब मनोरथ पूरे होंगे यह कहकर वरुण तो चले गये और अक्षयकुण्ड के जलको पीकर गौतम स्त्री सहित अति प्रसन्न हुये ॥

चालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी ने कहा कि गौतमने अपने शिष्यों सहित उस गर्त के तट पर जो खेती बुवाई तो यह गौतमकी बात संसारभर में प्रसिद्ध होगई और मुनि अपनी स्त्री और शिष्यों सहित समूह के समूह चारों ओर से आकर उसी स्थानपर मन्दिर बनाकर बसे और जो और मनुष्यभी मरने से बचगये थे वहभी आकर वहीं बसे सो उस गर्तके कारण एक नगर बहुतलम्बा और उत्तम वहांपर बसगया और लोग अतिप्रसन्न होकर रहने लगे और जो लोग भूखों मरते थे प्रसन्न रहे और गौतमकुण्ड का यह प्रभाव था कि चाहे उससे कितनाही जल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खर्च कियाजावे पर उसमें न्यूनता न होती संयोग वश शिवकी माया से एकदिन गौतम ने अहंकार के साथ तुरन्त अपने शिष्यों को जल लानेके निमित्त भेजा सो गौतमके शिष्य आनन्द पूर्वक कुण्डके तटपर पहुँचे उसीसमय संयोगसे मुनियोंकी स्त्रियों ने भी अपने शिरों पर घट रक्खे हुये आकर कहा कि पहिले हम पानी भरलें तब तुम भरलेना यह सुन गौतम के शिष्यों ने लौटकर अहल्यासे कहा कि मुनियों की स्त्रियों ने हमको पानी नहीं भरनेदिया यह सुनकर अहल्याने शिष्यों को साथ लिये हुये जहां मुनियोंकी स्त्रियां खड़ी थीं जल लिया और लौट आई यह दशा देखकर मुनियों की स्त्रियों ने वहां क्रोध से पानी लिये विना लौटकर अपने २ पतियों से रो रो कर सबहाल कहा और अपने वर्णन में बहुत झूठ और बनावट कही अर्थात् उन्होंने कहा कि गौतमके शिष्योंने हमको ग्लानिपूर्वक देख गालियां दीं पर हमने कुछ भी नहीं कहा इस परभी गौतमके शिष्य चुप न रहकर अहल्या को अपने साथ लाये उसने जो हमको दुर्वचन कहे और हमारा अपमान किया है वह कहा नहीं जासक्ता इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हम उन स्त्रियोंके झूठको कहांतक वर्णन करें जो स्त्रियों का स्वभाव है वह सब उन्होंने प्रकट किया स्त्री विषसे भी अधिक और भयानक है क्योंकि हलाहल पीकर सदाशिव जगे रहते हैं और विष्णु स्त्री पाकर मोहित होजाते हैं मृत्युभी स्त्रीसे अधिक नहीं है क्योंकि मृत्यु तो एकहीको मारडालती है और दुष्टा स्त्री सर्वकुल को नष्ट कर देती है संसार में वह कौन कर्म है जिसको स्त्री नहीं करसक्ती देखो रामचन्द्र के समान लड़कोंको राजा दशरथने स्त्रीके अधीन होकर घरसे निकालदिया समुद्र में क्या ऐसी वस्तु है जो प्रवेश नहीं करसक्ती और अग्नि किस वस्तुको जला नहीं सक्ती और मृत्यु किसको छोड़ देती है और स्त्री क्या कर्म नहीं करसक्ती निदान मुनीश्वरों ने अपनी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्त्रियों से यह चरित्र सुन अति कोपित हो चाहा कि गौतमको किसी तरह का दुःख दें इस इच्छासे उन्होंने गणेश की पूजा की सो गणेशने प्रसन्न होकर कहा कि हे मुनीश्वरो ! तुमको यह योग्य नहीं अपने हाथों अपनी खराबी मत करो अभी कुछ बुरा नहीं हुआ अबभी समझ जावो पर सब मुनीश्वरोंने एक मतहो कहा कि नहीं गौतमको दुःख दो गणेशजीने कहा कि तुम सब मूर्ख हो जिसने गौतम को सुख दिया था वही फिर भी उनको चैन देगा वह शिवको प्रसन्न कर फिर वैसाही हो जावेगा पर तुमको अतिदुःख प्राप्त होगा क्योंकि तुम सब शिवजीकी इच्छा से विरुद्ध हो यह कह गणपति अन्तर्धान हुये और गौका स्वरूप धार बहुत क्षीणाङ्ग कांपतेहुये गौतम के खेतको चरनेलगे भाग्यसे उस समय गौतम भी गौ के पास जौके खेतके पास आये और तिनके से गौको खेतसेबाहर निकालने लगे गौ इतनी ज़ोरसे पृथ्वी में गिरपड़ी कि जिस तरह किसीने वज्रसे उसको मारा हो गौतमने अपने शिष्यों से यह हाल वर्णन किया अन्तको धीरे २ सब मुनीश्वरादि इकट्ठे होकर गौतमको धिक्कार देनेलगे और कहा कि तुझ पर और तेरे तीन विधि के तप और होम और सबधर्म और तेरी स्त्री और चतुरता और जागरण और विद्या और कलादि सबको धिक्कार है तूने गोहत्या की अब तुम यहांसे चलेजावो और अपना मुख किसीको मत दिखाओ जबतक तुम यहां रहोगे देवता और पितर कोई अपना भाग नहीं लेने आवेंगे और इसी प्रकार मुनियों की स्त्रियों ने भी मिलकर अहल्याको बहुत दुष्टवचन कहे और सब मुनियोंने इस बातको परस्पर ठहराया कि आजसे कोई मनुष्य गौतम का मुख न देखे सो वे सब मिलकर कङ्कड़ों से गौतम और अहल्या को उनके शिष्यों सहित मारनेलगे और निकालदिया गौतम ने बहुत बिनती से कहा कि हम निकलेजाते हैं हमको मारो नहीं यह कहकर गौतम अहल्या और शिष्यों समेत वहां

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से निकल गये और उस स्थान से एक कोसकी दूरीपर अपना स्थान बनाया और कहा कि जबतक हमारी हत्या न छूट जावेगी तबतक हम किसीको न छूसकेंगे और न कुछ कर्म देवता और पितरआदिका कर सकेंगे यह विचार सबकर्म छोड़ अन्नजलरहित अपनी स्त्री सहित पड़े रहे और कदाचित् किसी मनुष्यने गौतम को कभी धोखे से देख लिया अपने मुखको कपड़े से ढांपकर गौतम को ढेले मारता था उस समय गौतम अतिचिन्ता से बहुतही रोनेलगते थे जब कि इसीतरह पन्द्रह दिन बीते तो गौतम मुनिलोगों की शरण में आये और दूर खड़े होकर प्रणाम और स्तुति के उपरान्त हाथ बांध विनय पूर्वक कहा कि अब मुझपर दया करके वह उपाय बतावो जिससे मेरा यह पाप दूर होवे सो मुनियों को दया उपजी उन्होंने कहा कि तुम्हारे शिष्यों ने बहुत बुरी बातकी कि हमारी स्त्रियों को पानी लेने के समय अनादर किया और तेरी पतिव्रता अहल्या स्त्रीने भी बड़ा उपद्रव मचाया इसीसे तुमको यह फल मिला पर जोकि अब तुम अहंकाररहित हमसे पूछते हो तो हम तुमसे कहते हैं कि शिव सबपापों के दूर करनेवाले हैं पहिले पृथ्वी की परिक्रमा में प्रवृत्त होकर तीन दिन भ्रमण करके अपना पाप ऊंचे कहते फिरो फिर एक मासतक व्रत करो और एकसौ बेर ब्राह्मणोंकी परिक्रमा करो तब ऐसे पाप से छूटजावोगे दूसरी युक्ति यह है कि जो तुम इस स्थानमें गङ्गा को प्रकटकर उसमें स्नान करो और एक करोड़ पार्थिवपूजा करो तो शुद्ध होसक्के हो यह सुनकर गौतम ने तुरन्त मुनिलोगों की एकसौ एकबेर परिक्रमा की और एक करोड़ पार्थिवपूजाकर शिवके ध्यान में लगे और एकही स्थान पर बैठे रहे इसी प्रकार गौतमकी स्त्री अहल्याने भी यही किया और सब शिष्य उनकी सेवा करते रहे ऐसी अवस्था गौतम की देखकर शिव प्रसन्न हुये और आप गिरिजा और अपने पुत्र और गणोंसहित गौतमके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पास प्रकट होकर कहा कि वर मांगो तुम मुझको प्राण से भी अधिक प्रिय हो गौतमने प्रणाम और स्तुतिके उपरान्त कहा कि मेरे पाप दूर करदो यह कह गौतम चुपहुये ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! गौतम की स्तुति और विनय के सुननेके अनन्तर शिवजीने कहा कि यही होगा तुमको मुनीश्वरों ने अतिछलसे ऐसा दुःख दिया है सो उनको ऐसी हत्या लगेगी कि जिससे वे फिर आनन्द न पावेंगे क्योंकि उन्होंने वेदके विरुद्ध पाप किया है बरन उनके देखनेसे देखनेवाला निष्पाप मनुष्य भी पापी होजावेगा और यह सब ब्राह्मण मिथ्या शास्त्रको धारण करेंगे और जो हमारे भक्तों को दुःखदेनेवाला या उनकी निन्दा करनेवाला है उसको आनन्द कहां है यह सुन गौतम ने हाथ जोड़ बिनती की कि महाराज इन मुनीश्वरोंने मेरे लिये क्या अनभल किया इन्होंने तो मुझको ऐसी युक्ति सिखाई जिससे आपके दर्शन हुये शिवने यह गौतम का वचन सुन अतिप्रसन्नतासे कहा कि हे गौतम ! तुम धन्य हो जो वर चाहिये वह हमसे लेलो मैं तुम्हारे अधीन हूं गौतम बोले कि हमारा कार्य जो था वह तो होचुका पर आपकी आज्ञासे मैं चाहता हूं कि आप मुझे गङ्गा दें सो शिवजीने अपने शिरसे गङ्गा कृपा की वह जो पहिले विष्णुको दी थी और अपने बिवाहमें हमको कृपा की थी वह गङ्गाजी का जल जो शिवजीके शीश में था स्त्रीके रूपसे प्रकट हुआ जिसको देखकर गौतम अतिप्रसन्न हुये और प्रणामके उपरान्त बड़ी स्तुति गङ्गाजीकी की और कहा कि मेरे ऊपर कृपा करके मुझ को शुद्धकरो सो शिवजीने भी गङ्गाजी से कहा कि गौतम के पाप दूरकर इसको हर प्रकार अपना सेवक समझो गङ्गाजीने कहा हे शिव जी ! हम आपकी आज्ञासे जो आप कहते हैं करेंगी पर विनय यह है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि हम गौतम को उसके कुलसहित पवित्र करके फिर अपने स्थान को लौट जावेंगी शिवजीने कहा जबतक वैवस्वत मनुका आरम्भ न हो तब तक तुम यहीं स्थित रहो गङ्गाजी ने न माना निदान गौतम ने बड़ी स्तुति की और शिवजीने भी कहा कि तुम अवश्य यहां रहो गङ्गाजीने कहा जो हमारी महिमा यहां बहुत हो और तुमभी गिरिजा और गणोंसहित हमारे तटपर ठहरो तो हम मानती हैं पर जिन्हों ने गौतम को दुःख दिया है उनको हम पवित्र नहीं करेंगी शिवजी ने मानलिया इतनेमें विष्णुजी और हम और देवताआदि शिवजीको उस स्थानपर प्रकट होतेहुये जानकर आये और सब तीर्थ और क्षेत्र अपने अपने स्थानोंसे चलकर वहां आये और शिव और गङ्गाजीकी स्तुति की जिसको सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और कहा कि मांगो जो तुम्हारी इच्छाहो यह सुन सबने विनयकी कि तुम अर्द्धाङ्गीरूपसे गङ्गा सहित यहां पर विराजमान हो गङ्गाजीने कहा जो तुम सबसे अधिक हमको इस स्थानपर सर्वोपरि समझो तो हम शिवजी सहित यहीं स्थित होवें सबने माना और कहा कि तुम्हारी बड़ी भारी महिमा का वह समय होगा जब सिंहराशि की बृहस्पति होगी उस समय हम सब यहां आकर तुम्हारे स्नान और शिवजीके दर्शनसे अपने पापों को जो बारह वर्षमें होगये होंगे सब दूर करडाला करेंगे सो गङ्गा और शिवजी दोनों वहां स्थित हुये उस दिन से जब कि सिंहराशि पर बृहस्पति आते हैं तो उस क्षेत्रमें सब देवता मुनि और विष्णु और ब्रह्मा जातेहैं क्योंकि दूसरी जगह जानेसे ऐसे समयमें कुछ फल नहीं होता॥

बयालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह चरित्र हमने गौतमीनदीके तट पर जो शिवजी ज्योतिर्लिङ्ग त्र्यम्बकनाम से विराजमान हैं वर्णन किया जानना चाहिये कि सबक्षेत्रों से गौतमी गङ्गा अतिश्रेष्ठ हैं इसी प्रकार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग भी सबमनोरथोंके देनेवाले हैं इतना सुन नारदने ब्रह्मासे पूछा कि गङ्गा कहांसे जलरूप हो प्रकटीं और शिवजीका लिङ्ग वहां पर क्योंकर प्रकट हुआ और उनकी महिमा और जो मुनीश्वरों ने गौतमको दुःख दिया यह सब वर्णन करो ब्रह्माजी बोले कि हम सबकी विनय सुनकर गङ्गा जलरूप हो ब्रह्मशैल के भीतर उदुम्बर-शाखा से निकल बड़े वेगसे नदीरूप हो बहनेलगीं और गौतमी के नामसे प्रसिद्ध हुईं और उस स्थान का नाम गङ्गाद्वार प्रकट हुआ जिसके देखने और छूनेसे पाप दूर होते हैं और शिवजीभी लिङ्गस्व-रूपही त्र्यम्बकके नामसे प्रसिद्ध हुये सो गौतमने तुरन्त अहल्या और शिष्योंसहित गौतमीमें स्नान कर त्र्यम्बक शिवलिङ्गकी पूजा की और बहुतही शिव की और गङ्गाकी स्तुति की पर जब गौतम के शत्रु मुनि उस स्थान पर आये तो गङ्गा और शिव दोनों अन्तर्धान होगये उस समय गौतमने गङ्गाजीसे अतिविनयपूर्वक उन मनुष्यों के पाप क्षमा करने को कहा तब आकाशवाणी हुई यद्यपि हिंसक और मूर्ख और कामी और परमेश्वर को न जाननेवाला और छली और धूर्त्त और जो शुद्धहोने के योग्य नहीं चाहे पवित्र होजावें पर भक्तोंका शत्रु पापोंसे नहीं छूटसक्ता तब गौतमने बारबार स्तुति करके कहा कि हे माता-पिता ! वेद कहते हैं कि तुम पापियों के पाप दूर करतेहो और बुरोंके साथ भलाई करतेहो इससे हे माता-पिता ! तुम प्रकट होकर दर्शन दो और उन सबके पापोंको दूर करो यह सुन फिर आकाशवाणी हुई कि तुम जो हमारे बड़े पवित्र भक्त हो इससे हम तुम्हारे अधीन हैं जो तुमने कहा वह हमने माना पर पहिले यह सब अपने पापों की शान्ति का उपाय करें और एकसौ बेर ब्रह्मगिरि की परिक्रमा करें तो इनके पाप निवृत्त होजावेंगे यह सुन गौतम अति प्रसन्न हुये और सब मुनीश्वरोंने गौतम की आज्ञा से अहंकार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से रहित हो गौतमकी स्तुति की फिर ब्रह्मगिरि की परिक्रमा कर प्रायश्चित्त किया इसी प्रकार उनकी स्त्रियोंने गौतमकी स्त्री अर्थात् अहल्या की बड़ी बिनती कर अपने पाप को निवृत्त कराया तब शिव जी और गङ्गा पूर्ववत् अपने स्थान पर प्रकट हुये जिसमें मुनियोंने स्नानकर शिवकी पूजाकी और तुरन्त उनके पाप नष्ट होगये और गौतमके चरणों पर लज्जित हो अपने शिरोंको रक्खा गौतमने उनको उठाकर अपनी छाती से लगालिया और इतना अनुग्रहकर समझाया कि उनकी लज्जा दूर होगई उस समय विष्णु और हमने देवतादि सहित उस स्थान पर पहुँच गङ्गामें स्नानकर शिवपूजा की और एक स्तुति हम सबनेकी तब शिवजी और गङ्गाजी ने कहा कि वर मांगो हम सबने कहा कि हमको अपनी भक्ति दो जिससे हम कभी तुमको न भूलें शिवजी और गङ्गाजीने कहा कि अच्छा यह कह अपनी मूर्ति में प्रवेश करगये और देवतादि सब अपने २ स्थानों को लौट गये उस स्थानपर कुशावर्त और गङ्गाद्वार और कोटितीर्थ बड़ा आनन्द देनेवाले तीर्थ हैं सो रामचन्द्र भी पञ्चवटी में गङ्गा को देख फिर उस स्थान पर स्थित हुये थे तीनों लोकमें गङ्गा बड़ाक्षेत्र है जिसके देखने छूनेसे हर मनुष्य शुद्ध होजाता है जिसने गङ्गामें नहाया वह सब धर्म करचुका और जिसने त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग की पूजाकी उसको दोनों लोक में बड़ा आनन्द है यह त्र्यम्बक लिङ्ग पापों के दूर करनेवाले हैं इस चरित्र के पढ़ने सुननेवालों को संसार में आनन्द प्राप्त होता है ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि अब हम वैद्यनाथ नवें शिव ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जिस के दर्शन स्पर्शन और पूजा और भक्तिसे अति आनन्द मिलता है और धन, द्रव्य, स्त्री, पुत्र और कुलसे प्रसन्न रह-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर अन्त को शिवलोक मिलता है हमारा पुत्र पुलस्त्य जो सप्तऋषियों में प्रसिद्ध है उसके एक लड़का विश्रवा नामी उपजा उसके तीन स्त्रियां थीं पहिलीसे धनपति शङ्करमित्र अर्थात् कुबेर उपजे और दूसरी से रावण और कुम्भकर्ण दो लड़के पैदा हुये और तीसरी से विभीषण उपजा उन सब लड़कोंसे रावण अतिबलवान् और स्वतन्त्र हुआ जिसके बल और यशको तीनों लोक जानते हैं और रावण तप के निमित्त कैलास पर्वत पर जाकर शिवजीका भजन करनेलगा बहुत दिन उसको तप करते बीते पर कोई शिवजीकी प्रसन्नताका लक्षण प्रकट न हुआ उस समय रावण धैर्य और दृढ़तासे वहांसे उठकर हिमालय पर्वतमें तपके निमित्त गया और पर्वत के दाहिनी ओर शिवजी का ध्यान करनेलगा गर्मियों में पञ्चाग्नि और वर्षा में वनके बीच और शीतकाल में पानीके बीच बैठ तप किया यद्यपि ऐसा कठिन तप रावणने किया पर शिव प्रसन्न न हुये तब रावण क्रोधित हो पृथ्वी में एक गढ़ा बनाकर अग्नि स्थापितकर उस स्थान पर पार्थिवपूजा करनेलगा और चन्दनादि षोडशोपचार से शिवपूजा की और अति प्रीति से सिवाय शिवजी के और किसी को उसने न देखा और शिवजी की स्तुतिकर शिवके सामने नाचा और मुख से शिवजी के सामने गाकर शिवजी की प्रसन्नता चाहनेलगा पर तो भी शिवजी प्रसन्न न हुये उस समय रावण अतिचिन्तित हुआ और कहा कि मुझे धिक्कार और मेरे बल और ऐसे मोटे शरीर पर सहस्रों धिक्कार है कि शिवजी प्रसन्न न हुये यह विचार उसने हवन किया तो भी शिवजी प्रसन्न न हुये तब रावण ने विचारकिया कि अपने शरीर को आग में जलादेना चाहिये सो इसी इच्छासे अपने शरीर में चन्दनादि सुगन्ध लगाकर अपने शिरों को शरीर से भिन्नकर अग्निमें डालने लगा जब नवोंशिर होमकर दशवां शिर भी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काटना चाहा तब शिव तुरन्त रावणके सम्मुख खड़े होगये और वरम्बूहि कहा और सर्वशिर उसके शरीर में लगाकर कहा कि वर मांगो रावण शिवजी के देखतेही अतीवही प्रसन्न हुआ और प्रणाम कर हाथ जोड़ स्तुति करनेलगा और कहा कि मैं बहुतही पराक्रम चाहता हूं और यह भी मेरी इच्छा है कि आप मेरे नगर को चलें कि मैं कृतार्थ होजाऊं शिवजी बोले बहुत अच्छा तुम हमारे लिङ्ग को उठा लेजावो और सदा उसकी पूजा करतेरहो पर जो मार्ग में तुमने हमको कहीं रख दिया तो हम वहीं रहेंगे तुम्हारे साथ नहीं जावेंगे तब रावणने कहा कि अच्छा पर आप अपने दो रूप धारण करें कि मैं आपको कांवरि में उठाकर तुमको अपने नगरमें लेजाकर स्थित करदूं यह वचन सुनकर शिवने दो लिङ्गरूप किये रावण दोनोंलिङ्ग कांवरि में रखकर लेचला शिवने मार्ग में यह चरित्र किया कि रावणको लघुशङ्का की इच्छाहुई सो रावण प्रतिज्ञा करने परभी पृथ्वी में उनको रखकर अतिविकल होगया और जब कि इधर उधर देखने लगा तो एक पशु चरानेवाले अहीर को देखा जो गौ चराता था उससे कहा कि एकक्षणभर कांवरि को ले लो कि मैं पेशाब करलूं चरवाहे ने कहा कि दो घड़ी तक मैं कांवरि लिये रहूंगा इतने में जो तुमने कांवरि न ली तो पृथ्वी में रख दूंगा यह कह कांवरि को अपने कन्धेपर लेलिया और रावण मूत्र करने लगा॥

चवालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि इतनेमें शिवने अहंकार दूरकरनेवाली अपनी माया प्रकट कर रावणका मूत्र इतना बढ़ाया कि छोटा तालाब भरगया और कांवरि इतनी भारी हुई कि चरवाहा भार न उठा सका और उसको पृथ्वी में रखदिया तुरन्त दोनों लिङ्ग पृथ्वी में इतने दृढ़ हो-गये कि रावणने मूत्र करके बहुत बलकर उनको उठाया पर वह कुछ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी अपनी जगहसे न उठे रावणने अतिविकल हो अपने अँगूठे से दोनों लिङ्गों को दबाया और फिर अपने घरचलागया वे दोनों लिङ्ग उसी स्थानपर स्थित होगये जो लिङ्ग कांवरिके अगले तरफ़ था वह गोकर्णक्षेत्रमें स्थित हुआ और चन्द्रभालके नामसे प्रसिद्ध हुआ उसकी महिमा हम पहिले वर्णन करचुके हैं और जो लिङ्ग पीठिके पिछली ओर था वह वैद्यनाथके नामसे प्रसिद्ध हुआ यह वैद्यनाथ नवां ज्योतिर्लिङ्ग जिनकी महिमा वेद पुराण गाते हैं उनकी पूजा से असंख्य आनन्द प्राप्त होताहै हे नारद! जबकि रावण लिङ्गोंको छोड़कर चलागया तब विष्णु और हम सबने देवतादि सहित शिवलिङ्ग की पूजा की और स्तुति करके विनय की कि हे चिताभूमि में स्थित होनेवाले, वैद्यनाथ! हम सब पर प्रसन्न होकर दयादृष्टिसे देख दीजिये सो उसी लिङ्गसे शिव जीने गिरिजा सहित प्रकट होकर कहा कि हमसे वर मांग लो हम सब ने कहा कि अपनी भक्ति और कृपाकरके यहीं स्थित रहो कि यह देश शुद्ध होजावे यहां तुमने प्रकट होकर हम सब पर अतिकृपा की है और जो कि तुम वैद्यके समान मनुष्यों को आनन्द देनेवाले हो इससे तुम्हारा नाम वैद्यनाथ है जो यहां तुम्हारे ऊपर गङ्गाजल लाकर चढ़ावे वह संसारमें प्रसन्न रहकर परमपद पावे और गङ्गाद्वार अर्थात् हरद्वार का जल आपको बहुत प्रिय हो यह सुनकर शिव बोले कि यही होगा और हँसकर उसी लिङ्ग में प्रवेशकिया सो हम सब ने जय २ कह शिवजी की पूजा की फिर सब देवता आदि अपने २ स्थानोंको लौट गये और कथा सुनिये कि जब उस चरवाहे ने जिसको रावणने कांवरिलेने को दिया था यह चरित्र देखा तो आश्चर्य के सागर में डूबगया उसका नाम बैजू था उसने तुरन्त शिवलिङ्ग की पूजा की और अपने कपोलों से शब्द निकाला और प्रतिदिन उसकी यही प्रकृति थी कि उस लिङ्ग की विना पूजा किये भोजन न करता जब इसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रकार कुछसमय बैजूको बीता और शिवजी की प्रसन्नता का समय निकट पहुँचा शिवजी ने चाहा कि इसकी परीक्षा कीजावे सो एक दिन बैजूके घर कोई बड़ा भारी उत्सव था जिसमें उसके बहुतसे भाई बान्धव उपस्थित थे वह भाई बान्धवों की सेवा में लगा रहा जिससे उसको वैद्यनाथ शिवलिङ्ग के पूजा का अवकाश न मिला जब सब भोजन करनेलगे तो बैजूको भी अपने साथ भोजनको बैठाया जब सब ग्रास उठा भोजन करने लगे तो इससे पहिले कि बैजू ग्रास कण्ठ में उतारे उसको स्मरण हुआ कि मैंने तो अभी वैद्यनाथ की पूजा नहीं की मुझसे बड़ा अपराध हुआ है मुझ पर धिक्कार है क्योंकि मैंने अपने स्वामीको भुलादिया सो वह तुरन्त उठकर सिधारा यद्यपि उसके भाई बान्धव अप्रसन्न हुये पर उसने किसीकी कुछ न सुनी हे नारद! वेद साधुका यही स्वभाव कहता है कि साधु अपने नियमको न छोड़े चाहे संसार भर उससे अप्रसन्न होवे पर वह मनुष्य यही बातकरे जिससे धर्म बनारहे निदान बैजूने वैद्यनाथके पास जाकर शिवलिङ्ग की पूजा की और दण्डवत् करके पृथ्वीमें गिरकर ध्यानकिया शिवजी बैजूकी ऐसी भक्ति और नियम देख तुरन्त प्रकट हुये जिनके बामाङ्गमें श्री-जगन्माता गिरिजा विराजमान थीं सो बैजूने उठकर प्रणाम किया फिर स्तुति की और प्रेमकी अधिकतासे नाचने लगा ऐसा प्रेम बैजूका देख शिवजी अतिप्रसन्न हुये और कहा कि वर मांगो बैजूने बिनती की कि आपके चरणों का प्रेम दिन २ बढ़े और तुम्हारे भक्तों की सेवा कियाकरूं और सब जीवों को तुम्हारा अंश जानकर तुम्हारी सेवामें लगारहूं और जो मेरा नाम है वही तुम्हारा नामहो यह सुनकर शिव जीने कहा कि यही होगा फिर उस लिङ्गमें प्रवेश करगये और बैज-नाथके नामसे प्रसिद्ध हुये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पैंतालीसवां अध्याय ॥

नारदके पूछनेके अनन्तर ब्रह्माजी बोले कि जब रावणने शिवलिङ्ग के उठाने से निरुपाय हो अपना अहंकार दूर किया और अतिप्रेम से शिवजीकी शरणागत हुआ तो उस समय आकाशवाणी हुई कि हे रावण! तुम अपने नगरमें जाकर निष्कण्टक राज्यकरो जब तुमको गर्व उपजेगा तो तुम दुःखी होजावोगे यह वर पाकर रावण अपने घर प्रसन्न होकर गया जिसको सब दैत्यों ने मिलकर अपना राजा बनाया और मन्दोदरीने उसकी रानी होकर शिवकी भक्तिमें बड़ा प्रेम बढ़ाया यह मन्दोदरी पञ्चकन्याओंमेंसे अतिसुन्दरी रूपवतीथी उससे मेघनाद के समान लड़के उपजे मेघनाद ने तीनोंलोकों को जीतलिया और दिक्पालों को जीत उनको अपनी प्रजा बनाया और शेषादि उसे कर देनेलगे और चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र उसके अधीन हुये एकदिन सब देवता विकल हो अपने २ निवासस्थान से भाग वैकुण्ठ से विष्णुकी शरण में गये और स्तुति कर विष्णुके सामने झुककर खड़ेहुये विष्णु बोले कि हे देवताओ! तुम कहांसे आते हो तुम सबोंके मुखसे दुःख प्रकट है इसका कारण कहो सो सब देवताओं ने रावण का अन्याय प्रकट कर कहा कि उसने देवपत्नियों को अपने घर डाललिया है और तीनोंलोक को जीत हर प्रकार सबको दुःख देता है सो कृपा करके आप ऐसे अन्यायी को वधकरें यह सुन विष्णु क्रोधित हो देवताओं सहित युद्ध करनेलगे और रावण शिवके बलसे विष्णु के साथ लड़ा हर प्रकारके बाण दोनों ओरसे चले जो २ बाण अग्नि, वायु, सर्प और पर्वतादि रावण पर छोड़े उन सबको रावणने दूर करदिया तब विष्णुने अपनी गदा रावणके भुजा में मारी रावणने क्रोधितहो विष्णुके हृदय में गदा मारकर बड़ा नाद किया और विष्णुने अपनी नन्दक रावण पर चलाई पर वह कुण्ठित होकर उलटगई उस समय विष्णु ने अति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोपसे अपना जलता हुआ चक्र हाथमें लिया और रावणके कण्ठमें मारा जिससे तीनों लोकमें हाहाकार हुआ पर रावण शिवका ध्यान कर ऐसी अकस्मात् आपदासे बचारहा और विष्णुने हरप्रकारसे रावण के ऊपर बराबर धावाकिया पर शिवकी कृपा से उस पर कुछ न चला यह दशा देखकर विष्णुको अतिदुःख प्राप्त हुआ तब आकाशवाणी हुई कि हे रमापति! कुछ चिन्ता मत करो शिव सर्वोपरि हैं,रावण को कम मत समझो इसके ऊपर शिव प्रसन्न हैं उसने शिवका बड़ा तप किया है यही कारण है कि इसके ऊपर कोई दुःख न पड़ा जो कि रावण देवताओंसे मर नहीं सक्ता इससे तुमको उचित है कि मनुष्य शरीरधार शिवका तपकर और उनसे वरले युक्तिपूर्वक रावणको शाप दे उसको मारो तब देवताओं का काम पूर्ण होगा यह सुनकर विष्णु अन्तर्धान हुये और रावण सर्व देवताओं को पकड़ कर अपने नगर को लौटगया और निर्भय होकर तीनोंलोक का राज्य करनेलगा और देवता भी आसक्त होकर विष्णुजीकी सेवामें पहुँचे हे नारद! विष्णु जीने आकाशवाणी सुनकर तुमको बुलाया और कहा कि तुम जाकर ऐसी युक्तिकरो जिससे शिवजी क्रोधित होकर रावणसे अप्रसन्न होजावें और शाप देवें और हम पृथिवीपर जाकर मनुष्यका अवतार लेंगे और शिवजीके प्रसन्न करनेके पीछे उनके धनुर्बाणको लेकर फिर शिवजी की आज्ञानुसार रावणका वध करेंगे यह कह विष्णुजीने सबदेवताओं को बिदाकरदिया और सर्वदेवता अपने २ गृह सिधारे और हे नारद! तुम रावणके निकट गये और जब उसने तुम्हारा बड़ा आदर किया तब तुमने कहा कि धन्य हो तुम तुम्हारे देखने से हमको बड़ा सुख प्राप्त हुआ हम तुम्हारे राज्य और न्याय और तेज आदिको देखने आये हैं यह सब तुमको शिवजीकी कृपा से मिला है शिव ऐसी कृपा किसी पर नहीं करते जैसी तुमपर है शिवजी तुम्हारे अधीन हैं तुमने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कौनसा ऐसा यत्न किया है जिससे शिवजी ऐसे प्रसन्न हैं यह सुनकर रावणने कहा कि हम सब वृत्तान्त कहते हैं ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

रावण ने कहा कि प्रथम हम कैलासपर्वत पर तप करनेगये पर जब बहुत दिनोंतक श्रीसदाशिवजी प्रसन्न न हुये तो फिर कुरहखण्ड में जाकर तप करतेरहे और अतिक्रोध करके पृथ्वी पर गढ़ा बनाकर शिवलिङ्गको स्थापित किया यद्यपि षोडशोपचार से शिवका तप किया पर वह प्रसन्न न हुये फिर मैं अग्नि जलाकर अपने शिरोंको काट २ कर उसमें डालनेलगा जब नवां शिर काटने लगा तो शिवजीने प्रसन्न होकर दर्शन दिये मैंने यह वर मांगा कि मुझको कोई देवता न जीत सके शिवजीने प्रसन्न होकर मेरे शिरोंको मेरे शरीर में लगाकर और भी अनेक वरदिये जबसे शिवजी अन्तर्धान हुये तबसे हम तीनोंलोकों को जीतकर राज्य करते हैं यह सुनकर नारदने कहा कि तुम्हारे ऊपर शिवजीने कुछ कृपा न की क्योंकि वह तुम्हारे साथ तुम्हारे घर न आये बरन उन्होंने केवल अपना लिङ्गस्वरूप दिखाया और वहभी तुम तक न आया और मार्गमेंही रहगया हम तुमसे कहते हैं कि तुम वहां जाकर कैलास पर्वतको उखाड़कर यहां लेआओ उनकी सहायतासे सर्वदा अभय और प्रसन्न रहोगे क्योंकि कुबेर के निकट रहते उनको बहुत दिन होगये अब तुम्हारे निकट आकररहें तुमसे अधिक कुबेरको कौन बड़ाई प्राप्त है उचित नहीं कि तुमको त्यागकर शिवजी उसके पास रहें क्योंकि तुम बुद्धिमान् हो जो कुछ कि उचित हो वह करो यह कहकर तुम चले और देवताओं से यह सब समाचार कहकर उनको सुखी किया और रावण तुम्हारी माया से छलित हो अति अहंकारी बनकर कैलासपर्वत पर गया और उसको जड़से उखाड़ लिया जिससे सब वस्तु उस पर्वत की हिलकर नष्ट हुईं और सबदेवता और मनुष्यादि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अति दुःखी हुये और सब पक्षी क्लेशित होकर भयवान् हुये और वृक्षादि अपने मूलसे उखड़गये और शिवजी और सब आश्चर्यवान् होकर कहनेलगे कि यह क्या है यह सुनकर उमा अर्थात् पार्वतीने शिवसे कहा किसी तुम्हारे भक्तने तुमको यह फल दिया वाह २ ऐसाही सेवक चाहिये ऐसे वचन सुनकर शिवजीने विचारकर कहा कि यह रावण का काम है और कहा कि अब फिर किसीको ऐसा वर न दूंगा क्योंकि दूध पिलानेसे मानों सर्पोंका विष अधिक करनाहै सर्प को प्रीति नहीं होती वह तुरन्तही काट खाता है सो शिवजीने क्रोधित होकर रावणको शाप दिया कि तुमने जिन हाथोंसे हमारे कैलास पर्वतको उखाड़ा है उन हाथोंका काटनेवाला उत्पन्न होगा उन्होंने यह शाप इस कारण दिया है कि स्वामी अपने सेवकको नहीं मारसक्ता और यद्यपि विष का वृक्ष अपने हाथ का लगाया हुआ हो तोभी लगानेवाला मनुष्य नहीं काटसक्ता सो रावण ने यह शाप सुनकर कैलास पर्वतको अपने मुख्य स्थानपर स्थित करदिया और अहंकार में भरकर निर्भय अपने घर चलागया और दृढ़तासे अपना राज्य करके अनेक प्रकार के अन्याय करनेलगा और अपने शुद्धआचरणके विरुद्ध होकर शिवजीकी भक्तिभी त्यागदी हे नारदजी ! तुमने देवताओंसे यह सब वृत्तान्त कहा और विष्णुजीने अतिप्रसन्न होकर समय पर राजादशरथ के यहां अवतार लिया उनका नाम राम हुआ उन्होंने अपने भाइयों भरत शत्रुघ्न और लक्ष्मण सहित नाना प्रकार के बालचरित्र किये फिर रामचन्द्र और लक्ष्मणजीने विश्वामित्रके साथ जाकर बहुत लीला करने के पीछे ताड़का नाम राक्षसीको बध किया जिससे विश्वामित्र के यज्ञ में कुछ विघ्न न हुआ फिर जनकपुरमें जाकर धनुष तोड़डालने के पीछे रामचन्द्र का विवाह सीताके साथ हुआ जब रामचन्द्रजी लौट आये तो अयोध्यावासियोंको बड़ा सुख प्राप्त हुआ पर जब राजादशरथ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने श्रीरामचन्द्रजीको राज्यतिलक देना चाहा तो देवताओंके नाना प्रकार के चरित्रोंसे भरतजीकी माता ने रङ्गमें भङ्ग करदिया और रामचन्द्रजी लक्ष्मण और सीता सहित वनवासी हुये और चित्रकूट और दण्डकवनमें घूमते हुये बहुत दैत्योंको मारा और जब रावण सीताजीको उठा लेगया तो रामचन्द्रजी बहुत समयतक दुःखीरह फिर अगस्त्य ऋषि की आज्ञानुसार श्रीरामचन्द्रजी ने शिवजीकी सेवाकर उनसे धनुष लेलिया और हनुमान्ने उनके रक्षक होकर समुद्रमें पुल बांधकर रावणसे युद्धकिया और रावणका बध करके सीताजी को लेकर अवधपुरी में फिर आये यह हमने संक्षेप में वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र तुमको सुनाया यह नवें ज्योतिर्लिङ्ग हैं यह चरित्र वैद्यनाथ शिवलिङ्ग का दोनों लोकमें सुख देता है और इसके सुनने और कहनेसे परमपद प्राप्त होता है ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि अब हम नागेश ज्योतिर्लिङ्गका चरित्र वर्णन करते हैं कि प्राचीनसमय में एक दारुका नाम राक्षसीने गिरिजाकी बड़ी पूजा की थी जिससे गिरिजा अतिप्रसन्न हो दारुका के ध्यान के अनुसार प्रकट हुई और कहा कि वर मांग दारुका ने कहा कि मुझे एक नगर दीजिये जिसमें मैं अपने पति सहित रहूं तुम हमारी रक्षा किया करो और जहां मैं जाऊं वहां वह वन भी मेरे साथ जावे गिरिजा 'एवमस्तु' कहकर अन्तर्धान हुई और पश्चिम समुद्रके निकट एकनगरी बसी जो सोलह योजन लम्बी थी वहां नाना प्रकारके सुखकी वस्तु प्रकट हुई थी उसमें दारुका अपने राक्षसों सहित रहने लगी और उसका ब्याह दारुक नाम राक्षस के साथ हुआ जो बड़ावीर और तेजस्वी था वह राक्षस अपनी सेना समेत तीनों लोक को दुःखी करनेलगा और तप, पूजन, यज्ञ, दान, धर्म आदि से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहित हो कुकर्मों में प्रवृत्त हुआ जहां २ दारुका जाती वहां वह वन भी वृक्षों सहित उसीके साथ जाता और वहां हर प्रकार से दारुक उपद्रव करता था इसलिये देवता और मनुष्य तीन लोकके चिन्तित हो सब मिलकर उर्वमुनि के निकटगये और प्रणाम और स्तुति के पीछे सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि अब हम आपकी शरण में आये हैं तुम हमारी रक्षा करो तुम्हारे सिवाय हमारा रक्षक कोई नहीं क्योंकि तुम्हारे तेज को देखकर वह सब राक्षस भाग जावेंगे तुमतो शिवजीके भक्त हो यह वृत्तान्त सुनकर उर्वमुनि ने क्रोधित होकर राक्षसों को यह शाप दिया कि जो राक्षस पृथ्वीपर जीवोंको मारेंगे अथवा यज्ञ, दान, धर्म आदिमें विघ्न करेंगे तो वे नष्ट होवेंगे यह कहकर उर्वमुनि अपने ध्यान और तपमें प्रवृत्त होगये और देवताओं ने आनन्दपूर्वक राक्षसोंके साथ युद्ध का उद्योग किया सो राक्षस उर्वमुनि के शाप का हाल सुनकर अधिक चिन्तित हुये उस समय दारुका राक्षसीने कहा कि मुझको गिरिजाने यह वर दिया है कि जहां मैं जाऊंगी वहां यह वनभी जावेगा इस निमित्त उचित है कि जहां शाप प्रवेश न करे वहां चलो इस वचनको सब उत्तम समझकर सागर में रहनेलगे और जो मनुष्य नाव आदि पर चढ़कर जाते थे उनको वे खींचकर कारागृह में बन्द करते और थल में आकर अनेक प्रकार के कष्ट देते थे एक दिन बहुतसी नावें पकड़कर लेगये उनमें एक पुरुष शिवजी का बड़ाभक्त था वह शिवजीकी पूजा विना जलतक नहीं पीता था उसने सब बन्दियोंको शिवभक्त बनाकर पार्थिव पूजन कराया और सबको मानसी पूजन की विधि बताकर पञ्चाक्षरी मन्त्र की शिक्षा दी वह सब हर समय शिव २ कहकर सदाशिवजी का ध्यान करते थे शिवजी उनपर बहुत दयालु हुये जब उनको छः मास इसी प्रकार शिवपूजन करतेहुये व्यतीत हुये तब शिवजीने यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चरित्र किया कि एकराक्षसने शिवलिङ्ग को उनके सम्मुख देखकर अपने राजा अर्थात् दारुकसे यह वृत्तान्त कहा उसने शिवभक्तको डर दिखाकर कहा कि तू सत्य २ कह कि यह क्या करता है वरन तुझे लातों से मारूंगा उसने कहा कि मुझको कुछ मालूम नहीं यह सुनकर राजाने सबराक्षसों को आज्ञा दी कि इसे बधकरो यह सुनकर वह सब राक्षस अतिक्रोधित हो शिवभक्तके निकट आये शिवभक्तने बहुत चिन्तित होकर शिवजीका ध्यान किया सो शिवजी गिरिजा सहित अपने लिङ्ग को प्रकट कर आप भी प्रकट हुये जिसको देखकर वैश्यपति शिवभक्तने प्रणाम और स्तुति की शिवजीने हुंकार करके सब राक्षसों को दूर करदिया और अपने पशुपति शस्त्रको देख कर कहा कि इससे सबको मारो और इस वनमें ब्राह्मणों सहित बसो यहां अब कोई राक्षस न रहने पावेगा हम यहां ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थापित किये जायँगे उससमय दारुका राक्षसीने गिरिजाकी ऐसी स्तुति और ध्यान किया कि गिरिजाने प्रकट होकर वरदान देनेके निमित्त दया की दारुकाने कहाकि हम न मारी जावें और न हमारे ऊपर शिवजी क्रोध करें तुम आदि शक्ति हो तुम्हारे ब्रह्माजी विष्णुजी और शिवजी सेवक हैं यह सुनकर गिरिजाने हँसकर कहा कि यही होगा और शिवजी से कहा कि दारुका हमारी भक्ता है इसका और इसके स्वामी का नाश न होवे और यह दारुकवन भी नष्ट न होवे यह सुनकर शिवजी मुसकराये और कहा कि हे गिरिजा ! सोच विचारकर जो उचित हो वह करो तब गिरिजाने कहा कि युगके अन्त पर्यन्त यहां यह राक्षस रहें और यह वन नगरी सहितबसारहे और दारुका हमारी शक्ति गिनीजावे वह अपने पतिसहित यहां राज्यकरे शिवजीने कहा कि जो कोई मनुष्य अपने वर्ण और धर्ममें दृढ़ रहेगा और यहां आकर हमारे दर्शन करेगा वह पृथ्वी का राजा होगा और इन्द्रदेवता के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समान सुखी रहेगा फिर शिवजीने गिरिजा से कहा कि अब हम भविष्य वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि बिभ्रसेन राजाके गृह एक पुत्र उत्पन्न होगा वह यहां आकर हमारे दर्शन करेगा और वह राजा होकर इनको मारेगा इसी प्रकार बहुतसे परस्पर वचन कहके शिवजी नागेशनाम लिङ्गस्वरूप धारकर वहां स्थित हुये यह सुनकर नारदने ब्रह्माजीसे पूछा कि राजा बिभ्रसेन उस वनमें क्योंकर गया ब्रह्माजीने कहा कि नैषध में बिभ्रसेन राजा हुआ उसने द्वादशवर्ष शिवजीका तपकिया सो शिवजी ने प्रसन्न होकर आज्ञा दी कि हे बिभ्रसेन ! तुम पश्चिमके समुद्र में जाकर दारुकवनमें राक्षसों को मारो और एक काठकी नाव बनाकर राजाको दी जिसके ऊपर राजा बिभ्रसेन चढ़कर दारुकवनमें गया और जब शिवलिङ्ग और गिरिजा के दर्शन पाचुका तब पशुपति शस्त्र जो वहां रक्खा था उससे सब राक्षसोंको मारा और श्रीसदाशिवजी और श्रीगिरिजा देवीका पूजन करके फिर अपने नगरको लौट आया वह यही समय था जिसमें गिरिजा ने यह आज्ञा दी थी कि दारुक राज्य करेगा हे नारद ! जो नागेश्वर महादेवजीके चरित्र वर्णन अथवा श्रवण करेगा वह आनन्द पावेगा अब हम रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करेंगे ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि एक समय चारों मुनि सनकादिक हमारे पुत्र विष्णु लोकमें गये जब वह विष्णुजीके मन्दिरके अन्दर जाने लगे तो जय और विजय दोनों गणोंने न जानेदिया सनकादिकोंके शाप देने से वह कनकाक्ष और हिरण्यकशिपु का जन्म लेकर विष्णुजीके हाथसे मारेगये उनको तीन जन्मतक दैत्य होने का शाप था इस लिये वह दोनों रावण और कुम्भकर्ण हुये रावण शिवजीका पूजन करके बड़ा वीर होकर तीनों लोकोंको जीतकर राज्य करने लगा पर जब तुमने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसे छला तब उसने कैलासपर्वतको मूलसे उखाड़कर शिवजीसे शाप पाया कि हमारे सदृश अन्य मनुष्य तुम्हारे मद का नाश करेगा शाप के कारण रावण धर्मके विपरीत चलनेलगा और देवताओं और मुनीश्वरोंकी प्रार्थनाके अनुसार विष्णुजीने रामचन्द्र का अवतार लिया जिनका वर्णन हम कई बेर करचुके हैं जब रामचन्द्रजी देवताओं के मनोरथ पूर्ण करनेको वनमें गये तब रावण सीताको छलकर हरलेगया और लङ्कामें रक्खा श्रीरामचन्द्रजीने कुम्भज तथा अगस्त्यमुनि की शिक्षा और उपदेश से शिवजीकी पूजा की ॥

उच्चासवां अध्याय ॥

नारदजी के प्रश्नके पीछे ब्रह्माजीने उत्तरदिया कि अगस्त्यमुनि की शिक्षासे श्रीरामचन्द्रने सब शरीरमें भस्म धारण की और शिवजी का ध्यान करके रुद्राक्षको पहना और लक्ष्मणजी को रक्षा निमित्त द्वारपर बिठाया और सहस्र नाम जो वेदमें हैं उनका वह जप करते रहे ऐसा तप रामचन्द्रजीका देखकर शिवजी प्रकट हुये और रामचन्द्र जीको अपनी गोद में बिठाकर कहा कि जो चाहते हो वह हमसे मांगो रामचन्द्रजीने कहा कि हम यह चाहते हैं कि रावण को बधकरें और सीताजीको लेआवें शिवजीने प्रसन्न होकर अपना तेज धनुर्बाण सहित उनको दिया रामचन्द्रजी ऋष्यमूक पर्वत पर जाकर सुग्रीव और हनुमन्त से मिले फिर रामचन्द्र ने बालिको जो सुग्रीव का भाई था मारकर उसको बड़ासुख दिया फिर हनुमान् सीताका पता लगाने गये और पता लगाने के पीछे रामचन्द्र से फिर वृत्तान्त आ कहा रामचन्द्रजीने समुद्रके तट पर पहुँचकर देखा कि किसी प्रकार समुद्र में जाने की राह नहीं है निदान उन्हों ने चिन्तित होकर शिवलिङ्ग स्थापित किया और पूजन आदिके पीछे प्रार्थनाकी कि हे महाराज! हम किस प्रकार सागरसे पारजावें आप हमारी रक्षा कीजिये कि हम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समुद्रपार होके रावणको मारें यह कहकर स्तुति करके गलनादि अर्थात् गलमुँदरी बजाया उसी लिङ्ग से शिवजी प्रकट हुये जैसा श्रीसदाशिव जीका स्वरूप है वैसाही विराट्रूप धारकर रामचन्द्रजी के सम्मुख खड़े हुये रामचन्द्रजीने ऐसा स्वरूप देखकर शिवजीकी बड़ी स्तुतिकी जिसको सुनकर शिवजीने अतिप्रसन्नता से कहा कि वरदान मांगो रामचन्द्रजीने ऐसा ज्योतिस्स्वरूप देखकर कहा कि मैं चाहता हूं कि समुद्रपार उतरूं और रावण को जीत लूं कि रावणको उसके कुलसहित बध करूं और तुम हमारे स्थित किये लिङ्गमें रहकर संसारको सुख दो शिवजीने कहा कि ऐसाही होगा और उसी लिङ्गमें जो राजा रामचन्द्र ने स्थापित किया था समागये उस लिङ्ग का नाम रामेश्वर है रामचन्द्र जी और लक्ष्मणजीने फिर उसी लिङ्ग की पूजा करके बड़ा आनन्द किया फिर सुग्रीव, जाम्बवान्, अङ्गद और हनुमान् ने उनकी पूजा की और रामचन्द्रजी समुद्र में पुल बांधकर रावणको कुलसहित मारकर और विभीषण को राज्यतिलक देकर और श्रीसीताजीको साथ लेकर अवधपुरी को लौट आये हे नारदजी! जो मनुष्य रामेश्वरलिङ्ग में गङ्गाजल चढ़ावे वह दोनों लोक में सुख पावे जो रामेश्वरके दर्शन करे वह सर्वपापों और दोषों से रहित होकर नाना प्रकार के सुख प्राप्तकरे बहुतसे मनुष्य कहते हैं कि जब उन्होंने पुल बांध लिया तब रामेश्वर महादेव को स्थापित किया यह वचन केवल कल्पभेद के कारण है पर उनकी सेवासे अनेक प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं॥

पचासवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम घुस्मेश्वर शिव ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जो बारहवां शिवज्योतिर्लिङ्ग है कि दक्षिण दिशा में जो त्रिदेवनामी शिवजीका धाम है उसमें एक बड़ा नगर है उस नगर में एक विबुध सुधर्मानामी ब्राह्मण रहता था वह रात्रि दिन शिव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूजा करता और सर्वदा भस्म और रुद्राक्ष धारण करता और शिव २ रटा करता था उसकी स्त्री सुदेहा महापतिव्रता और शिवजीकी बड़ी भक्ता थी वह दोनों विदेशियोंकी सहायता और कार्य पूर्ण करने में सदा उद्यत रहते और सर्वदा शिवजी का व्रत रखते थे और शिवजी और गिरिजा की पूजा नित्य करते थे जब बहुतदिन व्यतीत हुये और ब्राह्मणकी स्त्रीके कोई पुत्र उत्पन्न न हुआ तो वह अतिचिन्तित हुई अन्तमें ब्राह्मण ने उसे बहुत समझाया और कहा कि शिवजीकी भक्ति करो इससे उत्तम कोई वस्तु नहीं यद्यपि पुत्रसे दोनों लोकमें सुख मिलता है पर वेदका यह वाक्य है कि कर्म सर्वोपरि है जो मनुष्य भक्ति करते हैं उनको संसार का सुख भला नहीं भासता देखो कौन किसका पुत्र, पिता, माता, भ्राता है यह सब झूठे बान्धव हैं सब अपने २ लाभ को देखते हैं ऐसे २ उपदेश से ब्राह्मण की स्त्री प्रसन्न होकर सुखी हुई एक दिन अचानक वह स्त्री अपने पड़ोसिनके यहां गई वहां कुछ स्त्रियोंसे झगड़ा हुआ उन्होंने कहा कि यद्यपि तुझे कोई पुत्र नहीं पर तोभी तू इतना अहंकार करती है तेरा यह गर्व निष्फल है क्या तूने नहीं सुना कि सन्तान विना मुक्ति नहीं मिलती और न ज्ञान फलदायक होता है विना सींचने के कोई बीज पृथ्वीसे नहीं उगता सर्व शुभकार्य विना सन्तान के लाभदायक नहीं होते और विना सन्तान के जप, तप, धर्म, कर्म निष्फल हैं जो सन्तानवाला पुरुष है वह पापी भी हो तो भी मुक्ति प्राप्त करता है तुम किसी प्रकार हमारे समान नहीं हो क्योंकि हम सबके पास सन्तान है और तुम पुत्रहीन हो ब्राह्मणी अतिलज्जित हो घरकी ओर आई और अपने पतिके चरणपर गिरकर बहुत रोई फिर सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि मुझको पुत्र दीजिये बरन मैं न जीऊंगी ब्राह्मणने बहुत समझाया तुम क्यों संसारीसुख ढूंढ़ती हो तुम शिवजीकी भक्ति करो और पुत्रके लिये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसी चिन्ता न करो पर उसने एक न मानी और सन्तान मांगा की सो ब्राह्मणने दुःखी होकर शिवजीका ध्यान किया और दो फूल एक उनमेंसे लड़का उत्पन्न होने का और दूसरा उसके विरुद्ध देकर कहा कि इनमेंसे एकफूल उठालो यह परीक्षा मैं लेताहूं देखूं पुत्र तेरी भाग्य में है या नहीं स्त्रीने वह फूल उठाया जो लड़का न होनेका था इससे ब्राह्मण को अति दुःख हुआ और स्त्रीसे कहा कि तेरी प्रारब्ध में पुत्र नहीं है स्त्रीने कहा कि तुम दूसरा ब्याह करो मैं उसकी लौंड़ी होकर रहूंगी इस निमित्त उसने ब्राह्मणका विवाह और किया उसका नाम घुस्मा था वह अपने स्वामीकी आज्ञानुसार पार्थिवपूजन करने लगी वह नित्य हज़ार पार्थिव बनाकर विधिसे पूजन करती थी जब थोड़े दिन व्यतीत हुये तो शिवजी प्रसन्न हुये और घुस्मा के एक पुत्र उपजा जिससे ब्राह्मण और उसकी स्त्री बहुत प्रसन्न हुई उसने उसके सब जातकर्म किये और एक सभा बड़े धूमधाम से करके भाई और बान्धवों को प्रसन्न किया॥

इक्यावनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब घुस्माके पुत्र उत्पन्न हुआ तब सब मनुष्य उसकी प्रशंसा करनेलगे और सुदेहा प्रथम स्त्री की निन्दा होनेलगी ऐसे कठोर वचनोंसे सुदेहाकी छाती जलनेलगी और अपने सौतके लड़के को देखकर अति चिन्तित हुई जब उसका लड़का खेलता तो उसे बुरा मालूम होता और नित्य उसे मारा करती और उसने पहिली प्रीतिको विस्मरण करदिया यद्यपि उसका पति दोनोंको समान जानता पर वह प्रसन्न न होती और नित्य लड़ाई करती घुस्मा कहती थी कि यह पुत्र मेरा नहीं तुम्हारा है मैं तुम्हारी लौंड़ी हूं यह घर धन सब तुम्हाराही है इस वचन के सुनने पर भी सुदेहाकी ईर्षा न गई उसके पति और पड़ोसियों ने उसे बहुत शिक्षा की पर उसने कुछ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न माना और प्रीति आदिको त्याग उसके विपरीत पतिको जलाने लगी हे नारद ! सवतिया डाह बहुत बुरा है इससे पुरुष को उचित है कि दूसरा विवाह न करे विशेष करके जब पहिली स्त्री जीती हो या उसकी सन्तान हो क्योंकि ऐसे ब्याह करने में खेद होता है चाहे सूर्य देवता पश्चिम से उदय हों या अग्नि ठंढी पड़जावे पर सौतों का मिलापसे रहना बहुत कठिनहै या यों कहो कि किसीप्रकार मेल नहीं होसक्ता जब उस लड़के का ब्याह हुआ तब सबको सुख प्राप्तहुआ पर सुदेहा की अग्नि और भी अधिक हुई यद्यपि घुस्मासे सुदेहा की सेवा उस पुत्रकी स्त्री अधिक करती थी पर सुदेहा कुछभी प्यार न करके कठोर वचन कहती निदान सुदेहाने यह विचारा कि विना पुत्रके बधके मुझको सुख प्राप्त न होगा और इसी प्रकार जला करूंगी हे नारद ! स्त्री के विचार में कौन ऐसा काम है जिसको वह नहीं कर सक्ती उ-सको योग्य और अयोग्य कर्म कुछ जान नहीं पड़ता एक दिन उसने लड़के को सोता पाकर मारडाला और उसका शिर वहां डाल दिया जहां घुस्मा शिवजीके लिङ्ग को पूजा करके डालदेती थी जब प्रभात को इस प्रकार लड़के के अङ्ग भिन्न २ देखेगये तो नगर भर में इस बातका चर्चा फैलगया पर ब्राह्मण और घुस्मा जो शिवजीका पूजन कररहेथे पूजनको न त्याग कर अपनी जगह से न उठे पूजाके पीछे लड़के को ऐसी अवस्था में देखकर कहा कि शिवजी रक्षक हैं और घुस्माने पूर्ववत् अपने पार्थिवोंको उसी स्थानपर जहां शिर पड़ा हुआ था डाल दिया और कुछभी खेद न किया ऐसा सन्तोष और दृढ़ता अपने भक्तों की देखकर शिवजी प्रसन्न हुये और ज्योतिस्स्वरूप होकर दर्शन दिये और सम्मुख आकर खड़ेहुये जिनको घुस्माने देखकर प्रणाम करके स्तुति पढ़ी शिवजीने कहा कि वर मांगो हम बहुत प्रसन्न हुये हम तेरे लड़केके मारनेवाले को अपने त्रिशूलसे मारेंगे घुस्माने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा कि वह अपने पापोंसे आपही मरजावेगी आप उसको बध न करें मेरी यह अभिलाषा है कि आप इसी स्थानपर गिरिजासहित स्थित होवें शिवजीने मुसकराकर कहा कि अच्छा हमारा नाम घुस्मेश्वर शिवलिङ्ग होगा और तुम्हारेनाम के साथ हमारा नाम होगा और इस तालाब का नाम शिवालय होगा तुम्हारे बहुत सन्तान होंगी अर्थात् सौ पुत्र होंगे यह कहकर शिवजी लिङ्गरूप होगये ब्राह्मणने अपनी दोनों स्त्रियों सहित उनकी परिक्रमा की और शत्रुता त्याग सबने अच्छेप्रकार शिवजीकी पूजा की जो इस चरित्रको सुनेगा या पढ़ेगा वह संसारी सुख भोगकर शिवपद प्राप्त करेगा उसके सर्वपाप जल जायेंगे कोई रोग न रहेगा हे नारद ! हमने द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग कह सुनाये जिनका वर्णन विस्तार सहित हुआ है यह बारहों ज्योतिर्लिङ्गोंके चरित्र मुक्ति देनेवाले हैं शिवलिङ्गों की बड़ी महिमा है जब शिवभक्त को खेद होता है तब शिवजी प्रकट होकर उसके दुःख दूर करते हैं जो मनुष्य शिवजीकी स्तुति करता है उसको शोक दुःख नहीं होता और वह मुक्ति पाता है ॥

इति श्रीशिवपुराणेऽष्टमखण्डेब्रह्मनारद
संवादेलिङ्गखण्डस्समाप्तः ॥ ८ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ॐगणाधिपतये नमः ॥

शिवपुराण भाषा ॥

नवां खण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह नवां खण्ड प्रयाग के समान है जो मनुष्य इसको प्रयागसे कम समझेगा वह बड़ा पापी होगा और शिवजीके विरुद्ध होकर संसार में लज्जित होकर परलोकमें नरक की अग्नि में डालाजावेगा प्रयाग को त्रिवेणी इस निमित्त कहते हैं कि वहां गङ्गा यमुना और सरस्वती का सङ्गम है और इस खण्ड में नामकी महिमा, भस्मका माहात्म्य और रुद्राक्षकी बड़ाई वर्णन कीगई है सो शिवजी गङ्गाजीके समान भस्म यमुनाजीके सदृश और रुद्राक्ष सरस्वतीके स्थान पर है जिस प्रकार कि काशीपुरी सब नगरियोंसे उत्तम है उसीप्रकार यह खण्ड सबसे उत्तमोत्तम हैं और जिनके ललाट पर भस्म नहीं है और जो रुद्राक्ष नहीं पहिनते और जिनकी जिह्वा से शिव २ नाम नहीं निकलता वह अधर्मी और पापी हैं जो यह तीनों आभूषण पहिने हैं वह श्रीसदाशिवजीके सदृश हैं शिवजीकी महिमा अनन्तहै जिसके सुननेसे अनेक प्रकारके सुख प्राप्त होते हैं और सन्त और भक्त लोग नामको प्राणसे अधिक प्यारा रखते हैं हम विष्णुजी और हर सब सदाशिवजी के नामका जप करते हैं और इन्द्र आदि देवता शिवजीका स्मरणकर सर्वदा आनन्दमें रहते हैं और मुनि सिद्ध आदि नामही का जप करके सर्वपापोंसे रहितहो आनन्दपूर्वक रहते हैं और श्रीरामचन्द्रजी सीतासहित और श्रीकृष्णजी राधा प्यारी सहित शिव २ रटकरसुखी हैंउन्हींमनुष्यों को धन्यवादहै जो शिवजीका नाम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जपा करते हैं उनके समान संसारमें कोई जीव नहीं जिसके मुखसे एक बेर भी शिवजीका नाम निकलता है उसके सर्वकार्य परिपूर्ण होजाते हैं शिव २ कहने से सर्वपाप और दोष नष्ट होते हैं और जिसके देखनेसे सुख मिले उसका मुख तीर्थके सदृश है और शिवजीका नाम पापोंके वनके जलानेको आगके समान है और ब्रह्महत्यादि बड़े २ पाप शिवजीके नाम लेनेसे दूर होजाते हैं शिवजी के नाम की नाव इस संसारी समुद्र के पार करनेको सुगमयुक्ति है शिवजीका नाम अमृतके समान है जिसके रटनेसे शोक दुःख नहीं रहते जो मनुष्य कि मनसा, वाचा, कर्मणासे शिवजीका जपकरे वह पुरुष धन्य है क्योंकि जो मनुष्य प्रीतिसे शिवजीका नाम जिह्वासे निकालता है उसके सब पाप नाश होजाते हैं और किसी देवताको सिवाय शिवजीके इतनी शक्ति नहीं कि पाप नष्टकरे शिवजीका नाम अमृत तुल्य पीनेके योग्य है और दूसरी युक्ति पवित्र करनेके निमित्त नहीं देखीजाती है जिन मनुष्योंको राज्यका गर्व है अथवा जो संसारकी सम्पत्तिसे अहंकारी हैं उनको शिवजी के नामलेनेकी इच्छा नहीं होती वह कभी किसी प्रकार मुक्ति प्राप्त नहीं कर सक्के और हे नारद! पूर्व जन्म के पुण्य विना किसी मनुष्यको शिव नामलेने की प्रीति नहीं उपजती शिवजीका नाम बड़ा उत्तम है उसके जपनेसे श्रीसदाशिवजी अपने भक्तों के अधीन होजाते हैं जिसने बहुत जन्मपर्यन्त कठिनतप किया हो वह निस्सन्देह शिवजीके नामके माहात्म्यको जानता है शिव २ कहनेसे चारों ओरसे सुख और आनन्द प्राप्त होता है जिस प्रकार कि अग्नि वनके वृक्षोंको जलादेती है इसी प्रकार शिवजीका नाम सब दोषोंको जलादेता है जैसे कि पुरियोंमें काशी और वर्णोंमें ब्राह्मण उत्तम हैं वेसेही सब नामों में शिवजीका नाम उत्तमोत्तम और बड़ा है जितनी कि भक्तों में विष्णुजीकी महिमा है उतनाही नामोंमें शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का नाम है यद्यपि शिवजी के अनन्तनाम हैं और सर्वकार्यों की सिद्धि में सब एकसे हैं और पापों का नाश करते हैं पर जो कोई मनुष्य शिवजीके नाम को किसी देवताके नामके सदृश विचारे तो वह बड़ा पापी है क्योंकि शिवजी सब देवताओंसे बड़े हैं यद्यपि कोई मनुष्य किसी प्रकारसे शिवजी का नाम लेवे वह निश्शङ्क मुक्ति प्राप्त करता है यद्यपि इस संसारसमुद्रके पारहोनेके सहस्रों यत्न हैं पर शिवजी के नामके समान कोई भी नहीं है वह ऐसा नाम है जिसको कहकर सुमतिनामक स्त्री जो अतिपापिनी थी नरकसे बचगई और दूसरे जन्म में शिवपुरी उसके रहने को मिली देखो राजा इन्द्रद्युम्न जो बड़ा पापी था उसको एक सिंहने मारडाला जो कि राजा बड़ा पापी था इस निमित्त उसके लेनेको यमराजके गण आये उस समय श्रीसदाशिवजी की आज्ञानुशार शिवगणभी पहुँचे क्योंकि उसकी जिह्वासे शिवनाम निकला था यद्यपि इसने योंही नाम लेलिया था पर तोभी वह सदाशिवकारूप धारकर शिवपुरीमें विराजमान हुआ सिवाय इसके बहुत मनुष्य शिवनाम कहनेसे मुक्त हुये हैं जैसा कि इस बातको वेद और पुराण कहते हैं पर तोभी वेद, पुराण, शेष और शारदा नाम के माहात्म्यको अच्छेप्रकार वर्णन नहीं करसक्के जो प्रथम नमः पदको कहकर शिव कहे तो यह पञ्चाक्षरीमन्त्र होजाता है जो सब मन्त्रोंका राजा है जिस की महिमा सबसे उत्तम है और जिसके सुनने और कथा कहने से सब पाप नष्ट होते हैं यह मन्त्र वेद में लिखा है कि गुप्त रखना चाहिये क्योंकि सब मन्त्रोंका राजा है जिसके अधीन सातकरोड़ मन्त्र हैं इसी पञ्चाक्षरी मन्त्रको जपकर हम विष्णुजी और अन्य देवता और मुनि निर्भय होकर नाना प्रकारके सुख भोगते हैं और पार्वतीजी को इसीमन्त्रके जपकरने से अर्द्धाङ्गिरूप मिला है उसी के जपकर ने से गङ्गा सबतीर्थों से पवित्र हैं उसी के जपने से कोई पाप और दोष

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नहीं रहता और श्रीसदाशिवजी इस मन्त्रके जपनेवालेके ऊपर किसी अवस्थामें भी अप्रसन्न नहीं होते ॥

दूसरा अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संसार के उपजानेवाले ब्रह्मा ! मेरी यह इच्छा है कि आप फिर अपने मुखकमल से शिवनामका माहात्म्य विस्तारसे वर्णनकरें और मुझसे सुमति नामक स्त्री और इन्द्रद्युम्न राजाकी कथा विस्तारसे वर्णन करिये ब्रह्माजीने उत्तर दिया कि सुमति एक ब्राह्मणी कि जिसका नाम कैकेयी था उसके पिता ने उसको एक अच्छे ब्राह्मण के साथ ब्याह दिया वहां उसने अपने पतिके साथ नानाप्रकार के विहार किये थोड़े समय के पीछे उसका पति मरगया उसने संसारी जीवों की रीतिके सदृश थोड़े दिन तो शोकमाना परन्तु जब कामदेव ने उसको सताया तो वह इसके वेगको न सहकर व्यभिचारिणी होगई यद्यपि उसने गुप्त करके यह अशुभकर्म किया पर वह प्रसिद्ध होगया उसके भाई बान्धव सुनकर आये और सुमति को नगर से निकाल दिया अचानक वनमें उसे एक शूद्र मिला और उसे अपने घर लेआया और अपनी स्त्रीके समान उसे रक्खा सुमति ने मद्यपी और मांसाहारी होकर अपने पुराने धर्मको विस्मरण करदिया एकदिन शूद्र घरसे किसी ओर चलागया तो सुमति स्वाधीन हो नानाप्रकारके दुष्कर्म करनेलगी एक दिन सुमति ने मद्यपान करके चाहा कि मांस खाऊं इसलिये वह गोशाला में गई और अँधेरी रात देखकर एक बछड़े को तलवार से मारडाला पर जब घर आई तो चिन्तित होकर शिव २ कहनेलगी पर तोभी उसके मांसको खागई और यह बात प्रसिद्ध की कि सिंहने बछड़ा मारडाला है जब उस स्त्रीकी मृत्युका समय आया और मृत्युके भवँर में फँसी तो यमराजके गण उसे बांधकर महादण्ड देकर यमराजके निकट लाये यमराजने उसे नरकमें न भेज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर एक चाण्डाल के घर उत्पन्न किया जहां वह अन्धी होकर बिन माता पिताके कुष्ठके रोगसे दुःखी रही और इसीसे उसका बिवाह भी न हुआ और भूखों मरने से चाण्डालों की जूठन खाकर पेट भरती थी यह दशा उसकी तरुणावस्था में हुई पर वृद्ध होनेपर भी उसने सुख न पाया तब वह बहुत रोई और इतना रुदन किया कि मानों आंसू की एक नदी बह निकली उस समय श्रीसदाशिवजीने यह चरित्र किया कि वह चाण्डाली गोकर्ण क्षेत्र में जहां शिवरात्रिका मेला था मांगती खाती हुई मेले के संग गई वह मेला माघकृष्ण चतुर्दशी को था उस दिन सबलोग व्रत रखते थे यद्यपि उस चाण्डालीने उस दिन बहुत कुछ मांगा पर उसको कुछभी भिक्षा न मिली एक मनुष्यने केवल बेलपत्र थोड़ेसे उसे देदिये पर जब उसने देखा कि यह पत्र कोई खाने पीनेकी चीज़ नहीं है तब उसने उसको धरतीपर फेंकदिया अचानक वह बेलपत्र शिवलिङ्गके ऊपर चढ़गये सो उस चाण्डालीके सर्व पाप और दोष जलगये क्योंकि उसको उस दिन कुछ न मिला था इस लिये उसे निर्जल व्रत होगया और दुःखसे उसे रात्रिभर नींदभी न आई इससे उसने अचानकमें जागरण किया और प्रातःकालभी कोई बस्तु उसे न मिली इस निमित्त वह तड़पकर अपने घरगई मार्ग में वह मारे भूखके मरगई इससे शिवजी अतिप्रसन्नहुये और अपने गणों को भेजकर यह आज्ञा दी कि इसे विमानपर चढ़ाकर शिवलोक में लेआवो शिवके गणोंने ऐसाही किया शिवजी और शिवरानीजी ने दयालु होकर उसे अच्छा स्थान बैठनेको दिया फिर शिवरानीने उसे अपनी दासी करके रक्खा हे नारद! ऐसा पद सुमतिको दोबार शिव २ कहनेसे मिला इसी प्रकार अनन्त मनुष्योंने केवल शिवनाम कहकर मुक्ति पाई है॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीसरा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! गत कलियुग में एक इन्द्रसेननामक सर्वसंसार का राजा बड़ा वीर उपजा पर वह बुद्धिहीन मित्रोंका शत्रु और बुरे स्वभावका था ब्राह्मणोंके विरुद्ध चलता और जीव हिंसा करके सर्वदा पाप करता और केवल अपने शरीरकी रक्षाकर आप सुखी रहकर अन्य जीवोंको मारडालता था और पर स्त्री और पराये धनको अपना विचारकर ब्राह्मणोंको बध करता था और मद्यपान करके अपने गुरु की निन्दा और उससे ग्लानि करता बरन वह बड़े २ पाप करकेभी संतोष न करके ब्राह्मणों की स्त्रियों के साथ सम्भोग करता था और वेदके विपरीत रहकर देवताओं का पूजन, तप, जप आदि कुछ नहीं करता प्रजाका भी पालन न करता था नित्य कुसंगतिमें बैठकर शिकार खेला करता और किसी कार्य में चित्त न लगाता राजा को बहुत दिन ऐसे निन्द्यकर्मों में बीतगये एकदिन राजा अपने मन्त्री सहित वनमें शिकार खेलनेको गया और चारोंओर से उसके अधिकारियों ने मुनीश्वरों को वनसे बाहर निकालना चाहा इस समयमें शिवजी की मायासे एक बड़े बली सिंहने राजा को एकही झपेट में मारडाला और किसीने इस महापापी राजा की रक्षा न की यमदूत राजाके लेनेको आये और शिवगणभी शिवजी की आज्ञानुसार वहां आये और राजा को शिवपुरी में लाये वहां राजा श्रीसदाशिवका रूप होगया शिवजीने उसको अपना गण विचारकर आनन्द पूर्वक उसे बुलाया और अपने आसन पर उसको आधा स्थान दिया और कहा कि हे राजा इन्द्रसेन ! तुम हमारे बड़े भक्त हो उचित है कि जो तुम्हारी अभिलाषा हो वह हमसे मांगो हम वरदान देंगे यह सुनकर राजा के प्रेमसे आंसू गिरे और सुखके कारण कुछ न बोलसका अन्तमें शिवजीने आपही वरदान देकर उसको अपना गण बनाया उसका नाम चण्ड हुआ और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुण्डगणसे उसकी बहुत मित्रता हुई इस निमित्त शिवभक्त को उचित है कि जब शिवजीका जप अथवा किसी प्रकार की पूजा करे तो आग्नेय दिशामें चण्ड मुण्डकी भी पूजा करदियाकरे क्योंकि इनकी पूजासे शिवजी बहुत प्रसन्न होकर कष्टोंको नष्टकर मनोरथ पूर्ण कर देते हैं और यह पद राजा इन्द्रसेनको केवल एकबार शिवजीके नाम लेनेसे मिला यद्यपि उसने जानबूझकर नहीं कहा पर वह केवल किसी वार्त्तामें उसकी जिह्वा से निकलगया अर्थात् उसके मुखसे यह पद (आहरपरहर) निकला था उसी समय उसको सिंह ने मारा जब यमराजके दूतोंके द्वारा यह हाल मालूम हुआ तो उसने आश्चर्यवान् होकर चित्रगुप्त से इसका मुख्य वृत्तान्त पूछा जब चित्रगुप्तने उनसे (आहरपरहर) पदके मुखसे निकलने का हाल कहा तब यमराज और उसकी सब सभा आश्चर्यवान् होकर प्रसन्न हुई और शिवजीकी महिमा को बारम्बार प्रणाम किया जो कोई इस पवित्र कथाको सुनेगा अथवा पढ़ेगा वह दोनोंलोक में सुख पावेगा ॥

चौथा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! करोड़ों जन्मोंके पाप शिवनाम कहने से नष्ट होजाते हैं और धन और सर्वसुखकी सामग्री मिलती है और कोई ऐसा दोष नहीं जो शिवनाम कहनेसे नष्ट न हो इस माहात्म्य पर हम एक इतिहास कहते हैं कि उज्जयिनीनगरीमें एक ब्राह्मण बड़ापापी रहता था उसका नाम असमचित्त था जब वह उत्पन्न हुआ तो उसका पिता मरगया और जब वह पांच वर्ष का हुआ तो उसकी माता भी मर गई इससे वह बड़ा दुःखी हुआ और निर्धन होकर बहुत रोया और वह बिना माता पिता के होकर अपने धर्म के विपरीत सन्ध्या आदि जो ब्राह्मणों के उत्तम धर्महैं उनसे भी रहित हुआ और उसने कोई विद्या भी न सीखी जब तरुण हुआ तो चोरी सीखकर परदेश गया और चोर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बनकर नाना प्रकारके पाप किये और ब्राह्मणोंकी स्त्रियोंको बधकिया और परदेशियों और यात्रियों को मार्ग में मारा और उनको दुःखी कर लूटतारहा और ब्राह्मणों का स्वरूप त्यागकर दैत्योंका रूप धारण किया उसका शरीर टेढ़ा होगया और उसका वर्ण काला भयंकर और छोटा होगया उसने बहुतसी हत्यायें कीं और जीवोंको मारडाला एक समय यह असमचित्त चोरोंके साथ मायाक्षेत्र में गया और चाहा कि चोरी करें इससे वह अपने साथियोंके साथ इधर उधर फिरनेलगा सो एक स्थानपर ब्राह्मण बैठे थे असमचित्त आधीरातको चोरी करनेगया वहां ब्राह्मणलोग शिवजी की पूजा करते और कथा सुनते थे और बड़ी स्तुति करके श्रीसदाशिवजी के मुख्य लक्षण धारणकिये जप करते थे असमचित्तने अपने समूहसे कहा कि तुम सबलोग अच्छेप्रकार जो यह सब वार्त्तालाप करते हैं सुनो क्योंकि यह सब धीरे २ बातें कर रहे हैं यह धन आदिके विषयकी बातें मालूम होती हैं यह सब धनवान् मालूम होते हैं हमको उचित है कि इनका धन सब लूटकर इनको मारडालें और अब अपना वेष बदलकर शिवभक्त बनकर इनके निकट चलें वे हमें न जानेगें कि चोर हैं और भक्त जानकर कुछ न कहेंगे यह कह असमचित्तने अपने साथियों सहित यही किया और वस्त्रादि बदलकर शिवपूजकों के निकट गये और प्रणाम किया और शिवजीका माहात्म्य अच्छेप्रकार श्रवणकिया निदान उनकी संगति और शिवजीके नामके प्रभावसे असमचित्तके पाप नष्ट हुये और हाथ जोड़कर ब्राह्मणोंसे कहनेलगा कि हे मुनीश्वरो ! मैं बड़ा पापीहूं मुझको अपना सेवक जानकर पार लगादो मैं केवल कहनेही का ब्राह्मण हूं पर मैं अपना धर्म नहीं जानता मेरा जन्म मिथ्या है मैंने करोड़ों पाप किये हैं और ब्राह्मणोंको हजारों दण्ड दिये हैं इसलिये मेरी यह प्रार्थना है कि ऐसी युक्ति बताइये जिससे मेरे सब दोष नष्ट होजावें यह कहकर अति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रेमसे ब्राह्मणोंके चरणों पर गिरपड़ा और रुदन करने लगा ब्राह्मणोंने कहा धन्य है धन्य है जो तुम ऐसे धर्मके स्थानपर आये अब तुम अपने पहिलेके पापोंका बिचार न करो तुमको उचित है कि गङ्गाजीके तटपर जो महागिरि है और जहां पवित्र शिवजीका मन्दिर है वहां जाकर शिवजीकी सेवा करो और शिवजीके नाम महादेव आदि का जपकरो तुम उस नाम के जपकरने से कृतार्थ होजावोगे इस निमित्त असमचित्त उसी स्थानपर जाकर ब्राह्मणों की आज्ञानुसार रात्रि दिन महादेव का नाम रटतारहा यहां तक कि यह नाम रात्रि दिन जपते २ उसे सातदिन और सात रातें व्यतीत हुई सो श्रीसदाशिवजीने प्रसन्न होकर दर्शन दिये और कहा कि धन्य है तुमको तुम्हारा कल्याण होवे तुम उठकर हमसे वरदान मांगो तुम अपने पहिलेके पापों से निर्भय रहो यह सुनकर असमचित्तने दण्डवत् करके स्तुति की श्रीसदाशिवजीने असमचित्तकी अभिलाषाके अनुसार उसको सर्वविद्या देदी सो असमचित्त अतिविद्वान् हो और शिवजीके तत्व और स्वरूपको जानकर शिवजीकी स्तुति करने लगा जिसके सुनने से श्रीसदाशिवजी ने अति प्रसन्न होकर कृपादृष्टिसे देखदिया और कहा कि हम तुम से प्रसन्न हैं तुम हमारे गण होकर विमानपर चढ़कर हमारे कैलासमें विराजमान होजाओ तुम्हारा नाम नील होगा और हम नीलेश्वर होकर इस स्थानपर विराजमान होंगे और इस पर्वत का नाम भी नील ही होगा जिसके स्मरण करने से सुख मिलेगा और अंशरूप होकर हम सर्वदा इस स्थानपर तुम्हारे साथ रहेंगे और गङ्गाजीके तटपर जो हमाराकुण्ड है उसमें नहानेसे मनुष्य हमारा रूप धारण करलेगा तथा च नील १ नीलेश्वर २ यह दोनों रूप बहुत सुख देनेवाले हैं और करोड़ों दुःखों के दूर करने वाले हैं यह कहकर श्रीसदाशिवजीने अपना डमरू बजाया जिसके शब्द से ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिद्ध आदि उस स्थान पर आकर शिवजी की स्तुति करने लगे और नीलकीभी महिमा बखानी और सब देवता भी अंशरूप होकर वहां स्थित रहे इस लिये वह स्थान अति पवित्र है जिस के देखने से पापी पापोंसे रहित हो पवित्र होजाता है और नील दिव्यरूप होकर कैलास पर्वत पर गये इसी प्रकार बहुत से मनुष्यों ने शिवजी का नाम कहकर बड़ा पद पाया है॥

पांचवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! पञ्चाक्षरीमन्त्र बहुत अच्छा है और उसकी महिमा अनन्त है जिसके जप करने से सब सिद्धि उत्पन्न हो कर हजारों पाप नष्ट होते हैं इस मन्त्रके अक्षरों की महिमा बखानने की किसी को शक्ति नहीं इसीके द्वारा वेदोंने सिद्धि पाई है और आप सत्‌चित् आनन्दस्वरूप सदाशिव इस मन्त्रमें सर्वदा स्थित रहते हैं यह मन्त्र सब मन्त्रों का राजा है जिसके जपने से मनुष्य आवागमनसे रहित होकर ब्रह्मपद प्राप्त करता है जो मनुष्य संसारी सुखोंमें लिप्त हो कर इसलोकमें फँस जाते हैं उन्हीं के निमित्त श्रीसदाशिवजी ने इस मन्त्र को प्रकट किया यद्यपि तप जप यज्ञ और तीर्थ आदि संसारी मनुष्योंके लिये सुगमकर्म हैं पर जो इस मन्त्रको अपने हृदयमें धारण किये हैं उनको इनकर्मोंसे क्या प्रयोजन है जबतक मनुष्य इस मन्त्र को नहीं जपता तबतक वह सत्यमार्गसे भटकता फिरताहै यह मन्त्र सब मन्त्रों का महाराजाधिराज और सर्व वेदान्त का शिरताज है कैवल्य मुक्तिके निमित्त यह मन्त्र दीपकके सदृशहै इसके जप करनेसे शिवजी सर्वदा निकटही रहते हैं और यही मन्त्र पापों के सागर के लिये बड़वानल और दोषोंके समूहके लिये अग्निके समान है और यहमन्त्र सब से उत्तमहै क्योंकि इस मन्त्रके स्वामी सबके मालिक हैं सब मनुष्य इसका जप करसक्तेहैं किसीको मनाही नहीं और जो दूसरे मन्त्रों में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवगुण हैं वह कभी इस मन्त्र में नहीं होसक्ते और जो संस्कार दीक्षा आदिक हैं वह इस मन्त्रको किसी अवस्था में अयोग्य नहीं करसक्ते जो कोई मनुष्य गुरुके उपदेश बिना इस मन्त्रको जपे तोभी यह मन्त्र फलदायक होता है और प्रकट हो कि शिवजीमें दो अक्षर हैं वह दोनों सर्वपापों का नाश करदेते हैं और जब नमः अथवा नमस्कार के साथ यह कहेजावें तो मोक्ष में कोई शङ्का नहीं जो कोई सद्गुरुसे इस मन्त्र को लेकर पवित्रस्थान अथवा नगरी में प्रेमसे इसका जपकरे तो जापक के सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हों इसमें कुछ भी आश्चर्य न जानो इससे उचित है कि यत्न और युक्तिसे इस मन्त्रको सद्गुरु से लेवे और पुण्य क्षेत्र में शुभघड़ीपर अति पवित्र हो इसका जपकरे सद्गुरु यहां पर ब्राह्मणके आशय में लिखागया और अन्य सब वर्ण शिष्य कहलाते हैं वेद का यही वाक्य है पर गृहस्थ को उचितहै कि अपनेसे नीचको अपना गुरु न करे इससे उसे बड़ा पाप होता है इसका मुख्य तात्पर्य यह है कि जो मनुष्य इस मन्त्रको गुरुसे लेकर जपकरे तो तुरन्तही उसके सर्वपाप नष्ट हों इसपर हम एक इतिहास कहते हैं जो अति पवित्र और पापमोचन है और इससे दुःखभी दूर होजाते हैं और नित्य अधिक २ आनन्द मिलता है और पञ्चाक्षरी मन्त्र की महिमा समझी जाती है और जापक को कोई मनुष्य दुःख नहीं देसक्ता और उसके ऊपर शिवजी दयालु होकर प्रसन्नरहते हैं कि यदुवंशियों के कुलमें एक राजा दाशार्हनामक बड़ा विद्वान् और सर्वशास्त्रों में दक्ष उपजा और वह बड़ावीर, संतोषी, युद्धमें चतुर, स्वभावका दृढ़, धर्ममें तत्पर, शत्रुओंको जीतनेवाला, तरुण, अतिसुन्दर और शीलवान् था उसने काशी के राजा की लड़की के साथ अपना बिवाह किया उसकानाम कलावती था जो महासुन्दर और पतिव्रता थी सो राजाने अपना अन्तःपुर नाना प्रकार से अलंकृत कर अपनी स्त्री से मैथुन करना चाहा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर वह कलावती उसके निकट न गई तब उसने दुःखी होकर विवश हो अभिलाषा की कि बलात्कार पूर्वक उससे भोगकरें इससे वह उठा कलावती ने ऐसा देखकर हाथ जोड़ बिनतीकर राजा से कहा कि महाराज मुझे न छूना और न मेरे हाथ को पकड़ना क्योंकि आप धर्म और अधर्म को जानते हैं और जोकि धर्म वेद कहते हैं उनको सब मानतेहैं आप जल्दी न करें क्योंकि जो जल्दी काम कियाजाता है उसका परिणाम बुरा होताहै मैं व्रत धारण किये हुई हूं जो आप मुझको लिपट जायँगे तो अच्छा न होगा सिवाय इसके दोनों ओर की प्रीति बिना सुख प्राप्त नहीं होता पर दुःखही मिलता है यदि कोई मनुष्य बिना स्त्री की इच्छा उससे भोग करता है तो कुछ लाभ नहीं पाता वेदका वाक्य है कि नीचे लिखी हुई स्त्रियों से भोग करना उचित नहीं पहिली वह स्त्री जो पुरुष से प्रीति न करे दूसरी वह जो रोगिणी हो तीसरी जो गर्भवती हो चौथी जो किसी व्रत या नियम वा संयम में हो पांचवीं वह जो कामदेवसे रहित हो छठी वह जो मासिकधर्म में हो यद्यपि कलावती ने राजा को बहुतसा उपदेश किया पर राजा को कुछ भी समझ में न आया सन्तोष से रहित हो काम में भर कर रानी का हाथ पकड़कर अपने हृदय से उसे लगालिया और जो कुछ मनमें आया सो किया हे नारदजी ! संसारमें ऐसा कौन जीव है जो कामदेव से रहित हो क्योंकि जब काम उदय होता है तब मनुष्य निर्बुद्धि होजाता है सो राजा का हृदय जलने लगा और घबराकर समझा कि मैं अग्नि से भस्म हुआ जाता हूं ऐसी अपनी अवस्था देखकर राजा ने रानीको छोड़दिया और दूर खड़ा हुआ यद्यपि उसको भोग करने की अधिक इच्छा थी पर रानी ने कहा कि मुझको आश्चर्य होता है कि तुम्हारा ऐसा कोमल शरीर है पर हमारे लिये यह अग्नि समान होगया यह सुनकर रानी ने हँसते

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुये हाथ जोड़कर कहा कि इसबातमें कुछ सन्देह और विचार न करो इसका यह कारण है एकबेर दुर्वासा मुनि हमारे पिताके यहां पधारे और बाल अवस्था में प्रसन्न होकर मुझे उपदेश दिया और शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र देकर शुभबड़ी में यथारीति मन्त्रशास्त्र के यन्त्र भी दिये इससे मेरा शरीर पवित्र और पापों से रहित है इसलिये जो उस मन्त्र से रहित और पापी हैं वह हमारे शरीरको नहीं छूसक्के और तुमने अपने राज्य के मदमें व्यभिचारिणियों और मद्यपान करनेवाली वेश्याओंसे भोग किया है और तुम नित्यस्नान भी नहीं करते और न किसीदिन शिवबाना पहनकर उनके पञ्चाक्षरी मन्त्र का जप करते हो और न उनका कभी पूजन किया इन कारणोंसे तुम मुझे नहीं छूसक्के राजाने आश्चर्यकर रानीसे भोग करनेकी तृष्णासे युक्तहो कहा कि तुम मुझे वही मन्त्र बता दो जिसके श्रवण करने से मेरे सबदोष जातेरहैं और तुमसे मुझे सुख प्राप्त हो क्योंकि तुमसे भेंट किये विना मुझे प्रसन्नता न होगी रानी से कहा कि मुझे उचित नहीं है कि मैं तुमको मन्त्र बतादूं और आप अधर्मी होकर अपने शरीर पर पाप लूं पर तुमको चाहिये कि गर्गमुनि जो आपके पुरोहित हैं उनसे मन्त्र लेनेको उनकी शरणमें जावो यह सुनकर राजा रानीको साथ ले गर्ग-मुनिकी सेवाके निमित्त गये और उनको दण्डवत् कर कहा कि हे महाराज ! मुझे कृतार्थ कीजिये अर्थात् शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र हमें दीजिये गर्गमुनि दोनोंको साथ लेकर यमुनाजी के तटपर गये और सब उचित कार्योंके पूर्ण करानेके पीछे राजा को बिठला कर शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र सुनादिया उस मन्त्र के सुनतेही राजा के जब पाप मुखसे निकलनेलगे मानो जलेहुये कङ्कड़ निकलतेथे राजा के सबपाप जलकर राख होगये जिसके देखने से राजा और रानी आश्चर्यवान् हुये उन्होंने गुरुजीसे बिनतीकी कि आप इस चरित्रका कारण बताइये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि क्यों हमारे मुखसे अग्नि निकली यह सुनकर पुरोहितजी ने उत्तरदिया कि हजारवर्ष तुमको बड़े २ पाप करते व्यतीतहुये हैं और जब पाप पुण्य बराबर हुये तो तुम्हें मनुष्यका जन्म फिर मिला जब तुमने शिवजी का मन्त्र धारणकिया तब तुम्हारे पापी हृदय से सब छोटे और बड़े पाप जलतेहुये पत्थरों के सदृश तुम्हारे मुखसे निकले अब तुम पापरहित हो फिर गर्गमुनिने मन्त्रकी महिमा बखानकर कहा कि करोड़ों जन्मोंकी ब्रह्महत्या आदि पाप तुरन्तही इस मन्त्र के प्रभाव से नाश होजाते हैं यह मन्त्र सब मन्त्रों का राजा है और यह मन्त्र शिवजीको अतिप्रिय सबमनोरथों को सिद्ध करता और दोनों लोक में पापों को हरताहै श्रीसदाशिवजी इस मन्त्रके वशमें हैं विष्णु जी और ब्रह्माजी इस मन्त्रकी सेवा करते हैं इस पञ्चाक्षरी मन्त्रकी बड़ी महिमा है इसको मूर्खलोग नहीं जानसक्के बरन इसकी महिमा ब्रह्मा और विष्णुभी नहीं समझते केवल अपनी बुद्धिसे रात्रि दिन वर्णन करते हैं देवताओं और मुनीश्वरों को इतनी शक्ति नहीं कि इसको जानसकें केवल सुबुद्धिसे उसका वर्णन करके अपने मनोरथ पूर्ण पाते हैं जितने वेद और तन्त्र शास्त्रके मन्त्र हैं और अन्य जो श्रीसदाशिवजीके सातकरोड़ मन्त्र हैं उन सब मन्त्रों का यह पञ्चाक्षरी मन्त्र राजा है और शिवजी अक्षर रूप हैं और यह मन्त्र मानो उनका मुख्य वचन है इसलिये इसके जप करने से शिवजी अवश्य मिलते हैं यह निस्संदेह है वेद इस मन्त्र को स्थूल प्रणव तथा दीर्घ ॐकार कहते हैं इसी से भक्तजन दोनों में भिन्नता नहीं समझते क्योंकि ॐकार और पञ्चाक्षरी में पांच अक्षर हैं केवल स्वर और व्यञ्जन का भेद है और जब कि कोई मनुष्य काशीजी में मरता है तो श्रीसदाशिवजी यही पञ्चाक्षरी मन्त्र उस मृतक के कान में फूंक देते हैं जिससे वह मुक्त होजाताहै और कलियुग में भी इसी मन्त्र का जप करने वाला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीसदाशिवजीका रूप होजाता है इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! पञ्चाक्षरी मन्त्र की महिमा बखानकर गर्गमुनि राजा और रानी सहित प्रेमसागर में डूबगये जब चैतन्य हुये तो फिर कहा कि हे राजन् ! तुम पापोंसे रहित हुये तुमको अब उचित है कि अपनी रानी के साथ प्रसंग करो और अपनी राजधानी में रहो राजा गर्गमुनि की आज्ञा से अपने घर आया और जब रानीसे मैथुन किया तो रानी का शरीर उसको चन्दन कासा ठंढा मालूमहुआ जो कोई इस कथा को सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसके सर्व मनोरथ पूर्ण होंगे और उसका बड़ा कल्याण होगा ॥

छठा अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! अब हम भस्म का माहात्म्य और महिमा वर्णन करते हैं भस्म दो प्रकारकी है महाभस्म १ स्वल्पभस्म २ सो महाभस्म शिवजी का मुख्यरूप है और स्वल्पभस्म की अनेक शाखा हैं श्रौत १ स्मार्त २ लौकिक ३ जो वेद की रीति से धारण की जाती है उसे श्रौत कहते हैं और स्मृति अथवा पुराण की रीतिसे जो भस्म लगाई जाती है उसे स्मार्त कहते हैं और जो संसारी अग्नि से उत्पन्न हुई है उसे लौकिक कहते हैं पहिले और दूसरे प्रकारकी भस्म केवल ब्राह्मण धारण करें और तीसरी को सबवर्ण तनुपर अलंकृत करें ब्राह्मण वेदके मन्त्रसे भस्म लगावें पर अन्य मनुष्य केवल नामसे भस्म धारणकरें ब्राह्मणों को यज्ञकी भस्म अवश्य लगानी चाहिये और औरों को जली हुई सामग्री की जिसमें गोमूत्र पड़ा हो भस्म बनाकर धारण करना उचित है वह सब पानी मिलाकर भस्म लगावें और भस्म त्रिपुण्ड्र के अनुसार धारण करें हम विष्णुजी और इन्द्र सब देवता सर्वदा भस्म धारण करते हैं और पार्वती लक्ष्मी जी और उपदेवताआदिभी भस्म लगाते हैं और योगी सिद्ध और नागादि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भी भस्म से खाली नहीं रहते जो मनुष्य भस्म नहीं धारण करते वह मुक्तिको नहीं प्राप्त होते वेद का वाक्य है कि विना भस्म धारण किये सब आचार और पूजन निष्फल है चाहे सौकरोड़ कल्प बीतजायँ पर जो मनुष्य विना भस्म और त्रिपुण्ड्र के रहते हैं वह नित्य पापही किया करते हैं और दोनों लोक में दुःख पाते हैं भस्म पापियों को प्रिय नहीं होती और वे नरकगामी होते हैं जो मनुष्य भस्म को अतिप्रेम और परिश्रम से धारण करते हैं उन पर कुछभी दुःख नहीं पड़ता उनके पाप जलकर भस्म होजाते हैं यह अयोग्य है कि विना भस्म लगाये वेद के मन्त्र का जप करे क्योंकि न शिवजी उस पर कृपालु होते हैं न कोई कार्य बनता है भस्म का माहात्म्य अनन्त और अनादि है उसको कोई वर्णन नहीं करसक्ता सब अपनी २ बुद्धि से बखान करते हैं सबप्रकार के मनुष्य भस्म धारण करसक्ते हैं कुछ कुल और वर्ण का विचार नहीं और उत्तम, अधम, मूर्ख, नीच, बुद्धिमान्, निर्बुद्धि जो भस्म धारण किये हैं वह तीर्थों के समान हैं जहां मनुष्य भस्म धारण करने वाले रहते हों वहां यज्ञ और अन्य शुभकर्म बहुत होते हैं ऐसे पुरुष जप तप और व्रतों का शुभफल प्राप्त करते हैं इन लोगों की सेवा करनी चाहिये यद्यपि कोई मनुष्य बड़ापापी भी हो और वर्ण आश्रम और आचार से रहित हो जो वह भी भस्मलगावे तो अतिशुभ और पवित्र है वह मानो सर्वविद्या निधान है उसने सब सुकर्म करलिये जो मनुष्य ऐसे भस्मधारी की निन्दा करता अथवा उसको धमकाता है अथवा उसको मारता है वह अपने जन्म का नाश करता है उसको चाण्डाल जानकर उससे ग्लानि करनी चाहिये क्योंकि शिवजीकी आज्ञा है कि सब भस्म धारण करें और जितनी भस्मकी कणिका किसी के शरीरमें होंगी वह शिवलिङ्गहैं और पुरुष, स्त्री, बालक, तरुण और वृद्ध सब भस्म धारण करसक्ते हैं किसीको मनाही नहीं और कुछ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अधिक पवित्रताकी भी आवश्यकता नहीं और कुंकुमआदिके तिलकके ऊपर भस्म लगानी चाहिये और जो नित्य शिवरानी और गिरिजापति का ध्यान करके प्रीति से भस्म और त्रिपुण्ड्र लगाते हैं उनके जीवहत्या ऐसे बड़े २ पाप नष्ट होजाते हैं जो मनुष्य त्रिपुण्ड्र अथवा भस्म की निन्दा करता है वह शिवजीही का वैरी है चाहिये कि जब तक भस्मको धारण न करले तबतक पानी न पीवे और न भोजनकरे क्योंकि भस्मको त्याग करनेवाला नरकमें पड़ता है जहां उसे रुधिर आदि पीनेका कष्ट मिलता है उस ललाट को धिक्कार है जिसपर भस्म न लगीहो उस गांवको भी धिक्कार है जहां कोई शिवमन्दिर न हो उस जन्मको धिक्कार है जिसको पाकर शिवपूजन न करे उस विद्यापर धिक्कार है जिससे किसीको लाभ न मिले विना भस्मके तन्त्रशास्त्र और पञ्चाक्षरी मन्त्र के उपदेश का कोई अधिकारी नहीं केवल वेदके अधिकारियों को शक्ति है कि चाहे जिस प्रकार भस्म लगावें पर और मनुष्य इसके अधिकारी नहीं सब मनुष्य भस्म और त्रिपुण्ड्र के उपासक हैं जो मनुष्य वेद की रीतियों की शिक्षा दे अथवा यज्ञ कराये उसे उचित है कि नित्य भस्म और त्रिपुण्ड्र धारण करे विष्णु आदि देवताओं के पूजनेवालों को उचित है कि भस्म और त्रिपुण्ड्र लगावें जो मनुष्य वेदकी रीति पर चलनेवाला दशों प्रकारके त्रिपुण्ड्रको लगावे वह वेदके विरुद्ध है इसको वेद और पुराण स्पष्ट वर्णन करसक्के हैं कि जो भस्म धारण किये हैं वह सबसे उत्तम हैं कदाचित् वह मनुष्य चाण्डाल भी हो पर शुद्ध होजाता है जो मनुष्य नित्य भस्म लगाता है वह अतिपवित्र है और गङ्गाजी आदि तीर्थ सब उसके शरीर में रात्रि दिन स्थित रहते हैं और सर्वतीर्थ और क्षेत्रभी उसमें रहते हैं और पञ्चाक्षरी आदि सब उत्तमोत्तम मन्त्र उसके शरीर में वर्त्तमान रहते हैं उसके दोनों ओरके असंख्य कुल तरजाते हैं और वह भी संसारी सुखों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को पाकर मुक्ति प्राप्त करता है और क्रमसे पहिले सब लोकोंमें घूमकर हमारे लोकमें जाता है और हमारे सहस्र वर्षपर्यन्त हमारे लोक में रहकर अतिसुन्दर स्त्रियों के साथ विहार करके फिर वह विष्णुलोकमें जाता है और फिर विष्णुजी के सहस्र वर्षपर्यन्त वहां रहकर शिवलोक में विराजमान होताहै जहां जरा मृत्यु और किसीप्रकार का खेद नहीं है वह जबतक चाहता है तबतक वहां रहता है और अन्य गणों के समान उसे शिवगणका पद मिलताहै और श्रीसदाशिवजीके समान होजाता है यह हम सत्य २ वर्णन करते हैं और वेदोंको साक्षी देतेहैं और जो कुछ उपनिषद् कहते हैं उनका सारभी यही है कि जो हमने कहा और सब देवता और सृष्टिभर के समस्त जीवधारी और मुनि सिद्धआदि यही वर्णन करते हैं और श्राद्ध, हवन, जप, तप, यज्ञ और देवताओंकी पूजनमें भी भस्म या त्रिपुण्ड्र धारण करना अवश्यहै और जो मनुष्य भस्म की निन्दा करते हैं वह करोड़ों पापोंमें फँसकर बहुत समय पर्यन्त नरकगामी रहते हैं यद्यपि स्नान पवित्र है पर सब स्नानोंसे भस्मस्नान अति पवित्र कहागया है यह मनुष्य सब तीर्थ, यज्ञ, जप, तप, व्रत आदिके फलको केवल भस्म धारण करने से पाता है और गङ्गा आदि जो देवताओंकी नदी हैं वह भस्मसे उत्तम नहीं भस्म तीनों लोकोंको पवित्र करनेवाली है परम शिवजी भस्म के स्वरूप हैं जो मनुष्य विना भस्म धारण किये कोई अच्छा काम करताहै वह मूर्ख और निर्बुद्धि है क्योंकि उसको वैसा फल नहीं मिलता और इसके आगे जप, तप, यज्ञ, व्रत, तीर्थ और ध्यान सब निष्फल हैं जिसने भस्म न धारण की वह व्यर्थही इस संसार में उत्पन्न हुआ जो विधिसे भस्म और त्रिपुण्ड्र धारण करे तो अधिक फल होता है और स्त्री जो मासिकधर्म में हो और वह पुरुष जिसने गुरु के मुखसे मन्त्र न लिया हो और वनचारी पुरुष मध्याह्नतक पानी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मिलाकर भस्म लगावें पर दोपहरके पीछे विना जलके भस्म लगानी चाहिये और संन्यासीको सर्वदा विना जलके भस्म धारण करनी उचित है और वह तारस्वरूप शिवजीका ध्यानकरे वह तारस्वरूप दो प्रकार का है एक सूक्ष्म, दूसरा स्थूल जिसका तात्पर्य एक अक्षर और पांच अक्षरसे है, भस्म जो तीनप्रकार की है उसको किसीने तीन प्रकार परभी वर्णन किया अर्थात् वेद १, शिवानल २, भव ३ उसमें अघोरमन्त्र मुख्य है उचित है कि अघोरमन्त्र से लकड़ी को शुद्ध करके जलावे और बेल, पलाश, शमी, बड़ और पीपल की लकड़ी भस्म के निमित्त उत्तम है और जो पवित्र सामग्रीसे बनाई गई अर्थात् दारु, लोहा, मिट्टी, कांसा, चांदी आदि के बर्तनोंसे बनाई गईहो और वह अन्न जो होम में बर्ताजाता है वहभी पवित्रहै, अब हम भस्म धारण करने की विधि बताते हैं त्रिपुण्ड्र शब्दसे तीन रेखा मानीजाती हैं जिनमें एक देवता विराजमान हैं और भृकुटीसे दोनों भवोंके अन्ततक त्रिपुण्ड्र लगाना चाहिये इससे अधिक नहीं पहिली रेखा मध्यमासे खींचे तीसरी अनामिकासे बीचमें अंगुष्ठ से भस्म लगाना उचित है कि सत्ताईस स्थानों पर रेखा लगावे जिनमें एक २ देवता विराजमान रहते हैं और प्रणवाक्षर १, शुचि २, आत्म ३, लोक ४, श्रुतिगण ५, शुक्ति ६, सवन ७, दिवौक ८ यह तीन प्रकार के सब देवता हैं जिनको हर एक रेखा के निमित्त हम भिन्न २ वर्णन करते हैं उचित है कि हरएक रेखा जिससे वह सम्बन्धित हैं दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे उससे मुक्ति मिलती है अब हम सत्ताईस रेखाओंका विस्तार सहित वर्णन करते हैं और उनके देवता बताते हैं, उनमें ३२, १६, ८ और ५ भेद हैं और वे सब स्थान भिन्न भिन्न हैं जैसा कि वेद कहते हैं अर्थात शिर, ललाट, कर्ण, नेत्र, नासिका, मुख, कण्ठ, भुजा, उदर, हाथ, छाती, पांजर, नाभि, मुष्क, त्रिबली और दोनों जांघों का मध्यभाग और चरण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह सब ३२ हैं, सो अष्टवसु, सप्तदिग्धेश, आठों दिक्पति और आठों इन्द्रका नाम लेकर ऊपर लिखे हुये स्थानों में त्रिपुण्ड्र लगावें और शिर, ललाट, कण्ठ, अंस, भुजा, उदर, हाथ, स्तन, नाभि, पांजर, पीठ यह १६ स्थान हैं, जिनके यह देवता हैं, शिव, शिवभक्त, नाद, ईशान, वेदसूक्त और नवदस्र (अर्थात् नव इन्द्र) इनका नाम लेकर ऊपर लिखेहुये स्थानों में त्रिपुण्ड्र धारणकरे, सिवाय इनके ब्रह्मरन्ध्र, शिर, भुजा, ललाट, कण्ठ, स्तन, नाभि, त्रिबली, हाथ, पीठ, उदर यह सब १६ स्थान हैं इनमें परमाशिव, शिव, दिश, ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, गुरु, रुद्र, सूर्य, द्विजेश, वाम, मरुत्, वसु, हर और हरदेवकी दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे और शिर, ललाट, दोनों कान, दोनों कन्धे, हृदय, नाभि यह आठ स्थान हैं इनमें ब्रह्मा और सप्तर्षियों को दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र धारण करे और शिर, भुजा, नाभि और हृदय यह पांच स्थान हैं इनमें पांचों देवताओंको दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे ॥

सातवां अध्याय ॥

नारदजीने प्रश्न किया कि हे महाराज ! आपने भस्म धारण करनेकी विधि बताई पर कृपा करके कोई ऐसा इतिहास कहिये जिससे किसी पापीने भस्म के प्रभाव से मुक्ति प्राप्त की हो इतना कह सूतजी बोले कि हे शौनको ! ब्रह्माजी अपने पुत्रकी ऐसी प्रीति देखकर बोले कि वामदेव नाम शिवजीके एक योगी हैं निर्भय होकर सदा एकान्त में रहते हैं सबको एक दृष्टिसे देखते हैं उनका कोई स्थान नहीं और वह क्रोध, काम, मोह और लोभसे रहितहैं किसीसे कोई वस्तु नहींलेते और मौन साधे रहते हैं और केवल भस्म धारकर संसारमें फिरकर शिव जीको स्मरण किया करतेहैं और वह सबपर प्रसन्न और दुःख और सुख से रहित परमहंस अद्भुत निष्क्रोधी हैं एकदिन वह क्रौञ्चारण्यमें गये उसमें भूतादिकों के सिवाय कोई न रहता था उस वनमें एक ब्रह्मराक्षस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अतिनिर्दयी भयानक रहताथा और पापोंके कारण बहुतभूखा प्यासा रहता था कोई मनुष्य भयके कारण वहां न जाताथा जब उसने मुनि को देखा तो उनके खानेको चला पर वामदेव निर्भय होकर खड़े हो-गये ब्रह्मराक्षस उनके शरीर में लिपटगया और इच्छा की कि दोनों भुजाओं से दबाकर एक ग्रासकरूं पर उनके छूनेसे उसके सर्वपाप निवृत्त होगये जिस प्रकार कि चिन्तामणि के मलने से लोहा स्वर्ण होजाता है अथवा जिस प्रकार काक हंसकी संगति से मानसरोवर पाताहै अथवा मनुष्यादिक देवताओं की कृपा से अमृत प्राप्त करते हैं उसी प्रकार वह सत्संग पाकर शुद्धहुआ हे नारद ! सदाशिवजी की महिमा देखो जो कि राक्षस भूख प्यास से विकल होकर वामदेवको वध करनेको था वही उनके छूनेसे आनन्दपूर्वक कृतार्थ होगया क्योंकि जो भस्म वामदेव के शरीर में लगी थी वह राक्षसके भी लगगई और वह हाथ जोड़कर उनके चरणों पर गिरा और प्रार्थनाकी कि हे महा-राज ! कृपा करके मुझे तार दीजिये आपने हम पर बड़ी दयाकी जो आपके छूनेसे मुझे सुख मिला यह प्रकटहै उसका वर्णन नहीं होसक्ता मैं दुःखके समुद्र में डूबा हुआ हूं आप हमारी रक्षा करके उबारिये मुझको छूनेहीसे सुख प्राप्त हुआ है मेरे सबपाप और ताप नाश होगये वामदेव ने कहा कि हे राक्षस ! तुम ऐसे कुरूप और भयानक कौन हो क्योंकि तुमको यहां खाना पीना कुछ नहीं मिलता तुम किस का-रण ब्रह्मरा:स हुये हमसे सब वृत्तान्त कहो ब्रह्मराक्षसने दण्डवत् करके हाथ जोड़कर कहा कि हे महाराज ! इस जन्मसे पच्चीसवां जन्म मेरा राजा का था मेरा नाम दुर्जन था मैं यवनदेशमें राज्य करता था मेरे स्वभाव में निर्बुद्धिता पाप अहंकार और क्रोध बहुत था सारी प्रजा मुझको शत्रु समझती थी मेरे सर्वकार्य निष्फल होते थे और मैं प्रजा को लूटता था इससे नगरी उजड़गई मैंने वेदआदिका वाक्य असत्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मानकर गर्भवती स्त्रियोंसे प्रसंगकिया यद्यपि मैंने भोग करनेके योग्य स्त्रियों को बन्दीगृहमें रक्खा पर मैंने उनके साथ भोग न किया और न उनको अवसरही दिया कि वे अन्यपुरुष से भोग करें और मैंने सबवर्णोंकी स्त्रियोंके साथ भोगकिया अर्थात् मैंने पतिव्रतास्त्रियों और जो मासिकधर्ममें थीं और जिनका विवाह नहीं हुआ था और तरुण और जिनकी आयु कम थी सबके साथ भोगकिया और तीनसौ ब्राह्मणों की स्त्रियों के साथ प्रसंगकिया और चारसौ क्षत्रियोंकी स्त्रियों को मैंने रक्खा और छःसौ वैश्यवर्णकी स्त्रियों और एकहज़ार शूद्रकी स्त्रियोंसे कुकर्म किया और सौ चाण्डालों की स्त्रियां हज़ार पुलिन्दोंकी स्त्रियां पांचसौ शैलूषी चारसौ रजकोंकी स्त्रियां और अनन्त वेश्याओं के संग प्रसंग किया रात्रिदिन सिवाय व्यभिचारके और कोई कर्म न करता था पर तोभी सुखी न रहता नित्य नवीन स्त्रीसे भोग करता इससे तरुण अवस्थाही में अनेक प्रकारके रोगोंसे ग्रसित होगया और नाना प्रकार के दुःख भोगे और अपनी स्त्रीसे कभी मैथुन न किया और फिर मुझे शत्रुओंने चारों ओरसे धावा करके जीतकर दुःखी करदिया और बुद्धिमान् मन्त्रियोंने भी ग्लानि करके मुझे त्यागदिया अन्तमें मैं मरगया यमगण मुझे पकड़कर यमराजके सम्मुख लेगये और रुधिरके कूपमें मुझे डालदिया सो मैंने तीनसौ वर्ष पर्यन्त उसमें रहकर बहुत कठिन दुःख उठाये फिर मेरा पिशाच का जन्म हुआ और एकवन में जहां एकभी मनुष्य न था मुझे स्थित किया सो वहां भूख और प्यास से तलफता सौवर्ष तक रहा फिर दूसरे जन्म में सिंह, तीसरे में अजगर, चौथे में बिच्छू, पांचवें में सुअर, छठे में गर्ग, सातवें में श्वान, आठवें में फेरू, नवें में बैल, दशवें में हरिण, ग्यारहवें में बन्दर, बारहवें में भैंसा, तेरहवें में न्यवला, चौदहवें में काक, पन्द्रहवें में खच्चर इसी प्रकार और अन्य जन्मों में गधा, बिल्ली, बकरी,

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मछली, चूहा, मेढक, घुरघू, हाथी होता रहा अब यह पचीसवां जन्म मेरा ब्रह्मराक्षस का है जो आप देख रहे हैं मुझको इस जन्म में यह बड़ाक्लेश है कि कुछ खानेको नहीं मिलता और अब अपने पापोंका स्मरण करके रोता हूं पर यह मुझे मालूम नहीं होता कि किस शुभ कर्मसे आज आपके दर्शन पाये वह कौन जप तप या योग तीर्थ मैंने किया जिससे ऐसे पदको प्राप्त हुआ आप कहिये कि आप क्योंकर यहां आये और हम ऐसे पापी को दर्शन दिया मुझको आप कृतार्थ कीजिये क्योंकि मैं जानताहूं कि अब हमारे अच्छे दिन आये हैं यह कहा और वामदेवके सम्मुख हाथ जोड़ खड़ारहा ॥

आठवां अध्याय ॥

नारदजीका प्रश्न सुनकर ब्रह्माजी बोले कि राक्षस के वर्णनके पीछे वामदेवने कहा कि यह सब भस्मका प्रभाव है अर्थात् जो हमारे शरीर में भस्म लगी है वह तुमने भी धारण करली उसके प्रभावसे तुम्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और प्रथम जन्मों के पाप सब निवृत्त होगये भस्मकी महिमा केवल श्रीसदाशिव जानते हैं और कोई नहीं बूझ सक्ता जैसे कि शिवजीके चरित्र वर्णन नहीं होसक्ते इसी प्रकार भस्मकी अनन्त महिमा है पहिले समय में एक ब्राह्मण द्राविड़देश में उत्पन्न हुआ जो बड़ा अधर्मी पापी और चोरी और व्यभिचार में फँसा रहता और शूद्रों के समान होकर सर्वदा परस्त्रीगमन करता था और वेश्याओं सेभी मैथुन करता था अकस्मात् वह ब्राह्मण एक शूद्र के घर कुकर्म के निमित्त गया शूद्रने उसे कुकर्म करते पाकर मारडाला और अपने घरके बाहर फेंकदिया पर प्रातःकाल उसके शरीर में चारों ओरसे भस्म उड़कर लगगई और शिर, भुजा, हृदय और मुख में उसके रेखायें बनगईं उस समय यमराज के गण आये और इच्छा की कि उसको यमराजकी सभा में लावें पर शिवगणों ने आकर और भिड़ककर यमगणों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से कहा कि यहां से चलेजावो और उस पापी ब्राह्मणको विमान पर चढ़ालाये उस अवस्था में यमराज आपही शिवगणों के निकट आये और पापी ब्राह्मण के छुड़ानेका कारण पूछा और कहा कि हमको बड़ा आश्चर्य और संदेह है कि ऐसा मनुष्य जो चोरी और व्यभिचार ऐसे २ कुकर्म करे और अन्त में एक शूद्रके हाथसे मारजाय वह शिवपुरी को सीधा चलाजाय यह सुनकर शिवगणों ने कहा कि हे यमराज! यह अब पापरहित है इसके सब दोष भस्म होगये क्योंकि इसके शिर, हृदय, भुजा और मुख में भस्म विराजमान है इससे हम श्रीसदाशिवजी की आज्ञानुसार इसको शिवपुरी लिये जाते हैं यह कहा और विमान पर चढ़ाकर शिवपुरी में लेगये वामदेवने कहा कि हे ब्रह्मराक्षस! भस्म शिवजी का वस्त्र और आभूषण है इसके लगाने से पापी कोभी मुक्ति मिलती है इसका धारण करनेवाला श्रीसदाशिवजी को अतिप्रिय है भस्म सर्व पापों को नष्ट करती है शिवजी को प्रसन्न रखती है सब देवता मुनीश्वर आदि सर्वदा भस्म धारण किये रहते हैं और ब्रह्मा विष्णु नित्य भस्म लगाकर सर्वकर्मपर मनोरथ पूर्ण करते हैं इतनी कथा कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह भस्म का माहात्म्य सुनकर ब्रह्मराक्षस के सबपाप नष्ट हुये उसने वामदेवके चरण पकड़ कर हाथ जोड़ प्रणामकर प्रार्थना की कि हे महाराज! आप धन्य हैं और मेरेभी धन्यभाग्य हैं कि आपकी संगति मिली अब मुझको इस जन्मसे कृपा करके मुक्ति दिलाइये और एक बात मुझे स्मरण हुई है उसे सुनो वह यह है कि जिस जन्ममें मैं राजाथा तब मैंने थोड़ीसी धरती एक ब्राह्मणको दान दी थी जब मैं यमलोक में गया तो यमराजने मुझसे पूछा कि यद्यपि तुमने बड़े २ पाप किये हैं पर एक पुण्य भी किया है कि तुमने थोड़ीसी धरती एक ब्राह्मण को दानदी थी उसी कारण तुमको पच्चीसवें जन्ममें एक योगीश्वर मिलेंगे जिनकी दयासे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारे पाप नाश होजायँगे और मुक्ति पावोगे मुझको भासता है कि यह वही अवस्था है जो यमराज ने कही थी मैं बहुत जन्मतक नाना प्रकारके दुःख उठा चुकाहूं क्योंकि मैं बड़ा पापीथा अब मुझको अपना सेवक समझकर भस्म मन्त्रसहित दीजिये क्योंकि तुम भस्म धारण कियेहुये शिवजीका रूप हो और तुम संसारके मनोरथ पूर्ण करनेके लिये फिरा करतेहो जो मनुष्य सबलोगोंका उपकार करते हैं वह निष्पापी कल्पवृक्षके समानहैं यह कहकर ब्रह्मराक्षस चुप होकर वामदेवके सम्मुख खड़ा होगया ऐसी ब्रह्मराक्षसकी बिनती सुनकर वामदेव प्रसन्न हुये और शिवजी और शिवरानीजीको स्मरण करके अपनी झोरीसे भस्म निकाल त्रिपुण्ड्र धारा और अन्य अङ्गोंमें भी भस्म लगाई भस्म के धारण करतेही ब्रह्मराक्षस पवित्र होगया और उसका पहिले जन्म के समान शरीर बदलकर वह बड़ा तेजस्स्वरूप हुआ उससमय तुरन्तही आकाश से विमान आया और वह उसपर चढ़कर शिवपुरी गया और शिवगणों में मिलगया हे नारद ! भस्म की ऐसीही महिमा है हमने अपनी बुद्धिके अनुसार कह सुनाया जो मनुष्य इस भस्ममाहात्म्य को सुनेगा या पढ़ेगा वह दोनोंलोकमें सुख प्राप्त कर मुक्ति पावेगा ॥

नवां अध्याय ॥

नारदजीने कहा कि हे महाराज ! आपने मुझे बहुत अच्छी कथा सुनाई और मैं भस्मकी महिमा सुनकर अति प्रसन्न हुआ पर मैं आप से एकवार्त्ता पूछता हूं कि जो मनुष्य वेदके जाननेवाले और परम-ज्ञानी हैं उन्हींके गुरु करनेसे और उन्हींके उपदेशसे सर्व कार्य सिद्ध होते हैं और श्रीसदाशिवजी प्रसन्न होते हैं या सब लोगोंका उपदेश लेकर सिद्धि प्राप्त होसक्ती है मनुष्यको किस प्रकारका गुरु करना उचित है सूतजी बोले हे मुनियो ! ब्रह्माजीने नारद का प्रश्न सुनकर उनकी अति प्रशंसा कर अति प्रेमसे उत्तर दिया कि श्रद्धाही सब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनुष्योंके मनोरथ पूर्ण करती है और श्रद्धासे पूजनका फल मिलता है श्रद्धा सबपापों को नाशकरती है श्रद्धाहीसे धर्म मिलता है श्रद्धा-ही से शिला दोनों लोक में अतिफल देती है श्रद्धाही से नीचों पर देवता प्रसन्न रहते हैं विना श्रद्धाके सर्वकार्य निष्फल होते हैं विना श्रद्धाके जप, तप, मन्त्र, तन्त्र, पूजन, भिक्षा सब अकार्थ होजाते हैं सब मन्त्र देवता गुरु भावसे फल देते हैं संसार में भाव उत्तम है भाव से सुख, दुःख, पुण्य, पाप प्राप्त होते हैं विनाभावके धर्म और दोष नष्ट होते हैं इस वचन को श्रीसदाशिवजी ने अपने मुखसे कहा है इससे यद्यपि इस विषयमें असंख्य कथा हैं पर हम उनमें से एक इतिहास कहते हैं कि प्राचीन समय में एक राजा जिसका नाम सिंहकेतु था वह पाञ्चालदेश में राज्य करता और वह सर्वविद्यानिधान और शिव जीका बड़ाभक्त था एक दिन वह अच्छे २ वीरोंको सङ्गलिये शिकार खेलने गया उसके सङ्ग एक शङ्कर नामी मनुष्य जो जातिका शबरथा गया उसने इधर उधर फिरते टूटी फूटी शिला शिवालयों में देखीं जो अर्घेसे बाहर पड़ी थीं सो इसने तुरन्तही एक शिवलिङ्ग को बड़ेप्रेम से उठालिया और राजाके निकट दौड़कर उसे दिखाया और कहा कि हे राजन्! इस शिवलिङ्गको देखिये मैं इसे पूजूंगा आप मुझे पूजाकी विधि बतादीजिये यद्यपि मैं नीचहूं पर मैंने सुना है कि नीच लोगों कोभी प्रेमसे श्रीसदाशिवजीका ध्यान करना चाहिये शिवजी जाति को न विचारकर उनको भी वरदान देते हैं राजाने निषाद से कहा कि हम तुम्हें ऐसी रीति बताते हैं जिससे शिवजी तुरन्तही प्रसन्न होजावें कि पूजनेवाला मनुष्य पहिले स्नान करे फिर पवित्र वस्त्र पहिन अच्छे स्थान पर बैठे फिर भस्म धारण करके शिवजी को स्नान करावे और चन्दन, अक्षत, अर्घ्य, पुष्प, बेलपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य से शिवजी का पूजनकरे फिर शिवजी के आगे नाचे गावे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तदनन्तर शिवजीको प्रणाम और स्तुति करके अपने गाल बजावे और विधिसंयुक्त प्रदक्षिणाकरे यह शिवपूजन सुगम और सरलरीति से वर्णन किया तुम भली भांति विचारो कि चिता की भस्म शिवजी को अतिप्रिय है उसको शरीर में धारण करनेसे सुख प्राप्त होता है इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारदजी ! यद्यपि राजा ने हँसी से यह कहा पर शबर बहुत प्रसन्न हुआ और राजा के वाक्य को उसने श्रद्धा से सुना उसी समय वह अपने गृह आया और शिवलिङ्गकी पूजा करनेलगा वह नित्य प्रथम अपने शरीर में भस्म धारण करता और दिन २ शिवजीके चरणारविन्दों में प्रीति बढ़ाकर ध्यान धरता था जो वस्तु उसे अच्छी लगती थी उसे शिवजीको प्रथम भोग लगा-कर फिर आप खाता था इसी प्रकार वह अपनी स्त्रीसहित शिवजी की पूजा करके भजन गाता था इस प्रकार उसे बहुत समय बीता तो शिवजी प्रसन्न हुये और चाहा कि उसकी परीक्षा लें तो जब शबर पूजन करनेलगा तो चिताभस्म को जहां पर रखता था वहांपर न देखी क्योंकि शिवजीने चिताभस्म उसकी दृष्टिसे दूर करदी यद्यपि वहां चिताभस्म बहुत रक्खीहुई थी पर उसको दिखाई न दी उसने उठ-कर चारों ओर ढूंढ़ा पर न पानेसे आश्चर्यकर विकल हो अपनी स्त्री से कहा कि मैंने भस्मको बहुतही ढूंढ़ा पर वह नहीं मिलती इससमय मुझे बहुतही खेद है जोकि हमारी पूजामें विघ्न पहुँचा है इससे हमारा जीना वृथा है यह कह वह बहुत रोया यहदशा उसकी स्त्रीने देखकर बहुत दुःखी होकर कहा कि हे प्राणप्यारे ! तुम क्यों इतना घबड़ाते हो मैं इसी समय सती होतीहूं जो चिताभस्म मेरे जलजानेसे मिले उससे तुम अपना काम करो शबरने उत्तरदिया कि चारों पदार्थोंके प्राप्त करनेके लिये तो तुम्हारा शरीर है और हमारे विहारके निमित्त है इसका तुम त्याग मत करो क्योंकि अभी तुम्हारे कोई पुत्र भी नहीं उपजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और संसारका आनन्दभी तुमने नहीं उठाया फिर तुम क्यों इस पवित्र शरीर के जलाने को उद्यत होतीहो स्त्री ने कहा कि मैंने सत्पुरुषों से सुना है कि जो दूसरेके उपकारके लिये अपना शरीर छोड़े तो उसका जन्म सफल होजाता है मुख्य करके जब शिवके काम में शरीर का त्याग हो तो इससे उत्तम संसारमें और क्या है ऐसे मनुष्य की भाग्य संसार में सर्वोपरि है मेरे हजारों जन्म के शुभकार्य उदय हुये हैं जो मैंने शिवजीकेलिये यह उद्योग ठहरायाहै यहसुन शबरने मानलिया सो स्त्रीने अतिशुद्ध हो स्नानकर चिता बनाई और उसमें अग्नि लगाय शिवको बार २ प्रमाण करती हुई अग्निमें प्रवेश करगई सो तुरन्तही भस्म होगई उसी भस्म को शबरने अपने शरीर में मल कर शिवजीकी पूजाकी और शिवपूजनेके उपरान्त प्रतिदिन के नियमके अनुसार शबरने हाथ में प्रसाद लेकर पीठकी ओर को हाथ बढ़ाया कि उसकी स्त्री प्रसाद लेले क्योंकि वह प्रतिदिन पूजा करके अपनी स्त्रीको प्रसाद दिया करता था देखा कि उसकी स्त्रीतो जलगई थी नये शिरसे सजीव होकर हाथ जोड़ उसके सामने से पहिलेके समान वस्त्रों से भूषित हो शिव २ मुखसे कहती हुई चलीआती है शबरने पूछा कि यह क्या आश्चर्यदायक चरित्र है तू जलकर क्योंकर जीगई शबरीने कहा कि तुम्हारे देखते हुये जब मैं अग्नि में प्रवेश करगई तो मुझे अग्निमें प्रवेश करने का कुछभी दुःख न हुआ मानो मैं अमृत के कुण्डमें चलीजाती थी और जिस तरह कोई मनुष्य निद्रासे जागकर उठबैठे उसीतरह मैंने उठकर घरको देखा और तुम्हारे पास प्रसादलेने को पूर्वके समान आई हूं इतना कह ब्रह्मा बोले हे नारद! यह दोनों यही बातें कररहेथे कि उस स्थान पर विमान उतरा शिवजीने प्रसन्न होकर चारगणोंसहित विमान भेजा था उन्होंने हाथ पकड़कर शबर और शबरी को उसके भीतर बैठालिया और दोनों शिवलोकमें पहुँच

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर शिवस्वरूप होगये और सदा प्रसन्नरहे हे नारदजी ! भस्मधारण करना बड़ी बात है भस्म लगाने से शिवजी इतने प्रसन्न होते हैं उस में चिताभस्म की बड़ी महिमा है उसके समान कोई वस्तु श्रेष्ठ नहीं जिसके कारण शबर और शबरी ने जो नीच थे परमपद पाया जो मनुष्य पवित्र होकर भस्म और रुद्राक्ष धारण करके शिवजी का गुण वर्णन करे वह दोनों लोक में सुख पावे ॥

दशवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी ! भस्मका माहात्म्य और वर्णन करो क्योंकि भस्म शिवजीको अतिप्रिय है और शिवजी का वस्त्र और आभूषण इससे बढ़कर और कुछ नहीं है जो भस्म विना शैव होना चाहता है वह शैव नहीं है बरन वह शिवजी के विरुद्धहै उसके समान दूसरा संसारमें दुष्ट और नास्तिक नहीं ब्रह्मा बोले वास्तव में चारों पदार्थों की देनेवाली भस्म है उसको शरीरमें लगानेसे सर्वशोक और दुःख दूर होजाते हैं यह भस्म तन मन का बल बढ़ाकर मृत्यु के समयमें भी मनको आनन्द प्राप्त रखती है इस पर हम एक पवित्र इतिहास कहते हैं मन लगाकर सुनो कि दशारण्यदेश का राजा वज्र-बाहु हुआ जिसके असंख्य स्त्रियां थीं उनमेंसे भाग्यवश बड़ी रानीके गर्भ रहगया तो अन्य स्त्रियोंने इर्षासे उसको विष पिलादिया यद्यपि उसने अपनी उन सौतों का छल न जाना पर बहुत कष्ट उठाने के अनन्तर वह अच्छी होगई विषने अपना कुछ फल न किया और न उससे गर्भ में कुछ विघ्न हुआ निदान नियमित समय पर उसके उदर से एकपुत्र उपजा जिससे उसकी सौतोंको औरभी अधिक डाह उपजा और लड़के को भी उपजने के समय से अति विकलता रही जिससे वह बराबर रात दिन रोतारहा और रानी ने भी विषके प्रभाव से बड़े बड़े दुःख उठाये और राजा की आज्ञासे बड़े बड़े बुद्धिमान् वैद्यों ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुत से उपाय किये पर कुछ भी फल न हुआ पहिले तो रानी विषके प्रभावसे आपही विकल थी दूसरे अपने पुत्रके रोनेके कारण और भी अधिक दुःखी हुई रात और दिनभर उसको निद्रा न आई इससे वे दोनों क्षीण होगये इसीतरह थोड़े दिनोंतक राजाने दोनोंको ऐसे दुःख में पाकर विचार किया कि यह दोनों माता और पुत्र पूर्व जन्मके अति पापी हैं जो दुःख भोगरहे हैं इनका किसी शुभकर्मसे हमारे यहां आगमन हुआ पर इनको सुख न मिलेगा इन्होंने मेरे आहार विहारमें अपने रोने पीटनेसे विघ्न डाला है यह विचारकर राजाने अपने भीलों को आज्ञादी कि रानीको उसके पुत्रसहित रथमें चढ़ाकर वनमें छोड़ आवो भीलने राजाकी आज्ञानुकूल दोनोंको अतिनिर्दयतासे वनमें लेजाकर छोड़दिया और आप लौट आया सो रानी लड़का लिये भूखी प्यासी दुःखी हो कुछ आगेको चली पर कुछ दूर जाकर थकगई फिर थोड़ीदेर वनमें उसने एक पगडण्डी पाकर उसीके सहारे से चली निदान उसने बहुत दूर जाकर नगर देखा जिसमें बहुत स्त्री और पुरुष बसते थे वहां का राजा पद्माकर नामी वैश्यवर्ण था उसकी दासी रानी को देखकर उसके समीप आई और उस पर दया करके उससे वृत्तान्त पूछा और सब वृत्तान्त सुनने के अनन्तर अतिप्रेमसे उसे राजा पद्माकर के पास लेगई पद्माकर उसको रोगिणी और दुःखी जान अतिचिन्तित हुआ और जब रानीके मुखसे उसने सर्ववृत्तान्त सुना तो उसपर अतिअनुग्रह कर उसे अपने मुख्य मन्दिरमें ठहराया और उसको अपनी माता समान जान उसकी बड़ी सेवा करने लगा और उसको अच्छे २ भोजन और वस्त्रोंसे सदा प्रसन्न रखता फिर उसने सद्वैद्योंको रानीके रोग दूर होनेके लिये नियत किया पर तोभी लड़केको कुछ आराम न हुआ और घावोंके कारण जो विषके प्रभाव से उसके शरीर में होगये थे महादुःखी हो और फिर कुछ दिन जीकर मरगया रानी इतना रोई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पीटी कि कई बेर मूर्च्छित होगई यद्यपि स्त्रियोंने उसे बहुत समझाया पर उसे किसीका उपदेश न लगा और बराबर रोती रही निदान एक दिन भाग्यवश ऋष्यनाम शिवजीके योगी उस स्थान पर आये और उन्होंने रानी के पास आकर उसको बहुत समझाया तो रानीने रोकर हाथ जोड़ उनसे विनयकी कि मेरा कोई पति भ्राता आदि नहींहै मैं पुत्रहीन रोगमें ग्रसित निर्बल हूं पुत्र विना मेरा जीना कठिनहै मैं धन्य हूं कि मैंने मरनेके समय आपका दर्शन पाया यह सुनकर ऋष्यने मरे हुये लड़केके शिरहानेपर जाकर शिवजीके मन्त्रसे भस्म फूंककर मरेहुये लड़के के मुखमें डालदी जिससे वह बालक तुरन्त जी उठा और उसकी सब इन्द्रियां बलवान् होगईं और वह तुरन्तही दूधके लिये रोनेलगा सब तमाशा देखनेवाले आश्चर्य में हुये और सब लोगोंको इतना आश्चर्य और आनन्द हुआ जो कहनेसे बाहर है और रानीभी अतिप्रसन्नतासे लड़केको गोदमें लेकर अतिसुखी हुई और तुरन्त उसने अपना शिर योगी के चरणों पर रखदिया ऋष्यने अतिदया से लड़के के सर्वशरीर में भस्म लगाई जिससे उसके रोग और निर्बलता न रह गई और रानी फिर लड़के समेत योगी के पांव पड़ी योगीने उसको धरती परसे उठाया और प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया और कहा कि हे रानी ! तुम जरामरणरहित समयतक जीतीरहो तुम्हारे पुत्र का नाम भद्रायुष् है यह अपने पिता की राज्य पा अपनी रानियों समेत बड़ा आनन्द पावेगा जबतक यह बालक विद्या न पढ़चुके तबतक तुम इसी स्थान पर स्थित रहो ऋष्य ऐसा उपदेश देकर चलेगये और रानी अपने पुत्र भद्रायुष्सहित वहीं स्थित रहीं भद्रायुष् ने सर्वविद्या पढ़ली जब सोलह वर्षका भद्रायुष् हुआ तो शिवयोगीने शिवपूजा की विधि उसको बता दी और उसको सहस्राक्षरी मन्त्र बताया और मन्त्रसे भद्रायुष्के सर्व शरीरमें भस्म लगादी जिससे भद्रायुष् को बारहसहस्र हाथी का बल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होगया फिर एक खड्ग और एक शङ्ख भद्रायुष् को देकर बहुत से आशीर्वाद दिये और फिर आप बिदा होगये जिससे भद्रायुष् के अति प्रसन्नता प्राप्त हुई और अपने पिताकी राजधानीमें पहुँच कर आप राजा हो विवाह करनेके अनन्तर विहार करनेलगा और राजा अर्थात् पद्माकरके भाईको अपना भाई समझ उसको बड़ा आनन्द देतारहा और भद्रायुष् ऐसा शिवभक्त हुआ कि उसको तीनों लोकने बहुत अच्छा शिवभक्त समझा हे नारद! भस्म का माहात्म्य और प्रभाव ऐसा है जिसकी महिमा सदाशिवही जानते हैं और कोई क्या जाने भस्ममाहात्म्य पूर्ण हुआ॥

ग्यारहवां अध्याय॥

रुद्राक्षका माहात्म्य॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम रुद्राक्षमाहात्म्य वर्णन करते हैं जिसकी महिमा वर्णन करनेमें सर्वदेवता और मुनियों की जिह्वा थकित है रुद्राक्ष शिवजी को अतिप्रिय और पवित्र है उसके दर्शन करने जपने और पूजनेसे सर्वपाप भस्म होजाते हैं यद्यपि सदाशिव स्वाधीन हैं और उन पर कोई स्वामी नहीं पर एक समय में सदाशिव ने संसारके उपकारके लिये दिव्य सहस्र वर्ष तप किया जब उन्होंने दोनों नेत्र खोले तब दो जलके बिन्दु उनके नेत्रोंसे पृथ्वीपर गिरपड़े वह दोनों आंसू पृथ्वीमें गिरकर वृक्ष होगये और शिवजीकी कृपा से वह सबभक्तों को प्राप्त हुये और धीरे २ हर देशमें रुद्राक्ष वृक्ष उपजने लगा अर्थात् अयोध्या, मथुरा, काशी, गौड़देश और सह्यगिरि में बहुतही रुद्राक्ष पैदा होनेलगा जो सर्वपापोंके नष्ट करनेवाले हैं और उनके केवल दर्शनसे अप्रमेय सुख प्राप्त होता है इसी प्रकार रुद्राक्ष चाररङ्गके उपजे श्वेत, रक्त, पीत और श्याम सो वह चारोंवर्ण के लिये शुभ और पवित्र हैं जिनको चारों वर्ण क्रमपूर्वक धारण कर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सक्ते हैं उनको सर्वोपरि समझना चाहिये और उनको सब देवता और मुनि और मनुष्य मांस और मद्य छोड़ने के अनन्तर शिवजीके प्रेम से धारण करें जो मनुष्य भक्ति और मुक्तिका चाहनेवालाहै उसको उचित है कि वह पवित्र हो रुद्राक्ष पहने सब शिवभक्त देवता रुद्राक्ष धारण करके बड़ासुख पाते हैं मुख्य करके रुद्राक्ष धारण करना शिवभक्तों को उचित है और उनको रुद्राक्ष बहुत प्रिय होना चाहिये क्योंकि रुद्राक्ष उनके असंख्य दुःखों को दूर करनेवाला है रुद्राक्ष से सर्वमनोरथ पूर्ण होसक्ते हैं और रुद्राक्षके समान पवित्र तीनोंलोक में दूसरी वस्तु नहीं जो कोई मनुष्य रुद्राक्ष मालाकी तरहपर धारणकरे उसके समान तीनों लोक में कोई देवता और मुनि आदि नहीं है रुद्राक्षकी माला सब मालाओं से उत्तम है इसके धारण करने से मनुष्य काल से भी भय नहीं मानता और रुद्राक्ष धारण करनेवाला मांस, पलाण्डु, लसुन, मद्य आदि धारण न करे और रुद्राक्ष सब देवताओं को प्रिय है मुख्य करके पांचों देवताओंको बहुतही प्यारा है और सबसे अधिक इसको शिव प्रिय जानते हैं और जो कि सब देवताओंके मन्त्र रुद्राक्षसे जपे जाते हैं इसलिये रुद्राक्ष की माला सब मालाओं से श्रेष्ठ है और विष्णु और हम और इन्द्रादि सब देवता रुद्राक्षकी माला धारण करते हैं यह शिव का उत्तम भूषण है और जो रुद्राक्ष आमले के फलके समान है वह उत्तम है और जो बदरीके समान है वह मध्यम रुद्राक्ष है और जो मध्यम रुद्राक्ष छोटा हो तो उसे अधम समझना चाहिये और जो रुद्राक्ष आमलकके समान है वह बहुतही शुभ और मनोरथ देनेवाला है यद्यपि सर्व प्रकार के रुद्राक्ष शुभ और पापों के दूर करनेवाले हैं कोई रुद्राक्ष दुःखदायक नहीं पर जो रुद्राक्ष गुञ्जा के समान है उसको सर्व मनोरथोंके देनेवाला समझना चाहिये इसी प्रकार जितना रुद्राक्ष बहुत छोटा हो उतनीही उसकी बड़ाई और उसके धारण करने में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अधिक फल जानना चाहिये और जो रुद्राक्ष कि दृढ़ और चिकना कांटों समेत मोटा हो वह सर्वमनोरथोंका देनेवाला है और भक्तके सबपापों को नष्ट करदेता है और नीचे लिखे हुये रुद्राक्ष किसी अवस्था में धारण करना उचित नहीं हैं क्योंकि उनके धारण करने से कोई मनोरथ सिद्ध नहीं होता जो कीड़ोंसे खायेहुयेहों १ जो कांटों विना हों २ जो कटेहुये हों ३ जो छिद्र करनेके समय फटगये हों ४ जो रुद्राक्षका स्वरूप न रखतेहों ५ और जो कृत्रिम अर्थात् मुख्य रुद्राक्ष न हों किसी वस्तुसे बनायेगये हों ६ और जो रुद्राक्ष आप किसी शिवभक्त ने वृक्ष से लाकर बनाया हो वह उत्तम रुद्राक्ष है और जो रुद्राक्ष अन्य मनुष्य के द्वारा आया हो वह मध्यम है जिस रुद्राक्षको हमने सर्वोपरि वर्णन किया है उसके धारण करनेवाले मनुष्यको मुख्य सदाशिव का रूप समझना चाहिये और उचित है कि भक्त निश्चयपूर्वक आलस्य छोड़ मन्त्रके साथ रुद्राक्ष धारणकरे कि कोई पाप उस के सामने न आवे जो मनुष्य जान बूझकर मन्त्र विना रुद्राक्ष धारण करता है वह नरक में जाकर किसी स्थानमें सुख नहीं पाता पर जो अज्ञानी मनुष्य मन्त्र विना रुद्राक्ष धारणकरे तो उसको कुछ पाप नहीं है क्योंकि आप सदाशिव जीने इस बातको कहा है और भूतआदि जो दुःखदायक हैं वे रुद्राक्ष धारण करनेवालेको कुछ दुःख नहीं देसक्ते बरन रुद्राक्षधारी मनुष्यको देखकर भागजाते हैं और उससे सदा डरतेरहते हैं और अभिचार आदि जो पाप हैं वे रुद्राक्ष के देखनेही से भस्म होजाते हैं उसके देखनेसे देवता आदि सब अतिप्रसन्न होते हैं और परमशिवजी उसके देखनेसे प्रतिदिन मनमें प्रसन्न होकर हँसते हैं यद्यपि कोई मनुष्य ज्ञान और ध्यान से हीन अनाचारी और कुकर्मी हो वह भी रुद्राक्ष प्रेमसे धारण करे तो सर्वपापोंसे छूटकर परमपद पाता है और जो मनुष्य कि रुद्राक्ष की मालासे केवल मन्त्र जपता है उसको हाथके जप करने से करोड़ों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाग अधिक पुण्य मिलता है और धारणकरने से जपकरनेवाले को दशभाग अधिक फल होता है जबतक कि रुद्राक्ष शरीर में धारण किये हुये कोई मनुष्य रहता है तब तक उसको अकालमृत्यु का भय नहीं होता और उसको अवस्थाके पूर्ण होने विना मृत्यु नहीं होती और उसको मरनेके समय शिवका ज्ञान प्राप्त होता है उसके धारण करनेसे मनुष्य मुक्ति पाता है जिस मनुष्यके शरीरमें रुद्राक्ष और भस्म का त्रिपुण्ड्र हो और वह मनुष्य मृत्युञ्जय मन्त्रका जप कररहाहो तो ऐसे मनुष्य के देखनेसे शिवजी के दर्शन करनेके समान फल होताहै ऐसे मनुष्यकी बड़ाई वर्णन नहीं होसक्ती रुद्राक्ष सब वर्णाश्रम धारण करें बरन शूद्रको भी रुद्राक्ष धारण करने का अधिकार है पर शुद्धता और निश्चय अवश्य चाहिये और जब कि दिनके समय मनुष्य रुद्राक्ष धारण करता है तो उसके रात्रिके सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं और रात्रिके समय धारण करनेसे दिनके सर्वपाप दूर होते हैं इससे उचितहै कि हर समय रुद्राक्ष धारण कियेरहे जो मनुष्य कि त्रिपुण्ड्र और रुद्राक्ष धारण करके शिरमें जटा रखाते हैं वे नरकमें नहीं जाते और न संसारमें उनको कोई पाप लगता है और जिनके भालमें त्रिपुण्ड्र और शिरमें एकदाना रुद्राक्षकाहै और मुखपर पञ्चाक्षरी मन्त्रहै वे अपने सबलोगों में सेवाके योग्य हैं और जो मनुष्य ऐसा बाना नहीं रखते वे निस्संदेह नरकमें जाते हैं उनकी सहायता कोई नहीं करसक्ता और जो मनुष्य कि ऐसा बाना रखते हैं चाहे वे स्त्री हों वा पुरुष शिवजीके बहुत प्यारे हैं और चाहे वे बड़े पापी, अनाचारी और भ्रष्ट हों पर वे अतिपवित्र हैं उनको दोनों लोकमें बहुत आनन्द मिलता है वे सबलोगोंसे मारे जानेके योग्य नहीं और सर्वमनुष्यों की बड़ाईके योग्य हैं हे नारद! रुद्राक्ष बहुत प्रकारके हैं जिनका विस्तार हम वर्णन करते हैं जिसके सुननेसे सब पाप दूर होते हैं कि जो एकमुखी रुद्राक्ष है वह तो सदाशिव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीका रूप है उससे मुक्ति और भक्ति दोनों मिलती हैं और उसके द-
र्शनमात्र से ब्रह्महत्यादि पाप दूर होते हैं उसके धारण करनेवाले के
सर्व उपद्रव नष्ट होकर उसके सर्वमनोरथ पूर्ण होते हैं जिसने ऐसा
रुद्राक्ष पाया उसके बड़े भाग्य हैं वह प्रतिदिन पवित्र और पापोंसे शुद्ध
है और द्विमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से तुरन्त गोबध का पाप दूर
होजाताहै और धारकके सर्वमनोरथ पूर्ण होते हैं और उसके घरमें सर्व
सुखकी सामग्री उपस्थित रहती हैं और त्रिमुखी रुद्राक्ष से धन और
विद्या की वृद्धि और उसके धारण करनेसे स्त्रीके मारडालने का पाप
दूर होता है मुख्य करके वह ज्वर जो तीन दिनके पीछे आता है उस
के धारण करनेसे नहीं रहता है और चतुर्मुखी रुद्राक्ष हमारा रूप है उस
के धारण करनेसे बड़ा आनन्द प्राप्त होताहै उससे मनुष्यके मारडाल-
नेका जो पाप है वह जातारहताहै और उसके स्पर्श और अवलोकन
से चारों पदार्थ मिलजाते हैं और पञ्चमुखी रुद्राक्ष शिवजीका रूप है
उसके धारण करनेसे भक्ति और मुक्ति मिलती है कोई दुःख नहीं रहता
सर्वप्रकार के पाप और भक्ष्याभक्ष्यके जो दोषहों और जो परस्त्री भोग
आदिके पाप होवें सब दूर कर धारण करनेवालों को मुक्ति मिलती
है और षण्मुखी रुद्राक्ष स्कन्दके समानहै उसको दाहनी भुजामें धारण
करना चाहिये वह ब्रह्महत्या आदि सब पापों को दूर करके सर्वसुख
देनेवाली है और सप्तमुखी रुद्राक्ष जिसको महासेन और अनन्तआदि
कहते हैं उसके धारण करने से निर्बल दरिद्रीभी राजा होता है उसके
सर्वपाप दूर होजातेहैं और जो अष्टमुखी रुद्राक्षहै वह वटुकभैरवका रूप
है उसके धारण करनेसे आयु बढ़कर अन्तमें शिवजी मुक्ति कृपा करते
हैं और जो रुद्राक्ष नवमुखी है वह दुर्गा का स्वरूप है उसको दाहिने
हाथमें धारण करना चाहिये इसके धारण करनेवाला हमारे समान
सबका राजा होकर सबपापों से शुद्ध रहता है और दशमुखी रुद्राक्ष

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को जनार्दन समझकर जो मनुष्य उसे धारण करता है उसके सर्वकार्य सिद्ध होते हैं और वह किसीके मारे नहीं मरता और एकादशमुखी रुद्राक्षको जो कोई रुद्र जानकर धारण करता है वह सबको जीतता है और जो द्वादशमुखी रुद्राक्ष है वह सूर्यरूप है उसे शिखा में धारण करनेसे सर्वरोग दूर होजाते हैं उसको दोनों लोक में सुख मिलताहै जो रुद्राक्ष तेरह मुख का है वह विश्वेदेवका स्वरूप है उसके धारण करनेसे सर्वकार्य सिद्ध होते हैं चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष को ललाटपर बांधने से कोई कष्ट नहीं होता और धारक के सर्व पाप तुरन्त दूर होजाते हैं हे नारद ! हमने इतना रुद्राक्षका वर्णन किया सबप्रकार के रुद्राक्षकी महिमा अनन्त है उचित है कि इन सबकी माला बनाकर प्रेमसे धारे जो सौ दानेकी माला है वह मोक्ष देती है एकसौ चालीस दानेकी माला आरोग्यता और बल देती है और ३२ दानेकी माला धन और पन्द्रह दाने की माला अभिचार कराती है और एकसौ आठ दाने की माला सर्व कार्यों को सिद्ध करनेवाली है यद्यपि मालायें अनेक प्रकार की हैं पर यह माला सबसे उत्तम है पुत्रजीवा की माला लड़का देती है और मणिजा धनकी वृद्धि करती है मोतियों की माला भाग्यको बढ़ाती है कुशमाला पापों को हरती है सोने और रूपेकी माला सर्वमनोरथ पूर्ण करती है श्वेतशिलाकी माला सुगति देती है कमलमाला आरोग्यता और धनदायक है, पर अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारोंफलों की देने वाली रुद्राक्षकी मालाहै उसके समान अन्यमाला नहीं वह सब मालाओं से अधिक फल देनेवाली है और रुद्राक्षके एक दानेका जप अन्य मालाओं के करोड़ बेर जप करनेके समान है हम केवल इतना कहते हैं कि रुद्राक्षकी बड़ाई शारदा भी नहीं वर्णन करसक्तीं हमने रुद्राक्षका माहात्म्य तुम्हें संक्षेप से सुनाया अब और क्या श्रवण करोगे ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने नारदके पूछनेपर कहा कि जिन २ अङ्गों में रुद्राक्ष धारण करनी चाहिये उनको हम वर्णन करते हैं कि ग्यारहसौ रुद्राक्ष एकही विधिसे धारण करनेकी आज्ञा है और फिर हज़ारतक के लिये दूसरा वचन है और फिर कोई चारसौ भी कहते हैं हम प्रथम प्रकार का वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब कष्ट नष्ट होते हैं और उसके पहननेसे बड़े २ पापभी दूर होजाते हैं एकसौ ग्यारह रुद्राक्ष धारण करना अतिसुख देताहै उसके धारण करनेकी महिमा सौवर्ष पर्यन्त कोई नहीं बखानसक्ता अब हम जितने रुद्राक्ष अङ्गों में धारण करने चाहियें वर्णन करते हैं अर्थात् ५५० रुद्राक्ष का मुकुट बनावे और तीनसौ रुद्राक्षका यज्ञोपवीत बनाकर उसकी तीन लड़ियां कर पहने और एकसौएक रुद्राक्ष गर्दनमें और तीन रुद्राक्ष शिखामें धारणकरे और जनेऊमें तीन रुद्राक्ष धारणकरने चाहियें और दाहनेकानमें पांच और बायें कान में छः पहनने चाहियें इसी प्रकार भुजाओं और हाथों में बांधे और ग्यारह सौ में जो बचें वह कटिमें बांधे इसप्रकार रुद्राक्ष का धारण करनेवाला दोनों लोक में पवित्र और पापरहित होता है और वह श्रीसदाशिव जीके समान नमस्कार करनेके योग्य है उसके दर्शन करनेसे रोग दूर होजाते हैं और जो इतने रुद्राक्ष धारण करके सदाशिवजी का ध्यानकरे और जिह्वासे शिव २ रटे तो ऐसे मनुष्यके देखनेसे कोई पाप नहीं रहता यह ग्यारहसौ रुद्राक्ष धारण करनेकी विधि है अब एक सहस्र रुद्राक्ष धारण करने की रीति बताते हैं कि शिखा में तीनसौ रुद्राक्ष का मुकुट बनावे और गलेमें पैंतीसकी कण्ठी पहने और पांचसौ रुद्राक्ष कन्धेमें और एकसौ आठ रुद्राक्षका उपवीत बनावे और दोनोंभुजोंमें बत्तीस और दोनों हाथों में सोलह धारण करले जो मनुष्य पांचसौ कन्धेमें व एकसौका यज्ञोपवीत बनावे ३२ भुजाओंमें पहने १६ हाथों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में धारण करले व जो मनुष्य इसरीतिसे व सहस्र रुद्राक्ष धारण करताहै उसके सब पाप दूर होजाते हैं वह दोनों लोक में आनन्दपूर्वक रहता है और वह कुलसहित परमपद को पाता है देवता भी उसको प्रणाम और दण्डवत् करते हैं जो ऐसे रुद्राक्ष पहनता है जैसे कि रुद्र अर्थात् शिवजी सबके स्वामी हैं वैसेही वह मनुष्य भी उत्तम है और अन्य प्रकारसे भी रुद्राक्ष धारण करनेकी आज्ञाहै कि शिरमें एक और ललाट में चालीस और छाती में एकसौ आठ और बत्तीस गलेमें और दोनों कानोंमें छः छः और दोनों भुजाओंमें बत्तीस और दोनों हाथोंमें चौबीस इस तरहसे दोसौ उञ्चास रुद्राक्ष धारण करनेवाला मनुष्य शिवके समान है उसके ऊपर शिव नित्य प्रसन्न रहते हैं इतने रुद्राक्ष धारण करके यदि शिवपूजन करे तो कोई कष्ट न भोगे हे नारद ! जो मनुष्य शिरमें एक रुद्राक्ष धारण करके शिरसे स्नान करता है उसको गङ्गाके स्नान का फल होता है जो बिना जलके उसका पूजन करता है वह गिरिजा और शिवजी के पूजन के फलको प्राप्त करता है जो मनुष्य रुद्राक्षको धारण कियेहुये मरता है वह शिवगति पाता है जो मनुष्य नित्य रुद्राक्ष पूजता है उसे राजाके समान धन मिलता है इस पर हम एक रुद्राक्ष माहात्म्य का इतिहास कहते हैं जिसके सुननेसे रुद्राक्षके धारण करनेका प्रेम अधिक होता है एक क्षत्रिय जातिका राजा गङ्गाके पश्चिम दिशा में राज्य करता था उसका नाम देवीदत्त था उसने किसीसे शिव पूजन का उपदेश न लिया था पर झाड़ी के वृक्ष के नीचे नित्य कूप के तटपर देवता का पूजन करता था उसी नगरी में एक तेली मरकर वेताल होगया था एकदिन उसी वेतालने झाड़ी के निकट आकर राजा को अपना शरीर दिखाया राजा उसको अपनी प्रजाका मनुष्य समझ और भलीभांति पहँचान मरेहुये को जीता देख अति आश्चर्य-वान् हुआ कि यह मरा हुआ किस प्रकार जीउठा उसने वेताल से पूछा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि तुम कहां आये हो क्योंकि तुम मरगये थे उसने उत्तर दिया कि हे राजन्! मैं वेताल होकर यमदूतका गण हूं जिस कामको आया हूं वह यह है कि इस समय एक वैश्य यहां आवेगा और बैलके मारने से मरजायगा और जोकि वह बड़ापापी है इससे हम उसे बांधकर यमराज के निकट लेजावेंगे राजाने कहा कि तुम हमारे निकट आवो हम कुछ पूछेंगे वेतालने मानलिया अभी कोई बार्त्ता उनमें न हुईथी कि तुरन्त ही एक वैश्य कूप के निकट आया उसके साथ एक बैल था वैश्यने स्नान करने के निमित्त बैलको उसी कूपके निकट बांधदिया और आप स्नान करनेगया और जब पगड़ी बांधेहुये बैलके निकट पहुँचा तो उसने अपने सींगोंसे वैश्यको घायल करके मारडाला वेतालने बांधकर इच्छा की कि यमराज के निकट लेजाऊं पर शिवगणों ने कहा कि हे वेताल! इसे छोड़दो वेतालने कहा कि यह तो बड़ापापी धर्मके विरुद्ध कुमार्ग में चलनेवाला और देवताओंके मन्त्रआदि से ग्लानि करने वालाहै इसको हम नरकमें डालेंगे तुम मुझे क्यों रोकतेहो तुम यमराज की आज्ञा को नहीं मानते जब इस उपदेशसे भी वेतालने उसे न छोड़ा तो शिवगणों ने त्रिशूल मारकर उसे घायलकर दिया और वैश्य को उसके हाथसे छुड़ाकर विमानपर चढ़ाकर शिवपुरीमें लेगये और ऊंचे शब्दों से कहा कि यह पापी नहीं है देखो इसके शिरमें रुद्राक्ष है इसके सर्वदोष भस्म होगये यह कहकर शिवगणों ने उसे शिवलोक में पहुँचादिया जहां शिवजीकी आज्ञा से वह शिवका गण होगया और वेताल रुदन करते हुये राजासे यह वृत्तान्त कहकर यमराज के पासगया यह चरित्र देख राजा अतिआश्चर्य कर आप रुद्राक्ष मोललेने बाज़ार में गया और बहुत धन देकर उसे लिया और अतिप्रेमसे धारणकर दोनों लोक में जीतारहा अन्तकाल में शिवलोक में पहुँचकर आनन्दपूर्वक रहा अब दूसरी कथा सुनिये॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम एक और इतिहास कहते हैं जिससे रुद्राक्षकी बड़ाई और शिवजीकी प्रसन्नता प्रकट है इससे शिव-भक्ति अधिक होती है कि प्राचीन काल में कश्मीर नगरका राजा भद्रसेननामक था उसका पुत्र सुधर्मनामी बड़ावीर और बुद्धिमान् और शिवजीका भक्त था राजाके मन्त्री का पुत्र भी जिसका नाम तारक था अतिशीलवान् और विद्वान् था सो दोनों राजपुत्र और मन्त्रीके पुत्रमें परस्पर बड़ी मित्रता थी और वे दोनों बड़े सुन्दर थे उनके स-मान संसार में कोई विद्वान् न था दोनोंने बालअवस्था से विद्या सीखने में मन लगाया उन दोनोंने बिना उपदेश रुद्राक्ष की बड़ाई जानी और वे दोनों लड़कपनसे शिवपूजन करते थे और उन्होंने मणि की अभि-लाषा न करके सब शरीर में रुद्राक्ष पहना और उनको सब मनुष्यस्वर्ण और आभूषण पहननेको कहते थे पर उन्होंने किसीके वचनको न सुना और रुद्राक्ष धारण करनेको न त्यागा यहांतक कि राजाने भी उन्होंको बहुत कुछ कहा सुना पर उन्होंने एक न माना संयोगवश एक दिन राजाके यहां पराशर मुनि आये राजाने उनकी बहुतसी सेवा की जिससे वह बहुत प्रसन्न हुये राजाको मालूम था कि पराशर मुनि सर्वज्ञ हैं इस लिये उन्होंने हाथ जोड़ दण्डवत् कर स्तुति पढ़कर प्रार्थना की कि हे महाराज ! मेरा पुत्र और मेरे मन्त्री का पुत्र दोनों रुद्राक्षके धारण करनेमें ऐसे लीन हैं कि वह एक निमेषभर भी उसको नहीं त्याग करते यद्यपि हमने अपनी प्रजा सहित उनको उपदेश किया पर वह कुछभी नहीं सुनते वह रुद्राक्षके आभूषण पहनते हैं और उन्होंने किसीसे विधि भी नहीं पूछी केवल अपनीही बुद्धि से पहने रहते हैं हे महाराज ! इसका क्या कारण है और वह किसी संगति में भी नहीं बैठते यह कहकर पराशर मुनिने कहा कि तुम अपने पुत्र और मन्त्री

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुवन के पहिले जन्मका वृत्तान्त सुनो कि पूर्वकालमें एक वेश्या महानन्दानामी नन्दिग्राम में रहती थी वह बड़ी धनवती थी उसका बड़ा कुल था उसने एक बन्दर और कुत्तेको पालकर उन्हें नाचना सिखाया था और आपभी बहुत स्त्रियों समेत शिवके करतालका गीत बनाती थी और बन्दर और कुत्तेको रुद्राक्ष पहनाकर नचाती थी वह दोनों ऐसा नाचते थे कि देखनेवालों को अतिप्रिय भासताथा वह वेश्या इसी प्रकार उनको नचाकर प्रसन्न रहती और रात्रिदिन शिवभक्ति में डूबी रहती एकदिन उसके घरमें आग लगगई उस वेश्याने झटपट दोनों को बाहर निकाला जब वह मन्दिर जलकर भस्म होगया और अग्नि बुझगई तब वह बन्दर और कुत्ता उस गृह में न आये पर वनहीं में दुःखी फिरतेरहे और रुद्राक्ष धारण किये वह मरगये और शिवपुर में जाकर सुखीरहे वही बन्दर तुम्हारे घर उत्पन्न हुआ और वही कुत्ता मन्त्री के घर उपजा जो तुम्हारे पुत्र का मित्र है दोनों ने प्रथम जन्म का स्मरण करके रुद्राक्ष धारण किया यह शिवपूजन और रुद्राक्ष धारणकरके फिर शिवलोक में जावेंगे यह सुनकर राजाने पराशरजीसे विनती की कि आप दया करके हमारे पुत्रका भविष्यत् वृत्तान्त वर्णन कीजिये कि आगे क्या होगा? पराशरजीने राजपुत्रको बुलाकर शिरसे पांवतक देखा उन्होंने कहा कि इस समय इस पुत्रकी अवस्था द्वादश वर्ष की है और शिवजी की भक्ति में लीन है यह लड़का सातवें दिन अवश्य मरेगा मृत्यु अतिबलवान् है परकालके भी काल श्रीसदाशिव जी हैं मृत्यु शिवजी से भयवान् रहताहै जो शिवजी कृपा करेंगे तो तुम्हारा पुत्र मौतसे बच जावेगा तुमको उचित है कि इससे शिवपूजन करावो और अनेक प्रकारसे शिवजीको प्रसन्न करो बहुतसी युक्तियां आयुके बढ़ानेकी हैं पर सबसे सुलभ शिवका पूजन है और रुद्राध्याय सबसे अधिक मृत्यु से बचानेवाला है यह उसका फल है उसको पढ़

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पढ़कर शिवजीको स्नान करावे और फिर उसी निर्माल्य से आप स्नान करे और नाना प्रकार से मन लगाकर शिवजीका पूजन करे और निश्चय करके शिव बाना धारण करे उससे सर्वपाप नाश होते हैं और बहुत समय पर्यन्त जीता रहताहै हम इस बातको शिवकी सौगन्द खाकर कहते हैं उसको मृत्युका भय नहीं होता वह सदा प्रसन्न रहकर शिवजीका प्यारा होजाता है जिस तरह शतरुद्रीका अभिषेक करावोगे उतनाही उतने वर्षोंतक तुम्हारा पुत्र जीता रहेगा तुमको उचित है दशहज़ार पाठ शतरुद्रीका कराकर अपने लड़केको स्नान करावो कि दशहज़ार वर्षतक तुम्हारा पुत्र जीतारहे और उत्पात रहित शत्रुओं पर प्रबल और पापोंसे पवित्र अभयबलके साथ उतने समयतक वह राज्य करेगा राजाने यह मुनिका वचन सुन मानलिया और पराशरने बहुत से ब्राह्मणों को बुलाकर आप ब्राह्मणों सहित सातदिन में दश हज़ार शतरुद्रीका जप कराया और उसी जलसे राजाके लड़केको स्नान कराया यद्यपि वह सातवेंदिन मूर्च्छित होगया परन्तु अन्तमें चेत आया क्योंकि पराशरने उसकी भली विधि रक्षाकी और पराशर ने पूछा कि मूर्च्छा की अवस्था में क्या दशा हुई राजाके लड़केने कहा कि एक मनुष्य दण्डा हाथमें लेकर भयानकरूपसे मेरे बध करनेको आया उसी समय तुरन्त महावीरने पहुँचकर उस मनुष्यको भलीविधि मार पीट वरुणपाश से बांधलिया फिर और कुछ मैंने नहीं देखा फिर आपने हमारी रक्षा की यह सुन पराशर अतिप्रसन्न हुये और बहुत अशीषें दीं और राजा को पूर्ण धैर्य प्राप्त हुआ और मुनियोंने बड़ी सेवाकी इतने में हे नारद! तुम वहां पहुँचे राजाने तुम्हारा सन्मान कर तुमसे पूछा कि जो तुमने कोई बात आश्चर्य की देखी है तो कहो तुमने कहा कि हमने तो इस समय बड़ा आश्चर्य देखा है कि अभी मृत्यु तुम्हारे पुत्र के मारनेको आई थी सदाशिवजी इस बात को जानगये और वीरभद्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को गणों समेत भेजा कि मृत्यु का कुछ बल चलने न दें सो वीरभद्र मृत्यु को दूरकर कैलास पर्वतपर चलेगये और तुम्हारे पुत्र को अमृतके पीनेका स्वाद प्राप्त हुआ था तुम्हारा पुत्र दशसहस्रवर्ष पर्यन्त जीता रहेगा और निष्कण्टक राज्य करेगा और मन्त्री का पुत्रभी तुम्हारे पुत्र का सेवक रह फिर दोनों शिवजीके बड़े सेवक होंगे फिर दोनों शिवलोक में जाकर शिवजी के गणोंमें गिने जावेंगे हे नारदजी ! यह कहकर तुम अपने स्थान को चलेगये और सर्वसभाको अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई इस कथा के कहने सुनने से दोनों लोक में बड़ा आनन्द प्राप्त होता है ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी ! यह युक्ति हमने मुक्ति के प्राप्त होनेके लिये बताई और बहुतसी कथायें भी कहीं अब दूसरा उपाय कहते हैं जिसके धारण करने से शिवजीकी भक्ति बढ़ती है और जिस उपाय करनेसे व्यासजी पराशर के पुत्र सिद्ध हुये उसको हम विस्तारपूर्वक कहते हैं जानना चाहिये कि शिवकीर्तनका श्रवण और शिवकीर्तनका मनन शिवजीके पानेके लिये बहुत उत्तम है उचित है कि अपने कानों से शिवजीके नाम सुने और उसका मन से मनन करे इसके करनेसे भुक्ति मुक्ति दोनों पदार्थ प्राप्त होते हैं सब साधनों से यह उपाय सर्वोपरि है सो पहिले गुरुके मुख से शिवका यश सुने और आप उसका कीर्तन और मनन करे इस बातके करनेसे शिवजीका योग प्रकट होताहै और शिवजीका पद पाकर संसार की सर्व व्याधि निवृत्त होजाती हैं श्रवण इस तरह करे कि जैसे मैथुन और स्त्री की प्रीति के समान दृढ़तापूर्वक नियमरख शिवजीका यश सुनै और इन्द्रियोंको जीतलेवे और ऊंचे शब्द और अनुरागके साथ शिवजीके गुणों और नामोंको वर्णन करे वही गीत यातो वेदके पद हों वा देवताओं के बनाये हुये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अथवा मनुष्यकृतही हों उनके कीर्तन से सब दुःख दूर होकर आनन्द प्राप्त होताहै और सुनने और गानेके उपरान्त युक्तिपूर्वक मनसे उनको शुद्ध करना चाहिये और उसके साधन के लिये मनन अवश्य और उसका फल केवल सदाशिवजीका प्राप्त करना समझना उचित है और श्रवण सत्संगति से प्राप्त होता है फिर कीर्तन को जानना चाहिये फिर मननको समझो यह मनन सबसे बड़ा पद रखताहै और जो कि शिवजी की कृपासे सब कुछ होता है इस लिये उचित है कि शिवजी को हर प्रकार प्रसन्न करे यह उपाय अतिसुगम है इसी युक्ति से शिवजी का पद पाना सुगम है बड़ीभाग्यसे यह बात होती है इसकी महिमा वेद और पुराण गाते हैं जब सदाशिवजी प्रसन्न होते हैं तब यह उपाय मनुष्यको भासित होताहै इसके सिवाय और कोई उपाय सदाशिवजी के प्राप्त होने के लिये नहीं है क्योंकि बड़े २ सिद्धोंने मुख्य इसीको धारण किया है और सनकादिक जो सिद्ध के नामसे प्रसिद्ध हैं इसी युक्तिको सर्वोपरि बताते हैं और विष्णु और हम सदा इसकी प्रशंसा करते हैं और व्यासभी इसी युक्तिको जानकर जीवन्मुक्त और बड़े ज्ञानी हुये सो हम व्यासजी की कथा कहते हैं कि जब व्यासजीने वेदको चारभाग में बाँट रात्रि दिनके परिश्रम से सब पुराणोंको बनाया पर मनमें उनके सन्तोष न हुआ तब उन्होंने अतिचिन्तित हो तप के निमित्त पूर्ण उद्योग किया और ब्रह्मनदी के तट पर बैठ तप में प्रवृत्त हुये कि मन शुद्ध होवे और शिवका ध्यानकर इन्द्रियों को जीत समयतक तप करतेरहे शिवजीने ऐसा तप व्यासका देख अति प्रसन्नता से सनत्कुमारको व्यासजी के पास जानेकी आज्ञा दी सो जब सनत्कुमार ने व्यास को अपना दर्शन दे उनको विमान पर आरूढ़ किया तब तो व्यासने शिवजीको प्रसन्न जान सनत्कुमारकी पूजा की उस समय हमारे पुत्र सनत्कुमारने प्रसन्न होकर कहा कि हे व्यास !

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शुकाचार्यके पिता और मुनीश्वरोंके राजा तुम धन्यहो तुमने सब जीवों पर दयाकर वेदके भाग किये और तुमने सब पुराणों को सर्वोपकारार्थ बनाया तुम्हारा तो पुत्रादि सहित बड़ा परिवार है तुम उनके बिना क्यों तप करते हो इस समय तुम बड़े उचाट मालूम होतेहो तुम्हारे पास तो कोई दासादि भी नहीं हम चाहते हैं कि तुम इसका कारण वर्णनकरो यह सुन व्यासने प्रणाम के उपरान्त बिनती की कि वास्तव में आप सत्य कहतेहैं कि मैंने वेदोंको क्रमपूर्वक कर सब पुराणों को बनाया और दूसरों के लाभके लिये बड़ा श्रम किया मैंने चारों पदार्थ स्थापनकर अपनी बुद्धिमानी का फल सबको दिखाया और संसार में सबका गुरु प्रसिद्ध हुआ हूं पर तोभी मुक्तिका धर्म मुझको प्राप्त नहीं हुआ उसी के लिये मैं तप कर रहाहूं पर हमारी कामना पूरी नहीं होती हां अब कि तुम हमारे तपके प्रभावसे यहां आयेहो तो आश्चर्य नहीं है कि तुमने हमको अपना सेवक समझा हो तुम सर्वज्ञ हो और दूसरों की भलाई करना तुम्हारा काम है मुझको आशा है कि आप अनुग्रह करके वह उपाय बतावेंगे जिससे मुक्ति प्राप्त होगी और मन शुद्ध होगा यह सुन सनत्कुमार बोले कि शिवजीकी माया किसीके जाननेके योग्य नहीं वह माया सर्वसंसार को मोहित करने वाली है वह बिन शिवभक्तिके नाना प्रकारके दुःख देती है यद्यपि तुमने वेदोंके भाग किये और पुराणोंको बनाया पर धर्म नहीं जाना और न शिवजी का तत्त्व जाना मैं तुमसे कहताहूं कि शिवजी सब से श्रेष्ठ और शरणागतवत्सल हैं जिनके गुण वेद गाते हैं और उनको मुमुक्षुके नाम से प्रकट करते हैं ऐसे शिवका श्रवण और कीर्तन और मनन परममुक्ति के पानेका उपाय है इन तीनों उपायोंके साथ शिवका प्रेम हरप्रकारकी मुक्ति देताहै हमने बड़ेभाग्य से यह बात पाईहै और मुझको नन्दीश्वर ने बड़ी कृपासे इस बात को सुनाया था हम अपनी कथा कहते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसके श्रवणसे तुम्हारे संशय दूर होजावेंगे कि पूर्वकाल में हम भी ज्ञानहीन होकर संशयके समुद्रमें वृथा भ्रमण करतेरहे और परममुक्ति के पानेका उपाय न जाना इसीलिये हम तीनों लोक में समय तक पर्यटन करते रहे पर मेरे मनमें निश्चय न हुआ और शिवकी माया से मोहित हो घूमते २ मन्दराचल पर्वत में गये और एक स्थान पर अचल बैठकर एकाग्र मनकर समय तक तपमें लगेरहे और इन्द्रिय-जितहो शिवका स्मरण किया सो शिवने मुझ पर प्रसन्नहो नन्दीश्वर को आज्ञा दी और नन्दीश्वर मेरे संदेह दूर करने के निमित्त आये जिनको देखकर मैंने प्रणाम किया और आगमन का हेतु पूछा तब नन्दीश्वर जो शिवके अंश और सबगणोंके राजा हैं उन्होंने मुझपर अनुग्रह कर शिवकी आज्ञानुसार मुझ से कहा कि हे सनत्कुमार ! शिवके यश का कीर्तन, श्रवण और मनन मुक्तिका देनेवाला है इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं है शिवने हमको बड़े उपाय से बताया है इसके करने से बहुतों को मुक्ति मिलचुकी है इस लिये तुमको उचित है कि श्रवणादि तीनों कर्म दृढ़तापूर्वक करो हे नारद ! यह उपदेश देकर नन्दीश्वर शिवके समीप चलेगये और हमको बहुतही आनन्द प्राप्त हुआ तुमको उचित है कि तुमभी यही तीनों उपायकर धर्म और मुक्ति पावो इससे उत्तम और कोई युक्ति नहीं यह शिक्षा दे सनत्कुमार अपने विमान पर आरूढ़ हो चलेगये यह कथा सुन नारदने ब्रह्मासे पूछा कि मैंने श्रवणादि साधन मुक्तिकी युक्ति सुनी कदाचित् कोई मनुष्य यह उपाय न करसके तो इससे कोई और उपाय सुगम है या नहीं ब्रह्मा ने कहा कि जो कोई मनुष्य यह तीनों साधन न करसके तो उसको उचितहै कि शिववीरलिङ्ग की पूजा भक्तिके साथ करे और शिववीरलिङ्गकी पूजासे उसका मनोरथ पूरा होसक्ता है और षोडशो-पचार की सामग्री इकट्ठीकर उसी शिवलिङ्ग की पूजाकरे और अति

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रेमसे पूजन करके शिवजीको रिझावे ऐसा मनुष्यभी परममुक्ति पाता है सो ऐसी पूजा करने से बहुत मनुष्य अपने मनोरथ और परममुक्ति पाचुके हैं पर भक्ति अवश्य चाहिये और श्रवणादि तीनों उपायों बिना शिवजीकी पूजासे भी मुक्ति मिलती है हे नारदजी ! अब और क्या सुनने की इच्छा है ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे ब्रह्मन् ! हम यह पूछते हैं कि सब देवता वीररूप में पूजे जाते हैं या शिवजीका वीरलिङ्ग पूजा जाता है क्या कारण है कि शिवजी का केवल वीरलिङ्ग पूजा जावे और दूसरे देवताओं का नहीं ब्रह्माजी बोले कि इस तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देनेवाला सिवाय शिवजी महाराज के दूसरा नहीं है उन्हों ने यह बात मुझसे कहीथी वही चरित्र हम तुमको सुनाते हैं जिसके सुननेसे दोनोंलोक में अप्रमेय आनन्द मिलता है कि शिवजी निष्केवल ब्रह्मस्वरूप निर्गुण सगुण और शिवलिङ्गस्वरूप और निराकारहैं और वीरस्वरूपही शिवजीको समझो जिनका वर्णन साकार कियाजाता है और सकलाकलभी शिवजीको केवलीभाव करके कहते हैं और वेदभी शिवजी को ब्रह्मके नाम से बखानते हैं इस लिये लिङ्ग और वीर दोनों में सदाशिवजी सबलोगोंकी पूजाके योग्य हैं किसी दूसरेके लिये ब्रह्मका नाम नहीं होसक्ता और तीनोंलोक सदाशिवजीके सेवक हैं क्योंकि सिवाय शिवजी के और किसी में निष्कलङ्कत्व नहीं है इसीसे और किसीने अपने लिङ्गकी पूजा कराना नहीं चाहा सब देवता और जीव बड़े वर्णन कियेगये हैं उनमें ब्रह्मतत्व अधिक नहीं है वीरलिङ्ग सब देवताओंके पूजनेके योग्य है ऐसी बातके समझलेने से बहुतही आनन्द प्राप्त होताहै यह बात वेदमें प्राचीनसे है और सिद्धि देनेवाली है जिसके पढ़नेवाला सर्वसिद्धि करता है इसी बातको नन्दीश्वरने सनत्कुमार से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा था सनत्कुमार बोले कि हे नन्दीश्वर ! तुमने शिवजीके चरित्र अतिपवित्र वर्णन किये पर जोकि तुमने और देवताओंकी वीरपूजा वर्णन की पर शिवजीके लिङ्ग की पूजा को धारण किया इस बातके सुननेसे मुझे सन्देह उपजा है इससे मैं चाहताहूं कि शिवजीके लिङ्ग का वर्णन मुझे सुनाइये नन्दीश्वर ने कहा कि व्यतीत कल्प में जब प्रलय होगया तब ब्रह्मा और विष्णुमें बड़ायुद्ध मचा उस समय शिवजी दोनोंके अहंङ्कार दूर करनेको खम्भेके समान जो आदि अन्तसे रहित था प्रकट हुये और उनको लिङ्गके समान लक्षण प्रतीतहुये और दोनोंके अहंकारको नष्ट कर और परमधर्मकी शिक्षाकी उसी समयसे शिवजी का लिङ्ग प्रचलित हो लिङ्गवीर की पूजा तीनों लोकमें प्रारम्भ हुई इस पर हम पूर्वकालकी और कथा सुनाते हैं कि पूर्वकाल में विष्णु सब देवताओंके राजा अपने बिछौनेमें आनन्द करते थे कि उसीसमय ब्रह्मा सुगमतासे स्वाभाविक विष्णुके आनन्दस्थानमें पहुँचकर विष्णु को लेटेहुये देख कोपित होकर कहा कि हे अहंकार के भरेहुये ! तुम कौन हो तुम हमारे आनेपर भी लेटे रहे तुरन्त उठो और सब अहंकार को दूरकर हमको देखो हम तुम्हारे स्वामी कृपा करके तुम्हारे पास आये हैं हम तीनों लोक में श्रेष्ठ और प्रजाके उपजानेवाले हैं विष्णु बोले कि हे ब्रह्मन् ! हमारे पुत्र ! हमने जान लियाहै कि तुम आये हो आनन्दसे स्थितहोवो ऐसे कटुवचन क्यों कहते हो ब्रह्माने कहा कि हे विष्णु ! तुम किस २ के पुत्र नहीं हुये हो तुम ने दुर्बुद्धि संचितकर धर्म अपने हृदयसे दूर किया क्या तुम नहीं जानते हो कि हमारे नाम स्वयम्भू, अज, परमेष्ठी, ब्रह्मा, विधाता आदि बहुत हैं मैं तुम्हारा पिता और तीनों लोकका धारण करनेवाला हूं तुम ने क्योंकर हमको अपना पुत्र कहा तुम संशयसे अपने को स्वामी जानते हो हमारा उपजानेवाला तीनों लोकमें कोई नहीं तुम्हारी बुद्धि जाती रही यह सुन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विष्णु बोले कि हे पुत्र ! हम जगदीश हैं तुम हमारी नाभिसे उपजे हो और माया से भूले हो जो अपने को सबका स्वामी समझते हो निदान इसी प्रकार ब्रह्मा और विष्णु बहुत समय तक बड़ा विवाद करतेरहे जिसका मुख्य आशय अपनी २ बड़ाई बतानेका था सो दोनोंमें बड़ा युद्ध हुआ और दोनों ओर से हरप्रकार के शस्त्र और बाण चले और दोनों ओर के सम्बन्धी और सहायक सहायता के लिये दोनों ओर खड़े रहे और दोनों ओरके गणोंने अपना बल युद्धस्थानमें दिखाया और अपने २ विमानोंमें सब देवता आरूढ़ होकर उस स्थानमें आये और ऐसा युद्ध देख आश्चर्य करनेलगे पर शिवजीकी मायासे किसी ने मुख्यभेद न जाना विष्णुने माहेश्वर बाण छोड़ा जिससे ब्रह्माने क्रोधित हो पाशुपत्यास्त्र त्यागा जिससे बहुतही प्रकाश फैलगया और दोनों बाण परस्पर ठहर कर प्रलय करनेलगे यह दशा देख सब देवता भय खा कहनेलगे कि यह कैसा प्रलय असमय होता है उचितहै कि हम सब शिवजी की शरणमें जाकर बचें ऐसी सम्मतिके उपरान्त सब देवताओं ने शिवजी के समीपजा प्रणवरूप शिवजीको देख प्रणाम किया और शिवजी और शिवरानी को अपने मुख्य चिह्नों से देख स्तुति करनेलगे ॥

सोलहवां अध्याय ॥

नन्दीश्वरने कहा कि देवताओं की स्तुति सुनकर सदाशिवजी ने प्रसन्नहो अपने गणोंको बुलाया वह सब आये फिर देवताओं से शिवजीने कहा कि हे पुत्रो ! तुम कहां चले हो हम तुम्हारे मुखों को चिन्ता से मुरझाया हुआ देखते हैं यह सुन सब देवताओं ने विनय की कि ब्रह्मा और विष्णु में बड़ा युद्ध होरहा है उनके सहायक और परिवार के मनुष्य बहुतही लड़ रहे हैं जाना जाताहै कि अभी प्रलय होने वालाहै तीनोंलोक जलेजाते हैं और हम भी ऐसी अग्निसे जल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर आपकी शरणमें आये जो उचित हो वह कीजिये शिवजीने कहा हम वहां चलेंगे सो अपने गणोंको तय्यारीके लिये आज्ञा दी तो गण शस्त्र सहित उद्यत होगये बाजे बजने लगे और भद्रनाम रथ बाणोंसे भराहुआ आया जिस में शिवजी और शिवरानी अपने पुत्रों सहित आरूढ़ होचले और देवताओं सहित युद्धस्थलमें पहुँचे और दोनों को अपनी मायामें मोहित लड़तेहुये देख अनुग्रह किया और उन दोनों के मध्यमें ज्योतिरूप होकर प्रकट हुये और उस अग्निके खम्भकी गति किसी ने न जानी और दोनोंके जलते हुये बाण दूर हुये जिससे ब्रह्मा और विष्णु आश्चर्य में हुये और परस्पर मिलकर युद्धका त्याग किया और प्रतिज्ञा की कि जो इस ज्वाला के खम्भेका आदि अन्तका पता लेआवे वही बड़ा है सो विष्णु शूकररूप धर पृथ्वी के नीचे और ब्रह्मा हंसका रूप धर आकाशको चले और जब दोनों ने आदि अन्त न पाया तो युद्धस्थल में लौट आये पर ब्रह्मा केतकी फूल को साक्षी कर गवाही के लिये अपने साथ लाये कि वह झूंठ कह देवे कि ब्रह्माने उस ज्वालाके खम्भके अन्तको देखा है और विष्णुने अन्त न पाने का हाल आकर कहा ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

नन्दीश्वर बोले कि शिवजी विष्णुकी सत्यता पर अतिप्रसन्न हुये और ब्रह्माके मिथ्यावचन बनावट और दुर्बुद्धिको देख कोपित हो उनको शाप देनेके निमित्त अपने मुख्यरूप से प्रकट हुये जिनको देख विष्णुने स्तुति की उसको सुन शिवने प्रसन्न हो कहा कि हम तुम्हारी सत्यतासे प्रसन्न हुये और हम तुमको वर देते हैं कि तुम हमारे समान होगे अबसे बराबर तुम्हारीभी पूजा और गुण वर्णन हमारे समान होगा और कोई मनुष्य हम तुम में भेद न समझे हमने तुमको हर प्रकार अपना करलिया फिर ब्रह्मासे क्रोधित होकर कहा कि हे ब्रह्मन् !

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमने दुष्टतासे संसार के आनन्द के निमित्त बड़ाईके लिये अपने धर्म को छोड़ा और तुमने इच्छा की कि ऐसा झूंठ बोल तीनों लोकमें हम अपनी पूजा करावें और छलसे साक्षीभी लाये इस लिये हम तुमसे कहते हैं कि तीनों लोक में तुम्हारी पूजा न होगी कोई देवता और मुनिआदि तुमको नहीं मानेगा यह सुन ब्रह्माने लज्जित हो विनयकी कि वास्तवमें हमने शुद्धमार्गको छोड़ा पर आप मेरा अपराध क्षमा करें मैंने मूर्खतासे आपको नहीं जाना शिवजीने यह सुन प्रसन्न हो कहा कि तुम्हारी विनती से मैं प्रसन्न हूं तुमको युक्ति से वर दिया जावेगा वैतानिक मखकर्मादि में तुम गुरु हुआ करोगे और पूरा भाग पावोगे फिर शिवने केतकीके पुष्प से कहा कि तुमने जो धर्म के विरुद्ध झूंठ साक्षी दी है सो तुम आज से हमारी पूजा के काम न आवोगी सो केतकी ने दुःखी हो शिवसे विनय की कि मेरा अपराध क्षमा हो क्योंकि सब पाप तुम्हारे स्मरण से नष्ट होजातेहैं और मैं तुमको शरीर सहित देखतीहूं मुझको क्योंकर दुःख होसक्ताहै तुमको वेद और पुराण सब शरणागतपालक कहते हैं हमारे सर्व पाप नष्ट करो शिव प्रसन्न हो बोले कि तुम हम पर वितानके द्वारा चढ़ोगी इसी प्रकार सबपर शिवने कृपापूर्वक देखा उस समय ब्रह्मा और विष्णुने दाहें बायें खड़ेहो अपने परिवार सहित शिवकी पूजा की जिससे शिवने प्रसन्न हो कहा कि तुम दोनों मुझे प्राण के समान प्यारे हो यह आजका दिन अतिपवित्र है यह दिन बड़ाही मुक्ति देनेवाला है इसका नाम शिवरात्रि है यह प्रतिदिन व्रत करने से व्रतियों को बड़ा आनन्द देता है इस दिन व्रत करो और हमारी लिङ्गपूजा करो तुम्हारे दोष और पाप नष्ट होजावेंगे और जोकि हम लिङ्गस्वरूप होकर प्रकटे इससे इस स्थान का नाम लिङ्गालय होगा और यह लिङ्ग हमारा जो बहुत बड़ा है यह आप सूक्ष्मरूप होकर रहेगा और हम सबकी पूजा के निमित्त इस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लिङ्ग में प्रवेश करेंगे इस स्थान का नाम अरुणाचल होगा इस स्थान पर हमारी पूजा करके परमपद प्राप्त होगा इन तीनों स्थान की बड़ी महिमा है यह कह शिवने सब मरी हुई सेनाको जिला दिया और चाहा कि ब्रह्मा और विष्णुआदिक के मनसे संशय दूर होजावे फिर इनको गर्व न हो इसलिये शिवने कहा कि तुम सब इस बातको सुनो हम सब वेदोंका सार वर्णन करते हैं कि हमारे दो स्वरूप हैं एक निष्कल दूसरा सकल और हम ब्रह्म, अलख, सर्वसृष्टिके प्राण हैं पहिले हम खम्भरूप से उपजकर फिर सर्वअङ्गों समेत प्रकट हुये यह हमारा निष्कल ब्रह्मस्वरूप है और सगुणरूप धारण करने से सकल के नाम से प्रसिद्ध होताहूं ये दोनों हमारे रूप प्रसिद्ध हैं तब तुम्हारे ये दोनों रूप सिवाय हमारे और किसके हैं तुम दोनों ने अपने अपने को परस्पर स्वामी समझ इतना युद्ध किया हम इस स्थान पर निराकाररूप से आये तुमको उचित है कि फिर ऐसा काम मत करो और भ्रममें न पड़ो हम परब्रह्म परमात्मा हैं तुम इस बातका निश्चय रक्खो और हमारे लिङ्गकी पूजाकरो तुम्हारे मनोरथ इसीसे पूरे होंगे हमारा लिङ्ग और वीर दोनों पूजनेके योग्य हैं दोनोंमें कुछ भेद नहीं है और जगत्कृति पांच प्रकारकी है उसे हमारी लीला जानो अर्थात् संसारकी उत्पत्ति पालन और प्रलय और अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष इन पांचों कर्मों में पांच देवता हैं अर्थात् ब्रह्मा-विष्णु और रुद्र और महेश और हम इनमें से चारों देवता तो शरीर सहित दिखाई देते हैं पर पांचवां दिखाई नहीं देता और तुम दोनों ब्रह्मा और विष्णु शक्ति से उपजे हो और रुद्र और महेश यह दोनों हमारीही देह हैं यह दोनों अविकृत हैं और तुम विकृत हो यह कह शिव अन्तर्द्धान हुये और ब्रह्मा विष्णु आदि को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और शिवजीकी स्तुति कर अति प्रसन्नता से अपने २ लोकको चले गये और नन्दीश्वर से यह पवित्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कथा सुन सनत्कुमारभी अपने स्थानको गये हे नारद ! हमने यह शिवचरित्र वर्णन किया तुम भलीभांति निश्चय से समझो कि शिव अपनी भक्ति अतिप्रसन्नता से देते हैं जो मनुष्य शिवके चरित्र पढ़ता सुनता है वह लोकमें आनन्द उठा अन्तमें शिवपुरी को जाताहै और शिवका गण हो फिर आवागमनमें नहीं पड़ता ॥

इति श्रीशिवपुराणेब्रह्मनारदसंवादे
नवमखण्डःसमाप्तः ॥ ९ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवपुराण भाषा ॥

दशवां खण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

सूतजी बोले हे शौनको ! नारदने शिवरात्रिव्रत के सुनने के उपरान्त कहा कि हे पिता ! जितने शिवके व्रत हों वह आप सब वर्णन करें ब्रह्मा बोले कि शिवजीके असंख्यव्रत हैं जो भुक्ति और मुक्ति देते हैं पर नीचे लिखेहुये बारह व्रत अतिआवश्यक और प्रसिद्ध हैं जिनको याज्ञवल्क्य ने अपनी स्मृति में वर्णन किया है उन व्रतों को अवश्य करना चाहिये क्योंकि उनके किये विना सिद्ध नहीं होता यह बारह व्रत शिवको अतिप्रिय हैं इसीसे जो मनुष्य परमशैव हैं वह इन व्रतों को अवश्य करते हैं इनकी महिमा आप सदाशिव ने पार्वती और विष्णुसे वर्णन की है जिनके द्वारा यह बारहों व्रत संसारभरमें प्रसिद्ध हुये वह यह हैं दोनों अष्टमी और दोनों हर तिथि अर्थात् एकादशी और दोनों त्रयोदशी और दोनों चतुर्दशी और जितने महीनेमें चन्द्रबार पड़ें यह सब मिलकर बारह व्रत हर महीनेमें हुये और शिवजी की आज्ञा है कि अष्टमी के व्रत में फलाहार करना चाहिये और शुक्लपक्ष की एकादशी को निर्जल व्रत करना उचित है पर कृष्णपक्षकी एकादशीको भोजन करलेना उचित है इसी प्रकार दोनों त्रयोदशी में भोजन करना उचित है और शुक्लपक्ष की चतुर्दशी में भोजन करने की आज्ञा है पर कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में नहीं वह निर्जलही रहनी चाहिये और सब प्रहरों में शिवजी की पूजा करनी चाहिये और सब सोमवार के व्रतको भोजन करनेकी आज्ञा है और इस व्रतमें शिवकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूजा शक्तिसहित करनी उचित है कि प्रतिमासमें यह सब बारहों व्रत धारणकरे और अतिप्रेमसे शिवकी पूजा करे और अपनी सामर्थ्य भर शिवभक्तोंको भोजन करावे और यथाशक्ति दानदे और इन बारहों व्रतों में से जो मनुष्य एक व्रतभी नहीं करता उसको पतित कहते हैं उस पर शिव किसी दशामें भी प्रसन्न नहीं होते और वह मनुष्य दोनोंलोक में दुःखी रहता है और जो शिवका भक्त सब व्रतोंको करता है वह परमपावन है कदाचित् कोई मनुष्य इन बारहों व्रतोंमेंसे मास भरके बीच एकभी करता है वहभी शुभ है दोनों प्रकार के व्रत रखनेवाले शिव प्रसन्न होते हैं हे नारद ! चार चीजें भुक्ति और मुक्ति देनेवाली हैं वह यह हैं पहिला शिवका पूजन दूसरा रुद्रजप तीसरा शिवका व्रत चौथा काशी में मरना यह चारों बातें शिवको प्रिय और मुक्ति पाने की हैं और संसार में बड़ा सुख देनेवाली हैं और जितने व्रत हमने ऊपर वर्णन किये उन सब में शिवका व्रत अर्थात् शिवरात्रि बड़ा पद रखती है उसको सब वर्णाश्रम और बालक और युवा और स्त्री भी रखसक्ती हैं यह व्रत अकाम सकाम दोनों रीतोंसे रक्खाजाता है और इस व्रत के करनेसे शिवपुरी प्राप्त होती है और यह व्रत चारों फलका देनेवाला और सब व्रतों का सर्वोपरि है और यह व्रत असंख्य हत्याओंका मिटानेवाला है और असंख्य धर्मों का कृपा करनेवाला है इस व्रत की महिमा शेष और शारदा और हम और विष्णु पूरे तौर से वर्णन नहीं करसक्के जिस तरह कि शिवकी महिमा असंख्य है इस व्रत के करनेसे बहुतोंने मुक्ति पाई है और दोनों लोकमें प्रसन्न रहे हैं कोई मनुष्य चाहे कैसाही पापी हो इस व्रतके करने से वह पवित्र होजाता है इस व्रत को व्रतराज कहते हैं और सब व्रत इस व्रतके सामने शिर झुकाये रहते हैं संसार में जितना धर्म जैसे कि तप योगादिहैं उनमें कोई व्रत इसके समान नहीं यह व्रत शिवको प्राणके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समान प्रिय है वेद की आज्ञा है कि शिवको यह व्रत पार्वती के समान प्रिय है और शिव उसको षणमुख के समान जानते हैं और यज्ञदत्त ब्राह्मण के पुत्र गुणनिधि और सुमति स्त्री और व्याधादिने अज्ञानताकी अवस्थामें इस व्रतको करके कैसी गति पाई है और देवता और मुनि आदिने इस व्रतके रखने से क्या २ पदार्थ नहीं पाये हे नारद ! हम कहांतक वर्णनकरें तुम इस व्रतको सर्वोपरि जानो यद्यपि प्रतिमासकी कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको उक्त शिवव्रत होता है पर माघ मासमें इस व्रतको आवश्यक वर्णन किया है और इसी वचन के अनुकूल फाल्गुन मासकी चतुर्दशीको भी यह शिवरात्रि व्रत उत्तमोत्तम समझा गया है जो आधीरात तक वही शिवतिथि शिवव्रत कहा जाता है यह शिवव्रत करके जो उसी दिन पारण करे तो क्या बात है बड़ी भाग्यसे शिवरात्रि व्रत का पारण उसीतिथिके भीतर मिलता है पर चन्द्रमाके अस्त पर नहीं हे नारद ! शिवरात्रि व्रत करके पारण बहुत शोच विचारकर करना चाहिये और रात्रिके चारों प्रहरों में शिवजीकी चार पूजा करनी चाहिये रात्रिके समय पारण नहीं करना चाहिये और चन्द्रास्तके संगम को छोड़ना चाहिये चन्द्रमा के संगम बिन दिनमें पारण करनापड़े तो बड़ी भाग्यसे मिलता है पर जो चौदसि तिथि न मिले तो अमावास्या के योगमें पारण करना उचित है यह शिवरात्रि व्रत जो हरवर्षमें एक बेर होता है सर्व प्रकारकी मुक्तिका दाता है इसके धारण करनेसे सर्वप्रकार के दुःख दूर होते हैं यहांतक कि ब्रह्महत्याकोभी दूरकरनेवाला है इसके सिवाय और कोई व्रत संसारमें नहीं है जो कोई मनुष्य इसव्रतको नहीं करता वह असंख्य नरकोंमें नानाप्रकारके क्लेश उठाता है और उसका कोई कार्य पूर्ण नहीं होता और वह मनुष्य चाण्डालके समान है और वह मुक्ति नहीं पाता और संसार में रोगों से ग्रसित रहता है और उसका सब परिवार नष्ट

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होजाता है कदाचित् अज्ञान अवस्था में भी यह व्रत होजावे तो व्रती मनुष्य निश्चय करके अच्छी गति पाता है चाहे कोई पापी भी इस व्रतको करे तो निश्चय करके दोनों लोकमें प्रसन्न हो और जो मनुष्य निश्चय करके इस व्रतको धारण करेगा उसको देखकर यमराज भी भयभीत रहते और शिवजी प्रसन्न रहकर उसको हरप्रकार अपना गण बनालेवेंगे और सर्व पदार्थ उसको कृपा करेंगे और उसका सर्व कुल मुक्ति पावेगा और उसकी देवता और मुनि सब प्रतिष्ठा करेंगे और हम और विष्णुभी उसको बहुत मानेंगे चारों पदार्थ उससे दूर न होंगे हे नारद! अब हम चारों प्रहरके पूजाकी विधि वर्णन करते हैं॥

दूसरा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि प्रातःकाल उठकर नित्य कर्म करे और अतिप्रसन्नता से शिवालयमें जाकर शिवजीकी स्तुति करे पहिले अति पवित्रताके साथ पानी हाथमें लेकर संकल्पकरे इसप्रकारपर कि हे श्रीसदाशिवजी! मैं तुम्हारा व्रत करता हूं वह पूर्ण हो और कोईउ समें विघ्न न हो और ऐसी इच्छा करने के अनन्तर सर्वसामग्री पूजन की संग्रहकर उस स्थानपर जहां कोई प्रसिद्ध शिवलिङ्ग हो वहां जावे और शिवजी के दक्षिण और पश्चिम की ओर आसन लगाकर पूजन की सामग्री रक्खे और यथाशक्ति स्नान करके अच्छे वस्त्र पहिनकर बैठे और तीन बेर आचमन करके पूजनकरे और जैसा चाहिये वैसा मन्त्रों सहित पूजनकरे और नाच और गानसमेत स्तुति प्रवृत्त होकर शिवजीका मन्त्र जपकरे फिर यथाविधि प्रणाम करे और मन्त्रों सहित पार्थिवपूजा भी करे पर जो मनुष्य जिसकी पूजा करता हो प्रथम उसकी पूजा करके फिर पार्थिवपूजनकरे और फिर शिवलिङ्ग जो उस स्थानपर स्थापित हो उनका पूजनकरे और शिवरात्रिमाहात्म्य आप पढ़े या जो आप अनपढ़ हो तो औरसे श्रवणकरे और कथा कहनेवाले की नानाविधिसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेवाकरे और अच्छे २ भोग शिवजीको लगाकर चारों प्रहर में संकल्प करके एक २ लिङ्गकी पूजाकरे और रात्रि को जागरण करके बड़ा उत्सवकरे और फिर प्रातःकाल दूसरी बेर स्नान करके शिवपूजनकरे और गाल बजाकर गावे नाचे और बारम्बार दण्डवत् और स्तुति कर दोनों हाथ जोड़ शिरझुकावे और आठों प्रकार दण्डवत्कर बिनती करे कि मैंने यथाशक्ति शिवरात्रि व्रत किया है और श्रद्धा और उद्योगपूर्वक आपके प्रेममें मन लगाया है मुझको सेवक जान प्रसन्न होकर मेरा मनोरथ पूर्ण करो यह कह पुष्पाञ्जलि भी शिवजी पर छोड़दे और ब्राह्मणों को प्रसन्नतासे दानदे और शिवके भक्तों और द्विजों और यतियोंको उत्तमोत्तम भोजन करावे और अपनी शक्तिके अनुसार उनकोभी दान देकर शिवजीका ध्यान कर आपभी भोजनकरे अब हम चारों प्रहरके चारों पूजनोंकी विधि विस्तारसे वर्णन करते हैं कि संध्या के समय पहिले संध्यादि सर्व नित्यकर्म से निश्चिन्त हो प्रथम प्रहर में इस प्रकार पूजाकरे कि सब सामग्री इकट्ठी कर शिवजीके दोनों लिङ्ग अर्थात् पार्थिव और शिवलिङ्ग जो उस स्थानपर हो पञ्चामृत से जुदा २ मन्त्र पढ़कर पूजाकरे और जलधारा को हरबेर करके शिवजीका लिङ्ग धोवे और जलधारा करनेमें एकसौ आठ मन्त्र पढ़े और शिवकी पूजाकर सब पूजाकी सामग्री मन्त्रोंके साथ चढ़ावे यातो अपने गुरु के दिये हुये मन्त्रसे या शिवजीके पञ्चाक्षरीमन्त्र से या केवल शिवके नामसे शिवपूजाकरे और चन्दनादि सर्वसामग्री और अक्षत और काले तिल और कमलपुष्प और उत्तमोत्तम कर्वीर अर्थात् कनेर यह सब आठ२ शिवजीके नाम लेकर चढ़ावे और उत्तम सुगन्धित धूप देकर बैठ आरती उतारनी चाहिये और उत्तम पकवान नैवेद्य के लिये लाकर श्रीफल अर्थात् बेलका अर्घ्य दे और दण्डवत् करके जैसा चाहिये ध्यानकरे और शिवजीका बाना धारणकर गुरुका दिया हुआ मन्त्र

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जपे पर जो कोई दूसरे देवताका भक्त है तो वह पञ्चाक्षरी मन्त्रका जप करे और गोमुद्रा शिवजीके आगे दिखाकर शिवजीका तर्पण जलमें बैठकर करे और पांच ब्राह्मणोंको भोजन करावे जो सामर्थ्य न हो तो केवल एकब्राह्मण के भोजनका संकल्प करे और जबतक कि पहिला प्रहर बीत न जावे तबतक हरप्रकार का उत्सव करे और पहिले प्रहरके पूर्ण होनेपर पूजाफल देकर विसर्जन करदेवे जब दूसरे प्रहरका आरम्भ हो तो इसमें भी वही पूजा का विधान है पर कुछ अधिक है वह यह है कि जौका लखोहर और कमलपुष्प पहिले प्रहरसे दूने चाहिये और घृत शहद सहित दूध की नैवेद्यलगा बीजपूरका अर्घ्य दे और पहिले से दूना शिवजीका जप करना चाहिये और तृतीय प्रहर की पूजा में इतना और विशेष चाहिये कि गेहूं का लखोहर और मदार के फूल और नाना प्रकारके धूप दीप और नैवेद्यके लिये पुवा और बहुत प्रकारके शाक और तरकारियां और अर्घ्यके लिये पका अनार और कर्पूर की आरती प्रथम प्रहर से दूनीकरे और शिवजी के मन्त्र का जप करे और चौथे प्रहरमें इतना अधिक है कि मूंग और उड़द और प्रियंगु अर्थात् काकुनका लखोहर सातों नाजों समेत और शंखका फूल अर्थात् शंखाहूली वा कौड़ियाला और मिष्ट भोजन जो अन्नसे बनाये गये हों उनकी नैवेद्य अथवा उड़द की नैवेद्य अच्छेप्रकारसे बनवाकर लगानी चाहिये और नाना प्रकारके फलों अथवा केलेके फलका अर्घ्य देना चाहिये और पहिले से दूना शिवजीके मन्त्रका जप कर बड़ा उत्सव मनाना चाहिये और चारों प्रहर में असंख्यही बिल्वपत्र शिवजी के ऊपर चढ़ावे क्योंकि यह शिवजीको अतिप्रिय है और नाना प्रकार के उत्तम २ वस्तु बनवाकर अतिप्रेमसे शिवजी के ऊपर चढ़ावे और बहुत मनुष्योंको इकट्ठा करके चारों प्रहर नाच, गाना आदि उत्सव करे और जागरण भी करे दूसरे प्रकारका संकल्प

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनमें न लावे और शिवरात्रिमाहात्म्यको सुने और अतिप्रसन्नता से रातभर बितादे और एकही आसनसे चारों प्रहर में बैठे और लोभ न करके बहुतही रुपया खर्च करे जब सूर्य उदय हो तब ब्राह्मण को दण्डवत्कर उठे और स्नानकर फिर शिवजीकी पूजा करे और मन में अतिप्रसन्न होवे और नाना प्रकार के उपहार संग्रहकर शिवजी का अभिषेक शुद्ध जलसे करे और संकल्प किये हुये ब्राह्मणों के सिवाय और ब्राह्मणों कोभी भोजन करावे और प्रेमसे अपने जातिके मनुष्यों कोभी भोजन करावे और सिवाय इनके और मनुष्यों कोभी जितने कि आजावें भोजन करावे और ब्राह्मणोंको भलीप्रकार दान दे कुछ रुपये और कोषका लोभ न करे बरन सबका पूर्ण आदर करे यह ऊपर लिखे हुये सब कार्य धनवान् मनुष्यों के लिये वर्णन किये गये पर दरिद्रता और कुछ धन पास न होने पर जो ऊपर की रीतें न होसकें तो कुछ दोष नहीं है फिर शिवजीकी बहुतही स्तुति और दण्डवत् करके प्रीतिके साथ पुष्पाञ्जलि शिवजी पर छोड़दे और दोनों हाथ जोड़ शिवजी को नम्रतासे बार २ दण्डवत् करे और ब्राह्मणोंसे आशीर्वाद ले शिवजी को और देवताओंसहित विसर्जन करे फिर आप ब्राह्मणों की आज्ञा ले अपने परिवारसहित भोजन करे हे नारद! इस तरह सब महीनों में शिवरात्रि व्रत कर उसका उद्यापन किया करे तब पूर्णफल पावे और इस लोक में आनन्द से रह परलोक में शिवजी के समीप जावे हमने विष्णुसहित जिसतरह यह शिवरात्रि व्रत शिवजीसे सुना है उसीतरह से तुमको सुनादिया अब और क्या सुनने की इच्छा है॥

तीसरा अध्याय॥

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि आपने शिवरात्रि व्रत तो वर्णन किया उसका उद्यापन सुनने की इच्छा है जिसके करने से शिवजी का व्रत पूर्ण और मन का मनोरथ पूरा होता है और शिवजी अपने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भक्तपर प्रसन्न होते हैं और दोनों लोककी कामना पूरी होती है ब्रह्माजी बोले कि हम शिवरात्रि व्रत का उद्यापन वर्णन करते हैं जिसके करने से यह व्रत परिपूर्ण होजाता है मन लगाकर सुनो कि जब शिवरात्रि व्रत चौदह वर्षतक बराबर करलेवे तब उसका उद्यापन इस प्रकार करे कि त्रयोदशी के दिनको संयमपूर्वक रह चतुर्दशीको अन्न जलरहित व्रत करे जैसा हम पिछले अध्यायमें वर्णन करचुके हैं और दिव्यमण्डल शिवका धाम जिसको गौरीतिलक कहते हैं रचकर वहां पर लिङ्गतोभद्र और सर्वतोभद्र बनावे और वहां आठ कलश स्थापित कर फल और फूलों और वस्त्रोंसे पूर्णकरे उसके मध्यमें एक हाटकमयी कलश रक्खे जिसके ऊपर शिव गिरिजा और नन्दीश्वरकी प्रतिमा सुवर्णसे बनवा कर स्थापित करे और अपनी सामर्थ्य भर यह तीनों मूर्ति सोने की बनवावे और दीपकजला दाहिनी ओर रक्खे और बड़ी प्रसन्नतासे रातभर जागरण करे और चारों प्रहरमें चार बार पूजाकरे और ब्राह्मणोंको वर्ण देकर अच्छी तरह प्रसन्न करे और अपने आचार्य कोभी वर्ण देकर सबके साथ मिल बड़ा उत्सव करे फिर दूसरी बार नहा सब मिल कर शिवजी की पूजाकरे तदनन्तर पूरा होमकर यथाशक्ति आप ब्राह्मणों को भोजन करावे और दान देकर वस्त्र और आभूषण उनको दे और सबसे अधिक अपने आचार्यकी सेवा करके विधिपूर्वक गौ दे और तीनों सुवर्णके शिवके रूप सामग्री समेत उसको देकर फिर प्रणाम के उपरान्त दण्डवत् करे पुष्पाञ्जलि शिवको देकर फिर दण्डवत् और स्तुति करे फिर ब्राह्मणोंकी आज्ञानुकूल आप भी अपने परिवारसहित भोजनकरे यह उद्यापन धनवानोंके लिये है और उद्यापनसे व्रत पूरा होजाता है अब किस बात के सुनने की इच्छा है॥

चौथा अध्याय॥

नारद बोले कि हे पिता! मुझको शिवरात्रिके माहात्म्य सुननेसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अभी तृप्ति नहीं हुई विना जाने जिन्हों ने शिवरात्रिव्रत किया उन्हों ने क्या फलपाया है यह कहिये ब्रह्मा बोले कि शिवरात्रिव्रत की एक कथा हम तुमको सुनाते हैं जो हरप्रकार आनन्द देती है कि पूर्वकाल में एक व्याध था जिसको निषाद कहते थे वह जीवोंको दुःख देता और वह बड़ा हिंसक था और उसका मन अतिकठोर और बड़े परिवारसहित रहाकरता था वह एकवनमें जाकर बहुतसे जीवोंको मारता और चोरी करके बहुत धन लाया करता था उसने लड़कपनसे कोई पुण्य न की उसमें सबही कुकर्म थे वह सदा वन में रहकर किसी समय किसीको चैन नहीं देता था सो ऐसे काम करतेहुये उसको एकसमय बीतगया एकदिन भोजन न होने से उसके माता पिता और स्त्री आदिने क्षुधा से कहा कि हम भूखन मरते हैं हमारे लिये भोजन लावो यह सुन निषाद अपना धनुर्बाणले वनमें गया उसी दिन शिवरात्रि थी पर निषादने नहीं जाना कि आज शिवरात्रि है वह शिकार के लिये दिनभर वनमें फिरता रहा पर भाग्यवश कुछ न मिला जब रात्रि हुई तो निषाद दुःखी हो कहनेलगा कि अब मैं कहां जाऊं क्या करूं मुझको तो शिकार आदि नहीं मिला इससे घर जाना ठीक नहीं इसी विचार में वह नदी किनारे गया और सोचा कि इसके किनारे वनके पशु पानी पीनेको अवश्य आवेंगे उनको हम छिपकर मारेंगे और उसको घरमें लेजाकर सबको भोजन करावेंगे सो ऐसाही किया कि नदीके किनारे एकजगह छिपकर बैठरहा उस नदीके तटपर बेल का वृक्ष था उसके ऊपर छिपगया और देखने लगा कि कोई जीव आवे जिसको मैं बध करूं सो रात्रिके पहिले प्रहर वहां एक हरिणी प्यास की मारी उछलते कूदते आपहुँची निषादने तुरन्त उसको देख कर मारनेकी इच्छा से तीर धनुषपर चढ़ाया कि जल और बेलपत्र दोनों पृथ्वीपर गिरे अकस्मात् उसके नीचे शिवका लिङ्ग था जिसके

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊपर पानी और बेलपत्र दोनों गिरेथे यह भाग्यवश पहिले प्रहर की पूजा होगई और इस बात के प्रभाव से निषादके सबपाप नष्ट होगये और हरिणीने निषादको बिल्वके वृक्ष पर देख कहा कि तुमने क्यों धनुष ताना है निषाद ने कहा कि हमारे परिवार के मनुष्य भूखे हैं इससे तेरे मारने की इच्छा है तेरे मांससे वे सब जो दिन भरके भूखे हैं तृप्त होजावें यह सुन हरिणीने चिन्तित हो सोचा कि इसको किसी प्रकार निवारण करना चाहिये तो निषादसे कहा कि निषाद जो हमारे मांस से तुम्हारा मनोरथ पूरा होता है तो हमारे धन्यभाग्य हैं दूसरों के प्राण बचाने के बराबर और कोई श्रेष्ठ धर्म नहीं है और निश्चयहै कि मेरे मांस से तुम्हारा परिवार पूर्ण तृप्त होगा पर एक कारण है कि मेरे घर छोटे २ बच्चे बहुतहैं मैं चाहतीहूं कि उन सबको अपनी बहिनको सौंप आऊं तब लौटकर तुम्हारे पास आऊं यह मैं तुमसे प्रतिज्ञा करती हूं क्योंकि संसार में सत्यता के बराबर दूसरी वस्तु नहीं है देखो आकाश पृथ्वी सत्यतासे थँभेहुये हैं यद्यपि उसने इस प्रकार विनयके बहुत वचन कहे पर निषादने न माना तब हरिणी अतिभय खा बोली कि जो मैं अपने बच्चे सौंपकर तुरन्त तेरे पास न आऊं तो मुझे वही पाप हो जो वेदके विरुद्ध कर्मकरनेवाले को और उस ब्राह्मणको जो तीनों समयकी सन्ध्या नहीं करता और उस स्त्रीको जो अपने पतिके विपरीत कार्य करती है और द्वेष, ईर्षा, विरुद्धकर्म, धर्म का छोड़ना और शिवपूजा का त्यागना विश्वासघात छलादि जो प्रसिद्ध पाप हैं वे सब प्रतिज्ञा छोड़नेपर मुझको हों और इसी प्रकार की और बहुतसी सौगन्द खाई और निषाद के सामने नम्र हो खड़ी रही सो निषादने हरिणीका वचन सत्य जाना व जानेकी आज्ञा दी हरिणी जल पी अपने घर चली और निषाद प्रहरभर राततक उसके आने की बाटमें जागता हुआ बैठा रहा संयोगसे हरिणीकी बहिन अपनी बहिनको ढूंढ़ते तटपर आ पहुँची

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसको देख फिर निषादने धनुष खींचा तब बहुतसे बेलपत्र गिरने से दूसरे प्रहरका शिवपूजन होगया और निषादके असंख्य पाप छूटगये हरिणीने कहा कि हे वनके पशु! इस समय क्या कररहे हो तो निषादने जैसा कि पहिले कहा था वर्णन किया हरिणीने भय खा कहा कि हमारे बड़े भाग्य हैं क्योंकि यह शरीर नाशवन्त है यदि इससे औरों को आनन्द मिले तो इससे अधिक और क्याहै पर विनय यहहै कि मैं अपनी छोटी लड़की को अपने पतिको सौंपकर लौटी आती हूं इसतरह बहुत बिनतीकर हरिणीने बहुतसी सौगन्दें खाईं और कहा कि जो पाप प्रतिज्ञा भङ्ग करनेवालों और अपनी स्त्री छोड़ अन्य स्त्रियोंके साथ रमण करनेवालों और वेदमार्ग छोड़ अपने मनके अनुसार चलनेवालों और विष्णुके भक्त होकर शिवनिन्दा करनेवालों और माता पिता की छाया देखनेवालों को होते हैं जिनका फल नरक है वह सब पाप मुझे लगें जो मैं प्रतिज्ञाके अनुसार लौट न आऊं निषादने कहा अच्छा सो हरिणी प्रसन्नहो पानी पी अपने घर गई और निषादने जागरणकर दो प्रहर रात के बितादिये जब हरिणी देरतक न गई तो हरिण चिन्तित हो प्याससे व्याकुल आपभी चला जब नदी किनारे पहुँचा तो निषाद ने फिर अपना धनुष सीधा किया जिससे जल और बिल्वपत्र शिवके लिङ्गपर गिरपड़े इससे उसका तीसरा पूजन भी होगया और हरिणने निषादको देखकर कहा कि तुम यह क्या करतेहो निषादने वही पूर्व के समान वचन कहे जिसको सुन हरिण बोला कि मेरे धन्य भाग्य हैं कि तुम्हारे कुटुम्बको तृप्त करनेवाला हूं देखो जो मनुष्य दूसरों का लाभ नहीं करते उन्होंने संसारमें वृथाही जन्म लिया पर मेरे घर में एक छोटी उमर का बच्चा है सो उसे मैं अपनी स्त्रीको सौंपकर तुम्हारे पास आऊंगा निषाद ने कहा कि तुम्हारे समान और भी आये और प्रतिज्ञाकर इस समय तक न लौटे मुझको उन्होंने बड़ा धोखा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिया है अब मैं तुझको नहीं छोड़ता क्योंकि मुझे निश्चय नहीं हरिण बोला कि मैं झूंठ नहीं बोलता क्योंकि संसार में सत्यता का बड़ा पद है मैं शपथ करताहूं कि मैं अवश्यही तुम्हारे पास लौट आऊंगा जो लौट न आऊं तो जो पाप कि सन्ध्याके समय और दिनमें स्त्रीके भोग और शिवरात्रि व्रत रखकर भोजन करने और ब्राह्मण होकर सन्ध्या न करनेसे और वृक्षसे बिल्वफल तोड़ने और सामर्थ्य होनेपर दूसरेकी भलाई न करने और शिवपूजा बिन भोजनादि करनेसे होता है सब पाप मुझे लगें यह सुनकर निषाद ने कहा कि अच्छा घरमें होकर शीघ्र हमारे पास आजाना हरिण पानी पी घरगया जहां हरिणी आदि इकट्ठे होकर अपना २ वृत्तान्त कह दुःखी हुये और सत्त्वधर्ममें पड़कर पहिले वह हरिणी जो सबसे पहिले आई थी उसने अपने पति हरिण से कहा कि हमने पहिले प्रतिज्ञा की थी इसलिये मैं बधिकके पास जाऊंगी तुम दोनों घरमें रहकर पुत्रको पालन करते रहना तब दूसरी हरिणीने कहा कि नहीं मैं जाऊंगी क्योंकि पहिली स्त्री घरकी स्वामिनी कहलाती है यह सुनकर हरिण बोला कि नहीं हम जावेंगे और अपने मांससे उसको प्रसन्न और तृप्त करेंगे क्योंकि बालक केवल माता से पल सक्ते हैं तुम दोनों घर रहो पर दोनोंने हरिणका कहना न माना और कहा धिक्कार है हमपर जो विधवा होकर घरमें रहें निदान लड़ते झगड़ते हुये वे सब जहांपर कि बधिक था चले पीछे उनके बच्चेभी चले क्योंकि रक्षक बिन उन्होंने रहना उचित न जाना और कहा कि जो माता पिता की आस्था होगी वही हमारी भी होगी बधिक उन सब को आतेदेख अतिप्रसन्नतासे पहिलेकी तरह तत्पर हुआ जिससे फिर भी पहिलेकी तरह जल और बेलपत्र शिवजीके लिङ्गपर गिरपड़े और चौथा पूजन होगया जिससे बधिक के सर्वपाप नष्ट होगये और हरिण अपनी दोनों हरिणियों समेत बोला कि अब हमारे शरीर को शुद्ध करो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और तुरन्त हमको मारो पर बधिक जिसके सर्वपाप जलगये और शिवपूजाके बलसे उसे शुद्धबुद्धि उपजी थी अतिदयासे कहनेलगा कि हे पशो ! यद्यपि पशुओंको बुद्धि नहीं होती पर वे धन्य हैं कि अपने शरीरके भी नष्ट होनेसे दूसरोंकी भलाई पर तय्यार हैं और मैंने मनुष्य होने पर अपना जन्म जीवों के वध करने में बिताया और ऐसे २ पाप कर कुलकी पालना की न जानिये मैं किस अवस्था को प्राप्त हूंगा मैंने कोई धर्म का काम नहीं किया मेरे जीने पर हजारों धिक्कार हैं निदान बधिकने इसीचिन्ता से आंसू बहा अतिदयाकर ऊंचे शब्द से कहा कि हे शुद्धहरिणो ! अपने घर जाओ तुम धन्य हो और तुम्हारा धर्म धन्य है और तुम अतिशुभ हो यह वार्त्ता होहीरही थी कि शिवजी अतिप्रसन्न होकर वहीं आप्रकटे और अपने हस्तकमल से बधिकका हाथ पकड़ कहा कि हम तुमसे अतिप्रसन्न हुये हैं जो चाहिये वह हमसे वर मांग लो तुमने शिवरात्रिव्रत रख अपने पापों को नष्ट करडाला और हमने तुमको अपने भक्तोंमें गिना ऐसी वार्त्ता और ऐसा स्वरूप श्रीजगत्पिता सदाशिवजीका देख सुनकर निषाद जीवन्मुक्त हुआ और शिवके चरणोंके आगे गिरपड़ा उसकी जिह्वासे केवल इतना वचन निकला कि सब पाया शिवजी अतिप्रसन्न हुये और दयासे उसकी ओर देख उसके सब दुःख दूर करदिये और उसका नाम स्कन्द रख उसको बहुत वर दिये और कहा कि हे निषाद ! तुम अपने कुल के राजा होगे और तुम्हारे मनोरथ पूरे होते रहेंगे अब तुमको कोई दुःख नहीं देगा तुम जाकर शृङ्गवेरपुर को अपनी राजधानी बना अति सुखपूर्वक राज्य करतेरहो तुम्हारे बहुत सन्तान होंगी जिसकी प्रशंसा देवता भी करेंगे और हमारे भक्त रामचन्द्र तुमको अपना सेवक जान तुम्हारे घर आवेंगे और तुम्हारे साथ प्रीति दृढ़कर तुमको बड़ा यश देंगे पर तुम हमारा भजन मत भूलना तुमको दुर्लभमुक्ति प्राप्त होगी सो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमको सर्व संसारी भोग भोगनेके उपरान्त शिवपुरी मिलेगी इतनेमें शिवके दर्शन पाकर सब हरिणों ने मृगयोनि त्याग देवस्वरूप पाया और विमानों में आरूढ़ हो शापसे छूट देवलोक को चलेगये आज तक वे आकाश पर प्रकट होते हैं इस चरित्रके उपरान्त शिवजी अन्तर्धान होगये और लिङ्गस्वरूपसे वहां स्थितहो व्याधेश्वरके नाम से प्रसिद्ध हुये और अर्बुदगिरि जो प्रसिद्ध है उसी में यह शिवलिङ्ग स्थित है इस लिङ्गके दर्शन पूजन से भक्ति मुक्ति मिलती है और व्याधा भी स्कन्दके नाम से जैसा कि शिवने उसका नाम रक्खा था प्रसिद्ध होकर शिवजीकी कृपासे शृङ्गवेरपुर में गया और वहां रहकर सब भीलोंका राजा हुआ और शिवजीकी कृपासे देवताओंके समान आनन्द करतारहा जब कि रामचन्द्रने त्रेतायुगमें अवतार लेकर उसको शिवभक्त जाना तो उसके घर में जाकर उसको प्रतिष्ठित किया और रामचन्द्र ने अतिअनुग्रह कर उसको शिवकी भक्ति कृपा की जिससे निषाद को शिवजीकी सायुज्य मुक्ति प्राप्त हुई और वह तीनों लोकके दुःख सुखसे छूटगया हे नारद! शिवरात्रि व्रत ऐसा है जिसको व्याध ने अज्ञानता में कर इस लोक में राज्य और परलोक में मुक्ति पाई यद्यपि शिवजीकी सायुज्य मुक्ति ज्ञान विना नहीं मिलती पर शिवरात्रि व्रतने व्याध को बेपरिश्रम दे दी जो मनुष्य भक्ति से शिवरात्रि व्रत करेगा उसकी यही दशा होगी सब वेद और पुराणों ने विचार करके शिवरात्रि व्रतको सबव्रतोंका राजा बताया है इसके समान कोई जप तप यज्ञ और व्रतादि शुभ कर्म नहीं जो इसको पढ़े सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्दपूर्वक रहेगा हे नारद! और कथा सुनो॥

पांचवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद! जिस तरहसे गुणनिधि ब्राह्मण ने शिवरात्रि व्रतकर आनन्द पाया है वह हम वर्णन करते हैं कि द्रुपद

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पुरी जो गङ्गा के तट पर है और जिसको कम्पिला भी कहते हैं वह पुरी अतिपवित्र है वहां शिव रामेश्वरके नामसे और शक्ति कालीशके नाम से विराजमान हैं वहां एक ब्राह्मण यज्ञ करनेवाला यज्ञदत्तनामी रहता था वह दीक्षितनामसे प्रसिद्ध हो शिवका बड़ा भक्त हुआ और राजाके द्वारा उसको बहुतसा धन और सम्पत्ति प्राप्त थी उसकी स्त्री भी बड़ी धर्मवती और गृहस्थी के कार्य में चतुर थी उनके एक पुत्र उपजा जिसका नाम गुणनिधि रक्खा और उसको बड़ाधर्म और विद्या सिखाई और उसका विवाह करदिया थोड़े समयके अनन्तर गुणनिधि अयोग्य संगतिसे दुष्ट होगया और उसने वेद और पुराणों के सबकर्म छोड़ जुयें में अपने पिताका धन नष्ट करदिया पर उसकी माता उसके दोष छिपा रखतीथी और यज्ञदत्त इसबातको नहीं जानताथा यद्यपि माता ने अतिनम्रता और प्यारसे गुणनिधिको उपदेश कर शुभमार्ग सिखाये पर उसने कुछ न माना धीरे २ गुणनिधि बड़ा व्यभिचारी, चोर, मद्यपी, चुगुल, मांसभक्षी होकर अपनी स्त्रीको छोड़ परनारियोंसे विहार करनेलगा यहांतक जितना कि राजाने यज्ञदत्तको धन दिया था वह सब गुणनिधिने उड़ादिया संयोगसे एकदिन यज्ञदत्तने अपनी अंगूठी किसी जुवारी के हाथ में देखकर उससे पूछा कि तुमने यह कहां से पाई है जुवारी ने क्रोध से कहा कि मैंने चोरी नहीं की तुम्हारे पुत्रसे जुयें में पाई है तुम्हारा पुत्र जुवाखेलनेवालों में अद्वितीय है यह सुन यज्ञदत्त लज्जासे घर आये और अपनी स्त्री से पूछा कि गुणनिधि की क्या दशाहै पर उसने प्रेमके कारण पुत्रका मुख्य वृत्तान्त छिपारक्खा तब यज्ञदत्त ने कुश और पानी मांगा गुणनिधि के नाम से सोदक छोड़ दिया अर्थात् उसको त्यागदिया पर गुणनिधि की माताने हाथ जोड़ नम्रता से अपने पतिको इतना समझाया कि वह गुणनिधि को घर रखने में कुछ राजी हुआ पर जब गुणनिधिने अपने पिताके क्रोध

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का यह हाल सुना तो रोते पीटते पिताके भयसे भागगया जब चलते २ थक गया तो बैठकर सूर्य के अस्त होने तक बराबर रोतारहा संयोग से वह शिवरात्रि का दिन था जैसे कि चारों वर्ण में ब्राह्मण और तारों में चन्द्रमा और नदियों में गङ्गा और शिवभक्तों में कृष्ण और वेदों में सामवेद और मन्त्रोंमें प्रणव और देवियों में शिवरानी और पुराणोंमें भारत है तैसेही व्रतों में शिवरात्रि है निदान उस दिन एक शिवका परमभक्त शिवरात्रिव्रत धारण किये हुये असंख्य भक्तों को साथ लिये पूजा की बहुतसी सामग्रीसहित उस मार्ग से आनिकला जहां गुणनिधि थककर बैठा था जोकि गुणनिधि बहुतही भूखा था उसने उत्तम २ व्यञ्जनों की सुगन्ध पाकर मनमें यह बात ठहराई कि जब यह लोग खाने की चीज़ें शिवको चढ़ाकर अचेत होंगे तब मुझको उठाने का अवसर मिलेगा सो उनभक्तों के पीछे गुणनिधि भी चला शिवभक्तों ने शिवालय में पहुँचकर षोडशोपचार से शिवकी पूजाकी और गुणनिधि अपने मनोरथ के लिये उन सबकी पूजा देखतारहा शिवभक्त पूजाके उपरान्त कुछ २ ऊंघगये गुणनिधि सबको सोता हुआ जान शिवालयके भीतर गया और धीरे २ पग रखते हुये चाहा कि शिवकी नैवेद्य उड़ाले और इस बातके लिये कि जिसमें भोजन देख कर चुरावे उसने अपने शरीरके वस्त्रसे एक टुकड़ा फाड़कर एकबत्ती बनाई और उसको जलाकर शिवके ऊपरसे भोजनादि लेलिया और अतिहर्ष के कारण शीघ्रही शिवालय से बाहरको चला पर गुणनिधि के शीघ्र चलने के कारण उसका पांव किसी शिवभक्तके चरण में लगगया जिसने बड़ा शब्द किया और कहा कि चोर जाता है पकड़ो यह सुन नगर के रक्षक तुरन्त पहुँचगये और अपने बाणों से गुणनिधि को मारडाला और गुणनिधि और जन्म के पुण्यके कारण शिवकी नैवेद्य खानेसे बचरहा क्योंकि जो मनुष्य प्रसाद छोड़ शिवकी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नैवेद्य खाते हैं उनको बड़ा दुःख होताहै जैसा कि सब वेद और पुराण इस बात को लिखते हैं निदान यमराजके गणों ने आकर गुणनिधि को बांधकर चाहा कि यमराज के सामने लेजावें उसीसमय शिवने अपने गणोंको बुला सब वृत्तान्त के बताने के अनन्तर आज्ञा दी कि गुणनिधि को यमराजके प्यादों के हाथ से छुड़ादो हमारे पास लावो क्योंकि उसने शिवरात्रिव्रत करके हमारी पूजा अपनी आंखों देखी और हमारी नैवेद्य खानेसे बचारहा हमने उसको अपना सेवक कर-लिया अब वह नरकमें नहीं जासक्ता वह व्रत सब व्रतोंसे मुझे प्याराहै मुख्य करके जो शिवरात्रि के दिन हमारा पूजन देखता है वह सबसे मुझे प्रियहै उसने दीपकजला हमारे ऊपर अपने हाथसे आरती उतारी इस समय वह कलिङ्गदेश का राजा होकर फिर हमारे यहां आवेगा और निधिनाथ होकर हमारे मुख्य मित्रके नामसे विख्यात हो आन-न्दपूर्वक रहाकरेगा सो शिवके गणों ने जाकर गुणनिधि को यमके दूतोंसे वार्त्तालापकर छीनलिया और शिवके समीप लेगये गुणनिधि कलिङ्ग का राजा होकर दमके नामसे प्रसिद्ध हुआ फिर शिवकी कृपा से निधिपति हो शिवका निजमित्र होगया इतना कहकर श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! कदाचित् यहव्रत भूलसेभी होजावे तोभी इतना फल मिलता है जितना कि ऊपर कहागया ॥

छठा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब और भी शिवरात्रिव्रतका माहात्म्य सुनिये पूर्वकाल में सौमणिनाम एक ब्राह्मण की कन्या अतिसुन्दरी हुई उसके पिताने एक ब्राह्मण के साथ उसका बिवाह करदिया सो दोनों स्त्री पुरुष नाना प्रकारके विहार करनेलगे संयोगसे उसका पति युवावस्थामें मरगया पतिके मरनेके पीछे सौमणि थोड़े समयतक उत्तम रीति से कालक्षेप करती रही निदान फिर उसको कामदेव ने सताया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सो वह कामदेवकी ज्वाला न सहकर पुंश्चली होगई जाति के मनुष्यों ने उसको अपनी पंक्तिसे उठाकर घरसे निकालदिया फिर तो वह स्त्री स्वाधीन होकर भ्रमण करती बरन जो मनमें आता वह करती थी एकदिन वह वनमें पर्यटन कररही थी कि एक शूद्र उसको अपनी स्त्री बनाकर अपने घर लेगया और सौमणि मांस खाने और मद्य पीनेलगी और उसके बहुत सन्तान उपजीं एकदिन उसका पति कहीं चलागया तो सौमणिने मद्य पी और मद्य में मांस खानेकी इच्छासे गोशालामें जहां बहुतसे बकरेभी रहा करते थे गई रात्रि होनेके कारण उसने एक बछरे को बकरा समझा और जब कि उसको मारकर घर लाई तब उसने जाना कि यह बकरा नहीं है बरन बछरा है उसने मुखसे शिव २ कहा पर क्षणमात्र में उसको पकाकर खालिया निदान मरनेके पीछे थोड़े समय तक नरक में रहकर एक चाण्डाल के घर उपजी वह जन्मकी अन्धी उपजी और उसके माता पिता मरगये और अन्धी होनेसे और किसी बान्धव बिना मारी २ फिरने लगी और यह भी कि उसके कुष्ठ का रोग उत्पन्न होगया वह रात दिन अतिकष्ट से शरण २ पुकारनेलगी और जो कुछ चाण्डालों का जूठा भोजनादि पाती उससे अपने दिन काटती जब कि फाल्गुनकृष्ण की चतुर्दशी को गोकर्णक्षेत्र में लोग मेलेके लिये गये तो उस समय वह अन्धी कोढ़िनभी भोजनादि पाने की आशा से यात्रियोंके पीछे २ हो मांगती खाती हुई गोकर्णक्षेत्रमें पहुँची और सब मेलेवालोंसे दोनों हाथ बढ़ा भिक्षा मांगनेलगी एक शिवभक्तने एकमुट्ठी बिल्वपत्र की उसके हाथमें फेंक दी जब अन्धीने जाना कि यह भोजनकी वस्तु नहीं है तो उसने उसे क्रोधकर फेंकदिया संयोगसे वह बिल्वपत्र शिवजी के लिङ्गपर गिरी वह शिवरात्रि का दिन था शिवजीने जाना कि हमारी पूजा अन्धीने की है वह इसीतरह रातभर मांगतीरही पर भाग्यवश किसीने उसको कुछ न दिया जिससे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवने जाना कि इसने हमारा व्रत निर्जल रख रात जागरणमें बिताई है जब प्रभातको सब मेलेवाले चलेगये तो वह अन्धी चाण्डालिनि भूखी प्यासी धीरे २ चलकर बहुत दिनों में अपने देश पहुँची और पृथ्वी में गिरकर मरगई शिवजाने अपने गणोंको विमान समेत उस स्त्री के लेनेको भेजा जब शिवजी के गण आये तो गौतममुनि जो संयोगसे वहां उपस्थित थे उन्होंने भेद पूछा सो गणों ने सर्ववृत्तान्त बतलाया और वह गण उस चाण्डालिनि को विमान पर चढ़ाकर शिवपुरी को लेगये जहां वह मुक्ति पा जगदम्बा की सखी हुई हे नारद! शिवरात्रिव्रत इसी प्रकार का फल देनेवाला है सब शास्त्रोंका वचन है कि शिवरात्रि सर्वकार्य सिद्ध करती है इसी व्रत को राजा मित्रसह कर ब्रह्महत्या के पापसे छूटा इस चरित्रके पढ़ने और सुनने वाला दोनों लोकमें प्रसन्न रहता है और इस व्रतके प्रतापसे सर्वपाप नष्ट होजाते हैं॥

सातवां अध्याय॥

इतना सुन नारदजी बोले कि राजा मित्रसहने जिस प्रकार शिवरात्रि व्रत करने से बड़ापद पाकर मुक्ति पाई वह शिवचरित्र कहिये ब्रह्मा बोले हे नारद! शिवरात्रि व्रत की महिमा सबसे अधिकमुक्ति देनेवाली है फाल्गुनकृष्ण चतुर्दशी को व्रत करना और जागरण और शिवस्वरूपका दर्शन और पूजन और बेलपत्र का चढ़ाना बहुत बड़ाई रखता है दूसरा कोई पदार्थ इसके समान जल्दी मोक्षदाता नहीं है दशहजार वर्ष गङ्गाजीका स्नान भी शिव व्रतके बराबर नहीं है जितने संसारमें शुद्ध दिवस हैं वह सब शिवरात्रि के दिन शिवरात्रिमें स्थित होते हैं और विष्णु और हम और सनकादिक और देवता और वेद आदि पुराण सब शिवरात्रिकी महिमा के वर्णन करनेमें सम्मति रखते हैं शिवरात्रि व्रत सौयज्ञ करनेके समान है और शिवरात्रि व्रतसे जागरणसे बड़ा फल होताहै इसमें बड़ी श्रेष्ठता है क्योंकि करोड़वर्ष

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के तपसे भी उसका पद बड़ा है और जो एक बेलपत्र में भी शिवजी की पूजा करे तो उसके समान और कोई बात मुक्ति देनेवाली नहीं है इसी पर हम एक इतिहास कहते हैं जैसा कि बेलपत्रके चढ़ानेसे सर्व पाप दूर होगये कि राजा मित्रसह बैवस्वतकुलमें बड़ा धर्मवान्, सर्व शास्त्र, वेद और पुराणोंका जाननेवाला, वीर, नीतिमान्, दयावान्, महाशक्तिमान्, महातेजवान्, सबपृथ्वीका स्वामी, ब्राह्मणोंका सेवक, सुन्दर और शुभकर्मकर्ता राजा हुआ उसकी स्त्री मदयन्ती राजा नल की स्त्री दमयन्तीके समान पतिव्रता थी एक दिन राजा सेनासहित वनमें आखेटको गया उसने बहुतसे जीव मारे और उसको शिकारमें इतना प्रेम बढ़ा कि उसने समयतक अपनी राजधानी को न लौटकर अपनी प्रजा का हाल भी न लिया संयोगसे उसी वनमें राजाने एक कमठनामी निशिचर को मारा जिसके भाई को अपने भाई के मरनेसे बड़ा दुःख हुआ वह इस इच्छासे कि राजासे बदला लेना चाहिये मनुष्यस्वरूप धार राजा का सेवक होगया जब राजा शिकार खेल लौटकर घर आया और अपने गुरुको बड़े धूमधामसे निमन्त्रण दिया तो कमठने रसोईदार होकर छलसे मनुष्य का मांस तरकारी में मिलाकर गुरुके आगे परसा सो गुरुने इस बातको जानकर राजा को शाप दिया कि तुम बारहवर्ष तक राक्षस रहोगे राजाने अपनी निर्दोषता स्मरणकर चाहा कि वह भी गुरुको शाप दे पर रानीने बर्जा राजा राक्षस होकर कल्माषपादके नामसे प्रसिद्ध हुये और बहुतसे जीवों को भक्षण करनेलगे एकदिन उसने एक युवा ब्राह्मणको जो अपनी स्त्रीके साथ भोग करता था पकड़ा यद्यपि ब्राह्मणीने बहुत बिनतीकर समझाया पर राजाने कुछ न सुनकर तुरन्त उसका शिर तोड़कर खालिया स्त्रीने सती होनेके समय राजाको शाप दिया कि जबतू अपनी स्त्रीसे भोग करेगा उसी समय तुरन्त मर जावेगा स्त्री तो सती होकर दूसरा शरीर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

घर अपने पति से जा मिली और राजाने भी बारह वर्ष बीतने पर पूर्ववत् मनुष्य हो चाहा कि अपनी स्त्री से मैथुन करें पर रानीने न माना तब राजाने मैथुन विना अन्य संसारी भोगोंको वृथा समझ वन में चलागया वहां एक मुनिके उपदेश से तीर्थ यात्रा करनेलगा और जनकपुर में गौतममुनिसे भेंटकर कहा कि मुझको ब्रह्महत्या लगी है जिससे मैं दुःखी हो भ्रमण करता हूं मैंने सब उपाय किये पर वह दूर नहीं होती गौतमने राजा की विनय और नम्रता देख कहा कि कुछ संशय मत करो तुम सदाशिव की पूजा करो कोई पाप न रहेगा पश्चिमी समुद्रके तीर गोकर्ण क्षेत्र में जाकर महाबलनाम शिवलिङ्गकी पूजा करो और वहां शिवरात्रि व्रत करो और हम इस समय वहांसे आते हैं सो मित्रसह चलकर गोकर्णमें पहुँचा और महाबल शिवलिङ्ग के पूजने और गोकर्णक्षेत्र में नहाने और शिवरात्रिव्रत के करनेसे सब पापोंसे शुद्ध होगया और अपनी राजधानी में पहुँचकर रानी सहित भोग भोगने लगा और मरनेके उपरान्त शिवजीका गण हुआ हे नारद! शिवरात्रि व्रत इतना मुक्ति देनेवाला है जो इस चरित्र को प्रति दिन सुने वा पढ़े उसकी इकीस पीढ़ी पर्यन्त मुक्ति होती हैं यह इतिहास बहुतही पवित्र है ॥

आठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि अब हम चौदशव्रत का माहात्म्य वर्णन करते हैं जिससे प्रगट होगा कि जो यह व्रत अज्ञानता में भी होजावे तो उत्तम फल मिलता है कि पूर्वकाल में किरातदेश का राजा विमार्षण हुआ वह बड़ावीर, धीर, बलवान्, जीवों का हिंसक, कठोरचित्त, दुष्ट, अन्यायी, नीच, सबजीवोंके मांस का खानेवाला, कामी, क्रोधी और सब वर्णों की स्त्रियों से भोग करनेवाला जिसको व्यभिचारके सिवाय और कोई कर्म उत्तम न भासता यद्यपि वह राजा इतना कुमार्ग

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलनेवाला था पर तौभी वह चौदश के व्रतको बहुत प्रिय जानता था वह दोनों पक्षों की चतुर्दशी में शिवजीकी पूजा करता यद्यपि वह प्रति दिन शिवजीकी पूजा करता पर चतुर्दशी के दिन बड़े उत्सवसे शिवजीको पूजता था उसदिन वह आप शिवजीके सामने नाच गान कर सबको दान देता और उसकी रानी जिसका नाम कुमुद्वती था बड़ी शीलवती और कलावान् थी उसने अपने पति को इतने अधर्मों में लगे हुये देखकर कहा कि कहां तुम्हारे यह काम और कहां शिव जीकी पूजा यह दोनों कर्म एकही शरीर से सम्बन्ध नहीं रखते तुम प्रति दिवस मांस खाते हो और सबप्रकार की स्त्रियों से भोग करते हो और सब जीवोंको बधकर अन्यायसे काल बिताते हो मुझको बड़ा संशय है कि ऐसी दशापर तुमने शिवजी की प्रीति कहां से सीखी मैं चाहती हूं कि तुमसे इस बातका मुख्य हेतु सुनूं राजाने रानी का यह वचन सुन हँसकर कहा कि मैं पूर्वजन्म में कुत्ता था और प्रतिदिन पम्पापुर में फिरा करता था मेरा जन्म भूखे प्यासे और दौड़तेहुये कट गया संयोग से एक दिन शिवजीके भक्तों का समूह शिवालयमें जा-कर बड़े प्रेम से पूजा करता था मैं भूखा दूर से खड़ा हुआ यह चरित्र देखनेलगा मुझको शिवजी के भक्तोंने देखकर मारा मैं तुरन्त वहां से भागगया और मैं बहुत भूंकता था फिर मैं छिपे २ पिण्डआदि भोजन की वस्तुओं के लोभसे उसी शिवालयके किनारे आया बहुतबेर शि-वालयके चहुँ ओर फिरता रहा और छिपे २ भोजन पाने के लोभसे शिवजीकी पूजा देखतारहा एक मनुष्य ने अतिकोप से एक बाण मुझपर चलाया सो शिवकी पूजा देखते २ बाण लगकर मरगया और जो कि शिवको देखतेहुये मैं मरा था इससे राजा हुआ मैंने चतुर्दशीका पूजन और दीपोंकी माला देखी थी उसीदिन से मैं गत वर्तमान और भविष्यके सबहाल जानगया और जोकि मैं सब भक्ष्या

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भक्ष्य वस्तु खाताहूं तो यह बात पूर्वजन्म के संस्कार से कि मैं कुत्ता था क्योंकि प्रकृति का मिटना कठिन है इससे सब चतुर्दशी के दिन मैं पूजा करताहूं जिससे मेरे सब कार्य शुभ होते हैं हे रानी ! तुम भी शिवकी पूजा कियाकरो स्त्रीने फिर पूछा कि हे राजन् ! तुम तीनों काल को जानते हो मैं चाहती हूं कि आप मेरे पूर्वजन्म का वृत्तान्त वर्णन करें राजा बोले कि पूर्वजन्ममें तुम कबूतरी थीं एक दिन तुमको एक मांस का टुकड़ा मिला जिसको लेकर तुम आकाशकी ओर उड़ीं सो एकगृद्ध ने तुमको देखकर तुम्हारा पीछा किया और तुम प्राणोंके भयसे भागती २ श्रीगिरिशिवालय के ऊपर बैठ गईं गृद्ध्रने पहुँचकर मांसका टुकड़ा छीन तुमको इतना घायल किया कि तुम गृद्ध्रके उड़ जानेके अनन्तर शिवालयसे गिरकर मरगईं तुमने मरनेके समय शिव का लिङ्ग देखा इससे तुम इस जन्म में हमारी रानी हुईं जब रानी ने अपने पहिले जन्मका वृत्तान्त राजासे सुना तो उसको शिवकी भक्ति बहुत बढ़ी कहा हे राजन् ! अब अपनी और हमारी भविष्य कहो कि मुझे भरोसा हो यह सुन राजा बोले कि हम दूसरे जन्म में सिन्धु के राजा होंगे और तुम राजा संजय की पुत्री होकर हमारे साथ ब्याही जावोगी और तीसरे जन्म में हम राजा सौराष्ट्रके पुत्र होकर तुम्हारे साथ जो कलिङ्गदेशके राजाकी कन्या होगी विवाह करेंगे चौथे जन्म में हम राजा गान्धार होकर तुमको जो मगधदेशके राजा की लड़की होगी ब्याह लावेंगे पांचवें जन्म में हम उज्जयिनी के राजा और तुम राजा दशारण्य की पुत्री होकर हमारी रानी होगी छठे जन्म में हम अनर्तके राजा और तुम ययातिके कुलमें उपजकर हमारी जाया होगी सातवें जन्ममें पाण्डव देशके राजा होकर पद्मपर्ण के नाम से प्रसिद्ध होंगे और तुम राजा वैदर्भके घर जन्म लेकर वसुमतीके नामसे प्रसिद्ध होगी और जब तुम्हारा पिता स्वयंवर रचेगा उसमें हम तुमको सब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजाओंसे जीतकर लेआवेंगे और शिवकी पूजामें हम दोनों लगे रहकर भोग विलासकर सन्तानवान् होंगे फिर पुत्रको राज्य दे हम दोनों वनमें जाकर अगस्त्यमुनि से ज्ञान पाकर तुम्हारे समेत शिवपुरीमें पहुँचेंगे और शंकर सदाशिवजी के गणों में गिनेजावेंगे हे रानी! यह चतुर्दशीव्रत करके हम सात जन्मतक राजा होते रहेंगे सो इसी प्रकार की वार्ता बहुत देरतक करके अपनी शेष आयु शिवपूजन और चतुर्दशीव्रत में बिताई और सातवें जन्म में शिवपुरी पाकर मुक्ति होगी ऐसी शिवव्रत की महिमा है इस चरित्र के पढ़ने सुननेसे दोनों लोक में अतिसुख प्राप्त होता है ॥

नववां अध्याय ॥

त्रयोदशीव्रत का माहात्म्य ॥

ब्रह्माजी बोले कि अब हम प्रदोषव्रतका वर्णन करते हैं कि प्रदोषव्रत शिवजीको बहुत प्रिय और सब बड़े मनोरथोंका देनेवाला है वह स्त्री पुरुष धन्य हैं जो इस व्रतको करते हैं उचित है कि सब महीनों के दोनों पक्षों में त्रयोदशीव्रत करके निर्जल रहे सो इस व्रत का विधान ऐसा है कि प्रभात को स्नानकर नित्यक्रिया और सदाशिवजीकी पूजा करे उस समय कोई संसारी कार्य न करना चाहिये जब तीन घड़ी दिन शेष रहे तो सामर्थ्यके अनुसार आप फिर स्नान करे और मौन साध श्वेतअम्बर पहिने और संध्या का जप करके शिवजी का ध्यान करे और सदाशिवजीकी प्रेमके साथ परिपूर्ण पूजा करे और पूजा की सब चीजें इकट्ठीकर शिवजीको प्रसन्न करे और यथाशक्ति शिवजी की पूजाकर मन में अतिप्रसन्न होवे और अपने सर्वपरिवार सहित सदाशिवजी की पूजाकर स्तुतिपूर्वक दण्डवत् करे और प्रदोषकालमें शिवजी की पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन करावे फिर उन को दान दक्षिणा दे और उनसे आज्ञा लेकर आप भी हविष्य अर्थात्

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लवण विना खावे इसके समान दूसरा व्रत और दूसरी शिवजी की पूजा नहीं है ऐसी शिवपूजा सर्वपापों की क्षय करनेवाली और सब मनोरथों की देनेवाली और छोटे बड़े पापों को दूर करनेवाली है जो शिवपूजा प्रदोषकाल में करे तो सौ ब्रह्महत्या का पाप दूर होजाता है जो तेरसि व्रत में भोजन करते वे दोनों लोकमें सुखी रहते हैं जो मनुष्य तेरसि का व्रत करता है उसको कोई आपदा नहीं सताती और प्रदोषकालमें शिवजीकी पूजा अति आनन्द देनेवाली है यह बात वेद और पुराण कहते हैं और यह बात लोकमें अतिप्रसिद्ध है और मुनिभी इस बात को मानते हैं प्रदोषव्रत से दरिद्रता और पाप दोनों दूर होजाते हैं इस पर हम एक विचित्र कथा वर्णन करते हैं जिसके सुनने से शिवजी की भक्ति बढ़ती है पूर्वकालमें राजा चन्द्रसेन नाम उज्जयिनी का राजा शिवजी का बड़ाभक्त हुआ वह बड़ी प्रीतिसे सदा त्रयोदशीव्रत कर उस दिन बड़ा उत्सव करता और प्रदोषकाल में तेरसिके दिन शिवजी की पूजा करता जिससे वह सदा सुखी रहाकरता था और महाकाल लिङ्ग की पूरी पूजा करता सो एक दिन मणिभद्रनाम शिवजीके गणने राजासे प्रसन्न होकर और उसके साथ प्रेम बढ़ा अतिप्रसन्नता से उसे चिन्तामणि कृपा की उस रत्नमें यह गुण था कि जिसके पास वह हो या जो मनुष्य उसे देखे या उसको स्पर्श करे अथवा उसका स्मरण करे तो वह मनुष्य सर्व आपदाओंसे छूट अप्रमेय आनन्द उठावे और उस के स्पर्शसे सर्व प्रकार की धातु सुवर्ण होजाती थी उसके धारण करने से राजा सूर्यके समान तेजस्वी हुआ जब पृथ्वीभर के राजाओंने यह बात जानी तो उन सबने बहुत हठसे उसको मांगा पर राजा ऐसे बहुमूल्य रत्नको कब किसीको देता था क्योंकि जो वस्तु किसी देवता से प्राप्त हो वह देनेके योग्य नहीं होती सो सब राजाओं ने इकट्ठे हो कर राजा उज्जयिनीपर चढ़ाई की और चारों ओरसे दौड़कर उज्जयिनी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को घेरलिया और रातभर नगरभर को दुःख देतेरहे प्रभात को तेरसि थी राजा अतिप्रेमसे महाकाल शिवकी पूजाको गया और जब तीन घड़ी दिन शेष रहा तो प्रदोषकाल पाकर राजा महाकाल की शरण में जाकर उसी समय पूजाकी संयोगसे एक स्त्री पांच वर्षका लड़का गोदमें लियेहुये वहां आई और राजा की पूजा देखतेही जब वह स्त्री घर आई तो बालकको इतना प्रेम हुआ कि उसने एक शिला स्थापितकर जिस तरह कि राजाको पूजन करते देखा था उसीतरह आपभी पूजा करने लगा माताने उसे भोजन के निमित्त दो तीन बेर बुलाया पर वह पूजा छोड़ न गया तब उसकी माता क्रोधमें लड़के को मारपीट हाथ पकड़ कर घरमें खींचलाई और शिवलिङ्ग को दूर फेंकदिया लड़का हाय २ कह और रोपीट कर मूर्च्छित होगया सो बालकने उस मूर्च्छावस्था में एक रत्नों का भराहुआ शिवालय और उसके मध्य में रत्नोंके सिंहासन पर रत्नोंका शिवलिङ्ग देखा और शिवकी महिमा जानकर बहुत स्तुति की और कहा कि मेरी माता मूर्ख है उसका अपराध क्षमा करो जबकि सन्ध्या को वह अपने घरगया तो देखा कि इन्द्रलोक के समान वह नगर होगयाहै जिसके मन्दिर सुनहरे और सब रत्नोंसे जड़े हैं उन सर्व मन्दिरोंमें से उसकी माता का मन्दिर सबसे अधिक प्रकाशमान है जिसके भीतर रत्नों की शय्यापर उसकी माता सोरही है उसने अपनी माता को जगाया जब माताने यह विचित्रचरित्र देखा तो अतिप्रसन्न हुई पुत्रने कहा कि यह सब शिवकी कृपाकटाक्षसे है कुछ आश्चर्य की बात नहीं है और राजा ने इस विचित्र वृत्तान्त को सुन पूजाको पूरी कर उस स्त्री के मन्दिर को देखने गया और बालकके साथ प्रेम बढ़ा गोपी स्त्री की बहुत प्रशंसा की और सब राजालोग शिवकी इतनी कृपा देख राजासे मित्रताकर अपने २ नगरों को सिधारे॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दशवां अध्याय ॥

नारदजी के प्रश्न करनेके उपरान्त ब्रह्मा बोले कि चन्द्रसेनकी शेष कथा यह है कि यद्यपि सब राजाओंने उज्जयिनीको चारों ओरसे घेर रक्खा था पर ऐसे चरित्रके होनेपर सबके मनमें कुछ भी भय न हुआ और रात्रि क्षणवत् बीती और सब राजाओंने अपने दूतोंसे इस विचित्रचरित्र को सुन अचम्भे में चित्रवत् चुप होगये और कि जहां पर सदाशिवजी ऐसे प्रसन्न हैं वहां हमारी क्या चलसक्की है यह विचार कर राजाओंने हथियार पृथ्वीपर डालदिये और राजा चन्द्रसेन के समीप जाकर उनके महाकालके दर्शन किये फिर गोपीके घरमें जाकर गोपी की अतिप्रशंसा की और उसके पुत्रके स्थापित किये हुये लिङ्गको देखा और सभा करके सब राजाओंने बालकसे भेंट किया और उसको असंख्य धन दे गोपोंका राजा बनाया उस समय श्रीहनुमान्जीने वहां प्रकट होकर सबको दर्शन दिया सब राजाओंने उठकर दण्डवत् कर स्तुति की हनुमान्जीने बालक को गोद में उठालिया और उसके शरीर भरमें हाथ फेरकर कहा कि हे सबराजाओ ! चन्द्रसेनके ऊपर शिव जी प्रसन्न हैं तुम कोई इनसे वैर न करना और महाकाल उसके ऊपर अतिप्रसन्न हैं शिवने तेरसिव्रत के माहात्म्य प्रकट होनेको यह सब चरित्र किया है तुम सबको उचित है कि आजसे तुम भी शिवके भक्त होजाओ तेरसिव्रत सब व्रतों का राजा है उसके समान और कोई व्रत नहीं है मुख्य करके जब शनैश्चरके दिन तेरसि हो तो अतिश्रेष्ठ है और कृष्णपक्षकी त्रयोदशी अतिपवित्र है जो ऐसा योग पाकर कोई मनुष्य महाकालकी पूजा करे तो लोक में प्रसन्न रहकर अन्त में मुक्ति पावे देखो इस बालकने इस कारण कि कृष्णपक्षकी चतुर्दशी शनैश्चर को शिवजीकी पूजा की और ऐसे पदपर पहुँचा इसकी आठवीं पीढ़ी में नन्दनाम अहीरों के राजा होकर उनके घर विष्णु अवतार लेंगे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आजसे इस बालक का नाम श्रीकर होगा तुम सब अपने २ घरों में जाकर तेरसिका व्रत रक्खो और शिवकी पूजा में मन लगाओ और भस्मादि धारणकर प्रदोषव्रत में प्रदोषकाल के भीतर शिवजीकी पूजा किया करो फिर हनुमान्‌जीने श्रीकरको शिवपूजाकी विधि सुनाई और पहिले नाममाहात्म्य सुनाकर भस्मधारण की रीति बताई फिर रुद्राक्षकी महिमा सुनाकर अन्तर्धान हुये और सब राजा चन्द्रसेन से आज्ञा लेकर अपने २ घरों को चलेगये और श्रीकर ब्राह्मणके साथ पूजा करतारहा और सदा तेरसि का व्रत करनेलगा और चन्द्रसेन और श्रीकर शिवके भक्तों में प्रसिद्ध और तेरसिव्रत करनेवालों में बड़े विख्यात हुये और उन्होंने तेरसिव्रत का माहात्म्य संसारमें चारों ओर प्रसिद्ध करदिया और दोनों लोक में प्रसन्न रहकर अन्तकाल में मुक्ति पाई हे नारद ! तेरसिव्रत की ऐसी बड़ाई है जो इस कथा को पढ़े सुनेगा उसको अवश्यही मुक्ति मिलेगी और यह त्रयोदशी का चरित्र सब बड़े मनोरथ देनेवाला है ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

नारदके पूछने पर फिर भी ब्रह्मा त्रयोदशीव्रत को कहनेलगे कि हे नारद! धन्य वही पुरुष है जो शिवका ध्यान करता है क्योंकि ऐसा मनुष्य संसार में प्रसन्न रहकर मरनेके पीछे मोक्ष पाता है शिव सबके गुरु और प्राण और मित्र और बान्धव और पिता हैं जो मनुष्य सब धर्म छोड़ शिवजीको भजता है उसके सब संसारीकर्म छूटजाते हैं वही जिह्वा, कान, हाथ, आंख, शिर, पांव हैं जो शिवके गुण कहें व सुनें वा उसको देखें अथवा पूजन दण्डवत् करें अथवा शिवके तीर्थों की यात्रा करें वही शिवके भक्त हैं शिवको भक्ति सबसे प्रिय है मुख्य करके जो मनुष्य त्रयोदशीका व्रत करता है वह तो सब भक्तोंसे शिवजी को प्यारा है इस व्रत के करने से शिवका प्रेम बढ़ता है ऐसे मनुष्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को सदाशिव सर्व प्रकार की सिद्धि कृपा करते हैं इस व्रतमें केवल सदाशिवजी की पूजा प्रदोषकालमें अवश्यहै सिवाय शिवजीके और कोई उससमय उस व्रत में पूजा के योग्य नहीं क्योंकि केवल शिव-पूजा से और सब देवता प्रसन्न होजाते हैं जो मनुष्य प्रदोषव्रत करताहै वह किसी दशा और समय में दरिद्री नहीं होसक्ता वह मनुष्य सर्व सम्पदा पाकर उत्तमकुल और श्रेष्ठ सन्तान पाता है और जो मनुष्य प्रदोषकाल में शिवकी पूजा नहीं करते वे सदा दरिद्री रहा करते हैं शिवकी पूजा प्रदोषकाल में सबसे शेष है उसके करने से अति आनन्द प्राप्त होता है और प्रदोषकालमें सब देवता शिवजी की सेवा में पहुँचते हैं और शिव शिवरानीसहित उत्तम आसन में स्थित होते हैं और सब देवता विष्णु और हम शिवके आगे भजन करते हैं इस तरह पर कि विष्णु मृदङ्ग बजाते हैं और हम करताल बजाते हैं और श्रीसरस्वती देवी वीणा बजाती हैं और लक्ष्मी गाना गाती हैं और तुम भी वीणा बजाते हो इसीप्रकार नानाप्रकारकी लीलाओं से शिव और शिवरानीको रिझाते हैं बाक़ी और जितने देवता उपदेवता हैं वह सब सेवा में खड़े रहते हैं उस समय कोई देवता अपने लोकमें नहीं रहता सब शिवलोक में जाकर शिवकी सेवामें लगे रहते हैं इससे उचित है कि ऐसे समय में सिवाय शिवजी के और कोई देवता पूजाके योग्य न समझे उससमय केवल सदाशिवजीकी पूजासे और सब देवता प्रसन्न होते हैं कोई देवता क्रोध नहीं करता कदाचित् कोई मनुष्य उससमय किसी अन्य देवता की पूजा करता है तो वह देवता पूजनेवाले पर अतिकोपित होता है उचित है कि प्रदोषकालमें सब कार्यों को छोड़ शिवकी सेवामें जावे कोई मनुष्य चाहे कैसाही रोग और दुःखमें पड़ा हो जो प्रदोषकाल में सदाशिव की पूजा करे तो वह अवश्यही आनन्द पावेगा इसपर हम एक विचित्र व्याख्यान कहते हैं कि दक्षिण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के देशमें जो देश वैर्दभ के नामसे प्रसिद्ध है वहाँ का राजा सत्यरथ नामी बड़ा धर्मात्मा हुआ वह सत्यवक्ता, शीलवान्, क्रियावान्, दयावान् और शिवका बड़ाभक्त था उसने अतिदया कृपा और धर्म और न्यायके साथ राज्य किया उसके राज्यमें कोई दुःखी न था बहुत समय बीतने पर राजा शाल्व ने जो सत्यरथ का शत्रु था सत्यरथके नगरको घेरलिया दोनोंमें बड़ा युद्ध हुआ जिसमें सत्यरथ मारागया और उस की सेना और रानी सब भागगये रानी रातभर भागती हुई प्रभातको पूर्वकी ओर एक तालाबपर बैठगई जहां उसके एक पुत्र शुभलग्न में उपजा और वह प्यासके वेगसे नदीके तटपर गई चाहा कि पानी पी प्यास बुझाऊं कि एक मगरने उसको पकड़ निगला और वह बालक उस दशामें रोता हुआ क्षुधा तृषासे विकल हुआ उसके रोने पीटने पर शिवको दया आई सो जहां वह बालक पड़ा था वहां एक ब्राह्मणी स्त्री जो विधवा थी आई और बालकको अकेले देख आश्चर्य में हुई और कहा कि मैं नहीं जानती कि यह किसजातिका बालक है उससमय सदाशिवने भिक्षुक ब्राह्मण का रूपधर ब्राह्मणी के पास आकर कहा कि तुम संशय छोड़ इसको पालो इस बालकसे तुमको बड़ा सुख प्राप्त होगा यह पहिले जन्ममें राजाका पुत्र था यह त्रयोदशीव्रतमें नगरमें उत्पात होने के कारण हमारी पूजा छोंड़ नगरके समाचार लेनेको चलागया और अपने शत्रु को बांध इसने अपने हाथ से उसका शिर काटडाला और उसी अशुद्धदशा में हमारी पूजा छोंड़ भोजन किया इससे वैदर्भ राजाके यहां उपजकर इस कुदशाको प्राप्त हुआ हे ब्राह्मणी! त्रयोदशीव्रतके त्यागने से किसी मनुष्य को सुख नहीं मिलता और इसकी माताने पहिले जन्ममें अपनी सवतिको बड़े छलसे मारडाला इसीसे उसको मगरने नदीमें खाडाला और तेरा पुत्र जो तेरे साथ है इसने पूर्वजन्म में कुधान्य दान लिये इससे इसकी ऐसी अवस्था हुई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमको उचित है कि दोनों बालकों से शिवकी पूजा कराकर संसारी सर्वप्रकार की धन सम्पत्ति पा अन्त में मुक्त होजावो यह कह शिवने अपने मुख्यरूप और लक्षणोंसे ब्राह्मणी को दर्शन दिया ऐसा अनूपरूप सदाशिव का देख ब्राह्मणीने दण्डवत् और स्तुति की फिर शिव अन्तर्धान होगये ॥

बारहवां अध्याय ॥

नारदके पूछने पर ब्रह्मा बोले कि,सदाशिवजीके अन्तर्धान होने पर ब्राह्मणी उस बालक को उठाकर अपने पुत्रसहित अपने घर आई और चक्रनाम नगरी में रहनेलगी वह दोनों बालकों को ले भिक्षाटन कर उनको पालती जब दोनों कुछ युवा हुये तो उन्होंने दीक्षा पाकर सब विद्याओंको सुगमतासे पढ़ा एक दिन दोनों बालकोंने शाण्डिल्य मुनि को शिष्योंसहित शिवके गुण वर्णन करते हुये देखा और शाण्डिल्यमुनि से मन्त्र पा शिवकी पूजा करने लगे और शाण्डिल्यमुनि के उपदेश के अनुसार प्रदोष व्रत करने लगे जब चारमास बीते एक दिन दोनों स्नान के निमित्त नदी के तटपर गये और स्नानकर शिव बाना किये हुये अपने घर लौटे आते थे कि शिव प्रसन्न हुये और उनको मार्गमें धनका भराहुआ घट मिला उसको लेकर उन्होंने माता के सम्मुख रख दिया माताने कहा कि तुम दोनों बराबर बांटलो तब राजाके पुत्रने कहा कि यह घट तुम्हारे पुत्रने पाया है मैं नहीं लूंगा जब हमपर गिरिजानाथ कृपा करेंगे तब हमभी असंख्य धन प्राप्त कर लेंगे यह कह वह पूर्ववत् शिवपूजा और त्रयोदशीव्रत करतारहा यहां तक कि पूरा एकवर्ष बीता संयोगसे वे दोनों एक दिन वनमें गये और एक गन्धर्वकी लड़की को जो बहुत सुन्दरी थी देखा ब्राह्मणके बालकने कहा कि हम इस कन्याके निकट नहीं जावेंगे क्योंकि व्रतधारी को स्त्रियोंकी संगति और उनके पास जाना निषेध है पर राजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का पुत्र उसके पास गया दोनों प्रीतिसागर में डूब परस्पर की प्रेम वार्त्ता करनेके उपरान्त अपना २ कुलाचार कहनेलगे गन्धर्वकी कन्या ने कहा कि मैं कोद्रविक गन्धर्वकी लड़की हूं जो सब गन्धर्वों का राजा है और मैं गानविद्या भलीभांति जानती हूं मैंने शिवकी कृपासे तुमको पाया है यह कह मुक्ता की माला राजाके पुत्रको दी राजपुत्र बोला कि मैं जाति पांति से विहत और राज्य से हीन हूं मुझे क्यों अपना पति किया चाहती हो और तुमने अपने पितासे भी इस बात की आज्ञा नहीं पाई गन्धर्वकी लड़कीनें कहा कि मैं अपने माता पिता की आज्ञा पा तुम्हारी रानी हूंगी तुम तीसरे दिन उसी स्थानपर आकर हम सबको देखोगे यह कह पूर्ण प्रतिज्ञाकर दोनों अपने २ घरको लौट गये और दोनों अपने २ बड़ोंको समाचार देकर प्रतिज्ञानुसार नियत स्थान पर जा पहुँचे गन्धर्वने दोनोंसे कहा कि हम सदाशिवके यहां नाचने गाने को गयेथे वहां सदाशिवने हमसे कहा कि पृथ्वीमें एक धर्मगुप्त नामी राजपुत्र माता पिता हीन राज्यभ्रष्ट हो गुरुके उपदेशसे त्रयोदशी का व्रत करता है उसके सब पितर पापोंसे छूट हमारे लोकमें आगये हैं और तुमको आज्ञा दीजातीहै कि तुम जाकर उसकी सहायता करो कि वह अपने शत्रुको जीत अपना राज्य पावे इसलिये पहिले मैं यह लड़की तुम्हारे साथ ब्याहेदेताहूं फिर तुम्हारे शत्रुओंका नाशकर तुमको तुम्हारा राज्य दिलाऊंगा कि तुमको शिवकी सेवा का फल प्राप्त हो कि कितनी शिवकी पूजा अप्रमेय फल देती है तुम अपनी रानीसहित संसारीभोग भोगकर फिर शिवपुरीको जावोगे यह कहा और अपनी पुत्री राजपुत्रसे ब्याहदी और शत्रुओंका नाशकर उसका राज्य उसे दिलाया फिर गन्धर्व अपने देशको लौटगया और राजा ब्राह्मणी सहित जो माता के समान थी और उसका लड़का जो भ्राता के सदृश था और रानी और सब कुल परिवारसहित जन्मभर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भोग भोगतारहा हे नारद ! यह त्रयोदशीव्रत चारों पदार्थों का दाता है इसकी महिमाके पढ़ने सुननेसे दोनों लोकमें आनन्द मिलताहै ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्मा बोले कि अब हम एक और कथा त्रयोदशी के माहात्म्यकी कहते हैं कि पूर्वकालमें देवताओं और दैत्योंमें इन्द्र और वृत्रासुर ने परस्पर बड़ा युद्ध किया था वृत्रासुरने युद्धमें अपने शरीर को इतना बड़ा करके दिखाया कि सब देवताओं को सामना करनेकी शक्ति न रही और सब युद्धस्थान को छोड़ भागगये और बृहस्पतिकी शरणमें जाकर कहा कि महाराज ! हमको वृत्रासुरने युद्धस्थान से भगादिया हमारा कोई उपाय उस पर नहीं चलता अब वह उपाय बताइये जिसमें हमको विजय प्राप्तहो बृहस्पतिने सदाशिवका ध्यान कर देवताओं से कहा कि यह वृत्रासुर पूर्वजन्म में चित्ररथनामी एक राजा था जिसने विधिपूर्वक तेरसिव्रत किया और शिवको अतिप्रसन्नकर उसने धन द्रव्य सब कुछ पाया पर शिवरानी के शाप से वृत्रासुर के नाम से प्रसिद्ध हुआहै और शिवकी कृपा से बड़ा बलिष्ठ और प्रतापवान् हुआ और गिरिजाके शापके कारण देवताओं को दैत्य होनेसे दुःख देता है जो तुम वृत्रासुर को जीता चाहतेहो तो सदाशिवजी की पूजा करो और शिवका प्रदोषव्रत धारो तुमको अवश्यही जय मिलेगी क्योंकि प्रदोष-व्रत करने से हर मनुष्य अपने मनका मनोरथ पासक्ता है और प्रदोप-व्रत के रखने की विधि यह है कि कार्त्तिकके प्रारम्भ से वर्षके अन्ततक सबमासोंमें प्रदोषव्रत धारण करके और शुक्लपक्षमें जो शनैश्चर को प्रदोष पड़े वह बड़ाही फलका देनेवाला है उसकी विधि हम वर्णन करते हैं उचितहै कि मध्याह्न को शिवका ध्यान करे और तिल और आमलों के पानी से नहावे और शिवकी पूजा बहुत वस्तु चढ़ाकर करे फिर सन्ध्या के समय प्रदोषकाल में शिवलिङ्ग की पूजा किसी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्थानपर स्थापितहो स्नानकर मौन धारणकरे और गोघृत के बहुतसे दीपक जलावे ये दीपक हज़ारसे लेकर एकसौतक भी उचित हैं और जो न होसके तो बीस दीपक अवश्य जलाने चाहियें और सर्वप्रकार की सामग्री से और उत्तमोत्तम नैवेद्य आदि और प्रेमके साथ शिवको भेंटदे और शिवकी शतरुद्री सुने और दोसौ बेर सदाशिवकी परिक्रमा करे हे इन्द्र! इस उपायसे तुम सबतीर्थ व्रतको करो और सदाशिवको प्रसन्न करके उपरान्त दैत्यों से सामना करो तुमको अवश्य जय मिलेगी यह सुन इन्द्र देवताओं सहित अतिप्रसन्न हुये और गुरुकी आज्ञानुकूल प्रदोषव्रत करनेलगा और शिवको प्रसन्न समझ वृत्रासुर के साथ युद्धकर वृत्रासुर को वज्रसे मारा और सब देवताओंको अति आनन्द प्राप्त हुआ हे नारद! तुमको एक और तेरसिव्रत की कथा सुनाते हैं जिसके करनेसे बड़ा आनन्द मिलता है अर्थात् त्रयोदशी व्रत धारणकर विधि से शिवकी पूजाकरे और चांदीका बैल बनवाकर शिव और पार्वतीकी प्रतिमा सोनेकी बराबर इस तरहपर तय्यार करावे कि दश भुजा और पांच मुख तीन नेत्र होवें और तांबेके कलशमें उन मूर्तियों को स्थापित करे और पञ्चरत्न के फल और फूल लगावे और चांदी या वंशपत्र अथवा मिट्टीका घड़ा रखकर दूसरा कलश स्थापित करे जिसको वस्त्र माला और भूषणों से सुशोभितकरे और विधिपूर्वक षोड़शोपचारकर तन मनसे शिवपूजाकरे और इसीतरह चारोंप्रहर रात्रि में जागरण कर उत्सवकरे और शिवकी बहुत प्रकार से दण्डवत् और स्तुति करे जब भोर होजावे तो फिर स्नान करके शिवके पूजने के उपरान्त होमकरे और गुरुकी पूजाकरे और फिर विसर्जनकर ब्राह्मणों को स्वादिष्ठ भोजन करावे और फिर उनकी आज्ञा पा आपभी भोजन करे इसी प्रकार जो मनुष्य प्रदोषव्रत करे तो वह सब मनोरथ पासक्ता है उसको कोई संसारी दुःख नहीं व्यापता और अन्तमें शिवलोकको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलाजावे और दूसरी प्रदोषव्रत की यह विधि है कि जब त्रयोदशी को शनैश्चर पड़े और शुक्लपक्षहो तो सन्तानकी प्राप्तिके निमित्त त्रयोदशी व्रत का आरम्भकरे और मङ्गल के दिन तेरसिव्रत भी अतिशुभदायक है कदाचित् तेरसि शुक्रको हो उसके रहनेसे स्त्री और भाग्यकी वृद्धि होती है कदाचित् रविवारको त्रयोदशी पड़े तो उसके रहनेसे आयु वृद्धि और रोगकी शान्ति होती है उचित है कि एक वर्ष तक बराबर हरमासमें दो बेर प्रीतिपूर्वक त्रयोदशीव्रत करे और सङ्कल्प करके निश्चयपूर्वक सन्ध्याके समय सदाशिव का पूजनकरे और चारोंओर दीपक जला अपना मनोरथ शिवके समीप कहे और नन्दीके अण्ड-कोशको देख फिर उसके दोनों सींगों के मध्य अवलोकनकरे और पुच्छको देख अपने सब पापोंसे शुद्ध होजावे क्योंकि संसार में जितने सब तीर्थहैं वह सब बैलके अण्डकोशमें स्थितहैं फिर उस बैलको दाना चुगादेवे और हरप्रकार उसकी सेवाकरे और फिर ब्राह्मणोंको यथाशक्ति आप दक्षिणा दे और मौनहो ब्राह्मणोंको भोजन करावे और आप लवणरहित भोजनकरे अथवा खीर खावे निदान एकवर्ष पर्यन्त इसी प्रकार तेरसिव्रतकरे अथवा वर्षभर तक शनैश्चरवार त्रयोदशीको प्रदोष व्रत कर सब व्रतों का फल पावे उसको कोई दुःख नहीं दे सकेगा हे नारद ! यह प्रदोषव्रत कई प्रकारका है जो नाना प्रकार से भक्त को अतिआनन्द देता है अब और त्रयोदशीव्रतकी युक्ति सुनिये अर्थात् जिसतरह स्त्रियोंको यह व्रत करना उचित है कि मार्गमासकी शुक्लपक्ष में त्रयोदशीव्रत जो अतिपवित्र है प्रारम्भ करे उसमें चँबेलीकी दँतवन कर शिवपूजा करे और मरुवा के पुष्प अतिप्रेम से शिवजी के ऊपर चढ़ाकर नारङ्गी का अर्घ्य दे और फेनी चिरौंजी की नैवेद्य लगा और अन्य फल आदि और स्वादिष्ठ भोग सामने रक्खे और जैसा चाहिये पूरा पूजनकरे इस मासकी पूजामें शिवका अनङ्ग नाम है रात्रि को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मधु भोजन करे दूसरे मासमें उदुम्बर अर्थात् गूलरकी दँतवनकर जाती सुगन्धित पुष्प शिवके ऊपर चढ़ावे और दाड़िम अर्थात् अनार का अर्घ्य दे और अशोकवर्ती की नैवेद्य लगावे आप श्वेतचन्दन खावे इस मासमें शिवजीका नाम नाटेश्वर जानना चाहिये और तीसरे मास अर्थात् तपमास में विष्णुक्रांताकी दँतवन करके कुन्दके पुष्प शिवपर चढ़ावे और बीजपूर का अर्घ्य देकर पौंड़ेकी नैवेद्य लगावे इस मासमें शिवका नाम योगेश समझना चाहिये आप मूली खावे और शिवजी का ध्यानकरे चतुर्थमासमें अनारकी दँतवनकर धतूरेके पुष्प शिवपर चढ़ावे श्रीफल अर्थात् बेलका अर्घ्य दे इस मासमें शिवका नाम वीरेश है रात्रिको कङ्कोल भोजन करना चाहिये पांचवें मधु मास में मल्लिका अर्थात् बेलेकी दँतवनकर मदनपुष्प अर्थात् धतूरा शिवपर चढ़ावे और उसीका अर्घ्य देकर खर्जुक अर्थात् खजूरकी नैवेद्य लगावे और शिव का नाम इस मास में भव जानकर आप रात्रिके समय कर्पूर खावे और छठे माधमास में लटज्जीरे की दँतवन करके उत्पलका अर्घ्य दे और शिवका महारूप जानकर चँबेली के पुष्प चढ़ावे और पटुक नाम अन्नकी नैवेद्य लगावे और व्रती स्त्री आप रात्रिको जातीफल अर्थात् जायफल खावे सातवें मास में सहदेई की दँतवन कर बकुल पुष्प शिवपर चढ़ावे और श्रीफलका अर्घ्य और मधुकी नैवेद्य लगावे और शिवका प्रद्युम्न नाम जानकर आप रात्रि को लवङ्ग भोजन करे और आठवें शुचि अर्थात् आषाढ़मास में नारङ्गी की दँतवन करके कदम्ब के पुष्पों से शिवपूजा करे और नारियल का अर्घ्य दे दधिकी नैवेद्य लगावे और शिवका नाम उमापति जान रात्रिको तिल खावे और नवें श्रावणमास में जाती की दँतवन कर कमलपुष्प शिव पर चढ़ावे और जामुनके फलोंका अर्घ्य देकर दूधकी नैवेद्य लगावे और शिवका नाम शूलपाणि जानकर रात्रिको गन्ध पूप खावे दशवें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भाद्रपदमास में कङ्कोल की दँतवनकर चम्पक के फूलोंसे शिवजी की पूजाकरे और सुपारी का अर्घ्य देकर सोहारी की नैवेद्य लगावे और शिवका सदैव नाम जानकर अगुरु आप भोजनकरे और ग्यारहवें कुवारमास में कंकेत की दँतवनकर कनेर के पुष्प शिवजी के ऊपर चढ़ावे और कर्कोटीफल का अर्घ्य देकर सितमुण्डककी नैवेद्य लगावे और आप व्रती स्त्री कननतोय अर्थात् कुम्हड़ा खावे और बारहवें कार्त्तिक मास में ऊर्जकदम्ब की दँतवनकर रक्त उत्पल शिवजी पर चढ़ावे और कमठाफलका अर्घ्य देकर सोहारी की नैवेद्य लगावे और शिवजी का नाम जगदीश्वर जानकर व्रती स्त्री रात्रिको मदनफल अर्थात् मैनफल खावे इस प्रकार स्त्री त्रयोदशी व्रत कर सिद्धि पावे इस बातमें कुछ संशय नहींहै जब एक वर्ष इसप्रकार व्रत करके पूर्णहो जावे तो फिर व्रत का उद्यापनकरे शिवजी की पूजाकर होम करे और अपने आचार्य को दानदे और जागरण करे इस कथनके सुनने पढ़ने से दोनों लोकमें आनन्द मिलता है प्रदोषव्रत माहात्म्य पूर्ण हुआ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

एकादशीव्रत के माहात्म्य का आरम्भ ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम एकादशी व्रतका माहात्म्य वर्णन करते हैं जो व्रतराज सर्वपापों का नष्ट करनेवालाहै और यह एकादशीतिथि सब तिथियों में श्रेष्ठ और उत्तम है हे नारद ! शिवजी को दोनों पक्षोंकी एकादशी प्रिय हैं इनमें जो मनुष्य व्रत रखता है उसपर शिवजी अतिप्रसन्न होते हैं और कृष्णपक्षकी एकादशीमें भोजन करनेकी इस तरह आज्ञाहै कि जब प्रदोषकाल आवे तब शिवजी की पूजाकर प्रसन्न होवे निदान त्रयोदशी व्रत के समान इस व्रत को समझ संध्या को शिवजीकी पूजा करके भोजनकरे पर शुक्लपक्ष की एकादशीमें अन्न जल रहित व्रत रक्खे विधि यह है कि प्रभातको उठ

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नियमसे स्नानकर शिवजीकी पूजाकरे और दिनभरशिवजी के काम और सामग्रीके इकट्ठा करनेमें बितादे और संध्याके समय फिर स्नान कर शिवजीकी पूजाकरे और हर प्रकार शिवजीको रिझावे और अति प्रसन्नतासे उत्सव करके अपने गालोंको बजावे और कृष्णपक्षमें भोजन करके शुक्लपक्ष में इस व्रतको निर्जल रहना उचित है पर निर्जल रहने हीसे पूर्णफल मिलता है और आधाफल दूध पीनेसे प्राप्त होता है निदान किसी प्रकार व्रत करे क्योंकि व्रतके छोड़ने से मनुष्य की भलाई नहीं है यह व्रत शिवजी को अतिप्रिय है इसके त्याग करनेसे बुराई है और इस व्रतके करने से सर्व मनोरथ पूरे होते हैं इस व्रतका करने वाला मनुष्य संसारमें भोग भोगकर अन्तकालमें शिवपुरी पाताहै जो इच्छा हो वही पूरीहो इसपर हम एक कथा कहते हैं कि सूर्यवंशी राजा मांधाताने यह व्रत किया संयोगसे अयोध्यामें काल पड़ा और अन्न न उपजनेसे प्रजा अतिदुःखी हुई सो सब प्रजा इकट्ठी होकर राजा की डेवढ़ी पर आई और बिनतीकी कि हे महाराज, पृथ्वीपाल, धर्मात्मा! क्यों अकालपड़ा कौन ऐसा पाप हुआहै जिससे यह दुःख मिलताहै अयोध्याके सब मनुष्य भूखके मारे मरते हैं कोई उपाय नहीं सूझता आप महाराज हो कोई उत्तम उपाय बतावो हम तुम्हारी शरणमें आये हैं हम सबको बचावो मान्धाता राजा अपनी प्रजाके दीन वचन सुन अतिविकल हुआ और ब्राह्मण और सत्पुरुषों को बुला लज्जासे शिर झुकाये बोला कि आपसब इस बातको बतावें कि क्यों हमारे अवधदेश में वर्षा नहीं होती सो ऐसा उपाय बतावो जिससे वर्षा होवे ब्राह्मणोंने सोच विचार कर कहा कि हमको कोई कारण वर्षा न होनेका मालूम नहीं होता पर हम वर्षा होनेकी युक्ति बताते हैं यह कह उन्होंने बहुत ही उपाय बताये जिनको राजाने किया पर तौभी वर्षा न हुई तब राजा आश्चर्य में हो चिन्तित हुआ और निराश हो एक वनको चलागया

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वहां एक तपस्वी था जिसका नाम लोमश था जो बड़ा विज्ञानी और शिवजीका भक्तथा राजा उनको सिद्ध जान उनके आगे खड़ेरहे और दण्डवत् कर हाथ जोड़ विनयकी कि हे मुनीश्वर, सर्वज्ञ! अयोध्यामें वर्षा नहीं होती प्रजा महादुःखी है यद्यपि मैं असंख्य उपाय कर चुकाहूं पर पानी न बरसा निदान विकल होकर वनमें आयाहूं भाग्यसे आप के चरणों के दर्शन हुये आप कृपा करके पानी बरसने की युक्ति मुझे बतावें यह सुन लोमशने राजासे कहा कि शिवजी की कृपासे मैं वर्षा की युक्ति बताता हूं तुमको उचित है कि अपनी प्रजासमेत शिवजी को स्मरण कर व्रत करो इस व्रतमें शिवजीकी पूजा करके भोजन करना चाहिये सो राजाने विदा होकर अपने राज्यमें आ एकादशीव्रत धारण किया और अपनी प्रजासे भी यही व्रत रखाया और इतनी वर्षा हुई जिससे सबको आनन्द हुआ और अन्न बहुत उपजा हे नारद! इस व्रतके करनेसे इसीप्रकारके मनोरथ तुरन्त प्राप्त होते हैं इस व्रतके करने से कोई दुःख नहीं रहता इसी प्रकार राजा मुचुकुन्द और राजा जनक और चक्रवर्ती राजा सगरने यह व्रतकर क्या २ पदार्थ नहीं पाये अब श्रीरामचन्द्रकी कथा सुनो कि दशरथकुमार श्रीरामचन्द्र बड़े प्रतापी हुये उन्हों ने भाग्यवश वनवास अङ्गीकार कर विचित्र चरित्र किये जिनको सुनकर रावण सीता महारानी को उठाकर लङ्का में लेगया निदान रामचन्द्र उठते बैठते सीता की खोजमें विकल हो पम्पापुर में पहुँच हनुमान्जीकी सहायता से बड़ी वीरसेनाके साथ समुद्रके तटपर आये पर जब समुद्रका पार उतरना कठिन जाना तो सेना को समुद्रके तट पर खड़ीकर इधर उधर फिरने लगे और लोमशऋषिको तप करते हुये पाकर उनके समीप गये और दण्डवत् और प्रणाम के उपरान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि समुद्र पार जाना अति कठिन है आप कोई उपाय बतावें कि हम सेनासहित समुद्रसे उतर रावणको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नष्ट करें यह रामचन्द्र का वचन सुन लोमश ने शिवमाया को जान हँस दिया और रामचन्द्र से कहा कि पहिले तो तुम विष्णुका अवतार दूसरे शिवके भक्त तुम्हारे मनोरथ पूरे होने में क्या सन्देह है तुम सदाशिव का ध्यान करो वे बिगड़े हुये सब काम ठीक करेंगे तुम्हारे समान और कोई शैव नहीं तुमको भाग्यवश यह दुःख हुआ है क्योंकि जब तुमने मनुष्यतनु धरा तो मनुष्यको अवश्य कष्ट होता है इसी कारण आप को मनुष्य होनेसे यह दुःख हुआ है तुमको चाहिये कि तुम एकादशी-व्रत धारण करो और शिवकी पूजाकर उस दिन फलाहार करो और शिवका शिवरानी समेत ध्यान करो और शुक्लपक्ष की एकादशी में अन्नजलरहित व्रत करो इससे तुमको सिद्धि प्राप्त होगी एकादशी के समान दूसरा व्रत नहीं है जैसा कि वेद और पुराण गाते हैं यह सुन रामचन्द्र लोमशसे विदा होकर अपनी सेनामें गये और लोमश की शिक्षाके अनुसार एकादशीव्रतको आरम्भ किया सो दृढ़ सेतु बांध शिवलिङ्ग स्थापितकर समुद्र पार उतर रावण को मार सीताको पाया हे नारद ! यह एकादशीव्रत ऐसा फल देनेवाला है और यह व्रत विष्णु और शिव दोनोंका है इसके करनेसे विष्णु और शिवजी दोनों प्रसन्न होते हैं यह व्रत सब देवताओं और मुनीश्वरों को बहुत प्रियहै इसके माहात्म्यके सुननेसे दोनों लोकमें आनन्द प्राप्त होता है एकादशीमाहात्म्य पूर्ण हुआ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

अष्टमीका माहात्म्यव्रत ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अब अष्टमीव्रत का माहात्म्य सुनो सब महीनों की अष्टमी तिथिको यह व्रत करना उचित है और सोमवारव्रतके समान इस व्रतको विधिसे करे केवल भादों मासमें कुछ थोड़ा अन्तर है और शेष दोनों व्रतोंके लिये एकही विधि है सो भादोंमासके शुक्ल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पक्ष में शिवपूजाकी विधि इसतरह पर है कि प्रदोषकाल में दूब लाकर शिवजीकी पूजाकरे तो पूजन करनेवालेका एकभी पाप नहीं रह जावेगा उसके तन मन दोनों तेजवान् होजावेंगे और फूल और फल और दूब और बिल्वपत्र शिवके ऊपर चढ़ावे और अर्घ्य और नैवेद्य और दधि और अक्षत और लावा देवे और शिवको प्रसन्न होकर दण्डवत् करे और प्रेमसे शिवको रिझावे फिर ब्राह्मणों को उत्तम भोजन करावे पर क्षार और नोनका भोजन न तो आप खावे और न ब्राह्मणों को भोजन करावे ब्राह्मणों को भोजन करानेके अनन्तर उनको दान देकर बिदा करे हे नारद ! जो इस प्रकार भादों की अष्टमी का व्रतकरे तो उसके सम्पूर्ण दुःख दूर होजावें यहांतक कि ब्रह्महत्याभी इससे नष्ट होजावे सर्वमनोरथ पूरे होवें और संसारमें प्रसन्न रहकर अन्तमें शिवपुरी प्राप्त हो असंख्यजन्मों के पाप नष्ट होजावें यह दूर्वाष्टमीव्रत शिव को अतिप्रिय है जिसके करनेसे कोई पाप नहीं रहजाता चारों वर्ण इस व्रतके करने का अधिकार रखते हैं और सब वर्णोंकी स्त्रियोंको भी यह व्रत करना अवश्य है यह ऊपरकी लिखी हुई युक्ति हमने भाद्रपदमास की अष्टमी के लिये वर्णन की अब और महीनों की अष्टमीव्रत का हम वर्णन करते हैं कि अगहन मास के कृष्णपक्षमें निर्जल रहकर इस व्रतको करे इसका नाम कालाष्टमीव्रत है इसके करनेसे भक्तको मुक्ति मिलती है इस दिन दोपहरके समय भैरवने जन्म लिया था इससे यह व्रत भैरवव्रत के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसके करने से सब पाप नष्ट होजाते हैं यह भैरवका व्रत अतिआनन्ददायक है इसको कर असंख्य भक्तोंने मुक्ति पाई है यह व्रत शिवको बहुतप्रिय और सब व्रतों का राजा है और सबको चारों फलका देनेवाला है जो मनुष्य लोक परलोकमें अप्रमेय आनन्दकी इच्छा रक्खे उसको यह व्रत करना अवश्य है क्योंकि इस व्रतके करने से भैरव अतिप्रसन्न होते हैं और सकल है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि जब भैरव अतिप्रसन्न हैं तो संसारमें वह कौन वस्तु है जो व्रत करने वाले को अलभ्य हो सो अवश्य यह व्रत करे मध्याह्न को बड़ा उत्सव करे और चारोंप्रहर रातको शिवकी पूजा करके जागरणकर रात बिता दे जब प्रभात होजावे तब स्नानकर शिवकी पूजा करे और ब्राह्मणों के बालवटुक अर्थात् बहुत छोटे बच्चोंका पूजन करके आठ बालकोंको भोजन करावे फिर दूसरे ब्राह्मणोंको भी भोजन करावे और सामर्थ्य भर आप उनको दक्षिणा देकर दण्डवत् करे उन सबके बिदा होजाने के अनन्तर आप कुल और मित्रोंसहित शिवका स्मरणकर भोजन करे यह भैरवव्रत एक वर्षतक करना चाहिये जिसके करने से चारों पदार्थ मिलतेहैं और भैरव सदाशिव के पूर्णस्वरूप हैं हम एक भैरवकी महिमा का इतिहास वर्णन करते हैं कि एक दिन सब देवता और मुनीश्वर इकट्ठे बैठकर कहनेलगे कि कौन परब्रह्म है इस बातमें तकरार कर इस बातके पूछने को इकट्ठे हो हमारे पास आये और कहा कि सब में कौन परब्रह्म अनादि, अनन्त, अविनाशी, सर्वसृष्टिका राजा, निर्गुण, सगुणस्वरू है जिसकी बराबरी कोई नहीं करसक्ता जिसको वेदान्ती सच्चिदानन्द कहकर मानते हैं और जिसके भयसे शेष धरतीको अपने शिरपर रक्खेहुये हैं और जिसकी आज्ञा से सूर्य प्रतिदिवस संसार में उजियाला करते और चन्द्रमा और नक्षत्र आकाशपर स्थित हैं यह प्रश्न सुन हमने कहा कि ऐसा मनुष्य जो तुम पूछते हो हम हैं दूसरा कोई नहीं क्योंकि ब्रह्म और स्वायम्भुवआदि हमारे नामोंसे यह बात सूचित है हे नारद ! शिवकी माया से मैंने ऐसे वचन कहे वह माया बड़ी बलवान् है यह सुन विष्णु हमसे अप्रसन्न हुये और उन्हों ने अपने को ब्रह्म ठहराया और कहा क्या कोई मनुष्य अन्धा होकर नयनसुखके नामसे प्रसिद्ध नहीं होता व कुबेरका नाम पाकर क्या भीख नहीं मांगता है तुमने वेदके अर्थ नहीं समझे इस तरह हम दोनों ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ा झगड़ा किया और वेदों पर भी झगड़ा पड़ा सो वेदोंने हमारे पूछने के अनुसार कहा कि परब्रह्म केवल सदाशिव हैं क्योंकि वे तीनों गुणोंसे भिन्न कहाते हैं और उनके अङ्गोंसे तुमभी दोनों उपजे हो यह सुनकर हम दोनों वेदोंके ऊपर अतिकोपित हुये फिर प्रणवने देवताओं के रूपसे आकर कहा कि हे विष्णु और ब्रह्मा ! तुम वेदके वचन को असत्य जानते हो वेद सत्य हैं उनमें झूठ का कुछभी लेश नहीं तुम भलीभांति इस बात को जानो कि परमशिव का कुछ रूप नहीं है परन्तु परमशिव की लीला, रूप बहुत हैं जो अपने किसी भक्तके निमित्त प्रकट होकर असंख्य चरित्र करते हैं उसी परमशिवने हर होकर कैलास में वास किया और शक्तिसहित नाना विधिकी लीला कीं उनके चरित्र कौन जानता है जो उनके मन में आता है वह करते हैं तुम संसारीजीवों के समान सत्यमार्ग छोड़ संशय में पड़े हो यह कैलासवासी शिव अपनी इच्छा के अनुसार कभी शरीर धारते और कभी निश्शरीर होकर एक समय योगी और दूसरे समय में भोगी होजाते हैं कभी नग्न हो तनमें भस्म धारण करके ध्यानमें बैठजातेहैं कभी चक्रवर्ती राजाओंके समान सभासाज उनपर आज्ञा चलाते हैं और सब देवता उस सभामें आकर दोनों शिव और शिवरानी को रिझाते हैं लक्ष्मी शिवके गुण गाती हैं और हे विष्णो ! तुम मृदङ्ग बजाते हो और तुम ब्रह्मा ताल देते हो और सरस्वती वीणा अलापती हैं और इन्द्रभी बहुत शोच समझ वीणा बजातेहैं और अन्य सब शिवका भजन प्रसन्न होकर करते हैं यद्यपि ऐसे २ वचन प्रणवने दोनोंको समझाये पर ब्रह्मा और विष्णु कब मानते थे क्योंकि शिवजी की माया ऐसी न थी जो उनको यह बात समझने देती ऐसे समय में शिवने अनुग्रहकर यह विचार किया ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोलहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! एक ज्वाला हमारे और विष्णुके सामने प्रकट हुई जिसके प्रकाश से सर्वपृथ्वी और आकाश पूरित हुये और उस ज्वालाके मध्यमेंसे एक मनुष्य प्रकट हुआ जिसको देख हमने अपने पञ्चममुख से कहा कि यह कौन है कि हमारे तुम्हारे बीच में उपजा है वह मनुष्य नीललोहित अङ्ग भालमें चन्द्रमा हाथमें त्रिशूल और भूषणों की जगह सर्प पहिने था हमने कहा कि तुमतो वही हो जो हमारे दोनों भवोंके बीचसे उपजे थे और तुमको हमने रोते देख कर तुम्हारा नाम रुद्र रक्खाथा यह सुनकर रुद्र अर्थात् सदाशिव अति कोपित हुये और एक मनुष्य को उपजाया जो भक्तोंको प्रसन्न करने वाला और शत्रुओंको दुःखदेनेवाला था वह कालके समान प्रकट हो कालराजके नामसे प्रसिद्ध हुआहै और जोकि विश्वके भरण की शक्ति रखता था इससे भैरव उनका नाम पड़ा और जोकि उनसे कालनेभी भय खाया इससे कालभैरव के नामसे प्रसिद्ध हुआ और दुःखों के समूह दूर करने से आमर्दक और भक्तों के पाप दूर करने और भक्तों के मुक्त करने से उनका पापभक्षक नाम हुआ इसी प्रकार और नामों से भी प्रसिद्ध हुये शिवने उनसे कहा कि इस प्रजा के उपजानेवाले ब्रह्माने हमारी निन्दा की है इसको दण्ड दो कि संसारीजीवों को इसकी शिक्षा हो और तुमको हमने अपनी काशीपुरी का कोतवाल नियत किया यह सुनकर भैरवने हमारे पांचवें शिरको जिससे शिवकी निन्दा की थी काटडाला तब शिवजी ने भैरव की ब्रह्महत्या दूर करनेको यह युक्ति बताई जैसा कि और खण्डों में वर्णन होचुका है यह कहकर शिव तो अन्तर्धान होगये और भैरवने भी हमारा शिर हाथमें लियेहुये तीनों लोककी परिक्रमा की पर उस स्त्रीने जो ब्रह्महत्या होकर भैरव के पीछे लगीथी पीछा न छोड़ा निदान भैरव सर्वस्थान घूमकर सब देव-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ताओंके लोकमें गये और जब विष्णुलोकमें गये तब विष्णु ने बहुत बहुत समझाया कि महाराज ! तुमको हत्या नहीं लगसक्ती तुम तो शिवस्वरूपके सदृश बरन शिवस्वरूप ही हो तुम्हारे कण्ठ में ब्रह्माके शिरोंकी माला विराजमान है जो अगले कल्पोंके ब्रह्मा थे क्या उस समय तुमको ब्रह्महत्या नहीं लगसक्ती थी तुम आप लीला करके अपनेको पापी दिखलाते हो तुम्हारे स्मरण से औरोंकी ब्रह्महत्या दूर होजाती है तुमको ब्रह्महत्या क्योंकर लगसक्ती है जब तुम प्रलयकर सर्वसृष्टि का नाश करदेते हो तब तो तुमको कोई पाप नहीं लगता अब केवल ब्रह्माके एक शिर काटनेसे अपना ऐसा स्वरूप बनाये हुये फिरतेहो फिर विष्णुने ब्रह्महत्याको जो स्त्रीके रूपमें थी बुलाकर बहुत समझाया कि तू भैरवका पीछा छोड़दे उसने कहा कि मेरा क्या अपराध है यह सदाशिवकी आज्ञा है फिर भैरव अपनी भक्ति विष्णुको दे आगे चले जब मुक्तिपुरी काशीमें भैरवजी आये तब वह ब्रह्महत्या आपही गुप्त होगई हे नारद ! काशी की महिमा कोई वर्णन नहीं करसक्ता देखो ब्रह्महत्या तीनों लोक की परिक्रमा करने पर भी दूर न हुई और काशीमें पहुँचतेही भाग गई और काशीमें कपालमोचन तीर्थ सबसे अधिक फल देनेवाला है जिसके केवल स्मरण से बड़े २ पाप नष्ट होजाते हैं वहां तर्पण करनेसे ब्रह्महत्या तुरन्त नष्ट होजाती है सब वेद और पुराण कहते हैं कि इसके समान दूसरा तीर्थ नहीं है वहां भैरव सदाशिव विराजमानहैं जिनकी सेवासे सब दुःख दूर होजाते हैं जो कोई मनुष्य वह भैरवका व्रत काशीमें भैरव के पास जाकर करे उसके सब पाप दूर होजावें और उसदिन जो कोई भैरव की पूजा करे तो एक वर्षके विघ्न नष्ट होजावें और सप्तमी चतुर्दशी रविवार और भौमवार को भैरवके स्थान में जावे उसके सब पाप दूर होजावें जो मनुष्य भैरव की आठ परिक्रमा करे उसके तीनों प्रकार के पाप दूर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होजावें सिवाय इसके जो विना काशीके और दूसरे स्थानमें भी यह भैरवका व्रत कोई मनुष्य करेगा तोभी उसको बड़ाफल होगा सब शिवके भक्तोंको उचित है कि अगहन कृष्णपक्षकी अष्टमीको यह व्रत करें और भैरवके व्रत की कथा सुनें और दूसरों को सुनावें तो बड़ी पुण्य पाकर मुक्ति पावेंगे भैरवअष्टमी का व्रत पूर्ण हुआ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

सोमप्रदोषव्रत का माहात्म्य ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम सोमप्रदोषव्रत की महिमा वर्णन करते हैं जिसके सुननेसे इस व्रतके करने का निश्चय बढ़ता है इस व्रतके करनेसे दोंनों लोकके मनोरथ पूर्ण होते हैं इस व्रतको सब स्त्री पुरुष करसक्ते हैं यह सोमवारका व्रत शिव को अतिप्रिय और और व्रतोंका राजा है जिसके करने से दोनों लोक के मनोरथ मिलते हैं करोंड़ो जन्मके पाप दूर होजातेहैं उचितहै कि सोमवार का व्रत दिन भर करके सन्ध्याके समय शिव की पूजा करे यह व्रत सोमप्रदोष कहलाता है इस व्रतमें फलाहार करना चाहिये दिनभर अन्न जलरहित रह सन्ध्याको शिवकी पूजा करे और त्रयोदशीव्रतके समान सब बातें करनी चाहिये और प्रत्येक प्रकार वही त्रयोदशीव्रत के उपचार करने चाहिये उचित है कि अतिपवित्रता से इन्द्रियों को जीत विधिपूर्वक बड़े प्रेम से शिवकी पूजा करे और वेद के अनुसार और लौकिक अर्थात पुराण और तन्त्रादि के मार्गसे भी शिव की पूजा उचित है और इतना ध्यान लगावे कि दूसरेको न देखे और सोमाशिव का भजन करे और एकही भक्तिका नियम इस व्रतमें करना चाहिये यह व्रत चाहे किसी तरह से करे सदाशिवजी की दया का कारण है सो भाग्यहीन और सन्तानहीन निर्धन सब अपना मनोरथ पाते हैं सिवाय इसके जिस मनोरथ के लिये यह व्रत करे निस्सन्देह वह इच्छा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूरी होजावे और वाजपेय और अश्वमेधादे यज्ञ मानो करचुका और संसार में प्रसन्न रह अन्त में जब शिवपुरी को जाता है तब वहां से फिर कभी वह च्युत नहीं होता बरन वह सदा वहां स्थित रहता है यह व्रत चारों वर्णाश्रम चाहे वह पुरुष हो व स्त्री सब कोई करसक्ता है और बिधवा स्त्री अथवा बिन व्याहा पुरुष भी इस व्रत के करने का अधिकार रखते हैं अब हम एक इतिहास वर्णन करते हैं जिससे जानोगे कि इसी व्रतमें चित्राङ्गद मृत्युसे बचा रहा और उसकी स्त्री ने यही व्रतकर अपने पतिसहित शिवपुरी में स्थान पाया कि आर्यावर्त्तदेश में एक चित्रवर्म नाम राजा बड़ा धर्मात्मा यज्ञ करनेवाला संसारके सब भोगों से भरपूर शत्रुओं पर प्रबल शिवजी का बड़ाभक्त हुआ उसने प्रेमपूर्वक शिवजी का भजन किया उसके बहुतसे सुन्दर पुत्र उपजे बहुत कालके उपरान्त उसके कन्या उपजी जो बहुत सुन्दरी थी उसके उपजने से राजाने अतिप्रसन्न हो दान मान से ब्राह्मणों को धनी करदिया कि जैसे हिमाचल को गिरिजाके उपजने से आनन्द हुआ था उसी प्रकार राजा चित्रवर्म को उस कन्या के उत्पन्न होनेसे आनन्द प्राप्त हुआ राजाने ज्योतिषीको बुलाकर कन्या का हाल पूछा ज्योतिषी ने कहा कि इस तुम्हारी कन्याका नाम सीमन्तिनीहै यह उमाके समान शुभ होगी और दमयन्तीके समान सुन्दरी और वाचालता और बुद्धि में वाणीके सदृश और कलाके जानने में लक्ष्मीके समान और यह देवताओंकी माता अदितिके बराबर सन्तानवती होगी और तेजमें सूर्यके समान और सुन्दरता में चन्द्रमाके सदृश होकर दश हजार वर्ष पर्यन्त अपने पतिके साथ भोग भोगेगी और इस के आठ पुत्र उपजेंगे यह सुन राजाने ज्योतिषीको बहुत धन दे बिदा किया और राजा और रानी दोनों महाप्रसन्न हुये कि इतने में एक बुद्धिमान् ब्राह्मण निर्भय हो कहनेलगा कि हे राजन् ! यह तुम्हारी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लड़की चौदह वर्षमें बिधवा होजावेगी हम सत्य कहते हैं पर शिवजी इस दुःख के दूर करनेवालेहैं यह सुनकर राजा रानी समेत शोकसागर में डूबकर मूर्च्छित हुये फिर धैर्यधर सदाशिवजी को स्मरण किया और चिन्ता और मनसे दुःख दूर कर प्रत्येक मनुष्यकी प्रतिष्ठा के अनुसार आदर से सबको बिदा किया और सदैवकाल सदाशिव का स्मरणकर अपनी स्त्री और कन्या सहित दुःखी रहाकरता था जब वह कन्या युवावस्था को प्राप्त हुई और उसने अपनी सहेलियों से सुना कि ब्राह्मणने बतायाहै कि मैं बिधवा होजाऊंगी तो यद्यपि वह मनमें चिन्तित और दुःखी हुई पर मुखसे कुछ न कहकर मैत्रेयीके पास जो याज्ञवल्क्यमुनि की स्त्रीथी गई और दण्डवत् करके सब वृत्तान्त वर्णन किया और कहा मैं तुम्हारी शरणमें आई हूं जो मेरे पतिके आयुकी वृद्धिका उपाय हो वह कहिये यह कहकर बार २ रोई और मैत्रेयी के चरणों में गिरपड़ी मैत्रेयीने उसको चरणोंपर से उठाकर कहा कि तुम शिव और गिरिजा की शरणमें जाओ तुम्हारे सब दुःख दूर होजावेंगे और सोमवार व्रत करके सोमशिवकी पूजा करो कि सन्ध्या के समय सोमवारको पूजाकर ब्रह्मभोज करो और सोमशिव को प्रसन्नकर तुम निस्सन्देह अपना मनोरथ पाओगी इससे अधिक और कोई उपाय पतिकी आयु के बढ़नेका नहीं इस व्रतके करने से किसी प्रकार का दुःख नहीं रहता और सदाशिव सब दुःख निवृत्त करते हैं सो सीमन्तिनी यह शिक्षा पा अपने घरको लौटआई और विधिसे सोमवारव्रत धारणकर सोमशिव की यथाविधि पूजा की और फिर उसका विवाह करके चित्रवर्म राजा बहुत प्रसन्न हुआ॥

अठारहवां अध्याय॥

नारदजीके पूछनेपर ब्रह्माजीने कहा कि नैषधदेशका राजानल और उसकी रानी दमयन्ती जिसका हम पहिले वर्णन करचुके हैं यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दोनों राजा रानी शिवके बड़े भक्त हुये उनके एक बालक उपजा जिसका नाम इन्द्रसेन रक्खा गया वह भी शिव की भक्ति में अति प्रसिद्ध था उसके एक लड़का चित्राङ्गद के नाम से उपजकर चन्द्रमा के समान सुन्दर हुआ वह परम शैव होकर सर्वविद्या और कलाओंमें प्रवीण हुआ वह मधुरवाणी बोलता राजा चित्रवर्मने चित्राङ्गदके उत्तम आचरण को जान अपनी लड़कीका विवाह बड़ी धूमधामसे उसके साथ करदिया राजा चित्राङ्गद विवाहके उपरान्त थोड़े समयतक अपने श्वशुर के घरमें रहा और अपनी सीमन्तिनी नाम स्त्रीसहित सोमवार व्रत करतारहा एक दिन औरों समेत राजा चित्राङ्गद नावपर चढ़ यमुनानदी में जलविहार करता था कि एकाएक नाव डूब गई कोई मनुष्यभी जीता न बचा यहांतक कि केवटभी न बचा सो दोनों किनारों पर हाहाकार मचा और किनारे की सेना रोने पीटनेलगी और राजा चित्रवर्म इस वृत्तान्त को सुन बहुत घबड़ाकर नदी किनारे पहुँचकर रोनेलगा और रानी भी इतनी मूर्च्छित हो धरती पर गिरी कि फिर उसको चेत न हुआ इसी प्रकार सीमन्तिनी अपने पति का डूबना सुन विकल हुई और उसके भाई और मन्त्री और सर्व राज्य सभा प्रजाआदिक कोई ऐसा न था जो शोकसागरमें डूबा न हो और राजा इन्द्रसेन रानी सहित अपने पुत्रके डूबने का हाल सुन शोकसागरमें डूबा और उसकी प्रजाकी भी यही दशा हुई निदान दोनों पति और स्त्रीके माता पिताको बुद्धिमानोंने समझाया सो राजा चित्रवर्म ने अपने घर लौटकर अपनी सीमन्तिनी कन्या को समझाया और डूबेहुये राजाका सब क्रियाकर्म किया फिर सीमन्तिनी ने चाहा कि सती होजाऊं पर अपने पिताके मना करनेसे सती न होने पाई और वैधव्यधर्म में स्थितरही यद्यपि वह बिधवा होगई पर उसने सोमवार का व्रत न छोड़ा जैसा कि मैत्रेयीने उसको बताया था जब सोमवार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

का दिवस आया तो दिनभर अन्न जल रहित रह प्रदोषकाल में शिवजीकी शिवरानी सहित पूजा की और अतिप्रेम से उत्सव किया इसी प्रकार वैधव्य अवस्था में सोमवार व्रत करते उसको तीनवर्ष का समय माता पिताके घर में बीता और राजा चित्राङ्गद के पिता राजा इन्द्रसेन पर शत्रुओं ने धावा करके राज्य छीन उसको रानीसहित बन्दी में डाल दिया तब वे राजा बलिके समान नाना प्रकार की आपदाओं को प्राप्त हुये और सीमन्तिनी के व्रतके कारण डूबे हुये चित्राङ्गदने बहुत आनन्द उठाया और यमुनासे निकलकर जीता रहा ऐसी कृपा सदाशिवजीनेकी और श्वशुर आदि सब अतिप्रसन्न हुये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

नारदजी के पूछनेपर ब्रह्माजी बोले कि राजा चित्राङ्गद यमुनाके बीचमें डूबकर मरने से बच रहा और सब मरगये इसकी कथा यह है कि उसने वहां असंख्य सर्पोंकी स्त्रियोंको जब क्रीड़ा करते देखा और वे सब राजाको सुन्दर देख उसको अपने साथ पातालमें लेगईं जहां बहुतसे नगर सांपोंसे बसेहुये थे सो राजा उनके द्वारा तक्षकके नगरमें गया जो परिपूर्ण हीरा मोती पन्ना नीलम और अन्य नाना प्रकारके रत्नों से जटित था चित्राङ्गद ने राजा तक्षक को रत्नोंसे जड़ेहुये सिंहासन पर सुशोभित देखा और ऐसी विचित्र सामग्री और दास दासियों को देख भौचक रहगया और तक्षक को अति प्रकाशवान् तेजरूप देखकर प्रणाम किया और तक्षक ने भी राजा को ऐसे तेज और सुन्दरता से देख अपनी स्त्रियों से शुभ दृष्टिपूर्वक पूछा कि यह कहां से आया है तुमने इसको क्योंकर देखा सो तक्षक की स्त्रियों ने उत्तर दिया कि हम इसके कुलादिको कुछ नहीं जानतीं इसको यमुना नदी में पाकर यहां लाई हैं निदान तक्षक ने राजा से पूछा कि तुम कौन और किसके पुत्र और कहां के वासी हो सब कहो यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुन राजाने हाथ जोड़ शिवजी का स्मरणकर तक्षक को दण्डप्रणाम कर अपना सब वृत्तान्त कहदिया और कहा कि बहुत जन्मोंके पुण्य से महाराज आपके दर्शन हुये यह दर्शन हमारे बड़ों और पितरों को भी न हुआ था यह सुनकर तक्षक अतिप्रसन्न हुआ और कहा कि हे राजपुत्र ! तुम कुछ सन्देह मतकरो एक बात मैं तुमसे पूछताहूं उसे कहो कि तुम सब देवताओं में किस देवता की पूजा करतेहो यह हम को बतादो फिर और वार्त्ता होगी राजपुत्र ने बिनती की कि जिसको सब वेदों ने महादेवनाम करके वर्णन किया है वही शिवजी सबके पूजने के योग्य हैं हम उन्हीं की पूजा करते हैं ब्रह्मा और विष्णु भी जिसके अङ्ग हैं और उन्हींके अंशसे उपजे हैं और तीनों रूप जिसका ध्यान करते हैं और जिसकी आज्ञा से सृष्टि उपजती पलती और विनशती है और जो कारणका भी कारण और धाताका भी धाता और तेजोंका तेज है और इसी प्रकार शिवजीके बहुत गुण कथनकर कहा कि वही एकाकी, अविनाशी, अनादि हमारे स्वामी हैं हम उन्हींकी पूजा करते हैं ऐसी महिमा सदाशिवजी की सुनकर तक्षकने अतिहर्ष और अनुग्रहसे कहा कि हे राजपुत्र ! हम तुम से बहुत प्रसन्न हुये जो तुम ऐसा जानतेहो तो तुम्हारे समान दूसरा कोई शुद्ध और सत्पुरुष नहीं है तुम यहां रहकर सबके राजाधिराज हो हमारे इस देश में सदा आनन्द है दुःखका नाम भी कोई नहीं जानता यहां न कोई बूढ़ा होता न कोई मरता न कोई रोग किसीको होताहै ऐसे मधुर वचन सुन राजपुत्र ने हाथ जोड़ तक्षकसे बिनती की कि हमारीस्त्री और माता पिता प्रजा हमको डूबाहुआ जान बड़े दुःखको प्राप्त हुये हैं न जानिये वह मरगये हों या जीतेहों इसलिये मैं समय तक यहां नहीं रहसक्ता कृपा करके मुझे वहां भेज दीजिये यह सुनकर तक्षक ने अतिप्रसन्नतासे नाना प्रकारके भूषण, रत्न, वस्त्र और सामग्री देकर शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की भक्तिका वरदिया और कामक नाम घोड़ा अर्थात् वह जो अपनी इच्छानुसार स्थान में पहुँच जावे और एक राक्षस सामग्री पहुँचा देने को अपने लड़के समेत बिदाकिया और कहा कि जब हमारा स्मरण करोगे तब हम तुरन्त तुम्हारे पास आवेंगे राजपुत्र तक्षकसे बिदा हो घोड़ेपर चढ़ तक्षककी दीहुई सर्व सामग्री सहित यमुनाके तटपर खड़ा होगया और दोनों राजकुमार घोड़ोंपर सवार इधर उधर नदी के किनारे भ्रमण करने लगे॥

बीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीने नारदके पूछने पर कहा कि उस दिन सोमवार था और सीमन्तिनी व्रत रक्खेहुये अपनी सखियों सहित स्नानके लिये यमुना के किनारे गई थी दोनों को घोड़ेपर आरूढ़देख जाना कि यह मेरा पति है क्योंकि शरीर के मुख्य लक्षणों से ऐसा जाना जाता है और राजपुत्रने भी सीमन्तिनी को देखकर जाना कि यह हमारी स्त्री है कि वह बहुतही बिधवाके लक्षण धार क्षीणाङ्ग होगई थी सो वह अपने घोड़े से उतरकर यमुनाके तटपर बैठगया और सीमन्तिनी को बुला कर अपने समीप बैठाया और हर बेर उसकी ओर देख आश्चर्यपूर्वक कहा कि तुम किसकी स्त्री और किसकी कन्या हो और क्यों तुम्हारी यह दशा हुई तुम लड़कपनमें बिधवा होगई हो पर सीमन्तिनी लज्जा-पूर्वक आंखें आंसुवोंसे भरकर कुछ उत्तर न देसकी पर उसकी सखीने सैन की आज्ञा पाकर कहा कि यह सीमन्तिनी राजानल के पोतेकी रानी है और राजा चित्रवर्म की बेटी है सोमवारव्रत करती है इसका पति यमुना में डूबगया यह बिधवा हो अपने माता पिता के घर रहती है और शिवकी पूजा किया करती है यद्यपि तीन वर्ष बीते पर इसको पति नहीं भूलता आज सोमवार होने के कारण स्नान के निमित्त यहां आई है और इसका श्वशुर इन्द्रसेन शत्रुओं से हार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर राज्यहीन होगया है और अपनी रानी सहित शत्रुओं की बन्धिमें अपने पुत्रके वियोग से मरनेके किनारे होरहा है और शिवपूजा और सोमवारव्रत नहीं छोड़ता फिर सीमन्तिनी ने मधुरवाणी से कहा कि तुम कौन हो किन्नर या गन्धर्व या शरीर धारे कामदेव का रूप या कोई सिद्धहो अपना मुख्य वृत्तान्त कहो तुम्हारे देखनेसे जानाजाता है कि तुम हमारे पति का स्वरूप रखते हो यह कह और मूर्च्छित हो धरतीपर गिरपड़ी चित्राङ्गद ऐसी दशा अपनी स्त्री की देख धैर्यधर दृढ़तापूर्वक सीमन्तिनी को बहुत समझाया कि हमने तुम्हारे पतिको कहीं देखा है वह तुम्हारे सोमवारव्रत और सुकर्मों से जीता है और तुरन्तही तुम्हारे निकट आता है केवल दो तीन दिनमें तुम्हारे दुःख दूर होजाते हैं हम यह सन्देशा कहने आये हैं क्योंकि हम तुम्हारे पति के मित्र हैं तुम इस बातको प्रसिद्ध न करना और मनमें प्रसन्न रहना परन्तु सीमन्तिनी ने बारम्बार उसकी ओर देखकर विचार किया कि हमारा स्वामी यही है क्योंकि याज्ञवल्क्यकी स्त्रीके वचन और शिवजी की कृपा से कुछ दूर नहीं कि वह जीतारहा हो फिर राजाने तुरन्तही सीमन्तिनीके कानमें कुछ चुपके से कहदिया जिससे वह बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि तुम अपने माता पितासे जाकर इस बातको कहो तुम थोड़ीही देर में अपना पति पाओगी यह कहकर उसने अपनी राजधानीमें जाकर तक्षकके पुत्रको शत्रुके निकट भेजा उसने जाकर सब वृत्तान्त चित्राङ्गद और शिवजीकी दया का वर्णन किया और कहा कि चित्राङ्गद के माता पिता को छोड़ दो बरन तुम से युद्ध होगा और तुम मारेजाओगे यह सुनकर शत्रुने मित्रता करली और चित्राङ्गदको उनका राज्य और माता पिता देदिये उस समय सारी प्रजाने इकट्ठे होकर राजाके पुत्रको देखा जैसा सुख उसके माता पिताको उस समय प्राप्त हुआ उसे हम वर्णन नहीं करसक्ते उसके पिता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजा इन्द्रसेनने प्रेम और प्रीति से उसको अपने हृदयसे लगाया और उसकी माताने लिपटकर बहुत आशीर्वाद दिये उसने सभामें बैठकर अपना वृत्तान्त कह सुनाया और जब कि दूतोंने राजा चित्रवर्मको यह कहा तो वह अपनी रानी और सीमन्तिनी सहित अतिप्रसन्न हुआ और बहुत दान और पुण्य किया सबने सीमन्तिनी की प्रशंसा की और फिर चित्रवर्मने चित्राङ्गदको बुलाकर नयेशिरसे विवाह करदिया और बड़ा दहेज दिया और सब बरातियों को उत्तम २ नाना भांति के भोजन खिलाये फिर सीमन्तिनी को चित्राङ्गद के साथ भेज दिया जो वस्त्रादिक और आभूषण चित्राङ्गद ने तक्षक से पाये थे वह सीमन्तिनी को पहिनाकर बहुतसी और उत्तम वस्तु उसको दीं और राजा इन्द्रसेन चित्राङ्गदको राज्य सौंपकर अपनी रानी सहित वनमें गया और वहां तप और योगाभ्यास करने लगा और मरने के पीछे मुक्त हो शिवपुरीमें गया राजा चित्राङ्गदने मगध देशका राज्य दशहज़ार वर्ष पर्यन्त किया और उस समय में सीमन्तिनी से आठ पुत्र और एक पुत्री उपजे वह जन्मभर सुखी रहे और सीमन्तिनीने सोमवारव्रत को न त्यागा वह सर्वदा अपने पति राजा चित्राङ्गद समेत शिवजी और शिवरानीजी का पूजन करतीथी और सदाशिवजी उनपर प्रसन्न थे ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि अब हम दूसरी कथा कहते हैं जिसमें सोमवार व्रतकी महिमा है कि प्राचीन समयमें एक ब्राह्मण देवमित्र नामी विदर्भ देशमें बड़ा विद्वान् और वेद जाननेवाला हुआ उसका मित्र सारस्वत नामी ब्राह्मण था फिर देवमित्र और सारस्वतके एक एक पुत्र हुआ जिनका नाम सामवान् और सुमेधा था यह दोनों बालक सर्वकार्य और स्वभावमें समानथे उन्होंने एकही गुरुसे विद्या पढ़ी और दोनोंने माता पिताकी सेवाकरके उनको प्रसन्न किया एक दिन दोनोंके माता

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पिताने अपने लड़कों से कहा कि अब तुम सोलह वर्ष के होचुके और यह अवश्य है कि तुम्हारा विवाह होजाय पर विना धनके विवाह नहीं होसक्ता इसलिये तुमको उचितहै कि तुम दोनों राजा के पास जाओ और अपनी विद्या प्रसिद्ध करके राजाको प्रसन्न करो कि धन मिले और तुम्हारा व्याहभी होजावे ऐसा सुनकर वे दोनों राजा विदर्भ के निकट गये और अपनी चतुराई और चपलता से विद्या प्रकटकर बहुतसा धन पाया फिर राजाने हँसकर उनसे कहा कि मगध देशका राजा जिसको चित्राङ्गद और जिसकी रानी को सीमन्तिनी कहते हैं वह दोनों सोमवारव्रत को रखकर शिवजी और शिवरानीजी का पूजन करके ब्राह्मणों की सेवाकरते हैं और ब्राह्मणों को उनकी स्त्रियोंसहित भोजनकराके बहुत धन देते हैं इस कारण तुमसे कहतेहैं कि तुम दोनों एक पुरुष और दूसरा स्त्री बनकर वहां जाओ और वहां से धन लेकर फिर हमारे निकट आना ऐसी राजाकी आज्ञा सुनकर वह दोनों डरे और कहनेलगे कि हमको ऐसा धन नहीं चाहिये क्योंकि देवता, गुरु, माता, पिता और राजा अपने कुलमें छल करनेसे नष्ट होजाते हैं इसी कारण कहागया है कि राजाके यहां छल से न जावे क्योंकि छली के सर्वकार्य नष्ट होजाते हैं और उसका हृदय स्थिर नहीं रहता ऐसे २ वचन धूर्तको सुखी रखतेहैं सज्जन पुरुष ऐसी बात नहीं मानते हमने अच्छे कुलमें जन्म लिया है हमसे ऐसी बुरी बात न होगी तुम हमसे ऐसी अधर्म की बात न कहो राजा से वेद का प्रमाण देकर कहा कि वेदकी आज्ञानुसार हम यह कहतेहैं कि देवता, गुरु, माता, पिता और राजा की आज्ञा को न टालना चाहिये यद्यपि वह अच्छीहो या बुरी पर इसमें विचार नहीं करना चाहिये उस आज्ञा का शीघ्र पालन करना चाहिये सो तुम हमारी प्रजा और हम तुम्हारे राजा हैं इस आज्ञा को अङ्गीकार करो सो दोनोंने राजा की आज्ञासे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस बातको माना और सामवान् स्त्रीका वेष करके सीमन्तिनी रानीके पास गया पर सुमेधा पुरुष के वेषमेंही रहा और सोमवार के दिन सीमन्तिनी के घरमें ब्राह्मणोंकी भीड़ देखी सीमन्तिनी ने हर स्त्री को गौरी और पुरुषको शङ्करका रूप जानकर पूजा किया पर जब उनकी बारी आई तो सीमन्तिनी आदि सामवान्को कृत्रिम स्त्री जानकर बहुत हँसे पर उनको गौरीशङ्करही समझकर उनकी भी पूजा की और उनके मनमें दूसरा भाव न आया पूजनके पीछे भोजन कराये भोजन के पीछे दहने हाथसे पानदिया फिर दण्डवत्कर दक्षिणा और बहुत सा दान देकर बिदाकिया और सबको भारी २ वस्तु देकर प्रसन्न किया वह दोनों बहुतसा धन लेकर घर सिधारे मार्ग में सामवान् जो स्त्री बनगयाथा और उसने गिरिजा महारानीका स्वरूप धारा था वास्तव में स्त्री बन कामवश हो सुमेधा की ओर देखकर कहनेलगा कि देखो यह कैसा वन कामकेलिके योग्य है सुमेधा ने यह सुनकर समझा कि यह हँसता है और कुछ न विचारकर आगे चला पर फिर वह कामवश होकर कहनेलगी कि मैं तुम्हारी स्त्रीहूं तुम क्यों मुझसे भोग नहीं करते मैं नहीं चलसक्ती इस समय कामदेवके बाणसे महादुःखी हूं तुम मुझसे भोगकर मेरे प्राण बचाओ यह सुनकर सुमेधाने पीछे फिरकर देखा कि वास्तव में एक स्त्री महासुन्दरी चलीआती है तो उस से कहा कि तुम पुरुष होकर ऐसीवार्ता क्यों कहते हो तुम वेद-पाठी ब्रह्मचारी और निष्पापहो क्यों ऐसे निरर्थकवचन कहतेहो उस स्त्रीने कहा कि जो तुमको निश्चय न हो तो मेरी योनिको देखो मैं पुरुष नहीं हूं मैं तुम्हारी स्त्री हूं यह कहकर उसने अपना शरीर खोला जिसको देखकर उसके मित्र सुमेधाने चुप होकर आश्चर्यकर शिव जीका ध्यान किया इतने में स्त्रीने फिर प्रार्थना की कि अब तुम्हारी शङ्काभी दूर होगई अब क्यों भोग करने में विलम्ब करते हो देखो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह वन कैसा विहार करने के योग्य है इस समय हमारा मनोरथ पूराकरो सुमेधाने कहा कि हम तुम दोनों वेदपाठी हैं ऐसी बातें मत कहो तुम पुरुष हो पर स्त्री बनगये इसलिये शिवजी और शिवरानीजी का ध्यानकरो यद्यपि हमने अधर्मी धूर्त बनकर राजाकी आज्ञानुसार अपने माता पिताके उपदेशके विरुद्ध ऐसे कार्य किये उसीका यह परिणामहै पर उचितहै कि अब चुप रहकर अपने घर चलें और देवता और गुरुसे उपदेश लेकर इस पापसे छूटें कदाचित् तुम पुरुष न बनोगे और इसी प्रकार स्त्रीरूप धारण किये रहोगे तो मैं अपने पिता की आज्ञा लेकर अपनी स्त्री तुम्हें बनालूंगा यह कहकर उसने शिवजीकी माया और सीमन्तिनी रानीके प्रभावकी बड़ी प्रशंसाकी पर उस स्त्रीने कामदेवके वेगसे कुछ न सुनकर उसे कण्ठसे लगालिया सो सुमेधा अतिपरिश्रम से अपनेको छुड़ाकर उस स्त्रीसहित घर में पहुँचा और अपने पितासे सब समाचार कह सुनाया दोनोंके पिता दुःखी होकर राजा विदर्भ के निकट गये और क्रोधित होकर राजासे कहा कि तुमने क्यों ऐसा बुरा काम हमारे पुत्रोंसे कराया जिससे हमारा पुत्र स्त्रीरूप बनगया यह मेरा इकलौता बेटा था हमारे पितर निराश हो-गये क्योंकि और कोई सन्तान इस कुलमें नहीं यह कहकर सारस्वत ब्राह्मण बहुत रोया और अचेत हो भूमिपर गिरपड़ा राजा ने सामवान् को स्त्रीरूप देखकर आश्चर्य किया और हाथ जोड़ बिनतीकर दोनों ब्राह्मणोंसे प्रार्थना की कि इसका स्त्री भाव किसीप्रकार निवृत्त करो यह सुनकर दोनों ब्राह्मणोंने कहा कि शिवजीकी भक्ति हृदय में दृढ़ करो निदान स्त्रीसमेत वह सब गिरिजा की शरणमें गये और नाना विधि से गिरिजा को प्रसन्न किया गिरिजा ने प्रकट हो दर्शन दिया और कहा कि वरदान मांगो तो राजाने विनय की कि हमको यही वरदान चाहिये कि यह लड़का पुरुष होजाय गिरिजाने कहा कि हम

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने भक्त की अवज्ञा करना नहीं चाहतीं पर हम तुमसे यही कहती हैं कि सारस्वत ब्राह्मण के दूसरा पुत्र होगा और हमारी शक्तिसे इसके दुःख दूर होजावेंगे यह अब पुरुष नहीं होसक्ता इसका विवाह सुमेधाके साथ करदो यह कहकर गिरिजा अन्तर्धान हुई और सब अपने २ घर सिधारे सारस्वतने अपने लड़के को जो स्त्री बनगया था सुमेधा ब्राह्मण के साथ व्याहदिया वे दोनों स्त्री पुरुष प्रसन्न रहकर विहार करनेलगे सारस्वत के दूसरा पुत्र उपजा जिससे उसे बड़ा सुख प्राप्त हुआ हे नारदजी ! ऐसी शिवजीकी भक्ति सीमन्तिनी रानीको हुई सोमवार व्रत की महिमा तुमको विदित हुई होगी कि कैसी अनन्त है और शिवजी किस प्रकार इस व्रतके करनेवाले से प्रसन्न होते हैं इस चरित्र का सुननेवाला और कहनेवाला कुछ दुःख नहीं पाता मासिकव्रत माहात्म्य पूर्ण हुआ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

वार्षिकव्रतों का वर्णन ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हमने मासिक व्रत वर्णन किये अब हम वार्षिकव्रतोंका वर्णन करते हैं जिनके करनेसे सुख मिलकर मुक्ति प्राप्त होती है जिनके सुनने से सर्वपाप नष्ट होकर सर्वसिद्धि मिलती है एक व्रत उनमें से उमामहेश्वर नामक है और वह सर्व मनोरथ पूर्ण करताहै यह व्रत शिवजी और गिरिजा को अतिप्रिय है अर्थात् चैत्र और मार्गशीर्षशुक्लपक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी और पूर्णमासी और अमावसको यह व्रत करना उचितहै इस प्रकारसे कि अपने गुरु की आज्ञानुसार इस व्रतको करे और यथाविधि सब व्रतकी रीतें करे कि प्रातःकाल उठ संकल्पकर नदी में स्नानकरे और नित्यकर्म करके अपने घर में आवे और उत्तम मण्डप बनाकर पांच कलश स्थापित करे और उनको अच्छे कपड़ों से ढांप दे और उसके ऊपर शिवजी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और गिरिजा की सोने की प्रतिमा बनाकर स्थापित करदे शिवजी का स्वरूप शंख, चक्र, गदा, पद्म सहित और गिरिजा का स्वरूप आभूषण संयुक्त बनाना चाहिये और प्रीति से उनका विधिपूर्वक पूजनकरे और सामग्री इकट्ठी करके शिवजीका जपकरे और हवन करके पञ्चाक्षरी मन्त्र पढ़े फिर विसर्जन करदेवे और ब्राह्मणों को स्त्रियों सहित भोजन कराकर दक्षिणा दे बहुत प्रसन्न करे इसीप्रकार प्रदोष काल में शिवजीका पूजन करके आप मधुरभोजन दूधसमेत खावे और एकवर्षपर्यन्त दोनों पक्षों में इस व्रतको करके शिवजीका पूजन करे ब्राह्मणों की सेवाकरे जब वर्ष समाप्त होजावे तब व्रत का उद्यापन करे कि शतरुद्रीको पढ़कर शिवजीको स्नानकराये और प्रथमरीति से शिवजीका ध्यान और पूजनकरे और पूजनके पीछे ब्राह्मणों को दान देकर अपने गुरुकी सेवाकरे और उनकी आज्ञानुसार अपने बान्धवों के साथ शिवजीको स्मरण करके भोजनकरे इस यत्नसे जो मनुष्य इस व्रतको करता है उसके ऊपर शिवजी प्रसन्न होते हैं और उसकी इक्कीस पीढ़ियां तरजाती हैं और संसारमें सुख प्राप्त होकर अन्तकालमें शिवपुरी प्राप्त होती है यह व्रत दुःखों का जलानेवाला और मनोरथ सिद्धकरनेवाला है पर इस व्रत को सामग्री इकट्ठी करके करना चाहिये हम एकवृत्तान्त वर्णन करते हैं जिससे तुमको इस व्रतकी महिमा विदित होगी जो वेद और पुराणोंमें लिखी हुई है कि प्राचीनसमयमें वैदर्भनामी एक ब्राह्मण आनर्तदेशमें बड़ा सन्तानवाला और बड़ाधनी और वीर था उसके एक लड़की थी जिसको शारदा कहते थे वह बड़ी पण्डिता थी जब वह द्वादशवर्ष की हुई तो उसको एक बूढ़े ब्राह्मणने जिस की स्त्री मरगई थी जो वहांके राजाके मित्रोंमें था और उसके घर बहुतधन था विवाहके निमित्त उसके पितासे कहा वैदर्भने उसे बूढ़ा विचारकर बड़ी चिन्ता की पर अति भयभीत होकर अपनी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लड़की को उसके साथ व्याह दिया सो मध्याह्न के समय विवाह हुआ उसी सन्ध्याको बूढ़ाब्राह्मण नदीके तटपरसे सन्ध्या करके आताथा कि उसको मार्गमें सर्पने काटखाया और वह मरगया ऐसा उपद्रव देखकर सबको बड़ा दुःख हुआ और उसके भाईबान्धव क्रियाकर्म के पीछे अपने घरोंको लौट आये शारदा विधवा होकर अपने माता पिताके घररही इसी प्रकार कुछ समय व्यतीत हुआ एक दिन उसके भाई किसी स्थान पर व्याह में गये उनके पीछे वैधुव मुनि जो अन्धेथे अपने शिष्यों का हाथ पकड़े उसके घर आये उसने मुनि की सेवा करके भोजन कराये वैधुवमुनि बहुत प्रसन्न हुये और उसको यह वरदान दिया कि तुम्हारे पति से तुम्हें एक पुत्र होगा जो देवताओंकी कृपासे बड़ा धर्मवान् होगा शारदाने आश्चर्य करके हाथ जोड़कर मुनिसे प्रार्थना की कि हे महाराज! वास्तव में आपका वाक्य सत्य होताहै परन्तु मैं विधवा हूं मुझको ऐसाफल कहांसे मिलेगा हमारा पति विवाह के दिनही मरगया था हमारी यह अवस्था पहिले जन्म के पापसे हुई यह सुनकर मुनिने शिवजी का ध्यानकर कहा कि मैं अन्धा हूं विना देखेभाले मैंने तुम्हें ऐसा वरदान दिया परन्तु मैं श्री सदाशिवजीको प्रसन्न करके अपने दियेहुये वरदानको सत्य करदूंगा जो तुम हमारी आज्ञा मानो तो सब सत्य होसक्ता है अर्थात् तुम उमा महेश्वर व्रत जो शिवजीका है धारणकरो निश्चयहै कि हमारा वाक्य असत्य न होगा यह सुनकर शारदा बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि मैं अवश्यही यह व्रत करूंगी सो मुनिने उसको सबविधि बता दी इतने में उसके भ्राता आदिने जब आकर यह वृत्तान्त सुना तो प्रसन्न होकर मुनिसे कहनेलगे कि हे महाराज! आप धन्य हैं जो आप यहां आये हमाराकुल शुद्ध होगया यह हमारी पुत्री आपकी शरण में है तुम यहां इस शिवालय में रहो यह पतिहीन लड़की आपकी सेवा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करेगी और व्रत धारण करके आपकी दयासे अपना मनोरथ पावेगी पर जबतक यह व्रत समाप्त न हो तबतक आपका चलाजाना उत्तम नहीं निदान मुनिने उसके माता पिता और भाइयों की ऐसी बिनती सुनकर वहां रहना अङ्गीकार किया वह सब मुनिकी सेवा करनेलगे और शारदासे उमामहेश्वर का व्रत रखवाया और शारदाने अति प्रेम और प्रीतिसे उमामहेश्वर का पूजन हृदय से किया ॥

तेईसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि इस प्रकार शारदा को व्रत करते हुये एक वर्ष बीता तिस पीछे उसने उस व्रतका उद्यापन किया जैसा आगे वर्णन किया उसने प्रदोषकाल में शिव पूजन करके जागरण किया और रात्रिभर शिवजीका मन्त्र जप करती रही और मुनिनेभी रातभर योग तप और जप आदिसे गिरिजा को प्रसन्न किया सो दोनों की ऐसी भक्ति देखकर गिरिजाने दर्शन दिये जिससे वे सुखी हुये मुनि जो अन्धे थे नेत्रवान् होगये और दोनों गिरिजा के चरणों पर गिरपड़े और हाथ जोड़कर बड़ी स्तुतिकी गिरिजाने अति प्रसन्न हो दोनोंको हाथसे पकड़कर उठालिया और कहा कि हे मुनिजी ! और हे शारदा ! मैं तुम्हारी कामना पूरी करूंगी यह सुनकर मुनिने प्रार्थना की कि यह शारदा विधवा होकर अपने माता पिताके यहां बैठी है मैंने जो इसे आशीर्वाद दिया तो बेजाने बूझे अन्धेपन में दिया उसको आप पूर्ण करें यह सुनकर देवीने कहा कि तुम अगले जन्मका वृत्तान्त शारदाका सुनो यह शारदा एक द्रविड़ ब्राह्मण की पुत्री थी जो एक ब्राह्मण की दूसरी छोटी स्त्री हुई उसने अपनी सवतिको जो बड़ी थी अनेक प्रकारके कष्ट दिये और उसका स्वामी भी उसकी सुन्दरता और स्वरूपको देखकर ऐसा मोहित था कि उसने अपनी पहिली स्त्री को किंचिन्मात्र भी सुख न दिया इसी प्रकार पहिली स्त्रीकी सारी

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवस्था व्यतीत हुई जब पहिली स्त्री मरगई तब छोटी स्त्री अर्थात् शारदा बहुत सुखी होकर अपने पतिसे विहार करने लगी उसके पड़ोस में एक ब्राह्मण तरुण रहता था जिसने शारदा की सुन्दरता पर मोहित होकर उसका हाथ पकड़लिया शारदा ने क्रोधित होकर उसे बहुत दुर्वचन कहे पर वह शारदा के मोहसागर में अति विकल हो मरगया और जो कि इसने अपनी सवति को बहुत क्लेश दिया इस का कारण वह इस जन्म में विधवा हुई और बराबर २१ जन्म तक विधवाही होगी और उसी ब्राह्मण की स्त्री होकर फिर विधवा होगई और जो उसका पहिले वर्ष में पति था वह पाण्डव देश में एक ब्राह्मण के यहां उत्पन्न हुआ है वह बड़ा धनी बोधवान् सुन्दर और शिवपूजन में लीन रहता है सो उसके साथ नित्य स्वप्न में इससे भेंट हुआ करेगी वह स्थान यहां से ३६० योजन है उसके साथ स्वप्न में शारदा भेंट कर शुभ घड़ी में एक पुत्र पावेगी जिसको उसका पिता देखकर बहुत प्रसन्न होगा इसने पहिले जन्म में हमारी सेवा की थी इसलिये हमने इसे दर्शन दिया तिस पीछे गिरिजा ने शारदा से कहा कि तुम्हारा पति तुम्हें स्वप्न में नित्य मिलेगा और तुम उस को और वह तुमको देखकर परस्पर प्रसन्न होगे तुम अपने पुत्र को उसे देकर अपने व्रतका फल आधा देदेना और उसके साथ जाकर उस की सेवा करना विना स्वप्न के और किसी प्रकार तुम उससे न मिलोगी परन्तु व्रतको कभी न छोड़ना और जब वह तुम्हारा स्वामी मरजावे तब तुम उसके साथ सती होजाना फिर तुम विमान पर चढ़कर शिवजी की भक्ति पावोगी तुम्हारा पुत्र बड़ा वीर और धनवान् होगा यह कहकर देवी अन्तर्धान हुई और शारदाने यह वर पाकर बड़ा आनन्द किया और प्रभातको यह सर्व वृत्तान्त मुनीश्वर ने शारदा के माता पिता से कह सुनाया उनको भी सुनने से बड़ा सुख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्राप्त हुआ फिर मुनि जाकर अपने स्थानको चले गये और शारदा नित्य अपने स्वामी को पाकर सुखी रहनेलगी वह थोड़ेही दिनों के पीछे गर्भवती हुई सब बान्धव और मनुष्य उस नगरके उससे ग्लानि करने लगे और दया न करके उसको घर से निकालना चाहा और कहा कि इसके शिरसे बाल दूर कर दो जब वह उसके माता पिता सहित इस बातके करने को तय्यार हुये तब आकाशवाणी हुई कि इसने कोई कुकर्म नहीं किया तुम क्यों इसे कष्ट देतेहो इसका ब्रह्मचर्य व्रत नाश नहीं हुआ इसपर कामदेवने बल कुछ न किया इस पर जो मनुष्य दोष लगावेगा उसकी जिह्वा फटजावेगी यह सुनकर उसके माता पिता और भ्राता और बान्धव बहुत प्रसन्नहुये और शेष अन्य मनुष्य बहुत आश्चर्यमें होकर कहनेलगे कि किसीने यह बात झूठ आकाशवाणी के ओढ़रसे कही है यह बात समझमें नहीं आती सो तुरन्त उनकी जिह्वा फटगई और उन्हों ने बड़ा कष्ट भोगा तब सबलोग उसकी प्रशंसा करनेलगे फिर एक वृद्ध मनुष्य ने कहा कि स्त्रियों को शारदा के पास भेजो कि वह सर्व वृत्तान्त जानकर हमको समझावें सो स्त्रियोंने उससे पूछकर सब पर वह वृत्तान्त प्रकट किया सबने यह सुनकर उसकी महिमा वर्णन की फिर सर्वमनुष्य प्रशंसा करते हुये अपने २ घर सिधारे ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीने कहा कि हे नारद ! शुभघड़ी में शारदा के एक सुन्दर पुत्र उपजा उसने बाल्यावस्थामें विद्या पढ़ी वह सूर्यके समान प्रकाशवान् था उसका नाम शारदेव हुआ उसने तीन वर्षमें तीनों वेद पढ़े और शिव पूजन करने लगा और विवाह करके अपनी सन्तान को सुखी रक्खा कुछ समयके पीछे अपने मातापिता सहित गोकर्ण तीर्थ में गया जब शिवरात्रि थी सबने गोकर्णनाथके स्नानके पीछे शिव

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीकी पूजाकी और वहीं ठहरे शारदाभी अपने पतिको वहां देख बहुत प्रसन्न हुई और उसके स्वामी को भी अपनी स्त्री और पुत्रको देखकर आश्चर्य हुआ कि यह तो वही स्त्री और वही पुत्र जिसको हम स्वप्न में देखते हैं यह विचार कर वह शारदाके निकट गया और कहा कि तुम किसकी स्त्री और किसकी पुत्रीहो तुम्हारा क्या नामहै तुम किस लिये हमारी ओर बेर २ देखतीहो तुम्हारी प्रीति हममें कुछ कम नहीं है शारदाने रो करके अपना वृत्तान्त कह सुनाया यह सुनकर ब्राह्मण ने हँसकर पूछा कि यह किसका पुत्र है जिस के देखने से जो प्रीति पिता की होती है वह मुझे प्राप्त हुईहै और पूछा कि जब तुम विधवा होगई तब यह किस प्रकार पुत्र उपजा तब शारदाने अति लज्जित हो उत्तरदिया कि हे स्वामिन्! यह लड़का शारदेव है सबविद्यानिधान है यह सुनकर उसने मुसकराकर कहा कि बड़ा आश्चर्य है कि तुम्हारे पति ने तुम्हारा हाथ भी न पकड़ा था कि मरगया फिर यह पुत्र किस प्रकार उत्पन्न हुआ जानाजाताहै कि तुमने धर्मके विरुद्ध कर्म कर इसको उत्पन्न किया इसीसे तुम गोल मोल कहती हो उचित है कि सत्य २ वृत्तान्त कहो यह सुनकर शारदाने सब मुख्य वृत्तान्त कहा फिर निर्लज्जित होकर कहा कि हे स्वामिन्! तुम मुझे भले प्रकार जानतेहो और मैंभी तुम्हें जानतीहूं तुम हमारे सुख देनेवाले हो यह कहकर सब वृत्तान्त कहा ब्राह्मण को निश्चय हुआ और फिर उसने अपना वृत्तान्त सबको कह सुनाया और बताया कि तुम हमारी स्त्री हो शारदाने तुरन्तही अपने व्रतों का आधाफल उसे देदिया और पुत्रको उसे देकर उसके अधीन हुई ब्राह्मणको अपने पहिले जन्मका वृत्तान्त मालूम हुआ उसने अपनी स्त्री और पुत्रको पहिंचान लिया और अपने माता पिताकी आज्ञानुसार शारदाको अपने घर लेगया शारदाने उसकी बड़ी सेवाकी और दोनों सुखीरहे निदान ब्राह्मण

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मरगया शारदा उसके साथ सती हुई उस समय विमान आया और दोनों शुद्ध होकर उस पर चढ़ शिवपुरीमें गये ब्राह्मण गणोंका राजा हुआ और शारदा गिरिजा की सखी हुई हे नारद ! यह कथा अति पवित्र है इसके सुंनने और कहनेसे बड़ासुख दोनों लोकमें मिलताहै संसारमें भक्ति और परलोक में मुक्ति मिलती है और नाना प्रकार के पाप दोष दूर होजाते हैं इस चरित्रके श्रवण करने से भक्ति अधिक होती है कोई रोग नहीं रहता सुख धन और सम्पत्ति कहनेवाले और सुननेवाले को मिलती है यह कथा पवित्र है स्त्रियों के पतिकी अवस्था बढ़ानेवाली है इस उमामहेश्वरव्रतको राज व्रत कहते हैं इससे सब प्रकार का सुख मिलता है शिवजी और गिरिजाको यह व्रत अतिरोचक है इस व्रतके करने से शिवजी और गिरिजा की प्रीति अधिक होती है ॥

इति श्रीशिवपुराणे दशमखण्डे सर्वव्रतमाहात्म्य
वर्णनो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

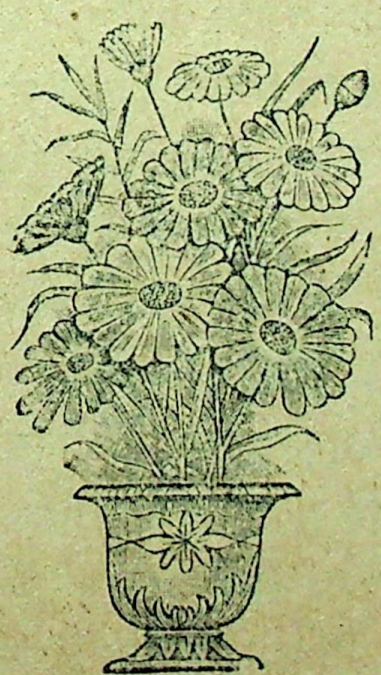

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवपुराणभाषा ॥

ग्यारहवां खण्ड ॥

पहिला अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हमने शिवजीका निर्गुण और सगुणरूप वर्णन करके दोनों स्वरूपों के चरित्र तुमको सुनाये और शिवके अवतारों का विस्तार से वर्णन करके शिवजीको कैलास में जाना और सतीचरित्र और गिरिजाचरित्र सब प्रकट किये और शिवजीके पुत्रोंकी कथायें वर्णन कर उनके सौ अवतारों का भी वृत्तान्त कह सुनाया और शिवके लिङ्गों की कथा विस्तार से कहकर सब तुमको बताया अब कोई कथा शेष नहीं है जिसका पुनर्वर्णन करें पर जिस कथा के सुनने की अभिलाषा हो वह हमसे पूछो कि हम तुमसे कहें इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनको ! जब नारदने ब्रह्मा से यह वचन सुना तो बिनती की कि हे पिता ! तुमने बड़ी कृपा करके मुझे यह सब शिवचरित्र कह सुनाया हमको इसके सुनने से परमधर्म प्राप्त हुआ है अब मेरी इच्छा है कि आप मुझको सर्व ब्रह्माण्ड की स्थिति की रीति बतावें जिसके जानने से हमारे मन में कुछ संशय न रहे और मैं यहभी जानूं कि कौन कहां है और क्या काम करता है और किस प्रकार से कौन कहां का राज्य करता है और यह भी कि चौदहों लोकके लोग किसको पूजते हैं हे शौनको ! यह वचन नारदका सुनकर ब्रह्माजी बोले कि शिव सबकी पूजाके योग्य हैं और यद्यपि वह तीनों गुणोंसे परे हैं पर तोभी ब्रह्माण्ड की भलाई के लिये सगुण स्वरूप धारण करते हैं वही सबके स्वामी हैं यह कहते हुये ब्रह्मा को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अति प्रसन्नता प्राप्तहुई और उनके सब रोम खड़े होकर नेत्रोंसे आंसू की धारा बहनिकली और बारम्बार शिवके चरणों का ध्यान करके नारद से कहने लगे कि हे नारद ! तुम धन्य हो कि तुमने बार २ शिवके चरित्रों का वर्णनकर मेरे मनमें शिवजीकी प्रीति दूनी की हे नारद ! जो मनुष्य शिवके चरित्र सुनते हैं उनसे श्रेष्ठ तीनों लोकमें और कोई मनुष्य नहीं है और जो कोई मनुष्य शिवजीके चरित्रोंके सुनने के लिये किसी से कुछ प्रश्न करते हैं वे बेपरिश्रम भवसागरसे पार उतरजाते हैं हे नारद ! शिवके दो स्वरूप हैं एक क्षर दूसरा अक्षर उनमेंसे अक्षर अर्थात् सगुण स्वरूप और क्षर निर्गुण स्वरूप है और सर्व ब्रह्माण्ड में वह गुप्त और प्रकट है इसीप्रकार दो भांति की माया भी है पहिली विद्या और दूसरी अविद्या जिनमें सदाशिवजी ब्रह्म होकर विराजमान हैं और शिव सगुणस्वरूप मायासे परे शरीर रहित और बड़े ईश्वर हैं उन्हीं सगुणस्वरूप शिव की लीलासे तीनों लोक की अस्ति भासती है यह उन्हीं का कार्य है और चौदहों लोक और ब्रह्माण्ड सब प्रकृति की कृत्य से उपस्थित हुआ है और सदाशिवका विराट् रूप पहिले सब मनुष्यों के ध्यान करने के योग्य है जिसके ऊपर के भागों में सात लोक और सातही नीचे के लोक हैं नीचे के लोकों का यह विस्तार है अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ और पाताल ७ यह नीचे के लोक विराट्रूप के चरणोंकी भांति हैं और ऊपरकेलोक यह हैं भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ जो ऊपरके अङ्ग शीश आदिकी भांति हैं और उपलोक भी इन्हीं भागों में गिनेगये हैं अब और विस्तार सुनिये कि विराट्रूप का पगतली पाताल टखना रसातल पिंडली महातल गांठें तलातल रानें सुतल और शरीरका एक भाग वितल और दूसरा भाग अतल और जांघें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महातल हैं और नाभि भूर्लोक और भुवर्लोक और छाती स्वर्लोक और मुख जनलोक मस्तक तपलोक और शिर सत्यलोक और गर्दन महर्लोक है निदान शिरसे पांवतक ऊपर के क्रमके अनुसार चौदहों लोक को विराट् रूप के अङ्ग समझकर ध्यान करना चाहिये इसी प्रकार और सब उपलोक और चौदहों लोकों के मध्यमें प्रकट हैं और ब्रह्मा से लेकर चींटीतक जो कुछ है वह सब विराट्रूप शिव का शरीर और उनके अङ्ग जानकर कोई वस्तु शिवजी से भिन्न न जाननी चाहिये उस विराट्रूप शिवकी भुजा इन्द्र हैं और अग्नि मुख और दिग्देव कान और आकाश शब्द और अश्विनीकुमार नाक और सूर्य नेत्र और रातदिन भवें और यमराज दाढ़ें और ब्रह्मा लिङ्गेन्द्रिय और सरस्वती जिह्वा और माया दांत और वेद ब्रह्मरन्ध्र और कवियों की काव्य उसरूप की हँसी है और संसारका आनन्द उस विराट्पुरुष की दृष्टि है और ऊपरका ओष्ठ प्रीति और नीचेका ओष्ठ लोभ और पांजर समुद्र और पर्वत हड्डियां और वृक्ष केश और लक्ष्मी चाल है और बाल्यावस्था युवावस्था और बुढ़ापा माया और प्रभात और सन्ध्या वस्त्र और श्वास पवन जो ७२ हैं और वर्षनेवाले बादल शरीर के रोम और प्रकृति हृदय और मन चन्द्रमा है और सर्व मुनीश्वर पांचों इन्द्रिय और दैत्य बल और देवता दशोंप्रकार के धर्मशास्त्र और पुराण और जो ब्राह्मण वेदपाठी हैं वह मुख्य सदाशिव स्वरूप हैं और धर्मवान् क्षत्रिय भुजा और ब्राह्मण ऊरु और शूद्र चरण हैं और चारों वर्णाश्रम चारोंवेद और संन्यस्त सहित उस विराट्रूप परमेश्वर के पांचों मुख हैं जो कोई मनुष्य ऐसे विराट्रूप का ध्यान करता है वह सर्वपापों से छूट जाता है हे नारद! हम तुमको चौदहों लोकों का वृत्तान्त विस्तार से सुनाते हैं कि जिस प्रकार ब्रह्माण्ड चौदहों लोक में बांटागया है. भूतल कि जिसमें सात खण्ड हैं वह एक अयुतयोजन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लम्बा है वहां स्वर्गलोकसे भी अधिक आनन्दहै वहांके खण्ड अति-
प्रकाशवान् और सुन्दर हैं और वहां सर्वप्रकारके आनन्दकी सामग्री
सबको प्राप्त है और भोगविलास के लिये महासुन्दर स्त्रियां और अ-
संख्य धन उपस्थित है और मन्दिर अतिसुन्दर और स्थान २ पर
विचित्र प्रकार से विद्यमान हैं किसी वस्तुकी न्यूनता नहीं वहांके स्त्री
पुरुष रात्रि दिन क्रीड़ा और विहारमें लगे रहकर सोनेरूपेके आभू-
षणोंसे सदा अलंकृत रहते हैं और वहां तोता और मैना आदि पक्षी
मधुरवाणी से बोलते हैं जिनकी प्रियवाणी से कामदेव प्रबल होता है
और देवताओंके स्थान रत्नोंसे जड़ेहुये कि जिनके देखनेसे विश्वकर्मा
भी लज्जित होते हैं और वहां किसीको जरा, मृत्यु, दुःख, चिन्ता नहीं
होती और सबके शरीर प्रकाश से देदीप्यमान हैं क्योंकि वे सब रसा-
यन खाते हैं और वहां बहुधा दितिकी सन्तान अर्थात् दैत्य और दा-
नव और कद्रूके पुत्र काली आदि सर्प रहते हैं जो प्रतिदिन प्रसन्न रह-
कर आनन्द में अपना समय बिताते हैं और वहां महाशिरोमणि के
प्रकाश से रात और दिन कुछ जाना नहीं जाता और न वहां अँधेरा
होता है एकही तरह पर सब रात दिन दिखाई देता है उनके सम्पूर्ण
मन्दिर रत्नों से बनाये गये हैं और वहांके स्त्री पुरुष क्या २ आनन्द
नहीं उठाते और कोकिला और पपीहा आदि अन्य पक्षी अपनी
मधुर वाणी से कामदेवको बढ़ाते हैं और वहांकी पुष्पवाटिकाओं में
हजारों छाया वाले तरह २ के वृक्ष फल फूलों समेत मनको बड़ा
आनन्द देते हैं जिनके ऊपर पक्षियों के बालक चहक २ कर धीरे २
बोलते हैं और नदीमें कमलके फूलों की पंक्ति और मछलियों का
इधर उधर फिरना और जलजन्तुओं का भ्रमण और चकचकवी और
हंसोंके समूहों का पंक्ति बांधकर बैठना मनको खींच लेता है और
वहांकी उज्ज्वल जल की भरी हुई नदियां जिनके दोनों तटों पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नानावर्ण के पक्षी बैठे रहते हैं और उनके दोनों तटोंपर सघन वृक्ष जलके भीतर झुकेखड़े हुये हैं और फिर कमलपुष्प की पंक्ति भीतरसे दूरतक चलीगई है यह सब वस्तु चित्तके मोहनेवाली हैं उस लोक के राजा शेषजी हैं जो नीचेके सातों खण्डोंके राजा हैं जिनके सम्मुख अप्सरा सदा नृत्य करती हैं और नागों की कन्या सेवा करती हैं यह हमने संक्षेप से सातों खण्डों का वृत्तान्त वर्णन किया अब हम जुदा २ हरएक लोकका वृत्तान्त वर्णन करते हैं॥

दूसरा अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! पहिले हम अतल का वृत्तान्त वर्णन करते हैं जहां मनुष्य पुण्य करने से पहुँचकर सबदुःखों को भूलजाता है जिसका राजा मयदानव का पुत्र है जिसने छियानबे माया मनके हरण करनेवाली बनाई हैं यह लोक किसीको सदाशिव की सेवा विना प्राप्त नहीं होता और उसका विस्तार दशसहस्र योजन है यहां का राजा मयदानव का पुत्र माया में ऐसा प्रवीणहै कि उसकी माया कोई मनुष्य नहीं जानसक्ता और वह रात दिन सदाशिव के ध्यान में रहा करता है और वे परिश्रम तीनों लोकों में भ्रमण किया करता है और उसके स्मरणमात्रही से तीन प्रकार की महासुन्दर स्त्रियां आकर उसके सामने उपस्थित होजाती हैं जिनको कामिनी स्वैरिणी और पुँश्चली कहते हैं और वह तीनोंलोकों को कामजाल में बन्धवान् करनेवाली हैं जो मनुष्य पहिले जन्म में अच्छे काम करता है वही मनुष्य दूसरे जन्ममें अतललोकमें प्रवेशकर सर्वप्रकार के विहार करता है और वे स्त्रियां हाटक अर्थात् स्वर्ण के रसको खाकर विहार करती हैं और उन स्त्रियों के केवल हँसने और स्पर्शसे मनुष्य प्रीति में डूबजाता है वहां कासा आनन्द देवताओं को भी नहीं मिलता जैसा मनुष्य वहां जाकर पाता है और जो मनुष्य हाटकरस खानेवाली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्त्रियोंसे सम्भोग करते हैं वह अपने आपकोही ईश्वर मानते हैं उसके दशसहस्र हाथी का बल होजाता है और वह सदा मदान्ध होजाता है और यह हाटकरस जिसका गुण ऊपर वर्णन कियागया है शिव की सेवा करके मयदानव के पुत्रने पाया उसने हाटकरसके मिलने के लिये हाटकपति शिवकी पूजा की थी जब उसने बहुतही हाटक-पति शिवकी सेवा की तब हाटकपति शिवने उसको यह हाटकरस कृपा किया और जो उस समय मयदानवके पुत्रने सदाशिवकी स्तुति की थी वह अबभी किया करता है और वह यह है कि हे सदाशिव! तुम सबके नाथ अनाथों के पालनकर्ता हो तुम तीनों लोकके दुःख दूर करनेवाले और सुख देनेवाले हो तुम्हारी महिमा अतिगुप्त है जिसके वर्णन से वेद और पुराणभी थकगये हैं और हे महाराज ! तुम्हारी सेवासे असंख्य मनुष्योंने मुक्ति पाई है और संसारमें बहुतही सुख पाया है और ब्रह्मा विष्णु और सनकादिक सब देवता तुम्हारी सेवा किया करते हैं और तुम सब के अर्थ पूर्ण करदेतेहो यह बात सब वेद और पुराण तुमको प्रणाम कर कहते हैं यही मुझे इच्छा है कि आपका भजन निश्शङ्क कियाकरूं आपका नाम तो अधमउद्धारण है इस बातको सुनकर हमने आपकी शरण पकड़ी है हे नारद ! इस तरह प्रतिदिन मयदानवका पुत्र शिवकी स्तुति किया करता है और अतल लोकमें उसे अप्रमेय आनन्द रहता है यह वृत्तान्त तो अतललोक का है और वितललोक का यह वृत्तान्त है कि वह अतललोक के नीचे उँचाई में दशहज़ार योजन अण्डे के समान गोल है और वह तालाब और नहरों और नदियों से जिनमें कमल फूले हुये हैं अतिशोभाय-मान है और उसमें नाना प्रकारकी जड़ी बूटी और फले हुये छाया वाले सघन वृक्ष जिनपर पक्षी मधुरवाणी से राग गाकर मनको हरलेते हैं सुशोभित होरहा है कहीं पर भँवर फूलोंपर बैठकर गुञ्जार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करते कहीं सरोवरों पर हंस बैठेहुये हैं वहां पर हाटकेशनाम शिव-
लिङ्ग विराजमान है वे अपने गणोंसहित लिङ्गस्वरूप से रहकर तीनों
लोक का पालन करके वहां के राजा को बूढ़ा नहीं होने देते और
सदा शिवरानी को साथ लेकर विहार कियाकरते हैं जिनके शीशसे
जलकी धारा बहकर हाटक के नाम से प्रसिद्ध है उसको पीकर अनल
अतिबलवान् हो वायु के संगमकर जो थूक कि उसके मुख से बाहर
गिरता है उसीको हाटकनामी कञ्चन कहते हैं जिसको दैत्य भूषण
बनाकर पहनते हैं और उसी का भूषण वहां की स्त्रियां भी पहनकर
अपने पतियों की सेवा में प्रवृत्त रहा करती हैं और राजा बलि हर
प्रकार शिवकी पूजा करते हैं और वह स्तुति जो राजा बलि शिवकी
करते हैं यह है कि हे देवताओंके देवता शरणागत के पालनेवाले सर्व
संसारके दुःखहर्ता ! तुम अपने भक्तोंके अधीन होकर निर्गुण होनेपर
भी शरीर धारण करते हो और सबकी आत्मा हो ब्रह्मा विष्णु और
देवतादि तुम्हारा ध्यान करके सब कुछ पाते हैं और ब्रह्मा और विष्णु
और रुद्र तुम्हारे रूप हैं तो तुम्हारी आज्ञासे संसार उपजाकर और
पालकर अन्त में नष्ट करदेते हैं वेद तुमको कहते हैं कि तुम सब
में और सब से भिन्न हो तुम्हारा आदि और अन्त नहीं और तुम
अविनाशी पुरुष हो वेद नारद शारद और शेष तुम्हारे गुण वर्णन
करतेहुये थकजाते हैं पर अन्त नहीं पाते इसी प्रकार सब वहां के रह-
नेवाले शिवजीकी स्तुति करके प्रसन्न रहते हैं हे नारद ! अब सुतल
लोकका वृत्तान्त सुनिये वह दशसहस्र योजन चौकोन है वहां का
राजा विरोचनका पुत्र बलि है जिसने विष्णु को दान देकर पूर्ण कर
दिया हे नारद ! राजा बलि अतिधन्य है जिसके मन में सदाशिव
का प्रेम स्थित रहता है और जिसको शिवकी भक्तिके कारण विष्णु
मार न सके राजा बलिके समान और कौन ब्राह्मण का माननेवाला है

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसने संशय छोड़ विष्णु की इच्छा पूरी की और ब्राह्मणरूप विष्णु देखकर सर्वप्रकार का विरोध दूर किया और अपनी खराबी देखकर धर्म न छोड़ा वह मनुष्य संसार में शिव कहने के योग्य है जिसके मनमें ब्राह्मण के चरणों की प्रीति दृढ़ हो और उन्हीं राजा बलि से बाणासुर उपजा जिसके मनमें सिवाय शिवजी के और किसी की जगह न थी और जिसने एक पर्वत को मलकर मट्टी करडाला और जिसके बल को दिक्पति और नाग सम्हार न सके हे नारद ! यह भी शिवकी कृपा समझो जो राजा बलि ने बाणासुर के समान पुत्र पाया और जिसके नगर की रक्षा विष्णुको सौंपी गई यह बात राजा बलिको सदाशिवकी अतिकृपा से प्राप्त हुई इतना सुनकर नारद ने पूछा कि महाराज ! मुझे बताइये कि राजा बलिने किस प्रभाव से ऐसा आनन्द पद और सत्पुत्र पाया ब्रह्माजी बोले कि जिससे राजा बलि ने एक मुनिकी आज्ञानुसार सदाशिवका प्रेम बढ़ाकर और तीनों लोकों को अपने अधीन करके देवताओं को अपना कर देनेवाला बनाया और जिस कारण वह ब्रह्मभक्त हो विष्णु से न हारा और उसके पूर्वजन्मका वृत्तान्त भी हम वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सदाशिवका प्रेम अधिक होकर भक्ति और मुक्ति मिलती है ॥

तीसरा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! पूर्वकाल में कण्वनामा बड़ापापी मनुष्य ब्राह्मणों की निन्दा करनेवाला हुआ वह परस्त्रियों से भोग करता और हर प्रकार के कुकर्म करनेवाला था और वह बहुतसे जीवों को बधकर इतना दरिद्रतामें घिरगया कि उसके शरीर में कोपीन तक भी न थी और वह चोरी और छलसे अपना समय बिताता इस तरह वेश्याओंके साथ मैथुनकर उसने अपना धर्म नष्ट करडाला एक दिन वह कण्व एक वेश्याके लिये पान फूल और चन्दन लियेहुये दौड़ा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाता था कि भाग्यवश उसका भार जल्दी चलनेसे पृथ्वीमें गिरपड़ा और वह मूर्च्छित होगया और जब कुछ देरके पीछे उसे चेत हुआ तो जो पान व फूलआदि पृथ्वीपर गिरपड़ेथे वह शिवके नाम संकल्प करदिये और मुखसे "नमश्शिवाय" भी कहा इतनेमें वह मरगया सो उसे पापी जान यमराज के दूत लेनेको आये और उसे तुरन्त पकड़कर यमराज के पास लेगये जहां अपराधियों को दण्ड दिया जाताहै सो एकदिन यमराजने उससे कहा कि हे पापी ! तूने संसार में बड़े २ पाप किये और अपने धर्मको छोड़दिया तेरे पाप हम मुखसे वर्णन नहीं करसक्ते पर तुझे हम बड़े नरक में डालेंगे यह सुनकर कण्व ने उत्तर दिया कि हे महाराज, यमराज, एकही दृष्टि से देखनेवाले ! हमारी बात मनसे सुनो मैं कुछ पापी नहीं हूं मेरे पाप सब नष्ट होगये हैं यह सुन धर्मराज ने चित्रगुप्त को बुलाकर कहा कि हे चित्रगुप्त ! इस मनुष्यकी बात मन लगाकर सुनो कि यह मनुष्य इतना पापी होने परभी कैसी ढिठाईसे वचन कहता है इसको मैं अवश्यही नरकमें डालूंगा यह सुन चित्रगुप्त ने तुरन्त शिवका ध्यान किया और उस पापी पर शिवकी कृपा जान यमराजसे कहा कि इस मनुष्य ने जन्म भर बड़े २ पाप किये पर मरने के समय इसने एक पुण्यका काम किया है कि वह एक वेश्या के निमित्त पानादि लिये जाता था संयोग से पृथ्वी में गिरकर इसने सर्वसामग्री शिवको अर्पण करदी और मरने के समय शिवजीके चरणों को ध्यान किया हमारे विचार में यह नरक में डालने योग्य नहीं इसको स्वर्गलोक देना चाहिये और तीन घड़ीतक इसको इन्द्रासन मिलना चाहिये वहां जो कुछ इसके मन में आवे वह करे यह सुन कर यमराजने मानलिया और उत्तमरूप से कण्वको दर्शन दिया और शिवकी महिमा बखानी इतनेमें बृहस्पति देवताओं समेत आये और कण्वको ऐरावत हाथी पर चढ़ाय इन्द्रके घरमें लेगये

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और बृहस्पतिने इन्द्रसे कहा कि तीन घड़ी के लिये कण्वको अपनी गद्दीपर बैठाओ यह हमारी आज्ञा मानो इसने उत्तम २ वस्तु शिवके अर्पण किया इससे तुम्हारी गद्दी इसको मिली है यह सुनकर इन्द्र अपने गुरुकी आज्ञा मानकर चिन्तापूर्वक वहां से किसी स्थानपर जाबैठे और कण्व इन्द्रके बदले गद्दीपर बैठकर बहुतही प्रसन्न हुआ हे नारद ! कण्व ताम्बूलादि शिवके अर्पण करने से इस गति को पहुँचा और जो मनुष्य शिव और गिरिजा की पूजा करते हैं वे सदा मुक्ति पाकर आनन्द से रहते हैं शिवपूजकको संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं इसी प्रकार असंख्य मनुष्यों ने कण्व और गुणनिधि के समान शिवजीकी कृपा से शिवलोक पाया है निदान उस समय हे नारद ! तुमने कण्वके समीप जाकर कहा कि अब तुम शची अर्थात् इन्द्राणी को अपने पास बुलावो जिससे तुम्हारा राज्य सुशोभित होवे क्योंकि तुमको उससे मुख्य आनन्द प्राप्त होगा पर कण्वने हँसकर तुमसे कहा कि हमको शचीसे कुछ प्रयोजन नहीं फिर तुम ऐसी बात मत कहना फिर कण्वने दानदेना आरम्भ किया और अगस्त्य को हाथी और विश्वामित्रको घोड़ा गालव्य को गौ और कल्पवृक्ष देकर बहुत अच्छी चीजें सबको देदीं और शिवक्षेत्रों में जाकर बड़ी पूजा की और उसने तीन घड़ीपर्यन्त बहुतही दानादि दे ब्राह्मणों को प्रसन्न किया फिर इन्द्र पूर्व के समान अपनी गद्दीपर आबैठा और बड़े क्रोधसे शची को बुलाकर आंखें लाली करके कहा कि तुम्हारे साथ कण्वने अवश्यही कुकर्म कियाहै तुम हमसे सत्य २ कहो यह सुन शचीने हँसकर कहा कि तुम अपने ऐसा सबको देखते हो तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है कण्व बहुत शुद्ध मनुष्यहै यह कण्व बहुतही निर्मल और शिव इस पर दयालु हैं यह मोहआदि के जालसे छूटकर बड़ा भक्त होगया है और परमपद पाकर तीनों लोकका आनन्द उठावेगा यह कह शची चुप होगई ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चौथा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शचीकी ऐसी बातें सुनकर इन्द्र अति लज्जितहुये पर जब कि उसने देखा कि ऐरावत हाथी और उच्चैश्श्रवा घोड़ा और कामधेनु गौ आदि कुछ नहीं हैं तो बृहस्पति से कहा कि यह सब वस्तु कौन चुरालेगया बृहस्पति ने कहा कि यह सब वस्तु कण्वने दानकर दिया उसने स्वाधीनता में जो चाहा सो किया उसने अपना राज्य तीन घड़ी के लिये जानकर अच्छे २ काम करलिये यह सुनकर इन्द्रने कहा कि हमको वह उपाय बतलाओ जिससे हम सब अपनी वस्तु पावें बृहस्पतिने उत्तर दिया कि इस बातकी सम्मति यमराज के पास जाकर करो सो इन्द्रने यमराज के पास जाकर उनसे आदर पाय कहा कि तुमने कण्व की दुष्टताको नहीं जाना तुमने क्यों हमारा स्थान उसको दिया उसकी दुष्टता से मुझे बड़ा दुःख हुआ है देखो उसने हमारी सब वस्तु देदीं हमारी सब सामग्री लादो यह सुनकर यमराज ने कण्व को बुलाकर अतिक्रोध से कहा कि तूने यह कौन कर्म किया है तुझको पराये धन के नष्ट करने से बड़ा नरक मिलेगा और तुम अपने कुकर्मों का बुरा भला पाओगे यह सुन कर कण्व ने अतिक्रोधकर निर्भय हो यमराज से कहा कि मैं बड़ा पापी हूं पर मुझे संशय नहीं है हमने इन्द्रासन पाय क्या ऐसा पाप किया तुम क्यों हमको ऐसा शाप देते हो जब तक हमारा वहां अधिकार रहा हमने जो मनमें आया और जो उचित कार्य था किया तुम किस कारण उसको पाप गिनते हो यमराज ने कहा कि दान देना पृथ्वी में उचित है जहां दान देने से फल मिलता है और देवताओं के लोक में दान देना उचित नहीं यह बात वेद और पुराण कहते हैं इससे तुमको दण्ड दियाजाता है तुमको बहुतही दण्ड देवेंगे क्योंकि तुमने वेदके विरुद्ध कर्म किया है इसी तरह यमराज और चित्रगुप्त ने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कण्वको बहुत डरवाकर और धोखा देकर कहा कि इसको नरकों में डाल दो और नाना प्रकार के दुःख दो पर चित्रगुप्त ने हँसकर कहा कि हे धर्मराज ! आप वेद और पुराणों के विरुद्ध ऐसा वचन कहते हैं कण्व क्यों नरकमें जासक्ता है उसने वेदानुसार उत्तमधर्म किये जो दान शिवके नामसे दियाजाता है वह निष्फल नहीं होता इस लिये तुम वेद का आशय समझकर कण्वको नरक में मतडालो कण्व के सर्वपाप ऐसे धर्मके कामोंसे जलगये हैं इस के समान तीनों लोक में कोई देवता और मनुष्य नहीं है धर्मराजने ऐसे वचन चित्रगुप्त से सुनकर इन्द्रसे कहा कि तुम देवताओं के राजा व्यभिचार करने में प्रसिद्ध हो तुमने सौ अश्वमेध यज्ञ करके इन्द्रलोक को पाया है और कण्वने अपने शुभकर्मों से सबपापों को भस्म करडाला है तुम अगस्त्यादि मुनीश्वरों के समीप जाकर विनयपूर्वक उनसे अपनी सब चीजें मांगो और उनको धन द्रव्य असंख्य देकर अपनी वस्तु लेलो सो इन्द्रने अपने लोकमें जाकर मुनियोंको बहुत धनदे अपनी वस्तु लौटाली और अपने राज्यको फिर पाकर अति प्रसन्न हुये और कण्व भी विरोचन का पुत्र हो सुरुचिके उदरसे उपजा जो वृषपर्वा की पुत्री थी और विरोचन ने अपना शिर इन्द्रको देकर तीनों लोक में यश प्राप्त किया और विरोचनसे बलि उपजे यह बलि बड़े पराक्रमी होकर शिवकी कृपासे सदा प्रसन्नरहे जिनके तेजको इन्द्र न सहकर कश्यप के समीप गये और बलि इन्द्र होकर सब देवताओंके राजा हुये और उन्होंने आपही दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा और शेषआदि के सबकार्य किये और शिवकी कृपासे तीनों लोक के राजा होकर सब ब्रह्माण्डको जीत लिया और जिनके द्वारपर ब्राह्मणका स्वरूपधार विष्णुजी गये और इन्द्रके मनोरथ पूर्ण करनेको बलिसे सर्वभूमिदान लेकर इन्द्रको दे दी यद्यपि विष्णुने राजा बलिसे बड़ाछल किया पर तौभी बलिको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुछ दुःख न हुआ और अपने दानके कारण सुतललोक में जाकर विष्णुके प्रतिदिन दर्शन पाने से आनन्द से रहते हैं यह राजा बलि का पूर्ण वृत्तान्त है ॥

पांचवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अब तलातललोक का वृत्तान्त सुनिये जो सुतललोक के नीचे है और वह लम्बाई चौड़ाई में सुतललोकही के समान है जिसमें उत्तमोत्तम मन्दिर रत्नों और मुक्ताओं से जड़ेहुये और नदियां और झीलें कमलपुष्पों से सुशोभित हैं जहां मयदानव रहताहै जिसकी माया अतिबलवान् है जिसने त्रिपुरको इस प्रकार बनाया था कि कोई देवता उसको देख न सक्ता था वह शिवकी कृपासे हरप्रकार की माया रचसक्ता था वह मानों मायाका स्वरूपही था क्योंकि बहुधा उसने नवीन रचनायें कीं और वह दैत्यों में इतना प्रतिष्ठित था कि जितनी विश्वकर्मा की देवताओं में प्रतिष्ठा है यह मयदानव शिव की कृपा से निर्भय होकर आनन्दमें रहताहै और वह त्रिपुरके जलने के समय शिवकी शरण में जाकर बचरहा और तलातललोक नाना प्रकार की उत्तमोत्तम वस्तुओं और वन उपवनों से जिनमें पक्षी मधुर वाणी से बोलते सुशोभित हैं जहां नाना प्रकार के नदी नाले और विचित्र उद्यान फूलों और फलों से भरेहुये स्वर्ग के समान होरहा है वहां किसी को कुछभी दुःख और क्लेश नहीं और मयदानव वहां के निवासियों सहित शिवकी बड़ी स्तुति करता है कि हे सदाशिव ! तुम शरण में आयेहुये के पालनेवाले और दुःखों के नाशकर्ताहो जे तुम्हारी शरण में आते हैं उनपर तुम तुरन्तही दयालु होजातेहो मैंने इस बात को स्पष्टही देखा है कि जबतक मैं तुमको जानता न था तबतक मैंने सुख नहीं देखा और जब मैं आपकी शरण में आया तो तुमने मुझे अपना सेवक जानकर बड़ी दया की तुम्हारी यह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदासे रीति है कि अपने भक्तोंको आनन्द देते हो तुमने मुझे अपनी सेवामें रखकर तलातल लोकका राजा बनाया इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले हे नारद! इस तरहसे मयदानव शिवजीकी स्तुति करके प्रसन्न रहाकरता है अब महातल पांचवें लोक का वृत्तान्त सुनो जहां कद्रूका पुत्र तक्षक राजा है उसके फणमें इतने रत्न हैं कि उस लोक में कभी अँधेरा नहीं होता उस लोक के चारों कोणोंमें नदियां, तालाब, कूप, बावली आदि सुशोभित हैं और वह लोक सुन्दर वनों, उपवनों, विचित्र फुलवारियों और सघन वृक्षों से महारमणीक होरहा है और स्थान २ पर छायावाले वृक्ष अतिशोभायमान हैं जिनपर पक्षी मधुर स्वर से आलाप रहे हैं और वहां पर तक्षक, सुषेण, कुहुक आदि सर्प महाविषधर विराजमान हैं जो अतिभयंकर हैं और मणियोंसे जो उनके शीश में लगीहुई हैं प्रकाशवान् होरहे हैं और सदा गरुड़से डरते रहते हैं उनके लिये विहार के निमित्त सर्वप्रकार की सामग्री वस्त्र, आभूषण, रत्न, मन्दिर वर्तमान हैं और उनके तेज और बलको हम कहांतक वर्णन करें वह अकथनीय है वहां का राजा तक्षक शिवजी का बड़ा भक्त है जिसने चित्राङ्गद से मित्रता कर और उसको शिवभक्त जान उसके सब कार्य पूर्ण करदिये हे नारद! नीचे लिखी हुई स्तुति जिसका तक्षक प्रतिदिन पाठ करता है हम तुमको सुनाते हैं मन देकर सुनो कि हे शंकर, सदाशिव, भक्तोंके पालनेवाले! तुम्हारी महिमा अलख है जिसको ब्रह्मा, विष्णु, सब देवता, मुनि, शेष, शारदा, सनकादिक और व्यास भी पार नहीं पासके और वे नाना प्रकार से तुम्हारी स्तुति करते हैं पर तोभी थककर मौन होजाते हैं यह महातल लोक का वृत्तान्त है अब हे नारद! रसातललोक का वृत्तान्त सुनो कि वह महातलके नीचे है और उसकी लम्बाई और चौड़ाई ऊपर लिखे हुये लोकों के समान है वहां दानव और दैत्य जिनको कालकेय और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कवच कहते हैं रहाकरते हैं जो बड़े बलिष्ठ और प्रतापवान् हैं सो एक समय देवताओंने उनको बड़े तेजस्वी जानकर सुरमाको पाणिनाम दानवों के राजाके समीप भेजा उसने वहां पहुँचकर कहा कि तुम नहीं जानते कि विष्णुजी तीनों लोक के स्वामी और सब के पालनकर्ता हैं वह चाहते हैं कि दैत्यों को मारकर तीनों लोक को अपने अधीन करलेवें तुम क्यों अचेत हो तुम्हारा अब जीना कठिन है ऐसे बचन सुनकर वहां के निवासी बहुत डरे तब से वे सदा भयभीत रहकर अहर्निश शिवजीकी सेवा किया करते हैं कि देवताओं से बचेरहें हे नारद ! यही रीति है कि जो सदाशिवजी की शरण में आता है वह सदा निर्भय रहता है उसको कुछ दुःख नहीं होता अब आगे हम पाताल लोक का वर्णन करते हैं जो रसातलके नीचे है उसकी लम्बाई चौड़ाई और उँचाई भी ऊपर लिखेहुये लोकों के समान है वहां वासुकि, शंख, कुलिक, धृतराष्ट्र, धनञ्जय, कमल, अश्वतर, देवदत्त, कर्कोट आदि नाग रहते हैं जिनके शिरों में पांच, सात, दश, सौ और हजारतक माणियां लगीहुई हैं वे माणियां ऐसी प्रकाशवान् हैं जिनसे रात और दिन कुछ जाना नहीं जाता वहां पर जरा मरण निर्बलता आदिका कुछ भय नहीं और उनके मन्दिर अतिसुन्दर और वस्त्र रत्नों से जड़ित हैं जिनकी शोभा चारों ओर फैलीहुई है और वे नाग सब शिवजीकी भक्ति में तत्पर रहते हैं जिनसे उनको शिवजीकी कृपा से कुछ भय और संशय नहीं है उनके वासुकिनाम राजा हैं जो सदाशिवजी की यह स्तुति करते हैं कि हे शिवजी ! तुम आदि अन्त रहित सबके स्वामी हो और तुम तीनोंलोकके उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता और संहर्ता परब्रह्म हो हम तुमको पहिंचानकर तुम्हारी शरण में आये हैं तुमको सब भक्तवत्सल कहते हैं क्योंकि तुम प्रसन्न होकर भक्तोंके मनोरथ पूर्ण करते हो और तुम सबमें व्याप्त हो जैसे जल में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शीतलता, अग्नि में उष्णता, सूर्य में प्रकाश, दूधमें घृत वर्तमान है इसी प्रकार कोई वस्तु संसार में तुमसे भिन्न नहीं ब्रह्मासे तृणतक सब तुम्हारे अधीन हैं तुम कानों विना सुनते, विना आंखों के देखते, विना नाक सूंघते, विना मुख वेद पढ़ते, विना भुजा सर्व कार्य करते, चरण विना चलते और विना लिङ्गके सृष्टिको उत्पन्न करते हो यद्यपि तुममें कोई इन्द्रिय नहीं पर तुम्हीं सर्वकार्य करते हो इस बात को कोई नहीं जानता वेदभी तुमको नेति २ वर्णन करते हैं और ब्रह्मा, विष्णु, देवताआदि भी तुम्हारी महिमा वर्णन नहीं करसक्के तुम केवल भक्तिके अधीन हो हे नारद ! यह सात लोक जो वर्णन किये सात लाख योजन हैं जो सप्ताम्बर कहेजाते हैं ॥

छठा अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! यह सातोंलोक जो हमने ऊपर वर्णन किये दश २ हज़ार योजन हैं जो अण्डे के समान गोल और सुडौल हैं उनकी लम्बाई सातलाख योजन है उन सातों लोकों के नीचे एक और लोक है जो सबलोकोंका मूल है उसका विस्तार बीसहज़ार योजन है जिसमें शेषजी विराजमान हैं उनके हज़ार शिर और हर शिर में मणिआदि रत्न अतिसुशोभित हैं शेषजी पृथ्वी को अपने शिरपर धरे हैं और शिवजी के तामसीस्वरूप हैं और शिवजी का नित्यप्रति ध्यान किया करते हैं उनके नाम संकर्षण, अनन्त आदि हैं उनका संकर्षण नाम इस लिये है कि जितनी वस्तु संसार में वर्तमान हैं उन सबको यह खींचनेवाले हैं और अनन्त उनका नाम इस लिये पड़ा कि वे अथाह हैं जब प्रलयकाल आता है तो वे रुद्रके दोनों भवों के बीचसे निकलकर ग्यारह शरीर धार अपने प्रकाशसे प्रलय करके सब का नाश करदेते हैं उस समय उनके हाथमें त्रिशूल होता है और प्रलय करते हुये उनका स्वरूप महासुशोभित होता है जब प्रलय करचुकते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तो सुन्दरस्वरूप धार आभूषण पहनलेते हैं और नागकन्या उनकी नानाभांति से सेवा करती हैं हे नारद ! उनके पूजन स्मरणसे सबको सुख प्राप्त होता है और उनका पूजन देवता मनुष्यादि सब करते हैं उनकी पूजासे शिवजीकी भक्ति प्राप्त होती है इसी प्रकार और सब देवताओंकी पूजा इस लिये की जाती है कि शिवजी के चरणों की प्रीति बढ़े इसीसे उचित है कि शिवजी के चरणोंकी सेवा नित्य दिन करे और शेषजीभी यही विचारकर शिवजीकी भक्ति किया करते हैं और नित्यपूजाकी सामग्री इकट्ठीकर दण्डवत् और पूजनके अनन्तर शिवजीकी यह स्तुति किया करते हैं कि हे शिवशङ्कर, त्रिलोकीनाथ ! तुम आदि निराकार ज्योतिस्वरूप हो पर भक्तों के आनन्द के लिये सदा भूतल में अवतार धरते हो फिर दुष्टों को दण्ड दे अपने भक्तों को प्रसन्नकर लोक में सुख और परलोक में मुक्ति देते हो आपने कहां और किसके कार्यको पूर्ण नहीं किया जब आपने हलाहल विषसे जलते हुये देखा तो आपही ने उसको पीकर देवताओं को जलनेसे बचाया देखो व्याधने कोई ऐसी पूजा न की कि उसके चरणोंसे बिल्व-पत्र वृक्षसे टूटकर आपके लिङ्गपर गिरे उससे आपने उसको अपना पूजनेवाला जानकर मुक्ति दी इसीप्रकार आपने एक हरिणको उसकी हरिणियों समेत परमपद दिया तुम सदा अपने भक्तोंके निमित्त नाना प्रकारके स्वरूप धारकर अवतार लिया करते हो आपने विष्णुजी पर प्रसन्न हो जालन्धर, त्रिपुर और तारक दैत्योंको नाश कर दिया और पहिले कामदेव को भस्मकर फिर उसकी स्त्रीका दुःख देख उसे जिला दिया और जब आप अपने चरणकमल भूमिलोकपर मारकर नाचते हैं तो उससे सर्वलोक कांप उठते हैं और जब तुम अपनी पवित्र भुजा ऊपर उठाते हो तो उस समय आकाश घूमजाता है आपने ब्रह्मा का पांचवां शिर काटकर सबका सन्देह दूर करदिया हम आपकी महिमा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वर्णन नहीं करसक्ते आपसे कालभी डरता है और ब्रह्मा और विष्णु आदि देवता आपकी भवों को देखते रहते हैं कि क्या आज्ञा होगी हे सदाशिव ! आपने गज, गङ्गा, व्याध, शबरी, शबर, श्रीकर, कण्व और गुणनिधि जो महापात की थे उनको उत्तम गति दी और की क्या कथा है ॥

सातवां अध्याय ॥

इन सब लोकों की कथा सुनकर नारद ने पूछा कि हे ब्रह्मन् ! आप बताइये कि नरकलोक कहां हैं वह सब तीनोंलोकमें गिने जाते हैं व भिन्न हैं ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ! जो नीचे के सातोंलोक हमने वर्णन किये जहां शिवजी के बड़े २ मन्दिर हैं उन सबमें पाताल के नीचे जलके ऊपर नरकलोक हैं जो संख्या में पचपन करोड़ हैं और वे पापियों के दण्ड देने के स्थान हैं पर उनमें जो नरकराज हैं उनका हम वर्णन करते हैं तामिस्र १ लोहदण्ड २ महाभैरव ३ शालू-करौरव ४ कुमुदल ५ भीष्म ६ भयंकर ७ पूतरज ८ कालसूत्र ९ संघात १० तापन ११ कड्काल १२ सिञ्जावन १३ महापथ १४ विच-र्चित १५ अन्ध १६ कुम्भीपाक १७ असिपत्र १८ पतन १९ अग्नि-मन्थन २० संदग्ध २१ पर अन्य मुनियोंने उन नरकोंकी संख्या २८ बताई है सो इक्कीस तो वही हैं जो ऊपर वर्णन किये गये शेष यह हैं क्षारकर्दम २२ राक्षसभोजन २३ शूलप्रोत २४ दण्डशूल २५ घोर २६ अवटनिरोधन २७ सूचीमुख २८ और यमराज इन नरकों में अति-भयंकर रूपधार पापियों को दण्ड देते हैं और वे अपराधियों को टेढ़ी भौंह, भयंकर दांत और तीनों आंखें लाल किये भैंसे पर सवार प्रलयके समान शब्द करतेहुये पापीको दिखाई देते हैं जिनको देखकर पापी थरथरा जाते हैं और वही धर्मराज धर्म करनेवाले लोगों को अतिशोभायमान स्वरूप से दर्शन देकर उनको कृतार्थ करदेते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उनका नाम ऐसे सुन्दर स्वरूप के साथ धर्मराज प्रसद्धि है उनका लोक दक्षिणमें है जहां पितर रहते हैं जो धर्म अधर्म के लिये परस्पर वार्ता करते हैं उन्हीं की सम्मति से पापियों को दण्ड दियाजाता है और चित्रगुप्त भी लोगोंके कर्मों के लिखनेवाले हैं वे रात दिन मनुष्यों के बुरे भले कर्म लिखा करते हैं और हमारे बारह पुत्र जो श्रवण के नाम से प्रसिद्ध हैं वे हर मनुष्यके शुभाशुभकर्म से चित्रगुप्तको खबर देते हैं और उस सभा में अच्छे २ धर्मात्मा पृथ्वी के राजा जिन्हों ने जन्मभर नीति के साथ राज्य किया सभापति हैं वहां की यह रीति है कि जब कोई मरकर वहां जाता है तो पहिले पितरलोग विचार करते हैं कि यह मनुष्य पापी है या धर्मात्मा जो धर्मात्मा हुआ तो उसको अच्छी जगह देते हैं और जो पापी जानागया तो उसको नरकों में डालदेते हैं और जो मनुष्य पापी व शिवजीके विरोधी होते हैं उनको यमदूत सब नरकों में भ्रमण कराते हैं हम सर्वपापों का विस्तार कि किससे कौन नरक प्राप्त होता है वर्णन करते हैं जिससे मनुष्यों को लजा और भयसे रहित करके शिवजी के चरणों में प्रेम बढ़ाता है जो मनुष्य दूसरे की स्त्री या धन लेलेते हैं वे यमदूतों से पकड़े जाकर तामिश्र नरकमें डालेजाते हैं जहां उनको लोहू और चरबी पीनी पड़ती है और वे बहुत मार खाकर अपने किये हुये कर्मों का पश्चात्ताप करते हैं और जो मनुष्य छलसे किसी स्त्री का पातिव्रत धर्म लेलेते हैं वे अन्ध-तामिश्र नरक में पड़कर बड़ा दुःख सहते हैं और जो मनुष्य मान और ममता में पड़कर जीवों के साथ शत्रुता करते हैं और केवल परिवार वालोंके पालनमें प्रवृत्त रहते हैं और जीवोंका वध करते हैं ऐसे मनुष्य रौरवनरक में डाले जाकर नाना भांति के दुःखों में पड़ते हैं वहां कोई मनुष्य उनकी सहायता नहीं करता और जिसके लिये उन्होंने अपना धर्म नष्ट किया था वही अपना पूरा बदला लेते हैं और जो मनुष्य केवल

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपना शरीर पालन करके दूसरों की भलाई में मन नहीं लाता वह भी इसी रौरव नरक में पड़कर अपना मांस जो यमदूत उन्हीं के शरीर से काट २ कर उन्हें देते हैं खाते हैं यह रौरव नरक महाकठोर है जो मनुष्य चित्तके कठोर निर्दयी होकर पक्षियोंकी हिंसा करते हैं वे कुम्भी-पाक नरक में पड़कर जलते हुये तेल में डाले जाते हैं और जो मनुष्य कि ब्राह्मण और पितर आदि के जन्मभर विरुद्ध रहे वे कालसूत्र नरक में जाकर बड़ाही दुःख उठाते हैं यह कालसूत्र नरक दशसहस्र योजन विस्तार में है और पृथ्वी उसकी सम्पूर्ण तांबे की है और वह सूर्य और अग्निकी गरमीसे जल रही है जब पापी उसमें छोड़ा जाता है तो उस गरमीको सम्हार नहीं सक्ता और चारों ओर दौड़ता फिरता है और कहीं उसको ठहरने की जगह नहीं मिलती और जो मनुष्य अपना मुख्य धर्म छोड़ पाखण्डी हो कालक्षेप करते हैं वे असिपत्र नरक में पड़कर अग्निसमान उष्णपृथ्वी में दौड़ाये जाते हैं और खड्गों से मारेजाते हैं वे ऐसे दुःखों को न सहकर पग २ पर गिरपड़ते हैं और किसी प्रकार से आनन्द नहीं पाते और जो मनुष्य अदण्ड्य मनुष्यों पर दण्ड लगाते हैं उनको यमदूत ऊपर लिखेहुये नरक में डालकर भली भांति मारते हैं और ऊख के खण्डों के समान कोल्हू में डालकर पेर डालते हैं और जो मनुष्य प्रतिदिन पञ्चमख किये विना भोजन कर-लेते हैं वे कव्वे के समान होकर कृमिभक्षण करते हैं और मरने के समय वे भी कीड़े होकर आप भी कीड़े खाते हैं और जो मनुष्य रत्ना-दिकों की चोरी करते हैं वे संदग्ध नरक में डालेजाकर अग्नि से दागे जाते हैं और जो मनुष्य शास्त्रविवर्जित स्त्रियों से भोग करते हैं उनके लिये खम्भनामी नरक बनाहुआ है जो रात दिन अग्नि के समान जलता है और लोग उसी खम्भे में लिपटाये जाते हैं और जो मनुष्य पशुओं के समान सिवाय मैथुन के और कुछ कार्य नहीं करता वह

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कण्टक और शाल्मलि नरकमें डाला जाता है और यमदूत उसका लक्ष्य बनाकर अपने तीरों से छेदते हैं और जो मनुष्य राजा व अधिकारी होकर धर्म की रीतियों पर नहीं चलते और पुराने धर्मों को तोड़ सर्व धर्मों का खण्डनकर एक नवीन मत प्रकट करते हैं वे सब वैतरणी नदी में डालेजाते हैं यह नदी महाअशुद्ध जिसमें समूह के समूह पापी गोते खाते हैं मल, मूत्र, रक्त, केश, अस्थि, नख, मांस आदि से भरी हुई और जो मनुष्य शौच, धर्म, नियम और लज्जादि का कुछ विचार न करके वेश्याओं के साथ सम्भोगकर पशुओं के समान होजाते हैं वे पूयोदक नरकमें पड़कर मेद, मज्जा, मल, मूत्र, फल आदि भोजनके बदले खाते हैं और जो मनुष्य ब्राह्मण होकर वनके पशुओं का शिकार किया करते हैं वे मरने के अनन्तर विकराल नरकमें पड़ते हैं और यमदूत उनका शरीर शिरसे पांवतक छेद डालते हैं और जो मनुष्य झूठही पाखण्ड करके यज्ञके ओढ़र से निर्दयता के साथ जीवों के वध का कारण होते हैं वे विशेष करके नरक में डालेजाकर बड़ी आपत्ति में पड़ते हैं और अपनी स्त्री छोड़ दूसरे वर्ण की स्त्री से मैथुन करते हैं वे लालाभक्ष नरक में पड़कर वीर्य पीते हैं और जो मनुष्य चोरी और लूटमार करके औरों का धन हरते हैं और गांव उजाड़ देते हैं वे सारमेयादन नरक में प्रवेश करते हैं जहां दोसौ सत्तरि महाभयंकर पक्षी ऐसे पापियों का मांस भक्षण करते हैं और जो मनुष्य लोभसे अथवा दान लेनेकी इच्छासे झूठी गवाही देते हैं वा धन और दानके सम्बन्धी व्यवहारों में झूठ वर्णन करते हैं वे अनन्त नरक में डाले जाते हैं जहां सौ योजन ऊंचा पर्वत बहुत अँधेरे में है सो यमदूत ऐसे मनुष्य को उस पहाड़पर चढ़ाकर शिरके बल नीचे डालदेते हैं और पापी मनुष्यके शरीर के टुकड़े २ होजाते हैं और जो कोई ब्राह्मण या स्त्री होकर मद्य पीते तो ऐसे मनुष्य कूपनरकमें पड़तेहैं जहां वे बड़ा दुःख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पाते हैं हे नारद ! यह ऐसे यहां भयंकर इकीस नरक हैं अब हम नरक के सात खण्डों का वर्णन करते हैं मन देकर सुनो कि जो कोई मनुष्य ऐसे मनुष्यों के साथ जो वर्णाश्रम, तप, जप, नियम और आचार में परिपूर्ण हो कठोरता अन्याय अशीलता करे तो वह क्षारनरक में शिरकेबल डालाजाता है और जो पुरुष किसी मनुष्य को बलिदान की तरह उसको बलि देते हैं वा जो स्त्री मांस खाती है ऐसे पापी ऋक्षभोजनीनरक में पड़कर दण्ड पाते हैं और यमदूत आप ऐसे मनुष्योंको यमराजके सम्मुख पछाड़ कर उनका मांस शरीरसे काट २ कर खालेते हैं और जो मनुष्य पापरहित मनुष्यों को विश्वास देकर फिर उनको मारडालते हैं और जीवोंके मारडालनेसे प्रसन्न होकर जाल से जीवों को पकड़ते हैं और दयाभाव छोड़ देते हैं ऐसे मनुष्य शूल-प्रोतनरक में पड़कर बहुत भूख और प्यास से दुःखी रहते हैं और उनके मांस कव्वे, चील्ह, गृध्र अपनी चोंचसे नोच २ कर खाडालते हैं और जो मनुष्य जीवोंके साथ अपकार करते हैं वे दण्डशूकनरक में पड़ कर सप्तमुखी अथवा पंचमुखी सिंहों से दुःख उठाते हैं और जो अन्धे आदमियों को सीधी राहसे भटकाकर नाले या गढ़े में जानेको भटकाते हैं वे निरोधननरक में पड़कर बड़ा दुःख पाते हैं और जो अतिथि और अभ्यागतों को क्रोध की दृष्टि से देखते हैं उनके नेत्र कव्वे और चील्ह मरने के उपरान्त निकाल लेते हैं और जो मनुष्य धन सम्पत्ति से अहंकारी होकर उसकी संग्रह में लगे रहकर सब लोगों को ग्लानिकी दृष्टिसे देखते हैं और धनके बटोरने और रक्षा करने के सिवाय दूसरा कार्य नहीं करते वे शूचीमुखनरक में डाले जाते हैं और यमदूत उनको सुइयों से घायल करदेते हैं हे नारद ! वहां ऐसे २ नरक हजारों हैं जो विस्तारभय से वर्णन नहीं किये और समझना चाहिये कि हर मनुष्य न्यूनाधिक्य पापोंके अनुसार नाना प्रकार के दुःख

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झेलते हैं इसी प्रकार धर्मात्माओं को स्वर्गके लोकों में नाना प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है और जब तक कोई पुण्य पाप शेष रहता है तब तक मनुष्यको इस मर्त्यलोक में आकर शरीर धारण करना पड़ता है और जिसकी जैसी वासना होती है उसीके अनुसार उसके लक्षण प्रतीत होते हैं अर्थात् पुण्य पाप के अनुसार पुण्य पाप भोगना पड़ता है जो मनुष्य यह कथा चित्त देकर पढ़े या सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्द उठावेगा ॥

आठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम नीचेके लोकों की कथा वर्णन करचुके अब ऊपरके लोकों की कथा विस्तारसे वर्णन करते हैं कि ऊपरके लोकों में आठ लोक नीचेके लिखे अनुसार गिने जाते हैं उनमें क्षितिलोक है जिसमें मनुष्य रहते हैं यह लोक पचासकोटि योजन विस्तारमेंहै और उनके सम्बन्धी सात द्वीप यह हैं जिनको चारों ओर से दिग्गज घेरेहुये हैं पहिला जम्बूद्वीप दूसरा प्लक्ष तीसरा शाल्मलि चौथा कुश पांचवां क्रौञ्च छठा शाकद्वीप सातवां पुष्कर यह सातों द्वीप पहिला पहिले से और दूसरा दूसरे से लम्बाई में दूना है और सातों समुद्र जो सातों द्वीपके गिर्द खांई की तरहपर हैं उनके नाम यह हैं पहिला क्षारोदधि दूसरा इक्षुरसोदधि तीसरा सुरोदधि चौथा घृतोदधि पांचवां क्षीरोदधि छठा मण्डोदधि सातवां शुद्धोदकोदधि और राजा प्रियव्रत मनुके पुत्र सातों द्वीपके राजा हुयेथे सो प्रियव्रतने अपने सातों पुत्रोंको एक २ द्वीप देदियाथा जहां उन्होंने राज्य किया उन सातों लड़कों के यह नाम हैं अग्नीध्र १ जिह्व २ मुखबाहु ३ कनकरेत ४ धृतपृष्ठ ५ मेधातिथि ६ वीतिहोत्र ७ इतनी कथा सुनकर नारद ने विनय की कि हे महाराज! आपने यह सृष्टिका वृत्तान्त बहुत संक्षेप से वर्णन किया और मेरी यह इच्छाहै कि सर्व सृष्टिका वृत्तान्त विस्तार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से सुनूं ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ! शिवकी माया और पृथ्वीभरका वृत्तान्त वर्णनसे बाहरहै उसको कोई मनुष्य पूर्णरूप से नहीं जानता पर तोभी हम अपनी विद्या और निश्चयसे वर्णन करते हैं ॥

जम्बूद्वीपका वृत्तान्त ॥

यह जम्बूद्वीप नियुत योजन विस्तारसेहै और कमलफूलके समान गोल और बराबर है उसके भीतर नवखण्ड और आठ पर्वत हैं उन खण्डों के यह नाम हैं पहिला भद्राश्व दूसरा हरिवर्ष तीसरा किम्पुरुष चौथा भारत पांचवां केतुमाल छठा रम्यक सातवां हिरण्यमय आठवां कुरु नवां इलावर्त जो आठों खण्डोंके बीचमें है और आठों पर्वतोंके यह नाम हैं पहिला गन्धमादन दूसरा निषध तीसरा हेमकूट चौथा हिमालय पांचवां माल्यवान् छठा नीलगिरि सातवां श्वेत आठवां शृङ्गवान् और इलावर्त जो आठों खण्डोंके बीचमें हमने वर्णन कियाहै उसकी नाभिमें सुमेरुनामी एक पर्वत सब पर्वतों का राजा है जो सब स्वर्णहीका है और द्वीपके बीचों बीचमें सुशोभित है और इलावर्तके चारों ओर बहुतसे पर्वत हैं अर्थात् पूर्वकी ओर एक और दक्षिणकी ओर तीन और पश्चिमकी ओर एक और उत्तर में तीन पर्वत स्थित हैं और सुमेरु के चारों ओर चार पर्वत घिरेहुये हैं अर्थात् पहिला मन्दर दूसरा मेरु तीसरा सुपार्श्व चौथा कुमुदाख्य और वहां चार वृक्षहैं पहिला आम्र दूसरा जामुन तीसरा कदम्ब चौथा बरगद और वहां चारही चार समुद्र हैं पहिला दधि का दूसरा शहद का तीसरा शर्बत का चौथा शुद्धजल का और वहां चार वन देवतोंके विहारके निमित्त हैं पहिला नन्दनवन दूसरा क्षेत्ररथ तीसरा वैभ्राजक चौथा सर्वतोभद्र और मेरुके पूर्वकी ओर दो पर्वत देवकूटनामक हैं और दक्षिण की ओर कैलास और कवीर आदि हैं और त्रिशृङ्ग और मकर उत्तरकी ओर हैं और सुमेरु के ऊपर विचित्र नगर बसे हुये हैं और ईशान की ओर सदाशिवजी विराजमान

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहते हैं और बीचमें हम अर्थात् ब्रह्मा और नैर्ऋत्य दिशा में विष्णु भगवान् का लोकहै अर्थात् तीनों देवता अपने गणों सहित अपनी २ पुरी में रहते हैं और उसकी आठों ओर दिक्पति भी हैं हे नारद! यह नव खण्ड जम्बूद्वीप के हैं जो ऊपर वर्णन कियेगये उन नव खण्डोंमें भरतखण्ड कर्मक्षेत्र अर्थात् शुभकार्य करने के योग्य है क्योंकि इस खण्डमें शुभकार्य करने से उत्तम फल प्राप्त होता है और उस कर्मभूमिमें मनुष्य पुण्य पाप करके उत्तम फल भोग करता है और इसमें युग भी बदलते रहते हैं और शेष सब खण्डोंमें त्रेतायुग बनारहताहै और सर्व मनुष्य वहां सदा प्रसन्न रहते हैं और देवताओंके समान दशसहस्र हस्तीका बल रखते हैं॥

नवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सब खण्डों के रहनेवाले शिवकी पूजा और सेवामें लगे रहते हैं और सदाशिव सबसे सेवा किये जाते हैं जैसा कि आगे वर्णन कियाजाता है कि मधुखण्डमें शेषनाग जो सब नागों के राजा हैं बड़े प्रेमसे सदाशिवकी पूजा और स्तुति करके दण्डवत् करते हैं और यह बिनती करते हैं कि हे सदाशिव! हम तुम्हारे शुभचरणों को जो लाल और कमलके समान हैं ध्यान करते हैं तुम मृत्युको जीतेहुये हो और जो तुम्हारी इच्छा होती है उसी प्रकार का रूप धारण करतेहो और तुम्हारी माया सर्वसंसार को मोहे हुये है और वही सर्वकार्य करनेकी शक्ति रखती है और तुम्हारे तीनों गुणों से ब्रह्मा-विष्णु और हर अवतार लेते हैं और तुम्हीं संसारके उत्पन्न करनेवाले और पालन करनेवाले और नष्ट करनेवाले हो और तुम्हीं से संसार उपजता और तुम सबसे भिन्न हो और देवता, मुनि, मनुष्य सब तुम्हारे अधीन और तुम्हारे मायारूपी तागे में बँधे हुये हैं जिन के अधीन होकर सर्वमनुष्य अपना २ कार्य करते हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह शुद्धस्वरूप आपही हैं क्योंकि सर्वजीव तीनों गुणों में भूलेहुये हैं इससे आप उनकी दृष्टि में नहीं समाते और जोकि शेषजी ऐसी स्तुति शिवजीके सामने पढ़ा करते हैं इसीसे वे नीरोग रहते हैं और इसी प्रकार भद्राश्वखण्ड में हयग्रीव नाम सदाशिव की पूजा वहां के राजा करते हैं और शिवका मन्त्र जपकर यह स्तुति करते हैं कि हे महेश ! आपके चरित्र अतिविचित्र हैं और तुम्हारी माया के अधीन सर्वमनुष्य और देवता आदि हैं हर जीवको अपनी मुक्ति बनाने के लिये केवल आपकी कृपाही चाहिये आपकी दया बिन मनुष्य भवसागर से पार नहीं होसक्ता और हरिवर्षखण्ड में विष्णु का नृसिंह अवतार शिवजी की पूजा और ध्यान करके मन्त्र जपते हैं और अतिप्रेमसे शिवजीकी स्तुति करते हैं कि हे देवताओं के देवता, शिवशङ्कर, जगदीश ! हमपर कृपा करो तुम्हारे समान और कोई देवता नहीं तुम्हारी सेवा सब देवता और मुनि करते हैं हे ईश, गिरिजापति, सबके स्वामी और सर्वसंसार में श्रेष्ठ ! और सबके उपजानेवाले आप किसी से नहीं उपजे और यद्यपि सर्वशास्त्र और वेद पुराण और शुक्र शेष आपका यश गाते हैं पर अन्त नहीं पाते ऐसी आपकी असंख्य महिमा हैं हम उनका कहांतक वर्णनकरें और तुम्हारा नाम अतिपवित्र तीनोंलोकको आनन्द देनेवाला है हमको अपना सेवक जानकर कृपा करतेरहो निदान नृसिंहजी वहां के रहनेवालों समेत शरभनाथ शिवजीकी सेवामें अहंकार छोड़ ध्यानलगाये रहते हैं और किम्पुरुषखण्ड से वहांके राजा समेत श्रीरामचन्द्रजी शिवजी की पूजा करके उनका मन्त्र जपते हैं और अतिप्रेमके साथ शिवका यश गाकर यह स्तुति करतेहैं कि हे शिवशङ्कर, रुद्र, दीनबन्धु, दुःखके दूर करनेवाले, सब के स्वामी ! आपने राजा काम का उद्योग पूर्णकिया और शबरकी इच्छा पूरीकी और चन्द्रशेखर और श्रीकरको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मुक्तिदी और धर्मगुप्त और शुचिव्रत और सत्यसिन्धु को कृतार्थ करदिया और शरभ अवतार धार नृसिंहका गर्व दूर करदिया तुम अतिदयालु और अपने भक्तों को मोक्ष देतेहो और हरप्रकार अपनी शरण में आये हुयेको तारनेवाले हो आप अपने भक्तों का दुःख देख नहीं सक्के और इसीसे अतिभयंकर स्वरूप धारते हो आपको हमारा दुःख अच्छा न लगा और हमारे दुःख दूर करनेको आपने हनुमान् अवतार धारणकिया और श्रीसीताजीके वियोगसागर में कि जिसमें हम डूबते थे आपने पारलगाया और हमने आपकी कृपासे रावण और महिरावणको वध किया और सर्वलोकों का राज्य जो हमको प्राप्त हुआ वह केवल आपही की चरणसेवा का परिणाम है और भरतखण्ड में नर नारायण सदाशिव की पूजा करके शिवके मन्त्रका जप करते हैं और यह स्तुति करते हैं कि हे ईश, शङ्करनाथ ! आप सब जगह प्रकट और मन, वचन, इन्द्रिय, विचार और अतिसे बाहरहो और तुम्हारे वर्णनसे वेदोंको भी आश्चर्य है और तुम परमेश्वर और परम पुनीत और प्रलयकरनेवाले और अप्रमेय दया की खानि हो और ब्रह्मा और विष्णु और सनकादिक आपकी सेवा में लगेरहते हैं तुम्हारी माया संसारको इतना वश कियेहुये है और इतना इस संसार को अधीन कियेहुये है किसीको नट की तरहपर नचाती है और कोई स्थान ऐसा नहीं जहां तुम्हारी माया प्रवेश नहीं करसक्की पर जो मनुष्य आपकी शरण में आये हैं वे निस्सन्देह उस मायाजाल से छूट कर आनन्द उठाते हैं हे नारद ! नर नारायण के तपोबल से शिवके भक्त नर नारायण के निकटही स्थित रहते हैं और उस स्थान का नाम संसार में केदार प्रसिद्ध है जहां उनकी सेवा करने से तुरन्त पाप दूर होजाते हैं और जो मनुष्य कि केदार में अपना शरीर डुबादेते हैं वे तुरन्त मुक्ति प्राप्त करके आनन्द उठाते हैं और केतुमालखण्ड में

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कामदेव अपनी सेना और उस खण्डके राजा सहित शिवजीकी पूजा में प्रवृत्त रहकर शिवका नाम लिया करते हैं और स्तुति करते हैं कि हे ईश, मायापति, शंकर ! हमपर कृपाकरो आप दुष्टों को अति भय देनेवाले हो मैंने सत्यमार्ग को ग्रहणकर आपको पहिंचाना और हे शिव ! तुम सदा स्वाधीनता से शुद्धबुद्धि रक्खेहुये रहते हो जो वर्णनसे बाहर है और जोकि आपने मुझे क्रोधाग्निसे जलादिया इस बात को मैं आपकी बड़ी कृपा समझता हूं यद्यपि मैं तीनोंलोक को फँसा सक्ताहूं पर आपके सामने होतेहुये मुझे बड़ा भय उपजता है मैं आपकी शरण में हूं आप मेरे सब पापों को नष्ट करदें क्योंकि आप शरण में आयेहुये मनुष्योंका पक्षपात करते हैं और रम्यकखण्ड में मनुष्यस्वरूप विष्णु शिवजी के पूजक हैं जो शिवजी की सदा स्तुति करते हैं कि हे जगदीश ! आप ब्रह्माण्ड के महाराजाधिराज हैं आपकी चरणसेवा लक्ष्मी करती हैं और ब्रह्मा और विष्णु और हर तीनों देवता केवल आपके दर्शन से पवित्र होजाते हैं और आप परब्रह्म परमात्मा हैं आपकी महिमा शेष आदि भी वर्णन नहीं करसक्ते और हिरण्यखण्ड में लक्ष्मीपति पितृगणों समेत शिवकी पूजामें रहकर शिव का मन्त्र जपा करतेहैं और यह अच्छी स्तुति करतेहैं कि हे देवताओं के ईश ! शरण में आयेहुये मनुष्योंके पालनेवाले और भक्तोंको आनन्द देनेवाले, दीनानाथ, त्रिभुवनपति, सर्वप्रकारसे शुद्ध ! आपका यश वेद वर्णन करते हैं आपकी महिमा अनन्तहै आपने चन्द्रसेनको कृतार्थ करदिया और गुणनिधि को मुक्तिदी मुझपर आप कृपा कीजिये और मेरे दुःखको निवारिये और कुरुखण्डमें वाराह विष्णुका अवतार शिवकी पूजा करके षडक्षरी मन्त्र जपते हैं और यह स्तुति करते हैं कि हे कामदेवके जलानेवाले, गिरिजापति ! आप सर्वसंसारके स्वामी हैं आपने गजगङ्गा हर और श्रीकर नन्दी किरात आदिको मुक्तिदी इतना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कह ब्रह्माजी बोले हे नारद! इसी प्रकार सबखण्डों में शिवजीकी पूजा कीजाती है इस जम्बूद्वीपकी कथा सुननेसे अप्रमेय आनन्द मिलता है और भय दूर होताहै॥

दशवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह सम्पूर्ण वृत्तान्त जम्बूद्वीपका है इस जम्बूद्वीपके अधीन और आठ उपद्वीप हैं जिनके यह नाम हैं पहिला स्वर्णप्रस्थ दूसरा चन्द्र तीसरा शुक्लपरिवर्तन चौथा रमणक पांचवां मन्दिरहरण छठा जन्य सातवां सिंहल आठवां लम्ब और जम्बूद्वीपको चारों ओरसे क्षारसमुद्र घेरेहुये है जम्बूद्वीपके पीछे प्लक्षद्वीप है जिसका राजा अधमछवि नाम बड़ा राजा हुआ उसके सात पुत्र उपजे जिनके यह नाम हैं पहिला शिव दूसरा यवस तीसरा सुभद्र चौथा वेशान्त पांचवां क्षेम छठा अमृत सातवां अभय सो राजा ने अपने द्वीपके खण्ड करके अपने सातों लड़कों को परस्पर बांट दिया और वे सातों खण्ड उन्हीं सातों लड़कोंके नाम से प्रसिद्ध हैं और इस द्वीप में पर्वत भी सात हैं और इस द्वीपमें नीचे लिखेहुये चार वर्ण बसते हैं जिनके दर्शन देवताओं के दर्शन के समान मनुष्यों को कठिनता से मिलते हैं वहां के चार वर्णों के यह नाम हैं ऊर्ध्वायन १ परमहंस २ पतङ्ग ३ सत्यङ्ग ४ सो यह सब सूर्यकी पूजा करते हैं और सूर्यही का मन्त्र जप करते हैं और यह कहते हैं कि हे सूर्य देवता! तुम रोगों के नष्ट करने वाले हो तुम्हारा शरीर तीनों गुणों से भरा हुआ है और तुम सदाशिव का स्वरूप हो आपके उदय होने से पृथ्वी में प्रकाश होता है और तुम शिवकी अष्टमूर्ति मेंसे एक मूर्ति हो तुम्हारी बड़ी महिमाहै तुम्हारी सेवा सब करते हैं कृपा करके हमारे दुःख भी दूर करो यह संक्षेप में प्लक्षद्वीप का वर्णन है अब शाल्मलिद्वीप का हाल सुनो कि उसके समान किसी द्वीप में आनन्द नहीं है और वह प्लक्षद्वीप से दूना बड़ा है और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उसको सुरोदसमुद्र चारों ओर से घेरे है वहां यज्ञबाहु नामी राजा प्रियव्रत का पुत्र उस द्वीप का राजा हुआ उससे सात पुत्र उपजे जिनके यह नाम हैं सुरोचन १ सोमस्व २ रमणक ३ देवभद्र ४ भद्र ५ आप्यायन ६ अविज्ञात ७ सो राजा यज्ञबाहुने शाल्मलिद्वीप के सात भाग कर सब लड़कों को बांटदिये उन्हींके नाम से वहां सात खण्ड प्रसिद्ध हुये इस द्वीप में सात नदी और सात पर्वत हैं वहां के निवासी शिवजी को चन्द्रमा जानकर उनको पूजतेहैं क्योंकि वेदने चन्द्रमा को भी शिवरूप बताया है और जो स्तुति वह करते हैं वह यह है कि हे चन्द्रमा! शीतलस्वभाव से सबको प्रसन्न करनेवाले आप मानों अमृतका कुण्ड हैं आपहीसे सब जड़ीबूटी तय्यार होती हैं आपकी महिमा वेद और पुराण वर्णन करते हैं और संसार की आरोग्यता आपहीसे है इसके उपरान्त कुशद्वीप है जिसको घृतादि चारों ओर से घेरे है सो उसका राजा हिरण्य हुआ जो प्रियव्रत का पुत्र था उसके सात पुत्र उपजे जिन्होंने अपने पिताके द्वारा सातों द्वीप पाये और वे द्वीप उन्हींके नाम से प्रसिद्ध हुये और राजा हिरण्य द्वीपों को बांट कर तप में प्रवृत्त हुआ उन लड़कों के यह नाम हैं वसु १ वसुदान २ दृढ़रुचि ३ नाभगुप्त ४ सत्यव्रत ५ विविक्त ६ वामदेव ७ इसमें भी पर्वत और नदियां सात २ हैं यहांके निवासी अग्निको शिवरूप जान उनकी पूजा और पाठ करतेहैं फिर क्रौञ्चद्वीप है जिसको पयोदधि समुद्र घेरे हुये है और कुशद्वीप से दूना है वहां क्रौञ्चनामी एक पर्वत है जहां स्कन्द शिव विराजमान रहते हैं और राजा घृतपृष्ठ जो राजा प्रियव्रत का पुत्र है उस द्वीप में राज्य करते हैं उनके सात पुत्र उपजे सो राजा घृतपृष्ठने अपने द्वीपके सात खण्डकर सातों लड़कों को बांटदिये और आप तपकेलिये वनमें गया वह सातों खण्ड उन लड़कों के नाम से प्रसिद्ध हुये पहिला अनन्त दूसरा बुध तीसरा मेख चौथा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेधपृष्ठ पांचवां भाजिष्ठ छठा लोहित सातवां वनस्पति वहां भी सात पर्वत और नदियां हैं वहां के निवासी शिव को जलरूप समझ जलमन्त्र करके जप करते हैं और शिवकी यह स्तुति करते हैं कि हे परब्रह्म, आनन्द के देनेवाले ! तुम्हारी स्तुति सनकादिक करके थकगयेहैं और अन्तको नहीं पहुँचे तुम परमपावनरूप हो और तुमने प्राणों की स्थिति के निमित्त अवतार धारण किया और तुम्हारे आदि अन्तको कोई नहीं जानता तुम परब्रह्म सर्वोपरि हो तुमसे सबको तृप्ति प्राप्त होती है उक्तद्वीप के उपरान्त शाकद्वीप है जिसकी लम्बाई तेंतीसलाख योजन है जिसको दधिसागर चारों ओर से घेरे है और इस समुद्र की लम्बाई द्वीप के बराबर है और एक शाकनामी वृक्ष उस द्वीप में है जो अपनी उत्तम सुगन्धसे सर्वद्वीपको सुगन्धित कररहाहै और राजा मेधातिथि प्रियव्रत का पुत्र इस द्वीपका राजा था और जब राजा मेधातिथि के सात पुत्र उत्पन्न हुये तो उसने सब द्वीप को सात खण्ड करके एक एक खण्ड सब लड़कों को बांट दिया सो वे सातों खण्ड उन्हीं लड़कोंके नामसे प्रसिद्ध हैं जिनके यह नाम हैं पहिला पुरोज दूसरा मनोज तीसरा पवमान चौथा धूम्रानीक पांचवां चित्ररूप छठा बहुरूप सातवां विश्वाधार और इस द्वीप में भी सात समुद्र और सात पर्वत हैं और वहांके निवासी पवनरूप सदाशिवको जानकर उन्हींके मन्त्रका जप करते हैं और यह स्तुति पवन की करते हैं कि हे शिव, परमात्मा, ईश ! दश प्रकार के शरीर हैं पर वे विना जीव जो मुख्य तुम्हीं हो जड़ हैं और तुम तीनों लोक के भीतर बाहर रहकर निष्पाप और निर्मल बने रहते हो और सर्वसंसार में प्रकट और गुप्त तुमहीं दिखाई देतेहो और तुमहीं ब्रह्म हो जिसका आदि अन्त कुछ नहीं और तुम किसी तत्त्व से नहीं और शुद्धस्वरूप हो और तुम्हारा आधार कुछ रूप नहीं है और तुम शिवकी अष्टमूर्ति में से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एकमूर्ति हो और पांच तत्त्वों में जो चौथा तत्त्व है तुमहीं हो तुम निष्पाप और निर्मल हो और तुम्हारे वश में तीनों लोकके जीव हैं और ब्रह्मधर्म के मूल तुमहीं हो तुम्हारी सहायता और बल से योगी ब्रह्मपद प्राप्त करते हैं हम तुम्हारी शरणमें हैं हमको बचाओ इस द्वीपके उपरान्त पुष्करद्वीप है जो लम्बाई में शाकद्वीपसे दूना और पुष्करद्वीप को चारों ओर से शुद्धोदकसमुद्र घेरे हुये है और यह समुद्र भी अपने द्वीपके बराबर लम्बा है और इस द्वीप में पुष्करनामी कमल पुष्प तीनपत्ती के आकार अतिसुन्दर है और इस द्वीपमें केवल एक पर्वतहै जिसको मानसोत्तर कहते हैं और इस द्वीपके राजा महाराजा वीतिहोत्र प्रियव्रत का लड़का था जिसके दो पुत्र उपजे अर्थात् पहिला रमणक और दूसरा धातिक सो राजा वीतिहोत्र ने अपने द्वीप के दो खण्डकर दोनों पुत्रों को बांटदिये और आप सदाशिवजीकी पूजामें लगेरहे वहांके सब निवासी केवल कर्मको सदाशिवजी का स्वरूप समझकर उनकी सेवा पूजन करते हैं अर्थात वह कर्मको प्रधान जानते हैं और यह स्तुति करते हैं कि जो लिङ्ग सदाशिवका ब्रह्म कर्मरूप है उसको हम प्रणाम करते हैं वह कर्म ऐसा है कि जिसके अधीन देवता मुनिआदि और तीनों लोक हैं जिससे तीनों लोकको दुःख सुख प्राप्त होते हैं ब्रह्मा सदा सृष्टि उपजाते और विष्णुजी अवतार लेकर उसकी पालना में लगे रहते इसी प्रकार शंकर शिव तीनों लोक को नष्टकर प्रलय करते हैं और उसी कर्म के वश में पड़कर शेष पृथ्वी को धारते हैं और लोकपाल अपने लोकों में नाना प्रकार के दुःख सुखों को भोगते हैं और सूर्य और चन्द्रमा और सर्वग्रह ध्रुवकर्मके अधीन होकर उदय होते और कभी अस्त होजाते हैं इसलिये कर्मरूप जो शिवहैं हम उन्हींकी दण्डवत और सेवा करते हैं इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उसके ऊपर लोकालोक है जो बहुत ऊंचा और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ा है जिसको ग्रह, नक्षत्र, सूर्य और ध्रुव भी नहीं लांघसक्के यह लोकालोक की पृथ्वी की संख्या में पचासकोटि योजन है और वहां एक पर्वत तुर्यभागनामी है जिसके चारों ओर ब्रह्माके स्थापित किये हुये दिग्गज स्थित हैं उनके नाम यह हैं पहिला अपराजित दूसरा वामन तीसरा गतपर्व चौथा पुष्कर पांचवां चूड़ छठा ऋषभ और उसी स्थान में विष्णु भगवान् अपने भक्तोंसमेत विराजमान रहकर संसार की पालना करते हैं उसके आगे फिर सिवाय योगीजनोंके और कोई नहीं पहुँच सक्ता वहां कोई मनुष्य किसी प्रकार नहीं पहुँचसक्ता क्योंकि मनुष्यों की दृष्टि में वह स्थान दिखाई नहीं देता यह वह स्थान है जहां अपने पङ्खों से सैन सुमन हंस आदि और ब्राह्मण या पक्षी उड़ सक्के हैं जैसा कि वेद कहते हैं यह पृथ्वी सौ योजनपर्यन्त है हे नारद! यह क्षितिलोक का वर्णन है जिसको खण्डों और द्वीपों समेत बखान किया जिसके सुननेसे मनुष्य को अति आनन्द मिलता है॥

ग्यारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! क्षितिलोक के ऊपर भुवर्लोक है जिसकी लम्बाई सूर्य तक एक लाख योजनसे अधिक है और वहां अपनी पुण्य की संख्या के अनुसार हर जीव पहुँचकर नाना प्रकारका आनन्द और अप्रमेय प्रसन्नता प्राप्त करता है वहां किसी प्रकार का दुःख मनुष्य को नहीं होता और इस भुवर्लोक में और भी बहुत उपलोकहैं जैसा कि हम उनके नाम और संक्षेपसे वृत्तान्त वर्णन करते हैं पहिला पिशाचपुर है जहां भूत प्रेतादि रहते हैं और यह भूत और प्रेत देवयोनि अर्थात् तेजरूप हैं पृथ्वीके अंश नहीं हैं और उनको कुछ दुःख नहीं है और वे तीनों लोक में जासक्के हैं और दूसरों पर प्रसन्न होकर उन्हें वर भी देसक्के हैं जो कि यह शुभकार्य कर्म करते हैं इससे उनको थोड़े से द्रव्य और पदपर अधिकार है और जो मनुष्य कार्य करने से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उस लोक में जाकर भूत प्रेत होते हैं उसका विस्तार हम कहते हैं अर्थात् जो मनुष्य दूसरे की संगति में वा दूसरे मनुष्य के अधीन होनेके कारण कुछ सामग्री इकट्ठीकर विधिरहित किसी मनोरथ के पूर्ण होनेकी इच्छासे किसी देवता की पूजा करते हैं तो ऐसे मनुष्य मरने के अनन्तर दूसरे जन्म में भूत प्रेत होकर पिशाचपुर में वास पाते हैं और शिवजी का मन्त्रजप भूतनाथ महादेव की स्तुति करते हैं दूसरा गुह्यकलोक है जो पिशाचपुरके ऊपर है जहां जीवको दुःख नहीं उसके निवासी सदाशिवजीके आज्ञाकारी हैं और धनद्रव्य दान करते हैं और केवल अपने कुल देवताओं को मानते हैं और उन्हींके वचन को सत्य समझते हैं और उत्तममार्ग से धन सञ्चित करते हैं और सबमनुष्यों के साथ शील और स्नेह रखकर किसीसे सम्बन्ध व प्रीति नहीं तोड़ते सो ऐसे उत्तमकामों के कारण वहांके स्त्री पुरुष निश्शोक धनवान् रहकर प्रसन्न रहाकरते हैं वहां किसीको कुछ दुःख नहीं है और मणिग्रीव गुह्यपति अपने गणोंसहित शिवजी की स्तुति किया करते हैं तीसरा गन्धर्वलोक है जो गुह्यकलोकसे ऊपर और जिस में चारण और गन्धर्व बसेहुये हैं यह गानविद्यामें अतिप्रवीण हैं और अहर्निश ईश्वरके गुण गाया करते हैं और बड़ा विहार करते हैं और जो दुःख मनुष्यको होता है उनको वह नहीं होता और जो मनुष्य कि इस असार संसारमें गानविद्यासे उनको प्रसन्न करते हैं वह मनुष्य वह लोक पाते हैं और वसु जो गन्धर्वों के राजा हैं सर्व गन्धर्वों सहित शिवजी की सेवाकर और शिवजीका मन्त्र जप शिवजीकी स्तुति किया करते हैं कि हे ईश, शंकर, सर्व मनुष्योंके राजा ! आपकी सेवा ब्रह्मा और विष्णु भी करते हैं वेद पुराण शेष और शारदा आपका यश बखान अतिआनन्द पाते हैं तुम्हारी महिमा अप्रमेय है जिसका अन्त देवता मुनिआदि कुछ भी नहीं पाते पर आपकी कृपासे एक मूर्ख और नीच

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनुष्यभी उसको जान लेताहै चौथा विद्याधरलोक है जो गन्धर्वलोक से ऊपर है और वहां हरप्रकार का धन भरपूर है वहांके विद्याधर सर्व प्रकारकी विद्याओं को जानते हैं और वे अतिनिर्दोष और महापवित्र हैं जो मनुष्य कि ऐसे मनुष्योंको जो शास्त्र की आज्ञानुसार ऐसे हैं कि उनको विद्या की शिक्षा देना उचित है और उनको उत्तम द्रव्य देकर विद्या पढ़ाते हैं वही मनुष्य इस विद्याधरलोक में स्थित होते हैं जिनको कोई मनुष्य कुछ भय नहीं देसक्ता और चित्रगुप्त जो सब विद्याधरों के राजा हैं सब विद्याधरों सहित शिवकी पूजा करके शिवका पञ्चाक्षरी मन्त्र जपते हैं और यह शिवकी उत्तम स्तुति पढ़ते हैं कि हे गिरीश, सदाशिव, परब्रह्म, जगदीश, संसारके उपजानेवाले, पापों से शुद्ध, अविनाशी, गिरिजापति, अपने भक्तों के पार करनेवाले ! तुम अपने तीनगुण से संसार को उपजाते पालते और मारते हो और तुम सती-पति हो आपकी महिमा सूक्ष्मतर है और तुम मन वचन और कर्म से तीनों लोकों में विचरते हो पांचवां सिद्धलोक विद्याधरलोक से ऊपर है जो मनुष्य कि दृढ़तापूर्वक धर्म करते हैं वही लोग वहां जाकर रहते हैं और वहां सदाशिवजीकी पूजाकर शिवका मन्त्र जपतेहैं और शिव की विनयपूर्वक स्तुति करते हैं कि हे महाराज ! आप परमहंसरूप धारकर अपना वेष भूतोंकासा रखते हो पर जो मनुष्य जिस वस्तु की इच्छा करता है उसको आप वही कृपा करते हैं आप अपने शरीरको केवल भस्म से सुशोभित करतेहो और अपने भक्तोंको रत्न और माणि आदि देते हो और अपने कण्ठ में केवल हलाहल और सर्पोंकी सेली रखते हो और अपने भक्तोंको रत्नोंकी माला पहिनाते हो हे शंकर ! आपका वेष बहुत बांका है आप हरप्रकार अपने भक्तों से प्रीति करते हो छठा अप्सरालोक सिद्धलोक से ऊपर है यह लोक अतिभोगवि-लास का स्थान है और वहां रम्भादि साठि हज़ार अप्सरा रहती हैं

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वे नाचने और गाने में अतिचतुर हैं और वह बड़ी बुद्धिमती धर्म से सुशोभित देवताओंके समानहैं और मानों कामशास्त्रकी खानि हैं यह अप्सरा क्षीरसागरके मथनेके समय अतिसुन्दरतासे प्रकट हुई थीं और जिसको देखतेहुये सबदेवता और मुनि बुद्धि से रहित हो मोहित होगये थे और ये अप्सरा इन्द्र की सदा सहायता किया करती हैं क्योंकि योगी यती और तपस्वियों के लिये यही अप्सरा भेजी जाती हैं कि उनके तप में विघ्न डालें क्योंकि कामदेव रसके बढ़ानेवाला और ज्ञानमार्ग का भ्रष्ट और न्यून करनेवाला है ये सब अप्सरा रति के समान भोगविलास करती हैं सो जो स्त्रियां धर्मपूर्वक पातिव्रत धर्म को बचाती हैं वह स्त्रियां इसलोक में पहुँचकर भोगविलास करती हैं सातवां राहुलोक है जो अप्सरालोक के ऊपर है जहां सिंहिका का पुत्र राहु रहताहै और राहुलोकके नीचे दशसहस्र योजन सूर्य हैं जब देवताओंको अमृत बांटा जाता था तब विष्णु भगवान् ने राहुका शिर काटडाला था और जब कि राहुने कठिन तप किया तो शिवने उसको ग्रह बना दिया सो राहु ग्रहका नाम निर्भय हो देवताओं के समान आकाश पर विराजमान हुआ और शिर कटजानेका स्मरण कर सूर्य चन्द्रमाके साथ शत्रुता की और उसने बदलालेनेको बड़े २ उपाय किये सूर्यका मण्डल लम्बाई में दशसहस्र योजन है और चन्द्रमण्डल बारहसहस्र और राहुमण्डल तेरहहज़ार योजन लम्बा है सो समय पाकर राहु सूर्य और चन्द्रमा को घेरलेता है और तेजपूर्वक सब देवताओं को डाट डपट बताता है निदान विष्णु भगवान् अपना चक्र भेजते हैं जिसके देखने से राहुको आश्चर्य होताहै संसार में ऐसे समयको ग्रहण कहते हैं और मनुष्य ऐसे समय में थोड़ा दानधर्म करके बड़ा पुण्य पाते हैं यह हमने आठवें राहु ग्रहका संक्षेप वृत्तान्त वर्णन किया अब हम राहुका विस्तारपूर्वक वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह क्योंकर आठवें ग्रह के नाम से प्रसिद्ध हुआ जब विष्णु भगवान् ने राहुका शिर काटडाला तब राहु वहांसे भागकर हरप्रकार शिवका तप करने लगा और बड़ा कठिन तप किया और हरप्रकार शिवके चरणों में प्रेम बढ़ाया सो ऐसे कठिन तपसे सदाशिवजी प्रकट हुये और फिर दर्शन देनेके उपरान्त उसको ग्रह बनाया और उसी दिनसे राहु अपने लोक में स्थित रहकर शिवकी सेवा किया करता है और अत्यन्त प्रेमसे शिवकी स्तुति करता है और हे ईश, अविनाशी, महेश! अपने भक्तों को अतिप्रसन्नता देनेवाले और दुःख दूर करने वाले हैं मेरा केवल यह मनोरथ है कि मुझको अपने चरणोंकी भक्ति कृपा करो यह भुवर्लोक का वर्णन उपलोकसहित है जो हमने वर्णन किया॥

बारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे नारद! भुवर्लोक के ऊपर स्वर्लोक है जिसके मन्दिरों की प्रशंसा वर्णन नहीं करसक्ते और स्वर्लोक में उपलोकभी बहुत हैं जो मानों आनन्द की खानि हैं और स्वर्लोक की सीमा सूर्य-मण्डल से ध्रुवलोकतक गिनीजाती है और ब्रह्माण्ड के बीचमें सूर्य जाकर प्रकाश करते हैं और अतिप्रसन्नता से तीनों लोकोंको प्रकाश-मान करते हैं और सूर्यकी गति तीनप्रकार की हैं अर्थात् शीघ्र मध्य और सम जिनके यह नाम हैं पहिली उत्तरायण दूसरी दक्षिणायन तीसरी बिषुवत् जिससे छः ऋतु और द्वादश मास प्रकट होते हैं और लोकप्रकाशक सूर्य का रथ केवल एक पहिये का है और उनका एक नेत्र मेरु के मस्तकपर पड़ता है और दूसरा मानसोत्तर के मस्तकपर और कोल्हू के समान जिसके द्वारा तेल बनायाजाता है वैसा चारों ओर रथ घूमता है और सूर्यके घोड़ों का नाम छन्द है और सूतका नाम अरुण है और साठिहज़ार बालखिल्य ऋषि जिनका डील

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंगुष्ठ के प्रमाण है जो सूर्यके रथके आगे २ वेद उच्चस्वर से पढ़तेहुये और सूर्य का यश गातेहुये चलते हैं सिवाय इसके और भी ऋषि और नागादि और सप्तऋषि सूर्य की सेवा में तत्पर रहते हैं और सप्त ऋषि हरमास में सूर्य की सेवासे बदलते हैं और दूसरे नाम के सप्तऋषि उनके बदले तत्पर होते हैं और रथकी लम्बाई जिसमें सूर्य चढ़ते हैं नव हजार योजन है और सूर्यका लोक एक लक्ष योजन ऊंचा है जहां सूर्य स्थित होकर शिवकी पूजासे तीनों लोक को अतिआनन्द कृपा करते हैं और जिस तरह कि सूर्य ने तप करके ऐसी पदवी पाई है संक्षेप से उसकी कथा यह है कि हमारे पुत्र मरीचि जो बड़े ज्ञानी हैं उनके कश्यप उपजे और कश्यपने गृहस्थधर्म अङ्गीकार कर तेरह कन्या दक्षप्रजापति की विवाहीं उन तेरह स्त्रियोंमें से जिनका अदिति नाम था उनके उदर से बारह लड़के उपजे तिनमें एक लड़का जिनका नाम सूर्य है वे काशी में तप करने के उद्योग से गये और उन्होंने बहुत वर्षोंतक अतिकठिन तप किया सो सदाशिव अतिप्रसन्न होकर वर देने को सूर्य के पास आये और कहा "वरम्ब्रूहि" यह सदाशिवका वचन सुन सूर्यने अपने नेत्र खोले और देखा कि शीश में गङ्गा की धारा बह रही है और चन्द्रमा भाल में साठिहजार कलासे प्रकाशित है और कण्ठ में हलाहल विराजमान है और चार भुजाके साथ छाती अतिसुन्दरता से शोभायमान है और मुखकमल महा- प्रकाशमान है उदर में त्रिवली कटि अतिसुन्दर दोनों जङ्घा केले के खम्भा के सदृश हैं और पिंडुलियां सब दुःख दूर किये देती हैं और सबसे अधिक चरणकमल की झलक मनको लोभाती है जिनके नख नवीन चन्द्रवत् विराजमान हैं सूर्यने ऐसा स्वरूप सदाशिवका देखा और अतिप्रेमसे प्रणाम के उपरान्त अपनी सामर्थ्य के अनुकूल यह स्तुति की कि हे देव, सदाशिव ! हमारे स्वामी आप घट २ व्यापक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और अन्तर्यामी हैं आपकी अप्रमेय महिमा देवता और मुनि आदि वर्णन करके थकजाते हैं पर उसका अन्त नहीं पाते आप परब्रह्म शरीररहित और माया से परे हैं पर तौभी चरित्र करनेके लिये शरीर धार अवतार लेते हैं आपके असंख्य नाम जैसे शिव और परमपुरुष और पुरातन व ईशादि हैं और ब्रह्मा और विष्णु और हर जो तीनों गुण हैं ऐसे २ आपके असंख्य स्वरूप हैं जो दुःखों को दूर करते हैं आपका राज्य तीनों लोक में प्रकट है और वेद व पुराणों में उसका वर्णन है इस स्तुति करने के अनन्तर अतिप्रेमसे सूर्य ने दोनों हाथ बांध बिनती की कि महाराज ! मैं अपनी भाग्य की सराहना करता हूं और मैं धन्य हूं क्योंकि आपने शरीर धार अपने दर्शन से मुझे प्रतिष्ठित किया वेदने सर्वश्रेष्ठ मनोरथों पर आपके दर्शनको सर्वोपरि वर्णन किया है मुझे इच्छा है कि मैं प्रतिदिन आपकी सेवा किया करूं क्योंकि मुझको संसार में इससे अधिक और कौन वरदान लेना चाहिये कि आप हमारे सामने खड़े हैं यह कह सूर्य चुप होरहे और सदाशिव ने अतिप्रसन्न हो विना सूर्यके मांगे यह वर दिया कि हे सूर्य ! तुम बड़े तेज और प्रकाशकी खानि होकर जीवोंके कर्मके साक्षी होगे और हर प्रकार अपने भक्तोंको आनन्द देते रहोगे और अपने सेवक के सर्व रोग नष्ट करके उसको मुक्त करोगे और भुवर्लोकके ऊपर हमने तुम्हारा लोक नियत किया वहां तुम स्थित रहकर तीनों लोकमें भ्रमण करो इस प्रकारका वर सदाशिव सूर्य को दे आप अन्तर्धान होगये और सूर्य अतिप्रसन्न हो प्रणाम के उपरान्त अपने घर आये और अपने लोक में स्थित होकर शिवकी सेवा किया करते हैं जो मनुष्य सूर्यका व्रत करते हैं व सूर्यका तप और यज्ञादि करते हैं वे सूर्यलोक में जाकर परमसुख पाते हैं यह सूर्यलोक का संक्षेप में वृत्तान्त है जहां मनुष्य उनके ध्यानसे पहुँचसक्ता है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तेरहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि, हे नारद! सूर्यलोकका वृत्तान्त ऊपर होचुका अब हम चन्द्रलोकका वर्णन करते हैं यह चन्द्रलोक सूर्यलोक से एक लाख योजन ऊपर है जहां बड़े धर्मात्मा और पुण्यवान् और शुभ मनुष्य जाकर बड़ा सुख उठाते हैं और वहांपर दुःख और चिन्ता नहीं हैं वहां मनुष्य यह अमृत जो चन्द्रमा की किरणोंसे टपकता है पीकर अतिआनन्द पाता है और फिर किसी प्रकार का दुःख उस मनुष्य के निकट नहीं आता यह चन्द्रलोक आनन्द की खानि असंख्य दुःखों का दूर करनेवाला और सर्वमनोरथों के पूरने का स्थान है वहां स्त्रियों के साथ मैथुन करने के लिये सब कुछ सामग्री है वहां चन्द्रमा राजा हैं और जिस प्रकार कि चन्द्रमाने इतना बड़ा लोक पाया वह कथा हम तुमको सुनाते हैं कि अत्रि जो हमारे मनसे उपजे और जो बड़े बुद्धिमान् शीलवान् तेजस्वी प्रसिद्ध हैं उन्होंने अनसूया के साथ जो कर्दम मुनि की कन्या है अपना विवाह किया और हमारी आज्ञा पा अत्रि अनसूया सहित ऋक्षकुलागिरिपर जाकर नर्मदानदी के तट पर स्थित हुये और उन्होंने श्वास रोंक कठिन तप किया यद्यपि इस प्रकार सौ वर्ष बीत गये पर तो भी अत्रि का मन तप के ऊपर और अधिक लगारहा और एक पांव से खड़ेहो खाना पीना सब छोंड़दिया और यह मनोरथ मन में ठाना कि जो कोई मनुष्य जगदीश है हम उसकी शरणागत हैं और इच्छा करते हैं कि ऐसा मनुष्य हमको एक पुत्र कृपाकरे जो उस मनुष्यके समान हो और जब कि ऐसा कठिन तप करतेहुये अत्रि को एक समय बीतगया तो अत्रिमुनि के शीश से एक अग्नि की ज्वाला बाहर निकली और सर्वमनुष्य जलने लगे और देवता, मुनि और मनुष्य सब विकल हो हमारे शरण में गये और विनय की कि महाराज! सब मनुष्य जले जाते हैं इसका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कारण क्या है आप कृपा करें कि यह तप दूर होजावे यह बात सुन कर हम देवताओं सहित विष्णु भगवान् के समीप गये और प्रणाम के उपरान्त विष्णुकी स्तुतिकर सर्ववृत्तान्त कहा सो ऐसे वृत्तान्त के सुननेसे विष्णु आश्चर्य कर सब देवताओं समेत शिवके समीप गये और सब हाल वर्णन किया गया शिव बोले कि तुम कुछ संदेह मत करो अत्रिमुनि तप कररहे हैं और योग करके पवन जीत प्राणायाम कियेहुये ध्यानमें बैठेहुये हैं यह कहा और शिव हम और विष्णु समेत सब देवताओं को साथ लियेहुये अत्रिमुनि के तपस्थल में गये और बैल और हंस और गरुड़ अपने २ मुख्य वाहनपर आरूढ़ शस्त्र बांधे हम तीनों देवता पहिंचाने जाते थे और हम तीनोंने अत्रिमुनि से मुसुकरातेहुये एकही साथ "वरम्ब्रूहि" कहा कि तुम्हारा यह तप पूर्ण होगया तुम्हारे समान तीनों लोक में और किसीने ऐसा कठिन तप नहीं किया यह तीनों देवताओं का वचन सुन अत्रिमुनि ने अपना शीश झुका हाथ जोड़ विनयकी कि मुझे एक बड़ा यह संदेह उपजाहै कि तुम तीनों देवता एकही साथ प्रकट हुये हमने तो केवल एकही देव का तप कियाथा फिर क्या कारण है कि तुम तीनों देवता आये हो प्रथम कारण कहकर फिर वर देवें यह बात सुन तीनों देवता अतिप्रसन्नतासे बोले कि हम तीनों यह बात तुम्हारी इच्छासे विरुद्ध नहीं की बरन जैसी तुमने इच्छा की वही तुमको दियागया क्योंकि हम तीनों जगदीश कहलाते हैं और हम तीनों में कुछ भेद नहीं है यही कारण है कि हम तीनों देवता तुम्हारे पास आये हैं और हम तुम्हारे तपसे अतिप्रसन्न हैं और तुमने सन्तानकी प्राप्ति के निमित्त यह तप किया था सो तुम्हारे तीन पुत्र हम तीनों के अंश से उपजेंगे जो तीनों लोक में प्रसिद्ध होकर अपने माता पिताके यश को बढ़ावेंगे यह वर देकर तीनों देवता अपने २ लोक को चलेगये और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अत्रिमुनिभी अपने घरमें जाकर अतिप्रसन्न हो रहनेलगे क्योंकि जब उनको यह बात स्मरण होती थी तो वे फूले नहीं समाते थे सो समय पाकर तीनों देवता अत्रिके घरमें उपजे तब आकाशसे पुष्पोंकी वर्षा हुई और बाजे बजाये गये और सर्वसंसार और सृष्टिने उससमय क्या क्या आनन्द नहीं पाया हमारे अंशसे चन्द्रमा उपजे और विष्णुके अंश से दत्त और शिवके अंशसे दुर्वासा उपजे इस जगह हम केवल चन्द्रमाका चरित्र वर्णन करतेहैं कि चन्द्रमा तपकी इच्छासे काशीमें गये और वहां सदाशिव के चरणों का ध्यान कर कठिन तप करनेलगे सो शिवजी प्रसन्न हो चन्द्रमा के सामने खड़ेहुये सो चन्द्रमाने शिवको देखा और दण्डवत् के उपरान्त स्तुति की और शिवने स्तुति सुन चन्द्रमा को वर देकर सूर्यलोक के ऊपर उनको एक लोक कृपा किया पहिले सब ब्राह्मणोंका राजा बनाया सो चन्द्रमा ऐसा लोक पाकर सदाशिवकी स्तुति किया करते हैं कि हे शंकर! आप तीनों लोक के स्वामी और अन्तर्यामी हैं आपके समान दूसरा कोई देवता नहीं है आपकी सेवा ब्रह्मा विष्णु आदि करते हैं आपने भक्तोंके लिये बहुत अवतार धारण किये हैं देखो रामचन्द्र के लिये तुमने हनुमान् का अवतार लिया और कामरूपकी कामना पूरी की और गुणनिधि और चन्द्रसेन को अपना करलिया आपने असंख्य अधमों को तार दिया है और बहुत भक्तों की रक्षा की और बहुत भक्तों की इच्छा पूर्ण की और बहुत भक्तों को आवागमन से छुड़ाया यह चन्द्रलोक एक लाख योजन सूर्यलोक से ऊपर है जहां मनुष्य जाकर दुःखों से बचा रहता है अब हम उडुगणों का वृत्तान्त वर्णन करते हैं जो अतिप्रकाशमान विदित होते हैं जहां अश्विनी आदि नक्षत्र हैं वे सब शिवकी सेवा तन मन से करते हैं यह उडुगणलोक तीन लाख योजन चन्द्रलोक से ऊपर है जिस तरह कि लोक नक्षत्रोंने पाया उसकी कथा इस तरह पर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है कि दक्षप्रजापति से साठि कन्या उत्पन्न हुई उनमें से अश्विनी और रेवती आदि सत्ताईस कन्या काशीपुरी में जाकर अतिकठिन तप करने लगीं इस इच्छासे कि हम सब शिवको अपना पति बनावेंगी सो शिवजी ऐसा प्रेम अश्विनी आदिका देख वरदेने को गये और "वरम्ब्रूहि" कहा ऐसे वचन जो अमृतसे कम न थे अश्विनी आदिने सुन कर अतिप्रेमसे हाथ बांधकर प्रणामके अनन्तर यह स्तुति की कि हे देव, शंकर! आपदाओंके निवारण करनेवाले और सबके निर्दोष पति तीनों लोक से भिन्न और तीनों लोकमें मिले हुये हैं और आप अपने भक्तों को आनन्द देते हैं हमारी इच्छा है कि आप हमारे ऊपर कृपा करके हमारे पति होवें यह वचन सुन सदाशिव ने कहा कि हमने तुमको चन्द्रलोक के ऊपर एक लोक रहनेको दिया और हमारे आठ स्वरूप हैं जो तीनों लोक के कारण और सबके उपकारी प्रसिद्ध हैं उनमें से चन्द्रमा कि वह भी हमारा रूप है सो तुम्हारा पति होगा और तुम अपने लोक में स्थित होकर चन्द्रमा के साथ भलीभांति विहार करो और जो कि तुम सबने हमारा तप पुरुषों के समान किया है इससे तुम्हारा नाम पुरुषों के समान प्रसिद्ध होगा यह कह शिव अन्तर्धान होगये और वे भी दक्षप्रजापति के घरमें पहुँचीं और दक्ष प्रजापति ने शिवका वर जान उन सबको चन्द्रमा के साथ विवाह दिया और उन सबको ऐसे पति के मिलनेसे अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई और बारह राशि होकर चन्द्रमा को बड़ा आनन्द दिया और शिवकी सेवा कर शिवका नाम जपनेके उपरान्त शिवके सामने स्तुति किया करते हैं कि हे ईश, गिरीश, महेश! आप सब जीवोंमें प्रकट हैं और सबसे श्रेष्ठ हैं और देवताओंके देवता हैं और अन्यायियों के लिये बड़े भयंकर हैं और आप भूतनाथ और संसारके प्रलय करनेवाले हैं और यह सबनाम सदाशिवके हैं हे चन्द्रचूड़! हे मृड! हे धूर्जटे! हे तारक!

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हे शूलपाणि ! हे त्रिपुरनाशक ! हे शम्भु ! हे गिरिजापति ! हे भक्त-मनोरथपूरक ! हे वामदेव ! हे असितकण्ठ ! हे सनातन ! हे काम-नाशक ! हे त्र्यम्बक ! हे परब्रह्म ! हे परमात्मा ! हे नाथ ! आपके गुणों के गीत वेद गातेहैं हम पर ऐसी कृपा करो कि किसी समय में हम पाप न करें और रात्रि दिन आपकी भक्ति अधिक होती रहै और आपकी सेवा हरप्रकार करतेरहैं क्योंकि हमने इस बातको भलीभांति समझ लिया है कि आपके विरुद्ध होकर फिर कुछ आनन्द नहीं हो-सक्ता हे नारद ! यह संक्षेप वृत्तान्त उडुगणलोक का है ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि, हे नारद ! उडुगणलोकके ऊपर शुक्र का लोक है जो उडुगणलोक से दो लक्ष योजन ऊंचा और शुक्र सूर्यके आगे और पीछे एकही साथ चलते हैं और उनका आगे और पीछे होजाना सूर्यकी गतिपर घटित है और जो मनुष्य कि संसार में काव्य करते हैं वही लोग शुक्रलोक में प्रवेश कर नानाप्रकार के आनन्द प्राप्त करते हैं वहां दुःखका लेशभी नहीं है यह शुक्र हमारे पुत्र भृगुसे उपजे और काशी में जाकर शिवका तप करने लगे और बहुत प्रकार के पुष्प शिवजी के लिङ्गपर चढ़ाये यद्यपि बहुत समयतक शुक्रने तप किया पर वर न पाया तब शुक्र केवल एक चरणसे खड़े होकर शिवजी के ध्यानमें स्थितरहे और पूरक के उपाय से अपना श्वास ऊपर खींच ध्यान और योग किया सो एक समय तक शुक्रजी इसीतरह खड़े रहे शुक्रजी के ऐसे तप से फिर शिव अपने स्थान पर स्थित न रहसके वे तुरन्त वर देनेके लिये शुक्रके समीप गये और मुखसे "वरम्ब्रूहि" कहा पर शुक्रने ध्यानके कारण यह वचन न सुना तब सदाशिवने अपनी मूर्ति शुक्रके मनसे खींचली जिससे शुक्रने अति विकल होकर अपनी आंखें खोलदीं और सदाशिवजीको अपने आगे खड़ा देखकर

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अति प्रेमसे प्रणामके उपरान्त यह स्तुति की कि हे गिरीश, महाप्रभु! हमारे ऊपर कृपा करो आप सबपर निर्दोष मृत्यु से परे और मृत्युके भी मृत्यु और संसारके नष्ट करनेवाले और तीनों लोकके भेद जाननेवाले हैं और संसार के प्यारे और शुद्ध और तीनों लोक के पालन करनेवाले और अपने भक्तों के कृतार्थ करनेवाले और हरप्रकार के दुःखों के दूर करनेवाले हैं इस स्तुति के करने के अनन्तर शुक्र चुप होगये शिवजी ने "वरम्ब्रूहि" कहा तब शुक्रने विनय की कि हम आपकी शरण में हैं हमको मृत्युंजयमन्त्र दीजिये सिवाय इसके और जो उचित है वह कृपा कीजिये यह सुन शिवजी बोले कि यही होगा और तुम उडु-गणलोक के ऊपर जो लोक है वहां जाकर स्थित रहो और दैत्यों के पुरोहित होकर मृत्युंजयमन्त्र की सहायता से प्रसन्न बने रहो यह वर देकर शिव अन्तर्धान होगये और शुक्रभी सदाशिवकी आज्ञानुकूल उसी लोक में जो शिवजीने दिया था जाकर रात्रि दिवस शिवजी की सेवामें लगे रहे अब हम बुधलोक का वर्णन करते हैं कि बुधलोक शुक्रलोक से दो लक्ष योजन ऊपर है वह लोक आनन्द की खानि और सुन्दर विचित्र मन्दिरों से सुशोभित जिनमें अद्वितीय रत्नजटित हैं वर्तमान है वहां बुध विराजमान हैं उनकी कथा इस भांति की है कि चन्द्रमा तीनों लोक में बड़ाई पाकर कामदेवकी अहंकार की बुद्धि से भ्रष्ट हुये क्योंकि ऐसा मनुष्य संसार में कौन है जो प्रभुत्व पाकर अहं-कार से बचाहुआ रहे सो चन्द्रमाने बृहस्पति अपने गुरु की स्त्री को भगाकर अपने घरमें रक्खा यद्यपि बृहस्पति ने अपनी स्त्रीको उनसे मांगा पर चन्द्रमाने न माना निदान बृहस्पति सदाशिवजी की शरण में गये और सब दैत्य चन्द्रमा के पक्ष पर खड़ेहुये और तारकासुर के समान बड़ा युद्ध हुआ जिससे तीनों लोक में हाहाकार होगया निदान सदाशिवजीने अतिक्रोध से अपना त्रिशूल उठालिया तब

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम और विष्णुने चन्द्रमा के पास जाकर उसको समझा बुझा तारा को शिवजीकी शरण में लेगये और बृहस्पति को तारा देदी और शिवजी का क्रोध दूर करदिया जब बृहस्पति ने तारा को गर्भवती देखा तब अतिक्रोध से कहा कि हे तारा ! अपना गर्भ तुरन्त गिरादो नहीं तो हम तुमको जलाकर भस्म करडालेंगे सो ताराने गर्भ गिरा दिया और जब कि उससे अतिसुन्दर पुत्र उपजा तो बृहस्पति और चन्द्रमा दोनोंने उसको लेना चाहा इस बात पर दोनों में बड़ा झगड़ा हुआ बृहस्पति कहते थे कि यह हमारा पुत्र है और चन्द्रमा का वचन था कि हम इसके पिता हैं निदान इस बातका निर्णय तारा पर घटित किया गया पर तारा ने लज्जावश कुछ न कहा निदान हमने तारा से पूछा तो ताराने कहा कि यह चन्द्रमा का पुत्र है इस बातके सुनतेही तुरन्त चन्द्रमा ने बहुतसा दान देकर लड़के को उठा लिया और हमने उस लड़के को बुद्धिमान् पा उसका नाम बुध रक्खा और बुध काशीजी में जाकर बड़ा तप करने लगे तब शिवरानीने शिवजी से कहा कि इस लड़के को वरदान दो सदाशिवने बुधके पास जाकर कहा कि जो तुझे चाहिये वरदान मांग ले यह वचन सुनकर बुधने बिनती की कि हे अनाथों के नाथ ! हम धन्य हैं कि आपने हम पर कृपा करके हमको अपने दर्शनसे कृतार्थ किया इससे अधिक और कौन वर है जिसको हम मांगें जो आप प्रसन्न हैं तो जो आपकी इच्छा हो वह दीजिये यह बुध का वचन सुनिकै शिव को बहुत भाया और अतिप्रसन्न होकर बुध को ग्रहका पद दे दिया और अपना डमरू भी बजा दिया जिसको सुनकर सब देवतादिक आये और बुध की प्रशंसा करने लगे और सूर्य और चन्द्रमाने दो राशि बुध को दीं और सदाशिवने उसको एक लोक दिया इसके उपरान्त शिव अन्तर्धान होगये और बुध भी अपने लोक में पहुँचकर सुशोभित हुये वे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सदाशिवकी सेवा बहुत प्रेमसे किया करते हैं इस लोक में वे मनुष्य जातेहैं जो बड़े बुद्धिमान् होते हैं अब हम भौमलोकका वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि बुधलोक के ऊपर भौमलोक दो लाख योजन ऊंचा है वहां मङ्गल ग्रह स्थित रहते हैं जो तीन पक्ष पर्यन्त एकही राशि में रहते हैं उनकी कथा इस तरह पर है कि जब सती यज्ञ में गई और अपनी अप्रतिष्ठा देख उसने अपने प्राण छोड़ दिये तब शिवजी भी दक्षके यज्ञ विध्वंस करने के अनन्तर सर्वस्व त्याग सतीके वियोग में मौन होकर बैठरहे और अपनी श्वास चढ़ाय कठिन तप करने लगे जब बहुतसमय के उपरान्त शिवजी ने अपना श्वास उतारा तब शिवजी के भालसे एक बिन्दु पसीने का पृथ्वीमें गिरा जिससे तुरन्त एक पुत्र उपजा जिसका रङ्ग कुन्दुरूके फलके समान रक्त था उस समय पृथ्वी स्त्री का रूप धार वहां आई और लड़के को अपनी छातियों से दूध पिलाने लगी यह चरित्र देख शिव अतिप्रसन्नता से हँसे और कहा कि हे पृथ्वी ! यह लड़का हमारा है पर जो कि तुमने इसको दूध पिलाया इससे यह लड़का अब तुमको दिया जाता है यह सुनकर और ऐसा बालक पाकर पृथ्वीने अतिप्रसन्न हो लड़के को लेलिया और शिवजी की बड़ी स्तुति की सो अवसर पाकर भौम काशी में गये और अपने कठिन तपसे शिवजी को प्रसन्न किया और सदाशिवजीने भौमके समीप जाकर उनको दर्शन दिया भौम ने शिवको देखा और स्तुति की कि हे जगदीश ! हम पर कृपा करके हमारा हाथ पकड़ो आपके चरित्र अतिसूक्ष्म हैं जिनको वेद भी वर्णन नहीं करसक्ते हैं और ब्रह्मा और शेषभी वर्णन करके पार नहीं पाते यह सुनकर शिव बोले कि हे भौम ! तुम हमको बहुत प्यारे हो हम तुमको तीसरा ग्रह नियत करते हैं और बुधलोक के ऊपर तुम्हारा लोक रहेगा तुम वहां जाकर निर्दोष हो स्थित होजाओ यह कह शिवजी अन्तर्धान होगये और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भौम अपने लोक में जाकर आनन्दसे शिवकी सेवा करनेलगे और उनका यश रात्रि दिन गाया करते हैं वहांके निवासी रात्रि दिन आनन्द उठाते हैं इस लोक के मन्दिर अतिसुन्दर जिनमें विचित्र रत्नजटित अत्यन्त शोभा देरहे हैं और जिस तरह कि बृहस्पति ने अपना लोक पाया वह कथा इस तरह पर है कि बृहस्पति आङ्गिरस से उपजे और आङ्गिरस हमसे उत्पन्न हुये सो बृहस्पतिने काशीमें जाकर बड़ा कठिन तप किया सो ऐसा घोर तप देख सदाशिव प्रसन्न होकर वरदान देनेको बृहस्पति के पास आये और मुखसे 'वरंब्रूहि' वचन कहा पर बृहस्पतिने गूढ़ ध्यान के कारण इस वाक्य को न सुना पर जब कि सदाशिवने अपना रूप बृहस्पति के मनसे निकाल लिया तो बृहस्पति ने चिन्तित होकर अपने नेत्र खोलदिये और देखा कि वही स्वरूप जिसका मैं ध्यान करता था आगे खड़ा है सो बृहस्पतिने प्रणाम के उपरान्त स्तुति की शिवने कहा कि तुम सब देवताओं के गुरु होगे और देवपुरोहित होकर आचार्यके नामसे प्रसिद्ध होगे और भौमलोकसे जो ऊपर का लोक है उसमें रहोगे यह वर देकर शिवजी अन्तर्धान होगये और बृहस्पति भी अपने लोकमें जाकर देवताओं के गुरु हुये अब हम शनैश्चर के लोक का वर्णन करते हैं जहां मनुष्य जाकर बड़ा आनन्द उठाता है और वहां सूर्यके पुत्र शनैश्चर स्थित रहकर शिवकी यह स्तुति करते हैं कि हे नाथ! आप परमगति के देनेवाले हैं और आप दीनदयालु हैं और जो मन वचन और कर्म से आपकी सेवा करते हैं आप उनके अधीन हैं और आपके समान आपही हैं इस प्रकार शनैश्चर शिव की बहुत स्तुति कर रात्रि दिन आनन्द में रहाकरते हैं और एकराशि में ढाई वर्षतक रहते हैं क्योंकि इनकी चाल बहुतही धीरी है और हरजगह पर अटकते और ठहरते हुये चलते हैं इसी तरह वे बारहों राशि में भ्रमण करते हैं और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिसकी ओर देख देतेहैं उसको बड़ा दुःख मिलताहै और जिसकारण शनैश्चरने यह लोक पाया वह यह है कि सूर्य जो कश्यप के पुत्र हैं उनकी स्त्री छायासे शनैश्चर उपजे जो शनैश्चर ऊपरको दृष्टि करें तो सम्पूर्ण सृष्टि नष्ट होजावे इससे शनैश्चर सदा शिर झुकाये अपना मुख देखा करते हैं कि किसी पर दृष्टि न पड़े निदान शनैश्चरने काशीमें जाकर बड़ा कठिन तप किया जब इस प्रकार उनका बहुत समय बीता तो सदाशिवने प्रसन्न हो दर्शन दे उन्हें यह वरदिया कि बृहस्पति के लोकसे ऊपर जो लोक है वहां तुम जाकर रहो यह वरदान देकर शिवजी अन्तर्धान हुये और शनैश्चर भी सदाशिवजी के कृपा किये हुये लोक में जाकर शिवजीकी सेवा और स्तुति में प्रवृत्त रहे और वह सदा यह स्तुति करते हैं कि हे परब्रह्म, परमेश्वर, अनादि, तीन लोकके पालनेवाले! आप मायासे परे व सबसे श्रेष्ठ अविनाशी पुरुष हैं और सदा अवतार धारणकर अपने भक्तों को मुक्ति देते हैं॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शनैश्चरलोक के ऊपर ऋषिलोक है जहां हमारे सात पुत्र सप्तऋषि के नाम से प्रसिद्ध हैं वे सदाशिव जीकी यह स्तुति किया करते हैं कि हे परब्रह्म, परमेश्वर, दीनानाथ, महेश! हमको अपना सेवक जानकर हम पर कृपा करो आप मख-पति हैं और मखहीका रूप होकर मखके रक्षक हैं और मखके श्रेष्ठ करनेवाले हैं और आपकी सामग्री अति आश्चर्यदायक है और आपकी लीला जो आप सगुणरूप धारण करके करते हो बड़ी आश्चर्य देनेवाली है और सिवाय सप्तर्षिके और जितने ऋषि लोग धर्मवान् होते हैं वे सब इसी लोक में स्थित होते हैं अब हम ध्रुवलोकका वर्णन करते हैं कि ध्रुवलोक तेरहलाख योजन ऊंचा है वहां बहुत सुन्दर और विचित्र मन्दिर दोषों से रहित शोभा देते हैं वहां मनुष्य जाकर बड़ा आनन्द

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उठाते हैं और वहां के भवन आठप्रकार के रत्नों आदि से सुशोभित होरहे हैं जिनमें धर्मात्मा विराजमान रहते हैं और उनकी परिक्रमा सब ग्रह, नक्षत्र, चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि, इन्द्र, धर्मराज, ब्रह्मा, कश्यप आदि करते हैं और जिस प्रकार कोई पशु किसी खम्भेसे बँधा हुआ हो और खम्भे के चारों ओर फिरै उसी प्रकार सब ज्योतिर्गण ध्रुवके चारों ओर घूमते हैं और जिस तरह कि बादल आकाश में वायुके सहारे से लटके रहते हैं और पृथ्वी में नहीं गिरते उसी तरह ग्रह भी पृथ्वी में नहीं गिरते शिवजी की आज्ञा से लटके हैं और कोई मुनि पुराण की रीति से कहते हैं कि जहांतक तारे दिखाई देते हैं वह शिशुमार चक्र में गुँधेहुये हैं और उन सबके ऊपर ध्रुव स्थित हैं हे नारद ! ध्रुव बड़े भाग्यवान् हैं जिन्होंने विष्णुकी कृपा से यह पद प्राप्त किया और शिवजीकी सेवाकर अपने रहने के स्थानको अचल करलिया उनकी कथा इस तरह पर है कि हमारे पुत्र स्वायंभुवमनु हुये जिन्होंने शतरूपासे अपना विवाह किया उनके पुत्र उत्तानपाद प्रजाके अति प्रसन्न करनेवाले राजा हुये और उत्तानपाद के दो स्त्रियां थीं एक सुरुचि दूसरी सुनीति सो ध्रुव सुनीति से उपजे एक दिन ध्रुवने अतिप्रेमसे अपने पिता की गोद में बैठने की इच्छा की पर राजाने सुरुचि अपनी दूसरी स्त्री के संकोचसे ध्रुवको अपनी गोद में न लिया और सुरुचिने अतिअहंकार से ध्रुव को कठोर वचन कहे जो तीरके समान ध्रुवके हृदय को फाड़कर पार होगये और ध्रुव रोते हुये अपनी माता के पास आये सो सुनीतिने पूछा कि तुमसे सुरुचि ने क्या कहा और जब ध्रुवने उससे सर्ववृत्तान्त कहा तो सुनीति अतिदुःखकर कहनेलगी कि सत्पुरुषों ने कहा है कि विना ईश्वरकी सेवाके किसीको आनन्द नहीं मिलता इसलिये तुमको उचित है कि ईश्वरके चरणों का ध्यान करके तप करो हमारी वही परमेश्वर सहायता करेंगे फिर उसने अपने पुत्रको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हृदयसे लगालिया ध्रुवने कहा कि तुमको कुछ चिन्ता न करनी चाहिये मैं वह पद पाऊंगा जहां कोई मनुष्य नहीं पहुँचेगा यह कहकर और अपनी माता से आज्ञा ले तप करनेको चले और मार्ग में नारद से भेंटकर आशीर्वाद पा मधुवनमें गये और वहां उन्होंने दशसहस्रवर्ष पर्यन्त तप करके सब इन्द्रियोंको जीता और एकही चरण से पृथ्वी में खड़े होकर श्वास ऊपर चढ़ाई जिससे तीनोंलोकमें पवनका चलना बन्द होगया और सब जगह प्रलयके लक्षण प्रतीत होनेलगे सो सब देवता विष्णुकी शरणमें गये और विनय की कि यह दुःख तीनों लोक में है विष्णु बोले कि तुम कुछ चिन्ता मत करो ध्रुव तप करते हैं यह कह तुरन्त वरदान देनेको चले और ध्रुव के पास जाकर 'वरम्ब्रूहि' शब्द कहा ध्रुवने अपना मनोरथ कहा और उनकी स्तुति की विष्णु तथास्तु कह ध्रुवसे बोले कि तुम काशी में जाकर इतना तप करो कि जिसमें सदाशिव प्रसन्न होवें और शिवजीसे यह वर मांगना कि जो वर हमको विष्णुने दिया है वह अचल हो और जब छत्तीस हज़ार वर्ष राज्य करलेना तब अपने लोक में जो ऋषिलोकसे भी ऊपर है चलेजाना और हम प्रतिदिन काशी में सदाशिवजीकी पूजा को जाते हैं आज तुमभी हमारे साथ चलो हम तुमसे अतिप्रसन्न हैं यह कहा और ध्रुवको साथ लेकर गरुड़पर चढ़ विष्णुजी काशी में पहुँचे और ऊपरका लिखा हुआ वर ध्रुवको फिर देकर आप मणिकर्णिका के किनारे उतरे और तीर्थ में स्नान और विश्वनाथकी पूजा प्रेमके साथ कर फिर विष्णु अपने धामको चलेगये और ध्रुवने काशी में स्थित होकर अपनी इन्द्रियां जीत शिवलिङ्ग स्थापित किया और महाकठिन तपमें लगे सो विश्वेश्वर महादेव अति प्रसन्न हो ध्रुवके सामने प्रकट हुये और कहा 'वरम्ब्रूहि' ध्रुवने प्रणाम कर यह स्तुति की कि हे ईश, नाशरहित, सबसे श्रेष्ठ, परब्रह्म, पापरहित! हमको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपना सेवक जान हमारे ऊपर कृपा करो विष्णुका वर हमारे लिये अचल होजावे यही वर हम चाहते हैं हम आपकी शरण में आये हैं यह सुनकर शिवजी बोले कि यही होगा यह कहकर शिवजी अन्तर्धान हुये और ध्रुवभी यह वर पा पहिले अपने पिताके पास गये और उत्तानपादने ध्रुवको अतिआदर से लिया और उनकी माता भी अति प्रसन्न हुई फिर राजा ध्रुवको राज्य सौंप आप वनमें तप करनेको चलेगये और ध्रुवने छत्तीसहज़ार वर्षपर्यन्त पृथ्वी का राज्य किया फिर राज्यका कार्य अपने पुत्र युवराज को सौंप आप तप में लगे जहां विष्णु के गण विष्णुकी आज्ञानुसार विमान लेकर विद्यमान हुये और ध्रुव दिव्यतनु हो विष्णुलोक को चलेगये और जो लोक कि ऋषिलोकसे भी ऊपर है वहां स्थित हुये और प्रसन्नतामें मग्न हो दुःखरहित अचलस्थित हैं और सर्व नक्षत्रगणोंके मध्यमें सब नक्षत्रोंके आधार हैं और शिवजी की यह स्तुति किया करते हैं कि हे ईश ! सब के स्वामी और सबके नाथ ! वेद आपके गुणोंके पात्र हैं आप सर्वोपरि हैं क्योंकि यह बात हमने विष्णु की सेवा करके जानी है सो ध्रुव विष्णु के भक्त शिवजीका यश गाया करते हैं और निर्भय रहते हैं यह ध्रुवलोक की कथा पूरी होगई और सुरलोक केवल उसी स्थान तक है ॥

सोलहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी ! ध्रुवलोक के ऊपर महर्लोक है जो क्षितिलोक अर्थात् पृथ्वी से एककरोड़ योजन ऊंचा और जहां किसी प्रकार का दुःख नहीं है वहांके सब भवन सुवर्ण के रत्नोंसे जड़े हुये जिनको देखकर बुद्धिमान् मनुष्यभी आश्चर्य करते हैं वहां अट्ठाईस करोड़ देवता रहते हैं जो बड़े तपस्वी और दोषों से पवित्र हैं और संसारी व्यवहार छोड़ ब्रह्मचर्यधार संसारी मनुष्यों के समान कोई कर्म नहीं करते वह शिवजी के सगुण और निर्गुण दोनों रूप की उपासना

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करते हैं और कुकर्मों की उनको इच्छा नहीं और उनके मनों में सदाशिवजी स्थित रहते हैं और पञ्चाक्षरी मन्त्र जो तारकमन्त्र कहा जाता है जपकर सोऽहंभाव में डूबेहुये हैं और सदाशिवजीके दोनों रूपके चरित्रों की लीला गाया करते हैं कि हे ब्रह्म, सनातन, ईश, परमसच्चिदानन्द ! आप सबके बीच और सबके बाहर हैं आपका यश शेष वर्णन करके थक जाते हैं आप प्रकृति और पुरुष और अलख और अनादि और परमात्मा शरीररहित हैं आप कानों बिन सुनते और बिन आँखों देखते और जिह्वा बिन सब स्वाद लेते और नाक बिना सूंघते और बिन त्वचा स्पर्श करते और हाथों विना तीनोंलोक के सर्वकार्य करते और मुख विना सब वेदोंको पढ़ते और लिङ्ग विना सृष्टि उपजाते और अन्य अङ्गों विना सर्वकार्य करते हैं ऐसे जो आप और जिनके ऐसे कार्य हैं उनको हमारा प्रणाम है और ऐसे निर्गुण स्वरूप में आप अगुण और अकर्म और अनाम हैं और आपही सगुणरूप होकर शक्तिसहित विराजमान हैं और भक्तों के मनोरथ पूरे होनेके लिये आप शरीर धारण करते हैं और तुम दोनों रूपों में बड़े विहार करते रहतेहो हमारे ऊपर अनुग्रहकर हमको संशयोंसे दूर रक्खो और रात्रि दिवस हमारे मनमें अपनी छाया रक्खो हे नारदजी ! यह पहिले पुत्र हमारे इस प्रकार की स्तुति पढ़ा करते हैं सिवाय इनके और जो कोई लोकमें बड़े तपस्वी होते हैं वह भी इस लोकमें जाकर प्रसन्न रहते हैं अब हम जनलोक का वर्णन करते हैं जो महर्लोक के ऊपर है और जो पृथ्वीसे दो करोड़योजन ऊंचा है और जहां सुवर्णके मन्दिर बहुमूल्य उत्तममुक्ता और रत्नों से जटित हैं और वहां भृगु आदि मुनि जो हरप्रकार से शुद्ध हैं स्थित होकर शिवजीकी सेवा करते हैं और पञ्चाक्षरी मन्त्र शिवजी का जप कर हाथ जोड़ अति प्रेमसे शिवजी की स्तुति पढ़ते हैं कि हे ईश, परब्रह्म, शङ्कर ! आप सब देवताओं के

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वामी हैं और आप दोषहीन और वेद और पुराणसे अलख और बुद्धिसेभी परे हैं पर तौभी आप भक्ति के वशमें हैं आप जैसा चाहते हैं वैसाही सर्वकार्य करते हैं और ब्रह्मा और विष्णु आपकी सेवा करते हैं अब हम तपलोक का वर्णन करते हैं जिसके भवन और मन्दिर रत्नोंसे बने हैं और सर्वप्रकारभी रत्नों और बहुमूल्य मुक्ताओं से बनाये गये हैं और वहां सब मन्दिरों के आठ खण्ड हैं जहां केवल वही मुनि लोग पहुँचसक्के हैं जिन्होंने छलछन्द छोड़ कठिन तप किया है यह लोक धरती से चार करोड़ योजन ऊंचा है वहां हमारे पुत्र सिद्ध निर्दोष हैं वे सब शिवजी के पूजनमें लगकर पञ्चाक्षरी मन्त्र का जप करते हैं और सनकादिक और दक्षादिक वहां शिवजीकी स्तुति गाया करते हैं कि हे गिरिजापति, स्कन्द के पिता ! आप बड़ा आनन्द कृपा करनेवाले और गिरिजाके आनन्द देनेवाले हैं हम पर अनुग्रहकर हमारे सब दुःख दूर करो और आपकी माया जो तीनों लोक की माता और आपसे उपजी है उसकी चाल ढाल निराली है तुम्हारी सेवासे विष्णुने संसारके पालनेकी सेवाका पद पाया और हमने भी ब्रह्मपदवी पाई और आपकी कृपासे शेषजी भी धरतीका भार अपने शिरपर रक्खे हुये हैं और सूर्य-चन्द्रमा-नक्षत्रगण आपही के प्रताप से उदय होते हैं और आपहीकी आज्ञा से अग्नि जलती और पवन चलती और पानी अपनी मर्यादा से नहीं बढ़ता क्योंकि जो पानी अपनी मर्यादा त्यागदे तो धरती सब डूबजावे और आकाशभी सबको अवकाश देता है यह सब आपकी कारीगरी है क्योंकि तीनों लोक आपके अधीन हैं अब हम सत्यलोकका वर्णन करते हैं जो तपलोकके ऊपर है और पृथ्वी से आठ कोटि योजन ऊंचा है वहां रोग चिन्ता और पाप तीनों प्रकार के दुःख और आधिव्याधि आदि अपना स्पर्श नहीं करसक्के हैं ऐसा सत्यलोक हमने सदाशिवजीकी सेवासे पाया है उसकी प्रशंसा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और मन्दिरों की सुन्दरता हम कहां तक वर्णन करें जो मनुष्य कि संसार में वेद पढ़ते हैं वे लोग हमारे इस सत्यलोक में प्रवेश करते हैं और जो मनुष्य कि माघमास में प्रयागजी जाकर स्नान करते हैं वे हमारे देश में आकर नाना प्रकार के भोग भोगते हैं अब हम वह कथा वर्णन करते हैं जैसे यह लोक हमने पाया सो गौरीशंकर की आज्ञानुसार उनकी कृपा से हम विष्णु की नाभिकमल से उपजे और एक समयतक इन्द्रियों को जीतेहुये शिवजी का शक्तिसहित ध्यान करते रहे ऐसा तप देख शिवजी प्रसन्न हुये और हमारे सामने प्रकट हो शक्तिसहित हमको दर्शन दिया वह सुन्दरता हम कहांतक वर्णन करें शिवजीके शीश में जटा और गङ्गाकी धारा और मस्तकमें चन्द्रमा विराजमान माथे में त्रिपुण्ड्र लगाये और कानों में सर्प लटकाये तीनों नेत्र ललाई लिये ओष्ठ कुंदुरू के समान लाल और चन्द्रमाके समान सफ़ेद उज्ज्वलमुख सुन्दर केश और कण्ठ में तीनों रेखा और सुन्दर कन्धे और चार २ भुजा जिनमें शूल और कपाल और वर अभय धारण किये हृदय में रुद्राक्ष की उत्तमोत्तम माला पहिने नाभि गम्भीर और कटि अतिसुन्दर और जांघें केलाके खम्भे के समान पिंडलियां अतिसुडौल और चरण कमलके सदृश जो हर प्रकार अपने भक्तों के दुःख दूर करनेवाले हैं और कोटिचन्द्र और सूर्य के समान प्रकाशमान शीश से चरण पर्यन्त सफ़ेद भस्म लगाये हुये जिनको देखकर शतकोटि काम लज्जित होजावें और बाईं ओर गिरिजा विराजमान जिनकी अतुलित सुन्दरता का वर्णन करना महाकठिन है ऐसे सदाशिवजी का शक्तिसहित अनूपरूप देख हमारे मनमें अतिप्रसन्नता हुई और अतिप्रेमसे हमको कुछ तन-बदन की सुधि न रही पर जब कि हमको चेत हुआ तो हमने प्रणाम किया और अतिप्रेम से स्तुति की हे जगदीश! बड़े सुखके देनेवाले वेद और पुराण सब आपका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यश गाते हैं और मन और वचन और वेद आपहीकी प्रशंसा करते हैं पर फिरभी अलख पुकारते हैं और यद्यपि शुक और सनकादि और मुनि और शेषादि आपका गुण बखानते हैं पर अन्त नहीं पाते और आप अपने भक्तों के अधीन रहते हैं क्योंकि यह बात वेद कहते हैं और आप अपने भक्तोंके निमित्त बहुत प्रकारके अवतार लेकर उनको वर देते हैं देखो तुमने हरिकेश और गुणनिधि और चन्द्रसेन और हर और पिङ्गला और वृषकेतु और सेनव्रत और श्रीकरादिको उनके प्रेमके कारण अपने लोक में स्थान दिया हम आपको ब्रह्म निर्गुण और सबसे श्रेष्ठ वर्णन करके कर्मरूप से भिन्न जानते हैं और न्याय शास्त्र आपको प्रमाणके नाम से प्रकट करता है इसी प्रकार वैशेषिक शास्त्र भी यही बात कहता है और सांख्यशास्त्र प्रकृति और पुरुष और पातञ्जलि शास्त्र आपको योग करके प्रसिद्ध करते हैं और मन्त्र यन्त्र और यामलि और डामर और पञ्चरात्र और सोम और साबर और वाम और पाशुपति और नाकुल और कपाल आदि जो मार्ग हैं वे सब आपको ईश्वर जानते हैं निदान जिस प्रकार सर्वजल का समूह सागर है उसी प्रकार जितने संसार में मार्ग हैं वे सब देखने में धारण करने पर अपने २ मनोरथ के अनुसार जाने जाते हैं और वे सब अन्त में आपही की ओर प्रेरणा करते हैं यद्यपि सर्वमत आपको हर प्रकार से वर्णन करते हैं पर आपका मुख्यरूप नहीं जानते और वेद आपको मन और वचन से न मिलनेवाला और आश्चर्यरूप वर्णन करते हैं पर वह भी कहते २ थकित होजाते हैं और अन्त नहीं पाते पर जिसके ऊपर आप कृपा करते हैं वह आपको सुगमता से जानता है और बहुतसे मनुष्य जो शास्त्रको न जानते और केवल मूर्ख थे केवल प्रेम और नियम से आपको पागये हैं और श्रीकर और बेज़ और गुणनिधि आदिने आपकी सेवाकर मुक्ति पाई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इससे विदित है कि आपकी अप्रमेय महिमा है हमको अपना सेवक जान हमपर कृपा करो यह वाक्य सुनकर शिव बोले कि हे ब्रह्मा! तुम धन्य हो और हमारे बड़े भक्त हो क्योंकि धर्म ने अपना प्रकाश तुममें किया हम तुमको वही वर देते हैं जो तुम्हारी इच्छा हो मैंने विनय की कि हमारे मनका मनोरथ पूरा होवे तब शिव हमारी इच्छा जानकर बोले कि तुमको संसार के उपजाने की शक्ति प्राप्त होगी और सब ब्रह्माण्डपर तुम्हारा लोक होगा और सर्वजीव जड़ चैतन्य तुम्हारे अधीन रहेंगे और हमारे समान तुमको ज्ञान होगा यह कह शिव अन्तर्धान होगये और हमने भी सृष्टि उपजाई और अपने लोक में स्थित रहे॥

सत्रहवां अध्याय॥

यह वृत्तान्त ब्रह्माण्ड का सुन नारद ने ब्रह्मा से कहा कि तीनों लोकका न्यूनाधिक्य वृत्तान्त मैंने सुना अब हमको यह इच्छा है कि मन्वन्तरों का हाल सुनूं ब्रह्माजी बोले कि चौदह मन्वन्तर हैं जो सर्व संसार के जगदीश प्रसिद्ध हैं पहिला स्वायम्भुव दूसरा स्वारोचिष तीसरा उत्तम चौथा तामस पांचवां रैवत छठा चाक्षुष सातवां वैवस्वत जिनका समय बीतरहा है आठवां सावर्णि नवां रुचि दशवां ब्रह्मसावर्णि ग्यारहवां वृषसावर्णि बारहवां रुद्रसावर्णि तेरहवां देवसावर्णि चौदहवां ऐन्द्रसावर्णि सो यह चौदहों मन्वन्तर हमारे एक दिनमें बीत जाते हैं और हरएक मन्वन्तर के सप्तर्षि और देवता और इन्द्र भिन्न२ हैं अर्थात् पहिले मन्वन्तरके सप्तर्षि आदि अन्य हैं और दूसरे मन्वन्तरों के दूसरे और हर एक मन्वन्तर के दश दश पुत्र हैं और यह मन्वन्तर वर्त्तमान भविष्य और गतसमय के हैं और जब कि यह चौदह मन्वन्तर बीत जाते हैं और अपना २ समय पूरा करलेते हैं तो उसको कल्प कहते हैं और इसीका नाम हमारा एकदिन है और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब कि एक चौयुगी बीतजाती है तो उसके पीछे प्रलय होजाती है और हमभी आनन्दपूर्वक सो जाते हैं अब हम हर एक मन्वन्तर के लड़कों के नाम और सप्तर्षियों और देवता और इन्द्र जो जिस मन्वन्तरके समय में स्थित होते हैं वर्णन करते हैं पहिले स्वायंभुवमनु हुये जिनके पुत्रों के यह नाम हैं अग्नीध्र १ अग्निवाह २ मेधा ३ मेधातिथि ४ वसु ५ ज्योतिष्मत ६ द्युतिमत् ७ हव्य ८ सवन ९ शुभ्र १० जो उनके समय में सप्तर्षि थे उनके यह नाम हैं मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरा ३ पुलह ४ कृतु ५ पुलस्त्य ६ वशिष्ठ ७ और उस मन्वन्तर के देवताओंका नाम याम और इन्द्रका नाम यज्ञ हुआ दूसरे स्वारोचिषमनु हुये जिनके पुत्रों का नाम हवि १ ध्रुव २ सुकृत ३ ज्योति ४ मूर्ति ५ तप ६ पृथु ७ मनस्य ८ नभ ९ सूर्य १० उनके पुत्रोंके यह नाम हैं ऊर्जस्तम्भ १ परस्तम्भ २ ऋषभ ३ वसुमत ४ ज्योतिष्मत ५ द्युतिमत् ६ रोचिषमत ७ और देवताओं का नाम लेषतषित और इन्द्र का रोचन नाम हुआ तीसरे मनुकी संज्ञा उत्तम हुई जिनके पुत्र यह हैं दक्ष १ उर्जति २ उर्ज ३ मधु ४ माधव ५ शुचि ६ शुक्रवह ७ नभस ८ नभ ९ ऋषभ १० और इस मन्वन्तर में वशिष्ठ के पुत्र जिनको उर्ज कहते हैं सप्तर्षि हैं और देवताओं को सत्यवेदश्रुत और इन्द्र को सत्यजित् बोलते हैं चौथे मनुका नाम तामस जिनके पुत्रों का नाम नीचे लिखागया है द्युतिपात १ सौतपस्य २ तप ३ तापन ४ तपरति ५ शूल ६ अकल्माष ७ धन्वी ८ खड्ग ९ महर्षि १० और उस मन्वन्तरके सप्तर्षियों के यह नाम हैं गर्ग १ पृथु २ वाग्मि ३ जन्य ४ धाता ५ कपीनु ६ कपिवास ७ और देवताओं का नाम सत्य और इन्द्रको विशिष कहते हैं और पांचवें मन्वन्तरका नाम रैवत है जिनके पुत्रोंका नाम चौथे मनुके अन्तके चार पुत्रों के समान है शेष पुत्रों के यह नाम हैं निरुत्सव ५ आरण्यप्रकाश ६

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निदेह ७ सत्य ८ चित्त ९ कृतु १० और उस मन्वन्तर में सप्तर्षियों को देववाह १ जयश्रुत २ शिर ३ कनकरोम ४ पर्जन्य ५ ऊर्ध्ववाह ६ सोमप ७ कहते हैं और देवताओंका नाम भूत और इन्द्रका नाम विभु है छठे चाक्षुषमनु हैं और जो अङ्गिरस के लड़कों के नाम हैं वही नाम इस मनुके पुत्रोंके भी हैं और गिनती में दश हैं और सप्तर्षियों के यह नाम हैं भृगु १ सुन्दर २ अम्बर ३ विवस्वत ४ सुधर्म ५ विरजा ६ सुहेतु ७ और इस मन्वन्तर में पांच प्रकारके देवता हैं आप १ प्रसूर २ कृतु ३ प्रथूग्र ४ खेल ५ और इन्द्रका नाम मन्त्रद्रुम है सातवें वैवस्वतमनु हैं जो अब बीतते हैं उनके पुत्रों के यह नाम हैं इक्ष्वाकु १ भृगु २ गरुड़धृष्ट ३ शर्याति ४ नरिष्यन्त ५ नाभाग ६ दिष्टक ७ रोष ८ प्रषध्र ९ वसुमान १० और सप्तर्षियों के यह नाम हैं अत्रि १ वशिष्ठ २ कश्यप ३ गौतम ४ भरद्वाज ५ विश्वामित्र ६ जमदग्नि ७ इस मन्वन्तर में बारह आदित्य और बहत्तर मरुद्गण और ग्यारह रुद्र और विश्वामित्र देवताहैं और इन्द्रको पुरन्दर कहते हैं आठवें सावर्णिमनु हैं जिनके पुत्र वीरवान् १ अवन्तिवन २ सुमन्त ३ धृत ४ मान ५ वसु ६ वरिष्णु ७ आख्य ८ विष्णुराज ९ सुमति १० और सप्तर्षियों के यह नामहैं पराशर १ व्यास २ अत्रिज ३ कृपाचार्य ४ द्रोणाचार्य ५ अश्वत्थामा ६ गालव्य ७ और इस मन्वन्तरके तीन प्रकारके देवताओं के नाम अज १ मरीचि २ कश्यप और बलि इन्द्र का नाम है नवें मनुका नाम रुचि है जिनके पुत्र धृष्टिकेतु १ दीप्तकेतु २ पञ्चहस्त ३ निरकृत ४ वृषकेतु ५ प्रथुश्रव ६ द्युम्न ७ श्रव ८ ऋचीक ९ गयबृहत् १० हैं और सप्तर्षियों के यह नाम हैं मेधातिथि १ वसु २ ज्योतिष्मान् ३ धृतमत ४ सावर्णि ५ हव्य ६ पुलह ७ और प्रियमुख देवताओं और प्रभु इन्द्रका नाम है दशवें ब्रह्मसावर्णि हैं जिनके पुत्रों का अक्षय १ उत्तमोजव २ भूरिसेन ३ वृषसेन ४ शतानीक ५ निरामित्र ६ जय-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्रथ ७ भूरिद्युम्न ८ दर्श ९ सुवर्चि १० और द्विष्मतदेवताओं और शम्भु इन्द्र को कहते हैं ग्यारहवें मनु वृषसावर्णि कहेजाते हैं जिनके पुत्रोंके यह नाम हैं सर्वगत १ सुरनीक २ क्षामक ३ दर्शकुहु ४ बाहु ५ नामखण्ड ६ मनु ७ दृढ़ेषु ८ सुशर्म ९ अदाह १० और सप्तर्षि इन नामोंसे प्रसिद्ध होते हैं हविष्मत् १ अनघ २ निस्स्वर ३ अष्टवर्ग ४ चारुधृष्ट ५ वशिष्ठ ६ दत्त ७ और तीनप्रकार के देवता हैं भंगम १ कामगम २ निर्वाणप्रकाम ३ और इन्द्र वैधृत कहेजाते हैं बारहवें मनु रुद्रसावर्णि नामसे विख्यात हैं जिनके पुत्र देववान् १ उपदेव २ देवश्रेष्ठ ३ सुरनाथ ४ देवक ५ देवप्रवर ६ वरदेव ७ देवप्रिय ८ सुर-प्रिय ९ प्रियरेवा १० और यह सप्तर्षि हैं वशिष्ठसुत १ अत्रिसुत २ अङ्गिरासुत ३ कश्यपसुत ४ पुलहसुत ५ पुलस्त्य ६ भृगुसुत ७ और इस मन्वन्तर में ब्रह्मा के पुत्र पञ्चहरित के नाम से देवता विख्यात हैं और इन्द्रका नाम ऋतुधाम है तेरहवें देवसावर्णिके पुत्रोंके यह नाम हैं चित्र १ विचित्र २ तप ३ वृषधृत ४ अग्न ५ सुनेत्र ६ क्षेत्रवृद्ध ७ नि-र्भय ८ द्रोण ९ सुतप १० और सप्तर्षियों को धृतमति १ हव्यपान २ तत्त्वदर्शी ३ सुतपाणि ४ परापक ५ निरुत्सव ६ निर्दह ७ बोलते हैं और देवताओंको सतराम और इन्द्रको दिवसपति कहते हैं चौदहवें मनु पुत्रों के नाम बुध्न १ तरङ्ग २ मेरु ३ विष्णु ४ प्रवीण ५ सुन-न्दन ६ तेजस्वी ७ सम्बल ८ तनुग्र ९ अनूप १० और सप्तर्षियों को अग्नीध्र १ मागध २ अतिबाह्य ३ शुचि ४ युक्त ५ शुक्र ६ अजित ७ कहते हैं और देवताओं का नाम चाक्षुष और इन्द्र का नाम शुचि है॥

अठारहवां अध्याय॥

इतना सुन नारद बोले हे पिता! मन्वन्तरों का वृत्तान्त सुनकर मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ अब मुझको यह इच्छा है कि सातवें मन्वन्तर अर्थात् वैवस्वत का जो अब बीतरहा है उसका सब वृत्तान्त

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानूं और राजाओं की कथा जो इस मन्वन्तर में होचुकी सुनूं ब्रह्मा बोले कि अब हम वैवस्वतमनु की सन्तान का वर्णन करते हैं और जोकि उक्त मनुकी सन्तान में बड़े धर्मवान् राजा बीते हैं इस लिये उनकी कथायें पुण्य और वृद्धि का कारण हैं कि सूर्य जो कश्यप से उपजे उनकी स्त्री संज्ञा नाम से श्राद्धदेव और यम दो पुत्र और यमुना नाम कन्या उपजी फिर संज्ञा सूर्य के तेज की अधिकता से मैथुन और उनका बल न सहसकी और उसको यह शक्ति न रही कि फिर सूर्य के साथ भोग करे सो संज्ञा ने अपनी स्त्री के समान दूसरी स्त्री बनाई और उसका नाम छाया रक्खा छायाने अपने उपजनेका कारण संज्ञासे पूछा और कहा कि जिस प्रकार तुम्हारा दुःख दूर होजावे वह बात मैं करूं संज्ञाने छाया को अपने ऊपर प्रसन्न पा उत्तर दिया कि मैं अपने पिता के घर जातीहूं तुम मेरे बदले यहां रहकर हमारे दो लड़कों और एक लड़कीको अपनी सन्तान के समान जानना और उनका पालन पोषण भलीबिधि करना जो मुझको चाहती हो तो यही करना और कोई मनुष्य यह भेद न जाने यह सुन छायाने उत्तर दिया कि अच्छा तुम जाओ जो हम पर बीतेगी हम सहलेंगी यह सुन संज्ञा मौन हो अति लज्जा से अपने पिताके घर गई और जब उसके पिताने मुख्य वृत्तान्त सुना तो संज्ञासे अति अप्रसन्न हो उसको बहुत भय दिया और निन्दा का बिचारकर उसका त्याग करदिया बिचारी संज्ञा अपना स्वरूप बदल घोड़ी का स्वरूप धार उत्तर की ओर वनमें चलीगई और इधर उधर वनमें विकल फिरतीरही और अपने घर जाना न चाहा यह हाल सूर्यने कुछ न जाना और बराबर छाया के साथ रहते रहे और जिस तरह कि संज्ञासे भोग विलास करते थे उसी प्रकार छाया से भी करते रहे यहांतक कि दो बालक और एक कन्या छाया के उदरसे उपजे पहिला सावर्णि जो आठवां मनु होगा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पहिले उपजा दूसरा शनिश्चर जो सातवां ग्रह है दूसरी बेर उत्पन्न हुआ तीसरी बेर तापती नाम की कन्या जो सावर्णिमनुके साथ व्याही गई यद्यपि छाया बहुत समय तक इस तरह पर रहती सहती रही कि उसको किसीने न जाना कि यह संज्ञा नहीं है पर फिर उसको पूर्वकी बुद्धिमें विरोध उपजा कि वह अपनी मुख्य सन्तान पर अधिक प्रेम करने लगी और संज्ञा के पुत्रों को अति ग्लानि से देखने लगी ऐसी कुदृष्टि सावर्णिमनुने सहली पर यमको इस दुःख के सहने की शक्ति न रही और चाहा कि छाया को मारूं इस इच्छासे यमने अपना पैर छाया के ऊपर मारने की इच्छासे उठाया यह दशा यम की देख छायाने अति कोपित हो यम को यह शाप दिया कि जो पैर तुमने हमारे मारने को उठाया है यह पैर तुम्हारा शरीर से भिन्न होकर गिर जावे यह शाप सुनकर यम क्रोध करते ओंठ कँपाते सूर्यके समीप गये और सब हाल कह सुनाया और बिनती की कि हे संसार के प्रकाश करनेवाले, महाराज ! हमपर ऐसी अनुग्रह करो कि हमारा पैर गिरने से बचजावे यह सुन सूर्यको अति आश्चर्य हुआ कि यह क्या हाल है और यमसे कहा कि यह बात कुछ भेद की भरी हुई है क्योंकि जब माताने अपनी सन्तानपर न्यून वा अधिक प्रीति की तो इसमें कोई बात अवश्य छिपी हुई है और हमको बड़ा खेद है कि तुम बड़े धर्मवान् सत्यवादी थे सो तुम्हारी माता के क्रोधने तुमको दोष लगा दिया अब हम मुख्य कारण जानलेवेंगे पर हम वह शाप जो तुम्हारी माता ने तुमको दिया है मिटा नहीं सक्ते क्योंकि संसार में कोई पिता यह बल नहीं रखता कि माताके शाप को निवृत्त करसके पर हम तुमसे कहते हैं कि तुम पृथ्वी में नहीं जावोगे और न तुमको कुछ पीड़ा होगी तुम कुछ संदेह मत करो तुम तीनों लोकके स्वामी और न्यायाधीश होगे यह इस तरह यमको समझाकर सूर्य क्रोधपूर्वक छाया से

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहने लगे कि हे बुद्धिहीन, स्त्री ! यह तूने कैसा अकर्म कियाहै माता के निकट सर्व पुत्र समान होते हैं उनमें थोड़ी और बहुत प्रीति रखनी अच्छी नहीं होती इसका क्या कारणहै छायाने उत्तरदिया कि तुम्हारी स्त्री संज्ञाके यह दो लड़के और एक लड़की है और आरम्भ से अन्त तक सब समाचार कह सुनाया सूर्य यह सुनकर तुरन्त अपने श्वशुर के घर गये और अपने श्वशुर के मुखसे संज्ञा का सर्व वृत्तान्त सुनलिया और उन्होंने अपना तेज कम करदिया और उत्तमरूप धार चले कि ऐसे स्वरूपके देखने से संज्ञाको प्रसन्नता हो और अपने श्वशुर की आज्ञा ले सूर्य उस बनमें जहां संज्ञा रहती थी जापहुँचे और देखा कि संज्ञा घोड़ी बनकर फिररहीहै सूर्यने अपनेको घोड़ा बन चाहा कि सम्भोग करें पर संज्ञा न मानकर भागने लगी निदान सूर्यने अति कामवश हो अपना वीर्य मुखके मार्गसे संज्ञा के मुखपर छोड़दिया सो संज्ञा की नासिकासे तुरन्त दो पुत्र उपजे जो अश्विनीकुमारके नामसे प्रसिद्ध हैं और वह देवताओं के वैद्य हैं फिर सूर्यने अपना स्वरूप अपनी स्त्रीको अति सुन्दर कर दिखाया और संज्ञाभी प्रसन्न होकर अपने मुख्यस्वरूप में प्रकट हुई और सूर्यके साथ अपने घर आई और आगे से भी वह अधिक आनन्दपूर्वक रहने लगे और छाया भी बहुत मेल मिलापसे सूर्यके घर रहनेलगी और सन्तानकी यह दशा हुई कि श्राद्धदेव सातवें मनु हुये और यमने दिक्पति हो बड़ापद पाया और यमुना नदी होकर कृष्णचन्द्र की बहुत प्यारी हुई यह संज्ञा की सन्तान है जिसका ऊपर वर्णन हुआ और छाया के सन्तानकी यह कथा है कि सावर्णि आठवें मनु हुये और शनैश्चर ग्रह बड़ी पदवीपर स्थित हुये हे नारद ! यह चरित्र अति आनन्ददायक है और यह अति सन्तानप्रद और भुक्ति मुक्तिदाता है ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन्नीसवां अध्याय ॥

नारदके पूछने पर ब्रह्माजी बोले कि अब जो मन्वन्तर बीत रहा है अर्थात् श्राद्धदेवका वंश वर्णन करते हैं जिनमें भारी २ राजा बड़े २ तेजवान् यशस्वी हुये हैं कि श्राद्धदेवने पुत्रकी कामनाके निमित्त वशिष्ठ मुनिकी सहायतासे वरुणयज्ञ आरम्भ किया कि कोई तेजवान् भाग्यवान् पुत्र उपजे इतनेमें श्राद्धदेवकी रानीने वशिष्ठ से विनय की कि महाराज ! ऐसा उपाय कीजिये जिससे कन्या उपेज क्योंकि कन्या बड़ा पुण्य बढ़ानेवाली है और पुत्री के उपजने से जन्म शुभ होजाता है और कन्यादान करनेसे मुक्ति मिलती है सो यह बिनती रानीकी वशिष्ठने मान ली और पुत्रके उपजने के मन्त्र के बदले कन्या के उत्पन्न होनेका मन्त्र पढ़ा सो लड़का पैदा होनेके बदले कन्या उपजी जिसका नाम इला रक्खागया और श्राद्धदेव मनुने वशिष्ठसे कहा कि यह बात हमारी इच्छा विना क्योंकर हुई वशिष्ठजी ने मुख्य वृत्तान्त राजा से कह सुनाया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता मत करो हम तुम्हारा मनोरथ पूरा करेंगे सो श्राद्धदेव ने इलाको अति तेजवान् देख इडा नाम से उसको अपने पास बुलाया और जो दुःख कि मनमें था उसको दूर करके कहा कि हमारे पास खेलो इडा बोली कि महाराज ! आपको पुत्रकी कांक्षा है और जोकि मैं मित्रा-वरुण के अंश से उपजी हूं इस लिये मैं उनके पास जाकर तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगी यह कहा और मित्रावरुण के समीप जा दोनों हाथ जोड़े हुये बिनती की कि मैं आपके अंशसे उपजी हूं जो कुछ आप आज्ञादें सो करूं यह सुनकर मित्रावरुण बोले कि हे इडा ! हम तुम्हारी बिनती और सत्यतासे प्रसन्न हैं तुम संसारमें हमारे नाम से प्रसिद्ध होगी और तुम श्राद्धदेवका लड़का होकर सुद्युम्न का नाम पाओगी यह सुनकर इडा तुरन्त निर्भय हो श्राद्धदेव मुनिके पास आई और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वशिष्ठने सदाशिवको प्रसन्नकर यह वर मांगा कि इडा श्राद्धदेवकी लड़की लड़का होजावे शिवजी यह वर दे अन्तर्धान होगये और इडा भी लड़का हो सुद्युम्न के नामसे प्रसिद्ध हुये और अपने शुद्ध आचरण से श्राद्धदेवको अतिप्रसन्न रक्खा संयोग से एकदिन सुद्युम्न विदेशियों का वेषधर शिकार खेलनेको उत्तर की ओर गया और सुरगिरि के नीचे जहां शिव गिरिजासहित विहार कररहे थे जापहुँचा सो वहां पहुँचतेही सुद्युम्न अपने साथियों समेत स्त्री होगया ऐसी दशा के देखनेसे उसके साथी आश्चर्य में हो चुप होगये इसका कारण यह है कि एक समय में सबदेवतादि सदाशिवके देखनेको उसी स्थानपर गयेथे उस समय श्रीगिरिजा महाराणी शिवके साथ विहार कररही थीं सो देवता भेंट करने का उचित समय न जान अपना मनोरथ पाये विना लज्जापूर्वक बदरीवन में जाकर ठहरे पर गिरिजा इस बात को जान अतिलज्जित हुई इससे शिवने कहा कि आजसे जो मनुष्य यहां आवेगा वह स्त्री होजावेगा इस भयसे कोई मनुष्य वहां नहीं जाता निदान सुद्युम्न अपने साथियों समेत वन में अति दुःखीहो पर्यटन करता रहा और कहीं पर न ठहरा संयोग से चन्द्रपुत्र बुध ने वहांपर सुद्युम्नको जो स्त्री होगया था देखा और मोहित हो चाहा कि उसके साथ भोग करें और उस स्त्री ने चन्द्रमासे रमनाचाहा सो दोनोंके संयोगसे एक प्रतापवान् पुत्र उपजा जिसका नाम पुरूरवा हुआ जिसका वंश बहुत बढ़ा उसके कुलमें बड़े २ प्रसिद्ध राजा उपजे और उसी समयसे सोमवंश प्रसिद्ध हुआ जिसमें श्रीकृष्णचन्द्रने अवतार लिया यद्यपि सोमवंश संसार में बहुत फैला पर हम विस्तारभय इस वंश के राजाओं का वर्णन छोड़े देते हैं सो सुद्युम्नने वशिष्ठ अपने गुरु का बहुत स्मरण किया और गुरु अतिकृपाकर उस स्त्री के पास गये और उसको ऐसी दशामें पाकर इसलिये कि फिर वह पुरुष होजावे सदाशिवका बड़ा तप करने लगे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

निदान शिवने अतिप्रसन्न हो वशिष्ठसे कहा कि जो चाहते हो वही वर हम तुमको देंगे वशिष्ठ बोले कि सुद्युम्न पूर्वके समान फिर पुरुष होजावे मेरा केवल यही मनोरथ है शिवने पूर्वका वचन स्मरणकर कहा कि सुद्युम्न एक महीने स्त्री होकर दूसरे महीने पुरुष होजायाकरेगा और अपना राज्य विधिपूर्वक करतारहे यद्यपि सुद्युम्नने यह वर पा राज्य अपने शिरपर लिया पर उसके राज्य में प्रजा उससे प्रसन्न न रही और सुद्युम्नसे तीन पुत्र उपजे जिनके नाम उत्कल १ गय २ विमल ३ हुये सो उत्कलके नामसे उत्कलदेश प्रसिद्ध हुआ और विमल पश्चिमके देशमें स्थित रहे इन तीनोंके रहने से वे तीनों देश इन्हींके नामसे प्रसिद्ध हुये निदान राजा सुद्युम्न अपना राज्य पुत्रको दे तपोवन में चलागया और उनके सर्व पुत्र बड़े धर्मवान् राजा हुये ॥

बीसवां अध्याय ॥

इतना सुनकर नारदने पूछा कि हे पिता ! राजा सुद्युम्न के राज्य छोड़ने और उनके वन में चलेजाने के उपरान्त मनुने क्या कार्य किया ब्रह्माजी बोले कि मनु के दश पुत्र उपजे जिनके नाम हम अभी वर्णन करचुके हैं उनमें से इक्ष्वाकु जो सबसे बड़े थे उनका वंश हम वर्णन करते हैं कि इक्ष्वाकुके सौ पुत्र उपजे जो सबके सब धर्मवान् और प्रजा की पालना में अद्वितीय थे उन सौ पुत्रों में से सबसे बड़े पुत्रका नाम मलकक्ष था और उसीने अयोध्या का राजा हो परिपूर्ण राज्य किया जो कि श्राद्धमें मांसकी आवश्यकता थी इसलिये इक्ष्वाकु ने मलकक्ष से कहा कि मांस लाओ यह अपने पिताकी आज्ञा सुनकर मलकक्ष तुरन्त वनमें गये और एक शशा को मारकर लेचले मार्ग में श्रम और भूखसे कुछ थोड़ासा उसका मांस भक्षण करगये बाक़ी लाकर इक्ष्वाकुको देदिया वशिष्ठगुरु ने जाना कि यह मांस जूठा है सो राजासे कहा और राजा इक्ष्वाकु अपने पुत्रसे अप्रसन्न हो सब राज्य

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

काज तज वनमें चलेगये वहां सदाशिवका तप करनेलगे फिर उत्तम ज्ञान पा जो उनको वशिष्ठमुनिसे प्राप्त हुआ था परम पद को सिधारे फिर वशिष्ठने मलकक्ष को राजा बनाया जिनका नाम संसारमें शशाद विख्यात हुआ फिर क्रमपूर्वक नीचे लिखेके अनुसार राज्य करतेरहे॥

सूर्यवंशीय राजाओं के नाम॥

१ वैवस्वतमनु २ इक्ष्वाकु ३ मलकक्ष अर्थात् शशाद ४ रिपुंजय ५ कौस्तुभ ६ हरिवाह ७ अर्णाभ ८ वशिष्ठराश्व ९ पृथु १० चन्द्र ११ युवनाश्व १२ सारस्वत १३ बृहदश्व १४ कपिल १५ दृढ़ाश्व धुन्धमारके तीन लड़कों में से बड़ा था इसीसे अवधका राजा हुआ १६ हर्यश्व १७ निमिकुम्भ १८ संहताश्व १९ कृशाश्व २० प्रसेनजित् २१ युवनाश्व जब युवनाश्व के कोई पुत्र न उपजा तो यह राजा अति अप्रसन्न हो अपनी एकसौ रानियों समेत वनमें चलागया और वहां मुनियोंने इकट्ठे होकर राजा से पुत्रप्राप्तिके निमित्त इन्द्रयज्ञ कराया भाग्यवश राजा एक दिन रात्रिको प्यासे हो पानी पीनेको उस घरके भीतर गये जहां यज्ञ की सामग्री रक्खी हुई थी और सब मुनीश्वर सोरहे थे सो राजाने उस कलशका जल पीलिया जिसको मुनीश्वरों ने मन्त्र पढ़ बन्द कर दिया था निदान जब मुनीश्वरों ने प्रभात के समय कलश जल से खाली पाया तो सब मनुष्यों से पूछा और कहा यह वही कलश था जिससे राजा के घर पुत्र उपजता निदान राजाने सर्ववृत्तान्त जान ईश्वर की दण्डवत् की और नियमित समयके उपरान्त राजा की कुक्षि फाड़कर एक सुन्दर पुत्र उपजा और वह दूध के लिये रोने लगा मुनीश्वरों को अति चिन्ता उपजी कि उसको दूध क्योंकर मिलेगा क्योंकर यह बालक बढ़ेगा सो इन्द्रने प्रकट हो कहा कि हे मान्धाता! तुम मत रोवो और उसको दूध देकर जीतारक्खा इसीसे इनका नाम मान्धाता हुआ और ईश्वरने राजा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युवनाश्व की ऐसी पालना की कि कुक्षिके फटने पर भी वह जीता रहा फिर राजा राज्य काज मान्धाता को सौंप आप तप में प्रवृत्त हुआ और राजा मान्धाता सर्वभूमिके चक्रवर्ती राजा हुये और त्रसद्दस्यु के नामसे प्रसिद्ध हुये और मान्धाताके दो बालक उपजे एक पुरुकुत्स दूसरा मुचुकुन्द इनमें से राजा मुचुकुन्द ऐसे हुये कि जिनकी शरण में इन्द्र आये और राजा मुचुकुन्दने इन्द्रकी सहायता की और ऐसा कोई राजा नहीं हुआ और पुरुकुत्स से जो राजा मुचुकुन्द के भाई थे त्रय्यारुणि उपजकर राजा हुआ और उनसे सत्यव्रतनामी एक बालक उपजा जिसने तेज मन्त्रों को भ्रष्ट कर डाला और अपनी स्त्रीको मार नाना प्रकार के पाप करने लगा निदान राजा त्रय्यारुणि ने सत्यव्रत को आज्ञा दी कि वह घर से निकल जावे और सत्यव्रत राजाकी आज्ञानुकूल घरसे निकस रसोईंघरके पास रहनेलगे और राजासत्यव्रत अपने पुत्रके कुकर्म देख राज्य छोड़ वनमें चलागया और सदाशिवका तप करनेलगा और विश्वामित्रभी घरबार छोड़ राजाके निकट तप करने लगे इतने में विश्वामित्र की स्त्री अपने एक पुत्रको जो मँझला था कण्ठ में रस्सी बांध बेंचने लगी और उसका मूल्य सौ गऊ चाहती थी सत्यव्रत ने लड़केको गला बँधाहुआ देख अतिअनुग्रह कर उसको छुड़ादिया और उसका पालन आप करनेलगा सो वह विश्वामित्र का पुत्र उससमय से गालव्यके नामसे प्रसिद्ध हुआ और उसने विश्वामित्र की कीर्त्ति को बढ़ाया और एक गोत्र गालव्य के नामसे संसारमें प्रसिद्ध हुआ और सत्यव्रतने हरप्रकार विश्वामित्रका प्रतिपाल किया और नाना प्रकारके वनपशु मारने लगा और वशिष्ठमुनि राज्य, कुटुम्बकी पालना करतेरहे पर सत्यव्रतको घरमें न बुलाया यहांतक कि सत्यव्रत को बाहर रहते बारह वर्ष बीतगये जब सत्यव्रत को मांस न मिला तो उन्होंने अति विकल और क्षुधासे क्रोधित हो वशिष्ठ की एक गौ मार

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

डाली और उसका मांस अपने घर लाकर आप मुनिके पुत्र सहित भोजन किया यह समाचार वशिष्ठ ने सुना और उसको बड़ा पापी ठहराया और जो कि सत्यव्रतने गौको पहिले तो पितृकर्म और उनकी प्रसन्नताके निमित्त वध न किया था दूसरे वह गौ गुरु की थी तीसरे गुरु से आज्ञा भी न ली थी इससे तीन प्रकारके पापोंसे महापाप समझ उसका नाम त्रिशंकु रखदिया इतनेमें विश्वामित्र वनसे अपने घर आये और सत्यव्रत के ऊपर अति प्रसन्न हो उसको त्र्यारुणिके बदले चक्रवर्ती राजा बनाया और शरीर सहित उसको स्वर्ग में बैठा-दिया जहां देवताओंने उसको स्वर्ग से नीचे डालदिया पर विश्वामित्र ने उसको गिरने न दिया वरन रोंकलिया सो त्रिशंकु आजतक आ-काशमें दिखाई देते हैं राजा सत्यव्रत से हरिश्चन्द्र उपजे जिन्होंने राजसूययज्ञ पूर्ण किया और संसार में सम्राट् के नाम से प्रसिद्ध हुये पर जब राजा हरिश्चन्द्र के कोई पुत्र न उपजा तो वह अतिचिन्तित हो वन में चले गये और वहां नारदसे उपदेश पाकर वरुण के मन्त्र का जप किया और यह संकल्प किया कि हे वरुण ! जो हमारे पुत्र उपजेगा तो उसको हम बलि देकर तुम्हारा यज्ञ करेंगे सो वरुण ने प्रसन्न हो कहा कि अच्छा तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा निदान राजाके पुत्र उपजा जिसका नाम रोहित रक्खागया और तुरन्त वरुण ने पहुँचकर राजासे कहा कि हमारा यज्ञ करो राजाने उत्तर दिया कि जब पशु बलि दियाजाता है दांतों से रहित हो तब बलिके योग्य होता है अभी इस बालक के दांत हैं ऐसा पशु अभी यज्ञके योग्य नहीं क्योंकि जब पशुके दांत नहीं होते तो राजाको जो यज्ञ करता है और पशु के लिये भी उत्तम होता है निदान तुरन्त बालकके दांत गिरपड़े राजाने कहा कि दांत फिर होजावें सो दांत तुरन्त पहिले के समान प्रकट हुये वरुणने कहा कि दांतों करके हीन हो तब वह बालक दन्त-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहित होगया तब राजाने यह ओढ़र किया कि जब पशु तरुण होता है तब यज्ञके लिये शुभ है यह कह राजाने अपने पुत्रके बचाने के लिये वाचालतापूर्वक वरुण को निरुत्तर करदिया और जब रोहित तरुण हुआ तो उसको वनमें भेजदिया कि वह बचजावे जब वरुणने रोहित को घरमें न देखा तो राजा का छल जान बड़ा क्रोध किया और राजा महोदररोग में व्याप्त होगया और रोहितने चाहा कि घरमें जाकर राजाको देखूं पर इन्द्रने ब्राह्मणका स्वरूप धार रोहितके पास जाकर उसको निषेध किया और कहा कि तीर्थमें भ्रमण करना अति-पुण्यदायक है घर जाना कुछ अवश्य नहीं सो रोहित ने ऐसाही किया और बराबर वनमें रहे और इन्द्र प्रतिवर्ष आकर रोहितको यही सम-झाते रहे कि घरजाना अच्छी बात नहीं और रोहित छः वर्षतक वन२ पर्यटन करते रहे फिर अजीगर्त के मँझले लड़के को मोल ले अपने पिता राजा हरिश्चन्द्र को दिया उस बालक का नाम सत्यपुहुप था जिसको राजाने बलि दे यज्ञ किया और वरुणादि सब देवताओं को प्रसन्न करदिया और राजा उस कठिनरोगसे छूट फिर रोहित से हरित और हरित से चम्प और चम्पसे विजय और विजय से मृग और मृग से वृक और वृकसे बाहु उपजकर इसी क्रमसे राज्य करते रहे पर जब बाहुपर शत्रुओंने चढ़ाई कर उनको राज्य से भ्रष्ट करदिया तो राजा बाहु अपनी स्त्री पुत्रसहित भागकर ऊर्जमुनि की शरण में गये जहां राजा बाहुसे सगर उपजे और सगर विषसहित उत्पन्न हुये थे इसीसे उनका नाम सगर अर्थात् विषसहित रक्खागया और सगरने मुनिसे एक महातेजस्वी बाण पाकर शत्रुओंको जीता और अपने पिता का राज्य पा धर्मराज का प्रचार किया ॥

२२ मान्धाता वा त्रसद्दस्यु २३ मुचुकुन्द २४ प्रकृतिशक २५ त्रय्यारुणि २६ सत्यव्रत अर्थात् त्रिशङ्कु २७ हरिश्चन्द्र २८ रोहित

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२९हरित ३०चम्पक३१विजय ३२मृग३३वर्ग३४ बाहु ३५ सगर॥

इक्कीसवां अध्याय॥

इतना कह सूत पौराणिक बोले कि हे मुनियो! जब यह सगर का वृत्तान्त नारद श्रवण करचुके तो जगत्पिता श्रीब्रह्माजी से पूछा कि महाराज! बाहुके पुत्र क्योंकर विषसहित उपजे जिससे उनका नाम सगर हुआ ब्रह्मा बोले कि जब राजा बाहु रात दिन स्त्रियों से भोग विलास में फँसा और राज्यकाज सब त्याग दिया तो उस समय हैहय, तालजङ्घ और शक यह तीनों राजा जो उसके बड़े शत्रु थे राक्षसों के पास व समूहसहित जो उनके सहायक थे राजा बाहुपर चढ़धाये और राजाको परास्तकर आप राज्य करनेलगे और उन्होंने अपने मित्रोंको बहुतसे देश देदिये और राजा बाहु राज्यभ्रष्ट हो ऊर्जमुनि की शरण में जाकर वहां रहे उनकी बड़ी रानी गर्भवती हुई और उसकी सवतिने ईर्षा और वैरभाव से उस रानी को विष देदिया कि वह या उसका गर्भ जीता न रहे निदान राजा बाहु वहां ऊर्जमुनि के स्थान पर मरगये और उसकी बड़ी रानीने सती होना चाहा पर ऊर्जमुनि ने सती न होने दिया और उसीसे राजा का क्रियाकर्म कराकर उसको अपने यहां ठहराया जहां शुभलग्न में रानीसे एक अतितेजस्वी बालक उपजा और ऊर्जमुनिने बालक को विषसहित देख उसका नाम सगर रखदिया और जातकर्म करने के अनन्तर उक्त मुनिने सगर को पहिले सब विद्या सिखाई फिर ऐसा बाण दिया जो हरएकको मिलना कठिन है और शिवजीकी पूजा सिखाकर उससे शिवजी का पूजन कराया शिव सगरसे अतिप्रसन्न हुये और सगर शिवजी की प्रसन्नता और ऊर्जमुनि की सहायतासे शत्रुओं पर चढ़ उसी बाणसे जो उक्त मुनिने दिया था सब शत्रुओं का विनाशकर उन पर प्रबल हुये और राक्षसादि जो यवनकी जाति में से थे भागगये और जाकर उन्होंने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वशिष्ठकी शरण ली और सगरने वशिष्ठजी के निषेध करने और उन का पक्ष करनेसे उनको वध करना छोड़ा पर उन सबके मुख्यधर्म को नष्ट करदिया कि कइयोंके शिरभरके सब बाल मुड़ाडाले और कइयों के आधे बाल कटवाकर आधे रहने दिये इसी प्रकार हरएकका अनादरकर निकालदिया और वेद के अनुसार सबको स्थित किया फिर सगर ऊर्जमुनि को गुरु बनाकर अश्वमेध यज्ञ करनेलगे और संस्कार कर घोड़ा सेनाके साथ भेजा और राजाके साठ हज़ार पुत्र भी साथ गये सो घोड़ा समुद्र के अग्निकोण में गया जहां इन्द्रने छल करके घोड़ा चुरालिया और कपिलमुनिके समीप बांधकर आप चलेगये और राजाके सब पुत्रोंने ढूँढ़नेपर भी कहीं पृथ्वी भर में घोड़ा न पाया तो पृथ्वी खोदनेलगे और जबकि घोड़े को देखा कि कपिलमुनिके पास बँधा हुआ है तो वे सब एकही बेर कहने लगे कि यही मनुष्य है कि जिसने हमारा घोड़ा चुराया देखो यह मनुष्य कैसा धूर्त है कि आंखें बन्द किये बैठा हुआ है और हमारा घोड़ा चुराया इसको मारो और मारडालो क्योंकि यह बड़ा पापी है यह कहा और अपने शस्त्र लेकर कपिलकी ओर चढ़ दौड़े जब कपिलने अपनी आंखें खोलीं तो वे सब श्रीकपिलदेव महाराज की क्रोधाग्नि से जलकर तुरन्त ही भस्म होगये केवल चार बालक जीते बचे और पञ्चजन्यनामी एक और बालक जो दूसरी रानी से था जीतारहा उसी पञ्चजन्य का दूसरा नाम असमञ्जस है और जिससे अंशुमान् नामी एक बालक उपजा और उसी अंशुमान् ने कपिलके पास से घोड़ा लाकर यज्ञ पूर्ण कराया यह सुनकर नारदने ब्रह्मा से पूछा कि आप इस कथा को विस्तार से वर्णन करें ब्रह्माजी बोले कि यह पञ्चजन्य अर्थात् असमञ्जस केशिनीनामी रानी से उपजा था वह पहिले जन्म में योगी था और योगके भ्रष्ट होजाने से राजा के घर उपजा और अयोध्या के बालकोंको इकट्ठा

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कर सरयूनदी में जहां वह खेला करता था सबको डुबाकर मारडाला सो उन लड़कों के माता पिताने असमञ्जस के ऐसे कुकर्म देख राजासे जाकर पुकारा राजाने असमञ्जसको घरसे निकालदिया पर असमञ्जस अपने पिता से अलग हो प्रसन्नतापूर्वक सरयूनदीके तटपर गया और सब बालकोंको जीताही सरयूसे बाहर निकालदिया यह देखकर सब अयोध्यावासी अतिआनन्द और आश्चर्य को प्राप्त हुये और राजाने भी आश्चर्यकर अपने पुत्र को सिद्ध योगी समझा निदान अंशुमान् जो असमञ्जस का पुत्र था अपने दादा राजा सगर की सेवा करता रहा और घोड़ा लाने को समुद्रके तटपर जाकर उस मार्गसे जिसको उसके बड़ोंने खोदा था पृथ्वीके नीचे गया और देखा कि एक ढेर भस्म का इकट्ठा है और विष्णुके अवतार कपिलमुनि बैठे हैं सो अंशुमान्ने दण्डवत् के उपरान्त प्रणाम किया और कपिलने अंशुमान् से बहुत प्रसन्न हो कहा कि यह घोड़ा जो बँधा हुआ है राजा सगरकी यज्ञका है तुम इसको लेजाकर यज्ञ पूरा करो और ये तुम्हारे साठ हज़ार चचा जलकर भस्म होगये हैं इसमें हमारा कुछ अपराध नहीं है यह सब गङ्गाजलसे मुक्ति पावेंगे तुम गङ्गाजी के लानेके लिये युक्ति करो यह सुन अंशुमान्ने अतिप्रसन्नतासे घोड़ेको लाकर यज्ञ पूर्ण किया और बहुतसा धन और द्रव्य यथायोग्य बांटा और राजा सगरने एकसौ अश्वमेध यज्ञ किये और संसारभर का राज्य किया फिर अंशुमान्को अयोध्या का राज्यकाज दे आप महावन में तप करनेगये और ऊर्ज-मुनिके उपदेश से सदाशिवकी पूजाकर परमपद पाया॥

बाईसवां अध्याय॥

इतना सुनकर नारदने पूछा कि राजा सगरके साठ हज़ार पुत्र क्योंकर उपजे और असमञ्जस क्योंकर उत्पन्न हुये ब्रह्मा बोले कि राजा सगर के दो रानियां थीं एकका नाम सुमति था और दूसरी को

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केशिनी कहते थे इन दोनों रानियोंने अपनी सेवासे ऊर्जमुनि को अतिप्रसन्न किया एक दिन मुनिने अतिप्रसन्न हो कहा कि तुम दोनों की जो इच्छा हो वह हमसे मांगो यह सुन सुमति बोली कि मुझको साठ हज़ार पुत्र दीजिये और केशिनीने कहा कि मैं केवल एक पुत्र चाहती हूं मुनिने कहा कि यही होगा सो सुमति से एक तोंबी जो छोटे २ बीजोंसे भरी थी प्रकट हुई उस तोंबी को घृतके कुण्डमें डाल दिया जिससे निर्दोष उत्तम साठ हज़ार बालक उत्पन्न हुये और कपिल मुनिके क्रोधसे जलगये और केशिनीसे एक बालक उपजा जो पञ्चजन्यके नामसे प्रसिद्ध हुआ जिसका ऊपर वर्णन हुआ और पञ्चजन्य से अंशुमान् उपजे और अंशुमान् से राजादिलीप पैदा हुये सो राजा अंशुमान्ने दिलीपको राज्य दे गङ्गाजीके लाने के लिये बड़ा तपकिया निदान मनोरथ पाये विना उसी अपने तपस्थल में मरगये और राजा दिलीप भी राज्य त्याग करके गङ्गाजी के लानेको गये और अपने पुत्र को राज्य दे आपभी मनोरथ पाये विना स्वर्गी हुये पर उनके पुत्र भगीरथ गङ्गाजी के लाने को गये और उन्होंने अपने तपसे आदिशक्ति महारानी को प्रसन्न किया और गङ्गाजीने प्रसन्न होकर भगीरथ को अपने दर्शनसे कृतार्थ किया जबकि राजा भगीरथ ने अपना मनोरथ कहा तो गङ्गाजीने कहा कि हे राजाभगीरथ! हम चलने को उद्यत हैं पर संसार में ऐसा कौन है जो हमारे वेग को रोंके क्योंकि रोंकने विना हम लोकोंको छेद भूतलको चली जावेंगी यह सुनकर राजा भगीरथने सदाशिवजी का बहुत दिनोंतक तप किया और सदाशिवजी प्रसन्न होकर राजा भगीरथ के सम्मुख प्रकट हुये राजा भगीरथने प्रणाम कर बड़ी स्तुति की सदाशिवजी बोले कि वर मांगो राजाने अपना मनोरथ कह सुनाया सदाशिवजी ने अङ्गीकार किया क्योंकि वे सदा गर्व के दूर करनेवाले हैं और जब कि भगीरथ ने गङ्गाजी से विनय

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की कि सदाशिव तुम्हारा वेग सहेंगे तब गङ्गाने अपनी धारा छोड़ी जिससे तीनों लोक में हाहाकार मचगया उस समय सर्वजीव अति-विकल हुये और सदाशिवने केवल अपनी जटा में गङ्गाजी को रोंका कि फिर उनकी धारा दिखाई न देती थी कि कहां चलीगई और राजा भगीरथने अपना मनोरथ सिद्ध होतेहुये न देख शिवकी बड़ी स्तुति की सो शिवने प्रसन्न होकर अपनी जटाको निचोड़ा जिससे तीन बूंदें निकलकर तीन धारा होगईं पहिली धारा पाताल को चलीगई जिसका नाम भोगवती है और दूसरी धारा आकाश में विराजमान हुई जिसको मन्दाकिनी कहते हैं और तीसरी धारा भगीरथ के साथ हुई जिसका नाम भागीरथी है निदान राजा भगीरथ गङ्गाको लेकर चले सो गङ्गा सब देशोंको पवित्र करती हुई वहां पहुँची जहां कि राजा सगर के पुत्र भस्म का ढेर हुये पड़े थे और केवल गङ्गाजल के स्पर्श से वे सब स्वर्गको चलेगये जो मनुष्य गङ्गाको निश्चयपूर्वक पूजते हैं वे निस्संदेह मुक्त होकर आवागमन से छूटजाते हैं और राजा सगर का कुल इस प्रकार जो क्रमपूर्वक राज्य करतेरहे॥

३६ असमञ्जस ३७ अंशुमान् ३८ दिलीप ३९ भगीरथ ४० श्रुत ४१ नाभि ४२ सिन्धुदीप ४३ अयुतायु ४४ ऋतुपर्ण राजा बलिके मित्र जिनको सुदास भी कहते हैं ४५ अनुपर्ण ४६ मित्रसह जिसको कल्माषपाद भी कहते हैं ४७ स्वविशर्म ४८ अनरण्य ४९ मणिडद्रुम ५० निषध जिसको खट्वाङ्ग भी कहते हैं यह चक्रवर्ती राजा हुआ इनका नाम भी चक्रवर्ती था॥

तेईसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि खट्वाङ्गसे दिलीप उपजे जिनको दीर्घबाहु भी कहते हैं जिन्होंने उत्तम धर्म से राज्य किया और गुरु की गौ को जिसका नाम नन्दिनी था उसकी बहुत सेवा की और उसीकी सेवासे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राजाके एक पुत्र उपजा जिनका नाम रघु हुआ जिन्होंने पृथ्वीभरको जीतलिया और जिनके नामसे सूर्यवंश रघुवंश के नामसे संसार में प्रसिद्ध हुआ और रघुसे राजा अज उपजे जिन्होंने धर्मयुद्ध कर अपने शत्रुओंको जीता उनकी रानीका नाम इन्दुमती था और अजसे राजा दशरथ उपजे जिनपर शनैश्चर ग्रहका कुछ बल न चला और राजा दशरथ से चार बालक उपजे राम १ लक्ष्मण २ भरत ३ शत्रुघ्न ४ जिनकी उपमा वर्णन नहीं होसक्ती और रामचन्द्र मुख्य विष्णु के अवतार हैं उनका चरित्र वर्णन करना अवश्य नहीं क्योंकि उनके शुभचरित्र सब कोई जानते हैं उनके नाम लेने और सुनने से सर्वपाप नष्ट होजाते हैं राजा दिलीपकी वंशावली नीचे लिखी है ॥

५१ दिलीप ५२ रघु ५३ अज ५४ दशरथ ५५ रामचन्द्र ५६ कुश ५७ अनित्य ५८ निषध ५९ पुण्डरीक ६० क्षेमध्वज ६१ दिवा ६२ आविक ६३ परिपत्र ६४ बलि ६५ अस्थिल ६६ वज्रनाभ ६७ खगन ६८ कङ्कनाभ इनके समान जैमिनिके शिष्यों में कोई दूसरा नहीं हुआ और याज्ञवल्क्य ने इनसे योगशास्त्र में पूर्णता प्राप्त की ६९ पुष्प ७० ध्रुवसिन्धु ७१ सुदित ७२ अग्निपर्ण ७३ शीघ्र ७४ मरुत्त ॥

मरुत्त सदा अमर हैं जो यज्ञ मरुत्तने किया है उसके समान दूसरा यज्ञ नहीं हुआ और शेष उन्हींकी सामग्रीसे राजा युधिष्ठिरने भी यज्ञ किया था और न मरुत्त के बराबर और कोई राजा हुआ है वे महाशैव थे और चक्रवर्ती राजा थे उन्होंने कलियुग का आगमन जान भरतखण्ड को छोड़ दिया और कलापग्राम में जहां सप्तमुनीश्वर चले गये थे वहां आपभी जाकर ठहरे जब कलियुग बीत जावेगा तब मरुत्त फिर भरतखण्ड में आवेंगे और सूर्यवंश को फिर बढ़ावेंगे और मरुत्त के उपरान्त राजा बाण मरुत्त की सन्तानसे राजा हुये ॥

७५ प्रश्नकृतसिन्धु ७६ उष्ण ७७ सहस्रबाहु ७८ पशुशाङ्किक

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

७९ प्रसेनजित ८० तक्षक ८१ बृहद्बल जिनको अर्जुनने मारडाला ॥

सो इक्ष्वाकुसे बृहद्बलतक सब राजा इक्ष्वाकुवंशी हैं और अब आगे जो राजा कहे जाते हैं वह भविष्यकाल के राजा हैं जिनको हम भविष्यवाणी करके वर्णन करते हैं यह राजा आगे श्रीअयोध्या नगरी में होंगे ॥

८२ बृहदारण्य राजा बृहद्बल से उपजेगा और उनकी सन्तान में नीचे लिखे राजा राज्य करेंगे ८३ उरुक्रऋषि ८४ वत्सनवृद्ध ८५ प्रतिव्योम ८६ द्वारक ८७ सहदेव ८८ बृहदश्व ८९ भानुमान् ९० प्रतीकाश ९१ सुप्रतीक ९२ मुरदेव ९३ सुनकच्छत्र ९४ पुष्कर ९५ अन्तवृक्ष ९६ सुप्ता ९७ अमित्रजित् ९८ बृहद्राज ९९ विरही १०० कृतंजय १०१ रणजय १०२ शाकप्रेश १०३ सिद्धोद १०४ लाङ्गल १०५ प्रसेनजित् १०६ क्षुद्रक १०७ रङ्गयाम १०८ सुरथ १०९ सुमन्त्र ॥

यह इक्ष्वाकुवंश केवल सुमन्त्र तक होगा और सुमन्त्रपर पूर्ण होजावेगा और फिर दूसरा वंश चलेगा इस सूर्यवंशकी कथा अतिपवित्र है जिसके पढ़ने सुननेसे आनन्द प्राप्त होता है और सर्व कामना सिद्ध होती हैं ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

इतना सुन नारदजी बोले कि हे महाराज! आपने सूर्यको श्राद्धदेवके नामसे वर्णन किया इससे हम चाहते हैं कि श्राद्धदेव का सर्व वृत्तान्त और श्राद्धका विस्तारपूर्वक विधान आपसे सुनें क्योंकि श्राद्ध करनेसे अपने पितर बहुत प्रसन्न होते हैं पर हम नहीं जानते कि पितर कौन हैं यह प्रश्न नारदका सुनकर ब्रह्मा बोले कि यही प्रश्न भीष्मपितामहने मार्कण्डेयमुनिसे किया था और मार्कण्डेयमुनिने उत्तर दिया था सो वही प्रश्नोत्तर हम वर्णन करते हैं और मार्कण्डेय मुनिने सनत्कुमार के द्वारा पितरों का हाल जाना था जिन्होंने

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भीष्म से कहा और भीष्म के द्वारा राजा युधिष्ठिरने सुना था ॥
राजा युधिष्ठिरनें भीष्म से उस समय में जब कि भीष्म कुरुक्षेत्र में घायल हो बाणों की शय्यापर लेटेहुये थे विनय की कि महाराज ! जो मनुष्य संसार में पुष्टि की इच्छा रखते हैं उनको क्या करना चाहिये और वंशके बढ़नेका कौन उपाय है और संसारी खेद और चिन्ता से छूटने के लिये शास्त्र की क्या आज्ञा है ? यह प्रश्न युधिष्ठिर से सुनकर भीष्म बोले कि जो मनुष्य तन मन से श्राद्ध करते हैं वे सब मनोरथ पाते हैं और जब पितर प्रसन्न होते हैं तब निस्संदेह वंशकी वृद्धि होती है और पितरों की प्रसन्नतासे दोनों लोकमें अप्रमेय आनन्द मिलता है और पितर देवताओंके भी देवता हैं जिनकी सेवासे मनुष्य कृतार्थ होजाता है और संसार में पितरों की सेवासे सब कुछ मिला है यह पितरों की महिमा युधिष्ठिर ने सुनी और अतिआश्चर्य से विनय की कि महाराज ! आपने जो यह महिमा पितरों की वर्णन की ठीक २ है आप मुझे इस बात की आज्ञा दें कि मैं आपसे पूछूं कि कई मनुष्यों के पितर नरकों में पड़े हुये हैं और कइयों के स्वर्ग में और कइयों के मनुष्य होकर संसारमें हैं सो यह सब बराबर क्योंकर अपनी सन्तान के विषय में इतनी भलाई करसक्ते हैं मुझको समझाइये मैं इस बात के मानने में कुछ संकोच करता हूं भीष्मजी बोले कि एक दिन हम श्राद्ध करनेलगे और हमारे पिता राजाशन्तनु देवस्वरूप धारण करके हमारे पास आये हमने चाहा कि उनके हाथ में पिण्डा रखदेवें पर शन्तनु बोले कि इसतरह से पिण्डा देना उचित नहीं तुमको चाहिये कि पिण्डा कुशामें रखकर पृथ्वी में रखदो सो हमने इसीतरह पर किया और हमारे पिता शन्तनु ने अतिप्रसन्न हो कहा कि जबतक तुम्हारी जीने की इच्छा हो तबतक तुम जीते रहोगे और ऐसे बलिष्ठ होगे कि तुम्हारे समान संसार में दूसरा वीर न होगा सिवाय इसके और जिस

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पदार्थ की तुमको इच्छा हो वह हमसे मांगो क्योंकि कोई वस्तु ऐसी नहीं है कि जिसको हम नहीं देसक्के हमने विनय की कि जो आप मुझसे प्रसन्न हैं तो जो बात मैं पूछता हूं वह मुझे बता दीजिये कि आप पितर और श्राद्ध का हाल मुझे सुना दीजिये शन्तनु बोले कि हमने एकबेर मार्कण्डेय मुनिसे पितृकल्प पूछा था और जो कुछ कि उन्होंने हमको उत्तर दिया था वह यह है कि मार्कण्डेयजीने कहा कि एकबेर हम तप करतेथे कि अकस्मात् हमारी दृष्टि आकाशकी ओर चलीगई और हमने देखा कि एक विमान जिसमें एक बालक अंगुष्ठ के प्रमाण बैठाहुआ है अन्तरिक्ष में उड़ता हुआ चलाजाता है हमने दण्डवत्कर प्रणाम किया और कहा कि आप कौन हैं हम चाहते हैं कि आप अपना वृत्तान्त हमको सुनावें तब उस लड़के ने कहा कि हम सनत्कुमार हैं और हमारे चार भाई और हैं तब हमने कहा कि कृपा करके हमको पितरकल्प सुनाइये सनत्कुमार बोले कि पूर्वकालमें जबकि ब्रह्माने देवताओं को उपजाया और उनसे कहा कि हमारा यज्ञ करना क्योंकि तुम हमारी सन्तान हो पर देवता यह ब्रह्माकी आज्ञा न मानकर अपने प्रयोजन में लगेरहे तब ब्रह्माने अपना तेज बढ़ाकर अतिक्रोधसे देवताओं को यह शाप दिया कि तुम सब सत्यज्ञान और ब्रह्मज्ञानसे विहीन होजाओगे और माया में भटकते फिरोगे सो ऐसाही हुआ कि देवताओं का सब ज्ञान जातारहा और वे सब दुःखी और विकल हो ब्रह्माजीकी शरण में आये और जब ब्रह्माजी को अपनी सेवासे अतिप्रसन्न किया तब ब्रह्माजी ने कहा कि जब तुम सब अपने विमानों को छोड़ अपने लड़कों से विनयपूर्वक पूछोगे तब तुमको पूर्ववत् ज्ञान प्राप्त होगा सो देवताओंने ऐसाही किया और बालकोंने अपने २ पिताओं से कहा कि हे पुत्रो! तुम पूर्वके समान ज्ञान पाओ जब कि देवताओं ने अपने पुत्रों के मुखसे

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

यह वचन सुना कि यह सब जो वास्तव में हमारे पुत्र हैं और धर्मके विरुद्ध वे सब हमको अपना पुत्र कहते हैं तो वे सब आश्चर्य और लज्जासे ब्रह्माजीकी सेवामें पहुँचे और विनय की कि महाराज ! बड़ा अन्धेर है कि हमारे पुत्र हमींको अपना लड़का कहते हैं यह भेद हम लोगोंके समझमें नहीं आता हम चाहते हैं कि यह भेद हमपर खुल जावे ब्रह्माजी बोले कि तुम सब बुद्धिहीन और मूर्ख हो और तुम्हारे पुत्र ज्ञानवान् हैं क्योंकि जो तुम्हारे लड़कोंने तुमसे कहा वह बहुत ठीक है और जो कि तुमने उनको उपजाया और उनके शरीर धारणके कारण हुये वे सब धर्मके बढ़ानेवाले हैं इससे वे सब और तुम जितने कि देवता परस्पर पुत्र हो सो तुमको चाहिये कि तुम सब जाकर यज्ञ करो कि हम तुम सबको आनन्द कृपा करें यह सुनकर देवता पितरोंके मुख्य वृत्तान्त जानकर अतिप्रसन्न हुये और उसीसमय से देवता और पितर मिलकर संसारके सब कार्य करते हैं जो मनुष्य पितरोंका श्राद्ध करता है वह सब मनोरथ पाता है और पितर सब परस्पर पुत्र हैं और सब मनोरथों के पूरे करनेकी शक्ति रखते हैं इनमें से तीन शरीररहित और चार शरीर सहित हैं और यह पितर देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं इस बातको निश्चय करके और तुम केवल पितरोंकी भक्ति के कारण जरा मृत्युसे छूट जाओ क्योंकि तुम्हारे समान दूसरा पितरोंकी सेवा करनेवाला नहीं है और वेद कहते हैं कि देवताओं की पूजा से पितरों की सेवा श्रेष्ठ है और पितृभक्ति से वंश की वृद्धि और दोनों लोक में आनन्द और रोग और निर्बलतासे छुट्टी मिलती मनोरथ पूरे होते और धन और द्रव्य सब कुछ प्राप्त होता है और जो परमपद कि जप और योगादि उपायोंके करने से नहीं मिलता जैसा कि प्रेमपूर्वक पितरोंकी भक्ति करने से प्राप्त होता है और जो मनुष्य अपने गोत्रका नाम लेकर वाक्य शुद्ध पढ़कर पिण्डा देते हैं वह मनुष्य हर प्रकार प्रसन्न रहते हैं और पितर पितामह प्रपिता-

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मह आदि श्राद्ध के समय सब आते हैं और अपने नामका पिण्डा सब लेतेहैं पर पवित्रता और शुद्धता अवश्य चाहिये और जो मनुष्य पितरों का तर्पण करते हैं वह मनुष्य लोक परलोक में बड़ा आनन्द उठाते हैं इसलिये उचित है कि पितरों की भक्ति सब से अधिक करे वे मनुष्य संसार में शुभ हैं जिनको पितरों का प्रेम अधिक है और जो मनुष्य पितरों की सेवा करनेवाले हैं वे शिवको बहुत प्रिय हैं सो जो मनुष्य सदाशिवको प्रसन्न करना चाहे उसको पितरों की भक्ति अवश्य करनी चाहिये हे शान्तनव ! यह पितृमहिमा सनत्कुमारने मुझको सुनाकर दिव्यदृष्टि कृपा की और अतिकृपा से हमको ज्ञान दिया और आप तुरन्त अन्तर्धान होगये इसलिये तुमको उचित है कि पितरों की भक्ति करो क्योंकि पितरों के समान कोई नहीं जानना चाहिये कि पहिले पितरों की पूजा करे फिर और सब की पूजा करे मनुष्य चाहे कैसाही भ्रष्ट और पापी होवे पर पितरों की प्रसन्नता से उसके निकट कोई दुःख नहीं आता जो मनुष्य पितरों की महिमा पढ़ता सुनता है वह दोनों लोकमें आनन्दित रहता है ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

मार्कण्डेयजी बोले कि हे भीष्म ! पूर्वकाल में भरद्वाज मुनि के सात पुत्र उपजे जिन्होंने योगकर बड़ा यश पाया और अपने किसी कुकर्म से योगकी पदवी से च्युत हो दूसरे जन्म में वे सातों विश्वामित्र के पुत्र हुये और गर्गमुनि को अपना गुरु बनाया उनके नाम यह थे पहिला पाकदिष्ट, दूसरा क्रोधन, तीसरा उदित, चौथा हनसर्प, पांचवां सुनक, छठां विषसर्प, सातवां पितृवर्ती सो विश्वामित्र ने अपने सातों लड़कों से अप्रसन्न हो उनको शाप देदिया और अपने आश्रम से निकाला तब वे सब गर्गमुनिके पास जा शिष्य हो फिर वहीं रहे सो गर्गमुनिके पास एक कपिला गौ थी जो वर्षभर में एक बच्चा देती

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अकस्मात् एक दिन वह किसी चरवाहे विना वनमें चरनेगई गर्ग ने उन शिष्यों को गौ लाने को भेजा लौटने के समय वह ऐसे भूखे हुये और बालकपनकी बुद्धि से ऐसा अधर्म किया कि उन्होंने गौ को मारकर भूख मिटाने का उद्योग किया पर फिर कुछ उनमें से कहने लगे कि गुरु की गौको मारना अच्छा नहीं और कइयोंने इस बात को माना भी नहीं तब सातवें बालकने जो पितरोंका भक्त था उसने कहा कि तुम नाहकही गौके वध करने पर तय्यार हो तुमको उचित है कि पहिले पितरों का आवाहन करके श्राद्ध करो और फिर पूजाकर अपना कार्य करो तो इस युक्ति से अवश्य है कि तुम पर कुछ पाप न होगा निदान सब भाइयों ने इस बहाने से मिलकर गौके मांससे पेट भरा और गर्ग से आकर कहा कि महाराज गौ जो दूध की खानि थी उसको सिंह खागया पर उसका बच्चा बच गया है गुरु जो बड़े कृपावान् और सीधे थे उन्होंने इस बातको सत्य जान गौके बच्चे को लेलिया और वे सातों भाई फिर मरकर भाईही हुये और व्याधके घर उपजे पर चाहे उन्होंने व्याधके घरमें जन्म लिया पर वह जीवोंका वध न करते और सारनदेश में स्थित होकर धर्म में दृढ़ रहे केवल इस कारण कि उन्होंने पितरोंके कार्य के निमित्त गोवध किया था अपने पहिले जन्मों और ज्ञानको न भूले और उनके नाम यह हुये पहिला नरवीर, दूसरा निवृत्ति, तीसरा शान्त, चौथा निर्मन, पांचवां क्रतु, छठां शशि, सातवां मातृव्रती जब माता पिता मरगये तो सातोंने धनुष और बाण फेंक दिया और वनमें रहकर अन्तको मरगये और तुरन्त हरिण हो कालिञ्जर पर्वतमें रहने लगे पर उनको पूर्व के जन्मों का स्मरण बनारहा इसीसे वह धर्मके मार्ग में स्थित रहे उनके नाम यह हुये पहिला नित्य, दूसरा त्रसित, तीसरा उन्मुख, चौथा बधिर, पांचवां भद्र, छठां अनेत्र, सातवां नादप्रिय सो इन सातों ने पहिले जन्मों

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के स्मरण रहने से पशुओंके धर्म त्याग दिये और बिन स्थान और भोग विलासरहित रहने लगे और योगकर भारी तप किया और समय के उपरान्त उसी कालिञ्जर पर्वत में मरगये सो आज तक उनके चरणचिह्न उक्त पर्वतमें दिखाई देते हैं और मरनेके उपरान्त सुरद्वीपमें चकवा चकवी होकर पशुके समान कुछ काम न किया बरन वेदके अनुसार उन्होंने सब काम किये और उनको पूर्वजन्म की सुधि बनी रही और उनके यह नाम हुये पहिला निस्पृह, दूसरा निर्मम, तीसरा शान्त, चौथा अद्वन्द्व, पांचवां अपरग्र, छठां निवृत्त, सातवां निवृत सो यह सातों नदीके तीर तप करते मरगये और फिर मानसरोवर में हंस होकर पूर्वजन्मके चरित्रों को जानते रहे और कोई पहिला धर्म उन्होंने न भुलाया और ब्रह्मज्ञान में भरपूर रहे उनके नाम यह हुये पहिला सुमन, दूसरा सुवाक्, तीसरा सिद्ध, चौथा पञ्चम, पांचवां क्षुद्र-दर्शन, छठां सुनेत्र, सातवां स्वतन्त्र और यह मानसरोवर वह स्थल है जहांसे सरयूनदी निकली है और जहां सब प्रकार के हंस रहाकरते हैं और तपी और योगी और सिद्धोंके रहनेकी जगह है और सदाशिव अहर्निश वहां विराजमान रहा करते हैं और यह मुख्य सदाशिव के रहने का स्थान है जहां जाने से मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है निदान यह चरित्र हुआ कि पृथ्वी में एक देश है जिसको नीय अर्थात कम्पिला कहते हैं और वह तीनोंलोक में प्रसिद्ध है वहां एक राजा हुआ जिसको विभ्राज कहते थे वह बड़ा धर्मवान् राजा था एकदिन राजा अपनी रानियों समेत शिकारके लिये वनमें जा शिकार आदि खेलने में प्रवृत्त हुआ उस वनमें ऐसा सुशोभित हुआ जैसे कि इन्द्रसे नन्दनवनमें शोभा होती है सो राजा की ऐसी शोभा और सामग्रीको देख स्वतन्त्रनाम हंस जो सबसे छोटा था लोभवश हुआ और चाहा कि मैंभी जो इस राजा के समान होजाऊं तो मेरी धन्यभाग्य है और

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहाकि जो मैंने नियम तपादि शुभ कर्म किये हैं उनका फल मुझे यह प्राप्त हो कि मैंभी इसके सदृश राजा होजाऊं यह सुनकर क्षुद्र-दर्शन और सुनेत्र दोनों हंस बोले कि हमारी यह इच्छा है कि हम तुम्हारे मन्त्री होवें और स्वतन्त्रने इस बातको न माना यह वार्ता अ-पने भाइयों की सुनकर सुवाक्ने कहा कि तुम कम्पिलानगरमें राजा होकर राज्य करोगे और यह दोनों तुम्हारे मन्त्री होंगे यह वार्ता सुन सुमन बोले कि तुम सब कुछदिन राज्य सुख भोग फिर राज्य छोड़ योग में प्रवृत्त होगे और पितरों की प्रसन्नता से तुम्हारे सब काम बि-गड़े हुये बनजावेंगे यह कहा और सुमन चुप होकर बैठरहा निदान विभ्राज राजा कुछ दिनोंतक शिकार खेलतारहा फिर अपनी राजधानी में लौटकर राज्यकाज करनेलगा इसके उपरान्त अपने पुत्रको जिस का अनुज नाम था राज्यका भार सौंपदिया और आप फिर उसी मान-सरोवर में गया जहां वे सातों हंस रहते थे और उसने बड़ा कठिन तप किया जिससे परमपद पाया उसीसमय से वह स्थान विभ्राजित वन के नामसे प्रसिद्ध होगया वह स्थल योग और सिद्धिके देनेमें अद्वि-तीय है और वे तीनों हंस जिनको राजा और मन्त्री बननेका विचार उपजा था मरने के उपरान्त द्रुपदपुरी अर्थात् कम्पिलामें उपजे उनमें से स्वतन्त्रनामी हंस राजा होकर ब्रह्मदत्तके नाम से प्रसिद्ध हुआ और क्षुद्रदर्शन और सुनेत्र दोनों हंस एक श्रोत्री नाम ब्राह्मणसे उपज कर पांचक और कुण्डरीकके नामसे प्रसिद्ध हुये निदान कम्पिलादेश का राजा अपनी लड़की देकर आप महावनको सिधारा कि वहां तप करें और उनके साथ श्रोत्री ब्राह्मण भी चलागया और लड़कों को घरमें छोड़ दिया और ब्रह्मदत्त राजा होकर पुत्रों के समान प्रजा को पालनेलगा और दोनों ब्राह्मणके पुत्र बड़े मन्त्री होगये शिव की कृपासे तीनोंने अपने २ मनोरथ पाये और ब्रह्मदत्तकी रानी जिनका

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम सुनत था राजा के साथ बड़ा विहार किया और शेष चार हंस जिन्होंने संसारी सुख का कुछ लोभ न किया था यह भी श्रोत्री ब्राह्मण के कुलमें उपजे उनका पिता बड़ाही दरिद्री पर शिवधर्म में अतिप्रौढ़ था उन चारों के यह नाम हुये पहिला धृष्ट, दूसरा महात्मा, तीसरा नित्यदर्श, चौथा निरतशुक और यह चारों बड़े ज्ञानी हुये और वह तीनों भाई अर्थात् जो राजा और मन्त्री थे योगपदवी से च्युत हो भ्रष्ट होगये पर वह चारों पूर्व के समान योग में स्थित रहे एक समय के अनन्तर उन्होंने चाहा कि महापन्थ की यात्रा करें॥

छब्बीसवां अध्याय॥

श्रीब्रह्माजी बोले कि जब ब्राह्मणने जाना कि उनके चारों पुत्र यात्रा करनेपर उद्यत हैं तो वह अतिदुःखी हो बोला कि हे प्रियपुत्रो! तुम सब महापन्थको जाते हो हम अकेले घर में रहकर क्या करेंगे यातो मुझको अपने साथ लेतेचलो या मेरे क्रियाकर्मका उपाय करते जाओ कि इस जरावस्थामें मुझे कष्ट न होवे क्योंकि जब घरमें ऐसी दरिद्रता है तो हमारा निर्वाह क्योंकर होसक्ता है और तुम भलीविधि जानते हो कि हमारा धन तुम्हीं थे यह सुनकर लड़कोंने उत्तर दिया कि तुम कम्पिला नगरी में जाकर राजा ब्रह्मदत्त और दोनों राजमन्त्रियों को हमारा सन्देशा देना वह तुमको असंख्य धन देवेंगे यह कहा और एक पत्र उनको इस विषयका लिखदिया कि हे भाइयो! हम तुम एकमाता पिता के सात भाई हैं पहिले जन्ममें कुकर्म करने से व्याध हुये फिर मृग और फिर चक्रवाक और फिर हंस हुये थे तुम ने राजा को देखा और लोभी होगये सो योग और ज्ञानको छोड़ राज्य पाया और हम चारों ब्राह्मण के घर उपज महापन्थ को जाते हैं इस लिये तुमको उचित है कि तुमभी हमारा साथ दो वृथाही घरमें पड़े हो और अपने पिताको तुम्हारे समीप भेजकर तुमको लिखते हैं कि उनको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुतसा धन देना और राज्यकाज अपने पुत्रोंको दे हमारे पास पहुँचना सो यह चिट्ठी ले ब्राह्मण प्रसन्न हो कम्पिलापुरी में गया पर उस को पत्र देने का अवकाश न मिला पर संयोगवश राजा के एक पुत्र उपजा जिसका नाम विष्वक्सेन था और जो योग और शील में अद्वितीय था और राजा ब्रह्मदत्त अपनी रानीसमेत मन्त्रियों को साथ लिये वनमें गया और समय तक आनन्द उठातारहा एक दिन राजाने किसी पशुको मैथुन करते देख आपभी चाहा कि रानी से संभोगकरें और राजा रानीके मना करने और क्रोध करने पर भी अपने हठसे न हटा पर तौ भी रानीने न माना और नम्रता बिनती क्रोध और धमकी और लज्जा और संकोच से राजाको रोंका और थोड़े दिनोंतक रानीने खाना पीना भी छोड़ दिया राजा ने रानीसे हठ और निषेधका कारण पूछा रानी बोली कि जो हम इसका कारण कहदें तो हम तुरन्त मरजावें जो हमारी बात पर निश्चय नहीं करोगे तो तुम्हारा जीना कठिन हो जावेगा निदान राजा आश्चर्य में हो परमेश्वर की शरणमें गये और छः रातदिन निर्जल पड़े रहे सो परमेश्वर ने प्रकट हो राजाको दर्शन दिया और कहा कि हे राजा ब्रह्मदत्त! तुमको प्रभातके समय सब वृत्तान्त विदित होजावेगा यह कह ईश्वर अन्तर्धान होगये राजा अपने को धन्य मान अपनी राजधानी की ओर चला सो ऐसा समय पा ब्राह्मण ने पत्र राजा को दिया सो राजाने तुरन्त चिट्ठी पढ़ संसारी माया मोह छोड़ ब्राह्मण को बड़ा धनदे बिदा किया और ब्राह्मणने अपने घर में आकर सब हाल कह सुनाया वे प्रसन्न हो महापथ को चलेगये और ब्राह्मण ने अपनी स्त्रीसहित परमपद प्राप्त किया और राजा अपने पुत्र को राज्य का भार सौंप अपनी रानीसहित मानसरोवर को चला गया जहां सुनत रानीने जो देवलकी कन्या थी राजासे कहा कि हमने जो तुम्हारे साथ भोग न किया उसका कारण यह था कि हमने तुमको

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संसारी भोगविलास में लगाहुआ जानकर चाहा कि हम तुमको इस मार्ग से लौटाकर मुख्यरूपमें लावें सो यह अपराध हमारा क्षमा करना क्योंकि तुमको तुम्हारा गुप्त योग भूलगया था मैंने तुमको स्मरण कराया यह सुन राजा अपनी रानी से अतिप्रसन्न हुआ और रानी सहित शिवका तपकर परमपद पाया और कुण्डायक जो मन्त्री था वह भी अपने पूर्वजन्मों के वृत्तान्त को जान संसारी माया छोड़ सांख्यशास्त्र की रीतिसे योग धारणकर मुक्त होगया और पाञ्चक जो दूसरा मन्त्री था उसने वेद की रीति के अनुसार योग धारणकर शिवका यश संसारभर में प्रसिद्ध किया निदान राजा दोनों मन्त्रियों समेत मुक्त होगया हे शान्तनव ! इस तरह विश्वामित्रके सातों पुत्र नानाप्रकार के शरीर धारण करने के उपरान्त मुक्त हुये सो इसमें केवल मुख्य कारण मोक्ष पानेका पितरों को समझना चाहिये और पितरों की महिमा वास्तव में ऐसीही है कि महापापी को भी कुछ दुःख नहीं होता और पितरोंकी भक्ति करनेसे मोक्ष अवश्य मिलता है जो मनुष्य यह पितरोंका चरित्र पढ़ेगा या सुनेगा वह संसार में प्रसन्न रहकर अन्तमें सुखी होगा ॥

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे एकादशखण्डे षड्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २६ ॥

शिवपुराणभाषा पूर्णतामगात् ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विक्रयार्थ पुराणों का सूचीपत्र ॥

नाम किताब.	क़ीमत.
श्रीमद्भागवत श्रीधरी टीका गुन्दा	७)
तथा अंगदशास्त्री	४)
मार्कण्डेयपुराण मूल	।≡)॥
तथा भाषा टीका....	१॥≡)
देवीभागवत भाषा रस्मी	३)
तथा गुन्दा	३।)
लिंगपुराण भाषा	॥।≡)
बृहन्नारदीयपुराण क़दीम	।≡)
तथा जदीद	।=)
गणेशपुराणभाषा	२॥)
बाराहपुराण पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध	१)
शिवपुराण दोहा चौपाई	॥)
गरुड़पुराण मथुरा	≡)।
तथा भाषा टीका दिल्ली	।–)
विष्णुपुराण भाषा वार्त्तिक क़दीम	॥।)
तथा जदीद दोहा चौपाई	१॥)
भविष्यपुराण	१=)
स्कन्दपुराण सेतुमाहात्म्यखंड	।=)
तथा काशीखंड सटीक पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध गुंदा सफ़ेद....	७)

मिलने का पता:—

राय बहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस-लखनऊ.

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain. Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

In Public Domain- Chambal Archives, Etawah

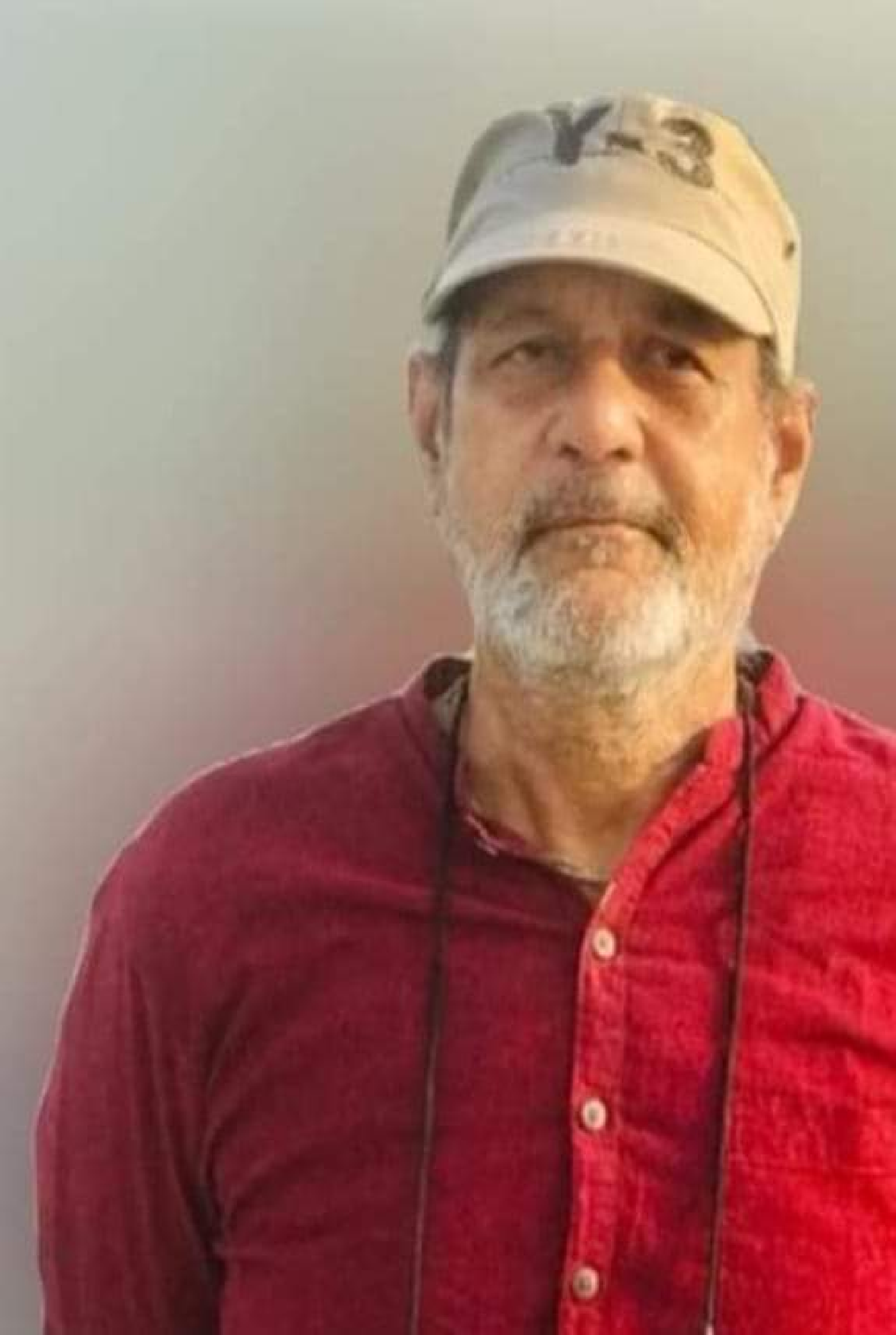

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.